Jahannam Mein Le Jaane Wale Aa'mal (Hindi)

कबीरा गुनाहों की मा'रिफ़त पर मुश्तमिल 2226 हवाला जात से मुज़य्यन मुन्फ़रिद और मा'रि-कतुल आरा तालीफ़

اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِرِ

जिल्द अव्वल

तरजमा बनाम

जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल

मुअल्लिफ़ : शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन इमाम अहमद बिन हजर मक्की शाफ़ेई عليه رحمة الله القوي

अल मु-तवफ़्फ़ा 974 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल)

येह किताब **(जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल))**

इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की **अ़-रबी** तालीफ़ **अज़्ज़वाजिरु अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर** का मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) की त़रफ़ से पेश कर्दा **उर्दू** तरजमा है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

M0. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

कबीरा गुनाहों की मा'रिफ़त पर मुश्तमिल मुन्फ़रिद और मा'रि-कतुल आरा तालीफ़

اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِرِ

तरजमा बनाम

जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल

(जिल्द अव्वल)

मुअल्लिफ़

शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन

इमाम अह़मद बिन ह़जर अल मक्की अल हैतमी अश्शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی

अल मु-तवफ़्फ़ा 974 हि.

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद, गुजरात

www.dawateislami.net

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : अज़्ज़वाजिरु अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर

तरजमा : जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल

मुअल्लिफ़ : इमाम अह़मद बिन ह़जर अल मक्की अल हैतमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल 1434 सि.हि.

नाशिर : मक-त-तबुल मदीना, अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई
फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद,
देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मस्जिद ग़रीब नवाज़ के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर
फ़ोन : 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार,
स्टेशन रोड, अजमेर

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास,
हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

WWW.DAWATEISLAMI.NET

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी)

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

"क्बीरा गुनाहों से बचते रहिये" के 21 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "21 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** " نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(معجم کبیر طبرانی حدیث ۵۹۴۲ ج ۶ ص ۱۸۵ بیروت)

दो म-दनी फूल : 《1》 बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
《2》 जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

《1》 हर बार ह़म्द व 《2》 सलात और 《3》 तअ़व्वुज़ व 《4》 तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। 《5》 रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। 《6》 ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और 《7》 क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा 《8》 कुरआनी आयात और 《9》 अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा 《10》 जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और 《11》 जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। 《12》 इस किताब का मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा। 《13》 (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा। 《14》 (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। 《15》 दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। 《16,17》 इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴿مؤطا امام مالک، ج۲،ص۴۰۷، رقم:۱۷۳۱﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहूफ़तन दूंगा। 《18》 इस किताब के मुत़ा-लए का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। 《19》 अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर किया करूंगा और हर इस्लामी माह की दस तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा। और 《20》 आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा। 《21》 किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

الحمد للّٰہ علٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हु़स्नो खू़बी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (2) शो'बए तराजिमे कुतुब (3) शो'बए दर्सी कुतुब (4) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से खै़रो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खु़द भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले खै़र को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
1	पहले इसे पढ़ लीजिये !	25
2	तआ़रुफ़े मुअल्लिफ़	29
3	मुक़द्दमा (गुनाहे कबीरा की ता'रीफ़, ता'दाद और दीगर मु-तअ़ल्लिक़ात)	37
4	कबीरा गुनाह की आठ ता'रीफ़ात	39
5	कबीरा गुनाहों की ता'दाद और इन के मु-तअ़ल्लिक़ात	58
6	ख़ातिमा (हर छोटे बड़े गुनाह से डराने का बयान)	59
7	बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़	91
8	दो जन्नतें मिल गईं :	94
9	चराग़ की लौ पर उंगली रख दी	97
10	बाब अव्वल : **बातिनी कबीरा गुनाह और इन के मु-तअ़ल्लिक़ात**	
11	कबीरा नम्बर 1 : शिर्के अक्बर	101
12	**तम्बीहात**	107
13	कुफ़्रो शिर्क की अक़्साम	108
14	(मुर-तकिबे गुनाहे कबीरा के बारे में) अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा	118
15	ख़्वारिज व मो'तज़िला का अ़क़ीदा	118
16	ख़्वारिज व मो'तज़िला का रद	118
17	मुरजिया का अ़क़ीदा	119
18	ईमाने वालिदैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم و رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا	124
19	ईमान की अहम्मिय्यत और मोमिन की फ़ज़ीलत	136

www.dawateislami.net

20	कबीरा नम्बर 2 : शिर्के असग़र (रियाकारी)	139
21	रियाकारी की मज़म्मत पर आयाते कुरआनिया व अहादीसे मुबा-रका	139
22	रियाकार ख़तीबों की सज़ा	150
23	आग की दो ज़बानें होंगी	150
24	रियाकारी की मज़म्मत पर इज्माए उम्मत	151
25	अच्छा लिबास पहनना रियाकारी नहीं	156
26	बनना संवरना सुन्नत है	157
27	इख़्लास की अहम्मिय्यत और फ़ज़ाइल	172
28	कबीरा नम्बर 3 : नाहक़ गुस्सा करना, दिल में कीना रखना और हसद करना	179
29	कीना	187
30	हसद	189
31	एक हासिद का इब्रत नाक अन्जाम	197
32	हसद के मु-तअल्लिक़ बुजुर्गाने दीन عَلَيۡهِمُ الرَّحۡمَة के फ़रामीन	198
33	गुस्से में इन्सान की हालतें	199
34	अलामाते ग़ज़ब	202
35	गुस्सा ज़ाइल करने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े	208
36	हसद के अहकाम	212
37	रश्क और मुक़ाबला बाज़ी के अहकाम	213
38	हसद के मरातिब	215
39	हसद का इलाज	216
40	गुस्सा पीने और अफ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल	218

www.dawateislami.net

41	कबीरा नम्बर 4 : तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी और फ़ख़्र करना	229
42	तकब्बुर का इलाज	234
43	अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक ना पसन्दीदा लोग	234
44	ख़ुद पसन्दी	236
45	जहन्नम की वादी "हबहब" का ह़क़दार कौन ?	242
46	तकब्बुर के मु-तअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِمُ الرَّحْمَة के फ़रामीन	243
47	मु-तकब्बिर को अनोखी नसीह़त	243
48	तकब्बुर के अस्बाब	247
49	ख़ुद पसन्दी की आफ़ात	250
50	ख़ुद पसन्दी का इलाज	251
51	तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी की फ़ज़ीलत	253
52	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की तवाज़ोअ़	258
53	तवाज़ोअ़ के बारे में सलफ़ सालिह़ीन के फ़रामीन	261
54	कबीरा नम्बर 5 ता 38 : निफ़ाक़, त़मअ़, ह़िर्स और फ़रेब कारी...... वग़ैरा	262
55	बुरे अख़्लाक़ की तबाह कारियां	266
56	अच्छे अख़्लाक़ की ब-र-कतें	267
57	बद गुमानी, लालच, शक वग़ैरा की मज़म्मत	270
58	ख़्वाहिशात और लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत	271
59	बद अ़हद, ग़द्दार, ख़ाइन और धोकेबाज़ की मज़म्मत	272
60	ग़ज़ब और शहवत	281
61	दिल का दुन्यवी ज़िन्दगी और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात से मह़ब्बत करना	282

www.dawateislami.net

62	त़मअ़	283
63	जल्द बाज़ी करना और साबित क़दमी छोड़ देना	283
64	माल में ज़ियादती की ख़्वाहिश	283
65	बुख़्ल और तंगदस्ती का ख़ौफ़	284
66	तअ़स्सुब	284
67	मुसल्मानों पर बद गुमानी	285
68	कबीरा नम्बर 39 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहना	291
69	क्या हम अपनी तक़्दीर ही पर भरोसा कर लें ?	294
70	वली के गुस्ताख़ का इब्रत नाक अन्जाम	294
71	कबीरा नम्बर 40 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होना	297
72	अह़ादीसे मुबा-रका में रह़मते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ का बयान	298
73	**अल्लाह** तआ़ला बन्दे के साथ उस के गुमान के मुत़ाबिक़ सुलूक करता है	299
74	कबीरा नम्बर 41 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बुरा गुमान रखना	300
75	कबीरा नम्बर 42 : रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से ना उम्मीद होना	300
76	कबीरा नम्बर 43 : ह़ुसूले दुन्या के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना	302
77	कबीरा नम्बर 44 : इ़ल्म छुपाना	304
78	कबीरा नम्बर 45 : इ़ल्म पर अ़मल न करना	310
79	कबीरा नम्बर 46 : ज़रूरत न होने के बा वुजूद मह़ज़ फ़ख़्र की बिना पर इ़ल्म,इ़बादात या क़ुरआन फ़हमी का दा'वा करना	313
80	कबीरा नम्बर 47 : उ़-लमाए किराम वग़ैरा के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ करना और इन्हें हलका जानना	315
81	कबीरा नम्बर 48,49 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जान बूझ कर झूट बांधना	320
82	कबीरा नम्बर 50 : बुरा त़रीक़ा राइज करना	323

www.dawateislami.net

83	कबीरा नम्बर 51 : सुन्नत छोड़ देना	326
84	सुन्नत छोड़ने से क्या मुराद है ?	328
85	बिद्अ़तियों की मज़म्मत	328
86	कबीरा नम्बर 52 : तक़्दीर को झुटलाना	330
87	फ़िर्क़ए **क़दरिया** की पहचान और इस की मज़म्मत	332
88	मुन्किरीने तक़्दीर की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबा-रका	337
89	तक़्दीर का लिखा हुवा हो कर रहता है	340
90	ह़ज़रते सय्यिदुना आदम व मूसा عَلَيْهِمَاالصَّلٰوةُوَالسَّلَام के दरमियान मुबा-ह़सा	346
91	**मुरजिआ** और **क़दरिया** की मज़म्मत	347
92	तक़्दीर का इन्कार कबीरा गुनाह है (अबू अ़ली जुबाई का ग़लत़ इस्तिद्लाल और उस का रद्दे बलीग़)	349
93	कबीरा नम्बर 53 : वा'दा पूरा न करना	356
94	कबीरा नम्बर 54,55 : ज़ालिमों और फ़ासिक़ों से मह़ब्बत करना और नेक लोगों से बुग़्ज़ रखना	362
95	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बाहम मह़ब्बत करने वालों के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीसे करीमा	363
96	कबीरा नम्बर 56 : औलियाउल्लाह को ईज़ा देना और उन से अ़दावत रखना	366
97	कबीरा नम्बर 57 : गर्दिशे अय्याम के सबब ज़माने को बुरा कहना	372
98	कबीरा नम्बर 58 : ला परवाही में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी की बात कहना	375
99	कबीरा नम्बर 59 : मोह़सिन के एह़सान को झुटलाना (शुक्रिया अदा करने का त़रीक़ा)	376
100	कबीरा नम्बर 60 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे मुबारक सुन कर दुरूदे पाक न पढ़ना	377
101	दुरूदे पाक न पढ़ना गुनाहे कबीरा है या नहीं ?	380
102	नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के फ़ज़ाइल	381

www.dawateislami.net

103	कबीरा नम्बर 61 : दिल का सख़्त हो जाना	386
104	कबीरा नम्बर 62,63 : कबीरा गुनाह पर राज़ी होना या इस में तआवुन करना	387
105	कबीरा नम्बर 64 : बदकारी व फ़ोह्श गोई का आदी हो जाना	387
106	कबीरा नम्बर 65 : दिरहमो दीनार तोड़ना	388
107	कबीरा नम्बर 66 : दिरहमो दीनार में मिलावट करना	389
108	बाब दुवुम : **ज़ाहिरी कबीरा गुनाह**	
109	كتاب الطهارة (तहारत का बयान)	
110	कबीरा नम्बर 67 : सोने, चांदी के बरतनों में खाना पीना	390
111	**तम्बीहात**	390
112	वोह बरतन जिन के इस्ति'माल की रुख़्सत है	391
113	सोने चांदी के बरतन को इस्ति'माल करने का हीला	393
114	باب الاحداث (हदस का बयान)	
115	कबीरा नम्बर 68 : कुरआन की कोई सूरत, आयत या हर्फ़ भुला देना	394
116	**तम्बीहात**	395
117	कबीरा नम्बर 69 : कुरआने करीम या किसी दीनी मुआ-मले में झगड़ना और ग़-लबा या बुलन्दी चाहना	399
118	कुरआन से मु-तअल्लिक़ अहम उमूर पर मु-तनब्बेह करने वाली बा'ज़ अहादीस	403
119	باب قضاء الحاجة (क़ज़ाए हाजत का बयान)	
120	कबीरा नम्बर 70 : गुज़र गाहों पर पाख़ाना करना	407
121	कबीरा नम्बर 71 : बदन या कपड़ों को पेशाब से न बचाना	409
122	باب الوضوء (वुज़ू का बयान)	
123	कबीरा नम्बर 72 : वुज़ू का कोई फ़र्ज़ तर्क करना	414

www.dawateislami.net

124	नाक़िस वुज़ू, नमाज़ में शुबा पैदा करता है	415
125	بَابُ الْغُسل (गुस्ल का बयान)	
126	कबीरा नम्बर 73 : गुस्ल का कोई फ़र्ज़ छोड़ देना	417
127	कबीरा नम्बर 74 : बिला ज़रूरत सित्र खोलना	418
128	औरतों का हम्माम में जाना मन्अ़ है	419
129	بَابُ الْحَيض (हैज़ का बयान)	
130	कबीरा नम्बर 75 : हाएज़ा से वती करना	427
131	كِتَابُ الصَّلٰوة (नमाज़ का बयान)	
132	कबीरा नम्बर 76 : जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देना	428
133	कबीरा नम्बर 77 : बिला उ़ज़्र नमाज़ को मुक़द्दम या मुअख़्ख़र करना	434
134	नमाज़ तर्क करना कुफ़्र है या नहीं ?	447
135	बे नमाज़ी के कुफ़्र के क़ाइल सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان	447
136	बे नमाज़ी के कुफ़्र के क़ाइल अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی	448
137	हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का मौक़िफ़	449
138	कबीरा नम्बर 78 : बिग़ैर मुंडेर की छत पर सोना	451
139	कबीरा नम्बर 79 : वाजिबाते नमाज़ को तर्क करना	452
140	नमाज़ का चोर	452
141	नमाज़ में रुकूअ़ सुजूद कामिल तौर पर अदा न करने पर वईदें	453
142	हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू और नमाज़ का त़रीक़ा सिखाया	455
143	بَابُ شُرُوطِ الصَّلٰوة (नमाज़ की शराइत़ का बयान)	
144	कबीरा नम्बर 80 : बाल जोड़ना और इस की उजरत लेना	457

www.dawateislami.net

145	कबीरा नम्बर 81 : गूदना और इस की उजरत लेना	457
146	कबीरा नम्बर 82 : दांत कुशादा करना और इस की उजरत लेना	457
147	कबीरा नम्बर 83 : चेहरे के बाल नोचना	457
148	मज़्कूरा अहादीसे मुबा-रका के बा'ज़ अल्फ़ाज़ की वज़ाहत	459
149	कबीरा नम्बर 84 : सुतरे के बा वुजूद नमाज़ी के आगे से गुज़रना	460
150	بَابُ صَلاةِ الْجَمَاعَةِ (बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का बयान)	
151	कबीरा नम्बर 85 : शराइत़ पाए जाने के बा वुजूद शह्र या गाउं के तमाम लोगों का फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअ़त तर्क करने पर मुत्तफ़िक़ हो जाना	462
152	ह़ज़राते सह़ाबए किराम व औलियाए इ़ज़ाम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के फ़रामीने मुबा-रका	465
153	कबीरा नम्बर 86 : क़ौम के ना पसन्दीदा शख़्स का उन की इमामत करना	468
154	सवाब पाने वाला ख़ुश नसीब इमाम	469
155	कबीरा नम्बर 87 : सफ़ को मुकम्मल न करना	471
156	कबीरा नम्बर 88 : सफ़ को सीधा न करना	471
157	कबीरा नम्बर 89 : नमाज़ में इमाम से सब्क़त करना	473
158	कबीरा नम्बर 90 : नमाज़ में आस्मान की त़रफ़ देखना	475
159	कबीरा नम्बर 91 : नमाज़ में इधर उधर देखना	475
160	कबीरा नम्बर 92 : नमाज़ में कमर पर हाथ रखना	475
161	कबीरा नम्बर 93 : क़ब्रों को सज्दा गाह बनाना	478
162	कबीरा नम्बर 94 : क़ब्रों पर चराग़ जलाना	478
163	कबीरा नम्बर 95 : क़ब्रों को बुत बना लेना	478
164	कबीरा नम्बर 96 : क़ब्रों का त़वाफ़ करना	478
165	कबीरा नम्बर 97 : क़ब्रों को हाथ से छूना या चूमना	478

www.dawateislami.net

166	कबीरा नम्बर 98 : क़ब्रों की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ना	478
167	باب السفر (सफ़र का बयान)	
168	कबीरा नम्बर 99 : इन्सान का तन्हा सफ़र करना	483
169	कबीरा नम्बर 100 : औ़रत का तन्हा सफ़र करना	484
170	कबीरा नम्बर 101 : बद फ़ाली की बिना पर सफ़र न करना और वापस लौट आना	485
171	باب صلاة الجمعة (नमाज़े जुमुआ़ का बयान)	
172	कबीरा नम्बर 102 : बिला उ़ज़्र नमाज़े जुमुआ़ जमाअ़त के साथ न पढ़ना अगर्चे येह कहे : "मैं ज़ोहर की नमाज़ तन्हा पढ़ लेता हूं।"	487
173	नमाज़े जुमुआ़ न पढ़ने का कफ़्फ़ारा	489
174	कबीरा नम्बर 103 : जुमुआ़ के दिन लोगों की गरदनें फलांगना	490
175	कबीरा नम्बर 104 : ह़ल्क़े के दरमियान आ कर बैठना	492
176	باب اللباس (लिबास का बयान)	
177	कबीरा नम्बर 105 : बिला उ़ज़्रे शर-ई रेशम पहनना	494
178	कबीरा नम्बर 106 : मर्द का ज़ेवर पहनना	498
179	फ़वाइद व मसाइल	500
180	कबीरा नम्बर 107 : मर्दों और औ़रतों का एक दूसरे से मुशा-बहत इख़्तियार करना	501
181	घर वालों की इस्लाह़	504
182	कबीरा नम्बर 108 : औ़रतों का बारीक लिबास पहनना	505
183	कबीरा नम्बर 109 : बत़ौरे तकब्बुर, कपड़ा, आस्तीन या दामन बड़ा रखना	507
184	कबीरा नम्बर 110 : इतरा कर चलना	507
185	कबीरा नम्बर 111 : सियाह ख़िज़ाब लगाना	511
186	باب الاستسقاء (नमाज़े इस्तिस्क़ा का बयान)	

www.dawateislami.net

187	कबीरा नम्बर 112 : सितारों के मुअस्सिर होने का ए'तिक़ाद रखना	512
188	بَابُ الْجَنَائِز (नमाज़े जनाज़ा का बयान)	
189	कबीरा नम्बर 113 : मुसीबत के वक़्त चेहरा नोचना	513
190	कबीरा नम्बर 114 : मुसीबत के वक़्त चेहरे पर थप्पड़ मारना	513
191	कबीरा नम्बर 115 : मुसीबत के वक़्त गिरीबान चाक करना	513
192	कबीरा नम्बर 116 : मुसीबत के वक़्त नौहा करना या सुनना	513
193	कबीरा नम्बर 117 : मुसीबत के वक़्त बाल मूंडना या नोचना	513
194	कबीरा नम्बर 118 : मुसीबत के वक़्त हलाकत व बरबादी की दुआ करना	513
195	बैतुल ह़म्द का ह़क़दार	522
196	ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की तौबा	525
197	क़ियामत में मुसीबत ज़दा लोगों का अज्रो सवाब	527
198	मोमिन को मुसीबत पर भी अज्र मिलता है	528
199	कबीरा नम्बर 119 : मय्यित की हड्डी तोड़ना	531
200	कबीरा नम्बर 120 : क़ब्र के ऊपर बैठना	531
201	कबीरा नम्बर 121 : क़ब्र के ऊपर मस्जिद बनाना या चराग़ जलाना	533
202	कबीरा नम्बर 122 : औ़रतों का क़ब्र की ज़ियारत करना	533
203	कबीरा नम्बर 123 : औ़रतों का जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान जाना	533
204	कबीरा नम्बर 124 : चन्द मख़्सूस मन्तर पढ़ना	535
205	कबीरा नम्बर 125 : ता'वीज़ात पहनना या गन्डे लटकाना	535
206	कबीरा नम्बर 126 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द करना	538
207	كِتَابُ الزَّكَاة **(ज़कात का बयान)**	

www.dawateislami.net

208	कबीरा नम्बर 127 : ज़कात अदा न करना	540
209	कबीरा नम्बर 128 : वुजूबे ज़कात के बा'द अदाएगी में ताख़ीर करना	540
210	ज़कात इस्लाम का पुल है	550
211	ज़कात और कन्ज़	551
212	आग का हार और आग की बालियां	552
213	बुख़्ल से नजात का ज़रीआ	557
214	**तम्बीहात**	558
215	माल के फ़वाइद	564
216	माल की आफ़ात	565
217	कबीरा नम्बर 129 : क़र्ज़ ख़्वाह का मक़रूज़ को बिला वजह तंग करना	574
218	तंगदस्त को क़र्ज़ की अदाएगी में मोहलत देने की फ़ज़ीलत	575
219	कबीरा नम्बर 130 : स-दक़ा में ख़ियानत करना	577
220	कबीरा नम्बर 131 : भत्ता वुसूल करना	580
221	मुफ़्लिस कौन ?	580
222	बद तरीन शख़्स कौन ?	583
223	कबीरा नम्बर 132 : ग़नी का सुवाल करना	588
224	ग़िना की मिक़्दार में बुज़ुर्गों के अक़्वाल	593
225	कबीरा नम्बर 133 : सुवाल में इसरार करना	595
226	बिग़ैर त़लब व ख़्वाहिश के मिलने वाला माल लेने में ह़रज नहीं	597
227	कबीरा नम्बर 134 : बिला उ़ज़्र किसी की ह़ाजत बर आरी न करना	598
228	कबीरा नम्बर 135 : स-दक़ा दे कर एह़सान जताना	600

www.dawateislami.net

229	कबीरा नम्बर 136 : ह़ाजत मन्द को ज़ाइद अज़ ज़रूरत पानी से रोकना	605
230	कबीरा नम्बर 137 : मख़्लूक़ की ना शुक्री करना	607
231	कबीरा नम्बर 138 : अल्लाह तआ़ला के नाम पर जन्नत के सिवा कुछ और मांगना	609
232	कबीरा नम्बर 139 : अल्लाह तआ़ला के नाम पर मांगने वाले को कुछ न देना	609
233	स-दक़ा के फ़ज़ाइल, अह़काम और अक़्साम	613
234	खाना खिलाने, पानी पिलाने और सलाम को आ़म करने की फ़ज़ीलत	618
235	كتاب الصيام (रोज़ों का बयान)	
236	कबीरा नम्बर 140 : माहे र-मज़ान का कोई रोज़ा छोड़ देना	622
237	कबीरा नम्बर 141 : माहे र-मज़ान का कोई रोज़ा तोड़ देना	622
238	कबीरा नम्बर 142 : माहे र-मज़ान के क़ज़ा रोज़ों में जान बूझ कर ताख़ीर करना	625
239	कबीरा नम्बर 143 : औ़रत का शोहर की मौजूदगी में उस की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़ा रखना	626
240	कबीरा नम्बर 144 : ई़दैन और अय्यामे तश्रीक़ के रोज़े रखना	627
241	रोज़ों के फ़ज़ाइल पर अह़ादीसे मुबा-रका	628
242	हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल रात	632
243	كتاب الاعتكاف (ए'तिकाफ़ का बयान)	
244	कबीरा नम्बर 145 : ए'तिकाफ़ तर्क करना	634
245	कबीरा नम्बर 146 : ए'तिकाफ़ तोड़ना	634
246	कबीरा नम्बर 147 : मस्जिद में जिमाअ़ करना	634
247	كتاب الحج (ह़ज का बयान)	
248	कबीरा नम्बर 148 : क़ुदरत के बा वुजूद ह़ज न करना	635
249	ह़ज अदा न करने वाले की मह़रूमी	636

www.dawateislami.net

250	कबीरा नम्बर 149 : एहराम खोलने से पहले अपने इख़्तियार से जिमाअ़ करना	637
251	कबीरा नम्बर 150 : मोह़रिम का शिकार करना	638
252	कबीरा नम्बर 151 : शोहर की इजाज़त के बिग़ैर एह़राम बांधना	639
253	कबीरा नम्बर 152 : बैतुल ह़राम को ह़लाल ठहराना	640
254	कबीरा नम्बर 153 : ह़-रमे मक्का में बे दीनी फैलाना	640
255	इल्ह़ाद और ज़ुल्म की वज़ाह़त	641
256	मक्का शरीफ़ में सग़ीरा गुनाह भी कबीरा होते हैं	645
257	अमरद को देखने से आंखें उबल पड़ीं	646
258	अजनबी औ़रत से हाथ चिमट गया	646
259	अजनबी औ़रत का बोसा लेने से चेहरा मस्ख़ हो गया	646
260	ह़रम और अहले ह़रम के फ़ज़ाइल	647
261	बैतुल्लाह शरीफ़ का शिक्वा	648
262	ज़मीन का सब से पहला टुकड़ा और पहाड़	649
263	मह़बूब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मह़बूब शह्र	650
264	मक्कए मुकर्रमा में जंग नहीं होगी	651
265	बुन्यादे इब्राहीमी पर ता'मीरे नौ की ख़्वाहिश	651
266	ख़्वाहिशे न-बवी की तक्मील	651
267	बैतुल्लाह शरीफ़ पर चढ़ाई करने वालों का इब्रत नाक अन्जाम	652
268	बरोज़े क़ियामत सिफ़ारिश करने वाला पथ्थर	653
269	ज़बान और होंटों वाला पथ्थर	654
270	जन्नत के दो याक़ूत	654

www.dawateislami.net

271	70 हज़ार फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं	654
272	बीमारों की शिफ़ा	654
273	आबे ज़मज़म के फ़ज़ाइल	655
274	ह़ज्जे मबरूर की फ़ज़ीलत	655
275	गुनाहों का कफ़्फ़ारा और ह़ज्जे मबरूर का इन्आ़म	656
276	एक हज़ार मरतबा बैतुल्लाह शरीफ़ में ह़ाज़िरी	657
277	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेहमान	657
278	ख़ानए का'बा की दूसरी मरतबा ता'मीर	658
279	सफ़रे ह़ज में मरने वाले की फ़ज़ीलत	658
280	ह़ज पर ख़र्च करना राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने से अफ़्ज़ल	659
281	माहे र-मज़ान में उ़मरा की फ़ज़ीलत	659
282	एह़राम में दिन गुज़ारने वाले की फ़ज़ीलत	659
283	कबीरा नम्बर 154 : मदीना शरीफ़ वालों को डराना	661
284	कबीरा नम्बर 155 : मदीने वालों के साथ बुराई का इरादा करना	661
285	कबीरा नम्बर 156 : मदीने में कोई बिद्अ़ते सय्यिआ ईजाद करना	661
286	कबीरा नम्बर 157 : मदीने में बिदअ़ती को पनाह देना	661
287	कबीरा नम्बर 158 : मदीनए त़य्यिबा के दरख़्त काटना	661
288	कबीरा नम्बर 159 : मदीनए मुनव्वरह की घास काटना	661
289	मदीनए मुनव्वरह के फ़ज़ाइल	663
290	मदीना, शाम और यमन के लिये ब-र-कत की दुआ़	665

www.dawateislami.net

291	كتاب الاضحية (कुरबानी का बयान)	
292	कबीरा नम्बर 160 : कुरबानी के वुजूब का ए'तिक़ाद रखने वाले का इस्तित़ाअ़त के बा वुजूद कुरबानी न करना	666
293	कुरबानी के फ़ज़ाइल	667
294	कबीरा नम्बर 161 : कुरबानी के जानवर की खाल बेचना	668
295	كتاب الصيد والذبائح (शिकार और ज़ब्ह़ करने का बयान)	
296	कबीरा नम्बर 162 : ज़िन्दा जानवर के जिस्म का कोई हि़स्सा काटना	670
297	कबीरा नम्बर 163 : अ़लामत के लिये जानवर का चेहरा दाग़ना	670
298	कबीरा नम्बर 164 : जानवर को टारगेट बना कर निशाना बाज़ी करना	670
299	कबीरा नम्बर 165 : खाने के इलावा किसी और ग़रज़ से जानवर का शिकार करना	670
300	कबीरा नम्बर 166 : जानवर को अच्छी त़रह़ ज़ब्ह़ न करना	670
301	चेहरे पर मारने और दाग़ने की मुमा-न-अ़त और वईदें	671
302	बिला ज़रूरत परिन्दों को क़त्ल करने की मुमा-न-अ़त	671
303	जो रह़्म नहीं करता उस पर रह़्म नहीं किया जाता	672
304	ज़ब्ह़ के सह़ीह़ और ग़लत़ त़रीक़े	674
305	कबीरा नम्बर 167 : ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करना	676
306	कबीरा नम्बर 168 : जानवर को बत़ौरे नज़्र छोड़ देना और नफ़्अ़ न उठाना	680
307	चन्द मसाइल	680
308	باب العقيقة (अ़क़ीक़े का बयान)	
309	कबीरा नम्बर 169 : मलिकुल अम्लाक नाम रखना	683

www.dawateislami.net

310	كتاب الاطعمة (खाने पीने का बयान)	
311	कबीरा नम्बर 170 : नशा आवर पाक अश्या खाना	685
312	भंग के नुक़्सानात	692
313	अफ़्यून के नुक़्सानात	693
314	कबीरा नम्बर 171 : ह़ालते इज़्तिरार के इलावा रगों का बहता ख़ून पीना	696
315	कबीरा नम्बर 172 : ख़िन्ज़ीर या मुर्दार का गोश्त खाना	696
316	कबीरा नम्बर 173 : जो मुर्दार के हुक्म में हो उस का गोश्त खाना	696
317	कबीरा नम्बर 174 : किसी जानदार को आग से जलाना	703
318	कबीरा नम्बर 175 : नजिस या'नी नापाक चीज़ खाना	704
319	कबीरा नम्बर 176 : गन्दगी खाना	704
320	कबीरा नम्बर 177 : नुक़्सान देह चीज़ें खाना	704
321	चन्द मसाइले फ़िक़्हिय्यह	704
322	नफ़्अ़ व नुक़्सान देने वाले ह़ैवानात और इन के अह़काम	705
323	كتاب البيع (ख़रीद व फ़रोख़्त का बयान)	
324	कबीरा नम्बर 178 : आज़ाद इन्सान को बेचना	707
325	कबीरा नम्बर 179 : सूद लेना	708
326	कबीरा नम्बर 180 : सूद देना	708
327	कबीरा नम्बर 181 : सूदी दस्तावेज़ात लिखना	708
328	कबीरा नम्बर 182 : सूदी लैन दैन पर गवाह बनना	708
329	कबीरा नम्बर 183 : सूद में कोशिश करना	708

www.dawateislami.net

330	कबीरा नम्बर 184 : सूद में तआ़वुन करना	708
331	सूद की ता'रीफ़, रिबा अल फ़ज़्ल	709
332	रिबा बालीद, और रिबा अन्निसा	710
333	सूद की हुरमत ज़ाहिर करने वाले उमूर	713
334	सूद की मज़म्मत पर नाज़िल शुदा आयत की वज़ाहत	714
335	सूद का अन्जाम कमी पर होता है	718
336	आख़िरत में तबाही व बरबादी, सूदख़ोर का मुक़द्दर	719
337	सूद की मज़म्मत पर अहादीसे मुबा-रका	725
338	कबीरा नम्बर 185 : क़ाइलीने हुरमत के नज़्दीक सूद में ह़ीला करना	732
339	सूद में ह़ीला करना	732
340	बैअ़ की मम्नूअ़ सूरतें	733
341	कबीरा नम्बर 186 : منع الفحل (या'नी नर जानवर को जुफ़्ती के लिये देने से रोकना)	733
342	कबीरा नम्बर 187 : बुयूए़ फ़ासिदा और दीगर ह़राम ज़राएअ़ से रोज़ी कमाना	734
343	चोरी का माल ख़रीदने का गुनाह	737
344	ह़राम खाने की वजह से होने वाले गुनाह	740
345	कबीरा नम्बर 188 : ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करना	742
346	सब से बड़ा ज़ख़ीरा अन्दोज़ कौन ?	744
347	ज़ख़ीरा अन्दोज़ी की ता'रीफ़ और इस का हुक्म	745
348	कबीरा नम्बर 189 : मां और ना समझ बच्चे के दरमियान जुदाई डालना	747
349	कबीरा नम्बर 190 : शराब बनाने वाले को अंगूर और किशमिश बेचना	750

www.dawateislami.net

350	कबीरा नम्बर 191 : अमरद से बदकारी करने वाले को अमरद बेचना	750
351	कबीरा नम्बर 192 : लौंडी को बदकारी पर उक्साने वाले को लौंडी बेचना	750
352	कबीरा नम्बर 193 : लह्वो लइब के आलात बनाने वाले को लकड़ी बेचना	750
353	कबीरा नम्बर 194 : दुश्मनाने इस्लाम को बतौर इमदाद अस्लिहा बेचना	750
354	कबीरा नम्बर 195 : शराब पीने वाले को शराब बेचना	750
355	कबीरा नम्बर 196 : भंग पीने वाले को भंग बेचना	750
356	कबीरा नम्बर 197 : नजश या'नी धोके से क़ीमत में ज़ियादती करना	751
357	कबीरा नम्बर 198 : दूसरे की बैअ़ पर बैअ़ करना	751
358	कबीरा नम्बर 199 : दूसरे की ख़रीद पर ख़रीद करना	751
359	कबीरा नम्बर 200 : बैअ़ वग़ैरा में धोका देना	753
360	कबीरा नम्बर 201 : झूटी क़सम खा कर सामान बेचना	770
361	कबीरा नम्बर 202 : मक्रो फ़रेब और धोका देना	774
362	कबीरा नम्बर 203 : नाप तोल या पैमाइश में कमी करना	776
363	आयते करीमा (وَيۡلٌ لِّلۡمُطَفِّفِيۡنَ) की वज़ाहत	778
364	आग के दो पहाड़	780
365	कम तोलने के बारे में हिकायत	780
366	कम तोलने वालों की मज़म्मत	780
367	بَابُ الْقَرْض (क़र्ज़ का बयान)	
368	कबीरा नम्बर 204 : ऐसा क़र्ज़ जो क़र्ज़ ख़्वाह के लिये नफ़्अ़ बख़्श हो	781
369	بَابُ التَّفْلِيْس (कंगाल या दीवालिया होने का बयान)	
370	कबीरा नम्बर 205 : अदा न करने की निय्यत से क़र्ज़ लेना	781
371	कबीरा नम्बर 206 : अदाएगी की उम्मीद न होना	781

www.dawateislami.net

372	मक्रूज़ के साथ अल्लाह तआला होता है	785
373	कबीरा नम्बर 207 : ग़नी का क़र्ज़ के मुत़ा-लबे के बा'द बिला उ़ज़्र टाल मटोल करना	788
374	باب الحجر (ह़जर का बयान)	
375	कबीरा नम्बर 208 : यतीम का माल खाना	791
376	यतीम का माल खाने पर वईदें	794
377	यतीम की कफ़ालत और उस पर शफ़्क़त करना और बेवाओं की परवरिश करना	796
378	यतीम के सर पर हाथ फैरने की फ़ज़ीलत	797
379	कबीरा नम्बर 209 : गुनाह के काम में माल ख़र्च करना	800
380	باب الصلح (सुल्ह़ का बयान)	
381	कबीरा नम्बर 210 : पड़ोसी को रिहाइश के मुआ़-मले में तक्लीफ़ पहुंचाना	801
382	मोमिन और मुस्लिम में फ़र्क़	803
383	पड़ोसी की अज़िय्यत से बचने का अनोखा त़रीक़ा	804
384	पड़ोसियों के हुक़ूक़	805
385	नेक व बद होने की निशानी	809
386	पड़ोसियों की अक़्साम	810
387	कबीरा नम्बर 211 : बिला ज़रूरत मह्ज़ तकब्बुर की बिना पर ऊंची इमारत बनाना	811
388	कबीरा नम्बर 212 : ज़मीन के निशानात मिटा देना	814
389	कबीरा नम्बर 213 : नाबीना को रास्ता भुला देना	815
390	कबीरा नम्बर 214 : किसी रास्ते में बिला इजाज़ते मालिक तसर्रुफ़ करना	816
391	कबीरा नम्बर 215 : शारेए आ़म में ग़ैर शर-ई तसर्रुफ़ करना	816

www.dawateislami.net

392	कबीरा नम्बर 216 : क़ाइलीने हुरमत के नज़्दीक मुश्तरिका दीवार में बिला इजाज़ते शरीक तसर्रुफ़ करना	816
393	بَابُ الضَّمَانِ (ज़मान का बयान)	
394	कबीरा नम्बर 217 : ज़ामिन का सहीह़ ज़मानत से रुक जाना	817
395	بَابُ الشَّرِكَةِ (शिर्कत का बयान)	
396	कबीरा नम्बर 218 : मुश्तरिका कारोबार में एक शरीक का दूसरे से ख़ियानत करना	818
397	कबीरा नम्बर 219 : वकील का अपने मुवक्किल से ख़ियानत करना	818
398	بَابُ الْاِقْرَارِ (इक़रार का बयान)	
399	कबीरा नम्बर 220 : झूटा इक़रार करना	820
400	कबीरा नम्बर 221 : म-रज़े मौत में मक़रूज़ का इक़रार न करना	821
401	कबीरा नम्बर 222 : नसब का इन्कार करना	822
402	कबीरा नम्बर 223 : झूटे नसब का इक़रार करना	822
403	بَابُ الْعَارِيَةِ (आ़रियत का बयान)	
404	कबीरा नम्बर 224 : मुस्तआ़र चीज़ का मक़्सद से हट कर इस्ति'माल करना	823
405	कबीरा नम्बर 225 : मालिक की इजाज़त के बिग़ैर उसे आ़रिय्यतन दे देना	823
406	कबीरा नम्बर 226 : मुद्दते मुक़र्ररा के बा'द पास रखना या वापस न करना	823
407	بَابُ الْغَصْبِ (ग़सब का बयान)	
408	कबीरा नम्बर 227 : ग़सब या'नी ग़ैर के माल पर ज़ुल्मन क़ाबिज़ होना	824
409	ग़सब की मज़म्मत पर अहादीसे मुबा-रका	824
410	بَابُ الْاِجَارَةِ (इजारे का बयान)	
411	कबीरा नम्बर 228 : उजरत देने में ताख़ीर करना	829
412	**(बे जान अश्या का बयान)** कबीरा नम्बर 229 : हुरमत के क़ाइल के नज़्दीक अ़-रफ़ा, मुज़्दलिफ़ा या मिना में इमारत बनाना	830
413	कबीरा नम्बर 230 : मुबाह़ अश्या के इस्ति'माल से लोगों को रोकना	830

www.dawateislami.net

414	कबीरा नम्बर 231 : सड़क किराए पर देना	831
415	कबीरा नम्बर 232 : मुबाह पानी पर क़ाबिज़ हो कर मुसाफ़िर को उस से रोकना	831
416	باب الوقف (वक़्फ़ का बयान)	
417	कबीरा नम्बर 233 : वाक़िफ़ की शर्त की मुख़ा-लफ़त करना	832
418	باب اللقطه (लुक़्ते का बयान)	
419	कबीरा नम्बर 234 : लुक़्ता में ना जाइज़ तसर्रुफ़ करना	832
420	कबीरा नम्बर 235 : उस के मालिक को जानने के बा वुजूद उस से छुपाना	832
421	باب اللقيط (लक़ीत़ का बयान)	
422	कबीरा नम्बर 236 : गिरे पड़े बच्चे को उठाते वक़्त गवाह न बनाना	833
423	باب الوصية (वसिय्यत का बयान)	
424	कबीरा नम्बर 237 : वसिय्यत में वु-रसा को नुक़्सान पहुंचाना	834
425	वसिय्यत में नुक़्सान पहुंचाने वाली चन्द सूरतें	835
426	वसिय्यत के ज़रीए नुक़्सान पहुंचाने की एक सूरत	836
427	वसिय्यत में अ़द्ल को पेशे नज़र रखना	837
428	वसिय्यत करने की फ़ज़ीलत	837
429	باب الوديعة (वदीअ़त का बयान)	
430	कबीरा नम्बर 238 : वदीअ़त (अमानत) में ख़ियानत करना	839
431	कबीरा नम्बर 239 : रह्न रखी हुई चीज़ में ख़ियानत करना	839
432	कबीरा नम्बर 240 : किराए पर ली हुई चीज़ में ख़ियानत करना	839
433	मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब	848
434	मआख़िज़ो मराजेअ़	851

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हकीम है और दानाओं का क़ौल है : "فِعْلُ الْحَكِيْمِ لَايَخْلُوْ عَنِ الْحِكْمَةِ" या'नी हकीम का कोई फ़े'ल हिक्मत से ख़ाली नहीं होता।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों को ज़िन्दगी गुज़ारने का त़रीक़ा बताया और दो रास्ते दिखाए, एक रास्ता जन्नत की त़रफ़ जाता है और दूसरे की इन्तिहा जहन्नम है, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें सीधे रास्ते पर चलने और अच्छे त़रीक़े पर ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी का पाबन्द बनाया, इर्शादे बारी तआ़ला है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱،الاحزاب:۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।

और हर काम में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी का हुक्म यूं इर्शाद फ़रमाया :

وَمَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْاۚ (پ۲۸،الحشر:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो।

उस क़ादिर व हकीम परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हिक्मतों का बेश बहा ख़ज़ाना अ़त़ा फ़रमाया तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें जिन कामों का हुक्म फ़रमाया उन की बजा आ-वरी हम पर लाज़िम है क्यूं कि वोह भी बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ हकीम हैं और हकीम जिन बातों का हुक्म दे और जिन से मन्अ़ करे तो ज़रूर उन में कोई न कोई हिक्मत मुज़्मर होती है, पस जो शख़्स त़ाअ़ात पर अ़मल और गुनाहों से इज्तिनाब करेगा उसे जन्नत की अ-बदी व सर-मदी राह़तें अ़त़ा की जाएंगी और जहन्नम से नजात का सामान हो जाएगा।

सग़ीरा व कबीरा गुनाहों की पहचान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी इस ह़दीसे पाक से होती है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई गुनाह बार बार करने से सग़ीरा नहीं रहता और कोई गुनाह तौबा के बा'द कबीरा नहीं रहता।"

(كشف الخفاء،الحديث:۳۰۷۰،ج۲،ص۳۳۲)

कबीरा और सग़ीरा गुनाहों का फ़र्क़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **तफ़्सीरे नईमी** में इस त़रह़ बयान फ़रमाते हैं : "मुत़्लक़ गुनाहे कबीरा शिर्क है और मुत़्लक़ गुनाहे सग़ीरा बुरे ख़यालात। इन के दरमियान हर गुनाह अपने नीचे के लिहाज़ से कबीरा है, ऊपर के लिहाज़ से सग़ीरा। गुनाह का सग़ीरा कबीरा होना करने वाले के लिहाज़ से है। एक ही गुनाह हम जैसे गुनहगारों के लिये सग़ीरा है और मुत्तक़ी परहेज़ गारों के लिये कबीरा, जिस पर इताबे इलाही عَزَّوَجَلَّ हो जाता है। حسنات الابرار سيّئات المقربين

www.dawateislami.net

बल्कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम व ख़ास औलियाए इज़ाम की ख़ता़ओं पर भी पकड़ हो जाती है। ह़ालां कि हमारे लिये ख़ता़ गुनाह ही नहीं।'' (تفسیر نعیمی،سورۃ النسآء تحت الآیۃ:۳۱،ج۱،ص ۴۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ نُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا۝ (پ۵،النسآء:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमा-न-अ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुराद आबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی इस आयए मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''कुफ़्र व शिर्क तो न बख़्शा जाएगा अगर आदमी इसी पर मरा (**अल्लाह** की पनाह), बाक़ी तमाम गुनाह सग़ीरा हों या कबीरा **अल्लाह** की मशिय्यत में है चाहे इन पर अ़ज़ाब करे चाहे मुआ़फ़ फ़रमाए।'' (خزائن العرفان،پ۵،سورۃ النسآء،تحت الآیۃ۳۱،ص۱۴۹)

ज़ेरे नज़र किताब ''**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**'' अ़ल्लामा अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन ह़जर अल मक्की अल हैतमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی की पुर असर तालीफ़ **अज़्ज़वाजिरु अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर** के उर्दू तरजमे का पहला ह़िस्सा है। अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने इस किताब में गुनाहों की अक़्साम बित्तफ़्सील बयान फ़रमाई हैं और हर उस क़ौल व फ़े'ल को शामिल करने की कोशिश फ़रमाई है जो रब्बुल आ़-लमीन की ना राज़गी का बाइ़स बन सकता है। इस किताब में **ज़ाहिरी व बात़िनी** हर दो क़िस्म के गुनाहों का बयान है। पहली जिल्द में तक़रीबन **240** गुनाहों का तज़्किरा है जिन में से **67** बात़िनी और **173** ज़ाहिरी गुनाह हैं, जिन में से चन्द एक येह हैं : शिर्के अक्बर, शिर्के असग़र या'नी रियाकारी, ह़सद, कीना, तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी, मिलावट, मुना-फ़क़त, ह़िर्स व त़मअ़, उ-मरा की उन की अमारत की वजह से ता'ज़ीम करना और ग़ु-रबा की उन की ग़ुरबत की वजह से तज़्लील करना, ना शुक्री, बद गुमानी, मा'सिय्यत पर इसरार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हो जाना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद हो जाना वालिदैन की ना फ़रमानी, और **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم पर झूट बांधना वग़ैरा।

तक़रीबन हर मज़्मून की इब्तिदा में मुअल्लिफ़ मौज़ूअ़ के मुत़ाबिक़ आयाते क़ुरआनिया और अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र करते हैं इस के बा'द एक या इस से ज़ाइद तम्बीहात ज़िक्र करते हैं, इन तम्बीहात में वोह मौज़ूअ़ से मु-तअ़ल्लिक़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ تَعَالٰی के अक़्वाल और इख़्तिलाफ़ात ज़िक्र करते हैं, और इस के इ़लावा सब से आख़िर में अपनी ह़त्मी राय भी पेश फ़रमाते हैं।

www.dawateislami.net

"**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के लिये इस किताब में कसीर मवाद है। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** की **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के **शो'बए तराजिम** के म-दनी इस्लामी भाइयों ने इस किताब के तरजमे का बारे गिरां अपने सर लिया। वाक़िफ़ाने ह़ाल से मख़्फ़ी नहीं कि तरजमे का काम तस्नीफ़ व तालीफ़ से क़दरे मुश्किल होता है। मुस्तक़िल तस्नीफ़ करने वाला शर-ई एह़तियातें पेशे नज़र रखते हुए मवाद के इन्तिख़ाब, तरतीब, ह़जम वग़ैरा में क़दरे आज़ाद होता है जब कि मुतर्जिम को साहि़बे किताब की तरजुमानी करना होती है। फिर इस दौरान मक़्सूदे मुसन्निफ़ को पेशे नज़र रखना, मुसन्निफ़ के लिखे हुए अ़-रबी अल्फ़ाज़ के मुरादी मआ़नी मु-तअ़य्यन करना, मत़ालिब की मुन्तक़िली के लिये उर्दू ज़बान के मोज़ूं अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब करना, ख़व्वास के ज़ौक़े मुत़ा-लआ़ को सलामत रखने के साथ साथ अ़वाम की ज़ेह्नी सत़्ह़ को मद्दे नज़र रखते हुए मज़ामीन की ता'बीर आसान अल्फ़ाज़ में करना और फिर जामिइय्यत को भी पेशे नज़र रखना, ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिन से आसानी से ओ़हदा बर आ हुवा जा सके।

इस किताब को आप तक पहुंचाने के लिये **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के म-दनी इस्लामी भाइयों ने अनथक कोशिश की है इस में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **रब्बे रह़ीम** और उस के **मह़बूबे करीम** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की इ़नायतों और शैख़े त़रीक़त व शरीअ़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों का नतीजा हैं और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ह्मी को दख़्ल है।

तरजमा करते हुए दर्जे ज़ैल उमूर का ख़याल रखा गया है :

☆...... कोशिश की गई है कि पढ़ने वालों तक वोही कैफ़िय्यत मुन्तक़िल की जाए जो अस्ल किताब में जल्वे लुटा रही है।

☆...... अ़-रबी उ़न्वानात को सामने रखते हुए मुस्तक़िल उर्दू उ़न्वानात क़ाइम किये गए हैं।

☆...... इस के इ़लावा (मफ़्हूमे रिवायत को मद्दे नज़र रखते हुए) कई एक ज़ैली उ़न्वानात का इज़ाफ़ा भी किया गया है।

☆...... आयात का तरजमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर-ज-मए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से दर्ज किया गया है।

☆...... अह़ादीस की तख़्रीज अस्ल माख़ज़ से करने की कोशिश की गई है और बाक़ी ह़वाला जात में जो कुतुब दस्त याब हो सकीं उन से तख़्रीज की गई है।

☆...... दौराने कम्पोज़िंग अ़लामाते तरक़ीम का भी ख़याल रखा गया है।

☆...... तरजमे में ह़त्तल इम्कान आसान और आ़म फ़ह्म अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं।

www.dawateislami.net

☆...... अक्सर जगह मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी व मत़ालिब ब्रेकेट में लिख दिये गए हैं।

☆...... कई अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगा दिये गए हैं।

☆...... अह़ादीसे मुबा-रका का तरजमा करते वक़्त मुख़्तलिफ़ मशाहीर उर्दू मुतर्जिमीन की काविशों से भी रहनुमाई ली गई है।

☆...... बा'ज़ जगह बत़ौरे वज़ाह़त या अह़नाफ़ का मौक़िफ़ बयान करने के लिये ह़ाशिया लगाया गया है।

☆...... किताब के आख़िर में मआख़िज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त दे दी गई है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **म-दनी इन्आमात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब
(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** "हलाकत में डालने वाले सात गुनाहों से बचते रहो, वोह येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा जान को नाह़क़ क़त्ल करना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद खाना (6) जिहाद के दिन मैदान से फ़िरार होना और (7) सीधी सादी, पाक दामन, मोमिन औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाना।"

(صحيح البخاری، کتاب الوصايا، باب قول الله تعالیٰ ان الذين يأكلون اموال اليتامٰى......الخ، الحديث:٢٧٦٦، ص٢٢٢)

www.dawateislami.net

तआरुफ़े मुअल्लिफ़

नाम व नसब :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का नामे नामी इस्मे गिरामी **अह़मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन ह़जर अल हैतमी अस्सा'दी अल अन्सारी अश्शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى है, क़बीलए सा'द की निस्बत से सा'दी कहलाते हैं, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कुन्यत अबुल अ़ब्बास और शैख़ुल इस्लाम और शहाबुद्दीन के लक़ब से मुलक़्क़ब हैं, अपने ज़माने के अ़ज़ीम सूफ़ी, मुह़द्दिस और फ़क़ीह हैं।

विलादते बा सआ़दत :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत माहे र-जबुल मुरज्जब 909 सि.हिजरी मग़रिबी मिस्र में **अबुल हैतम** नामी मह़ल्ले में हुई, इसी निस्बत से आप को हैतमी कहा जाता है। बचपन में ही बाप का साया सर से उठ गया पस आप की कफ़ालत की ज़िम्मादारी इमाम शम्सुद्दीन बिन अबिल ह़माइल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और इमाम शम्सुद्दीन अश्शनावी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ले ली।

ता'लीम :

इमाम शम्सुद्दीन अश्शनावी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه आप को ले कर मह़ल्ला **अबुल हैतम** से **अह़मद अल बदवी** नामी मक़ाम की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गए, जहां आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इब्तिदाई उ़लूम ह़ासिल किये और बचपन में ही ह़िफ़्ज़े कुरआन की दौलत से मालामाल हो गए 924 सि.हिजरी में वोह आप को जामिउ़ल अज़्हर ले गए वहां आप ने मिस्र के नामवर उ़-लमा से इ़ल्मी फ़ैज़ ह़ासिल किया, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने खुलूस दिल से इ़ल्म ह़ासिल किया और कसीर उ़लूम में महारते ताम्मा ह़ासिल की म-सलन तफ़्सीर, ह़दीस, इ़ल्मे कलाम, फ़िक़्ह, फ़राइज़, ह़िसाब, नह़्व, सर्फ़, मआ़नी, बयान, मन्तिक़ और तसव्वुफ़ वग़ैरा।

असातिज़ए किराम :

जिन नाबिग़ए रोज़गार हस्तियों से आप ने इ़ल्मी इस्तिफ़ादा किया उन के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (1) शैख़ुल इस्लाम क़ाज़ी ज़-करिय्या رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (2) शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ सम्बाती رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (3) शैख़ शम्स मश्हदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (4) शैख़ शम्स सम्हूदी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (5) शैख़ुल अमीन ग़मरी तल्मीज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (6) शैख़ शहाब रमली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (7) शैख़ अबुल ह़सन बिकरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (8) शैख़ शम्स लक़ानी जै़रूती رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (9) शैख़ शहाब बिन नजार ह़म्बली رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (10) शैख़ रईसुल अति़ब्बा शहाब बिन साइग़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (11) शैख़ त़ब्लावी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه (12) इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

www.dawateislami.net

तलामिज़ा :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से बे शुमार तु–लबा ने इस्तिफ़ादा किया और आप से इल्म ह़ासिल करने की निस्बत से उ़–लमा एक दूसरे पर फ़ख़्र करते हैं जब कि सिर्फ़ शैख़ बुरहान बिन अल अह़दब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बिल मुशाफ़ा इल्म ह़ासिल किया।

सफ़रे ह़ज :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه 933 सि.हिजरी के इख़्तिताम पर मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए और फ़रीज़ए ह़ज की अदाएगी के बा'द एक साल वहीं क़ियाम फ़रमाया फिर 937 सि.हिजरी के आख़िर में अपनी औलाद के साथ दोबारा ह़ज किया तीसरी बार 940 सि.हिजरी में ह़ज किया और मक्कए मुकर्रमा में ही क़ियाम पज़ीर हो गए और वहीं दर्सो तदरीस, इफ़्ता और तस्नीफ़ो तालीफ़ की मसरूफ़िय्यत में मश्ग़ूल रहे।

तबह़्हुरे इल्मी :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत मु–तबह़्ह़िर आ़लिम और ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस थे, आप को बारगाहे ईज़्दी से क़वी ह़ाफ़िज़े की ला ज़वाल दौलत अ़ता की गई थी, आप के मह़फ़ूज़ात में से "**अल मिन्हाजुल फ़रई**" है, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की जलालते इल्मी का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि बीस साल से कम उ़म्र में ही आप के मशाइख़ ने मस्नदे इफ़्ता व तदरीस आप को अ़ता फ़रमा दी, आप दुन्या से बे रग़बत, बुराई से मन्अ़ करने वाले और नेकी की दा'वत आ़म करने वाले और अहले तसव्वुफ़ के बहुत मो'तक़िद थे चुनान्चे आप ने सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के मुन्किरीन इब्ने तीमिया और इब्ने क़य्यिम वग़ैरा का बड़े शद्दो मद के साथ रद्दो इब्त़ाल किया।

तसानीफ़ :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी कई यादगार तसानीफ़ छोड़ीं, जिन के नाम येह हैं :

(١)شرح مختصرالروض (٢)شرح مختصرابی الحسن البکری(٣)تحفة المحتاج شرح المنهاج(٤)فتح الجوادشرح الارشادوهوصغیر (٥)الامدادشرح الارشادوهوکبیر(٦)تحذیر الثقات عن اکل الکفتةوالقات (٧) کف الرعاع عن محرمات اللهووالسماع (هامش الزواجر)(٨)الاعلام بقواطع الاسلام(٩)الزواجر عن اقتراف الکبائر(١٠)الفتاوٰی الفقهية (١١)الفتاوٰی الهیتمیة:اربع مجلدات(١٢)درالغمامة فی الزروالطیلسان والعمامة(١٣)الجوهرالمنظم فی زیارة قبرالنبی المعظّم(١٤)شرح

www.dawateislami.net

المشکوٰۃ(۱۵)جزء فی العمامة النبویة(۱٦)الاربعون حدیثاً فی العدل(۱۷)الاربعون فی الجهاد(۱۸)فتح المبین فی شرح الاربعین النوویة(۱۹)الایضاح شرح احادیث النکاح(۲۰)الصواعق المحرقة فی الردعلی اهل البدع و الضلال و الزندقة(۲۱)تطهیرالجنان واللسان عن الخطوروالتفوه بثلب سیدنامعاویة بن ابی سفیان(۲۲)الفتاوٰی الحدیثیة(۲۳)معدن الیواقیت الملتمعةفی مناقب الائمة الأربعة(۲٤)الخیرات الحسان فی مناقب ابی حنیفة النعمان(۲۵)المولد النبوی(۲٦)شرح الهمزیة البوصیریة(۲۷)المنهج القویم فی مسائل التعلیم علی الفیة عبد الله بافضل شرح علی قطعة من الفیةبن مالك(۲۸)اتحاف اهل الاسلام بخصوصیات الصیام(۲۹)اتمام النعمة الکبرٰی علی العالم بمولد سیدولد آدم(۳۰)تحریرالکلام فی القیام عند ذکرمولدسید الانام(۳۱) ارشاد اهل الغنی والانافة(۳۲)فیماجاء فی الصدقة و الضیافة(۳۳)اسعاف الأبرار شرح مشکوٰة الأنوارفی الحدیث:أربع مجلدات(۳٤)اسنٰی المطالب فی صلة الأقارب(۳۵)اشرف الوسائل الی فهم المسائل(۳٦)تحریر المقال فی آداب واحکام وفوائد یحتاج الیهامؤدبوالاطفال(۳۷)تحفة الزوارالی قبر النبی المختار:أربع مجلدات(۳۸)تطهیر العیبة عن دنس الغیبة (۳۹)تلخیص الأحرٰی فی حکم الطلاق المعلق بالابرار(٤۰)تنبیه الاخیارعلی معضلات وقعت فی کتاب الوظائف واذکارالاذکار(٤۱)الدر المنضود فی الصلوٰة علی صاحب اللواء المعقود(٤۲)الدر المنظوم فی تسلیةالهموم(٤۳)زوائد سنن ابن ماجه(٤٤)فتح الإله بشرح المشکوٰة(٤۵)الفضائل الکاملة لذوی الولایة العادلة(٤٦)القول الجلی فی خفض المعتلی(٤۷)قرة العین فی ان التبرع لا یبطله الدین(٤۸)جزء ماورد فی المهدی(٤۹)القول المختصر فی علامات المهدی المنتظر(۵۰)مبلغ الأرب فی فضل العرب(۵۱)المناهل العذبة فی اصلاح ماوهی من الکعبة(۵۲)المنح المکیة فی شرح الهمزیة(۵۳)النحب الجلیلة فی الخطب الجزیلة(۵٤)نصیحة الملوك(۵۵)الایعاب فی شرح العباب(۵٦)شرح عین العلم

इन के इलावा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कई रसाइल और ह़वाशी लिखे, आप की तालीफ़ात अपने मौज़ूअ़ के ए'तिबार से काफ़ी व वाफ़ी हैं।

विसाले पुर मलाल :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चौंसठ साल आस्माने इल्मो फ़न के उफ़ुक़ पर दरख़्शन्दा सितारा बन कर चमकते रहे बिल आख़िर र-जबुल मुरज्जब 973 सि.या 974 सि.हिजरी मक्कए मुकर्रमा में इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो कर ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

www.dawateislami.net

को जन्नतुल **मु-अ़ला** में त़बरी मक़्बरा में दफ़्न किया गया। ज़ाहिरी त़ौर पर तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर्दा फ़रमा गए मगर सेंकड़ों साल गुज़र जाने के बा वुजूद आप का नाम ज़िन्दा व ताबन्दा है। मगर ह़क़ीक़त येह है कि

هَرگِزنَه مِيرَدآنكِه دِلَش زِندَه شُدبِعِشق या'नी जिन के दिल इ़श्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त से ज़िन्दा हों वोह कभी नहीं मरते।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो... और... उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।)

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(ماخوذ از فتاوی حدیثیہ، حاشیہ الفوائد البھیۃ،)

﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने फ़रमाया :** "आदमी का अपने वालिदैन को गालियां देना कबीरा गुनाहों में से है।" अ़र्ज़ की गई : "क्या कोई शख़्स अपने वालिदैन को भी गालियां दे सकता है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! जब आदमी किसी शख़्स के वालिदैन को गालियां देता है तो वोह जवाब में उस के वालिदैन को गालियां देता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان ، باب الکبائرواکبرھا،الحدیث:۲۶۳،ص۶۹۳)

www.dawateislami.net

शा-रफ़े इन्तिसाब

मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान, शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर,

वक़ारुल मिल्लते वद्दीन

ह़ज़रत अ़ल्लामा **मुफ़्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन**

क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के नाम

जिन्हों ने

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रत अ़ल्लामा

मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى

को ख़िलाफ़त से नवाज़ा

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुत्बतुल किताब

قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ○ (پ۱۱، یونس:۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से नसीह़त आई और दिलों की सिह़्ह़त और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं, जिस ने बन्दों पर रह़मत और अपने जलाले क़ुदरत और कमाले इ़ज़्ज़त को ना मुनासिब औसाफ़ से पाक करने वाली ग़ैरत की वजह से इन्हें कबीरा गुनाहों, बद कारियों, मम्नूअ़ कामों, मफ़ासिद, नफ़्सानी ख़्वाहिशात, लह्वो लइ़ब की बुराइयों और ना फ़रमानियों से रोकने वाली नुसूसे क़त़इय्या के ज़रीए़ बचाया। उस की किताबों की आयात इ़ल्मो ह़िक्मत के बह़्रे ज़ुख़्ख़ार और उस के अ़द्ल की ख़ुफ़्या तदबीरें हलाकत ख़ैज़ और तबाही व बरबादी में मुब्तला करने वाली हैं।

अगर बन्दे अपने ह़क़ीक़ी **रब** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी और उस की जानिब से मिलने वाली दाइमी रुस्वाई और अ़ज़ाब को लाज़िम करने वाले ग़ज़ब से न डरें, तो कहीं इस सबब से वोह सख़्त, दुश्वार गुज़ार रास्तों वाली चरागाह और हर चीज़ को जला कर ख़ाकिस्तर कर देने वाली जहन्नम की आग में न जा पड़ें। इसी त़रह़ जो लोग उस की रह़मत और रिज़ा की मूसलाधार बारिश और उस के मह़बूब और पसन्दीदा कामों में रग़बत, तौफ़ीक़ और हमेशा की ज़िन्दगी में बुज़ुर्गी के घर तक पहुंचने की तमन्ना नहीं करते और न ही इस के इरादे को मुक़द्दम कर के उख़रवी ज़िन्दगी को तरजीह़ देते हैं और न ही उस के ना पसन्दीदा बन्दों से मुंह फैरते हैं और न ही दुन्या व आख़िरत में नेक आ'माल के ज़रीए़ ग़ालिब रहते हैं, वोह भी अपने ह़ालात पर ग़ौर कर लें।

मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, ऐसी गवाही जिस के ज़रीए़ मैं उस की आ़ली जनाब की क़त़्ई ना फ़रमानी से मह़फ़ूज़ रहूं और उस के कामिल अह़बाब के साथ उस के मक़ामाते क़ुर्ब में ठिकाना बना सकूं। नीज़ मैं गवाही देता हूं कि हमारे आक़ा, सय्यिदुल वरा, अह़मदे मुज्तबा, ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें इन के अह़काम बजा लाने, इन के मन्अ़ कर्दा उमूर से रुक जाने और इन के अख़्लाक़ अपनाने का हुक्म दिया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पर, इन की आल पर और इन के अस्ह़ाब पर अपनी ज़ात के दवाम तक मुश्क की पाकीज़ा और नफ़ीस तरीन ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र दुरूदो सलाम भेजे, जिन की सच्चाई की सफ़ेद चादर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुख़ा-लफ़त की गन्दगी से आलूदा होने से मह़फ़ूज़ रखा और उन्हें अपनी शदीद ख़्वाहिशात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर क़ुरबान करने का जज़्बा और हर क़िस्म के ह़ालात में अह़काम की बजा आ-वरी और नवाही से बचने का शुऊ़र दिया। इसी त़रह़ क़ियामत के उस दिन तक भलाई में उन की पैरवी करने वालों पर भी दुरूदो सलाम हो जब हर एक के साथ उस के अ़मल के मुत़ाबिक़ सुलूक किया जाएगा और गुनहगार से कहा जाएगा कि ना फ़रमानी का बदला रुस्वाई और बरबादी के इलावा कुछ नहीं जब कि नेकूकार से कहा जाएगा कि नेकी का बदला नेकी के इलावा क्या है?

www.dawateislami.net

वज्हे तालीफ़

953 सि.हिजरी से ले कर एक त़वील अ़र्से तक मेरे दिल में येह ख़्वाहिश रही कि मैं **कबीरा गुनाहों** से मु-तअ़ल्लिक़ एक ऐसी किताब तालीफ़ करूं जिस में कबीरा गुनाहों के अह़काम, इन की वई़दें और इन के तर्क पर किये गए अज्रो सवाब के वा'दों को जम्अ़ कर दूं और इसे ख़ूब मुफ़स्सल और कसीर दलाइल से आरास्ता करूं, मगर मैं एक क़दम उठाता और दूसरा हटा लेता क्यूं कि मक्कए मुकर्रमा में मेरे पास इस किताब के लिये मवाद नहीं था, यहां तक कि मैं इमामे वक़्त और अहले ज़माना के उस्ताद ह़ाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह ज़हबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रफ़ मन्सूब कबीरा गुनाहों से मु-तअ़ल्लिक़ एक किताब पाने में काम्याब हुवा, मगर उस से तिश्नगी न मिटी, क्यूं कि उन्हों ने उस किताब में जितने इख़्तिसार से काम लिया है वोह उन के मर्तबे को उन जैसे लोगों के मुक़ाबले में कमज़ोर कर देता है। क्यूं कि उन्हों ने उस में चन्द अह़ादीस और ह़िकायात जम्अ़ कर दीं और उन के बारे में अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के कलाम में गहरी नज़र न करने के साथ साथ उन्हें उन के मह़ल में भी ज़िक्र नहीं किया और न ही इस सिल्सिले में अइम्मए मु-तक़द्दिमीन के कलाम से मदद ली। लिहाज़ा कबीरा गुनाहों की बुराई के ज़ुहूर और अक्सर लोगों के ज़ाहिरो बात़िन में उन की परवाह न करने जैसे ह़ालात ने मुझे इस काम पर आमादा किया कि मैं एक ऐसी किताब तालीफ़ करूं, जो कि उन तमाम उमूर पर मुश्तमिल हो जो मेरा मक़्सूद हैं और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो येह किताब गुनाहों से रोकने का एक बहुत बड़ा सबब और ज़बर दस्त नसीह़त साबित होगी, क्यूं कि लोग ज़माना परस्त, लह्वो लइ़ब के पुजारी और अह़कामे इलाहिय्यह عَزَّوَجَلَّ को इस क़दर फ़रामोश कर चुके हैं कि इन पर फ़िस्क़ो फ़ुजूर की बातें ग़ालिब आ गई हैं, नीज़ वोह हमेशगी के घर से मुंह मोड़ कर और धोका व फ़रेब में मुब्तला हो कर शहवात और ना फ़रमानियों की सर ज़मीन के बासी बन चुके हैं, यहां तक कि उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर और उस की गिरिफ़्त की भी कोई परवाह नहीं रही ह़ालां कि वोह जानते नहीं कि उन को इतनी ढील मह़ज़ इस वजह से दी जा रही है कि वोह अपनी इन्ही ना फ़रमानियों के बाइ़स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब के ह़क़दार बनें। इसी लिये मैं ने अपनी इस किताब का नाम "**अज़्ज़वाजिर अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर**" रखा, और मुझे उम्मीद है कि अगर येह किताब मेरी बताई हुई तरतीब के मुत़ाबिक़ मुकम्मल हो गई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के ज़रीए़ शहरी और देहाती हर शख़्स को नफ़्अ़ बख़्शेगा और इसे ज़ाहिरी व बात़िनी पाकीज़गी का सबब बना देगा।

मेरा भरोसा उसी पर है और वोह क्या ही अच्छा कारसाज़ है, मैं हर छोटी बड़ी मुश्किल में उसी से फ़रियाद करता हूं और नेकी की तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है, मैं उसी पर भरोसा करता हूं और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं।

www.dawateislami.net

हुस्ने तरतीब :

मैं ने अपनी इस किताब को जो तरतीब दी है वोह एक मुक़द्दमा, दो अब्वाब और एक ख़ातिमे पर मुश्तमिल है।

मुक़द्दमा में कबीरा और वोह गुनाह जिन का आ़म तौ़र पर लोग इरतिकाब करते हैं की ता'रीफ़, इन की ता'दाद और इन के मु-तअ़ल्लिक़ात मज़्कूर हैं।

पहला बाब उन कबाइर पर मुश्तमिल है जिन का तअ़ल्लुक़ बातिन और इस के उन तवाबेअ़ से है जो अब्वाबे फ़िक़्ह से मुना-सबत नहीं रखते।

दूसरा बाब उन कबाइर पर मुश्तमिल है जिन का तअ़ल्लुक़ ज़ाहिर से है और मैं इन्हें अपनी फ़िक़्हे शाफ़िइय्या की तरतीब के मुताबिक़ मुरत्तब करूंगा ताकि महल के मुताबिक़ इसे समझने में आसानी हो, अलबत्ता इन में से हर एक को ज़िक्र करते वक़्त बुराई और बदी के लिहाज़ से इस के मरातिब की तफ़्सील की त़रफ़ ऐसे इशारे दूंगा, जो इन की त़रफ़ रहनुमाई के साथ साथ उन पर दलालत भी करेंगे।

ख़ातिमा तौबा के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल है जब कि तौबा की शराइत और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात इसी त़रह़ ''बाबुश्शहादात'' में ज़िक्र करूंगा जिस त़रह़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی इसे ''बाबुश्शहादात'' में ज़िक्र करते हैं। फिर जहन्नम, इस की सिफ़ात और इस के मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों का तज़्किरा होगा। नीज़ जन्नत, इस के औसाफ़ और इस में शामिल मुख़्तलिफ़ इन्आ़मात और ने'मतों का तज़्किरा भी होगा, ताकि येह मशिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ के मुताबिक़ जहन्नम की त़रफ़ ले जाने वाले कबीरा गुनाहों से रोकने का ज़बर दस्त दाई बन जाए और इस त़रह़ गुनाहों से रुक जाना हमेशा की ने'मतें पा लेने में काम्याबी का सबब और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के हुसूल का बाइस बन जाए।

यक़ीनन येही सब से बड़ी काम्याबी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस का अहल बनाए और हम पर हमेशा अपने जूदो करम की बारिश बरसाता रहे और हमारा ख़ातिमा अच्छा फ़रमाए और हमें अपने फ़ज़्ल से अर-फ़ओ़ आ'ला मक़ाम तक पहुंचाए, बेशक वोह हर चीज़ पर क़ादिर और हर दुआ़ क़बूल फ़रमाने वाला है। (اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم)

www.dawateislami.net

मुक़द्दमा
गुनाहे कबीरा की ता'रीफ़, ता'दाद और दीगर मु-तअ़ल्लिक़ात

अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त ने किसी भी गुनाह के सग़ीरा होने का इन्कार किया और इर्शाद फ़रमाया : "तमाम गुनाह, कबीरा ही हैं।" इन अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में उस्ताज़ अबू इस्हाक़ अस्फ़रायनी, क़ाज़ी अबू बक्र बाक़लानी भी शामिल हैं, जब कि इमामुल ह़-रमैन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस बात को "**अल इर्शाद**" में और अ़ल्लामा इब्ने क़ुशैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "**अल मुर्शिद**" में नक़्ल किया है बल्कि अ़ल्लामा इब्ने फ़ौरक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस क़ौल को इशाइरा से नक़्ल कर के अपनी तफ़्सीर में **मुख़्तार मज़्हब** के तौर पर ज़िक्र किया है। चुनान्चे,

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हमारे नज़्दीक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हर ना फ़रमानी गुनाहे कबीरा है और किसी गुनाह को सग़ीरा या कबीरा सिर्फ़ उस से बड़े दूसरे गुनाह की त़रफ़ निस्बत के ए'तिबार से कहा जाता है।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस आयते मुबा-रका :

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ (پ۵،النسآء:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमा-न-अ़त है।

में येह तावील बयान की, कि इस से मुराद इस का ज़ाहिरी मा'ना है।

मो'तज़िला कहते हैं : "गुनाहों को दो अन्वाअ़ या'नी सग़ीरा और कबीरा में तक़्सीम करना सह़ीह़ नहीं।"

बा'ज़ अवक़ात अ़ल्लामा इब्ने फ़ौरक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इसी बात पर अस्ह़ाबे मज़्हब के इत्तिफ़ाक़ का दा'वा भी किया गया और बा'ज़ उ़-लमा जैसे इमाम तक़िय्युद्दीन सुबकी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी इसी पर ए'तिमाद किया है।

क़ाज़ी अ़ब्दुल वह्हाब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "किसी गुनाह को सग़ीरा कहना उसी सूरत में मुम्किन है जब इस मा'ना के ए'तिबार से कहा जाए कि येह गुनाह, कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब की सूरत में सग़ीरा होता है।"

येह क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की इस रिवायत के मुवाफ़िक़ है जिसे इमाम त़-बरानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रिवायत किया है मगर येह रिवायत मुन्क़त़ेअ़ है। (या'नी वोह ह़दीस जिस के एक या ज़ियादा रावी साक़ित़ हों)

चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के सामने कबीरा गुनाहों का तज़्किरा किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया कि "हर वोह अ़मल जिसे करने से मन्अ़ किया गया है वोह कबीरा है।"

और इन्ही से येह भी मरवी है : "हर वोह अ़मल जिस में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ना फ़रमानी की जाए गुनाहे कबीरा है।"

www.dawateislami.net

जम्हूर उ-लमाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : "गुनाह की दो क़िस्में हैं : (1) सग़ीरा या'नी छोटे गुनाह और (2) कबीरा या'नी बड़े गुनाह।"

इन दोनों फ़रीक़ों के नज़्दीक इन के मा'ना में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं बल्कि इख़्तिलाफ़ तो इन के सग़ीरा या कबीरा नाम रखे जाने में है, क्यूं कि इस बात पर तो सब का इज्माअ़ है कि बा'ज़ गुनाह आदमी की अ़दालत (या'नी गवाह बनने की सलाहिय्यत) को ऐबदार कर देते हैं जब कि बा'ज़ गुनाह अ़दालत में नक़्स नहीं डालते, लिहाज़ा **पहले गुरौह** ने गुनाह को सग़ीरा कहने से इज्तिनाब किया और इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़मत और उस के अ़क़ाब की सख़्ती की त़रफ़ देखते हुए और उस की जलालत की वजह से उस की ना फ़रमानी को सग़ीरा न कहा क्यूं कि गुनाहे सग़ीरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़मत के पेशे नज़र न सिर्फ़ बड़ा बल्कि बहुत बड़ा है।

जम्हूर उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने इस मफ़्हूम पर कुछ ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया, क्यूं कि येह एक बदीही और वाज़ेह़ बात है बल्कि इन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ (پ۲۶،الحجرٰت:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कुफ़्र और हुक्म अ़दूली और ना फ़रमानी तुम्हें ना गवार कर दी।

की वजह से गुनाहों को दो क़िस्मों या'नी सग़ीरा और कबीरा में तक़्सीम कर दिया। इस आयते करीमा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ना फ़रमानी के तीन द-रजे बयान फ़रमाए और इन में से बा'ज़ को फ़ुसूक़ या'नी हुक्म अ़दूली कहा जब कि बा'ज़ को फ़िस्क़ से ता'बीर न फ़रमाया। नीज़ इन उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से भी इस्तिद्लाल किया है :

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ (پ۲۷،النجم:۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो बड़े गुनाहों और बे ह़याइयों से बचते हैं मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए।

अ़न्क़रीब एक सह़ीह़ ह़दीसे मुबा-रका पेश की जाएगी जिस में बयान किया गया है कि "कबीरा गुनाह सात हैं।"

एक रिवायत में है कि "कबीरा गुनाह नव हैं।"

एक सह़ीह़ ह़दीस में येह भी है कि "यहां से ले कर वहां (म-सलन एक नमाज़ से दूसरी नमाज़) तक बीच के गुनाह मिटा दिये जाते हैं जब तक बन्दा कबीरा गुनाहों से बचता रहे।"

चूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कबीरा गुनाहों को दीगर गुनाहों से ख़ास फ़रमा दिया है

www.dawateislami.net

लिहाज़ा इस से मा'लूम हुवा कि अगर तमाम गुनाह कबीरा होते तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हरगिज़ ऐसा न फ़रमाते और जिस गुनाह का फ़साद बड़ा हो वोह कबीरा कहलाने ही का मुस्तहिक़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान :

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَاتُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ (پ۵،النسآء:۳۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमा-न-अत है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे।

गुनाहों के सग़ीरा और कबीरा दो क़िस्मों में मुन्क़सिम होने पर सरीह़ दलील है।

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इसी लिये फ़रमाते हैं : ''कबीरा और सग़ीरा गुनाहों के माबैन फ़र्क़ का इन्कार करना दुरुस्त नहीं क्यूं कि इस की पहचान शरीअ़त के उसूलों से हो चुकी है।''

सग़ीरा और कबीरा गुनाहों के दरमियान **फ़र्क़** के क़ाइल ह़ज़रात का गुनाहे कबीरा की ता'रीफ़ में इख़्तिलाफ़ है और हमारे शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इस की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ें बयान की हैं।

पहली ता'रीफ़ :

''वोह गुनाह जिस का मुर-तकिब क़ुरआनो सुन्नत में मन्सूस (या'नी सरा-ह़तन बयान की गई) किसी ख़ास **सख़्त वईद का मुस्तहिक़ हो**।''

बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने **वईद** के साथ **सख़्त** की क़ैद को ह़ज़्फ़ कर दिया क्यूं कि उन का कहना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हर **वईद सख़्त** होती है लिहाज़ा इस का तज़्किरा करने की ज़रूरत ही नहीं थी और दूसरा येह कि इस ता'रीफ़ में येह तस्रीह़ भी की गई है कि वोह **वईद** किताब व सुन्नत में हो, येह भी बयान करने की ज़रूरत नहीं थी क्यूं कि **वईद** होती ही वोह है जो किताब व सुन्नत में मौजूद हो।

दूसरी ता'रीफ़ :

''हर वोह गुनाह जो **ह़द** को वाजिब करे वोह कबीरा है।'' सय्यिदुना इमाम बग़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वग़ैरा इसी ता'रीफ़ के क़ाइल हैं, जब कि सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''येह दोनों वोह ता'रीफ़ें हैं जो अक्सर कुतुब में पाई जाती हैं, लिहाज़ा उ़-लमाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم इस ता'रीफ़ को तरजीह़ देने में मैलान रखते हैं मगर पहली ता'रीफ़ इन की बयान कर्दा कबीरा गुनाहों की तफ़्सील की वजह से ज़ियादा मुनासिब है इस लिये कि उ़-लमाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم ने बयान किया है कि बहुत से कबीरा गुनाह ऐसे हैं जिन में ह़द वाजिब नहीं होती जैसे सूद खाना, यतीम का माल खाना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, क़त़ए रेह़्मी करना, जादू करना, चुग़ुल ख़ोरी, झूटी गवाही देना, शिक्वा करना, बदकारी की दलाली करना और बे ग़ैरती वग़ैरा।''

इस से पता चला कि पहली ता'रीफ़ दूसरी ता'रीफ़ से ज़ियादा सह़ीह़ है। सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस फ़रमान को ''**अल ह़ाविय्युस्सग़ीर**'' के मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी नक़्ल किया है कि ''उ़-लमाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم दूसरी ता'रीफ़ को तरजीह़ देने की जानिब

www.dawateislami.net

माइल हैं।" जब कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को येह फ़रमाते हुए देखा कि दोनों ह़ज़रात का येह क़ौल बड़ा अ़जीब है कि "उ़-लमाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِم दूसरी ता'रीफ़ की जानिब माइल हैं जो कि मक़्सूद से दूर है।" ह़ालां कि जब उन्हों ने पहली ता'रीफ़ को येह कहते हुए तरजीह़ दी कि हमारे नज़्दीक वोह गुनाह कबीरा है जिस पर नस क़ाइम हो अगर्चे उस पर ह़द का नाफ़िज़ होना ज़रूरी नहीं तो इस पर किया जाने वाला येह ए'तिराज़ ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाता था कि बुख़ारी व मुस्लिम में वालिदैन की ना फ़रमानी और झूटी गवाही को कबीरा शुमार किया गया है इस के बा वुजूद इन पर कोई ह़द नहीं। तो जिस त़रह़ इस दूसरी ता'रीफ़ पर उन्हों ने येह मिसालें दे कर ए'तिराज़ किया इसी त़रह़ उस पहली ता'रीफ़ पर भी येह ए'तिराज़ पैदा होता है कि बा'ज़ गुनाह ऐसे भी हैं कि उन का कबीरा होना तो मा'लूम है लेकिन उन पर कोई नस वारिद नहीं, जैसा कि अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कई ऐसे कबीरा गुनाहों का तज़्किरा किया है जिन पर बिल इत्तिफ़ाक़ कोई भी नस वारिद नहीं।

तीसरी ता'रीफ़ :

हर वोह गुनाह जिस की हु़रमत पर कोई नस वारिद हो या उस की जिन्स में से किसी फे़'ल पर ह़द वाजिब होती हो और उस के इरतिकाब से फ़ौरी त़ौर पर लाज़िम होने वाले फ़र्ज़ को छोड़ना पड़ता हो और गवाही, रिवायत और क़सम में झूट बोलना पड़े तो येह सब कबीरा गुनाह हैं।

अ़ल्लामा हरवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी किताब "**अल अशराफ़**" और क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी किताब "**अरौंज़ा**" में येह इज़ाफ़ा किया है कि "इज्माए आ़म (या'नी सलफ़ से मन्क़ूल हर दौर में क़ाइम रहने वाला इज्माअ़) का मुख़ालिफ़ हर क़ौल भी गुनाहे कबीरा है।"

चौथी ता'रीफ़ :

सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के नज़्दीक उमूरे दीनिया की अन्जाम देही में ला परवाही व बे तवज्जोही से काम लेना कबीरा गुनाह है, क्यूं कि दीनी उमूर की बजा आ-वरी में ह़द से ज़ियादा नरमी इख़्तियार करना अ़दालत (या'नी गवाह बनने की सलाह़िय्यत) को बात़िल कर देता है और ला परवाही व बे तवज्जोही उमूरे दीनिया की अदाएगी इस बात को साबित नहीं करती बल्कि उस के मुर-तकिब से ज़ाहिरी त़ौर पर हु़स्ने ज़न बाक़ी रहता है और इस की अ़दालत को बात़िल नहीं करता।

सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : "दो मु-तज़ाद चीज़ों में फ़र्क़ करने के लिये येह सब से बेहतर ता'रीफ़ है।" येही वजह है कि अ़ल्लामा इब्ने क़ुशैरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने "**अल मुर्शिद**" में इसे ज़िक्र किया और सय्यिदुना इमाम सुबकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वग़ैरा ने इस ता'रीफ़ को पसन्द किया है।

इस से मुराद येह है कि अगर एक इन्सान किसी फे़'ल को हेच और ह़क़ीर जानते हुए सर अन्जाम दे लेकिन उस का येह हेच समझना **दिया-नतन** न हो बल्कि ह़द द-रजा तक़्वा और उम्मीदे मग़्फ़िरत की वजह से हो तो गुनाहे कबीरा होगा और अगर वोह फे़'ल महज़ दिल में पैदा होने वाले वस्वसे या फिर

www.dawateislami.net

आंख के बहक जाने के सबब हो तो सग़ीरा होगा। यहां **दिया-नतन** से मुराद येह है कि वोह अस्लन इस फ़े'ल को ह़क़ीर न जानता हो क्यूं कि उमूरे दीनिया में से किसी छोटे से फ़े'ल को भी ह़क़ीर समझना कुफ़्र है। येही वजह है कि ता'रीफ़ में जो अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये वोह ला परवाही व बे तवज्जोही के हैं, येह नहीं कहा कि क़त्अ़न इन की परवाह ही न की जाए। कुफ़्र अगर्चे सब से बड़ा कबीरा गुनाह है लेकिन यहां मुराद इस के इलावा वोह अफ़्आ़ल हैं जो कि एक मुसल्मान से सरज़द होते हैं।

अ़ल्लामा बरमावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم ने इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़ौल को तरजीह़ दी शायद इस वजह से कि अह़ादीस में जो कबीरा गुनाहों की तफ़्सील मरवी है और क़ियास के मुत़ाबिक़ जो गुनाहे कबीरा हैं इन सब को इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल किफ़ायत करता है।" गोया ऐसे मह़सूस हो रहा है कि अ़ल्लामा बरमावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के उन ए'तिराज़ात को नहीं देखा जो उन्हों ने सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस क़ौल के बारे में किये हैं।

ह़ासिले कलाम येह है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कलाम में ग़ौरो फ़िक्र करें तो येह बात मा'लूम होगी कि इन के नज़्दीक इस ता'रीफ़ में कबीरा पर कोई ह़द नहीं, उन लोगों के बर अ़क्स जिन्हों ने इस ता'रीफ़ से येह समझा है कि यहां भी ह़द है, क्यूं कि येह ता'रीफ़ उन छोटी ह़क़ीर बातों को भी शामिल है जो कबीरा गुनाह नहीं, नीज़ इस ता'रीफ़ में उन छोटी ह़क़ीर बातों को भी शामिल कर दिया गया है जिन से अ़दालत बात़िल हो जाती है अगर्चे वोह गुनाहे सग़ीरा ही क्यूं न हों।

येह ता'रीफ़ पहली दो ता'रीफ़ों से ज़ियादा आ़म है क्यूं कि येह आयन्दा आने वाले तमाम कबीरा गुनाहों पर सादिक़ आती है मगर येह ता'रीफ़ मानेअ़ नहीं जैसा कि आप जान चुके हैं कि येह सग़ीरा गुनाहों पर भी सादिक़ आती है म-सलन सग़ीरा पर इस्रार वग़ैरा।

अ़ल्लामा बरमावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से गुज़श्ता तौजीहात नक़्ल कर के इर्शाद फ़रमाया : "बा'ज़ मुह़क़्क़िक़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि इन तमाम ता'रीफ़ात को जम्अ़ कर लेना चाहिये ताकि कुरआनो सुन्नत और क़ियास से मा'लूम शुदा कबीरा गुनाहों को शुमार किया जा सके क्यूं कि बा'ज़ गुनाहों पर एक ता'रीफ़ पूरी त़रह़ सादिक़ नहीं आती तो बा'ज़ पर दूसरी, इस लिये इन ता'रीफ़ात को जम्अ़ करने ही से इन की सह़ीह़ ता'दाद मा'लूम हो सकती है।"

मैं (मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) **कहता हूं :** "इमाम साह़िब की इस ता'रीफ़ में जो भी थोड़ा बहुत ग़ौरो फ़िक्र करे तो उस पर येह बात ज़ाहिर हो जाएगी कि आयन्दा बयान किये जाने वाले हर गुनाह पर येह ता'रीफ़ पूरी उतरती है।" और "**अल ख़ादिम**" में सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़ौल को नक़्ल करने के बा'द साह़िबे किताब लिखते हैं : "तह़क़ीक़ येह है कि इन वुजूहात में से हर एक कबीरा गुनाहों की बा'ज़ अक़्साम पर ही मुन्ह़सिर है, जब कि इन सब के मज्मूए़ से कबीरा गुनाहों की मा'रिफ़त का क़ाइदए कुल्लिया ह़ासिल हो जाता है।"

www.dawateislami.net

इसी लिये अ़ल्लामा मावरदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "**कबीरा गुनाह** वोह है जो ह़द को वाजिब करे या जिस पर वई़द आई हो।" और अ़ल्लामा इब्ने अ़त़िय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "हर वोह गुनाह जिस पर ह़द वाजिब हो या जिस के इरतिकाब पर जहन्नम की वई़द या ला'नत आई हो वोह कबीरा है।" और इमाम राफ़ेई़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बयान कर्दा ता'रीफ़ पर येह ए'तिराज़ वारिद होता है कि "अगर कोई शख़्स चोरी के निसाब से कम मालियत का माल ग़सब कर ले तो वोह गुनाहे सग़ीरा का मुर-तकिब है ह़ालां कि इस को लोग अच्छा ख़याल नहीं करते, लिहाज़ा क़ियास का तक़ाज़ा तो येह है कि येह गुनाहे कबीरा होना चाहिये और इसी त़रह़ अजनबी औ़रत को बोसा देना सग़ीरा गुनाह है ह़ालां कि ऐसा करने वाले को लोग अच्छा ख़याल नहीं करते, तो इस का जवाब येह है कि इन दोनों गुनाहों का सग़ीरा होना उन उ़-लमाए किराम की राय के मुत़ाबिक़ है जो इन तमाम ता'रीफ़ात को जम्अ़ करने वाले हैं, जैसा कि इस का बयान आगे आएगा जब कि सय्यिदुना इमाम राफ़ेई़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ येह दोनों कबीरा हैं लिहाज़ा ए'तिराज़ ही न रहा, नीज़ येह ए'तिराज़ तो उस वक़्त दुरुस्त होता जब उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ होता कि येह सग़ीरा गुनाह हैं ह़ालां कि येह ऐसे अफ़्आ़ल हैं जिन के करने वाले को लोग अच्छा ख़याल नहीं करते।"

पांचवीं ता'रीफ़ :

"हर वोह फ़े'ल जो ह़द वाजिब करे या उस के इरतिकाब पर वई़द आई है वोह कबीरा है जब कि जिस फ़े'ल में गुनाह कम हो वोह सग़ीरा है।" इस ता'रीफ़ को अ़ल्लामा मावरदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "**अल ह़ावी**" में ज़िक्र किया है।

छटी ता'रीफ़ :

"हर वोह गुनाह जो बज़ाते ख़ुद ह़राम और फ़ी नफ़्सिही मम्नूअ़ हो वोह कबीरा गुनाह है।" अगर कोई शख़्स ऐसे फ़े'ल का इरतिकाब इन दोनों क़ुयूदात या ह़ुरमत की दीगर वुजूहात को पेशे नज़र रख कर करे तो येह ज़ियादा बुरा है जैसे ज़िना एक कबीरा गुनाह है और पड़ोसी की बीवी से ज़िना करना और ज़ियादा सख़्त बुरा है। उस वक़्त तक सग़ीरा गुनाह सग़ीरा ही रहेगा जब तक कि उस का मर्तबा मन्सूस अ़लैह (या'नी जिस के कबीरा होने का वाज़ेह़ ह़ुक्म हो) से कम हो या वोह मन्सूस अ़लैह से कम द-रजा की किसी और इ़ल्लत के मुक़ाबिल हो और अगर उस में दो या दो से ज़ियादा ह़ुरमत की वुजूहात पाई जाएं तो वोह सग़ीरा, कबीरा हो जाएगा, लिहाज़ा बोसा देना, छूना और रानों पर रान रखना सग़ीरा गुनाह हैं लेकिन पड़ोसी की बीवी के साथ येह काम कबीरा गुनाह हैं।[1] जैसा कि अ़ल्लामा **इब्ने रिफ़्अ़ह** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़ाज़ी ह़ुसैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से और उन्हों ने अ़ल्लामा ह़लीमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

---

1. अजनबी औ़रत के चेहरे और हथेली को अगर्चे देखना जाइज़ है मगर छूना जाइज़ नहीं इस लिये कि शह्वत का मुकम्मल अन्देशा है क्यूं कि नज़र के जवाज़ की वजह ज़रूरत (और बलवाए आ़म) है। छूने की ज़रूरत नहीं लिहाज़ा छूना ह़राम है। इस से मा'लूम हुवा कि इन से मुसा-फ़ह़ा जाइज़ नहीं इस लिये ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ब वक़्ते बैअ़त भी औ़रतों से मुसा-फ़ह़ा न फ़रमाते सिर्फ़ ज़बान से बैअ़त लेते, हां अगर वोह बहुत बूढ़ी हों कि मह़ल्ले शह्वत न हो तो उस से मुसा-फ़ह़ा करने में कोई ह़रज नहीं अगर मर्द ज़ियादा बूढ़ा हो कि फ़ित्ने का अन्देशा ही न हो तो मुसा-फ़ह़ा कर सकता है। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 16, स. 78)

www.dawateislami.net

से नक़्ल किया और अ़न्क़रीब उन की इ़बारत की तफ़्सील अपनी जगह आएगी और उन का **मुख़्तार मज़्हब** भी येही है कि हर गुनाह में सग़ीरा और कबीरा दोनों पहलू होते हैं।

कभी किसी क़रीने की वजह से सग़ीरा गुनाह कबीरा हो जाता है और कबीरा गुनाह किसी क़रीने की वजह से ज़ियादा फ़ोह़्श हो जाता है, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र करना तमाम कबाइर से ज़ियादा बुरा है और इस की अन्वाअ़ में से कोई गुनाहे सग़ीरा नहीं। इस की चन्द मिसालें तफ़्सील के साथ अपने मक़ाम पर आएंगी।

सातवीं ता'रीफ़ :

"हर वोह फ़े'ल जिस की हु़रमत पर क़ुरआने पाक में नस वारिद हो या'नी क़ुरआने पाक में उस के बारे में तह़रीम (या'नी ह़राम करने) का लफ़्ज़ इस्ति'माल किया गया हो।" क़ुरआने करीम में जिन चीज़ों की हु़रमत अल्फ़ाज़ में मज़्कूर है वोह चार है : मुर्दार और ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाना यतीम वग़ैरा का माल खाना और मैदाने जिहाद से भागना। लेकिन इस से मुराद येह नहीं कि कबीरा गुनाह येही चार चीज़ें हैं।

आठवीं ता'रीफ़ :

"कबीरा गुनाह की कोई ख़ास ता'रीफ़ नहीं जिस के ज़रीए बन्दा उस की मा'रिफ़त ह़ासिल कर सके।" हमारे शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में से अ़ल्लामा वाह़िदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी किताब "**बसीत़**" में इसी क़ौल पर ए'तिमाद किया है, चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "सह़ीह़ बात येह है कि कबीरा गुनाह की कोई ऐसी ता'रीफ़ नहीं जिस के ज़रीए बन्दे इस की मा'रिफ़त ह़ासिल कर सकें वरना तो लोग सग़ीरा गुनाहों में मुब्तला हो जाते बल्कि इन्हें जाइज़ व मुबाह़ समझने लगते मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कबीरा गुनाहों को बन्दों से पोशीदा रखा ताकि वोह कबीरा गुनाहों से बचने के लिये हर मम्नूअ़ फ़े'ल से बचने की कोशिश करें और इस की बहुत सी मिसालें हैं जैसे اَلصَّلٰوةُ الْوُسْطٰی (या'नी बीच की नमाज़) **लै-लतुल क़द्र** और दुआ़ की क़बूलिय्यत की घड़ी वग़ैरा को पोशीदा रखा गया।"

मगर इन की येह बात दुरुस्त नहीं, बल्कि सह़ीह़ येह है कि इस की एक मुअ़य्यन ता'रीफ़ मुम्किन है जैसा कि गुज़श्ता सुतूर में बयान किया जा चुका है। फिर मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को अ़ल्लामा वाह़िदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येही बात नक़्ल करते हुए देखा मगर उन्हों ने भी इस बात को इस त़ौर पर बयान किया जिस से इन पर होने वाले ए'तिराज़ात कुछ कम हो गए चुनान्चे वोह फ़रमाते हैं कि शाफ़ेई मुफ़स्सिर अ़ल्लामा वाह़िदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "तमाम कबीरा गुनाह पहचाने नहीं जा सकते या'नी उन्हें शुमार नहीं किया जा सकता।" उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی इस की तफ़्सील में फ़रमाते हैं कि इस की वजह येह है कि कुछ गुनाहों के बारे में तो बता दिया गया कि येह कबीरा हैं और कुछ के बारे में बता दिया गया कि येह सग़ीरा हैं लेकिन कुछ गुनाह ऐसे हैं जिन के बारे में कुछ नहीं बताया गया। जब कि अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "कबीरा गुनाह तो मश्हूर हैं, अलबत्ता ! इख़्तिलाफ़ इस बात में है कि क्या इन्हें किसी ता'रीफ़, ज़ाबित़ा या ता'दाद के ज़रीए पहचाना जा सकता है या नहीं ?"

www.dawateislami.net

अब हम कबीरा गुनाह के बारे में अस्हाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इलावा मु-तअख़्ख़िरीन और दीगर बुज़ुर्गों رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की इबारात नक़्ल करते हैं। चुनान्चे

☆...... इन में से एक क़ौल हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जबीर, ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़ाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم फ़रमाते हैं कि "हर वोह गुनाह, कबीरा है जिस के मुर-तकिब से जहन्नम का वा'दा किया गया हो।"

☆...... सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "हर वोह गुनाह जिसे आदमी ख़ौफ़ या नदामत मह़सूस किये बिग़ैर ह़क़ीर जानते हुए करे और वोह उस पर जरी भी हो तो वोह कबीरा है और जो गुनाह दिल के वस्वसों की पैदावार हो और फिर उस पर नदामत भी मह़सूस हो नीज़ उस से लज़्ज़त ह़ासिल करना भी दुश्वार हो तो वोह कबीरा नहीं।"

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने दूसरे मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : "येह ज़रूरी नहीं कि कबीरा गुनाहों की कोई ख़ास ता'दाद जानी जाए क्यूं कि इन की पहचान फ़क़त़ समा-ई (या'नी सुनी सुनाई) है और इन की ता'दाद के बारे में कोई नस भी नहीं।"

अ़ल्लामा उ़लाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन की पहली बात पर येह ए'तिराज़ किया कि येह सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़ौल की तफ़्सील है, मगर येह बात सख़्त मुश्किल में डालने वाली है क्यूं कि अगर कबीरा गुनाहों की मा'रिफ़त का क़ाइदा येही हो तो इस पर ए'तिराज़ वारिद होता है कि अगर कोई शख़्स ज़िना जैसा बुरा फ़े'ल करे और इस पर नदामत मह़सूस करे तो क्या येह कबीरा गुनाह शुमार न होगा ? इस सूरत में इस ता'रीफ़ के मुत़ाबिक़ येह गुनाह कबीरा शुमार नहीं होता, न ही येह मा'सिय्यत उस की अ़दालत को ख़त्म करती है, ह़ालां कि येह बात बिल इत्तिफ़ाक़ दुरुस्त नहीं। अलबत्ता अगर इस क़ाइदे को उन कबीरा गुनाहों पर मह़मूल किया जाए जिन के बारे में कोई नस वारिद नहीं हुई तो येह ह़क़ीक़त से ज़ियादा क़रीब होगा।

अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शायद अ़ल्लामा उ़लाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह ख़याल किया है कि हर वोह गुनाह जिस की ता'रीफ़ भी मज़्कूर हो तो वोह मन्सूस में दाख़िल है ह़ालां कि येह बात दुरुस्त नहीं, या'नी इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی का बयान कर्दा क़ाइदा मन्सूस के इलावा दीगर कबाइर के लिये है और येह ह़क़ीक़त से ज़ियादा क़रीब है, जब कि अ़ल्लामा उ़लाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ात मन्सूस गुनाहों के इलावा दूसरे गुनाहों को भी शामिल हैं।"

★...... अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुनासिब तरीन बात येह है कि कबीरा गुनाह वोह है जिस के फ़ाइल से अपने दीन को इस त़रह़ हलका जानना ज़ाहिर हो जिस त़रह़ कि वोह मन्सूस अ़लैह कबीरा गुनाह को सग़ीरा समझता हो।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "जब आप सग़ीरा और कबीरा के दरमियान फ़र्क़ जानना चाहें तो उस गुनाह के फ़साद को मन्सूस अ़लैह कबीरा गुनाह के मुक़ाबिल रख कर देखें अगर उस गुनाह का नुक़्सान कबीरा से कम है तो येह सग़ीरा होगा वरना कबीरा।"

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस पर येह ए'तिराज़ किया है कि "मन्सूस अ़लैह कबीरा गुनाहों का इह़ात़ा उस वक़्त तक मुम्किन नहीं जब तक कि उन गुनाहों को न जान लिया जाए जो फ़साद के ए'तिबार से उन से कमतर हों और जब तक वाक़ेअ़ शुदा गुनाह की ख़राबी के साथ उन कबीरा गुनाहों का मुवा-ज़ना न कर लिया जाए, जो कि दुश्वार है।"

अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का येह क़ौल लिखने के बा'द फ़रमाते हैं : "अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह ए'तिराज़ तो कर दिया मगर जब इस के बारे में वारिद सह़ीह़ अह़ादीस को जम्अ़ किया जाए तो इस में कोई दुश्वारी बाक़ी नहीं रहती।" और ह़क़ीक़त में ऐसा करना वाक़ेई मुश्किल है क्यूं कि अगर इस के बयान में वारिद सह़ीह़ अह़ादीस को जम्अ़ करने के इम्कान को फ़र्ज़ कर भी लिया जाए और हम तमाम कबीरा गुनाहों के फ़साद का इह़ात़ा भी कर लें तब भी येह जानना इन्तिहाई मुश्किल अम्र है कि इन में से किस गुनाह का फ़साद कम है क्यूं कि येह शारेअ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इलावा कोई नहीं जान सकता।"

अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के क़ौल का खोखला पन ज़ाहिर करने वाली बातों में से एक येह भी है कि "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को مَعَاذَالله गाली दी या उस के किसी रसूल की तौहीन की या ख़ानए का'बा या क़ुरआने पाक को गन्दगी से आलूदा कर दिया तो उस का येह फ़े'ल कबीरा तरीन गुनाह है ह़ालां कि शारेअ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस के कबीरा गुनाह होने की तस्रीह़ नहीं फ़रमाई। और इन के रद की वजह येह भी है कि उस बद बख़्त का येह अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करने के ज़ुम्रे में आता है जो कि मन्सूस अ़लैह कबीरा गुनाहों में सरे फ़ेहरिस्त है क्यूं कि यहां शिर्क से बिल इज्माअ़ मुत़्लक़ कुफ़्र मुराद है न कि सिर्फ़ शिर्क।"

अ़ल्लामा शम्स बरमावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "येह सब उस सूरत में है जब कबीरा गुनाह की तफ़्सीर इमामुल ह़-रमैन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बयान कर्दा मा'ना के मुत़ाबिक़ न हो बल्कि कुफ़्र और दीगर गुनाहों से आ़म होने की बिना पर की जाए और मैं (मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) गुज़श्ता सफ़ह़ात में येह बयान कर चुका हूं कि इमामुल ह़-रमैन वग़ैरा के कलाम का तक़ाज़ा येह है कि कबीरा गुनाह की जो ता'रीफ़ें बयान की गई हैं येह कुफ़्र से कमतर गुनाह की ता'रीफ़ें हैं क्यूं कि अगर कुफ़्र को कबीरा गुनाह कहना दुरुस्त हो तो येह अक्बरुल कबाइर होगा जैसा कि ह़दीसे मुबा-रका में है।"

अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मज़्कूरा क़ौल के बा'द चन्द मिसालें भी दी हैं। चुनान्चे फ़रमाते हैं :

(1)...... जिस ने किसी शादी शुदा पाक दामन औ़रत को ज़िना के लिये या किसी मुसल्मान को क़त्ल करने के लिये क़ैद कर लिया तो बिला शुबा इस की बुराई यतीम का माले नाह़क़ खाने वाले से ज़ियादा है।

(2)...... अगर किसी ने येह जानने के बा वुजूद कि कुफ़्फ़ार मेरे बताने से मुसल्मानों को नुक़्सान पहुंचाएंगे, इन की औ़रतों और बच्चों को गालियां देंगे और इन के अम्वाल को ग़नीमत बना लेंगे, फिर भी काफ़िरों को मुसल्मानों की कमज़ोरियां बताईं तो इस की बुराई जिहाद से बिग़ैर उ़ज़्र फ़िरार होने से बहुत ज़ियादा है।

www.dawateislami.net

(3)...... अगर किसी ने मुसलमान पर झूटा इल्ज़ाम लगाया ह़ालां कि वोह जानता था कि झूटे इल्ज़ाम की वजह से इसे क़त्ल कर दिया जाएगा तो इस की बुराई भी बहुत ज़ियादा है।

अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कई मिसालें देने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم ने कबीरा **गुनाह की पहचान** के लिये येह **क़ाइदा** बनाया है कि "हर वोह गुनाह जिस पर कोई वई़द आई हो या उस के इरतिकाब से ह़द या ला'नत लाज़िम आती हो तो वोह कबीरा गुनाह है। लिहाज़ा रास्ते के निशान बदल देना भी गुनाहे कबीरा है क्यूं कि इस पर ला'नत वारिद हुई है। इसी त़रह़ हर वोह गुनाह जिस के बारे में येह साबित हो जाए कि इस के मफ़ासिद उन गुनाहों की त़रह़ हैं जिन पर वई़द, ला'नत या ह़द वारिद हुई है या इन के मफ़ासिद उन से ज़ियादा हैं तो वोह गुनाह भी कबीरा हैं।"

अ़ल्लामा इब्ने दक़ीक़ अल ई़द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ऐसी सूरत में येह बात शर्त़ क़रार पाती है कि उस बुराई और फ़साद को लिया ही न जाए जो किसी दूसरे अम्र से ख़ाली हो क्यूं कि इस में ग़-लत़ी वाक़ेअ़ हो सकती है, मिसाल के त़ौर पर क्या आप नहीं जानते कि ख़म्र (शराब) की जो बुराई फ़ौरन ज़ेह्न में आती है वोह नशा और अ़क़्ल का ख़िलजान है अगर हम फ़क़त़ इन दो चीज़ों को इस की बुराई में शुमार करें तो इस से येह बात लाज़िम आएगी कि शराब का एक क़त़रा पीना गुनाहे कबीरा नहीं क्यूं कि इस में येह बुराइयां नहीं पाई जातीं ह़ालां कि येह भी गुनाहे कबीरा है क्यूं कि एक क़त़रा पीना ज़ियादा शराब पीने का पेश ख़ैमा है जो कि उन मफ़ासिद में डाल देता है लिहाज़ा क़त़रे की येही ह़ैसियत इसे कबीरा कर देती है।"

अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अ़ल्लामा इब्ने दक़ीक़ अल ई़द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने शराब के एक क़त़रे का जो ज़िक्र किया है इन से पहले अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस का ज़िक्र किया था, फिर अपने क़वाइद में येह बात नक़्ल करने के बा'द फ़रमाया : "मैं ने इस ता'रीफ़ से बेहतर किसी आ़लिम की बयान कर्दा ता'रीफ़ नहीं देखी।" शायद इन की मुराद येह है कि मैं ने कोई ऐसी ता'रीफ़ नहीं देखी जो ए'तिराज़ से भी मह़फ़ूज़ हो और जामेअ़ व मानेअ़ भी हो।

★...... अ़ल्लामा इब्ने सलाह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने फ़तावा में फ़रमाते हैं : "अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कबीरा की इस ता'रीफ़ को इख़्तियार किया है कि "कबीरा हर उस गुनाह को कहते हैं जो इतना बड़ा हो कि उसे कबीरा गुनाह कहा जा सकता हो और उसे अ़लल इत़्लाक़ कबीरा गुनाह के साथ मुत्तसिफ़ किया जाता हो, इस की चन्द अ़लामतें हैं : (1) वोह गुनाह ह़द को वाजिब करता हो (2) उस के इरतिकाब पर अ़ज़ाबे जहन्नम का वा'दा हो और उस की वई़द क़ुरआनो ह़दीस में बयान की गई हो (3) उस के फ़ाइल को फ़ासिक़ कहा जाता हो और (4) उस पर ला'नत वारिद हुई हो।"

शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा बारज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "**अल ह़ावी**" के ह़ाशिये पर लिखी गई अपनी तफ़्सीर में इस का ख़ुलासा यूं बयान किया है : "तह़क़ीक़ येह है कि हर वोह गुनाह कबीरा है जिस पर क़ुरआनो ह़दीस में वई़द या ला'नत वारिद हुई हो या जिस के बारे में येह मा'लूम हो कि इस की बुराई मज़्कूरा गुनाह जैसी या उस से ज़ियादा है या मन्सूस अ़लैह कबाइर को सग़ीरा गुनाह जानने

www.dawateislami.net

की तरह उस के मुर-तकिब का अपने दीन को हलका जानना ज़ाहिर होता हो जैसे किसी को बे गुनाह समझ कर क़त्ल कर दिया फिर पता चला कि वोह क़त्ल ही का ह़क़्दार था या किसी औ़रत से येह गुमान करते हुए जिमाअ़ करना कि मैं ज़िना कर रहा हूं फिर पता चला कि वोह उस की अपनी ही बीवी या लौंडी थी।''

अ़ल्लामा बारज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जो बातें आख़िर में ज़िक्र की हैं उन्हें अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने क़वाइद की इब्तिदा में इन से पहले ही ज़िक्र कर दिया था और अ़ल्लामा बारज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जो कलाम इब्तिदा में किया है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का क़ौल इस की ताईद करता है कि ''हर वोह गुनाह जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नम, ग़ज़ब, ला'नत या अ़ज़ाब की मोहर लगा दी हो वोह कबीरा गुनाह है।'' इसे ह़ज़रते इब्ने जरीर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत किया है।

जान लें कि बयान कर्दा तमाम ता'रीफ़ात से इन बुज़ुर्गों का मक़्सूद फ़क़त़ ए'तिदाल की राह इख़्तियार करना है वरना येह ता'रीफ़ात जामेअ़ नहीं हैं और जिस चीज़ की मा'रिफ़त का कोई ख़ास क़ाइदा मुक़र्रर न हो उस का शुमार क्यूंकर मुम्किन है ?

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने कबीरा गुनाहों की सिर्फ़ ता'दाद बयान की है कोई ता'रीफ़ बयान नहीं की। लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास और दीगर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त से मरवी है कि ''कबीरा गुनाह वोह हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूरए निसाअ की इब्तिदाई आयात से ले कर इस आयत :

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ (پ۵، النسآء:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमा-न-अ़त है।''

तक बयान किया है।'' एक क़ौल येह है कि ''कबीरा गुनाह सात हैं।'' इस पर सह़ीह़ैन (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम) की इस रिवायत से इस्तिद्लाल किया गया है चुनान्चे,

﴾1﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हलाकत में डालने वाले सात गुनाहों से बचते रहो, वोह येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा जान को नाह़क़ क़त्ल करना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद खाना (6) जिहाद के दिन मैदान से फ़िरार होना और (7) सीधी सादी पाक दामन मोमिन औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाना।''

(صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب قول الله تعالیٰ ان الذین یأکلون اموال الیتمی......الخ، الحدیث:۲۷۶۶، ص۲۲۲)

﴾2﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''कबीरा गुनाह येह हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (4) किसी जान को क़त्ल करना।''

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر واکبرھا، الحدیث:۲۶۱، ص۶۹۳، بدون"السحر")

www.dawateislami.net

《3》...... बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "झूटी क़सम उठाना।"
(صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب الیمین الغموس، الحدیث:٦٦٧٥،ص٥٥٨)

《4》...... जब कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में "झूटी क़सम" की जगह "झूटी गवाही" का ज़िक्र है। (صحیح مسلم،کتاب الایمان، باب الکبائرواکبرھا،الحدیث:٢٦٠،ص٦٩٣)

इस का **जवाब** येह है कि सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह ता'दाद हालात के तक़ाज़ों की बिना पर इर्शाद फ़रमाई थी इस से कबीरा गुनाहों को इस ता'दाद में महसूर करना हरगिज़ मक़्सूद न था।

जिन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने इस बात की सराहत फ़रमाई है कि "कबीरा गुनाह सिर्फ़ सात हैं।" इन में अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी तालिब, हज़रते सय्यिदुना अ़ता और हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم शामिल हैं।

एक क़ौल के मुताबिक़ कबीरा गुनाह "**पन्दरह**", एक क़ौल के मुताबिक़ "**चौदह**" और एक क़ौल के मुताबिक़ "**चार**" हैं।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि "गुनाहे कबीरा **तीन** हैं।" और इन्ही से मरवी एक रिवायत में है कि "**दस**" हैं।

जब कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ और त़-बरानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने रिवायत किया : "इन की अक़्साम की ता'दाद का "**सत्तर**" होना **सात** से ज़ियादा क़रीब है।" और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के जलीलुल क़द्र शागिर्द हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "इन का अपनी अन्वाअ़ और अस्नाफ़ के ए'तिबार से **सातसो (700)** की ता'दाद में होना ज़ियादा मुनासिब है।"

《5》...... इमाम त़-बरानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस क़ौल को हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इस त़रह़ रिवायत किया है कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से दरयाफ़्त किया : "कबीरा गुनाह कितने हैं ? क्या इन की ता'दाद सात है ?" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "इन की ता'दाद का **सातसो (700)** होना **सात (7)** होने से बेहतर है मगर येह कि कोई कबीरा गुनाह इस्तिग़्फ़ार या'नी तौबा और इस की शराइत़ की मौजू-दगी में कबीरा नहीं रहता और कोई सग़ीरा गुनाह इसरार के बा'द सग़ीरा नहीं रहता (बल्कि कबीरा हो जाता है)।" (تفسیر درمنثور،تحت الآیۃ ان تجتنبوا کبائر......الخ،ج٢ص٥٠٠)

इमाम दैलमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हम ने अपने इज्तिहाद से इन की ता'दाद को अपनी एक किताब में ज़िक्र कर दिया है जो कि **चालीस** से ज़ियादा है।" लिहाज़ा हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के फ़रमान की तावील की जाएगी।

शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा उ़लाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने क़वाइद में फ़रमाते हैं : "मैं ने एक रिसाला तस्नीफ़ किया है जिस में उन कबीरा गुनाहों को ज़िक्र किया जिन के कबीरा होने की शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तसरीह़ फ़रमाई

www.dawateislami.net

है और वोह येह हैं : ''शिर्क करना, क़त्ल करना, ज़िना करना और ज़िना में सब से बड़ा गुनाह पड़ोसी की बीवी से ज़िना करना, मैदाने जंग से फ़िरार होना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना, जादू करना, मुसल्मान की नाहक़ बे इज़्ज़ती करना, झूटी गवाही देना, झूटी क़सम उठाना, चुग़ली खाना, चोरी करना, शराब पीना, बैतुल ह़राम को ह़लाल ठहराना, बैअ़त तोड़ना, सुन्नत छोड़ना, हिजरत के बा'द अ़रब का देहाती बनना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहना, मुसाफ़िर को अपनी ज़रूरत से ज़ाइद पानी के इस्ति'माल से रोकना, पेशाब के छींटों से न बचना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, वालिदैन को गालियां दिलवाने के अस्बाब पैदा करना, वसिय्यत में वु-रसा को नुक़्सान पहुंचाना।'' अह़ादीसे मुबा-रका में इन्ही पच्चीस (25) गुनाहों के कबीरा होने की तस्रीह़ आई है।

मैं (मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) **कहता हूं :** ''इन गुनाहों में येह इज़ाफ़ा भी किया जा सकता है : माले ग़नीमत में ख़ियानत करना और नर जानवर को जुफ़्ती से रोकना, बल्कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे सब से बड़ा कबीरा गुनाह क़रार दिया है जैसा कि आयन्दा आने वाली बज़्ज़ार की रिवायत में बयान होगा, इसी त़रह़ बैतुल ह़राम की बे हुरमती करना जैसा कि बैहक़ी शरीफ़ की रिवायत में आएगा और येह बे हुरमती बैतुल ह़राम को ह़लाल ठहराने के इलावा है जैसा कि ज़ाहिर है, ह़-रमे पाक में किसी भी क़िस्म के गुनाह के इरतिकाब पर ह़रम की बे हुरमती साबित हो जाएगी ख़्वाह वोह पोशीदा ही हो।''

फिर जब मैं ने अ़ल्लामा जलाल **बुल्क़ीनी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कुतुब का मुत़ा-लआ़ किया तो देखा कि उन्हों ने बयान कर्दा अक़्वाल के बा'द लिखा है कि ''गुज़श्ता अह़ादीस में मज़्कूर बहुत सी चीज़ें बयान होने से रह गई हैं। म-सलन नर जानवर को जुफ़्ती से रोकना, जादू सीखना और इस पर अ़मल की कोशिश भी करना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बुरा गुमान रखना, ख़ियानत करना और बिग़ैर उ़ज़्र के दो नमाज़ों को एक वक़्त में जम्अ़ करना अलबत्ता इस के बारे में वारिद ह़दीसे पाक ज़ईफ़ है, इस के साथ ही मन्सूस अ़लैह कबीरा गुनाहों की ता'दाद **तीस (30)** हो गई, मगर नर जानवर को जुफ़्ती से रोकने वाली रिवायत की सनद भी ज़ईफ़ है और इस का नुक़्सान दीगर कबीरा गुनाहों से कम है हम ने इसे सिर्फ़ इस लिये ज़िक्र किया है कि इस का ज़िक्र गुज़श्ता सफ़ह़ात में एक ह़दीसे मुबा-रका में हो चुका है।''

ए'तिराज़ : चोरी के कबीरा गुनाह होने के बारे में किसी ह़दीसे मुबा-रका में तस्रीह़ नहीं आई बल्कि ह़दीसे पाक में तो ख़ियानत के गुनाहे कबीरा होने पर तस्रीह़ वारिद हुई जिस का मत़लब माले ग़नीमत से चोरी करना है।

जवाब : इस के बारे में तस्रीह़ सह़ीह़ैन में मौजूद है, चुनान्चे,

﴾6﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''चोर चोरी करते वक़्त मोमिन नहीं रहता।''

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان......الخ، الحدیث:۲۰۲، ص۶۹۰)

www.dawateislami.net

《7》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "अगर उस ने ऐसा किया (या'नी चोरी की) तो बेशक उस ने इस्लाम का पट्टा अपनी गरदन से उतार दिया फिर अगर उस ने तौबा की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।"

(سنن نسائی، کتاب قطع السارق، باب تعظیم السرقۃ، الحدیث:٤٨٧٦، ص٢٤٠٣)

इसी तरह उन का येह क़ौल कि "बैअ़त तोड़ना" तो इस के भी कबीरा गुनाह होने पर कोई सरीह़ नस वारिद नहीं हुई बल्कि इस पर एक सख़्त वईद आई है, इसी तरह सुन्नत तर्क करने के गुनाहे कबीरा होने पर भी कोई नस नहीं बल्कि इमाम हाकिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुस्तदरक में एक रिवायत को शर्ते इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर सहीह़ क़रार देते हुए रिवायत किया है कि,

《8》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "फ़र्ज़ नमाज़ों, जुमुआ और र-मज़ान के कफ़्फ़ारों की मिस्ल दीगर (गुनाहों के) भी कफ़्फ़ारे हैं मगर इन तीन गुनाहों का कोई कफ़्फ़ारा नहीं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना (2) बैअ़त तोड़ना और (3) सुन्नत को छोड़ना।"

(المستدرک، کتاب العلم، باب الصلاۃ المکتوبۃ الی ......الخ، الحدیث:٤٢٠، ج١، ص٣٢٣)

《9》...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बैअ़त तोड़ने की वज़ाहत यूं फ़रमाई है : "तुम क़सम के साथ किसी शख़्स की बैअ़त करो, फिर उस बैअ़त की मुख़ा-लफ़त करते हुए अपनी तलवार के ज़रीए उस से लड़ पड़ो।" (المرجع السابق)

《10》...... तर्के सुन्नत की वज़ाहत में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इस से मुराद **जमाअ़त** से अ़लाहि़दा होना है।"

(المرجع السابق)

《11》...... मुस्नदे अह़मद और अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत भी इस की ताईद करती है कि साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने बालिश्त भर भी **जमाअ़त** से अ़लाहि़दगी इख़्तियार की तो बेशक उस ने इस्लाम का पट्टा अपनी गरदन से उतार दिया।" (سنن ابی داؤد، کتاب السنۃ، باب فی الخوارج، الحدیث:٤٧٥٨، ص١٥٧٣)

नीज़ **तर्के सुन्नत** से मुराद **बिदआ़त** की पैरवी करना है **अल्लाह** عَزَّوَجَل हमें अपनी पनाह में रखे।

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन अह़ादीसे मुबा-रका की त़रफ़ इशारा करने में कोई ह़रज नहीं जिन में गुनाहों का तज़्किरा मौजूद है, उन अह़ादीस की दो क़िस्में हैं : **पहली क़िस्म** वोह है जिस में किसी गुनाह के कबीरा या अक्बरुल कबाइर होने या सब से बड़े गुनाह, या हलाकत में डाल देने वाले गुनाह होने की तसरीह़ की गई हो। **दूसरी क़िस्म** वोह है जिस में ला'नत, ग़ज़ब या सख़्त वईद का ज़िक्र हो।

www.dawateislami.net

पहली क़िस्म की रिवायात :

《12》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या मैं तुम्हें अक्बरुल कबाइर या'नी सब से बड़े तीन कबीरा गुनाहों के बारे में न बताऊं ? वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, झूटी गवाही देना और झूट बोलना है।"

रावी फ़रमाते हैं कि येह बात इर्शाद फ़रमाते वक़्त दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा थे फिर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बैठ गए और मुसल्सल इस की तक्रार करते रहे यहां तक कि हम कहने लगे कि काश ! आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सुकूत इख़्तियार फ़रमा लें।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان ، با ب الکبائرو اکبرھا،الحدیث:۲۵۹،ص۶۹۳)

शैख़ैन (या'नी इमाम बुख़ारी व मुस्लिम رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی) से मरवी एक रिवायत में पहले दो गुनाहों को कबीरा गुनाहों में भी शुमार किया गया है फिर इस के साथ क़त्ल को भी मिला दिया गया, जब कि झूटी गवाही और झूटी बात करने को अक्बरुल कबाइर या'नी बड़े कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

《13》...... (हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने) सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज़ की : "कौन सा गुनाह सब से बड़ा है ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम किसी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मद्दे मुक़ाबिल ठहराओ हालां कि उसी ने तुम्हें पैदा फ़रमाया है।" तो मैं ने अर्ज़ की : "बेशक येह तो बहुत बड़ा गुनाह है।" फिर अर्ज़ की : "इस के बा'द कौन सा गुनाह बड़ा है ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम इस ख़ौफ़ से अपने बच्चे को क़त्ल कर दो कि वोह तुम्हारे साथ खाने खाया करेगा।" मैं ने अर्ज़ की, कि "इस के बा'द कौन सा गुनाह बड़ा है ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करो।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان،با ب بیا ن کون الشرک......الخ ، الحدیث:۲۵۷،ص۶۹۳)

《14》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आदमी का अपने वालिदैन को गालियां देना कबीरा गुनाहों में से है।" अर्ज़ की गई : "क्या कोई शख़्स अपने वालिदैन को भी गालियां दे सकता है ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! जब आदमी किसी शख़्स के वालिदैन को गालियां देता है तो वोह जवाब में उस के वालिदैन को गालियां देता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان ، با ب الکبائرو اکبرھا،الحدیث:۲۶۳،ص۶۹۳)

《15》...... बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि "येह आख़िरी बात (या'नी वालिदैन को गाली देना) बड़े कबीरा गुनाहों में से है।" (صحیح البخاری، کتاب الادب،باب لایسب الرجل والدیه،الحدیث:۵۹۷۳،ص۵۰۶)

《16》...... बुख़ारी शरीफ़ ही की एक रिवायत में शिर्क, वालिदैन की ना फ़रमानी, क़त्ल, और झूटी क़सम को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है। (صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور،باب الیمین الغموس،الحدیث ۶۶۷۵،ص۵۵۸)

www.dawateislami.net

《17》...... जब कि दूसरी रिवायत में शिर्क, क़त्ले नाहक़, यतीम का माल खाने, सूद खाने, जंग के दिन मैदाने जिहाद से भागने और सीधी सादी, पाक दामन शादी शुदा औरतों पर तोहमत लगाने को हलाकत में डालने वाले गुनाहों में शुमार किया गया है।

(صحیح البخاری ،کتاب الوصایا،باب قول اللہ تعالیٰ ان الذین یاکلون......الخ،الحدیث ٢٧٦٦،ص٢٢٢)

《18》...... एक सहीह़ रिवायत में इन मज़्कूरा सात गुनाहों, मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी और बैतुल ह़राम को ह़लाल ठहराने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

(سنن ابی داؤد ،کتاب الوصایا،باب ماجاء فی التشدید فی اکل مال الیتیم،الحدیث:٢٨٧٥،ص١٤٣٧)

अन्क़रीब कुछ रिवायात ऐसी भी आएंगी जिन में पेशाब के क़तरों से न बचने को भी कबीरा गुनाह शुमार किया गया है।

《19》...... एक ह़दीसे मुबा-रका में येह इज़ाफ़ा है कि "हिजरत के बा'द आ'राबियों (या'नी देहातियों) की त़रफ़ लौट जाना भी कबीरा गुनाह है।"

(مجمع الزوائد،کتاب الایمان،باب فی الکبائر،الحدیث:٣٨٢،ج١،ص ٢٩١)

《20》...... एक रिवायत इब्ने लुहैआ़ से है : "हिजरत के बा'द आ'राबी (या'नी देहाती) बनना।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:٥٦٣٦،ج٦،ص١٠٣)

《21》...... जब कि एक और रिवायत में है : "हिजरत के बा'द देहाती पन की त़रफ़ लौटना।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:٥٧٠٩،ج٤،ص٢٠٠)

शर्हे ह़दीस :

इस ह़दीस की शर्ह़ येह बयान की गई है कि कोई शख़्स हिजरत के लिये निकले, इस के बा'द जब वोह माले ग़नीमत में से ह़िस्सा पा ले और फिर जब उस पर जिहाद वाजिब हो जाए तो वोह उस ज़िम्मादारी को अपनी गरदन से उतार दे और पहले की त़रह़ आ'राबी हो जाए। बा'ज़ अस्लाफ़ ने इस की शर्ह़ के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान से इस्तिद्लाल किया है :

اِنَّ الَّذِیۡنَ ارۡتَدُّوۡا عَلٰۤی اَدۡبَارِہِمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَیَّنَ لَہُمُ الۡہُدَی ۙ (پ٢٦،محمد:٢٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपने पीछे पलट गए बा'द इस के कि हिदायत उन पर खुल चुकी थी।

《22》...... इमाम इब्ने सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से नक़्ल कर्दा रिवायत भी इस मा'ना की ताईद करती है : "हिजरत के बा'द आ'राबी हो जाना कबीरा गुनाहों में से है।"

www.dawateislami.net

﴾23﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या मैं तुम्हें सब से बड़े कबीरा गुनाह के बारे में न बताऊं ? वोह गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना है।" नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह बात इर्शाद फ़रमाते वक़्त हालते इहतिबा में (या'नी घुटने खड़े कर के कपड़े के ज़रीए पीठ और घुटनों को बांध कर) तशरीफ़ फ़रमा थे, येह बात इर्शाद फ़रमाने के बा'द नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह कपड़ा खोल दिया फिर अपनी ज़बाने हक़्क़े तरजुमान को पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया "सुन लो और झूटी बात करना भी (कबीरा गुनाह है)।"

(مجمع الزوائد، کتاب الایمان، باب فی الکبائر، الحدیث: ۳۸۳، ج ۱، ص ۲۹۲)

﴾24﴿...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या मैं तुम्हें सब से बड़े कबीरा गुनाह के बारे में न बताऊं ? वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना है, फिर आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا۝

(پ۵، النسآء: ۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिस ने ख़ुदा का शरीक ठहराया उस ने बड़ा गुनाह का तूफ़ान बांधा।"

फिर इर्शाद फ़रमाया : "और वालिदैन की ना फ़रमानी करना।" और फिर येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ۝

(پ۲۱، لقمٰن: ۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह कि हक़ मान मेरा और अपने मां बाप का आख़िर मुझी (मेरे) तक आना है।

येह बात इर्शाद फ़रमाते वक़्त आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा थे, फिर आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ानू पर सीधे बैठ गए और इर्शाद फ़रमाया : "सुन लो और झूटी बात कहना भी (कबीरा गुनाह है)।"

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۹۳، ج ۱۸، ص ۱۴۰)

﴾25﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सब से बड़े गुनाह येह हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और येह कि कोई शख़्स झूटी क़सम खाए और फिर उस की मच्छर के पर बराबर भी ख़िलाफ़ वरज़ी करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल में एक दाग़ बना देगा जिस का असर क़ियामत तक रहेगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبداللہ بن انس ، الحدیث: ۱۶۰۴۳، ج ۵، ص ۴۳۰)

﴾26﴿...... अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सब से बड़े गुनाह येह हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, ज़रूरत से ज़ाइद पानी से दूसरों को रोकना और नर जानवर को जुफ़्ती से रोकना।"

(البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند بریدة بن حصیب، الحدیث: ۴۴۳۷، ج ۱۰، ص ۳۱۴)

﴾27﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान

www.dawateislami.net

है : "क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़े गुनाह येह होंगे : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना (2) मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करना (3) जंग के दिन राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद से फ़िरार होना (4) वालिदैन की ना फ़रमानी करना (5) पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना (6) जादू सीखना (7) सूद खाना और (8) यतीम का माल खाना।"

(صحیح ابن حبّان، ذکر کتبة المصطفیٰ ﷺ، کتابه الیٰ اهل یمن،الحدیث:٦٥٢٥،ج٨،ص١٨٠)

﴾28﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ख़म्र (या'नी अंगूर की शराब) पीना सब से बड़ा गुनाह और बे हयाइयों की जड़ है, जिस ने शराब पी उस ने नमाज़ छोड़ दी और गोया अपनी मां, ख़ाला और फूफी के साथ ज़िना किया।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاشربة ،الحدیث:٨١٧٤،ج٥،ص١٠٤)

﴾29﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक किसी मुसल्मान की नाहक़ बे इज़्ज़ती करना सब से बड़ा कबीरा गुनाह है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب ، باب فی الغیبة ، الحدیث:٤٨٧٧،ص١٥٨١)

﴾30﴿...... इमाम अहमद और इमाम अबू दावूद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا की येह रिवायत इस के मुवाफ़िक़ है : "मुसल्मान की नाहक़ बे इज़्ज़ती करना सूद खाने से भी बड़ा गुनाह है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب ، باب فی الغیبة ، الحدیث:٤٨٧٦،ص١٥٨١)

﴾31﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी उ़ज़्र के बिग़ैर एक वक़्त में दो नमाज़ों को जम्अ किया बेशक वोह कबीरा गुनाहों के एक दरवाज़े पर आया।" (جامع الترمذی ،ابواب الصلوٰۃ ،باب ما جاء فی جمع بین الصلاتین فی الحضر،الحدیث:١٨٨،ص١٦٥٤)

﴾32﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया : "कबीरा गुनाह कौन से हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, उस की रहमत से मायूस होना और उस की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहना और येही सब से बड़ा गुनाह है।"

﴾33﴿...... जब कि सय्यिदुना इमाम दार क़ुतनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत के मुताबिक़ "वसिय्यत में वु-रसा को नुक़्सान पहुंचाना भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।"

(سنن دارقطنی، کتاب الوصایا،الحدیث:٤٢٤٩،ج٤،ص١٧٨)

दूसरी क़िस्म की रिवायात :

﴾34﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न कलाम फ़रमाएगा, न उन पर नज़रे रहमत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक फ़रमाएगा नीज़ उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।" हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात तीन मरतबा इर्शाद फ़रमाई तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم !

www.dawateislami.net

रुस्वा व बरबाद होने वाले येह लोग कौन हैं ?" तो ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) (तकब्बुर की वजह से) तहबन्द लटकाने वाला (2) एह्सान जतलाने वाला और (3) झूटी क़सम के ज़रीए अपना सौदा बेचने वाला।"

(صحیح مسلم ، کتاب الایمان ، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار......الخ،الحدیث:۲۹۳،ص۶۹۶)

《35》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "(वोह तीन अफ़राद येह हैं) (1) बूढ़ा ज़ानी (2) झूटा हुक्मरान और (3) मग़रूर फ़क़ीर।"

(صحیح مسلم ، کتاب الایمان ، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار......الخ،الحدیث:۲۹۶،ص۶۹۶)

《36》...... एक और रिवायत में इन तीन अफ़राद का ज़िक्र है : (1) चटियल ज़मीन में ज़रूरत से ज़ाइद पानी को मुसाफ़िर से रोकने वाला (2) वोह शख़्स कि अ़स्र के बा'द अपना सौदा किसी को बेचता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठाता है ताकि वोह शख़्स इतनी क़ीमत में उस से ख़रीद ले पस वोह उस की तस्दीक़ करता है हालां कि वोह झूटा था और (3) वोह शख़्स जो किसी हाकिम की दुन्या के लिये बैअ़त करे अगर वोह हाकिम उस की मन्शा के मुताबिक़ उसे अ़ता करे तो येह उस से वफ़ा करे और अगर उसे अ़ता न करे तो बे वफ़ाई करे।"

(صحیح مسلم ، کتاب الایمان ، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار......الخ،الحدیث:۲۹۷،ص۶۹۶)

《37》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह्सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं जिन से वोह क़ियामत के दिन कलाम फ़रमाएगा न उन्हें पाक फ़रमाएगा और न उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन हैं ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) अपने वालिदैन से बेज़ार हो कर मुंह फैरने वाला (2) अपनी औलाद से बेज़ार होने वाला और (3) वोह शख़्स जिस पर किसी क़ौम ने एह्सान किया फिर उस ने एह्सान फ़रामोशी की और उन से बेज़ार हो गया या'नी उन्हों ने उसे ग़ुलामी से नजात दी और येह उन का ना शुक्रा हो गया।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، حدیث معاذ بن انس الجهنی،الحدیث۱۵۶۳۶،ج۵،ص۳۱۲)

《38》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो किसी क़ौम के सरदारों की मरज़ी के बिग़ैर उस क़ौम का हुक्मरान बना, उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के मलाएका और तमाम इन्सानों की ला'नत है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन न उस के फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा और न ही नफ़्ल।"

(صحیح مسلم ، کتاب العتق ، باب تحریم تولی العتیق غیر موالیه، الحدیث:۳۷۹۲ ، ص ۹۳۸)

《39》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "चुग़ल ख़ोर जन्नत में हरगिज़ दाख़िल न होगा।"

(صحیح البخاری ، کتاب الادب، باب مایقرأمن النمیمه، الحدیث: ۶۰۵۶، ص۵۱۲)

《40》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

www.dawateislami.net

आ़लीशान है : "तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) शराब का आ़दी (2) रिश्तेदारी तोड़ने वाला और (3) जादू को सच्चा कहने वाला।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث ابی موسیٰ اشعری،الحدیث: ١٩٥٨٦،ج٧، ص١٣٩)

﴾41﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन से मैं क़ियामत के दिन झगड़ूंगा : (1) वोह शख़्स जिसे मेरे लिये कुछ माल दिया गया फिर उस ने उस माल में ख़ियानत की (2) वोह शख़्स जिस ने आज़ाद आदमी को बेचा फिर उस की क़ीमत खा ली (3) वोह शख़्स जिस ने किसी को उजरत पर रखा फिर उस से काम पूरा लिया मगर उजरत पूरी न दी।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی هريره، الحديث:٨٧٠٠،ج٣،ص٢٧٨،بدون" العمل")

﴾42﴿...... सरकारे मदीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "वालिदैन का ना फ़रमान, शराब का आ़दी और चुग़ुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल न होंगे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن عمروبن العاص، الحديث: ٦٩٠٩،ج٢، ص٦٤٧"نمام بدله" منان")

﴾43﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "वालिदैन का ना फ़रमान, शराब का आ़दी और तक़्दीर का मुन्किर जन्नत में दाख़िल न होंगे।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،حديث ابی الدرداء عويمر، الحديث:٢٧٥٥٤،ج١٠، ص٤١٦)

﴾44﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "पांच शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : "**(1)** शराब का आ़दी **(2)** जादू करने वाला **(3)** रिश्तादारी तोड़ने वाला **(4)** काहिन और **(5)** एह़सान जतलाने वाला।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعيد الخدری، الحديث: ١١١٠٧،ج٤، ص٣٠)

﴾45﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उस शख़्स पर ला'नत हो जो जानवर ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम लेता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उस शख़्स पर ला'नत हो जो अपने वालिदैन पर ला'नत भेजता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उस शख़्स पर ला'नत हो जो किसी बिद्अ़ती को पनाह देता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उस शख़्स पर ला'नत हो जो ज़मीनी रास्तों के निशान मिटा देता है।"

(صحيح مسلم، كتاب الاضاحی،باب تحريم الذبح لغير الله......الخ،الحديث:٥١٢٥،٥١٢٤،ص١٠٣١)

﴾46﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे : "(1) वालिदैन का ना फ़रमान (2) दय्यूस और (3) औ़रतों की शक्ल इख़्तियार करने वाले मर्द।"

(المستدرك، كتاب الايمان، باب ثلاثة لايدخلون الجنة ......الخ، الحديث:۲۵۲، ج۱، ص۲۵۲)

येह वोही अहा़दीसे मुबा–रका हैं जिन की त़रफ़ अ़ल्लामा उ़लाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ वग़ैरा ने इशारा किया था कि येह अहा़दीस इस बात पर नस हैं कि इन में बयान कर्दा गुनाह कबीरा हैं या कबीरा गुनाहों को लाज़िम हैं। अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो उस की अ़त़ा कर्दा मदद और क़ुव्वत से हम इन अहा़दीस की तफ़्सील में जाते हुए अ़न्क़रीब उन गुनाहों को भी बयान करेंगे जो मज़्कूरा गुनाहों के इलावा हैं, मगर हम ने इस तफ़्सील से पहले अ़ल्लामा उ़लाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ वग़ैरा के कलाम के माख़ज़ की त़रफ़ इशारा करना मुनासिब समझा, और जहां तक तमाम कबीरा गुनाहों और उन के बारे में मरवी रिवायात के बयान का तअ़ल्लुक़ है तो उन्हें हम उन के तज़्किरे के मौक़अ़ पर मुकम्मल तफ़्सील के साथ बयान करेंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से येह काम आसान फ़रमाए।

(اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم)

www.dawateislami.net

कबीरा गुनाहों की ता'दाद और इन के मु-तअ़ल्लिक़ात

हज़रते सय्यिदुना अबू तालिब मक्की رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **कबीरा गुनाह सत्तरह हैं।**

चार का तअ़ल्लुक़ **दिल** से है : (1) शिर्क (2) गुनाह पर इस्रार (3) मायूसी और (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहना,

चार का तअ़ल्लुक़ **ज़बान** से है : (1) तोहमत लगाना (2) झूटी गवाही देना और (3) जादू करना और जादू हर उस कलाम को कहते हैं जो इन्सान या उस के बदन के किसी हिस्से (की हालत) को बदल दे (4) झूटी क़सम उठाना और इस से मुराद वोह क़सम है जिस के ज़रीए किसी का हक़ बातिल किया जाए या किसी बातिल को साबित किया जाए,

तीन का तअ़ल्लुक़ **पेट** से है : (1) यतीम का माल जुल्मन खाना (2) सूद खाना (3) हर नशा आवर चीज़ पीना,

दो का तअ़ल्लुक़ **शर्मगाह** से है : (1) ज़िना और (2) लिवातत,

दो का तअ़ल्लुक़ **हाथों** से है : (1) क़त्ल करना और (2) चोरी करना,

एक का तअ़ल्लुक़ **पाउं** से है : वोह जिहाद से फ़िरार होना है,

एक गुनाहे कबीरा का तअ़ल्लुक़ **पूरे जिस्म** से है : वोह वालिदैन की ना फ़रमानी करना है।

www.dawateislami.net

ख़ातिमा
हर छोटे बड़े गुनाह से डराने का बयान

हम ने इन सुतूर को ख़िलाफ़े दस्तूर इस लिये मुक़द्दम कर दिया ताकि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत से ना फ़रमानियों और गुनाहों की उन हुदूद में दाख़िल होने से रोकने का ज़रीआ़ बन जाएं जो हलाकत व बरबादी और सलामती के घर या'नी जन्नत से दूर कर देने वाली और दुन्या और आख़िरत में हलाकत, ज़िल्लतो रुस्वाई और तबाही व बरबादी को वाजिब करने वाली हैं।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें और मुझे अपनी इताअ़त की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमाए और हमें अपनी रिज़ा की वुस्अ़तों तक पहुंचाए, आमीन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों को अपनी रबूबिय्यत के असरार सिखा कर अपनी ना फ़रमानी से डराया और ना फ़रमानी को अपने क़हरो जबरूत और वह़दानियत पर ह़म्ला क़रार दिया। चुनान्चे,

﴾1﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ (پ۲۵،الزخرف:۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने वोह किया जिस पर हमारा ग़ज़ब उन पर आया।

﴾2﴿

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ۝ (پ۹،الاعراف:۱٦٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने मुमा-न-अ़त के हुक्म से सरकशी की हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए।

﴾3﴿

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ (پ۲۲،فاطر:۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर अल्लाह लोगों को उन के किये पर पकड़ता तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता।

﴾4﴿

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝ (پ۵،النسآء:۱۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो रसूल का ख़िलाफ़ करे बा'द इस के कि ह़क़ रास्ता उस पर खुल चुका और मुसल्मानों की राह से जुदा राह चले हम उसे उस के ह़ाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की।

www.dawateislami.net

﴾5﴿

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءً ايُّجْزَ بِهٖ لا وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ (پ۵،النسآء:۱۲۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार।

इस ज़िम्न में और भी बहुत सी आयात पेश की जा सकती हैं (मगर इन्ही को काफ़ी समझते हुए अब इस ज़िम्न में मरवी अहादीसे मुबा-रका पेश की जाएंगी।)

﴾47﴿...... अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुछ फ़राइज़ मुक़र्रर किये हैं लिहाज़ा तुम इन्हें हरगिज़ ज़ाएअ़ न करो, कुछ ह़दें क़ाइम की हैं तुम हरगिज़ इन से न गुज़रो, कुछ चीज़ें ह़राम की हैं इन्हें हरगिज़ हलका न जानो और उस ने तुम पर रह़मत फ़रमाते हुए दानिस्ता कुछ चीज़ों से सुकूत फ़रमाया है लिहाज़ा उन की जुस्त-जू न करो।" (سنن الدارقطنی، کتاب الرضاع، الحدیث:۴۳۵۰،ج۴،ص۲۱۷)

﴾48﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़यूर है और मोमिन भी ग़ैरत मन्द है जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ग़ैरत इस बात पर है कि बन्दए मोमिन उस के ह़राम कर्दा अ़मल में पड़े।"

(صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، باب غیرۃ اللہ تعالیٰ ......الخ،الحدیث:۶۹۹۵،ص۱۱۵۶)

﴾49﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा ग़ैरत वाला कोई नहीं इसी लिये उस ने पोशीदा और ज़ाहिर बदकारियों को ह़राम कर दिया है और उस से बढ़ कर अपनी ता'रीफ़ को पसन्द करने वाला भी कोई नहीं।"

(المرجع السابق،الحدیث۶۹۹۳)

﴾50﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है फिर अगर वोह तौबा करे और बख़्शिश चाहे तो उस का दिल साफ़ हो जाता है और अगर तौबा न करे तो वोह नुक्ता फैलता रहता है यहां तक कि उस के पूरे दिल को घेर लेता है।"

(سنن ابن ماجہ،ابواب الزھد،باب ذکر الذنوب،الحدیث :۴۲۴۴،ص۲۷۳۴)

या'नी वोह सियाह नुक्ता पूरे दिल को ढांप लेता है और येह वोही ज़ंग है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में इस त़रह़ ज़िक्र फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ سكتة رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۳۰،المطففین:۱۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

www.dawateislami.net

﴾51﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को यमन की त़रफ़ भेजते वक़्त इर्शाद फ़रमाया : "मज़्लूम की बद दुआ़ से बचते रहना क्यूं कि उस के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई ह़िजाब नहीं होता।"

(صحیح البخاری ،کتاب الزکاۃ ، باب اخذ الصدقة من الاغنیاء ......الخ،الحدیث:١٤٩٦،ص١١٨)

﴾52﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक की वालिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमाइये।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**गुनाहों** से हिजरत कर लो (या'नी इन्हें छोड़ दो) क्यूं कि येह सब से अफ़्ज़ल हिजरत है, **फ़राइज़** की पाबन्दी करती रहो क्यूं कि येह सब से अफ़्ज़ल जिहाद है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **कसरत से ज़िक्र** करती रहो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कोई बन्दा ज़िक्र से ज़ियादा पसन्दीदा शै ले कर ह़ाज़िर नहीं हो सकता।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:٣١٣،ج٥،ص١٢٩،"لایأتی العبد" بدله"لا تأتی الله")

﴾53﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! कौन सी हिजरत (या'नी हिजरत वाले) अफ़्ज़ल हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो गुनाहों से हिजरत करते हैं।" (صحیح ابن حبّان ،کتاب البر والصلة،باب ذکر الاستحباب للمرء......الخ،الحدیث:٣٦٢،ج١،ص٢٨٧)

और भी बहुत सी अह़ादीस इस मा'ना पर दलालत करती हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा गया : "क्या बनी इस्राईल ने अपना दीन छोड़ दिया था कि जिस की वजह से उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला कर दिया गया म-सलन उन की सूरतें बिगाड़ कर उन्हें बन्दर या ख़िन्ज़ीर बना दिया गया और अपने आप को क़त्ल करने का हुक्म दिया गया ?" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि जब उन्हें किसी चीज़ का हुक्म दिया जाता तो वोह उसे छोड़ देते थे और जब किसी काम से रोका जाता तो अन्जाम की परवाह किये बिग़ैर उसे कर गुज़रते थे यहां तक कि वोह अपने दीन से इस त़रह़ निकल गए जैसे आदमी अपनी क़मीस से निकल जाता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : "**ऐ गुनाहगार** ! तू गुनाह के अन्जामे बद से क्यूं बे ख़ौफ़ है ? ह़ालां कि गुनाह की त़लब में रहना गुनाह करने से भी बड़ा गुनाह है, तेरा दाईं, बाईं जानिब के **फ़िरिश्तों से ह़या न करना** और गुनाह पर क़ाइम रहना भी बहुत बड़ा गुनाह है या'नी तौबा किये बिग़ैर तेरा गुनाह पर क़ाइम रहना इस से भी बड़ा गुनाह है, **तेरा गुनाह कर लेने पर ख़ुश होना** और क़हक़हा लगाना इस से भी बड़ा गुनाह है ह़ालां कि तू नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे साथ क्या सुलूक फ़रमाने वाला है, और तेरा **गुनाह में नाकामी पर ग़मगीन होना** इस से भी बड़ा गुनाह है, गुनाह करते हुए तेज़ हवा से **दरवाज़े का पर्दा उठ जाए** तो तू डर

www.dawateislami.net

जाता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस नज़र से नहीं डरता जो वोह तुझ पर रखता है तेरा येह अ़मल इस से भी बड़ा गुनाह है।"

अफ़्सोस है तुझ पर क्या तू जानता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वोह लग़्ज़िश क्या थी जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें जिस्मानी मुसीबत और माल चले जाने की आफ़त में मुब्तला फ़रमा दिया था ? उन की लग़्ज़िश तो बस येही थी कि एक मिस्कीन ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से एक ज़ालिम के ख़िलाफ़ उस का ज़ुल्म दूर करने के लिये मदद मांगी थी तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस की मदद न की और न ही उस ज़ालिम को ज़ुल्म से मन्अ़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आज़्माइश में मुब्तला कर दिया।"

एक शुबे का इज़ाला :

ज़ाहिरन येह क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की त़रफ़ मन्सूब है ह़ालां कि येह सह़ीह़ नहीं और अगर इसे सह़ीह़ मान भी लिया जाए तब भी इस में तावील करना वाजिब है क्यूं कि सह़ीह़ और मुख़्तार अ़क़ीदे के मुत़ाबिक़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام (इज़्हारे) नुबुव्वत से पहले और बा'द छोटे, बड़े, दानिस्ता और ना दानिस्ता हर गुनाह से **मा'सूम** हैं और शायद आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस मिस्कीन की मदद पर क़ादिर न होने की वजह से सुकूत फ़रमाया था, इस के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उन पर इ़ताब फ़रमाना मुम्किन है क्यूं कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस मिस्कीन की मदद करने का कामिल तरीन अ़मल छोड़ दिया, अगर्चे आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उस की मदद पर क़ुदरत न पाने का यक़ीन था।

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "**गुनाह के छोटा होने को न देखो बल्कि येह देखो कि तुम किस की ना फ़रमानी कर रहे हो।**" और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ऐ इन्सान ! गुनाह को छोड़ देना तौबा या'नी मुआ़फ़ी चाहने से बहुत आसान है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपनी इ़बादत से बढ़ कर येह चीज़ ज़ियादा पसन्द है कि उस की ना फ़रमानियां छोड़ दी जाएं।" इन के इस क़ौल की ताईद येह ह़दीसे मुबा-रका भी करती है। चुनान्चे,

﴾**54**﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब मैं तुम्हें किसी चीज़ का हुक्म दूं तो ब क़दरे त़ाक़त उस पर अ़मल करो और जब तुम्हें किसी काम से मन्अ़ करूं तो उस से रुक जाओ।"

(صحیح مسلم، کتاب الحج،باب فرض الحج مرۃً فی العمر،الحدیث:۳۲۵۷،ص۹۰۱،"فاجتنبوہ" بدلہ "فدعوہ")

मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मामूरात (या'नी जिन के करने का हुक्म है) में इस्तित़ाअ़त या'नी ब क़दरे त़ाक़त की क़ैद लगाना और मन्हिय्यात (या'नी जिन से रुकने का हुक्म है) में इसे ज़िक्र न करना उस के नुक़्सान के बड़े होने और उस में पड़ने की बुराई की त़रफ़ इशारा है और मुसल्मान पर उस से दूरी इख़्तियार करने में कोशिश से काम लेना वाजिब है,

www.dawateislami.net

ख़्वाह वोह उस की इस्तिताअ़त रखता हो या नहीं, जब कि मामूरात पर कुदरत न होने के सबब (उन पर कुदरत पाने तक) उन को छोड़ा जा सकता है येह नुक्ता क़ाबिले ग़ौर है।

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "तेरे नज़्दीक गुनाह जितना छोटा होगा उतना ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बड़ा होगा और तेरे नज़्दीक गुनाह जितना बड़ा होगा उतना ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक छोटा होगा।"

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "ऐ मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! मेरी मख़्लूक़ में जो शख़्स सब से पहले मरा या'नी तबाहो बरबाद हुवा वोह इब्लीस था, क्यूं कि उस ने सब से पहले मेरी ना फ़रमानी की थी और मैं अपने ना फ़रमानों को मुर्दों में शुमार करता हूं।"

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "बन्दा जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है और फिर जब दोबारा गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक और सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है यहां तक कि उस का सारा दिल सियाह हो जाता है।"

सलफ़ सालिहीन رَحِمَہُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی का येह क़ौल भी इस की ताईद करता है कि "गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं या'नी इस ए'तिबार से कि येह दिल में सियाही पैदा कर के उसे इस त़रह ढांप लेते हैं कि फिर वोह कभी किसी भलाई को क़बूल नहीं करता, उस वक़्त वोह सख़्त हो जाता है और उस से हर रह़मत व मेहरबानी और ख़ौफ़ निकल जाता है, फिर वोह शख़्स जो चाहता है कर गुज़रता है और जिसे पसन्द करता है उस पर अ़मल करता है, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में शैत़ान को अपना वली बना लेता है तो वोह शैत़ान उसे गुमराह करता, वर-ग़लाता, झूटी उम्मीदें दिलाता और जिस क़दर मुम्किन हो कुफ़्र से कम किसी बात पर उस से राज़ी नहीं होता।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنۡ یَّدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِہٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَ اِنۡ یَّدۡعُوۡنَ اِلَّا شَیۡطٰنًا مَّرِیۡدًا ۙ﴿۱۱۷﴾ لَّعَنَہُ اللّٰہُ ۘ وَ قَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنۡ عِبَادِکَ نَصِیۡبًا مَّفۡرُوۡضًا ۙ﴿۱۱۸﴾ وَّ لَاُضِلَّنَّہُمۡ وَ لَاُمَنِّیَنَّہُمۡ وَ لَاٰمُرَنَّہُمۡ فَلَیُبَتِّکُنَّ اٰذَانَ الۡاَنۡعَامِ وَ لَاٰمُرَنَّہُمۡ فَلَیُغَیِّرُنَّ خَلۡقَ اللّٰہِ ؕ وَ مَنۡ یَّتَّخِذِ الشَّیۡطٰنَ وَلِیًّا مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ فَقَدۡ خَسِرَ خُسۡرَانًا مُّبِیۡنًا ﴿۱۱۹﴾ یَعِدُہُمۡ وَ یُمَنِّیۡہِمۡ ؕ وَ مَا یَعِدُہُمُ الشَّیۡطٰنُ اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿۱۲۰﴾ اُولٰٓئِکَ مَاۡوٰىہُمۡ جَہَنَّمُ ۫ وَ لَا یَجِدُوۡنَ عَنۡہَا مَحِیۡصًا ﴿۱۲۱﴾

(پ۵، النسآء: ۱۱۷تا۱۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह शिर्क वाले **अल्लाह** के सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औ़रतों को और नहीं पूजते मगर सरकश शैत़ान को जिस पर **अल्लाह** ने ला'नत की और बोला क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुवा हि़स्सा लूंगा क़सम है मैं ज़रूर बहका दूंगा और ज़रूर उन्हें आरज़ूएं दिलाऊंगा और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह चौपायों के कान चीरेंगे और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह **अल्लाह** की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे और जो **अल्लाह** को छोड़ कर शैत़ान को दोस्त बनाए वोह सरीह़ टोटे (ख़सारे) में पड़ा शैत़ान उन्हें वा'दे देता है और आरज़ूएं दिलाता है और शैत़ान उन्हें वा'दे नहीं देता मगर फ़रेब के उन का ठिकाना दोज़ख़ है उस से बचने की जगह न पाएंगे।

www.dawateislami.net

एक दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وقفة وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ0 اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ط اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ0 (پ۲۲،فاطر:۵،۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो वोह तो अपने गुरौह को इसी लिये बुलाता है कि दोज़ख़ियों में हों।

﴾55﴿...... हज़रते सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बनी इस्राईल की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : ''जब बन्दा मेरी इत़ाअ़त करता है तो मैं उस से राज़ी हो जाता हूं और जब मैं उस से राज़ी हो जाता हूं तो उसे ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाता हूं। (बा'ज़ रिवायतों में है : ''और मेरी ब-र-कत की कोई इन्तिहा नहीं।'') और जब बन्दा मेरी ना फ़रमानी करता है तो मैं उस से नाराज़ हो जाता हूं और जब मैं उस से नाराज़ होता हूं तो उस पर ला'नत फ़रमाता हूं और मेरी ला'नत उस की सात पुश्तों तक पहुंचती है।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान इन आसार की ताईद करता है :

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ص فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا0 (پ۴،النسآء:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और डरें वोह लोग अगर अपने बा'द ना तुवां औलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें ख़त़रा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान :

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ0 (پ۱،الفاتحۃ:۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : रोज़े जज़ा का मालिक।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि यहां दीन से मुराद ''जज़ा'' है।

﴾56﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जैसा करोगे वैसा भरोगे।'' (مصنّف عبدُ الرزّاق،باب الاغتیاب والشتم،الحدیث:۲۰۴۳۰،ج۱۰،ص۱۸۹)

या'नी तुम जैसा सुलूक किसी से करोगे वैसा ही सुलूक तुम्हारे साथ किया जाएगा। लिहाज़ा अगर तुम से क़िसास न लिया गया तो तुम्हारी औलाद से लिया जाएगा। इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

خَافُوْا عَلَيْهِمْ ص فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ (پ۴،النسآء:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन का कैसा उन्हें ख़त़रा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें।

www.dawateislami.net

पस अगर तुम्हें अपने छोटों और मोह़ताज व मिस्कीन औलाद के बारे में कोई डर हो तो अपने तमाम आ'माल ख़ुसूसन दूसरों की औलाद के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी औलाद के मुआ़-मले में तुम्हारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और तुम्हारे तक़्वा की ब-र-कत से उन्हें ह़िफ़ाज़त व ख़ैर और तौफ़ीक़ में आसानियां फ़राहम करे जिस से तुम्हारी मौत के बा'द तुम्हारी आंखें ठन्डी हों और ज़िन्दगी में शर्हे सद्र ह़ासिल हो और अगर तुम दूसरे लोगों की औलाद और उन के ह़रम के मुआ़-मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरोगे तो जान लो कि तुम से और तुम्हारी औलाद से इस मुआ़-मले में मुआ-ख़ज़ा होगा और जो कुछ तुम दूसरों के साथ करोगे वोही कुछ तुम्हारी औलाद के साथ किया जाएगा।

वस्वसा : जब औलाद ने कुछ नहीं किया तो उन के आबाओ अज्दाद की लग़्ज़िशों और गुनाहों की वजह से उन्हें क्यूंकर अ़ज़ाब होगा ? या फिर उन से इन्तिक़ाम कैसे लिया जाएगा ?

जवाब : इस लिये कि वोह अपने आबाओ अज्दाद के पैरौकार और उन की औलाद हैं। जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِیْ خَبُثَ لَا یَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ (پ۸،الاعراف:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता मगर थोड़ा ब मुश्किल।

और एक दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَیْنِ یَتِیْمَیْنِ فِی الْمَدِیْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ یَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَیَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِیْ ؕ (پ۱۶،الکھف:۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : रही वोह दीवार वोह शह्र के दो यतीम लड़कों की थी और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था और उन का बाप नेक आदमी था तो आप के रब ने चाहा कि वोह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें और अपना ख़ज़ाना निकालें आप के रब की रह़मत से और येह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया।

कहते हैं कि उन का वोह नेक बाप उन की मां का सातवां दादा था।

सुवाल : हम गुनाहगारों की औलाद में नेकूकार और नेकों की औलाद में गुनाहगार पाते हैं। क्या आप ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बेटे और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ातिल बेटे के बारे में नहीं जानते इस पर आप क्या कहेंगे ?

जवाब : एक तो येह कि ऐसा बहुत कम होता है और दूसरी बात येह है कि येह एक ऐसी ख़ुफ़्या तदबीर

www.dawateislami.net

की वजह से है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही जानता है अगर इस से फ़क़त् येह ख़बर देना मुराद है कि मख़्लूक़ अगर्चे वोह कितनी ही कामिल क्यूं न हो अपने अक़्रिबा को हिदायत देने से आ़जिज़ है। ''اِنَّکَ لَاتَهْدِیْ'' या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जिसे चाहें उसे अपनी मरज़ी से हिदायत नहीं दे सकते। जैसा कि येह आयते मुबा–रका (وَلْیَخْشَ الَّذِیْنَ) इस बात का फ़ाएदा देती है कि बा'ज़ अवक़ात आबाओ अज्दाद की वजह से औलाद पर अ़क़ाब होता है और इस से दोनों सूरतों का मसावी होना लाज़िम नहीं आता, हां ! येह ज़रूर है कि बा'ज़ अवक़ात आबा की नेकी से औलाद को नफ़्अ़ ह़ासिल होता है और येह इन दोनों मुआ़–मलों में कोई क़ाइदए कुल्लिया नहीं। बा'ज़ अवक़ात कोई फ़ासिक़ ज़ाहिरी त़ौर पर नेक आ'माल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन आ'माल के सबब उस की औलाद को नफ़्अ़ पहुंचाता है लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से इस्तिद्लाल करना मु–तअ़य्यन हो गया कि :

وَلْیَخْشَ الَّذِیْنَ لَوْتَرَکُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّیَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَیْهِمْ۪ فَلْیَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْیَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِیْدًا۝ (پ۴،النسآء:۹)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और डरें वोह लोग अगर अपने बा'द ना तुवां औलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें ख़त़रा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें।

﴾57﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को मक्तूब लिखा : ''**امابعد!** ! जब बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का कोई अ़मल करता है तो उस की ता'रीफ़ करने वाले लोग उस की मज़म्मत करने लगते हैं।''

(کتابُ الزہد لامام احمد بن حنبل،زہد عائشة رضی اللہ تعالیٰ عنہا،الحدیث:۹۱۷،ص۱۸۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''इस बात से डरो कि मुअमिनीन के दिल तुम से नफ़रत करने लगें और तुम्हें इस का शुऊ़र भी न हो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''जो बन्दा तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन के दिलों में उस के लिये अपनी ना राज़गी इस त़रह़ डाल देता है कि उसे इस का शुऊ़र भी नहीं होता।''

इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ जब मक़्रूज़ हुए और उन्हें क़र्ज़ के सबब शदीद ग़म लाह़िक़ हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ''मैं इस ग़म का सबब चालीस साल पहले सरज़द होने वाले एक गुनाह को समझता हूं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान तैमी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''आदमी पोशीदा त़ौर पर एक गुनाह करता है तो इस की वजह से उस पर ज़िल्लत त़ारी हो जाती है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''मुझे उस आ़क़िल पर तअ़ज्जुब है जो अपनी दुआ़ में तो येह कहता है कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मुसीबत में मुब्तला कर के मेरे दुश्मनों को ख़ुश न करना। ह़ालां कि वोह ख़ुद दुश्मन को अपनी मुसीबत पर ख़ुश करने के अस्बाब पैदा करता है।'' आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया : ''वोह कैसे ?'' तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है और इस त़रह़ क़ियामत के दिन अपने दुश्मनों को ख़ुश करेगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने एक नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "अपनी क़ौम से कहो कि वोह न तो मेरे दुश्मनों के ठिकानों में दाख़िल हुवा करे, न ही मेरे दुश्मनों का लिबास पहना करे, न ही मेरे दुश्मनों की सुवारियों पर सुवार हुवा करे और न ही मेरे दुश्मनों के खाने खाया करे कि कहीं वोह लोग उन की त़रह़ मेरे दुश्मन न हो जाएं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "लोगों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ को हलका जाना तो उस की ना फ़रमानी करने लगे अगर वोह उसे मुअ़ज़्ज़ज़ जानते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें गुनाहों से मह़फ़ूज़ फ़रमा लेता।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "जब कामिल आदमी कोई गुनाह कर बैठता है तो उसे भुलाता नहीं और मुसल्सल उस गुनाह पर डरता रहता है यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाता है।"

﴾58﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन अपने गुनाहों को पहाड़ की चोटी पर देखता है और डरता है कि कहीं वोह इस पर गिर न पड़ें और फ़ाजिर गुनाहों को नाक पर बैठने वाली मख्खी की त़रह़ समझता है जब वोह उसे उड़ाता है तो वोह उड़ जाती है।"

(صحیح البخاری ، کتاب الدعوات، باب التوبۃ، الحدیث:۶۳۰۸،ص ۵۳۱،بدون"فطار"وقع بدلہ "مرّ")

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "बनी इस्राईल के एक शख़्स से गुनाह सरज़द हुवा तो वोह ग़मज़दा हो गया और इधर उधर चक्कर लगाने लगा कभी आता कभी जाता और कहता : "मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ को किस त़रह़ राज़ी करूं।" तो उसे सिद्दीक़ीन में लिख दिया गया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन दादा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **कहमस** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि "ऐ अबू स-लमह ! मैं ने एक गुनाह किया था और उस पर चालीस साल से रो रहा हूं।" मैं ने पूछा : "वोह गुनाह क्या था ?" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरा एक भाई मुझ से मिलने के लिये आया तो मैं ने उस के लिये एक दानिक़ (या'नी दिरहम के छटे हि़स्से) की मछली ख़रीदी जब उस ने खाना खा लिया तो मैं अपने पड़ोसी की दीवार की त़रफ़ गया और उस में से मिट्टी का एक ढेला लिया और उस मिट्टी से (बत़ौरे साबुन) उस मेहमान के हाथ धुलाए मैं अपनी उस ख़त़ा (या'नी पड़ोसी की दीवार से उस की इजाज़त के बिग़ैर मिट्टी लेने) पर चालीस साल से रो रहा हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने किसी आ़मिल (या'नी स-दक़ात

www.dawateislami.net

जम्अ़ करने वाले) की त़रफ़ मक्तूब भेजा (जिस में लिखा था) : ''**امابعد!**'' ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बन्दों पर ज़ुल्म करने की क़ुदरत दे तो इस बात को याद रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तुम पर कितनी क़ुदरत है और जान लो कि तुम उन पर जो भी ज़ुल्म करोगे वोह ज़ुल्म उन की मौत के बा'द उन से दूर हो जाएगा जब कि उस की शरमिन्दगी और आख़िरत में जहन्नम की आग तुम्हारे लिये हमेशा बाक़ी रहेगी और येह भी जान लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम से मज़्लूम का ह़क़ ज़रूर दिलाएगा और बाज़ आ जाओ और ऐसे लोगों पर ज़ुल्म करने से बचते रहो जिन का तुम्हारे मुक़ाबले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई मददगार नहीं क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब अपनी जानिब बन्दे की सच्ची इल्तिजा और इज़्तिरार देखता है तो फ़ौरन उस की मदद फ़रमाता है।''

चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اَمَّنۡ یُّجِیۡبُ الۡمُضۡطَرَّ اِذَا دَعَاہُ وَ یَکۡشِفُ السُّوۡٓءَ (پ۲۰،النمل:۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब मलाएका को पैदा फ़रमाया तो उन्हों ने आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर अ़र्ज़ की : ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! तू किस के साथ है ?'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तक मज़्लूम का ह़क़ न दिला दूं उस के साथ हूं।''

अस्लाफ़ رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی में से किसी बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का क़ौल है : ''ऐ गुनहगारो ! अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़वील बुर्दबारी (या'नी लम्बी ढील) से धोका न खाओ बल्कि गुनाहों के सबब उस की ना राज़गी से डरो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَلَمَّاۤ اٰسَفُوۡنَا انۡتَقَمۡنَا مِنۡہُمۡ (پ۲۵،الزخرف:۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने वोह किया जिस पर हमारा ग़ज़ब उन पर आया।

ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब अल क़ारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی फ़रमाते हैं : ''मैं ने ख़्वाब में एक त़वीलुल क़ामत शख़्स को देखा कि लोग उस के पीछे चल रहे थे, मैं ने पूछा : ''येह बुज़ुर्ग कौन हैं ?'' तो लोगों ने बताया : ''येह ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हैं।'' तो मैं भी उन के पीछे चल दिया और अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए मुझे कोई वसिय्यत फ़रमाइये।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मेरी त़रफ़ तेवरी चढ़ाई तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''मैं हिदायत का त़लब गार हूं, मुझे हिदायत दीजिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सीधे रास्ते पर चलाए।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करते वक़्त उस की रह़मत त़लब करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करते वक़्त उस की ना राज़गी से डरो और इन दोनों ह़ालतों के दरमियान उस से अपनी उम्मीद न तोड़ो।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मुझे छोड़ कर चले गए।''

www.dawateislami.net

तौरात शरीफ़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : "ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम से मह़ब्बत करता था, फिर जब तुम ने मेरी ना फ़रमानी की तो मैं तुम से नफ़रत करने लगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मैं चांद की इब्तिदाई रातों में क़ब्रिस्तान के पास से गुज़रा तो मैं ने एक शख़्स को क़ब्र से निकलते हुए देखा वोह ज़न्जीर खींच रहा था फिर मैं ने देखा कि एक और शख़्स उस ज़न्जीर को पकड़े हुए है उस दूसरे ने बाहर निकलने वाले शख़्स को अपनी त़रफ़ खींचा और उसे क़ब्र में लौटा दिया, फिर मैं ने उसे उस मुर्दे को मारते हुए देखा और मुर्दा कह रहा था : "क्या मैं नमाज़ नहीं पढ़ता था ? क्या मैं जनाबत से गुस्ल नहीं करता था ? क्या मैं रोज़े नहीं रखता था ?" तो उस मारने वाले ने जवाब दिया : "हां, क्यूं नहीं, (तू वाक़ेई येह काम तो करता था) मगर जब तू तन्हाई में गुनाह किया करता था तो उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता था।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं मौत और (मरने के बा'द हड्डियों की) बोसी-दगी को याद करने के लिये कसरत से क़ब्रिस्तान में आता जाता था, एक रात मैं क़ब्रिस्तान में था कि मुझ पर नींद ग़ालिब आ गई और मैं सो गया तो मैं ने ख़्वाब में एक खुली हुई क़ब्र देखी और एक कहने वाले को येह कहते हुए सुना : "येह ज़न्जीर पकड़ो और इस के मुंह में दाख़िल कर के इस की शर्मगाह से निकालो।" तो वोह मुर्दा कहने लगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या मैं क़ुरआन नहीं पढ़ा करता था ? क्या मैं तेरे हु़रमत वाले घर का ह़ज नहीं करता था ?" फिर वोह इसी त़रह़ एक के बा'द दूसरी नेकी गिनवाने लगा तो मैं ने एक कहने वाले को येह कहते हुए सुना : "तू लोगों के सामने येह आ'माल किया करता था लेकिन जब तू तन्हाई में होता तो ना फ़रमानियों के ज़रीए मुझ से ए'लाने जंग करता और मुझ से नहीं डरता था।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मदीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हमारा एक दोस्त था उस ने हमें बताया कि मैं अपनी ज़मीन की त़रफ़ जा रहा था कि रास्ते में नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया तो मैं क़रीब के एक क़ब्रिस्तान के पास आया और नमाज़े मग़रिब अदा कर के अभी वहीं बैठा हुवा था कि मैं ने क़ब्रिस्तान की त़रफ़ से रोने की एक आवाज़ सुनी। जिस क़ब्र से रोने की आवाज़ आ रही थी मैं उस के क़रीब आया तो सुना कि वोह मुर्दा कह रहा था : "आह ! बेशक मैं रोज़े रखा करता और नमाज़ पढ़ा करता था।" येह सुन कर मुझ पर कप-कपी त़ारी हो गई तो मैं ने क़रीब के लोगों को बुलाया तो उन्हों ने भी वोह बातें सुनीं, इस के बा'द मैं अपनी ज़मीन की त़रफ़ चला गया और जब दूसरे दिन वापस आ कर उसी जगह नमाज़ पढ़ी और गुरूबे आफ़्ताब के इन्तिज़ार में वहीं ठहरा रहा, फिर नमाज़े मग़रिब अदा कर के क़ब्र की जानिब कान लगा कर सुना कि वोह मुर्दा रोते हुए कह रहा है : "आह मैं नमाज़ पढ़ा करता था, मैं रोज़े रखा करता था।" इस के बा'द मैं अपने घर लौट आया और दो महीने मुसल्सल बुख़ार में तपता रहा।"

मैं (मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) **कहता हूं** कि इसी त़रह़ का एक वाक़िआ़ मेरे साथ भी पेश

www.dawateislami.net

आया था, हुवा यूं कि जब मैं छोटा था तो पाबन्दी से अपने वालिद साहिब رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्र पर ह़ाज़िरी दिया करता और कुरआने पाक की तिलावत किया करता था एक मरतबा र-मज़ानुल मुबारक में नमाज़े फ़ज्र के फ़ौरन बा'द क़ब्रिस्तान गया ग़ालिबन वोह र-मज़ान का आख़िरी अ़-शरह बल्कि शबे क़द्र थी, उस वक़्त क़ब्रिस्तान में मेरे इलावा कोई न था बहर ह़ाल अभी मैं ने अपने वालिद साहिब رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्र के क़रीब बैठ कर कुरआने पाक का कुछ हिस्सा ही पढ़ा था कि अचानक शदीद आहो बुका और रोने धोने की आवाज़ सुनी, रोने वाला बार बार "आह ! आह ! आह !" कह रहा था, चूने से तय्यार शुदा चमकदार सफ़ेद क़ब्र से निकलने वाली उस आवाज़ ने मुझे घबराहट में मुब्तला कर दिया तो मैं क़िराअत छोड़ कर वोह आवाज़ सुनने लगा, मैं ने क़ब्र के अन्दर से अ़ज़ाब की आवाज़ सुनी, अ़ज़ाब में मुब्तला शख़्स इस त़रह़ आहो ज़ारी कर रहा था जिसे सुनने से दिल में क़लक़ और घबराहट पैदा हो रही थी, मैं कुछ देर तक वोह आवाज़ सुनता रहा फिर जब दिन ख़ूब रोशन हो गया तो वोह आवाज़ सुनाई देना बन्द हो गई, फिर जब एक शख़्स मेरे क़रीब से गुज़रा तो मैं ने उस से पूछा : "येह किस की क़ब्र है ?" तो उस ने बताया : "येह फुलां की क़ब्र है ।" मैं ने उस शख़्स को बचपन में देखा था, येह कसरत से मस्जिद आता जाता, नमाज़ों को अपने अवक़ात में अदा करता और बे जा गुफ़्त-गू से परहेज़ किया करता था, मैं ने चूंकि उसे देखा हुवा था लिहाज़ा उस को पहचान गया, लेकिन उस शख़्स की इस मौजूदा ह़ालत ने मुझ पर बहुत गहरा असर डाला और मुझे मा'लूम हो गया कि इस ने ज़िन्दगी में आ'माले सालिह़ा को महज़ अपना ज़ाहिरी लबादा बना रखा था, इस के बा'द मैं ने उस के अह़वाल की ह़क़ीक़त जानने वालों से उस के बारे में पूछगछ की तो लोगों ने मुझे बताया : "वोह सूद खाया करता था और एक ताजिर था, जब बूढ़ा हुवा और उस के पास माल कम रह गया तो उस का ज़ालिम और ख़बीस नफ़्स अपनी बाक़ी ज़िन्दगी में उस जम्अ़ शुदा पूंजी से गुज़ारा करने पर राज़ी न हुवा और शैत़ान ने उस के दिल में सूद की मह़ब्बत को आरास्ता किया ताकि उस के माल में कमी न हो और येही वजह है कि वोह र-मज़ान बल्कि शबे क़द्र में भी इस दर्दनाक अ़ज़ाब से दो चार है । फिर जब मैं ने उस के अ़लाक़े के एक शख़्स के सामने अपना पेश आ-मदा वाक़िआ़ बयान किया तो उस ने कहा : "इस से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ वाक़िआ़ तो फुलां क़ाज़ी के क़ासिद (या'नी पैग़ाम रसां) अ़ब्दुल बासित़ का है ।" मैं उस शख़्स को भी जानता था, येह इब्तिदा में क़ाज़ियों का क़ासिद था फिर मालदार हो गया, मैं ने पूछा : "उस का वाक़िआ़ क्या है ?" तो उस ने बताया : "जब हम ने एक मुर्दे को दफ़्नाने के लिये इस के क़रीब क़ब्र खोदी तो इत्तिफ़ाक़ से उस की क़ब्र खुल गई हम ने उस की क़ब्र में एक बहुत बड़ी ज़न्जीर देखी, एक बहुत बड़ा सियाह कुत्ता उस ज़न्जीर में उस के साथ बंधा हुवा उस के सर पर खड़ा था और उसे अपने पन्जों और नाख़ुनों से चीरना फाड़ना चाहता था, हम येह ख़त़रनाक मन्ज़र देख कर बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा हुए और जल्दी जल्दी उस की क़ब्र को मिट्टी से ढांप दिया ।"

उन्हीं लोगों ने मुझे बताया : "ऐसा ही एक मन्ज़र हम ने फुलां शख़्स की क़ब्र में भी देखा था जब हम ने उस की क़ब्र खोदी तो देखा कि उस के जिस्म में से सिर्फ़ खोपड़ी बाक़ी बची है और उस

www.dawateislami.net

में चौड़े मुंह वाली बड़ी मैख़ें ठुकी हुई हैं गोया कि वोह एक बड़ा दरवाज़ा है हमें इस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और हम ने उसे मिट्टी से ढांप दिया।"

एक और वाक़िआ़ बताते हुए उन्हों ने बताया : "हम ने फ़ुलां की क़ब्र खोदी तो उस से बहुत बड़ा अज़्दहा निकला, वोह उस के जिस्म से लिपटा हुवा था हम ने उसे मय्यित से दूर करने की कोशिश की तो उस ने हम पर फुन्कारा जिस से हम एक दूसरे पर गिर पड़े।"

हम ग़ज़ब और मा'सिय्यत के सबब होने वाले क़ब्र के अ़ज़ाब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अ़ब्दुल जब्बार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुझ से एक गुनाह सरज़द हुवा तो मैं ने उसे ह़क़ीर जाना फिर जब मैं सोया तो ख़्वाब में मुझ से कहा गया : "किसी गुनाह को ह़क़ीर न जानो अगर्चे वोह छोटा ही क्यूं न हो क्यूं कि आज जो गुनाह तुम्हारे नज़्दीक छोटा है कल वोही गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बहुत बड़ा होगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन सुलैमान अन्माती़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बारे में बयान शुदा औसाफ़ की हैअत व सूरत में उन की ज़ियारत की, वोह फ़रमा रहे थे :

لَوْلَا الَّذِيْنَ لَهُمْ وِرْدٌ يَّقُوْمُوْنَا　　وَآخَرُوْنَ لَهُمْ سِرْدٌ يَّصُوْمُوْنَا

لَدَكْدَكَتْ اَرْضُكُمْ مِنْ تَحْتِكُمْ سِحْرًا　　لِاَنَّكُمْ قَوْمٌ سُوْءٌ لَا تُطِيْعُوْنَا

तरजमा : अगर वोह लोग न होते जिन का वज़ीफ़ा हमारी बारगाह में क़ियाम करना है और वोह लोग भी न होते जिन का वती़रा हमारे लिये रोज़े रखना है तो तुम्हारे नीचे की ज़मीन ख़ुद ब ख़ुद फट जाती क्यूं कि तुम एक ऐसी बुरी क़ौम हो जो हमारी इताअ़त नहीं करती।"

याद रखिये ! गुनाहों से रोकने का सब से बड़ा ज़रीआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़, उस के इन्तिक़ाम का डर, उस के अ़क़ाब, ग़ज़ब और पकड़ का अन्देशा है : चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ۝ (پ۱۸، النور:۶۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े।

《59》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक जवान के नज़्अ़ के आ़लम में उस के पास तशरीफ़ लाए और पूछा : "कैसा मह़सूस कर रहे हो?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखता हूं और अपने गुनाहों पर ख़ौफ़ज़दा हूं।" तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "ऐसे वक़्त में बन्दे के दिल में जब येह दो चीज़ें जम्अ़ होती हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की उम्मीद उसे अ़ता फ़रमा देता है और जिस चीज़ से बन्दा ख़ौफ़ज़दा होता है उसे उस से अम्न अ़ता फ़रमा देता है।" (جامع الترمذی ابواب الجنائز، باب الرجاء باللہ......الخ،الحدیث:۹۸۳،ص۱۷۴۵)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन वरद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाया करते थे : "जन्नत की महब्बत और जहन्नम का ख़ौफ़ मुसीबत पर सब्र करने की तल्क़ीन करता है और बन्दे को दुन्यवी लज़्ज़ात, नफ़्सानी ख़्वाहिशात और गुनाहों से दूर करता है।"

हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारे सामने कई ऐसी क़ौमें गुज़र गईं जिन में से अगर कोई दुन्या भर की कंकरियों के बराबर सोना ख़र्च करता तब भी अपने दिल में गुनाह को बड़ा जानने की वजह से नजात हासिल न होने से डरता।"

《60》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या जो कुछ मैं सुन रहा हूं, तुम भी सुन रहे हो ? आस्मान चिरचिरा उठा है और वोह उस का हक़ भी है क्यूं कि उस पर हर चार उंगलियों की जगह पर एक फ़िरिश्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये सज्दे में या क़ियाम या रुकूअ में है, जो कुछ मैं जानता हूं अगर तुम भी जान लेते तो कम हंसते और ज़ियादा रोते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से पहाड़ों की तरफ़ निकल खड़े होते और उस की अज़ीम पकड़ और सख़्त इन्तिक़ाम से डरते हुए उस की पनाह मांगते।" एक रिवायत में है : "और तुम इस बात से बे ख़बर होते कि तुम्हें नजात मिलेगी या नहीं।"

(كنز العمال ، كتاب العظمة ، من قسم الاقوال ، رقم ٢٩٨٢٤ ، ٢٩٨٢٨ ، ج ١٠ ، ص ١٦٦ ،ملخصاً)

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़्नी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो हंसते हुए गुनाह करता है वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा।"

《61》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर मोमिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास वाले अज़ाब को जान लेता तो जहन्नम से बे ख़ौफ़ न रहता।"

(صحيح البخاري،كتاب الرقاق، باب الرجاء مع الخوف،الحديث:٦٤٦٩،ص٥٤٣)

《62》...... बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۙ (پ١٩،الشعرآء:٢١٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ।

तो दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ गुरौहे क़ुरैश** ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी जानों को ख़रीद लो क्यूं कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तुम्हारे किसी काम नहीं आऊंगा, **ऐ बनी अब्दे मुनाफ़** ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तुम्हारे किसी काम नहीं आऊंगा, **ऐ अब्बास** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ! अल्लाह के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तुम्हारे किसी काम नहीं आऊंगा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم عَزَّوَجَلَّ की **फूफी सफ़िय्या** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तुम्हारे किसी काम नहीं आऊंगा,

www.dawateislami.net

ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ! मेरे माल में से जो चाहो मुझ से मांगो मगर मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तुम्हारे किसी काम नहीं आऊंगा।''

(صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب هل یدخل النساء......الخ، الحدیث:۲۷۵۳، ص۲۲۱، بدون"بعض الالفاظ")

《63》...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ''मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है)

وَالَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُہُمْ وَجِلَۃٌ اَنَّہُمْ اِلٰی رَبِّہِمْ رٰجِعُوْنَ ۝ (پ۱۸، المؤمنون:۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो देते हैं जो कुछ दें और उन के दिल डर रहे हैं यूं कि उन को अपने रब की त़रफ़ फिरना है।

तो ऐ अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो शख़्स ज़िना करता, चोरी करता और शराब पीता है क्या वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता भी है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''नहीं ! ऐ बिन्ते अबू बक्र ! ऐ बिन्ते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ! इस से मुराद वोह शख़्स है जो नमाज़ पढ़ता, रोज़े रखता और स-दक़ा करता है और इस बात से डरता है कि कहीं उस के आ'माल क़बूल होने से न रह जाएं।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدة عائشة رضی الله تعالیٰ عنها، الحدیث:۲۵۳۱۸، ج۹، ص۵۰۵، بدون "الرجل")

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : ''ऐ अबू सईद ! हम ऐसी क़ौम की मजलिस के बारे में क्या करें जो हमें इतनी उम्मीद दिलाती है कि हमारे दिल उड़ने लग जाते हैं या'नी हम खु़श फ़हमी में मुब्तला हो जाते हैं।'' तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारा ऐसी क़ौम की सोह़बत इख़्तियार करना जो तुम्हें ख़ौफ़ दिलाए यहां तक कि तुम्हें आख़िरत में अम्न ह़ासिल हो जाए तुम्हारे लिये उस क़ौम की सोह़बत इख़्तियार करने से बेहतर है जो तुम्हें इतना अम्न दिलाए कि आख़िरत में तुम्हें ख़ौफ़ज़दा करने वाले उमूर लाह़िक़ हो जाएं।''

जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ज़ख़्मी किया गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाल का वक़्त आ गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे से इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे रुख़्सार को ज़मीन से मिला दो, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर रह़म न फ़रमाया तो मेरी ह़सरत का आ़लम क्या होगा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! येह ख़ौफ़ कैसा ? ह़ालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथों फ़ुतूह़ात के दर खोल दिये और बहुत से शह्‌र आबाद किये, क्या वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ ऐसा मुआ-मला फ़रमाएगा ?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मेरी इस त़रह़ नजात हो जाए कि न वोह मुझ से मुआ-ख़ज़ा फ़रमाए और न मुझ

www.dawateislami.net

पर इन्आम फ़रमाए।" एक और रिवायत में है : "न मुझे अज्र मिले और न ही मेरे ज़िम्मे कोई गुनाह हो।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब वुज़ू कर के फ़ारिग़ होते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर लरज़ा तारी हो जाता। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम पर अफ़्सोस है ! क्या तुम नहीं जानते कि मैं किस की बारगाह में खड़ा हो रहा हूं और किस से मुनाजात करना चाहता हूं ?"

इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मुझे खाने, पीने और ख़्वाहिशात की तक्मील से रोक देता है।"

﴾64﴿...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन सात अफ़राद का तज़्किरा फ़रमाया जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस दिन अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा जिस दिन उस के अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा और इन ख़ुश नसीबों में उस शख़्स का भी ज़िक्र फ़रमाया जिस ने तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वईदों और उस के अ़क़ाब को याद किया तो अपने गुनाहों और ना फ़रमानियों को याद कर के उस की आंखें बह पड़ीं।"

(صحیح البخاری، کتاب الاذان،باب من جلس فی المسجد......الخ،الحدیث:٦٦٠،ص٥٣،"تحت ظل عرشه" بدله" فی ظله")

﴾65﴿..... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दो आंखों को जहन्नम की आग न छूएगी : एक वोह आंख जो रात के किसी हिस्से में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और दूसरी वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा देते हुए रात गुज़ारे।"

(جامع الترمذی، کتاب الجهاد،باب ماجاء فی فضل الحرس......الخ،الحدیث:١٦٣٩،ص١٨٢٠، بدون" فی جوف اللیل ")

﴾66﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए दो जहां, मकीने ला मकां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन इन तीन आंखों के इ़लावा हर आंख रोएगी : (1) वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या से रुक जाए, (2) वोह आंख जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहरा दे और (3) वोह आंख जिस से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मख्खी के पर के बराबर आंसू निकले।"

(الترغیب والترهیب، کتاب التوبة والزهد، باب الترغیب فی بکاء من خشیة الله ،الحدیث:٥٠٩٦، ج٤، ص ٩٩)

﴾67﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोएगा वोह जहन्नम में उस वक़्त तक दाख़िल न होगा जब तक दूध थनों में वापस न चला जाए। और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का गुबार और जहन्नम का धूआं कभी इकठ्ठे न होंगे।"

(جامع الترمذی، کتاب فضائل الجهاد،باب ماجاء فی فضل غبار،الحدیث:١٦٣٣،ص١٨١٩)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : "ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक आंसू बहाना मुझे हज़ार दीनार स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है।"

﴾68﴿...... हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुझे ख़बर दी गई है कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में निकलने वाले इन्सान के आंसू उस के जिस्म के जिस हिस्से पर पहुंचेंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस हिस्से को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सीनए मुबारक से रोने की आवाज़ इस त़रह़ निकलती थी जैसे खौलती हुई हंडिया के जोश मारने से निकलती है।"

हज़रते सय्यिदुना किन्दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोते हुए बहने वाले आंसूओं का एक क़त़रा आग के कई समुन्दर बुझा देता है।"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने नफ़्स का मुहा-सबा करते हुए फ़रमाते : "तेरी बातें तो ज़ाहिदों जैसी हैं लेकिन अ़मल मुनाफ़िक़ों जैसा है और इस के बा वुजूद जन्नत में दाख़िला चाहता है, दूर हो जा ! दूर हो जा ! जन्नत के लिये तो दूसरे लोग हैं जिन के आ'माल हमारे अ़-मलों जैसे नहीं।"

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादे رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मुझे वसिय्यत फ़रमाइये।" तो उन्हों ने दो बातें इर्शाद फ़रमाईं : "ऐ सुफ़्यान ! (1) मुरुव्वत झूटे के लिये और राह़त ह़ासिद के लिये नहीं होती और (2) उख़ुव्वत तंगदिल लोगों के लिये और सरदारी बद अख़्लाक़ लोगों के लिये नहीं होती।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ शहज़ादए रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मज़ीद इर्शाद फ़रमाइये।" तो उन्हों ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सुफ़्यान ! (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़राम कर्दा कामों से रुके रहो, तदब्बुर वाले बन जाओगे (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये जो तक़्सीम मुक़र्रर की है उस पर राज़ी रहो, सरे तस्लीम ख़म करने वाले बन जाओगे (3) लोगों से इस त़रह़ मिलो जिस त़रह़ तुम चाहते हो कि वोह तुम से मिलें, ईमान वाले बन जाओगे और (4) फ़ाजिर की सोह़बत में न बैठो कहीं वोह तुम्हें अपनी बदकारियां न सिखा दे, जैसा कि मरवी है कि,

सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, लिहाज़ा तुम में से हर एक को चाहिये कि वोह देखे किस से दोस्ती कर रहा है।" (جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب الرجل علی دین خلیله، الحدیث:۲۳۷۸،ص ۱۸۹۰)

(5) "और अपने मुआ़-मलात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वालों से मश्वरा कर लिया करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ शहज़ादए रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मज़ीद इर्शाद फ़रमाइये।" तो उन्हों ने

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सुफ़्यान ! जो ख़ानदान के बिग़ैर इज़्ज़त और हुक्मरानी के बिग़ैर हैबत और रो'ब व दबदबा ह़ासिल करना चाहता हो उसे चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की ज़िल्लत से निकल कर उस की फ़रमां बरदारी में आ जाए ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ शहज़ादए रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये ।" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे मेरे वालिदे गिरामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तीन बातें सिखाते हुए मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! (1) जो बुरे आदमी की सोह़बत इख़्तियार करता है, वोह सलामत नहीं रहता (2) जो बुराई की जगह जाता है उस पर तोहमत लगती है और (3) जो अपनी ज़बान क़ाबू में नहीं रखता, वोह नादिम होता है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना वहीब बिन वरद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा : "क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ना फ़रमान भी इ़बादत की लज़्ज़त पाता है ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, बल्कि जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के बारे में सोचता है वोह भी इ़बादत की लज़्ज़त नहीं पाता ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ख़ौफ़ ख़्वाहिशात को जला देने वाली आग का नाम है इस लिये इस की इतनी ही फ़ज़ीलत है जितना येह ख़्वाहिशात को जलाता, मा'सिय्यत से रोकता और इत़ाअ़त पर उभारता है, नीज़ ख़ौफ़ फ़ज़ीलत वाला क्यूंकर न हो कि इसी से पाक दा-मनी, तक़्वा, परहेज़ गारी मुजा-हदात और दीगर वोह आ'माल ह़ासिल होते हैं जिन के ज़रीए़ बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करता है जैसा कि इस की फ़ज़ीलत क़ुरआनी आयात व अह़ादीस से भी ज़ाहिर है, म-सलन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के येह फ़रामीने मुबा-रका :

《1》

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ0
(پ۹،الاعراف:۱۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं ।

《2》

رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّهٗ 0 (پ۳۰،البینۃ:۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे ।

《3》

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ0 (پ۴،اٰل عمران:۱۷۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मुझ से डरो अगर अगर ईमान रखते हो ।

www.dawateislami.net

《4》

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِO
(پ۲۷،الرحمٰن:۴۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जो जन्नतें हैं।

《5》

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى O (پ۳۰،الاعلیٰ:۱۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अ़न्क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है।

《6》

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ط
(پ۲۲،فاطر:۲۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

और इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर दलालत करने वाली हर आयते करीमा या ह़दीसे मुबा-रका ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ की फ़ज़ीलत की भी दलील है क्यूं कि ख़ौफ़ इ़ल्म ही का नतीजा है।"

《69》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है "जब तक बन्दे के जिस्म पर ख़ौफ़े खुदा से लरज़ा त़ारी होता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़ दरख़्त से खुश्क पत्ते झड़ते हैं।"

(مسندبزّار،ج٤،الحديث:١٣٢٢،ص١٤٨ "باختلاف الالفاظ")

《70》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर न तो दो ख़ौफ़ जम्अ़ करूंगा, न ही दो अम्न, अगर मेरा बन्दा दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ होगा तो मैं उसे क़ियामत के दिन ख़ौफ़ में मुब्तला करूंगा और अगर वोह दुन्या में मुझ से डरता रहेगा तो मैं क़ियामत के दिन उसे अम्न अ़त़ा फ़रमाऊंगा।"

(كنز العمال،كتاب الاخلاق من قسم الاقوال، باب حرف الخاء الخوف والرجاء،الحديث:٥٨٧٥،ج٣، ص ٦٠،بتغيرٍ قليلٍ)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस दिल में ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ नहीं वोह दिल वीरान है, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَO
(پ۹،الاعراف:۹۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तो **अल्लाह** की ख़फ़ी त.दबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "ख़त़ा पर रो लेना गुनाहों को इस त़रह़ झाड़ देता है जिस त़रह़ हवा खुश्क पत्तों को झाड़ देती है।"

www.dawateislami.net

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का क़ौल है : "अगर येह ए'लान हो कि एक शख़्स के इलावा तमाम लोग जन्नत में जाएंगे तो मुझे डर है कि कहीं मैं ही वोह शख़्स न होऊं।" येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बा'द अफ़्ज़ल इन्सान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का क़ौल है। हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें जन्नत की बिशारत अ़ता फ़रमाई मगर इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़ितनों और मुनाफ़िक़ीन से मु-तअ़ल्लिक़ अह़्वाल में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के राज़दार सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ हुज़ैफ़ा ! क्या मुनाफ़िक़ीन में मेरा नाम भी है ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप उन में से नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को येह अन्देशा हुवा कि कहीं मेरे नफ़्स ने मेरे अह़्वाल को मुश्तबह तो नहीं कर दिया और मेरे उ़यूब को मुझ से छुपा तो नहीं लिया और येह ख़ौफ़ इतना ज़ियादा हुवा कि उन्हों ने रसूले काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से मिलने वाली जन्नत की बिशारत को चन्द ऐसी शराइत़ से मश्रूत़ जाना जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ में न पाई जाती थीं, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इस बिशारत से अपने आप को मुत़्मइन न किया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "जब हम सब के बाप ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जन्नत से ज़मीन पर उतरे तो तीन सो साल तक ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से गिर्या व ज़ारी करते रहे यहां तक कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आंसूओं से सरांदीप की वादियां जारी हो गईं। सरांदीप बर्रे सग़ीर का एक ख़ूब सूरत तरीन मुल्क है (इस का मौजूदा नाम श्रीलंका (सीलोन) है) इस की फ़ज़ा बाक़ी तमाम शहरों से ज़ियादा मो'तदिल है, येही वजह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस शहर में उतरे ताकि उन्हें जन्नत से जुदाई की वजह से कोई ज़ियादा नुक़्सान न पहुंचे, अगर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी दूसरे शहर में उतरते जहां के मौसिम में सर्दी और गर्मी मो'तदिल न होती तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उस का ज़ियादा नुक़्सान पहुंचता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना वहीब बिन वरद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर उन के बेटे के मुआ-मले में इ़ताब फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया :

اِنِّیۡۤ اَعِظُکَ اَنۡ تَکُوۡنَ مِنَ الۡجٰہِلِیۡنَ ﴿۴۶﴾ (پ۱۲، ھود:۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मैं तुझे नसीह़त फ़रमाता हूं कि नादान न बन।

तो ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तीन सो साल तक रोते रहे यहां तक कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक रुख़्सारों पर कसरते गिर्या से लकीरें बन गईं।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इतना रोते कि आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने की ज़मीन तर हो जाती और इतना रोते कि आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आंसूओं से घास उग जाती फिर इतना रोते कि आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आवाज़ बन्द हो जाती।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन ज़-करिय्या عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इतना रोते कि आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रुख़्सार फट गए और दाढ़ें ज़ाहिर हो गईं तो आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा ने आप से फ़रमाया : "बेटा ! तुम मुझे इजाज़त दो कि मैं ऊन के दो टुकड़े तुम्हारे गालों पर रख दूं ताकि तुम्हारी दाढ़ें छुप जाएं।" आप ने इजाज़त दे दी तो उन्हों ने आप के रुख़्सारों पर उन्हें चस्पां कर दिया फिर जब आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रोते तो वोह आंसूओं से भर जाते और आप की वालिदा उन्हें निचोड़ देतीं और आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आंसू अपने बाज़ू पर बहा देतीं।"

﴾71﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बहुत ज़ियादा रोने वाले शख़्स थे, जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कुरआने पाक की तिलावत करते तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अपनी आंखों पर क़ाबू न रहता।"

(صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ ،باب المسجد یکون فی الطریق......الخ،الحدیث:۴۷۶،ص ۴۰)

﴾72﴿...... जब नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मरज़ में मुब्तला हुए तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बहुत नर्म दिल हैं जब वोह आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जगह खड़े होंगे तो (उन पर ग़म का ग़-लबा हो जाएगा और) गिर्या व ज़ारी के सबब लोग तिलावत न सुन सकेंगे।"

(سنن ابن ماجۃ ،کتاب اقامۃ الصلاۃ ، باب ماجاء فی صلاۃ رسول اللہ ﷺ فی مرضہ ، الحدیث:۱۲۳۲،۱۲۳۴، ص۲۵۴۹، بتغیر قلیل)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के रुख़्सारों पर रोने की वजह से दो सियाह लकीरें बन गई थीं।"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान :

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ

(پ۲۳،الزمر:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत की आस लगाए।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस से मुराद हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इर्शाद फ़रमाया : "मेरे सामने हज़रते सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के औसाफ़ बयान करें।" हज़रते ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ की : "क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे इस से मुआफ़ न रखेंगे ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, उन के औसाफ़ बयान करें।" हज़रते सय्यिदुना ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फिर अर्ज़ की : "क्या मुझे इस से आफ़िय्यत न देंगे ?" तो हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, मैं आप को उन के औसाफ़ बयान किये बिग़ैर नहीं छोड़ूंगा।" तो हज़रते ज़रार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ की : "जब उन के औसाफ़ बयान किये बिग़ैर कोई चारा नहीं तो सुनिये : हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم इस क़दर उलूम व मआरिफ़ के हामिल थे कि इस में उन की इन्तिहा का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ-मले और उस के दीन की हिमायत में मज़्बूत इरादे रखते थे, फ़ैसला कुन बात करते और अद्ल के साथ फ़ैसला करते थे, उन के पहलूओं से इल्म के सौते फूटते थे और द-हने मुबारक से हिक्मत के फूल झड़ते थे, दुन्या और इस की रंगीनियों से वहशत खाते और रात और इस के अंधेरों से उन्स हासिल करते थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ज़ियादा आंसू बहाने वाले, दूर अन्देश और अफ़्सोस से हाथ मलने वाले थे, क्यूं कि अफ़्सुर्दा और ग़मगीन शख़्स ऐसा ही करता है, अपने नफ़्स को बेचैनी व इज़्तिराब से मुख़ातब फ़रमाते, लिबास खुरदुरा पसन्द करते, जो सामने आ जाता वोही खा लेते, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब हम उन से कुछ पूछते तो वोह उस का जवाब देते और जब उन्हें दा'वत देते तो हमारी दा'वत क़बूल फ़रमाते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम उन के क़रीब रहने और उन से तअल्लुक़ रखने के बा वुजूद हैबत की वजह से उन के सामने कलाम न कर सकते थे, अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुस्कुराते तो लड़ी में पिरोए हुए मोतियों की तरह (दन्दाने मुबारक चमकते), दीनदारों की ता'ज़ीम करते और मिस्कीनों से महब्बत करते, ताक़त वर को ज़ुल्म में उम्मीद न दिलाते और कमज़ोर को इन्साफ़ में मायूस न करते, अल्लाह عَزَّوَجَل की क़सम खा कर मैं गवाही देता हूं कि आज भी उन्हें इस हाल में खड़ा हुवा देख रहा हूं कि जब रात अपने पर्दे डाल देती और सितारे ज़ाहिर हो जाते तो आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم जाए नमाज़ पर आ कर अपनी रीशे मुबारक पकड़ लेते और उस शख़्स की तरह तड़पते जिसे सांप ने काट लिया हो और ग़मज़दा शख़्स की तरह रोते गोया मैं उन्हें गिर्या व ज़ारी करते हुए और येह कहते हुए सुन रहा हूं : "يَا رَبَّنَا! يَا رَبَّنَا" या'नी ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! फिर फ़रमाते : "ऐ दुन्या ! तूने मुझ से मुंह फैर लिया है या अभी कुछ शौक़ बाक़ी है ? हाए अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! मेरे इलावा किसी और को धोके में डाल, मैं ने तुझे तीन तलाक़ें दे दी हैं अब मेरा तुझ से रुजूअ करने का कोई इरादा नहीं, क्यूं कि तेरी उम्र कम है जब कि तेरी आसाइशें हक़ीर और नुक़्सानात बहुत ज़ियादा हैं। आह ! ज़ादे राह क़लील है और सफ़र बहुत दूर का है और रास्ता वहशत

www.dawateislami.net

नाक है।'' इतना सुनने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आंखें भर गईं और रीशे मुबारक आंसूओं से तर हो गई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपनी आस्तीन से अपने आंसू पूंछने लगे और लोगों की भी रोते रोते हिचकियां बंध गईं, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अबुल ह़सन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم पर रह़म फ़रमाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ऐसे ही थे, ऐ ज़रार ! उन पर तुम्हारा ग़म कैसा है ?'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''उस औ़रत जैसा जिस के पहलू में उस के बेटे को ज़ब्ह़ कर दिया गया हो तो न उस के आंसू ख़ुश्क होते हैं, न ग़म में कमी आती है।''

(حلیۃ الاولیاء،ذکر علی بن ابی طالب،رقم:۲۶۱،ج۱،ص۱۲۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا इस क़दर रोए कि टपकने वाले मश्कीज़े की त़रह़ हो गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इतनी कसरत से रोए कि आंखें कमज़ोर हो गईं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद बिन जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने यज़ीद बिन मरसद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से पूछा : ''क्या बात है कि मैं ने आप की आंख को कभी ख़ुश्क नहीं पाया ?'' तो उन्हों ने जवाब दिया : ''तुम येह सुवाल क्यूं कर रहे हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''इस लिये कि शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के ज़रीए मुझे नफ़अ़ बख़्शे।'' तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ख़बरदार किया है कि अगर मैं ने उस की ना फ़रमानी की तो वोह मुझे जहन्नम में क़ैद कर देगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह मुझे ह़म्माम में क़ैद करने की भी वईद सुनाता तब भी मैं इस बात का ह़क़दार था कि मेरी कोई आंख ख़ुश्क न होती।'' मैं ने पूछा : ''क्या तन्हाई में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का येही ह़ाल होता है ?'' तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम येह क्यूं पूछ रहे हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया ''शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इस से नफ़अ़ पहुंचाए,'' तो उन्हों ने जवाब में फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब मैं अपनी ज़ौजा के पास हम-बिस्तरी के इरादे से जाता हूं तो येही ख़याल मेरे इरादे के दरमियान ह़ाइल हो जाता है और जब मेरे सामने खाना रखा जाता है तब भी येही ख़याल मेरे और खाने के दरमियान ह़ाइल हो जाता है यहां तक कि मेरी ज़ौजा और बच्चे भी रो पड़ते हैं ह़ालां कि वोह येह भी नहीं जान सकते कि क्यूं रो रहे हैं ? बसा अवक़ात मेरी ज़ौजा बे क़रार हो कर कहती है हाए अफ़्सोस ! मैं ने आप के साथ इस दुन्यवी ज़िन्दगी में इतने ग़म पाए हैं कि मेरी आंखों ने कभी ठन्डक और क़रार पाया ही नहीं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आंखों में तक्लीफ़ हुई तो त़बीब ने अ़र्ज़ की : ''आप मुझे एक चीज़ की ज़मानत दे दें तो आप की आंखें ठीक हो जाएंगी।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''वोह क्या है ?'' तो त़बीब ने अ़र्ज़ की : ''रोया न करें।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो आंख न रोए ऐसी आंख में भला कौन सी भलाई रह जाती है।''

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अरफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने "वासित" में हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को देखा, आप की आंखें सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत थीं फिर कुछ अर्सा बा'द मैं ने उन्हें देखा तो वोह नाबीना हो चुके थे, मैं ने पूछा : "ऐ अबू ख़ालिद ! आप की ख़ूब सूरत आंखों को क्या हुवा ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "इन्हें सहर का रोना ले गया।"

हज़रते सय्यिदुना फ़त्ह मूसिली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का एक अक़ीदत मन्द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, उस ने आप को रोते हुए इस हाल में पाया कि आप के आंसूओं में पीला पन वाज़ेह था। तो उस ने दरयाफ़्त किया : "क्या आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ून के आंसू रो रहे हैं ?" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "हां !" उस ने दोबारा अर्ज़ की : "किस बात पर रो रहे हैं ?" आप ने जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वाजिब कर्दा हक़ से कोताही बरतने पर।" फिर आप के इन्तिक़ाल के बा'द उसी शख़्स ने आप को ख़्वाब में देखा तो पूछा : " مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ " या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ?" आप ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ने मुझे बख़्श दिया।" उस शख़्स ने पूछा : "आप के आंसूओं का क्या हुवा ?" तो आप ने जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के सबब मुझे अपने क़ुर्ब से मुशर्रफ़ फ़रमाया और मुझ से पूछा : "ऐ फ़त्ह ! तू किस बात पर रोया करता था ?" मैं ने अर्ज़ की : "मैं तेरे वाजिब कर्दा हक़ की अदाएगी में कोताही पर रोता था।" फिर पूछा : "ख़ून के आंसू क्यूं रोता था ?" तो मैं ने अर्ज़ की : "इस ख़ौफ़ से कि कहीं तू मेरे लिये तौबा का दरवाज़ा न बन्द कर दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़त्ह ! इस (रोने) से तेरा इरादा क्या था ? मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम ! चालीस साल तक तेरे मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते आस्मानों पर इस तरह आए कि तेरे आ'माल नामे में एक भी गुनाह नहीं था।"

《**73**》...... हज़रते सय्यिदुना अता رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं और हज़रते सय्यिदुना उबैद बिन उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बारगाह में हाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने हज़रते सय्यिदुना उबैद बिन उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें हमारी मुलाक़ात का ख़याल कब आ गया ?" तो उन्हों ने अर्ज़ की : "ऐ मादरे मोहतरम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ! मैं आप को वोही जवाब दूंगा जो अगलों ने इस मौक़अ पर दिया : "मुलाक़ात में देर किया करो महब्बत में इज़ाफ़ा होगा।" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : "हमें फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू से मुआफ़ ही रखो।" हज़रते सय्यिदुना उबैद बिन उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अर्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में जो सब से अनोखी चीज़ देखी वोह हमें बयान फ़रमाएं।" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कुछ देर सुकूत फ़रमाने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "एक रात शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! आज रात मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने दो।" मैं ने अर्ज़ की : "मुझे आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

की कुरबत महबूब है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की खुशी भी अज़ीज़ है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वुज़ू कर के नमाज़ के लिये खड़े हो गए और मुसलसल रोते रहे यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद मुबारक तर हो गई, फिर इतना रोए कि आंसूओं से ज़मीन तर हो गई, जब हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ नमाज़ का वक्त हो जाने की ख़बर देने हाज़िर हुए और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को रोते हुए पाया तो अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्यूं रो रहे हैं ? हालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अगलों और पिछलों के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दिया है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ? बेशक आज रात मुझ पर एक ऐसी आयत नाज़िल हुई है कि जो इसे पढ़ कर इस में ग़ौर न करे उस के लिये हलाकत है, वोह आयते मुबा-रका येह है :

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡكِ الَّتِیۡ تَجۡرِیۡ فِی الۡبَحۡرِ بِمَا یَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡیَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِیۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصۡرِیۡفِ الرِّیٰحِ وَالسَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَیۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ۝ (پ۲،البقرۃ:۱۶۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती, कि दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को इस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल, कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अक़्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं।

(صحیح ابن حبان،باب ذکر البیان،بان المرء علیه اذا خلا......الخ،الحدیث:٦١٩،ج٢،ص٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! रोना या तो ग़म की वजह से होता है या फिर दर्द की वजह से, कभी घबराहट की वजह से होता है तो कभी खुशी की वजह से, कभी शुक्र गुज़ारी के लिये रोना आता है तो कभी ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ की वजह से। और येही रोना सब से अफ़्ज़ल और आख़िरत में गिरां क़द्र होगा जब कि दिखावे और झूट से रोना, रोने वाले की सरकशी, बुराई और रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ से दूरी में इज़ाफ़ा करता है,

लिहाज़ा जो शख़्स येह नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इल्मे अ-ज़ली में इस के बारे में अ-बदी सआदत लिखी है या दाइमी शक़ावत, बहर हाल वोह इन दो हालतों में से किसी में भी हो वोह हराम ठहराए गए कामों की कश्ती में सुवार है और इस के साथ साथ मुख़ा-ल-फ़ते

www.dawateislami.net

इलाहिय्यह عَزَّوَجَلَّ की हवा भी चल रही है, अब इस पर लाज़िम है कि वोह अपने रोने, अफ़्सोस और ग़मो अन्दौह में कसरत करे और ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से दूरी इख़्तियार करे नीज़ अपने साबिक़ा गुनाहों और ख़ताओं से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नजात तलब करे, शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमाए और उसे जहालत और गुनाहों की तारीकियों से निकाल कर इल्म और इताअत की दौलत से नवाज़ दे और इन दोनों के स-मरात उस पर खोल दे।

किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है : "सब से नर्म दिल आदमी वोही होता है जिस के गुनाह कम होते हैं।"

《74》...... हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नजात येह है कि तुम अपनी ज़बान पर क़ाबू पा लो, अपने घर को वसीअ कर लो और अपने गुनाहों पर आंसू बहाया करो।"

(جامع الترمذی،ابواب الزهد ، باب ماجاء فی حفظ اللسان، الحديث:٢٤٠٦،ص١٨٩٣"امسك "بدله "املك")

《75》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मैं तुम सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखता हूं और तुम सब से ज़ियादा उस से डरता हूं।"

(صحيح البخاری ، كتاب الايمان،باب قول النبی ﷺ انا اعلمكم بالله،الحديث:٢٠،ص٣ ،بدون"اشدكم له خشية")

इसी वजह से अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उ-लमा व औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى पर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़-लबा रहता है जब कि ज़ालिम व सरकश, फ़िरऔन ख़स्लत, बे वुक़ूफ़, जाहिल, आम और कमीने व रज़ील लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ी ग़ालिब रहती है हत्ता कि वोह सख़्त इताब, जहन्नम के अज़ाब और हिजाब की दूरी से इस तरह बे ख़ौफ़ रहते हैं जैसे हिसाबो किताब से फ़ारिग़ हो चुके हों। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की हालत बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाता है :

نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ (پ٢٨،الحشر:١٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** को भूल बैठे तो **अल्लाह** ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं वोही फ़ासिक़ हैं।

《76》...... एक अन्सारी ख़ातून हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे उला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है : "जब पहले पहल मुहाजिर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अन्सार के पास तशरीफ़ लाए तो अन्सार ने (उन की मआशी परेशानियों का बोझ बांटने के लिये) उन सब मुहाजिरीन को आपस में क़ुरआ के ज़रीए तक़्सीम कर लिया तो जलीलुल क़द्र, इबादत गुज़ार सहाबी हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हमारे हिस्से में आए, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अहले बद्र में से हैं,

www.dawateislami.net

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बीमार हुए तो हम ने आप की तीमार दारी की यहां तक कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने विसाल फ़रमाया और हम ने उन्हें कफ़न पहना दिया तो रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो मैं ने कहा : "ऐ अबू साइब ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए, मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा दी है।" तो ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें कैसे मा'लूम हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा दी है?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान, येह तो मैं नहीं जानती।" तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तो इन्तिक़ाल कर गए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इन के लिये ख़ैर की उम्मीद रखता हूं।" (नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का उन की गवाही पर इन्कार इस वजह से था कि उन्हों ने किसी क़ाबिले ए'तिमाद व क़त़्ई दलील के बिग़ैर यक़ीनी गवाही दी थी ह़ालां कि उन्हें चाहिये था कि गवाही यक़ीन के अन्दाज़ में नहीं बल्कि उम्मीद के अन्दाज़ में देतीं जैसा कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने त़र्ज़े अ़मल से दिखाया)

इस के बा'द मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल होने के बा वुजूद अपने (ज़ाती) इ़ल्म से नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा।" तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे उ़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस के बा'द कभी किसी की ता'रीफ़ (जज़्म व यक़ीन के साथ) नहीं करूंगी (बल्कि उम्मीद और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़ुस्ने ज़न रखते हुए ही उस की ता'रीफ़ करूंगी)।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने मज़ीद फ़रमाया : "इस वाक़िए ने मुझे ग़मज़दा कर दिया फिर जब मैं सोई तो मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लिये एक जारी चश्मा देखा तो आक़ाए दो जहां, मकीने ला मकां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हो कर उस ख़्वाब का तज़्किरा किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह उन का अ़मल है।"

(صحیح البخاری، کتاب الشھادت، باب القرعۃ فی المشکلات، الحدیث: ۲۶۸۷، ص ۲۱۳، مختصراً)

﴾77﴿...... जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इन्तिक़ाल हुवा तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के गाल का बोसा लिया और रोने लगे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक आंसू ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के गाल पर बहने लगे और सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان भी रो दिये, फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू साइब ! तुम इस दुन्या से इस त़रह़ चले गए कि तुम ने इस की किसी चीज़ से तअ़ल्लुक़ न रखा।" ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें "**अस्स-लफ़ुस्सालेह़**" के नाम से पुकारा, नीज़ येह वोह पहले सह़ाबी थे जिन्हें बक़ीए ग़रक़द में दफ़्न किया गया।"

(کنزالعمال، کتاب الفضائل، الحدیث: ۳۳۶۰۷، ج۱۱، ص۳۳۷)

www.dawateislami.net

गौर कीजिये कि हज़रते सय्यिदुना उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बदरी सहाबी होने के बा वुजूद उन के बारे में यक़ीन के साथ गवाही देने पर मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस तरह मुमा-न-अत फ़रमाई हालां कि,

﴾78﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "और तुम्हें क्या मा'लूम कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अहले बद्र की शान में येह फ़रमाया है : "तुम जो चाहो करो मैं ने तुम्हें बख़्श दिया है।" (کنز العمال،کتاب الفضائل،فضائل الامة ، اهل بد ر، الحديث:٣٧٩٥٦،ج ١٤،ص ٣١)

महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का उन का बोसा लेना, उन के लिये आंसू बहाना, उन्हें अफ़्ज़लो आ'ज़म औसाफ़ से मुत्तसिफ़ करना, येह फ़रमाना कि "इन्हों ने दुन्या की किसी चीज़ से तअल्लुक़ न रखा।" और येह कि "**येह अस्स-लफ़ुस्सालेह** हैं।" येह तमाम मा'लूमात इस बात की ख़बर देती हैं कि तुम अगर्चे कितनी ही नेकियां क्यूं न कर लो तुम्हें चाहिये कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और उस के अ़ज़ाब और दर्दनाक अ़क़ाब से ख़ौफ़ज़दा रहो, क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर किसी का कोई हक़ वाजिब नहीं।

قُلْ فَمَنْ یَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَیْــٴًـا اِنْ اَرَادَ اَنْ یُّهْلِكَ الْمَسِیْحَ ابْنَ مَرْیَمَ وَ اُمَّهٗ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًاؕ (پ٦،المآئدہ:١٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो फिर अल्लाह का कोई क्या कर सकता है अगर वोह चाहे कि हलाक कर दे मसीह बिन मरयम और इस की मां और तमाम ज़मीन वालों को।

﴾79﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के उस सहाबिय्या पर इन्कार फ़रमाने की एक नज़ीर उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का वाक़िआ भी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को एक अन्सारी बच्चे के जनाज़े में बुलाया गया, तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जन्नत की इस चिड़िया के लिये सआदत है कि न इस ने कभी बुराई को पाया और न ही कोई बुरा काम किया।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आइशा ! क्या कुछ और कहना है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुछ लोगों को जन्नत के लिये पैदा किया है, लेकिन जन्नत को उन के लिये उस वक़्त पैदा किया था जब वोह अपने आबा की पुश्तों में थे और कुछ लोगों को जहन्नम के लिये पैदा फ़रमाया और जहन्नम को उसी वक़्त उन का मुक़द्दर बना दिया था जब वोह अपने आबा की पुश्तों में थे।"

(صحيح مسلم ،كتاب القدر،باب معنى كل مولود يولد على الفطرة......الخ،الحديث:٦٧٦٨،ص ١١٤١)

कुछ लोगों ने इस हदीसे मुबा-रका से इस बात पर इस्तिद्लाल किया है कि "मुअमिनीन के ना बालिग़ बच्चों का जन्नत में दाख़िला यक़ीनी नहीं।" उ़-लमाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم ने क़त्ई आयात व अहादीस के मुख़ालिफ़ उन के इस शनीअ़ क़ौल का ख़ूब इन्कार फ़रमाया और इस के क़ाइल को ग़लत़ कहा और येह इर्शाद फ़रमाया कि "इस हदीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल नहीं किया जा सकता क्यूं कि बिल इज्माअ़ इस का ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं, बल्कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे

www.dawateislami.net

लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के उस ख़बर देने से पहले बयान फ़रमाई थी कि मुअमिनीन के ना बालिग़ बच्चे क़त्ई जन्नती हैं, चूंकि उस वक़्त इन का जन्नती होना यक़ीनी नहीं था लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने यक़ीन के साथ इस का इन्कार फ़रमाया। जब कि नुसूसे क़त्इय्या की गवाही के बा'द मुसल्मानों के बच्चों को क़त्ई जन्नती कहने वाले पर इन्कार नहीं किया जा सकता, बल्कि इख़्तिलाफ़ तो कुफ़्फ़ार के बच्चों के बारे में है जब कि सहीह तरीन क़ौल येही है कि वोह भी जन्नत में होंगे, अब हम अपनी गुफ़्त-गू की त़रफ़ आते हैं।''

﴾80﴿............ रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आलीशान से तमाम मुअमिनीन क्यूं न डरें कि ''**सूरए हूद, अल ह़ाक़्क़ह, अल वाक़िअ़ह,** عَمَّ يَتَسَاءَلُوْنَ، اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ और **अल ग़ाशियह** ने मुझे बूढ़ा कर दिया।''

(مجمع الزوائد، کتاب التفسیر، الباب ۱۲، الحدیث: ۱۱۰۷۲، ۱۱۰۷۵، ج۷، ص۱۱۷)

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं: ''शायद इस का सबब येह है कि इन सूरतों में दिलाया गया ख़ौफ़ और वईदें इन्तिहाई सख़्त हैं अगर्चे इन में आख़िरत के अह़वाल, अ़जाइबात, होलनाकियां और हलाक होने वालों और अ़ज़ाब पाने वालों के अह़वाल भी मुख़्तसर त़ौर पर बयान किये गए हैं जब कि **सूरए हूद** इस्तिक़ामत के अह़कामात पर मुश्तमिल है, और येह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ वोह मुश्किल तरीन मक़ाम है जिस पर क़ाइम रहने के अह्ल सिर्फ़ नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही हैं। और येह मक़ामे शुक्र की त़रह़ है क्यूं कि शुक्र उस चीज़ का नाम है कि ''बन्दा अपने तमाम आ'ज़ा को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा तमाम ने'मतों के साथ ख़्वाह वोह ज़ाहिरी ह़वास हों या बात़िनी, अपने मक़्सदे तख़्लीक़ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत और कामिल त़रीक़े से उस की इत़ाअ़त में मसरूफ़ कर दे।''

﴾81﴿...... इसी लिये जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुजा-हदात, कस्रते गिर्या और ख़ौफ़ व तज़र्रोअ़ के बारे में पूछा जाता: ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसा कर रहे हैं? ह़ालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सबब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अगलों और पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते: ''क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं?'' (صحیح البخاری، کتاب التهجد، باب قیام النبی اللیل، الحدیث: ۱۱۳۰، ص۸۸)

कितने तअ़ज्जुब की बात है कि बा'ज़ लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान:

وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝ (پ۱۶، طٰهٰ: ۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान: और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।

से येह समझते हैं कि इस में बहुत बड़ी उम्मीद दिलाई गई है ह़ालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस में मग़्फ़िरत तक रसाई के लिये चार शराइत़ आइद की हैं जिन के बा'द बड़ी उम्मीद कहां बाक़ी रहती है? वोह शराइत़ येह हैं: (1) तौबा (2) ईमाने कामिल (3) नेक अ़मल और (4) हिदायत याफ़्ता

www.dawateislami.net

लोगों के रास्ते पर चलना । मिसाल के तौर पर हर वक़्त मुरा-क़बा व मुशा-हदा और ज़िक्रो फ़िक्र में मगन रहना और अपने क़ाल व ह़ाल और दा'वत व इख़्लास के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ की जानिब मु-तवज्जेह होना ।

मज़्कूरा शराइत़ में जिस ईमाने कामिल को बयान किया गया है उस की वज़ाह़त हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने ज़ीशान में मौजूद है :

﴾82﴿...... "तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वोही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है ।"

(صحیح البخاری ، کتاب الایمان،باب من الایمان ان یحب لاخیه......الخ،الحدیث:۱۳،ص۳)

और इस की मिसाल क़ुरआने करीम में भी है :

فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ۝ (پ۲۰،القصص:۶۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया क़रीब है कि वोह राहयाब हो ।

तुम इस बात से धोका न खाना कि "عَسٰى" का लफ़्ज़ जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इस्ति'माल हो तो वोह यक़ीन के मा'ना में होता है क्यूं कि येह अक्सरी क़ाइदा तो है मगर कुल्ली नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى (پ۱۶،طٰهٰ:۴۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उस से नर्म बात कहना इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या कुछ डरे ।

ह़ालां कि फ़िरऔन ने न तो नसीह़त ह़ासिल की और न ही नफ़्अ़ देने वाला ख़ौफ़ व ख़शिय्यत अपनाया, बल्कि यहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें ख़बरदार किया है कि जब तुम सच्ची तौबा कर लो, ईमाने कामिल ले आओ और नेक अ़मल को अपना लो, तब अपने लिये फ़लाह़ के ह़ुसूल और ह़क़ तआ़ला की बारगाह से हिदायत व क़ुर्ब की उम्मीद रखो और ख़्वाह कितने ही नेक अ़मल क्यूं न कर लो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहने से बचते रहो, क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ (پ۹،الاعراف:۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले ।

और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन फ़रामीने मुबा-रका को भी पेशे नज़र रखो :

﴾1﴿

لِيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ (پ۲۱،الاحزاب:۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ताकि सच्चों से उन के सच का सुवाल करे ।

www.dawateislami.net

《2》

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ شَهِيْقٌ ۝

(پ۱۲،ھود:۱۰۲تا۱۰۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की, जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक कर्री है। बेशक इस में निशानी है उस के लिये जो आख़िरत के अज़ाब से डरे वोह दिन है जिस में सब लोग इकठ्ठे होंगे और वोह दिन हाज़िरी का है और हम उसे पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुद्दत के लिये, जब वोह दिन आएगा कोई बे हुक्मे ख़ुदा बात न करेगा तो उन में कोई बद बख़्त है और कोई ख़ुश नसीब तो वोह जो बद बख़्त हैं वोह तो दोज़ख़ में हैं वोह उस में गधे की त़रह़ रेंकेंगे।

《3》

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ۝

(پ۱۶،مریم:۷۱۔۷۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे।

《4》

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ۝ (پ۱۹،الفرقان:۲۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं।

《5》

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (پ۲۲،سبا:۲۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और बेशक इब्लीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया तो वोह उस के पीछे हो लिये मगर एक गुरौह कि मुसल्मान था।

www.dawateislami.net

《6》

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ (پ۳۰، الزلزال:۷۔۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा बुराई करे उसे देखेगा।

《7》

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝ (پ۳۰، العصر:۱تا۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : इस ज़मानए मह़बूब की क़सम ! बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को ह़क़ की ताकीद की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की।

बसीरत की आंख और फ़िरासत के नूर से देखो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर इन्सान पर ख़सारे का हुक्म लगाया क्यूं कि "اَلْعَصْر" पर "अलिफ़ लाम" उ़मूम और इस्तिग़राक़ के लिये है और इस की दलील इस्तिस्ना है कि हर इन्सान ख़सारे में है मगर जो इन चार बातों का जामेअ़ होगा वोह हलाकत में डालने वाले ख़सारे से नजात याफ़्ता होगा, वोह चार बातें येह हैं : (1) ईमान (2) नेक अ़मल (3) ह़क़ की इस त़रह़ वसिय्यत करना कि वोह लोग किताबो सुन्नत से साबित शुदा अख़्लाक़ो आदाब, अह़काम व अक़्वाल और ज़ाहिरी व बात़िनी तमाम अफ़आ़ल की शराइत़ पर अ़मल करें ताकि इन में से कोई शै इख़्लास के बिग़ैर न पाई जाए और वोह उस से सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहें और (4) उन्हें सब्र की तल्क़ीन करें कि वोह इत़ाअ़त करने, ना पसन्दीदा उमूर, आज़्माइशों, गुनाह छोड़ने और अपनी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात तर्क करने पर सब्र करें, हमारी बयान कर्दा येह चार शराइत़ जिस में पाई जाएं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक बड़ी उम्मीद या'नी ख़सारे, आ़र और तबाही व बरबादी से सलामती की राह पर होगा और उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में वुसूल के मर्तबे से मुशा-हदे का बुलन्द मर्तबा ह़ासिल होगा और ह़ाल व मआल या'नी दुन्या व आख़िरत में उस की रिज़ा ह़ासिल होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने एह़सान और करम से हम में इन शराइत़ पर अ़मल करने का जज़्बा पैदा फ़रमाए। आमीन

एक अ़क़्ल मन्द के लिये येह बात किस त़रह़ दुरुस्त हो सकती है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पकड़ और उस के इन्तिक़ाम से बे ख़ौफ़ रहे, ह़ालां कि उस का दिल रह़मान عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत की दो उंग्लियों के दरमियान है या'नी एक क़ौम के लिये ख़ुश बख़्ती और दूसरी के लिये बद बख़्ती के इरादे के दरमियान है, दिल को क़ल्ब इसी लिये कहा जाता है कि येह फिरने, बदलने में खौलने वाली हांडी से ज़ियादा तेज़ होता है।

《83》......इसी लिये शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दौराने सज्दा कसरत से येह दुआ़ मांगा करते थे :

www.dawateislami.net

يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِكَ''

तरजमा : ऐ दिलों को फैरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख ।''

(جامع الترمذی،کتاب الدعوات،باب دعاء یا مقلب القلوب ثبت قلبی......الخ،الحدیث:۳۵۸۷،ص ۲۰۲۱)

और मुक़ल्लिबुल कुलूब عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝ (پ۲۹،المعارج:۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक उन के रब का अ़ज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं ।

अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने आ़रिफ़ बन्दों और वारिसीने उ़लूमे अम्बिया या'नी उ़-लमा पर लुत्फ़ो करम न फ़रमाता और उम्मीद की सुहानी मदद से उन्हें तस्कीन न दिलाता तो उन के कलेजे जहन्नम के ख़ौफ़ से जल जाते ।

बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़

सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा कर फ़रमाते थे : ''जो मौत के वक़्त ईमान के छिन जाने से बे ख़ौफ़ रहेगा उस की मौत के वक़्त उस का ईमान छीन लिया जाएगा।'' या'नी उस का ईमान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहने की वजह से छीना जाएगा ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी हुवा तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ रोने लगे, एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या गुनाह की कसरत नज़र आ रही है ?'' तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सर उठाया और ज़मीन से कुछ मिट्टी उठा कर इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे गुनाह मेरे नज़्दीक इस मुठ्ठी भर मिट्टी से भी ज़ियादा ह़क़ीर हैं, मैं तो मौत से पहले ईमान छिन जाने के ख़ौफ़ से रो रहा हूं ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़म्बल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم फ़रमाते हैं : ''जब मेरे वालिदे गिरामी पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी हुवा तो मैं उन के क़रीब बैठ गया, मैं ने उन के जबड़े बांधने के लिये हाथ में कपड़े का एक टुकड़ा पकड़ रखा था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कभी बेचैन हो जाते और कभी इफ़ाक़ा मह़सूस करते और कहते : ''ख़बरदार ! मुझ से दूर हट जाओ ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अब्बाजान ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आ़लम में ऐसे अन्दाज़ में किस से मुख़ात़िब हैं ?'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : ''ऐ मेरे बेटे ! क्या तुम नहीं जानते ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''नहीं !'' तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''इब्लीस मेरे सामने खड़ा है और मुझ से कह रहा है : ''ऐ अह़मद ! मुझे एक बार तो आज़मा लो ।'' लेकिन मैं उस से कह रहा हूं : ''जब तक मैं मर न जाऊं मुझ से दूर रहो ।''

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : "मुरीद गुनाहों में मुब्तला होने से डरता है जब कि आ़रिफ़ कुफ़्र में मुब्तला होने से डरता है।"

मन्क़ूल है : "किसी नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपनी भूक और सर्दी की शिकायत की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य भेजी : "ऐ मेरे बन्दे ! क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि मैं ने तेरे दिल को अपनी ना शुक्री से मह़फ़ूज़ कर दिया है, फिर भी तू मुझ से दुन्या का सुवाल करता है।" तो वोह अपने सर पर ख़ाक डाल कर अ़र्ज़ करने लगे : "क्यूं नहीं, या रब عَزَّوَجَلَّ ! बेशक मैं राज़ी हूं, मुझे ना शुक्री से बचाए रखना।" जब रासिख़ क़-दमी और क़ुव्वते ईमानी के बा वुजूद आ़रिफ़ीन के **बुरे ख़ातिमे से ख़ौफ़** का येह आ़लम है तो हम जैसे कमज़ोर व ना तुवां बन्दे क्यूं न डरें। उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "**मौत से पहले बुरे ख़ातिमे की चन्द अ़लामात ज़ाहिर होती हैं,** म-सलन बिदअ़त में मुब्तला होना और अ़मल में निफ़ाक़।"

﴾84﴿...... इन की पहली बात की ताईद दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान भी करता है कि "बिदअ़ती लोग जहन्नम में जहन्नमियों के कुत्ते होंगे।"

(كنزالعمال، كتاب الايمان والاسلام، باب البدع و الرفض من الاكمال، الحديث: ١١٢١، ج١، ص١٢٣،بدون "فى النار")

﴾85﴿...... दूसरी बात की त़रफ़ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में इशारा फ़रमाया है : "मुनाफ़िक़ की तीन अ़लामतें हैं :
(1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो पूरा न करे और (3) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत करे, अगर्चे वोह नमाज़ पढ़ता हो, रोज़े रखता हो और अपने आप को मुसल्मान समझता हो।" (صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب خصال المنافق، الحديث:٢١١/٢١٣،ص٦٩٠)

इसी वजह से हमारे अस्लाफ़ इस मुआ़-मले में बहुत ज़ियादा डरते थे बल्कि उन में से बा'ज़ ने तो यहां तक कह दिया : "अगर मुझे पता चल जाए कि मैं निफ़ाक़ से बरी हूं तो येह मुझे हर उस चीज़ से ज़ियादा पसन्द होगा जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है।"

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा फ़रमाया : "निफ़ाक़ वाले ख़ुशूअ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगा करो।" आप से अ़र्ज़ की गई : "निफ़ाक़ वाला ख़ुशूअ़ क्या है ?" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस्म तो ख़ाशेअ़ नज़र आए मगर दिल फ़ासिक़ो फ़ाजिर हो।"

﴾86﴿...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "तुम लोग कुछ ऐसे अ़मल करते हो जो तुम्हारी नज़रों में बाल से ज़ियादा बारीक हैं जब कि हम साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में इन्हें हलाकत में डालने वाले आ'माल शुमार करते थे।" (صحيح البخارى، كتاب الرقاق،باب ما يتقى من محقرات الذنوب،الحديث :٦٤٩٢،ص٥٤٥)

www.dawateislami.net

﴾87﴿...... अपने ज़माने के शाफ़ेई मज़्हब के इमाम हज़रते सय्यिदुना शैख़ नस्रुल मक़्दसी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की रिवायत बयान करते हैं : "मुझे मेरे हबीब صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार बातों की वसिय्यत फ़रमाई, जो मुझे दुन्या और इस की हर चीज़ से ज़ियादा प्यारी हैं, आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! कश्ती की मरम्मत कर लो क्यूं कि दुन्या का समुन्दर बहुत गहरा है, बोझ को हलका रखो क्यूं कि सफ़र बहुत त़वील है, तोशा साथ ले लो क्यूं कि घाटी बहुत लम्बी है और अ़मल में इख़्लास पैदा कर लो क्यूं कि तमाम मुआ़-मलात की जांच पड़ताल करने वाला साहि़बे बसीरत है।"

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ख़शिय्यत के बारे में सुवाल किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़शिय्यत येह है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इतना डरो कि उस का डर तुम्हारे और ना फ़रमानियों के दरमियान ह़ाइल हो जाए।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल होने से मुराद येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'सिय्यत में इन्तिहा को पहुंच जाए और इस के बा वुजूद बख़्शिश की तमन्ना रखे।

एक शख़्स किसी तफ़रीह़ गाह में दाख़िल हुवा, उस के दिल में मा'सिय्यत का ख़याल आया तो उस ने सोचा कि यहां मुझे कौन देखेगा ? अचानक उस ने एक बेचैन कर देने वाली आवाज़ सुनी :

اَلَا یَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ۠ (پ۲۹،الملک:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या वोह न जाने जिस ने पैदा किया और वोही है हर बारीकी जानता ख़बरदार।

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَلَا یَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ۠ (پ۲۲،فاطر:۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस से मुराद गुनाहों पर हमेशगी इख़्तियार करने के बा वुजूद मग़्फ़िरत की तमन्ना रखना है।"

हज़रते सय्यिदुना बिश्र हाफ़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखता हो तो येही ख़ौफ़ हर ख़ैर की त़रफ़ उस की रहनुमाई कर देता है।"

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िरी की इजाज़त चाही तो उस के पास एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए, उस ने उन से पूछा : "क्या आप ही त़ाऊस हैं ?" तो उस बुज़ुर्ग ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं ! मैं उन का बेटा हूं।" तो उस शख़्स ने कहा : "अगर तुम त़ाऊस के बेटे हो तो यक़ीनन तुम्हारे वालिदे गिरामी सठिया गए होंगे (या'नी **बुढ़ापे** की वजह से उन की

www.dawateislami.net

अ़क्ल जाती रही होगी) ।'' उस बुज़ुर्ग ने जवाब दिया : ''आ़लिम कभी नहीं सठियाता।'' फिर उन्हों ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम उन के पास जाओ तो गुफ़्त-गू मुख़्तसर करना।'' और वोह शख़्स जब ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه के बेटे ने फिर उस से कहा : ''अगर तुम कोई सुवाल करना चाहो तो मुख़्तसर सुवाल करना।'' तो उस ने कहा : ''अगर वोह मुझ से मुख़्तसर कलाम करेंगे तो मैं भी मुख़्तसर कलाम करूंगा।'' उस से ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं तुम्हें अपनी इस मजलिस में तौरात, इन्जील और कुरआने करीम सिखाऊंगा।'' तो उस ने अ़र्ज़ की : ''अगर आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه मुझे येह तीनों किताबें सिखाएंगे तो मैं भी आप से कोई सुवाल न करूंगा।'' तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इतना डरो कि तुम्हारे नज़्दीक उस से ज़ियादा ख़ौफ़ में डालने वाली कोई चीज़ न हो और उस से अपने ख़ौफ़ से ज़ियादा उम्मीद रखो और जो चीज़ अपने लिये पसन्द करते हो लोगों के लिये भी वोही पसन्द करो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيه के बेटे की इस बात कि ''आ़लिम कभी नहीं सठियाता।'' की ताईद ह़ज़रते सय्यिदुना इक्रिमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के इस क़ौल से भी होती है जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान :

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ (پ۱۴، النحل:۷۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई सब से नाक़िस उ़म्र की त़रफ़ फैरा जाता है।

की तफ़्सीर में बयान किया है कि ''जिस ने कुरआने करीम का ह़क़ अदा करते हुए इसे पढ़ा वोह इस ह़ालत को नहीं पहुंचेगा।''

''**आ़लिम के न सठियाने**'' से मुराद येह है कि बड़ी उ़म्र में आ़लिम की अ़क्ल में आ़म लोगों की त़रह़ फ़साद पैदा नहीं होता या'नी जिस त़रह़ आ़म लोग बड़ी उ़म्र में बच्चों की सी बल्कि उन से भी बदतर ह़-र-कतें करने लगते हैं आ़लिम इस त़रह़ नहीं करेगा येही वोह बुराई है जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उ़-लमा की ह़िफ़ाज़त की जाती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۞ (پ۲۷، الرحمٰن:۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

की तफ़्सीर में फ़रमाया : ''इस से मुराद वोह शख़्स है जो गुनाह के बारे में सोचे फिर उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़याल आ जाए और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ और उस से ह़या करते हुए उस गुनाह को छोड़ दे।''

दो जन्नतें मिल गईं :

मन्क़ूल है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के

www.dawateislami.net

ज़माने में एक नौ जवान था जो मुत्तक़ी, परहेज़ गार और मस्जिद में कसरत से आता जाता था। उस से एक औ़रत महब्बत करती थी, एक मरतबा उस औ़रत ने उसे अपने पास बुलाया यहां तक कि वोह उस के साथ ख़ल्वत में आ गया फिर उसे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े होने का ख़याल आया तो वोह ग़श खा कर गिर गया उस औ़रत ने उसे वहां से उठा कर अपने दरवाज़े पर डाल दिया, फिर उस नौ जवान का वालिद आया और उसे उठा कर अपने घर ले गया, लेकिन उस नौ जवान का रंग पीला पड़ चुका था और वोह मुसलसल कांप रहा था यहां तक कि उस का इन्तिक़ाल हो गया, उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन कर के उसे दफ़्न कर दिया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उस की क़ब्र के किनारे खड़े हो कर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ O (پ۲۷،الرحمٰن:۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

तो उस की क़ब्र से आवाज़ आई : "ऐ उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे दो जन्नतें अ़ता फ़रमा दी हैं और वोह मुझ से राज़ी भी हो गया है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "सब से बड़ा धोका और सब से बड़ी जुरअत येह है कि गुनाहगार बन्दा अपने गुनाह पर नदामत का इज़्हार किये बिग़ैर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़फ़्व की उम्मीद रखे, आ'माले सालिह़ा के बिग़ैर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से नेकियों के हुसूल की उम्मीद रखे, अ़मल किये बिग़ैर जज़ा का इन्तिज़ार करे और ह़द से बढ़ने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत की तमन्ना करे।"

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुसूल और इस में इज़ाफ़े का सब से बड़ा ज़रीआ़ इ़ल्म है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُاؕ (پ۲۲،فاطر:۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

येही वजह है कि उ़-लमा सह़ाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان और उन के बा'द वाले उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़-लबा रहता था, यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "काश ! मैं किसी मोमिन के सीने का एक बाल होता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपनी मौत के वक़्त फ़रमाया : "उ़मर हलाक हो जाएगा अगर उस की मग़्फ़िरत न हुई।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "काश मुझे मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा न किया जाए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के इस क़ौल पर कुफ़्रिय्या कलिमात में किये गए ए'तिराज़ात के ज़रीए कुछ इश्काल वारिद होते हैं मगर इन इश्कालात का जवाब येह है कि उन की येह तमन्ना ह़क़ीक़त पर मब्नी न थी बल्कि इस बात का इज़्हार मक़्सूद था कि मेरे बहुत से गुनाह ऐसे हैं जिन पर मुझे दोबारा ज़िन्दगी मिलने के बा'द मुआ-ख़ज़े का ख़ौफ़ है।

www.dawateislami.net

﴾88﴿...... इस की नज़ीर हबीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के महबूब इब्ने महबूब हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का वाक़िआ है कि जब आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक ऐसे शख़्स को जो कलिमा पढ़ता था येह गुमान करते हुए क़त्ल कर दिया कि येह हक़ीक़त में कलिमा नहीं पढ़ रहा बल्कि अपनी जान बचाने के लिये पढ़ रहा है, लेकिन जब येह बात नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंची तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन पर इताब फ़रमाया और बार बार येह इर्शाद फ़रमाते रहे : "तुम ने उस का दिल चीर कर क्यूं न देख लिया।" आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात इतनी मरतबा इर्शाद फ़रमाई कि मैं तमन्ना करने लगा : "काश ! मैं उस दिन मुसल्मान न होता।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث عمران بن حصين، الحديث:١٩٩٥٧،ج٧،ص٢١٧)

आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कुफ़्र की तमन्ना नहीं की थी बल्कि अपने मुसल्मान होने के इस वाक़िए से मुअख़्ख़र होने की तमन्ना की थी और इस की वजह येह थी कि अगर येह वाक़िआ इस्लाम लाने से पहले का होता तो इस्लाम इसे मिटा देता। येह मक़ामे फ़िक्र है लिहाज़ा यहां ख़ूब ग़ौर करना चाहिये।

जब लोग इल्म से दूर हुए तो उन्हों ने अपने आ'माल को मुला-हज़ा किया तो येह पाया कि उन में से कुछ अफ़राद से इत्तिफ़ाक़न कुछ ऐसे उमूर सादिर हो रहे हैं जो करामात के मुशाबेह हैं, लिहाज़ा उन्हों ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दा'वे करने शुरूअ कर दिये और सलफ़ सालिहीन के दा'वा न करने के तरीक़े की पैरवी छोड़ दी, यहां तक कि उन में से एक शख़्स ने यहां तक कह दिया : "मैं चाहता हूं कि क़ियामत जल्द ही क़ाइम हो जाए ताकि मैं जहन्नम पर अपना ख़ैमा नस्ब कर सकूं।" तो एक शख़्स ने उस से इस की वजह पूछी तो उस ने जवाब दिया : "मुझे यक़ीन है कि जब जहन्नम मुझे देखेगी तो उस की आग बुझ जाएगी और इस तरह मैं मख़्लूक़ पर रहमत का सबब बन जाऊंगा।"

येह इन्तिहाई बद तरीन और बुरा कलाम है, क्यूं कि इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बयान कर्दा जहन्नम के अज़ीम मुआ-मले की तहक़ीर पाई जाती है, हालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नम के औसाफ़ कसरत से बयान फ़रमाए हैं, चुनान्चे फ़रमाने बारी तआला है :

فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ ج (پ١،البقرة:٢٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो डरो उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

एक दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَیُّظًا وَّ زَفِیْرًا ۝ (پ١٨،الفرقان:١٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना।

﴾89﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है :

www.dawateislami.net

"तुम जो आग जलाते हो येह जहन्नम की आग के सत्तर अज्ज़ा में से एक जुज़्व है।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर जहन्नम हमारी येह दुन्यवी आग भी होती तब भी काफ़ी थी।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जहन्नम की आग को दुन्यवी आग से उन्हत्तर69 गुना ज़ियादा तेज़ किया गया है और इन में से हर जुज़्व की गरमी दुन्यवी आग की त़रह़ है।"

(جامع الترمذی، کتاب صفة الجهنم، باب ماجاء ان نارکم هذه......الخ،الحدیث:۲۵۸۹،ص۱۹۱۲)

《90》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन जब जहन्नम को लाया जाएगा तो उस की सत्तर हज़ार लगामें होंगी, हर लगाम को सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते पकड़ कर खींचते होंगे।"

(جامع الترمذی، کتاب صفة الجهنم،باب ماجاء فی صفة النار،الحدیث:۲۵۷۳،ص۱۹۱۱)

चराग़ की लौ पर उंगली रख दी

एक नेक बुज़ुर्ग के साथ एक वाक़िआ पेश आया, हुवा यूं कि वोह किसी जगह बैठे हुए थे और उन के क़रीब ही एक चराग़ जल रहा था, अचानक उन के दिल में गुनाह का ख़याल आया तो वोह अपने नफ़्स से कहने लगे : "मैं अपनी उंगली इस चराग़ की बत्ती पर रखता हूं अगर तूने इस पर सब्र कर लिया तो मैं इस गुनाह को करने में तेरी बात मान लूंगा।" फिर जब उन्हों ने उस बत्ती पर अपनी उंगली रखी तो बे क़रार हो कर चीख़ते हुए कहने लगे : "ऐ दुश्मने ख़ुदा ! जब तू दुन्या की इस आग पर सब्र नहीं कर सका जिसे सत्तर मरतबा बुझाया गया है तो जहन्नम की आग पर कैसे सब्र करेगा ?"

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! हमें डर वाली कुछ बातें सुनाएं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! अगर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ क़ियामत के दिन सत्तर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अ़मल ले कर भी आएं तो क़ियामत के अह़वाल देख कर उन्हें ह़क़ीर जानने लगेंगे।" इस पर अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब इफ़ाक़ा हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मज़ीद सुनाएं।" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! अगर जहन्नम में से बैल के नाक जितना ह़िस्सा मशरिक़ में खोल दिया जाए तो मग़रिब में मौजूद शख़्स का दिमाग़ उस की गरमी की वजह से उबल कर बह जाए।" इस पर अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब इफ़ाक़ा हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! और सुनाएं।" तो उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! क़ियामत के दिन जहन्नम इस त़रह़ भड़केगा कि कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता या नबिय्ये मुरसल ऐसा न होगा जो घुटनों के बल गिर कर येह न कहे : رَبِّ! نَفْسِیْ! نَفْسِی"

(या'नी ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! आज मैं तुझ से अपनी बख़्शिश के इलावा कुछ नहीं मांगता)।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मज़ीद बताया : "जब क़ियामत का दिन आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अव्वलीन व आख़िरीन को एक टीले पर जम्अ़ फ़रमाएगा, फिर फ़िरिश्ते नाज़िल हो कर सफ़ें बनाएंगे।" इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "ऐ जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ! जहन्नम को ले आओ।" तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام जहन्नम को इस त़रह़ ले कर आएंगे कि उस की सत्तर हज़ार लगामों को खींचा जा रहा होगा, फिर जब जहन्नम मख़्लूक़ से सो बरस की राह पर पहुंचेगी तो उस में इतनी शदीद भड़क पैदा होगी कि जिस से मख़्लूक़ के दिल दहल जाएंगे, फिर जब दोबारा भड़क पैदा होगी तो हर मुक़र्रब फ़िरिश्ता और नबिय्ये मुरसल घुटनों के बल गिर जाएगा, फिर जब तीसरी मरतबा भड़केगी तो लोगों के दिल गले तक पहुंच जाएंगे और अ़क़्लें घबरा जाएंगी, यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : "मैं तेरे ख़लील होने के सदक़े से सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपनी मुनाजात के सदक़े सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे जो इ़ज़्ज़त दी है उस के सदक़े में सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं उस मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये सुवाल नहीं करता जिस ने मुझे जना है।"

﴾91﴿...... रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ! क्या बात है कि मैं ने मीकाईल (عَلَیْہِ السَّلَام) को कभी हंसते हुए नहीं देखा ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जब से जहन्नम को पैदा किया गया है मीकाईल (عَلَیْہِ السَّلَام) कभी नहीं हंसे और जब से जहन्नम पैदा हुई, मेरी आंख इस ख़ौफ़ से ख़ुश्क नहीं हुई कि कहीं मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न कर बैठूं और वोह मुझे जहन्नम में न डाल दे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक दिन रोते हुए देख कर पूछा गया : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को किस चीज़ ने रुलाया है ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुझे येह ख़बर पहुंची है कि मुझे जहन्नम पर पेश किया जाएगा मगर येह ख़बर नहीं पहुंची कि मैं वहां से नजात पा कर निकल भी सकूंगा।"

जब मलाएका, अम्बिया عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के जहन्नम से ख़ौफ़ का येह आ़लम होगा ह़ालां कि येह हस्तियां गुनाहों की गन्दगियों से पाको साफ़ हैं तो उस वक़्त धोका खाए हुए दा'वेदार की ज़िल्लत व रुस्वाई का क्या आ़लम होगा और जिसे उस के नफ़्स ने येह कह कर गुमराह कर दिया कि तेरा येह ख़ैमा जहन्नम की आग बुझा देगा और जो अपने आप को दूसरों के मुक़ाबले में क़त़्ई नजात याफ़्ता समझता है, ह़ालां कि क़त़्ई नजात तो सिर्फ़ उन्हीं दस ख़ुश नसीबों को ह़ासिल होगी जिन्हें नजात दिहन्दा शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई है, इस के बा वुजूद उन

www.dawateislami.net

के ख़ौफ़ का येह आलम था कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी तक येह कह उठे : "काश ! मैं किसी मोमिन के सीने का बाल होता।" और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमा गए : "अगर उ़मर की मग़्फ़िरत न हुई तो उ़मर हलाक हो जाएगा।"

ह़दीसे पाक में है : "जो येह कहे : "यक़ीनन मैं जन्नत में जाऊंगा वोह जहन्नम में जाएगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب العلم، باب کراهية الدعوی، الحدیث:٨٨٠،ج١،ص٤٤٣)

यहां इस ख़ौफ़ से हमारी मुराद औ़रतों जैसी रिक़्क़ते क़ल्बी नहीं जो कुछ देर के लिये रो लेती हैं, फिर नेक अ़मल छोड़ देती हैं, बल्कि इस से मुराद वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान के दिल में घर बना कर उसे गुनाहों से रोके और इत़ाअ़त की पाबन्दी की तरग़ीब दिलाए, येही वोह ख़ौफ़ है जो नफ़्अ़ बख़्श है और येह अह़मक़ों का ख़ौफ़ नहीं जो डराने वाली गुज़श्ता बातें सुनते हैं तो يَا رَبِّ سَلِّمْ और نَعُوْذُ بِاللّٰهِ (या'नी ख़ुदा की पनाह और या रब عَزَّوَجَلَّ ! सलामत रखना) के इ़लावा कुछ नहीं कहते बल्कि इस के बा वुजूद गुनाहों के इरतिकाब पर डटे रहते हैं और शैत़ान उन का इस त़रह़ मज़ाक़ उड़ाता है जैसा कि तुम उस शख़्स को देख कर मज़ाक़ उड़ाओगे कि जिस पर कोई ख़त़रनाक दरिन्दा ह़म्ला करने लगे जब कि वोह शख़्स एक मह़फ़ूज़ क़ल्ए़ के क़रीब हो जिस का दरवाज़ा भी खुला हो मगर वोह उस में दाख़िल न हो बल्कि رَبِّ سَلِّمْ कहता रहे यहां तक कि वोह दरिन्दा आ कर उसे खा जाए।

《92》...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "एक शख़्स अपनी जान पर गुनाहों के ज़रीए़ ज़ुल्म किया करता था, जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने अपने बेटों से कहा : "जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना, फिर मेरी राख को पीस कर हवा में उड़ा देना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अ़ज़ाब देना चाहा तो ऐसा अ़ज़ाब देगा जो उस ने किसी को न दिया होगा।" पस जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो उस की वसिय्यत पर अ़मल किया गया, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को हुक्म दिया : "इस के जो अज्ज़ा तुझ पर हैं उन को जम्अ़ कर दे।" ज़मीन ने हुक्म की ता'मील की और वोह बन्दा खड़ा हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से पूछा : "तुझे ऐसा करने पर किस चीज़ ने उभारा था ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ख़ौफ़ ने।" तो उस को बख़्श दिया गया।"

(صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ٥٤، الحدیث:٣٤٨١،ص٢٨٤)

《93》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ की : "क्या आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हमें सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी हुई कोई ह़दीसे मुबा-रका सुनाएंगे ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जब एक शख़्स की मौत का वक़्त आया और वोह ज़िन्दगी से मायूस हो गया तो उस ने अपने घर वालों को वसिय्यत की : "जब मैं मर जाऊं तो मेरे लिये बहुत सी लकड़ियां जम्अ़ कर लेना, फिर उस में आग लगा कर मुझे उस में डाल देना ताकि आग मेरा गोश्त खा कर हड्डियों को जला दे, फिर उन

www.dawateislami.net

हड्डियों को उठा कर पीस लेना और तेज़ हवा के दिन उस राख को उड़ा देना।" (उस के मरने के बा'द उस के साथ वैसा ही सुलूक किया गया जैसा उस ने कहा था) फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स की राख को जम्अ़ कर के उस से पूछा : "तूने ऐसा क्यूं किया ?" तो उस ने अ़र्ज़ की : "तेरे ख़ौफ़ से।" तो उस को बख़्श दिया गया।"

(صحیح البخاری ، کتاب احادیث الانبیاء ،باب ٥٤،الحدیث:٣٤٧٩،ص٢٨٤،"اوقدروا"بدله "اوروُا نارًا")

《94》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने भी मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम से पिछली उम्मतों में से एक शख़्स को कसरत से माल व औलाद से नवाज़ा था, उस ने अपनी मौत के वक़्त अपने बेटों से पूछा : "तुम ने मुझे बाप की हैसिय्यत से कैसा पाया ?" उन्हों ने जवाब दिया : "हम ने आप को बेहतरीन बाप पाया।" तो उस ने कहा : "मैं ने तो कभी कोई अच्छा काम नहीं किया, लिहाज़ा जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला कर राख बना लेना और फिर मेरी राख को तेज़ हवा में उड़ा देना।" जब उन्हों ने ऐसा ही किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे जम्अ़ कर के दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुझे ऐसा करने पर किस चीज़ ने उभारा था ?" उस ने अ़र्ज़ की : "तेरे ख़ौफ़ ने।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत ने उस का इस्तिक़्बाल किया।"

(المرجع السابق،الحدیث:٣٤٧٨،ص٢٨٤،"اعطاه الله" بدله"رغشه الله")

रह़मत का एक सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "अस्बाबे रह़मत में एक सबब नादार मुसल्मान को खाना खिलाना है।"

(الترغیب والترهیب،ج٢،ص٣٥)

www.dawateislami.net

पहला बाब : बातिनी कबीरा गुनाह और इन के मु-तअ़ल्लिक़ात

मैं ने बातिनी गुनाहों को इस लिये मुक़द्दम किया है कि येह ज़ाहिरी गुनाहों से ज़ियादा ख़त़रनाक होते हैं और इन का मुर-तकिब गुनाहगारों में सब से ज़ियादा ज़लील और ह़क़ीर होता है। इन्हें मुक़द्दम करने की एक वजह येह भी है कि एक तो इन का वुक़ूअ़ आ़म है और दूसरा इन का इरतिकाब करना भी बहुत आसान है, बहुत कम ही ऐसा होता है कि इन्सान इन्हें बुरा जानते हुए छोड़ दे, लिहाज़ा कबीरा गुनाहों की इस क़िस्म को मुक़द्दम करना मुनासिब मा'लूम हुवा और इन का खुलासा तह़रीर करने में ग़ौरो फ़िक्र करना अच्छा लगा।

बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का फ़रमान है : "दिलों के कबीरा गुनाह, आ'ज़ा के गुनाहों से ज़ियादा ख़त़रनाक होते हैं क्यूं कि येह सब फ़िस्क़ और ज़ुल्म का बाइस बनते हैं और इस के साथ साथ नेकियों को भी खा जाते हैं और सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला कर देते हैं।"

बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने बातिनी कबीरा गुनाहों को ज़िक्र करने और इन की ता'दाद **साठ** (60) बयान करने के बा'द फ़रमाया : "इन कबीरा गुनाहों की मज़म्मत इन के बड़े फ़साद, बुरे नताइज और हमेशा रहने वाले अ-सरात की वजह से ज़िना, चोरी, क़त्ल, और शराब नोशी से भी ज़ियादा है, इन के अ-सरात इस ह़ैसिय्यत से बाक़ी रहते हैं कि वोह उस शख़्स के ह़ाल और उस के दिल की हैअत में पुख़्ता हो जाते हैं, जब कि आ'ज़ा से मु-तअ़ल्लिक़ गुनाहों के अ-सरात तौबा व इस्तिग़फ़ार, गुनाहों को मिटाने वाली नेकियों और मसाइब से जल्द ही ख़त्म हो जाते हैं। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ۝ (پ۱۲، هود:۱۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीह़त है नसीह़त मानने वालों को।

कबीरा नम्बर 1 :

शिर्के अक्बर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने करम से हमें इस गुनाह से पनाह में रखे और किसी आज़माइश के बिग़ैर आ़फ़िय्यत के साथ हमारा ख़ातिमा अच्छा फ़रमाए, क्यूं कि वोही सब से बड़ा करीम और सब से ज़ियादा रह़म वाला है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे और आप को अपनी रिज़ा ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हम पर अपने करम और फ़राख़ अ़त़ाओं की मूसलाधार बारिश बरसाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

गुज़श्ता सफ़्हात में गुनाहे कबीरा की जो ता'रीफ़ें बयान की गई हैं उन सब का ज़ाहिरी मफ़्हूम येही है कि वोह उन कबीरा गुनाहों की ता'रीफ़ें हैं जो एक मुसल्मान से ईमान की ह़ालत में सादिर होते हैं, इसी लिये बहुत से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने उन्हें शुमार करते वक़्त कुफ़्र से क़रीब तर गुनाह या'नी क़त्ल से इब्तिदा की है, जब कि हम उस तरतीब को क़ाइम नहीं रखेंगे क्यूं कि इस किताब से हमारा मक़्सद उन तमाम कबीरा गुनाहों का इह़ात़ा उन के मरातिब और उन के बारे में वारिद वई़दों के साथ करना है।

चूंकि कुफ़्र सब से बड़ा गुनाह है, लिहाज़ा इस के बारे में कलाम और इस के अह़काम का बयान भी मुफ़स्सल होना चाहिये, लिहाज़ा सब से पहले हम अपनी गुफ़्त-गू का आग़ाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस फ़रमाने इब्रत निशान से करते हैं जो इसी के बारे में है। चुनान्चे फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ج (پ۵،النسآء:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

और एक दूसरी जगह है :

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ○ (پ۲۱،لقمان:۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।

और एक दूसरी जगह है :

اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ط وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ○ (پ۶،المآئدۃ:۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो अल्लाह ने उस पर जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

﴾1﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क्या मैं तुम्हें अक्बरुल कबाइर (या'नी सब से बड़े कबीरा गुनाहों) के बारे में न बताऊं ? वोह गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना हैं।" येह बात इर्शाद फ़रमाते वक़्त आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे फिर सीधे हो कर बैठ गए और इर्शाद फ़रमाया : "सुन लो और झूट बोलना, सुन लो और झूटी गवाही देना भी बड़े गुनाह हैं।" फिर इन्हें दोहराते रहे यहां तक कि हम कहने लगे "काश ! आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुकूत इख़्तियार फ़रमा लें।"

(صحیح البخاری، کتاب الشھادات، باب ماقیل فی شھادۃ الزور،الحدیث:۲۶۵۴،ص۲۰۹، بدون" ألا وشھادۃ الزور")

﴾2﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हलाकत में डालने वाले सात गुनाहों से इज्तिनाब करो।" फिर उन गुनाहों में

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये शरीक ठहराने को भी ज़िक्र फ़रमाया।

(صحیح البخاری ، کتاب الوصایا ، با ب قول الله تعالیٰ (ان الذین یاکلون اموال......الخ)الحدیث:۲۷۶۶،ص۲۲۳)

《3》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना, और वालिदैन की ना फ़रमानी करना और किसी जान को क़त्ल करना कबीरा गुनाह हैं।" (المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص،الحدیث:۶۹۰۱،ج۲،ص۶۴۴)

《4》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना, किसी जान को क़त्ल करना और वालिदैन की ना फ़रमानी करना कबीरा गुनाह हैं।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें अक्बरुल कबाइर या'नी सब से बड़े कबीरा गुनाह के बारे में न बताऊं ? वोह झूट बोलना है।"

(صحیح البخاری ، کتاب اللباس، باب عقوق الوالدین من الکبائر،الحدیث:۵۸۷۷، ص۵۰۶)

झूट का सब से बड़ा कबीरा गुनाह होना उन गुनाहों के ए'तिबार से है जिन के बारे में झूट से संगीन होने की तस्रीह़ नहीं आई जब कि शिर्क, क़त्ल और ज़िना यक़ीनन झूट से बड़े गुनाह हैं।

《5》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कबीरा गुनाह नव हैं और इन में सब से बड़ा गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना है।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۱،ج۱۷،ص۴۸)

《6》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सात कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब करो। इन में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना भी है।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۵۶۳۶،ج۶،ص۱۰۳)

《7》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, ज़रूरत से ज़ियादा पानी को रोक लेना और नर सांड को जुफ़्ती से रोकना सब से बड़े कबीरा गुनाह हैं।"

(البحرالزّخاربمسند البزّار،مسند بریده بن حصیب، الحدیث:۴۴۳۷،ج۱۰،ص۳۱۴)

《8》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क्या मैं तुम्हें सब से बड़े गुनाह के बारे में ख़बर न दूं वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और झूट बोलना हैं।"

(المسند احمد بن حنبل،مسندالبصریین،الحدیث:۲۰۴۰۷،ج۷،ص۳۰۶)

《9》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कबीरा गुनाह सात हैं इन में से एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना है।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۲،ج۱۷،ص۴۸)

इन गुनाहों में हिजरत के बा'द देहाती हो जाने का भी ज़िक्र फ़रमाया, इस का बयान अ़न्क़रीब आएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

《10》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, किसी जान को क़त्ल करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और झूटी गवाही देना सब से बड़े कबीरा गुनाह हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب الدیات ، باب قول اللہ تعالیٰ (من احیاھا)،الحدیث:٦٨٧١،ص٥٧٣)

《11》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना और झूटी क़सम उठाना सब से बड़े गुनाह हैं और क़सम उठाने वाला जब मजबूरन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठाए फिर उस में मख्खी के पर के बराबर भी मुदा-ख़लत करे तो उस के दिल में क़ियामत तक के लिये एक नुक्ता लगा दिया जाता है।" (جامع الترمذی،ابواب تفسیر القرآن ، باب (ومن سورۃ النساء)الحدیث:٣٠٢٠،ص١٩٥٦)

《12》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना और झूटी क़सम उठाना बड़े कबीरा गुनाहों में से हैं।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:٣٢٣٧،ج٢،ص٢٦٥)

《13》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सुन लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया वोह लोग हैं जो इन पांच नमाज़ों को क़ाइम करते हैं जिन्हें उस ने अपने बन्दों पर फ़र्ज़ फ़रमाया है और र-मज़ान के रोज़े येह सोच कर ख़ालिस रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये रखते हैं कि इन पर रोज़ों का लाज़िम होना हक़ है और अल्लाह तआला की रिज़ा के लिये अपने माल की ज़कात खुशदिली से अदा करते हैं और उन कबीरा गुनाहों से बचते हैं जिन के इरतिकाब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया है।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कबीरा गुनाह कितने हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह नव हैं, इन में से बड़े गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, किसी मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना, मैदाने जिहाद से फ़िरार होना, पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना, जादू करना, यतीम का माल खाना, सूद खाना, मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी करना और अपने क़िब्ला या'नी बैतुल हराम की आबाद और बन्जर ज़मीन को हलाल समझना हैं, जब कोई ऐसा बन्दा मरता है जिस ने येह कबीरा गुनाह न किये हों और नमाज़ क़ाइम की हो और ज़कात अदा की हो तो वोह जन्नत के दरमियान (हज़रते सय्यिदुना) मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ऐसी जगह रफ़ीक़ होगा जिस के दरवाज़ों के पट सोने के होंगे।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:١٠١،ج١٧،ص٤٨، بدون "یری أنہ علیہ حق")

《14》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ऐ इब्ने ख़त्ताब ! जाओ।" और एक रिवायत में है : "ऐ उ़मर ! उठो और जा कर लोगों में इस बात का ए'लान कर दो कि जन्नत में सिर्फ़ मोमिन ही दाख़िल होंगे।"

(جامع الترمذی ، ابواب السیر،باب ماجاء فی الغلول،الحدیث:١٥٧٤،ص١٨١٤،بدون"فی الناس")

www.dawateislami.net

इसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद, इमाम मुस्लिम और इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِم ने रिवायत किया और फ़रमाया : "येह ह़दीस ह़सन सह़ीह़ है।"

﴾15﴿...... रसूले काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "ऐ इब्ने औफ़! अपने घोड़े पर सुवार हो कर ए'लान कर दो कि जन्नत सिर्फ़ मोमिन ही के लिये ह़लाल है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الخراج، باب فی تعشیر اهل الذمة......الخ،الحدیث:٣٠٥٠،ص١٤٥٢)

﴾16﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ बिलाल! उठो और ए'लान कर दो कि जन्नत में सिर्फ़ मोमिन ही दाख़िल होगा और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस दीन की मदद फ़ाजिर शख़्स के ज़रीए भी फ़रमाता है।"

(صحیح البخاری ، کتاب القدر، باب العمل بالخواتیم،الحدیث:٦٦٠٦،ص٥٥٢)

﴾17﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नत में मुसल्मान ही दाख़िल होगा।" एक और रिवायत में है : "जन्नत में मुसल्मान जान ही दाख़िल होगी और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस दीन की मदद फ़ाजिर शख़्स के ज़रीए भी फ़रमा देता है।" (صحیح البخاری،کتاب الجهاد، باب ان الله لیؤیدالدین ......الخ،الحدیث:٣٠٦٢،ص٢٤٦)

﴾18﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपना दीन बदल ले उसे क़त्ल कर दो।"

(صحیح البخاری،کتاب الجهاد، باب لایعذب بعذاب الله ،الحدیث:٣٠١٧،ص٢٤٢)

﴾19﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपने दीन से फिर जाए या'नी मुरतद हो जाए उसे क़त्ल कर दो।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الحدود،باب حکم فیمن ارتد ، الحدیث:٤٣٥١،ص١٥٤٠، "من ارتد" بدله"من بدّل")

﴾20﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में) सरे तस्लीम ख़म कर दो अगर्चे तुम इस को ना पसन्द ही करो।" (المسندللامام احمد بن حنبل،مسند انس بن مالك، الحدیث:١٢٠٦١،ج٤،ص ٢١٨)

﴾21﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं तुम्हें तीन बातों का हुक्म देता हूं और तीन बातों से मन्अ़ करता हूं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَل की रस्सी को मज़्बूती से थाम लो और जुदा जुदा मत रहो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिसे तुम्हारे मुआ-मले का वाली बना दिया हो उस की इत़ाअ़त करो। और मैं तुम्हें तीन बातों से मन्अ़ करता हूं, फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू से, माल ज़ाएअ़ करने से और कसरत से सुवाल करने से।"

(کنزالعمال،کتاب الایمان والاسلام،قسم الاقوال فصل الخامس،الحدیث:٤٤٥،ج١،ص٦٥،بدون" وتسمعوا")

﴾22﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स इस्लाम से फिर जाए तो उसे इस्लाम की त़रफ़ बुलाओ, अगर वोह तौबा कर ले तो उस की

www.dawateislami.net

तौबा क़ुबूल कर लो और अगर तौबा न करे तो उस की गरदन मार दो और जो औरत इस्लाम से फिर जाए उसे इस्लाम की दा'वत दो अगर वोह तौबा कर ले तो उस की तौबा क़ुबूल कर लो और अगर तौबा न करे तो उसे क़ैद कर दो।" (المعجم الكبير،الحديث:٩٣،ج٢٠،ص٥٣)

इस ह़दीसे मुबा-रका का ज़ाहिरी मफ़्हूम इस बात का तक़ाज़ा करता है कि मुरतद्दा औरत को क़त्ल नहीं किया जाएगा जब कि हमारे नज़्दीक मुन्दरिजए ज़ैल सहीह़ ह़दीस के आ़म हुक्म की वजह से मुन्दरिजए बाला ह़दीस का मफ़्हूम सहीह़ तरीन मज़्हब के ख़िलाफ़ है।

﴾23﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपना दीन बदल ले उसे क़त्ल कर दो।"

(صحيح البخاری،کتاب الجهاد، باب لاتعذب بعذاب الله ،الحديث:٣٠١٧،ص٢٤٢)

﴾24﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अपना दीन बदल लिया या जो अपने दीन से फिर गया उसे क़त्ल कर दो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जैसा अ़ज़ाब न दो।" (या'नी आग में न जलाओ।)

(السنن الكبرى للبيهقي، كتاب المرتد،باب قتل من ارتدعن الاسلام......الخ،الحديث:١٦٨٥٨،ج٨،ص٣٥١،بدون"عبادالله")

﴾25﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपना दीन बदल ले उसे क़त्ल कर दो और जो बन्दा मुसल्मान होने के बा'द कुफ़्र इख़्तियार कर ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़ुबूल नहीं फ़रमाता।" (या'नी जब तक वोह कुफ़्र पर क़ाइम रहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़ुबूल नहीं फ़रमाता।)

(المعجم الكبير،الحديث:١٠١٣،ج١٩،ص٤١٩)

﴾26﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपने दीन से फिर जाए उसे क़त्ल कर दो और किसी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जैसा अ़ज़ाब न दो (या'नी किसी को आग में न जलाओ)।" (صحيح ابن حبان،باب الرِّدَّة،الحديث:٤٤٥٩،ج٦،ص٣٢٣)

﴾27﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपना दीन तब्दील कर ले उस की गरदन मार दो।"

(كنزالعمال،كتاب الايمان والاسلام،قسم الاقوال ،باب الارتداد،الحديث: ٣٩٠،ج١،ص٦١)

﴾28﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अपने मुसल्मानों वाले दीन की मुख़ा-लफ़त की उसे क़त्ल कर दो और जब वोह इस बात की गवाही देने लगे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और इस बात की गवाही कि मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं तो उसे क़त्ल करने की कोई राह नहीं मगर जब कि वोह कोई ऐसा अ़मल करे जिस की वजह से उस पर ह़द क़ाइम की जाए।"

(المعجم الكبير،الحديث:١١٦١٧،ج١١،ص١٩٣)

www.dawateislami.net

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

शिर्क और इस की तमाम अन्वाअ़ का तज़्किरा करने का सबब येह है कि लोग ह़द से ज़ियादा इस में मुब्तला हैं नीज़ आ़म लोगों की ज़बानों पर शिर्किया कलिमात जारी हैं क्यूं कि वोह नहीं जानते कि ऐसा करना शिर्क है लेकिन अगर उन पर इस की बा'ज़ अक़्साम आशकार हो जाएं तो शायद इस से बचने की कोशिश भी करें ताकि उन के अ़मल बरबाद न हों और वोह हमेशगी के बड़े अ़ज़ाब और सख़्त अ़क़ाब में मुब्तला होने से बच सकें। इस की मा'रिफ़त ह़ासिल करना एक बहुत ही अहम काम है क्यूं कि जो कुफ़्र का मुर-तकिब हो जाए उस के तमाम आ'माल बरबाद हो जाते हैं और अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त म-सलन सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के नज़्दीक उस पर हमेशा के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब लाज़िम हो जाएगा। और इन के शागिर्दाने ज़ी मक़ाम ने ब कसरत कुफ़्रिय्या आ'माल व अक़्वाल बयान फ़रमा दिये हैं और इस मुआ़-मले की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र इस में ख़ूब कोशिश से काम लिया है और बा वुजूद इस के कि उन का मज़्हब येह है कि इरतिदाद या'नी दीन से फिरना आ'माल को बरबाद कर देता है और मुरतद की बीवी उस के निकाह़ से निकल जाती है और अपने शोहर पर ह़राम हो जाती है, इस गुरोह ने इस मुआ़-मले में दीगर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से ज़ियादा कोशिश की है लिहाज़ा हर वोह शख़्स जो अपने दीन पर इस्तिक़ामत चाहता है उस पर लाज़िम है कि इन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वाल का इल्म ह़ासिल करे ताकि उन कुफ़्रिय्यात से बच सके और इन में पड़ कर अपने आ'माल बरबाद न कर बैठे और उस पर रब عَزَّوَجَلَّ का दाइमी अ़ज़ाब लाज़िम न हो जाए और इन अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक उस की औ़रत उस के निकाह़ से न निकल जाए, जब कि सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के नज़्दीक इरतिदाद आ'माल को तो बरबाद नहीं करता मगर इन के सवाब को ख़त्म कर देता है, लिहाज़ा इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और दीगर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के दरमियान क़ज़ा या'नी दाइमी अ़ज़ाब ही का इख़्तिलाफ़ रह जाता है। जम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अगर्चे अह़नाफ़ की तक़्लीद नहीं करते मगर शरीअ़त और दीन की ह़िफ़ाज़त, एह़तियात और जहां तक मुम्किन हो, इख़्तिलाफ़ की रिआ़यत का तक़ाज़ा करती है, ख़ुसूसन ऐसे मुआ़-मले में जो दुन्या व आख़िरत के शदीद ह़रज का सबब बन सकता है और यक़ीनन येही सब से शदीद ह़रज है। इसी लिये मैं ने उन अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक क़ाबिले ए'तिमाद और ग़ैर मो'तबर अक़्वाल नीज़ दीगर मज़ाहिब के अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वाल भी अपनी इस किताब में जम्अ़ कर दिये हैं जिस का ज़िक्र आयन्दा आएगा, मैं इन तमाम अक़्वाल की जानिब यहां सिर्फ़ कुछ इशारे दूंगा और जो शख़्स इन तमाम फ़ुरूआ़त का इह़ात़ा करने का इरादा रखता हो उसे चाहिये कि वोह हमारी इस किताब का मुत़ा-लआ़ ज़रूर करे।

www.dawateislami.net

कुफ़्र व शिर्क की अक़्साम

कुफ़्र की अक़्साम में से चन्द येह हैं :

☆...... इन्सान मुस्तक़्बिल क़रीब या बईद में कुफ़्र या शिर्क करने का अ़ज़्म करे।

☆...... ज़बान या दिल से किसी कुफ़्र को अच्छा जाने अगर्चे वोह चीज़ ज़ाहिरन मुहाले अ़क़्ली ही क्यूं न हो, इस सूरत में वोह फ़ौरन ही काफ़िर हो जाएगा।

☆...... ऐसी चीज़ का अ़क़ीदा रखे या ऐसा काम करे या ऐसी बात कहे जो कुफ़्र को वाजिब करती हो अगर्चे उस का अ़क़ीदा रखते हुए कहे या इनाद के तौर पर या फिर इस्तिह्ज़ा के तौर पर कहे, म-सलन कोई शख़्स आ़लम (या'नी काएनात) के क़दीम होने का अ़क़ीदा रखे, अगर्चे काएनात को नौई तौर पर क़दीम जाने।

☆...... ऐसी बात की नफ़ी करे जिस का सुबूत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इज्माअ़ से साबित हो और उस का ज़रूरिय्याते दीन से होना भी मा'लूम हो जैसे ज़ाते बारी तआ़ला की सिफ़ाते अस्लिय्या म-सलन उस के इल्म और कुदरत का इन्कार करना या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जुज़्इय्यात के आ़लिम होने का इन्कार करना।

☆...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ऐसी चीज़ को साबित करे, जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मन्अ़ होना ज़रूरिय्याते दीन से हो जैसे रंग, रूप वग़ैरा साबित करना या येह कहना कि वोह आ़लम के साथ मुत्तसिल है या एक इख़्तिलाफ़ी मस्अले के मुताबिक़ आ़लम से ख़ारिज है।

ख़ुलासए कलाम येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात को नक़्स से मुत्तसिफ़ करने का ए'तिक़ाद या तो सरा-हतन रखे या ऐसी बात का ए'तिक़ाद रखे जिस से नक़्स लाज़िम आता हो, लिहाज़ा पहली सूरत बिल इज्माअ़ कुफ़्र है और दूसरी के कुफ़्र होने में इख़्तिलाफ़ है, जब कि हमारे नज़दीक सहीह़ तरीन क़ौल के मुताबिक़ येह दूसरी सूरत कुफ़्र नहीं, लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मुजस्सम या जौहर कहने वाले के क़ौल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर जो नक़्स लाज़िम आता है इस बिना पर उस की तक्फ़ीर नहीं की जाएगी मगर जब वोह उस नक़्स का ए'तिक़ाद रखे या उस की सराह़त कर दे तो इस सूरत में उस की तक्फ़ीर की जाएगी, और इसी तरह़ इन्सान का किसी मख़्लूक़ म-सलन सूरज को सज्दा करना बशर्ते कि उस के उ़ज़्र पर कोई ज़ाहिरी क़रीना दलालत न कर रहा हो तो उस की भी तक्फ़ीर नहीं की जाएगी। (ज़ाहिरी क़रीने के उस के उ़ज़्र पर दलालत न करने की येह क़ैद आयन्दा आने वाले बेशतर मसाइल में भी आएगी।)

☆...... नीज़ येह उसूल है कि हर वोह शख़्स जो कोई ऐसा अ़मल करे जिस के बारे में मुसल्मानों का इज्माअ़ हो कि येह काम काफ़िर ही से सादिर हो सकता है तो ऐसा काम करना भी कुफ़्र है अगर्चे वोह अपने मुसल्मान होने की सराह़त ही क्यूं न करता हो। जैसे कुफ़्फ़ार के साथ उन का मज़्हबी लिबास म-सलन ज़ुन्नार वग़ैरा पहन कर उन के इबादत ख़ाने की तरफ़ जाना या किसी ऐसे काग़ज़ को नजासत (या'नी गन्दगी) में डाल देना जिस में कुरआने पाक, इल्मे शर-ई या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम बल्कि किसी नबी या फ़िरिश्ते का नाम भी लिखा हुवा हो।

www.dawateislami.net

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "इन अश्या को ऐसी गन्दगी में डालना भी कुफ़्र है जो पाक हो जैसा कि मनी (जो कि शवाफ़ेअ़ के नज़्दीक पाक है), रींठ या थूक में डाल देना या इन नामों या मस्जिद को गन्दगी से आलूदा करना भी इसी त़रह़ है अगर्चे वोह नजासत इतनी क़लील ही क्यूं न हो जिस की शरीअ़ते मुत़ह्हरा में मुआ़फ़ी है।"

☆...... जिस नबी की नुबुव्वत पर इज्माअ़ है उस की नुबुव्वत में शक करना भी कुफ़्र है, इस लिये चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सिनान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है लिहाज़ा इन की नुबुव्वत का इन्कार कुफ़्र नहीं।

☆...... जिस किताब के मुनज़्ज़ल मिनल्लाहि तआ़ला होने पर इज्माअ़ है जैसे तौरात या इन्जील, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़बूर या ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सह़ीफ़े या जिस आयत के क़ुरआन होने पर इज्माअ़ है जैसे मुअ़व्वि-ज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास), लिहाज़ा इन में से किसी के कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ होने में शक करना भी कुफ़्र है।

☆...... हर उस शख़्स की तक्फ़ीर में शक करना भी कुफ़्र है जिस की बात से सारी उम्मत के गुमराह होने का तअस्सुर मिलता हो।

☆...... नीज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को काफ़िर कहने वाले के कुफ़्र में शक करना भी कुफ़्र है।

☆...... मक्कए मुकर्रमा, ख़ानए का'बा या मस्जिदे ह़राम के वुजूद में शक करने वाला भी काफ़िर है।

☆...... ह़ज के त़रीक़े या इस की मा'रूफ़ सूरत नीज़ नमाज़ और रोज़े की कैफ़िय्यत व हैअत में शक करने वाला भी काफ़िर है।

☆...... ऐसे हुक्मे शर-ई में शक करना भी कुफ़्र है जिस के ज़रूरिय्याते दीन में से होने पर इज्माअ़ हो और वोह मश्हूर हो जैसे टेक्स की हुरमत (इस की तफ़्सील कबीरा नम्बर 131 में देखिये) या सुन्नतों की मशरूइय्यत जैसे ईद की नमाज़ वग़ैरा में शक करना।

☆...... किसी ऐसी ह़राम चीज़ को ह़लाल समझने वाले के कुफ़्र में शक करना भी कुफ़्र है जिस की हुरमत का ज़रूरिय्याते दीन से होना मज्मअ़ अ़लैह और मश्हूर हो, जैसे वुज़ू के बिग़ैर नमाज़ पढ़ना, अलबत्ता अगर कोई शख़्स नजासत व पलीदगी के साथ नमाज़ पढ़े तो उस के कुफ़्र में इख़्तिलाफ़ है।

☆...... किसी मुसल्मान या ज़िम्मी काफ़िर को बिला उ़ज़्रे शर-ई जाइज़ समझते हुए ईज़ा देना भी कुफ़्र है।

☆...... किसी ह़लाल को ह़राम समझने वाले के कुफ़्र में शक करना भी कुफ़्र है जैसे ख़रीदो फ़रोख़्त या निकाह़ को ह़राम कहना।

☆...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में येह कहने वाले के **कुफ़्र में शक करना भी कुफ़्र** है कि مَعَاذَاللّٰه आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक सियाह था या आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल दाढ़ी निकलने से पहले ही हो गया

www.dawateislami.net

था या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, مَعَاذَاللّٰه क़-रशी, अ़-रबी या इन्सान नहीं थे, क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसे वस्फ़ से मौसूफ़ करना जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में न हो आप की तक्ज़ीब के मु-तरादिफ़ है।

इस से येह **क़ाइदा** साबित होता है **: ''हर वोह वस्फ़** जिस के दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये **सुबूत पर उम्मत का इज्माअ़ हो उस का इन्कार कुफ़्र है।''** जैसे

★...... कोई बद बख़्त, ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द किसी नबी के मब्ऊ़स होने को जाइज़ माने।

या इस त़रह़ के कलिमात कहे :

☆...... ''मैं नहीं जानता कि येह नबी वोही हैं जो मक्का में पैदा हुए और मदीने में पर्दा फ़रमा गए या कोई और हैं।''

☆...... ''नुबुव्वत कस्बी है।''

☆...... ''दिल की सफ़ाई से नुबुव्वत के मर्तबे तक पहुंचा जा सकता है।''

☆...... ''वली नबी से अफ़्ज़ल होता है।''

☆...... ''मेरी त़रफ़ वह़्य आती है।'' अगर्चे वोह नुबुव्वत का दा'वा न भी करे।

☆...... ''मैं मरने से पहले जन्नत में दाख़िल हो जाऊंगा।''

☆...... या कोई बद बख़्त शख़्स अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते सितूदा सिफ़ात में या किसी दूसरे नबी बल्कि फ़िरिश्तों में भी कोई ऐ़ब तलाश करे।

मिसाल के त़ौर पर :

☆...... उन पर ला'नत भेजे...... या गाली दे...... या उन को ह़क़ीर जाने,

☆...... उन का या उन के किसी फ़े'ल का मज़ाक़ उड़ाए जैसे उंग्लियां चाटने का मज़ाक़ उड़ाए,

☆...... उन की ज़ात, नसब, दीन या किसी फ़े'ल को नाक़िस कहे,

☆...... नक़्स की ता'रीज़ करे,

☆...... उन्हें ऐ़ब लगाते हुए किसी चीज़ से तश्बीह दे,

☆...... उन की तस्ग़ीर करे या'नी उन्हें छोटा समझे या (ज़बान से) कहे,

☆...... उन की क़द्र घटाए,

☆...... उन के नुक़्सान की तमन्ना करे,

www.dawateislami.net

☆...... उन की बुराई के त़ौर पर उन की जानिब कोई ऐसी बात मन्सूब करे जो उन की शान के लाइक़ न हो,
☆...... उन की किसी बात को नाक़िस, हज़्यान और झूट कह कर उन की तौहीन करे,
☆...... या ऐसी बात कहे जिस में उन की किसी आज़माइश या उन के बा'ज़ जाइज़ अ़वारिज़े ब-शरिय्या को ह़क़ीर जानना पाया जाए तो **येह सब सूरतें बिल इज्माअ़ कुफ़्र हैं** और इन के **क़ाइल को क़त्ल किया जाएगा** और अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक उस की **तौबा भी क़बूल नहीं की जाएगी ।**

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक ऐसे शख़्स को क़त्ल कर दिया था जिस ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने "**तुम्हारा साह़िब**" कहा था तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस शख़्स के इस कलिमे को मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन क़रार देते हुए उसे क़त्ल कर दिया ।
☆...... इसी त़रह़ कुफ़्र पर राज़ी होना अगर्चे ज़िम्नन ही क्यूं न हो जैसे कोई काफ़िर किसी मुसल्मान से अपने इस्लाम लाने के बारे में मश्वरा चाहे या न चाहे और वोह मुसल्मान उसे येह कहे : "मुसल्मान मत होना ।"
☆...... या काफ़िर ने उस से कहा कि मुझे कलिमा पढ़ा दो तो उस ने कलिमा पढ़ाने में ताख़ीर की, म-सलन ख़त़ीब ने कहा : "सब्र करो मैं ख़ुत़्बे से फ़ारिग़ हो जाऊं फिर कलिमा पढ़ाऊंगा ।"
☆...... बद दुआ़ में येह मुआ़-मला नहीं जैसे किसी को बद दुआ़ दी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे ईमान नसीब न फ़रमाए,
☆...... या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे कुफ़्र पर क़ाइम रखे,
☆...... या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां मुसल्मान का ईमान छीन ले जब कि इन सूरतों में उस पर सख़्ती का इरादा हो ।
☆...... इसी त़रह़ किसी मुसल्मान के लिये कुफ़्र का सुवाल करना भी कुफ़्र है क्यूं कि येह कुफ़्र पर राज़ी होना है ।
☆...... इसी त़रह़ किसी मुसल्मान को बिग़ैर तावील के काफ़िर कह कर पुकारने से क़ाइल ख़ुद काफ़िर हो जाएगा क्यूं कि उस ने इस्लाम को कुफ़्र कहा ।
☆...... या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी इस्म या उस के किसी नबी के नाम का मज़ाक़ उड़ाना म-सलन उस की तस्ग़ीर करना ।
☆...... या उन के किसी अम्र व नह्य, वा'दा या वई़द का मज़ाक़ उड़ाना जैसे कोई कहे : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी मुझे फ़ुलां काम करने का हुक्म दे तब भी मैं उसे नहीं करूंगा ।"
☆...... या कहे "अगर फ़ुलां जगह को क़िब्ला बना दिया जाए तो मैं उस की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ नहीं पढ़ूंगा ।"

www.dawateislami.net

☆...... या इस्तिख़्फ़ाफ़ व इनाद के तौर पर कहे : "अगर मुझे जन्नत अ़ता फ़रमा दी तब भी मैं उस में दाखिल न होउंगा।"

☆...... या येह कहना : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे मरज़ या तंगदस्ती के बा वुजूद नमाज़ न पढ़ने पर मेरी पकड़ फ़रमाई तो उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया।"

☆...... इसी त़रह़ अगर किसी मज़्लूम ने ज़ालिम से येह कहा : "क्या येह ज़ुल्म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से है।" तो ज़ालिम ने जवाब दिया कि "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर के बिग़ैर येह काम करता हूं।" तो ज़ालिम काफ़िर हो जाएगा।

☆...... या येह कहना : "अगर कोई फ़िरिश्ता या नबी भी मेरे पास आ जाए तब भी मैं इस की तस्दीक़ न करूंगा।"

☆...... या येह कहना : "अगर फ़ुलां शख़्स नबी भी होता तो मैं उस पर ईमान न लाता।"

☆...... या येह कहना : "नबी ने जो कहा है अगर वोह सच है तो हम नजात पा जाएंगे।"

☆...... या उन पर झूट का इल्ज़ाम लगाया तो येह भी कुफ़्र है क्यूं कि इस में मर्तबए नुबुव्वत की तन्क़ीस है।

☆...... या उसे कहा गया : "अपने नाख़ुन काट लो कि येह सुन्नत है।" तो उस ने इस्तिहज़ा के तौर पर कहा : "मैं ऐसा नहीं करूंगा अगर्चे येह सुन्नत है।"

☆...... या येह कहे : "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़ने से भूक नहीं मिटती।"

☆...... इसी त़रह़ दीगर अज़्कार के बारे में येह जुम्ला कहने का भी येही हुक्म है।

☆...... या (अज़ान के कलिमात के बारे में इस त़रह़) कहना "मुअज़्ज़िन झूट बोलता है।"

☆...... या कहे : "मुअज़्ज़िन की आवाज़ घन्टे की आवाज़ जैसी है।" और इस क़ौल के ज़रीए कुफ़्र के नाक़ूस से तश्बीह का इरादा करे या अज़ान के इस्तिख़्फ़ाफ़ की निय्यत करे।

☆...... इसी त़रह़ बतौरे इस्तिहज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को किसी ह़राम चीज़ के नाम से पुकारे जैसे शराब वग़ैरा।

☆...... या इस्तिहज़ा के तौर पर कहे : "मैं मह़शर या क़ियामत से नहीं डरता।"

☆...... येह कहना : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी चोर को तलाश नहीं कर सकता।" तो चूंकि उस ने इ़ज्ज़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब किया लिहाज़ा येह कुफ़्र है।

☆...... या उ़-लमा, वाइ़ज़ीन और मुअ़ल्लिमीन को ह़क़ीर जानते हुए उन का भेस बदल कर किसी जमाअ़त के पास आया ताकि वोह इस पर हंसें या खेलकूद करें।

☆...... या इ़ल्म को हलका जानते हुए कहना : "सरीद का पियाला इ़ल्म से बेहतर है।"

☆...... किसी शख़्स का मरज़ शिद्दत पकड़ गया या बेटा मर गया तो वोह कहे : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू चाहे तो मुझे काफ़िर बना कर मार या मुसल्मान बना कर।"

www.dawateislami.net

☆...... या कहे : "तूने मेरा बेटा ले लिया तो अब बाक़ी क्या बचा तूने ऐसा क्यूं किया ?"

☆...... किसी शख़्स से कहा गया : "ऐ काफ़िर !" उस ने अपने काफ़िर होने की निय्यत से "जी" कहा तो काफ़िर है और अगर सिर्फ़ जवाब की निय्यत से कहा तो काफ़िर नहीं।

☆...... दिरहम मिलने की उम्मीद पर पहले कुफ़्र की तमन्ना की फिर इस्लाम की।

☆...... किसी ऐसी चीज़ के ह़लाल होने की तमन्ना करना जो किसी ज़माने में भी ह़लाल न थी जैसे क़त्ल, ज़िना, ज़ुल्म वग़ैरा।

☆...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बा'ज़ अश्या को ह़राम फ़रमाने की वजह से ज़ुल्म की निस्बत करना।

☆...... अगर किसी शख़्स ने कुफ़्फ़ार के दीन की त़रफ़ माइल हो कर उन का लिबास पहना तो वोह काफ़िर हो गया।

☆...... किसी ने कहा : "यहूदी मुसल्मानों से अच्छे हैं।" तो वोह काफ़िर है और अगर नसारा को मजूसियों से अच्छा कहा तो काफ़िर नहीं लेकिन अगर ह़क़ीक़त के ए'तिबार से कहा तो काफ़िर है।

☆...... किसी ने छींकने वाले उ़म्र रसीदा शख़्स से कहा "يَرْحَمُكَ الله" तो किसी ने उस से कहा : "ऐसा मत कहो।" अगर इरादा येह था कि येह रह़मत से बे नियाज़ है तो येह कुफ़्र है।

☆...... ग़ुलाम ने कहा : "मैं नमाज़ नहीं पढूंगा क्यूं कि सवाब तो मेरे आक़ा को मिलेगा।" इस के कुफ़्र होने में इख़्तिलाफ़ है क्यूं कि ऐसी बातों की क़बाह़त से अक्सर ग़ुलाम जाहिल होते हैं लिहाज़ा येह कलाम ग़ुलामों के बारे में नहीं बल्कि हुक्मे शर-ई जानने वाले लोगों से मु-तअ़ल्लिक़ है, लिहाज़ा मस्अला जानने की सूरत में इस के कुफ़्रिय्या जुम्ला होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

☆...... किसी से पूछा गया : "ईमान क्या है ?" उस ने इस्तिख़्फ़ाफ़न कहा : "मैं नहीं जानता।"

☆...... किसी ने अपनी बीवी से कहा : "तू मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब है।" तो अगर मह़ब्बते ता'ज़ीमी का इरादा था तो काफ़िर है और अगर मैलाने क़ल्बी मुराद था तो कुफ़्र नहीं। जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की शुरूहात में मज़्कूर है।

☆...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सह़ाबी होने का मुन्किर और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर तोहमत लगाने वाला भी काफ़िर है क्यूं कि येह क़ुरआने करीम को झुटलाने वाला है अलबत्ता दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सह़ाबी होने का इन्कार करना कुफ़्र नहीं।

☆...... किसी ने कहा : "मैं ही अपने अफ़्आ़ल का ख़ालिक़ हूं।" और वोह मा'ना मुराद न लिया जो मो'तज़िला लेते हैं तो ऐसा कहने वाला काफ़िर है।

☆...... किसी ने कहा : "मैं अल्लाह हूं।" अगर्चे मिज़ाह़ में कहा कहने वाला काफ़िर हो गया।

☆...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ का इन्कार करते हुए कहा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ को नहीं जानता।" तो ऐसा कहने वाला काफ़िर है।

www.dawateislami.net

☆...... किसी ने झूट बोल कर कहा, ''अल्लाह जानता है कि मैं ने येह काम किया है।'' तो वोह काफ़िर है क्यूं कि उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ जहालत को मन्सूब किया।

☆...... किसी ने कहा : ''क़ुरआने करीम, नमाज़ या ज़िक्र या ऐसी ही किसी इ़बादत से मेरा दिल भर गया है।''

☆...... या कहा : ''मह़शर क्या है ?, जहन्नम क्या है ? ''

☆...... या गुनाह कर के कहा : ''मैं ने क्या किया है ?''

☆...... किसी को इ़ल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होने की दा'वत दी गई तो उस ने कहा : ''इ़ल्म की मजलिस में आ कर क्या करूंगा।'' इन सब सूरतों में अगर इस्तिख़्फ़ाफ़ की निय्यत थी तो कहने वाला काफ़िर है।

☆...... किसी ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर आ़लिम पर ला'नत फ़रमाए।'' तो अगर इस्तिग़राक़ की निय्यत न थी तो कुफ़्र के लिये इस्तिख़्फ़ाफ़ की निय्यत शर्त़ है और अगर इस्तिग़राक़ की निय्यत थी तो इस्तिख़्फ़ाफ़ की निय्यत न भी हो तब भी काफ़िर है क्यूं की इस सूरत में अम्बिया व मलाएका भी इस की ज़द में आ जाएंगे।

☆...... किसी आ़लिम का फ़तवा फेंक दिया।

नीज़ इस त़रह़ कहने से भी काफ़िर हो जाएगा :

☆...... ''येह शरीअ़त क्या चीज़ है ?'' तो अगर इस्तिख़्फ़ाफ़ की निय्यत थी तो कहने वाला काफ़िर है।

☆...... किसी फ़क़ीह के बारे में कहा : ''येह वोही चीज़ है।'' अगर इ़ल्म के इस्तिख़्फ़ाफ़ की निय्यत थी तो कुफ़्र है।

☆...... ''रूह़ क़दीम है।''

☆...... ''जब रबूबिय्यत ज़ाहिर हो गई तो बन्दगी मिट गई।'' और इस से मुराद येह लिया कि शरीअ़त के अह़काम उठ गए।

☆...... ''मैं अपनी नासूती या'नी ब-शरी सिफ़ात से लाहूती (या'नी इलाही सिफ़ात) में फ़ना हो गया हूं।''

☆...... ''मेरी सिफ़ात सिफ़ाते ह़क़ में बदल गई हैं।''

☆...... ''मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को दुन्या में इ़यां देखता हूं।''

☆...... ''मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आमने सामने कलाम करता हूं।''

☆...... ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक ह़सीन सूरत में ह़ुलूल कर गया है।''

☆...... ''उस ने मुझ से शर-अ़ की तक्लीफ़ साक़ित़ कर दी है।''

www.dawateislami.net

☆...... किसी से कहा : "मख़्फ़ी अ़मल के हुसूल के लिये ज़ाहिरी इबादात छोड़ दे।"
☆...... "गाना सुनना दीन में से है।"
☆...... "गाना दिलों में क़ुरआन से ज़ियादा असर करता है।"
☆...... "बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का विसाल इबादत के बिग़ैर भी ह़ासिल कर लेता है।"
☆...... "रूह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नूर है लिहाज़ा नूर जब नूर के साथ मिलता है तो एक हो जाता है।" **येह तमाम सूरतें कुफ़्र हैं।**

इन के इ़लावा बहुत सी फ़रोअ़ रह गईं जिन्हें मैं ने तफ़्सीली कलाम के साथ गुज़श्ता बयान कर्दा क़ुयूदात, इख़्तिलाफ़ व बह़स और मज़ाहिबे अर-बआ़ के नज़्दीक तमाम अक़्वाल को जम्अ़ कर दिया है बल्कि हर उस बात को जिस के बारे में कहा गया है कि येह कुफ़्र है अगर्चे वोह ज़ईफ़ क़ौल के मुताबिक़ ही क्यूं न हो अपनी किताब "اَلْإِعْلَامُ بِمَا يَقْطَعُ الْإِسْلَامَ" में जम्अ़ कर दिया है कोई त़ालिबे इ़ल्म इस किताब से मुस्तग़्नी नहीं हो सकता।

गुज़श्ता सफ़ह़ात में बयान किया जा चुका है कि जिस ने अपने मुसल्मान भाई को "ऐ काफ़िर!" कह कर पुकारा तो शर्त़ पाए जाने या'नी मुख़ात़ब के काफ़िर न होने की सूरत में कहने वाला काफ़िर हो जाएगा और इसी त़रह़ जिस ने कहा कि "फ़ुलां सितारे की वजह से हमें बारिश ह़ासिल हुई।" तो अगर येह इरादा किया कि फ़ुलां सितारे को तासीर की क़ुव्वत ह़ासिल है तो येह कहने वाला काफ़िर है। चुनान्चे,

﴾29﴿...... दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी जब अपने भाई से कहता है : "ऐ काफ़िर!" तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो जाता है अगर जिसे काफ़िर कहा गया वोह काफ़िर था (तो ठीक) वरना कुफ़्र उस कहने वाले की त़रफ़ लौट जाएगा।" (كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال الاكمال،الحديث:٨٢٧٥،ج٣،ص٢٥٤)

﴾30﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो आदमी किसी शख़्स के काफ़िर होने की गवाही देता है तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो जाता है अगर वोह शख़्स जिसे काफ़िर कहा गया, वाक़ेई उस के कहने के मुताबिक़ काफ़िर था तो सह़ीह़ है और अगर वोह काफ़िर न था तो उसे काफ़िर कहने की वजह से कहने वाला ख़ुद काफ़िर हो जाएगा।"

(المرجع السابق، الحديث:٨٢٧٦)

﴾31﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दो मुसल्मानों के दरमियान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से एक पर्दा है लिहाज़ा जब उन में से कोई एक अपने दोस्त से कहता है कि मुझ से जुदा हो जा तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के उस पर्दे को फाड़ देता है और जब उसे "ऐ काफ़िर" कहता है तो उन दोनों में से एक शख़्स काफ़िर हो जाता है।"

(المعجم الكبير،الحديث:١٠٥٤٤،ج١٠،ص٢٢٤)

www.dawateislami.net

﴾32﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जब आदमी अपने भाई को ''ऐ काफ़िर'' कह कर पुकारे तो गोया उस ने उसे क़त्ल कर दिया और मोमिन पर ला'नत भेजना भी उसे क़त्ल करने के मु-तरादिफ़ है।'' (المعجم الكبير،الحديث:٤٦٣،ج١٨،ص١٩٤)

﴾33﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की तक्फ़ीर करता है तो अगर वोह वाक़ेई काफ़िर है (तब तो ठीक है) वरना कहने वाला ख़ुद काफ़िर हो जाता है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب السنة ، باب الدليل على زيادة الايمان و نقصانه،الحديث:٤٦٨٧،ص١٥٦٧)

﴾34﴿...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने कहा : ''मैं इस्लाम से बेज़ार हूं।'' तो अगर वोह झूटा है तो वोह ऐसा ही है जैसा उस ने कहा और अगर सच्चा है तो भी सलामती के साथ इस्लाम में न लौट सकेगा।''

(صحيح ابن ماجه،كتاب الكفارات، باب من حلف بملة غير الاسلام،الحديث:٢١٠٠،ص٢٦٠٣)

﴾35﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जब किसी ने अपने भाई को ''ऐ काफ़िर'' कह कर पुकारा तो उन दोनों में से एक शख़्स काफ़िर हो जाता है।''

(صحيح البخاری، كتاب الادب،باب من اكفر اخاه......الخ،الحديث:٦١٠٣،ص٥١٥)

﴾36﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله कहने वालों से रुक जाओ, किसी गुनाह की वजह से उन्हें काफ़िर न कहो क्यूं कि जो لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله पढ़ने वालों की तक्फ़ीर करेगा वोही कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब होगा।''

(المعجم الكبير،الحديث:١٣٠٨٩،ج١٢،ص٢١١)

﴾37﴿...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो शख़्स अपने भाई को काफ़िर कह कर पुकारता है तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो जाता है, अगर ऐसा ही था जैसा उस ने कहा (तो दुरुस्त है) वरना कुफ़्र कहने वाले की त़रफ़ लौट जाएगा।''

(صحيح مسلم،كتاب الايمان،باب حال ايمان من قال لاخيه......الخ،الحديث:٢١٦،ص٦٩٠)

﴾38﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जब भी कोई शख़्स किसी को काफ़िर कहता है तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो जाता है।''

(صحيح ابن حبان، كتاب الايمان،فصل......الخ،الحديث:٢٤٨،ج١،ص٢٣٤)

﴾39﴿...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब भी आस्मान से कोई ब-र-कत नाज़िल फ़रमाता है तो लोगों का एक गुरौह उस के सबब कुफ़्र कर बैठता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बारिश नाज़िल फ़रमाता है तो वोह लोग कहते हैं कि फ़ुलां फ़ुलां सितारे की वजह से हम पर बारिश हुई।''

(صحيح مسلم،كتاب الايمان،باب بيان كفر من قال مطرنا......الخ،الحديث:٢٣٣،ص٦٩٢،بدون "مطرنا")

www.dawateislami.net

《40》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ क्या फ़रमाता है ? वोह फ़रमाता है : "जब भी मैं अपने बन्दों पर कोई इन्आ़म फ़रमाता हूं तो इस की वजह से उन में से एक गुरौह काफ़िर हो जाता है।" वोह गुरौह कहता है : "येह फुलां सितारे ने किया है या फुलां सितारे की वजह से येह ने'मत मिली है।"

(المسندلامام احمد بن حنبل،مسند ابی هریره ، الحدیث:٨٧٤٧،ج٣،ص٢٨٦)

《41》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "क्या तुम जानते हो कि आज रात तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने क्या इर्शाद फ़रमाया है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया है : "मेरे कुछ बन्दे मोमिन हुए और कुछ काफ़िर, जो येह कहते हैं कि हमें फुलां फुलां सितारे की वजह से बारिश दी गई वोह मेरा इन्कार करने वाले और सितारों पर ईमान लाने वाले हैं।"

(صحیح البخاری ، کتاب الاذان ، باب یستقبل الامام الناس اذا سلم ، الحدیث:٨٤٦،ص٦٧)

《42》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तक मेरी उम्मत को सितारे गुमराह न कर दें वोह हमेशा अपने दीन पर क़ाइम रहेगी।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال الاکمال،الحدیث:٨٢٨٥،ج٣،ص٢٥٥)

《43》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों में से बा'ज़ शुक्र करने वाले हैं और उन्हीं में से बा'ज़ कुफ़्र करने वाले भी हैं, वोह कहते हैं : "येह रह़मत है।" और बा'ज़ कहते हैं : "हम पर फुलां फुलां सितारे की वजह से स-दक़ा किया गया है।" (صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب بیان کفر من قال......الخ،الحدیث:٢٣٤،ص٦٩٢)

तम्बीह 2 :

गुज़श्ता सफ़ह़ात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान गुज़र चुका है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ (پ٥،النساء:٤٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

येह आयते करीमा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के उ़मूम की तख़्सीस करती है :

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○ (پ٢٤،الزمر:٥٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।

www.dawateislami.net

अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा

इन दोनों आयतों से मा'लूम हुवा कि अहले सुन्नत व जमाअ़त का येह अ़क़ीदा बिल्कुल ह़क़ है कि "फ़ासिक़ मोमिन की मय्यित मशिय्यत के ताबेअ़ है, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उसे अपनी मशिय्यत के मुत़ाबिक़ अ़ज़ाब देगा और फिर बिल आख़िर उसे मुआ़फ़ फ़रमा कर जहन्नम से निकाल देगा, उस वक़्त वोह जहन्नम में जलने की वजह से सियाह हो चुका होगा, फिर वोह बन्दा नहरे ह़यात में ग़ोत़ा लगाएगा तो उसे एक अ़ज़ीम हुस्नो जमाल और ताज़गी ह़ासिल होगी फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और उस ने उस बन्दे के साबिक़ा ईमान और उस के आ'माले सालिह़ा के मुत़ाबिक़ उस के लिये जो इन्आ़मात तय्यार किये होंगे वोह उसे अ़त़ा फ़रमाएगा जैसा कि येह बात बुख़ारी वग़ैरा की सह़ीह़ अह़ादीस से साबित है और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उस बन्दे को इब्तिदाअन ही मुआ़फ़ फ़रमा कर उस पर नर्मी फ़रमाए और उस के मुख़ालिफ़ीन को उस से राज़ी फ़रमा दे और फिर नजात पाने वालों के साथ उसे भी जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।"

ख़्वारिज का अ़क़ीदा :

ख़्वारिज का येह अ़क़ीदा है : "गुनाहे कबीरा का मुर-तकिब काफ़िर है।"

मो'तज़िला का अ़क़ीदा :

मो'तज़िला का अ़क़ीदा येह है : "मुर-तकिबे कबीरा ह़त्मी त़ौर पर हमेशा के लिये जहन्नम में रहेगा और उसे मुआ़फ़ करना जाइज़ नहीं जैसा कि मुत़ीअ़ को अ़ज़ाब देना जाइज़ नहीं।"

ख़्वारिज व मो'तज़िला का रद :

येह उन लोगों के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर लगाए गए झूटे इल्ज़ामात में से है, जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुन्किरों और ज़ालिमों के इन बात़िल अक़्वाल व अ़क़ाइद से बुलन्दो बाला है। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान कि :

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ۝ (پ۵، النسآء:۹۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे और अल्लाह ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब।

या तो मोमिन के क़त्ल को ह़लाल समझने वाले पर मह़मूल है क्यूं कि मोमिन के क़त्ल को ह़लाल समझना कुफ़्र है, तो इस सूरत में ख़ुलूद से मुराद ताबीद या'नी हमेशगी है जैसा कि दीगर कुफ़्फ़ार वग़ैरा पर है, नुसूसे शरइय्या और लुग़त इस बात पर गवाह हैं कि ख़ुलूद ताबीद को मुस्तल्ज़िम

www.dawateislami.net

नहीं या'नी खुलूद का मत्लब सिर्फ़ ताबीद ही नहीं होता लिहाज़ा इस सूरत में आयते करीमा का मत्लब येह होगा कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अज़ाब देगा तो उस की जज़ा येह होगी जो आयते करीमा में बयान हुई वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मुआफ़ फ़रमा देगा जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान में है कि :

وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ (پ۵، النسآء:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है।

और इस फ़रमाने मुबारक से पता चलता है कि :

اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ط (پ۲۴، الزمر:۵۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है।

जिन्हों ने येह बात कही है : "क़ातिल की तौबा मक़्बूल नहीं।" तो इस से उन की मुराद क़त्ल से बाज़ रखना और नफ़रत दिलाना है, वरना क़ुरआनो सुन्नत की नुसूस इस मुआ-मले में बिल्कुल सरीह़ हैं : "जिस त़रह़ काफ़िर की तौबा मक़्बूल है इसी त़रह़ क़ातिल की तौबा भी मक़्बूल है बल्कि क़ातिल की तौबा तो ब द-र-जए औला मक़्बूल है।"

मुरजिया का अक़ीदा :

इन का अक़ीदा येह है : "जिस त़रह़ काफ़िर को कोई नेकी फ़ाएदा नहीं देती इसी त़रह़ मोमिन को कोई गुनाह नुक़्सान नहीं देता।"

येह भी इन (बद मज़्हबों) के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर बांधे जाने वाले बोहतानों में से है। लिहाज़ा हर मुसल्मान पर वाजिब है कि वोह येह अक़ीदा रखे : "गुनाहगार मुअमिनीन की एक जमाअ़त जहन्नम में दाख़िल होगी।" क्यूं कि इस का इन्कार कुफ़्र है इस लिये कि येह इन्कार उन सरीह़ नुसूसे क़त़इय्या को झूटलाना है जो इस बात पर दलालत करती हैं।

तम्बीह 3 :

इमामुल ह़-रमैन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने उसूलियों से उन का येह उसूल ज़िक्र करने के बा'द इसी को बर क़रार रखा : "जिस ने कलिमए कुफ़्र बका और येह गुमान किया कि वोह **तोरिया** (या'नी जो बात दिल में हो उस के ख़िलाफ़ ज़ाहिर करना) कर रहा है तो वोह ज़ाहिरन या बात़िनन दोनों त़रह़ से काफ़िर है, और जिसे वस्वसा आया और वोह ईमान या सानेअ़ के बारे में मु-तरद्दिद हुवा या उस के दिल में उन के नाक़िस होने या उन्हें गाली देने का ख़याल आया और वोह उन वस्वसों को शदीद ना पसन्द करता हो मगर उन्हें दूर करने पर क़ादिर न हो तो उस पर कोई गुनाह या ह़रज नहीं बल्कि येह वस्वसे शैत़ान की त़रफ़ से हैं, लिहाज़ा उस बन्दे को चाहिये कि वोह उन्हें दूर करने के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब करे क्यूं कि अगर येह वस्वसे उस बन्दे ही की जानिब से होते तो वोह इन्हें हरगिज़ ना पसन्द न करता।" अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम वग़ैरा ने भी इस उसूल व क़ाइदे का तज़्किरा किया है।

www.dawateislami.net

तम्बीह 4 :

अस्ली काफ़िर या मुरतद का इस्लाम उस वक़्त साबित होगा जब वोह ज़बान से शहादतें या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह्दानियत और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत का इक़रार करेगा अगर्चे इन में से एक शहादत का इक़रार वोह पहले ही से करता हो और अगर उस ने اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं) से "اِلٰهَ" के लफ़्ज़ को بَارِئْ،رَحْمٰنْ،مٰلِكْ, या رَزَّاق से बदल दिया तब भी जाइज़ है। इसी तरह अगर لَا को مَامِنْ से बदल दिया म-सलन مَامِنْ اِلٰهٍ اِلَّااللّٰهُ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कहा या लफ़्ज़ اِلَّا को سِوٰى ،غَيْرَ या عَدَا से बदल दिया म-सलन कहा لَااِلٰهَ غَيْرُ اللّٰهِ، سِوَى اللّٰهِ، عَدَااللّٰهِ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं), या फिर इस्मे जलालत "اَللّٰهُ" को اَلْمُحْيِى الْمُمِيْتُ से बदल दिया जो कि ग़ैर तब्ई है या اَلرَّحْمٰنُ، اَلْبَارِئُ से बदल दिया म-सलन कहा : "لَا اِلٰهَ اِلَّا الْمُحْيِى الْمُمِيْتُ" (या'नी ज़िन्दगी और मौत अ़ता करने वाली हस्ती के सिवा कोई मा'बूद नहीं), لَا اِلٰهَ اِلَّا الرَّحْمٰنُ (या'नी रह़मान عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं) वग़ैरा या لَا اِلٰهَ اِلَّا مَنْ آمَنَ بِهِ الْمُسْلِمُوْنَ (या'नी जिस ज़ात पर मुसल्मानों का ईमान है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कहा या कहा कि لَا اِلٰهَ اِلَّا مَنْ فِى السَّمَآءِ (या'नी उस ज़ात के इलावा कोई मा'बूद नहीं जो आस्मानों में है) या لَا اِلٰهَ اِلَّا الْمٰلِكُ (या'नी मालिक عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कहा या لَا اِلٰهَ اِلَّا الرَّزَّاقُ (या'नी रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कहा तो येह सब सूरतें जाइज़ हैं और अगर لَا اِلٰهَ اِلَّا سَاكِنُ السَّمَآءِ (या'नी वोह ज़ात जो आस्मानों में रहने वाली है के सिवा कोई मा'बूद नहीं) कहा तो जाइज़ नहीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को سَاكِنُ السَّمَآءِ और مَنْ فِى السَّمَآءِ कहने में फ़र्क़ येह है कि سَاكِنُ السَّمَآءِ कहना एक जिहत है और जिहत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुहाल है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस से और ज़ालिमों व मुन्किरों के बोहतानों से बहुत बुलन्द है, बहुत से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के नज़्दीक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिहत साबित करना कुफ़्र है, लिहाज़ा जो कलिमात कुफ़्र पर मुश्तमिल हों उन से इस्लाम का सुबूत कैसे हो सकता है ? जब कि مَنْ فِى السَّمَآءِ कहने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिहत की तसरीह़ नहीं क्यूं कि مَنْ فِى السَّمَآءِ से मुराद येह है : "उस का हुक्म और सल्तनत आस्मानों में क़ाइम है।" क्यूं कि येह लफ़्ज़ उन क़ुरआनी आयात के मुवाफ़िक़ है जो सलफ़ व ख़लफ़ के नज़्दीक मुअव्वल हैं। (इस में ह़नाबिला के एक गुमराह फ़िर्क़े के इलावा किसी को किसी क़िस्म का इख़्तिलाफ़ नहीं है) जब कि इन दोनों के दरमियान इस बात में इख़्तिलाफ़ है : "हम इस तावील को मुअ़य्यन करते हैं और ज़ाहिर को इस की त़रफ़ नहीं फैरते।" येह ख़लफ़ का मज़्हब है या "इज्माली तावील करते हैं और किसी शै को मुअ़य्यन नहीं करते बल्कि हम इसे मुअ़य्यन करने का इ़ल्म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ते हैं।" और येही सलफ़ का मज़्हब है, बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने भी इसे इख़्तियार किया है और बा'ज़ ने इस में थोड़ी सी ज़ियादती के साथ इस को इख़्तियार किया है और वोह येह है : "तावील को इस त़रह़ मुअ़य्यन करना कि वोह ज़ाहिर के

www.dawateislami.net

क़रीब हो जाए और अ़-रबी लुग़त के क़वाइद भी इस की दुरुस्तगी पर गवाही दें तो येह मुनासिब है वरना तफ़्वीज़ या'नी इस की ता'यीन के इ़ल्म को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर देना ही मुनासिब है।" जो शख़्स आयात व अह़ादीस में ग़ौरो फ़िक्र करे तो वोह उन्हें इसी तावील की गवाही देते हुए पाएगा क्यूं कि ता'वील के बिग़ैर इन आयात व अह़ादीस का ज़ाहिरी मफ़्हूम तनाक़ुज़ का वह्म पैदा करता है।" लिहाज़ा उस वह्म से बचने के लिये तावील की त़रफ़ जाना वाजिब है, क्या आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन फ़रामीने मुबा-रका को नहीं देखते :

《1》

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف (پ۸،الاعراف:۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा कि उस की शान के लाइक़ है।

《2》 ह़ालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह भी इर्शाद फ़रमाया है कि,

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝ (پ۲۶،ق:۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़्दीक हैं।

《3》

وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط (پ۲۷،الحدید:۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह तुम्हारे साथ है तुम कहीं हो।

ह़दीसे पाक में है कि अगर तुम डोल को रस्सी से कूंएं में लटका दो तो वहां भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने इ़ल्मो क़ुदरत से मौजूद है। (क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने इ़ल्मो क़ुदरत से हर चीज़ को घेरे हुए है)

इन आयात व अह़ादीस बल्कि इन जैसी तमाम रिवायात में से हर एक में तावील करना वाजिब है क्यूं कि किसी के लिये इन नुसूस के ज़ाहिरी मा'ना का क़ाइल होना मुम्किन नहीं लिहाज़ा जब उन में से बा'ज़ में तावील करना साबित होगा तो सब में तावील करना वाजिब होगा, क्यूं कि ख़लफ़ इस मुआ़-मले में तन्हा नहीं बल्कि सलफ़ की एक जमाअ़त जैसे सय्यिदुना इमाम मालिक व जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا वग़ैरा ने भी इन आयात में तावील की है।

अल ग़रज़ ! अहले ह़क़ का इस मस्अले में वोही मज़्हब है जिसे मैं ने बयान कर दिया है और हर एक पर इसी के मुत़ाबिक़ अ़क़ीदा रखना वाजिब है और आदमी को येह ए'तिक़ाद उस वक़्त ह़ासिल होगा जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को हर सरीह़ या इल्तिज़ामी ऐब से पाक मानेगा बल्कि हर उस चीज़ से भी पाक माने जिस में कोई नक़्स तो न हो मगर कमाल भी न हो।

☆...... और इस बात का अ़क़ीदा रखना भी वाजिब है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी ज़ात, इरादे, सिफ़ात, अस्मा और तमाम अफ़्आ़ल में कमाल के सब से आ'ला द-रजे के साथ मुत्तसिफ़ है।

www.dawateislami.net

☆...... शहादतैन में से दूसरी गवाही में लफ़्ज़ مُحَمَّدًا को اَحْمَد ، اَبَا الْقَاسِمِ और लफ़्ज़ رَسُوْلُ को نَبِيٌّ से तब्दील कर देना भी जाइज़ है जैसे اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ की जगह اَحْمَدَ رَسُوْلُ اللّٰهِ، اَبَا الْقَاسِمِ رَسُوْلُ اللّٰهِ या مُحَمَّدًا نَّبِيُّ اللّٰهِ कहना। (صلّی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلّم دائماً ابداً)

नीज़ इन दोनों शहादतों को तरतीब से अदा करना शर्त़ है, लिहाज़ा अगर किसी ने اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहा तो वोह मुसल्मान न होगा मगर जब कि इन्हें पै दर पै लगातार कहे तो मुसल्मान हो जाएगा। येह कलिमात अ़-रबी में पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि किसी ने अपनी मा-दरी ज़बान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ीक़ी व यक्ता मा'बूद होने और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रसूल होने की गवाही दे दी तब भी वोह मुसल्मान हो जाएगा मगर वोह शख़्स जो अल्फ़ाज़ अदा कर रहा हो उस का इन लफ़्ज़ों को समझना शर्त़ है।

☆...... जो दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत से इन्कार की वजह से काफ़िर हो उस के मुसल्मान होने के लिये येह दोनों गवाहियां काफ़ी हैं।

☆...... और जो लोग आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत को अ़रब के साथ मख़्सूस करने की वजह से काफ़िर हुए जैसे ईसाई वग़ैरा तो उन के मुसल्मान होने के लिये येह कहना शर्त़ है कि رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلٰى كَآفَّةِ الْاِنْسِ وَالْجَآنِّ या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम इन्सानों और जिन्नात की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।

☆...... **नीज़** गूंगे का इशारा उस के कलाम के क़ाइम मक़ाम है। और जो अल्फ़ाज़ पीछे बयान किये जा चुके हैं उन के इ़लावा किसी लफ़्ज़ से इस्लाम साबित न होगा जैसे कोई शख़्स सिर्फ़ येह कहे : "मैं ईमान लाया।"

☆...... या "मैं उस पर ईमान लाया जिस के इ़लावा कोई मा'बूद नहीं।"

☆...... या "मैं मुसल्मान हूं।"

☆...... या "मैं उम्मते मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में से हूं।"

☆...... या " मैं ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करता हूं।"

☆...... या "मैं मुसल्मानों में से हूं।"

☆...... या "मुसल्मानों की त़रह़ हूं।"

☆...... या "मुसल्मानों का दीन ह़क़ है।"

☆...... **जब कि** कोई ऐसा शख़्स जिसे किसी चीज़ की पहचान न हो अगर वोह येह कह दे : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया।"

☆...... या "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस्लाम लाया।"

www.dawateislami.net

☆...... या "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा ख़ालिक़ है।"

☆...... या "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा रब है।" फिर रिसालत की गवाही भी दे दे तो वोह मुसल्मान हो जाएगा।

☆...... हर नौ मुस्लिम को क़ियामत के दिन उठने पर ईमान लाने का हुक्म देना मुस्तहब है और इस्लाम के आख़िरत में नफ़अ़ बख़्श होने के लिये गुज़श्ता उमूर के इलावा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह्दानियत, उस की किताबों, उस के रसूलों और क़ियामत के दिन की दिल से तस्दीक़ करना भी शर्त़ है।

☆...... अगर कोई शख़्स दिल से इन बातों की तस्दीक़ कर के उन पर ईमान ले आया मगर उस ने क़ुदरत के बा वुजूद ज़बान से शहादतैन अदा न कीं तो वोह अपने कुफ़्र पर क़ाइम है और हमेशा के लिये जहन्नम में जलने का मुस्तहि़क़ है जैसा कि सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस बात पर इज्माअ़ नक़्ल फ़रमाया है, लेकिन इस पर एक ए'तिराज़ वारिद होता है कि इस मुआ़-मले में अइम्मए अर-बआ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का एक क़ौल येह भी है : "उस का ईमान उसे नफ़अ़ देगा और ज़ियादा से ज़ियादा वोह एक गुनहगार मोमिन है।"

☆...... अगर कोई शख़्स अपनी ज़बान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह्दानियत और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही दे और दिल से ईमान न लाए तो वोह आख़िरत में बिल इज्माअ़ काफ़िर होगा जब कि दुन्या में ज़ाहिरन उस पर मुसल्मानों के अह़काम जारी होंगे, लिहाज़ा अगर वोह किसी मुसल्मान औ़रत से निकाह़ करे फिर दिल से ईमान ले आए तो वोह औ़रत उस वक़्त तक उस के लिये ह़लाल न होगी जब तक मुसल्मान होने के बा'द तज्दीदे निकाह़ न करे।"

तम्बीह 5 :

अहले ह़क़ का मज़्हब है : "मौत के वक़्त ग़रग़र की आवाज़ निकलने के आ़लम में या अ़ज़ाब देखते वक़्त ईमान लाना नफ़अ़ मन्द नहीं।" क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

فَلَمْ یَکُ یَنْفَعُهُمْ اِیْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَاؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ فِیْ عِبَادِهٖۚ وَخَسِرَ هُنَالِکَ الْکٰفِرُوْنَ۠ (پ۲۴، المؤمن:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया अल्लाह का दस्तूर जो उस के बन्दों में गुज़र चुका और वहां काफ़िर घाटे में रहे।

हां ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम इस हुक्म से मुस्तस्ना है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِلَّا قَوْمَ یُوْنُسَؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا کَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰی حِیْنٍ۝ (پ۱۱، یونس۹۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हां यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अ़ज़ाब दुन्या की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरत्ने दिया।

www.dawateislami.net

क्यूं कि इस में इस्तिस्ना मुत्तसिल है और वोह अ़ज़ाब देख कर ईमान लाए थे और येह बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है और इस इस्तिस्ना की वजह येह है कि येह उस क़ौम के नबी का ए'ज़ाज़ और ख़ुसूसियत थी लिहाज़ा इस पर क़ियास नहीं किया जा सकता।

ईमाने वालिदैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم و رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا **:**

जैसा कि आप जानते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने हमारे मक्की म-दनी आक़ा, दो आ़लम के दाता** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **को आप** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **के वालिदैने करीमैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا **के इन्तिक़ाल के बा'द दोबारा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा कर मुकर्रम फ़रमाया ताकि वोह आप** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **पर ईमान ले आएं,** जैसा कि एक ह़दीसे पाक में आया है जिसे इमाम क़ुरतुबी और इब्ने नासिरुद्दीन ह़ाफ़िज़ुश्शाम वग़ैरा ने सह़ीह़ क़रार दिया है, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इक्राम की ख़ात़िर मौत के बा'द ख़िलाफ़े क़ाइदा वालिदैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ईमान की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया, और येह एक मुसल्लमा उसूल है कि ख़ुसूसियात पर क़ियास नहीं किया जा सकता। बा'ज़ मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने वालिदैने मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم وَعَلَیْہِمَا مَعَہٗ के ज़िन्दा किये जाने वाली ह़दीस में इख़्तिलाफ़ किया और इस पर त़वील बह़स की है, मैं ने इस का रद अपने फ़तावा में कर दिया है।

सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी और इब्ने दह़िय्यह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا वग़ैरा फ़रमाते हैं **:** "अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल और ख़ुसूसियात में आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल तक मुसल्सल इज़ाफ़ा होता रहा, येह मुआ़-मला (या'नी वालिदैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا का ज़िन्दा हो जाना) भी इन्हीं फ़ज़ाइल व ए'ज़ाज़ात में से एक है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाए और उन का ज़िन्दा हो जाना और ईमान ले आना अ़क़्ली व नक़्ली त़ौर पर मुम्किन है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इस्राईल के मक़्तूल को क़ातिल की निशान देही के लिये ज़िन्दा फ़रमा दिया था और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर मुर्दों की एक जमाअ़त को ज़िन्दा फ़रमाया, ऐसी सूरत में वालिदैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के इन्तिक़ाल के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत और ए'ज़ाज़ में इज़ाफ़े के लिये उन्हें दोबारा ज़िन्दा करने में कौन सी चीज़ रुकावट है? बेशक येह बात भी द-र-जए सिह़्ह़त को पहुंच चुकी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूरज को ग़ुरूब हो जाने के बा'द आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये लौटा दिया था ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم नमाज़े अ़स्र अदा कर सकें, तो जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सूरज को लौटा देने और गए वक़्त के लौट आने से रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई

www.dawateislami.net

फ़रमाई इसी त़रह़ ज़िन्दगी लौटा कर और ईमान लाने का वक़्त गुज़र जाने के बा'द उस वक़्त को लौटा कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाई।"

येह बात बा'ज़ दूसरे मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के इस क़ौल के मुनाफ़ी भी नहीं कि "येह आयते मुबा-रका :

وَلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ (پ۱، البقرۃ:۱۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से दोज़ख़ वालों का सुवाल न होगा।

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैने करीमैन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के बारे में नाज़िल हुई।" क्यूं कि इस आयते मुबा-रका के सबबे नुज़ूल के बारे में कोई रिवायत भी सह़ीह़ नहीं है और अगर हम बिलफ़र्ज़ इसे सह़ीह़ मान भी लें तो इस से मुराद येह है कि "ऐ मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वजाहत न होती तो येह जहन्नमी थे।"

﴾44﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरा और तेरा बाप जहन्नम में है।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ان من مات علی الکفر......الخ، الحدیث:۵۰۰، ص۷۱۶)

इस से मुराद या तो येह है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस मुआ़-मले का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाने से पहले बयान फ़रमाई या फिर उस आ'राबी के इत़्मीनाने क़ल्ब और हिदायत के लिये इर्शाद फ़रमाई थी, लिहाज़ा जब आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : "तेरा बाप जहन्नम में है।" तो उस का रंग बदल गया था। क़ाबिले ए'तिमाद उ़-लमा व मुज्तहिदीने उम्मत رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने पहली आयते मुबा-रका या'नी :

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَاط (پ۲۴، المؤمن:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया।

से फ़िरऔ़न के कुफ़्र पर इज्माअ़ का इस्तिद्लाल किया है।

﴾45﴿...... सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इसे (या'नी फ़िरऔ़न के काफ़िर होने की रिवायत) सूरए यूनुस की तफ़्सीर में दो सनदों से रिवायत कर के फ़रमाया : "इन में से एक सनद ह़सन और दूसरी ह़सन ग़रीब सह़ीह़ है।"

﴾46﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ज़-करिय्या عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन की मां के पेट में मोमिन पैदा फ़रमाया और फ़िरऔ़न को उस की मां के पेट में काफ़िर पैदा फ़रमाया।"

(المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۵۴۳، ج۱۰، ص۲۲۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरऔ़न के बारे में सूरए यूनुस में जो ह़िकायत बयान फ़रमाई है :

www.dawateislami.net

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝ (پ۱۱، یونس:۹۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं मुसल्मान हूं।

उस का उस वक़्त ईमान लाना उसे नफ़्अ़ न देगा क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान के फ़ौरन बा'द इर्शाद फ़रमाया :

آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ۝ (پ۱۱، یونس:۹۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या अब और पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था।

ऐसे वक़्त ईमान के मुफ़ीद न होने की वजह येह है कि वोह अपने और अपनी क़ौम पर आने वाले अ़ज़ाब को देख कर ईमान लाया था और जैसा कि बयान हुवा कि उस वक़्त ईमान लाना नफ़्अ़ बख़्श नहीं होता। दूसरी बात येह कि उस का ईमान लाना मह्ज़ तक़्लीद के त़ौर पर था जैसा कि उस के क़ौल اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ से ज़ाहिर है गोया कि उस ने इस बात का ए'तिराफ़ किया : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तो नहीं जानता लेकिन मैं ने बनी इस्राईल से सुना है कि काएनात का एक ख़ुदा है, लिहाज़ा मैं उस ख़ुदा पर ईमान लाया जिस के बारे में, मैं ने बनी इस्राईल से सुना है और वोह क़ौम उस के वुजूद का इक़्रार करती है।"

येही तो तक़्लीदे मह्ज़ है क्यूं कि फ़िरऔन तो दहरिया और सानेअ़ के वुजूद का मुन्किर था और ऐसा गन्दा और बुराई की इन्तिहा को पहुंचा हुवा ए'तिक़ाद, तक़्लीदे मह्ज़ से ज़ाइल नहीं होता, बल्कि इसे ज़ाइल करने के लिये दलीले क़त़्ई के बिग़ैर चारा नहीं और अगर बिलफ़र्ज़ दलीले क़त़्ई के बिग़ैर भी इसे दुरुस्त मान लिया जाए तो फिर भी दहरिये और इस जैसे सूझ बूझ रखने वाले लोगों के मुसल्मान होने के लिये अपने कुफ़्रिय्या अ़क़ाइद के बात़िल होने का इक़्रार करना भी ज़रूरी है। फिर अगर फ़िरऔन येह कहता : "اٰمَنْتُ بِالَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ غَیْرُهٗ" या'नी मैं उस ज़ात पर ईमान लाया जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।" तब भी वोह मुसल्मान न होता क्यूं कि हम बयान कर चुके हैं (कि नज़्अ़ के आ़लम में जब रूह़ नरख़रे तक पहुंच जाए या अ़ज़ाब नज़र आने लगे, ऐसे वक़्त में ईमान लाना मुफ़ीद नहीं होता) और फ़िरऔन ने तो ख़ालिक़ की नफ़ी और अपनी ख़ुदाई जैसे कुफ़्रिय्या अ़क़ाइद के बुत़्लान का ए'तिराफ़ न किया और वोह येह भी न जानता था कि उस के अपने इस क़ौल اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ से उस ने क्या इरादा किया है ?

जब अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस बात की तस्रीह़ कर दी है कि اٰمَنْتُ بِالَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ غَیْرُهٗ से ईमान साबित नहीं होता, क्यूं कि इस में दूसरे मा'ना का एह़तिमाल भी मौजूद है, लिहाज़ा फ़िरऔन के इस क़ौल से भी ईमान साबित न होगा। और अगर बिलफ़र्ज़ येह मान भी लें कि इस क़ौल से ईमान साबित हो जाता है, तब भी इस क़ौल से फ़िरऔन का मोमिन होना साबित नहीं होता क्यूं कि इस बात पर इज्माअ़ हो चुका है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल पर ईमान न होने की सूरत में **अल्लाह** पर

www.dawateislami.net

ईमान लाना दुरुस्त नहीं, लिहाज़ा अगर तस्लीम कर भी लिया जाए कि फ़िरऔन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर सहीह ईमान ले आया था तब भी हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान न लाने की वजह से उस का ईमान दुरुस्त न होगा और न ही उस वक़्त उसे हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने का ख़याल आया था लिहाज़ा उस का ईमान मुफ़ीद नहीं, क्या आप नहीं जानते कि अगर कोई काफ़िर हज़ारों मरतबा اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ या اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْ اٰمَنَ بِهٖ الْمُسْلِمُوْنَ कहे तब भी उस वक़्त तक मोमिन न होगा जब तक وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ न कह ले।

वस्वसा : जादूगरों ने तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाते वक़्त हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने का ज़िक्र नहीं किया मगर इस के बा वुजूद उन का ईमान क़बूल कर लिया गया ?

जवाब : आप की बात दुरुस्त नहीं क्यूं कि उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने का तज़्किरा अपने इस क़ौल :

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰی وَهٰرُوْنَ ۝ (پ۹، الاعراف:۱۲۱،۱۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हम ईमान लाए जहान के रब पर जो रब है मूसा और हारून का।

में कर दिया था क्यूं कि उन का येह ईमान लाना हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े की बिना पर हुवा था और मो'जिज़ा येह था कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अ़सा मुबारक उन की ईजाद कर्दा बलाओं को खा गया था और रसूल के मो'जिज़े पर ईमान लाने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना दर अस्ल रसूल पर ईमान लाना ही है। लिहाज़ा वोह लोग हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर सरा-हतन ईमान ले आए थे जब कि फ़िरऔन न तो सरा-हतन ईमाना लाया था और न ही इशारतन बल्कि उस ने तो बनी इस्राईल को याद किया था हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नहीं हालां कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात के आ़रिफ़ और राहे नजात के राहनुमा थे लिहाज़ा फ़िरऔन के इस क़ौल में अपने कुफ़्र पर क़ाइम रहने की त़रफ़ इशारा है।

सुवाल : इमाम क़ाज़ी अ़ब्दुस्समद ह़-नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी तफ़्सीर में इस बात की तस्रीह़ की है : "सूफ़ियाए किराम का मज़्हब येह है कि ईमान लाना हर सूरत में नफ़्अ़ बख़्श है, अगर्चे अ़ज़ाब देखते वक़्त ही क्यूं न हो और येह इस बात पर दलील है कि येह मज़्हबे क़दीम है क्यूं कि क़ाज़ी साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मु-तक़द्दिमीन में से हैं और पांचवीं सदी के अवाइल या'नी 430 सि. हिजरी में ब क़ैदे ह़यात थे। और अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "उ़-लमाए मु-तक़द्दिमीन व मु-तअख़्ख़िरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में तीसरी सदी हिजरी ह़द्दे फ़ासिल है।" जब सूफ़ियाए किराम का येह मज़्हब है तो इस के बर अ़क्स फ़िरऔन के कुफ़्र पर इज्माअ़ कैसे हो गया ?

www.dawateislami.net

जवाब : अगर हम मुज्तहिदीन और क़ाबिले ए'तिमाद सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की त़रफ़ मन्सूब इस क़ौल को सह़ीह़ तस्लीम कर लें ताकि उन की मुख़ा-लफ़त की सूरत में इज्माअ़ मुन्अ़क़िद न हो सके, तब भी येह ए'तिराज़ हम पर वारिद नहीं होता और न ही हमारे बयान कर्दा फ़िरऔन के कुफ़्र पर मुन्अ़क़िद इज्माअ़ में ख़लल डालता है, क्यूं कि हम उस के ना उम्मीदी के आ़लम में ईमान लाने की वजह से उस पर कुफ़्र का हुक्म नहीं लगाते, बल्कि हम तो येह कहते हैं कि वोह जिस अन्दाज़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया था वोह दुरुस्त न था और अगर बर सबीले तनज़्ज़ुल (या'नी उस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना दुरुस्त मान भी लिया जाए फिर भी) वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर अस्लन ईमान ही न लाया था, लिहाज़ा सूफ़ियाए किराम की त़रफ़ मन्सूब येह मज़्हब हमारे मौक़िफ़ पर कोई ए'तिराज़ वारिद नहीं करता।

इमाम, आ़रिफ़, मुह़क़्क़िक़ मह़्यु द्दीन इब्ने अ़-रबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने "अल फ़ुतूह़ातुल मक्किय्या" में इज़्तिरार के वक़्त ईमान लाने को सह़ीह़ फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "फ़िरऔन मोमिन था।" (आयन्दा आने वाले सफ़ह़ात में मुसन्निफ़ عَلَیْهِ رَحْمَةٌ इस का रद करेंगे और इन्ही के ह़वाले से येह साबित करेंगे कि फ़िरऔन पक्का काफ़िर था) मज़ीद फ़रमाया जिस का ख़ुलासा येह है कि "जब फ़िरऔन और उस के लश्कर के दरमियान ग़र्क़ की मुसीबत ह़ाइल हुई तो उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा की और अपने बात़िन की ज़िल्लतो रुस्वाई को देख कर मुश्किल दूर करने के लिये अ़र्ज़ किया :

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ (پ١١، یونس:٩٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए।

जैसा कि जादूगरों ने ईमान लाते वक़्त येह बात :

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰی وَهٰرُوْنَ ۝ (پ٩، الاعراف:١٢١،١٢٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हम ईमान लाए जहान के रब पर जो रब है मूसा और हारून का।

शक व शुबा और इश्काल दूर करने के लिये कही थी, फिर फ़िरऔन ने

وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝ (پ١١، یونس:٩٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं मुसल्मान हूं।

कहा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इ़ताब करते हुए उस से इर्शाद फ़रमाया :

وَقَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ۝ (پ١١، یونس:٩١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था।

या'नी येह बात अब तुझ पर ज़ाहिर हुई तूने पहले इसे क्यूं न जान लिया ?

फिर उस की रूह़ क़ब्ज़ करने से पहले उस से इर्शाद फ़रमाया :

فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰیَةً ؕ (پ١١، یونس:٩٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : आज हम तेरी लाश को उतरा दें (या'नी बाक़ी रखें) गे कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो।

www.dawateislami.net

या'नी ताकि नजात इस की अ़लामत हो जाए क्यूं कि जब उस ने वोही कहा जो मैं ने उसे कहा था तो उस की नजात भी मेरी त़रफ़ से ऐसी ही होगी जैसी तुम्हारी होगी, क्यूं कि अ़ज़ाब का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ ज़ाहिर से होता है और यक़ीनन मैं ने मख़्लूक़ को उस का अ़ज़ाब से नजात पाना दिखा दिया, लिहाज़ा ग़र्क़ होना इब्तिदाई वक़्त में अ़ज़ाब था और इस में मरना ख़ालिस शहादत थी ताकि कोई भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न हो क्यूं कि,

اِنَّهٗ لَا یَایْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ0 (پ۱۳، یوسف:۸۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग।

और आ'माल का दारो मदार तो ख़ातिमे पर ही है। और अल्लाह तआ़ला का येह फ़रमाने आ़लीशान :

فَلَمْ یَكُ یَنْفَعُهُمْ اِیْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ (پ۲۴، المؤمن:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया।

निहायत वाज़ेह़ है कि ह़क़ीक़ी नफ़्अ़ देने वाला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है लिहाज़ा उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही ने नफ़्अ़ पहुंचाया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान :

سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ فِیْ عِبَادِهٖ ۚ (پ۲۴، المؤمن:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह का दस्तूर जो उस के बन्दों में गुज़र चुका

से मुराद मायूसी के वक़्त ईमान लाना ही है, नीज़ फ़िरऔ़न की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई और ह़ालते ईमान में उस की मौत में ताख़ीर इस वजह से नहीं की गई कि कहीं वोह अपने साबिक़ा दा'वे पर न लौट आए। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ (پ۱۲، هود:۹۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा।

में इस बात की दलील कहां है कि फ़िरऔ़न भी उन लोगों के साथ जहन्नम में दाख़िल होगा ? बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तो इर्शाद फ़रमाया :

اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ (پ۲۴، المؤمن:۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हुक्म होगा फ़िरऔ़न वालों को दाख़िल करो।

येह नहीं फ़रमाया : "ऐ फ़िरऔ़न ! जहन्नम में दाख़िल हो जा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत इस बात से बहुत वसीअ़ है कि वोह मुज़्त़र का ईमान क़बूल न फ़रमाए और फ़िरऔ़न के ग़र्क़ होते वक़्त के इज़्तिरार से बड़ा इज़्तिरार कौन सा हो सकता है ? चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَیَكْشِفُ السُّوْٓءَ (پ۲۰، النمل:۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई।

इस आयते करीमा में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुज़्त़र की पुकार के साथ मक़्बूलिय्यत और बुराई हटा देने को मिला दिया, लिहाज़ा फ़िरऔ़न का अ़ज़ाब सिर्फ़ ग़र्क़ होना ही था।"

www.dawateislami.net

सुवाल : येह है कि अ़ल्लामा इब्ने अ़-रबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह कलाम सह़ीह़ है या ग़लत़ ? अगर सह़ीह़ नहीं है तो इस के रद की वजह बयान फ़रमाइये ?

जवाब : येह कलाम सह़ीह़ नहीं, अगर्चे हम इस के क़ाइल की जलालत को तस्लीम करते हैं, मगर मा'सूम तो सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام (और मलाएका) ही हैं, सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वग़ैरा ने मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की त़रफ़ इशारा कर के इर्शाद फ़रमाया : "इन साह़िबे मज़ार (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के इ़लावा हर एक से उस के क़ौल के बारे में मुआ-ख़ज़ा होगा और उस का क़ौल उस पर लौटा दिया जाएगा।"

नीज़ बा'ज़ कुतुब में इमाम इब्ने अ़-रबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ुद येह बात नक़्ल फ़रमाई है : "हामान व क़ारून के साथ फ़िरऔ़न भी जहन्नम में है।" लिहाज़ा जब इमाम के कलाम ही में इख़्तिलाफ़ हो गया तो अब उसी कलाम को लिया जाएगा जो ज़ाहिरी दलाइल के मुत़ाबिक़ होगा और जो इस के ख़िलाफ़ होगा उसे छोड़ दिया जाएगा, बल्कि हम पीछे बयान कर चुके हैं कि आयते मुबा-रका और तिरमिज़ी शरीफ़ की सह़ीह़ ह़दीस, मायूसी के वक़्त ईमान के बात़िल होने पर सरा-ह़तन दलालत करती हैं। लिहाज़ा इस आयते मुबा-रका :

فَلَمْ یَکُ یَنْفَعُهُمْ اِیْمَانُهُمْ (پ۲۴، المؤمن:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के ईमान ने उन्हें काम न दिया।

में इस तावील : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही नफ़्अ़ देने वाला है।" की त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं की जाएगी। इस तावील के बुत़्लान की एक दलील येह भी है कि क़ुरआनो सुन्नत की इस्तिलाह़ में अश्या की इज़ाफ़त उन के अस्बाब की त़रफ़ की जाती है, लिहाज़ा जब येह कह दिया गया कि ईमान नफ़्अ़ न देगा, तो इस का शर-ई़ मा'ना येही है कि उस शख़्स पर येह हुक्म लगा दिया गया कि उस का ईमान बात़िल और ना क़ाबिले ए'तिना है। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही हर वक़्त ह़क़ीक़ी नाफ़ेअ़ है, तो वुक़ूए अ़ज़ाब की इस ह़ालत में जब कि अ़ज़ाब का वाक़ेअ़ होना लाज़िम हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَل के नाफ़ेअ़ होने की तख़्सीस करने पर इस क़ाइल के पास क्या दलील है ? और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَل उसे नफ़्अ़ देना चाहता तो अ़ज़ाब के ज़रीए उन की बेख़ कनी क्यूं करता ?

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान :

وَخَسِرَ هُنَالِکَ الْکٰفِرُوْنَ 0 (پ۲۴، المؤمن:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वहां काफ़िर घाटे में रहे।

इस बात पर वाज़ेह़ दलील है कि :

فَلَمْ یَکُ یَنْفَعُهُمْ اِیْمَانُهُمْ (پ۲۴، المؤمن:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के ईमान ने उन्हें काम न दिया।

से मुराद येह है कि वोह लोग ईमान लाने के बा वुजूद कुफ़्र पर क़ाइम हैं, इस आयते करीमा के बारे में अइम्मा सह़ाबा व ताबिई़ने इ़ज़ाम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की तफ़्सीर और इन के बा'द वालों की सह़ीह़ और

www.dawateislami.net

इज्माअ़ के मुताबिक़ (इस आयत की) तफ़्सीर का हमारे मौक़िफ़ के मुवाफ़िक़ होना ही काफ़ी व वाफ़ी है। और जब येह बात साबित और वाज़ेह़ हो गई कि ''मायूसी के वक़्त का ईमान दुरुस्त नहीं।'' तो येह भी साबित हो गया कि ''फ़िरऔन का ईमान दुरुस्त नहीं।'' क्यूं कि हम पहले ही बयान कर चुके हैं कि ''अगर हम मायूस के ईमान को दुरुस्त मान भी लें तब भी मज़्कूरा आयत इस बात पर दलालत करती है कि फ़िरऔन का ईमान, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा व हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمَاالصَّلٰوۃُوَالسَّلَام पर ईमान न होने की वजह से दुरुस्त न था, जब कि जादूगरों का ईमान इस लिये दुरुस्त था कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा व हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمَاالصَّلٰوۃُوَالسَّلَام पर ईमान ले आए थे।'' जो शख़्स क़ुरआने पाक में इन के ह़िकायत कर्दा अल्फ़ाज़ में ग़ौरो फ़िक्र करे तो वोह इन दोनों के ईमान के फ़र्क़ को वाज़ेह़ त़ौर पर जान लेगा, लिहाज़ा इन में से एक को दूसरे पर क़ियास नहीं किया जा सकता।

इमाम इब्ने अ़-रबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह क़ौल तो बड़ा ही अ़जीब है : ''फ़िरऔन ने अपने बात़िन की ज़िल्लतो रुस्वाई देखी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा की।'' ह़ालां कि जब वोह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रबूबिय्यत ही का मुन्किर था तो ज़िल्लत व फ़क़्र में से उस के बात़िन में कौन सी चीज़ थी? और वोह तो अ़क़ीदा ही येह रखता था : ''वोही मा'बूदे मुत़्लक़ और रब्बे अक्बर है।'' इसी वजह से वोह मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ईज़ा देता और उन की तक्ज़ीब के साथ साथ उन से दुश्मनी भी रखता था, वोह तो रसूल की दुश्मनी में अबू जहल की त़रह़ था, इसी लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू जहल को इस उम्मत का फ़िरऔन क़रार दिया, अगर येह तस्लीम कर भी लिया जाए कि उस का बात़िन इन दोनों (या'नी ज़िल्लत व फ़क़्र) पर था तो ईमान दुरुस्त न होने की वजह से इस आयते करीमा :

آٰلْئٰنَ وَقَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ0 (پ۱۱، یونس:۹۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या अब और पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था।

को इ़ताब पर मह़्मूल कर लेने से उसे इन दोनों के मुक़ाबले में क्या फ़ाएदा हो सकता है? क्यूं कि अगर उस का इस्लाम और ईमान दुरुस्त होता तो उस की फ़ज़ीलत के लिये शैख़ इब्ने अ़-रबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राय के मुत़ाबिक़ मुनासिब येही था कि कहा जाता : ''اَلْاٰنَ نَقْبَلُکَ وَنُکْرِمُکَ'' या'नी अब हम तुझे क़बूल करेंगे और इ़ज़्ज़त से नवाज़ेंगे।'' क्यूं कि उस के ईमान की दुरुस्तगी के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस पर रिज़ा लाज़िम थी और जिसे इतनी बड़ी रिज़ा ह़ासिल हो जाए तो मक़ामे फ़ज़्ल की रिआ़यत करते हुए उस के सह़ीह़ ईमान के जवाब में येह अल्फ़ाज़ नहीं कहे जाते कि :

آٰلْئٰنَ وَقَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ 0 (پ۱۱، یونس:۹۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या अब और पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था।

क्यूं कि थोड़ी बहुत सूझ बूझ रखने वाला हर बा सलीक़ा शख़्स जानता है कि इन अल्फ़ाज़ के ज़रीए उसी को मुख़ात़ब किया जाता है जिस पर ग़ज़ब होता है न कि उन लोगों को जिन पर रिज़ा होती है।

www.dawateislami.net

"وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ" की तख़्सीस से भी शैख़ इब्ने अ-रबी के क़ौल का इन्कार साबित हो रहा है क्यूं कि अगर फ़िरऔन का ईमान दुरुस्त होता तो उस के पिछले गुनाह और उस के पैरौकारों में डाले गए फ़साद को मिटा दिया जाता और इस अ़ज़ीम मुआफ़ी के बा'द उसे अ़क़ाब, मलामत और ज़ज्रो तौबीख़ के साथ कैसे मुख़ातब किया जाता ? ऐसा सिर्फ़ उस पर अ़ज़ाब की अ़ज़ीम मैख़ें गाड़ने, उस की पिछली बुराइयां याद दिलाने और येह बताने के लिये किया गया था कि उस की अपनी आ़दतों ने उसे आख़िरी वक़्त तक ईमान लाने से रोके रखा था, लिहाज़ा अब उस का ईमान लाना उसे नफ़्अ़ न देगा । ख़ुसूसन जब कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आयतों से इनाद रखता और उस की बारगाह से ए'राज़ करता था ।

नीज़ "बदन" की नजात की तख़्सीस इस बात पर शाहिद व आ़दिल है कि इस पर वोही ए'तिराज़ होता है जो कुछ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने बयान किया है कि इस से मक़्सूद येह था कि लोग फ़िरऔन के ख़ुदाई दा'वा की वजह से उस के ग़र्क़ होने की तस्दीक़ न करते क्यूं कि (आ़म तअस्सुर येही है कि) इस जैसे लोग (या'नी ख़ुदाई दा'वेदार) नहीं मरते, लिहाज़ा उसे एक बुलन्द टीले पर उछाल दिया गया और उस के जिस्म पर उस की ज़िरह भी मौजूद रही ताकि उसे पहचाना जा सके ।

अ़रब लोग ज़िरह पर भी "बदन" का इत़्लाक़ करते हैं, फ़िरऔन की एक ज़िरह थी जिस के ज़रीए उसे पहचाना जाता था और एक शाज़ क़िराअत भी इस बात की ताईद करती है कि लफ़्ज़े बदन कह कर ज़िरह मुराद ली जाती है जैसा कि بِاَبْدَانِكَ भी मरवी है जिस का मा'ना है دُرُوْعِكَ, क्यूं कि फ़िरऔन अक्सर अपनी जान के ख़ौफ़ से ज़िरह पहने रहता था, या इस से मुराद येह भी हो सकता है कि वोह बिल्कुल बरह्ना था और उस पर सित्र पोशी के लिये कोई चीज़ न थी, या फिर वोह रूह़ से ख़ाली जिस्म था । मज़्कूरा क़िराअत भी इन तमाम मआ़नी के मुनाफ़ी नहीं क्यूं कि उस के बदन के हर उ़ज़्व को एक अ़लाहिदा बदन बना दिया गया और एक शाज़ क़िराअत में इसे حاء के साथ نُنَحِّيْكَ भी पढ़ा गया है जिस का मत़्लब है कि हम तुझे समुन्दर के कनारे पर फेंक देंगे ।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरऔन को मरे हुए बैल की त़रह़ समुन्दर के कनारे पर फेंक दिया ताकि वोह बाक़ी मांदा बनी इस्राईल और दीगर लोगों के लिये इ़ब्रत का निशान बन जाए और उन पर येह बात वाज़ेह़ हो जाए कि जो शख़्स ज़ालिम हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जनाब में तकब्बुर करता हो उस की पकड़ इस त़रह़ होती है कि उसे ज़िल्लत व इहानत की पस्ती में फेंक दिया जाता है ताकि लोगों को इस के त़रीक़े से डराया जाए और तमाम क़ौमों की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ाहिरो बाहिर क़ुदरत की त़रफ़ राहनुमाई की जाए, नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लाए हुए दीन के मुआ़-मले में उन की तस्दीक़ की जा सके । फिर

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَل ने उम्मते मुहम्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दलाइल से ए'राज़ करने पर झिड़कते हुए और उन में ग़ौरो फ़िक्र करने की तरग़ीब दिलाते हुए इस आयते मुबा-रका का इख़्तिताम इस त़रह़ फ़रमाया :

وَاِنَّ كَثِيۡرًا مِّنَ النَّاسِ عَنۡ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوۡنَ۝ (پ۱۱، یونس:۹۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं।

जैसा कि एक दूसरी जगह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

لَقَدۡ كَانَ فِیۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ ؕ (پ۱۳، یوسف:۱۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक उन की ख़बरों से अ़क़्ल मन्दों की आंखें खुलती हैं।

तम्बीह 6 : मज़्कूरा बाला आयात व अह़ादीस इस बात पर दलालत करती हैं : "काफ़िरों को जहन्नम में मिलने वाला अ़ज़ाब दाइमी और अ-बदी होगा और इस मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ जो रिवायात आई हैं उन में तावील करना वाजिब है।" इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَاشَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيۡدُ۝ (پ۱۲، ھود:۱۰۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह उस में रहेंगे जब तक आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा बेशक तुम्हारा रब जब जो चाहे करे।

का ज़ाहिरी मा'ना तो येह है कि काफ़िरों के अ़ज़ाब की मुद्दत ज़मीन व आस्मान की मुद्दते बक़ा के मसावी है, मगर जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहेगा वोह इस मुद्दत तक भी जहन्नम में न रहेंगे। मगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने बीस (20) वुजूहात से इस में तावील की है, इन में से बा'ज़ का तअ़ल्लुक़ ज़मीन व आस्मान की मुद्दत से मुक़य्यद करने की ह़िक्मत से है और बा'ज़ का तअ़ल्लुक़ इस्तिस्ना की ह़िक्मत से है।

पहली सूरत के ए'तिबार से इस का मा'ना येह है : "इस से मुराद जन्नत के ज़मीन व आस्मान हैं।" क्यूं कि हर वोह चीज़ जो तुम से बुलन्द है वोह आस्मान है और हर वोह चीज़ जिस पर तुम क़रार पकड़ते हो वोह ज़मीन है और इस ए'तिबार से जन्नत के ज़मीन व आस्मान का वुजूद एक क़त़ई अम्र है जो कि किसी पर मख़्फ़ी नहीं, लिहाज़ा इस बात की येह नज़ीर पेश करने की ज़रूरत ही नहीं रही इस त़रह़ कि इस आयत को इस तावील पर मह़मूल करना ही जाइज़ नहीं क्यूं कि येह मुख़ात़ब लोगों के नज़्दीक मा'रूफ़ नहीं है।

☆...... या "इस से दुन्या के ज़मीन व आस्मान मुराद हैं।" और इसे अ़रब की किसी चीज़ के दवाम और हमेशगी के बारे में ख़बर देने के मुत़ाबिक़ बयान किया गया है जैसा कि अ़रब कहते हैं : "لَا اٰتِيۡكَ مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡض" या'नी मैं तुम्हारे पास नहीं आऊंगा जब तक ज़मीन व आस्मान क़ाइम हैं,"

www.dawateislami.net

☆...... या जब तक रात दिन में इख़्तिलाफ़ रहेगा,
☆...... या जब तक समुन्दर मौजें मारता रहेगा,
☆...... या जब तक पहाड़ क़ाइम रहेगा वग़ैरा वग़ैरा। क्यूं कि इन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़िताब अ-रबी ज़बान के उ़र्फ़ के मुताबिक़ होता है और इन के उ़र्फ़ में येह अल्फ़ाज़ हमेशगी और दवाम के मा'नों में इस्ति'माल होते हैं।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से ज़मीन व आस्मान के दवाम के बारे में मरवी है : "तमाम मख़्लूक़ की अस्ल अ़र्श का नूर है और आख़िरत में ज़मीन व आस्मान इसी नूर की त़रफ़ लौट जाएंगे जिस से इन्हें पैदा किया गया और फिर हमेशा अ़र्श के नूर में रहेंगे।"

इस जवाब को इस मा'ना की ज़रूरत है कि ज़मीन व आस्मान के दवाम की क़ैद को इस त़रह़ समझा जाए कि काफ़िर जहन्नम में उस वक़्त तक रहेंगे जब तक कि ज़मीन व आस्मान क़ाइम रहेंगे।
☆...... बा'ज़ ह़ज़रात ने येह मा'ना मुराद लेने से मन्अ़ किया है कि आयत का मफ़्हूम येह है कि दोनों चीज़ें जब तक क़ाइम रहेंगी इन का जहन्नम में रहना भी बाक़ी रहेगा। और एक क़ाइदा बयान किया है : "जब शर्त़ पाई जाए तो मशरूत़ का पाया जाना भी ज़रूरी होता है लेकिन बा'ज़ अवक़ात जब शर्त़ न पाई जाए तो येह भी ज़रूरी नहीं कि मशरूत़ भी न पाया जाए। इस की मिसाल येह दी जा सकती है कि जैसे आप कहें : "अगर येह इन्सान है तो ह़ैवान भी है।" फिर कहें : "मगर येह तो इन्सान ही है।" लिहाज़ा नतीजा निकला कि येह ह़ैवान भी है, या कहें : "मगर येह इन्सान नहीं।" तो अब नतीजा येह नहीं निकलेगा कि येह ह़ैवान भी नहीं क्यूं कि मुक़द्दम की नक़ीज़ का इस्तिस्ना दुरुस्त नहीं।

लिहाज़ा अब अगर इस मिसाल और क़ाइदे के मुताबिक़ आयते मज़्कूरा के मफ़्हूम को समझा जाए तो वोह कुछ इस त़रह़ होगा कि उस में ज़मीन व आस्मान का दवाम शर्त़ और दाइमी अ़ज़ाब मशरूत़ है, लिहाज़ा जब हम कहें : "जब तक ज़मीन व आस्मान क़ाइम हैं इन का अ़ज़ाब बाक़ी रहेगा।" फिर कहें : "मगर ज़मीन व आस्मान तो क़ाइम हैं।" तो हमारे इसी क़ौल से इन के अ़ज़ाब का दाइमी होना साबित हो गया, और अगर हम येह कहें : "ज़मीन व आस्मान क़ाइम नहीं।" तो येह ज़रूरी नहीं कि वोह दाइमी अ़ज़ाब में भी न हों, इन के अ़ज़ाब के दाइमी होने के साथ ज़मीन व आस्मान की बक़ा या अ़-दमे बक़ा की बात नहीं की जाएगी। लिहाज़ा इन के दवाम की क़ैद का कोई फ़ाएदा न रहा। क्यूं कि हम येह कहते हैं कि इस में एक बहुत अ़ज़ीम फ़ाएदा पोशीदा है और वोह येह है कि येह तक़्यीद उस अ़ज़ाब के त़वालत और हमेशा क़ाइम रहने पर दलालत करती है जिस की त़वालत और लम्बाई का अ़क़्ल इह़ात़ा नहीं कर सकती।

फिर क्या उस अ़ज़ाब की कोई इन्तिहा भी है या नहीं ? इस का जवाब दीगर दलाइल से

www.dawateislami.net

ह़ासिल होगा जो कि काफ़िरों के जहन्नम में हमेशगी की तस्रीह़ करने वाली आयात हैं जो इस बात पर दलालत करती हैं कि इन के अ़ज़ाब की कोई इन्तिहा नहीं।

दूसरी सूरत के ए'तिबार से इस का मत़्लब येह है कि जहन्नमियों का इस्तिस्ना है क्यूं कि वोह जहन्नम से "**ज़म-हरीर**" और "**ह़मीम**" पीने के लिये निकलेंगे और फिर वापस जहन्नम में लौट जाएंगे। लिहाज़ा वोह इन अवक़ात के इ़लावा हमेशा जहन्नम में रहेंगे, येह अवक़ात भी अगर्चे अ़ज़ाब ही के हैं मगर उस वक़्त वोह ह़क़ीक़तन जहन्नम में नहीं होंगे। या फिर इस आयते मुबा-रका में "**مَا**" ज़विल उ़क़ूल के लिये इस्ति'माल हुवा है जैसा कि इस आयते मुबा-रका :

فَانْكِحُوْا مَاطَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ (پ٤،النسآء:٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो निकाह़ में लाओ जो औ़रतें तुम्हें खुश आएं।

में है, इस सूरत में गुनहगार मुअमिनीन का "خٰلِدِيْن" की ज़मीर से मुस्तस्ना मुत्तसिल होगा क्यूं कि इन में शक़ी लोग भी शामिल हैं या फिर येह उन के शामिल न होने की वजह से मुस्तस्ना मुन्क़तेअ़ है और येह बात ज़ियादा वाज़ेह़ है, या फिर येह मुस्तस्ना मुन्क़तेअ़ तो है मगर इस में **لا**, सिवा के मा'ना में है, मुराद येह है : "जब तक ज़मीन व आस्मान क़ाइम रहेंगे मगर जिसे तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ चाहेगा उस के अ़ज़ाब में इज़ाफ़ा फ़रमा देगा।" इस के और भी बहुत से जवाबात हैं जिन के बई़द होने की वजह से मैं ने उन से ए'राज़ किया है।

《47》...... इमाम अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत कर्दा ह़दीस इस के मुनाफ़ी नहीं : "जहन्नम पर एक ऐसा दिन ज़रूर आएगा जिस में उस के दरवाज़े खुल जाएंगे तो उस में कोई भी न होगा और येह दिन एक ज़माने तक जहन्नमियों के जहन्नम में रहने के बा'द होगा।"

क्यूं कि इस की सनद में ऐसे रावी भी हैं जिन के बारे में मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने "**ग़ैर सिक़ह और कसीर झूटी रिवायत बयान करने वाला**" के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये हैं और येह बात जम्हूर मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से भी रिवायत की है। इब्ने तीमिया ने कहा : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم का क़ौल है, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन स-लमह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की भी येही राय है नीज़ ह़ज़रते अ़ली बिन त़ल्ह़ा अल वालिबी और मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की एक जमाअ़त भी इसी की क़ाइल है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी क़ौल दीगर अक़्वाल का रद करता है जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कहना है : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इस के बारे में पूछा तो उन्हों ने इस का इन्कार कर दिया।" और ज़ाहिर भी येही है कि मज़्कूरा शख़्सिय्यात से इस बारे में कोई सह़ीह़ रिवायत मरवी नहीं। और

www.dawateislami.net

अगर बिलफ़र्ज़ इसे सहीह़ तस्लीम कर भी लें तब भी उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के बयान के मुत़ाबिक़ इस का मत़्लब येह होगा : "उस में कोई गुनहगार मोमिन न होगा जब कि काफ़िरों के ठिकाने तो जहन्नम में ही होंगे, वोह उन से भरा रहेगा और कुफ़्फ़ार उस से कभी न निकलेंगे। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बहुत सी आयात में इस बात को ज़िक्र किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तफ़्सीरे कबीर में है : "एक क़ौम का कहना है कि काफ़िरों का अ़ज़ाब ख़त्म हो जाएगा और उन के अ़ज़ाब की भी एक इन्तिहा है।" और वोह इस आयते मुबा-रका से इस्तिद्लाल करते हैं :

لٰبِثِيْنَ فِيْهَاۤ اَحْقَابًا ۝ (پ۳۰، النبأ:۲۳) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस में क़र्नों (मुद्दतों) रहेंगे।

वोह इस त़रह़ कि ज़ुल्म का गुनाह मु-तनाही है, लिहाज़ा इस पर ला मु-तनाही सज़ा देना ज़ुल्म है। इस आयते मुबा-रका से इस्तिद्लाल का जवाब पीछे गुज़र चुका और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान اَحْقَابًا इस बात का तक़ाज़ा नहीं करता कि इन के अ़ज़ाब की कोई इन्तिहा है, क्यूं कि हम बयान कर चुके हैं कि अ़रब इस से दवाम को ता'बीर करते हैं और येह कोई ज़ुल्म नहीं, क्यूं कि काफ़िर जब तक ज़िन्दा रहा कुफ़्र का अ़ज़्म करता रहा, लिहाज़ा इसे हमेशा के अ़ज़ाब में मुब्तला किया गया या'नी दाइमी जुर्म की वजह से दाइमी अ़ज़ाब का मज़ा चखाया गया, लिहाज़ा इस का अ़ज़ाब उस के जुर्म की पूरी पूरी सज़ा है। याद रखें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝ (پ۱۲، ھود:۱۰۸) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कभी ख़त्म न होगी।

की वजह से अहले जन्नत के मुआ़-मले में **तक़्यीद** और इस्तिस्ना से तमाम उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इत्तिफ़ाक़ के मुत़ाबिक़ ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं कि गुज़श्ता नज़ीर की त़रह़ इस में तावील की जाए। बल्कि इस से अहले आ'राफ़ (या'नी जन्नत और जहन्नम के दरमियान वाले) और गुनहगार मोमिन मुराद लिये जाएंगे जो बा'द में जन्नत में दाख़िल होंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें अहले जन्नत के लिये तो अपने इरादे की ख़बर इस फ़रमाने आ़लीशान :

عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝ (پ۱۲، ھود:۱۰۸) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह बख़्शिश है कभी ख़त्म न होगी।

के ज़रीए दी है, जब कि अहले जहन्नम के बारे में हमें अपने इरादे की ख़बर नहीं दी।"

ईमान की अहम्मिय्यत और मोमिन की फ़ज़ीलत

﴾48﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने का'बे को मुख़ात़ब कर के इर्शाद फ़रमाया : "तू ख़ुद और तेरी फ़ज़ा कितनी अच्छी है, तू कितनी अ़-ज़मत वाला है और तेरी हु़रमत कितनी अ़ज़ीम है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत

www.dawateislami.net

में मुहम्मद صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जान है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मोमिन की जान व माल और उस से अच्छा गुमान रखने की हुरमत तेरी हुरमत से भी ज़ियादा है।''

(سنن ابن ماجه، ابواب الفتن، باب حرمة دم المؤمن وماله، الحديث:٣٩٣٢،ص٢٧١٢)

《49》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो इस तरह आए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता हो, किसी को उस का शरीक न ठहराता हो, नमाज़ क़ाइम करता हो, ज़कात अदा करता हो, र-मज़ान के रोज़े रखता हो और कबीरा गुनाहों से बचता हो, तो उस के लिये जन्नत है।'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''कबीरा गुनाह कौन से हैं ?'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना और मुसल्मान जान को क़त्ल करना।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث ابو ايوب انصارى،الحديث:٢٣٥٦١،ج٩،ص١٣١،"قالو اوما هى الكبائر" بدله "وسالوه ماالكبائر")

《50》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो मुझ पर ईमान लाया और मेरी इताअ़त की और फिर हिजरत की मैं उसे जन्नत के निचले, वस्ती और बुलन्द तरीन हिस्से के एक एक घर की ज़मानत देता हूं तो जो येह काम करे और न तो खै़र का कोई मौक़अ़ हाथ से जाने दे और न ही बुराई से भागने का कोई मौक़अ़ गंवाए तो (येही उस के लिये काफ़ी है,) वोह जहां चाहे जा कर मर जाए।''

(سنن النسائى، كتاب الجهاد،باب مالمن اسلم وهاجر......الخ،الحديث:٣١٣٥،ص٢٢٨٩)

《51》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने इख़्लास के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के وَحْدَهٗ لَاشَرِيْکَ لَهٗ होने का अ़क़ीदा रखते हुए दुन्या छोड़ी, नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की तो वोह इस हाल में मरेगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी होगा।''

(سنن ابن ماجه، كتاب السنة،باب فى الايمان،الحديث: ٧٠،ص٢٤٨١)

《52》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मोमिन को दुन्या में नेकी की तौफ़ीक़ देने और आख़िरत में उस का सवाब देने में ज़ुल्म नहीं करेगा जब कि काफ़िर की नेकियों का बदला उसे दुन्या ही में दे दिया जाता है यहां तक कि जब वोह आख़िरत में आएगा तो उस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जिस की वजह से उसे कोई भलाई दी जाए।''

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر،الحديث:١٢٢٣٩،ج٤،ص٢٤٧)

《53》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अ़मल के बिग़ैर ईमान और ईमान के बिग़ैर कोई अ़मल क़बूल न होगा।''

(مجمع الزوائد، كتاب الايمان، باب لايقبل الايمان بلا عمل ......الخ،الحديث:٩٥،ج١،ص١٨٧)

《54》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''मैं ने ख़्वाब देखा गोया कि जिब्राईल عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मेरे सिरहाने और मीकाईल عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मेरे क़दमों में खड़े हैं, उन में से एक अपने साथी से कहता है : ''इन के लिये कोई मिसाल पेश करो।'' तो वोह अ़र्ज़ करता है : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! तवज्जोह से सुनें

www.dawateislami.net

और ग़ौर फ़रमाएं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की मिसाल (बिला तश्बीह) उस बादशाह की सी है जिस ने एक मह़ल बनाया, फिर उस में एक मकान बना कर एक मुनादी को लोगों को खाने की दा'वत देने के लिये भेजा, तो कुछ लोगों ने उस मुनादी की बात मान ली और कुछ ने न मानी, तो जान लें कि वोह बादशाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, वोह मह़ल इस्लाम है और वोह मकान जन्नत है, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुनादी हैं, जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल की वोह इस्लाम में दाख़िल हुवा और जो इस्लाम में दाख़िल हुवा वोह जन्नत में दाख़िल हुवा और जो जन्नत में दाख़िल हुवा वोही उस के अन्वाओ़ अक़्साम के खाने खाएगा।''

(جامع الترمذی،ابواب الامثال،باب ماجاء مثل الله عزوجل لعباده ، الحديث:٢٨٦٠،ص١٩٣٨)

﴾55﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुवह्ह़िदीन को उन के अ़मल की कमी के मुताबिक़ जहन्नम में अ़ज़ाब देगा और फिर उन के ईमान की वजह से उन्हें हमेशा हमेशा के लिये जन्नत में लौटा देगा।''

(كنزالعمال، كتاب الايمان،قسم الاقوال،الحديث:٢٦٦،ج١،ص٥٠)

﴾56﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मुझे देखा और एक मरतबा मुझ पर ईमान लाया उस के लिये सआ़दत है और जिस ने मुझे नहीं देखा और सात मरतबा मुझ पर ईमान लाया उस के लिये भी सआ़दत है।''

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر،الحديث:١٢٥٧٩،ج٤،ص٣١٠)

जब कि अ़ल्लामा त़यालिसी की एक रिवायत में ''तीन मरतबा'' ईमान लाने का ज़िक्र है।

﴾57﴿...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिसे इस्लाम की हिदायत मिली और ब क़द्रे ज़रूरत रिज़्क़ मिला, फिर उस ने उस पर क़नाअ़त की तो वोह फ़लाह़ पा गया।'' (المعجم الكبير،الحديث:٧٧٨،ج١٨،ص٣٠٦)

﴾58﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम लाना, हिजरत करना और ह़ज करना पिछले गुनाहों को मिटा देता है।'' (صحيح مسلم ، كتاب الايمان،باب كون الاسلام يهدم ماقبله وكذا......الخ،الحديث:٣٢١،ص٦٩٨)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 2 : **शिर्के असग़र (रियाकारी)**

बेशक कुरआनो सुन्नत रियाकारी की हुरमत पर गवाह हैं नीज़ इस की हुरमत पर उम्मत का इज्माअ़ भी हो चुका है।

रियाकारी की मज़म्मत पर आयाते कुरआनिया :

कुरआने पाक में इस की मज़म्मत यूं बयान की गई है :

﴾1﴿

اَلَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝ (پ۳۰،الماعون:٦) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जो दिखावा करते हैं।

﴾2﴿ एक दूसरी जगह है :

وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ط (پ۲۲،فاطر:١٠) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जो बुरे दाउं (फ़रेब) करते हैं उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है।

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इन से मुराद रियाकार हैं।"

﴾3﴿ एक और जगह इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ۝ (پ١٦،الكهف:١١٠) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे

या'नी अपने अ़मल में रियाकारी न करे। इसी लिये येह आयते मुबा-रका उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो अपनी इ़बादत और अ़मल पर अज्र के साथ साथ ता'रीफ़ के भी ख़्वाहां रहते थे।

﴾4﴿ एक और मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ (پ۲۹،الدهر:۹) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते।

रियाकारी की मज़म्मत पर अहादीसे मुबा-रका :

अहादीसे मुबा-रका में रियाकारी का ज़िक्र कुछ इस त़रह़ किया गया है :

﴾1﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे तुम पर सब से ज़ियादा शिर्के अस्ग़र या'नी दिखावे में मुब्तला होने का ख़ौफ़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन कुछ लोगों को उन के आ'माल की जज़ा देते वक़्त इर्शाद फ़रमाएगा कि उन लोगों के पास जाओ जिन के लिये दुन्या में तुम दिखावा करते थे और देखो कि क्या तुम उन के पास कोई जज़ा पाते हो ?" (المسندللامام احمد بن حنبل،حديث محمود بن لبيد،الحديث:٢٣٦٩٢،ج٩،ص١٦٠)

www.dawateislami.net

《2》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा बन्दे वोह गुमनाम और परहेज़ गार सख़ी हैं (या'नी जो अपनी इबादात छुपाने में इन्तिहाई मुबा-लग़ा करते हैं और अपनी इन इबादात को हर क़िस्म की फ़ानी अग़राज़ और गन्दे अख़्लाक़ से बचाते हैं) जो ग़ाइब हों तो उन्हें तलाश न किया जाए और अगर हाज़िर हों तो पहचाने न जाएं वोह हिदायत के इमाम और तारीकियों के चराग़ हैं।"

(المعجم الكبير،الحديث:٥٣،ج٢٠،ص٣٧،بدون "الاسخياء"،"الدجى" بدله" العلم")

《3》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मख़्फ़ी शह्वत और रियाकारी शिर्क है।"

(كنزالعمال،كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،حرف الراء ،باب الرياء،الحديث:٧٤٨٣،ج٣،ص١٩٠)

《4》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करने का ख़ौफ़ है, मैं येह नहीं कहता कि वोह सूरज, चांद या बुतों की पूजा करने लगेंगे बल्कि ग़ैरुल्लाह के लिये आ'माल करेंगे और मख़्फ़ी शह्वत रखेंगे।" (سنن ابن ماجه ، ابواب الزهد، باب الرياء والسمعة ، الحديث:٤٢٠٥،ص٢٧٣٢)

《5》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत का शिर्क च्यूंटी के चिकनी चट्टान पर चलने से भी ज़ियादा मख़्फ़ी होगा।"

(مجمع الزوائد،كتاب الزهد،باب الرياء وخفائه ،الحديث:١٧٦٦٨،ج١٠،ص٣٨٤)

《6》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "शिर्के ख़फ़ी येह है कि आदमी किसी आदमी के मर्तबे की ख़ातिर अमल करे।"

(المستدرك،كتاب الرقاق، باب من تشاعبت به الهموم......الخ،الحديث:٨٠٠٦، ج٥، ص٤٦٨)

《7》...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत का शिर्क अंधेरी रात में च्यूंटी के चिकनी चट्टान पर रेंगने से भी ज़ियादा मख़्फ़ी होगा और इस का अदना द-रजा येह है कि तुम ज़ुल्म की किसी बात को पसन्द करो या अद्लो इन्साफ़ की किसी बात से नफ़रत करो और दीन तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये नफ़रत करने ही का नाम है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (پ٣،اٰل عمران:٣١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा।

(حلية الاولياء، الحديث:١٣٨٣١،ج٩،ص٢٦٤،بدون"في امتى")

《8》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब क़ियामत का दिन आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसला करने के

www.dawateislami.net

लिये उन पर (नक़्ल व ह़-र-कत और जहालत व अज्साम के लवाज़िमात से पाक) तजल्ली फ़रमाएगा उस वक़्त हर उम्मत घुटनों के बल खड़ी होगी, सब से पहले जिन लोगों को बुलाया जाएगा उन में एक क़ुरआने करीम का ह़ाफ़िज़, दूसरा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मारा जाने वाला शहीद और तीसरा बहुत मालदार होगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ारी से इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या मैं ने तुझे अपने रसूल पर उतारा हुवा कलाम नहीं सिखाया था ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "क्यूं नहीं, या रब عَزَّوَجَلَّ !" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "फिर तूने अपने इ़ल्म पर कितना अ़मल किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं दिन रात इसे पढ़ता रहा ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है तेरा मक़्सद तो येह था कि लोग तेरे बारे में येह कहें : "फ़ुलां शख़्स क़ारी है ।" और वोह तुझे कह लिया गया ।" फिर मालदार को लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या मैं ने तुझ पर अपनी ने'मतों को वसीअ़ न किया यहां तक कि मैं ने तुझे किसी का मोह़ताज न छोड़ा ?" तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "क्यूं नहीं या रब عَزَّوَجَلَّ !" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तूने मेरे अ़त़ा कर्दा माल में क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं सिलए रेह़मी करता और स-दक़ा करता था ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तेरा मक़्सद तो येह था कि तेरे बारे में कहा जाए : "फ़ुलां बहुत सख़ी है ।" और वोह तुझे कह लिया गया ।" फिर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मारे जाने वाले को लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से पूछेगा : "तुझे क्यूं क़त्ल किया गया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मुझे तेरी राह में जिहाद करने का हुक्म दिया गया तो मैं मरते दम तक लड़ता रहा ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है बल्कि तेरा मक़्सद तो येह था कि तेरे बारे में कहा जाए : "फ़ुलां बहुत बहादुर है ।" और वोह तुझे कह लिया गया ।" ऐ अबू हुरैरा ! येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ के वोह पहले तीन अफ़राद हैं जिन से क़ियामत के दिन जहन्नम को भड़काया जाएगा ।"

(جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب ماجاء فی الریاء والسمعۃ،الحدیث:۲۳۸۲،ص ۱۸۹۰)

﴾9﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन सब से पहले एक शहीद का फ़ैसला होगा जब उसे लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो वोह उन ने'मतों का इक़्रार करेगा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तूने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं ने तेरी राह में जिहाद किया यहां तक कि शहीद हो गया ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है तूने जिहाद इस लिये किया था कि तुझे बहादुर कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया, फिर उस के बारे में जहन्नम में जाने का हुक्म देगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा । फिर उस शख़्स को लाया जाएगा जिस ने इ़ल्म सीखा, सिखाया और क़ुरआने करीम पढ़ा, वोह आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी ने'मतें याद दिलाएगा तो वोह भी उन ने'मतों का इक़्रार करेगा, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "तूने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा कि "मैं ने इ़ल्म सीखा और सिखाया और तेरे लिये क़ुरआने करीम पढ़ा ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है तूने इ़ल्म इस लिये सीखा ताकि तुझे आ़लिम कहा जाए और क़ुरआने

www.dawateislami.net

करीम इस लिये पढ़ा ताकि तुझे क़ारी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।" फिर उसे जहन्नम में डालने का हुक्म होगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा, फिर एक मालदार शख़्स को लाया जाएगा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कसरत से माल अ़ता फ़रमाया था, उसे ला कर ने'मतें याद दिलाई जाएंगी वोह भी उन ने'मतों का इक़रार करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तूने इन ने'मतों के बदले क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं ने तेरी राह में जहां ज़रूरत पड़ी वहां ख़र्च किया।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है तूने ऐसा इस लिये किया था ताकि तुझे सख़ी कहा जाए और वोह कह लिया गया।" फिर उस के बारे में जहन्नम का हुक्म होगा और उसे भी मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।" (صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قاتل للریاء......الخ،الحدیث:۴۹۲۳،ص۱۰۱۸)

《10》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन लोगों में सब से पहले तीन शख़्स जहन्नम में दाख़िल होंगे, एक शख़्स को लाया जाएगा तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे अपनी किताब सिखाई तो मैं दिन रात सवाब की उम्मीद पर उसे पढ़ता रहा।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है तू नमाज़ इस लिये पढ़ता था कि तुझे क़ारी, नमाज़ी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।" फिर फ़िरिश्तों को हुक्म होगा कि इसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाओ। फिर दूसरे को लाया जाएगा तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे माल अ़ता फ़रमाया तो मैं तेरे सवाब और जन्नत की उम्मीद पर उस के ज़रीए सिलए रेह़मी करता, मिस्कीनों पर ख़र्च करता और मुसाफ़िरों को उस के ज़रीए सुवारी मुहय्या किया करता था।" उस से भी कहा जाएगा : "तू झूटा है क्यूं कि तू स-दक़ा और सिलए रेह़मी इस लिये करता था कि तुझे रह़्म दिल और सख़ी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।" फिर हुक्म होगा कि इसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाओ, फिर तीसरे शख़्स को लाया जाएगा तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे सवाब और जन्नत की उम्मीद पर तेरी राह में जिहाद पर निकला और काफ़िरों से लड़ा और पीठ फैर कर न भागा।" तो उस से कहा जाएगा : "तू झूटा है, तूने जिहाद इस लिये किया ताकि तुझे बहादुर और जरी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।" फिर हुक्म होगा कि इसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाओ।" (المستدرک ،کتاب الجهاد، باب سبب نزول آیة (فمن کان یرجو لقاء ربه)، الحدیث۲۵۷۴، ج ۲، ص ۴۴۲)

《11》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ह़िसाब के वक़्त तीन शख़्स हलाक हो जाएंगे : सख़ी, बहादुर और आ़लिम।"

(المستدرک ،کتاب العلم، باب ان اول الناس.....الخ ،الحدیث:۳۷۲،ج۱،ص۳۰۵)

《12》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शक व शुबा से पाक दिन या'नी क़ियामत में अव्वलीन व आख़िरीन को जम्अ़ करेगा तो एक मुनादी निदा देगा : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये किये जाने वाले अ़मल में किसी को शरीक किया वोह उसी के पास अपना सवाब तलाश करे क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शु-रका से बे नियाज़ है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند المکیین،حدیث ابی سعید بن ابی فضیله،الحدیث:۱۵۸۳۸،ج۵،ص۳۶۹)

www.dawateislami.net

《13》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो मेरे साथ किसी को शरीक करेगा मैं उसे (अज़ाब का) शदीद हिस्सा दूंगा, जो किसी को मेरा शरीक ठहराएगा उस का क़लील व कसीर अमल उस के उसी शरीक के लिये है जिसे उस ने मेरा शरीक ठहराया और मुझे इस की कोई परवाह नहीं।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند الشاميين، الحديث: ١٧١٤٠، ج٦،ص٨٢،بدون"حشوه")

《14》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने हिदायत निशान है : "मैं शरीक से बे नियाज़ हूं जिस ने किसी अमल में किसी को मेरे साथ शरीक किया मैं उसे और उस के शिर्क को छोड़ दूंगा।" या'नी ढील दूंगा और जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मोहर बन्द सहीफ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नस्ब किया जाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मलाएका से इर्शाद फ़रमाएगा : "इन्हें क़बूल कर लो और उन्हें छोड़ दो।" फ़िरिश्ते अर्ज़ करेंगे : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इज़्ज़त की क़सम ! हम इन में ख़ैर के इलावा कुछ नहीं पाते।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तुम दुरुस्त कहते हो मगर येह मेरे ग़ैर के लिये हैं और आज मैं सिर्फ़ वोही आ'माल क़बूल करूंगा जो मेरी रिज़ा के लिये किये गए थे।"

(كنزالعمال،كتاب الاخلاق،قسم الاقوال،حرف الراء، باب الرياء،الحديث:٧٤٧٢،ج٣،ص١٨٩) (صحيح مسلم ، كتاب الزهد، باب تحريم الرياء ، الحديث: ٧٤٧٥،ص ١١٩٥)

《15》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जब क़ियामत का दिन आएगा तो कुछ मोहर बन्द सहीफ़ों को लाया जाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "इन्हें क़बूल कर लो और उन्हें रद कर दो।" मलाएका अर्ज़ करेंगे : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इज़्ज़त की क़सम ! हम ने वोही लिखा है जो इस ने अमल किया था।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "इस का अमल मेरी रिज़ा के लिये नहीं था और आज मैं वोही आ'माल क़बूल करूंगा जो मेरी रिज़ा के लिये किये गए थे।" (جامع الاحاديث،الحديث:٢٤٦٥،ج١،ص٣٥٩)

《16》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : क़ियामत के दिन कुछ मोहर बन्द सहीफ़ों को ला कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नस्ब किया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा : "येह छोड़ दो और येह क़बूल कर लो।" मलाएका अर्ज़ करेंगे : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इज़्ज़त की क़सम ! हम तो इस में ख़ैर ही देखते हैं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा और वोही ज़ियादा जानता है : "येह मेरे ग़ैर के लिये थे आज मैं वोही अमल क़बूल करूंगा जो मेरी रिज़ा के लिये किये गए थे।" (سنن دارقطني، باب النية ، الحديث: ١٢٩،ج١،ص٧٣)

《17》...... हज़रते इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि मलाएका अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से किसी बन्दे के अमल को ज़ियादा समझते हुए ले जा रहे होंगे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी सल्तनत में जहां चाहेगा वोह वहां पहुंच जाएंगे, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की तरफ़ वह्य फ़रमाएगा :

www.dawateislami.net

"तुम मेरे बन्दे के अ़मल लिखने पर मामूर हो और मैं उस के दिल से बा ख़बर हूं, मेरा येह बन्दा मेरे लिये अ़मल करने में मुख़्लिस नहीं था लिहाज़ा इसे सिज्जीन में ले जाओ।" इसी त़रह़ फ़िरिश्ते एक बन्दे के अ़मल को कम और ह़क़ीर जानते हुए ले जा रहे होंगे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी सल्त़नत में जहां चाहेगा वोह फ़िरिश्ते वहां पहुंच जाएंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाएगा : "तुम मेरे बन्दे के अ़मल लिखने पर मामूर हो और मैं उस के दिल से बा ख़बर हूं, मेरा येह बन्दा मेरे लिये अ़मल करने में मुख़्लिस है लिहाज़ा इसे इ़ल्लिय्यीन में ले जाओ।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،حرف الراء،باب الرياء،الحديث:٧٥٠٥،ج٣،ص١٩٢)

《18》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मुनादी निदा देगा कि जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ैर के लिये अ़मल किया वोह अपना सवाब उसी के पास तलाश करे जिस के लिये उस ने अ़मल किया था।" (جامع الاحاديث،الحديث:٢٤٧٦،ج١،ص٣٦١،مفهومًا)

《19》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन परहेज़ गार गुमनाम बन्दों से मह़ब्बत फ़रमाता है जो ग़ाइब हों तो उन्हें तलाश न किया जाए और जब ह़ाज़िर हों तो पुकारे न जाएं और न ही पहचाने जाएं वोह हिदायत के चराग़ हैं और हर अंधेरी ज़मीन से तुलूअ़ (या'नी ज़ाहिर) होते हैं।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب الفتن، باب من ترجى له السلامة ......الخ،الحديث:٣٩٨٩،ص٢٧١٦)

《20》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "वादिये हुज़्न से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगा करो क्यूं कि येह ऐसी वादी है जिस से जहन्नम भी रोज़ाना चार सो मरतबा पनाह मांगता है, इस में दिखावे के लिये अ़मल करने वाले क़ारी दाख़िल होंगे और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ना पसन्दीदा क़ारी वोह हैं जो उ-मरा से मिलने के लिये जाते हैं।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب الطهارت، باب الانتفاع بالعلم......الخ،الحديث:٢٥٦،ص٢٤٩٣)

《21》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो मरतबा पनाह मांगता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उन रियाकारों के लिये तय्यार की है जो क़ुरआने पाक के ह़ाफ़िज़, ग़ैरुल्लाह के लिये स-दक़ा करने वाले, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर के ह़ाजी और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में निकलने वाले होंगे।" (المعجم الكبير،الحديث:١٢٨٠٣،ج١٢،ص١٣٦)

《22》...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शोहरत के लिये अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा करेगा, जो दिखावे के लिये अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ज़ाब देगा और जो मुख़ा-लफ़त करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे मशक़्क़त में डालेगा।" (جامع الاحاديث،قسم الاقوال،الحديث:٢٠٧٤٠،ج٧،ص٤٤)

www.dawateislami.net

《23》...... अ़क़ीली और दैलमी से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा क़ाबिले नफ़रत बन्दा वोह है जिस के कपड़े उस के अ़मल से अच्छे हों वोह इस त़रह़ कि उस का लिबास तो अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام जैसा हो मगर अ़मल मु-तकब्बिरीन का सा हो।"

(الضعفاء للعقیلی، باب السین، الحدیث:٦٧٤، ج٢، ص٥٣٥)

《24》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "शोहरत वाली दो चीज़ों से बचते रहो। सौफ़ या'नी ऊन और रेशम से, क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब उस शख़्स को होगा जिसे लोग तो अच्छा समझें मगर उस में कोई अच्छाई न हो।" (کنزالعمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، باب الریاء، الحدیث:٧٤٨١_٨٢، ج٣، ص١٩٠)

《25》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर रियाकार पर जन्नत को ह़राम कर दिया है।"

(جامع الاحادیث، الحدیث:٦٧٢٥، ج٢، ص٤٧٦)

《26》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक ज़मीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रिया के तौर पर ऊनी लिबास पहनने वालों के बारे में फ़रियाद करती है।" (ایضاً، الحدیث:٤٩٧٥، ج٢، ص٢١٩)

《27》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कुछ रोज़ादारों को रोज़े से भूक के इलावा कुछ हासिल नहीं होता और कुछ इबादत गुज़ारों को रात की इबादत से शब बेदारी के इलावा कुछ हासिल नहीं होता।"

(سنن ابن ماجه، ابواب الصیام، باب ماجاء فی الغیبة والرفث للصائم، الحدیث:١٦٩٠، ص٢٥٧٨)

《28》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कुछ आ़बिदों को इबादत से शब बेदारी के सिवा कुछ हासिल नहीं होता और कुछ रोज़ादारों को रोज़े से भूक और प्यास के इलावा कुछ हासिल नहीं होता।" (المعجم الکبیر، الحدیث:١٣٤١٣، ج١٢، ص٢٩٢، بتقدم وتأخر)

《29》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जन्नत की ख़ुश्बू पांच सो बरस की मसाफ़त से सूंघी जा सकती है मगर आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करने वाला उसे न पा सकेगा। (کنزالعمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، باب الریاء، الحدیث:٧٤٨٩، ج٣، ص١٩٠)

《30》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने लोगों के सामने अच्छे त़रीक़े से और तन्हाई में बुरे त़रीक़े से नमाज़ अदा की, बेशक उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की तौहीन की।"

(مسند ابی یعلی الموصلی، مسند عبدالله بن مسعود، الحدیث:٥٠٩٥، ج٤، ص٣٨٠)

《31》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने आख़िरत के अ़मल से ज़ीनत पाई ह़ालां कि आख़िरत उस की मुराद थी न त़लब तो वोह ज़मीन व आस्मान में मल्ऊ़न है।" (مجمع الزوائد، کتاب الزهد، باب ماجاء فی الریا، الحدیث:١٧٩٤٨، ج١٠، ص٣٧٧)

www.dawateislami.net

﴾32﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब कोई क़ौम आख़िरत (के आ'माल) से आरास्ता हो कर (हुसूले) दुन्या के लिये हुस्नो जमाल का पैकर बने तो उस का ठिकाना जहन्नम है।" (جامع الاحادیث،الحدیث:١١٦٩،ج١،ص١٨٣)

(फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है :) "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ ग़ैरे ख़ुदा के लिये दिखलावा किया तह़क़ीक़ वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम से बरी हो गया।"

(المعجم الکبیر،الحدیث ٨٠٥،ج٢٢،ص٣٢٠)

﴾33﴿...... सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो दिखावे और शोहरत के मक़ाम पर खड़ा हो तो जब तक बैठ न जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी में है।"

(مجمع الزوائد،کتاب الزھد،باب ماجاء فی الریاء،الحدیث:١٧٦٦٤،ج١٠،ص٣٨٣)

﴾34﴿...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो दिखावे के लिये अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा करेगा और जो शोहरत के लिये अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस के सबब अ़ज़ाब देगा।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب الزھد،باب الریاء والسمعة، الحدیث:٤٢٠٧،ص٢٧٣٢)

ह़दीसे पाक का मफ़्हूम :

इस ह़दीसे मुबा–रका का मफ़्हूम येह है कि जो अपना नेक अ़मल लोगों के सामने इस लिये ज़ाहिर करे ताकि वोह उन के नज़्दीक मुअ़ज़्ज़म व मोह़तरम हो जाए ह़ालां कि वोह नेक न हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने उस का राज़ खोल देगा।

﴾35﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐसी चीज़ ज़ाहिर करने वाला जो उसे अ़ता न की गई हो झूट का लिबास पहनने वाले की त़रह़ होता है।"

(صحیح البخاری ،کتاب النکاح،باب المتشبع بما لم ینل، وما ینهی من ......الخ،الحدیث:٥٢١٩،ص٤٥١)

﴾36﴿...... साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत का शिर्क चिकने पथ्थर पर च्यूंटी के चलने की आवाज़ से ज़ियादा मख़्फ़ी होगा।" (الکامل فی الضعفاء،ج٩،ص٩٨)

﴾37﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ऐ लोगो ! शिर्क से बचते रहना क्यूं कि येह च्यूंटी की आवाज़ से ज़ियादा मख़्फ़ी है।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम शिर्क से किस त़रह़ बच सकते हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह दुआ़ पढ़ लिया करो : اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِکَ اَنْ نُّشْرِکَ بِکَ شَیْئًا نَعْلَمُ وَنَسْتَغْفِرُکَ لِمَالَانَعْلَمُهٗ, या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम दानिस्ता त़ौर पर किसी को तेरा शरीक ठहराने से तेरी पनाह चाहते हैं और ना दानिस्ता त़ौर पर ऐसा करने पर तुझ से मग़्फ़िरत चाहते हैं।" (المعجم الاوسط،الحدیث:٣٤٧٩،ج٢،ص٣٤٠)

﴾38﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इर्शाद फ़रमाया : तुम लोगों में शिर्क च्यूंटी की आवाज़ से ज़ियादा मख़्फ़ी होगा और अब मैं तुम्हें एक ऐसा अ़मल बताता हूं कि जब तुम इसे करोगे तो शिर्क का छोटा बड़ा अ़मल तुम से दूर हो जाएगा। तीन मरतबा येह दुआ़ पढ़ लिया करो : "

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ اَنۡ اُشۡرِکَ بِکَ وَاَنَا اَعۡلَمُ وَ اَسۡتَغۡفِرُکَ لِمَالَاۤاَعۡلَمُ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं जान बूझ कर तेरा शरीक ठहराने से तेरी पनाह चाहता हूं और ला इल्मी में ऐसा अ़मल करने पर तुझ से मग़्फ़िरत चाहता हूं।" (کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب الریاء،الحدیث:۷۵۰۰،ج۳،ص۱۹۱)

《39》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! तुम लोगों में शिर्क च्यूंटी की आवाज़ से ज़ियादा मख़्फ़ी होगा। बेशक आदमी का येह कहना भी शिर्क है : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और मैं चाहूंगा वोही होगा।" और आदमी का येह कहना (या'नी येह ए'तिक़ाद रखना) भी शिर्क है : "अगर फुलां शख़्स न होता तो फुलां मुझे क़त्ल कर देता।" क्या मैं तुम्हें ऐसा अ़मल न बताऊं जिस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से छोटा बड़ा शिर्क दूर फ़रमा दे, रोज़ाना तीन मरतबा येह दुआ़ पढ़ लिया करो : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ اَنۡ اُشۡرِکَ بِکَ وَاَنَا اَعۡلَمُ وَ اَسۡتَغۡفِرُکَ لِمَالَاۤاَعۡلَمُ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं जान बूझ कर तेरा शरीक ठहराने से तेरी पनाह चाहता हूं और ला इल्मी में ऐसा अ़मल करने पर तुझ से मग़्फ़िरत चाहता हूं।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب الریاء،الحدیث:۷۵۱۹،ج۳،ص۱۹۴)

《40》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे अपनी उम्मत पर शिर्क और मख़्फ़ी शहवत का ख़ौफ़ है।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत शिर्क में मुब्तला हो जाएगी ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! मगर येह लोग सूरज, चांद, पथ्थर या बुतों की पूजा नहीं करेंगे बल्कि लोगों के सामने दिखावे के लिये अ़मल करेंगे और ख़ुफ़्या शहवत येह है कि इन में से कोई रोज़ा रख कर फिर किसी नफ़्सानी ख़्वाहिश की बिना पर तोड़ डाले।" (المسندللامام احمد ، مسند الشامیین، الحدیث:۱۷۱۲۰،ج۶، ص۷۷)

《41》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दा सुब्ह़ को रोज़ादार होगा फिर उस की कोई ख़्वाहिश उस के सामने आएगी तो वोह उस ख़्वाहिश में मुब्तला हो कर अपना रोज़ा तोड़ डालेगा।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:۴۲۱۳،ج۳،ص۱۶۸)

《42》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी पोशीदा तौ़र पर कोई नेकी करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपने पास पोशीदा नेकियों में लिख लेता है, फिर शैत़ान उस शख़्स के पीछे पड़ जाता है यहां तक कि वोह शख़्स अपना अ़मल लोगों पर ज़ाहिर कर देता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पोशीदा आ'माल से मिटा कर ए'लानिया आ'माल में लिख देता

www.dawateislami.net

है, फिर जब वोह दूसरी मरतबा अपना अ़मल ज़ाहिर करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पोशीदा और ए'लानिया नेकियों में से मिटा कर रियाकारी में लिख देता है।" (فردوس الاخبارللدیلمی،باب الالف،الحدیث:۷۱۸،ج۱،ص۱۱۶)

《43》...... मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मैं अच्छा बदला देने वाला हूं लिहाज़ा जो किसी को मेरा शरीक ठहराएगा वोह मेरे शरीक के लिये ही होगा।" ऐ लोगो ! अपने अ़मल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास पैदा करो क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो ख़ालिस उस के लिये किये जाते हैं और जो काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये किया जाता हो उस के बारे में येह मत कहो कि मैं येह काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रिश्तेदारी की वजह से कर रहा हूं, क्यूं कि वोह काम फिर रिश्तेदारी के लिये ही होगा न कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये।"

(شعب الایمان، باب فی اخلاص العمل للہ وترک الریاء،الحدیث:۶۸۳۶،ج۵،ص۳۳۶)

《44》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ह़ासिल किया जाने वाला इ़ल्म, दुन्या का माल पाने के लिये ह़ासिल किया तो क़ियामत के दिन वोह जन्नत की ख़ुश्बू तक न पा सकेगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب العلم، باب فی طلب لغیر اللہ، الحدیث:۳۶۶۴،ص۱۴۹۴)

《45》...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे तुम पर सब से ज़ियादा शिर्के अस्ग़र या'नी रियाकारी का ख़ौफ़ है, जब लोग अपने आ'माल ले कर आएंगे तो रियाकारों से कहा जाएगा : "उन के पास जाओ जिन के लिये तुम रियाकारी किया करते थे और उन के पास अपना अज्र तलाश करो।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۴۳۰۱،ج۴،ص۲۵۳)

《46》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि मुझे तुम पर चेहरे बिगड़ जाने से ज़ियादा जिस चीज़ का ख़ौफ़ है, वोह शिर्के ख़फ़ी है और वोह येह है कि आदमी किसी शख़्स के मरतबे की ख़ातिर कोई अ़मल करे।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعید الخدری،الحدیث:۱۱۲۵۲،ج۴،ص۶۱)

《47》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त को बन्दों से ता'रीफ़ की मह़ब्बत से मिलाने (या'नी लोगों की ज़बानों से अपनी ता'रीफ़ पसन्द करने) से बचते रहो कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं।"

(فردوس الاخبارللدیلمی،باب الالف،فصل فی التحذیر والوعید،الحدیث:۱۵۶۷،ج۱،ص۲۲۳)

《48》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ लोगो ! पोशीदा शिर्क से बचते रहो और वोह येह है कि आदमी नमाज़ के लिये खड़ा हो और लोगों की नज़रों को अपनी जानिब मु-तवज्जेह पाने की वजह से अपनी नमाज़ को संवारे येही पोशीदा शिर्क है।"

(السنن الکبرٰی للبیہقی،کتاب الصلوٰۃ ، باب الترغیب فی تحسین الصلوٰۃ ، الحدیث:۳۵۸۵،ج۲،ص۴۱۳)

www.dawateislami.net

《49》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "शिर्के ख़फ़ी से बचते रहो जो येह है कि बन्दा लोगों की निगाहों की वजह से नमाज़ के रुकूअ़ व सुजूद कामिल तरीक़े से अदा करे।" (شعب الایمان،باب فی الصلوات،الحدیث:۳۱٤۱،ج۳،ص١٤٤)

《50》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत का शिर्क चिकने पथ्थर पर च्यूंटी के चलने की आवाज़ से भी ज़ियादा मख़्फ़ी होगा और मोमिन और काफ़िर के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ का तर्क करना है।"

(المستدرک،کتاب التفسیر،باب اخبار القتل عوض الحسین......الخ،الحدیث:۳۲۰۲،ج۳،ص۷)

(سنن ابن ماجه، ابواب اقامة الصلوٰات، باب ماجاء فی من ترک الصلوٰة، الحدیث:۱۰۸۰،ص۲۵٤۰،"الکفر" بدله" الشرک")

《51》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने कोई अ़मल किया और उस में मेरे साथ किसी को शरीक किया तो उस का सारा अ़मल उसी के लिये है जब कि मैं शरीकों से बे नियाज़ हूं।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الزهد،باب الریاء والسمعة،الحدیث:۲۷۳۲،ص۲۰۲٤،"بتقدمٍ وتاخرٍ")

《52》...... नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो बन्दा दुन्या में रियाकारी और शोहरत के मक़ाम व मर्तबे पर हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जुमुआ़ के दिन उसे लोगों के सामने रुस्वा करेगा।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۲۳۷،ج۲۰،ص۱۱۹،"یوم الجمعة" بدله" یوم القیٰمة")

यहां जुमुआ़ से मुराद क़ियामत का दिन है क्यूं कि उसी दिन सब से बड़ा मज्मअ़ होगा।

《53》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो लोगों की ख़ातिर ऐसे आ'माल से ख़ुद को मुज़य्यन करे कि जिन की ह़क़ीक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इल्म में कुछ और हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को अपनी बारगाह से दूर फ़रमा देता है।" (جامع الاحادیث،قسم الاقوال،الحدیث:۲۱٦٦۰،ج۷،ص١٦٩)

《54》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अपने क़ौल और लिबास के ज़रीए लोगों की ख़ातिर बने संवरे और अ़मल में उस के ख़िलाफ़ करे उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, मलाएका और तमाम इन्सानों की ला'नत है।"

(جامع الاحادیث،قسم الاقوال،الحدیث:۲۱۷۰۰،ج۷،ص۱۷۵)

《55》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने रियाकारी के साथ नमाज़ पढ़ी उस ने शिर्क किया, जिस ने रियाकारी करते हुए रोज़ा रखा उस ने शिर्क किया और जिस ने रियाकारी के तौर पर स-दक़ा दिया उस ने भी शिर्क किया।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۷۱۳۹،ج۷،ص۲۸۱)

www.dawateislami.net

रियाकार ख़ुत़बा की सज़ा :

《56》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो ख़ुत़्बे के लिये खड़ा हुवा जब कि उस की निय्यत रियाकारी और शोहरत के सिवा कुछ न थी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे रियाकारों और शोहरत की ख़ातिर अ़मल करने वालों के मक़ाम में खड़ा करेगा।" (المعجم الكبير،الحديث:١٢٢٨،ج٢،ص٤٢،بدون"يوم القيامة")

आग की दो ज़बानें होंगी :

《57》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो दिखावे के लिये अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा करेगा, जो शोहरत के लिये अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस के सबब अ़ज़ाब देगा और दुन्या में जिस की दो ज़बानें होंगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन आग से उस की दो ज़बानें बना देगा।" (المعجم الكبير،الحديث:١٦٩٧،ج٢،ص١٧٠)

रियाकारों की ह़सरत :

《58》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत में ले जाने का हुक्म होगा, यहां तक कि जब वोह जन्नत के क़रीब पहुंच कर उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे और उस के मह़ल्लात और अहले जन्नत के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तय्यार कर्दा ने'मतें देख लेंगे, तो निदा दी जाएगी : "इन्हें लौटा दो क्यूं कि इन का जन्नत में कोई ह़िस्सा नहीं।" तो वोह ऐसी ह़सरत ले कर लौटेंगे जैसी अव्वलीन व आख़िरीन ने न पाई होगी, फिर वोह अ़र्ज़ करेंगे : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू वोह ने'मतें दिखाने से पहले ही हमें जहन्नम में दाख़िल कर देता तो येह हम पर ज़ियादा आसान होता।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "बद बख़्तो ! मैं ने इरादतन तुम्हारे साथ ऐसा किया है जब तुम तन्हाई में होते तो मेरे साथ ए'लाने जंग करते और जब लोगों के सामने होते तो मेरी बारगाह में दोग़ले पन से ह़ाज़िर होते, नीज़ लोगों के दिखलावे के लिये अ़मल करते जब कि तुम्हारे दिलों में मेरी ख़ातिर इस के बिल्कुल बर अ़क्स सूरत होती, लोगों से मह़ब्बत करते और मुझ से मह़ब्बत न करते, लोगों की इ़ज़्ज़त करते और मेरी इ़ज़्ज़त न करते, लोगों के लिये अ़मल छोड़ देते मगर मेरे लिये बुराई न छोड़ते थे, आज मैं तुम्हें अपने सवाब से मह़रूम करने के साथ साथ अपने अ़ज़ाब का मज़ा भी चखाऊंगा।"

(المعجم الاوسط،الحديث:٥٤٧٨،ج٤،ص١٣٥،مختصراً)

《59》...... एक रिवायत में है : "आज मैं तुम्हें अपने बेहतरीन सवाब से मह़रूम करने के साथ साथ दर्दनाक अ़ज़ाब भी चखाऊंगा।" (المعجم الكبير،الحديث:١٩٩،ج١٧،ص٨٦،بدون"جزيل")

www.dawateislami.net

《60》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी तालिबे शोहरत, रियाकार, और लह्वो लइब में पड़े रहने वाले का कोई अमल क़बूल नहीं फ़रमाता।" (حلية الاولياء،الربيع بن حثيم ، الحديث:۱۷۳۲،ج۲،ص۱۳۹)

《61》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मुनादी जम्अ होने वालों को निदा देगा कि लोगों को पूजने वाले कहां हैं ? खड़े हो जाओ और जिन के लिये तुम अमल करते थे उन से जा कर अपना अज्र वुसूल करो क्यूं कि मैं ऐसा कोई अमल क़बूल नहीं करता जिस में दुन्या या उस के किसी फ़र्द का दख़्ल हो।"

(جامع الاحاديث،قسم الاقوال،الحديث:۲۴۷۶،ج۱،ص۳۶۱)

रियाकार के चार नाम :

《62》...... एक शख़्स ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज़ की : "कल बरोज़े क़ियामत कौन सी चीज़ नजात दिलाएगी ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती न करना।" तो उस ने फिर अर्ज़ की : "बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती कैसे कर सकता है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस तरह कि तुम कोई ऐसा काम करो जिस का हुक्म तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दिया हो लेकिन तुम्हारा मक़्सूद ग़ैरुल्लाह की रिज़ा का हुसूल हो, लिहाज़ा रियाकारी से बचते रहो क्यूं कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क है और क़ियामत के दिन रियाकार को लोगों के सामने चार नामों से पुकारा जाएगा या'नी "ऐ बदकार ! ऐ धोकेबाज़ ! ऐ काफ़िर ! ऐ ख़सारा पाने वाले ! तेरा अमल ख़राब हुवा और तेरा अज्र बरबाद हुवा, लिहाज़ा आज तेरे लिये कोई हिस्सा नहीं, ऐ धोका देने की कोशिश करने वाले ! अब तू अपना अज्र उस के पास जा कर तलाश कर जिस के लिये तू अमल किया करता था।"

(اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الجاه الرياء، باب بيان ذم الرياء، ج ۱۰، ص ۷۱، ۷۵،مختصراً)

रियाकारी की मज़म्मत पर इज्माए उम्मत

इन तमाम नुसूसे क़त्इय्या और अहादीसे सहीहा को जान लेने के बा'द रियाकारी की हुरमत पर इज्माअ का मुआ-मला तो बिल्कुल ज़ाहिर हो गया इसी लिये अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के अक़्वाल इस की मज़म्मत में मुत्तफ़िक़ और उम्मते मर्हूमा का इस की हुरमत और इस गुनाह के बड़े होने पर इज्माअ है।

हज़रते सय्यिदुना उमरे फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक शख़्स को अपनी गरदन झुकाए पाया तो उस से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ गरदन नीची रखने वाले ! अपनी गरदन बुलन्द कर ले क्यूं कि ख़ुशूअ गरदनों में नहीं दिल में होता है।"

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मस्जिद में एक शख़्स को सज्दे में रोते हुए पाया तो उस से इर्शाद फ़रमाया : "काश ! तुम्हारी येह हालत अपने घर में होती।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : "रियाकार की तीन अ़लामतें हैं : तन्हाई में हो तो अ़मल में सुस्ती करे और लोगों के सामने हो तो जोश दिखाए, उस की ता'रीफ़ की जाए तो अ़मल में इज़ाफ़ा कर दे और अगर मज़म्मत की जाए तो अ़मल में कमी कर दे।" मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "बन्दे को अच्छी निय्यत पर वोह इन्आ़मात दिये जाते हैं जो अच्छे अ़मल पर भी नहीं दिये जाते क्यूं कि निय्यत में रियाकारी नहीं होती।"

एक शख़्स ने कहा : "मैं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी तलवार के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और लोगों से ता'रीफ़ की ख़्वाहिश की वजह से लड़ता हूं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "तेरे लिये कुछ नहीं, तेरे लिये कोई अज्र नहीं, तेरे लिये कोई सवाब नहीं, क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं शरीकों के शिर्क से बे नियाज़ हूं।"

सलफ़ सालिह़ीन में से बहुत से बुज़ुर्गों ने उन लोगों की मज़म्मत फ़रमाई है जो येह कहते हैं : "येह चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और फ़ुलां की रिज़ा के लिये है, क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कोई शरीक नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब बन्दा रियाकारी करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है कि "मेरा बन्दा मुझ से मज़ाक़ कर रहा है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "जो शोहरत चाहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मुराद पूरी नहीं फ़रमाता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "जो किसी रियाकार को देखना चाहे वोह मुझे देख ले।" मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं : "लोगों के लिये अ़मल तर्क कर देना रियाकारी है और लोगों के लिये अ़मल करना शिर्क है, जब कि इख़्लास येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे इन दोनों चीज़ों से नजात अ़ता फ़रमा दे।"

एक ह़कीम का क़ौल है : "दिखावे और सुनाने के लिये अ़मल करने वाले की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो अपनी पोटली (या'नी जैब या थैली) पथ्थरों से भर कर ख़रीदारी के लिये बाज़ार चला गया, जब वोह दुकानदार के सामने अपनी पोटली खोलेगा तो ज़लीलो रुस्वा होगा और उस की पिटाई होगी, उसे लोगों की इस बात के इ़लावा कोई नफ़्अ़ ह़ासिल न होगा : "इस की जैब कितनी भरी हुई है।" ह़ालां कि उसे (इस भरी हुई जैब के बदले में) कोई चीज़ नहीं दी जाती। इसी त़रह़ दिखावे और सुनाने के लिये अ़मल करने वाले को लोगों की बातों के इ़लावा कोई नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं होता और न ही उसे क़ियामत के दिन कोई सवाब मिलेगा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا۝ (پ١٩، الفرقان:٢٣)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं।

या'नी जब उन्हों ने अपने आ'माल से ग़ैरुल्लाह की रिज़ा का इरादा किया तो उन का सवाब बातिल हो गया और वोह उड़ते हुए उस गुबार की त़रह़ हो गए जो सूरज की शुआओं में नज़र आता है।

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

रिया की लु-ग़वी व इस्तिलाही ता'रीफ़ :

रियाउन, रअ्यतुन और सुम्अ़तुन, सिमाउ़न से माख़ूज़ है। जिस रिया की मज़म्मत की गई है उस की ता'रीफ़ येह है : "बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और निय्यत या इरादे से इबादत करे। म-सलन लोगों को अपनी इबादत और कमाल से आगाह करना मक़्सूद हो ताकि उसे लोगों से माल व जाह या सना वग़ैरा ह़ासिल हो।"

रियाकारी की पहचान के त़रीक़े :

रिया की चन्द अक़्साम हैं :

(1) रिया बिल अह़्वाल (2) रिया बिल अक़्वाल (3) रिया बिल आ'माल (4) रिया बिल अस्ह़ाब।

(1)...... रिया बिल अह़्वाल :

इस की पहचान का त़रीक़ा येह है कि किसी का अपने जिस्म पर थकन या पीलाहट ज़ाहिर करना, परागन्दा बाल और घटिया हैअत का इज़्हार, ग़म की कसरत, गिज़ा की क़िल्लत और अहम काम में मश्ग़ूल होने की वजह से अपने आप पर तवज्जोह न देने और लगातार रोज़ों और शब बेदारियों, दुन्या और दुन्या वालों से बे रग़बती और इबादत में ख़ूब कोशिश का वह्म पैदा करने के लिये पस्त आवाज़ में बोलना और आंखें बन्द रखना।

ऐसे ज़लील व रुस्वा लोग क्या जानें कि उस वक़्त वोह भत्ताख़ोरों और डाकूओं जैसे लोगों से भी बदतर होते हैं क्यूं कि वोह तो अपने गुनाहों के मो'तरिफ़ हैं और इन रुस्वा और ज़लील लोगों की त़रह़ अपनी दीनदारी पर गुरूर नहीं करते, जब कि येह बद बख़्त व ज़लील लोग गुनाह भी करते हैं और इस पर दिलेरी भी दिखाते हैं।

www.dawateislami.net

या फिर सालिहीन का सा हुलिया इख़्तियार करना जैसे चलते वक़्त सर झुकाए रखना, पुर वक़ार अन्दाज़ में चलना, चेहरे पर सुजूद का असर बाक़ी रखना, ऊनी और खुरदरा लिबास पहनना और हर वोह सूरत अपनाना कि येह वह्म पैदा हो कि वोह उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی और सादाते सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में से है ह़ालां कि वोह इ़ल्म की ह़क़ीक़त और बात़िन की सफ़ाई के मुआ़-मले में मुफ़्लिस हो।

येह धोकेबाज़ शख़्स इस बात को नहीं जानता कि जो कुछ इसे येह लुबादा ओढ़ने की वजह से मिला है इस को क़बूल करना इस पर ह़राम था, अगर इस ने वोह चीज़ क़बूल कर ली तो वोह बात़िल त़रीक़े से लोगों का माल खाने की वजह से फ़ासिक़ हो जाएगा।

(2)...... रिया बिल अक़्वाल :

किसी का वा'ज़ व नसीह़त और सुन्नतों को ज़बानी याद करने का इज़्हार करना भी रियाकारी है, नीज़ मशाइख़ से मुलाक़ात और उ़लूम की पुख़्तगी वग़ैरा बहुत से ऐसे त़रीक़े हैं जो रियाकारी के अस्बाब बन सकते हैं क्यूं कि क़ौल के ज़रीए़ रिया का वुक़ूअ़ कसीर है नीज़ इस की अन्वाअ़ को शुमार भी नहीं किया जा सकता।

(3)...... रिया बिल आ'माल :

अरकाने नमाज़ को त़वील करना और इन्हें उ़म्दगी से अदा करना और इन में ख़ुशूअ़ ज़ाहिर करना, इसी त़रह़ रोज़ा और ह़ज वग़ैरा दीगर इ़बादात और आ'माल में भी रियाकारी की अन्वाअ़ बे शुमार हैं।

बा'ज़ अवक़ात रियाकार दिखावे के कामों को पुख़्ता करने का इतना ह़रीस होता है कि तन्हाई में भी इन अफ़्आ़ल की मश्क़ करता रहता है ताकि लोगों के मज्मअ़ में भी इस की येह आ़दत क़ाइम रहे, लेकिन वोह ऐसा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और उस से ह़या के सबब नहीं करता।

(4)...... रिया बिल अस्ह़ाब :

इसी त़रह़ दोस्तों और मुलाक़ात के लिये आने वालों के ज़रीए़ भी रियाकारी हो सकती है जैसे कोई किसी आ़लिम, अमीर या नेक सालेह़ बन्दे से अपने हां आने की तमन्ना करे और उस से उस की रिफ़्अ़त और बुज़ुर्गों का उस से ब-र-कत ह़ासिल करने का गुमान पैदा हो और इसी त़रह़ कोई शख़्स दूसरों के सामने फ़ख़्र करते हुए कहे कि वोह बहुत से शुयूख़ से मिला है।

येह सूरत रियाकारी के उन अब्वाब का मज्मूआ़ है जो जाह व मन्ज़िलत और शोहरत के ह़ुसूल पर उभारता है ताकि लोग इस की ता'रीफ़ करें और सारी दुन्या का मालो मताअ़ इस के पास जम्अ़ हो।

www.dawateislami.net

तम्बीह 2 :

हामिलीने शर-अ़ जब रियाकारी का लफ़्ज़ मुत़्लक़ इस्ति'माल करते हैं तो इस से मुराद वोही मज़्मूम सिफ़त होती है जिस की ता'रीफ़ पीछे बयान हो चुकी है। फिर अगर रियाकारी का मक़्सूद दिखावे के इ़लावा कुछ न हो तो रिया की इ़बादत बात़िल हो जाती है, काश ! उसे इस के इ़लावा कोई बुराई ह़ासिल न होती मगर इस पर बड़ा गुनाह और बुरी मज़म्मत भी लाज़िम हो जाती है जैसा कि इस की तफ़्सील साबिक़ा आयात व अह़ादीसे मुबा-रका से वाज़ेह़ है।

इस के ह़राम, कबीरा गुनाह और ला'नत के मुक़्तज़िये शिर्क होने की वजह येह है कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ इस्तिह्ज़ा पाया जाता है जैसा कि इस की त़रफ़ अह़ादीसे मुबा-रका में इशारा हो चुका है। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "जब बन्दा रियाकारी का मुर-तकिब होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाएका से इर्शाद फ़रमाता है : "इस की त़रफ़ देखो कि कैसे मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा है।" येह बात तो बिल्कुल वाज़ेह़ है कि बादशाह की ख़िदमत में खड़े होने वाले ख़ादिमों में से अगर कोई ख़ादिम सिर्फ़ बादशाह की किसी लौंडी या कमसिन बे रीश गुलाम को अपनी जानिब माइल करने के लिये खड़ा हो तो हर अ़क़्ल मन्द शख़्स के नज़्दीक येह उस बादशाह का मज़ाक़ उड़ाना ही कहलाएगा, क्यूं कि वोह शख़्स इस वह्म के बा वुजूद कि बादशाह का इन्तिहाई मुक़र्रब होगा, अपने इस फ़े'ल से क़ुर्ब का क़स्द नहीं कर सकता, तो अब ऐसी कौन सी ह़क़ारत और इस्तिह्ज़ा रह गया है जो तुम्हारा अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में अपने जैसे इस बन्दे का क़स्द करने से ज़ियादा होगा जो ख़ुद को किसी क़िस्म का फ़ाएदा पहुंचाने से आ़जिज़ है चे जाए कि वोह तुम्हें फ़ाएदा देगा लिहाज़ा इस के बा वुजूद तुम्हारा येह क़स्द ज़ाहिर करता है कि तुम येह ए'तिक़ाद रखते हो कि वोह आ़जिज़ बन्दा तुम्हारी अग़राज़ पूरी करने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा क़ुदरत रखता है, इस लिये तुम ने एक कमज़ोर और आ़जिज़ बन्दे को अपने क़वी व क़ादिर मौला عَزَّوَجَلَّ से बुलन्द कर दिया, इन्ही वुजूहात की बिना पर रियाकारी को हलाकत ख़ेज़ कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और इसी लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे "**शिर्के असग़र**" क़रार दिया, नीज़ रियाकारी में मख़्लूक़ के लिये येह शुबा भी पाया जाता है कि वोह इन्सान को इस वह्म में मुब्तला कर देती है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुत़ीअ़ और मुख़्लिस बन्दा है ह़ालां कि वोह ऐसा नहीं होता, ऐसे शुब्हे को **तल्बीस** कहते हैं और **तल्बीस** भी ह़राम है, म-सलन येह किसी शख़्स की त़रफ़ से क़र्ज़ अदा करे ताकि लोगों में येह तअस्सुर क़ाइम हो जाए कि येह बे लौस आदमी है और लोग इस की सख़ावत का ए'तिक़ाद रखने लगें, ऐसी सोच गुनाह है क्यूं कि येह तल्बीस और मक्रो फ़रेब के ज़रीए लोगों के दिल अपनी जानिब माइल करने का सबब है।

वस्वसा : अगर आप येह कहें कि "जब रियाकारी का शिर्के असग़र होना साबित हो गया तो इसे शिर्के अक्बर से जुदा क्यूं किया गया ?"

जवाब : येह बात एक मिसाल से वाज़ेह़ होगी वोह येह कि : "अगर किसी नमाज़ी को लोग नेक और सालेह़ कहने लगते हैं तो उस की रियाकारी उसे अ़मल पर उभारने का सबब बनती है मगर वोह

www.dawateislami.net

येह अ़मल करते वक़्त कभी तो इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम का क़स्द करता है और कभी बिग़ैर किसी क़स्द के इसे अदा करता है और इन दोनों सूरतों में से कोई भी कुफ़्र नहीं जब कि इस सूरत में शिर्के अक्बर उसी वक़्त होगा जब वोह (मिसाल के तौर पर) सज्दों से ग़ैरुल्लाह की ता'ज़ीम का क़स्द करे। लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि रियाकार इस शिर्क में उस वक़्त मुब्तला हुवा जब उस के नज़्दीक मख़्लूक़ की क़द्रो मन्ज़िलत इस क़दर बढ़ गई कि इस ता'ज़ीम ने इसे रुकूअ़ व सुजूद पर उभारा और एक ए'तिबार से इस सज्दे से इसी मख़्लूक़ की ता'ज़ीम की गई और येह शिर्के ख़फ़ी है जली नहीं जो कि जहालत की इन्तिहा है और ऐसा वोही कर सकता है जिसे शैतान धोके में डाले और इस वह्म में मुब्तला कर दे : "आ़जिज़ और कमज़ोर बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा उस के रिज़्क़ और नफ़अ़ का मालिक है।" इसी लिये वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपना क़स्द फैर कर इन लोगों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो गया और वोह उन लोगों को अपनी जानिब माइल करने लगा, लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे दुन्या और आख़िरत में उन्हीं के ह़वाले कर दिया जैसा कि अह़ादीसे मुबा-रका में बयान हुवा कि "उन लोगों की त़रफ़ चले जाओ जिन के लिये तुम दिखावा किया करते थे और उन से अज्र त़लब करो।" ह़ालां कि वोह अपने लिये किसी चीज़ का इख़्तियार नहीं रखते, ख़ुसूसन आख़िरत में ज़ियादा बे इख़्तियार होंगे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۝ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ (پ۱۹، الشعرآء: ۸۸-۸۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो अल्लाह के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर।

दूसरे मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ز وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا ط اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وقفة وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ (پ۲۱، لقمٰن: ۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा और न कोई कामी (कारोबारी) बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़अ़ दे बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के नाम पर धोका न दे वोह बड़ा फ़रेबी।

अच्छा लिबास पहनना रियाकारी नहीं :

कभी कभार मुबाह़ काम म-सलन इ़बादत के इ़लावा इ़ज़्ज़तो जाह की त़लब पर भी रियाकारी का लफ़्ज़ बोला जाता है जैसे कोई शख़्स अपने लिबास की ज़ीनत से अपने हुस्ने इन्तिज़ाम और ख़ूब सूरती पर ता'रीफ़ किये जाने का क़स्द करे। लोगों के लिये की जाने वाली हर आराइश व ज़ैबाइश और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई को इसी पर क़ियास कर लें जैसे मालदारों पर इ़बादत या स-दक़े की निय्यत से नहीं बल्कि इस लिये ख़र्च करना कि उसे सख़ी कहा जाए। इस नौअ़ के ह़राम न होने की वजह येह है कि इस में दीनी मुआ़-मलात की तल्बीस और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिह्ज़ा नहीं पाया जाता।

www.dawateislami.net

बनना संवरना सुन्नत है :

﴾63﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब अपने दौलत कदे से बाहर तशरीफ़ लाने का इरादा फ़रमाया तो अपने इमामा शरीफ़ और गेसूओं को दुरुस्त फ़रमाया और आईने में अपना मुबारक चेहरा मुला-हज़ा फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी ऐसा कर रहे हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे का बनना संवरना उस वक़्त पसन्द फ़रमाता है जब वोह अपने भाइयों के पास जाने लगे।"

(اتحا ف السادة المتقين، كتاب ذم الجاه والرياء، باب بيان حقيقة الرياء، ج ١٠، ص ٩٤،٩٣)

शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये येह एक मुअक्कदा इबादत थी क्यूं कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मख़्लूक़ को दा'वत देने और ह़त्तल इम्कान उन के दिलों को दीने ह़क़ की त़रफ़ माइल करने पर मामूर हैं क्यूं कि अगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों की नज़रों में मुअ़ज़्ज़ज़ न होते तो वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुंह फैर लेते लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर लोगों के सामने अपने उ़म्दा तरीन अह़वाल ज़ाहिर करना लाज़िम था ताकि लोग आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ना क़ाबिले ए'तिबार समझ कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुंह न फैरें क्यूं कि आ़म लोगों की निगाह ज़ाहिरी अह़वाल पर ही होती है मख़्फ़ी उमूर पर नहीं होती। नीज़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह अ़मल भी नेकी ही था। येही हुक्म उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تَعَالٰی और इन जैसे दीनदार लोगों के लिये है जब कि वोह अपनी अच्छी हैअत से वोही क़स्द करें जो ऊपर बयान हुवा।

तम्बीह 3 :

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی और अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ऐसे शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ किया है जो अपने अ़मल से रिया और इबादत दोनों का क़स्द करता है।

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर दुन्या की निय्यत ग़ालिब हो तो उसे कोई सवाब नहीं मिलेगा और अगर आख़िरत की निय्यत ग़ालिब हो तो उसे सवाब मिलेगा और अगर दोनों निय्यतें बराबर हों तब भी सवाब नहीं मिलेगा।"

जब कि अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : "गुज़श्ता अह़ादीसे मुबा-रका की वजह से उसे मुत़्लक़न कोई सवाब नहीं मिलेगा, म-सलन "जिस ने कोई ऐसा अ़मल किया जिस में किसी को मेरा शरीक ठहराया मैं उस से बेज़ार हूं और वोह अ़मल उसी के लिये है जिसे उस ने शरीक ठहराया।" जब कि इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی ने इस ह़दीसे पाक में येह तावील की है कि "जब दोनों क़स्द बराबर हो जाएं या रिया का क़स्द राजेह़ हो तब येह हुक्म होगा।" इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی का कलाम इस बात की तस्रीह़ करता है कि रिया अगर्चे ह़राम है मगर सवाब की निय्यत के ग़ालिब होने की सूरत में वोह अस्ल सवाब को नहीं रोकती, इसी लिये आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

www.dawateislami.net

ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर किसी शख़्स की इबादत का लोगों पर ज़ाहिर होना उस की निशात् में इज़ाफ़ा और कुव्वत पैदा करता है और अगर लोगों पर इस की इबादत ज़ाहिर न होती तब भी वोह इबादत न छोड़ता फिर अगर्चे उस की निय्यत रिया ही की हो तो हमारा गुमान है कि उस का अस्ल सवाब ज़ाएअ् न होगा, रिया की मिक्दार के मुताबिक़ उसे सज़ा मिलेगी जब कि सवाब की निय्यत जितना सवाब उसे मिलेगा।" इस से पहले का कलाम इन के क़ौल के मुनाफ़ी है : "अगर वोह अपने स-दक़े और नमाज़ से अज्र और ता'रीफ़ दोनों का ख़्वाहां हो तो येह वोह शिर्क है जो इख़्लास के मुख़ालिफ़ है।" हम ने "**किताबुल इख़्लास**" में इस का हुक्म ज़िक्र कर दिया है और हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से जो रिवायात नक़्ल की हैं वोह इस बात पर दलालत करती हैं कि रियाकार के लिये बिल्कुल कोई सवाब नहीं, लिहाज़ा अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का कलाम ही राजेह़ है।

अल ग़रज़ ! अगर इबादत के ज़रीए मुबाह़ रिया का क़स्द किया जाए तो उस का सवाब सिरे से ही साक़ित़ न होगा बल्कि उसे इबादत की निय्यत के मुताबिक़ अज्र मिलेगा अगर्चे निय्यत कमज़ोर ही क्यूं न हो और अगर वोह ह़राम रिया का क़स्द करे तो येह सवाब सिरे ही से ख़त्म हो जाएगा जैसा कि गुज़श्ता बहुत सी अह़ादीसे मुबा-रका इस बात पर दलालत करती हैं, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान :

فَمَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ خَیۡرًا یَّرَہٗ (پ۳۰، الزلزال:۷) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।

इस पर दलालत नहीं करता क्यूं कि ह़राम क़स्द की वजह से अ़मल की कोताही ने अज्र के साक़ित़ होने को वाजिब कर दिया, लिहाज़ा इस के लिये ख़ैर का एक ज़र्रा भी न बचा इसी लिये आयते करीमा इसे शामिल नहीं।

याद रखिये ! बन्दा जब इख़्लास के साथ इबादत शुरूअ़ करे फिर उस पर रियाकारी के अस्बाब ज़ाहिर हों, अगर येह अस्बाब अ़मल पूरा हो जाने के बा'द ज़ाहिर हों तो अ़मल में कोई असर न डालेंगे क्यूं कि वोह अ़मल इख़्लास के साथ पूरा हो चुका है, लिहाज़ा बा'द में त़ारी होने वाली रियाकारी के अस्बाब इस पर उस वक़्त तक असर अन्दाज़ न होंगे जब तक बन्दा अपने अ़मल के इज़्हार और उसे बयान करने में तकल्लुफ़ से काम न ले। अगर वोह रियाकारी का क़स्द करते हुए तकल्लुफ़ करे तो इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह ख़ौफ़ में डालने वाली बात है।" जब कि अख़्बार व आसार या'नी रिवायात इस बात पर दलालत करती हैं कि रियाकारी अ़मल को बरबाद कर देती है, पीछे गुज़र चुका है कि सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने बा'द में त़ारी होने वाले अस्बाब को अ़मल के सवाब को बात़िल करने से बईद क़रार दिया और इर्शाद फ़रमाया कि बल्कि क़रीने क़ियास बात येह है कि जो अ़मल उस ने मुकम्मल कर लिया इस पर उसे सवाब दिया जाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में की जाने वाली रियाकारी पर इसे अ़िक़ाब होगा अगर्चे येह रियाकारी अ़मल मुकम्मल कर लेने के बा'द की जाए और अगर अ़मल के दौरान रियाकारी पैदा हो और अ़मल मह़ज़ रियाकारी के लिये हो तो येह अ़मल को बरबाद बल्कि फ़ासिद कर देती है और अगर मह़ज़ रिया की निय्यत न हो मगर कुरबत की निय्यत पर रिया का क़स्द ग़ालिब हो और

www.dawateislami.net

कुरबत की निय्यत मग़्लूब हो तो इस सूरत में इबादत के फ़ासिद होने में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को तरद्दुद है, इमाम ह़ारिस मुह़ासिबी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की राय में इबादत फ़ासिद हो जाएगी। जब कि हमारे नज़्दीक इस सूरत में सब से बेहतर क़ौल येह है कि अगर अ़मल में रिया का असर ज़ाहिर न हो बल्कि अ़-मले ख़ालिस दीनी निय्यत से किया गया हो लोगों के इस अ़मल पर इत्तिलाअ़ से बन्दे को ख़ुशी ह़ासिल होती हो तो अस्ले निय्यत के बाक़ी रहने और अ़मल को मुकम्मल करने की निय्यत के पाए जाने की वजह से अ़मल फ़ासिद न होगा और अगर सूरते ह़ाल येह हो कि अगर लोग मौजूद न होते तो बन्दा अपनी नमाज़ तोड़ डालता तो ऐसी नमाज़ फ़ासिद और वाजिबुल इआ़दा है, अगर्चे फ़र्ज़ नमाज़ ही क्यूं न हो।

रियाकारी के अह़काम

रियाकारी की मज़म्मत में वारिद अह़ादीसे मुबा-रका से येह अह़काम मुस्तम्बित़ होते हैं :

☆...... जब सिर्फ़ मख़्लूक़ की ख़ुशनूदी के इरादे से अ़मल किया जाए तो येह रिया है।

☆...... शिर्क करने के बारे में वारिद अह़ादीसे मुबा-रका रिया और सवाब के क़स्द के बराबर होने या सवाब पर रिया की निय्यत के ग़ालिब होने पर मह़मूल हैं।

☆...... अगर सवाब के मुक़ाबले में रियाकारी की निय्यत कमज़ोर हो तो नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी, लेकिन अगर रियाकारी की निय्यत नमाज़ में तक्बीरे तह़रीमा से ले कर सलाम तक रही तो बिल इत्तिफ़ाक़ उस की नमाज़ नहीं हुई और ऐसी नमाज़ का कोई ए'तिबार नहीं।

☆...... अगर नमाज़ के दौरान येह शख़्स रियाकारी से बाज़ आ गया और तौबा कर ली तो एक गुरौह कहता है : "येह इबादत अदा नहीं हुई लिहाज़ा वोह उसे दोबारा पढ़ेगा।" और दूसरा कहता है : "तक्बीरे तह़रीमा के इलावा उस की सारी नमाज़ बात़िल हो गई लिहाज़ा वोह तह़रीमा पर बिना रखते हुए नमाज़ अदा करेगा।" जब कि एक गुरौह के नज़्दीक येह है : "उस पर कोई चीज़ लाज़िम न होगी और जहां वोह है वहीं से अपना अ़मल पूरा करेगा क्यूं कि आ'माल का दारो मदार उन के अन्जाम पर होता है जैसे अगर कोई इख़्लास के साथ अ़मल शुरूअ़ करे और उस के अ़मल का अन्जाम रियाकारी पर हो तो उस का अ़मल फ़ासिद हो जाएगा।" आख़िरी दो अक़्वाल फ़िक़्ही क़ियास से ख़ारिज हैं, बिल ख़ुसूस इन में से पहला क़ौल तो हरगिज़ क़रीने क़ियास नहीं क्यूं कि जब अ़मल का इख़्तिताम इख़्लास पर हो तो वोह इस वजह से सह़ीह़ होगा कि रियाकारी तो सिर्फ़ निय्यत को ख़राब करती है न कि अ़मल को। और फ़िक़्ही क़ियास के मुत़ाबिक़ सह़ीह़ बात येह है कि अ़मल की इब्तिदा का सबब रियाकारी हो न कि सवाब की त़लब और हुक्मे शरीअ़त की बजा आ-वरी तो उस की इब्तिदा ही दुरुस्त न होगी लिहाज़ा बा'द का अ़मल भी दुरुस्त न होगा क्यूं कि उस की निय्यत ही पुख़्ता न रही जो कि शर्त़ थी और लोगों की वजह से ह़राम हो चुकी थी। येह ऐसे ही है जैसा कि किसी के कपड़े नजिस हों और वोह तन्हाई में नमाज़ पढ़े तो इस के बा वुजूद वोह नमाज़ सिरे से नहीं होगी।

www.dawateislami.net

☆...... लेकिन अगर मुआ-मला यूं हो कि लोगों की अदम मौजू-दगी में सहीह तरीके से नमाज़ पढ़े मगर अपनी ता'रीफ़ की रग़बत भी हो तो इस सूरत में अमल का बाइस दो सबब होंगे, एक येह कि अगर रिया नफ़्ल नमाज़ में होगी तो इस रियाकारी के बाइस गुनहगार होगा और दूसरा येह कि सवाब की निय्यत भी हो तो इस के बाइस अज्र पाएगा,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ (پ٣٠، الزلزال: ٧-٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा बुराई करे उसे देखेगा।

लिहाज़ा उसे अपने सहीह इरादे के मुताबिक़ सवाब मिलेगा और ग़लत इरादे के मुताबिक़ सज़ा होगी, नीज़ इन में से एक सबब दूसरे को फ़ासिद नहीं करेगा। नफ़्ल नमाज़ स-दक़ा की तरह ही होती है। येह कहना दुरुस्त नहीं कि इस की नमाज़ फ़ासिद और इक़्तिदा बातिल है। अगर्चे येह बात ज़ाहिर भी हो जाए कि इस का मक़्सूद रिया और हुस्ने क़िराअत का इज़्हार है तो चूंकि मुसल्मान से अच्छा गुमान ही रखना चाहिये कि नफ़्ल से सवाब ही की निय्यत की होगी, लिहाज़ा उस के इस क़स्द की वजह से उस की नमाज़ और इक़्तिदा दुरुस्त हो जाएगी, लेकिन अगर उस की निय्यत में कोई और क़स्द भी शामिल हो जाए तो इस की वजह से वोह गुनहगार होगा।

☆...... येह दोनों सबब (या'नी रिया और सवाब की उम्मीद) अगर फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी का बाइस हों और उन की अपनी अलग कोई मुस्तक़िल हैसिय्यत न हो तो वोह फ़र्ज़ बन्दे से साक़ित ही न होगा, लेकिन अगर दोनों में से हर एक सबब अलग मुस्तक़िल हैसिय्यत में अदाएगी का बाइस हो म-सलन अगर रिया का बाइस बनने वाला सबब न पाया जाए तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा, लेकिन अगर सवाब का बाइस बनने वाला सबब न पाया जाए तो फ़र्ज़ नमाज़ रियाकारी की वजह से नए सिरे से अदा की जाएगी।

इस सूरत में हुक्म महल्ले नज़र है या'नी इस ए'तिबार से कि **फ़र्ज़** वोह होता है जिस की अदाएगी महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर हो और यहां ऐसी इबादत नहीं पाई गई। और इस ए'तिबार से कि **फ़र्ज़** उस शर-ई हुक्म की बजा आ-वरी का नाम है जो कि ख़ुद एक मुस्तक़िल अदाएगी का बाइस होती है जो कि यहां पाई गई है, लिहाज़ा किसी दूसरे इरादे का इस में शामिल हो जाना फ़र्ज़ की अदाएगी को साक़ित नहीं कर सकता, जैसा कि कोई शख़्स ग़सब की गई ज़मीन में नमाज़ पढ़े।

☆...... अगर **रियाकारी** अस्ले नमाज़ में न हो बल्कि उस की ख़ातिर जल्दी करने में हो तो ऐसी सूरत में बिल इत्तिफ़ाक़ उस की नमाज़ दुरुस्त होगी क्यूं कि येह रिया अस्ले नमाज़ में नहीं बल्कि इसे जल्दी या देर से अदा करने में है।

☆...... नीज़ फ़क़त लोगों के उस के नेक आ'माल से आगाह हो जाने पर उस का ख़ुश होना जब कि उस का असर अमल में न हो तो फ़िक़्ही लिहाज़ से येह अमल भी अदा होगा, फासिद नहीं होगा।

www.dawateislami.net

येह ऐसे **मसाइल** हैं कि फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی इस ए'तिबार से इन में बहस ही नहीं करते और जो लोग इन में बहस करते हैं वोह फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के क़वानीन का लिहाज़ नहीं करते क्यूं कि वोह बन्दों के दिलों की सफ़ाई और उन की इन इबादात में ख़ुलूस पैदा करने के इन्तिहाई हरीस होते हैं जो (इबादात) दिल में पैदा होने वाले इन ख़तरात व ख़दशात और वस्वसों से फ़ासिद हो जाती हैं, लिहाज़ा इन मसाइल पर हमारी बहस भी इसी हिर्स का नतीजा है, और हक़ीक़ी इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के पास है।

तम्बीह 4 :

रिया के मुख़्तलिफ़ द-रजात :

क़ब्ह के ए'तिबार से रिया के मुख़्तलिफ़ द-रजात हैं :

(1)...... ईमान में रिया का सब से क़बीह द-रजा उन **मुनाफ़िक़ीन** का है जिन की मज़म्मत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी पाक किताब में बहुत से मक़ामात पर फ़रमाई, नीज़ इस फ़रमाने इब्रत निशान में इन से वा'दा फ़रमाया :

اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ فِی الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِۚ (پ۵،النسآء:۱۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे तब्क़े में हैं।

येह लोग अगर्चे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़माने के बा'द कम हो गए मगर क़बाहत में इन जैसे लोग कसरत से होने लगे, जैसे कुफ़्रिय्या बिदआत का अक़ीदा रखने वाले म-सलन हश्र का इन्कार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इल्मे जुज़इय्यात का इन्कार और मुख़ा-लफ़त के इज़्हार के बा वुजूद हर शै में इबाहते मुत्लक़ा का अक़ीदा रखना, इन क़बीह अह्वाल के बा'द कोई चीज़ नहीं।

(2)...... **फ़र्ज़ इबादात** पर रियाकारी करने वालों का मरतबा इन के बा'द है जैसे कोई शख़्स ख़ल्वत में इबादत तर्क करने की आदत बनाए और लोगों के सामने मज़म्मत के ख़ौफ़ से उसे अदा कर लिया करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक इस का गुनाह बहुत सख़्त है क्यूं कि येह अमल जहालत की इन्तिहा का पता देता है और ना फ़रमानी के सब से बड़े द-रजे की तरफ़ ले जाता है।

(3)...... **नवाफ़िल** में रियाकारी करने वालों का द-रजा इन के बा'द है, म-सलन कोई तन्हाई में इस वजह से नवाफ़िल अदा करने की आदत बनाए ताकि लोगों के सामने इस में कोताही न हो और सुस्ती दूर हो जाए हालां कि ख़ल्वत में इन के सवाब में रग़बत न हो।

(4)...... इन के बा'द अपनी इबादत में **उम्दा औसाफ़** के ज़रीए रिया में मुब्तला लोगों का द-रजा है जैसे नमाज़ अच्छी तरह अदा करना, इस के अरकान को तवील करना, इस में ख़ुशूअ का इज़्हार करना, लोगों के सामने तमाम अरकान कामिल तौर पर अदा करना और तन्हाई में नफ़्ली इबादत और दीगर

www.dawateislami.net

वाजिबात की कम से कम अदाएगी पर इक्तिफ़ा करना, येह भी जाइज़ नहीं क्यूं कि इस में भी गुज़श्ता मिसालों की त़रह़ मख़्लूक़ को ख़ालिक़ पर मुक़द्दम करना पाया जा रहा है।

कभी शैत़ान इ़बादत करने वाले को धोके में मुब्तला कर देता है और उसे येह ख़याल दिलाता है कि लोगों के सामने इ़बादत अच्छे त़रीक़े से अदा कर ताकि वोह तेरी मज़म्मत न करें, ह़ालां कि अगर वोह सच्चा होता तो ख़ुद तन्हाई में इ़बादत की वजह से इन कमालात से मह़रूमी से बच जाता, लिहाज़ा उस के अह़्वाल के क़राइन इस बात पर दलालत करते हैं कि रियाकारी का अस्ल सबब मख़्लूक़ की ता'रीफ़ पर नज़र रखना है न कि उन के शर से मह़फ़ूज़ रहना।

रियाकारों के द-रजात :

☆...... रियाकारी के बाइ़स रियाकारों के भी चन्द द-रजात हैं, जिन में से सब से बुरा द-रजा येह है कि इन्सान बुराई के ज़रीए़ हु़क्मरानी का क़स्द करे जैसे कोई शख़्स इस लिये तक़्वा और ज़ोह्द का इज़्हार करे ताकि येह उस की पहचान बन जाएं और इन की वजह से उसे आ'ला मन्सब दिया जाए, उस के लिये वसिय्यत की जाए, और उस के सिपुर्द अमानतें की जाएं या स-दक़ात तक़्सीम करने पर उसे मुक़र्रर किया जाए और वोह इन तमाम उमूर से ख़ियानत का क़स्द करे या कोई शख़्स किसी औ़रत या लड़के को पाने के लिये वा'ज़ो नसीह़त करे या इ़ल्म सीखे और सिखाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ऐसे तमाम रियाकार इन्तिहाई बुरे हैं जिन्हों ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त को मा'सिय्यत के ज़ीने और अपने फ़िस्क़ तक पहुंचने का ज़रीआ़ बनाया नीज़ इन की आ़क़िबत निहायत ही बुरी होगी।

☆...... इन के बा'द उस शख़्स का द-रजा है जिसे गुनाह या ख़ियानत की तोहमत लगाई जाए तो वोह इस तोहमत को दूर करने के लिये इत़ाअ़त और स-दक़े का इज़्हार करने लगे।

☆...... इस के बा'द दुन्या की मुबाह़ चीज़ें म-सलन माल या हु़सूले निकाह़ की निय्यत से इ़बादत करने वाले का द-रजा है।

☆...... इस के बा'द उस शख़्स का द-रजा है जो इस निय्यत से इ़बादत, ख़ौफ़े ख़ुदा और तक़्वा ज़ाहिर करे ताकि उसे ह़क़ारत की नज़र से न देखा जाए या इस लिये कि उसे नेक लोगों में शुमार किया जाए और जब वोह तन्हाई में हो तो इन में से कोई भी अ़मल न करे और जिस दिन का रोज़ा रखना सुन्नत है उस के बारे में वोह इस निय्यत से अपनी राय का इज़्हार न करे ताकि उस के बारे में येह गुमान न किया जाए कि इसे नवाफ़िल में कोई दिल चस्पी नहीं।

येह तमाम सूरतें रियाकारी के द-रजात की अस्ल और रियाकारों की अक़्साम के द-रजात हैं। **सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इर्शाद फ़रमाते हैं : ''येह सब लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी और उस के ग़ज़ब के मुस्तह़िक़ हैं।'' और येह बात सख़्त तरीन मोहलिकात में से है।

www.dawateislami.net

तम्बीह 5 :

गुज़श्ता सफ़हात में येह ह़दीसे पाक गुज़र चुकी है : "रिया की एक क़िस्म वोह है जो च्यूंटी की चाल से भी ज़ियादा ख़फ़ीफ़ होती है।"

(مجمع الزوائد، کتاب الزهد، باب مایقول اذ خاف......الخ، الحدیث:۱۷۶۶۹، ج۱۰، ص۳۸۴)

येह वोह क़िस्म है जिस में नुफ़ूस की आफ़ात और क़ुलूब की मुसीबत की वजह से जाहिल तो जाहिल बड़े बड़े उ़-लमा भी फिसल जाते हैं।

रिया की अक़्साम :

रिया या तो **जली** या'नी वाज़ेह़ होती है या **ख़फ़ी** होती है। **जली रिया** से मुराद वोह रिया है जो अ़मल पर उभारे और उस का बाइ़स बने। जब कि **ख़फ़ी रिया** से मुराद वोह रिया है जो अ़मल पर तो न उभारे अलबत्ता मशक़्क़त में कमी कर दे, जैसे कोई शख़्स रोज़ाना नमाज़े तहज्जुद अदा करने का आ़दी हो लेकिन इस त़रह़ कि वोह नमाज़ इस पर गिरां गुज़रती हो, मगर जब उस के हां कोई मेहमान आए या कोई शख़्स उस की तहज्जुद पर मुत्तलअ़ हो जाए तो अब उस की चुस्ती में इज़ाफ़ा हो जाए और इस पर वोह गिरां भी न गुज़रे, नीज़ इस के साथ साथ उस का येह अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये भी हो (तो येह ख़फ़ी रिया है) क्यूं कि अगर सवाब की उम्मीद न होती तो वोह तहज्जुद ही अदा न करता। **ख़फ़ी रिया की पहचान** की अ़लामत येह है कि वोह तहज्जुद अदा करता रहे अगर्चे कोई उस के अ़मल पर मुत्तलअ़ न भी हो।

इस से भी ज़ियादा **ख़फ़ी रिया** वोह है जो न तो आसानी मुहय्या करे और न ही किसी तख़्फ़ीफ़ का सबब बने, इस के बा वुजूद वोह रियाकारी में इस त़रह़ मुब्तला हो जाए जैसे पथ्थर में आग पोशीदा होती है। **इस क़िस्म की ख़फ़ी रिया को पहचानना** अ़लामात के बिग़ैर मुम्किन नहीं होता और इस की सब से बड़ी अ़लामत येह है कि लोगों का किसी की इत़ाअ़त और इ़बादत पर मुत्तलअ़ होना उसे ख़ुश कर दे।

कुछ बन्दे अपने अ़मल में रियाकारी को ना पसन्द करते हैं और इस की मज़म्मत भी करते हैं, उन्हें रियाकारी न तो किसी अ़मल की इब्तिदा पर उभारती है न ही किसी अ़मल पर क़ाइम रखती है, अलबत्ता जब लोग उन की इ़बादत पर मुत्तलअ़ होते हैं तो उन्हें ख़ुशी ह़ासिल होती है इस सूरत में रिया उन के दिल में इस त़रह़ पोशीदा होती है जैसे पथ्थर में आग पोशीदा होती है। येह **ख़ुशी ख़फ़ी रिया पर दलालत** करती है क्यूं कि अगर दिल लोगों की त़रफ़ मु-तवज्जेह न होता तो वोह अपनी इ़बादत पर उन के आगाह होने से ख़ुशी का इज़्हार न करता, चूंकि "लोगों के इस के अ़मल से आगाह होने को ना पसन्द न करने ने" इस के सुकून को ह़-र-कत दी तो येही चीज़ **ख़फ़ी रिया** की रग की ग़िज़ा बन गई, इस क़िस्म की रिया में वोह किसी ऐसे सबब को तलाश करता है जो लोगों के आगाह होने का

www.dawateislami.net

बाइस बन सके, ख़्वाह वोह सबब ता'रीज़ हो या पस्त आवाज़ करना हो या होंटों को खुश्क रखना या तवील तहज्जुद गुज़ारी पर दलालत करने वाली अंगड़ाइयों और जमाइयों के ग़-लबे का इज़्हार हो।

इस से भी बढ़ कर **ख़फ़ी रिया** येह है कि न तो लोगों के आगह होने की ख़्वाहिश हो और न ही इबादत के ज़ाहिर होने पर खुशी हो, अलबत्ता इस बात पर खुशी हो कि मुलाक़ात के वक़्त लोग सलाम करने में पहल करें और उसे ख़न्दा पेशानी से मिलें, नीज़ उस की ता'रीफ़ करें और इस की ज़रूरिय्यात पूरी करने में जल्दी करें, ख़रीदो फ़रोख़्त में उस की रिआयत करें और जब वोह उन के पास आए तो वोह उस के लिये जगह छोड़ दें। जब कोई शख़्स इन मुआ-मलात में ज़र्रा भर कोताही करे तो येह बात उसे उस इबादत के अ़ज़ीम होने की वजह से ना गवार गुज़रे जो वोह पोशीदा तौर पर कर रहा था। गोया उस का नफ़्स इस इबादत के मुक़ाबले में अपना एह़तिराम चाहता है यहां तक कि अगर येह फ़र्ज़ कर लिया जाए कि इस ने येह इबादात न की होतीं तो वोह इस एह़तिराम की ख़्वाहिश भी न रखता।

नोट : जब भी मख़्लूक़ से मु-तअ़ल्लिक़ चीज़ों में इताअ़त का पाया जाना उस के न पाए जाने की तरह न हो जाए तो बन्दा न तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इल्म पर क़नाअ़त कर सकता है और न ही च्यूंटी की चाल से ज़ियादा ख़फ़ीफ़ रिया के शाइबे से ख़ाली हो सकता है।

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इर्शाद फ़रमाते हैं : ''इन तमाम सूरतों में अज्र ज़ाएअ़ हो सकता है और इस से सिर्फ़ सिद्दीक़ीन ही मह़फ़ूज़ रह सकते हैं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन क़ारियों से इर्शाद फ़रमाएगा क्या तुम्हें सौदा सस्ता नहीं दिया जाता था ? क्या तुम्हें सलाम करने में पहल नहीं की जाती थी ? क्या तुम्हारी ह़ाजतें पूरी नहीं की जाती थीं ?''

《**64**》...... एक ह़दीसे (क़ुदसी) में है : ''तुम्हारे लिये कोई अज्र नहीं क्यूं कि तुम ने अपना अज्र पूरा पूरा वुसूल कर लिया।''

लिहाज़ा मुख़्लिस बन्दे हमेशा **ख़फ़ी रिया** से डरते रहते हैं और येह कोशिश करते हैं कि लोग इन के नेक आ'माल के सिल्सिले में इन्हें धोका न दे सकें। दीगर लोग जितनी कोशिश अपने गुनाह छुपाने में करते हैं येह उन से ज़ियादा अपनी नेकियां छुपाने के ह़रीस होते हैं और इस की वजह सिर्फ़ येह है कि येह लोग अपनी नेकियों को ख़ालिस करना चाहते हैं ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन लोगों के सामने इन्हें अज्र अ़ता फ़रमाए क्यूं कि इन्हें इस बात पर यक़ीन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो इख़्लास के साथ किये होते हैं और वोह येह भी जानते हैं कि क़ियामत के दिन वोह सख़्त मोह़ताज और भूके होंगे और इन का माल व औलाद इन्हें कुछ काम न आएगा सिवाए उस के जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ल्बे सलीम (या'नी गुनाहों से मह़फ़ूज़ दिल) ले कर ह़ाज़िर होगा और न कोई बाप अपनी औलाद के काम आएगा यहां तक कि सिद्दीक़ीन को भी

www.dawateislami.net

अपनी ही फ़िक्र होगी हर शख़्स **नफ़्सी नफ़्सी** पुकार रहा होगा, जब सिद्दीक़ीन का येह ह़ाल होगा तो दीगर लोग किस ह़ाल में होंगे ?

हर वोह शख़्स जो अपने दिल में बच्चों, दीवानों और दीगर लोगों के अपने अ़मल पर आगाह होने से फ़र्क़ मह़सूस करता हो वोह रिया के शाइबे में मुब्तला होता है क्यूं कि अगर वोह येह जान लेता कि नफ़अ़ व नुक़्सान देने वाला और हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और दूसरे किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखते तो उस के नज़्दीक बच्चों और दीगर लोगों का आगाह होना बराबर होता और बच्चों या बड़ों के मुत्तलअ़ होने से उस के दिल पर कोई फ़र्क़ न पड़ता। रिया का हर शाइबा अ़मल को फ़ासिद और अज्र को ज़ाएअ़ करने वाला नहीं होता, अपने आ'माल पर ख़ुशी कभी क़ाबिले ता'रीफ़ होती है और कभी क़ाबिले मज़म्मत।

क़ाबिले ता'रीफ़ ख़ुशी जैसे (1)...... किसी को येह मुशा-हदा ह़ासिल हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के अच्छे अ़मल को ज़ाहिर करने के लिये लोगों को इस के अ़मल पर मुत्तलअ़ किया है और इस पर करम फ़रमाया है, ह़ालां कि वोह अपनी इ़बादत व मा'सिय्यत को दिल में छुपाए हुए था लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने महूज़ अपने करम से गुनाहों पर पर्दा डाल कर उस की इ़बादत को ज़ाहिर फ़रमा दिया और इस से बड़ा एह़सान किसी पर क्या होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे के गुनाहों को छुपा दे और इ़बादत को ज़ाहिर कर दे लिहाज़ा बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस पर नज़रे रह़मत की वजह से ख़ुश हो लोगों की ता'रीफ़ और उन के दिलों में इस के लिये जो मक़ाम व मर्तबा है इस की वजह से ख़ुश न हो (तो येह रिया नहीं) जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط (پ۱۱، یونس:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें।

(2)...... या ख़ुशी का क़ाबिले ता'रीफ़ होना इस वजह से है कि बन्दा येह सोच कर ख़ुश हो जाता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब दुन्या में इस के गुनाहों को छुपाया और इस की नेकियों को ज़ाहिर फ़रमाया तो आख़िरत में भी उस के साथ येही सुलूक फ़रमाएगा, चुनान्चे,

《**65**》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे के गुनाह की दुन्या में पर्दा पोशी फ़रमाता है आख़िरत में भी उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।" (كنزالعمال، كتاب التوبة، قسم الاقوال،باب فى فضلهاوالترغيب فيها الحديث:١٠٢٩٦،ج٤،ص٩٧،بدون"ذنباً")

(3)...... या फिर बन्दा येह ख़याल करे कि मेरे नेक आ'माल पर मुत्तलअ़ होने वालों को मेरी इक़्तिदा में रग़बत मिलेगी और इस त़रह़ मुझे दुगना सवाब मिलेगा एक सवाब तो इस बात का होगा कि इस का मक़्सूद इब्तिदा में अ़मल को पोशीदा रखना था और दूसरा सवाब उस के ज़ाहिर

www.dawateislami.net

होने और लोगों की इक्तिदा की वजह से होगा क्यूं कि इबादत व ताअ़त में जिस की पैरवी की जाती है उसे उन पैरवी करने वालों का सवाब भी मिलता है और उन के सवाब में भी कमी नहीं होती लिहाज़ा इस ख़याल से ख़ुशी ह़ासिल होना बिल्कुल दुरुस्त है क्यूं कि नफ़्अ़ के आसार का ज़ुहूर लज़्ज़त बख़्शता है और ख़ुशी का सबब बनता है।

(4)...... इसी त़रह़ कभी बन्दा इस वजह से ख़ुश होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे ऐसे अ़मल की तौफ़ीक़ दी है जिस की वजह से लोग इस की ता'रीफ़ कर रहे हैं और इस की वजह से इस से मह़ब्बत करते हैं क्यूं कि बा'ज़ गुनहगार मुसल्मान ऐसे भी होते हैं जो इबादत गुज़ार लोगों को देख कर उन का मज़ाक़ उड़ाते और उन्हें ईज़ा देते हैं, इस सूरत में **इख़्लास की अ़लामत** येह है कि जिस त़रह़ इसे अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुशी ह़ासिल होती है इसी त़रह़ दूसरों की ता'रीफ़ भी इस के लिये बाइसे मुसर्रत हो।

क़ाबिले मज़म्मत ख़ुशी येह है कि आदमी लोगों के नज़्दीक अपने मक़ाम व मर्तबा पर ख़ुश हो और येह ख़्वाहिश करे : "वोह इस की ता'रीफ़ व ता'ज़ीम करें, इस की ह़ाजतें पूरी करें, आ-मदो रफ़्त में उसे अपने आगे करें ह़ालां कि येह एक ना पसन्दीदा ख़याल है।

गुज़श्ता तफ़्सील से मा'लूम हुवा कि अ़मल छुपाने का मक़्सद इख़्लास ह़ासिल करना और रिया से नजात पाना है जब कि इबादत ज़ाहिर करने का फ़ाएदा येह हो कि लोग इस की पैरवी करें और उन में नेकी की रग़बत पैदा हो मगर इस में रियाकारी की आफ़त है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन दोनों क़िस्मों के लोगों की ता'रीफ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ (پ۳،البقرة:۲۷۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है।

मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में अ़मल छुपाने की ता'रीफ़ फ़रमाई है क्यूं कि इस में उन अ़ज़ीम आफ़ात से तह़फ़्फ़ुज़ पाया जाता है जिन से बहुत कम लोग बच पाते हैं इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात ऐसे आ'माल के इज़्हार की भी ता'रीफ़ की जाती है जिन को छुपाना दुश्वार होता है जैसे जिहाद, ह़ज, जुमुआ़ और जमाअ़त वग़ैरा ऐसे उमूर की अदाएगी में जल्दी और रग़बत ज़ाहिर करना जाइज़ है मगर शर्त़ येह है कि इस में रिया का शाइबा न हो।

अल ग़रज़ जब अ़मल इन तमाम चीज़ों से पाक हो और उसे ज़ाहिर करने में किसी की ईज़ा रसानी भी न हो तो अब अगर इस इज़्हार में लोगों को उस अ़मल पर उभारने की निय्यत हो ताकि वोह इस की इक्तिदा और पैरवी करें बशर्ते कि उस का शुमार उन उ़-लमा या नेक लोगों में होता हो कि जिन की पैरवी करने में तमाम लोग जल्दी करते हैं, लिहाज़ा ऐसी सूरत में अ़मल को ज़ाहिर करना अफ़्ज़ल है क्यूं कि इस की एक वजह तो येह है कि येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन के

www.dawateislami.net

(उ़लूमे नुबुव्वत के) वारिसीन का मक़ाम है जो कि कामिल तरीन औसाफ़ से ख़ास हैं, और इस की दूसरी वजह येह है क्यूं कि इस का नफ़्अ़ मु-तअ़द्दी होता है। जिस की दलील येह है :

﴾66﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने कोई अच्छा त़रीक़ा जारी किया तो उसे न सिर्फ़ उस (अच्छे काम) का अज्र मिलेगा बल्कि क़ियामत तक उस पर अ़मल करने वालों का अज्र भी मिलेगा।''

(سنن ابن ماجه، ابواب السنة، باب من سن سنة ......الخ، الحديث:٢٠٣، ص٢٤٨٩، بدون "يوم القيامة")

अगर मज़्कूरा शराइत़ में से कोई शर्त़ मफ़्क़ूद हो तो अ़मल छुपाना अफ़्ज़ल है। इस तफ़्सील को उन लोगों के क़ौल पर मह़मूल किया जाएगा जिन्हों ने अ़मल छुपाने को मुत़्लक़न अफ़्ज़ल बयान किया है, अलबत्ता अ़मल के बे जा इज़्हार का मर्तबा उ़-लमा और इ़बादत गुज़ारों के क़दम फिसलाने वाला है क्यूं कि येह ह़ज़रात इज़्हार में क़वी लोगों से मुशा-बहत इख़्तियार करते हैं ह़ालां कि उन के दिल इख़्लास में पुख़्ता नहीं होते लिहाज़ा रियाकारी की वजह से उन के अज्र बरबाद हो जाते हैं और येह बात हर एक नहीं समझ पाता।

इस में **ह़क़ की अ़लामत** येह है कि जो शख़्स बज़ाते ख़ुद कोई अ़मल बजा लाए येह जानते हुए कि अगर उस के हम अ़स्र लोगों में से कोई दूसरा शख़्स ऐसा करता तो भी उसे कोई फ़र्क़ न पड़ता **तो वोह मुख़्लिस** है और अगर अपने नफ़्स को ऐसा नहीं समझता **तो रियाकार** है क्यूं कि अगर उसे मख़्लूक़ की जानिब तवज्जोह का ख़याल न होता तो वोह ख़ुद को ग़ैर से बे नियाज़ समझते हुए अपने आप को तरजीह़ न देता लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि नफ़्स के धोके से डरे क्यूं कि येह बहुत बड़ा धोकेबाज़ है और शैत़ान तो पहले ही घात लगाए बैठा है, चूंकि दिल पर हुब्बे जाह ग़ालिब होती है लिहाज़ा ज़ाहिरी आ'माल आफ़ात व ख़त़रात से बहुत कम सलामत रहते हैं जब कि सलामती तो आ'माल को पोशीदा रखने में ही है, **अ़मल से फ़ारिग़ होने के बा'द** इस के बारे में गुफ़्त-गू करना भी अ़मल का इज़्हार ही है बल्कि येह इस ए'तिबार से ज़ियादा ख़त़रनाक है कि बा'ज़ अवक़ात बन्दा ज़बान से ज़ियादती और मुबा-लग़ा कर बैठता है ह़ालां कि नफ़्स को तो दा'वा के इज़्हार ही से लज़्ज़त ह़ासिल होती है, और इस में इस ए'तिबार से ख़त़रा कम है कि अ़मल से फ़ारिग़ होने के बा'द रिया से पिछला ख़ालिस अ़मल बरबाद नहीं होता।

याद रखिये ! बा'ज़ लोग रिया के ख़ौफ़ से अ़मल छोड़ देते हैं येह कोई अच्छी बात नहीं क्यूं कि **आ'माल** दो त़रह़ के होते हैं या तो **उन का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ आ़मिल की ज़ात** से होता है किसी ग़ैर से नहीं होता, बल्कि उन की अपनी ज़ात में भी कोई लज़्ज़त नहीं होती जैसे रोज़ा, नमाज़ और ह़ज वग़ैरा, अब अगर **ऐसे अ़मल की इब्तिदा का बाइस** सिर्फ़ लोगों को दिखाना हो तो येह ख़ालिस गुनाह है लिहाज़ा उसे छोड़ना वाजिब है और इसी कैफ़िय्यत और ह़ालत पर रहते हुए उस के लिये कोई रुख़्सत नहीं और अगर **अ़मल का बाइस** तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

की क़ुरबत की निय्यत हो मगर अ़मल शुरूअ़ करते वक़्त रिया आ़रिज़ आ गई और बन्दा इस आ़रिज़ को दफ़्अ़ करने के लिये कोशिश करने लगा, या इसी त़रह़ अगर येह निय्यत अ़मल के दौरान आ़रिज़ हो तो वोह अपने नफ़्स को अ़मल पूरा करने तक ज़बर दस्ती इख़्लास पर माइल करे क्यूं कि शैत़ान पहले तुम्हें अ़मल छोड़ने का कहता है जब तुम उस की ना फ़रमानी करते हो और अ़ज़्मे मुसम्मम के साथ अ़मल शुरूअ़ कर देते हो तो वोह तुम्हें रियाकारी की दा'वत देता है जब तुम उस से मुंह फैरते हो और अ़मल से फ़ारिग़ होने तक उस से जिहाद करते हो तो वोह तुम्हें नदामत दिलाता है और कहता है कि तुम रियाकार हो और जब तक तुम आयन्दा ऐसा अ़मल छोड़ न दो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस अ़मल से कोई नफ़्अ़ न देगा इस त़रह़ वोह तुम से अपनी ग़रज़ पूरी करने की कोशिश करता है। लिहाज़ा शैत़ान से होशियार रहो क्यूं कि इस से बड़ा मक्कार कोई नहीं, और अपने दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या को लाज़िम कर लो कि जब वोह किसी दीनी सबब से तुम में अ़मल का जज़्बा पैदा फ़रमाए तो उसे हरगिज़ न छोड़ो बल्कि अपने नफ़्स को उस अ़मल में इख़्लास पर माइल करो और अपने और अपने बाप ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दुश्मन शैत़ान की चालों से धोका न खाओ।

या फिर **आ'माल का तअ़ल्लुक़ मख़्लूक़ से** होता है (न कि आ़मिल की ज़ात से) इन की आफ़ात और ख़त़रात ज़ियादा हैं और इन में से सब से बड़ा ख़त़रा ख़िलाफ़त में है, फिर क़ज़ा में, फिर वा'ज़ व नसीह़त और तदरीस व इफ़्ता में और फिर माल ख़र्च करने में, लिहाज़ा जिसे न दुन्या अपनी त़रफ़ माइल कर सके न इस पर लालच ग़ालिब आ सके और न ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत उसे रोक सके और वोह दुन्या और दुन्या वालों सब से मुंह फैर ले और फिर जब ह़-र-कत करे तो ह़क़ के लिये और सुकून इख़्तियार करे तो भी ह़क़ के लिये, तो येही वोह शख़्स है जो दुन्यवी और उख़्रवी विलायत का मुस्तह़िक़ है और जिस में इन में से कोई शर्त़ मफ़्क़ूद हो उस के लिये येह दोनों विलायतें सख़्त नुक़्सान देह हैं, लिहाज़ा उसे चाहिये कि वोह उन से बाज़ रहे और धोका न खाए, क्यूं कि उस का नफ़्स उसे इन मुआ़-मलात में अ़द्ल, ह़ुक़ूक़ पूरे करने, रिया के शाइबों और लालच से मह़फ़ूज़ रहने का ख़याल दिलाता है ह़ालां कि नफ़्स बहुत बड़ा झूटा है लिहाज़ा उसे चाहिये कि वोह इस से बचता रहे क्यूं कि नफ़्स के नज़्दीक जाहो ह़श्मत से ज़ियादा लज़ीज़ शै कोई नहीं ह़ालां कि बा'ज़ अवक़ात जाहो ह़श्मत की मह़ब्बत ही उसे हलाकत में डाल देती है।

इसी लिये जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक शख़्स ने नमाज़े फ़ज्र से फ़राग़त के बा'द लोगों को नसीह़त करने की इजाज़त चाही तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को मन्अ़ फ़रमा दिया, तो उस ने अ़र्ज़ की : "क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे लोगों को वा'ज़ करने से रोक रहे हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं तुम फूल कर आस्मान तक न पहुंच जाओ।"

लिहाज़ा इन्सान को वा'ज़ो नसीह़त और इ़ल्म के बारे में वारिद फ़ज़ाइल से धोका नहीं खाना चाहिये क्यूं कि इन के ख़त़रात सब से ज़ियादा हैं, हम किसी को येह आ'माल छोड़ने का नहीं कह रहे क्यूं कि इन में फ़ी नफ़्सिही कोई आफ़त नहीं बल्कि आफ़त तो वा'ज़ो नसीह़त, दर्स व इफ़्ता

www.dawateislami.net

और रिवायते ह़दीस में रियाकारी में मुब्तला होने में है, लिहाज़ा जब तक आदमी के पेशे नज़र कोई दीनी मन्फ़अ़त हो तो उसे इन आ'माल को तर्क नहीं करना चाहिये, अगर्चे इस में रियाकारी की मिलावट भी हो जाए बल्कि हम तो उसे इन आ'माल के बजा लाने के साथ साथ नफ़्स से जिहाद करने, इख़्लास अपनाने और रिया के ख़त़रात बल्कि इस के शाइबे तक से भी बचने का कह रहे हैं।

उमूर तीन त़रह़ के होते हैं :

(1) **विलायात :** सब से बड़ी आफ़त इसी में है। लिहाज़ा कमज़ोर लोगों को इसे सिरे से छोड़ ही देना चाहिये,

(2) **नमाज़ और दीगर बदनी इबादात :** इन्हें न तो कोई कमज़ोर छोड़ सकता है न ही त़ाक़त वर मगर वोह इन में पैदा होने वाले रिया के शाइबे को दूर करने के लिये कोशिश कर सकते हैं,

(3) **ज़रूरत से ज़ाइद उ़लूम के ह़ुसूल की कोशिश :** येह इन दोनों का दरमियानी मर्तबा है मगर येह विलायात के ज़ियादा मुशाबेह है और आफ़ात से ज़ियादा क़रीब है, लिहाज़ा कमज़ोर लोगों के ह़क़ में इस से बचना ही ज़ियादा मुनासिब है,

बाक़ी रह गया चौथा मर्तबा या'नी **माल जम्अ़ करना और उसे ख़र्च करना :** तो बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इसे ज़िक्र और नवाफ़िल में मश्ग़ूल होने से **अफ़्ज़ल क़रार दिया है**। जब कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने उन के बर अ़क्स फ़रमाया है। ह़क़ येह है कि इस में भी बड़ी आफ़ात हैं म-सलन ता'रीफ़ की तमन्ना, दिलों को अपनी जानिब माइल करना और ख़ुद को सख़ावत के साथ मुमताज़ करना वग़ैरा, लिहाज़ा जो इन आफ़ात से छुटकारा पा ले तो उस के लिये माल जम्अ़ करना और उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करना अफ़्ज़ल है, क्यूं कि येह बिछड़ों को मिलाने, मुस्तह़िक़ीन की ज़रूरत पूरी करने और उन की मदद से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ुर्ब पाने का ज़रीआ़ है और जो इन आफ़ात से ख़लासी न पा सके उसे इ़बादात को लाज़िम पकड़ना और इन से ह़ासिल होने वाले आदाब व कमालात के लिये कुशा-दगी से फ़ारिग़ होना ही ज़ियादा मुनासिब है, इ़ल्म के मुआ़-मले में **आ़लिम के इख़्लास की अ़लामत** येह है कि अगर उस से अच्छा कोई वाइज़ या उस से ज़ियादा इ़ल्म वाला कोई शख़्स ज़ाहिर हो जाए और लोग उसे ज़ियादा पसन्द करने लगें तो वोह उस से ख़ुश हो और ह़सद न करे, अलबत्ता उस पर रश्क करने में कोई ह़रज नहीं, जब कि रश्क से मुराद येह है कि वोह आ़लिम अपने लिये उस जैसे इ़ल्म की तमन्ना करे, और **एक अ़लामत येह भी है** कि अगर इस की मजलिस में अकाबिर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی आ जाएं तो इस का कलाम मु-तग़य्यर न हो बल्कि वोह सारी मख़्लूक़ को एक ही नज़र से देखे और इस बात को पसन्द न करे कि रास्तों में लोग इस के पीछे चलें।

www.dawateislami.net

तम्बीह 6 :

मज़्कूरा बाला आयात, अहादीसे मुबा-रका और अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के कलाम से आप पर ज़ाहिर हो चुका है कि रियाकारी आ'माल को बरबाद करने वाली और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी और ला'नत व दूरी का सबब है, नीज़ येह मोहलिक कबीरा गुनाहों में से एक है और येह वोह औसाफ़ हैं जिन के इज़ाले के लिये तौफ़ीक़ दिये गए हर शख़्स को मुजा-हदे के ज़रीए कोशिश करनी चाहिये और इस मुआ-मले में ख़ूब मशक़्क़त उठानी चाहिये क्यूं कि इस से वोही शख़्स महफ़ूज़ रह सकता है जिसे अग़राज़ और मख़्लूक़ के ख़याल से पाक ख़ालिस क़ल्बे सलीम अ़ता हुवा और जो हर वक़्त रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की तजल्लियात के मुशा-हदे में मुस्तग़रक़ रहता हो, हालां कि ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जब कि मख़्लूक़ की ग़ालिब अक्सरिय्यत इन आफ़ात में मुब्तला है क्यूं कि बच्चे को ज़ईफ़ुल अ़क़्ल, मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र रखने वाला और कसीरुत्तमअ़ बना कर पैदा किया गया है, लिहाज़ा जब वोह लोगों को दूसरों के लिये बनावटी अ़मल करते देखता है तो उस पर भी बनावटी अ़मल की महब्बत ग़ालिब हो जाती है और फिर येही बात उस के ज़ेहन में पुख़्ता हो जाती है, फिर जब उस की अ़क़्ल कामिल होती है और उसे ह़क़ की पैरवी की तौफ़ीक़ मिलती है तो वोह उसे मोहलिक मरज़ समझने लगता है और ऐसी दवा का मोहताज होता है जो इस मरज़ को ज़ाइल कर दे और ता'रीफ़ की लज़्ज़त, जाह की तमन्ना और लोगों के अम्वाल पर नज़र रखने जैसे फ़ासिद ख़यालात को ख़त्म कर के इस की जड़ें काट दे।

रिया का इ़लाज

रियाकारी का इ़लाज दो क़िस्म की दवाओं से हो सकता है :

(1) इ़ल्मी दवा और (2) अ़-मली दवा

इ़ल्मी दवा :

वोह नाफ़ेअ़ दवा येह है कि वोह **रियाकारी से मुंह फैर ले** क्यूं कि येह नुक़्सान देह और दिल की इस्लाह़ खो देने वाली, दुन्या में तौफ़ीक़ और आख़िरत में बुलन्द द-रजात से महरूम कर देने वाली और सख़्त अ़ज़ाब, शदीद ना राज़गी और ज़ाहिरी रुस्वाई का बाइ़स बनने वाली है कि जब रियाकार को लोगों के सामने बुला कर कहा जाएगा : **''ऐ फ़ाजिर !** ऐ धोकेबाज़ ! ऐ रियाकार ! **क्या तुझे कोई ह़या न आई** जब तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त के बदले दुन्या का साज़ो सामान ख़रीदा ? तूने बन्दों के दिलों पर नज़र रखी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नज़रे रह़मत और उस की इत़ाअ़त का मज़ाक़ उड़ाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बुग़्ज़ रखा और उस के बन्दों से महब्बत की, लोगों के लिये ऐसी चीज़ों से आरास्ता हुवा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बुरी थीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूरी इख़्तियार कर के लोगों की **क़ुरबत** पाई।''

अगर **रिया की बुराई फ़क़त़ येह होती** कि इस की वजह से कोई एक इ़बादत ही बरबाद होती तब भी इस का नुक़्सान काफ़ी था क्यूं कि क़ियामत के दिन इन्सान नेकियों के पलड़े को भारी करने के लिये एक एक इ़बादत का मोहताज होगा वरना जहन्नम में जा पड़ेगा। जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **को नाराज़ कर के मख़्लूक़ की रिज़ा चाहता है, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ख़ुद भी नाराज़ होता

www.dawateislami.net

है और लोगों को भी उस पर नाराज़ कर देता है क्यूं कि लोगों को राज़ी रखना एक ऐसी चीज़ है जो ह़ासिल नहीं हो सकती, हो सकता है वोह किसी एक क़ौम को राज़ी करे तो दूसरी क़ौम नाराज़ हो जाए, फिर लोगों की त़रफ़ से मद्ह़ से कोई नफ़्अ़ न होने के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मज़म्मत और ग़ज़ब के मुक़ाबले में लोगों की त़रफ़ से ता'रीफ़ को तरजीह़ देने में इस की कौन सी ग़रज़ पोशीदा है ? न तो इसे इस ता'रीफ़ से नफ़्अ़ ह़ासिल हो सकता है और न ही वोह इस से कोई नुक़्सान दूर कर सकती है क्यूं कि नफ़्अ़ देने और नुक़्सान से बचाने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है, उसी का ह़क़ है कि सिर्फ़ उसी का क़स्द किया जाए क्यूं कि वोही दिलों को मन्अ़ और अ़त़ा के साथ मुसख़्ख़र करने वाला है और उस के सिवा कोई राज़िक़, मो'त़ी, नाफ़ेअ़ और ज़ार नहीं। **ह़क़ीक़त येही है** कि मख़्लूक़ से त़मअ़ रखने वाला इन्सान ज़िल्लतो रुस्वाई या एह़सान जतलाए जाने के बोझ व इहानत से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता लिहाज़ा वोह झूटी और फ़ासिद उम्मीद के बदले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन्आ़मात कैसे छोड़ देता है ? ऐसा शख़्स कभी तो अपना मक़्सद पा लेता है और कभी नाकाम रहता है, जैसे अगर लोग उस के दिल की रिया पर मुत्तलअ़ हो जाएं तो उसे धुत्कार दें, उस पर नाराज़ हों और उस की मज़म्मत करते हुए उसे मह़रूम कर दें। लिहाज़ा जो इन बातों को बसीरत की निगाह से देखेगा लोगों में उस की रग़बत ख़त्म हो जाएगी और वोह सच्चाई को क़बूल कर लेगा।

अ़-मली दवा :

वोह दवा येह है कि **बन्दा इबादत को इस त़रह़ छुपाने की आ़दत डाले जैसे अपने गुनाह छुपाने की आ़दत डालता है** यहां तक कि उस का दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्म और उस की बसीरत पर क़नाअ़त करने लगे और उस का नफ़्स ग़ैरुल्लाह के उस अ़मल को जान लेने के सिल्सिले में उस से नज़ाअ़ न करे और इसी त़रह़ अ़मल को छुपाने में तकल्लुफ़ से काम ले अगर्चे इब्तिदाअन उस पर येह काम गिरां गुज़रेगा मगर जो एक मुद्दत तक इस पर ब तकल्लुफ़ सब्र करे इस से उस की गिरानी दूर हो जाएगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्ल से इस मुआ़-मले में उस की मदद फ़रमाएगा और येही मदद उस की नजात का सबब बन जाएगी क्यूं कि

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ط (پ۱۳، الرعد:۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब तक वोह ख़ुद अपनी ह़ालत न बदल दें।

इस सिल्सिले में जब बन्दे की जानिब से मुजा-हदा और **रब्बे करीम** عَزَّوَجَلَّ के दर पर दाइमी ह़ाज़िरी होगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से हिदायत की दौलत नसीब होगी और वोह उस के लिये अपनी बारगाह में ह़ाज़िरी की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा देगा क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नेकों का अज्र ज़ाएअ़ नहीं करता।

وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ○ (پ۵، النسآء:۴۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब देता है।

www.dawateislami.net

इख़्लास की अहम्मिय्यत और फ़ज़ाइल

जब हम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल, उस की ताईद, मदद व इआनत और तौफ़ीक़ से इस बद तरीन कबीरा गुनाह और इस के उन मु-तअ़ल्लिक़ात के बारे में गुफ़्त-गू मुकम्मल कर ली जिन की मख़्लूक़ को हाजत पेश आती है और किताब के मौज़ूअ़ के ए'तिबार से इस पर तफ़्सीली कलाम कर लिया अगर्चे रियाकारी और इस के तवाबेअ़ के बयान में खुसूसन "**एहयाओ उ़लूमिद्दीन**" में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के कलाम की ब निस्बत हमारा कलाम निहायत ही मुख़्तसर है अब हम अपने कलाम का इख़्तिताम इख़्लास की मद्ह़, मुख़्लिसीन के सवाब और उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तय्यार कर्दा ने'मतों पर दलालत करने वाली चन्द आयात और अहादीसे मुबा-रका से करना चाहते हैं ताकि येह मख़्लूक़ के लिये इख़्लास को अपनाने और रियाकारी से दूरी इख़्तियार करने का सबब बन सके क्यूं कि अश्या की कामिल मा'रिफ़त इन की अज़्दाद ही से हासिल होती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۵ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ0 (پ۳۰،البينة:۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन लोगों को तो येही हुक्म हुवा कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर अक़ीदा लाते एक तरफ़ के हो कर और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और येह सीधा दीन है।

और फ़रमाता है

اِنْ تُخْفُوْا مَا فِىْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ط (پ:۳،ال عمران:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह को सब मा'लूम है।

﴾67﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की वोह निय्यत करे तो जिस की हिजरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ होगी तो उस की हिजरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही के लिये है और जिस की हिजरत दुन्या पाने या किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये होगी तो उस की हिजरत उसी की तरफ़ है जिस की तरफ़ उस ने हिजरत की।" (صحيح البخارى ، كتاب الايمان، باب ماجاء ان الاعمال......الخ،الحديث:٥٤،ص٧)

﴾68﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुसल्मानों का एक गुरौह जिहाद करते हुए जब एक बियाबान अ़लाक़े में पहुंचेगा तो उस गुरौह

www.dawateislami.net

के अगले पिछले लोग ज़मीन में धंस जाएंगे।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन के अगलों, पिछलों को ज़मीन में कैसे धंसाया जाएगा ह़ालां कि उन के साथ उन के मवेशी और ऐसे लोग भी होंगे जो उन में से नहीं होंगे ?" दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उन के अव्वलीन व आख़िरीन को ज़मीन में धंसा दिया जाएगा फिर उन्हें उन की निय्यतों पर उठाया जाएगा।"

(صحیح البخاری ،کتاب البیوع، باب ماذکر فی الاسواق،الحدیث:۲۱۱۸،ص۱۶۵)

《69》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ऐसे लोगों के बारे में दरयाफ़्त किया गया जो बहादुरी जतलाने, ह़मिय्यत और रियाकारी के लिये जिहाद करते हैं कि इन में से कौन राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुजाहिद है ? तो ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन की सर बुलन्दी के लिये लड़े वोह मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह है।" एक नुस्ख़े में है : "वोही राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुजाहिद है।" (صحیح مسلم ،کتاب الامارۃ ،باب من قاتل لتکون کلمۃ اللہ ......الخ،الحدیث : ۴۹۲۰،ص۱۰۱۸)

《70》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है जब कि मुनाफ़िक़ का अ़मल उस की निय्यत से बेहतर है और चूंकि हर एक अपनी निय्यत के मुत़ाबिक़ अ़मल करता है लिहाज़ा मोमिन जब कोई अ़मल करता है तो उस का दिल रोशन हो जाता है।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۵۹۴۲،ج۶،ص۱۸۵)

《71》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है।" (جامع الاحادیث،قسم الاقوال،الحدیث:۳۵۵۴،ج۲،ص۱۹)

《72》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की निय्यत पर दुन्या अ़त़ा फ़रमा देता है लेकिन दुन्या की निय्यत पर आख़िरत अ़त़ा फ़रमाने से इन्कार कर देता है।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،حرف الزاي، باب الزھد،الحدیث:۶۰۵۳،ج۳،ص۷۵)

《73》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،حرف النون باب النیۃ،الحدیث:۷۲۴۵،ج۳،ص۱۶۹)

《74》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अच्छी निय्यत अ़र्श से चिमट जाती है पस जब कोई बन्दा अपनी निय्यत को सच्चा कर देता (या'नी अपनी निय्यत के मुत़ाबिक़ अ़मल करता) है तो अ़र्श हिलने लग जाता है, फिर उस बन्दे को बख़्श दिया जाता है।" (تاریخ بغداد،القاسم بن الحن،الحدیث:۶۹۲۶،ج۱۲،ص۴۴۴)

www.dawateislami.net

《75》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तअ़ज्जुब की बात है कि मेरी उम्मत के कुछ लोग कु़रैश के एक शख़्स की (हलाकत की) ख़ातिर बैतुल्लाह शरीफ़ का क़स्द करेंगे जिस (या'नी ह़ज़रते इमाम महदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने बैतुल्लाह शरीफ़ में पनाह ले रखी होगी लेकिन जब वोह लोग एक बियाबान में पहुंचेंगे तो उन्हें ज़मीन में धंसा दिया जाएगा।" हम (या'नी सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! रास्ते में कभी कुछ और लोग भी तो क़ाफ़िले के साथ मिल जाते हैं (तो क्या वोह भी उन के साथ हलाक हो जाएंगे ?)" शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! उन में बे कसो मजबूर भी होंगे और मुसाफ़िर भी, वोह सब यक बारगी हलाक हो जाएंगे और फिर (क़ियामत के दिन) मुख़्तलिफ़ जगहों से ज़ाहिर होंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें उन की निय्यतों के मुत़ाबिक़ उठाएगा।"

(صحیح مسلم ،کتاب الفتن، باب الخسف بالجیش......الخ،الحدیث:۷۲۴٤،ص۱۱۷۷)

《76》...... साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाता है तो वोह अ़ज़ाब उस क़ौम में शामिल तमाम अफ़राद को घेर लेता है फिर उन्हें उन की निय्यतों के मुत़ाबिक़ उठाया जाएगा।" (صحیح البخاری،کتاب الفتن، باب اذا انزل الله......الخ،الحدیث:۷۱۰۸،ص۵۹۳،"نیاتهم" بدله" اعمالهم")

《77》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ, थोड़ा अ़मल भी तुम्हारे लिये काफ़ी होगा।"

(المستدرک ،کتاب الرقاق ، الحدیث ۷۹۱٤،ج۵،ص۴۳۵)

《78》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَل के लिये अपने आ'माल में इख़्लास पैदा करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही अ़मल क़बूल फ़रमाता है जो उस के लिये इख़्लास के साथ किया जाता है।"

(سنن الدارقطنی،کتاب الطهارت، باب النیة ،الحدیث:۱۳۰،ج۱،ص۷۳)

《79》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास के साथ अ़मल करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो उस के लिये इख़्लास के साथ किये जाते हैं और येह मत कहा करो कि मैं ने येह काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रिश्तेदारी की वजह से किया है।"

(سنن الدارقطنی،کتاب الطهار ت ، باب النیة ،الحدیث:۱۳۰،ج۱،ص۷۳)

《80》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही अ़मल क़बूल फ़रमाता है जो इख़्लास के साथ और उस की रिज़ा के लिये किया जाता है।" (سنن النسائی،کتاب الجهاد،الحدیث:۳۱٤۲،ص ۲۲۹۰)

www.dawateislami.net

《81》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत इख़्लास के साथ करो, पांच वक़्त की नमाज़ क़ाइम करो, खुशदिली से अपने अम्वाल की ज़कात अदा करो, र-मज़ान के रोज़े रखो और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के घर का हज करो तो यक़ीनन अपने रब عَزَّوَجَلَّ की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب الاخلاص، الحديث:٥٢٥٦،ج٣،ص١٢)

《82》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इख़्लास के साथ एक हस्ती या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अमल करो वोह तमाम लोगों के मुक़ाबले में तुम्हें काफ़ी होगा।" (الكامل فی الضعفاء الرجال، ج٨،ص٣٠٧)

《83》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आ'माल एक बरतन की मानिन्द होते हैं या'नी जब बरतन का पैंदा अच्छा होगा तो उस का बालाई हिस्सा भी अच्छा होगा।" (سنن ابن ماجة ، ابواب الزهد، باب التوقی علی العمل ، الحديث:٤١٩٩،ص٢٧٣٢)

《84》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आ'माल अपने अन्जाम के ए'तिबार से बरतन की मानिन्द होते हैं या'नी जब उस का बालाई हिस्सा पाकीज़ा होगा तो निचला हिस्सा भी पाक होगा और अगर बालाई हिस्सा गन्दा होगा तो निचला हिस्सा भी गन्दा होगा।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب الاخلاص من الاكمال، الحديث:٥٢٨٣،ج٣،ص١٣)

《85》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दुन्या से जो कुछ बच रहा वोह आज़्माइश और फ़ितना है और तुम में से किसी के आ'माल बरतन की मानिन्द होते हैं जब उस का बालाई हिस्सा अच्छा होता है तो निचला हिस्सा भी साफ़ होता है और जब उस का बालाई हिस्सा गन्दा होता है तो निचला हिस्सा भी गन्दा होता है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند الشاميين، الحديث:١٦٨٥٣،ج٦،ص١٨)

《86》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोही अमल पसन्द फ़रमाता है जो इख़्लास के साथ उस की रिज़ा चाहने के लिये किया जाता है।" (سنن نسائی ، كتاب الجهاد،باب من غذايلتمس......الخ،الحديث:٣١٤٢،ص٢٢٩٠)

《87》...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे अम्वाल पर नज़र नहीं फ़रमाता बल्कि तुम्हारे दिलों और आ'माल पर नज़र रखता है।" (صحيح مسلم، كتاب الادب، باب تحريم ظلم المسلم......الخ،الحديث:٦٥٤٣،ص١١٢٧)

www.dawateislami.net

﴾88﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "बन्दा जब ए'लानिया तौर पर नमाज़ पढ़े तो उसे अच्छी तरह अदा करे और जब पोशीदा तौर पर पढ़े तो फिर भी अच्छी तरह अदा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "येही हक़ीक़तन मेरा बन्दा है।"

(سنن ابن ماجة ، ابواب الزهد، باب التوقى على العمل ،الحديث:٤٢٠٠،ص٢٧٣٢)

﴾89﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "बन्दा जब ए'लानिया तौर पर नमाज़ पढ़े तो उसे अच्छी तरह अदा करे और जब पोशीदा तौर पर पढ़े फिर भी अच्छी तरह अदा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मेरे बन्दे ने अच्छा किया है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب الاخلاص من الاكمال، الحديث:٥٢٧٩،ج٣،ص١٣)

﴾90﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कामिल नेकी येह है कि तुम ए'लानिया तौर पर किये जाने वाले अमल को पोशीदा तौर पर करो, आदमी का ऐसी जगह नफ़्ल नमाज़ पढ़ना जहां उसे लोग न देखते हों लोगों के सामने पच्चीस (25) **नमाज़ें** पढ़ने के बराबर है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب الاخلاص ، الحديث:٥٢٦٢،٥٢٦٣،ج٣،ص١٢)

﴾91﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "मुख़्लिस लोगों के लिये खुश ख़बरी है क्यूं कि वोही हिदायत के ऐसे चराग़ हैं जिन से हर तारीक फ़ितना छट जाता है।" (الجامع الصغير،الحديث:٥٢٨٩،ج٢،ص٣٢٦)

﴾92﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बन्दे ने पोशीदा सज्दों से अफ़्ज़ल किसी शै से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल नहीं किया।"

(الجامع الصغير،حرف الميم،الحديث:٧٨٧٧،ج٢،ص٤٨١)

﴾93﴿...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो काम लोगों के सामने करने को ना पसन्द करते हो वोह तन्हाई में भी न किया करो।" (الجامع الصغير،حرف الميم،الحديث:٧٩٧٣،ج٢،ص٤٨٧)

﴾94﴿...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो चालीस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुख़्लिस हो जाए तो उस के दिल से हिक्मत के चश्मे उस की ज़बान पर जारी हो जाते हैं।" (حلية الاولياء،الحديث :٦٨٧٩،ج٥،ص٢١٥،بدون"من قلبه")

﴾95﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में से जो येह चाहे कि उस के और उस के दिल के दरमियान कोई शै हाइल न हो तो वोह ऐसा ही करे।" (كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب الاحسان فى الطاعات ،الحديث:٥٢٦٩،ج٣،ص١٣)

﴾96﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "पोशीदा अमल ए'लानिया अमल से अफ़्ज़ल है और ए'लानिया अमल उस के लिये है जो इक़्तिदा का इरादा रखता है।" (فردوس الاخبار(الديلمى)باب السين ، ذكر الفصول من ادوات......الخ،الحديث:٣٣٨٩،ج١،ص٤٥٣)

www.dawateislami.net

《97》...... जब कि एक रिवायत में है : "जो इक्तिदा का इरादा रखता है (या'नी येह चाहता है कि लोग उस की पैरवी करें) तो उस के लिये ए'लानिया अ़मल अफ़्ज़ल है।"

(فردوس الاخبار،باب السین ، ذکر الفصول من ادوات......الخ،الحدیث:۳۳۸۹،ج۱،ص۴۵۳،"بتقدمٍ وتاخرٍ")

《98》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसी सख़्त चट्टान में कोई अ़मल करे जिस का न तो कोई दरवाज़ा हो और न ही रोशन दान, तब भी उस का अ़मल ज़ाहिर हो जाएगा और जो होना है हो कर रहेगा।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعید خدری ، الحدیث:۱۱۲۳۰،ج۴،ص۵۷)

《99》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माबैन मुआ़-मले को ख़ुश उस्लूबी से निभाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के और लोगों के माबैन मुआ़-मले में उसे किफ़ायत फ़रमाएगा और जो अपने बातिन की इस्लाह़ करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ाहिर की इस्लाह़ फ़रमा देगा।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،الحدیث:۵۲۷۳،ج۳،ص۱۳)

《100》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो भी काम बन्दा छुप कर करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के मुत़ाबिक़ उस बन्दे पर एक चादर डाल देता है अगर वोह काम अच्छा हो तो वोह चादर भी अच्छी होती है और अगर बुरा हो तो चादर भी बुरी होती है।" (المعجم الاوسط، الحدیث:۷۹۰۶،ج۶،ص۳۶)

《101》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो छुप कर कोई काम करे ख़्वाह वोह अच्छा हो या बुरा, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर उस के मुत़ाबिक़ एक चादर डाल देता है जिस से उस की पहचान होती है।" (کنزالعمال،کتاب الاخلاق،الحدیث:۵۲۸۵،ج۳،ص۱۴)

《102》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क्या तुम जानते हो कि मोमिन कौन है ? मोमिन वोह है जो उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की पसन्दीदा बातों से उस के कानों को न भर दे, अगर कोई बन्दा सत्तर मकानात (या'नी एक मकान के अन्दर दूसरा फिर तीसरा यहां तक कि 70) के अन्दर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरे जब कि हर मकान का दरवाज़ा लोहे का हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस के अ़मल की चादर पहना देता है यहां तक कि लोग उस का चरचा करने लगते हैं और ज़ियादती से काम लेते हैं।" (या'नी उस की इ़बादत को बढ़ा चढ़ा कर बयान करते हैं) सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, कि "वोह (किसी के अ़मल में) ज़ियादती कैसे कर सकते हैं ?" तो शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "यक़ीनन मुत्तक़ी अगर अपने पोशीदा अ़मल में

www.dawateislami.net

इज़ाफ़ा करने की इस्तिताअ़त रखता तो ज़रूर करता। और येही ह़ाल फ़ाजिर शख़्स का है, लोग उस के फ़िस्क़ो फ़ुजूर के बारे में बातें करते हैं और उस को बढ़ा चढ़ा कर बयान करते हैं क्यूं कि अगर वोह फ़ाजिर शख़्स अपनी सरकशी में इज़ाफ़े की इस्तिताअ़त रखता तो ज़रूर उस में इज़ाफ़ा कर लेता।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الحديث:٥٢٨٦، ج٣، ص١٤)

﴾**103**﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में (ह़ज़रते सय्यिदुना) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है! जब भी कोई शख़्स पोशीदा त़ौर पर कोई अ़मल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ए'लान की चादर पहना देता है फिर अगर उस का बातिन अच्छा हो तो चादर भी अच्छी होती है और अगर बातिन बुरा हो तो चादर भी बुरी होती है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الحديث:٥٢٨٧، ج٣، ص١٤)

किसी इमाम से पूछा गया: "मुख़्लिस कौन है?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया: "मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियां इस त़रह़ छुपाए जिस त़रह़ अपने गुनाह छुपाता है।"

एक और बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ किया गया: "इख़्लास की इन्तिहा क्या है?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया: "वोह येह कि तुम लोगों से ता'रीफ़ की ख़्वाहिश न करो।"

اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 3 : **नाहक़ गुस्सा करना, दिल में कीना रखना और ह़सद करना**

येह तीनों चूंकि एक दूसरे को लाज़िमो मल्ज़ूम हैं या'नी इन का एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ है क्यूं कि ह़सद कीने का नतीजा है और कीना गुस्से का नतीजा है, लिहाज़ा येह एक ही बद ख़स्लत की त़रह़ हुए, इस लिये मैं ने इन्हें एक ही उ़न्वान के तह़्त जम्अ़ कर दिया है क्यूं कि इन में से हर एक की मज़म्मत दूसरे की मज़म्मत को लाज़िम है, क्यूं कि फ़र-अ़ की मज़म्मत दर ह़क़ीक़त अस्ल की मज़म्मत है और अस्ल की मज़म्मत फ़र-अ़ की मज़म्मत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ (پ٢٦،الفتح:٢٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ रखी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत की अड़ (ज़िद) तो अल्लाह ने अपना इत़्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा और परहेज़ गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वोह इस के ज़ियादा सज़ावार और इस के अह्ल थे।

इस आयते मुबा-रका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नाहक़ गुस्से के सबब सादिर होने वाली नख़्वत व मुरुव्वत ज़ाहिर करने पर कुफ़्फ़ार की मज़म्मत फ़रमाई और मुसल्मानों को नख़्वत व मुरुव्वत से बचाने वाले इत़्मीनान और सकीना नाज़िल करने की वजह बयान करते हुए उन की मद्ह़ फ़रमाई है कि उन्हों ने परहेज़ गारी को लाज़िम पकड़ लिया है, इस लिये वोह इस के अह्ल और मुस्तह़िक़ ठहरे हैं।

एक दूसरी जगह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ج (پ٥،النسآء:٥٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या लोगों से ह़सद करते हैं उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।

《1》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "गुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से होता है और चूंकि शैत़ान आग की पैदाइश है और पानी आग को बुझा देता है लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसे चाहिये कि वोह गुस्ल करे।"

(جامع الاحادیث،الحدیث:١٤٦٨٥،ج٦،ص٢٥٣)

《2》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "गुस्से से इज्तिनाब करो।" (المسندللامام احمد بن حنبل،حدیث رجل من اصحاب النبی،الحدیث:٢٣٥٢٨،ج٩،ص١٢٣)

《3》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसे चाहिये कि اَعُوْذُ بِاللّٰه पढ़ ले उस का गुस्सा ख़त्म हो जाएगा।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال، ج٦،ص٤٥١،"احدکم" بدلہ "رجل")

www.dawateislami.net

《4》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसे ख़ामोशी इख़्तियार कर लेनी चाहिये ।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن العباس......الخ،الحدیث:۲۱۳۶،ج۱، ص ۵۱۵)

《5》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम्हें गुस्सा आए तो बैठ जाया करो ।" (جامع الاحادیث،الحدیث:۱۶۰۸،ج۱،ص۲۴۱)

《6》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो अगर वोह खड़ा हो तो बैठ जाए अगर इस से उस का गुस्सा दूर हो जाए तो ठीक वरना लैट जाए ।" (سنن ابی داؤد، کتاب الادب ، باب مایقال عند الغضب ، الحدیث:۴۷۸۲،ص۱۵۷۵)

《7》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "गुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है लिहाज़ा जब तुम में से किसी को खड़े हुए गुस्सा आए तो वोह बैठ जाए और अगर बैठे हुए आए तो लैट जाए ।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ، باب الغضب، الحدیث:۷۷۲۲،ج۳،ص۲۱۰)

《8》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "जब तुम्हें गुस्सा आए तो बैठ जाओ अगर फिर भी रफ़्अ़ न हो तो लैट जाओ वोह जल्द रफ़्अ़ हो जाएगा ।" (جامع الاحادیث،الحدیث:۲۴۰۰،ج۱،ص۳۵۰)

《9》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में सब से ज़ियादा बहादुर वोह है जो गुस्से के वक़्त ख़ुद पर क़ाबू पा ले और सब से ज़ियादा बुर्द-बार वोह है जो त़ाक़त के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे ।" (کنزالعمال، کتاب الاخلاق،الحدیث:۷۶۹۴،ج۳،ص۲۰۷)

《10》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक गुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है और शैत़ान आग की पैदाइश है और आग पानी से बुझती है लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो वोह वुज़ू कर लिया करे ।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب ، باب مایقال عند الغضب ، الحدیث:۴۷۸۴،ص۱۵۷۵)

《11》...... ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक जहन्नम में एक ऐसा दरवाज़ा है जिस से वोही शख़्स दाख़िल होगा जिस का गुस्सा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी पर ही ठन्डा होता है ।" (کنزالعمال، کتاب الاخلاق،الحدیث:۷۶۹۶،ج۳، ص۲۰۸)

《12》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें तुम्हारे सब से बहादुर शख़्स के बारे में न बताऊं ? तुम में सब से बहादुर वोह है जो गुस्से के वक़्त अपने आप पर ज़ियादा क़ाबू पाने वाला है ।"

(مکارم الاخلاق للطبرانی،باب فضل من یملك نفسه عند الغضب، الحدیث:۳۷،ص۳۲۵)

www.dawateislami.net

《13》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सख़्ती बुरा शुगून है और नर्मी ब-र-कत है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ، الحديث:۷٦۹۸،ج۳،ص۲۰۸)

《14》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "अन्क़रीब मैं तुम्हें लोगों के मुआ-मलात और उन की आदतों के बारे में बताऊंगा, एक शख़्स को ग़ुस्सा जल्दी आता है और जल्द ही रफ़्अ़ हो जाता है येह शख़्स न तो किसी को नुक़्सान पहुंचाता है न ही किसी से नुक़्सान उठाता है और एक शख़्स को देर से ग़ुस्सा आता है मगर जल्द रफ़्अ़ हो जाता है तो येह उस के लिये बेहतर है नुक़्सान देह नहीं, एक शख़्स अपने ह़क़ का तक़ाज़ा करता है तो ग़ैर का ह़क़ अदा भी कर देता है, उस का येह अ़मल न उसे नुक़्सान देता है और न किसी दूसरे को। और एक शख़्स अपना ह़क़ तो त़लब करता है लेकिन ग़ैर का ह़क़ अदा नहीं करता तो येह उस के लिये मुज़िर है मुफ़ीद नहीं।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحديث:۷٦۹۹،ج۳،ص۲۰۸)

《15》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "मुकम्मल त़ौर पर किसी को पछाड़ देना येह है कि एक शख़्स को ग़ुस्सा आए और फिर वोह बढ़ता ही जाए यहां तक कि उस का चेहरा सुर्ख़ हो जाए और बाल खड़े हो जाएं लेकिन फिर उस का ग़ुस्सा ही उस शख़्स को पछाड़ दे (या'नी वोह अपनी उस ह़ालत पर क़ाबू पा ले)।"

(المسند للامام احمدبن حنبل،احاديث رجال......الخ،الحديث:۲۳۱۷٦،ج۹،ص٤٥)

《16》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "क्या तुम येह समझते हो कि बहादुरी पथ्थर उठाने में है ह़ालां कि बहादुरी तो येह है कि तुम में से कोई ग़ुस्से से भर जाए और फिर अपने ग़ुस्से पर क़ाबू पा ले।"

(كتاب الزهد لابن المبارك،باب اصلاح ذات البين ، الحديث:۷٤۰،ص۲٥٦)

《17》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "किसी को पछाड़ देने वाला बहादुर नहीं होता बल्कि बहादुर तो वोह होता है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले।" (صحيح البخاری ، كتاب الادب،باب الحذرمن الغضب ، الحديث:٦١١٤،ص٥١٦)

《18》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लोगों पर ग़ालिब आ जाने वाला बहादुर नहीं बल्कि बहादुर तो वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले।"

(كشف الخفاء، باب حرف اللام ،الحديث:۲۱۳۸،ج۲،ص۱٥۲، بدون" عندالغضب")

《19》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "पहलवान वोह नहीं जो किसी पर ग़ालिब आ जाए बल्कि पहलवान तो वोह है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले।" (كنزالعمال، كتاب الاخلاق،الحديث:۷۷۱۱،ج۳،ص۲۰۹)

www.dawateislami.net

《20》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या तुम जानते हो कि बहादुर कौन है ? बेशक कामिल बहादुर तो वोह है जो गुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले, क्या तुम जानते हो कि बांझ कौन है ? बांझ तो वोह है जिस की औलाद तो हो मगर वोह उन में से किसी को आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा न करे, क्या तुम जानते हो कि फ़क़ीर कौन है ? फ़क़ीर तो वोह है जिस के पास माल तो हो मगर वोह उस में से आगे कुछ न भेजे ।"

(شعب الایمان، باب فی الزکاۃ ، التحریض علی صدقۃ التطوع ، الحدیث:۳۳۴۱،ج۳،ص ۲۱۰)

《21》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जहन्नम का एक दरवाज़ा है जिस से वोही लोग दाख़िल होंगे जिन का गुस्सा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी पर ही ख़त्म होता है ।" (کنزالعمال، کتاب الاخلاق،الحدیث:۷۷۰۳،ج۳،ص۲۰۸)

《22》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अपने गुस्से को दूर कर ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से अपना अ़ज़ाब दूर फ़रमा लेता है और जो अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त कर ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की पर्दा पोशी फ़रमा देता है ।" (المعجم الاوسط، الحدیث:۱۳۲۰،ج۱،ص۳۶۲)

《23》...... मरवी है, एक सहाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में नसीहत चाहते हुए अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे वसिय्यत फ़रमाइये ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गुस्सा न किया करो ।" फिर अ़र्ज़ की : "मुझे वसिय्यत फ़रमाइये ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया : "गुस्सा न किया करो ।"

(صحیح البخاری، کتاب الأدب،باب الحذرمن الغضب ، الحدیث:۶۱۱۶،ص۵۱۶،مفہوماً)

《24》...... एक रिवायत में है : "गुस्सा न किया करो क्यूं कि गुस्सा फ़साद डालता है ।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق،الحدیث:۷۷۰۶،ج۳،ص۲۰۸)

《25》...... एक और रिवायत में है : मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे किसी छोटे से अ़मल का हुक्म दीजिये ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गुस्सा न किया करो ।" मैं ने इस अ़र्ज़ को दोहराया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया : "गुस्सा न किया करो ।" (المعجم الاوسط، الحدیث:۷۴۹۱،ج۵،ص۳۲۷،بتغیرٍ قلیلٍ)

《26》...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आलीशान में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई बात इर्शाद फ़रमाइये और उस में कमी फ़रमाइयेगा शायद मैं उस में ग़ौरो फ़िक्र कर सकूं ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गुस्सा न किया करो ।" मैं ने दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मज़ीद दो मरतबा येही

www.dawateislami.net

कलिमात दोहराए मगर रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर दफ़्आ़ येही इर्शाद फ़रमाया : "गुस्सा न किया करो।" (مسند ابی یعلی موصلی، الحدیث:٥٦٥٩،ج٥،ص١٣٢)

《27》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "गुस्सा न करो तो तुम्हारे लिये जन्नत है।" (المعجم الاوسط، الحدیث:٢٣٥٣،ج٢،ص٢٠)

《28》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़विया बिन ह़य्यिदा ! गुस्सा न किया करो क्यूं कि गुस्सा ईमान को इस त़रह़ ख़राब कर देता जैसे एलवा (एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को ख़राब कर देता है।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:٧٧٠٩،ج٣،ص٢٠٩)

《29》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मुआ़विया ! गुस्से से दूर रहो क्यूं कि येह ईमान को इस त़रह़ ख़राब कर देता है जिस त़रह़ एलवा शह्द को ख़राब कर देता है।" (ایضاً، الحدیث:٧٧١٠،ج٣، ص٢٠٩)

《30》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "गुस्सा जहन्नम की आग की एक मीख़ है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम में से किसी के दिल पर रख देता है क्या तुम नहीं देखते कि गुस्से में आंखें कैसी सुर्ख़ हो जाती हैं, उस की तेवरी कैसे चढ़ जाती है और रगें कैसे फूल जाती हैं।" (کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:٧٧١٤،ج٣،ص٢٠٩)

《31》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बुग़्ज़ रखने वालों से बचो क्यूं कि बुग़्ज़ दीन को मूंड डालता (या'नी तबाह कर देता) है।"

(المرجع السابق،الحدیث:٥٤٨٦،ج٣،ص٢٨)

《32》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "जो अपने गुस्से में मुझे याद रखेगा मैं उसे अपने जलाल के वक़्त याद करूंगा और हलाक होने वालों के साथ उसे हलाक न करूंगा।"

(فردوس الاخبارللدیلمی،باب القاف،الحدیث:٤٤٧٦،ج٢،ص١٣٧)

《33》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! तू मुझे अपने गुस्से के वक़्त याद रख, मैं तुझे अपने जलाल के वक़्त याद करूंगा और हलाक होने वालों के साथ तुझे हलाक न करूंगा।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:٧٧١٦،ج٣،ص٢٠٩)

《34》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तुम में से कोई गुस्से के वक़्त اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़ ले तो उस का गुस्सा रफ़्अ़ हो जाएगा।" (المعجم الاوسط، الحدیث:٧٠٢٢،ج٥،ص١٩٠،بدون "اذاغضب والرجیم")

www.dawateislami.net

《35》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को इन्तिहाई गुस्से की हालत में देख कर इर्शाद फ़रमाया : "मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं अगर येह गुसीला शख़्स उसे पढ़ ले तो वोह उस का गुस्सा ख़त्म कर देगा और वोह कलिमा येह है : اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡم "

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند الانصار،حدیث معاذ بن جبل،الحدیث:۲۲۱۴۷،ج۸،ص۲۵۳)

《36》...... (शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पाउं मुबारक की किसी उंगली में फुन्सी निकल आई तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी किसी ज़ौजए मोह्-त-रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ज़रीरा (एक क़िस्म की ख़ुश्बू) ले कर उस फुन्सी पर डाली और येह दुआ मांगी जिस से वोह ठीक हो गई) : "اَللّٰھُمَّ مُطْفِئُ الْکَبِیْرِ وَمُکَبِّرُ الصَّغِیْرِ اَطْفِھَا عَنِّی" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ बड़े को छोटा और छोटे को बड़ा कर देने वाले ! मेरी इस फुन्सी को ख़त्म कर दे।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند احادیث رجال من اصحاب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم،الحدیث:۲۳۲۰۲،ج۹،ص۵۱)

《37》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इर्शाद फ़रमाया : "येह दुआ मांगा करो : "اَللّٰھُمَّ رَبَّ النَّبِیِّ مُحَمَّدٍ اِغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَاَذْھِبْ غَیْظَ قَلْبِیْ وَاَجِرْنِیْ مِنْ مُّضِلَّاتِ الْفِتَنِ" या'नी ऐ नबिय्ये करीम मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे और मेरे दिल के गुस्से को दूर फ़रमा दे और मुझे गुमराह कर देने वाले फ़ितनों से महफ़ूज़ रख।

(المسندللامام احمد بن حنبل،حدیث اُم سلمه ،الحدیث:۲۶۶۳۸،ج۱۰،ص۱۹۳)

《38》...... हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने बेटे से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! गुस्से की कसरत से बचते रहो क्यूं कि गुस्से की कसरत बुर्द-बार शख़्स के दिल को राहे हक़ से हटा देती है।" (حلیۃ الاولیاء،یحییٰ بن ابی کثیر ،الحدیث :۳۲۵۹،ج۳،ص۸۲)

हज़रते सय्यिदुना इकिरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आलीशान :

وَسَیِّدًا وَّحَصُوۡرًا (پ۳،اٰل عمران:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और सरदार और हमेशा के लिये औरतों से बचने वाला।

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : "سَیِّدًا" से मुराद वोह शख़्स है जिस पर गुस्सा ग़ालिब न आता हो।

《39》...... हज़रते सय्यिदुना यहया عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : "गुस्सा न किया करो।" तो हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जवाब में फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! मैं इस बात की इस्तिताअत नहीं रखता कि गुस्सा न करूं, मैं भी तो इन्सान ही हूं।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "फिर माल ज़ाएअ न किया करो।" तो हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "हां येह हो सकता है।"

www.dawateislami.net

﴾40﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ऐ इब्ने आदम ! जब तू ग़ुस्सा करता है तो उछलता है क़रीब है कि कहीं तू ऐसी छलांग न लगा बैठे जो तुझे जहन्नम में पहुंचा दे।"

ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन एक फ़िरिश्ते से मिले तो उस से फ़रमाया : "मुझे कोई ऐसी बात बताओ जिस से मेरे ईमान और यक़ीन में इज़ाफ़ा हो।" तो फ़िरिश्ते ने कहा : "ग़ुस्सा न किया करो क्यूं कि शैत़ान ग़ुस्से के वक़्त इन्सान पर सब से ज़ियादा ग़ालिब होता है, लिहाज़ा ग़ुस्से के बदले अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लिया करो और वक़ार के साथ ग़ुस्सा ठन्डा किया करो और जल्द बाज़ी से बचते रहो क्यूं कि जब आप जल्द बाज़ी से काम लेंगे तो अपना ह़िस्सा गंवा बैठेंगे, अक़्रिबा और दीगर लोगों के लिये नर्मी व आसानी मुहय्या करने वाले बन जाओ, इनाद रखने वाले और ज़ालिम न बनो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "एक राहिब अपनी इ़बादत गाह में इ़बादत में मस्रूफ़ रहता था शैत़ान ने उसे गुमराह करने का इरादा किया लेकिन नाकाम रहा, फिर उस ने राहिब को इ़बादत गाह का दरवाज़ा खोलने के लिये कहा मगर फिर भी राहिब ख़ामोश रहा, तो शैत़ान ने उस से कहा, "अगर मैं चला गया तो तुझे बहुत अफ़्सोस होगा।" राहिब फिर भी ख़ामोश रहा, यहां तक कि शैत़ान ने कहा : "मैं मसीह़ عَلَیْہِ السَّلَام हूं।" तो राहिब ने उसे जवाब दिया : "अगर आप मसीह़ हैं तो मैं क्या करूं ? क्या आप ने ही हमें इ़बादत में कोशिश करने का हुक्म नहीं दिया ? और क्या आप ने हम से क़ियामत का वा'दा नहीं किया ? आज अगर आप हमारे पास कोई और चीज़ ले कर आए हैं तो हम आप की बात हरगिज़ न मानेंगे।" तो बिल आख़िर शैत़ान ने ख़ुद ही बता दिया : "मैं शैत़ान हूं और तुझे गुमराह करने आया था मगर न कर सका।" इस के बा'द शैत़ान ने राहिब से कहा : "तुम मुझ से जिस चीज़ के बारे में चाहो सुवाल कर सकते हो।" तो राहिब ने जवाब दिया : "मैं तुझ से कुछ नहीं पूछना चाहता।" जब शैत़ान मुंह फैर कर जाने लगा तो राहिब ने उस से कहा : "क्या तू सुन रहा है ?" उस ने कहा : "हां ! क्यूं नहीं।" तो राहिब ने उस से पूछा : "मुझे बनी आदम की उन आ़दतों के बारे में बता जो उन के ख़िलाफ़ तेरी मददगार हैं।" शैत़ान बोला : "वोह ग़ुस्सा है, जब आदमी ग़ुस्से में होता है तो मैं उसे इस त़रह़ उलट पलट करता हूं जैसे बच्चे गेंद से खेलते हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **"ग़ुस्सा हर बुराई की कुन्जी है।"**

एक अन्सारी का क़ौल है : "ग़ुस्सा ह़माक़त की अस्ल है और ना राज़गी उस की राहनुमा है और जो जहालत पर राज़ी होता है वोह बुर्द-बारी से मह़रूम रहता है ह़ालां कि बुर्द-बारी ज़ीनत और नफ़्अ़ का सबब है जब कि जहालत ऐ़ब और नुक़्सान का सबब है, नीज़ अह़मक़ की बात के जवाब में ख़ामोश रहना सआ़दत है।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि इब्लीस कहता है : "इन्सानों ने कभी मुझे आजिज़ नहीं किया, बल्कि तीन चीज़ों में तो वोह मुझे हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकते : (1) जब उन में से कोई नशे में होता है तो मैं उस के नथनों से पकड़ कर उसे जहां चाहता हूं ले जाता हूं, फिर वोह मेरी ख़ातिर हर वोह काम करता है जिसे मैं पसन्द करता हूं (2) जब आदमी ग़ुस्से में होता है तो ऐसी बात कह जाता है जिसे नहीं जानता और ऐसा अमल करता है जिस पर बा'द में नादिम होता है और (3) जब आदमी अपने माल में बुख़्ल करता है तो मैं उसे ऐसी उम्मीदें दिलाता हूं जिन पर वोह कुदरत नहीं पाता।" (شعب الایمان، باب المطاعم والمشارب، الحدیث:۵۶۰۱،ج۵،ص۱۳)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "आदमी की बुर्द-बारी उस के ग़ुस्से के वक़्त और उस की अमानत दारी उस के लालच के वक़्त देखो, क्यूं कि जब वोह ग़ुस्से में न हो तो तुम्हें उस के हिल्म का क्या पता चलेगा ? और जब उसे किसी चीज़ का लालच ही न हो तो तुम्हें उस की अमानत दारी कैसे मा'लूम होगी ?"

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने आ़मिल को मक्तूब भेजा : "ग़ुस्से के वक़्त किसी को सज़ा न दो बल्कि उसे क़ैद कर लो और जब तुम्हारा ग़ुस्सा ठन्डा हो जाए तो उस के जुर्म के मुताबिक़ सज़ा दो और उसे पन्दरह से ज़ियादा कोड़े न मारो।"

एक मरतबा एक कुरैशी ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से सख़्त बद कलामी की तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ देर तक सर झुकाए रहे फिर इर्शाद फ़रमाया : "क्या तू चाहता है कि शैतान, बादशाही की इ़ज़्ज़त का ख़याल दिला कर मुझ पर क़ाबू पा ले और मैं तेरे साथ ऐसा सुलूक कर बैठूं जिस की वजह से कल क़ियामत में तू मुझ से बदला ले सके ?"

मन्क़ूल है : "लोगों में सब से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द वोही है जिसे सब से कम ग़ुस्सा आता है फिर अगर वोह ऐसा दुन्या के लिये करता है तो येह उस का मक्र व ह़ीला है और अगर आख़िरत के लिये करता है तो येह इ़ल्मो ह़िक्मत है।"

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाया करते थे : "जो ख़्वाहिशात, लालच और ग़ुस्से से बच गया वोह फ़लाह़ पा गया।"

मन्क़ूल है : "जो अपनी ख़्वाहिशात और ग़ुस्से की इताअ़त करेगा तो येह दोनों उसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाएंगी।"

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मुसल्मान की अ़लामतें येह हैं : "दीन में मज़्बूत़ होना, नर्म मिज़ाजी पर साबित क़दम रहना, मौत पर यक़ीन रखना, बुर्द-बारी की ह़ालत में इ़ल्म सीखना, नर्मी व शफ़्क़त में भरपूर होना, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अ़त़ा करना, बे नियाज़ी का क़स्द करना, फ़ाक़ा में सब्र करना, क़ुदरत की सूरत में एह़सान करना, तंगदस्ती में सब्र करना, उस पर न तो ग़ुस्सा ग़ालिब आता है, न ही ह़मिय्यत त़ारी होती है, न उस पर ख़्वाहिश ग़-लबा पाती है, न उस का

www.dawateislami.net

पेट उसे रुस्वा करता है, न ही उस का लालच उसे ज़लील करता है, वोह मज़्लूम की मदद करता और कमज़ोर पर रहम खाता है, अपने माल में बुख़्ल करता है न उसे फ़ुज़ूल उड़ाता है और न ही अपनी औलाद पर ख़र्च में तंगी करता है, जब उस पर ज़ुल्म होता है तो मुआफ़ कर देता है, जाहिल से दर गुज़र करता है, उस का नफ़्स ख़ुद तो उस से तक्लीफ़ तो पाता है जब कि लोग उस से ख़ुशी पाते हैं।"

हज़रते सय्यिदुना वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "**कुफ़्र** के चार अस्बाब (येह भी) हैं : "गुस्सा, ख़्वाहिश, वा'दा ख़िलाफ़ी, तमअ़।" इस क़ौल की ताईद इस वाक़िए से भी होती है कि एक मुसल्मान को गुस्से ने इस्लाम से मुरतद होने पर उभारा तो वोह काफ़िर हो कर मरा। लिहाज़ा गुस्से की बुराई और इस के नताइज पर ख़ूब ग़ौर करना चाहिये।

एक नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने उम्मतियों से इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से जो मुझे गुस्सा न करने की ज़मानत देगा वोह मेरा ख़लीफ़ा होगा और जन्नत में मेरे साथ मेरे द-रजे में होगा।" तो एक नौ जवान ने अ़र्ज़ की : "मैं ज़मानत देता हूं।" तो उस नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी बात दोहराई तो उस नौ जवान ने दोबारा अ़र्ज़ की : "मैं ज़मानत देता हूं।" फिर उस ने अपना वा'दा निभाया, जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो वोह उस नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ उन का ख़लीफ़ा बन कर उन के द-रजे में पहुंच गया, येह नौ जवान हज़रते सय्यिदुना ज़ुल किफ़्ल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام थे, उन्हें ज़ुल किफ़्ल इस लिये कहा गया क्यूं कि उन्हों ने अपने बारे में येह ज़मानत दी थी कि मैं कभी गुस्सा न करूंगा और फिर अपने इस क़ौल को निभाया भी था और एक क़ौल येह है कि उन्हें ज़ुल किफ़्ल कहने की वजह येह है कि उन्हों ने रात में इ़बादत करने और दिन में रोज़ा रखने की ज़मानत दी थी और उसे निभाया था।

कीना

《41》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (माहे) शा'बान की पन्दरहवीं रात अपने बन्दों पर (अपनी क़ुदरत के शायाने शान) तजल्ली फ़रमाता है और मग़्फ़िरत चाहने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमाता है और रहम त़लब करने वालों पर रहम फ़रमाता है जब कि कीना रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।"

(شعب الایمان، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، الحدیث:۳۸۳۵،ج۳،ص۳۸۳)

《42》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब शा'बान की पन्दरहवीं रात आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ पर तजल्ली फ़रमाता है और मग़्फ़िरत चाहने वालों को बख़्श देता है और काफ़िरों को मोहलत देता है जब कि कीना परवर लोगों को छोड़ देता है ह़त्ता कि वोह कीना तर्क कर दें।"

(شعب الایمان، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، الحدیث:۳۸۳۲،ج۳،ص۳۸۲)

www.dawateislami.net

《43》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हर हफ़्ते के दौरान पीर और जुमा'रात के दिन लोगों के आ'माल पेश किये जाते हैं, फिर बुग़्ज़ो कीना रखने वाले दो भाइयों के इलावा हर मोमिन को बख़्श दिया जाता है और कहा जाता है इन दोनों को लम्बे अ़र्से तक छोड़ दो यहां तक कि येह उस बुग़्ज़ से वापस पलट आएं।''

(صحیح مسلم،کتاب البر والصلة ، باب النهی عن الشحناء، الحدیث:٦٥٤٧،ص١١٢٧)

《44》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हर पीर और जुमा'रात को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ'माल पेश किये जाते हैं, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आपस में बुग़्ज़ रखने और क़त्ए रेह़मी करने वालों के इलावा सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।''

(المعجم الکبیر،الحدیث:٤٠٩،ج١،ص١٦٧)

《45》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''पीर और जुमा'रात के दिन जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं तो इन दो दिनों में हर उस बन्दे की मग़्फ़िरत कर दी जाती है जो मुशिरक न हो मगर एक दूसरे से बुग़्ज़ रखने वाले दो मुसल्मान भाइयों के बारे में कहा जाता है कि इन दोनों को आपस में सुल्ह़ कर लेने तक रहने दो।''

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب ، باب هجرة الرجل اخاه ، الحدیث:٤٩١٦،ص١٥٨٣)

《46》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जुमा'रात और जुमुआ़ के दिन आ'माल पेश किये जाते हैं तो मुशिरक के इलावा हर शख़्स की मग़्फ़िरत कर दी जाती है मगर दो शख़्सों के बारे में कहा जाता है कि इन्हें आपस में सुल्ह़ कर लेने तक मुअख़्ख़र कर दो।'' (جامع الاحادیث،الحدیث:٦٩٧٥،ج٣،ص١٢)

《47》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि ''हर पीर और जुमा'रात के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बन्दों के आ'माल पेश किये जाते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुशिरक के इलावा हर बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है मगर जो शख़्स अपने भाई से बुग़्ज़ रखता है उसे छोड़ दिया जाता है।'' (جامع الاحادیث، الحدیث:٧٣٦٣،ج٣،ص٧٣)

《48》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''पीर और जुमा'रात के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ'माल पेश किये जाते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आपस में बुग़्ज़ रखने और क़त्ए रेह़मी करने वालों के इलावा सब के गुनाह बख़्श देता है।''

(المعجم الکبیر،الحدیث:٤٠٩،ج١،ص١٦٧،بدون" الذنوب")

《49》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हर पीर और जुमा'रात के दिन बनी आदम के आ'माल पेश किये जाते हैं तो रह़्म के त़लब गारों पर रह़्म किया जाता है और मग़्फ़िरत चाहने वालों को बख़्श दिया जाता है मगर कीना परवरों को उन के कीने की वजह से छोड़ दिया जाता है।'' (المعجم الکبیر،الحدیث:٩٧٧٦،ج١٠،ص١١)

www.dawateislami.net

《50》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "पीर और जुमा'रात के दिन जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन दो दिनों में मुश्रिक के इ़लावा हर मुसल्मान को बख़्श देता है जब कि आपस में कीना रखने वाले दो शख़्सों के बारे में कहा जाता है कि इन्हें सुल्ह़ करने तक छोड़ दो।"

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة ، باب النهى عن الشحناء، الحديث:٦٥٤٤،ص١١٢٧)

《51》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (या'नी उस की रह़मत और उस का अम्र) शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्माने दुन्या पर जल्वा फ़िगन होता है पस वालिदैन के ना फ़रमान और कीना परवर शख़्स के इ़लावा हर मुसल्मान को बख़्श देता है।" (شعب الايمان، باب فى الصيام، ماجاء فى ليلة النصف من شعبان، الحديث:٣٨٢٩،ج٣،ص٣٨١)

《52》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब आस्माने दुन्या पर अपनी शायाने शान तजल्ली फ़रमाता है और मुश्रिक और कीना रखने वाले के इ़लावा हर मोमिन की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।"

(المرجع السابق ،الحديث:٣٨٢٧)

《53》...... साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हमारा रब عَزَّوَجَلَّ पन्दरह शा'बान की रात आस्माने दुन्या पर (अपनी शायाने शान) नुज़ूल फ़रमाता है तो मुश्रिक और कीना परवर के इ़लावा तमाम अहले ज़मीन की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।" (مجمع الزوائد،كتاب الادب، باب ماجاء فى الشحناء، الحديث:١٢٩٥٧،ج٨،ص١٢٥)

《54》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब अपनी मख़्लूक़ पर तजल्ली फ़रमाता है तो मुश्रिक और बुग़्ज़ो कीना रखने वाले के इ़लावा तमाम मख़्लूक़ की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।"

(المعجم الكبير،الحديث:٢١٥،ج٢٠،ص١٠٩)

《55》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब अपनी मख़्लूक़ पर नज़रे रह़मत फ़रमाता है तो कीना परवर और क़ातिल के इ़लावा अपने तमाम बन्दों को बख़्श देता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، الحديث:٦٦٥٣،ج٢،ص٥٨٩)

ह़सद

《56》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ियों को खा जाती है और स-दक़ा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ पानी आग को बुझा देता है, नमाज़ मोमिन का नूर है और रोज़े ढाल हैं।" या'नी जहन्नम के मुक़ाबले में ढाल और उस से नजात का ज़रीआ़ हैं।

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد،باب الحسد،الحديث:٤٢١٠،ص٢٧٣٣)

www.dawateislami.net

﴾57﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवरदगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हसद (या'नी रश्क) सिर्फ़ दो अफ़राद से जाइज़ है : (1) वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआन अता फ़रमाया तो उस ने उस के अहकामात की पैरवी की इस के हलाल को हलाल और हराम को हराम जाना (2) और वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माल अता फ़रमाया तो उस ने उस के ज़रीए सिलए रेहमी की और रिश्तेदारों से तअल्लुक़ जोड़ा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी का अमल किया तो उस जैसा होने की तमन्ना करना दुरुस्त है।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:۷۴۳۶،ج۳،ص۱۸۵)

﴾58﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हसद ईमान को इस तरह ख़राब कर देता है जिस तरह एलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को ख़राब कर देता है।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:۷۴۳۷،ج۳،ص۱۸۶)

﴾59﴿...... सरकारे मदीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जब तुम हसद करो तो ज़ियादती न करो, जब तुम्हें बद गुमानी पैदा हो तो उस पर यक़ीन न करो और जब तुम्हें (किसी काम के बारे में) बद शुगूनी पैदा हो तो उसे कर गुज़रो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करो।''

(الکامل فی ضعفاء الرجال، عبدالرحمن بن سعد، ج۵،ص۵۰۹)

﴾60﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हसद से बचते रहो क्यूं कि हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ियों को खा जाती है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی حسد، الحدیث:۴۹۰۳،ص۱۵۸۳)

﴾61﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तुम में पिछली उम्मतों की बीमारी ज़रूर फैलेगी और वोह बुग़्ज़ व हसद है जो कि उस्तरे की तरह है लेकिन येह उस्तरा (या'नी बुग़्ज़ व हसद) दीन को काटता है न कि बालों को, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! तुम उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते जब तक मोमिन न हो जाओ और उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते जब तक आपस में महब्बत न करो, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं कि जब तुम उस पर अमल करो तो आपस में महब्बत करने लगो ? (वोह चीज़ येह है कि) तुम आपस में सलाम को आम करो।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند الزبیربن العوام، الحدیث:۱۴۱۲،ج۱،ص۳۴۸)

﴾62﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''ख़ियानत और हसद नेकियों को इस तरह खा जाते हैं जिस तरह आग लकड़ियों को खा जाती है।''

(کنزالعمال،ابواب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:۷۴۴۱،ج۳،ص۱۸۶)

www.dawateislami.net

﴾63﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ह़सद करने वाले, चुग़ली खाने वाले और काहिन के पास जाने वाले का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और न ही मेरा उस से कोई तअ़ल्लुक़ है ।"

(مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی الغیبة والنمیمة،الحدیث:١٣١٢٦،ج٨،ص١٧٣)

﴾64﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर आदमी ह़सद करता है मगर ह़ासिद को उस का ह़सद उसी वक़्त नुक़्सान देता है जब वोह ज़बान से बोले या हाथ से अ़मल करे ।" (جامع الاحادیث، الحدیث:١٥٧٧١،ج٦،ص٤٣٢)

﴾65﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर आदमी ह़सद करता है और ह़सद करने वाले बा'ज़ लोग दूसरों से अफ़्ज़ल होते हैं और ह़ासिद को उस का ह़सद उस वक़्त तक नुक़्सान नहीं देता जब तक कि वोह ज़बान से न बोले या हाथ से उस पर अ़मल न करे ।" (کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:٧٤٤٤،ج٣،ص١٨٦)

﴾66﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "लोग जब तक आपस में ह़सद न करेंगे हमेशा भलाई पर रहेंगे ।"

(المعجم الکبیر، الحدیث:٨١٥٧،ج٨،ص٣٠٩)

﴾67﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "इब्लीस (अपने चेलों से) कहता है : "इन्सानों से ज़ुल्म और ह़सद के आ'माल कराओ क्यूं कि येह दोनों अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक शिर्क के मुसावी हैं ।"

(جامع الاحادیث، الحدیث:٧٢٦٩،ج٣،ص٦٠)

﴾68﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ज़ुल्म और क़त़ए रेह़मी के इलावा कोई गुनाह ऐसा नहीं जिस के मुर-तकिब को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में सज़ा देने के साथ साथ दुन्या में भी सज़ा देने में जल्दी करता हो ।"

(جامع الترمذی ، ابواب صفة القیامة، باب فی عظم الوعید......الخ، الحدیث:٢٥١١،ص١٩٠٤)

﴾69﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ज़ुल्म करने से डरो क्यूं कि ज़ुल्म की सज़ा से ज़ियादा ख़त़रनाक किसी और गुनाह की सज़ा नहीं ।" (الکامل فی ضعفاء الرجال، ج٧،ص٣١٥،اخطر بدله" اخضر")

﴾70﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर एक पहाड़ दूसरे पहाड़ पर ज़ुल्म करे तो उन में से ज़ालिम पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएगा ।" (کشف الخفاء، الحدیث:٢٠٩٣،ج٢،ص١٤٠)

www.dawateislami.net

《71》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार मत करो कि कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस से आफ़िय्यत दे दे (और तुम्हें मुब्तला फ़रमा दे)।" (المعجم الاوسط،الحديث:٣٧٣٩،ج٣،ص١٨)

《72》...... और एक रिवायत में यूं है : "कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रहम फ़रमा कर तुम्हें उस मुसीबत में मुब्तला न फ़रमा दे।" (جامع الترمذی ، ابواب صفة القيامة، باب لاتظهر الشماتة......الخ، الحديث:٢٥٠٦،ص١٩٠٣)

《73》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सब से बुरा ठिकाना उस शख़्स का होगा जिस ने दूसरे की दुन्या की ख़ातिर अपनी आख़िरत बरबाद कर ली।" (سنن ابن ماجه ،ابواب الفتن ، باب اذا التقى المسلمان......الخ،الحديث:٣٩٦٦،ص٢٧١٥،ملخصاً)

《74》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा नदामत उस शख़्स को होगी जिस ने दूसरे की दुन्या के इवज़ अपनी आख़िरत को बेच डाला।" (تاريخ كبير للامام بخارى،باب العين ، الحديث:١٩٢٧/٧٩٩٨ ج٥،ص٣٨٨)

《75》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बदतर मक़ाम उस बन्दे का होगा जिस ने दूसरे की दुन्या के लिये अपनी आख़िरत बरबाद कर डाली।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب الفتن ، باب اذا التقى المسلمان......الخ،الحديث:٣٩٦٦،ص٢٧١٥)

《76》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक लोगों में सब से बदतर ठिकाना उस शख़्स का होगा जिस ने ग़ैर की दुन्या के बदले अपनी आख़िरत बेच डाली।" (المعجم الكبير، الحديث:٧٥٥٩،ج٨،ص١٢٣)

《77》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बचते रहो क्यूं कि येह आदमी को अन्धा, बहरा कर देती हैं।" (كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحديث:٧٨٢٨،ج٣،ص٢١٩)

《78》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आस्मान के नीचे पैरवी की जाने वाली नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बढ़ कर पूजा जाने वाला कोई झूटा ख़ुदा नहीं।" (المعجم الكبير،الحديث:٧٥٠٢،ج٨،ص١٠٣)

《79》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हसद, इस के अस्बाब और नताइज से बचने के मु-तअल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया : "आपस में बुग़्ज़ न रखो और न ही एक दूसरे से हसद करो, न एक दूसरे को बुरे अल्क़ाब से पुकारो और न ही आपस की रिश्तेदारी तोड़ो, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! आपस में भाई भाई बन जाओ और किसी भी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपने भाई से तीन दिन से ज़ियादा जुदाई (या'नी ना राज़गी) इख़्तियार करे।"

(صحيح مسلم ، كتاب البر والصله، باب تحريم التحاسد......الخ،الحديث:٦٥٢٦،ص١١٢٦،بدون"لاتنابزوا")

www.dawateislami.net

﴾80﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हम सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िरे ख़िदमत थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अभी इस दरवाज़े से एक जन्नती शख़्स दाख़िल होगा।" तो एक अन्सारी शख़्स दाख़िल हुवा जिस की दाढ़ी वुज़ू की वजह से तर थी और उस ने अपने जूते बाएं हाथ में लटका रखे थे, उस ने ह़ाज़िरे बारगाह हो कर सलाम अ़र्ज़ किया। फिर जब दूसरा दिन आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोही बात इर्शाद फ़रमाई कि "अभी इस दरवाज़े से एक जन्नती मर्द दाख़िल होगा।" तो बि ऐनिही वोही शख़्स पहले की त़रह़ ह़ाज़िरे बारगाहे अक़्दस हुवा, फिर जब तीसरा दिन आया तो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही बात इर्शाद फ़रमाई तो ह़स्बे मा'मूल वोही शख़्स दाख़िल हुवा, फिर जब दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस शख़्स के पीछे चल दिये और उस से कहा : "मैं ने अपने वालिद साह़िब से झगड़ कर क़सम उठाई है कि मैं तीन दिन तक उन के पास नहीं जाऊंगा लिहाज़ा अगर मैं तीन रातें गुज़रने तक आप के पास पनाह लेना चाहूं तो क्या आप ऐसा कर सकते हैं?" उस ने कहा : "जी हां।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : "मैं ने वोह तीन रातें उस के साथ गुज़ारीं लेकिन रात के वक़्त उसे कोई इबादत करते हुए न देखा, हां! मगर जब वोह बेदार होता या करवट बदलता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता और **अल्लाहु अक्बर** कहता और जब तक नमाज़ के लिये इक़ामत न हो जाती बिस्तर से न उठता और मैं ने उसे अच्छी बात के इलावा कुछ कहते हुए न सुना, फिर जब तीन दिन गुज़र गए तो मैं उस के अ़मल को मा'मूली जानने लगा और उस से कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे! मेरे और मेरे वालिदे मोह़तरम के दरमियान कोई ना राज़गी नहीं थी मगर चूंकि मैं ने रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से तुम्हारे बारे में तीन मरतबा येह कहते हुए सुना : "अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आएगा तो तीनों मरतबा तुम ही आए तो मैं ने सोचा कि तुम्हारे पास रह कर देखूं कि तुम्हारा अ़मल क्या है ताकि मैं भी तुम्हारी पैरवी कर सकूं मगर मैं ने तो तुम्हें कोई बड़ा अ़मल करते हुए नहीं देखा, फिर तुम्हें इस मक़ाम तक किस अ़मल ने पहुंचाया जिस के बारे में ख़ा–तमुल मुर–सलीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी है?" तो उस ने कहा : "मेरा अ़मल तो वोही है जो तुम ने देख लिया।" फिर जब मैं वापस आने लगा तो उस ने मुझे बुला कर कहा : "मेरा अ़मल तो वोही है जिसे तुम ने देख लिया मगर मैं अपने दिल में किसी मुसल्मान से बद दियानती नहीं पाता और न ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा भलाई पर किसी से ह़सद करता हूं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : "बस येही वोह आ'माल हैं जिन्हों ने तुझे इस मक़ाम तक पहुंचा दिया।" (شعب الایمان، باب فی الحث علی ترک الغل والحسد، الحدیث:٦٦٠٥، ج٥، ص٢٦٤،٢٦٥، بتغیر قلیل)

www.dawateislami.net

﴾81﴿...... बा'ज़ मुहद्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने उस ना मा'लूम शख़्स का नाम ''सा'द'' बताया है और उन की रिवायत कर्दा ह़दीसे मुबा-रका के आख़िर में येह इज़ाफ़ा है : ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भतीजे ! मेरा अ़मल तो वोही है जो तुम ने देख लिया मगर मैं ने कोई रात ऐसी नहीं गुज़ारी कि मेरे दिल में किसी मुसल्मान के बारे में कीना या इस जैसी बात हो।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''येही वोह अ़मल है जिस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह मक़ाम दिलाया और हम इस अ़मल पर इस्तिक़ामत पाने की त़ाक़त नहीं रखते।'' (المسند للامام احمد بن حنبل،مسند انس بن مالك، الحديث:١٢٦٩٧،ج٤،ص٣٣٢)

﴾82﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : '' हम शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अभी इस दरवाज़े से एक जन्नती आदमी तुम्हारे सामने ज़ाहिर होगा।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दरवाज़े से अन्दर दाख़िल हुए।''

इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जो ह़दीसे मुबा-रका बयान की, उस में यूं है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरादा कर लिया कि मैं इस शख़्स के साथ रात गुज़ारूंगा ताकि इस का अ़मल देख सकूं, फिर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर अपने जाने का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : ''उन्हों ने मुझे एक इ़बा या'नी बिछोना दिया जिस पर मैं उन से क़रीब हो कर लैट गया और अपनी आंखों की झुर्रियों से उन्हें देखने लगा, वोह जब भी करवट बदलते, سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ और اَلْحَمْدُلِلّٰهِ कहते, यहां तक कि जब स-ह़री का वक़्त हुवा तो वोह उठे और वुज़ू कर के मस्जिद में दाख़िल हुए और 12 दरमियानी सूरतों के साथ 12 रक्अ़तें अदा कीं, कि न तो वोह लम्बी थीं और न ही छोटी, और हर दो रक्अ़तों में **तशह्हुद** से फ़ारिग़ होने के बा'द येह तीन दुआ़एं मांगीं :

(1) اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ۔

(या'नी ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमें दुन्या और आख़िरत की भलाइयां अ़त़ा फ़रमा और हमें आग के अ़ज़ाब से बचा।)

(2) اَللّٰهُمَّ اكْفِنَامَآاَهَمَّنَا مِنْ اَمْرِ اٰخِرَتِنَا وَدُنْيَانَا۔

(या'नी ऐ हमारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हमारे दुन्या और आख़िरत के अहम कामों को पूरा फ़रमा।)

(3) اَللّٰهُمَّ اِنَّانَسْاَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ۔

(या'नी ऐ परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से हर क़िस्म की भलाई का सुवाल करते हैं और हर क़िस्म के शर से तेरी पनाह मांगते हैं।)

www.dawateislami.net

उन के इस मुस्तक़िल अ़मल को ज़िक्र करने के बा'द रिवायत के आख़िर में येह है कि उन्हों ने फ़रमाया : ''जब मैं सोने के लिये अपने बिस्तर पर आता हूं तो मेरे दिल में किसी मुसल्मान के लिये कीना नहीं होता।'' (شعب الایمان ، باب فی الحث علی ترک الغل والحسد، الحدیث:٦٦٠٧،ج٥،ص٢٦٦)

《83》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तंगदस्ती कुफ़्र के क़रीब पहुंचा देती है और ह़सद तक़्दीर पर ग़-लबा पाने के क़रीब कर देता है।'' (کنزالعمال ، کتاب الزکاة ، قسم الاقوال، باب فی فضل الفقر......الخ،الحدیث:١٦٦٧٨،ج٦،ص ٢١٠)

《84》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अ़न्क़रीब मेरी उम्मत को पिछली उम्मतों की बीमारी लाहिक़ होगी।'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''पिछली उम्मतों की बीमारी क्या है?'' तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तकब्बुर करना, इतराना, कसरत से माल जम्अ़ करना और दुन्या में एक दूसरे पर सब्क़त ले जाना नीज़ आपस में बुग्ज़ व ह़सद रखना यहां तक कि वोह ज़ुल्म में तब्दील हो जाए और फिर फ़ितना व फ़साद बन जाए।''

(المعجم الاوسط، الحدیث:٩٠١٦،ج٦،ص٣٤٨،بدون"تباغضوا وتحاسدوا")

《85》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा इस बात का ख़ौफ़ है कि उन के पास माल की कसरत हो जाएगी तो येह लोग आपस में ह़सद करने और एक दूसरे को क़त्ल करने लगेंगे, फिर आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ाजतों को पूरा करने के लिये ने'मतें छुपा कर मदद चाहो क्यूं कि **हर ज़ी ने'मत से ह़सद किया जाता है।''** (المعجم الکبیر، الحدیث:١٨٣،ج٢٠،ص٩٤)

《86》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ने'मतों के भी दुश्मन होते हैं।'' अ़र्ज़ की गई : ''वोह कौन हैं?'' तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह जो लोगों से इस लिये ह़सद करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने फ़ज़्लो करम से उन को ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं।'' (شعب الایمان ، باب فی الحث علی ترک الغل والحسد، الحدیث تحت الباب،ج٥،ص٢٦٣)

《87》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''छ क़िस्म के लोग ह़िसाब से एक साल पहले जहन्नम में दाख़िल हो जाएंगे।'' अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग हैं?'' तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(1) उ-मरा ज़ुल्म की वजह से (2) अ़रब अ़-सबिय्यत (या'नी त़रफ़ दारी) की वजह से (3) रु-असा और सरदार तकब्बुर की वजह से (4) तिजारत करने वाले ख़ियानत की वजह से (5) देहाती लोग जहालत की वजह से और (6) उ़-लमा ह़सद की वजह से।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:٤٤٠٢٣/٤٤٠٢٤،ج١٦، ص٣٧، بتغیرقلیل)

《88》...... **मन्कूल** है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो अ़र्श के साए में एक शख़्स को देखा, इन्हें उस के मर्तबे पर बड़ा रश्क आया और कहा : ''बेशक येह शख़्स अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुअ़ज़्ज़ज़ है।'' फिर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि वोह आप को उस शख़्स का नाम बताए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को उस का नाम न बताया बल्कि फ़रमाया : ''मैं तुम्हें इस के तीन अ़मल बताता हूं : (1) येह उन ने'मतों पर लोगों से ह़सद नहीं करता था जो मैं ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें अ़ता फ़रमाई थीं (2) न अपने वालिदैन की ना फ़रमानी करता और (3) न ही चुग़ुल ख़ोरी करता था।''

(مکارم اخلاق،باب ماجاء فی صلة الرحم،الحدیث:٢٥٧،ص١٨٣)

《89》...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ासिद मेरी ने'मत का दुश्मन, मेरे फ़ैसले पर नाख़ुश और मेरी तक़्सीम पर नाराज़ रहता है जो मैं ने अपने बन्दों के दरमियान फ़रमाई है।'' (تفسیر ابن ابی حاتم ،باب ٢،ج٤،ص٢٠٣)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''ह़सद वोह पहला गुनाह है जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की गई, इब्लीस मल्ऊ़न ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सज्दा करने के मुआ़-मले में उन से ह़सद किया, पस इसी ह़सद ने इब्लीस को ना फ़रमानी पर उभारा।'' (الدرالمنثورفی التفسیر المأثور، سورة البقرة...... تحت الآیة ٣٤،ج١،ص١٢٥)

एक दीनी पेशवा ने किसी बादशाह को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : ''तकब्बुर से बचते रहो क्यूं कि येही वोह पहला गुनाह है जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की गई। फिर उन्हों ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ (پ١،البقرة:٣٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और (याद करो) जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो।

और फिर फ़रमाया : ''ह़िर्स से बचते रहो क्यूं कि इसी के सबब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जन्नत से अलग कर दिये गए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ऐसी जन्नत में ठहराया जिस की चौड़ाई ज़मीन व आस्मान जितनी है उस में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हर चीज़ खाने की इजाज़त थी सिवाए एक दरख़्त से कि उस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मन्अ़ फ़रमाया था पस ह़िर्स के सबब आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से खा लिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जन्नत से ज़मीन पर भेज दिया, फिर उन्हों ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِیْعًا (پ١٦،طٰہٰ:١٢٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया कि तुम दोनों मिल कर जन्नत से उतरो।

www.dawateislami.net

फिर फ़रमाया : ''ह़सद से बचते रहो क्यूं कि ह़सद ही ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बेटे को अपने भाई के क़त्ल पर आमादा किया था फिर उन्हों ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ (پ٦، المآئدة: ٢٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें पढ़ कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर जब दोनों ने एक एक नियाज़ पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई बोला क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा कहा अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।

और कहा गया है कि क़त्ल का सबब येह भी था कि क़ातिल की बहन मक़्तूल की ज़ौजा थी और वोह क़ातिल की ज़ौजा से ज़ियादा ख़ूब सूरत थी क्यूं कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बीस ह़म्ल हुए थे और हर ह़म्ल में एक लड़का और एक लड़की या'नी दो बच्चे होते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक ह़म्ल के लड़के का दूसरे ह़म्ल की लड़की से निकाह़ कर दिया करते थे, तो जब क़ाबील ने देखा कि उस के भाई हाबील की बीवी मेरी बीवी से ज़ियादा ख़ूब सूरत है तो उस से ह़सद करने लगा यहां तक कि उसे क़त्ल कर दिया।

उस दीनी पेश्वा की बादशाह को की जाने वाली नसीह़तों में से एक येह भी है कि ''जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का ज़िक्र हो तो ख़ामोश रहा करो, जब तक़्दीर का तज़्किरा हो तब भी ख़ामोश रहो, इसी त़रह़ जब सितारों का तज़्किरा हो तो भी ख़ामोश रहो।''

एक ह़ासिद का इब्रतनाक अन्जाम :

एक नेक शख़्स किसी बादशाह के पास नसीह़त करने के लिये बैठा करता था और वोह उस से कहा करता : ''अच्छे लोगों के साथ उन की अच्छाई की वजह से अच्छा सुलूक करो, क्यूं कि बुरे लोगों के लिये उन की बुराई ही काफ़ी है।'' एक जाहिल को उस नेक शख़्स की (बादशाह से) इस कुरबत पर ह़सद हुवा तो उस ने उस के क़त्ल की साज़िश तय्यार की और बादशाह से कहा : ''येह शख़्स आप को बदबूदार समझता है और इस की दलील येह है कि जब आप उस के क़रीब जाएंगे तो वोह अपनी नाक पर हाथ रख लेगा ताकि आप की बदबू से बच सके।'' बादशाह ने उस से कहा : ''तुम जाओ मैं ख़ुद उसे देख लूंगा।'' येह साज़िशी वहां से निकला और उस नेक शख़्स को अपने घर दा'वत पर बुला कर लहसन खिला दिया, वोह नेक आदमी वहां से निकल कर बादशाह के पास आया और ह़स्बे आ़दत बादशाह से कहा : ''अच्छों के साथ अच्छा सुलूक करो, क्यूं कि बुरे को अ़न्क़रीब

www.dawateislami.net

उस की बुराई ही काफ़ी होगी।'' तो बादशाह ने उस से कहा : ''मेरे क़रीब आओ।'' वोह क़रीब आया तो उस ने इस ख़ौफ़ से अपनी नाक पर हाथ रख लिया कहीं बादशाह लहसन की बू न सूंघ ले, तो बादशाह ने अपने दिल में सोचा कि फ़ुलां आदमी सच कहता था। उस बादशाह की आ़दत थी कि वोह किसी के लिये अपने हाथ से सिर्फ़ इन्आ़म देने का ही फ़रमान लिखा करता था, लेकिन अब की बार उस ने अपने एक गवर्नर को अपने हाथ से लिखा कि ''जब मेरा ख़त़ लाने वाला येह शख़्स तुम्हारे पास आए तो इसे ज़ब्ह़ कर देना और इस की खाल में भूसा भर कर मेरे पास भेज देना।'' उस नेक शख़्स ने वोह ख़त़ लिया और दरबार से निकला तो वोही साज़िशी शख़्स उसे मिला, उस ने पूछा : ''येह ख़त़ कैसा है?'' नेक शख़्स ने जवाब दिया : ''बादशाह ने मुझे इन्आ़म लिख कर दिया है।'' साज़िशी शख़्स ने कहा : ''येह मुझे हिबा कर दो।'' तो उस नेक शख़्स ने कहा : ''तुम ले लो।'' फिर जब वोह शख़्स ख़त़ ले कर आ़मिल के पास पहुंचा तो उस आ़मिल ने उस से कहा : ''तुम्हारे ख़त़ में लिखा है कि मैं तुम्हें ज़ब्ह़ कर दूं और तुम्हारी खाल में भूसा भर कर बादशाह को भेज दूं।'' उस ने कहा : ''येह ख़त़ मेरे लिये नहीं है मेरे मुआ-मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो ताकि मैं बादशाह से राबिता कर सकूं।'' तो आ़मिल ने कहा : ''बादशाह का ख़त़ आने के बा'द उस से रुजूअ़ नहीं किया जा सकता।'' लिहाज़ा आ़मिल ने उसे ज़ब्ह़ कर के और उस की खाल भूसे से भर कर बादशाह को भेज दी, फिर वोही नेक शख़्स ह़स्बे आ़दत बादशाह के पास आया और अपनी बात दोहराई : ''अच्छों के साथ अच्छा सुलूक करो।'' तो बादशाह ने ह़ैरत ज़दा हो कर उस से पूछा : ''तुम ने ख़त़ का क्या किया?'' उस ने जवाब दिया : ''मुझे फ़ुलां शख़्स मिला था, उस ने मुझ से वोह ख़त़ मांगा तो मैं ने उसे दे दिया।'' तो बादशाह ने कहा : ''उस ने तो मुझे बताया था कि तुम कहते हो कि मेरे जिस्म से बू आती है।'' तो उस नेक शख़्स ने जवाब दिया कि ''मैं ने तो ऐसा नहीं कहा।'' फिर बादशाह ने पूछा : ''तुम ने अपनी नाक पर हाथ क्यूं रखा था?'' उस ने बताया : ''उसी शख़्स ने मुझे लहसन खिला दिया था और मैं ने पसन्द न किया कि आप उस की बू सूंघें।'' बादशाह ने कहा : ''तुम सच्चे हो अपनी जगह पर जा कर बैठ जाओ, बुरे आदमी की बुराई उसे किफ़ायत कर गई।''

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए ह़सद की बुराई में ग़ौर करो और गुज़श्ता सफ़ह़ात में बयान कर्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान की ह़क़ीक़त जानो : ''अपने भाई की परेशानी पर ख़ुशी का इज़्हार मत करो कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस से नजात दे कर तुम्हें उस में मुब्तला न फ़रमा दे।'' (جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة، باب لاتظهر الشماتة......الخ الحدیث:۲۵۰۶، ص۱۹۰۳،فیهافیه بدله"فیرحمه الله")

ह़सद के मु-तअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِمُ الرَّحْمَة के फ़रामीन :

ह़ज़रते इब्ने सीरीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं : ''मैं ने किसी से किसी दुन्यवी शै की वजह से ह़सद नहीं किया क्यूं कि अगर वोह शख़्स जन्नती है तो मैं दुन्या की वजह से उस से ह़सद कैसे करूं

www.dawateislami.net

हालां कि वोह तो जन्नत के मुक़ाबले में बहुत हक़ीर है, और अगर वोह जहन्नमी है तो मैं दुन्यवी शै की वजह से उस से हसद कैसे करूं जब कि वोह चीज़ ख़ुद जहन्नम में जाने वाली हो।''

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''जो बन्दा कसरत से मौत को याद करता है उस की ख़ुशी और हसद में कमी आ जाती है।''

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''जो मेरी किसी ने'मत से हसद करता है मैं उस के सिवा हर शख़्स को राज़ी कर सकता हूं क्यूं कि हासिद उसी वक़्त राज़ी होगा जब वोह ने'मत मुझ से ज़ाइल हो जाएगी।''

एक आ'राबी का क़ौल है : ''मैं ने हासिद जैसा मज़्लूम कोई ज़ालिम नहीं देखा कि तुम्हारी ने'मत उस को बुरी लगती है।''

हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''ऐ इब्ने आदम ! अपने भाई से हसद न कर क्यूं कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की तक्रीम के लिये वोह ने'मत उसे अता फ़रमाई है तो जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इज़्ज़त दे उस से हसद न करो और अगर किसी और वजह से अता फ़रमाई है तो उस से हसद क्यूं करते हो जिस का ठिकाना जहन्नम है।''

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : ''**हासिद** शख़्स मजलिस में ज़िल्लत और मज़म्मत पाता है, मलाएका से ला'नत और बुग़्ज़ पाता है, मख़्लूक़ से ग़म और परेशानियां उठाता है, नज़्अ़ के वक़्त सख़्ती और मुसीबत से दो चार होता है और क़ियामत के दिन हश्र के मैदान में भी रुस्वाई, तौहीन और मुसीबत पाएगा।''

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

ग़ज़ब के बारे में वारिद साबिक़ा अहादीस इस बात पर दलालत करती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ज़ब को आग से पैदा फ़रमा कर इसे इन्सान में रख दिया और इसे उस की फ़ित्रत में शामिल कर दिया।

ग़ुस्से में इन्सान की हालतें :

इन्सान बा'ज़ अवक़ात किसी काम का इरादा करता है तो उस की आतशे ग़ज़ब इतना भड़क उठती है कि उस से इन्सान के दिल का ख़ून भी खौलने लगता है, फिर वोह ख़ून बदन की दीगर रगों में फैल जाता है और जब दिमाग़ तक इस तरह पहुंचता है जैसा कि खौलता हुवा पानी तो वोह ख़ून वहां फैलने के बा'द चेहरे में भी सरायत कर जाता है, जिस से उस का चेहरा और आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं, और खाल का ज़ाहिरी हिस्सा साफ़ होने की वजह से अपने अन्दर मौजूद ख़ून की सुर्ख़ी को ज़ाहिर कर देता है, ऐसा उस वक़्त होता है जब इन्सान येह समझ ले कि वोह अपने मग़्सूब (या'नी जिस पर ग़ुस्सा आया उस) पर क़ुदरत रखता है, वरना अगर इन्सान को अपने से ज़ियादा ताक़त वर पर ग़ुस्सा

www.dawateislami.net

आए और इन्तिक़ाम लेने की उम्मीद भी न हो तो उस का ख़ून खाल के ज़ाहिरी हिस्से से सिमट कर दिल के अन्दर चला जाता है और उल्टा ख़ौफ़ पैदा हो जाता है, जिस से उस का रंग ज़र्द हो जाता है और अगर किसी हम पल्ला शख़्स पर ग़ुस्सा आए और उस पर क़ुदरत पा लेने में शक हो तो उस का ख़ून फैलने और सिमटने के दरमियान मु-तरद्दिद होता है, जिस की वजह से कभी उस का रंग सुर्ख़ होता है और कभी ज़र्द, नीज़ वोह बेचैनी महसूस करता है।

इस तफ़्सील से मा'लूम हुवा कि **ग़ुस्से की क़ुव्वत** का मक़ाम इन्सान का दिल होता है और इस का मत़्लब येह है कि ख़ून का खौलना इन्तिक़ाम लेने के लिये होता है, येह क़ुव्वत आतशे ग़ज़ब के भड़कने के वक़्त किसी ईज़ा पहुंचाने वाली चीज़ को दूर करने की ख़ातिर उस की जानिब मु-तवज्जेह होती है इस से पहले कि वोह उसे तक्लीफ़ दे, या फिर अगर ईज़ा पहुंच जाए तो उस के बा'द मह़्ज़ दिल के इत़्मीनान पाने या फिर इन्तिक़ाम लेने के लिये मु-तवज्जेह होती है, लिहाज़ा जज़्बए इन्तिक़ाम ही उस से लज़्ज़त पाता है और उसे रोकता है।

क़ुव्वते ग़ज़ब में तफ़्रीत़ :

ग़ुस्से में तफ़्रीत़ या'नी इस क़दर कम आना कि बिल्कुल ही ख़त्म हो जाए या फिर येह जज़्बा ही कमज़ोर पड़ जाए, तो येह एक मज़्मूम सिफ़त है क्यूं कि ऐसी सूरत में बन्दे की मुरुव्वत और ग़ैरत ख़त्म हो जाती है और जिस में ग़ैरत या मुरुव्वत न हो वोह किसी क़िस्म के कमाल का अह्ल नहीं होता क्यूं कि ऐसा शख़्स औरतों बल्कि ह़शरातुल अर्ज़ (या'नी ज़मीनी कीड़े मकोड़ों) के मुशाबेह होता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के इस क़ौल का येही मा'ना है : "जिसे ग़ुस्सा दिलाया गया और वोह ग़ुस्से में न आया तो वोह गधा है और जिसे राज़ी करने की कोशिश की गई और वोह राज़ी न हुवा तो वोह शैत़ान है।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ह़मिय्यत और शिद्दत पर उन की ता'रीफ़ फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया :

﴾1﴿

اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (پ۶، المائدة:۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त।

﴾2﴿

اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (پ۲۶، الفتح:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल।

﴾3﴿

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ (پ۱۰، التوبة:۷۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर और उन पर सख़्ती करो।

www.dawateislami.net

इस मुआ़-मले में ग़ुस्से की इस कमी का नतीजा यूं ज़ाहिर होता है कि इन्सान अपने ह़रम या'नी मह़रम औ़रतों म-सलन बहन या बीवी वग़ैरा से छेड़छाड़ किये जाने के मुआ़-मले में ग़ैरत की कमी का शिकार हो जाता है, और दूसरे येह कि घटिया और कमीने लोगों से ज़िल्लत पहुंचने और एह़सासे कम-तरी में मुब्तला होने का भी एह़तिमाल है, ह़ालां कि येह सब इन्तिहाई बुरा क़ाबिले मज़म्मत है, अगर इस के स-मरात ग़ैरत की कमी और हीजड़ों की सी त़बीअ़त के इलावा कुछ न हों तो उस के बारे में शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान है :

﴾90﴿...... "क्या तुम्हें सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की ग़ैरत पर तअ़ज्जुब है ह़ालां कि मैं उन से ज़ियादा ग़ैरत मन्द हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से भी ज़ियादा ग़यूर है और उस के ग़यूर होने की एक अ़लामत येह है कि उस ने बे ह़याई को ह़राम फ़रमा दिया है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند الكوفيين، الحديث:١٨١٩٢،ج٦،ص٣٣٤)

﴾91﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा ग़ैरत मन्द कोई नहीं, इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़ाहिरी व बात़िनी फ़ह़्ह़ाशी को ह़राम फ़रमा दिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा अपनी ता'रीफ़ को पसन्द करने वाला भी कोई नहीं इस लिये कि उस ने अपनी ता'रीफ़ ख़ुद बयान फ़रमाई है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा उ़ज़्र को पसन्द करने वाला भी कोई नहीं है और इस की ख़ात़िर उस ने किताबें नाज़िल फ़रमाईं और रसूल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भेजे।" (صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب غيرة الله وتحريم الفواحش، الحديث:٦٩٩٣/٦٩٩٤،ص١١٥٦)

﴾92﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ग़ैरत ईमान का ह़िस्सा है।" (السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الشهادات، باب الرجل يتخذ القلام......الخ،الحديث:٢١٠٢٣،ج١٠،ص٣٨١)

﴾93﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कोई ग़ैरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द होती है और कोई ना पसन्द, बा'ज़ तकब्बुर करने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है और बा'ज़ को ना पसन्द। वोह ग़ैरत जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है वोह शक के मुआ़-मले में ग़ैरत करना है और जो ग़ैरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ना पसन्द है वोह ग़ैर शक में ग़ैरत खाना है और जिन तकब्बुर करने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है वोह जिहाद के दौरान अकड़ कर चलना या स-दक़ा देते वक़्त चलना है, और जिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ना पसन्द फ़रमाता है वोह येह है कि आदमी ज़ुल्म और फ़ख़्र की ह़ालत में इतरा कर चले।"

(سنن ابی داؤد،كتاب الجهاد، باب فی الخيلاء فی الحرب، الحديث:٢٦٥٩،ص١٤١٩)

﴾94﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने ग़ैरत मन्द बन्दों को पसन्द फ़रमाता है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ुद भी मुसल्मान के लिये ग़ैरत फ़रमाता है, लिहाज़ा चाहिये कि वोह भी ग़ैरत मन्द हो।"

(المعجم الاوسط، الحديث:٨٤٤١،ج٦،ص١٨٣،مختصراً)

www.dawateislami.net

﴿95﴾...... ख़ा–तमुल मुर–सलीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़यूर है और मोमिन भी ग़ैरत मन्द है, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात पर ग़ैरत फ़रमाता है कि मोमिन वोह काम करे जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस पर ह़राम कर दिया है।"

(صحیح مسلم ، کتاب التوبة ، باب غیرة الله وتحریم الفواحش ، الحدیث:۶۹۹۵،ص۱۱۵۶)

कु़व्वते ग़ज़ब में इफ़रात़ :

इस कु़व्वत में इफ़रात़ या'नी इज़ाफ़ा भी निहायत मज़्मूम है क्यूं कि येह कु़व्वत इन्सान पर ग़–लबा पाती है तो वोह मा'कू़ल व मन्कू़ल हर दो चीज़ों की सूझ बूझ से आ़री हो जाता है और उस के पास किसी क़िस्म की दानिश व फ़िक्र और इख़्तियार नहीं रहता बल्कि वोह एक मुज़्त़र (या'नी बेचैन) और मजबूर क़िस्म का इन्सान बन जाता है जिस का इज़्तिरार या तो उस की अपनी त़बीअ़त का नतीजा होता है या फिर दूसरों की वजह से वोह इज़्तिरार का शिकार होता है और या फिर येह दोनों वज्हें हो सकती हैं, वोह इस त़रह़ कि उस की त़बीअ़त और फ़ित़रत ही में ग़ज़ब व ग़ुस्सा भरा हुवा हो, या उस का किसी ऐसे शख़्स से इख़्तिलाफ़ हो जाए जो उसे बड़ा जानता हो और उस की शुजाअ़त और कमाल का मो'तरिफ़ हो यहां तक कि वोह उस शख़्स से सिर्फ़ अपनी ता'रीफ़ ही की तवक़्क़ोअ़ करता हो। जब कभी आतशे ग़ज़ब शदीद हो कर भड़क जाए तो वोह उस शख़्स को जिस के अन्दर येह आग भड़क रही होती है, हर क़िस्म की नसीह़त सुनने, समझने से उसे अन्धा और बहरा कर देती है बल्कि इस ह़ालत में उस के नूरे अ़क़्ल के बुझ जाने और ख़त्म हो जाने की वजह से नसीह़त उस के इश्तिआ़ल में मज़ीद इज़ाफ़ा करती है क्यूं कि दिमाग़ जो कि फ़िक्र का सर चश्मा है ग़ुस्से के बुख़ारात उस तक पहुंच कर मह़सूस करने के मआ़दिन को ढांप लेते हैं, जिस से उस की बसारत (या'नी समझ बूझ) तारीक हो जाती है यहां तक कि उसे सियाही के इलावा कुछ नज़र नहीं आता, बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो उस की आतशे ग़ज़ब में इतना इज़ाफ़ा हो जाता है कि उस के दिल की वोह रुतूबत जिस से दिल ज़िन्दगी पाता है, ख़त्म हो जाती है तो **नतीजतन** वोह शख़्स ग़ुस्से की ज़ियादती की वजह से मर जाता है।

अ़लामाते ग़ज़ब

जिस्म पर अ–सरात :

ग़ज़ब के जिस्म पर जो अ–सरात त़ारी होते हैं वोह येह हैं : रंग का मु–तग़य्यर होना, कन्धों पर कपकपी त़ारी होना, अपने अफ़आ़ल पर क़ाबू न रहना, ह़–रकात व स–कनात में बेचैनी का पाया जाना नीज़ कलाम का मुज़्त़रिब हो जाना यहां तक कि बाछों से झाग निकलने लगती है, आंखों की सुर्ख़ी ह़द से बढ़ जाती है, नाक के नथने फूल जाते हैं, बल्कि सारी सूरत ही तब्दील हो जाती है। अगर कोई ग़ज़ब नाक शख़्स इस ह़ालत में अपनी ही शक्ल देख ले तो शर्म के मारे अपनी ख़ूब सूरत शक्ल को बद सूरती में तब्दील पा कर ख़ुद ब ख़ुद ही उस का ग़ुस्सा ख़त्म हो जाएगा, क्यूं कि किसी भी इन्सान की ज़ाहिरी ह़ालत उस की बात़िनी कैफ़िय्यत की अ़क्कास होती है लिहाज़ा जब बात़िनी

www.dawateislami.net

कैफ़िय्यत ही बुरी होगी तो ज़ाहिरी ह़ालत भी तो इसी बुराई पर परवान चढ़ेगी, लिहाज़ा ज़ाहिर की तब्दीली ह़क़ीक़त में बातिन की तब्दीली का नतीजा होती है।

ज़बान पर अ-सरात :

ज़बान पर ग़ुस्से और ग़ज़ब के अ-सरात इस त़रह़ मुरत्तब होते हैं कि उस से बुरी बातें निकलती हैं म-सलन ऐसी फ़ोह़ूश और गन्दी गालियां वग़ैरा कि जिन से हर साहिबे अ़क़्ल इन्सान को ह़या आती है, ऐसी गुफ़्त-गू करने वाले शख़्स को ग़ुस्से के वक़्त अपनी बातों पर क़ाबू नहीं रहता बल्कि उस के अल्फ़ाज़ भी बे रब्त़ और ख़ल्त़ मल्त़ हो जाते हैं।

आ'ज़ा पर अ-सरात :

आ'ज़ा पर इस के अ-सरात इस त़रह़ होते हैं कि नौबत मार पीट बल्कि क़त्ल तक जा पहुंचती है, अगर कोई शख़्स बदला न ले सकता हो तो वोह अपना ग़ुस्सा ख़ुद पर ही निकालने लगता है वोह इस त़रह़ कि वोह अपने ही कपड़े फाड़ डालता है, अपने आप को और दूसरों को यहां तक कि जानवरों और दूसरी अश्या तक को मारने या तोड़ने लगता है, बिला वजह एक दीवाने और पागल शख़्स की त़रह़ भागने लगता है और बा'ज़ अवक़ात ज़मीन पर गिर जाता है और ह़-र-कत तक नहीं कर सकता बल्कि ग़ज़ब की ज़ियादती की वजह से उस पर ग़शी की ह़ालत त़ारी हो जाती है।

दिल पर अ-सरात :

दिल पर इस के अ-सरात येह मुरत्तब होते हैं कि जिस पर ग़ुस्सा हो उस के ख़िलाफ़ दिल में कीना और ह़सद पैदा हो जाता है, उस की मुसीबत पर ख़ुशी का और ख़ुशी पर ग़म का इज़्हार करता है, उस का राज़ फ़ाश करने, दामने इ़ज़्ज़त चाक करने और मज़ाक़ उड़ाने का अ़ज़्मे मुसम्मम (या'नी पुख़्ता इरादा) किये होता है और इस के इलावा दीगर बुराइयां जनम लेती हैं।

कमाले मुत़्लक़ :

इन्सान का मुत़्लक़ कमाल येह है कि उस की क़ुव्वते ग़ज़ब मो'तदिल हो या'नी न तो इस में इफ़्रात़ हो और न ही तफ़्रीत़, बल्कि वोह क़ुव्वत दीन व अ़क़्ल के ताबेअ़ हो सिर्फ़ उसी वक़्त भड़के जहां ह़मिय्यत की ज़रूरत हो, और वहां येह बुझी रहे जहां बुर्द-बारी से काम लेना ही मुनासिब और ज़ैबा हो, येह वोही इस्तिक़ामत है कि जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों को मुकल्लफ़ (या'नी पाबन्द) बनाया है और येही वोह ह़ालते ए'तिदाल है जिस की ता'रीफ़ शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाई :

《96》...... "उमूर की भलाई उन का ए'तिदाल या'नी दरमियाना पन है।"

(المصنف لابن ابی شیبة ، کتاب الزهد، مطرف بن الشخير،الحديث:١٣،ج٨،ص٢٤٦)

www.dawateislami.net

लिहाज़ा जो शख़्स इफ़रात़ या तफ़रीत़ का शिकार हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने नफ़्स का इलाज करे ताकि उस का नफ़्स भी इस सिराते़ मुस्तक़ीम तक पहुंच जाए या कम अज़् कम उस के क़रीब तो हो ही जाए, चुनान्चे ए'तिदाल के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया है कि

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ (پ۵،النساء:۱۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से हरगिज़ न हो सकेगा कि औ़रतों को बराबर रखो और चाहे कितनी ही ह़िर्स करो तो येह तो न हो कि एक त़रफ़ पूरा झुक जाओ कि दूसरी को उधर में लटकती छोड़ दो।

वोह शख़्स जो मुकम्मल त़ौर पर ख़ैर के काम न कर सकता हो तो उस के लिये येह भी मुनासिब नहीं कि अब वोह शर के काम करने लगे क्यूं कि बा'ज़ शर के अफ़्आ़ल दूसरे बुरे कामों से ज़ियादा ह़क़ीर और हेच होते हैं जब कि बा'ज़ अफ़्आ़ले ख़ैर दूसरे नेक कामों से ज़ियादा क़द्रो मन्ज़िलत वाले होते हैं, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हर अ़मल करने वाले को उस के इरादे के मुत़ाबिक़ नवाज़ता है।

तम्बीह 2 :

ग़ज़ब अगर किसी बात़िल की वजह से हो तो क़ाबिले मज़म्मत होता है और अगर बात़िल की बजाए ह़क़ की वजह से हो तो क़ाबिले ता'रीफ़ होता है येही वजह है कि जब भी मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी पर ग़ज़ब फ़रमाया तो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर फ़रमाया। चुनान्चे,

﴾97﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं फ़ज्र की नमाज़ फुलां शख़्स की वजह से (जमाअ़त के बा'द) ताख़ीर से अदा करता हूं क्यूं कि वोह बहुत लम्बी क़िराअत करता है।" (रावी फ़रमाते हैं कि) मैं ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जितने जलाल व शिद्दत में उस दिन नसीह़त करते हुए देखा उस से पहले इतनी शिद्दत कभी भी न देखी थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम में से कुछ ऐसे भी हैं जो लोगों को मु-तनफ़्फ़िर करते हैं, लिहाज़ा जब तुम में से कोई लोगों की इमामत कराए तो नमाज़ को मुख़्तसर रखे क्यूं कि उस के पीछे बच्चे, बूढ़े और ज़रूरत मन्द भी होते हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب الصلوٰۃ ، باب امر الائمۃ......الخ، الحدیث:۱۰۴۴،ص۷۵۱،بتغیر قلیل)

﴾98﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "एक मरतबा मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए तो मैं ने घर के दरवाज़े पर एक ऐसा पर्दा लटका रखा था जिस पर तसावीर बनी हुई थीं,

www.dawateislami.net

जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह देखा तो उसे फाड़ डाला या'नी उस में मौजूद तसावीर को मस्ख़ कर के अपने दस्ते अक़्दस से उसे फेंक दिया और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब उन लोगों को होगा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सि-फ़ते तख़्लीक़ का मुक़ाबला करते हैं ।" (صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب ماوطئی من التصاویر، الحدیث:٥٩٥٤،ص٥٠٥)

《**99**》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़िब्ले की जानिब थूक देखा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर बहुत गिरां गुज़रा यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस से ग़ज़ब इ़यां होने लगा, फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद खड़े हुए और अपने दस्ते अक़्दस से उस को मल कर साफ़ कर दिया और इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से जब कोई नमाज़ में खड़ा होता है तो वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात कर रहा होता है ।" या इर्शाद फ़रमाया : "यक़ीनन उस के और क़िब्ले के दरमियान उस का रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ (अपनी शान के मुताबिक़) होता है लिहाज़ा तुम में से कोई भी क़िब्ला की जानिब मुंह कर के न थूके, बल्कि अपने बाएं या अपने क़दमों में या फिर मस्जिद के इलावा कहीं और जा कर थूके ।" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी चादरे मुबारक का एक कोना पकड़ा और उस में थूक कर उस को बक़िय्या चादर के हि़स्से पर मलते हुए रगड़ा और इर्शाद फ़रमाया : "या फिर वोह ऐसा कर लिया करे ।"

(السنن الکبری للبیھقی، کتاب الصلوٰۃ ، باب من بزق وھو یصلی ، الحدیث:٣٥٩٥،ج٢،ص٤١٥،بدون "الغضب")

तम्बीह 3 :

कुछ लोगों का ख़याल है कि इ़बादत व रियाज़त से ग़ज़ब मुकम्मल तौ़र पर ख़त्म हो सकता है, और कुछ का कहना है कि "येह इलाज को सिरे से क़बूल ही नहीं करता ।" जब कि सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "इस की ह़क़ीक़त वोही है जो हम बयान करेंगे ।"

ह़ासिले कलाम येह है कि जब तक इन्सान किसी चीज़ को पसन्द या ना पसन्द करता है तो वोह ग़ज़ब से भी पाक नहीं रह सकता, फिर अगर वोह पसन्दीदा चीज़ ज़रूरी हो म-सलन ग़िज़ा, रिहाइश, लिबास और जिस्मानी सिह़्ह़त वग़ैरा तो इस की तक़्विय्यत के लिये ग़ज़ब का होना भी इन्तिहाई ज़रूरी है, और अगर वोह पसन्दीदा चीज़ ग़ैर ज़रूरी हो म-सलन जाह व मर्तबा, शोहरत, मजालिस में सदारत, इ़ल्म पर फ़ख़्र और कसीर माल वग़ैरा तो मुम्किन है ज़ोहद (या'नी दुन्या से बे रग़बती) वग़ैरा से उस पर ग़ज़ब न हो अगर्चे उस चीज़ का पसन्दीदा होना आ़दत और कामों के अन्जाम से ना वाक़िफ़िय्यत की वजह से हो, लोगों का ग़ज़ब आ़म तौ़र पर बल्कि अक्सर इसी क़िस्म पर होता है, या फिर वोह पसन्दीदा चीज़ बा'ज़ के नज़्दीक इन्तिहाई ज़रूरी होगी म-सलन उ़-लमाए किराम की कुतुब और कारीगरों के आलात वग़ैरा, इस क़िस्म में पसन्दीदा चीज़ के न मिलने पर ग़ज़ब उसे ही आता है जिस का इन्ह़िसार सिर्फ़ उसी चीज़ पर हो, दूसरे लोगों का मुआ़-मला इस के बर अ़क्स है ।

www.dawateislami.net

जब येह मा'लूम हो गया कि इन्सान की पसन्द के ए'तिबार से तीन क़िस्में हो सकती हैं या'नी या तो वोह ज़रूरी होगी या ग़ैर ज़रूरी, या फिर वोह बा'ज़ के नज़्दीक ज़रूरी होगी। तो अब येह भी जान लें कि **पहली क़िस्म** या'नी पसन्दीदा ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के ज़वाल में इ़बादत व रियाज़त मुकम्मल त़ौर पर तो मुअस्सर नहीं होती क्यूं कि येह फ़ित़री तक़ाज़े हैं अलबत्ता इस को एक ऐसी ह़द पर रखने में ज़रूर मुअस्सिर हो सकती है कि जिस को शर-अ़ और अ़क़्ल दोनों अच्छा जानते हों, जो मुम्किन है, वोह इस त़रह़ कि एक मुद्दत तक मुजा-हदात और बनावटी बुर्द-बारी वग़ैरा से काम लिया जाए यहां तक कि वोह बुर्द-बारी वग़ैरा उस की फ़ित़रत में शामिल हो जाए। **दूसरी क़िस्म** का ज़वाल बिल-कुल्लिया मुजा-हदात से मुम्किन है क्यूं कि दिल से ऐसी अश्या की मह़ब्बत निकालना मुम्किन है इस वजह से वोह उन का मोह़ताज नहीं होता और इस बात के पेशे नज़र भी कि इन्सान का ह़क़ीक़ी वत़न क़ब्र और ठिकाना आख़िरत है, दुन्या तो मह़ज़ ब क़दरे ज़रूरत ज़ादे राह इकठ्ठा करने की जगह है और इस के इ़लावा जो कुछ है वोह तो वत़न (या'नी क़ब्र) और ठिकाने (या'नी आख़िरत) में उस पर वबाल ही होगा, लिहाज़ा दुन्या की मह़ब्बत को दिल से मिटा कर इस में ज़ाहिदों (या'नी दुन्या से बे रग़बत लोगों) जैसी ज़िन्दगी गुज़ारना चाहिये, अलबत्ता ऐसा बहुत कम होता है कि इ़बादत व रियाज़त इस गुनाहे कबीरा को जड़ से उखाड़ सके। मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान में ग़ौर कर लेना भी मुनासिब है कि

《100》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं भी तो लबादए ब-शरी में हूं और मुझे भी इस ह़ालत में दूसरे इन्सानों की त़रह़ बा'ज़ अवक़ात गुस्सा आ जाता है, लिहाज़ा हर वोह मुसल्मान जिसे मैं ने बुरा भला कहा हो या उस पर किसी वजह से मलामत की हो या उसे मारा हो तो मेरे इन अफ़्आ़ल को क़ियामत के दिन मेरी जानिब से उस के ह़क़ में रह़मत, बाइ़से त़हारत और अपनी क़ुरबत का ज़रीआ़ बना दे।"

(شرح النووی علی مسلم، کتاب البر والصلة ، باب من لعنة النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ج۲،ص۳۲٤)

《101》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मैं हर वोह बात तह़रीर कर लिया करूं जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुस्से और रिज़ा की ह़ालत में इर्शाद फ़रमाते हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! लिख लिया करो, उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है ! इस से कभी ह़क़ के इ़लावा कोई बात नहीं निकलती।" और साथ ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने ह़क़्क़े तरजुमान की जानिब इशारा फ़रमाया और येह न इर्शाद फ़रमाया : मैं तो गुस्से ही नहीं होता।" बल्कि इर्शाद फ़रमाया "ग़ज़ब मुझे ह़क़ बात कहने से नहीं रोकता।" या'नी मैं ग़ज़ब व गुस्से के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करता।

(ابوداؤد، کتاب العلم ، باب کتابة العلم،الحدیث:۳٦٤٦،ص۱٤۹۳،مفهوماً)

www.dawateislami.net

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : ''सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या के लिये ग़ज़ब न फ़रमाते थे, और जब कभी ह़क़ बात के लिये ग़ज़ब फ़रमाते तो कोई पहचान न पाता और उस वक़्त तक ग़ज़ब की वजह से किसी चीज़ का फ़ैसला न फ़रमाते जब तक कि उस की ताईद व तौसीक़ न हो जाती।''

ह़ासिले कलाम येह कि ग़ुस्से से छुटकारे का सब से बड़ा ज़रीआ़ दुन्या की आफ़ात और मुसीबतों की पहचान ह़ासिल हो जाने के बा'द दिल से इस की मह़ब्बत को मिटा देना है, जब कि इस में वुक़ूअ़ का सब से बड़ा ज़रीआ़ ग़ुरूर व तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी, मिज़ाह़, मज़ाक़ मस्ख़री, आ़र दिलाना, नुक़्सान पहुंचाना, दुश्मनी करना, बद दियानती करना और ग़ैर ज़रूरी माल व जाह (या'नी मक़ाम व मन्सब) का इन्तिहाई ह़रीस होना है, येह सब बुरी और शरअ़न मज़्मूम आ़दतें हैं और इन अस्बाब की मौजू-दगी में ग़ुस्से से नजात की कोई सूरत मुम्किन नहीं, लिहाज़ा इसे रियाज़त और मुजा-हदे के ज़रीए ज़ाइल करना ज़रूरी है ताकि इन्सान इन के मुख़ालिफ़ अच्छे औसाफ़ से आरास्ता हो जाए।

तम्बीह 4 :

गुज़श्ता अह़ादीस से ग़ुस्से की दवा और इस के हैजान के बा'द इसे ज़ाइल करने और इ़ल्म व अ़मल की त़रफ़ रुजूअ़ का पता चलता है, लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि ग़ुस्सा पीने की फ़ज़ीलत में वारिद आयन्दा आने वाली रिवायात और अ़फ़्वो दर गुज़र, बुर्द-बारी और सब्र के फ़ज़ाइल में ग़ौर करे क्यूं कि इस त़रह़ इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तय्यार कर्दा सवाब में रग़बत करता है जिस से उस का ग़ुस्सा और इहानत व सज़ा की त़रफ़ माइल करने का सबब ज़ाइल हो जाता है, इसी लिये जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख़्स को मारने का हुक्म दिया तो उस ने येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ۝ (پ۹،الاعراف:۱۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फैर लो।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह आयते मुबा-रका सुनी और इस में ग़ौर किया तो उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आ़दते मुबा-रका थी कि क़ुरआने पाक सुन कर अपने फ़ैसले से रुक जाते और उस से तजावुज़ न फ़रमाते थे।

इस मुआ़-मले में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने भी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की पैरवी की यूं कि जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख़्स को कोड़े मारने का हुक्म दिया तो उस ने येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

وَالْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ (پ۴،اٰل عمران:۱۳۴) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ग़ुस्सा पीने वाले।

तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने भी उसे आज़ाद करने का हुक्म दे दिया।

www.dawateislami.net

गुस्सा ज़ाइल करने के मुख़्तलिफ़ त़रीके

पहला त़रीक़ा येह है कि इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अपने ऊपर क़ुदरत में ग़ौर करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा क्यूं कि इन्सान क़ियामत में अफ़्वो दर गुज़र का ज़ियादा मोह़ताज होगा, इसी लिये ह़दीसे क़ुदसी में आया है : "ऐ इब्ने आदम ! जब तुझे ग़ुस्सा आए तो मुझे याद कर लिया कर मैं तुझे अपने ग़ज़ब के दौरान याद रखूंगा और हलाक होने वालों के साथ तुझे हलाक न करूंगा।"

दूसरा त़रीक़ा येह है कि बन्दा ख़ुद को सामने वाले के इन्तिक़ाम लेने से डराए कि अगर कोई शख़्स इस से इन्तिक़ाम लेने पर मुसल्लत़ हो जाए, इस की इ़ज़्ज़त दरी करे, इस के उ़यूब को ज़ाहिर करे और इस की मुसीबत पर ख़ुशी के इज़्हार वग़ैरा जैसे दुश्मनाना अफ़्आ़ल करे (तो इस पर क्या गुज़रेगी) येह वोह दुन्यवी मुसीबतें हैं जिस से आख़िरत पर कामिल भरोसा न करने वाले को भी चाहिये कि इन से ग़फ़्लत न बरते।

तीसरा त़रीक़ा येह है कि इन्सान ग़ुस्से की ह़ालत की बुरी सूरत में ग़ौर करे और अपने नज़्दीक ग़ुस्से की क़बाह़त और ग़ज़ब नाक शख़्स की काटने वाले कुत्ते से मुशा-बहत का तसव्वुर व ख़याल करे और बुर्द-बार शख़्स की अम्बिया व औलिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام وَرَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से मुशा-बहत में ग़ौर करे और फिर इन दोनों मुशा-ब-हतों के फ़र्क़ में ग़ौरो फ़िक्र करे।

चौथा त़रीक़ा येह है कि इन्सान ग़ुस्से को उभारने वाले शैत़ानी वस्वसे पर कान ही न धरे क्यूं कि अगर वोह उसे छोड़ दे तो वोह उसे लोगों के सामने आ़जिज़ ज़ाहिर कर देगा और येह सोचेगा कि इस का ग़ुस्सा और इन्तिक़ाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और उस के इन्तिक़ाम से कमतर है क्यूं कि ग़ज़ब नाक शख़्स किसी चीज़ को अपनी चाहत के मुत़ाबिक़ देखना चाहता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इरादे पर नज़र नहीं रखता। और जो इस आफ़त में मुब्तला हो जाए तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब और उस के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ नहीं हो सकता जो कि बन्दे के ग़ुस्से और इन्तिक़ाम से बहुत बड़ा और सख़्त है।

पांचवां त़रीक़ा येह है कि वोह येह अ़मल करे कि शैत़ान मरदूद से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहे और अपनी नाक पकड़ कर येह दुआ़ मांगे :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ اِغْفِرْلِيْ ذَنْبِيْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِيْ وَاَجِرْنِيْ مِنْ مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ

(या'नी या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! ऐ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरा गुनाह बख़्श दे और मेरे दिल के ग़ैज़ को दूर फ़रमा और मुझे गुमराह करने वाले फ़ितनों की आमाज गाह से नजात अ़त़ा फ़रमा) क्यूं कि येह दुआ़ ह़दीसे मुबा-रका में वारिद हुई है, फिर उसे चाहिये कि बैठ जाए फिर भी ग़ुस्सा ख़त्म न हो तो लैट जाए ताकि उसे जिस ज़मीन से पैदा किया गया है उस के क़रीब हो जाए ह़त्ता कि वोह अपनी अस्ल के ह़क़ीर होने और अपने नफ़्स की ज़िल्लत को पहचान ले और ग़ुस्से से पैदा होने वाली ह़-र-कत और ह़रारत से पैदा होने वाला ग़ज़ब सुकून पा ले चुनान्चे,

www.dawateislami.net

﴾102﴿...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक गुस्सा दिल में दहक्ने वाला एक अंगारा है, क्या तुम गुस्सा करने वाले की रगें फूलते और आंखें सुर्ख़ होते हुए नहीं देखते, लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो वोह बैठ जाए और अगर बैठा था तो लैट जाए अगर इस से भी गुस्सा ज़ाइल न हो तो ठन्डे पानी से वुज़ू या गुस्ल करे क्यूं कि आग को पानी ही बुझाता है।'' (اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الغضب والحقد والحسد، باب بيان علاج الغضب بعد هيجانه، ج ٩، ص ٤٢٥)

﴾103﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसे चाहिये कि पानी से वुज़ू करे क्यूं कि गुस्सा आग से है।'' (المرجع السابق، ص ٤٢٦)

﴾104﴿...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''गुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है और शैत़ान को आग से पैदा किया गया है और आग को पानी ही बुझाता है लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो उसे चाहिये कि वुज़ू कर ले।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، الحدیث:٤٧٨٤،ص١٥٧٥)

﴾105﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम्हें गुस्सा आए तो ख़ामोश हो जाया करो।''

(اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الغضب والحقد والحسد، باب بيان علاج الغضب بعد هيجانه، ج ٩، ص ٤٢٦)

﴾106﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सुन लो कि गुस्सा आदमी के दिल में दहक्ने वाला अंगारा है क्या तुम उस की आंखों की सुर्ख़ी और रगों के फूलने को नहीं देखते लिहाज़ा जिसे गुस्सा आए उसे चाहिये कि अपना गाल ज़मीन से लगा दे या'नी लैट जाए।'' (الفقيه والمتفقه للخطيب البغدادى،باب الغضب جمرة فى قلب ابن آدم،ج٢،ص٢٨٤)

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''शायद येह सज्दों की त़रफ़ और मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन आ'ज़ा को ज़लील तरीन जगह या'नी मिट्टी पर लगाने की त़रफ़ इशारा है, ताकि इन्सान का नफ़्स ज़िल्लत का एह़सास पाए और इस की इ़ज़्ज़ते नफ़्स और गुरूर व तकब्बुर जो कि गुस्से के अस्बाब हैं, दूर हो जाएं।''

﴾107﴿...... अमीरुल मुअमीनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक मरतबा गुस्से के वक़्त नाक में पानी चढ़ाया और इर्शाद फ़रमाया : '' गुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है और येह अ़मल गुस्से को दूर कर देता है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، الحدیث:٤٧٨٤،ص١٥٧٥،بدون"یذهب الغضب")

﴾108﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने किसी शख़्स को उस की वालिदा के बारे में आ़र दिलाई, कहते हैं कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ थे, तो सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन पर इ़ताब फ़रमाया, फिर उन से इर्शाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"ऐ अबू ज़र ! नज़र उठा कर आस्मान और उस के ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की अ-ज़-मत की त़रफ़ देखो, फिर येह यक़ीन कर लो कि तुम किसी सुर्ख़ या सियाह से अफ़्ज़ल नहीं, मगर येह कि तुम इल्म में उस से अफ़्ज़ल हो जाओ।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम्हें ग़ुस्सा आया करे तो अगर तुम खड़े हो तो बैठ जाओ और अगर बैठे हो तो टेक लगा लो और अगर टेक लगा कर बैठे हो तो लैट जाओ।"

(اتحاف السادة المتقين،كتاب ذم الغضب والحقد والحسد،باب بيان علاج الغضب بعدهيجانه،ج ٩،ص٤٢٨)

तम्बीह 5 :

जब तुम पर ग़ीबत, इल्ज़ाम तराशी या ऐबजूई के ज़रीए ज़ुल्म किया जाए तो तुम्हारे लिये मुनासिब नहीं कि तुम भी उस के मुक़ाबले में वैसा ही करो क्यूं कि बदले में बराबरी को जांचने का कोई पैमाना नहीं, जब कि क़िसास भी उन्हीं चीज़ों में होता है जिन में बराबरी होती है, अलबत्ता हमारे (शाफ़ेई) अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने रुख़्सत दी है कि इस का मुक़ाबला ऐसी शै से करे जो किसी से जुदा नहीं होती जैसे अह़मक़, कि ह़माक़त उस से जुदा नहीं होती।

ह़ज़रते सय्यिदुना मत़रफ़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "हर इन्सान अपने और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के माबैन मुआ-मले में अह़मक़ है मगर बा'ज़ की ह़माक़त दीगर बा'ज़ से कम होती है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "ज़ाते इलाही عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त के मुआ-मले में हर इन्सान अह़मक़ और जाहिल की त़रह़ है क्यूं कि जहालत तो हर एक में होती है।"

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "ऐ बद अख़्लाक़ ! ऐ बे ह़या ! ऐ इज़्ज़तों को दाग़दार करने वाले ! बशर्ते कि उस में येह वस्फ़ हो, अगर तुझ में ह़या होती तो हरगिज़ ऐसी बात न कहता जिस ने तुझे मेरी नज़र में ह़क़ीर कर दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे रुस्वा करे और तुझ से इन्तिक़ाम ले।"

किसी पर तोहमत लगाना और वालिदैन को गालियां देना तो बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम है और इस को जाइज़ कहने की सूरत में दलील येह है कि,

﴾**109**﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا को किसी वजह से त़ा'ना दिया, तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उन्हें ऐसा जवाब दिया कि वोह ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا पर ग़ालिब आ गईं जब कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी मौजूद थे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह (वाक़ेई) अपने बाप की बेटी है।"

(الدرالمنثور فی التفسیر بالمأثور، سورة النور، تحت الآية ٢٦،ج٦،ص١٦٩)

यहां त़ा'ना देने से मुराद ह़क़ और सच बात के मुत़ाबिक़ जवाब देना है, येह अगर्चे जाइज़ है मगर इसे तर्क करना अफ़्ज़ल है क्यूं कि येह क़बीह़ और बुरे आ'माल की त़रफ़ ले जाता है चुनान्चे,

www.dawateislami.net

﴾110﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन को गु़स्सा जल्दी आता है और वोह राज़ी भी जल्दी हो जाता है, लिहाज़ा येह इसी वजह से है।''

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد،باب بیان القدر الذی یجوز......الخ،ج۳،ص۲۲۳)

﴾111﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को गु़स्सा और रिज़ा के लिहाज़ से तेज़ और सुस्त दो हिस्सों में तक़्सीम फ़रमा दिया है लिहाज़ा जो किसी एक में तेज़ होगा तो दूसरे में सुस्त होगा, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन में से गु़स्से के सुस्त और रिज़ा में जल्दी करने वाले को बेहतर बनाया और इस के बर अ़क्स को बदतर बनाया।''

तम्बीह 6 :

गुज़श्ता सफ़हात में गुज़रा कि **ह़सद** और **कीना** ग़ज़ब के नताइज हैं, इस की वज़ाहत येह है कि जब इन्सान को गु़स्सा आए और वोह उसे नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत न पाने की वजह से पी ले तो वोह (गु़स्सा) बातिन की त़रफ़ लौट जाता है और इस में क़रार पकड़ लेता है फिर वोह कीना और ह़सद बन जाता है, जिस वक़्त इन्सान के दिल पर उस गु़स्से का बोझ और बुग़्ज़ हमेशा के लिये त़ारी होता है तो वोही अस्ल में कीना होता है, और इस के नताइज येह मुरत्तब होते हैं कि बन्दा अपने मग़्ज़ूब (या'नी जिस पर गु़स्सा आया उस) से ह़सद करने लगता है या'नी उस से ने'मत के ज़वाल की तमन्ना कर के उस ने'मत से खु़द नफ़्अ़ उठाना चाहता है, या उस की परेशानी पर खु़शी का इज़्हार करता है और उस से जुदाई इख़्तियार कर के तअ़ल्लुक़ तोड़ लेता है, और अगर वोह उस के पास आ जाए तो उस की ज़बान उस के बारे में ह़राम की मुर-तकिब होती है और वोह उस का मज़ाक़ उड़ाता, मस्ख़री करता और ईज़ा देता है, नीज़ उस से उस का ह़क़ रोक लेता है म-सलन सिलए रेह़्मी और ज़ुल्म दूर करना वग़ैरा और येह तमाम काम सख़्त गुनाह और ह़राम हैं और कीने का सब से कमतर द-रजा दीन को नुक़्सान पहुंचाने वाली इन आफ़ात से एह़तिराज़ करना है। चुनान्चे,

﴾112﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन कीना परवर नहीं होता।'' (کشف الخفاء،حرف المیم، الحدیث:۲۶۸۴،ج۲،ص۲۶۲)

तम्बीह 7 :

अभी आप ने ह़सद का मत़्लब जान लिया कि ह़सद सिर्फ़ उस ने'मत पर होता है जिस को आप ग़ैर के लिये ना पसन्द करें और उस से उस ने'मत के ज़वाल को पसन्द करें, अगर आप अपने लिये उस ने'मत को पसन्द करें और ग़ैर से उस ने'मत के ज़वाल की तमन्ना न करें तो येह ग़िब्त़ा (या'नी रश्क करना) कहलाता है। और बा'ज़ अवक़ात **किसी काम में सब्क़त ले जाने** को भी

www.dawateislami.net

ह़सद कहा जाता है जैसा कि येह ह़दीसे मुबा–रका गुज़री कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़सद[1] (या'नी रश्क) सिर्फ़ दो बन्दों से ही हो सकता है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن مسعود، الحديث:٣٦٥١،ج٢،ص٢٩)

《113》...... साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन रश्क करता है जब कि मुनाफ़िक़ ह़सद करता है।''

(كشف الخفاء ،حرف الميم، الحديث:٢٦٩٣،ج٢،ص٢٦٣)

ह़सद के अह़काम

जब येह बात साबित हो गई तो जान लें कि **पहली सूरत** या'नी ह़सद ह़राम और हर ह़ाल में फ़िस्क़ है, अलबत्ता फ़ासिक़ की ने'मत के ज़वाल की इस लिये तमन्ना करना कि वोह ने'मत उस के फ़साद और मख़्लूक़ को ईज़ा देने का ज़रीआ़ है और येह कि अगर उस की ह़ालत दुरुस्त होती तो उस की ने'मत के ज़वाल की तमन्ना न की जाती तो येह हरगिज़ ह़राम नहीं क्यूं कि उस के ज़वाल की तमन्ना उस के ने'मत होने के ए'तिबार से नहीं की जा रही बल्कि उस के आलए फ़साद और ज़रीअ़ए ईज़ा होने की वजह से की जा रही है, जब कि हमारी बयान कर्दा अह़ादीस ह़सद की ह़ुरमत, इस के फ़िस्क़ और कबीरा गुनाह होने पर दलालत करती हैं।

ह़सद की एक आफ़त येह भी है कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले पर ना राज़गी पाई जाती है कि वोह किसी को ऐसी ने'मत अ़ता फ़रमाए जिस में तुम्हारे लिये किसी नुक़्सान का पहलू न हो तब भी तुम उस से ह़सद करते हो नीज़ इस में अपने मुसल्मान भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार करना भी पाया जाता है। चुनान्चे,

《1》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ط (پ٤،ال عمران:١٢٠)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश हों।

《2》

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ج حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ (پ١،البقرة:١٠٩)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : बहुत किताबियों ने चाहा काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ फैर दें अपने दिलों की जलन से।

---

1 : दो आदमियों से रश्क किया जा सकता है, जैसा कि ह़दीसे पाक में है : ''(1) वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन अ़ता फ़रमाया तो उस ने उस के अह़कामात की पैरवी की, इस के ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम जाना और (2) वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़ता फ़रमाया तो उस ने उस के ज़रीए सिलए रेह़मी की और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़ा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी का अ़मल किया तो उस जैसा होने की तमन्ना करना दुरुस्त है।''

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،الحديث:٧٤٣٦،ج٣،ص١٨٥)

www.dawateislami.net

《3》

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً (پ۵،النسآء:۸۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो येह चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफ़िर हो जाओ जैसे वोह काफ़िर हुए तो तुम सब एक से हो जाओ।

《4》

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ (پ۵،النسآء:۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या लोगों से ह़सद करते हैं उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।

रश्क और मुक़ाबला बाज़ी के अह़काम

दूसरी सूरत या'नी रश्क और मुक़ाबला बाज़ी ह़राम नहीं येह कभी वाजिब होता है तो कभी मुस्तह़ब और कभी मुबाह़। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ (پ۲۷،الحدید:۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश की त़रफ़।

मुसा-बक़त या'नी मुक़ाबला बाज़ी किसी चीज़ से मह़रूम रह जाने के ख़ौफ़ का तक़ाज़ा करती है जैसे दो गुलाम अपने आक़ा की ख़िदमत में एक दूसरे से इस लिये सब्क़त ले जाना चाहें ताकि उस के मन्ज़ूरे नज़र हो जाएं, और येह **ज़रूरिय्याते दीन में वाजिब है** जैसे ईमान, फ़र्ज़ नमाज़ और ज़कात की ने'मत पर रश्क करना लिहाज़ा इन उमूर को अदा करने वाले की त़रह़ होने को पसन्द करना वाजिब है वरना तुम गुनाह पर राज़ी होने वाले बन जाओगे जो कि ह़राम है, जब कि **फ़ज़ीलत के कामों में रश्क** करना मुस्तह़ब है जैसे इ़ल्म या नेक कामों में माल ख़र्च करने पर रश्क करना, जब कि **मुबाह़ ने'मतों पर रश्क करना भी मुबाह़ है** जैसे निकाह़ वग़ैरा पर रश्क करना, अलबत्ता मुबाह़ उमूर (या'नी जाइज़ कामों) में मुक़ाबला बाज़ी फ़ज़ाइल में कमी कर देती है, नीज़ येह ज़ोह्द, रिज़ा और तवक्कुल के भी मुनाफ़ी है और ऐसे कामों में मुक़ाबला करना गुनाह में मुब्तला हुए बिग़ैर भी मक़ामाते रफ़ीआ़ से रोक देता है।

अलबत्ता ! यहां एक बारीक व दक़ीक़ नुक्ते की बात से आगाह होना ज़रूरी है ताकि इन्सान बे ख़बरी में ह़सद के ह़राम फ़े'ल में मुब्तला न हो जाए, और वोह येह है कि जो इन्सान ग़ैर जैसी ने'मत के ह़ुसूल से मायूस हो जाता है तो वोह ख़ुद को उस ने'मत के ह़ामिल शख़्स से कमतर व नाक़िस समझने लगता है, नीज़ उस का नफ़्स येह पसन्द करने लगता है कि उस का नक़्स किसी त़रीक़े से दूर हो जाए और येह उसी वक़्त हो सकता है जब वोह उस ने'मत के ह़ुसूल में काम्याब हो कर या फिर उस ने'मत के ह़ामिल शख़्स की ने'मत के ज़ाइल हो जाने के सबब उस के हम पल्ला व बराबर हो जाए।

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ किया कि वोह उस साहिबे ने'मत शख़्स के मुसावी होने से मायूस हो गया तो तब भी उस के दिल में उस चीज़ की महब्बत बाक़ी रह जाएगी कि वोह ने'मत उस शख़्स के पास भी न रहे जिस की वजह से वोह उस पर मुम्ताज़ हैसिय्यत रखता है क्यूं कि उस ने'मत के ख़त्म होते ही इस का उस साहिबे ने'मत शख़्स से कमतर होना भी ख़त्म हो जाएगा और येह भी हो सकता है कि अब वोह उस पर फ़ज़ीलत ले जाए।

इस शख़्स को क़ाबिले मज़म्मत ह़सद करने वाला ह़ासिद उसी सूरत में कहा जा सकता है बशर्ते कि वोह उस ने'मत को उस शख़्स से ज़ाइल करने पर क़ादिर हो कि उसे ज़ाइल कर दे, और अगर उस ने'मत के ज़वाल पर कुदरत के बा वुजूद उस का तक़्वा व परहेज़ गारी उसे इस काम से और उस की ने'मत के ज़वाल की तमन्ना से रोक दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं क्यूं कि येह एक फ़ित़रती अम्र है, नफ़्से इन्सानी इस से ख़ाली नहीं होता और हो सकता है कि इस ह़दीसे मुबा-रका का येही मफ़्हूम हो कि,

﴾**114**﴿...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर आदमी ह़ासिद है।" (جامع الاحادیث،الحدیث:١٥٧٧١،ج٦،ص٤٣٢)

﴾**115**﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुसल्मान तीन चीज़ों से अलग नहीं हो सकता : (1) ह़सद (2) गुमान और (3) बद शुगूनी, इस के लिये इन से निकलने का त़रीक़ा येह है कि जब तुम ह़सद करो तो ह़द से तजावुज़ न करो।"

(اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الغضب والحقد والحسد، باب بيان حقيقة الحسد حكمه اقسامه مراتبه، ج٩، ص٥٠١)

या'नी अगर तुम अपने दिल में किसी के बारे में कोई चीज़ पाओ तो उस पर अ़मल न करो। लेकिन जो शख़्स ग़ैर से किसी ने'मत में बराबरी ह़ासिल करना चाहे और फिर इस से आ़जिज़ आ जाए, बिल ख़ुसूस जब वोह इस का हम मरतबा हो तो उस से बईद है कि वोह उस के ज़वाल की तमन्ना न करे, मुक़ाबला बाज़ी की येह सूरत ह़राम ह़सद से मुशाबेह है, लिहाज़ा कामिल एह़तियात़ ज़रूरी है क्यूं कि आदमी जब अपने नफ़्स की पसन्द पर कान धरेगा और अपने इख़्तियार से ज़ी ने'मत से ने'मत का ज़वाल चाहने के सबब मुसावात व बराबरी की त़रफ़ माइल होगा तो यक़ीनन ह़राम ह़सद का शिकार हो जाएगा, और उस से नजात सिर्फ़ वोही पा सकता है जो पुख़्ता ईमान और तक़्वा में रासिख़ हो,

बा'ज़ अवक़ात दूसरे से कमतर होने का ख़ौफ़ इन्सान को ह़-र-कत देता और इस बात पर आमादा करता है कि वोह मम्नूअ़ ह़सद का शिकार हो जाए और उस की त़बीअ़त भी ग़ैर की ने'मत के ज़वाल की त़रफ़ माइल हो जाए ताकि दोनों में मुसावात हो सके, इस मक़ाम में कोई रुख़्सत नहीं ख़्वाह येह दीनी मक़ासिद में बराबरी की ख़्वाहिश हो या दुन्यवी मुआ़-मले में बराबरी की तमन्ना हो।

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "मगर जब तक वोह अपनी ख़्वाहिश पर अ़मल न करे तो अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो उसे इस ह़सद की ला'नत से आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाएगा, और उस का अपनी इस ख़्वाहिश को ना पसन्द करना ही उस के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा।"

तम्बीह 8 : **ह़सद के मरातिब**

ह़सद की ह़क़ीक़त और इस के अह़काम जान लेने के बा'द अब इस के मरातिब बयान किये जाते हैं।

ह़सद के चार मरातिब हैं :

(1) किसी की ने'मत के ज़वाल की इस त़रह़ तमन्ना करना कि ख़ुद को उस ने'मत के ह़ुसूल की ख़्वाहिश न हो येह ह़सद का इन्तिहाई द-रजा है (2,3) ग़ैर की ने'मत के ज़वाल के साथ साथ बिऐनिही उसी ने'मत या उस जैसी दूसरी ने'मत के ह़ुसूल की तमन्ना करना, अगर मह़सूद (या'नी जिस से ह़सद हो उस) की ने'मत या उस जैसी ने'मत ह़ासिद को ह़ासिल न हो तो मह़ज़ उस से ने'मत के ज़वाल की तमन्ना इस लिये करना कि वोह उस से मुम्ताज़ न हो सके और (4) ग़ैर से ने'मत के ज़ाइल होने की ख़्वाहिश तो न हो मगर आदमी येह पसन्द करे कि वोह उस से मुम्ताज़ भी न हो। येह आख़िरी सूरत अगर दुन्या के बारे में हो तो ह़सद की मुआ़फ़ शुदा सूरत है और अगर दीन के मुआ़-मले में हो तो मत़्लूब है।

तम्बीह 9 :

बिला शुबा ह़सद दिल के बड़े अमराज़ में से है और चूंकि दिल की बात़िनी बीमारियों का इ़लाज इ़ल्म ही के ज़रीए़ हो सकता है लिहाज़ा ह़सद के मरज़ के लिये नफ़्अ़ बख़्श इ़ल्म येह है कि तुम येह बात जान लो कि ह़सद तुम्हारे दीन और दुन्या दोनों के लिये नुक़्सान देह है जब कि मह़सूद के दीन व दुन्या के लिये हरगिज़ मुज़िर नहीं, क्यूं कि ह़सद से कभी कोई ने'मत ज़ाइल नहीं हुई, वरना तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किसी पर कोई ने'मत बाक़ी ही न रहती यहां तक कि किसी के पास ईमान की दौलत भी बाक़ी न रहती, क्यूं कि कुफ़्फ़ार की तो हमेशा येह ख़्वाहिश रही कि किसी भी त़रह़ अहले ईमान से ईमान की दौलत छिन जाए, अलबत्ता मह़सूद को दीनी ए'तिबार से तुम्हारे ह़सद की वजह से फ़ाएदा ज़रूर होता है क्यूं कि वोह तुम्हारी जानिब से मज़्लूम होता है ख़ुसूसन जब तुम ग़ीबत और उस की बे इ़ज़्ज़ती या किसी और ज़रीए़ से उस को तक्लीफ़ पहुंचा कर अपने ह़सद को ज़ाहिर करते हो तो ऐसी सूरत में तुम ख़ुद अपनी जानिब से उस की ख़िदमत में अपनी नेकियों को बत़ौरे तोह़फ़ा व हदिय्या पेश कर रहे होते हो ह़त्ता कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ालत में मुलाक़ात करोगे कि तुम उस शख़्स की त़रह़ मुफ़्लिस होगे जो उस वक़्त भी उन ने'मतों से इसी त़रह़ मह़रूम होगा कि जिस त़रह़ दुन्या में मह़रूम था, और तुम जिस शख़्स से ह़सद करते रहे वोह तुम्हारे दुख दर्द वग़ैरा से बे परवाह और मह़फ़ूज़ होगा, लिहाज़ा जब तुम्हारी बसीरत का पर्दा और दिल का ज़ंग छट चुका है और तुम ने इस बारे में ग़ौरो फ़िक्र भी कर लिया है नीज़ तुम ख़ुद अपनी जान के दुश्मन भी नहीं और न ही अपने दुश्मन के दोस्त हो तो फिर एक अ़ज़ीम ख़त़रे में मुब्तला हो जाने के डर से इस मूज़ी ह़सद से मुंह फैर लो, और वोह ख़त़रा येह है कि कहीं तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले पर नाराज़ हो कर उस की तक़्सीम और अ़द्ल को ना पसन्द करो जो कि गुनाह है या'नी ऐसा गुनाह गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौह़ीद पर जुरअत करना है और दीन की बरबादी के लिये येही जुरअत काफ़ी है।

www.dawateislami.net

ऐसा क्यूंकर न हो जब कि तुम ने अपने इस अ़मल से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام औलियाए किराम और बा अ़मल उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के उस गुरौह से जुदाई इख़्तियार कर ली जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को ख़ैर पहुंचाना पसन्द करते हैं और इब्लीस व शयातीन के उस गुरौह में शिर्कत कर ली है जो मुअमिनीन के लिये मुसीबतों और ने'मतों के ज़वाल को पसन्द करते हैं ? दिल की येह गन्दगी तुम्हारी नेकियों को इस त़रह़ खा जाएगी जिस त़रह़ आग लकड़ियों को खा जाती है, इस के साथ साथ ह़सद तुम्हारे दुन्यवी ज़रर या'नी रन्जो ग़म में भी इज़ाफ़ा करता है वोह ऐसे कि जब तुम मह़सूद को देखते हो कि उस की ने'मतों में इज़ाफ़ा होता जा रहा है और तुम्हारी ने'मतों में कमी हो रही है तो तुम ग़मगीन हो जाते हो, पस येह तुम्हारे ह़सद ही की आफ़त है कि तुम हमेशा इन्तिहाई ग़मगीन, रन्जीदा ख़ातिर, तंग दिल और शिकस्ता रहते हो, पस अगर येह फ़र्ज़ भी कर लिया जाए कि तुम आख़िरत में दोबारा जी उठने और ह़िसाबो किताब को नहीं मानते तब भी ह़सद को छोड़ देना ही मुनासिब है ताकि तुम उख़्रवी अ़ज़ाब से पहले इन दुन्यवी सज़ा से बच सको । इस सारी गुफ़्त-गू से ज़ाहिर होता है कि तुम ख़ुद ही अपने दुश्मन और अपने दुश्मन के दोस्त हो क्यूं कि तुम एक ऐसी चीज़ के आ़दी हो जो दुन्या व आख़िरत में तुम्हारे लिये तो नुक़्सान देह है जब कि तुम्हारे दुश्मन के लिये नफ़्अ़ मन्द है और यूं तुम दुन्या व आख़िरत में ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ और मख़्लूक़ दोनों के नज़्दीक क़ाबिले मज़म्मत और बद बख़्त हो जाओगे ।

ह़सद का इलाज

इस मरज़ के लिये **नाफ़ेअ़ अ़मल** येह है कि तुम अपने नफ़्स को इस बात का पाबन्द करो कि वोह मह़सूद के साथ अपने ह़सद के ख़िलाफ़ सुलूक करे, म-सलन मज़म्मत को मद्ह़ से, उस के सामने तकब्बुर करने को तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी से, उस पर सख़्ती करने को नर्मी में इज़ाफ़ा करने से बदल दे, इस त़रह़ ह़सद की बीमारी कमज़ोर हो जाएगी और जब तुम ह़सद के ख़िलाफ़ अ़मल में इज़ाफ़ा करोगे तो तुम्हारे ह़सद में कमी आ जाएगी यहां तक कि येह बिल्कुल ही ख़त्म हो जाएगा, अगर समझ जाओगे तो सलामती पा लोगे और इस पर अ़मल करोगे तो नफ़्अ़ पाओगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ देने वाला है और उसी की त़रफ़ तमाम उमूर लौटते हैं।

तम्बीह 10 :

इस में कोई शक नहीं कि हर इन्सान उस शख़्स से बुग़्ज़ रखता है जो उस के लिये फ़ित़रतन तक्लीफ़ देह हो, लिहाज़ा उस के नज़्दीक उस शख़्स की अच्छी और बुरी ह़ालतें भी एक जैसी नहीं हो सकतीं, येही वजह है कि शैत़ान नफ़्स को उस से ह़सद करने पर उभारता है अब अगर वोह उस की बात मान ले यहां तक कि ह़सद उस के क़ौल या किसी इख़्तियारी फ़े'ल से ज़ाहिर हो जाए, या फिर वोह दिल में उस की ने'मत के ज़वाल की मह़ब्बत रखे तो नफ़्स का ऐसा करना गुनाह है, क्यूं कि ह़सद के गुनाह होने का तअ़ल्लुक़ ही दिल से है, और येह एक ऐसा बात़िनी गुनाह है जिस का अस्ल

www.dawateislami.net

तअ़ल्लुक़ मख़्लूक़ से ही होता है, लिहाज़ा अगर कोई तौबा करना चाहे तो उस के लिये येह शर्त़ नहीं कि वोह मह़सूद से मुआ़फ़ी मांगे क्यूं कि येह एक बात़िनी मुआ़-मला था जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जान सकता।

जिस वक़्त तुम अपने ज़ाहिर को रोक लो और अपने दिल को इस बात पर मजबूर कर दो कि इस में फ़ित़रती त़ौर पर दूसरों की ने'मत के ज़वाल की जो मह़ब्बत पुख़्ता हो चुकी है वोह उस को ना पसन्द करे, यहां तक कि ऐसा मह़सूस हो गोया कि तुम अपने नफ़्स को उस की फ़ित़रती ग़िज़ा मुहय्या करने वाले तो हो लेकिन अब उस की ना पसन्दीदगी का रुख़ इस के फ़ित़री मैलान की बजाए अ़क़्ल की जानिब हो गया है तो उस वक़्त ऐसा लगेगा कि तुम अपने फ़र्ज़े मन्सबी से सुबुक दोश हो गए हो और इस से बढ़ कर ग़ालिबन तुम किसी इख़्तियार के तह़त भी दाख़िल नहीं होगे।

बाक़ी रही त़बीअ़त और फ़ित़रत की तब्दीली कि इस के नज़्दीक एह़सान करने वाले और तक्लीफ़ देने वाले हर दो अफ़राद बराबर हो जाएं कि दोनों पर इन्आ़म की वजह से उस का ख़ुश होना और दोनों पर किसी मुसीबत की वजह से उस का दुख मह़सूस करना एक त़रह़ का हो, तो येह एक ऐसा मुआ़-मला है जिस का मु-तह़म्मिल होना त़बीअ़त के लिये उसी सूरत में मुम्किन हो सकता है जब कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में मुस्तग़रक़ हो और उस की मश्ग़ूलियत ऐसी हो कि वोह सारी मख़्लूक़ को एक ही निगाह (या'नी शफ़्क़त की नज़र) से देखे, पस जब इस क़िस्म की ह़ालत का ह़ासिल होना मुम्किन न हो तो फिर फ़ित़रत व त़बीअ़त में भी दवाम नहीं रहता बल्कि वोह भी बिजली की त़रह़ आई और गई हो जाती है, इस के बा'द दिल दोबारा अपने फ़ित़री मैलान की जानिब माइल हो जाता है और शैत़ान उसे वस्वसों के ज़रीए भड़काने लगता है, और फिर जब कभी इन्सान अपने दिल को ना पसन्दीदगी के मुक़ाबिल ला खड़ा करे तो अपने ह़ुक़ूक़ अदा करने के क़ाबिल हो जाता है।

सुवाल : कुछ लोगों का कहना है कि जब तक ह़सद का इज़्हार आ'ज़ा से न हो बन्दा गुनाहगार नहीं होता और अपने इस क़ौल की दलील येह देते हैं कि

﴾116﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन आ़दतें ऐसी है कि कोई भी मोमिन इन से बच नहीं सकता ह़ालां कि इन से बचने का एक रास्ता भी है, पस ह़सद से छुटकारे का रास्ता येह है कि इन्सान ह़द से न बढ़े।"

जवाब : येह क़ौल या तो ज़ईफ़ है और या फिर इन्तिहाई शाज़, क्यूं कि ह़क़ बात वोही है जो गुज़श्ता सफ़ह़ात में गुज़र चुकी कि ह़सद मुत़्लक़न ह़राम है, ह़दीसे पाक में बयान कर्दा सूरत की वजह से अगर इन की बात सह़ीह़ मान भी लें तो फिर भी ह़दीसे पाक को इस बात पर मह़मूल करेंगे कि जब ह़सद को दुश्मन की ने'मत के ज़वाल चाहने के फ़ित़री मैलान के मुक़ाबिल रखा जाए तो दीनी और अ़क़्ली ए'तिबार से भी येह एक ना पसन्दीदा फ़े'ल ही है, और येही ना पसन्दीदगी ही तो इन्सान को बग़ावत व सरकशी और ईज़ा रसानी से रोकती है, नीज़ हर ह़ासिद और उस के गुनाह की मज़म्मत में कई एक रिवायात बयान की जा चुकी हैं, ह़सद तो ह़क़ीक़तन होता ही दिल में है तो फिर कैसे किसी के लिये

www.dawateislami.net

येह जाइज़ हो सकता है कि वोह अपने मुसल्मान भाई की बुराई भी चाहे जब कि उस का दिल अपने भाई की उस मुसीबत को ना पसन्द भी करता हो ?

गुस्सा पीने और अफ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल

《1》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

وَالْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَالْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ O (پ۴،آل عمران:۱۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के महबूब हैं।

《2》

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَO (پ۹،الاعراف:۱۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फैर लो।

《3》

وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌO وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ O (پ۲۴،حٰمۤ السجدة:۳۴-۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त और येह दौलत नहीं मिलती मगर साबिरों को और इसे नहीं पाता मगर बड़े नसीब वाला।

《4》

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِO (پ۲۵،الشوریٰ:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक जिस ने सब्र किया और बख़्श दिया तो येह ज़रूर हिम्मत के काम हैं।

《5》

فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِیْلَO (پ۱۴،الحجر:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम अच्छी त़रह दर गुज़र करो।

《6》

وَلْیَعْفُوْا وَلْیَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ (پ۱۸،النور:۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और चाहिये कि मुआफ़ करें और दर गुज़र करें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे।

www.dawateislami.net

《7》

وَاخْفِضْ جَنَاحَکَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ ۝ (پ۱۴،الحجر:۸۸)
तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मुसलमानों को अपने रहमत के परों में ले लो।

इन के इलावा भी कई आयाते मुक़द्दसा इन फ़ज़ाइल पर मब्नी हैं।

《117》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसा नर्मी फ़रमाने वाला है कि हर काम में नर्मी को पसन्द फ़रमाता है।" (صحیح البخاری، کتاب استتابة المرتدین،باب اذا عرض الذمی......الخ،الحدیث:۶۹۲۷،ص۵۷۸)

《118》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आसानी पैदा करो और मुश्किल में न डालो और ख़ुश ख़बरी सुनाओ और मु-तनफ़्फ़िर न करो।"
(صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب فی الامر بالتیسیر......الخ، الحدیث:۴۵۲۵،ص۹۸۵،بتقدمٍ وتأخرٍ)

《119》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जब भी दो चीज़ों में से किसी एक को इख़्तियार करने का हुक्म होता तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दोनों में से आसान तरीन चीज़ को इख़्तियार फ़रमाते बशर्ते कि वोह गुनाह न हो, अगर वोह आसान चीज़ गुनाह होती तो तमाम लोगों से ज़ियादा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस से दूरी इख़्तियार फ़रमाते, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी अपने लिये किसी से इन्तिक़ाम न लिया, मगर जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुरमत को तोड़ा जाता तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इन्तिक़ाम लेते। (صحیح البخاری، کتاب الادب،باب قول النبی یسروا......الخ،الحدیث:۶۱۲۶،ص۵۱۶)

《120》...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर उहुद के दिन से भी ज़ियादा कोई सख़्त दिन गुज़रा है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक मुझे तुम्हारी क़ौम से बहुत ईज़ा पहुंची है जब मैं ने ख़ुद को **इब्ने अ़ब्दे यालील बिन अ़ब्दे कुलाल** पर पेश किया तो उस ने मेरी दा'वत क़बूल न की लिहाज़ा मैं रन्जीदा चेहरा लिये चल दिया, जब मैं "**क़र्नुस्सआ़लिब**" (जो एक जगह का नाम है वहां) पहुंचा तब मुझे इफ़ाक़ा हुवा, अचानक मैं ने अपना सर उठाया तो देखा कि एक बादल मुझ पर साया फ़िगन है, मैं ने उसे देखा तो उस में जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) नज़र आए उन्हों ने मुझे पुकार कर अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी क़ौम से गुफ़्त-गू और उन का जवाब सुन कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में "**म-लकुल जिबाल** (या'नी पहाड़ों पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते)" को भेजा है ताकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसे अपनी क़ौम के बारे में जो चाहें हुक्म इर्शाद फ़रमाएं।" फिर "**म-लकुल जिबाल**" ने मुझे मुख़ातब कर के सलाम किया और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी क़ौम को दी गई दा'वत और उन के जवाब को भी सुन लिया है, मैं पहाड़ों पर मुक़र्रर फ़िरिश्ता हूं, मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में इस लिये भेजा है ताकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

मुझे अपनी क़ौम के बारे में जो चाहें हुक्म इर्शाद फ़रमाएं, अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चाहें तो मैं इन पर इन दो पहाड़ों को मिला दूं ?'' तो मैं ने कहा : ''मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की पुश्तों से ऐसे लोगों को पैदा फ़रमाएगा जो एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करेंगे और किसी को उस का शरीक न ठहराएंगे ।''

(صحیح مسلم ،کتاب الجهاد، باب مالقی النبی......الخ، الحدیث:٤٦٥٣،ص٩٩٨)

《121》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जा रहा था जब कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मोटी धारियों वाली नजरानी चादर ओढ़ रखी थी, रास्ते में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को एक आ'राबी मिला उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की चादरे मुबारक को पकड़ कर ज़ोर से खींचा तो मैं ने देखा कि आ'राबी के चादर को ज़ोर से खींचने की वजह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की गरदने मुबारक पर चादर की धारियों के निशान पड़ गए थे सख़्ती से चिमटा लेने की वजह से उस पर चादर के गोटे के निशान पड़ गए थे, फिर उस आ'राबी ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के पास मौजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माल में से मेरे लिये कुछ हुक्म दीजिये ।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस आ'राबी की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई और मुस्कुराने लगे फिर उस के लिये कुछ माल देने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया ।''

(صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ما کان النبی ......الخ،الحدیث:٣١٤٩،ص٢٥٤)

《122》...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''गोया मैं सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देख रहा हूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अम्बियाए किराम में से एक नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की हिकायत बयान फ़रमा रहे हैं कि उन्हें उन की क़ौम ने मार मार कर लहू लुहान कर दिया और वोह नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने चेह्‌रए मुबा-रका से ख़ून साफ़ करते हुए दुआ़ मांग रहे थे : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी क़ौम को मुआ़फ़ फ़रमा दे कि येह लोग मुझे नहीं जानते ।'' (صحیح البخاری، کتاب استتابة المرتدین،باب ٥،الحدیث:٦٩٢٩،ص٥٧٨)

《123》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''पहलवानी लोगों को पछाड़ देने में नहीं बल्कि पहलवान तो वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने आप पर क़ाबू पा ले ।'' (صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، الحدیث:٦١١٤،ص٥١٦)

《124》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है और वोह हिल्म और वक़ार हैं ।'' (صحیح مسلم ،کتاب الایمان،باب الامر بالایمان......الخ، الحدیث:١١٧،ص٦٨٣)

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ैस अशज صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाई थी, इस का बयान आगे आएगा।

《125》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रफ़ीक़ है और नर्मी को पसन्द फ़रमाता है और नर्मी पर वोह कुछ अ़ता फ़रमाता है जो नर्मी के इ़लावा किसी शै पर अ़ता नहीं फ़रमाता।"

(صحیح مسلم ، کتاب البر و الصلۃ،باب فضل الرفق، الحدیث:۶۶۰۱،ص ۱۱۳۱)

《126》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस चीज़ में नर्मी होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है और जिस चीज़ से नर्मी निकल जाती है उसे ऐबदार कर देती है।" (صحیح مسلم ، کتاب البر و الصلۃ،باب فضل الرفق، الحدیث:۶۶۰۲،ص ۱۱۳۱)

《127》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो नर्मी से मह़रूम रहा वोह हर भलाई से मह़रूम रहा।" (المرجع السابق، الحدیث:۶۵۹۸،ص ۱۱۳۱)

《128》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर चीज़ के साथ भलाई करने का हुक्म फ़रमाया है, पस जब तुम किसी को क़त्ल करो तो अच्छे त़रीक़े से (या'नी बिग़ैर अज़िय्यत पहुंचाए फ़ौरन) क़त्ल करो और जब ज़ब्ह़ करो तो अच्छी त़रह़ ज़ब्ह़ करो और तुम में से हर एक अपनी छुरी की धार तेज़ करे और अपने ज़बीह़े को आराम पहुंचाए।"

(صحیح مسلم ، کتاب الصید و الذبائح......الخ،باب الامر باحسان الذبح......الخ، الحدیث:۵۰۵۵،ص ۱۰۲۷)

《129》...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के इ़लावा कभी किसी चीज़, औ़रत या ख़ादिम को अपने दस्ते अक़्दस से न मारा, और न ही ईज़ा पहुंचने पर ईज़ा देने वाले से इन्तिक़ाम लिया, अलबत्ता जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़ुरमत को तोड़ा जाता तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इन्तिक़ाम लेते।"

(صحیح مسلم، کتاب الفضائل،باب مباعدتہ للآثام......الخ،الحدیث:۶۰۵۰،ص ۱۰۸۸)

《130》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे कुछ रिश्तेदार हैं, मैं तो उन से सिलए रेह़मी करता हूं लेकिन वोह मुझ से क़त्ए़ रेह़मी करते हैं और मैं उन से अच्छा सुलूक करता हूं जब कि वोह मुझ से बुरा सुलूक करते हैं, मैं उन से बुर्द-बारी से पेश आता हूं जब कि वोह मुझ से जहालत का बरताव करते हैं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम वाक़ेई ऐसा करते हो जैसा तुम ने कहा तो गोया तुम उन्हें गर्म राख खिला रहे हो और जब तक तुम ऐसा करते रहोगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन के मुक़ाबले में तुम्हारे साथ एक मददगार मौजूद होगा।" (صحیح مسلم ، کتاب البر و الصلۃ ، باب صلۃ الرحم......الخ،الحدیث:۶۵۲۵،ص ۱۱۲۶)

www.dawateislami.net

《131》...... जब **ज़ुल ख़ुवैसिरह** ने मस्जिदे न-बवी शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में पेशाब किया तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे मारने के लिये दौड़े, तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इसे छोड़ दो और इस के पेशाब पर पानी का डोल बहा दो क्यूं कि तुम्हें नर्मी करने के लिये भेजा गया है तंगी करने के लिये नहीं भेजा गया।"

(صحیح البخاری ، کتاب الوضوء ، باب صب الماء علی البول فی المسجد،الحدیث:٢٢٠،ص ٢٠،"ذوالخویصرہ"بدلہ "قام اعرابی")

《132》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक तुम्हारी दो आदतें ऐसी हैं कि जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है वोह वक़ार और बुर्द-बारी हैं।" (صحیح مسلم ،کتاب الایمان،باب الامر بالایمان باللہ تعالیٰ......الخ، الحدیث:١١٧،ص ٦٨٣)

《133》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) पसन्द फ़रमाते हैं वोह ख़स्लतें हिल्म और वक़ार हैं।"

(شعب الایمان ، باب فی حسن الخلق، الحدیث:٨٤٠٩،ج٦،ص ٣٣٥)

《134》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ऐ अशज ! तुम्हारी दो आदतें (या'नी हिल्म और वक़ार) ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पसन्द फ़रमाते हैं।"

(سنن ابن ماجہ ، ابواب الزھد، باب الحلم،الحدیث:٤١٨٧،ص ٢٧٣١،بدون "ورسولہ")

《135》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में दो आदतें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है वोह वक़ार और बुर्द-बारी हैं।" (المعجم الکبیر،الحدیث:٨١٢،ج ٢٠،ص ٣٤٦،٣٤٥)

《136》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि कौन से लोग जहन्नम पर हराम हैं?" या इर्शाद फ़रमाया : "किन लोगों पर जहन्नम हराम है?" हम ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर आसानी पैदा करने वाले नर्म और खुश गुफ़्तार शख़्स पर जहन्नम हराम है।" (جامع الترمذی،ابواب صفة القیامة، باب فضل کل قریب......الخ،الحدیث:٢٤٨٨،ص ١٩٠٢)

《137》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "गुस्से में आने वाले मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वोह हैं कि जब उन्हें गुस्सा आ जाए तो फ़ौरन रुजूअ कर लेते हैं।" (المعجم الاوسط،الحدیث:٥٧٩٣،ج٤،ص ٢٢٤)

एक रिवायत में है : "गुस्सा मेरी उम्मत के नेक लोगों को भी लाहिक़ हो जाता है।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال، الحدیث سلام بن سلیم، ج٤،ص ٣١١)

www.dawateislami.net

《138》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सीनों में मौजूद कुरआने हकीम की इज़्ज़त व अ-ज़मत की ख़ातिर हामिलीने कुरआन को भी गुस्सा लाहिक़ हो जाता है।" (کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،باب حرف الحاء،الحدیث:۵۷۹۹،ج۳،ص۵۵)

《139》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दीन के लिये गुस्सा मेरी उम्मत के बेहतरीन और नेक लोगों ही को आता है।"

(المرجع السابق، الحدیث:۵۸۰۰،ج۳،ص۵۵)

《140》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हामिलीने कुरआन से ज़ियादा दीनी मुआ-मले में कोई ग़ज़ब नाक होने का मुस्तहिक़ नहीं क्यूं कि उन के सीने में कुरआने पाक की इज़्ज़त व अ-ज़मत होती है।"

(المرجع السابق، الحدیث:۵۸۰۳،ج۳،ص۵۵)

《141》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक इन्सान बुर्द-बारी की वजह से इबादत गुज़ार और रोज़ादार का द-रजा पा लेता है, और कभी वोह ज़ालिम लिखा जाता है हालां कि सिर्फ़ अपने अहले ख़ाना ही पर कुदरत रखता है।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:۶۲۷۳،ج۴،ص۳۶۹)

《142》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बुर्द-बार इन्सान दुन्या में भी और आख़िरत में भी सरदार होता है और क़रीब है कि बुर्द-बार इन्सान नबी के फ़ैज़ को पा ले।" (کنزالعمال، کتاب الاخلاق،الحدیث:۵۸۰۷/۵۸۱۰،ج۳،ص۵۵)

《143》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ऐ अशज ! तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है, और वोह बुर्द-बारी और वक़ार हैं।" (سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب الحلم،الحدیث:۴۱۸۷،ص۲۷۳۱)

《144》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "वोह शख़्स बुर्द-बार नहीं हो सकता जो उन लोगों के साथ अच्छा सुलूक न करे जिन्हें उस के साथ रहने के सिवा कोई चारा न हो यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये कोई राह निकाल दे।" (شعب الایمان ، باب فی حسن الخلق،فصل فی من العشرة، الحدیث:۸۱۰۵،ج۶،ص۲۶۷)بتغیرِ قلیلٍ

《145》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बुर्द-बारी से बढ़ कर कोई चीज़ अच्छी नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जितनी ईज़ा मुझे दी गई है उतनी किसी को नहीं दी गई।" (کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:۵۸۱۳/۵۸۱۵،ج۳،ص۵۶)

www.dawateislami.net

﴾146﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बन्दे ने कभी कोई ऐसा घूंट नहीं पिया जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उस की रिज़ा के लिये गुस्सा पीने से अफ़्ज़ल हो।''

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، الحديث:٦١٢٢،ج٢،ص٤٨٢)

﴾147﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उस घूंट से ज़ियादा अज्र वाला कोई घूंट नहीं जो गुस्से का घूंट बन्दे ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये पिया।'' (سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب الحلم،الحديث:٤١٨٩،ص٢٧٣١)

﴾148﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कोई घूंट इतना पसन्दीदा नहीं जितना बन्दे का गुस्से का घूंट पीना पसन्द है, जो बन्दा गुस्सा पी लेता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के सीने को ईमान से भर देता है।''

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحديث:٥٨١٨،ج٣،ص٥٦)

﴾149﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत के बा वुजूद गुस्सा पी लिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को अम्न और ईमान से भर देगा, और जिस ने कुदरत के बा वुजूद तवाज़ोअ़ के लिये अच्छा लिबास न पहना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुज़ुर्गी का जोड़ा पहनाएगा, और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी को ताज पहनाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बादशाही का ताज पहनाएगा।''

(سنن ابی داؤد، كتاب الادب،باب من كظم الغيظ،الحديث:٤٧٧٨/٤٧٧٧،ص١٥٧٥)

﴾150﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत के बा वुजूद गुस्सा पी लिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे मख़्लूक़ के सामने बुला कर इख़्तियार देगा कि वोह हूरे ईन में से जिसे चाहे इख़्तियार करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी मशिय्यत से उस हूर को उस शख़्स के निकाह़ में दे देगा।''

(سنن ابی داؤد ، كتاب الادب ،باب من كظم الغيظ، الحديث:٤٧٧٧،ص١٥٧٥،بدون"يزوجه منها")

﴾151﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने गुस्से पर क़ाबू पा लिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।''

(المعجم الكبير،الحديث:١٣٦٤٦،ج١٢،ص٣٤٧)

﴾152﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस को गुस्सा आया फिर बुर्द-बार हो गया तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का ह़क़दार हो गया।''

(الكامل فی الضعفاء الرجال،مطرف بن معقل،ج٨،ص١١٢)

www.dawateislami.net

《153》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रिफ़अत व बुलन्दी चाहते हो तो उस से बुर्द-बारी से पेश आओ जो तुम से जहालत का बरताव करे और उसे अ़ता करो जो तुम्हें महरूम कर दे।"

(الکامل فی الضعفاء الرجال،وازع بن نافع العقیلی الجزری،ج۸،ص۳۸۸)

《154》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "वोह दो चीज़ें जिन्हें एक दूसरे से मिलाया गया हो वोह बुर्द-बारी और इ़ल्म से अफ़्ज़ल नहीं।"

(کشف الخفاء،حرف المیم، الحدیث:۲۱۷۰،ج۲،ص۱۵۹)

《155》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (किसी को) जहालत की वजह से कभी इ़ज़्ज़त अ़ता नहीं फ़रमाई और न ही कभी (किसी को) बुर्द-बारी की वजह से ज़लील किया और स-दक़े ने कभी माल में कमी नहीं की।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال،الحدیث:۵۸۲۷،ج۳،ص۵۷،بتغیرٍ قلیلٍ)

《156》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दो बातें बहुत अ़जीब हैं (1) बे वुक़ूफ़ आदमी से हिक्मत की बात और (2) बुर्द-बार शख़्स से बे वुक़ूफ़ी की बात, लिहाज़ा इस बात से दर गुज़र कर लिया करो क्यूं कि बुर्द-बार शख़्स साहिबे फ़िरासत और हिक्मत वाला तजरिबा कार होता है।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:۵۸۳۷،ج۳،ص۵۷)

《157》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बा वक़ार शख़्स बुर्द-बार, आलिम साहिबे फ़िरासत और साहिबे हिक्मत तजरिबा कार होता है।" (المرجع السابق،الحدیث:۵۸۳۸،ایضاً)

《158》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अहले ज़मीन पर रह़्म नहीं करेगा आस्मान का मालिक उस पर रह़्म नहीं फ़रमाएगा।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۲۴۹۷،ج۲،ص۳۵۵)

《159》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो दूसरों पर रह़्म नहीं करता उस पर भी रह़्म नहीं किया जाता, जो दूसरों से दर गुज़र नहीं करता उस से भी दर गुज़र नहीं किया जाता और जो तौबा नहीं करता उसे मुआफ़ नहीं किया जाता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तो अपने रह़्म दिल बन्दों पर ही रह़्म फ़रमाता है।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۲۴۷۶،ص۳۵۱، الحدیث:۲۳۵۳،ص۳۲۴)

《160》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो हमारे छोटों पर रह़्म न करे और हमारे बड़ों का ह़क़ न पहचाने वोह हम में से नहीं, जो हमें धोका दे वोह भी हम में से नहीं और मोमिन उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक दीगर मुअमिनीन के लिये वोही चीज़ पसन्द न करे जिसे अपने लिये पसन्द करता है।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۱۸۵۴،ج۸،ص۳۰۸)

www.dawateislami.net

《161》...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ब-र-कत हमारे अकाबिर (की पैरवी) में है और जो हमारे छोटों पर रहम न करे और हमारे बड़ों की इज़्ज़त न करे वोह हम में से नहीं।" (المعجم الکبیر،الحدیث، الحدیث:۷۸۹۵،ج۸،ص۲۲۷)

《162》...... बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस बन्दे के दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों के लिये रहम नहीं रखा वोह ज़लीलो ख़्वार हुवा।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال ،الحدیث:۵۹۶۵،ج۳، ص۶۸)

《163》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "रहमान तबा-र-क व तआला अपने रहम दिल बन्दों पर ही रहम फ़रमाता है, लिहाज़ा अहले ज़मीन पर रहम किया करो आस्मान का मालिक तुम पर रहम फ़रमाएगा।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلۃ ، باب ماجاء فی رحمۃ الناس، الحدیث:۱۹۲۴،ص۱۸۴۶)

《164》...... एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "रहम, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम रहमान से मुश्तक़ (या'नी बना) है लिहाज़ा जो इस से तअल्लुक़ जोड़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से तअल्लुक़ जोड़ेगा और जो इस से तअल्लुक़ तोड़ लेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से तअल्लुक़ तोड़ लेगा।" (المرجع السابق)

《165》...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب،باب رحمۃ الناس والبھائم، الحدیث:۶۰۱۳،ص۵۰۹)

《166》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "रहम दिली सिर्फ़ बद बख़्त ही से दूर की जाती है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب الرحمۃ،الحدیث:۴۹۴۲،ص۱۵۸۵)

《167》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "रहम किया करो तुम पर रहम किया जाएगा और मुआफ़ करना इख़्तियार करो तुम्हें भी मुआफ़ किया जाएगा।" (المسند للامام احمد ، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، الحدیث:۷۰۶۲،ج۲،ص۶۸۲)بدون"الذین......الی......بہ")

《168》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हलाकत व बरबादी है उन के लिये जो नेकी की बात सुन कर उसे झुटला देते हैं और उस पर अमल नहीं करते, और हलाकत व बरबादी है उन के लिये जो जान बूझ कर गुनाहों पर डटे रहते हैं।"

(المرجع السابق)

《169》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो बन्दा दुन्या में किसी बन्दे की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।" (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ،باب بشارۃ من سترہ اللہ......الخ،الحدیث:۶۵۹۵،ص۱۱۳۰)

www.dawateislami.net

《170》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अपने मुसल्मान भाई का ऐब छुपाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के ऐब छुपाएगा और जो अपने मुसल्मान भाई के ऐब ज़ाहिर करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ऐब ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि उसे उसी के घर में रुस्वा कर देगा।"

(سنن ابن ماجه، ابواب الحدود، باب الستر على المومن ......الخ،الحديث: ٢٥٤٦،ص٢٦٢٩)

《171》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सब से ज़ियादा शुक्र गुज़ार बन्दा वोह है जो लोगों का सब से ज़ियादा शुक्रिया अदा करता है।" (المعجم الكبير،الحديث:٤٢٥،ج١،ص١٧١)

《172》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिस में भी होंगीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे साबिर व शाकिर लिख देगा और जिस में नहीं होंगी न उसे शाकिर लिखेगा और न ही साबिर (वोह दो ख़स्लतें येह हैं) (1) जो अपने दीन में अपने से ऊपर वाले को देख कर उस की पैरवी करे और दुन्यवी मुआ़-मले में अपने से नीचे वाले को देखे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे उस शख़्स पर जो फ़ज़ीलत दी है उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे साबिर व शाकिर लिख लेता है (2) जो दीन में अपने से नीचे वाले को देखे और दुन्यवी मुआ़-मले में ऊपर वाले को देखे फिर अपनी महरूमी पर अफ़्सोस करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न उसे साबिर लिखता है और न ही शाकिर।"

(جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة ،باب انظروا الى من هو اسفل......الخ،الحديث: ٢٥١٢،ص١٩٠٤)

《173》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपने से नीचे वालों को देखो ऊपर वालों को न देखो पस तुम्हारे लिये येही बेहतर है कि कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को खुद से दूर न कर बैठो।" (المعجم الاوسط، الحديث: ٢٣٤٣،ج٢،ص١٨)

《174》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे लोगों पर मेहरबानी करने के लिये भेजा गया है, क्यूं कि मेहरबानी अ़क़्ल का सर-चश्मा है और दुन्या में भलाई वाले ही आख़िरत में भलाई वाले होंगे।"

(شعب الايمان،باب فی حسن الخلق ، فصل فی الحلم والتؤدة ، الحديث:٨٤٧٥،ج٦،ص٣٥١/ الحديث:٨٤٤٦،ج٦،ص٣٤٤)

《175》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोगों पर मेहरबानी करना स-दक़ा है।"

(شعب الايمان،باب فی حسن الخلق ، فصل فی الحلم والتؤدة ، الحديث:٨٤٤٥،ج٦،ص٣٤٣)

《176》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे लोगों पर नर्मी करने का इसी त़रह हुक्म दिया है जिस त़रह फ़राइज़ क़ाइम करने का हुक्म दिया है।" (الكامل فی ضعفاء الرجال، بشربن عبيد، ج٢،ص١٧٠)

www.dawateislami.net

《177》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने के बा'द लोगों पर मेहरबानी करना अ़क़्ल का सर-चश्मा है।"

(الكامل فی ضعفاء الرجال، سلمان بن عمرو، ج٤،ص٢٢٦)

एक रिवायत में है कि "और दुन्या में भलाई वाले आख़िरत में भी भलाई वाले होंगे।"

(المستدرك،كتاب العلم، باب المعرف الى الناس......الخ،الحديث:٤٣٧،ج١،ص٣٣٠)

एक और रिवायत में है : "दुन्या में तकब्बुर करने वाले आख़िरत में भी मु-तकब्बिर ही शुमार होंगे।"

《178》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस के सामने किसी मोमिन को ज़लील किया जाए और वोह मदद पर कुदरत के बा वुजूद उस की मदद न करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे लोगों के सामने ज़लील करेगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند المكيين، الحديث:١٥٩٨٥،ج٥،ص٤١٢،"الاشهادة"بدله "الاخلائق")

《179》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरे जलाल की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले कहां हैं ? आज के दिन मैं उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह दूंगा जब कि मेरे अ़र्श के इलावा कोई साया नहीं।"

(صحيح مسلم،كتاب البر والصلة ، باب فضل الحب فى الله ......الخ،الحديث:٦٥٤٨،ص١١٢٧)

《180》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे जलाल की ख़ातिर आपस में महब्बत करने वालों के लिये क़ियामत के दिन नूर के ऐसे मिम्बर होंगे कि अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) और शु-हदा भी उन पर रश्क करेंगे (या'नी उन से खुश होंगे)।"

(جامع الترمذى، ابواب الزهد ، باب ماجاء فى الحب فى الله ، الحديث:٢٣٩٠،ص١٨٩٢)

《181》...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "वोही लोग मेरी महब्बत के हक़दार हैं जो मेरे लिये एक दूसरे से महब्बत करते, मेरी ख़ातिर एक दूसरे के पास बैठते, मेरी ख़ातिर एक दूसरे से मुलाक़ात करते और मेरी राह में ख़र्च करते हैं।"

(المؤطاللامام مالك، كتاب الشعر،باب ماجاء فى المتحابين......الخ،الحديث:١٨٢٨،ج٢،ص٤٣٩)

《182》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब कोई शख़्स अपने मुसल्मान भाई से महब्बत करे तो उसे बता दे कि वोह उस से महब्बत करता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسندالانصار،الحديث:٢١٥٧٠،ج٨،ص١٢١،"الرجل-احدكم"بدله"اخاه-صاحبه")

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 4 : तकब्बुर, खुद पसन्दी और फ़ख्र करना

कुरआने करीम में तकब्बुर की मज़म्मत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का तकब्बुर के बारे में फ़रमाने आलीशान है :

《1》

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ط (پ۹،الاعراف:۱۴۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और मैं अपनी आयतों से उन्हें फैर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं।

《2》

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِیْدٍ O (پ۱۳،ابراہیم:۱۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और उन्हों ने फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म ना मुराद हुवा।

《3》

كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ O (پ۲۴،المؤمن:۳۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** यूं ही मोहर कर देता है मु-तकब्बिर सरकश के सारे दिल पर।

《4》

اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ O (پ۱۴،النحل:۲۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक वोह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

《5》

اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ O (پ۲۴،المؤمن:۶۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अन्क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।

तकब्बुर की मज़म्मत के बारे में और भी कई आयात हैं बहर हाल इन पर इक्तिफ़ा करते हुए अब अहादीसे मुबा-रका से इस की मज़म्मत बयान की जाएगी।

तकब्बुर की मज़म्मत पर अहादीसे मुबा-रका

《1》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक शख़्स अपना पसन्दीदा हुल्ला या'नी लिबास पहने, कंघा कर के इतराता हुवा

www.dawateislami.net

चल रहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़मीन में धंसा दिया, अब वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता रहेगा।"

(صحیح البخاری ، کتاب اللباس ، باب من جر ثوبہ......الخ،الحدیث:۵۷۸۹/۵۷۹۰،ص۴۹۴)

《2》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम से पिछली उम्मतों में से एक शख़्स तकब्बुर से अपना तहबन्द घसीटता हुवा चल रहा था कि उसे ज़मीन में धंसा दिया गया अब वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता ही रहेगा।"

(سنن النسائی،کتاب الزینة،باب التغلیظ فی جرّالازار،الحدیث:۵۳۲۸،ص۲۴۲۸)

《3》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम से पहले का एक शख़्स दो सब्ज़ चादरें ओढ़े इतराता हुवा निकला, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को हुक्म दिया तो ज़मीन ने उसे पकड़ लिया, अब वोह क़ियामत तक इसी त़रह़ ज़मीन में धंसता रहेगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعید خدری ،الحدیث:۱۱۳۵۶،ج۴،ص۸۰)

《4》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "एक शख़्स सुर्ख़ जोड़ा पहने उस पर इतरा रहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़मीन में धंसा दिया, अब वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता ही रहेगा।"

(الترغیب والترھیب،کتاب الادب،الترغیب فی التواضع، الحدیث:۴۴۸۱،ج۳،ص۴۴۰)

《5》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाले पर नज़रे रहमत नहीं फ़रमाता।" (صحیح مسلم،کتاب اللباس،باب تحریم جر الثوب خیلاء ،الحدیث:۵۴۶۳،ص۱۰۵۱)

《6》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के दिल में राई के दाने जितना भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।" अ़र्ज़ की गई : "आदमी तो येह बात पसन्द करता है कि उस के कपड़े और जूते अच्छे हों।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जमील है और ख़ूब सूरती को पसन्द फ़रमाता है, जब कि तकब्बुर तो हक़ की मुख़ा-लफ़त और लोगों को ह़क़ीर जानने का नाम है।"

(صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب تحریم الکبرو بیانه،الحدیث:۲۶۵،ص۶۹۴)

《7》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मगर तकब्बुर हक़ की मुख़ा-लफ़त और लोगों की तह़क़ीर का नाम है।"

(المستدرک ،کتاب الایمان، باب الله جمیل ویحب الجمال،الحدیث:۷۷،ج۱،ص۱۸۱)

《8》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो शख़्स तकब्बुर से अपने कपड़े घसीटेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रहमत न फ़रमाएगा।" (صحیح مسلم، کتاب اللباس،باب تحریم جر الثوب خیلاء ،الحدیث:۵۴۵۵،ص۱۰۵۱)

www.dawateislami.net

《9》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम से पिछली उम्मतों में से एक शख़्स हुल्ला पहने तकब्बुर करते हुए निकला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को (उसे पकड़ने का) हुक्म दिया तो इस ने उसे पकड़ लिया, अब वोह क़ियामत तक इस में धंसता ही रहेगा।" (جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب ماجاء فی شدۃ ......الخ،الحدیث:۲۴۹۱،ص۱۹۰۲)

《10》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "जिस के दिल में राई के दाने जितना भी ईमान होगा वोह जहन्नम में दाख़िल न होगा और जिस के दिल में राई के दाने जितना तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب تحریم الکبرو بیانہ،الحدیث:۲۶۶،ص۶۹۴)

《11》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आदमी तकब्बुर करता रहता है यहां तक कि उसे जब्बारीन में लिख दिया जाता है फिर उसे भी वोही मुसीबत पहुंचती है जो दूसरे जब्बारीन को पहुंची थी।"

(جامع الترمذی،ابواب البر و الصلۃ، باب ماجاء فی الکبر،الحدیث:۲۰۰۰،ص۱۸۵۲،بدون"یتکبر")

《12》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन मु-तकब्बिरीन को इन्सानी शक्लों में च्यूंटियों की मानिन्द उठाया जाएगा, हर जानिब से उन पर ज़िल्लत तारी होगी, उन्हें जहन्नम के "**बूलस**" नामी क़ैदख़ाने की तरफ़ हांका जाएगा और बहुत बड़ी आग उन्हें अपनी लपेट में ले कर उन पर ग़ालिब आ जाएगी, उन्हें "**ती-नतुल ख़ब्बाल**" या'नी जहन्नमियों की पीप पिलाई जाएगी।" (جامع الترمذی، ابواب صفۃ القیامۃ، باب ماجاء فی شدۃ ......الخ،الحدیث:۲۴۹۲،ص۱۹۰۲)

《13》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मु-तकब्बिरीन को क़ियामत के दिन च्यूंटियां बना कर इन्सानी शक्लों में उठाया जाएगा कि हर छोटी से छोटी चीज़ उन पर ग़ालिब आ जाएगी फिर उन्हें जहन्नम के एक क़ैदख़ाने की तरफ़ हांका जाएगा जिसे "**बूलस**" कहा जाता है, वहां आगों की आग उन्हें अपनी लपेट में ले लेगी, उन्हें "**ती-नतुल ख़ब्बाल**" या'नी जहन्नमियों की पीप पिलाई जाएगी।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو، الحدیث:۶۶۸۹،ج۲،ص۵۹۶،بتغیر قلیل)

《14》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ज़ालिम और मु-तकब्बिर लोग क़ियामत के दिन च्यूंटियों की सूरत में उठाए जाएंगे, लोग उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ-मले को हलका जानने की वजह से अपने क़दमों तले रौंदते होंगे।" (تخریج احادیث الاحیاء، باب ۳۴۴۱،ج۶،ص۴۲)

《15》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "किब्रियाई मेरी रिदा है, लिहाज़ा जो मेरी रिदा के मुआ-मले में मुझ से झगड़ेगा मैं उसे पाश पाश कर दूंगा।"

(المستدرک ،کتاب الایمان، باب اھل الجنۃ المغلوبون......الخ،الحدیث:۲۱۰،ج۱،ص۲۳۵)

www.dawateislami.net

﴾16﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "किब्रियाई मेरी रिदा और इ़ज़्ज़त मेरा इज़ार है, जो इन दोनों चीज़ों में से किसी के बारे में मुझ से नज़ाअ़ करेगा मैं उसे अ़ज़ाब में मुब्तला कर दूंगा।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، باب الكبرو الخيلاء، الحديث:٧٧٣٩،ج٣،ص ٢١١)

﴾17﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "किब्रियाई मेरी रिदा और अ़-ज़मत मेरा इज़ार है, लिहाज़ा जो इन में से किसी एक के बारे में भी मुझ से नज़ाअ़ करेगा मैं उसे आग में फेंक दूंगा।"

(سنن ابی داؤد، كتاب اللباس، باب ماجاء فی الكبر،الحديث:٤٠٩٠،ص١٥٢٢)

﴾18﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "इ़ज़्ज़त मेरा इज़ार और किब्रयाई मेरी रिदा है, लिहाज़ा जो इन दोनों के मुआ-मले में मुझ से झगड़ेगा मैं उसे अ़ज़ाब में मुब्तला करूंगा।" (المعجم الاوسط،الحديث:٣٣٨٠،ج٢،ص٣٠٨)

﴾19﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "किब्रयाई मेरी रिदा और अ़-ज़मत मेरा इज़ार है, लिहाज़ा जो इन दोनों में से किसी एक के मुआ-मले में मुझ से लड़ेगा मैं उसे जहन्नम में फेंक दूंगा।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب الزهد،باب البرأة من الكبرو التواضع، الحديث:٤١٧٤،ص ٢٧٣١)

﴾20﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो आदमी अपने आप को बड़ा समझता है और चलने में इतराता है, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा।"

(المستدرك ،كتاب الايمان، باب من يتعاظم فی نفسه......الخ،الحديث:٢٠٨،ج١،ص٢٣٥)

﴾21﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम सब ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام) की औलाद हो और ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام) को मिट्टी से पैदा किया गया है, चाहिये कि अपने आबाओ अज्दाद पर फ़ख़्र करने वाली क़ौमें बाज़ आ जाएं, या फिर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कीड़े मकोड़ों से भी ज़ियादा ह़क़ीर हो जाएंगी।"

(البحرالزخار المعرف مسند البزار،المستظل بن حصين عن حذيفة،الحديث:٢٩٣٨،ج٧،ص ٣٤٠)

﴾22﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तकब्बुर से बचते रहो क्यूं कि इसी तकब्बुर ने ही शैतान को इस बात पर उभारा था कि वोह ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام) को सज्दा न करे, ह़िर्स से बचो क्यूं कि ह़िर्स ही ने ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام) को श-जरे मम्नूआ़ खाने पर आमादा किया और ह़सद से भी बचते रहो क्यूं कि ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام) के दो बेटों में से एक ने दूसरे को ह़सद ही की बिना पर क़त्ल किया था, लिहाज़ा ह़सद इस ख़ता की जड़ है।" (جامع الاحاديث للسيوطی،قسم الاقوال،الحديث:٩٣١٤،ج٣،ص ٣٩٠)

www.dawateislami.net

《23》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तकब्बुर से बचते रहो क्यूं कि तकब्बुर हर इन्सान में हो सकता है अगर्चे उस ने जुब्बा ही पहन रखा हो।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:٥٤٣،ج١،ص١٦٦)

《24》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या मैं तुम्हें जहन्नमियों के बारे में न बताऊं ? हर सरकश, **जव्वाज़,** मु-तकब्बिर और बड़ाई चाहने वाला जहन्नमी है।" (صحیح البخاری،کتاب التفسیر،باب نمبر١،سورۃ نون، الحدیث:٤٩١٨،ص٤٢٢،بدون "جعظری")

"**जव्वाज़**" से मुराद माल जम्अ़ कर के रोक लेने वाला या इतरा कर चलने वाला या फिर ज़ियादा खाने वाला है।

《25》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या मैं तुम्हें जहन्नमियों के बारे में न बताऊं ? हर सरकश, **जव्वाज़** और मु-तकब्बिर जहन्नमी है।" (المرجع السابق)

《26》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मु-तकब्बिर और बड़ाई चाहने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، الحدیث:٤٨٠١،ص١٥٧٦)

《27》...... एक और रिवायत में है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस इन्सान को पसन्द नहीं फ़रमाता, जो शक्ल व सूरत में सत्तर (70) सालह बूढ़े और चाल ढाल में बीस (20) सालह नौ जवान की त़रह़ हो।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:٥٧٨٢،ج٤،ص٢٢١)

《28》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मु-तकब्बिरीन और नाज़ व नख़्रे से चलने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحدیث:٧٧٢٧،ج٣،ص٢١٠)

《29》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तकब्बुर से बचते रहो क्यूं कि बन्दा तकब्बुर करता रहता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मेरे इस बन्दे को जब्बारीन में लिख दो।" (الکامل فی ضعفاء الرجال، عثمان بن ابی العاتکہ،ج٦،ص٢٨٠)

《30》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बन्दा अपने आप को बड़ा समझता रहता है यहां तक कि उसे जब्बारीन में लिख दिया जाता है फिर उसे वोही मुसीबत पहुंचती है जो जब्बारीन को पहुंची थी।"

(جامع الترمذی،ابواب البر والصلۃ،باب ماجاء فی الکبر،الحدیث:٢٠٠٠،ص١٨٥٢)

《31》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर तुम कोई गुनाह न करो तो फिर भी मुझे डर है कि तुम इस से बड़ी चीज़ "**ख़ुद पसन्दी**" में मुब्तला न हो जाओ।" (الترغیب والترھیب،کتاب الادب،باب الترغیب فی التواضع،الحدیث:٤٤٩٠،ج٣،ص٤٤٢)

www.dawateislami.net

《32》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तकब्बुर हक़ की मुख़ा-लफ़त और लोगों को हक़ीर जानने का नाम है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الکبر،الحدیث:٤٠٩٢،ص١٥٢٢)

तकब्बुर का इलाज

《33》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ऊन का लिबास पहनना, मोमिन फु-क़रा की सोहबत में बैठना, दराज़ गोश (गधा) पर सुवारी करना और बकरी को रस्सी से बांध देना तकब्बुर से बराअत के अस्बाब हैं।"

(شعب الایمان، باب فی الملابس والاوانی، فصل فی التواضع، الحدیث:٦١٦١،ج٥،ص١٥٣)

《34》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने अपना सामान ख़ुद उठा लिया वोह तकब्बुर से आज़ाद हो गया।"

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع، الحدیث: ٨٢٠١،ج٦،ص٢٩٢)

《35》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अन्क़रीब मेरी उम्मत को पिछली उम्मतों की बद तरीन बीमारी पहुंचेगी जो कि तकब्बुर, कस्रते माल की हिर्स, दुन्यवी मुआ-मलात में कीना रखना, बाहम एक दूसरे से बुग़्ज़ रखना और हसद (करने पर मुश्तमिल) है, यहां तक कि वोह सरकशी इख़्तियार कर लेगी।"

(المستدرک ،کتاب البر والصلۃ ، باب داء الاعم......الخ،الحدیث:٧٣٩١،ج٥،ص٢٣٤)

《36》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "फ़ख़्र और तकब्बुर ऊंटों के मालिकों में होता है जब कि इत्मीनान व वक़ार भेड़ बकरियों के मालिकों में होता है।" (المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث:١١٣٨٠،ج٤،ص٨٥،"بتقدمٍ وتأخرٍ")

अल्लाह तआला के नज़्दीक ना पसन्दीदा लोग

《37》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन तीन शख़्सों से न कलाम फ़रमाएगा, न उन्हें पाक करेगा और न ही उन पर नज़रे रहमत फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अज़ाब होगा और वोह तीन येह हैं : बूढ़ा ज़ानी, झूटा बादशाह और मु-तकब्बिर फ़क़ीर।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم ......الخ،الحدیث:٢٩٦،ص٦٩٦)

《38》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन चार लोगों को क़त्अन पसन्द नहीं फ़रमाता : (1) कसरत से क़समें खाने वाला ताजिर (2) मु-तकब्बिर फ़क़ीर (3) बूढ़ा ज़ानी और (4) ज़ालिम हुक्मरान।"

(سنن النسائی،کتاب الزکاۃ،باب الفقیر المختال،الحدیث:٢٥٧٧،ص٢٢٥٤)

www.dawateislami.net

《39》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझ पर जहन्नम में सब से पहले दाख़िल होने वाले तीन अफ़राद पेश किये गए, जो येह हैं : (1) ज़बर दस्ती हुक्मरान बनने वाला (2) अपने माल में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हक़ अदा न करने वाला मालदार और (3) मु-तकब्बिर फ़क़ीर।"

(صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ ﷺ......الخ،باب صفة النار و اهلها،الحدیث:۷۴۳۸،ج۹،ص۲۸۲)

《40》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तीन अफ़राद जन्नत में दाख़िल न होंगे : बूढ़ा ज़ानी, झूटा हुक्मरान और ख़ुद पसन्द।" (مجمع الزوائد، کتاب الحدود، باب ذم الزنا، الحدیث: ۱۰۵۳۶،ج۶،ص۳۸۸)

《41》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मु-तकब्बिर फ़क़ीर, बूढ़ा ज़ानी और अपने अमल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर एहसान जताने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।" (التاریخ الکبیر للبخاری،باب النون،باب نافع ، الحدیث: ۲۲۵۵/۱۱۵۹۳،ج۷،ص۳۸۷)

《42》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अपने आप को बड़ा समझे और इतरा कर चले वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर नाराज़ होगा।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمر، الحدیث: ۶۰۰۲،ج۲،ص۴۶۲)

《43》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए जा रहा था, तकब्बुर के मारे उस का तहबन्द लटक रहा था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़मीन में धंसा दिया अब वोह क़ियामत तक इस में धंसता रहेगा।"

(المطالب العالیة لابن حجر، باب الزجر عن الخیلاء ، الحدیث: ۵۵۴۶،ج۴،ص۵۶۸)

《44》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बीस सालह नौ जवान को पसन्द फ़रमाता है जो (कमज़ोरी और तवाज़ोअ़ में) 80 सालह बूढ़े जैसा हो और उस 60 सालह बूढ़े को पसन्द नहीं फ़रमाता जो (चाल ढाल में) 20 सालह नौ जवान जैसा हो।" (جامع الاحادیث للسیوطی،قسم الاقوال،الهمزة مع النون،الحدیث:۵۵۶۰،ج۲،ص۳۰۲)

《45》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो तकब्बुर की वजह से अपना तहबन्द लटकाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रहमत न फ़रमाएगा।" (صحیح البخاری،کتاب اللباس،باب من جر ثوبه من الخیلاء، الحدیث: ۵۷۸۸،ص۴۹۴)

《46》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो तकब्बुर की बिना पर अपना कपड़ा लटकाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रहमत न फ़रमाएगा।" (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی ﷺ،الحدیث:۳۶۶۵،ص۲۹۸)

www.dawateislami.net

《47》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तकब्बुर दिल में होता है।" (كشف الخفاء، حرف الجيم، الحديث: ١٠٦٠، ج١، ص٢٩٥)

《48》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लोग जिस चीज़ को भी बुलन्द करते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे गिरा देता है।"

(شعب الايمان، باب الزهد، الحديث: ١٠٥١١، ج٧، ص٣٤١)

ख़ुद पसन्दी

《49》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ख़ुद पसन्दी सत्तर (70) साल के अमल को बरबाद कर देती है।"

《50》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर ख़ुद पसन्दी इन्सानी शक्ल में होती तो सब से बद सूरत इन्सान होता।"

(جامع الاحاديث للسيوطى، قسم الاقوال، الحديث: ١٧٦٥٠، ج٥، ص١٣٠)

《51》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर तुम गुनाह न करते होते तो तुम पर गुनाहों से बड़ी मुसीबत डाल दी जाती जो कि ख़ुद पसन्दी है।" (شعب الايمان، باب فى معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث: ٧٢٥٥، ج٥، ص٤٥٣)

《52》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की कोहे मर्वह पर मुलाक़ात हुई तो दोनों ह़ज़रात आपस में गुफ़्त-गू करने लगे, फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا रोने लगे, लोगों ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को किस चीज़ ने रुलाया है ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "उन्हों ने या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने, जिन्हें यक़ीन है कि उन्हों ने मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना : "जिस के दिल में राई के दाने जितना तकब्बुर होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मुंह के बल जहन्नम में गिराएगा।" (شعب الايمان، باب فى حسن الخلق، الحديث: ٨١٥٤، ج٦، ص٢٨٠)

《53》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अपने फ़ौत शुदा आबाओ अज्दाद पर फ़ख़्र करने वाली क़ौमों को बाज़ आ जाना चाहिये, क्यूं कि वोही जहन्नम का कोएला हैं, या वोह क़ौमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक गन्दगी के उन कीड़ों से भी ह़क़ीर हो जाएंगी जो अपनी नाक से गन्दगी को कुरेदते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम से जाहिलिय्यत का तकब्बुर और उन का अपने आबा पर फ़ख़्र करना ख़त्म फ़रमा दिया है, अब आदमी मुत्तक़ी व मोमिन होगा या बद बख़्त व बदकार, सब लोग ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की औलाद हैं और ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को मिट्टी से पैदा किया गया है।" (جامع الترمذى، ابواب المناقب، باب فى فضل الشام واليمن، الحديث: ٣٩٥٥، ص٢٠٥٥)

www.dawateislami.net

《54》...... हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक दिन जिन्नो इन्स, दरिन्दों और परिन्दों को बाहर निकलने का हुक्म दिया तो दो लाख इन्सान और दो लाख जिन्न हाज़िरे ख़िदमत हो गए, फिर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इतने बुलन्द हुए कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आस्मानों के फ़िरिश्तों की तस्बीह करने की आवाज़ सुन ली, फिर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नीचे तशरीफ़ लाए यहां तक कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़दम मुबारक समुन्दर से मिल गए कि अचानक आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक आवाज़ सुनी, "अगर तुम्हारे साथी के दिल में राई के दाने जितना भी तकब्बुर होता तो मैं उसे इस से भी दूर तक ज़मीन में धंसा देता जितना उसे बुलन्दी पर ले गया था।"

《55》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाले पर नज़रे रहमत नहीं फ़रमाता।"

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب من جر ثوبه من الخیلاء، الحدیث۵۷۸۸، ص۴۹۴)

《56》...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास हाज़िर हुवा तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन वाक़िद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का वहां से गुज़र हुवा, उन्हों ने नए कपड़े पहन रखे थे तो मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को येह फ़रमाते हुए सुना : "बेटा ! अपना तहबन्द ऊंचा कर लो क्यूं कि मैं ने महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाले पर नज़रे रहमत नहीं फ़रमाता।"

(صحیح مسلم، کتاب اللباس و الزینة، باب تحریم جر الثوب خیلاء، رقم ۵۴۵۳، ص ۱۰۵۱)

《57》...... सय्यिदुना इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस रिवायत को मरफ़ूअ़ ज़िक्र किया है और इस में हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन वाक़िद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के क़रीब से गुज़रने का ज़िक्र नहीं। नीज़ इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ही की एक रिवायत में है : "गुज़रने वाला वोह शख़्स बनी लैस से था जिस का नाम मज़्कूर नहीं।"

《58》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दिन अपना लुआ़बे दहन अपनी मुबारक हथेली पर डाला फिर उस में अपनी उंगली डाल कर इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ फ़रज़न्दे आदम ! क्या तू मुझे आ़जिज़ करेगा ? हालां कि मैं ने तुझे इस जैसी चीज़ से पैदा फ़रमाया है, यहां तक कि जब मैं ने तुझे दुरुस्त और बे ऐब पैदा किया तो तू दो चादरें ओढ़ कर ज़मीन पर इतरा कर चलने लगा, तूने माल जम्अ़ किया और लोगों से रोके रखा यहां तक कि जब तू इन्तिहा को जा पहुंचा तो कहने लगा : "मैं स-दक़ा करूंगा।" मगर अब स-दक़े का वक़्त कहां ?"

(المستدرك، کتاب الرقاق، باب اشقی الاشقیاء......الخ، الحدیث:۷۹۸۴، ج۵، ۴۶۰، بدون"بردین وللأرض منك وئید")

www.dawateislami.net

《59》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जहन्नम से एक ऐसा बिच्छू निकलेगा जिस के दो कान होंगे और वोह उन से सुनता होगा, दो आंखें होंगी जिन से वोह देखेगा और एक बोलने वाली ज़बान होगी, उसे तीन शख़्सों पर मुसल्लत किया जाएगा : (1) हर इनाद रखने वाले ज़ालिम (2) मुशरिक और (3) तस्वीर बनाने वाले पर ।" (جامع الترمذی،ابواب صفة جهنم،باب ماجاء فی صفة النار،الحدیث:٢٥٧٤،ص١٩١١)

《60》...... ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जन्नत और जहन्नम में मुबा-हसा हो गया तो जहन्नम ने कहा : "मुझे मु-तकब्बिरीन और ज़ालिमों से तरजीह दी गई ।" और जन्नत ने कहा : "मुझे क्या परवाह हो सकती है, कि मुझ में कमज़ोर, आजिज़ और गिरे पड़े लोग दाख़िल हों ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत से इर्शाद फ़रमाया : "तू मेरी रहमत है, मैं तेरे ज़रीए अपने बन्दों में से जिस पर चाहूंगा रह्म करूंगा ।" और जहन्नम से इर्शाद फ़रमाया : "तू मेरा अज़ाब है, तेरे ज़रीए मैं अपने बन्दों में से जिसे चाहूंगा अज़ाब दूंगा, और तुम दोनों को भर दिया जाएगा ।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها،باب النار یدخلها......الخ،الحدیث:٧١٧٣،ص١١٧٢)

《61》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जन्नत और जहन्नम में मुबा-हसा हो गया तो जहन्नम ने कहा : "मुझ में ज़ालिम और मु-तकब्बिर लोग हैं ।" और जन्नत ने कहा : "मुझ में कमज़ोर और मिस्कीन मुसल्मान हैं ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन दोनों के दरमियान यूं फ़ैसला फ़रमाया : "ऐ जन्नत ! तू मेरी रहमत है, तेरे ज़रीए मैं जिस पर चाहूंगा रह्म करूंगा, और ऐ जहन्नम ! तू मेरा अज़ाब है तेरे ज़रीए मैं जिसे चाहूंगा अज़ाब दूंगा और तुम दोनों को भरना मेरे ज़िम्मए करम पर है ।" (صحیح مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها،باب النار یدخلها......الخ،الحدیث:٧١٧٣،ص١١٧٢،بتغیرٍقلیلٍ)

《62》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बदतर है वोह बन्दा जो बुख़्ल और तकब्बुर करे और बुलन्दो बाला और बड़ाई वाले (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) को भूल जाए, बदतर है वोह बन्दा जो ज़ुल्मो ज़ियादती करे और जब्बार عَزَّوَجَلَّ को भुला दे, बदतर है वोह बन्दा जो ग़ाफ़िल हो और खेलकूद में पड़ा रहे और क़ब्रिस्तान और उस में बोसीदा होने को भूल जाए, बदतर है वोह बन्दा जो सरकशी करे और हद से बढ़ जाए और अपनी इब्तिदा और इन्तिहा को भूल जाए, बदतर है वोह बन्दा जो दीन को शहवाते नफ़्सानिया से फ़रेब और धोका दे, बदतर है वोह बन्दा जिस का रहनुमा हिर्स हो, बदतर है वोह बन्दा जिस को ख़्वाहिशात राहे हक़ से भटका दें, बदतर है वोह बन्दा जिस का शौक़ और रग़्बत उस को ज़लीलो ख़्वार कर दे ।"

(جامع الترمذی،ابواب صفة القیامة والرقائق والورع،باب حدیث اضاعة الناس،الحدیث:٢٤٤٨،ص١٨٩٨)

《63》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब फ़ारस (ईरान) व रूम मेरी उम्मत के मा तहत होंगे और वोह मु-तकब्बिराना चाल चलेगी तो वोह एक दूसरे पर ही क़ब्ज़ा जमाएंगे ।"

www.dawateislami.net

《64》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अपने आप को बड़ा जाने या मु-तकब्बिराना चाल चले वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर नाराज़ होगा।"

(المسندللامام احمدبن حنبل،مسندعبدالله بن عمربن خطاب،الحديث:٦٠٠٢،ج٢،ص٥٤١)

《65》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तीन चीज़ें हलाकत में डालने वाली हैं : (1) लालच जिस की इत़ाअ़त की जाए (2) ख़्वाहिश जिस की पैरवी की जाए (3) बन्दे का अपने अ़मल को पसन्द करना या'नी ख़ुद पसन्दी।"

(مجمع الزوائد، كتاب الايمان،باب فی المنهيات و المهلكات،الحديث:٣١٣،ج١،ص٢٦٩)

《66》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब नूह़ (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने अपने दोनों बेटों को बुला कर इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें दो बातों का हुक्म देता हूं और दो बातों से मन्अ़ करता हूं जिन दो बातों से मन्अ़ करता हूं वोह शिर्क और तकब्बुर हैं, और जिन दो बातों का हुक्म देता हूं : (1) इन में से पहली لَآاِلٰهَ اِلَّا الله पर इस्तिक़ामत है, क्यूं कि अगर ज़मीन व आस्मान और इन की हर चीज़ तराज़ू के एक पलड़े में रख दी जाए और لَآاِلٰهَ اِلَّا الله दूसरे पलड़े में रख दिया जाए तो لَآاِلٰهَ اِلَّا الله इन सब पर ग़ालिब आ जाएगा और अगर ज़मीन व आस्मान एक ह़ल्क़ा हो और لَآاِلٰهَ اِلَّا الله को इस पर रख दिया जाए तो येह उस को तोड़ देगा और (2) दूसरी चीज़ जिस का मैं तुम्हें हुक्म देता हूं वोह سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ना है क्यूं कि येही हर चीज़ की तस्बीह़ है और इसी के सबब हर चीज़ को रिज़्क़ दिया जाता है।" (المسند للامام احمدبن حنبل،مسندعبدالله بن عمرو بن عاص،الحديث:٧١٢٣،ج٢،ص٦٩٥)

《67》...... ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इर्शाद फ़रमाते हैं : "सआ़दत है उस के लिये जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब सिखाई और फिर वोह शख़्स ज़ालिम हो कर न मरा।"

(الزهدللامام احمدبن حنبل،بقية زهد عيسٰى عليه السلام،الحديث:٤٧٢،ص١٢٥)

《68》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, एक मरतबा आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बाज़ार से इस ह़ालत में गुज़रे कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने सर पर लकड़ियों की गठड़ी उठा रखी थी, तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा गया : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इस से बे नियाज़ कर दिया है तो फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को गठड़ी उठाने पर किस चीज़ ने आमादा किया?" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने अपने आप से तकब्बुर दूर करने के लिये ऐसा किया है क्यूं कि मैं ने रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : "जिस के दिल में राई बराबर भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।" (المعجم الكبير،الحديث:١٠٠٠٠،ج١٠،ص٧٥)

www.dawateislami.net

《69》...... और एक रिवायत में है : "राई के ज़र्रे बराबर भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر، الحدیث:٢٦٧،ص٦٩٤)

《70》...... हज़रते सय्यिदुना कुरैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को ले कर अबू लहब की भट्टी की त़रफ़ जा रहा था कि उन्हों ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या हम फ़ुलां मक़ाम पर पहुंच गए हैं ?" तो मैं ने अ़र्ज़ की, कि "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अब उस मक़ाम के क़रीब पहुंच चुके हैं।" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे मेरे वालिद अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बताया : "मैं इस जगह पर हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "एक शख़्स दो चादरें ओढ़े मु-तकब्बिराना चाल चलता हुवा आया, वोह अपनी चादरें देखता हुवा उस पर इतरा रहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे इस जगह ज़मीन में धंसा दिया अब वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता ही रहेगा।" (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند العباس بن عبدالمطلب، الحدیث:٦٦٦٩،ج٦، ص٥)

《71》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर मु-तकब्बिर, इतरा कर चलने वाला, माल जम्अ़ करने और दूसरों को न देने वाला जहन्नमी है, जब कि हर कमज़ोर मग़्लूब शख़्स जन्नती है।"

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق ، فصل فی التواضع، الحدیث:٨١٧٠،ج٦،ص٢٨٤)

《72》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने (हज़रते सय्यिदुना सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सुराक़ा ! क्या मैं तुम्हें जन्नती और जहन्नमी लोगों के बारे में न बताऊं ?" (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि) मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर सख़्ती करने वाला, इतरा कर चलने वाला, अपनी बड़ाई चाहने वाला जहन्नमी है जब कि कमज़ोर और मग़्लूब लोग जन्नती हैं।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:٦٥٨٩،ج٧،ص١٢٩)

《73》...... हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बद तरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह बद अख़्लाक़ और मु-तकब्बिर है, क्या मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सब से बेहतरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह कमज़ोर और ज़ईफ़ समझा जाने वाला बोसीदा लिबास पहनने वाला शख़्स है जिसे कोई अहम्मिय्यत नहीं दी जाती लेकिन अगर वोह किसी बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند حذیفه بن یمان، الحدیث: ٢٣٥١٧،ج٩،ص ١٢٠،بدون"لایؤبه له")

《74》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या

www.dawateislami.net

मैं तुम्हें अहले जन्नत के बारे में ख़बर न दूं ? (वोह) हर कमज़ोर या कमज़ोर समझा जाने वाला वोह शख़्स है कि जो अगर किसी बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो वोह उस की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए, क्या मैं तुम्हें जहन्नमियों के बारे में न बता दूं ? हर सरकश, इतरा कर चलने वाला और मु-तकब्बिर शख़्स जहन्नमी है ।" (صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب عقل بعد ذالك......الخ،الحدیث:٤٩١٨،ص٤٢٢)

《75》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक क़ियामत के दिन तुम में से मेरे सब से नज़्दीक और पसन्दीदा शख़्स वोह होगा जो तुम में से अख़्लाक़ में सब से ज़ियादा अच्छा होगा और क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक सब से क़ाबिले नफ़रत और मेरी मजलिस से दूर वोह लोग होंगे जो वाहियात बकने वाले, लोगों से ठठ्ठा करने वाले और **मु-तफ़ैहिक़** हैं ।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! बेहूदा बक्वास बकने वालों और लोगों से ठठ्ठा करने वालों को तो हम ने जान लिया मगर येह **मु-तफ़ैहिक़** कौन हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस से मुराद हर तकब्बुर करने वाला शख़्स है ।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة ، باب ماجاء فی معالی......الخ،الحدیث:٢٠١٨،ص١٨٥٣)

जहन्नम की वादी हबहब का ह़क़दार कौन ?

《76》...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन अबी बुरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास आया और उन से कहा : "ऐ बिलाल ! मुझे तेरे वालिदे मोह़तरम ने अपने बाप से मरवी येह ह़दीसे पाक बताई थी कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जहन्नम में एक वादी है जिसे **हबहब** कहा जाता है, येह ह़क़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर इनाद रखने वाले जाबिर इन्सान को इस में ठहराएगा, लिहाज़ा ऐ बिलाल ! तुम उस वादी के रिहाइशी बनने वालों में शामिल होने से बचते रहना ।" (مسند ابی یعلی الموصلی،مسند ابی موسیٰ الاشعری، الحدیث:٧٢١٣،ج٦،ص٢٠٧)

《77》...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तकब्बुर करने वालों को च्यूंटियों की सूरत में उठाया जाएगा ।"

(مجمع الزوائد، کتاب البحث، باب کیف یحشر الناس،الحدیث: ١٨٣٢٨،ج١٠، ص ٤٠٦)

जहन्नम के ताबूत :

《78》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जहन्नम में कुछ ताबूत हैं जिन में मु-तकब्बिरीन को डाल कर उन्हें बन्द कर दिया जाएगा ।"

《79》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

''जो बन्दा रूह के जिस्म से जुदा होते वक़्त तीन चीज़ों से बरी होगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा और वोह तीन चीज़ें हैं : (1) तकब्बुर (2) क़र्ज़ और (3) ख़ियानत।''

(المستدرک، کتاب البیوع، باب من مات وھو یری......الخ، الحدیث:۲۲۶۴، ج۲، ص۳۲۴)

﴾80﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो शख़्स तकब्बुर, ख़ियानत और क़र्ज़ से बरी हो कर मरेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।''

(جامع الترمذی، ابواب السیر، باب ماجاء فی الغلول، الحدیث:۱۵۷۲، ص۱۸۱٤)

तकब्बुर के मु-तअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْہِمُ الرَّحْمَۃ के फ़रामीन

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''किसी मुसल्मान को हरगिज़ ह़क़ीर मत समझो क्यूं कि ह़क़ीर मुसल्मान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बड़े मरतबे वाला होता है।''

हज़रते सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नते अ़दन को पैदा फ़रमाया तो उस को देख कर इर्शाद फ़रमाया : ''तू हर मु-तकब्बिर पर ह़राम है।''

हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं ''आदमी पर तअ़ज्जुब है कि वोह तकब्बुर करता है ह़ालां कि वोह दो मरतबा पेशाब गाह से निकला है।''

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''आदमी पर तअ़ज्जुब है कि वोह रोज़ाना एक या दो मरतबा अपने हाथ से नापाकी धोता है फिर भी ज़मीन व आस्मान के बादशाह से मुक़ाबला करता है।''

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से ऐसे गुनाह के बारे में पूछा गया जिस की मौजू-दगी में कोई नेकी फ़ाएदा नहीं देती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह गुनाह तकब्बुर है।''

मु-तकब्बिर को अनोखी नसीह़त :

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक अमीर को मु-तकब्बिराना चाल चलते हुए देखा तो उस से फ़रमाया कि ''ऐ अह़मक़ ! तकब्बुर से इतराते हुए नाक चढ़ा कर कहां देख रहा है ? क्या उन ने'मतों को देख रहा है जिन का शुक्र अदा नहीं किया गया या उन ने'मतों को देख रहा है कि जिन का तज़्किरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़काम में नहीं।'' जब उस ने येह बात सुनी तो उ़ज़्र पेश करने ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझ से मा'ज़िरत न कर बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर क्या तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّکَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।

www.dawateislami.net

ख़लीफ़ा बनने से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मरतबा मु-तकब्बिराना चाल चले तो ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के कन्धे पर चुटकी काट कर इर्शाद फ़रमाया : ''जिस के पेट में कुछ भलाई हो उस की चाल ऐसी नहीं होती।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मा'ज़िरत ख़्वाहाना अन्दाज़ में अ़र्ज़ की : ''ऐ मोह़तरम चचाजान ! ऐसी चाल चलने की वजह से मेरे हर उ़ज़्व को मारें ताकि वोह जान ले।''

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को इतरा कर चलते हुए देखा तो उस से फ़रमाया : ''क्या तू जानता है कि तू क्या है ? तेरी मां को तो मैं ने दो सो दिरहम दे कर ख़रीदा था और तेरा बाप ऐसा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों में इस जैसे लोगों की कसरत न फ़रमाए।''

ह़ज़रते सय्यिदुना मत़रफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुहल्लब (पूरा नाम मुहल्लब बिन अबी सफ़रा, ह़ज्जाज के लश्कर का एक रईस) को रेशम का जुब्बा पहने इतरा कर चलते देखा तो उस से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! येह ऐसी चाल है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ना पसन्द फ़रमाते हैं।'' तो मुहल्लब ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : ''क्या आप मुझे नहीं जानते ?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्यूं नहीं ! मैं जानता हूं कि तुम्हारी इब्तिदा एक ह़क़ीर नुत़्फ़े से हुई और इन्तिहा बदबूदार मुर्दार की सूरत में होगी और इन दोनों की दरमियानी मुद्दत में गन्दगी उठाए फिर रहे हो।'' तो मुहल्लब ने ऐसी चाल चलना छोड़ दी।

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

मज़्कूरा गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल ज़ाहिर है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त भी इस की क़ाइल है, बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने फ़ख़्र, तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी वग़ैरा को उन्नीसवां कबीरा गुनाह शुमार किया है, अ़न्क़रीब इस की मुकम्मल वज़ाह़त बाबुल्लिबास में आएगी, और उन्हों ने अपने इस क़ौल की दलील गुज़श्ता मरवी अह़ादीसे मुबा-रका को ही बनाया है चुनान्चे शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जिस के दिल में राई बराबर भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।'' (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر، الحدیث:۲٦٧،ص٦٩٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَ لَا یَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ (پ۱۸،النور:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें।

www.dawateislami.net

की वज़ाहत में **तफ़्सीरे कुरतुबी** में लिखा है कि "अगर इन औ़रतों ने ऐसा मर्दों के सामने खुद को नुमायां करने की ग़रज़ से किया तो येह ह़राम है और इसी त़रह़ उन मर्दों के लिये भी ऐसा करना ह़राम है जो खुद पसन्दी के ज़ो'म में ज़ोर ज़ोर से ज़मीन पर जूते पटख़ाते हैं क्यूं कि खुद पसन्दी कबीरा गुनाह है।"

तकब्बुर या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मुक़ाबले में** होगा जो कि तकब्बुर की सब से बुरी क़िस्म है जैसे फ़िरऔ़न और नमरूद का तकब्बुर कि उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी से इन्कार कर दिया और रबूबिय्यत का दा'वा कर बैठे, चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴾1﴿

اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ 0 (پ۲۴،المؤمن:۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो मेरी इ़बादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न्क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।

﴾2﴿

لَنْ یَّسْتَنْكِفَ الْمَسِیْحُ (پ۶،النساء:۱۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मसीह़ **अल्लाह** का बन्दा बनने से कुछ नफ़रत नहीं करता।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के रसूल के मुक़ाबले में होगा**, इस की सूरत येह है कि तकब्बुर, जहालत और इ़नाद की बिना पर रसूल की पैरवी न करना जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्फ़ारे मक्का और दीगर उम्मतों के काफ़िरों की ह़िकायात बयान फ़रमाई हैं या फिर **बन्दों के मुक़ाबले** में होगा, वोह इस त़रह़ कि अपने आप को बड़ा समझ कर और दूसरे को ह़क़ीर जान कर उस की इत़ाअ़त से इन्कार करना, उस पर बड़ाई चाहना और मुसावात को ना पसन्द करना, येह सूरत अगर्चे पहली दो सूरतों से कमतर है मगर इस का गुनाह भी बहुत बड़ा है क्यूं कि किब्रियाई और अ़-ज़मत बादशाहे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ही के लाइक़ है न कि आ़जिज़ और कमज़ोर बन्दे के लाइक़, लिहाज़ा बन्दे का तकब्बुर करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ उस की ऐसी सिफ़त में झगड़ना है जो उसी मालिक عَزَّوَجَلَّ के लाइक़ है, मु-तकब्बिर बन्दा गोया उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने किसी बादशाह का ताज पहना और फिर उस के तख़्त पर बैठ गया, तो उस के ना राज़गी के मुस्तह़िक़ होने और जल्द ही ज़लीलो रुस्वा हो जाने का क्या आ़लम होगा ? इसी लिये बयान शुदा ह़दीसे मुबा-रका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "जो मेरी अ़-ज़मत और किब्रियाई में मेरे साथ झगड़ा करेगा मैं उसे हलाक कर दूंगा।" मुराद येह है कि येह दोनों सिफ़ात **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ही के साथ ख़ास हैं लिहाज़ा इन में झगड़ा करने वाला सिफ़ाते इलाहिय्यह में झगड़ा करने वाला है, इसी त़रह़ बन्दों पर अपनी बड़ाई बयान करना भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ही लाइक़ है लिहाज़ा जो बन्दों पर तकब्बुर करेगा उसे मुजरिम समझा जाएगा जिस त़रह़ बादशाह के ख़ास गुलामों को ज़लील समझते हुए किसी वजह से उन से झगड़ना अगर्चे उस की ग़-लती बादशाह के तख़्त पर बैठने जैसी नहीं।

www.dawateislami.net

तकब्बुर की इन दोनों क़िस्मों में हक़ के अहकाम की मुख़ा-लफ़त लाज़िम आती है, इन में ख़ुद पसन्दी और नफ़्सियाती ख़्वाहिश की बिना पर दीनी मसाइल में झगड़ने वाले भी दाख़िल हैं क्यूं कि मु-तकब्बिर का नफ़्स ग़ैर से सुनी हुई बात को क़बूल करने से इन्कार कर देता है, अगर्चे इस पर उस की हक़्क़ानिय्यत भी वाज़ेह हो गई हो बल्कि इस का तकब्बुर इसे उस बात को ग़लत़ और बात़िल साबित करने में मुबा-लगे की त़रफ़ ले जाता है, लिहाज़ा इस शख़्स पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के येह फ़रामीन सादिक़ आते हैं :

《1》

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ۝ (پ۲۴،حٰمٓ السجدة:۲۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और काफ़िर बोले येह क़ुरआन न सुनो और इस में बेहूदा ग़ुल (शोर) करो शायद यूंही तुम ग़ालिब आओ।

《2》

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ۝ (پ۲،البقرة:۲۰۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब उस से कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **''बन्दे के गुनाहगार होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि जब उस से कहा जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो तो वोह कहे तू सिर्फ़ अपनी फ़िक्र कर।''**

《81》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : ''दाएं हाथ से खाओ।'' तो उस ने तकब्बुर की बिना पर कहा : ''मैं इस की त़ाक़त नहीं रखता।'' तो उस का हाथ ही ख़ुश्क हो गया और इस के बा'द वोह कभी अपना वोह हाथ उठा न सका।

(صحیح مسلم،کتاب ،الحدیث:۲۰۲۱،ص۱۱۱۸،مفہوماً)

ऐसी सूरत में बन्दों पर तकब्बुर करना ख़ालिक़ पर तकब्बुर की त़रफ़ ले जाता है क्या तुम नहीं जानते कि इब्लीस ने जब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर अपने इस क़ौल (اَنَا خَيْرٌ مِّنْه) के ज़रीए तकब्बुर और हसद किया तो उस की येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की मुख़ा-लफ़त की वजह से उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर की त़रफ़ ले गई और वोह अ-बदी हलाकत में मुब्तला हो गया, इसी लिये साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हक़ को क़बूल न करने और लोगों को हक़ीर जानने को मु-तकब्बिर की अ़लामात क़रार दिया।

तकब्बुर की वुजूहात :

इल्म व अ़मल, नसब व माल, हुस्नो जमाल, त़ाक़त व क़ुव्वत और मुरीदीन की कसरत की वजह से ग़ैर से कामिल इम्तियाज़ का ए'तिक़ाद रखना तकब्बुर पर उभारने का सबब है, जिन उ़-लमा को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से तौफ़ीक़ का नूर अ़त़ा नहीं किया गया वोह दूसरों के मुक़ाबले में

www.dawateislami.net

जल्द तकब्बुर में मुब्तला हो जाते हैं क्यूं कि इन में से हर एक दूसरे को अपने मुक़ाबले में चौपाए की त़रह़ समझता है, इस लिये वोह उस के उन शर-ई हुक़ूक़ की अदाएगी में कमी करता है जिन का मुत़ा-लबा शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने किया है जैसे सलाम करना, इयादत करना और मुलाक़ात के वक़्त ख़ुशी का इज़्हार वग़ैरा करना, और इस से उन मुआ़-मलात में उस पर रिफ़्अ़त की ख़्वाहिश की बिना पर कमी की उम्मीद नहीं रखता, और ह़क़ीक़तन ऐसा करने वाला ही सब से बड़ा जाहिल है क्यूं कि वोह अपनी औक़ात, अपने रब عَزَّوَجَلَّ की शानो अ़-ज़मत, मौत के वक़्त के ख़त़रात और ह़ालात के बदल जाने से बे ख़बर है क्यूं कि इल्म की शान तो येह है कि वोह बन्दे के ख़ौफ़ और तवाज़ोअ़ में इज़ाफ़ा करे इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने इल्मे ह़क़ीक़ी की बिना पर उस के ख़िलाफ़ एक बहुत बड़ी हुज्जत है, नीज़ इस वजह से भी कि वोह उस की ने'मतों का शुक्र अदा करने से भी क़ासिर है। अलबत्ता इस का सबब येह हो सकता है कि उस का इल्म या तो दुन्या की ख़ात़िर होगा या इसे ह़ासिल करने में इख़्लास की निय्यत न होगी और उस ने किसी और निय्यत से इल्म ह़ासिल किया होगा इसी लिये येह क़बाह़तें उसे लाह़िक़ होंगी। इसी त़रह़ जो उ़-लमा नेक नामी की वजह से मश्हूर हो जाते हैं, उन की त़रफ़ भी तकब्बुर जल्द आ जाता है क्यूं कि लोग अपने मुआ़-मलात के फ़ैसले के लिये उन के पास आते हैं और उन की इ़ज़्ज़त करने में मुबा-लग़े से काम लेते हैं तो वोह समझने लगते हैं कि वोह अर-फ़ओ़ आ'ला हैं और दीगर लोग उन के आ'माल तक न पहुंचने की वजह से उन से कमतर हैं, लेकिन वोह येह नहीं जानते कि उन का येह गुमान उन से इल्म छिन जाने का सबब बन सकता है। जैसा कि,

बदकार की वजह से आ़लिम के आ'माल बरबाद हो गए :

बनी इस्राईल के एक बदकार शख़्स का वाक़िआ़ है कि वोह किसी आ़बिद के पास उस से नफ़्अ़ उठाने के लिये बैठ गया तो उस आ़बिद को उस का बैठना ना गवार गुज़रा और उस ने उसे धुत्कार दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस वक़्त के नबी (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "उस ने बदकार को बख़्श दिया और आ़बिद के अ़मल बरबाद कर दिये।"

इत़ाअ़त में कभी जाहिल आ़लिम से बढ़ जाता है :

आ़म अनपढ़ शख़्स जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हैबत और उस के ख़ौफ़ से तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी करता है तो दिल से उस की इत़ाअ़त करने लगता है, लिहाज़ा वोह मु-तकब्बिर आ़लिम और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला आ़बिद से ज़ियादा इत़ाअ़त गुज़ार हो जाता है।

बा'ज़ अवक़ात कुछ लोगों की ह़माक़त और बे वुक़ूफ़ी उस वक़्त इन्तिहा को पहुंच जाती है जब उन्हें ईज़ा दी जाए तो वोह ईज़ा देने वाले को धमकाते हुए कहते हैं : "अ़न्क़रीब तुम इस का अन्जाम देख लोगे।" अब अगर उन्हें ईज़ा देने वाला इत्तिफ़ाक़ से किसी मुसीबत में मुब्तला हो जाए तो वोह लोग अपनी क़दरो मन्ज़िलत को आ'ला समझते हुए जहालत के ग़-लबे की वजह से उसे अपनी करामत शुमार करने लगते हैं, क्यूं कि जहालत ख़ुद पसन्दी, तकब्बुर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत से धोका खाने के मज्मूए़ का नाम है, बिला शुबा बहुत से बद बख़्तों ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को शहीद किया मगर जब उन्हें दुन्या में इस की सज़ा नहीं मिली तो फिर इस जाहिल की ह़ैसिय्यत क्या है ?

www.dawateislami.net

तकब्बुर के अस्बाब :

जब आप पर तकब्बुर की येह दोनों क़िस्में वाज़ेह़ हो गईं जिन पर ज़ाहिर में दीन व दुन्या का दारो मदार है तो जाहो ह़श्मत वाले लोगों के तकब्बुर का ह़ाल भी इ़यां हो जाएगा कि नसब पर तकब्बुर करने वाला बा'ज़ अवक़ात कम नसब वाले को अपना ग़ुलाम समझने लगता है, इसी त़रह़ ख़ूब सूरत लोग अपने ह़ुस्न पर ग़ुरूर करते हैं और येह सूरत अक्सर औ़रतों में पाई जाती है, माल की वजह से भी तकब्बुर किया जाता है जैसा कि अरबाबे इख़्तियार और ताजिरों वग़ैरा में आ़म मुशा-हदा किया गया है, नीज़ पैरवी करने वालों और लश्कर पर तकब्बुर करना अक्सर बादशाहों का वत़ीरा है। (येह लोग ख़ुद से कमतर लोगों को अपना ग़ुलाम समझते हैं)

ख़ुद पसन्दी, कीना और ह़सद व रियाकारी तकब्बुर की आग को भड़काने के अस्बाब हैं, क्यूं कि तकब्बुर एक बात़िनी ख़स्लत व आ़दत है और येह ख़ुद को बड़ा गुमान करने और दूसरे से ज़ियादा क़ाबिले क़द्र समझने का नाम है, इस का ह़क़ीक़ी सबब फ़क़त़ ख़ुद पसन्दी ही है, जैसा कि आयन्दा आने वाली तफ़्सील से मा'लूम होगा, जो अपने इ़ल्म व अ़मल और मज़्कूरा बाला दीगर ख़ूबियों पर ख़ुश होगा तो उस का नफ़्स भी बड़ाई चाहेगा, तकब्बुर करेगा और ज़ुल्म व सरकशी का मुर-तकिब होगा, जब कि ख़ुद पसन्दी के इ़लावा दीगर जो उमूर हम ने बयान किये हैं वोह ज़ाहिरी तकब्बुर के अस्बाब हैं, क्यूं कि ऐसे तकब्बुर पर ह़सद और कीना ही उभारते हैं जब कि रियाकारी तकब्बुर की दूसरी ज़ाहिरी सूरत का सबब है।

तम्बीह 2 :

हर इन्सान तकब्बुर और इस के बुरे नताइज से छुटकारा चाहता है क्यूं कि येह मोहलिकात या'नी हलाकत में डालने वाली बीमारियों में से है, ह़ालां कि इस से कोई इन्सान पाक नहीं, और इस का इज़ाला फ़र्ज़े ऐ़न है, जो सिर्फ़ तमन्ना और ख़्वाहिश से न होगा बल्कि मुफ़ीद अदविया के इस्ति'माल से इसे जड़ से ख़त्म करना ज़रूरी है, क्यूं कि जो कमा ह़क़्क़ुहू अपने नफ़्स को पहचान ले या'नी वोह अपनी इब्तिदा में ग़ौर कर ले कि वोह किस त़रह़ सब से ह़क़ीर और ज़लील शै या'नी मिट्टी था फिर मनी बना और इन दोनों के दरमियानी ह़ालत में इस त़रह़ ग़ौर करे कि वोह किस किस त़रह़ उ़लूमो व मआ़रिफ़ सीखने का अहल हुवा और एक द-रजे से दूसरे की त़रफ़ मुन्तक़िल होता रहा और अपनी इन्तिहा में इस त़रह़ ग़ौर करे कि वोह किस त़रह़ फ़ना होगा और फिर अपनी इब्तिदा या'नी मिट्टी की त़रफ़ लौट जाएगा फिर उसे ह़श्र के मैदान में लौटाया जाएगा फिर या तो जहन्नम उस का ठिकाना होगा या फिर जन्नत, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के बारे में जो सब से वाज़ेह़ इशारा दिया है वोह इस फ़रमान में है :

www.dawateislami.net

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ۝ مِنْ اَيِّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ ۝ مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ۝ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖۤ ۝ (پ۳۰، عبس: ۱۷تا۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : आदमी मारा जाइयो क्या ना शुक्र है इसे काहे से बनाया पानी की बूंद से इसे पैदा फ़रमाया फिर इसे त़रह़ त़रह़ के अन्दाज़ों पर रखा फिर इसे रास्ता आसान किया फिर इसे मौत दी फिर क़ब्र में रखवाया फिर जब चाहा इसे बाहर निकाला कोई नहीं इस ने अब तक पूरा न किया जो इसे हुक्म हुवा था तो आदमी को चाहिये अपने खानों को देखे।

लिहाज़ा जो शख़्स इस में और इन जैसी इन दीगर मिसालों में ग़ौर करे जिन की त़रफ़ येह आयात इशारा करती हैं तो वोह जान लेगा कि वोह हर ज़लील व ह़क़ीर चीज़ से भी ज़ियादा ह़क़ीर और ज़लील है, और आ़जिज़ी व इन्किसारी इसी के लाइक़ है, नीज़ उसे चाहिये कि वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल करे ताकि वोह येह जान सके कि अ़-ज़मत और किब्रियाई फ़क़त़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही को ज़ैबा है, जब कि मेरे नफ़्स को एक लम्ह़े के लिये भी ख़ुश होना मुनासिब नहीं, आदमी का अपनी तख़्लीक़ के इब्तिदाई और वस्त़ी मराह़िल की ह़क़ीक़त जान लेने के बा'द येह ग़ुरूर व तकब्बुर कैसा ? और अगर इस का अन्जाम भी इस पर ज़ाहिर हो जाए तो वोह येह तमन्ना करने लगे कि काश ! वोह कोई जानवर होता अगर्चे उसे कुत्ता ही बना दिया जाता ख़ुसूसन जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इल्म में वोह जहन्नमी हो, और अगर दुन्या वाले जहन्नमियों में से किसी की सूरत देख लें तो उस की बद सूरती देख कर चकरा कर गिर पड़ें बल्कि उस की बदबू से मर ही जाएं, तो जिस का अन्जाम ऐसा हो वोह कैसे तकब्बुर और बड़ाई में मुब्तला हो सकता है ? और कौन सा बन्दा ऐसा है जिस ने कोई ऐसा गुनाह ही न किया हो कि जिस की वजह से वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़क़ाब का सज़ावार हो सके, हां अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहेगा तो अपने फ़ज़्ल से उसे मुआ़फ़ फ़रमा देगा।

जो हमारी इन बातों में ह़क़ीक़ी ग़ौरो फ़िक्र करे तो उस की नज़र में उस के इ़ल्म व अ़मल, जाह व मन्सब और माल की अहम्मिय्यत ख़त्म हो जाएगी नीज़ वोह हर चीज़ से भाग कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ कर उस के आगे गिड़गिड़ाएगा और येह यक़ीन कर लेगा कि वोह हर चीज़ से ज़ियादा ज़लील व ह़क़ीर है, तो फिर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बद बख़्त होना कैसे पसन्द करेगा ?

नफ़्स में ज़ाहिर होने वाले कामिल तकब्बुर का इ़ल्म उस वक़्त होता है जब किसी बन्दे को उस का नफ़्स येह ख़याल दिलाता है कि वोह तकब्बुर से पाक है, लिहाज़ा ऐसे शख़्स को चाहिये कि वोह अपने किसी हम अ़स्र से किसी मस्अले में मुना-ज़रा करे, फिर अगर उस के मुख़ालिफ़ के हाथ पर ह़क़ ज़ाहिर हो जाए तो अगर उस का दिल उसे क़बूल करने पर मुत़्मइन हो और उस के शुक्र और फ़ज़ीलत का ए'लान कर दे और येह बयान कर दे कि इस के हाथ पर ह़क़ ज़ाहिर हो गया है और येही मुआ़-मला हर उस शख़्स के साथ हो जिस से उस ने मुना-ज़रा किया हो तो क़राइन इस बात को

www.dawateislami.net

ज़ाहिर कर देंगे कि वोह तकब्बुर से बरी है, और अगर इन में से कोई शर्त़ मफ़्क़ूद हो तो बिला शुबा येह शख़्स ख़ुद पसन्दी व तकब्बुर में मुब्तला है और इस पर गुज़श्ता बातों में ग़ौर कर के उस का इ़लाज करना लाज़िम है ताकि तकब्बुर की जड़ें ख़त्म हो जाएं, और इस का त़रीक़ा येह है कि वोह अपने हम अ़स्र लोगों को मजालिस में ख़ुद पर मुक़द्दम करे, मगर इस सूरत में येह ज़रूरी है कि उस का अन्दाज़ लोगों को इस गुमान में न डाले कि तवाज़ोअ़ ज़ाहिर कर रहा है जैसे उन की सफ़ छोड़ कर गन्दी जगह पर बैठना वग़ैरा क्यूं कि येह तो ऐ़न तकब्बुर है, और इस त़रीक़े से भी तकब्बुर की जड़ें काट सकता है कि वोह फ़क़ीर की दा'वत क़बूल करे, उस से गुफ़्त-गू करे, उसे अपने साथ बिठाए, अपनी ज़रूरिय्यात के लिये ख़ुद बाज़ार जाए, फ़ु-क़रा व मोह़ताज लोगों की ह़ाजत पूरी करने के लिये भी बज़ाते ख़ुद जाए और अपनी ह़ाजत पर दूसरों की ह़ाजत को तरजीह़ दे तो ह़दीसे मुबा-रका के मुत़ाबिक़ येह तमाम बातें तकब्बुर से नजात के त़रीक़े हैं, येह बातें ख़ल्वत और जल्वत दोनों ही में यक्सां हों वरना वोह या तो मु-तकब्बिर होगा या फिर रियाकार। और येह दोनों ही या'नी तकब्बुर और रियाकारी अमराज़े क़ुलूब में से हैं, अगर इन का इ़लाज न किया जाए तो येह हलाकत में डाल देते हैं। बा'ज़ अवक़ात लोगों को येह आ़दत मोहलत देती है और वोह जिस्म को संवारने में मश्ग़ूल हो जाते हैं ह़ालां कि आख़िरत में दिल की सलामती ही से सलामती ह़ासिल होगी या'नी शिर्क या ग़ैरुल्लाह के ख़याल से पाक दिल ले कर आएगा चुनान्चे फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ۝ (پ۱۹،الشعرآء:۸۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जो अल्लाह के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर।

तम्बीह 3 :

उ़ज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत और इस के मोहलिक होने का ज़िक्र अह़ादीस में गुज़र चुका है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भी अपने इस फ़रमाने आ़लीशान से इस की मज़म्मत फ़रमाई :

《1》

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا (پ۱۰،التوبۃ:۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे तो वोह तुम्हारे कुछ काम न आई।

《2》

وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا۝ (پ۱۶،الکہف:۱۰۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

बा'ज़ अवक़ात बन्दा अपने किसी काम को पसन्द करता है ह़ालां कि कभी तो वोह इस में सह़ीह़ होता है और कभी ग़लत़। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''हलाकत दो चीज़ों में है : (1) मायूसी (2) और ख़ुद पसन्दी में।'' या'नी मायूस शख़्स आ'माल के नफ़्अ़ से ना उम्मीद होता है जिस का लाज़िमी असर येह होता है कि वोह शख़्स आ'माल छोड़ देता है, और ख़ुद पसन्दी का शिकार अपने आप को ख़ुश बख़्त और मुराद पा लेने वाला समझता है लिहाज़ा अ़मल की ज़रूरत नहीं समझता, इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝ (پ۲۷، النجم ۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं।

तज़्कियए नफ़्स से येह ए'तिक़ाद रखना कि वोह नेक है, ह़ालां कि ख़ुद पसन्दी का भी येही मत़्लब है, ह़ज़रते सय्यिदुना मतरफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर मैं रात सो कर गुज़ारूं और सुब्ह़ को इस पर नदामत मह़सूस करूं तो येह मेरे लिये रात भर इ़बादत करने और सुब्ह़ को इस पर ख़ुश होने से ज़ियादा पसन्दीदा है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने त़वील नमाज़ पढ़ाई, फिर सलाम फैरने के बा'द लोगों से इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने मेरा जो अ़मल देखा है इस पर तअ़ज्जुब न करो क्यूं कि इब्लीस ने एक त़वील मुद्दत तक मलाएका के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की थी फिर भी वोह मरदूद हो गया।"

तम्बीह 4 :

ख़ुद पसन्दी की आफ़ात

उ़ज्ब की बहुत सी आफ़तें हैं इस से **किब्र** पैदा होता है जैसा कि हम बयान कर चुके हैं लिहाज़ा **किब्र** की आफ़ात उ़ज्ब की भी आफ़ात हुईं क्यूं कि वोह अस्ल है, येह सूरत बन्दों के मुक़ाबले में है जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ उ़ज्ब से मुराद येह है कि बन्दा येह गुमान कर के अपने गुनाह भूल जाए कि इस पर इन का मुआ-ख़ज़ा न होगा और न ही इसे इन की सज़ा मिलेगी, येह अ़मल बन्दे को अपनी इ़बादात को अ़ज़ीम समझने पर उभारता है, वोह उन्हें अदा कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर गोया एह़सान जतलाता है और इस की आफ़ात को न जानते हुए अन्धा हो जाता है इस त़रह़ वोह अपनी तमाम या अक्सर इ़बादात ज़ाएअ़ कर बैठता है, क्यूं कि अ़मल जब तक इन बुराइयों से पाक न होगा नफ़्अ़ न देगा और अ़मल को इन बुराइयों से पाकीज़ा रखने पर ख़ौफ़ ही उभार सकता है, जब कि ख़ुद पसन्द शख़्स को उस का नफ़्स अपने रब عَزَّوَجَلَّ से धोके में डाल देता है तो वोह उस की ख़ुफ़्या तदबीर और उस के अ़क़ाब से बे ख़ौफ़ हो जाता है और येह समझने लगता है कि येह अ़मल करने की वजह से उस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कोई ह़क़ है, इस त़रह़ वोह अपने आप को अच्छा समझने लगता है, अपनी राय, अ़क़्ल और इ़ल्म पर फ़ख़्र करने लगता है यहां तक कि उस का येह ख़याल पुख़्ता हो जाता है और फिर उस का नफ़्स इ़ल्म व अ़मल में ग़ैर की त़रफ़ रुजूअ़ करने से मुत़्मइन नहीं होता इस लिये वोह नसीह़त की बात पर कान नहीं धरता बल्कि ग़ैर को ह़क़ारत की नज़र से देखने की वजह से नसीह़त ह़ासिल ही नहीं कर पाता।

लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि ख़ुद पसन्दी ऐसे वस्फ़ पर होती है जो बन्दे की ज़ात में कमाल का द-रजा रखता है, मगर बन्दा जब तक इस वस्फ़ के छिन जाने से ख़ौफ़ज़दा रहता है ख़ुद पसन्दी में मुब्तला नहीं होता, इसी त़रह़ अगर वोह इस बात पर ख़ुश हो कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है और उसी ने इसे अ़त़ा फ़रमाई है तब भी वोह ख़ुद पसन्दी से मह़फ़ूज़ रह सकता है और अगर वोह इस

www.dawateislami.net

पर इस लिये खुश हो कि उस की सि-फ़ते कमाल है और इस की निस्बत के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ होने से आंखें बन्द कर ले तो येही खुद पसन्दी में मुब्तला होना, उस ने'मत को बड़ा समझना और उस की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निस्बत को भूल जाना है। अब अगर उस के इस ए'तिक़ाद की बिना पर कि उस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां कुछ ह़क़ है, उस की तवक़्क़ुआ़त को भी उस के साथ मिला दिया जाए तो अब वोह बन्दा नाज़ो अदा और नख़्रे के मक़ाम पर खड़ा होगा जो कि उ़ज्ब से भी ख़ास है।

तम्बीह 5 :

उ़ज्ब और **किब्र** के गुज़श्ता फ़र्क़ से मा'लूम हुवा कि **किब्र** कभी बात़िनी होता है जो कि नफ़्स में पैदा होने वाली कैफ़िय्यत का नाम है इस कैफ़िय्यत को **किब्र** का नाम देना ज़ियादा मुनासिब है, और कभी ज़ाहिरी होता है जो कि आ'ज़ा से सादिर होने वाले आ'माल का नाम है और येह आ'माल नफ़्स में पैदा शुदा इसी कैफ़िय्यत के नताइज होते हैं कि जिन के ज़ुहूर के वक़्त इस कैफ़िय्यत को तकब्बुर कहा जाता है और इन नताइज की अ़दम मौजू-दगी की सूरत में इसे **किब्र** कहा जाता है, लिहाज़ा अस्ल वोही नफ़्स में पैदा होने वाली कैफ़िय्यत है जो खुद को किसी से बरतर समझने से तस्कीन पाती है और येह कैफ़िय्यत दो चीज़ों का तक़ाज़ा करती है (1) जिस पर तकब्बुर किया जाए (2) जिस की वजह से तकब्बुर किया जाए। इसी से तकब्बुर और खुद पसन्दी में फ़र्क़ वाज़ेह़ हो जाता है क्यूं कि उ़ज्ब में येह दोनों चीज़ें ज़रूरत की नहीं होतीं यहां तक कि अगर किसी इन्सान के बारे में फ़र्ज़ कर लिया जाए कि वोह सारी ज़िन्दगी तन्हा रहा हो तो येह तो मुम्किन है कि वोह खुद पसन्दी में मुब्तला हो जाए मगर वोह तकब्बुर नहीं कर सकता क्यूं कि फ़क़त़ किसी शै को बड़ा समझना तकब्बुर का सबब नहीं हो सकता जब तक कि दूसरा कोई शख़्स मौजूद न हो।

तम्बीह 6 :

खुद पसन्दी का इ़लाज

उ़ज्ब या'नी खुद पसन्दी का इ़लाज भी निहायत ज़रूरी है और कुल्लिया येह है कि मरज़ का इ़लाज हमेशा उस की ज़िद से होता है जब कि खुद पसन्दी की ज़िद जह्ल मह़्ज़ है, जैसा कि इस की बयान कर्दा ता'रीफ़ से ज़ाहिर है और इस की शिफ़ा येह है कि ऐसी बात को पेशे नज़र रखा जाए कि जिस का कोई इन्कार न कर सके और वोह येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे लिये इ़ल्म व अ़मल वग़ैरा मुक़द्दर कर दिये हैं और वोही तुझे तौफ़ीक़ की ने'मतें अ़त़ा फ़रमाता और तुझे नसब व माल और जाहो ह़श्मत वाला बनाता है, लिहाज़ा जो चीज़ न अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हो न ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हो उस पर इन्सान कैसे उ़ज्ब कर सकता है जब कि उस का मह़ल होना उसे कोई फ़ाएदा नहीं दे सकता क्यूं कि मह़ल के ईजाद और तह़सील में कोई दख़्ल नहीं होता बल्कि इस के सबब होने पर नज़र करना तफ़क्कुर का बाइ़स बन सकता है क्यूं कि जब वोह ग़ौरो फ़िक्र करेगा कि अस्बाब में कोई तासीर नहीं होती बल्कि तासीर तो अस्बाब पैदा करने वाले और उन के ज़रीए बन्दों पर इन्आ़म फ़रमाने वाले मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है, लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि वोह सिर्फ़ ऐसी ख़ूबी पर खुद पसन्दी में मुब्तला हो जो उस ने न किसी को पहले अ़त़ा फ़रमाई और न ही उस शख़्स के इ़लावा किसी और को अ़त़ा फ़रमाएगा,

www.dawateislami.net

अगर कोई येह कहे : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे अन्दर बातिनी सि-फ़ते महमूदा को न जानता तो मुझे दूसरों पर हरगिज़ तरजीह न देता।" इस का जवाब येह है : "वोह औसाफ़े हमीदा भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पैदा करने और ने'मत फ़रमाने से हैं।"

जो अपने ख़ातिमे और आक़िबत को जान ले वोह इस क़िस्म की किसी भी शै पर ख़ुद पसन्दी में क्यूंकर मुब्तला हो सकता है ? क्यूं कि उस को जिस भी अच्छी सिफ़त का हामिल तस्लीम कर लिया जाए वोह शैतान से ज़ियादा इबादत गुज़ार, अपने ज़माने में बल्अम बिन बाऊरा से बड़ा आलिम और अबू तालिब से ज़ियादा नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुक़र्रब नहीं हो सकता, न ही वोह जन्नत और मक्कए मुकर्रमा से ज़ियादा मर्तबे वाला बन सकता है, जब कि तुम उन लोगों के बुरे ख़ातिमे का हाल जान चुके हो और तुम येह भी जानते हो कि जन्नत में हज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और मक्कए मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार के साथ क्या मुआ-मला हुवा था, तो नसब, इल्म, महल वग़ैरा पर ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होने से डरो, येह सब बातें तो उस सूरत में थीं जब तुम हक़ पर उ़ज्ब करते, लिहाज़ा बातिल पर उ़ज्ब में मुब्तला होने की बुराई क्या होगी ? और अक्सर ख़ुद पसन्दी बातिल ही की बिना पर होती है, चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ (پ۲۲، فاطر:۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह जिस की निगाह में उस का बुरा काम आरास्ता किया गया कि उस ने उसे भला समझा हिदायत वाले की तरह हो जाएगा इस लिये अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे।

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस बात की पहले ही ख़बर दे चुके हैं कि येह अमल इस उम्मत के आख़िरी लोगों में ग़ालिब होगा क्यूं कि तमाम बिदअ़ती और गुमराह लोग अपनी फ़ासिद आरा पर ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होने की वजह से इस्रार करेंगे इसी वजह से पिछली उम्मतें हलाकत में मुब्तला हो गईं क्यूं कि वोह टुकड़ों में बट गए और हर एक अपनी राय को पसन्द करने लगा। चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है कि,

﴾1﴿

كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝ (پ۲۱، الروم:۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हर गुरौह जो उस के पास है उसी पर ख़ुश है।

﴾2﴿

فَذَرْهُمْ فِىْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ۝ نُسَارِعُ لَهُمْ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝ (پ۱۸، المؤمنون:۵۴-۵۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम इन को छोड़ दो इन के नशे में एक वक़्त तक क्या येह ख़याल कर रहे हैं कि वोह जो हम इन की मदद कर रहे हैं माल और बेटों से येह जल्द जल्द इन को भलाइयां देते हैं बल्कि इन्हें ख़बर नहीं।

या'नी बा'ज़ अवक़ात येह बदी और इस्तिद्राज हो जाता है।

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ0 وَاُمْلِيْ لَهُمْ ط اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ0 (پ۹،الاعراف:۱۸۲،۱۸۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा बेशक मेरी खुफ़्या तदबीर बहुत पक्की है ।

तवाज़ोअ़ और आजिज़ी की फ़ज़ीलत

जब आप पर गुरूर व तकब्बुर और खुद पसन्दी की मज़म्मत, इन की आफ़ात और बुराइयां ज़ाहिर हो गईं तो अब तक़ाज़ा इस बात का है कि तवाज़ोअ़ के फ़ज़ाइल और इस के बुलन्द मर्तबे को भी बयान किया जाए क्यूं कि अश्या की पहचान उन की ज़िदों ही से होती है । लिहाज़ा इस सिल्सिले में वारिद रिवायात कुछ इस त़रह़ हैं :

﴾82﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि तुम लोग इतनी आ़जिज़ी इख़्तियार करो यहां तक कि तुम में से कोई किसी पर फ़ख़्र करे न कोई किसी पर ज़ुल्म करे ।''

(صحیح مسلم، کتاب الجنۃ و نعیمھا، باب صفات التی یصرف بھا، الحدیث: ۷۲۱۰،ص ۱۱۷۵)

﴾83﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''स-दक़ा माल में कमी नहीं करता, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे के अ़फ़्वो दर गुज़र की वजह से उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है और जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है ।''

(صحیح مسلم، کتاب البر،باب استحباب العفو والتواضع، الحدیث: ۶۵۹۲،ص ۱۱۳۰)

﴾84﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तवाज़ोअ़ बन्दे की रिफ़्अ़त में इज़ाफ़ा करती है, लिहाज़ा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाएगा और दर गुज़र से काम लेना बन्दे की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा करता है लिहाज़ा अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लिया करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाएगा और स-दक़ा माल में इज़ाफ़ा करता है लिहाज़ा स-दक़ा दिया करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाएगा ।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، باب التواضع، الحدیث: ۵۷۱۶،ج۳،ص۴۸)

﴾85﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**खुश ख़बरी है उस के लिये** जो ऐब न होने के बा वुजूद तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे, सुवाल किये बिग़ैर खुद को ज़लील समझे, जाइज़ त़रीके़ से कमाया हुवा माल राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करे, बे सरो सामान और मिस्कीन लोगों पर रह़्म करे और इ़ल्मो ह़िक्मत वाले लोगों से मैल जोल रखे, **खुश बख़्ती है उस के लिये** जिस की कमाई पाकीज़ा हो, बात़िन अच्छा हो, ज़ाहिर बुज़ुर्गी वाला हो और जो लोगों को अपने शर से मह़फ़ूज़ रखे, और **सआ़दत मन्दी है उस के लिये** जो अपने इ़ल्म पर अ़मल करे, अपनी ज़रूरत से ज़ाइद माल को राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करे और फ़ुज़ूल गोई से रुक जाए ।'' (المعجم الکبیر،الحدیث:۴۶۱۶،ج۵،ص۷۲)

www.dawateislami.net

《86》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब बन्दा तवाज़ोअ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का द-रजा सातवें आस्मान तक बुलन्द फ़रमा देता है।"

(كنزالعمال،كتاب الاخلاق، قسم الاقوال،باب التواضع،الحديث:٥٧١٧،ج٣،ص٤٩)

《87》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक द-रजा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे एक द-रजा बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है यहां तक कि उसे **इल्लिय्यीन** में पहुंचा देता है।"

(صحيح ابن حبان،باب التواضع والكبر والعجب، ذكر الاخبارعن وضع الله ،الحديث:٥٦٤٩،ج٧،ص٤٧٥)

《88》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "(तवाज़ोअ़ करने वाले को) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **आ'ला इल्लिय्यीन** में पहुंचा देता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर एक द-रजा (या'नी थोड़ा सा) भी तकब्बुर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे एक द-रजा पस्ती में गिरा देता है यहां तक कि उसे **अस्फ़लुस्साफ़िलीन** में पहुंचा देता है।" (المرجع السابق)

《89》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी त़रफ़ वह़्य फ़रमाई है कि तुम लोग तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो और तुम में से कोई दूसरे पर ज़ुल्म न करे।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الزهد، باب البرأة من الكبر،الحديث:٤١٧٩،ص٢٧٣١،"لايبغى"بدله" لايفخر")

《90》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अपने मुसल्मान भाई के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है और जो उस पर बुलन्दी चाहता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे पस्ती में डाल देता है।"

(المعجم الاوسط،الحديث:٧٧١١،ج٥،ص ٣٩٠)

《91》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तकब्बुर से बचते रहो क्यूं कि सफ़ेद पोश आदमी भी मु-तकब्बिर हो सकता है।"

(المعجم الاوسط،الحديث:٥٤٣،ج١،ص١٦٦)

《92》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मजलिस में कम रुत्बे वाली जगह पर राज़ी हो जाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ करने में से है।"

(المعجم الكبير، الحديث: ٢٠٥،ج١،ص١١٤)

《93》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो और मिस्कीनों के साथ बैठा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बड़े मर्तबे वाले बन्दे बन जाओगे और तकब्बुर से भी बरी हो जाओगे।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحديث:٥٧٢٢،ج٣،ص٤٩)

www.dawateislami.net

﴾94﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "किसी चीज़ का मालिक ख़ुद उस का बोझ उठाने का ज़ियादा ह़क़ रखता है मगर जब वोह ज़ईफ़ हो और उसे उठा न सकता हो तो उस का मुसल्मान भाई बोझ उठाने में उस की मदद करे।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:٦٥٩٤،ج٥،ص٦٥)

﴾95﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तवाज़ोअ़ को लाज़िम पकड़ लो क्यूं कि तवाज़ोअ़ दिल में होती है और कोई मुसल्मान किसी मुसल्मान को ईज़ा न दे क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात कमज़ोर नज़र आने वाले लोग ऐसे भी हैं कि अगर किसी बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा लें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाता है।" (المعجم الکبیر، الحدیث:٧٧٦٨،ج٨،ص١٨٦)

﴾96﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस का ख़ादिम उस के साथ बैठ कर खाना खाए और बाज़ार में वोह गधे पर सुवारी करे और बकरी का दूध दोहने के लिये उस की टांगें रस्सी से बांधे वोह मु-तकब्बिर नहीं हो सकता।"

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق ، فصل فی التواضع، الحدیث: ٨١٨٨،ج٦،ص٢٨٩)

﴾97﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर शख़्स के सर में एक लगाम होती है जिसे एक फ़िरिश्ता थामे होता है अगर वोह तवाज़ोअ़ से काम ले तो फ़िरिश्ते से कहा जाता है : "इस की क़द्र बुलन्द कर दो।" और जब वोह तकब्बुर करता है तो फ़िरिश्ते से कहा जाता है : "इस की क़द्रो मन्ज़िलत को पस्त कर दो।" (المعجم الکبیر، الحدیث:١٢٩٣٩،ج١٢،ص١٦٩)

﴾98﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमा देता है।" (مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب فی التواضع،الحدیث:١٣٠٦٧،ج٨،ص١٥٧)

﴾99﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "खुरदरा और तंग लिबास पहना करो ताकि इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई और फ़ख़्र को तुम में कोई जगह न मिले।" (کنزالعمال،کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الحدیث:٥٧٢٨،ج٣،ص٤٩)

﴾100﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अदना द-रजे का लिबास पहनना ईमान में से है।" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ करते हुए आ'ला लिबास तर्क करना और अदना लिबास को तरजीह़ देना ईमान की अ़लामत है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب ١،الحدیث:٤١٦١،ص١٥٢٦)

﴾101﴿...... साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने क़ुदरत के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आ'ला लिबास तर्क कर दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे लोगों के सामने बुला कर इख़्तियार देगा कि ईमान का जो जोड़ा चाहे पहन ले।" (جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة،باب النساء کله، الحدیث:٢٤٨١،ص١٩٠١)

www.dawateislami.net

《102》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ए'तिदाल पसन्दी, मियाना रवी और अच्छी निय्यत नुबुव्वत के 24 अज्ज़ा में से एक जुज़ है।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی التأنی، الحدیث:۲۰۱۰،ص۱۸۵۳)

《103》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अ-मले आख़िरत के इलावा हर चीज़ में ए'तिदाल पसन्दी अच्छी चीज़ है।"

(المستدرک، کتاب الایمان، باب التؤدة فی کل شیء، الحدیث: ۲۲۱،ج۱،ص۲۳۹)

《104》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हिल्म व तदब्बुर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से है और जल्द बाज़ी शैतान की तरफ़ से है।" (مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی الرفق،الحدیث:۱۲۶۵۲،ج۸،ص۴۳)

《105》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आइशा ! आजिज़ी अपनाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आजिज़ी करने वालों से महब्बत, और तकब्बुर करने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है।" (کنزالعمال، کتاب الخلافه، قسم الافعال، باب الهدیه، الحدیث: ۱۴۴۷۸،ج۵،ص۳۲۷)

《106》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आजिज़ी इख़्तियार करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्द करता है और जो तकब्बुर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा कर देता है।"

(الترغیب والترهیب، کتاب التوبة، باب الترغیب فی الزهد......الخ،الحدیث:۵۰۳۲،ج۴،ص۷۷)

《107》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आजिज़ी इख़्तियार करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है, जो ख़र्च में मियाना रवी इख़्तियार करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ग़नी कर देता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से महब्बत फ़रमाता है।" (المرجع السابق)

《108》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आजिज़ी इख़्तियार करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा, पस वोह ख़ुद को कमज़ोर समझेगा मगर लोगों की नज़रों में अ़ज़ीम होगा और जो तकब्बुर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लील कर देगा, पस वोह लोगों की नज़रों में छोटा होगा मगर ख़ुद को बड़ा समझता होगा यहां तक कि वोह लोगों के नज़्दीक कुत्ते और ख़िन्ज़ीर से भी बदतर हो जाता है।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحدیث:۵۷۳۴،ج۳،ص۵۰)

《109》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते हुए तवाज़ोअ़ इख़्तियार की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्द फ़रमा देगा और जो ख़ुद को बड़ा समझते हुए गुरूर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा कर देगा, लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत के साए में अपने आ'माल बजा लाते हैं जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को ज़लीलो रुस्वा करना

www.dawateislami.net

चाहता है तो उसे अपनी रह़मत के साए से निकाल देता है, लिहाज़ा उस बन्दे के गुनाह ज़ाहिर हो जाते हैं।''

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال،باب التواضع،الحديث:٥٧٣٥،ج٣،ص ٥٠)

﴾110﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तवाज़ोअ़ बन्दे की रिफ़्अ़त में इज़ाफ़ा करती है लिहाज़ा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें रिफ़्अ़त अ़ता फ़रमाएगा।''

(المرجع السابق، الحديث:٥٧١٦،ج٣،ص٤٨)

﴾111﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''जो मेरी मख़्लूक़ से नर्मी करे और मेरे लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे और मेरी ज़मीन पर तकब्बुर न करे तो मैं उसे बुलन्दी अ़ता करूंगा यहां तक कि **इल्लिय्यीन** तक पहुंचा दूंगा।''

﴾112﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर आदमी के सर में एक लगाम होती है जिस पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर होता है, अगर वोह तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रिफ़्अ़तो बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है और अगर बुलन्दी चाहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लील कर देता है और किब्रियाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की चादर है, तो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से (इस में) झगड़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लील कर देगा।''

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال،باب التواضع،الحديث:٥٧٣٩،ج٣،ص ٥٠)

﴾113﴿...... दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर आदमी के सर में एक लगाम होती है जिसे एक फ़िरिश्ता थामे होता है जब वोह तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस लगाम के ज़रीए़ उसे बुलन्द फ़रमा देता है और फ़िरिश्ता कहता है : ''बुलन्द हो जा! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बुलन्द फ़रमाए।'' और जब वोह (अकड़ कर) अपना सर ऊपर उठाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़मीन की त़रफ़ फेंक देता है और फ़िरिश्ता कहता है : ''पस्त हो जा! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे पस्त करे।''

(المرجع السابق،الحديث:٥٧٤٠،ج٣،ص ٥٠)

﴾114﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर इन्सान के सर में एक लगाम होती है जो एक फ़िरिश्ते के हाथ में होती है, जब बन्दा तवाज़ोअ़ करता है तो उस लगाम के ज़रीए़ उसे बुलन्दी अ़ता की जाती है और फ़िरिश्ता कहता है : ''बुलन्द हो जा! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बुलन्द फ़रमाए।'' और अगर वोह अपने आप को (तकब्बुर से) ख़ुद ही बुलन्द करता है तो वोह उसे ज़मीन की जानिब पस्त कर के कहता है : ''पस्त हो जा! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे पस्त करे।''

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال،باب التواضع، الحديث:٥٧٤١،ج٣،ص ٥٠)

﴾115﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर आदमी के सर में दो ज़न्जीरें होती हैं : एक ज़न्जीर का सिरा सातवें आस्मान पर और

www.dawateislami.net

दूसरी का सातवीं ज़मीन में होता है, अगर वोह आ़जिज़ी करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़न्जीर के ज़रीए़ उस का द-रजा सातवें आस्मान तक बुलन्द फ़रमा देता है और अगर वोह तकब्बुर करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (दूसरी) ज़न्जीर के ज़रीए़ उसे सातवीं ज़मीन तक गिरा देता है।'' (المرجع السابق، الحديث:٥٧٤٢،ج٣،ص٥٠)

《116》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो दुन्या में सरकशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे ज़लील करेगा और जो दुन्या में तवाज़ोअ़ इख़्तियार करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो कहेगा : ''ऐ नेक बन्दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''मेरे क़ुर्ब में आ जा कि तू उन लोगों में से है जिन पर न कोई ख़ौफ़ है और न कुछ ग़म।'' (المرجع السابق،الحديث:٥٧٤٣،ج٣،ص٥١)

《117》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो ह़सीनो जमील और शरीफ़ुल अस्ल होने के बा वुजूद मुन्कसिरुल मिज़ाज होगा तो वोह उन लोगों में से होगा जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन नजात अ़त़ा फ़रमाएगा।''

(حلية الاولياء،رقم:٣٧٧٧،ج٣،ص٢٢٢)

मुसल्मान का बचा हुवा पानी पीने की फ़ज़ीलत :

《118》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आ़जिज़ी की एक अ़लामत येह भी है कि आदमी अपने मुसल्मान भाई का जूठा या'नी बचा हुवा पानी पी ले और जो अपने भाई का जूठा पीता है उस के 70 द-रजात बुलन्द कर दिये जाते हैं, 70 गुनाह मिटा दिये जाते हैं और उस के लिये 70 नेकियां लिखी जाती हैं।''

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحديث:٥٧٤٥،ج٣،ص٥١)

खुरदरा लिबास जन्नत के लिबास से बदल जाएगा :

《119》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर ज़ीनत तर्क कर दे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर तवाज़ोअ़ करे और उस की रिज़ा चाहते हुए खुरदरा लिबास अपनाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे जन्नत के नफ़ीस लिबास से तब्दील फ़रमा दे।'' (المرجع السابق، الحديث:٥٧٤٦،ج٣،ص٥١،"تبدل" بدله "يكسوه")

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की तवाज़ोअ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ शाम की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी उन के साथ थे यहां तक कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक ऐसे

www.dawateislami.net

मक़ाम पर पहुंचे जहां घुटनों तक पानी था, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी ऊंटनी पर सुवार थे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ऊंटनी से उतरे और अपने मोज़े उतार कर अपने कन्धे पर रख लिये, फिर ऊंटनी की लगाम थाम कर पानी में दाख़िल हो गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ येह काम कर रहे हैं मुझे येह पसन्द नहीं कि यहां के बाशिन्दे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को नज़र उठा कर देखें।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "अफ़्सोस ! ऐ अबू उ़बैदा ! अगर येह बात तुम्हारे इलावा कोई और कहता तो मैं उसे उम्मते मुह़म्मदी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये इ़ब्रत बना देता, हम एक बे सरो सामान क़ौम थे, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें इस्लाम के ज़रीए इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई, जब भी हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा इ़ज़्ज़त के इलावा से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करना चाहेंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें रुस्वा कर देगा।"

﴾120﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ख़ुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जो तंगदस्ती न होते हुए तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे और जाइज़ त़रीक़े से ह़ासिल किया हुवा माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करे और मोह़ताज व मिस्कीन पर रह़म करे और अहले इ़ल्मो फ़िक़्ह से मेलजोल रखे।" (المعجم الكبير، الحديث:٤٦١٦، ج٥، ص٧٢)

﴾121﴿...... मरवी है कि "मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मक़ामे क़ुबा में हमारे साथ थे जब कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़े से थे, इफ़्त़ार के वक़्त हम आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दूध का एक बरतन ले कर ह़ाज़िर हुए जिस में हम ने कुछ शहद भी मिला दिया था, जब आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे उठा कर चखा और उस की मिठास पाई तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह क्या है ?" हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम ने इस में कुछ शहद मिला दिया है।" तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह बरतन रख दिया और इर्शाद फ़रमाया : "मैं इसे ह़राम क़रार नहीं देता मगर जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रिफ़्अ़त अ़ता फ़रमाता है, जो तकब्बुर करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा कर देता है, जो मियाना रवी इख्तियार करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ग़नी फ़रमा देता है, जो फ़ुज़ूल ख़र्ची करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तंगदस्त कर देता है और जो कसरत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मह़ब्बत करने लगता है।" (اتحاف السادة المتقين، كتاب الذم الكبر، ج١٠، ص٢٥٣)

﴾122﴿...... इस ह़दीसे पाक को बज़्ज़ार ने भी रिवायत किया है मगर उस में न तो मक़ामे क़ुबा का ज़िक्र है न येह अल्फ़ाज़ हैं कि "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कसरत से ज़िक्र करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मह़ब्बत करने लगता है।"

﴾123﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी ह़दीसे मुबा-रका के अल्फ़ाज़ कुछ इस त़रह़ हैं कि "ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक बरतन पेश किया गया जिस में दूध और शहद था।" इस के आगे येह अल्फ़ाज़ हैं : "मैं इस को ह़राम नहीं

www.dawateislami.net

जानता।" मज़ीद आगे अल्फ़ाज़ येह हैं : "जो कसरत से मौत का ज़िक्र करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपना महबूब बना लेता है।" (اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الكبر، ج١٠، ص٢٥٣)

《124》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चन्द सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ किसी जगह खाना तनावुल फ़रमा रहे थे कि दरवाज़े पर एक ऐसा साइल आया जो एक मूज़ी व ना पसन्दीदा मरज़ में मुब्तला था लेकिन फिर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अन्दर आने की इजाज़त मर्हमत फ़रमा दी, जब वोह अन्दर आया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने ज़ानू मुबारक के साथ मिला कर बिठा लिया और उस से इर्शाद फ़रमाया : "खाओ।" तो कुरैश के एक शख़्स को येह बात ना गवार गुज़री और उस ने नफ़रत का इज़्हार किया, पस वोह शख़्स उस वक़्त तक न मरा जब तक ख़ुद उसी मूज़ी मरज़ में मुब्तला न हो गया।" (المرجع السابق، ص٢٥٤)

शैख़ुल इस्लाम ज़ैन इराक़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे इस ह़दीस की अस्ल नहीं मिली अलबत्ता बा'ज़ ऐसी रिवायात मिलती हैं जिन में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कोढ़ में मुब्तला शख़्स के साथ खाना खाने का ज़िक्र है।

《125》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को इस्लाम की हिदायत दे, उस की सूरत भी अच्छी बनाए, उसे ऐसी जगह रखे जो उसे ऐबदार न करे और साथ ही उसे तवाज़ोअ़ भी अ़ता फ़रमा दे तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुख़्लिस दोस्त ही हो सकता है।" (المرجع السابق٢٥٦)

《126》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "चार चीज़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने महबूब बन्दे ही को अ़ता फ़रमाता है : (1) ख़ामोशी और येही इबादत की इब्तिदा है (2) तवक्कुल (3) तवाज़ोअ़ और (4) दुन्या से बे रग़बती।" (المرجع السابق٢٥٦)

《127》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "चार चीज़ें ऐसी हैं कि जिन तक पहुंचना अ़जीब है : (1) ख़ामोशी और येही इबादत की इब्तिदा है (2) तवाज़ोअ़ (3) ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और (4) कम चलना।" (المعجم الكبير، الحديث:٧٤١، ج١، ص٢٥٦)

《128》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना तनावुल फ़रमा रहे थे : "चेचक के मरज़ में मुब्तला एक ह़ब्शी शख़्स ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा जिस की खाल मरज़ की वजह से छिल चुकी थी, वोह जिस शख़्स के क़रीब जा कर बैठता वोह शख़्स वहां से उठ जाता तो रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने क़रीब बिठा लिया।" (اتحاف السادة المتقين، كتاب الذم الكبر، ج١٠، ص٢٥٧)

www.dawateislami.net

﴾129﴿...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या बात है कि मैं तुम में इबादत की मिठास नहीं पाता ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "इबादत की मिठास क्या होती है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तवाज़ोअ़ ।" (المرجع السابق، ص۲۵۸)

﴾130﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम मेरी उम्मत के आ़जिज़ी करने वाले लोगों से मिलो तो तुम भी उन के लिये तवाज़ोअ़ करो और जब तकब्बुर करने वालों से मिलो तो उन के साथ तकब्बुर से पेश आओ क्यूं कि इसी में उन की ज़िल्लत और ह़क़ारत है ।" (المرجع السابق، ص۲۵۸)

तवाज़ोअ़ के बारे में स-लफ़े सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के फ़रामीन

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ और तवाज़ोअ़ :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "बन्दा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की लगाम (एक मुक़र्रर फ़िरिश्ते के ज़रीए) बुलन्द फ़रमा देता है, (फिर वोह फ़िरिश्ता) कहता है : "आ़जिज़ी इख़्तियार कर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा।" और जब बन्दा तकब्बुर और सरकशी करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे (उसी मुअक्कल फ़िरिश्ते के ज़रीए) सख़्ती से ज़मीन पर पटख़ देता है और (वोह फ़िरिश्ता उस बन्दे से) कहता है : "दूर हो जा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे रुस्वा करे।" ह़ालां कि वोह अपने दिल में ख़ुद को बड़ा समझ रहा होता है जब कि लोगों की नज़रों में ह़क़ीर होता है यहां तक कि वोह उन के नज़्दीक ख़िन्ज़ीर से भी बदतर हो जाता है ।"

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और तवाज़ोअ़ :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "तवाज़ोअ़ करना अफ़्ज़ल इबादत है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और तवाज़ोअ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "तवाज़ोअ़ येह है कि तुम ह़क़ के आगे झुक जाओ और उस की पैरवी करो और अगर तुम सब से बड़े जाहिल से भी ह़क़ बात सुनो तो उसे भी क़बूल कर लो ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और तवाज़ोअ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सुब्ह़ करते तो लोगों के ह़ालात जानने के लिये उन के चेहरों में ग़ौर करते, यहां तक कि मसाकीन के पास जा कर बैठ जाते और इर्शाद फ़रमाते : "मिस्कीन, मिस्कीनों के साथ बैठ गया ।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ और तवाज़ोअ़ :

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "तवाज़ोअ़ येह है कि जब तुम अपने घर से निकलो तो जिस मुसल्मान से भी मिलो उसे अपने आप से अफ़्ज़ल जानो।"

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه और तवाज़ोअ़ :

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जूदी पहाड़ को सफ़ीनए नूह़ (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) के साथ ख़ास फ़रमाया क्यूं कि येह दूसरों से ज़ियादा इज्ज़ का इज़्हार करता था और ह़िरा पहाड़ को अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इबादत के साथ इस लिये ख़ास फ़रमाया क्यूं कि येह दूसरे पहाड़ों से ज़ियादा तवाज़ोअ़ करता था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे अत़्हर को इस लिये दीगर मख़्लूक़ से मुम्ताज़ फ़रमाया क्यूं कि येह इज्ज़ो इन्किसारी में इन पर फ़ौक़िय्यत रखता था।"

तवाज़ोअ़ और इ़ब्रत :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने कोहे सफ़ा के क़रीब एक शख़्स को ख़च्चर पर सुवार देखा, कुछ ग़ुलाम उस के सामने से लोगों को दूर कर रहे थे, फिर मैं ने उसे बग़दाद में इस ह़ालत में पाया कि वोह नंगे पाउं और ह़सरत ज़दा था नीज़ उस के बाल भी बहुत बढ़े हुए थे, मैं ने उस से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ?" तो उस ने जवाब दिया : "मैं ने ऐसी जगह रिफ़्अ़त चाही जहां लोग आ़जिज़ी करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ऐसी जगह रुस्वा कर दिया जहां लोग रिफ़्अ़त पाते हैं।"

कबीरा नम्बर **5 :** **धोका देना**

कबीरा नम्बर **6 :** **निफ़ाक़**

कबीरा नम्बर **7 :** **ज़ुल्म करना**

कबीरा नम्बर **8 :** **तकब्बुर की बिना पर मख़्लूक़ को ह़क़ीर जानना और उस से मुंह फैरना**

कबीरा नम्बर **9 :** **बे फ़ाएदा कामों में ग़ौरो ख़ौज़ करना**

कबीरा नम्बर **10 :** **तमअ़** (लालच)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **11 :**	तंगदस्ती का ख़ौफ़
कबीरा नम्बर **12 :**	तक़्दीर पर नाराज़ होना
कबीरा नम्बर **13 :**	मालदारों पर नज़र करना और माल की वजह से उन की ता'ज़ीम करना
कबीरा नम्बर **14 :**	तंगदस्ती की बिना पर फ़ु-क़रा का मज़ाक़ उड़ाना
कबीरा नम्बर **15 :**	ह़िर्स
कबीरा नम्बर **16 :**	दुन्यावी कामों में मुक़ाबला बाज़ी करना और इस पर फ़ख़्र करना
कबीरा नम्बर **17 :**	मख़्लूक़ की ख़ातिर ह़राम ज़राएअ़ से ज़ैबो ज़ीनत ह़ासिल करना
कबीरा नम्बर **18 :**	फ़रेबकारी
कबीरा नम्बर **19 :**	ना कर्दा अ़मल पर ता'रीफ़ का ख़्वाहां होना
कबीरा नम्बर **20 :**	अपने उ़यूब भुला कर लोगों के उ़यूब की जुस्त-जू में रहना
कबीरा नम्बर **21 :**	ने'मत को फ़रामोश कर देना
कबीरा नम्बर **22 :**	दीने इस्लाम के ख़िलाफ़ किसी की त़रफ़ दारी करना
कबीरा नम्बर **23 :**	शुक्र अदा न करना
कबीरा नम्बर **24 :**	तक़्दीर पर राज़ी न रहना
कबीरा नम्बर **25 :**	इन्सान का हुक़ूक़ुल्लाह और फ़र्ज़ अह़काम को हलका जानना
कबीरा नम्बर **26 :**	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों का मज़ाक़ उड़ाना, इन को धुत्कारना और ह़क़ीर जानना
कबीरा नम्बर **27 :**	ह़क़ से मुंह फैरना और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करना
कबीरा नम्बर **28 :**	मक्र और धोका देही से काम लेना
कबीरा नम्बर **29 :**	दुन्यावी ज़िन्दगी को मत़्मह़े नज़र बना लेना
कबीरा नम्बर **30 :**	ह़क़ बात से इनाद रखना

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **31 :** **मुसल्मान से बद गुमानी रखना**

कबीरा नम्बर **32 :** **हक़ को क़बूल न करना इस वजह से कि वोह ख़्वाहिशे नफ़्सानी के ख़िलाफ़ हो या फिर ना पसन्दीदा और मबग़ूज़ शख़्स से ज़ाहिर हो**

कबीरा नम्बर **33 :** **बन्दे का गुनाह पर ख़ुश होना**

कबीरा नम्बर **34 :** **गुनाह पर इस्रार करना**

कबीरा नम्बर **35 :** **नेकी पर ता'रीफ़ का ख़्वाहां होना**

कबीरा नम्बर **36 :** **दुन्यावी ज़िन्दगी पर राज़ी और मुत्मइन रहना**

कबीरा नम्बर **37 :** **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत को भुला देना**

कबीरा नम्बर **38 :** **नफ़्स के लिये ग़ुस्सा करना और इस की बातिल ज़राएअ़ से मदद करना**

बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने पांच से ले कर अड़तीस (38) तक मुन्दरिजए बाला तमाम गुनाहों के बाहम एक दूसरे में कसीर तदाख़ुल के बा वुजूद अ़लाहिदा अ़लाहिदा कबीरा गुनाह होने की तस्रीह़ फ़रमाई है, येह अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़िक़्हो मा'रिफ़त, इल्मो अ़मल, हिदायते सालिकीन और तरबिय्यते मुरीदीन, ज़ाहिरी करामात और बे शुमार आ'ला अह़वाल व अख़्लाक़ के जामेअ़ थे, चुनान्चे इस बह़स की इब्तिदा में फ़रमाते हैं कि जहां तक बातिनी कबाइर का तअ़ल्लुक़ है तो मुकल्लफ़ पर इन बातिनी कबाइर की मा'रिफ़त ह़ासिल करना वाजिब है ताकि वोह इन को ज़ाइल करने की कोशिश कर सके, क्यूं कि जिस के दिल में इन में से एक भी मरज़ होगा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ल्बे सलीम ले कर ह़ाज़िर न हो सकेगा। اَلْعِيَاذُ بِاللهِ

इन बातिनी अमराज़ में مَعَاذَ الله कुफ़्र, निफ़ाक़, तकब्बुर, फ़ख़्र, ग़ुरूर, ह़सद, ख़ियानत, कीना परवरी, ज़ुल्म करना और ग़ैरुल्लाह के लिये नाराज़ होना या ग़ैरुल्लाह के लिये ग़ुस्सा करना, रियाकारी या शोहरत के लिये अ़मल करना, मिलावट करना, बद दियानती, बुख़्ल, और ह़क़ से मुंह फैरना वग़ैरा शामिल हैं। फिर इस के बा'द फ़रमाते हैं **:** "इन जैसे गुनाहों पर बन्दे की मज़म्मत करना उस के ज़िना, चोरी, शराब नोशी और इन जैसे दीगर बदनी कबीरा गुनाहों पर मज़म्मत किये जाने से भी अ़ज़ीम है क्यूं कि इस का फ़साद ज़ियादा और नतीजा बुरा और दाइमी है, इस की वजह येह है कि इन जैसे कबीरा गुनाहों का असर ह़ालत और कैफ़िय्यत बन कर दिल में रासिख़ हो जाता है जब कि दीगर बदनी गुनाहों के अ-सरात जल्द ज़ाइल हो जाते हैं म-सलन कभी तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रीए तो कभी गुनाह मिटा देने वाली नेकी के ज़रीए ज़ाइल हो जाते हैं और बसा अवक़ात कोई मुसीबत व परेशानी इन गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है।"

www.dawateislami.net

《1》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक जिस्म में ख़ून का एक लोथड़ा है, जब येह दुरुस्त हो जाए तो सारा जिस्म दुरुस्त हो जाएगा और जब येह बिगड़ जाए तो सारा जिस्म बिगड़ जाएगा, सुन लो ! वोह दिल है।"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب فصل من استبرألدینه، الحدیث:٥٢، ص٦)

《2》...... दिल सारे आ'ज़ा का बादशाह है और दीगर आ'ज़ा इस के लश्कर और ताबेअ़ हैं, जब बादशाह बिगड़ जाए तो सारा लश्कर बिगड़ जाता है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "दिल बादशाह है जब कि दीगर आ'ज़ा इस के लश्कर हैं, जब बादशाह अच्छा हो तो फ़ौज भी अच्छी होती है और जब बादशाह ही ख़बीस हो जाए तो फ़ौज भी ख़बीस हो जाती है।"

लिहाज़ा जिसे इन अमराज़ से मह़फ़ूज़ दिल अ़ता किया गया हो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे और जो अपने दिल में इन में से कोई मरज़ पाए उस पर उस बीमारी के ज़ाइल हो जाने तक उस का इ़लाज करना वाजिब है, अगर वोह इस का इ़लाज न करेगा तो गुनाहगार होगा और इन अमराज़ की मौजू-दगी में बन्दा उसी सूरत में गुनाहगार होता है जब कि वोह किसी गुनाह की निय्यत और इरादा अपने दिल में करे, मह़ज़ दिल में ख़याल आने या सब्क़ते लिसानी से ज़बान से निकल जाने से गुनाहगार नहीं होता।

इन तमाम गुनाहों को कबीरा कहना फ़क़त़ अहले तसव्वुफ़ो मा'रिफ़त के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ है और इमामे फ़क़ीह इन्ही बुज़ुर्गों में से हैं इसी लिये आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने अहले मज़्हब उ़-लमाए शाफ़िइय्या के ख़िलाफ़ कलाम किया अलबत्ता इन गुनाहों में बा'ज़ **मुत्तफ़क़** अ़लैह कबीरा गुनाह भी हैं जैसे ह़सद, कीना, रियाकारी, शोहरत के लिये अ़मल करना, तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी वग़ैरा जिन का ज़िक्र हो चुका है, इसी त़रह़ और बहुत से गुनाह ऐसे हैं जिन्हें कबीरा कहा जा सकता है और येह आप अ़न्क़रीब जान लेंगे जब हम उन के बारे में सख़्त वई़द पर दलालत करने वाली अह़ादीस बयान करेंगे।

इस्तिलाही मा'ना के ए'तिबार से **ज़ुल्म** फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के नज़्दीक गुनाहे सग़ीरा है कबीरा नहीं जैसा कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इस की तस्रीह़ की है, इसी त़रह़ बा'ज़ गुनाहों की तफ़्सील अपने मक़ाम पर आएगी जैसे तर्के ज़कात के बयान में बुख़्ल और लालच और ग़ीबत के बयान में बद गुमानी की तफ़्सील ज़िक्र की जाएगी।

हमारे अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی में से इस बात कि "दुन्या पर ख़ुश होना ह़राम है।" की तस्रीह़ करने वालों में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बग़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी शामिल हैं, शायद सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने इन्ही से येह क़ौल लिया और इस पर येह इज़ाफ़ा कर दिया कि येह कबीरा गुनाह है क्यूं कि येह ऐसी बुराइयों का पेश ख़ैमा है जिस के नुक़्सानात बहुत ज़ियादा हैं क्यूं कि येह बात तो वाज़ेह़ है कि दुन्या पर ख़ुश होने की ह़ुरमत का मह़ल उसी सूरत में है कि जब येह तकब्बुर व फ़ख़्र और हम-अ़स्र लोगों की तह़क़ीर वग़ैरा जैसी ख़राबियों और बुराइयों पर मुश्तमिल हो जब कि अपनी इ़ज़्ज़त क़ाइम रखने, अपने आप को और अपने अहलो इ़याल को लोगों के माल की मोह़ताजी से बचाने के लिये हो या मोह़ताजों की मदद के लिये हो तो येह ख़ुशी मह़मूद है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْاؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ۝ (پ۱۱، یونس:۵۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि खुशी करें वोह इन के सब धन दौलत से बेहतर है।

दूसरी बात येह है कि इन तमाम गुनाहों की बुन्याद बद अख़्लाक़ी और दिल की ख़राबी पर है लिहाज़ा हम अपने इस बाब की इब्तिदा उन अह़ादीस से करते हैं जो इन अमराज़ या इन के मु-तअ़ल्लिक़ात की मज़म्मत में वारिद हुई।

बुरे अख़्लाक़ की तबाह कारियां

﴾3﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बद अख़्लाक़ी अ़मल को इस त़रह़ बरबाद कर देती है जैसे सिरका शह्द को ख़राब कर देता है।"

(كشف الخفاء، حرف السين المهملة،الحديث:١٤٩٦،ج١،ص٤٠٥)

﴾4﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बद अख़्लाक़ी बुरा शुगून है, औ़रतों की इत़ाअ़त नदामत है और दर गुज़र करना अच्छी आ़दत है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق،قسم الاقوال،الباب الثانى فى الاخلاق والافعال المذمومة، الحديث:٧٣٤٣،ج٣،ص١٧٨)

﴾5﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बद अख़्लाक़ी बुरा शुगून है और तुम में बद तरीन वोह है जिस का अख़्लाक़ सब से बुरा है।"

(تاريخ بغداد،احمد بن عيسٰى، ٢٣٤١،ج٥،ص٣١)

﴾6﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम येह बात सुनो कि कोई पहाड़ अपनी जगह से हट गया है तो उस बात की तस्दीक़ कर दो और जब येह सुनो कि किसी शख़्स ने अपना अख़्लाक़ बदल लिया है तो हरगिज़ इस बात की तस्दीक़ न करना क्यूं कि बन्दा अपनी आ़दत पर ही क़ाइम रहता है।"

(المسندللامام احمدبن حنبل،حديث ابى الدرداء،الحديث:٢٧٥٦٩،ج١٠،ص٤١٩،زال بدله"تغير")

﴾7﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक हर गुनाह की तौबा है मगर बद अख़्लाक़ की तौबा नहीं, क्यूं कि जब वोह किसी एक गुनाह से तौबा करता है तो उस से बड़े गुनाह में पड़ जाता है।"

(جامع الاحاديث للسيوطى، قسم الاقوال،الحديث:٦٠٦٤،ج٢،ص٣٧٥)

﴾8﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बद अख़्लाक़ी के इलावा हर गुनाह की तौबा है क्यूं कि बद अख़्लाक़ आदमी जब एक गुनाह से तौबा करता है तो उस से बड़े गुनाह का मुर-तकिब हो जाता है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال،فصل الترهيب،الحديث:٧٣٥٢،ج٣،ص١٧٨)

www.dawateislami.net

《9》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बुरा शुगून बद अख़्लाक़ी है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدہ عائشہ، الحدیث:۲۴۶۰۱، ج۹، ص۳۶۹)

《10》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर बद अख़्लाक़ी इन्सान (की शक्ल में) होती तो वोह शख़्स सब से बद सूरत होता और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बद कलामी करने वाला नहीं बनाया।"

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، فصل الترہیب، الحدیث:۷۳۵۱، ج۳، ص۱۷۸)

《11》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस का अख़्लाक़ बुरा होगा वोह तन्हा रह जाएगा और जिस के रन्ज ज़ियादा होंगे उस का बदन बीमार हो जाएगा और जो लोगों को मलामत करेगा उस की बुजुर्गी जाती रहेगी और मुरुव्वत ख़त्म हो जाएगी।"

(المطالب العالیۃ، کتاب البر والصلۃ، باب حسن الخلق، الحدیث: ۲۶۰۲، ج۷، ص۱۱۶)

《12》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बद अख़्लाक़ आदमी जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الاحسان الخادم، الحدیث:۱۹۴۶، ص۱۸۴۷، سیء الخلق بدلہ "سییء الملکۃ")

《13》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लोग मुख़्तलिफ़ चीज़ों के सर-चश्मे हैं और बाप दादा की आदतें औलाद में ज़रूर मुन्तक़िल होती हैं और बे अ-दबी बहुत बुरी आदत की तरह है।"

(شعب الایمان، باب فی الجود والسخاء، الحدیث:۱۰۹۷۴، ج۷، ص۴۵۵)

《14》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक बुरा अख़्लाक़ अमल को इस तरह ख़राब करता है जैसे सिरका शहद को ख़राब करता है।" (جامع الاحادیث للسیوطی، قسم الاقوال، الحدیث:۷۰۰۵، ج۳، ص۱۷)

《15》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त येह दुआ किया करते थे : "اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ لِاَحْسَنِ الْاَخْلَاقِ لَایَهْدِیْ لِاَحْسَنِهَآ اِلَّآ اَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّیْ سَیِّئَهَالَایَصْرِفُ سَیِّئَهَآ اِلَّآ اَنْتَ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अच्छे अख़्लाक़ की राहनुमाई फ़रमा क्यूं कि अच्छे अख़्लाक़ की राहनुमाई तू ही फ़रमाता है और मुझ से बुरे अख़्लाक़ दूर रख क्यूं कि बुरे अख़्लाक़ से तू ही दूर रखता है।"

(سنن النسائی، کتاب الافتتاح، باب نوع اخر من الدعاء......الخ، الحدیث:۸۹۷، ص۲۱۴۵، اصرف، یصرف بدلہ "قنی، یقنی")

अच्छे अख़्लाक़ की ब-र-कतें

इस बाब में और भी बहुत सी अहादीसे मुबा-रका मरवी हैं जिन में से एक येह भी है कि,

《16》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हुस्ने अख़्लाक़ दुन्या और आख़िरत की भलाइयां ले गया।" (المعجم الکبیر، الحدیث:۴۱۱، ج۲۳، ص۲۲۲)

www.dawateislami.net

बा'ज़ अहादीसे मुबा-रका का मफ़्हूम :

☆..... बन्दा अच्छे अख़्लाक़ से रोज़ादार और इबादत गुज़ार का द-रजा पा लेता है, नीज़ आख़िरत के द-रजात और जन्नत के बालाख़ानों को पा लेता है।

☆..... बद अख़्लाक़ी ऐसा गुनाह है जिस की बख़्शिश नहीं।

☆..... बन्दा इस की वजह से जहन्नम के सब से निचले द-रजे में पहुंच जाता है।

☆...... अच्छा अख़्लाक़ ख़ताओं को इस तरह पिघला देता है जिस तरह धूप बर्फ़ को पिघला देती है।

☆...... खुश खुल्क़ी (बाइसे) ब-र-कत है।

☆...... क़ियामत के दिन लोगों में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सब से ज़ियादा क़रीब वोही होगा जिस का अख़्लाक़ सब से अच्छा होगा।

☆...... सब से अच्छा अख़्लाक़ शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ है।

☆...... सब से अफ़्ज़ल मोमिन वोही है जिस का अख़्लाक़ सब से अच्छा है।

☆...... मीज़ान में रखे जाने वाले आ'माल में हुस्ने अख़्लाक़ सब से अफ़्ज़ल और वज़्नी होगा।

《**17**》...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ कुरआन था।" कुरआने करीम में फ़रमाने बारी तआला है :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ 0

(پ۹،الاعراف:۱۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फैर लो।

《**18**》...... इस आयते मुबा-रका के नुज़ूल के बा'द हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस से मुराद येह है कि जो तुम से तअल्लुक़ तोड़े तुम उस से जोड़ो और जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआफ़ कर दो।" (الدرالمنثورفی التفسیربالمأثور،سورۃ الاعراف،آیت ۱۹۹،ج۳،ص۶۳۰)

《**19**》...... नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए मुअज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "इब्लीस अपने चेलों से कहता है कि ज़ुल्म और हसद की तलब में इन्सानों की मदद किया करो क्यूं कि येह दोनों चीज़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक शिर्क के बराबर हैं।"

(فردوس الاخبارللدیلمی،باب الف،فصل حکایۃ عن الانبیاء،الحدیث:۹۲۳،ج۱،ص۱۴۴)

www.dawateislami.net

﴾20﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बुग़्ज़ से बचते रहो क्यूं कि येह दीन को मूंडने (या'नी बरबाद करने) वाला है।"

(جامع الاحادیث للسیوطی،قسم الاقوال الحدیث:۹۵۱۳،ج۳،ص۴۱۹)

﴾21﴿...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ वोह लोगो जो ज़बान से तो इस्लाम ले आए हो मगर तुम्हारे दिल में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ? मुसल्मानों को बुरा मत कहो और न ही इन के पोशीदा मुआ़-मलात की तलाश में रहा करो क्यूं कि जो शख़्स अपने मुसल्मान भाई के पोशीदा मुआ़-मले में तजस्सुस करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का पर्दा फ़ाश कर के उस के पोशीदा राज़ को ज़ाहिर फ़रमा देता है अगर्चे वोह अपने घर में पोशीदा हो।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:۲۹۳۶،ج۲،ص۱۷۸،تتبعوا بدلہ"تطلبوا")

﴾22﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ वोह लोगो जो ज़बानों से तो ईमान ले आए हो मगर तुम्हारे दिल में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ! मुसल्मानों को ईज़ा मत दो, और न उन के उ़यूब को तलाश करो क्यूं कि जो अपने मुसल्मान भाई का ऐ़ब तलाश करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा दे तो उसे रुस्वा कर देता है अगर्चे वोह अपने घर के तहख़ाने में हो।"

(شعب الایمان ، باب فی تحریم اعراض الناس، الحدیث:۶۷۰۴،ج۵،ص۲۹۶،بتغیر)

﴾23﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ वोह लोगो जो ज़बानों से तो ईमान ले आए हो मगर तुम्हारे दिल में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ! मुसल्मानों को ईज़ा मत दो, न ही उन्हें नुक़्सान पहुंचाओ और न उन के उ़यूब को तलाश करो क्यूं कि जो अपने मुसल्मान भाई की ऐ़बजूई करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा दे तो उसे रुस्वा कर देता है अगर्चे वोह अपने घर के तहख़ाने में हो।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मोमिन पर पर्दा होता है ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुसल्मानों पर इतने पर्दे हैं जिन्हें शुमार नहीं किया जा सकता, जब मोमिन गुनाह करता है तो वोह एक एक कर के उन पर्दों को चाक कर देता है यहां तक कि उस पर एक भी पर्दा बाक़ी नहीं रहता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलाएका से इर्शाद फ़रमाता है : "मेरे बन्दे के उ़यूब लोगों से छुपा दो क्यूं कि वोह इसे आ़र तो दिलाएंगे मगर बदलने की कोशिश नहीं करेंगे।" तो मलाएका अपने परों से ढांपने के लिये उसे घेर लेते हैं, फिर अगर वोह गुनाह जारी रखता है तो मलाएका अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! येह हम पर ग़ालिब आ गया है और हमें नजासत से आलूदा कर दिया है।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलाएका से इर्शाद फ़रमाता है : "इसे खुला छोड़ दो फिर अगर वोह किसी तारीक रात में तारीक मकान की अंधेरी कोठरी में भी कोई गुनाह करता है, तो भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को और उस के अ़मल को ज़ाहिर कर देता है।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال،باب تتبع العورات، الحدیث:۷۴۲۴،ج۳،ص۱۸۴)

www.dawateislami.net

《24》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लोगों से ता'रीफ़ का ख़्वाहां रहना इन्सान को अन्धा और बहरा कर देता है।"

(فردوس الاخبار،باب الحاء،الحديث:٢٥٤٨،ج١،ص٣٤٧)

《25》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब क़ियामत का दिन आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों में से एक बन्दे को बुला कर अपनी बारगाह में खड़ा करेगा और उस से उस की दुन्यवी क़द्रो मन्ज़िलत के बारे में उसी त़रह़ मुआ-ख़ज़ा फ़रमाएगा जैसे उस के माल के बारे में मुआ-ख़ज़ा फ़रमाएगा।" (جامع الاحاديث للسيوطی،قسم الاقوال ،الحديث:١٧٥٢،ج١،ص٢٦١)

बद गुमानी, लालच, शक वग़ैरा की मज़म्मत

《26》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने अपने भाई से बद गुमानी की बेशक उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बद गुमानी की, क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ز (پ٢٦،الحجرات:١٢) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बहुत गुमानों से बचो।

(الدرالمنثورفی التفسير المأثور،سورة الحجرات،آيت١٢،ج٧،ص٥٦٦)

《27》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम्हें बद गुमानी पैदा हो तो उस पर यक़ीन न करो, जब तुम ह़सद करो तो ह़द से न बढ़ा करो, जब तुम्हें किसी काम के बारे में बद शुगूनी पैदा हो तो उसे कर गुज़रो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखो और जब कोई चीज़ तोलो तो ज़ियादा तोल दिया करो।"

(جامع الاحاديث للسيوطی،قسم الاقوال ،الحديث:١٥٧٧،ج١،ص٢٣٧)

《28》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लोगों से मुंह फैर लो क्या तुम नहीं जानते कि अगर तुम लोगों में शक को तलाश करोगे तो उन्हें ख़राब कर दोगे या फ़साद में डाल दोगे।" (المعجم الكبير،الحديث:٨٥٩،ج١٩،ص٣٦٥)

《29》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लालच ऐसी फिस्लाने वाली चट्टान है जिस पर उ़-लमा भी साबित क़दम नहीं रहते।"

(كنزالعمال،كتاب الاخلاق،باب الطمع، الحديث:٧٥٧٩،ج٣،ص١٩٩)

《30》...... नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की, तीन चीज़ों से पनाह मांगो : (1) ऐसी ख़्वाहिश से जिस का कोई फ़ाएदा न हो (2) ऐसी ख़्वाहिश से जो ऐबदार कर दे (3) ऐसे ऐब से जिस की ख़्वाहिश की जाती हो, ऐसी ख़्वाहिश से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो जो ऐब बन जाए और ऐसे ऐब से जो ख़्वाहिश बन जाए।" (المرجع السابق،الحديث:٧٥٨٠،٧٥٨١)

www.dawateislami.net

《31》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो ऐसी ख़्वाहिश से जो ऐब में डाल दे और ऐसी ख़्वाहिश से जो दूसरी ख़्वाहिश में डाल दे और बे फ़ाएदा चीज़ की ख़्वाहिश से।"

(المسندلامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، الحديث:٢٢٠٨٢،ج٨،ص٢٣٧،يهوى بدله "يهدى")

《32》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ख़्वाहिशात से बचते रहो क्यूं कि येह बहुत बुरी तंगदस्ती है और ऐसे कामों से बचो जिन पर उ़ज़्र पेश करना पड़े।" (المعجم الاوسط،الحديث:٧٧٥٣،ج٥،ص٤٠٣)

《33》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लोगों के माल से मायूस होने को ख़ुद पर लाज़िम कर लो, ख़्वाहिश से बचते रहो क्यूं कि येह बहुत बुरी तंगदस्ती है, इस त़रह़ नमाज़ पढ़ो जैसे तुम दुन्या से जुदा हो रहे हो और ऐसे कामों से बचते रहो जिन पर उ़ज़्र पेश करना पड़े।" (المستدرك،كتاب الرقاق،باب اياك و الطمع......الخ،الحديث:٧٩٩٨،ج٥،ص٤٦٥)

ख़्वाहिशात और लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत

《34》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दो चीज़ों की महब्बत में बूढ़े का दिल भी जवान होता है और वोह लम्बी उम्मीद और माल हैं।"

(كنزالعمال،كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الحديث:٧٥٦٧،ج٣،ص١٩٨)

《35》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या तुम उसामा पर तअ़ज्जुब नहीं करते जो महीने के उधार पर सौदा करता है, बेशक उसामा लम्बी उम्मीद वाला है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है! जब मैं अपनी आंखें झपक्ता हूं तो येह गुमान करता हूं कि कहीं मेरी पलकें खुलने से पहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी रूह़ क़ब्ज़ न फ़रमा ले और जब अपनी पलकें उठाता हूं तो येह गुमान होता है कि कहीं इन्हें झुकाने से पहले ही मौत का वा'दा न आ जाए और जब कोई लुक़्मा मुंह में डालता हूं तो येह गुमान करता हूं कि मौत का उच्छू लगने (या'नी मौत आने) से पहले इसे न निगल सकूंगा, ऐ लोगो! अगर तुम अ़क़्ल रखते हो तो अपने आप को मुर्दों में शुमार करो, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है! बेशक तुम से जो वा'दा किया जाता है वोह हो कर रहेगा और तुम उसे आ़जिज़ करने वाले नहीं।" (المرجع السابق،الحديث:٧٥٦٨)

《36》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे अपनी उम्मत पर जिन चीज़ों का ख़ौफ़ है उन में से ख़ौफ़नाक चीज़ नफ़्सानी ख़्वाहिश और लम्बी उम्मीद है।"

(الكامل فى ضعفاء الرجال،على بن ابى على، ج٦،ص٣١٦)

《37》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बूढ़े का दिल दो चीज़ों या'नी नफ़्सानी ख़्वाहिश और लम्बी उम्मीद में जवान ही रहता है।"

(صحيح البخارى،كتاب الرقاق، باب من بلغ ستين سنة......الخ،الحديث:٦٤٢٠،ص٥٣٩)

www.dawateislami.net

《38》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "अगर मेरे बन्दे का गुनाह में पड़ जाना उस के अपनी नेकी को पसन्द करने (या'नी ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होने) से बेहतर न होता तो मैं अपने मोमिन बन्दे को हरगिज़ गुनाह न करने देता।"

(كنز العمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال،باب العجب، الحديث:٧٦٦٩،ج٣،ص٢٠٦)

《39》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर मोमिन अपने अ़मल को पसन्द न करता तो उसे गुनाहों से बचा लिया जाता यहां तक कि उसे गुनाह का ख़याल तक न आता, लेकिन मोमिन का गुनाह में पड़ जाना उ़ज्ब में मुब्तला होने से बेहतर है।" (المرجع السابق،الحديث:٧٦٧٠)

《40》...... नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इस बात में कोई भलाई और ख़ैर नहीं कि बन्दा अपनी ज़बान से कोई फ़ैसला करे और दिल में इस पर ख़ुश हो।"

(المرجع السابق،الحديث:٧٦٧١)

《41》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत के बद तरीन लोग वोह हैं जो अपनी दीनदारी पर ख़ुश होते हैं, अपने अ़मल में दिखावा करते हैं और अपनी दलील के ज़रीए झगड़ा करते हैं हालां कि दिखावा शिर्क है।" (المرجع السابق،الحديث:٧٦٧٢)

《42》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी नेक अ़मल पर अपनी ता'रीफ़ की उस का शुक्र ज़ाएअ़ और अ़मल बेकार हो गया।"

(المرجع السابق،الحديث:٧٦٧٤)

لَيْسَ مَنْ مَّاتَ فَاسْتَرَاحَ بِمَيِّتٍ   اِنَّمَا الْمَيِّتُ مَيِّتُ الْاَحْيَآءِ

या'नी जो इस जहाने फ़ानी से कूच कर जाए वोह ह़क़ीक़त में मुर्दा नहीं बल्कि वोह तो अ-बदी नींद सो रहा है, अलबत्ता अस्ली मुर्दा तो वोह है जो ज़िन्दा हो कर भी मुर्दे के औसाफ़ रखता है।

(المرجع السابق،الحديث:٧٦٧٥)

बद अ़ह्द, ग़द्दार, ख़ाइन और धोकेबाज़ की मज़म्मत

《43》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन हर ख़ियानत करने वाले के लिये एक झन्डा गाड़ा जाएगा जिस से उस की पहचान होगी।" (كنز العمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال،باب الغدر، الحديث:٧٦٨٦،ج٣،ص٢٠٧)

《44》...... सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन हर ख़ाइन के लिये एक झन्डा गाड़ा जाएगा और कहा जाएगा : "सुन लो ! येह फुलां बिन फुलां की ख़ियानत है।"

(صحيح مسلم، كتاب الجهاد، باب تحريم الغدر،الحديث:٤٥٣،ص٩٨٦)

www.dawateislami.net

《45》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन ख़ाइन की सुरीन (या'नी पिछले मक़ाम) पर एक झन्डा गाड़ा जाएगा जिस से उस की पहचान होगी।" (المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی سعید الخدری ، الحدیث:۱۱۳۰۳،ج٤،ص٧٠)

《46》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन हर ख़ाइन के लिये एक झन्डा होगा जिस से उस की पहचान होगी।"

(صحیح البخاری، کتاب الجزیة والموادعة،باب اثم الفادر......الخ،الحدیث:۳۱۸٦،ص۲۵۸)

《47》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन अव्वलीनो आख़िरीन को जम्अ़ फ़रमाएगा तो हर धोकेबाज़ के लिये एक झन्डा बुलन्द किया जाएगा फिर कहा जाएगा : "येह फुलां बिन फुलां का धोका है।"

(صحیح مسلم،کتاب الجهاد، باب تحریم الغدر،الحدیث:٤٥٢٩،ص٩٨٦)

《48》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बद अ़हदी करने वाले हर शख़्स के लिये क़ियामत के दिन उस की बद अ़हदी के मुताबिक़ झन्डा गाड़ा जाएगा।"

(سنن ابن ماجه، ابواب الجهاد،باب البیعت،الحدیث:۲۸۷۳، ص ۲٦٥٠)

《49》...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर ख़ाइन के लिये क़ियामत के दिन एक अ़लम होगा जिसे उस की ख़ियानत के मुताबिक़ बुलन्द किया जाएगा, सुन लो ! हुक्मरान से बड़ा ख़ियानत करने वाला कोई न होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب تحریم الغدر،الحدیث:٤٥٣٨،ص٩٨٦)

《50》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन ग़द्दार का झन्डा उस की सुरीन पर नस्ब होगा।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:١٦٤،ج٢٠،ص٨٦)

《51》...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन ग़द्दार का झन्डा उस की सुरीन पर होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب تحریم الغدر،الحدیث:٤٥٣٧،ص٩٨٦)

《52》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तक लोग अपने आप से ग़द्दारी न करने लगें हरगिज़ हलाक न होंगे।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب الامر والنهی،الحدیث:٤٣٤٧،ص١٥٤٠)

《53》...... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मक्रो फ़रेब जहन्नम में (ले जाने वाले) हैं।" (شعب الایمان، باب فی الامانات......الخ،الحدیث:۵۲٦۸،ج٤،ص۳۲٤)

www.dawateislami.net

《54》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मक्रो फ़रेब और ख़ियानत जहन्नम में (ले जाने वाले) हैं।"

(المستدرک ،کتاب الاھوال،باب تحشرھذہ الامۃ......الخ،الحدیث:۸۸۳۱،ج۵،ص۸۳۳)

《55》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी मोमिन को नुक़्सान पहुंचाया या उस के साथ फ़रेब किया वोह मल्ऊन है।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلۃ،باب ماجاء فی الخیانۃ......الخ،الحدیث:۱۹۴۱،ص۱۸۴۷)

《56》...... सरकारे मदीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी औरत को उस के शोहर या ग़ुलाम को उस के आक़ा की सरकशी पर उभारा वोह हम में से नहीं।" (سنن ابی داؤد،کتاب الادب،باب فیمن خبب مملوکا......الخ،الحدیث:۵۱۷۰،ص۱۶۰۱)

《57》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी औरत को उस के शोहर या ग़ुलाम को उस के आक़ा की सरकशी और ना फ़रमानी पर उभारा वोह हम में से नहीं।" (سنن ابی داؤد،کتاب الطلاق ،باب فمن ـــ امراۃ ......الخ ، ۲۱۷۵،ص۱۳۸۳)

《58》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने हमारे साथ बद दियानती की वोह हम में से नहीं और मक्रो फ़रेब जहन्नम में (ले जाने वाले) हैं।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۲۳٤،ج۱۰،ص۱۳۸)

《59》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी मुसल्मान के साथ बद दियानती की या उसे नुक़्सान पहुंचाया या धोका दिया वोह हम में से नहीं।" (جامع الاحادیث للسیوطی،قسم الاقوال،الحدیث:۱۸۰۹۶،ج۵،ص۱۹۰)

《60》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दग़ाबाज़, बख़ील और एहसान जतलाने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلۃ،باب ماجاء فی البخل،الحدیث:۱۹۶۳،ص۱۸۴۹)

《61》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसल्मान के अहले ख़ाना में बद दियानती की और नुक़्सान पहुंचाया वोह हम में से नहीं।" (المطالب العالیۃ،باب تفسیر الکبائر،الحدیث:۲۹٤۷،ج۷،ص٤۲٤،"ضارہ" بدلہ" خادمہ")

《62》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी ख़ादिम को उस के मालिक की सरकशी पर उभारा और औरत के तअल्लुक़ात उस के शोहर से ख़राब किये वोह हम में से नहीं।" (المسندللامام احمد بن حنبل،مسند ابی ھریرۃ،الحدیث:۹۱۶۸،ج۳،ص۳۵۶)

《63》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी ग़ुलाम को उस के आक़ा से बिगाड़ा वोह हम में से नहीं।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحدیث:۷۸۲۶،ج۳،ص۲۱۹)

www.dawateislami.net

﴾64﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया से बचते रहो क्यूं कि येह अन्धा और बहरा कर देती हैं।"

(جامع الاحادیث للسیوطی،قسم الاقوال،الحدیث:۹۳۱۹،ج۳،ص۳۹۱)

﴾65﴿...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आस्मान के नीचे पैरवी की जाने वाली नफ़्सानी ख़्वाहिश से बढ़ कर पूजा जाने वाला कोई खुदा नहीं।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۷۵۰۲،ج۸،ص۱۰۳)

﴾66﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के पास उस का मुसल्मान भाई अपने किसी गुनाह का उ़ज़्र पेश करे और वोह उस का उ़ज़्र क़बूल न करे तो कल क़ियामत के दिन हौज़े कौसर पर न आ सकेगा।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال،باب قبول المعذرة، الحدیث:۷۰۲۸،ج۳،ص۱۵۳)

﴾67﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो किसी मुस्तहिक़ या ग़ैर मुस्तहिक़ का उ़ज़्र क़बूल नहीं करता वोह क़ियामत के दिन हौज़े कौसर पर न आ सकेगा।" (المرجع السابق،الحدیث:۷۰۲۹)

﴾68﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "छ चीज़ें अ़मल को ज़ाएअ़ कर देती हैं : (1) मख़्लूक़ के उ़यूब की टोह में लगे रहना (2) दिल की सख़्ती (3) दुन्या की महब्बत (4) हया की कमी (5) लम्बी उम्मीद और (6) हद से ज़ियादा ज़ुल्म।"

(کنزالعمال، کتاب المواعظ، قسم الاقوال،باب الفصل السادس، الحدیث:۴۴۰۱۶،ج۱۶،ص۳۶)

﴾69﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन 8 क़िस्म के अफ़राद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा होंगे : (1) झूट बोलने वाले (2) तकब्बुर करने वाले (3) वोह लोग जो अपने सीनों में अपने भाइयों से बुग़्ज़ छुपा कर रखते हैं जब वोह उन के पास आते हैं तो येह उन के साथ खुश अख़्लाक़ी से पेश आते हैं (4) वोह लोग कि जब उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बुलाया जाता है तो टाल मटोल करते हैं और जब शैत़ानी कामों की त़रफ़ बुलाया जाता है तो उस में जल्दी करते हैं (5) वोह लोग जो किसी दुन्यवी ख़्वाहिश की तक्मील पर क़ुदरत पाते हैं तो क़स्में उठा कर उसे जाइज़ समझने लगते हैं अगर्चे वोह उन के लिये जाइज़ न भी हो (6) चुग़ली खाने वाले (7) दोस्तों में जुदाई डालने वाले और (8) नेक लोगों के लिये गुनाह में मुब्तला होने की तमन्ना करने वाले। येही वोह लोग हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ना पसन्द फ़रमाता है।" (المرجع السابق،الحدیث:۴۴۰۳۷،ج۱۶،ص۳۹)

www.dawateislami.net

﴾70﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें सब से बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह शख़्स है जो ख़ुद तो खाए मगर अपने मेहमान को खाने से रोक दे, तन्हा सफ़र करे और अपने ग़ुलाम को मारे । क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह है जो लोगों से बुग़्ज़ रखे और लोग भी उस से बुग़्ज़ रखें क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह है जिस से शर का ख़ौफ़ तो रखा जाए मगर भलाई की उम्मीद न रखी जाए, क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह है जो दूसरे की दुन्या के इवज़ अपनी आख़िरत बेच डाले, क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह है जो दीन के बदले दुन्या खाए ।"

(المرجع السابق،الفصل الثامن،الحديث:٤٤٠٣٨،ج١٦،ص٤٠)

﴾71﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**ऐ इब्ने आदम** ! तेरे पास किफ़ायत के मुताबिक़ माल मौजूद है फिर भी तू ऐसी चीज़ मांगता है जो तुझे सरकश बना दे । **ऐ इब्ने आदम** ! तू क़लील पर क़नाअत करता है न कसीर से शिकम सैर होता है, **ऐ इब्ने आदम** ! जब तू इस हालत में सुब्ह करे कि तेरा जिस्म तन्दुरुस्त हो, तेरा दिल बे ख़ौफ़ हो और तेरे पास उस एक दिन की ख़ूराक भी मौजूद हो तो अब दुन्या पर ख़ाक पड़े (या'नी फिर तुझे दुन्या की किसी चीज़ की तमन्ना नहीं होनी चाहिये) ।"

(شعب الايمان، باب فی الزهد......الخ،الحديث:١٠٣٦٠،ج٧،ص٢٩٤)

﴾72﴿...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे अपनी तक़्सीम पर राज़ी कर देता है और उस के लिये उस के हिस्से में ब-र-कत डाल देता है ।"

(فردوس الاخبارللديلمی،باب الالف،الحديث:٩٤٧،ج١،ص١٤٧)

﴾73﴿...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम में से कोई किसी ऐसे शख़्स को देखे जिसे उस पर जिस्म और माल में फ़ज़ीलत हासिल हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने से कमतर पर भी नज़र डाल ले ।"

(شعب الايمان،باب فی تعديدنعم الله وشكرها،الحديث:٤٥٧٤،ج٤،ص١٣٧)

﴾74﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम में से कोई किसी ऐसे शख़्स को देखे जिसे उस पर माल और सूरत में फ़ज़ीलत हासिल हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने से कमतर पर भी नज़र डाल ले ।"

(صحيح البخاری،كتاب الرقاق،باب لينظرالی من هو اسفل......الخ،الحديث:٦٤٩٠،ص٥٤٤)

﴾75﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के नफ़्स को ग़ना

www.dawateislami.net

और दिल को ख़ौफ़ से भर देता है और जब किसी बन्दे से बुराई का इरादा करता है तो उस के फ़क़्र को उस के सामने कर देता है।" (فردوس الاخبارللديلمی،باب الالف،الحديث:۹۴۱،ج۱،ص۱۴۶)

《76》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से किसी को इतना ही काफ़ी है जिस पर उस का नफ़्स क़नाअ़त कर ले, फिर वोह चार गज़ क़ब्र की त़रफ़ चला जाएगा और मुआ़–मला तो आख़िरत ही की त़रफ़ लौटेगा।"

(جامع الاحاديث للسيوطی،قسم الاقوال، الحديث:۸۱۸۹،ج۳،ص۲۰۶،شبر بدله "سبع")

《77》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मुख़ात़ब कर के इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से मेरा पसन्दीदा तरीन और क़रीब तरीन वोह होगा जो मुझे उसी ह़ाल में मिले जिस में मुझ से जुदा हुवा था।"

(كنزالعمال، كتاب الفضائل،فضائل الصحابه، الحديث:۳۶۶۵۸،ج۱۳،ص۹۵)

《78》...... साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेहतरीन मोमिन क़नाअ़त पसन्द होता है जब कि बद तरीन मोमिन लालची होता है।"

(فردوس الاخبارللديلمی،باب الخاء،الحديث:۲۷۰۷،ج۱،ص۳۶۵)

《79》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बनी इस्राईल में एक बकरी के बच्चे को उस की मां दूध पिलाया करती और उसे सैराब कर देती थी, फिर उस की मां मर गई तो रेवड़ की दूसरी बकरियां उसे दूध पिलातीं मगर वोह शिकम सैर न होता, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इस्राईल की त़रफ़ वह़्य भेजी कि "इस की मिसाल उस क़ौम की सी है जो तुम्हारे बा'द आएगी, उन में से एक शख़्स को इतना माल दिया जाएगा जो एक उम्मत और क़बीले के लिये काफ़ी होगा फिर भी वोह शिकम सैर न होगा।" (كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحديث:۷۱۲۶،ج۳،ص۱۶۰)

《80》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत के बदतर लोगों में से सब से पहले जहन्नम की त़रफ़ हांके जाने वाले लोग वोह सरदार होंगे जो खाते हैं तो शिकम सैर नहीं होते और जब जम्अ़ करते हैं तो ग़नी नहीं होते।"

(المرجع السابق، الحديث:۷۱۳۲،ص۱۶۱)

《81》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपने रिज़्क़ पर राज़ी न हो और जो अपनी बीमारी की ख़बर आ़म करने लगे और इस पर सब्र न करे उस का कोई अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलन्द न होगा और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर नाराज़ होगा।" (حلية الاولياء، يوسف بن اسباط، الحديث:۱۲۱۶۲،ج۸،ص۲۶۸)

《82》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस का माल कम हो, अहलो इ़याल ज़ियादा हों, नमाज़ अच्छी हो और वोह

www.dawateislami.net

मुसल्मानों की ग़ीबत भी न करे तो जब वोह क़ियामत के दिन आएगा तो मेरे साथ इस त़रह़ होगा जिस त़रह़ येह दो उंगिलयां हैं ।"
(مسندابی یعلی الموصلی،مسند ابی سعیدخدری،الحدیث:۹۸۶،ج۱،ص۴۲۸)

《83》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! अगर तुम (आख़िरत में) मेरे साथ मिलना चाहती हो तो तुम्हारे लिये दुन्या से इतना ही काफ़ी है जितना एक मुसाफ़िर का तोशा होता है, अग़्निया के साथ बैठने से बचती रहो और कपड़े को उस वक़्त तक पुराना न समझो जब तक उस में पैवन्द न लगा लो ।"
(جامع الترمذی، ابواب اللباس،باب ماجاء فی ترقیع الثوب،الحدیث:۱۷۸۰،ص۱۸۳۳)

《84》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मेरे नज़्दीक अपने बन्दे की सब से पसन्दीदा इ़बादत लोगों से ख़ैर ख़्वाही करना है ।"
(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحدیث:۷۱۹۷،ج۳،ص۱۶۶)

《85》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है, बेशक दीन ख़ैर ख़्वाही है, बेशक दीन ख़ैर ख़्वाही को कहते हैं ।" सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस के साथ ख़ैर ख़्वाही ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस की किताब, उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, अइम्मए मुस्लिमीन और आ़म मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही ।"[1]
(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النصیحۃ،الحدیث:۴۹۴۴،ص۱۵۸۵)

《86》...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो क़ियामत के दिन पांच चीज़ें ले कर आएगा उसे जन्नत से न रोका जाएगा : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (2) उस के दीन (3) उस की किताब (4) उस के रसूल और (5) मुसल्मानों की जमाअ़त की ख़ैर ख़्वाही ।"
(کنزالعمال،قسم الاقوال، کتاب الاخلاق ، الحدیث:۷۱۹۹،ج۳،ص۱۶۶)

《87》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन उस वक़्त तक अपने दीन के ह़िसार में रहता है जब तक अपने मुसल्मान भाई की ख़ैर ख़्वाही

---

1. इमाम न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی **मुस्लिम शरीफ़ की शर्ह़** में इस का मफ़्हूम बयान फ़रमाते हैं, जिस का ख़ुलासा येह है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ैर ख़्वाही से मुराद "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना, शिर्क से बचना, उस की इत़ाअ़त करना वग़ैरा, किताबुल्लाह की ख़ैर ख़्वाही से मुराद इस बात पर ईमान लाना कि येह "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल कर्दा किताब है और येह मख़्लूक़ के कलाम के मुशाबेह बिल्कुल नहीं", "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल की ख़ैर ख़्वाही से मुराद इन की रिसालत की तस्दीक़ करना और इन के लाए हुए अह़काम पर ईमान लाना", "अइम्मए मुस्लिमीन या'नी उ़-लमाए दीन की ख़ैर ख़्वाही से मुराद येह है कि ह़क़ पर इन की मुआ़-वनत व इत़ाअ़त करना और इन्हें इन की ग़फ़्लतों से बचाने की कोशिश करना," और "आ़म मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही से मुराद येह है कि इन की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये इन्हें नसीह़त करना नीज़ इन के साथ हर त़रह़ की हमदर्दी करना ।"
(ماخوذ ازشرح مسلم للنووی،ج۱،ص۵۴)

www.dawateislami.net

चाहता है और जब उस की ख़ैर ख़्वाही से अलग हो जाता है तो उस से तौफ़ीक़ की ने'मत छीन ली जाती है।''

(فردوس الاخبارللدیلمی،باب اللام الف،الحدیث:۷۷۲۲،ج۲،ص۴۲۹)

《88》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो ख़ानदानी ग़ैरत के झन्डे तले अ़-सबिय्यत (या'नी अक़्रिबा) की मदद करते हुए मारा जाए और वोह अ़-सबिय्यत के लिये ग़ज़ब गुस्सा रखता हो तो उस का क़त्ल जाहिलिय्यत का क़त्ल है।''

(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب ملازمۃ......الخ،الحدیث:۴۷۹۲،ص۱۰۱۰،یغضب بدلہ"یدعو")

《89》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो अ़-सबिय्यत (या'नी अक़्रिबा की जमाअ़त) की त़रफ़ बुलाए वोह हम में से नहीं, जो अ़-सबिय्यत की वजह से लड़े वोह भी हम में से नहीं और जो अ़-सबिय्यत पर मरे वोह भी हम में से नहीं।''

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب، باب فی العصبیۃ،الحدیث:۵۱۲۱،ص۱۵۹۸)

《90》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''लोगों में सब से बुरा और बदतर ठिकाना उस शख़्स का है जो दूसरे की दुन्या की ख़ातिर अपनी आख़िरत बरबाद कर दे।'' एक और रिवायत में है : ''सब से ज़ियादा नदामत उसी शख़्स को होगी।'' और एक रिवायत में है : ''वोह क़ियामत के दिन मर्तबे के लिहाज़ से सब से बदतर शख़्स होगा।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ،قسم الاقوال، باب العصبیۃ،الحدیث:۷۶۵۶،۵۷،۵۸،ج۳،ص۲۰۴،"اشر" بدلہ" اشد")

《91》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो लोगों की ना राज़गी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों की मदद से किफ़ायत करेगा और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी से लोगों की रिज़ा चाहे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों के ही सिपुर्द करेगा।''

(جامع الترمذی، ابواب الزھد،باب عاقبۃ من التمس......الخ،الحدیث:۲۴۱۴،ص۱۸۹۴)

《92》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तीन ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिस में इन में से एक भी न हो कुत्ता उस से बेहतर है। (1) ऐसा तक़्वा जो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या से बचाए (2) ऐसा ह़िल्म (या'नी बुर्द-बारी) जिस से वोह जाहिल की जहालत का जवाब दे और (3) ऐसा हुस्ने अख़्लाक़ जिस से वोह लोगों के साथ पेश आए।''

(شعب الایمان ،باب فی حسن الخلق،فصل فی الحلم......الخ،الحدیث:۸۴۲۳،ج۶،ص۳۳۹)

《93》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तीन बीमारियां मेरी उम्मत को ज़रूर होंगी : ह़सद, बद गुमानी और बद फ़ाली। क्या मैं तुम्हें इन से छुटकारे का त़रीक़ा न बता दूं ? जब तुम में बद गुमानी पैदा हो तो उस पर यक़ीन न कर, और जब तू ह़सद में मुब्तला हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार कर लिया कर और जब बद शुगूनी पैदा हो तो उस काम को कर गुज़र।''

(المعجم الکبیر،الحدیث:۳۲۲۷،ج۳،ص۲۲۸،تقدما تأخرا)

www.dawateislami.net

﴾94﴿...... नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत तीन चीज़ों से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकती : ह़सद, बुरे गुमान और फ़ाल लेने से, क्या मैं तुम्हें इन से नजात का त़रीक़ा न बताऊं ? जब तुम्हें बद गुमानी पैदा हो तो उस पर यक़ीन न करो और जब ह़सद में मुब्तला हो जाओ तो ज़ियादती मत करो और जब तुम्हें बद शुगूनी पैदा हो तो उस काम को कर गुज़रो ।"

(كنزالعمال، كتاب المواعظ،قسم الاقوال، الحديث:٤٣٧٨٢،ج١٦،ص١٣)

﴾95﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन में किसी को कोई रुख़्सत नहीं : (1) वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करना ख़्वाह वोह मुसल्मान हों या काफ़िर (2) वा'दा पूरा करना ख़्वाह मुसल्मान से किया हो या काफ़िर से और (3) अमानत की अदाएगी ख़्वाह मुसल्मान की हो या काफ़िर की ।"

(شعب الايمان، باب فى الايفاء بالعقود،الحديث:٤٣٦٣،ج٤،ص٨٢)

﴾96﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "क़ियामत के दिन मैं तीन शख़्सों से झगड़ूंगा और जिस से मैं झगड़ूंगा यक़ीनन उस पर ग़ालिब आ जाऊंगा : (1) वोह शख़्स जिसे मेरे लिये कुछ दिया गया फिर उस ने उस में बद दियानती की (2) जिस ने किसी आज़ाद शख़्स को बेचा फिर उस की क़ीमत खा गया और (3) जिस ने किसी को उजरत पर रखा फिर उस से पूरा काम ले लिया मगर उस का पूरा ह़क़ अदा न किया ।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب الرهون، باب اجرالاجراء،الحديث:٢٤٤٢،ص٢٦٢٣،حقه بدله"اجره")

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

शैत़ान इन्सान का खुला दुश्मन है और चूंकि इन्सान की सब से आ'ला चीज़ उस का दिल है लिहाज़ा शैत़ान सिर्फ़ इन्सान की ज़ाहिरी ख़राबी पर क़नाअ़त नहीं करता क्यूं कि इन्सान की ज़ात में फ़साद डालना तो उस का मक़्सद ही नहीं बल्कि उस आ'ला चीज़ को ख़राब कर देना उस का मक़्सद है इस लिये हर मुकल्लफ़ इन्सान पर अपने दिल को शैत़ान के फ़सादात से बचाना फ़र्ज़े ऐन है, और चूंकि इन फ़सादात तक इन के मदाख़िल (या'नी दाख़िल होने के रास्तों) की मा'रिफ़त से ही पहुंचा जा सकता है नीज़ फ़र्ज़ तक पहुंचना जिस चीज़ पर मौक़ूफ़ हो वोह भी ज़रूरी ही होती है, लिहाज़ा इस के मदाख़िल की मा'रिफ़त ह़ासिल करना ज़रूरी है और वोह मदाख़िल बन्दे की सिफ़ात हैं ।

ह़िर्स :

यूं तो येह सिफ़ात बहुत सी हैं मगर इन में ह़सद और ह़िर्स सरे फ़ेहरिस्त हैं, बा'ज़ अवक़ात बन्दा किसी चीज़ की ह़िर्स में मुब्तला हो जाता है तो उस चीज़ की ह़िर्स उसे अन्धा, बहरा कर देती है, चुनान्चे,

www.dawateislami.net

《97》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तेरी किसी चीज़ से महब्बत तुझे अन्धा और बहरा कर देती है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الھوی،الحدیث:۵۱۳۰،ص۱۵۹۸)

इन सिफ़ात की पहचान सिर्फ़ नूरे बसीरत ही से हो सकती है, लिहाज़ा जब इस नूर ही को ह़िर्स और ह़सद ढांप लें तो इन्सान अन्धा हो जाता है तो ऐसे वक़्त में शैत़ान इन्सान पर क़ाबू पा लेता है।

《98》...... **मन्क़ूल** है ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने शैत़ान को अपने साथ कश्ती में सुवार पाया तो उस से पूछा : "तू क्यूं दाख़िल हुवा ?" तो उस ने जवाब दिया : "इस लिये कि आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के दोस्तों के दिलों में वस्वसे डालूं ताकि उन के दिल मेरे साथ हो जाएं और जिस्म आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के साथ रह जाएं।" तो आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! सफ़ीने से उतर जा क्यूं कि तू मरदूद है।" तो शैत़ान ने कहा "मैं लोगों को पांच चीज़ों से हलाकत में डालता हूं, तीन चीज़ें तो आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को अभी बता सकता हूं सिर्फ़ दो नहीं बताऊंगा।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "शैत़ान से कहो कि वोह दो चीज़ें आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को बता दे और तीन चीज़ों की मुझे कोई ह़ाजत नहीं।" आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने उस से पूछा : "वोह दो चीज़ें कौन सी हैं ?" तो शैत़ान ने जवाब दिया "वोह दो चीज़ें ऐसी हैं न तो मुझे झुटलाती हैं और न ही मेरे ख़िलाफ़ जाती हैं, इन के ज़रीए मैं लोगों को हलाकत में डालता हूं, वोह ह़िर्स और ह़सद हैं, ह़सद ही की वजह से मुझ पर ला'नत हुई और मैं मरदूद शैत़ान बन गया और ह़िर्स की वजह से मैं ने (ह़ज़रते सय्यिदुना) आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से अपनी ह़ाजत पूरी की क्यूं कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के लिये एक दरख़्त के इलावा सारी जन्नत मुबाह़ कर दी गई थी मगर वोह इस पर सब्र न कर सके।"

(تفسیر حقی، سورۂ ھود، تحت الآیۃ:۴۰،ج۵،ص۴۱۷)

ग़ज़ब और शह्वत :

इन सिफ़ात में से एक बड़ी सिफ़त ग़ज़ब और शह्वत भी है, ग़ज़ब से अ़क़्ल कमज़ोर पड़ जाती है और शैत़ान गु़सीले आदमी से इस त़रह़ खेलता है जैसे बच्चा गेंद से खेलता है।

《99》...... **मन्क़ूल** है कि एक मरतबा शैत़ान ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिशी बनाया कि वोह उस की तौबा क़बूल फ़रमा ले, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ! अगर येह आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की क़ब्र को सज्दा कर ले तो मैं इस की तौबा क़बूल कर लूंगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने शैत़ान को येह बात बताई तो इस पर मरदूद शैत़ान ने गु़स्से की ह़ालत में कहा : "जब मैं ने उन की

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी में उन्हें सज्दा नहीं किया तो उन के विसाल के बा'द उन्हें सज्दा कैसे कर सकता हूं ? बहर ह़ाल आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की सिफ़ारिश का मुझ पर ह़क़ है, तीन वक़्तों में मुझे याद रखियेगा, मैं आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को इन के मुआ-मले में हलाकत में न डालूंगा : (1) जब आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ग़ज़ब नाक हों तो मुझे याद रखें क्यूं कि मैं आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के जिस्म में ख़ून की त़रह़ रवां हूं (2) जब आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) किसी लश्कर का सामना करें तो मुझे याद रखें क्यूं कि ऐसे वक़्त में आदमी को उस के बीवी बच्चे और घर वाले याद दिलाता हूं ताकि वोह वहां से भाग जाए और (3) जब आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) किसी अजनबी औ़रत के पास बैठें तो मुझे याद रखें क्यूं कि ऐसे वक़्त में मैं उस की त़रफ़ आप का और आप की त़रफ़ उस का क़ासिद होता हूं।"

(فیض القدیر،حرف الھمزہ،الحدیث: ۲۹۱۸،ج۳،ص۱٦٦،ملخصاً)

﴾100﴿...... एक नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने शैत़ान से पूछा : "तू आदमी पर किस चीज़ से ग़ालिब आता है ?" तो उस ने बताया "मैं ग़ुस्से और शह्वत के वक़्त इन्सान को पकड़ता हूं।"

शैत़ान से पूछा गया "इन्सान की कौन सी आ़दत तेरी सब से बड़ी मुआ़विन है ?" तो उस ने कहा "ग़ुस्सा। बन्दा जब ग़ुस्से में आता है तो मैं उस को इस त़रह़ घुमाता हूं जिस त़रह़ बच्चे गेंद को घुमाते हैं।"

दिल का दुन्यवी ज़िन्दगी और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात से महृब्बत करना :

येह भी एक बुरी सिफ़त है, ऐसे वक़्त में शैत़ान ख़ुद बच्चे देता है और इन्सान के लिये आलाते लह्व और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस की निशानियों, उस के रसूल और उन की सुन्नत से दूर करने के अस्बाब खोल देता है और मौत तक उस के सामने आलाते लह्व को आरास्ता करता रहता है यहां तक कि वोह इसी ग़फ़्लत और बात़िल चीज़ों में अपनी ज़िन्दगी के अवक़ात गुज़ार रहा होता है कि उसे मौत आ जाती है, बा'ज़ अवक़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ख़ातिमा बुरा फ़रमा देता है। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی

खाने पीने को पसन्द करना :

शिकम सैरी अगर्चे ह़लाल और पाकीज़ा अश्या ही से हो लेकिन शहवात को क़ुव्वत देती है जो कि शैत़ान का हथियार हैं, इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने शैत़ान को इस ह़ालत में देखा कि उस के पास हर चीज़ को फांसने के लिये कुछ फन्दे हैं तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से उन फन्दों के बारे में पूछा तो शैत़ान ने जवाब दिया : "येह वोह शहवात हैं जिन के ज़रीए मैं आदमी पर क़ाबू पाता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दोबारा उस से दरयाफ़्त फ़रमाया "क्या इन में मेरे लिये भी कुछ हैं ?" तो शैत़ान ने जवाब दिया "बा'ज़ अवक़ात आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ूब सैर हो कर खाना खा लेते हैं, तो मैं नमाज़ और ज़िक्र को आप

www.dawateislami.net

(عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) पर भारी कर देता हूं।" फिर आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मज़ीद दरयाफ़्त फ़रमाया "क्या कोई और चीज़ भी है ?" तो शैतान ने जवाब दिया "नहीं।" तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं कभी शिकम सैर हो कर खाना नहीं खाऊंगा।" तो शैतान बोला : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी किसी मुसल्मान को नसीह़त नहीं करूंगा।"

(حلية الاولياء،وهيب بن ورد،الحديث:١١٧٠٤،ج٨،ص١٥٧،بتغيرٍ قليلٍ)

तमअ़ : जब किसी चीज़ की तमअ़ दिल पर ग़ालिब आ जाए तो शैतान उसे ख़ूब आरास्ता करता रहता है, यहां तक कि वोह उस लालची के लिये मा'बूद बन जाती है और फिर बन्दा उसी की मह़ब्बत की रस्सी में बंधा ग़ौरो फ़िक्र करता रहता है कि किसी त़रह़ उसे राज़ी कर सके अगर्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर बैठे, जैसे ह़राम का इक़्रार करने के बा वुजूद उस के लिये फ़रेब कारी से काम लेना।

जल्द बाज़ी करना और साबित क़दमी छोड़ देना :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है कि,

وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝ (پ١٥، بنی اسرآءیل:١١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है।

﴾101﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जल्द बाज़ी शैतान की त़रफ़ से और ग़ौरो फ़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحديث: ٥٦٧٢،ج٣،ص٤٤،تقدما تأخرا)

जल्द बाज़ी होती तो शैतान की त़रफ़ से है मगर वोह ख़ुद जल्द बाज़ नहीं होता बल्कि इन्सान को इस त़रह़ आहिस्ता आहिस्ता बुराई में मुब्तला करता है कि उसे ख़बर भी नहीं होती, लेकिन जो शख़्स कोई अ़-मली क़दम उठाने से पहले ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर लेता है तो उसे उस काम में बसीरत ह़ासिल हो जाती है, लिहाज़ा जब तक किसी काम में बसीरत ह़ासिल न हो तो फ़ौरन वाजिब होने वाले अ़मल के इलावा किसी भी अ़मल में जल्द बाज़ी नहीं करनी चाहिये जब कि येह (अ़लल फ़ौर वाजिब होने वाला) अ़मल ऐसा हो कि इस में ग़ौरो फ़िक्र की कोई गुन्जाइश ही न हो।

माल में ज़ियादती की ख़्वाहिश :

जो माल ह़ाजत और ज़रूरत से ज़ाइद हो तो वोह शैतान का ठिकाना होता है क्यूं कि जिस के पास इस क़िस्म का ज़ाइद माल नहीं होता उस का दिल बे जा तफ़क्कुरात से ख़ाली होता है, लिहाज़ा अगर ऐसे शख़्स को किसी रास्ते में 100 दीनार पड़े हुए मिल जाएं तो उस के दिल में ऐसी 10 ख़्वाहिशें सर उठाने लगती हैं कि जिन में से हर ख़्वाहिश 100 दीनार की मोह़ताज होती है, लिहाज़ा वोह मज़ीद 900 दीनार का मोह़ताज हो जाता है, ह़ालां कि वोह 100 दीनार मिलने से पहले हर ख़्वाहिश से बे परवाह था, फिर जब उस ने 100 दीनार पा लिये तो येह ख़याल किया कि वोह मोह़ताज नहीं है ह़ालां कि उस का घर, ख़ादिमा और साज़ो सामान ख़रीदने के लिये 900 दीनार का

www.dawateislami.net

मोह्ताज होना ज़ाहिर हो चुका, और सिर्फ़ येही नहीं बल्कि इन अश्या की ख़रीदारी के बा'द इन के लवाज़िमात पूरे करने के लिये मज़ीद रक़म का मोह्ताज होना भी साबित हो गया, तो इस त़रह़ वोह एक ऐसी घाटी में गिर जाएगा जिस की इन्तिहा जहन्नम की अथाह गहराइयों के सिवा कुछ नहीं।

जब इब्लीस के चेले सहाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان पर काम्याबी पाने से मायूस हो गए और उन्हों ने इब्लीस से शिकायत की तो उस ने उन से कहा : "सब्र करो ! हो सकता है इन पर दुन्या के दरवाज़े खुल जाएं और फिर तुम इन से अपनी ह़ाजतें पूरी कर सको।"

बुख़्ल और तंगदस्ती का ख़ौफ़ :

येह मज़्मूम सिफ़ात स-दक़ा करने और ख़ैर के कामों में ख़र्च करने से रोकती और, ज़ख़ीरा अन्दोज़ी और माल जम्अ़ करने का हुक्म देती हैं, ह़ालां कि ख़ज़ाना जम्अ़ करने वाले लोगों के लिये क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दर्दनाक अ़ज़ाब का वा'दा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "शैत़ान के बहुत से हथियार हैं जैसे तंगदस्ती का ख़ौफ़, जब इसे क़बूल कर लिया जाता है तो इन्सान बात़िल चीज़ों में पड़ कर नफ़्सानी ख़्वाहिशात की बातें करता है और अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बुरा गुमान करता है।"

बुख़्ल की आफ़तों में से एक आफ़त माल जम्अ़ करने के लिये बाज़ारों में आ-मदो रफ़्त को लाज़िम समझना भी है ह़ालां कि येही शैत़ान के ठिकाने हैं।

﴾102﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब शैत़ान ज़मीन पर उतरा तो उस ने अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरा एक घर बना दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "तेरा घर ह़म्माम है।" उस ने फिर अ़र्ज़ की : "मेरे लिये एक बैठक बना दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "बाज़ार तेरी बैठक है।" उस ने फिर अ़र्ज़ की : "मेरा एक मुनादी बना दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "मज़ामीर (या'नी ढोल बाजे) तेरे मुनादी हैं।" उस ने फिर अ़र्ज़ की "मेरे लिये खाना मुक़र्रर कर दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस चीज़ पर मेरा नाम न लिया जाए वोह तेरा खाना है।" उस ने फिर अ़र्ज़ की "मेरे लिये कोई क़ुरआन बना दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "अश्आ़र तेरा क़ुरआन हैं।" उस ने फिर अ़र्ज़ की "मेरी ह़दीस बना दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "झूट तेरी ह़दीस है।" उस ने फिर अ़र्ज़ की "मेरे लिये शिकारी जाल बना दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रतें तेरा जाल हैं।"

(تخریج احادیث الاحیاء، باب ۲۶۲۲،ج۶،ص ۲۷۱)

तअ़स्सुब :

मज़ाहिब और ख़्वाहिशात पर तअ़स्सुब करना, मुख़ालिफ़ से कीना रखना और उसे ह़क़ारत की नज़र से देखना येह ऐसी चीज़ें हैं जो उ़-लमा व सु-लह़ा को भी हलाकत में डाल देती हैं, अ़वाम

www.dawateislami.net

तो फिर अ़वाम हैं क्यूं कि लोगों पर ता'नो तश्नीअ़ में मश्गूल होना और उन के उ़यूब नक़ाइस का ज़िक्र करना ऐसी चीज़ें हैं कि शैत़ान जब बन्दे को येह ख़याल दिलाता है कि येही ह़क़ीक़त है तो वोह मज़ीद पेश रफ़्त करता है और अपनी कोशिश में इज़ाफ़ा कर देता है और फिर येह गुमान करते हुए ख़ुश होता है कि वोह दीन के लिये कोशिश कर रहा है ह़ालां कि वोह शैत़ान की पैरवी में होता है, दीनी ग़ैरत रखने वाले सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और इन के बा'द वालों की पैरवी में नहीं होता, अगर वोह अपनी इस्लाह़ की जानिब तवज्जोह देता और दीनी ह़मिय्यत व ग़ैरत रखने वालों की पैरवी करता तो येह उस के लिये बेहतर होता, और हर वोह शख़्स जो ह़ाकिमे इस्लाम से तअ़स्सुब रखे उस की मुख़ा-लफ़त करे और उस के क़वाइदो ज़वाबित़ पर न चले तो वोह ह़ाकिम उस से झगड़ेगा और उस को ला'न ता'न करेगा।

《103》...... साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ात़िमा बतूल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से इर्शाद फ़रमाया : "अ़मल करो क्यूं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तुम्हें कोई फ़ाएदा न दूंगा।"

(صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب ھل یدخل النساء......الخ،الحدیث:۲۷۵۳،ص ۲۲۱)

लिहाज़ा तुम पर भी अपने ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़ लाज़िम है और दूसरों का सिर्फ़ इतना ही ख़याल करो जितना शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने तुम्हें पाबन्द बनाया है जैसे शराइत़ पाई जाने की सूरत में नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना वग़ैरा।

अ़वामुन्नास को उन की समझ से बाला तर बातें बताना :

अ़वामुन्नास और उ़लूम में महारत न रखने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात और ऐसे उमूर में तफ़क्कुर करने पर उभारना जिन तक उन की अ़क़्लों की रसाई न हो, उन को गुमराह करने के मु-तरादिफ़ है क्यूं कि इस त़रह़ वोह दीन के बुन्यादी उसूलों में शक करने लगेंगे और बा'ज़ अवक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में ऐसी बातें ख़याल करने लगेंगे जिन से वोह काफ़िर या बिदअ़ती हो जाएंगे और अपनी ह़माक़त के ग़-लबे और क़िल्लते अ़क़्ल की बिना पर इस पर ख़ुश होंगे, लोगों में सब से अह़मक़ शख़्स वोही होता है जो अपने इस ए'तिक़ाद पर ज़ियादा क़वी हो और इन में सब से अ़क़्ल मन्द वोह है जो अपनी ज़ात, अपने आप और अपने गुमान को ज़ियादा नाक़िस समझे और बा अ़मल उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی और हिदायत याफ़्ता अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی से सुवाल करने में ज़ियादा ह़रीस हो।

मुसल्मानों पर बद गुमानी :

मुसल्मानों पर बद गुमानी के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे गिरामी है कि,

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ (پ۲۶،الحجرات:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो।

www.dawateislami.net

जो शख़्स सिर्फ़ अपने गुमान की वजह से किसी पर बुराई का हुक्म लगा देता है तो अस्ल में शैत़ान उसे उस को ह़क़ीर जानने, उस के ह़ुक़ूक़ अदा न करने, उस की इ़ज़्ज़त बजा लाने में सुस्ती करने और उस की इ़ज़्ज़त के मुआ़-मले में ज़बान दराज़ करने पर उभारता है, ह़ालां कि येह सब बातें हलाकत का बाइ़स हैं और मोहलिकात में शुमार होती हैं।

﴾104﴿...... जब दो सह़ाबियों ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी ज़ौजए मुत़ह्हरा उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से (अंधेरे में) गुफ़्त-गू फ़रमाते हुए देखा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह तुम दोनों की मां है।" वोह दोनों इस वज़ाह़त से हैरान हो गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शैत़ान आदमी के जिस्म में ख़ून की त़रह़ दौड़ता है, मुझे अन्देशा था कि कहीं वोह तुम दोनों के दिलों में कोई बात न डाल दे।"

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب بیان انه یستحب لمن ......الخ،الحدیث:٥٦٧٩،ص١٠٦٥)

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों पर कमाले शफ़्क़त फ़रमाई और उन्हें शैत़ान मरदूद के हथकन्डों से बचा लिया, नीज़ अपनी उम्मत को तोहमत से बचने का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा दिया ताकि कोई परहेज़ गार आ़लिम अपने आप पर फ़ख़्र करते हुए येह गुमान न करे कि "उस से अच्छा ही गुमान रखा जाता होगा।" ह़ालां कि येह एक बहुत बड़ी लग़्ज़िश भी है, चूंकि वोह लोगों में सब से ज़ियादा मुत्तक़ी, परहेज़ गार और आ़लिम है लिहाज़ा यक़ीनन उस से बुग़्ज़ रखने और उसे नाक़िस कहने वाले लोग भी होंगे, इस लिये शरीरों और दुश्मनों की तोहमत से बचना भी ज़रूरी है, क्यूं कि ऐसे लोग हर एक से शर ही की तवक़्क़ोअ़ रखते हैं। हर वोह शख़्स जो लोगों से बद गुमानी रखे और उन के ड़यूब की पर्दा दरी करने की ख़्वाहिश रखता हो तो जान लो कि वोह ऐसा अपनी बात़िन की ख़बासत की वजह से करता है क्यूं कि मोमिन हमेशा अपने बात़िन की सलामती की वजह से ड़ज़्र ख़्वाही करता रहता है जब कि मुनाफ़िक़ अपने बात़िन की वजह से ड़यूब की तलाश में रहता है।

येह चन्द एक ऐसे औसाफ़ थे कि जिन के ज़रीए़ शैत़ान किसी के दिल तक रसाई ह़ासिल करता है, उन के तज़्किरे में बक़िय्या तमाम औसाफ़ के बारे में तम्बीह पाई जाती है। इन्सान में कोई भी ऐसी मज़्मूम सिफ़त नहीं जो कि शैत़ान का हथियार न हो वोह उसी से इस को गुमराह करता है, लिहाज़ा उस के इन मज़्मूम हथकन्डों से नजात के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पनाह त़लब करें, उम्मीद है कि वोह अपनी रह़मत से आप को इन मज़्मूम औसाफ़ की ला'नत से छुटकारा अ़त़ा फ़रमा देगा।

तम्बीह 2 :

गुज़श्ता सारी बह़स से आप पर मुकम्मल त़ौर पर येह बात वाज़ेह़ हो गई होगी कि इन तमाम औसाफ़ का नुक़्सान कितना बड़ा है, नीज़ इन में से अक्सर वोह हैं जिन को सय्यिदुना

www.dawateislami.net

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने कबीरा गुनाह शुमार किया है, ह़ालां कि वोह इन को कबीरा शुमार करने में मुन्फ़रिद नहीं बल्कि कई दूसरे उ़-लमा व अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने भी इन को कबीरा ही शुमार किया है, लिहाज़ा अपने दिल और बातिन को इन कबाइर की ख़बासत से मह़फ़ूज़ रखें क्यूं कि येह न सिर्फ़ आप के बातिन बल्कि ज़ाहिर को भी फ़साद में मुब्तला कर देंगे।

तम्बीह 3 :

गुज़श्ता तमाम कबीरा गुनाहों का इरतिकाब बद खुल्क़ी का बाइस बनता है जब कि इन से कनारा कश होने से इन्सान हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बन जाता है, फिर येही हुस्ने अख़्लाक़ इस को कमाले ह़िक्मत से अ़क़्ली कुव्वत के ए'तिदाल और शहवानी और ग़ज़ब की कुव्वत की उ़म्र ख़्वाही तक ले जाने के साथ साथ अ़क़्ली तौर पर शरीअ़त के अ़ता कर्दा अह़कामात की बजा आ-वरी तक ले जाता है, इस ए'तिदाल का हुसूल या तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास करम और फ़ित्री कमाल से होता है या फिर मुजा-हदा और रियाज़त जैसे अस्बाब को अपनाने से होता है, म-सलन

(1) वोह अपने नफ़्स को हर उस काम पर मजबूर करे जिस के करने का तक़ाज़ा हुस्ने अख़्लाक़ करे,

(2) हर बुराई की मुख़ा-लफ़त करे क्यूं कि वोह न तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का बाइस बन सकती है और न ही उस वक़्त तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की ह़लावत ह़ासिल हो सकती है जब तक कि इस बुरी आ़दत से छुटकारा ह़ासिल न कर लिया जाए,

(3) शहवानी ख़्वाहिशात से नफ़्स को ख़ल्वत और उ़ज़्लत नशीनी से बचाया जाए ताकि सुनने और देखने की सलाह़िय्यतें अपनी पसन्दीदा अश्या से मह़फ़ूज़ रह सकें,

(4) इस के बा'द इसी ख़ल्वत नशीनी में दाइमी ज़िक्रो दुआ़ को अपना मा'मूल बना लिया जाए यहां तक कि इन्सान पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ज़िक्र की मह़ब्बत ग़ालिब आ जाए,

जब इन्सान मज़्कूरा तमाम अस्बाब मुहय्या कर ले तो बिल आख़िर वोह इस ए'तिदाल की ने'मत को पाने में काम्याब हो जाएगा अगर्चे इब्तिदा में उस पर येह सब कुछ करना गिरां गुज़रेगा, बा'ज़ अवक़ात मुजा-हदात को करने वाला शख़्स येह गुमान करने लगता है कि शायद इस ने इन छोटे छोटे मुजा-हदात से अपने नफ़्स को मुहज़्ज़ब और हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना लिया है ह़ालां कि अभी कहां इस मर्तबे का हुसूल मुम्किन हो गया, अभी न तो इस में कामिलीन की सिफ़ात पाई जाती हैं और न ही इस ने सच्चे मुअमिनीन के अख़्लाक़ अपनाए हैं जैसा कि

《1》 इन औसाफ़ का तज़्किरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ला रैब किताब में कुछ इस त़रह़ किया है :

www.dawateislami.net

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ
وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ 0 الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ 0 اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ
دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ 0

(پ۹، الانفال:۲تا۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** याद किया जाए उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें। वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें। येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये द-रजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।

﴾2﴿

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ 0 الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ
خٰشِعُوْنَ 0 وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ 0 وَ
الَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ 0 وَالَّذِيْنَ هُمْ
لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ 0 اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ 0 فَمَنِ ابْتَغٰى
وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ 0 وَالَّذِيْنَ هُمْ
لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ 0 وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى
صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ 0 اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْوٰرِثُوْنَ 0 الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ 0 (پ۱۸، المؤمنون:۱تا۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं। और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते। और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं। और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शर-ई बांदियों पर जो इन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं। और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द की रिआ़यत करते हैं, और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं। येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे वोह उस में हमेशा रहेंगे।

﴾3﴿

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ
الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ 0 (پ۱۱، التوبۃ:۱۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तौबा वाले इ़बादत वाले सराहने वाले रोज़े वाले रुकूअ़ वाले सज्दा वाले भलाई के बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और **अल्लाह** की ह़दें निगाह रखने वाले और ख़ुशी सुनाओ मुसल्मानों को।

www.dawateislami.net

﴿4﴾

لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ
عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ اِنَّهَا
سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ
يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝
وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ
النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ
وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ
حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَ
عَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝ وَالَّذِيْنَ
لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝
وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا
صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ
اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ
مَامًا ۝ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا
وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ
رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ
لِزَامًا ۝ (پ۱۹، الفرقان: ۶۳ تا ۷۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और रह़मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो कहते हैं बस सलाम, और वोह जो रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और क़ियाम में, और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब ! हम से फैर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उस का अ़ज़ाब गले का ग़ुल (फन्दा) है, बेशक वोह बहुत ही बुरी ठहरने की जगह है, और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और इन दोनों के बीच ए'तिदाल पर रहें, और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा, बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा, मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है, और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी, और जो झूटी गवाही नहीं देते और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इ़ज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं, और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो उन पर बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते, और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना, इन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का और वहां मुजरे और सलाम के साथ उन की पेश्वाई होगी, हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह, तुम फ़रमाओ तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुम ने झुटलाया तो अब होगा वोह अ़ज़ाब कि लिपट रहेगा।

जिस शख़्स पर अपने नफ़्स की ह़ालत मुश्तबा हो जाए तो उसे इन आयाते करीमा का बग़ौर मुत़ा-लआ़ करना चाहिये और फिर ग़ौर करे कि आया इन आयात में मज़्कूर औसाफ़े ह़मीदा मुझ में पाए जाते हैं या नहीं, क्यूं कि इन तमाम औसाफ़ का पाया जाना ह़ुस्ने अख़्लाक़ और न पाया जाना बद अख़्लाक़ी की अ़लामत है, और बा'ज़ का पाया जाना बा'ज़ आ़दात पर ही दलालत करता है न कि मुकम्मल अख़्लाक़े ह़-सना पर।

www.dawateislami.net

《105》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमाने आलीशान में इन तमाम अख़्लाक़े ह़-सना को जम्अ़ फ़रमा दिया है ''मोमिन अपने भाई के लिये वोही पसन्द करता है जो अपने लिये पसन्द करता है।'' (البخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان ان یحب ......الخ،الحدیث:١٣،ص٣)

नीज़ मोमिन अपने इस्लामी भाई को हमेशा अपने मेहमान और पड़ोसी की इ़ज़्ज़त करने का ही हुक्म देगा और इस की एक अ़लामत येह भी है कि वोह बात करेगा तो सिर्फ़ भलाई की, वरना ख़ामोश रहेगा।

《106》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब किसी मोमिन को पुर वक़ार अन्दाज़ में ख़ामोशी का पैकर पाओ तो उस की कुरबत ह़ासिल किया करो क्यूं कि वोह (जब भी बोलेगा तो) सिर्फ़ ह़िक्मत आमोज़ बातें ही कहेगा।''

(احیاء علوم الدین، کتاب ریاضۃ النفس و تھذیب الاَخلاق،بیان علامات حسن الخلق،ج٣،ص٨٥،یلقی بدلہ"یلقن")

《107》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''किसी मुसल्मान के लिये येह जाइज़ नहीं कि वोह अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ ऐसी निगाह से इशारा करे जो उसे अज़िय्यत देने वाली हो।'' (احیاء علوم الدین، کتاب آداب الاُلفۃ......الخ،حقوق المسلم،ج٢،ص٢٤٣)

《108》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''किसी मुसल्मान के लिये येह जाइज़ नहीं कि वोह अपने मुसल्मान भाई को डराए।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب من یأخذ الشیء من مزاح،الحدیث: ٥٠٠٤،ص١٥٨٩)

《109》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''शु-रकाए मजलिस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अमीन होते हैं तो उन में से किसी के लिये जाइज़ नहीं कि अपने भाई की वोह बात ज़ाहिर करे जिस का ज़ाहिर करना उसे ना पसन्द हो।''

(الزھد لابن المبارک،باب ماجاء فی الشح،الحدیث ٦٩١،ص٢٤٠،اخیہ بدلہ"صاحبہ")

किसी साह़िबे इ़ल्म ने हुस्ने अख़्लाक़ की तमाम अ़लामात को अपने इस क़ौल में यूं जम्अ़ कर दिया है : ''**हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर** वोह है जो ह़द से ज़ियादा ह़या वाला हो, बहुत कम किसी को अज़िय्यत दे, नेकियों का जामेअ़ हो, सच बोले, गुफ़्त-गू कम और अ़मल ज़ियादा करे और वक़्त भी कम ज़ाएअ़ करे नीज़ बहुत कम लग़्ज़िश का शिकार हो, वोह नेक, पुर वक़ार, साबिर, राज़ी ब क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ, शुक्र गुज़ार, बुर्द-बार, नर्म दिल, पाक दामन और शफ़ीक़ हो न कि ऐ़ब जू, गालियां देने वाला, ग़ीबत करने वाला, जल्द बाज़, कीना परवर, बख़ील और ह़ासिद हो बल्कि हश्शाश बश्शाश रहता हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर मह़ब्बत और बुग़्ज़ रखे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ही ख़ात़िर किसी से राज़ी या नाराज़ हो तो वोह शख़्स हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर कहलाने का ह़क़ रखता है।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन आ'ला अख़्लाक़ को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हम पर हमेशा अपने फ़ज़्लो करम की बारिश नाज़िल फ़रमाए, हमें अपने क़ुर्ब की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाए और अपने औलियाए किराम, मुह़िब्बीने इ़ज़ाम और ग़ुलामों की सफ़ में शामिल फ़रमा ले। आमीन!

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 39 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ्या तदबीर से बे खौफ़ रहना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत पर भरोसा भी हो और इस के साथ साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ्या तदबीर से बे खौफ़ हो कर बन्दा गुनाहों में भी मुस्तग़रक़ हो तो येह गुनाहे कबीरा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

《1》

فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ۠ (پ۹،الاعراف:۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।

《2》

وَ ذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِیْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ۠ (پ۲۴،حٰمٓ السجدة:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह है तुम्हारा वोह गुमान जो तुम ने अपने रब के साथ किया और उस ने तुम्हें हलाक कर दिया तो अब रह गए हारे हुओं में।

《1》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम किसी बन्दे को देखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस की ख़्वाहिश के मुताबिक़ अता फ़रमाता है हालां कि वोह अपने गुनाह पर क़ाइम है तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का उसे द-रजा ब द-रजा अज़ाब में मुब्तला करना है फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَیْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَیْءٍؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ۠ (پ۷،الانعام:۴۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीहतें उन को की गई थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब खुश हुए उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।

(المعجم الاوسط، الحديث:۹۲۷۲،ج۶،ص۴۲۲)

या'नी वोह नजात और हर भलाई से मायूस हैं और उन पर ने'मतों की बारिश होने और दूसरों की उन से महरूमी से धोका खाने की वजह से उन के लिये हसरत, ग़म और रुस्वाई है। इसी लिये हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस पर वुस्अत फ़रमाए और वोह येह न समझ सके कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ्या तदबीर है, तो वोह बिल्कुल बे अक़्ल है।"

और एक ना शुक्री क़ौम के बारे में फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के साथ खुफ्या तदबीर फ़रमाई उन की मुरादें पूरी फ़रमाईं फिर उन पर पकड़ फ़रमाई।"

www.dawateislami.net

《2》...... एक और रिवायत में है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इब्लीसे लईन के साथ खुफ़्या तदबीर फ़रमाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल और ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल (عَلَيْهِمَاالصَّلٰوةُوَالسَّلَام) रोने लगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया (ह़ालां कि वोह ब ख़ूबी जानता था) तुम दोनों को किस चीज़ ने रुलाया है ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐसे ही रहो मेरी खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ मत होना ।"

(تفسیرروح المعانی، سورۃ النمل، تحت الآیۃ:۱۰،ج۱۹،ص۲۱۷)

《3》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत से येह दुआ़ मांगा करते थे : "يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ! ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ" या'नी ऐ दिलों के फैरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख ।" (جامع الترمذی، ابواب الدعوات، باب دعاء"یا مقلب القلوب" الحدیث:۳۵۲۲،ص۲۰۱۴)

《4》...... एक और रिवायत में है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ौफ़ रखते हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दिल रह़मान عَزَّوَجَلَّ की (क़ुदरत की) दो उंग्लियों के दरमियान है, वोह जैसे चाहता है उसे फैर देता है ।" (کنزالعمال، کتاب الایمان، قسم الاقوال، فصل الثالث، الحدیث:۱۲۱۲/۱۲۱۳،ج۱،ص۱۳۳)

या'नी कुलूब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ैरो शर के इरादों के दो मज़्हरों के दरमियान हैं, वोह उन्हें उस तेज़ हवा से भी जल्द फैर देता है जो क़बूल व मरदूद और पसन्द व ना पसन्द वग़ैरा औसाफ़ में फिरती रहती है, और कुरआने पाक में है :

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ (پ۹،الانفال:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उस के दिली इरादों में ह़ाइल हो जाता है ।

या'नी उस के और उस की अ़क़्ल के दरमियान यहां तक कि वोह येह नहीं जान पाता कि वोह क्या कर रहा है । येह ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है और इस की ताईद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान भी करता है :

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ (پ۲۶،ق:۳۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक इस में नसीह़त है उस के लिये जो दिल रखता हो ।

यहां क़ल्ब से मुराद अ़क़्ल है और सय्यिदुना इमाम त़-बरानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुख़्तार मज़्हब येह है : "इस ह़ाइल होने से मुराद बन्दों को येह ख़बर देना है कि वोह इन के दिलों का इन से ज़ियादा मालिक है और वोह जब चाहता है उन के और उन के दिलों के दरमियान ह़ाइल हो जाता है यहां तक कि कोई भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत के बिग़ैर कुछ नहीं जान पाता ।"

《5》...... जब दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ मांगते : "يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ! ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ" (या'नी ऐ दिलों के फैरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर

www.dawateislami.net

साबित क़दम रख) तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की, "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कसरत से येह दुआ़ मांगते हैं क्या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को भी कोई ख़ौफ़ है ?" तो रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं बे ख़ौफ़ कैसे रह सकता हूं, ह़ालां कि कुलूब रह़मान عَزَّوَجَلَّ की (कुदरत की) उंग्लियों में से दो उंग्लियों के दरमियान हैं, वोह जब अपने किसी बन्दे के दिल को फैरना चाहता है फैर देता है।"

बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पुख़्ता इल्म वालों की इस दुआ़ पर उन की ता'रीफ़ फ़रमाई :

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ (پ۳،اٰل عمران:۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।

याद रखिये ! इस आयते मुबा-रका में मो'तज़िला के अ़क़ाइद के रद और अहले सुन्नत के ए'तिक़ाद की ह़क़ीक़त पर ज़ाहिर दलालत और वाज़ेह़ हुज्जत है कि हिदायत देना और गुमराह करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ और उस के इरादे से हैं, इस की तफ़्सील कुछ यूं है कि दिल ख़ैर व शर और ईमान व कुफ़्र की त़रफ़ माइल होने की सलाहि़य्यत रखता है, लेकिन उस का इन में से किसी की त़रफ़ किसी दाई के बिग़ैर माइल होना मुह़ाल है बल्कि उस के माइल होने के लिये किसी ऐसे दाई और इरादे का होना ज़रूरी है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही अ़दम से वुजूद में लाता है। कुफ़्र के दवा-ई के लिये कुरआने पाक में मदद छोड़ देना, भटकाना, मुंह फैरना, मोहर लगना, ज़ंग आलूद होना, दिल का सख़्त होना, कान भर जाना वग़ैरा अल्फ़ाज़ इस्ति'माल हुए हैं, जब कि ईमान के दवा-ई के लिये कुरआने मजीद में तौफ़ीक़, इर्शाद, हिदायत, तस्दीद, साबित क़दमी और इ़स्मत वग़ैरा के अल्फ़ाज़ वारिद हुए हैं।

﴾6﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन का दिल रह़मान عَزَّوَجَلَّ की (कुदरत की) उंग्लियों में से दो उंग्लियों के दरमियान है जब वोह उसे क़ाइम रखना चाहता है तो क़ाइम रखता है और जब भटकाना चाहता है तो राहे ह़क़ से भटका देता है।"

(کنزالعمال، کتاب الایمان، قسم الاقوال، فصل الثالث، الحدیث:۱۱۶۴،ج۱،ص۱۲۸،بدون"قلب المؤمن")

गुज़श्ता बयान की गई इस और दीगर अह़ादीसे मुबा-रका में **दो उंग्लियों** से मुराद येही मज़्कूरा दवा-ई हैं, लिहाज़ा इस में ख़ूब ग़ौर करना चाहिये।

﴾7﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर का ख़ौफ़ दिलाने के लिये सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान भी है : "तुम में से कोई जन्नतियों वाले अ़मल करता है यहां तक कि उस के और जन्नत के दरमियान एक गज़ का फ़ासिला रह जाता है फिर

www.dawateislami.net

तक़्दीर का लिखा उस पर ग़ालिब आ जाता है तो वोह जहन्नमियों के काम करते हुए जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।" (صحیح مسلم، کتاب القدر،باب کیفیة الخلق الآدمی......الخ،الحدیث:٦٧٢٣،ص١١٣٨)

《8》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दा जहन्नमियों के काम करता है ह़ालां कि वोह जन्नती होता है और कोई शख़्स जन्नतियों के अ़मल करता है ह़ालां कि वोह जहन्नमियों में से होता है, क्यूं कि आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर ही होता है।" (صحیح البخاری،کتاب الرقاق،باب الاعمال بالخواتیم، الحدیث:٦٤٩٣،ص٥٤٥،تقدما تأخرا)

क्या हम अपनी तक़्दीर ही पर भरोसा कर लें ?

《9》...... सिर्फ़ तक़्दीर ही पर भरोसा कर लेना दुरुस्त नहीं क्यूं कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जब मज़्कूरा बात सुनी तो अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! फिर अ़मल किस लिये करें, क्या हम अपनी तक़्दीर ही पर भरोसा न कर लें ?" तो मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि अ़मल करो, क्यूं कि जिसे जिस काम के लिये पैदा किया गया है उस के लिये वोह काम आसान कर दिया जाता है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयाते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى 0 وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى 0
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى 0 وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى 0
وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى 0 فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى 0
(پ٣٠،الليل:٥تا١٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जिस ने दिया और परहेज़ गारी की और सब से अच्छी को सच माना तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या करे देंगे और वोह जिस ने बुख़्ल किया और बे परवाह बना और सब से अच्छी को झुटलाया तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहय्या कर देंगे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बनी इस्राईल के आ़लिम **बल्अ़म बिन बाऊ़रा** का जो वाक़िआ़ बयान फ़रमाया है, उस पर भी ग़ौर करना चाहिये कि वोह किस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हुवा और जन्नत की अ-बदी ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्या के फ़ानी माल पर क़नाअ़त कर के अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी में लग गया।

मन्क़ूल है कि "जब उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़िलाफ़ दुआ़ का पुख़्ता इरादा कर लिया तो उस की ज़बान सीने तक लटक गई, वोह कुत्ते की त़रह़ हांपने लगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से ईमान, इ़ल्म और मा'रिफ़त छीन ली।"

वली के गुस्ताख़ का इ़ब्रत नाक अन्जाम :

इसी त़रह़ **बरसीस** नामी आ़बिद अपनी सख़्त तरीन इ़बादात व मुजा-हदात के बा वुजूद कुफ़्र पर मरा, और **इब्ने सक़्क़ा** जो कि बग़दाद का मश्हूर फ़ाज़िल और **ज़क्की** शख़्स था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक वली की गुस्ताख़ी का मुर-तकिब हुवा, उन की विलायत का इन्कार किया तो उन्हों ने उसे

www.dawateislami.net

बद दुआ़ दी, येह कुस्तुन्तुनिया मुन्तक़िल हुवा, वहां एक औ़रत को देख कर उस पर आ़शिक़ हो गया, फिर उस की वजह से नसरानी हो गया, इस के बा'द किसी मूज़ी मरज़ में मुब्तला हुवा तो उसे सड़क पर फेंक दिया गया, तो वोह भीक मांगने लगा, वहां से उस का कोई जानने वाला गुज़रा, उस ने उस से वाक़िआ़ दरयाफ़्त किया तो उस ने अपनी आज़माइश का ह़ाल सुना दिया और बताया : "मैं नसरानी हो गया हूं और अब कुरआने पाक का कोई एक ह़र्फ़ याद करने पर भी कुदरत नहीं पाता और न ही मेरे दिल में इस का ख़याल आता है।" उस शख़्स का बयान है "फिर मैं थोड़े ही अ़र्से के बा'द वहां से गुज़रा तो मैं ने उसे नज़्अ़ के आ़लम में पाया, उस का चेहरा मशरिक़ की त़रफ़ था मैं जब भी उसे क़िब्ला की त़रफ़ फैरता तो वोह फिर मशरिक़ की त़रफ़ फिर जाता और रूह़ निकलने तक ऐसे ही रहा।"

मिस्र में एक मुअज़्ज़िन था, वोह बहुत नेक समझा जाता था, एक मरतबा उस ने मनारे से एक नसरानी औ़रत को देखा तो उस के फ़ितने में मुब्तला हो गया, वोह उस की त़रफ़ गया तो उस ने ज़िना पर राज़ी होने से इन्कार कर दिया, उस ने कहा मैं निकाह़ करना चाहता हूं, औ़रत ने जवाब दिया "तू मुसलमान है और मेरा बाप तुझ से मेरे निकाह़ पर राज़ी न होगा।" उस ने कहा : "मैं नसरानी हो जाता हूं।" औ़रत ने कहा : "फिर तो मेरा बाप राज़ी हो जाएगा।" वोह नसरानी हो गया और नसरानियों ने उस के साथ वा'दा कर लिया कि वोह उस का निकाह़ उस औ़रत से कर देंगे, इसी अस्ना में एक दिन वोह किसी काम से छत पर चढ़ा तो उस का क़दम फिसला और वोह गिर कर मर गया न अपना दीन बचा सका और न ही उस औ़रत को पा सका।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से उस की पनाह चाहते हैं और उसी से उस की पनाह चाहते हैं और उस की सज़ा के बदले उस का अ़फ़्व और ना राज़गी के बदले उस की रिज़ा चाहते हैं। आमीन !

इसी लिये उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया कि जब हिदायत फैर दी गई हो और इस्तिक़ामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ हो, अन्जामे कार मख़्फ़ी हो, इरादा ना मा'लूम हो और न ही कोई उस पर ग़ालिब आ सके तो अपने ईमान, नमाज़ और दीगर नेकियों पर खुशियां मत मनाओ क्यूं कि येह मह़ज़ तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से हैं, कहीं वोह तुम से इन्हें छीन न ले और तुम ऐसी जगह नदामत की अथाह गहराई में न जा गिरो जहां नदामत भी नफ़अ़ न दे।

तम्बीह :

इस गुनाह के बारे में आने वाली शदीद वई़द की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, बल्कि ह़दीसे मुबा-रका में इसे अक्बरुल कबाइर (या'नी सब से बड़ा) गुनाह कहा गया है।

﴾10﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया "कबीरा गुनाह कौन से हैं ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक

www.dawateislami.net

ठहराना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मायूस होना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना और येह सब से बड़ा गुनाह है।" (المعجم الكبير،الحديث:٨٧٨٤،ج٩،ص١٥٦)

इस रिवायत के बारे में ज़ियादा शुबा तो येह है कि येह मौकूफ़ है क्यूं कि इसी गुनाह के अक्बरुल कबाइर होने की सराहत हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी मरवी है जैसा कि इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ और इमाम त़-बरानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا ने उन से ह़दीस रिवायत करते हुए नक़्ल किया है।

फ़ाएदा : इन आयात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये "**मक्र**" का लफ़्ज़ इस्ति'माल हुवा है, ह़ालां कि इस का ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुह़ाल है, जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान तक़ाबुल के बाब से है या'नी

《1》

وَمَكَرُوْا وَ مَكَرَ اللّٰهُؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝ (پ٣،اٰل عمرٰن:٥٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और काफ़िरों ने मक्र किया और अल्लाह ने उन के हलाक की खुफ़्या तदबीर फ़रमाई और अल्लाह सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है।

《2》

وَ جَزٰٓؤُا سَیِّئَةٍ سَیِّئَةٌ مِّثْلُهَاۚ (پ٢٥،الشورٰی:٤٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है।

《3》

تَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ وَ لَاۤ اَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِكَؕ (پ٧،المائدۃ:١١٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इ़ल्म में है।

एक क़ौल येह है कि तक़ाबुल का मा'ना येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को **मक्र** से मौसूफ़ करना उसी वक़्त जाइज़ है जब उस के साथ दूसरा ऐसा लफ़्ज़ आए जिसे **मक्र** से मौसूफ़ करना दुरुस्त हो, मगर इस का जवाब येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِۚ فَلَا یَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ (پ٩،الاعراف:٩٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से बे ख़बर हैं तो अल्लाह की ख़फ़ी तदबीर से निडर नहीं होते।

में मक्र का लफ़्ज़ किसी मुक़ाबिल के बिग़ैर आया है, क्यूं कि बसा अवक़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को **मक्र** के साथ मुत्तसिफ़ करना दुरुस्त भी होता है, क्यूं कि **मक्र** का लु-ग़वी मा'ना पर्दा डालना या छुपा देना है जैसा कि कहते हैं "مَكَرَ اللَّیْلُ اَیْ سَتَرَ بِظُلْمَتِهٖ مَاهُوَ فِیْهِ" या'नी रात ने मक्र किया मत़्लब येह कि रात ने अपने अंधेरे से उसे छुपा दिया और कभी मक्र का लफ़्ज़ ह़ीला बाज़ी, धोका देने और शरारत पर भी

www.dawateislami.net

बोला जाता है, इसी वजह से बा'ज़ लु-ग़विय्यों ने इसे फ़साद डालने की कोशिश से ता'बीर किया है, जब कि बा'ज़ ने ह़ीले के ज़रीए ग़ैर को अपने मक़्सद से फैर देने से ता'बीर किया और येह **आख़िरुज़्ज़िक्र** मा'ना कभी क़ाबिले ता'रीफ़ होता है जैसे बुराई से हटा कर ख़ैर की त़रफ़ फैर देना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ इसी मा'ना पर मह़मूल है और कभी येह ता'बीर मज़्मूम होती है, जैसे किसी को ख़ैर से हटा कर शर की त़रफ़ फैर देना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान में इसी मा'ना का ज़िक्र है :

وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ (پ۲۲،فاطر:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बुरा दाव (फ़रेब) अपने चलने वाले ही पर पड़ता है।

कबीरा नम्बर **40** :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद होना भी गुनाहे कबीरा है। चुनान्चे,

﴿1﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ (پ۱۳،یوسف:۸۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग।

﴿2﴾

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ج (پ۵،النساء:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है।

﴿3﴾

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ (پ۲۴،الزمر:۵۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है।

﴿4﴾

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ (پ۹،الاعراف:۱۵۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है।

www.dawateislami.net

अहादीसे मुबा-रका में रहमते खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ का बयान

《1》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सो रहमतें हैं इन में से हर रहमत ज़मीन व आस्मान के दरमियान की हर चीज़ को ढांप सकती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन में से एक रहमत नाज़िल फ़रमा कर जिन्नो इन्स और जानवरों में तक़्सीम फ़रमा दिया, इसी वजह से वोह एक दूसरे पर मेहरबानी और रहम करते हैं, इसी वजह से परिन्दे और वहशी जानवर अपनी औलाद पर मेहरबानी करते हैं और बाक़ी 99 रहमतों के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएगा।"

(صحیح مسلم، کتاب التوبۃ، باب فی سعۃ رحمۃ اللہ تعالیٰ وانہاتغلب غضبہ، الحدیث: ۶۹۷۴،۶۹۷۷ص ۱۱۵۵)

《2》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है मैं ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ फ़रज़न्दे आदम ! तू जब तक मुझे पुकारता रहेगा और मुझ से उम्मीद रखेगा मैं तुझ से सरज़द होने वाले गुनाहों को मिटाता रहूंगा और मुझे कोई परवाह नहीं, ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आस्मान की बुलन्दियों को पहुंच जाएं फिर तू मुझ से मग़्फ़िरत त़लब करे तो मैं तुझे बख़्श दूं, ऐ इब्ने आदम ! अगर तू मेरे पास ज़मीन के बराबर भी गुनाह ले कर आए और मुझ से इस हाल में मिले कि तूने किसी को मेरा शरीक न ठहराया हो तो मैं तुझे ज़मीन के बराबर मग़्फ़िरत अ़ता फ़रमाऊंगा।"

(جامع الترمذی، ابواب الدعوات، باب الحدیث القدسی، یاابن آدم، الحدیث: ۳۵۴۰، ص ۲۰۱۶)

《3》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक नौ जवान के पास तशरीफ़ ले गए जिस पर नज़्अ़ का आलम त़ारी था, शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया "कैसा महसूस कर रहे हो ?" उस ने अ़र्ज़ की "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखता हूं और अपने गुनाहों पर ख़ौफ़ज़दा हूं।" तो साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐसे वक़्त में जब बन्दे के दिल में येह दो चीज़ें जम्अ़ हो जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की उम्मीद पूरी फ़रमा देता है और उस के ख़ौफ़ से उसे अम्न अ़ता फ़रमाता है।"

(جامع الترمذی، ابواب الجنائز، باب الرجاء باللہ والخوف......الخ، الحدیث: ۹۸۳، ص ۱۷۴۵)

《4》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें बताऊं कि क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से पहले मुअमिनीन से क्या फ़रमाएगा और मुअमिनीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क्या अ़र्ज़ करेंगे ?" हम ने अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें ज़रूर बताइये।" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन से इस्तिफ़्सार फ़रमाएगा : "क्या तुम मुझ से मुलाक़ात करना पसन्द करते थे ?" वोह अ़र्ज़ करेंगे जी हां ! ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! " तो वोह दोबारा उन से दरयाफ़्त करेगा, "क्यूं ?" मुअमिनीन अ़र्ज़ करेंगे "हम तेरे अ़फ़्व और मग़्फ़िरत की उम्मीद रखते थे।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाएगा : ''तो फिर तुम्हारी बख़्शिश मेरे ज़िम्मए करम पर है।''

(المسندللامام احمدبن حنبل،مسند الانصار،الحديث:٢٢١٣٣،ج٨،ص٢٤٩)

अल्लाह तआला बन्दे के साथ उस के गुमान के मुताबिक़ सुलूक करता है :

﴾5﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मैं अपने बन्दे के उस गुमान के मुताबिक़ होता हूं जो वोह मुझ से रखता है और जब वोह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूं।''

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول الله تعالیٰ ویحذرکم الله......الخ،الحدیث:٧٤٠٥،ص٦١٦)

﴾6﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''हुस्ने ज़न एक अच्छी इबादत है।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی حسن الظن، الحدیث:٤٩٩٣،ص١٥٨٨)

﴾7﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखना अच्छी इबादत में से है।''

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسندابی ھریرة،الحدیث:٧٩٦١،ج٣،ص١٥٥)

﴾8﴿...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी से तीन दिन पहले आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ''तुम में से हर एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखते हुए ही मरे।'' (صحیح مسلم، کتاب الجنة ونعیمھا......الخ،باب الامربحسن الظن بالله ......الخ،الحدیث:٧٢٣١،ص١١٧٦)

﴾9﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मैं अपने बन्दे के साथ उस के गुमान के मुताबिक़ मुआ-मला करता हूं, अगर वोह ख़ैर का गुमान करे तो उस के लिये ख़ैर है और अगर शर का गुमान रखे तो उस के लिये शर है।'' (المسندللامام احمد بن حنبل،مسند ابی ھریرہ، الحدیث:٩٠٨٧،ج٣،ص٣٤٤)

﴾10﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक बन्दे को जहन्नम में डालने का हुक्म दिया जब वोह जहन्नम के कनारे पर पहुंचा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मु-तवज्जेह हो कर अर्ज़ करने लगा : ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी क़सम ! मैं तो तेरे साथ अच्छा गुमान रखता था।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''इसे लौटा दो क्यूं कि मैं अपने बन्दे के साथ उस के गुमान के मुताबिक़ ही मुआ-मला करता हूं।''

(شعب الایمان، باب فی عیادة المریض، فصل فی آداب العیادة،الحدیث:٩٢٣٦،ج٦،ص٥٤٦)

﴾11﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखना सब से अफ़्ज़ल इबादत है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे से इर्शाद फ़रमाएगा कि मैं तेरे साथ तेरे गुमान के मुताबिक़ मुआ-मला करूंगा।''

(جامع الاحادیث، الحدیث:٤٩٥٦،ج٢،ص٢١٧)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इस गुनाह को इस के बारे में वारिद सख़्त वईद की बिना पर कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और वोह वईद आप जान चुके हैं बल्कि बेशतर अहादीसे मुबा-रका में इस बात की तस्रीह़ गुज़र चुकी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होना कबीरा गुनाह है यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत में इसे अक्बरुल कबाइर भी कहा गया है।

कबीरा नम्बर **41 :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **से बुरा गुमान रखना**

कबीरा नम्बर **42 :** **रह़मते इलाही** عَزَّوَجَلَّ **से ना उम्मीद होना**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है

وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ۝ (پ۱۴، الحجر:۵۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की रह़मत से कौन ना उम्मीद हो मगर वोही जो गुमराह हुए।

﴾1﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बुरा गुमान रखना सब से बड़ा गुनाह है।"

(فردوس الاخبارللدیلمی، باب الالف، الحدیث: ۱۴۷۲، ج۱، ص۲۱۱)

तम्बीह :

इन दोनों गुनाहों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होने से अ़लाह़िदा कबीरा गुनाह शुमार करना दर अस्ल अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इत्तिबाअ़ में है, गोया उन्हों ने इन तीनों के दरमियान के तलाज़ुम को नज़र अन्दाज़ कर दिया, इसी लिये सय्यिदुना अबू ज़ुरआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **یأس** या'नी मायूसी का मा'ना **قنوط** या'नी ना उम्मीदी बताया, और ज़ाहिर भी येही है कि **قنوط**, **یأس** से ज़ियादा बलीग़ है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوْسٌ قَنُوْطٌ۝ (پ۲۵، حٰمٓ السجدۃ:۴۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई बुराई पहुंचे तो ना उम्मीद आस टूटा।

में इसे **یأس** के बा'द ज़िक्र फ़रमाया है, और येह भी ज़ाहिर है कि बद गुमानी इन दोनों से ज़ियादा बलीग़ है क्यूं कि बद गुमानी मायूसी और ना उम्मीदी के साथ साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ऐसी

www.dawateislami.net

सिफ़त की ज़ियादती को कहते हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जूदो करम के लाइक़ न हो और तफ़्सीरे इब्ने मुन्ज़िर में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से मरवी है : "सब से बड़ा गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ और उस की रह़मत से मायूस और ना उम्मीद होना है।"

(کنزالعمال،کتاب الاذکار،قسم الافعال، سورۃ النساء، الحدیث:۴۳۲۲،ج۲،ص۸۶۷)

तफ़्सीरे इब्ने जरीर में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी इसी त़रह़ का एक क़ौल मरवी है।

वस्वसा : येह बात हमारे अइम्मए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के इस क़ौल के मुनाफ़ी है जिस में उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया है : "मरीज़ के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखना मुस्तह़ब है।" और एक क़ौल येह है कि "ख़ौफ़ को उम्मीद पर ग़ालिब रखना बेहतर है।" जब कि सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर बन्दा ना उम्मीदी की बीमारी से अम्न में हो तो उम्मीद रखना बेहतर है और अगर खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हो तो ख़ौफ़ रखना बेहतर है।"

जवाब : यहां दो मक़ामात पर कलाम है,

(1)...... एक शख़्स को रह़मत और अ़ज़ाब दोनों की उम्मीद है येह वोही शख़्स है जिस के बारे में फु-क़हाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर मरीज़ है तो उम्मीद की जानिब को ग़-लबा देना मुस्तह़ब है और अगर तन्दुरुस्त है तो इस में इख़्तिलाफ़ है।" जैसा कि आप जान चुके हैं।

(2)...... एक शख़्स मुसल्मान होने के बा वुजूद रह़मत की अन्वाअ़ से मायूस है येह वोही शख़्स है जिस के बारे में यहां गुफ़्त-गू हो रही है, येही मायूसी बिल इत्तिफ़ाक़ कबीरा गुनाह है। क्यूं कि येह उन नुसूसे क़त़इय्या की तक्ज़ीब को लाज़िम है जिन की त़रफ़ हम इशारा कर चुके हैं। फिर इस मायूसी से कभी इस से भी सख़्त ह़ालत मिल जाती है और वोह येह कि रह़मत न होने का यक़ीन कर लेना और (فَھُوَیَئُوْسٌ قَنُوْطٌ) का सियाक़ इसी पर दलालत करता है और कभी येह मायूसी रह़मत न होने के यक़ीन के साथ साथ काफ़िरों की त़रह़ सख़्त अ़ज़ाब के यक़ीन के साथ मिल जाती है और यहां बद गुमानी से येही ए'तिक़ाद मुराद है इस में ख़ूब ग़ौर करना चाहिये क्यूं कि येह निहायत अहम है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 43 : हुसूले दुन्या के लिये इल्मे दीन हासिल करना

﴾1﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये हासिल किया जाने वाला इल्म दुन्या का माल हासिल करने के लिये सीखा वोह क़ियामत के दिन जन्नत की ख़ुश्बू तक न पा सकेगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب العلم، باب فی طلب العلم لغیر الله، الحدیث:٣٦٦٤،ص١٤٩٤)

रियाकारी के बयान में इमाम मुस्लिम वग़ैरा से एक ह़दीसे पाक रिवायत की गई है जिस में येह था :

﴾2﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "एक शख़्स सारी ज़िन्दगी इल्म सीखता और सिखाता रहा और कुरआन पढ़ता रहा, जब उसे क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ने'मतें याद कराएगा, जब वोह बन्दा इन ने'मतों का ए'तिराफ़ कर लेगा तब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से पूछेगा : "तूने इन ने'मतों के बदले में क्या किया ?" तो वोह अ़र्ज़ करेगा "मैं तेरे लिये इल्म सीखता और सिखाता और कुरआन पढ़ता रहा।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा "तू झूट बोलता है बल्कि तूने इल्म तो इस लिये हासिल किया था कि तुझे आलिम कहा जाए और कुरआन इस लिये पढ़ा था कि तुझे क़ारी कहा जाए और वोह तुझे कह लिया गया।" फिर उस के बारे में जहन्नम का हुक्म दिया जाएगा तो उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।" (صحیح مسلم، کتاب الامارۃ ، باب من قاتل للریاء والسمعۃ......الخ،الحدیث:٤٩٢٣،ص١٠١٨)

﴾3﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने उ़-लमा से मुक़ाबला करने बे वुक़ूफ़ों से झगड़ने या लोगों को अपनी जानिब मु-तवज्जेह करने के लिये इल्म हासिल किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में डाल देगा।"

(جامع الترمذی،ابواب العلم،باب فیمن یطلب بعلمه الدنیا، الحدیث: ٢٦٥٤،ص١٩١٩)

﴾4﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने बे वुक़ूफ़ों के साथ झगड़ने, उ़-लमा पर फ़ख़्र करने या लोगों को अपनी त़रफ़ मु-तवज्जेह करने के लिये इल्म हासिल किया, वोह जहन्नमी है।" (سنن ابن ماجه،ابواب السنة، باب الانتفاع بالعلم......الخ،الحدیث:٢٥٣،ص٢٤٩٣)

﴾5﴿...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने उ़-लमा के सामने फ़ख़्र करने, जाहिलों से झगड़ने या लोगों को अपनी जानिब मु-तवज्जेह करने के लिये इल्म हासिल किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الطهارة، باب الانتفاع بالعلم والعمل......الخ،الحدیث:٢٦٠،ص٢٤٩٣،یماری بدله"یجاری")

﴾6﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "उ़-लमा के सामने फ़ख़्र करने, बे वुक़ूफ़ों से झगड़ने और मजलिस आरास्ता करने के लिये इल्म न सीखो क्यूं कि जो ऐसा करेगा तो (उस के लिये) आग ही आग है।"

(المرجع السابق،الحدیث:٢٥٤،لاتحبروابدله"تخیروا")

www.dawateislami.net

《7》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी के लिये इल्म सीखा या उस इल्म से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी की रिज़ा का इरादा किया तो वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

(جامع الترمذی،ابواب العلم،باب فیمن یطلب بعلمه الدنیا، الحدیث: ۲۶۵۵،ص۱۹۱۹)

《8》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़न्क़रीब मेरी उम्मत के कुछ लोग दीन में तफ़क़्क़ोह ह़ासिल करेंगे और क़ुरआन पढ़ेंगे और कहेंगे : "हम उ-मरा के पास जाते हैं ताकि उन से उन की दुन्या पाएं और हम अपने दीन को उन से जुदा रखते हैं।" लेकिन ऐसा न होगा बल्कि जिस त़रह़ किसी कांटेदार दरख़्त से कांटे ही ह़ासिल होते हैं इसी त़रह़ वोह उन के क़रीब से गुनाह ही चुन सकेंगे।"

(سنن ابن ماجه،کتاب السنة،باب الانتفاع بالعلم والعمل به،الحدیث:۲۵۵،ص۲۴۹۳)

मुह़म्मद बिन सबाह़ फ़रमाते हैं : "सिवाए गुनाहों के कुछ ह़ासिल न होगा।"

《9》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों के दिलों को अपने जाल में फांसने के लिये उ़म्दा गुफ़्त-गू सीखी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन न उस की फ़र्ज़ इ़बादत क़बूल फ़रमाएगा और न ही नफ़्ल।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب،باب ماجاء فی التشدق فی الکلام، الحدیث:۵۰۰۶،ص۱۵۸۹)

《10》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा ? जब तुम पर एक ऐसी आज़माइश आएगी जिस में शीर ख़्वार बच्चे बड़े हो जाएंगे, जवान बूढ़े हो जाएंगे और लोग एक सुन्नत को अपनाएंगे, अगर किसी दिन उस में से कुछ छोड़ दिया गया तो कहा जाएगा सुन्नत तर्क कर दी गई।" सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "ऐसा कब होगा ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम्हारी आरज़ूएं कम हो जाएंगी और उ-मरा ज़ियादा हो जाएंगे, तुम्हारे फ़ु-क़हा कम और क़ारी ज़ियादा हो जाएंगे, इल्मे दीन ग़ैरुल्लाह के लिये सीखा जाएगा और आख़िरत के अ़मल से दुन्या को त़लब किया जाएगा।"

(المصنف لعبدالرزاق،باب الفتن، الحدیث: ۲۰۹۰۸،ج۱۰،ص۳۰۸،لغیرالله بدله"لغیرالدین")

《11》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने भी आयन्दा आने वाले एक फ़ितने का तज़्किरा किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने पूछा : "ऐ अ़ली ! ऐसा कब होगा ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "दीन को छोड़ कर दूसरे उ़लूम में महारत ह़ासिल की जाएगी, इल्म को अ़मल के इलावा किसी और मक़्सद के लिये ह़ासिल किया जाएगा और आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब की जाएगी।" (المرجع السابق، الحدیث: ۲۰۹۰۹،ص۳۰۹)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इस गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार करने की वजह बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का कलाम है, शायद उन्हों ने इस में वारिद होने वाली सख़्त वईद को देखते हुए इसे रियाकारी से अ़लाहि़दा कबीरा गुनाह शुमार किया और उन अह़ादीस की त़रफ़ नज़र न की जो रियाकारी और दुन्या कमाने के लिये इ़ल्म ह़ासिल करने की मज़म्मत के बयान में वारिद हुईं लिहाज़ा इन दोनों में उ़मूम व ख़ुसूस मुत़्लक़ की निस्बत है।

कबीरा नम्बर 44 : इ़ल्म छुपाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَیِّنٰتِ وَ الْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَیَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِی الْكِتٰبِۙ اُولٰٓىٕكَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَۙ (پ۲،البقرۃ:۱۵۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं बा'द इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह़ फ़रमा चुके उन पर अल्लाह की ला'नत है और ला'नत करने वालों की ला'नत।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त के नज़्दीक येह आयते मुबा-रका नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई।

एक क़ौल येह है कि येह यहूदियों के ह़क़ में नाज़िल हुई क्यूं कि वोह तौरात में मौजूद नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ छुपाते थे।

जब कि एक क़ौल येह है कि येह (हुक्म में) आ़म है और येही दुरुस्त है क्यूं कि अल्फ़ाज़ के उ़मूम का ए'तिबार होता है सबब के ख़ुसूस का नहीं क्यूं कि हुक्म को मुनासिब वस्फ़ पर मुरत्तब करना इ़ल्लत बयान करने की त़रफ़ इशारा करता है और दीन छुपाना यक़ीनन ला'नत के इस्तिह़क़ाक़ के मुनासिब है, लिहाज़ा वस्फ़ के आ़म होने की सूरत में हुक्म का उ़मूम साबित हो जाएगा।

नीज़ सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त ने इस आयते मुबा-रका के उ़मूम की सराह़त भी की है जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : "दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाज़िल कर्दा अह़कामात में से कुछ भी नहीं छुपाया।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस आयते मुबा-रका से इस्तिदलाल करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "अगर येह और इस जैसी दूसरी आयाते मुबा-रका न होतीं तो हरगिज़ इतनी कसरत से रिवायात बयान न होतीं।"

《1》 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़ीद इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ یَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِیْلًاۙ اُولٰٓىٕكَ مَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَ لَا یُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ لَا یُزَكِّیْهِمْ ۚۖ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَ الْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَاۤ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ۝

(پ۲،البقرۃ:۱۷۴۔۱۷۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो छुपाते हैं अल्लाह की उतारी किताब और उस के बदले ज़लील क़ीमत ले लेते हैं वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं और अल्लाह क़ियामत के दिन उन से बात न करेगा और न उन्हें सुथरा करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब तो किस द-रजे उन्हें आग की सहार (बरदाश्त) है।

《2》

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَیِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْنَهٗ٘ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَ اشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِیْلًاؕ فَبِئْسَ مَا یَشْتَرُوْنَ ۝

(پ۴،اٰل عمران:۱۸۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब अल्लाह ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले ज़लील दाम ह़ासिल किये तो कितनी बुरी ख़रीदारी है।

येह दोनों आयतें अगर्चे सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ छुपाने की वजह से यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई मगर चूंकि ए'तिबार अल्फ़ाज़ के उ़मूम ही का होता जैसा कि हम साबित कर चुके हैं।

एक क़ौल येह भी है कि मज़्कूरा आयते मुबा-रका इस बात पर दलालत करती है कि जो शख़्स अ़क़्ली दलाइल के मोहताज के सामने दीन के अरकान को अ़क़्ली दलाइल से मुज़य्यन कर के बयान करने पर क़ादिर हो फिर भी बयान न करे या ह़ाजत के बा वुजूद अह़कामे शर-अ़ में से कोई बात छुपाए तो उसे येह वईद लाहिक़ हो कर रहेगी।

लुग़त में **ला'नत** के मा'ना दूरी के हैं और शर-अ़ में रह़मत से दूरी को **ला'नत** कहते हैं। ला'नत करने वाले ज़मीन के चौपाए और ह़शरात (या'नी कीड़े मकोड़े) हैं, वोह कहते हैं : "बनी आदम के गुनाहों की वजह से हम से बारिश रोक दी गई।"

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

《1》

رَاَیْتُهُمْ لِیْ سٰجِدِیْنَ0 (پ١٢، يوسف:٤)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : उन्हें अपने लिये सज्दा करते देखा।

《2》

فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ0 (پ:٢٣، يٰس:٤٠)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : घेरे में तैर रहा है।

《3》

اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِیْنَ0 (پ١٩، الشعراء:٤)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : कि उन के ऊंचे ऊंचे उस के हुज़ूर झुके रह जाएं।

एक क़ौल येह है : "इन से मुराद मोमिन जिन्नात और इन्सानों के इलावा हर चीज़ है।" इसी तरह़ बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इन से मुराद मलाएका, अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی वग़ैरा को क़रार दिया है, मगर सय्यिदुना ज़ुजाज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मलाएका और मुअमिनीन वाले क़ौल को दुरुस्त कहा है। और इमाम क़ुरतुबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस का जवाब इस तरह़ दिया है कि इब्ने माजह में येह रिवायत मौजूद है कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने اَللّٰعِنُوْنَ या'नी ला'नत करने वालों की तफ़्सीर ज़मीन के रेंगने वाले जानवरों से की है।

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "इन से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम बन्दे हैं।" बा'ज़ का कहना है कि "येह आयते मुबा-रका इ़ल्म छुपाने के कबीरा गुनाह होने पर दलालत करती है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस पर ला'नत को वाजिब किया है और पसे पुश्त डाल देना शदीद ए'राज़ करने से किनाया है जब कि ثَمَنٌ قَلِیْلٌ से मुराद वोह माल है जिसे वोह लोग इ़ल्म में सरदार होने की वजह से अपने मा तह़तों से वुसूल करते थे।" "فَبِئْسَ مَایَشْتَرُوْنَ" का मा'ना है कि इन की ख़रीदारी बहुत बुरी है और इस में इन का नुक़्सान भी है।

इ़ल्म छुपाने की वई़द में बहुत सी अह़ादीस भी आई हैं :

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस से इ़ल्म की कोई बात पूछी गई और उस ने उसे छुपाया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे आग की लगाम पहनाएगा।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الطهارة، باب من سئل من علم فكتمه ،الحديث:٢٦٤،ص٢٤٩٣)

《2》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स किसी इ़ल्म को ज़बानी याद करे और फिर उसे लोगों से छुपाए तो वोह क़ियामत के दिन आग की लगाम पहन कर आएगा।" (سنن ابن ماجه،ابواب الطهارة ، باب من سئل من علم فكتمه ،الحديث:٢٦١،ص٢٤٩٣)

www.dawateislami.net

《3》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस से इल्म की बात पूछी गई और उस ने उसे छुपा लिया तो वोह क़ियामत के दिन आग की लगाम पहन कर आएगा और जिस ने कुरआने पाक में अपने इल्म के बिग़ैर कलाम किया वोह भी क़ियामत के दिन आग की लगाम पहन कर आएगा।'' (مسند ابی یعلی، مسند ابن عباس، الحدیث: ۲۵۷۸، ج۲، ص۵۰۰)

《4》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने इल्म छुपाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन आग की लगाम पहनाएगा।''

(المستدرک، کتاب العلم، باب من سئل عن علم ......الخ، الحدیث: ۳۵۲، ج۱، ص۲۹۷)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअत म-सलन हज़रते सय्यिदुना जाबिर, हज़रते सय्यिदुना अनस, हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर, हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद, हज़रते सय्यिदुना **अम्रुब्नु अम्बसा** और हज़रते सय्यिदुना अली बिन तलक़ वग़ैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم से येह हदीसे मुबा-रका मरवी है जब कि हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : ''जिस से इल्म की ऐसी बात पूछी गई जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों को दीनी मुआ-मले में नफ़्अ पहुंचाता है।'' (سنن ابن ماجه، ابواب السنة، باب من سئل عن علم فکتمه، الحدیث: ۲۶۵، ص۲۴۹۳)

《5》..... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जब इस उम्मत के लोग अगलों पर ला'नत करने लगें उस वक़्त जो एक हदीस छुपाए तो गोया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाज़िल कर्दा हुक्म छुपाया।''

(سنن ابن ماجه، ابواب الطهارة، باب من سئل عن علم فکتمه، الحدیث: ۲۶۳، ص۲۴۹۳)

《6》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इल्म हासिल करने के बा'द इसे बयान न करने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जो ख़ज़ाना जम्अ करता है फिर उस में से कुछ भी ख़र्च नहीं करता।'' (المعجم الاوسط، الحدیث ۶۸۹، ج۱، ص۲۰۴)

《7》...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''इल्म के मुआ-मले में एक दूसरे की ख़ैर ख़्वाही चाहो क्यूं कि तुम में से किसी का अपने इल्म में ख़ियानत करना अपने माल में ख़ियानत करने से ज़ियादा सख़्त है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से इस के बारे में ज़रूर पूछगछ फ़रमाएगा।'' (المعجم الکبیر، الحدیث ۱۱۷۰۱، ج۱۱، ص۲۱۵)

《8》...... एक दिन दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुत्बा इर्शाद फ़रमाया और मुसल्मानों के कुछ गुरौहों की ता'रीफ़ फ़रमाई, फिर इर्शाद फ़रमाया : ''उन लोगों का क्या हाल है जो अपने पड़ोसियों को नहीं समझाते न सिखाते, न नेकी की दा'वते देते और न ही बुराई से मन्अ करते हैं और उन लोगों का क्या हाल है जो अपने पड़ोसियों से नहीं सीखते, न उन से समझते और न ही नसीहत तलब करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! चाहिये कि एक क़ौम अपने पड़ोसियों को

www.dawateislami.net

ज़रूर दीन सिखाए, समझाए, नसीहत करे और नेकी की दा'वत दे, इसी त़रह़ दूसरी क़ौम को चाहिये कि अपने पड़ोसियों से दीन सीखे, समझे और नसीहत ह़ासिल करे वरना जल्द ही उन्हें इस का अन्जाम भुगतना पड़ेगा।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर शरीफ़ से नीचे तशरीफ़ ले आए, तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने (एक दूसरे से) इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "आप के ख़याल में रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन लोगों से कौन से लोग मुराद लिये हैं?" तो दूसरों ने उन्हें बताया : "इन से मुराद अश्अ़री क़बीला वाले हैं क्यूं कि वोह फु-क़हा की क़ौम है और उन के पड़ोसी जफ़ाकार आ'राबी हैं।"

जब येह बात अश्अ़रियों तक पहुंची तो वोह ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक क़ौम की भलाई और एक की बुराई का ज़िक्र फ़रमाया, हम उन में से किस में हैं?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "चाहिये कि एक क़ौम अपने पड़ोसियों को ज़रूर दीन सिखाए, उन्हें समझाए, नसीहत करे, नेकी की दा'वत दे और बुराई से मन्अ़ करे, इसी त़रह़ दूसरी क़ौम को चाहिये कि अपने पड़ोसियों से दीन सीखे, समझे और उन से नसीहत त़लब करे वरना जल्द दुन्या में ही इस का अन्जाम भुगतेगी।" उन्हों ने दोबारा अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हम दूसरे लोगों को नसीहत करें?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येही बात दोहराई, उन्हों ने फिर येही अ़र्ज़ की "क्या हम दूसरों को नसीहत करें।" तो शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ऐसा ही है।" उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की "हमें एक साल की मोहलत दीजिये।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें एक साल की मोहलत अ़त़ा फ़रमा दी ताकि येह लोगों को दीन सिखाएं और नसीहत करें, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ○ (پ٦، المآئدة:٧٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का।

(مجمع الزوائد، کتاب العلم، باب فی تعلیم من لا یعلم، الحدیث٧٤٨، ج١، ص٤٠٢، انغظ بدله"انفطن")

तम्बीह :

बहुत से मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इस के कबीरा गुनाह होने की सराह़त की है इस लिये इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया शायद कि उन के पेशे नज़र भी मेरी बयान कर्दा सख़्त वईद पर मब्नी रिवायात ही हैं ह़ालां कि येह वईद मुत़्लक़ नहीं क्यूं कि इल्म छुपाना कभी वाजिब होता है, कभी इस का इज़्हार वाजिब होता है और कभी मुस्तह़ब, म-सलन त़ालिबे इल्म

www.dawateislami.net

की अ़क़्ल जिस बात की मु-तह़म्मिल न हो और किसी आ़लिम को इस बात का ख़ौफ़ हो कि अगर इसे येह बात बताई गई तो येह फ़ितने में मुब्तला हो जाएगा तो ऐसी सूरत में इ़ल्म छुपाना वाजिब है और ब सूरते दीगर या'नी इस के इ़लावा दूसरे अफ़राद हों तो अब अगर वोह बात फ़र्ज़े ऐ़न हो या उस के हुक्म का तअ़ल्लुक़ उन से हो तो उस को ज़ाहिर करना वाजिब है वगर्ना इस का इज़्हार मुस्तह़ब है जब तक कि इस का हुसूल किसी ना जाइज़ ज़रीए से न हो।

ह़ासिले कलाम येह है कि इ़ल्म सिखाना चूंकि इ़ल्म का वसीला है पस वाजिब के मुआ़-मले में इ़ल्म का इज़्हार वाजिब, फ़र्ज़े ऐ़न के मुआ़-मले में फ़र्ज़े ऐ़न, फ़र्ज़े किफ़ाया का इ़ल्म सिखाना फ़र्ज़े किफ़ाया, मुस्तह़ब का इ़ल्म सिखाना मुस्तह़ब है जैसे उ़रूज़ वग़ैरा का इ़ल्म और इसी त़रह़ ह़राम चीज़ का इ़ल्म सिखाना भी ह़राम है जैसे जादू और शो'बदा बाज़ी वग़ैरा।

बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی इर्शाद फ़रमाते हैं : "काफ़िर को कुरआने पाक सिखाना जाइज़ नहीं और न ही कोई दीनी इ़ल्म सिखाना जाइज़ है यहां तक कि वोह मुसल्मान हो जाए, इसी त़रह़ अहले ह़क़ से मुना-ज़रे के लिये बिदअ़ती को मुना-ज़रा या दलाइल सिखाना भी जाइज़ नहीं, न ही फ़रीक़ैन में से एक को दूसरे का माल दबा लेने के लिये ह़ीला सिखाना जाइज़ है और इसी त़रह़ जाहिलों को गुनाहों के इरतिकाब और वाजिबात छोड़ने के त़रीक़ों में रुख़्सतें बयान करना भी जाइज़ नहीं।"

《9》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ह़क़दारों से इ़ल्म रोक कर उन पर ज़ुल्म न करो और ना अहलों को ह़िक्मत सिखा कर उन पर ज़ुल्म न करो।" (الجامع لاحکام القرآن للقرطبی،سورۃ البقرۃ،تحت الآیۃ:۱۵۹،ج۱،ص۱۴۱)

《10》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ख़िन्ज़ीरों के गले में मोतियों के हार न डालो।" या'नी ना अहलों को फ़िक़्ह न सिखाओ।

(تاریخ بغداد،الحدیث۴۹۰۷،ج۹،ص۳۵۶)

(अ़ल्लामा इब्ने ह़जर **हैसमी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं) काफ़िर के बारे में जो अह़काम मज़्कूर हुए वोह हमारे क़वाइद के मुत़ाबिक़ दुरुस्त नहीं क्यूं कि जिस काफ़िर के इस्लाम लाने की उम्मीद हो उसे हमारे नज़्दीक कुरआन सिखाना जाइज़ है लिहाज़ा इ़ल्म सिखाना ब द-र-जए औला जाइज़ है।

《11》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है और ना अह्ल को इ़ल्म सिखाने वाला ख़िन्ज़ीर के गले में जवाहिरात, मोतियों और सोने का हार पहनाने वाले की त़रह़ है।"

(سنن ابن ماجه،ابواب السنة ، باب فضل العلماء......الخ ،الحدیث:۲۲۴،ص۲۴۹۱)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **45 :** **इल्म पर अ़मल न करना**

《**1**》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुआ़ किया करते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ عِلْمٍ لَایَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَایَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَاتَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَایُسْتَجَابُ لَهَا۔

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ऐसे इल्म से जो नफ़्अ़ न दे, ऐसे दिल से जो आ़जिज़ी व इन्किसारी न करे, ऐसे नफ़्स से जो सैर न होता हो और ऐसी दुआ़ से जो क़बूल न की जा सकती हो तेरी पनाह चाहता हूं।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فی الادعیه، الحدیث: ٦٩٠٦،ص ١١٥٠)

《**2**》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन एक शख़्स को ला कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो उस की अंतड़ियां बाहर निकल आएंगी और वोह उन के गिर्द इस त़रह़ घूमेगा जिस त़रह़ गधा अपनी चक्की के गिर्द घूमता है, तो जहन्नमी उस के गिर्द जम्अ़ हो कर पूछेंगे ऐ फ़ुलां ! तुझे क्या हुवा ? क्या तू हमें नेकी की दा'वत न देता था और क्या तू हमें बुराई से मन्अ़ न करता था ?" तो वोह कहेगा : "मैं तुम्हें तो नेकी की दा'वत दिया करता था मगर ख़ुद उस पर अ़मल नहीं करता था और तुम्हें तो बुराई से मन्अ़ करता था मगर ख़ुद बुराई में मुब्तला रहता था।"

(صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق ،باب صفة النار وانها مخلوقة،الحدیث:٣٢٦٧،ص٢٦٤)

《**3**》...... साहि़बे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**ज़बानिया** (जहन्नम पर मुअक्कल फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त) फ़ासिक़ क़ारियों की त़रफ़ बुत परस्तों से भी पहले जाएगी तो वोह कहेंगे : "क्या बुत परस्तों से पहले हम से इब्तिदा की जा रही है ?" तो उन से कहा जाएगा : "जानने वाले न जानने वालों की त़रह़ नहीं।"

(الترغیب والترهیب، کتاب العلم، باب الترهیب من ان یعلم......الخ،الحدیث: ٢١٠،ج١،ص٩١)

हाफ़िज़ मुन्ज़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक के "ग़रीब" होने के बा वुजूद इस की "शाहिद" मौजूद है और रियाकारी के बयान में एक सह़ीह़ रिवायत गुज़र चुकी है कि,

《**4**》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन सब से पहले उस शख़्स को बुलाया जाएगा जिस ने क़ारी कहलाने के लिये क़ुरआन याद किया होगा।" ह़दीसे मुबा-रका के आख़िरी अल्फ़ाज़ येह हैं "येह तीन शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में वोह पहला गुरौह होंगे जिन के ज़रीए क़ियामत के दिन जहन्नम को भड़काया जाएगा।" (المرجع السابق)

《**5**》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो क़ुरआने पाक की ह़राम कर्दा अश्या को ह़लाल समझे उस का क़ुरआने पाक पर ईमान ही नहीं।"

(جامع الترمذی، ابواب فضائل القرآن، باب من قرأ القرآن......الخ، الحدیث: ٢٩١٨،ص١٩٤٤)

《**6**》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन बन्दा उस वक़्त तक क़दम न हटा सकेगा जब तक उस से येह चार सुवालात न कर लिये जाएं : (1) अपनी उ़म्र किन कामों में गुज़ारी (2) अपने इल्म पर कितना अ़मल किया (3) माल किस

www.dawateislami.net

तरह कमाया और कहां ख़र्च किया और (4) अपने जिस्म को किन कामों में बोसीदा किया।"

(جامع الترمذی، ابواب صفة القيامة، باب فی القيامة، الحديث: ٢٤١٧، ص١٨٩٤)

《7》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन बन्दा उस वक़्त तक क़दम न उठा सकेगा जब तक उस से पांच चीज़ों के बारे में सुवाल न कर लिया जाए : (1) उम्र किन कामों में गुज़ारी (2) जवानी किन कामों में सर्फ़ की (3) माल कहां से कमाया और (4) कहां ख़र्च किया और (5) अपने इल्म पर कहां तक अमल किया।"

(المرجع السابق، الحديث: ٢٤١٦)

《8》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कुछ जन्नती लोग जहन्नमियों की तरफ़ जाएंगे तो उन से पूछेंगे तुम जहन्नम में किस वजह से दाख़िल हुए, हालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम तो तुम्हारी ही ता'लीम से जन्नत में दाख़िल हुए हैं।" तो वोह कहेंगे हम जो बात कहा करते थे उस पर ख़ुद अमल नहीं करते थे।"

(المعجم الكبير، الحديث: ٤٠٥، ج٢٢، ص١٥٠)

《9》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो बन्दा लोगों को वा'ज़ो नसीहत करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से पूछगछ ज़रूर फ़रमाएगा।" रावी कहते हैं मेरा गुमान है कि येह भी इर्शाद फ़रमाया : "येह ज़रूर पूछेगा कि तूने इस वा'ज़ से क्या निय्यत की थी।" (شعب الايمان، باب فی نشر العلم، الحديث: ١٧٨٧، ج٢، ص٢٨٧)

《10》...... हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब भी येह हदीसे मुबा-रका सुनाते तो रो पड़ते, फिर जब इफ़ाक़ा होता तो इर्शाद फ़रमाते : "तुम लोग येह गुमान करते हो कि तुम्हारे सामने वा'ज़ करने से मेरी आंखें ठन्डी होती हैं हालां कि मैं जानता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन मुझ से पूछेगा कि तेरा वा'ज़ से मक़्सूद क्या था ?"

《11》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! बद तरीन लोग कौन हैं ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब में दुआ फ़रमाई "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मग़फ़िरत फ़रमा।" फिर इर्शाद फ़रमाया कि "अच्छों के बारे में पूछा करो बुरों के बारे में दरयाफ़्त न किया करो, बद तरीन लोग बुरे उ-लमा हैं।"

(البحرالزخار لمسند البزار، مسند معاذ بن جبل، الحديث: ٢٦٤٩، ج٧، ص٩٣)

《12》...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "लोगों को इल्म सिखाने और अपने आप को भूल जाने वाले की मिसाल उस चराग़ की सी है जो लोगों को तो रोशनी देता है जब कि अपने आप को जलाता है।" (العجم الكبير، الحديث: ١٦٨١، ج٢، ص١٦٦)

www.dawateislami.net

《13》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हर इल्म अपने जानने वाले पर वबाल है सिवाए उस के जो उस पर अमल करे।"

(مجمع الزوائد، كتاب العلم،باب من علم فليعمل،الحديث:٧٤٩،ج١،ص٤٠٣)

《14》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अज़ाब उस आलिम को होगा जिस के इल्म ने उसे नफ़्अ न दिया होगा।" (شعب الايمان،باب فی نشر العلم، الحديث: ١٧٧٨،ج٢،ص٢٨٥)

《15》...... हज़रते सय्यिदुना अम्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे खुश खिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इस्लामी अहकाम सिखाने के लिये क़ैस क़बीले के एक महल्ले में भेजा, मैं जब वहां पहुंचा तो पता चला कि वोह लोग जंगली ऊंटों की तरह नज़रें बुलन्द रखने वाले थे, उन की फ़िक्रों और सोचों का महवर सिर्फ़ बकरियां और ऊंट थे, तो मैं दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमते आलीशान में लौट आया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अम्मार ! तुम ने क्या किया ?" तो मैं ने उस क़ौम की हालत और गफ़्लत भी बयान कर दी, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अम्मार ! क्या मैं तुम्हें इन से भी ज़ियादा तअज्जुब अंगेज़ लोगों के बार में न बताऊं ? वोह क़ौम जो ऐसी तमाम बातें जानती थी जिन से येह लोग ना वाक़िफ़ हैं लेकिन फिर भी वोह इन की तरह गाफ़िल हो गई।"

(مجمع الزوائد، كتاب العلم، باب لم ينتفع بعلمه،الحديث: ٨٧٣،ج١،ص٤٤١)

《16》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझे अपनी उम्मत के किसी मोमिन या मुशिरक के बारे में अन्देशा नहीं, मोमिन की हिफ़ाज़त तो उस का ईमान करेगा जब कि मुशिरक का कुफ़्र ही उसे ज़लीलो रुस्वा करेगा मगर मुझे तुम पर ज़बान के तेज़ तराज़ (या'नी घुमा फिरा कर बातें कर के धोका देने वाले) मुनाफ़िक़ का खौफ़ है जो बातें ऐसी करेगा जिन्हें तुम पसन्द करोगे और अमल ऐसे करेगा जिन्हें तुम ना पसन्द करोगे।" (المعجم الاوسط،الحديث:٧٠٦٥،ج٥،ص٢٠٠)

《17》...... खा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझे अपने बा'द तुम पर हर उस मुनाफ़िक़ का खौफ़ है जो (घुमा फिरा कर) गुफ़्त-गू करने का माहिर हो।" (المعجم الكبير،الحديث:٥٩٣،ج١٨،ص٢٣٧)

《18》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझे गुमान है कि आदमी अपने किसी मा'लूम गुनाह की वजह से इसी तरह इल्म भूल जाता है जैसे उसे याद करता है।" (الترغيب والترهيب، كتاب العلم، باب الترهيب من ان يعلم ولا يعمل......الخ،الحديث: ٢٢٧،ج١،ص٩٥)

《19》...... मन्सूर बिन ज़ाज़ान رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि मुझे खबर मिली है : "जहन्नम में कुछ ऐसे लोग दाखिल किये जाएंगे जिन की बदबू से दीगर जहन्नमियों को ईज़ा पहुंचेगी तो उस जहन्नमी से पूछा जाएगा "तेरा सत्तियानास हो तू कौन सा अमल करता था ?" क्या हम पर पहले कम

www.dawateislami.net

बलाएं थीं कि तूने मज़ीद अपनी बदबू में भी फंसा दिया ?'' तो वोह कहेगा : ''मैं आ़लिम था मगर मैं ने अपने इल्म से नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं किया।''

(شعب الایمان،باب فی نشر العلم، الحدیث:۱۸۹۹، ج۲،ص۳۰۹،ریحك بدله"رائحتك")

तम्बीह :

इन अह़ादीसे मुबा-रका से ज़ाहिर शदीद वईदों की बिना पर इस गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

सुवाल : वईद की शिद्दत तो उसी वक़्त होगी जब कोई शख़्स वाजिबात को तर्क करे या ह़राम काम का इरतिकाब करे, इल्म पर मुत़्लक़ अ़मल न करना मुराद नहीं, अगर्चे मुस्तह़ब्बात का तर्क और मक्रूहात पर अ़मल हो। इस सूरत में अगर उन का येह बयान मान लिया जाए कि इल्म पर अ़मल न करना कबीरा गुनाह है तो फिर उसे एक अलग कबीरा गुनाह शुमार करना दुरुस्त न होगा जैसा कि फ़र्ज़ नमाज़ को तर्क करना वग़ैरा भी एक कबीरा गुनाह है और (اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ) ऐसे गुनाहों का बयान आगे आएगा।

जवाब : इस की तौजीह मुम्किन है अगर्चे मैं ने किसी को इस बात की वज़ाहत करते हुए नहीं पाया कि इल्म होने के बा वुजूद गुनाह करना जहालत में गुनाह करने से ज़ियादा बुरा है जैसा कि अह़ादीसे मुबा-रका भी इस की ताईद करती हैं। **नीज़** ह़-रमे मक्का में गुनाह के बयान में इस की नज़ीर आएगी क्यूं कि मक्कए मुकर्रमा का श-रफ़ो मर्तबा इसी बात का तक़ाज़ा करता है कि इस में किया जाने वाला गुनाह ज़ियादा फ़ोह़्श हो, अगर्चे वोह गुनाह सग़ीरा ही क्यूं न हो। लिहाज़ा आ़लिम जब सग़ीरा गुनाहों में मुब्तला हो तो वोह भी बाक़ी अफ़राद के सग़ीरा गुनाहों से ज़ियादा फ़ोह़्श शुमार किया जाएगा और येह बात बईद भी नहीं क्यूं कि उस का येह सग़ीरा गुनाह एक वासित़े से कबीरा ही बन जाता है वोह इस त़रह़ कि वोह उन उ़लूमो मआ़रिफ़ को जानता है जो इस बात का तक़ाज़ा करते हैं कि वोह मक्रूहात से भी रुक जाए चे जाएकि मुहर्रमात का इरतिकाब करे।

कबीरा नम्बर 46 : ज़रूरत न होने के बा वुजूद मह़ज़ फ़ख़्र की बिना पर इल्म, इबादात या कुरआन फ़हमी का दा'वा करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''इस्लाम ग़ालिब होगा यहां तक कि ताजिर लोग समुन्दर में कसरत से सफ़र करेंगे और राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में घोड़े कुलैलें करेंगे (या'नी खुशी से दाईं बाईं जानिब उछलते कूदते फिरेंगे) फिर कुरआन पढ़ने वाली एक क़ौम ज़ाहिर होगी, वोह कहेंगे

www.dawateislami.net

हम से बड़ा क़ारी कौन है ? हम से बड़ा आ़लिम कौन है ? हम से बड़ा फ़क़ीह कौन है ? फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मुख़ातब कर के इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या इन लोगों में कोई भलाई है ?" तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की "अल्लाह और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى الله تعالٰى عليه واٰله وسلّم ही बेहतर जानते हैं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह लोग तुम में से ही होंगे और वोही जहन्नम का ईंधन हैं।"

(المعجم الاوسط،الحديث:٦٢٤٢،ج٤،ص٣٦٠)

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक रात मक्कए मुकर्रमा में खड़े हो कर तीन मरतबा इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क्या मैं ने तेरा पैग़ाम नहीं पहुंचाया ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ खड़े हो गए चूंकि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बेह़द दर्द मन्द थे लिहाज़ा अ़र्ज़ की "जी हां ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की रग़बत दिलाई, इस मुआ-मले में ख़ूब कोशिश की और ख़ैर ख़्वाही से काम लिया।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ईमान ज़रूर ग़ालिब आएगा यहां तक कि कुफ़्र अपनी जगहों की त़रफ़ लौट जाएगा और समुन्दर इस्लाम से भर जाएंगे और लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा जिस में वोह कुरआने पाक सीखेंगे और इस की क़िराअत करेंगे, फिर कहेंगे हम ने कुरआने पाक पढ़ा और दूसरों को सिखाया तो हम से बेहतर कौन है ? क्या इन लोगों में कोई भलाई है ?" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन होंगे ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह तुम में से ही होंगे और वोही लोग जहन्नम का ईंधन बनेंगे।" (المعجم الكبير،الحديث:١٣٠١٩،ج١٢،ص١٩٤)

《3》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपने बारे में कहे : "मैं आ़लिम हूं तो वोह जाहिल है।" (المعجم الاوسط،الحديث:٦٨٤٦،ج٥،ص١٣٩)

तम्बीह :

इस गुनाह को इन मज़्कूरा कुयूदात की वजह से कबीरा शुमार किया गया है जो मैं ने अहादीसे मुबा-रका से बयान की हैं, और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के कलाम के क़ियास की रू से भी येह बईद नहीं क्यूं कि जब उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने तकब्बुर की वजह से इज़ार लटकाने को कबीरा गुनाह शुमार किया तो इस गुनाह का कबीरा होना ज़ियादा औला है क्यूं कि येह उस से ज़ियादा क़बीह़ और फ़ोह़्श है, दीगर इबादात को इस पर क़ियास करना भी दीगर कुयूदात के साथ ज़ाहिर है और मैं ने उ़न्वान में "**नाहक़ और बिग़ैर ज़रूरत**" की क़ैद के ज़रीए इस बात से एहतिराज़ किया है कि अगर कोई आ़लिम ऐसे शहर में जाए जहां के बासी उस के इ़ल्म और इताअ़त को न जानते हों तो उसे इस बात का इख़्तियार है कि उन के सामने इस निय्यत से अपना इ़ल्म व तक़्वा ज़ाहिर करे कि वोह

www.dawateislami.net

लोग इसे क़बूल कर लें और इस से नफ़्अ़ उठाएं, इस की मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह फ़रमान जिसे कुरआने पाक में यूं बयान किया गया है :

اِجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ۝ (پ۱۳، یوسف:۵۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं ह़िफ़ाज़त वाला इ़ल्म वाला हूं।

इसी त़रह़ अगर कोई जाहिल या दुश्मनी रखने वाला उस के इ़ल्म का इन्कार कर दे तो उसे इस आयते मुबा-रका से इस्तिद्लाल करते हुए अपने इ़ल्म के बारे में बताने का इख़्तियार है ताकि उस दुश्मनी रखने वाले की नाक ख़ाक में मिल जाए और लोग उसे क़बूल करते हुए उस के उ़लूम से नफ़्अ़ उठाएं।

कबीरा नम्बर 47 : उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی वग़ैरा के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ करना और इन्हें हलका जानना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन के हुक़ूक़ को मुनाफ़िक़ ही हलका जानेगा : (1) जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया (2) आ़लिमे दीन और (3) इन्साफ़ पसन्द बादशाह।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۸۱۹، ج۸، ص۲۰۲)

﴾2﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने हमारे बड़ों की इ़ज़्ज़त न की, हमारे छोटों पर रह़्म न किया और हमारे उ़-लमा (के हुक़ूक़) न पहचाने वोह मेरी उम्मत में से नहीं।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، الحدیث: ۲۲۸۱۹، ج۸، ص۴۱۲)

﴾3﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने हमारे छोटों पर रह़्म न किया और हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न की वोह हम में से नहीं।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة الصبیان، الحدیث: ۱۹۲۰، ص۱۸۴۵)

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इ़ल्म सीखो, इ़ल्म के लिये सकीना (या'नी इत़्मीनान) और वक़ार सीखो और जिस से इ़ल्म सीखो उस के लिये तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी भी करो।" (المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۱۸۴، ج۴، ص۳۴۲)

www.dawateislami.net

﴾5﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ मांगी "खुदाया ! मैं वोह ज़माना न पाऊं या (ऐ मेरे सहाबा) तुम वोह ज़माना न पाओ कि जिस में आलिम की पैरवी और हलीम (या'नी बुर्द-बार) से हया न की जाएगी, उस ज़माने के लोगों के दिल अ-जमिय्यों के और ज़बान अ-रबों की होगी।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند الانصار،الحديث: ٢٢٩٤٢،ج٨،ص٤٤٣)

﴾6﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ब-र-कत तुम्हारे अकाबिर के साथ है।"

(المستدرك،كتاب الايمان،باب البركة مع الاكابر،الحديث:٢١٨،ج١،ص٢٣٨)

﴾7﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो बड़े की इज़्ज़त न करे, छोटे पर रहम न करे, नेकी का हुक्म न दे और बुराई से मन्अ न करे वोह हम में से नहीं।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن عباس،الحديث: ٢٣٢٩،ج١،ص٥٥٤)

﴾8﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने हमारे छोटों पर रहम न किया और हमारे बड़ों का हक़ न पहचाना वोह हम में से नहीं।" (جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة السيان،الحديث:١٩٢٠،ص١٨٤٥)

तम्बीह :

मुन्दरिजए बाला अहादीस के ज़ाहिर के ए'तिबार से इसे गुनाहे कबीरा कहा गया है और येह क़ियास के तौर पर बईद भी नहीं अगर्चे उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इस का ज़िक्र नहीं किया क्यूं कि जिस तरह उन्हों ने ग़ीबत के मुआ-मले में उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى और दीगर लोगों में तफ़रीक़ की है इसी तरह इस्तिख़्फ़ाफ़ या'नी हुक़ूक़ के हलका जानने के मुआ-मले में भी इन में फ़र्क़ है, अन्क़रीब औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى को ईज़ा देने के बयान में इस बारे में सरीह अहादीस आएंगी क्यूं कि वोह हक़ीक़तन बा अमल उ-लमा ही हैं।

﴾9﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ अता फ़रमाता है।" (المعجم الكبير،الحديث: ٨٧٥٦،ج٩،ص١٥١)

﴾10﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे दीन में फ़क़ीह बना देता है और रुश्दो हिदायत इल्हाम फ़रमा देता है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند الشاميين،الحديث: ١٦٨٨٠،ج٦،ص٢٣،بدون "ألهمه رشده")

﴾11﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सब से बड़ी इबादत फ़िक़्ह या'नी दीन में ग़ौरो फ़िक्र करना और दीन की सब से अफ़्ज़ल चीज़ तक़्वा या'नी परहेज़ गारी है।" (مجمع الزوائد، كتاب العلم، باب فی فضل العلم، الحديث:٤٧٩،ج١،ص٣٢٥)

www.dawateislami.net

《12》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इल्म की फ़ज़ीलत इबादत की फ़ज़ीलत से बेहतर है और तुम्हारे दीन का बेहतरीन अमल परहेज़ गारी है, जो शख़्स किसी रास्ते पर इल्म की तलाश में निकलता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की वजह से उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है, बेशक फ़िरिश्ते तालिबे इल्म से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं, आलिमे दीन के लिये ज़मीन व आस्मान वाले यहां तक कि पानी में मछलियां भी इस्तिग़फ़ार करती हैं, आलिम को आबिद पर ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है जैसी चांद को दीगर सितारों पर है, उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वारिस हैं, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि वोह तो इल्म का वारिस बनाते हैं, लिहाज़ा जिस ने इल्म हासिल किया उस ने पूरा हिस्सा पा लिया।"

(جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه......الخ،الحدیث:۲۶۸۲،ص۱۹۲۲) (المستدرك،کتاب العلم، باب فضل العلم......الخ،الحدیث:۳۲۰،ج۱،ص۲۸۳)

《13》...... हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन अस्साल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इल्म हासिल करने के लिये हाज़िर हुवा हूं।" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तालिबे इल्म को मरहबा (या'नी कुशादा दिली से ख़ुश आ-मदीद) ! बेशक तालिबे इल्म को फ़िरिश्ते अपने परों से ढांप लेते हैं, फिर वोह तालिबे इल्म से त-लबे इल्म की वजह से महब्बत करते हुए क़ितार दर क़ितार आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं।" (المعجم الكبير،الحدیث:۷۳۴۷،ج۸،ص۵۴)

《14》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! तेरा सुब्ह के वक़्त किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक आयत सीखने के लिये निकलना तेरे लिये 100 रक्अत अदा करने से बेहतर है और तेरा सुब्ह के वक़्त इल्म का एक बाब सीखने के लिये निकलना ख़्वाह तू उस पर अमल करे या न करे तेरे लिये 1000 रक्अत अदा करने से बेहतर है।" (سنن ابن ماجه،ابواب السنة ، باب ثواب معلم الناس خیرا،الحدیث:۲۱۹،ص۲۴۹۰)

《15》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दुन्या मल्ऊन है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र, उस के वली या'नी दोस्त और दीनी इल्म पढ़ने और पढ़ाने वाले के सिवा इस की हर चीज़ भी मल्ऊन है।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الزهد ، باب مثل الدنیا،الحدیث:۴۱۱۲،ص۲۷۲۷)

《16》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मौत के बा'द मोमिन को उस के अमल और नेकियों में से जो चीज़ें हासिल होती हैं उन में से चन्द येह हैं : (1) उस का वोह इल्म जो उस ने फैलाया (2) नेक बच्चा छोड़ कर मरा (3) मुस्हफ़ या'नी कुरआने करीम जिसे विरसे में छोड़ा (4) मस्जिद बनाई (5) मुसाफ़िर के लिये मकान बना दिया (6) नहर जारी कर दी और (7) अपनी ज़िन्दगी और सिह्हत में अपने माल से ऐसा स-दक़ा निकाला जो उसे मौत के बा'द भी मिलता रहे।"

(سنن ابن ماجه، ابواب السنة ، باب ثواب معلم الناس خیرا،الحدیث:۲۴۲،ص۲۴۹۲)

www.dawateislami.net

《17》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आदमी अपने बा'द जो बेहतरीन चीज़ें छोड़ता है वोह येह 3 चीज़ें हैं : (1) नेक बच्चा जो उस के लिये दुआ करे (2) स-द-क़ए जारिया जिस का अज्र उसे मिलता रहे और (3) वोह इल्म जिस पर उस के बा'द भी अमल किया जाता रहे।" (المرجع السابق، الحديث: ٢٤١،ص٢٤٩٢)

《18》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इस उम्मत के उ-लमा दो त़रह़ के फ़र्द हैं : (1) वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इल्म अ़ता फ़रमाया तो उस ने उसे लोगों के लिये ख़र्च किया और उस के इवज़ न तो कोई ख़्वाहिश पूरी की और न ही उस के बदले माल ख़रीदा, येही वोह शख़्स है जिस के लिये समुन्दर की मछलियां, ख़ुश्की के जानवर और फ़ज़ा में परन्दे इस्तिग़फ़ार करते हैं (2) वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इल्म अ़ता फ़रमाया तो उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों से छुपाया, उस के ज़रीए ख़्वाहिश पूरी की और माल ख़रीदा, येही वोह शख़्स है जिसे क़ियामत के दिन आग की लगाम पहनाई जाएगी और एक मुनादी निदा देगा : "येह वोह शख़्स है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इल्म अ़ता फ़रमाया तो इस ने उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों से छुपा लिया और उस के ज़रीए ख़्वाहिशात पूरी कीं और माल ख़रीदा।" उस के ह़िसाब से फ़ारिग़ होने तक येही निदा होती रहेगी।"

(المعجم الاوسط، الحديث: ٧١٨٧،ج٥، ص٢٣٧)

《19》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आ़लिम को आ़बिद पर ऐसी फ़ज़ीलत ह़ासिल है जैसी फ़ज़ीलत मुझे तुम्हारे अदना शख़्स पर ह़ासिल है, और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्ते और ज़मीन व आस्मान वाले यहां तक कि च्यूंटियां अपने सूराख़ों में और मछलियां पानी में लोगों को ख़ैर सिखाने वाले की भलाई की ख़्वाहां रहती हैं।"

(جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادة،الحديث:٢٦٨٥،ص١٩٢٢)

《20》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى से इर्शाद फ़रमाएगा : मैं ने अपना इल्म और ह़िल्म तुम्हें इसी लिये दिया था कि मैं तुम्हारी ख़त़ाएं मुआफ़ करने का इरादा रखता था और मुझे कोई परवाह नहीं।" (الآلئ المصنوعة، كتاب العلم، ج١،ص٢٠٢،مفهومًا)

इस ह़दीसे पाक में इल्म और ह़िल्म की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ इज़ाफ़त उन उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के बा अमल और मुख़्लिस होने की सराह़त करती है।

《21》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इल्म दो त़रह़ के हैं, वोह इल्म जो दिल में हो और येही इल्म नाफ़ेअ़ होता है, जब कि वोह इल्म जो ज़बान पर है वोही आदमी पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत है।"

(الترغيب والترهيب، كتاب العلم، باب الترغيب الرحلة فی طلب العلم، الحديث: ١٤٠،ج١،ص٧٤)

www.dawateislami.net

《22》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो भलाई सीखने या सिखाने के लिये मस्जिद की त़रफ़ जाए उसे कामिल ह़ज करने वाले जैसा सवाब मिलेगा।" (المعجم الكبير،الحديث:٧٤٧٣،ج٨،ص٩٤)

《23》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो इ़ल्म की तलाश में निकला वोह वापस लौटने तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में है।"

(جامع الترمذی، ابواب العلم، باب فضل طلب العلم،الحديث:٢٦٤٧،ص١٩١٨)

《24》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इ़ल्म सीखने निकलता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल देता है और मलाएका उस के लिये अपने बाज़ू बिछा देते हैं और आस्मान के फ़िरिश्ते और समुन्दर की मछलियां उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करती हैं, मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "आ़लिम को आ़बिद पर ऐसी फ़ज़ीलत ह़ासिल है जैसी चौदहवीं रात के चांद को आस्मान के छोटे सितारे पर।"

(شعب الايمان،باب فی طلب العلم،الحديث: ١٦٩٩،ج٢،ص٢٦٣)

《25》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वारिस हैं क्यूं कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि इ़ल्म का वारिस बनाते हैं, लिहाज़ा जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया उस ने पूरा ह़िस्सा पा लिया।"

(سنن ابی داؤد،كتاب العلم، باب فی فضل العلم، الحديث: ٣٦٤١،ص١٤٩٣)

《26》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आ़लिम की मौत ऐसी मुसीबत है जिस का इज़ाला नहीं हो सकता और येह ऐसा ख़ला है जिसे पुर नहीं किया जा सकता गोया वोह एक सितारा था जो मांद पड़ गया और एक क़बीले की मौत आ़लिमे दीन की मौत से ज़ियादा हलकी है।" (شعب الايمان، باب فی طلب العلم،الحديث: ١٦٩٩،ج٢،ص٢٦٤،تقدما تأخرا)

《27》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को ख़ुश ह़ाल रखे जिस ने मेरा कलाम सुना फिर उसे याद कर लिया और जैसा सुना था वैसा ही आगे पहुंचाया क्यूं कि बसा अवक़ात इ़ल्म के ह़ामिल कुछ अफ़राद अपने से ज़ियादा फ़क़ीह लोगों तक इ़ल्म पहुंचाते हैं और बसा अवक़ात इ़ल्म के ह़ामिल कुछ अफ़राद फ़क़ीह नहीं होते।" (سنن ابن ماجه ، ابواب السنة ، باب من بلغ علماء ،الحديث: ٢٣٦،ص٢٤٩١،تقدما تأخرا)

《28》...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन में किसी मुसल्मान का दिल ख़ियानत नहीं करता : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास के साथ अ़मल करना, (2) ह़ुक्मरान की ख़ैर ख़्वाही और (3) जमाअ़त का लाज़िम पकड़ना, क्यूं कि इन की दुआ़ राएगां नहीं जाती।"

(المستدرك،كتاب العلم،الحديث:٣٠٢،ج١،ص٢٧٤، بتغيرٍ قليلٍ)

www.dawateislami.net

﴾29﴿...... जब कि एक और रिवायत में है : "इन की दुआ इन के बा'द वालों की हिफ़ाज़त करती है।" (المعجم الكبير،الحديث:١٥٤١،ج٢،ص١٢٦)

﴾30﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस की निय्यत दुन्या (की त़लब) हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम मुन्तशिर कर देता है और उस की तंगदस्ती उस के सामने कर देता है ह़ालां कि उसे दुन्या से वोही कुछ मिलेगा जो उस के लिये लिखा जा चुका है, और जिस की निय्यत आख़िरत (की त़लब) हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम यक्जा फ़रमा देता है और उस के दिल को ग़ना से भर देता है और दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आती है।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب الزهد ، باب الهم بالدنيا ،الحديث: ٤١٠٥،ص٢٧٢٦)

﴾31﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी भलाई की त़रफ़ रहनुमाई की उसे उस पर अ़मल करने वाले जितना सवाब मिलेगा"

(جامع الترمذی ، ابواب العلم،باب ماجاء فی ان الدال علی الخير......الخ،الحديث:٢٦٧١،ص١٩٢١)

﴾32﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "भलाई की रहनुमाई करने वाला उस भलाई पर अ़मल करने वाले की त़रह़ है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुसीबत ज़दा की मदद को पसन्द फ़रमाता है।" (مسند ابی يعلی، مسند انس بن مالك، الحديث: ٤٢٨٠،ج٣،ص٤٥٢)

﴾33﴿...... हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने हिदायत की त़रफ़ बुलाया उसे उस हिदायत की पैरवी करने वालों जितना सवाब मिलेगा और उन के सवाब में भी कोई कमी न होगी।"

(صحيح مسلم، كتاب العلم، باب من سن سنة حسنة......الخ،الحديث: ٦٨٠٤،ص١١٤٤)

कबीरा नम्बर **48/49 :**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर जान बूझ कर झूट बांधना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ط (پ٢٤،الزمر:٦٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क़ियामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्हों ने अल्लाह पर झूट बांधा कि उन के मुंह काले हैं।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''इन से मुराद वोह लोग हैं जो कहते हैं कि अगर हम चाहेंगे तो येह काम करेंगे और अगर चाहेंगे तो नहीं करेंगे।''

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने जान बूझ कर मुझ पर झूट बांधा उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''

(صحیح البخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب الی......الخ،الحدیث: ۱۱۰،ص۱۲)

इस ह़दीसे मुबा-रका की बहुत सी सहीह़ अस्नाद हैं जो ह़द्दे तवातुर तक पहुंचती हैं क्यूं कि इस का मा'ना क़त़ई त़ौर पर साबित है इस लिये कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ कोई बात मन्सूब करने वाले ने अगर झूट न बोला तब तो वाज़ेह़ है कि वोह सच्चा है, वरना बेशक उस ने दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर झूट बांधा और इस वईद का मुस्तह़िक़ ठहरा।

﴾2﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मेरी त़रफ़ मन्सूब कर के कोई बात बयान की ह़ालां कि वोह जानता है कि येह झूट है तो वोह झूटों में से एक है।''

(صحیح مسلم، مقدمۃ الکتاب ،للامام مسلم، باب وجوب الروایۃ......الخ،ص۶۷۴)

﴾3﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मुझ पर झूट बांधना किसी और पर झूट बांधने जैसा नहीं, लिहाज़ा जिस ने मुझ पर झूट बांधा वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''

(المرجع السابق، باب تغلیظ الکذب......الخ،الحدیث: ۵،ص۶۷۴)

﴾4﴿...... एक मर्तबा सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे ख़ु-लफ़ा पर रह़म फ़रमा।'' हम ने अ़र्ज़ की ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के ख़ु-लफ़ा कौन हैं ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मेरे बा'द आएंगे और मेरी अहादीस रिवायत करेंगे और लोगों को भी सिखाएंगे।''

(المعجم الاوسط، الحدیث: ۵۸۴۶،ج۴،ص۲۳۹)

﴾5﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से बड़ा गुनाह येह है कि आदमी मेरी त़रफ़ ऐसी बात मन्सूब करे जो मैं ने नहीं कही।''

(المعجم الکبیر،الحدیث:۲۳۷،ج۲۲،ص۹۸)

﴾6﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब कोई क़ौम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब लिखने और इस का आपस में तक्रार करने के लिये जम्अ़ होती है तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मेहमान होती है और फ़िरिश्ते उन्हें उन के उठने या दूसरी बात में

www.dawateislami.net

मश्गूल होने तक ढांपे रहते हैं। जो आ़लिम मौत के ख़ौफ़ से इ़ल्म की तलाश में निकलता है या ज़ाएअ़ हो जाने के ख़ौफ़ से इ़ल्म को लिख लेता है तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में आ-मदो रफ़्त रखने वाले की त़रह़ है और जिस का अ़मल उसे सुस्त कर दे उस का नसब उसे तेज़ नहीं कर सकता।"

(المعجم الكبير،الحديث:٨٤٤،ج٢٢،ص٣٣٧،عالم بدله"عبد")

﴾7﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब आदमी का इन्तिक़ाल हो जाता है तो 3 आ'माल के इ़लावा उस के तमाम आ'माल मुन्क़तेअ़ हो जाते हैं : (1) स-द-क़ए जारिया (2) ऐसा इ़ल्म जिस से नफ़्अ़ उठाया जाए और (3) नेक बच्चा जो उस के लिये दुआ़ करे।" (صحيح مسلم،كتاب الوصية ، باب مايلحق الانسان......الخ،الحديث:٤٢٢٣،ص٩٦٣)

तम्बीह :

इन दोनों को कबीरा गुनाहों में शुमार करने की वजह उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की वोह सराह़त है जो इन के कलाम से ज़ाहिर है बल्कि शैख़ अबू मुह़म्मद जुवैनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना **कुफ़्र** है।" जब कि बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى इर्शाद फरमाते हैं : उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के एक गुरौह का ख़याल है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना ऐसा कुफ़्र है, जो इन्सान को मिल्लते इस्लामिया से ख़ारिज कर देता है और बिला शुबा ह़राम को ह़लाल या ह़लाल को ह़राम क़रार देने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना कुफ़्र मह़्ज़ है, जब कि हमारा कलाम तो ह़राम को ह़लाल या ह़लाल को ह़राम ठहराने के इ़लावा मुआ़-मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर झूट बांधने के बारे में है।

ह़ज़रते सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि बहुत सी अह़ादीसे मुबा-रका में येह वई़द आई है : "जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूट बांधा वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।" और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह ह़दीसे मुबा-रका ह़द्दे तवातुर तक पहुंच चुकी है।"

सय्यिदुना बज़्ज़ार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इस ह़दीसे मुबा-रका को तक़रीबन 40 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से रिवायत किया है।" अ़ल्लामा इब्ने सलाह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह ह़दीसे मुबा-रका ह़द्दे तवातुर तक पहुंच चुकी है, 80 के लगभग सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त ने इसे रिवायत किया है।"

www.dawateislami.net

हाफ़िज़ अस्क़लानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस ह़दीसे पाक की अस्नाद को एक ज़ख़ीम जिल्द में जम्अ़ किया और इर्शाद फ़रमाया : "70 से ज़ाइद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस ह़दीस के रावी हैं।" और फिर इन के रावियों में अ़-श-रए मुबश्शरा में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इलावा 9 सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अस्मा ज़िक्र फ़रमाए, त़-बरानी और इब्ने मुन्दा ने इस के रावियों को 87 तक पहुंचाया है जिन में अ़-श-रए मुबश्शरा भी शामिल हैं।

कबीरा नम्बर 50 : बुरा त़रीक़ा राइज करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हम दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरे ख़िदमत थे कि एक बरहना क़ौम ह़ाज़िर हुई, उन्हों ने सिर्फ़ ऊन की धारीदार चादरें (या'नी उन चादरों को सर की जगह से काट कर बत़ौरे लिबास ओढ़ा हुवा था) या फिर इबाएं पहन रखी थीं, वोह सब के सब बनी मुज़िर से थे और उन्हों ने गले में तलवारें लटका रखी थीं, उन की फ़ाक़ा ज़दा ह़ालत देख कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए अक़्दस मु-तग़य्यर हो गया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दौलत कदे में तशरीफ़ ले गए, फिर जब बाहर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अज़ान देने का हुक्म फ़रमाया, उन्हों ने अज़ान दी और इक़ामत पढ़ी, फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ाई और ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाते हुए येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِیْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ۝ (پ۴،النسآء:۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी में से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औ़रत फैला दिये और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।

और सूरए ह़श्र की येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ (پ۲۸،الحشر:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा।

फिर इर्शाद फ़रमाया : "कोई दीनार, दिरहम, लिबास और गन्दुम और खजूरों के साअ़ में से स-दक़ा दे।" यहां तक कि फ़रमाया : "अगर्चे एक खजूर ही स-दक़ा करे।" तो एक अन्सारी एक थैला ले कर ह़ाज़िर हुवा, उस का हाथ उसे उठा नहीं पा रहा था बल्कि वोह उसे उठाने से आ़जिज़ था,

www.dawateislami.net

फिर लोग लगातार आने लगे यहां तक कि मैं ने लिबास और कपड़े के दो ढेर देखे और देखा कि सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का चेह्रए मुबारक ऐसे चमक उठा जैसे तेल लगा दिया गया हो (या'नी जैसे चांदी पर सोने का पानी चढ़ा दिया गया हो येह दोनों ख़ुशी और सुरूर की शिद्दत की त़रफ़ इशारा हैं) फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा राइज किया, उस के लिये उसे राइज करने और अपने बा'द उस पर अ़मल करने वालों का सवाब है, और उन अ़मल करने वालों के सवाब में से भी कुछ कम न होगा, जिस ने इस्लाम में बुरा त़रीक़ा राइज किया उस पर उस त़रीक़े को राइज करने और उस पर अ़मल करने वालों का गुनाह है और उस पर अ़मल करने वालों के गुनाह में भी कोई कमी न होगी।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب الحث علی الصدقۃ......الخ،الحدیث: ۲۳۵۱،ص۸۳۸)

﴾2﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अच्छा त़रीक़ा जारी किया, फिर वोह राइज हो गया तो उस के लिये उस का अपना अज्र और उस त़रीक़े की पैरवी करने वालों का अज्र भी है, नीज़ उन के अज्र में भी कोई कमी न होगी, और जिस ने बुरा त़रीक़ा जारी किया फिर वोह राइज हो गया तो उस पर अपना गुनाह तो है ही (साथ ही साथ) उस त़रीक़े की पैरवी करने वालों का गुनाह भी मिलेगा, नीज़ उन पैरवी करने वालों के गुनाह में कोई कमी न होगी।" (مجمع الزوائد، کتاب العلم، باب فیمن سن خیراً......الخ،الحدیث: ۷۷۰،ج۱،ص۴۰۹)

﴾3﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अच्छा त़रीक़ा जारी किया उस की ज़िन्दगी और मौत के बा'द जब तक उस त़रीक़े पर अ़मल किया जाता रहेगा उसे उस का सवाब मिलता रहेगा, और जिस ने बुरा त़रीक़ा जारी किया जब तक उसे छोड़ न दिया जाए उसे उस का गुनाह मिलता रहेगा, और जो जिहाद करते हुए मरेगा क़ियामत के दिन उठने तक उसे मुजाहिद का सवाब मिलता रहेगा।" (المعجم الکبیر،الحدیث: ۱۸۴،ج۲۲،ص۷۴)

﴾4﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मेरे (विसाले ज़ाहिरी के) बा'द मेरी किसी मिटी हुई सुन्नत को ज़िन्दा किया तो उसे उस सुन्नत पर अ़मल करने वालों की मिस्ल सवाब मिलेगा और उन अ़मल करने वालों के सवाब में भी कोई कमी न होगी, और जिस ने गुमराही वाली बिदअ़त ईजाद की जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم राज़ी नहीं तो उसे उस पर अ़मल करने वालों जितना गुनाह मिलेगा और उन अ़मल करने वालों के गुनाह में भी कोई कमी न होगी।" (جامع الترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی الاخذبالسنۃ......الخ،الحدیث:۲۶۷۷،ص۱۹۲۱)

﴾5﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी शै की त़रफ़ दा'वत दी उसे क़ियामत के दिन उस की दी हुई दा'वत के साथ इतनी देर खड़ा किया जाएगा जितनी देर उस ने वोह दा'वत दी होगी अगर्चे एक शख़्स ने एक ही शख़्स को दा'वत दी हो।"

(سنن ابن ماجہ ، ابواب السنۃ ، باب من سنۃ سنۃ حسنۃ......الخ،الحدیث: ۲۰۸،ص۲۴۹۰)

www.dawateislami.net

《6》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "येह भलाई के काम (आख़िरत के) ख़ज़ाने हैं और इन ख़ज़ानों की कुछ कुन्जियां भी हैं, लिहाज़ा ख़ुश ख़बरी है उस बन्दे के लिये जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अच्छाई व भलाई की कुन्जी और बुराई व शर का ताला बना दे और हलाकत है उस बन्दे के लिये जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बुराई की कुन्जी और भलाई का ताला बना दिया हो।" (سنن ابن ماجه ، ابواب السنة ، باب من سن سنة حسنة......الخ،الحديث: ۲۰۸،ص ۲٤۹۰)

तम्बीह :

इस गुनाह को इन अहादीसे मुबा–रका में बयान कर्दा सख़्त वईद की बिना पर कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और वोह वईद गुनाहों का दुगना होना है। जो कि अज़ाब के इज़ाफ़े का सबब है, येह इज़ाफ़ा इतना ज़ियादा होगा कि हिसाब इसे शुमार में लाने से आजिज़ होगा।

सुवाल : अगर वोह राइज कर्दा मा'सियत कबीरा हो तो भी इसे कबीरा गुनाह कहना दुरुस्त नहीं, और अगर कबीरा न हो तो इसे कबीरा कहना इश्काल में डालता है।

जवाब : इसे कबीरा गुनाह पर मह़मूल करना ज़ियादा मुनासिब है, अगर्चे मैं ने किसी को इस बात की सराहत करते हुए नहीं पाया कि अगर उस ने सग़ीरा गुनाह राइज किया तो उस के कबीरा होने में कोई इश्काल नहीं क्यूं कि जब उस ने ग़ैर के लिये इस गुनाह को राइज किया और फिर उस में उस की पैरवी भी की गई तो येह ज़ियादा बुरा हो गया और इस की सज़ा भी दुगनी हो गई, इस बिना पर वोह कबीरा गुनाह की तरह बल्कि इस से भी ज़ियादा सख़्त हो गया क्यूं कि कबीरा का गुनाह तो उस से फ़ारिग़ होने पर ख़त्म हो जाता है लेकिन इस तरह राइज कर्दा गुनाह हमेशा बढ़ता रहता है, लिहाज़ा साबित हुवा कि इन दोनों सूरतों में बहुत फ़र्क़ है, फिर मैं ने बहुत से उ–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی को देखा कि उन्हों ने दीन में नई बात का इज़ाफ़ा करने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया और इस सहीह़ ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल किया कि

《7》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने (दीन में) कोई नई बात ईजाद की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाए।"

इब्ने क़य्यिम[1] **से मन्क़ूल है :** "येह ला'नत इसी ईजाद शुदा बात के मुख़्तलिफ़ होने से मुख़्तलिफ़ हो जाती है, जब वोह बात बड़ी हो तो गुनाह भी बड़ा हो जाएगा।"

---

1 : **इब्ने क़य्यिम इब्ने तीमिया** का शागिर्दे ख़ास था, इन दोनों के बारे में **इमाम ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर हैतमी मक्की शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी किताब **फ़तावा ह़दीसिया** में फ़रमाते हैं : "इब्ने तीमिया और इस के शागिर्द इब्ने क़य्यिम जूज़िया वग़ैरा की किताबों में जो कुछ ख़ुराफ़ात हैं इन से ख़ुद को बचा कर रखना क्यूं कि येह वोह लोग हैं जिन्हों ने अपनी ख़्वाहिशात को अपना मा'बूद बना लिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जान कर इन को गुमराहियत में छोड़ दिया और इन के कानों और दिल पर मोहर लगा दी और.....(बक़िय्या हाशिया अगले सफ़्ह़ा पर........)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना इमाम ज़हबी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं येह ह़दीस, ''जिस ने गुमराही की दा'वत दी या बुरा त़रीक़ा राइज किया'' भी इसी की ताईद करती है। और इस में हमारी बयान कर्दा तफ़्सील की तसरीह़ मौजूद है।

कबीरा नम्बर **51 :** **सुन्नत छोड़ देना**

﴾**1**﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** ''एक फ़र्ज़ नमाज़ अपने बा'द वाली फ़र्ज़ नमाज़ के दरमियान के गुनाहों के लिये, एक जुमुआ अगले जुमुआ तक और एक (माहे) र-मज़ान अगले (माहे) र-मज़ान तक के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।'' फिर इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया **:** ''मगर येह आ'माल तीन गुनाहों को नहीं मिटाते, वोह गुनाह येह हैं **:** (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) अ़ह्द तोड़ देना और (3) सुन्नत छोड़ना।'' हम ने अ़र्ज़ की **:** ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! शिर्क को तो हम ने जान लिया, अ़ह्द तोड़ने और सुन्नत छोड़ने से क्या मुराद है ?'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** ''अ़ह्द तोड़ने से मुराद है कि तुम दाएं हाथ से किसी की बैअ़त करो फिर उस की मुख़ा-लफ़त कर के अपनी तलवार से उसे क़त्ल कर दो और सुन्नत छोड़ने से मुराद जमाअ़त से निकलना है।''

(المستدرک،کتاب العلم، باب الصلوۃ المکتوبۃ......الخ،الحدیث:۴۲۰،ج۱،ص۳۲۳)

इमाम ह़ाकिम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं **:** ''येह ह़दीसे मुबा-रका इमाम मुस्लिम की शराइत़ के मुत़ाबिक़ सह़ीह़ है अगर्चे शैख़ैन ने इस को रिवायत नहीं किया और अबू दावूद और अह़मद की येह रिवायत भी इस की ताईद करती है कि,

﴾**2**﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है **:** ''जिस ने एक बालिश्त भर जमाअ़त को छोड़ा बेशक उस ने इस्लाम का पट्टा अपनी गरदन से उतार दिया।''

(سنن ابی داؤد، کتاب السنۃ ، باب فی الخوارج، الحدیث: ۴۷۵۸،ص۱۵۷۳)

(.....बक़िय्या ह़ाशिया) इन की आंखों पर पर्दा डाल दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कौन है जो इन को हिदायत दे और (अफ़्सोस) कैसे इन बे दीनों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़ुदूद से तजावुज़ किया और बिदअ़तों में इज़ाफ़ा किया और शरीअ़त व ह़क़ीक़त की दीवार में सूराख़ कर दिया। और येह समझ बैठे कि हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हिदायत पर हैं जब कि वोह ऐसे नहीं हैं बल्कि वोह तो शदीद गुमराही व घटिया आ़दात से मुत्तसिफ़ हैं और इन्तिहाई सख़्त सज़ा व ख़सारे के मुस्तह़िक़ हैं और उन्हों ने झूट व बोहतान की इन्तिहा कर दी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के पैरोकारों को ज़लीलो रुस्वा करे और इन जैसों के वुजूद से ज़मीन को पाक करे।'' (اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم) (فتاوی الحدیثیہ ،ص ۲۷۱)

www.dawateislami.net

हज़रते जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस से मुराद बिदअ़त के पैरौकार हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस से आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमाए।" आमीन

《3》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने कोई नया काम ईजाद किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाए।"

(صحيح البخاری، كتاب فضائل مدينه، باب حرم المدينة، الحديث: ١٨٦٧، ص١٤٦، تقدماو تأخرا)

《4》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "छ शख़्स ऐसे हैं जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और हर मुस्तजाबुद्दा'वात नबी ला'नत फ़रमाता है : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब में ज़ियादती करने वाला (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर इस लिये ज़बर दस्ती त़ाक़त के ज़रीए मुसल्लत़ हो जाने वाला ताकि जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुअ़ज़्ज़ज़ किया उन्हें ज़लील करे और जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रुस्वा किया है उन्हें मुअ़ज़्ज़ज़ बनाए (4) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुरमत को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरी औलाद के मुआ़-मले में उस चीज़ को ह़लाल समझने वाला जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम किया (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।"

(المستدرك، كتاب التفسير، سورة والليل اذا يغشى، باب ستة لعنهم الله ......الخ، الحديث: ٣٩٩٦، ج٣، ص٣٧٥)

《5》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह फैरा वोह मुझ से नहीं।"

(صحيح البخاری، كتاب النكاح، باب الترغيب فی النكاح، الحديث: ٥٠٦٣، ص٤٣٨)

《6》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो उम्मत अपने नबी के बा'द अपने दीन में कोई बिदअ़त ईजाद कर लेती है, वोह उस जैसी सुन्नत को ज़ाएअ़ कर बैठती है।" (المعجم الكبير، الحديث: ١٧٨، ج١٨، ص٩٩)

《7》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आस्मान के साए तले नहीं कोई ऐसा मा'बूद पूजा जाता जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पैरवी की जाने वाली नफ़्सानी ख़्वाहिश से (गुनाह के ए'तिबार से) बड़ा हो।" (المعجم الكبير، الحديث: ٧٥٠٢، ج٨، ص١٠٣)

तम्बीह :

शैख़ुल इस्लाम सलाह़ उ़लाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने क़वाइद में जो सराह़त की है उस की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, जब कि अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कबीरा गुनाहों को शुमार करते हुए लिखते हैं : "सोलहवां कबीरा गुनाह बिदअ़त है और तर्के सुन्नत से भी येही मुराद है।"

www.dawateislami.net

सुन्नत छोड़ने से क्या मुराद है ?

सुन्नत से मुराद वोही त़रीक़ा है जिस पर अहले सुन्नत व जमाअ़त के दो जलीलुल क़द्र इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अश्अ़री और अबू मन्सूर मातरीदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं, और बिदअ़त वोह है जिस त़रीक़े पर इन दो (इमामों) और इन के तमाम पैरौकारों के ए'तिक़ाद के मुख़ालिफ़ बिदअ़ती फ़िर्क़ों में से कोई फ़िर्क़ा है और बिदअ़तियों की मज़म्मत में बहुत सी सह़ीह़ अह़ादीस आई हैं।

बिदअ़तियों की मज़म्मत

﴾8﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने हमारे इस मुआ़-मले (या'नी इस्लाम) में कोई ऐसी नई बात निकाली जो इस में से नहीं तो वोह मरदूद है।"

(صحیح مسلم، کتاب الاقضیۃ،باب نقض الاحکام باطلۃ......الخ،الحدیث:٤٤٩٢،ص٩٨٢)

﴾9﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "सब से अच्छी बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब और सब से बेहतर हिदायत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हिदायत है और सब से बुरे काम नए पैदा होने वाले उमूर हैं।" (صحیح مسلم، کتاب الجمعۃ، باب تخفیف الصلاۃ......الخ،الحدیث: ٢٠٠٥،ص٨١٣)

﴾10﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे तुम पर तुम्हारे सीनों और शर्मगाहों की हलाकत ख़ैज़ ख़्वाहिशों और गुमराह कर देने वाली ख़्वाहिशात का ख़ौफ़ है।" (المسندللامام احمد بن حنبل،الحدیث: ١٩٧٩٤،ج٧،ص١٨١)

﴾11﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नए पैदा होने वाले उमूर से बचते रहो क्यूं कि हर नया काम गुमराही है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب السنۃ، باب فی لزوم السنۃ، الحدیث: ٤٦٠٧،ص١٥٦١)

﴾12﴿...... साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर बिदअ़ती की तौबा को रोक लेता है यहां तक कि वोह उस बिदअ़त को छोड़ दे।" (المعجم الاوسط،الحدیث:٤٢٠٢،ج٣،ص١٦٥) (سنن ابن ماجہ ، ابواب السنۃ، باب اجتناب البدع......الخ،الحدیث:٥٠،ص٢٤٨٠)

﴾13﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तक बिदअ़ती अपनी बिदअ़त छोड़ नहीं देता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का अ़मल क़बूल करने से इन्कार कर देता है।" (سنن ابن ماجہ ، ابواب السنۃ، باب اجتناب البدع والجدل،الحدیث:٥٠،ص٢٤٨٠)

www.dawateislami.net

﴾14﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो किसी बिदअ़ती का रोज़ा, ह़ज, उ़म्रह और जिहाद क़बूल करता है और न उस की कोई फ़र्ज़ या नफ़्ल इबादत क़बूल फ़रमाता है बिदअ़ती इस्लाम से इस त़रह़ निकल जाता है जैसे आटे से बाल निकलता है।" (المرجع السابق،الحديث:٤٩)

﴾15﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक मैं तुम्हारे दरमियान ऐसी रोशन शरीअ़त छोड़ कर जा रहा हूं कि जिस की रातें दिन की त़रह़ रोशन हैं, इस से वोही भटकेगा जो हलाकत में मुब्तला होगा।"

(السنة لابن ابى عاصم،باب ذكر قول النبى عليه السلام تركتكم على مثل البيضاء،الحديث: ٤٨،ص١٨)

﴾16﴿...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवरद गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर अ़मल का जोश होता है और हर जोश की एक इन्तिहा होती है, तो जिस की इन्तिहा मेरी सुन्नत की त़रफ़ होगी वोह हिदायत याफ़्ता होगा, और जिस की इन्तिहा दूसरी जानिब होगी तो वोह हलाक होगा।" (المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن عمرو بن عاص، الحديث: ٦٩٧٦،ج٢،ص٦٦١ بتغيرٍ قليلٍ)

﴾17﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं अपनी उम्मत पर तीन चीज़ों से डरता हूं : (1) आ़लिम के फिसलने से, (2) नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी से और (3) ज़ालिम बादशाह से।" (المعجم الكبير،الحديث: ١٤،ج١٧،ص١٧)

﴾18﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक क़िस्सा गो के हां तशरीफ़ लाए और उसे (सर-ज़निश करते हुए) इर्शाद फ़रमाया : "तूने गुमराही वाली बिदअ़त ईजाद कर ली है, क्या तू हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन के सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से ज़ियादा हिदायत याफ़्ता है ?" येह सुन कर लोग वहां से मुन्तशिर हो गए और उस क़िस्सा गो के पास कोई शख़्स बाक़ी न बचा। (المعجم الكبير،الحديث:٨٦٣٧،ج٩،ص١٢٧،١٢٨،بتغيرٍ قليلٍ)

येह रिवायत इस बात पर मह़मूल है कि वोह क़िस्सा गो शख़्स अपने क़िस्सों में ऐसी बातें सुनाता था जो झूटी और मन घड़त रिवायात पर मब्नी होती थीं, क्यूं कि वोह क़िस्से जिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस की आयात और निशानियों का तज़्किरा हो, नीज़ वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शायाने शान उस की पहचान का बाइस बनें या फिर अ़वामुन्नास की ता'लीम उन से मक़्सूद हो तो वोह ना जाइज़ नहीं बल्कि एक अफ़्ज़ल इबादत का द-रजा रखते हैं।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **52 :**

तक्दीर को झुटलाना

इस से मुराद येह है कि इस बात का इन्कार करना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दे पर ख़ैर और शर मुक़द्दर फ़रमा दिये हैं, जैसा कि मो'तज़िला का गुमान है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मो'तज़िला पर ला'नत फ़रमाए क्यूं कि वोह येह गुमान करते हैं कि बन्दा खुद अपने अफ़्आल का ख़ालिक़ है। चूंकि येह लोग तक्दीर के मुन्किर हैं इस लिये इन का नाम **क़दरिया** रख दिया गया इन का कहना था : "इस नाम के अस्ल ह़क़दार वोह लोग हैं जो तक्दीर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब करते हैं।" आयन्दा आने वाली सरीह़ अह़ादीस और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अक्वाल इन के इस फ़ासिद गुमान का रद करते हैं और हुज्जत इसी में है उन फ़ासिद अ़क्लों में नहीं जिन्हों ने इसे उन नुसूस की त़रफ़ मन्सूब किया और महज़ अपने बात़िल तख़य्युलात की बिना पर कुरआनो ह़दीस की सरीह़ नुसूस को अपनी गन्दी और बुरी आ़दत के मुत़ाबिक़ छोड़ दिया जैसे मुन्कर नकीर के सुवाल का इन्कार, अ़ज़ाबे क़ब्र, पुल सिरात़, मीज़ान, ह़ौज़े कौसर और आख़िरत में सर की आंख से दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ वग़ैरा इन चीज़ों का इन्कार जो कि बिला शुबा सह़ीह़ बल्कि मु-तवातिर अह़ादीसे मुबा-रका से साबित हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बरबाद फ़रमाए कि वोह सुन्नते मुबा-रका और अपने उस नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान से कितने बे ख़बर हैं जिस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى0اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْیٌ يُّوْحٰى0 (پ۲۷،النجم:۳-۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते वोह तो नहीं मगर वह़्य जो उन्हें की जाती है।

और इन के ख़िलाफ़ हमारी दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ0 (پ۲۷،القمر:۴۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई।

शाने नुज़ूल :

अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के नज़्दीक येह आयते मुबा-रका क़दरिया के बारे में नाज़िल हुई और इस की ताईद येह रिवायत भी करती है :

﴾1﴿...... इस आयत के नुज़ूल का सबब येह है कि कुफ़्फ़ारे मक्का रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक्दस में ह़ाज़िर हो कर तक्दीर के बारे में झगड़ने लगे तो येह आयाते मुबा-रका नाज़िल हुईं :

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِیْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ0يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِی النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ0 اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ0 (پ۲۷،القمر:۴۷-۴۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुजरिम गुमराह और दीवाने हैं जिस दिन आग में अपने मूंहों पर घसीटे जाएंगे और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़ की आंच बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई।

(تفسیر الطبری، سورۃ القمر، تحت الآیۃ:۴۶، ج۱۱، ص۵۶۹، ملخصًا)

www.dawateislami.net

क़दरिया ही वोह मुजरिम हैं जिन का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मज़्कूरा आयते मुबा-रका में किया है, इसी त़रह़ वोह लोग भी इन में शामिल हैं जो इन के त़रीक़े पर हैं अगर्चे कामिल तौ़र पर तक़्दीर के मुन्किर नहीं जैसे मो'तज़िला वग़ैरा।

《**2**》...... बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने आयते मुबा-रका के नुज़ूल का सबब येह बयान किया है : "नजरान के एक पादरी ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का ख़याल है कि हर गुनाह तक़्दीर की वजह से होता है ह़ालां कि ऐसा नहीं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुख़ालिफ़ हो।" इस पर येही आयते मुबा-रका : "**اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ......اِلٰی آخر الآیۃ**" नाज़िल हुई।

(الجامع لاحکام القرآن للقرطبی،سورۃ القمر،تحت الآیۃ:٤٩،ص١٠٩)

《**3**》...... सह़ीह़ ह़दीसे पाक में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन व आस्मान पैदा फ़रमाने से पचास हज़ार (50,000) साल पहले ही सारी मख़्लूक़ की तक़्दीरें लिख दी थीं।"

(صحیح مسلم، کتاب القدر،باب حجاج آدم وموسی،الحدیث: ٦٧٤٨،ص ١١٤٠)

《**4**》...... ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से उस के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुवा जो कहते थे : "हर शै **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से होती है।" और मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर शै **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से है यहां तक कि इ़ज्ज़ और दूर अन्देशी या अ़क़्ल मन्दी और इ़ज्ज़ भी।" (المرجع السابق،باب کل شئی بقدر،الحدیث: ٦٧٥١)

《**5**》...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं कि दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दा जब तक चार चीज़ों पर ईमान न ले आए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान नहीं ला सकता : (1) **لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** की गवाही दे (2) इस बात की गवाही दे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है (3) मौत के बा'द उठाए जाने पर ईमान लाए और (4) तक़्दीर को माने।"

(جامع الترمذی، ابواب القدر،باب ماجاء ان الایمان بالقدر......الخ،الحدیث: ٢١٤٥،ص١٨٦٧)

《**6**》......एक और एक रिवायत में है : "अच्छी बुरी तक़्दीर को माने।" (المرجع السابق،الحدیث:٢١٤٤)

मुस्लिम शरीफ़ की गुज़श्ता रिवायत जिस में है : "हर चीज़ तक़्दीर से है यहां तक कि इ़ज्ज़ और दानाई भी।" अहले सुन्नत के मज़्हब पर सरीह़ दलील है।

(صحیح مسلم، کتاب القدر،باب کل شئی بقدر،الحدیث: ٦٧٥١،ص ١١٤٠)

www.dawateislami.net

《7》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "छ अफ़राद ऐसे हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और हर मुस्तजाबुद्दा'वात नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ला'नत फ़रमाता है वोह येह हैं : (1) तक़्दीरे इलाही को झुटलाने वाला (2) किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में इज़ाफ़ा करने वाला (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुअ़ज़्ज़ज़ कर्दा लोगों को ज़लील करने के लिये ज़बर दस्ती हाकिम बन जाने वाला (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हराम कर्दा अश्या को हलाल समझने वाला (5) मेरी औलाद के मुआ-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हराम किये हुए (क़त्ले नाहक़) को हलाल समझने वाला और (6) मेरी सुन्नत का तारिक।"

(صحیح ابن حبان،باب اللعن، ذکر لعن المصطفیٰ ......الخ،الحدیث: ۵۷۱۹،ج۷،ص ۵۰۱،بتغیر قلیل)

फ़िर्क़ए क़दरिया की पहचान और इन की मज़म्मत

बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى इर्शाद फ़रमाते हैं कि **जबरिया** फ़िर्क़े का कहना है : "जो येह कहे कि नेकी और गुनाह मेरे अपने फे'ल से है वोह **क़दरी** है क्यूं कि वोह तक़्दीर का मुन्किर है।" जब कि **मो'तज़िला** का कहना है : "**जबरिया** फ़िर्क़ा ही **क़दरी** है क्यूं कि इस फ़िर्क़े का कहना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर ख़ैर व शर मुक़द्दर फ़रमाया है, तो चूंकि येह तक़्दीर को साबित करता है लिहाज़ा येह **क़दरी** है।" जब कि दोनों फ़रीक़ इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं : "जो **सुन्नी** इस बात का क़ाइल हो कि अफ़आल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ हैं जब कि कस्ब बन्दे की जानिब से होता है वोह **क़दरी** नहीं।" (سنن ابن ماجة،کتاب السنة،باب من کان مفتاحاللخیر،الحدیث: ۲۳۸، ص ۲۴۹۲)

अगर येह बात दुरुस्त हो तो इस में जहन्नम की तरफ़ जाते हुए **मो'तज़िला** के अलम बरदार अल्लामा ज़मख़्शरी का भी रद है कि जिस ने अपने गुमान में बहुत से मक़ामात पर कहा है : "**क़दरिया** ही अहले सुन्नत हैं।" हालां कि येह उस की किज़्ब बयानी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और उन के सहाबा व ताबिईन رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِيْن पर बोहतान है, और उसे इस बोहतान पर उस के ख़बीस अक़ीदे और अक़्ल की ख़राबी ने ही उभारा है, लिहाज़ा येह इस बात का हक़दार है कि इस पर येह आयाते मुबा-रका पढ़ी जाएं :

《1》

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً (پ۵،النسآء:۸۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो येह चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफ़िर हो जाओ जैसे वोह काफ़िर हुए तो तुम सब एक से हो जाओ।

《2》

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ (پ۱،البقرة:۱۰۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बहुत किताबियों ने चाहा काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की तरफ़ फैर दें अपने दिलों की जलन से।

www.dawateislami.net

《3》

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ۝ فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ۝ (پ۵،النسآء:۵۴-۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या लोगों से ह़सद करते हैं उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो हम ने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और ह़िक्मत अ़ता फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया तो उन में कोई उस पर ईमान लाया और किसी ने उस से मुंह फैरा और दोज़ख़ काफ़ी है भड़क्ती आग।

सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''ह़क़ येह है कि **क़दरी** उस शख़्स को कहते हैं जो तक़्दीर का इन्कार करता हो और ह़वादिस को सितारों के इत्तिसाल की त़रफ़ मन्सूब करे, क्यूं कि कुरैश के बारे में मरवी है कि वोह तक़्दीर में झगड़ते थे और उन का मज़्हब येह था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दे को इत़ाअ़त और मा'सियत पर कुदरत दी है, लिहाज़ा वोह मख़्लूक़ में येह सलाह़िय्यतें पैदा करने पर क़ादिर है और फ़क़ीर को खाना खिलाने पर भी क़ादिर है, इसी लिये उन्हों ने मोह़ताजों को खाना खिलाने के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत का इन्कार करते हुए येह कहा था :''

اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ ۖ (پ۲۳،یٰسٓ:۴۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या हम उसे खिलाएं जिसे **अल्लाह** चाहता तो खिला देता।

《8》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**क़दरिया** इस उम्मत के मजूसी हैं।'' (سنن ابی داؤد،کتاب السنة،باب فی القدر،الحدیث:۴۶۹۱،ص۱۵۶۷)

इस ह़दीसे पाक में अगर उम्मत से मुराद **उम्मते दा'वत** है तो इस से मुराद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के मुश्रिकीन हैं जो ह़वादिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत के मुन्किर थे। इस सूरत में **मो'तज़िला** इस में दाख़िल न होंगे, और अगर इस से **उम्मते इजाबत** मुराद है तो इस सूरत में **क़दरिया** की इस उम्मत की त़रफ़ निस्बत इसी त़रह़ है जैसे पिछली उम्मतों की त़रफ़ मजूस की निस्बत है, क्यूं कि शुबा के ए'तिबार से येह तमाम उम्मतों में कमज़ोर और अ़क़्ल की मुख़ा-लफ़त के ए'तिबार से सब से सख़्त हैं। इसी त़रह़ इस उम्मत में क़दरिया और इन का मजूसी होना इन के कुफ़्र पर जज़्म को ख़त्म नहीं करता, लिहाज़ा ह़क़ येह है : ''**क़दरी** उसी को कहते हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत का इन्कार करता है।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान كل इश्तिग़ाल की बिना पर मन्सूब है और क़िराअते शाज़ में इसे रफ़अ़ के साथ भी पढ़ा गया है मगर चूंकि येह ऐसी चीज़ का वह्म पैदा करता है जो अहले सुन्नत के नज़्दीक जाइज़ नहीं लिहाज़ा इसे मरफ़ूअ़ पढ़ना मरदूद है, क्यूं कि (रफ़अ़ देने की सूरत में) كل

www.dawateislami.net

मुब्तदा है और خلقنٰہ इस की या شیء की सिफ़त है, और بقدر इस की ख़बर है या'नी खलक़ ,كل شیء के साथ मौसूफ़ है और خلق अपनी माहियत और ज़माना में तक़्दीर से मुत्तसिफ़ है।

इस सूरत में इस का मफ़्हूम येह होगा कि जो चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पैदा कर्दा नहीं वोह तक़्दीर से नहीं और येही मो'तज़िला का मज़्हब है कि जो चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ नहीं वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा दूसरों की मख़्लूक़ है जैसे इन्सान अपने अफ़्आल का ख़ालिक़ है, जब कि इसे मन्सूब पढ़ने की सूरत में जो कि मज्मअ़ अ़लैह है येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हर शै को خلق फ़रमाने के उ़मूम का इफ़ादा करती है, क्यूं कि तक़्दीर इबारत येह है कि "انا خلقنا كل شى خلقناه" दूसरा "خلقناه" पहले "خلقنا" की तफ़्सीर और ताकीद है किसी शै की सिफ़त नहीं, क्यूं कि सिफ़त मौसूफ़ से मा क़ब्ल शै में अ़मल नहीं करती, इस लिये येह كل के नस्ब को ख़त्म नहीं कर सकती, लिहाज़ा येह बात मु-तअ़य्यन हो गई कि इस का नासिब या'नी नस्ब देने वाला पोशीदा है, और येह कि दूसरा خلقناه पहले की तफ़्सीर और ताकीद है, लिहाज़ा كل شیء अपने तमाम मख़्लूक़ को शामिल होने के उ़मूम पर बाक़ी है और بقدر ह़ाल है। या'नी हम ने हर चीज़ को इस ह़ाल में पैदा किया है कि वोह हमारी तक़्दीर से मिली हुई है या अपनी ज़ात व सिफ़ात की मिक़्दार में हमारी तक़्दीर से मिली हुई है और येही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मज़्हब है। लिहाज़ा येह आयते मुबा-रका अहले सुन्नत के मज़्हब के ह़क़ होने और मा'तज़िला के मज़्हब के बुत़्लान पर सरीह़ दलालत करती है।

यहां पर ह़स्बे आ़दत रफ़्अ़ की दलील के ज़ईफ़ होने की वजह से अ़ल्लामा ज़मख़्शरी के तअ़स्सुब में शिद्दत पैदा नहीं हुई ब ख़िलाफ़ उस क़ौम के जिस का गुमान है : "इख़्तियार से मुराद सनाअ़त है।" बल्कि बा'ज़ का गुमान है : "अ़-रबी में येही त़रीक़ा है।" ह़ालां कि येह दुरुस्त नहीं क्यूं कि उन के नज़्दीक इस से फे़'ल का मुत़ा-लबा किया जाता है, लिहाज़ा सनाअ़त के ए'तिबार से भी नस्ब ही मुख़्तार है।

आप कह सकते हैं कि अगर हम यहां मरफ़ूअ़ पढ़ना तस्लीम कर भी लें तब भी इस में मो'तज़िला के लिये कोई दलील नहीं क्यूं कि خلقناه जिस त़रह़ كل का वस्फ़ होने का एह़तिमाल रखता है इसी त़रह़ ख़बर होने का एह़तिमाल भी रखता है, और येह दोनों ख़बरें हैं तो येह वोह इफ़ादात हैं जो उ़मूम की सूरत में नस्ब का फ़ाएदा देते हैं तो जब उ़मूम और ग़ैरे उ़मूम का एह़तिमाल पैदा हो गया तो इस बात पर दलालत न रही और عَلٰى سَبِيْلِ التَّنَزُّل अगर इसे सिफ़त तस्लीम कर भी लिया जाए तब भी अम्र की ग़ायत येही होगी कि इस से वोही मफ़्हूम ह़ासिल होगा जिसे मो'तज़िला और अहले सुन्नत दोनों के मज़्हब पर मह़मूल करना मुम्किन है क्यूं कि हमारे नज़्दीक जो मख़्लूक़ नहीं वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात है, और आयते मुबा-रका का येही मफ़्हूम है तो ऐसी सूरत में इस बात पर कौन सी दलील है कि इस आयत से इस मा'ना के इलावा कोई और मा'ना मफ़्हूम या'नी समझा जाता हो ? ह़ालां कि मफ़्हूम की दलालत तो निहायत ही ज़ईफ़ होती है क्यूं कि जब ज़न्नियात में मफ़्हूम के हुज्जत होने में इख़्तिलाफ़ है तो आप का क़त़इय्यात के बारे में क्या ख़याल है ?

www.dawateislami.net

इल्मे अ़-रबी के लत़ाइफ़ में से येह भी है कि येह इस की जलालत पर दलालत करने के साथ साथ इस आयत में रफ़्अ़ और नस्ब दोनों ए'राब पढ़ने और अगली आयत या'नी كُلُّ شَیْءٍ فَعَلُوْهُ فِی الزُّبُرِ में सिर्फ़ रफ़्अ़ पढ़ने की सूरत में कुछ दक़ीक़ मआ़नी भी समझा देता है क्यूं कि अगर यहां كل पर नस्ब पढ़ा जाए तो मा'ना फ़ासिद हो जाएगा, इस की वजह येह है कि इस सूरत में मा'ना येह होगा : "उन्हों ने हर वोह काम किया जो सह़ीफ़ों में है।" जो कि ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ है क्यूं कि बहुत सी ऐसी चीज़ें भी सह़ीफ़ों में हैं जो उन्हों ने नहीं कीं जब कि रफ़्अ़ की सूरत में मा'ना येह होगा : "उन्हों ने जो काम भी किया है वोह सह़ीफ़ों में लिख दिया गया है।" जो कि वाक़ेअ़ के ऐन मुत़ाबिक़ है।

अहले सुन्नत कहते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अश्या को मुक़द्दर फ़रमा दिया या'नी इन की तक़्दीरें, इन के अह़्वाल, ज़मानों और इन के वुजूद में आने से पहले इन पर आने वाले अह़्वाल को जान लिया, फिर अपने साबिक़ा इल्म की बिना पर इन्हें वुजूद बख़्शा लिहाज़ा आ़लमे उ़ल्वी और सिफ़्ली में जो चीज़ भी पैदा होगी फ़क़त़ उस के इ़ल्म, क़ुदरत और इरादे ही से वुजूद में आएगी। और इन अन्वाअ़ में बन्दों के लिये कोई कस्ब, मुह़ावला, और निस्बत व इज़ाफ़त नहीं और येह तमाम चीज़ें तो मख़्लूक़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आसानी मुयस्सर करने, उस की क़ुदरत और इल्हाम से ह़ासिल हुई हैं जैसा कि किताबो सुन्नत इस पर दलालत करते हैं, ऐसा नहीं जैसा क़दरिया वग़ैरा इफ़्तिरा करते हैं कि आ'माल तो हमारे हाथ में हैं जब कि इन का अन्जाम ग़ैर के हाथ में है।

﴾9﴿......जब सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम पर गुनाह लिख दिये गए और इस के साथ साथ हमें इन की वजह से अ़ज़ाब भी होगा?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुख़ालिफ़ होगे।" (تفسیر قرطبی، سورۃ القمر،تحت الآ یت ٤٨،ج٩،الجز١٧، ص١٠٩)

﴾10﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर के मुन्किर इस उम्मत के मजूसी हैं, जब वोह बीमार हों तो उन की इ़यादत न करो, मर जाएं तो उन के जनाज़े में न जाओ और जब उन से मिलो तो उन्हें हरगिज़ सलाम न करो।" (سنن ابن ماجه ، ابواب السنة، باب فی القدر، الحدیث: ٩٢،ص٢٤٨٣)

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत में दो गुरौह ऐसे हैं जिन का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं, वोह **मुरजिआ** और **क़दरिया** हैं।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب السنة، باب فی الایمان، الحدیث:٧٣،ص٢٤٨١)

मुरजिआ वोह लोग हैं जो कहते हैं : "ईमान की मौजू-दगी में कोई गुनाह नुक़्सान नहीं देता जैसे कुफ़्र की सूरत में कोई नेकी फ़ाएदा नहीं देती।" और **क़दरिया** को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुख़ालिफ़ इस लिये कहा गया क्यूं कि वोह इस बात में झगड़ते हैं कि बन्दों पर गुनाह मुक़द्दर कर देने के बा'द उस गुनाह के सबब इन्हें अ़ज़ाब देना जाइज़ नहीं।

www.dawateislami.net

《12》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन मख़्लूक़ को जम्अ़ (करने का इरादा) फ़रमाएगा तो एक मुनादी को ए'लान करने का हुक्म देगा, वोह ऐसी आवाज़ से ए'लान करेगा कि जिसे अगले पिछले सब सुन लेंगे, वोह कहेगा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुख़ालिफ़ीन कहां हैं ?" तो **क़दरिया** खड़े होंगे, फिर उन्हें जहन्नम में ले जाने का हुक्म होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा :

ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝ اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝ (پ۲۷،القمر:۴۸۔۴۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़ की आंच बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई ।

(تفسیر الخازن ، سورۃ القمر،فصل فی سبب النزول ،آیت۴۹،۵۰،۵۱،ج۴،ص۲۰۶)

《13》...... सय्यिदुना इमाम त़-बरानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मो'जमुल औसत़ में येह रिवायत इन अल्फ़ाज़ से नक़्ल की है : "क़ियामत के दिन एक मुनादी निदा देगा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुख़ालिफ़ीन खड़े हो जाएं और वोह **क़दरिया** होंगे ।" (المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۵۱۰ ، ج ۵ ، ص ۳۹)

《14》...... इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर कोई **क़दरी** इतने रोज़े रखे कि सूख कर रस्सी की त़रह़ हो जाए और फिर इतनी नमाज़ें पढ़े कि कमान की त़रह़ टेढ़ा हो जाए तब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुंह के बल जहन्नम में डालेगा और उस से कहा जाएगा :

《1》

ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝ اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝ (پ۲۷،القمر:۴۸۔۴۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़ की आंच बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई ।

《2》

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۹۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को ।

या'नी तुम्हें और तुम्हारे आ'माल को पैदा किया या मुराद येह है कि तुम अपने हाथ से जो अ़मल करते हो उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही ने पैदा फ़रमाया है, इस में इस बात पर दलील है : "बन्दों के तमाम अफ़्आ़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के पैदा कर्दा हैं चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَ تَقْوٰىهَا ۝ (پ۳۰،الشمس:۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : फिर उस की बदकारी और उस की परहेज़ गारी दिल में डाली ।

www.dawateislami.net

इल्हाम कहते हैं दिल में कोई बात डालने को और चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही दिल में फ़ुजूर और तक़्वा इल्हाम फ़रमाता है लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन दोनों का ख़ालिक़ हुवा। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस आयते करीमा की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस पर ना फ़रमानी और परहेज़ गारी को लाज़िम किया।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाया : "इसे अपनी तौफ़ीक़ से तक़्वा का अह्ल बनाया या इसे अपनी जानिब से रुस्वा करते हुए फ़ुजूर का अह्ल बनाया।"

《15》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक क़ौम पर एह़सान फ़रमाया तो उन्हें ख़ैर का इल्हाम फ़रमाया और उन्हें अपनी रह़मत में दाख़िल फ़रमाया, जब कि एक क़ौम को आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया तो उन्हें रुस्वा कर दिया और उन के अफ़्आ़ल पर उन की मज़म्मत फ़रमाई, जब उन लोगों ने आज़माइश से निकलने की इस्तिताअ़त न पाई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दिया और वोह फिर भी आ़दिल ही है क्यूं कि,

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ۝

(پ۱۷،الانبیاء:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।

(جامع الاحادیث، قسم الاقوال، الحدیث: ٥٤٧٥، ج٢، ص٢٩١، بتغیر قلیل)

अ़न्क़रीब इस जैसी और बहुत सी अह़ादीस बयान होंगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا

(پ٨،الانعام:١٢٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे **अल्लाह** राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहे उस का सीना तंग खूब रुका हुवा कर देता है।

येह आयते मुबा-रका, पिछली आयतों की त़रह़ **क़दरिया** की गुमराही और इन के राहे इस्तिक़ामत से रू गरदानी करने पर दलालत करती है।

मुन्किरीने तक़्दीर की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबा-रका :

《16》...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कभी कोई ऐसा नबी पैदा नहीं किया जिस की उम्मत में **मुरजिआ** और **क़दरिया** न हों, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने 70 अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बान से **मुरजिआ** और **क़दरिया** पर ला'नत फ़रमाई।"

(المعجم الکبیر،الحدیث: ٢٣٢، ج٢٠، ص١١٧)

www.dawateislami.net

《17》...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर उम्मत में मजूसी होते हैं और इस उम्मत के मजूसी वोह लोग हैं जो येह गुमान करते हैं कि तक़्दीर कोई शै नहीं और येह कि मुआ-मला अज़ सरे नौ वाला है (या'नी चाहे अच्छा काम करो या बुरा तक़्दीर कोई चीज़ नहीं) लिहाज़ा जब तुम उन से मिलो तो उन्हें ख़बर देना कि मैं उन से बरी हूं और वोह मुझ से बरी।" (كنزالعمال،كتاب الايمان ، قسم الاقوال، الحديث: ٥٥١، ج١،ص٧٤،بدون "ان الامر انف")

《18》...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते कुदरत में अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की जान है ! अगर उन में से किसी के पास उहुद पहाड़ जितना सोना हो फिर वोह उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर दे तब भी जब तक वोह इस बात पर ईमान न ले आए कि अच्छी, बुरी तक़्दीर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का कोई अमल क़बूल न फ़रमाएगा।" (المعجم الكبير، رقم ٧٥٠٢، ج٨، ص ١٠٣)

《19》...... इस के बा'द उन्हों ने मुस्लिम शरीफ़ में मज़्कूर हदीसे जिब्राईल को ज़िक्र किया जिस का मज़्मून येह है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अर्ज़ की गई : "ईमान क्या है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ईमान येह है कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों और क़ियामत के दिन पर ईमान लाओ और अच्छी, बुरी तक़्दीर को मानो।" (صحيح مسلم، كتاب الايمان،باب بيان الايمان......الخ،الحديث:٩٣،ص ٦٨١)

गुज़श्ता अहादीस के इलावा भी तक़्दीर के बारे में बहुत सी अहादीस हैं, मैं इन के अज़ीम फ़ाएदे और उमूमी नफ़्अ की बिना पर उन्हें यहां ज़िक्र करना पसन्द करता हूं।

《20》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तक़्दीर को झुटलाया उस ने मेरी लाई हुई हर चीज़ का इन्कार किया।"

(كنزالعمال،كتاب الايمان ، قسم الاقوال،فصل فى الايمان بالقدر، الحديث: ٤٨٠، ج١،ص٦٨)

《21》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अच्छी बुरी तक़्दीर को नहीं मानता मैं उस से बेज़ार हूं।"

(مسند ابى يعلى الموصلى، مسند ابى هريره، الحديث:٦٣٧٣،ج٥،ص٤٥٦)

《22》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दा जब तक चार चीज़ों पर ईमान न ले आए मोमिन नहीं हो सकता : (1) इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई मा'बूद नहीं और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं उस ने मुझे हक़ के साथ मब्ऊस फ़रमाया है (2) मौत पर ईमान लाए, (3) क़ियामत के दिन उठने को माने और (4) अच्छी बुरी तक़्दीर पर ईमान लाए।" (مسند امام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن عمرو، الحديث:٧٠٠٤،ج٢،ص٦٦٦)

(جامع الترمذى ،ابواب القدر، باب ماجاء فان الايمان بالقدر......الخ،الحديث: ٢١٤٥،ص١٨٦٧)

www.dawateislami.net

﴿23﴾...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़ज़ा (या'नी फ़ैसले) पर राज़ी नहीं और तक़्दीर को नहीं मानता उसे चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई दूसरा ख़ुदा तलाश कर ले।''

(المعجم الاوسط، الحدیث: ۷۲۷۳، ج۵، ص۲٦٤)

﴿24﴾...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तक़्दीर तौहीद की लड़ी है, लिहाज़ा जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को एक माना और तक़्दीर पर ईमान लाया बेशक उस ने मज़्बूत गिरह को थाम लिया।'' (مجمع الزوائد، کتاب القدر، باب الایمان بالقدر، الحدیث۱۱۸۳۵، ج۷، ص٤٠٤)

﴿25﴾...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''इन्सान के चार काम मुकम्मल किये जा चुके हैं : (1) पैदाइश (2) अख़्लाक़ व आ़दात (3) रिज़्क़ और (4) मौत का वक़्त।''

(المعجم الاوسط، الحدیث: ۷۳۲۵، ج۵، ص۲۷۹)

﴿26﴾...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को भटकाना चाहता है तो उसे ह़ीलों से ढांप देता है।''

(المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۹۱٤، ج۳، ص۷۷)

﴿27﴾...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''एह़तियात़ तक़्दीर से बे नियाज़ नहीं करती।''

(المستدرک، کتاب الدعا......الخ، باب الدعاء ینفع ......الخ، الحدیث: ۱۸۵٦، ج۲، ص۱٦۲)

﴿28﴾...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''जो मेरे फ़ैसले और मेरी तक़्दीर पर राज़ी नहीं उसे चाहिये कि मेरे इलावा दूसरा रब तलाश कर ले।'' (شعب الایمان، باب فی ان القدر خیرہ......الخ، الحدیث: ۲۰۰، ج۱، ص۲۱۸)

﴿29﴾...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने यह़्या बिन ज़-करिय्या عَلَیْہِمَا السَّلَام को मां के पेट में मोमिन पैदा फ़रमाया और फ़िरऔन को उस की मां के पेट में ही काफ़िर पैदा फ़रमाया।'' (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۵٤۳، ج۱۰، ص۲۲٤)

﴿30﴾...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ख़ुश बख़्त वोही है जो मां के पेट में ख़ुश बख़्त था और बद बख़्त वोही है जो मां के पेट में बद बख़्त था।''

(مجمع الزوائد، کتاب القدر، باب مایکتب علی العبد فی بطن امہ، الحدیث: ۱۱۸۰۹، ج۷، ص۳۹۷)

﴿31﴾...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर बन्दे के मु-तअ़ल्लिक़ पांच चीज़ों का हुक्म फ़रमा चुका है : (1) उस की मौत से

www.dawateislami.net

(2) रिज़्क़ से (3) उस की उ़म्र से (4) उस के मदफ़न से और (5) इस बात से कि वोह ख़ुश बख़्त है या बद बख़्त।"
(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، الحديث: ٢١٧٨٢/٢١٧٨١، ج٨، ص١٦٩، ١٦٨)

《32》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन व आस्मान पैदा करने से पचास हज़ार (50,000) साल पहले ही तक़्दीरें मुक़र्रर करने और दुन्यवी उमूर को मुकम्मल कर चुका था।"
(كنزالعمال، كتاب الايمان ، قسم الاقوال، فصل السادس فى الايمان بالقدر، الحديث: ٤٩١، ج١، ص٦٩)

《33》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन व आस्मान की तख़्लीक़ से पचास हज़ार (50,000) साल पहले ही तक़्दीरें लिख दी थीं।"
(جامع الترمذى، ابواب القدر، باب اعظام الامرالايمان بالقدر، الحديث: ٢١٥٦، ص١٨٦٨)

《34》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन व आस्मान पैदा करने से पचास हज़ार (50,000) साल पहले ही मख़्लूक़ की तक़्दीरें लिख दी थीं उस वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़र्श पानी पर था (जैसा कि उस की शान के लाइक़ है)।"
(صحيح مسلم، كتاب القدر، باب حجاج آدم وموسىٰ، الحديث: ٦٧٤٨، ص١١٤٠)

《35》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर चीज़ तक़्दीर से है यहां तक कि कमज़ोरी और दानाई भी।"
(صحيح مسلم، كتاب القدر، باب كل شى بقدر، الحديث: ٦٧٥١، ص١١٤٠)

तक़्दीर का लिखा हुवा हो कर रहता है :

《36》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर आदमी अपने रिज़्क़ से इस त़रह़ भागे जैसे मौत से भागता है तब भी वोह रिज़्क़ उसे मिल कर रहेगा जैसे मौत उसे आ कर रहती है।"
(حلية الاولياء، يوسف بن اسباط، الحديث: ١٢١٦٩، ج٨، ص٢٧٠)

《37》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर इस्राफ़ील, जिब्राईल और मीकाईल (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) और ह़ामिलीने अ़र्श फ़िरिश्ते भी तुम्हारे लिये दुआ़ करें और मैं भी इन के साथ मिल कर दुआ़ करूं तब भी तुम्हारी शादी उसी औ़रत से होगी जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये लिख दी है।"
(كنزالعمال، كتاب الايمان والاسلام، باب قسم الاقوال، فصل فى الايمان بالقدر، الحديث: ٤٩٧، ج١، ص٦٩)

《38》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई फ़ैसला फ़रमा दे तो वोह हो कर रहता है।"
(كشف الخفاء، حرف اللام، الحديث: ٢١٠٤، ج٢، ص١٤٣)

www.dawateislami.net

《39》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में से एक दूसरे से ज़ियादा कमाने वाला नहीं, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसीबत और मौत का वक़्त लिख दिया है और रिज़्क़ और अ़मल को तक़्सीम कर दिया है, अब लोग उसी के मुताबिक़ अपने अन्जाम को पहुंचेंगे।" (حلية الاولياء،عبدة بن ابی لبابة،الحديث:٨٠٤٥،ج٦،ص١٢٤)

《40》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे जो मुसीबत भी पहुंची वोह मेरे लिये उस वक़्त से लिखी हुई थी जब (ह़ज़रते सय्यिदुना) आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अभी अपनी मिट्टी ही में थे।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب اللباس،باب السحر،الحديث:٣٥٤٦،ص ٢٦٩٠)

《41》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अपने ग़मों में इज़ाफ़ा न करो जो कुछ लिख दिया गया वोह हो कर रहेगा और तुम्हारा रिज़्क़ तुम्हें मिल कर रहेगा।" (شعب الايمان، باب التوكل والتسليم،الحديث:١١٨٨،ج٢،ص٧٠)

《42》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपना फ़ैसला और तक़्दीर नाफ़िज़ करने का इरादा फ़रमाता है तो अ़क़्ल मन्दों से उन की अ़क़्लें छीन लेता है यहां तक कि जब उस का फ़ैसला और तक़्दीर नाफ़िज़ हो जाती है तो उन की अ़क़्लें लौटा देता है और नदामत साबित हो जाती है।"

(كنزالعمال،كتاب الايمان والاسلام، قسم الاقوال،باب فصل فی الايمان بالقدر،الحديث:٥٠٥،ج١،ص٧٠)

《43》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई अम्र नाफ़िज़ करना पसन्द फ़रमाता है तो हर दाना से उस की दानाई छीन लेता है।" (تاريخ بغداد،باب اللام الف، الحديث:٧٤٤٣،ج١٤،ص١٠٢-١٠٣)

《44》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई काम करना चाहता है तो वोह काम करने तक लोगों की अ़क़्लें छीन लेता है फिर जब वोह काम हो जाता है तो उन की अ़क़्लें लौटा देता है और सिर्फ़ नदामत बाक़ी रह जाती है।" (كنزالعمال،كتاب الايمان والاسلام، باب الفصل السادس فی الايمان بالقدر،الحديث:٥٠٧،ج١،ص٧٠)

《45》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी चीज़ को पैदा करने का इरादा फ़रमा ले तो कोई चीज़ उसे रोक नहीं सकती।" (صحيح مسلم، كتاب النكاح،باب حكم العزل،الحديث:٣٥٥٤،ص٩٢٠)

《46》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अ़मल करो क्यूं कि जिसे जिस काम के लिये पैदा किया गया है उस के लिये वोह काम आसान होता है, अ़मल करो क्यूं कि हर एक के लिये वोह काम आसान है जिस की उसे क़ौल से हिदायत दी गई है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे दो ठिकानों या'नी जन्नत और जहन्नम में से किसी एक के लिये पैदा फ़रमाता है उसे

www.dawateislami.net

उस के मुताबिक़ अ़मल करने की तौफ़ीक़ देता है।" (المعجم الاوسط،الحديث:٤٨٧٨،ج٣،ص٣٧٦)

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند البصريين،الحديث:١٩٩٥٦،ج٧،ص٢١٧)

﴾47﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हर शख़्स को जिस काम के लिये पैदा किया गया उस के लिये वोह काम आसान होता है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،حديث ابى الدرداء عويم،الحديث:٢٧٥٥٧،ج١٠،ص٤١٧)

﴾48﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो शख़्स जिस काम के लिये पैदा किया गया उस के लिये वोह काम आसान है।"

(صحيح البخارى، كتاب التوحيد،باب قول الله تعالىٰ ولقديسرناالقرآن......الخ،الحديث:٧٥٥١،ص٦٣٠)

﴾49﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक क़ौम (के लोगों) पर एहसान फ़रमाया तो उन्हें भलाई का इल्हाम फ़रमा कर अपनी रहमत में दाख़िल कर लिया और एक क़ौम (के लोगों) को आज़माइश में मुब्तला फ़रमा कर रुस्वा किया और उन के बुरे कामों पर उन की मज़म्मत फ़रमाई, जब वोह उस आज़माइश से निकलने में काम्याब न हुए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दिया और येह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का उन के बारे में अ़द्ल ही है।" (جمع الجوامع ، قسم الاقوال،الحديث:٥٤٧٥،ج٢،ص٢٩١)

﴾50﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आस्मान व ज़मीन वालों को अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे तब भी वोह इन्हें अ़ज़ाब देते वक़्त ज़ालिम न होगा और अगर इन पर रह़्म फ़रमाए तो उस का इन पर रह़्म फ़रमाना इन के आ'माल से बेहतर है, और अगर तुम उहुद पहाड़ जितना सोना राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करो तो जब तक तक़्दीर पर ईमान न ले आओ वोह तुम्हारा येह अ़मल हरगिज़ क़बूल न फ़रमाएगा, लिहाज़ा यक़ीन कर लो कि जो कुछ तुम्हें पहुंचने वाला है वोह हरगिज़ तुम से ख़ता न करेगा, और जो तुम से ख़ता होने वाला है वोह हरगिज़ न तुम्हें पहुंचेगा और अगर तुम इस त़रीक़े के इलावा मरोगे (या'नी तक़्दीर पर तुम्हारा ईमान न होगा) तो जहन्नम में दाख़िल होगे।" (سنن ابى داؤد،كتاب السنة، باب فى القدر، الحديث: ٤٦٩٩،ص١٥٦٨)

﴾51﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर जानदार नफ़्स का जन्नत या जहन्नम में ठिकाना लिखा हुवा है, और सुन लो ! येह भी लिखा है कि वोह ख़ुश बख़्त है या बद बख़्त।" अ़र्ज़ की गई "तो क्या फिर हम तवक्कुल न करें ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, बल्कि अ़मल करो तक़्दीर ही पर तक्या न करो क्यूं कि जिसे जिस काम के लिये पैदा किया गया है उस के लिये वोह काम आसान होता है, सआदत मन्दों के लिये सआदत वाले काम आसान हैं जब कि बद बख़्तों के लिये बद बख़्ती वाले काम आसान हैं।"

(صحيح البخارى ، كتاب الجنائز ، باب موعظة المحدث......الخ،الحديث:١٣٦٢،ص١٠٦)

(سنن ابن ماجه ، ابواب السنة، باب فى القدر، الحديث: ٧٨،ص٢٤٨٢)

www.dawateislami.net

《52》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो तक्दीर के बारे में कोई बात करेगा उस से बरोज़े क़ियामत उस के बारे में पूछा जाएगा, और जो तक्दीर के बारे में बात न करेगा उस से नहीं पूछा जाएगा।" (سنن ابن ماجه ، ابواب السنة، باب فی القدر، الحديث: ٨٤،ص٢٤٨٢)

《53》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ताक़त वर मोमिन बेहतर है और कमज़ोर मोमिन के मुक़ाबले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा पसन्द है और हर भलाई के मुआ-मले में अपने लिये ज़ियादा नफ़्अ बख़्श चीज़ को इख़्तियार करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मदद चाहो और मदद मांगने से आजिज़ न आओ, अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो येह मत कहो : **"अगर मैं ऐसा करता तो ऐसा होता।"** बल्कि येह कहो : **"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा ही लिखा था और उस ने जो चाहा वोही किया।"** क्यूं कि : "अगर" का लफ़्ज़ शैतानी अमल की इब्तिदा करता है।"

(صحيح مسلم، كتاب القدر، باب الايمان بالقدر......الخ،الحديث: ٦٧٧٤،ص١١٤٢)

《54》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अच्छी, बुरी तक्दीर पर ईमान न ले आए, इस बात पर यक़ीन न करे कि इसे जो मुसीबत पहुंचने वाली है वोह इस से ख़ता न होगी और जो इस से ख़ता होने वाली है वोह इसे नहीं पहुंच सकती।"

(جامع الترمذی، ابواب القدر،باب ماجاء ان الايمان بالقدرخير......الخ،الحديث:٢١٤٤،ص١٨٦٧)

《55》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! जो कुछ तुम्हें पहुंचने वाला है वोह लिख कर क़लम ख़ुश्क हो चुका है।" (صحيح البخاری، كتاب النكاح،باب مايكره من التبتل......الخ،الحديث: ٥٠٧٦،ص٤٣٩)

《56》...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझे दा'वत देने और पैग़ाम पहुंचाने वाला बना कर भेजा गया है और (इस के बा वुजूद) हिदायत में से कोई शै मेरे अपने बस में नहीं, जब कि शैतान को (ख़्वाहिशात) आरास्ता कर के पेश करने वाला बना कर पैदा किया गया लेकिन गुमराही की कोई बात उस के बस में नहीं।"

(الكامل فی ضعفاء الرجال،خالد بن عبدالرحمن، الحديث: ٥٩٧/٢٧،ج٣،ص٤٧١)

《57》...... हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब मां के पेट में नुत्फ़े पर बयालीस (42) रातें गुज़र जाती हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ते को उस की तरफ़ भेजता है, वोह उस की सूरत बनाता है और उस की समाअत व बसारत, खाल व चरबी और हड्डी पैदा करता है फिर अर्ज़ करता है या रब عَزَّوَجَلَّ ! येह लड़का होगा या लड़की ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है और फ़िरिश्ता उसे लिख देता है, फिर अर्ज़ करता है, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! इस की

www.dawateislami.net

मौत कब होगी ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है फ़ैसला फ़रमाता है और फ़िरिश्ता उसे लिख लेता है, वोह फिर अ़र्ज़ करता है : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! इस का रिज़्क़ कितना होगा ?" तो तेरा रब عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है फ़ैसला फ़रमाता है और फ़िरिश्ता उसे लिख लेता है, फिर फ़िरिश्ता वोह सहीफ़ा ले कर निकलता है, तो उस में न किसी चीज़ का इज़ाफ़ा होता है और न कमी ।"

(صحیح مسلم، کتاب القدر، باب کیفیۃ خلق الآدمی......الخ،الحدیث:۶۷۲۶،ص۱۱۳۸،"شحمھا"بدلہ"لحمھا")

﴾58﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन उसैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मां के रेह़म में 40 रातों तक नुत़्फ़ा यूंही रहता है, फिर उसे पैदा करने वाला (या'नी इस काम पर मुक़र्रर) फ़िरिश्ता सूरत दे देता है, फिर वोह फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! येह लड़का है या लड़की ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मुज़क्कर या मुअन्नस बना देता है, फिर फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : "येह तन्दुरुस्त पैदा होगा या मा'ज़ूर ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तन्दुरुस्त या मा'ज़ूर बना देता है, फ़िरिश्ता फिर अ़र्ज़ करता है : इस का रिज़्क़ कितना और मौत का वक़्त क्या होगा ? फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे शक़ी या सईद बना देता है ।"

(المرجع السابق،الحدیث:۶۷۲۸،ص۱۱۳۹)

﴾59﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रेह़म में क़रार पकड़ने के 40 रातें गुज़रने के बा'द एक फ़िरिश्ता नुत़्फ़े के पास आता है और फिर अ़र्ज़ करता है : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! येह बद बख़्त होगा या ख़ुश बख़्त ! लड़का होगा या लड़की ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ इर्शाद फ़रमाता है फ़िरिश्ता उसे लिख लेता है और वोह फ़िरिश्ता उस के अ़मल, रिज़्क़ और मौत का वक़्त लिखता है, फिर सहीफ़ा लपेट लेता है इस के बा'द न तो उस में कोई इज़ाफ़ा होता है न ही कमी ।" (المرجع السابق،الحدیث:۶۷۲۵،ص۱۱۳۸)

﴾60﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से किसी एक की पैदाइश को मां के पेट में 40 दिन तक जम्अ़ किया जाता है, फिर 40 दिन लोथड़ा बना रहता है, फिर इसी त़रह़ 40 दिन तक के लिये **मुज़्ग़ा** बन जाता है, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजता है और उसे चार चीज़ें लिखने का हुक्म देता है और उस से कहा जाता है कि इस का अ़मल, इस की मौत का वक़्त, इस का रिज़्क़ और येह लिख दो कि येह शक़ी होगा या सईद । फिर उस में रूह़ फूंक दी जाती है, बेशक तुम में से कोई शख़्स अहले जन्नत जैसे अ़मल करता रहता है यहां तक कि जन्नत और उस के दरमियान एक गज़ का फ़ासिला रह जाता है फिर उस की तक़्दीर उस पर ग़ालिब आ जाती है तो वोह जहन्नमियों जैसे अ़मल कर के जहन्नम में दाख़िल हो जाता है, जब कि एक शख़्स जहन्नमियों जैसे अ़मल करता रहता है यहां तक कि उस के और जहन्नम के दरमियान एक गज़ का फ़ासिला रह जाता है तो तक़्दीर उस पर ग़ालिब आ जाती है

www.dawateislami.net

और वोह अहले जन्नत जैसे अ़मल करने लगता है और जन्नत में दाख़िल हो जाता है।''

(صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق،باب ذکر الملائکۃ ......الخ،الحدیث:۳۲۰۸،ص ۲۶۰،مختصرا)

इस ह़दीसे मुबा-रका में ثُمَّ या'नी ''**फिर**'' का लफ़्ज़ ज़ाहिरन मा क़ब्ल अह़ादीस की नफ़ी कर रहा है, लिहाज़ा या तो येह **वाव** या'नी ''**और**'' के मा'ना में है या फिर इस का मत़्लब येह है कि बच्चों के मुख़्तलिफ़ होने से फ़िरिश्ते की आमद की मुद्दत भी मुख़्तलिफ़ होती है, कुछ बच्चों की त़रफ़ फ़िरिश्ते को पहले 40 दिन मुकम्मल होने पर भेजा जाता है और कुछ की त़रफ़ तीसरे 40 दिन मुकम्मल होने पर भेजा जाता है।

﴾61﴿...... साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (एक दिन अपने दोनों हाथों में दो किताबें पकड़ कर) इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम जानते हो कि इन दो किताबों में क्या है ? येह किताब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है इस में जन्नतियों के, इन के आबा और क़बाइल के नाम हैं, फिर इन के आख़िर में इज्मालन ज़िक्र कर दिया है लिहाज़ा न इन में कमी होगी न ज़ियादती। और येह रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से दूसरी किताब है इस में अहले जहन्नम, इन के आबा और क़बाइल के नाम हैं, फिर इन के आख़िर में इन का इज्मालन ज़िक्र कर दिया है लिहाज़ा इन में न कभी कमी होगी न ज़ियादती, सीधे रहो और मियाना रवी इख़्तियार करो क्यूं कि जन्नती का ख़ातिमा अहले जन्नत के आ'माल पर होगा, अगर्चे वोह जैसे भी अ़मल करे और जहन्नमी का ख़ातिमा जहन्नमियों के आ'माल पर होगा, अगर्चे वोह जैसे भी अ़मल करे, तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ बन्दों के एक फ़रीक़ के जन्नती होने और एक के जहन्नमी होने का फ़ैसला फ़रमा चुका है।''

(جامع الترمذی،ابواب القدر،باب ماجاء ان اللہ کتب کتابا لاھل الجنۃ......الخ،الحدیث:۲۱۴۱،ص۱۸۶۶)

﴾62﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अच्छे अ़मल करो, अगर तुम मग़्लूब हो गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिखे और उस की तक़्दीर से होगे और अपने कलाम में **अगर** का लफ़्ज़ शामिल न किया करो क्यूं कि जो **अगर** का लफ़्ज़ बोलता है उस पर शैत़ान का अ़मल शुरूअ़ हो जाता है।'' (تاریخ بغداد، ذکر من اسمہ عمار، الحدیث:۶۷۰۳،ج۱۲،ص ۲۵۰)

﴾63﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को पैदा फ़रमाया और उन की पुश्त पर (अपनी क़ुदरत के शायाने शान) दायां दस्ते क़ुदरत फैरा (या'नी उस में अपनी क़ुदरत, ब-र-कत और रह़मत से भरी ज़ुर्रिय्यत पैदा फ़रमाई) फिर उस में से एक क़ौम को निकाल कर इर्शाद फ़रमाया : ''येह लोग जन्नती हैं और येह जन्नतियों जैसे अ़मल करेंगे।'' फिर उन की पुश्त पर अपना दस्ते क़ुदरत फैरा तो उस से एक क़ौम निकाली और इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने इसे जहन्नम के लिये पैदा किया है और येह जहन्नमियों जैसे काम करेंगे।'' और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को जन्नत के लिये पैदा फ़रमाता

www.dawateislami.net

है तो उस से जन्नतियों जैसे काम लेता है यहां तक कि वोह जन्नती आ'माल में से किसी अ़मल पर मरता है और इस की वजह से जन्नत में दाख़िल हो जाता है और जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को जहन्नम के लिये पैदा फ़रमाता है तो उस से जहन्नमियों जैसे काम लेता है यहां तक कि वोह अहले जहन्नम के आ'माल में से किसी अ़मल पर मरता है और फिर इस की वजह से जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب السنة ،باب فی القدر، الحدیث: ۴۷۰۳،ص۱۵۶۹)

《64》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया तो उन की पुश्त से कुछ मख़्लूक़ को पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : ''येह लोग जन्नती हैं और मुझे कोई परवाह नहीं और येह जहन्नमी हैं और मुझे कोई परवाह नहीं।'' (المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند الشامیین،الحدیث: ۱۷۶۷۶،ج۶،ص۲۰۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना आदम व मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरमियान मुबा-ह़सा :

《65》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ज़रते आदम व मूसा (عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) में मुबा-ह़सा हुवा तो ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने फ़रमाया : ''आप तो वोह हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया, आप में अपनी जानिब से रूह़ फूंकी, अपने मलाएका से आप को सज्दा करवाया और अपनी जन्नत में ठहराया लेकिन आप ने अपनी लग़्ज़िश की वजह से लोगों को जन्नत से निकाल कर उन्हें बद बख़्त कर दिया।'' तो ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मूसा ! तुम वोह हो जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी रिसालत के लिये चुना और तुम पर तौरात नाज़िल फ़रमाई तो क्या तुम मुझे ऐसी बात पर मलामत करते हो जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे पैदा करने से पहले ही मेरे लिये लिख दिया था।'' तो इस त़रह ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) पर बह़स में ग़ालिब आ गए।''

(جمع الجوامع ، قسم الاقوال، الحدیث: ۵۷۸،ج۱،ص۱۰۸)

《66》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज की : ''मुझे ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से मिलवा दे।'' तो जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से मिलवाया तो ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से अ़र्ज़ की : ''आप ही हमारे बाप आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) हैं ? आप ही वोह हैं जिन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी जानिब से रूह़ फूंकी, आप को तमाम अस्मा का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया और फ़िरिश्तों को हुक्म दिया तो उन्हों ने आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को सज्दा किया ?'' ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया : ''जी हां !'' ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने कहा : ''फिर आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को हमें और अपने आप को जन्नत से निकलवाने पर किस चीज़ ने आमादा किया ?'' तो ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने पूछा : ''तुम कौन हो ?'' उन्हों ने बताया : ''मैं मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) हूं।''

www.dawateislami.net

तो ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम बनी इस्राईल के वोही नबी हो जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हिजाब के पीछे से अपने कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया उस वक़्त तुम्हारे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान मख़्लूक़ में से कोई क़ासिद न था ?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "हां !" ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया : "तो क्या तुम ने मेरी पैदाइश से पहले मेरे बारे में लिखी गई बात को अपनी किताब में न पाया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हां ! पाया था।" तो ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया : "तो फिर तुम मुझे ऐसी बात पर क्यूं मलामत करते हो जिस के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पहले ही से फ़ैसला फ़रमा दिया था।" इस त़रह़ ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) पर ग़ालिब आ गए।" (سنن ا بی داؤد، كتاب السنة ،باب فی القدر، الحديث: ٤٧٠٢،ص١٥٦٨)

गुज़श्ता अह़ादीस के इलावा भी **क़दरिया** के बारे में कुछ अह़ादीस आई हैं जिन को मो'तज़िला पर मह़मूल किया जा सकता है और अहले सुन्नत इन गुमराह और बिदअ़ती लोगों के इस क़ौल से बरी हैं कि "अहले सुन्नत ही **क़दरिया** हैं।"

﴾67﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर उम्मत में मजूसी होते हैं और इस उम्मत के मजूसी वोह लोग हैं जो कहते हैं कि तक़्दीर कोई चीज़ नहीं, लिहाज़ा अगर वोह बीमार हों तो उन की इ़यादत न करो और अगर मर जाएं तो उन के जनाज़े में शिर्कत न करो।" (المسندللامام احمد بن حنبل ،مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب،الحديث: ٥٥٨٨،ج٢،ص٣٨٩)

﴾68﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर उम्मत में मजूसी होते हैं और इस उम्मत के मजूसी वोह लोग हैं जो कहते हैं कि तक़्दीर कोई चीज़ नहीं, लिहाज़ा अगर वोह लोग बीमार हों तो उन की इ़यादत न करो और अगर मर जाएं तो उन के जनाज़े में शिर्कत न करो और वोह दज्जाल का गुरौह हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन लोगों का ह़श्र दज्जाल के साथ फ़रमाएगा।"

(جامع الاحاديث، قسم الاقوال، الحديث: ١٧٢٦٩،ج٥،ص٧٣)

﴾69﴿...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़न्क़रीब मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो तक़्दीर को झुटलाएंगे।"

(المسندللامام احمد بن حنبل ،مسند عبدالله بن عمر،الحديث:٥٦٤٣،ج٢،ص٣٩٩)

मुरजिआ और क़दरिया की मज़म्मत :

﴾70﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत के दो गुरौह ऐसे हैं जिन का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं वोह **मुरजिआ** और **क़दरिया** हैं।"

(المعجم الاوسط، الحديث: ٦٠٦٥،ج٤،ص٣٠٥)

www.dawateislami.net

《71》...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के दो गुरौह ऐसे हैं जिन्हें क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त ह़ासिल न होगी वोह **मुरजिआ** और **क़दरिया** हैं।"

(المعجم الاوسط، الحدیث: ٥٨١٧، ج٤، ص ٢٣١، بدون"یوم القیامة")

《72》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत के दो गुरौह ऐसे हैं जो मेरे हौज़ पर न आ सकेंगे और न ही जन्नत में दाखि़ल होंगे वोह **मुरजिआ** और **क़दरिया** हैं।"

(المعجم الاوسط، الحدیث: ٤٢٠٤، ج٣، ص١٦٦)

《73》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं चाहता हूं कि तुम तक़्दीर के बारे में गुफ़्त-गू न किया करो।"[1]

(تاریخ بغداد، من ذکر اسم محمدبن الحسن، الحدیث: ٦٠٨، ج٢، ص١٨٥)

《74》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं चाहता हूं कि तुम तक़्दीर के बारे में गुफ़्त-गू न किया करो और आखि़री ज़माने में मेरी उम्मत के बुरे लोग ही तक़्दीर के बारे में कलाम किया करेंगे।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال، عبدالرحمن بن القطامی بصری، الرقم ١١٤١/١٧٤، ج٥، ص٥٠٥)

《75》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**क़दरिया** पर 70 अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बान से ला'नत की गई।"

(المعجم الاوسط، الحدیث: ٧١٦٢، ج٥، ص٢٣٠)

《76》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तक़्दीर के मुन्किरों के पास न बैठा करो और न ही उन के साथ कलाम की इब्तिदा करो।"

(سنن ابی داؤد، کتاب السنة، باب فی القدر، الحدیث: ٤٧١٠، ص١٥٦٩)

《77》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तक़्दीर के बारे में कलाम करने से बचते रहो क्यूं कि येह नसरानियत का हि़स्सा है।"

(المعجم الکبیر، الحدیث: ١١٦٨٠، ج١١، ص٢٠٩)

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब "**बहारे शरीअ़त**" में फ़रमाते हैं : "क़ज़ा व क़द्र के मसाइल आ़म अ़क़्लों में नहीं आ सकते इन में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करना सबबे हलाकत है। सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا इस मस्अले में बह़स करने से मन्अ़ फ़रमाए गए मा व शुमा किस गिनती में (या'नी मैं और आप किस गिनती में हैं)। इतना समझ लो कि अल्लाह तआ़ला ने आदमी को मिस्ले पथ्थर और दीगर जमादात के बे ह़िसो ह़-र-कत नहीं पैदा किया, बल्कि इस को एक नौए इख़्तियार दिया है कि एक काम चाहे करे, चाहे न करे और इस के साथ ही अ़क़्ल भी दी है कि भले बुरे नफ़्अ़ नुक़्सान को पहचान सके और हर क़िस्म के सामान और अस्बाब मुहय्या कर दिये हैं कि जब कोई काम करना चाहता है उसी क़िस्म के सामान मुहय्या हो जाते हैं और इसी बिना पर उस पर मुवा-ख़ज़ा है। अपने आप को बिल्कुल मजबूर या बिल्कुल मुख़्तार समझना दोनों गुमराही हैं।" (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 1, स. 5,6)

www.dawateislami.net

《78》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**क़दरिया** इस उम्मत के मजूसी हैं जब येह बीमार हों तो इन की इयादत को न जाओ और जब मर जाएं तो इन के जनाज़े में शिर्कत न करो।" (سنن ابی داؤد، کتاب السنة، باب فی القدر، الحدیث: ٤٦٩١، ص١٥٦٧)

《79》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझे अपने बा'द अपनी उम्मत पर दो ख़स्लतों का ख़ौफ़ है : (1) तक़्दीर को झुटलाने और (2) सितारों की तस्दीक़ करने का।" (کنزالعمال، کتاب الایمان والاسلام، باب فرع فی دم القدرية والمرجئة، الحدیث: ٥٦٣، ج١، ص٧٤)

《80》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के बदकार लोगों का आख़िरी कलाम तक़्दीर के बारे में होगा।"

(المعجم الاوسط، الحدیث: ٥٩٠٩، ج٤، ص٢٥٦، بدون "یوم القیامة")

तम्बीह : तक़्दीर का इन्कार कबीरा गुनाह है

तक़्दीर के इन्कार के गुनाहे कबीरा होने की बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने सराहत की है, इसी लिये इसे कबीरा गुनाह शुमार किया गया है और मैं ने जो अहादीसे मुबा-रका इस बाब में बयान की हैं वोह इस के कबीरा गुनाह होने पर दलील हैं, तक़्दीर को झुटलाना अगर्चे तर्के सुन्नत में दाख़िल है जो कि बज़ाते ख़ुद एक कबीरा गुनाह है मगर इस की हुरमत के सख़्त होने और अहले सुन्नत और दीगर फ़िर्क़ों में तक़्दीर के मस्अले में बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ की वजह से इसे अलाहिदा ज़िक्र किया गया क्यूं कि अफ़आल के मख़्लूक़ होने का मस्अला इल्मे कलाम के निहायत अहम मसाइल में से है।

मो'तज़िला के वोह दलाइल जिन की बिना पर उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इफ़्तिरा बांधा और साबिक़ा सरीह आयात और महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मा क़ब्ल में बयान कर्दा अहादीस से मुंह मोड़ा उन में से एक दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान है :

وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ۝ مَاۤ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝ (پ٥، النسآء: ٧٨-٧٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें कोई भलाई पहुंचे तो कहें येह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे तो कहें येह हुज़ूर की त़रफ़ से आई तुम फ़रमा दो सब **अल्लाह** की त़रफ़ से है तो उन लोगों को क्या हुवा कोई बात समझते मा'लूम ही नहीं होते ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुंचे वोह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और जो बुराई पहुंचे वोह तेरी अपनी त़रफ़ से है और ऐ महबूब हम ने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल भेजा और **अल्लाह** काफ़ी है गवाह।

www.dawateislami.net

अबू अ़ली जुबाई का ग़लत़ इस्तिद्लाल :

गुमराही में मो'तज़िला का इमाम अबू अ़ली जुबाई कहता है : ''येह बात तो साबित है कि سَيِّئَةٌ का लफ़्ज़ कभी मुसीबत और बख़्शिश पर बोला जाता है और कभी गुनाह व मा'सियत पर, फिर येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने سَيِّئَةٌ की इज़ाफ़त पहले अपनी जानिब फ़रमाई फिर दूसरी मरतबा बन्दे की त़रफ़, लिहाज़ा इन दोनों में तत़्बीक़ ज़रूरी है, इस लिये हम कहते हैं कि जब पहले मा'ना के ए'तिबार से سَيِّئَةٌ का लफ़्ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुज़ाफ़ है तो दूसरे मा'ना के ए'तिबार से इसे बन्दे की त़रफ़ मुज़ाफ़ करना वाजिब है ताकि दो मुत्तसिल आयतों में पैदा होने वाला तनाक़ुज़ ज़ाइल हो जाए। जब कि हमारे मुख़ालिफ़ीन ने अपने आप को आयत में तब्दीली करने पर आमादा कर लिया और فَمِنْ نَّفْسِکَ को اَفَمِنْ نَّفْسِکَ पढ़ा या'नी इस में इस्तिफ़्हाम का मा'ना पैदा किया और क़ुरआन में तब्दीली कर के क़ुरआन में दो मा'ना होने का दा'वा करते हुए **रवाफ़िज़** का त़रीक़ा इख़्तियार किया।

अगर येह कहा जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने حَسَنَةٌ को अपनी त़रफ़ मन्सूब किया जो कि इत़ाअ़त है और سَيِّئَةٌ को अपनी जानिब मन्सूब न किया, ह़ालां कि येह दोनों तुम्हारे नज़्दीक बन्दे के फ़े'ल हैं (तो इस का जवाब येह है कि) حَسَنَةٌ या'नी नेकी अगर्चे बन्दे ही का फ़े'ल है मगर वोह उस तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल ही से पहुंचता है, लिहाज़ा इस की इज़ाफ़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ दुरुस्त है जब कि سَيِّئَةٌ की इज़ाफ़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ न होने की वजह येह है कि न तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बुराई की, न इस का इरादा फ़रमाया, न इस का हुक्म दिया और न ही रग़्बत दिलाई, लिहाज़ा मिन जमीइ़ल वुजूह इस की निस्बत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ख़त्म हो गई।''

अबू अ़ली जुबाई का रद :

अबू अ़ली जुबाई का कलाम इस की कम फ़हमी, तंग नज़री और ला इल्मी को ज़ाहिर करता है, क्यूं कि दोनों मक़ामात पर سَيِّئَةٌ और حَسَنَةٌ से बित्तरतीब इत़ाअ़त व मा'सियत मुराद नहीं बल्कि ने'मत व आज़माइश मुराद हैं और येह दोनों चीज़ें बन्दों के अफ़आ़ल में से नहीं और اَصَابَکَ का लफ़्ज़ हमारी इस बात पर दलील है क्यूं कि त़ाअ़त व मा'सियत के लिये اَصَابَنِیْ (मुझे गुनाह या नेकी पहुंची) नहीं बोला जाता बल्कि اَصَبْتُهٗ (या'नी मैं ने गुनाह या नेकी की) कहा जाता है, जब कि ने'मत व आज़माइश के लिये बोला जाता है कि मुझे ने'मत पहुंची और सियाक़े इबारत भी इसी की सराह़त करता है, क्यूं कि इस आयते मुबा-रका का सबबे नुज़ूल येह है कि जब शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह में तशरीफ़ लाए तो मुनाफ़िक़ीन और यहूदियों ने कहा : ''जब से येह शख़्स या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इस के साथी आए हैं, हमें अपने फलों और

www.dawateislami.net

खेतियों में मुसलसल नुक्सान हो रहा है।'' इस त़रह़ वोह ने'मतों को तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब करते थे जब कि आज़्माइश और परेशानी को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब करते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें उन की फ़ासिद बातों की ख़बर दी और फिर इस का रद करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ''

पहले अफ़्आल का मस्दरे अस्ली बयान फ़रमाया फिर इन का सबब बताया और दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुख़ात़ब किया जब कि मुराद दीगर लोग थे और इर्शाद फ़रमाया कि مَاۤ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ या'नी तुम्हें जो ने'मत या'नी ख़ुशी और मदद वग़ैरा मिली فَمِنَ اللّٰهِ या'नी वोह मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से मिली है, क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर किसी का कोई ह़क़ नहीं وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ या'नी तुम्हें जो तंगदस्ती लाह़िक़ हुई वोह तुम्हारे नफ़्स की ना फ़रमानी की वजह से, **ह़क़ीक़तन** येह है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से मगर नफ़्स के गुनाह के सबब इसे सज़ा देने के लिये है, जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ (پ۲۵،الشورٰی:۳۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद की ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से रिवायत भी इस पर दलालत करती है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस आयते मुबा-रका को यूं पढ़ा : ''وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ وَاَنَا كَتَبْتُهَا عَلَيْكَ'' या'नी तुझे जो मुसीबत पहुंची वोह तेरे नफ़्स की वजह से है मैं ने तो सिर्फ़ इसे तेरे लिये लिख दिया था।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ह़िकायत कर्दा क़ौल क़ुरआने करीम में बयान फ़रमा गया :

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۙ۝ (پ۱۹،الشعرآء:۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब मैं बीमार होउं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है।

या'नी आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मरज़ की इज़ाफ़त अपनी त़रफ़ की और शिफ़ा को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब किया इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मरज़ के ख़ालिक़ होने में कोई ख़राबी नहीं आती बल्कि आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तो अदब की बिना पर दोनों में फ़र्क़ किया क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ अच्छी ख़ुसूसिय्यत ही मन्सूब की जाती है घटिया नहीं।[1] लिहाज़ा येह तो कहा जाता है : ''ऐ मख़्लूक़ के ख़ालिक़ !'' जब कि येह नहीं कहा जाता है : ''ऐ बन्दरों और

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' में फ़रमाते हैं : ''बुरा काम कर के तक़्दीर की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही के ह़वाले करना बहुत बुरी बात है बल्कि हुक्म येह है कि ''जो अच्छा काम करे उसे मिन जानिबिल्लाह कहे और जो बुराई सरज़द हो उस को शामते नफ़्स तसव्वुर करे।'' (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, स. 6)

www.dawateislami.net

ख़िन्ज़ीरों के ख़ालिक़ !'' येह कहा जाता है : ''ऐ ज़मीन व आस्मां के मुदब्बिर !'' जब कि येह नहीं कहा जाता : ''ऐ जूओं और गुबरीलों के मुदब्बिर !'' इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मरज़ को अपनी त़रफ़ मन्सूब किया और शिफ़ा की निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब फ़रमाई ।

जब आप हमारी साबित कर्दा इस बात पर ग़ौर करेंगे तो आयते करीमा के अल्फ़ाज़ को ह़श्वो ज़वाइद या'नी कमी बेशी से पाक और फ़साह़त व बलाग़त की इन्तिहा पर पाएंगे, जब कि **मो'तज़िला** का फ़ासिद गुमान अल्फ़ाज़े कुरआनी में ख़लल डालता है और इस के उस्लूब को किसी मूजिब और दाई के बिग़ैर तब्दील कर देता है, जब कि कुरआन की जलालत इस तब्दीली का इन्कार करती है क्यूं कि हम ने लफ़्ज़ اِصَابَةٌ के इस्ति'माल के मुत़ाबिक़ जो ता'बीर अभी बयान की है वोह हमारे मौक़िफ़ पर सरीह़ दलालत करती है, और बिलफ़र्ज़ अगर سَيِّئَةٌ और حَسَنَةٌ की मुराद के बारे में इन की बात मान भी लें तब भी इस में उन के मौक़िफ़ पर कोई दलील नहीं बल्कि आयाते मुबा-रका तो उन के ख़िलाफ़ दलालत करती है क्यूं कि इस में इस बात पर दलालत है कि ईमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तख़्लीक़ करने से ह़ासिल हुवा क्यूं कि ईमान एक नेकी है और नेकी, बुराई की तमाम सूरतों से पाक एक ख़ुशी का नाम है और ईमान भी ऐसा ही है, लिहाज़ा इस का नेकी होना साबित हुवा, इसी लिये इस बात पर सब मुत्तफ़िक़ हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान से कलिमए शहादत मुराद है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ (پ۲۴، حٰمٓ السجدۃ:۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए ।

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में एह़सान की ता'बीर भी कलिमए शहादत ही से की है :

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ (پ۱۴، النحل:۹۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी का ।

जब येह बात साबित हो गई कि ईमान एक नेकी है तो इस आयत के मुत़ाबिक़ हर नेकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और मो'तज़िला का गुमान भी येही है तो फिर येह बात क़त़ई त़ौर पर साबित हो गई कि ईमान भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है जैसा कि येह आयते करीमा इस बात पर दलालत करती है, ह़ालां कि मो'तज़िला इस के क़ाइल नहीं, लिहाज़ा अब येह नहीं कहा जा सकता कि ईमान के ह़सन की मा'रिफ़त और इस की ज़िद या'नी कुफ़्र की बुराई की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ौल مِنَ اللّٰهِ से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर और हिदायत है ।

सुवाल : हम कहते हैं कि तुम्हारे नज़्दीक ईमान व कुफ़्र की त़रफ़ निस्बत करने में तमाम शराइत़ मुश्तरिक हैं तो बन्दा अपने इख़्तियार से इसे वुजूद में लाता है और इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत और इआ़नत का कोई दख़्ल नहीं होता, लिहाज़ा तुम्हारे नज़्दीक येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हर सूरत में मुन्क़त़ेअ़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान ''مَا اَصَابَکَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ'' के मुख़ालिफ़ है ।

www.dawateislami.net

जवाब : तुम ने इस आयते मुबा–रका से जो राय इख़्तियार की है उस का बुत़्लान ज़ाहिर हो चुका है और तुम्हारी येह राय तुम्हें कोई नफ़्अ़ न देगी, क्यूं कि जब इस आयते करीमा से येह बात साबित हो गई कि ईमान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है तो येह भी साबित हो गया कि कुफ़्र भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत से है क्यूं कि हर वोह शख़्स जो इस बात का क़ाइल हो कि ईमान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से है वोह इस बात का भी क़ाइल होता है कि कुफ़्र भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ही है, लिहाज़ा येह कहना कि इन में से एक तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से है मगर दूसरा नहीं तो येह इज्माए उम्मत के ख़िलाफ़ है।

इसी त़रह़ अगर बन्दा कुफ़्र ईजाद करने पर क़ादिर हो तो कुफ़्र ईजाद करने की क़ुदरत या तो ईमान ईजाद करने की सलाहि़य्यत रखती होगी या नहीं, अगर इसे ईजाद करने की सलाहि़य्यत रखती है तो येह क़ौल मरदूद हो जाएगा कि बन्दे का ईमान इस की अपनी जानिब से है, ह़ालां कि आयाते मुबा–रका से इस का बुत़्लान साबित हो चुका है, और अगर ईजाद करने की सलाहि़य्यत न पाए तो इस से येह बात साबित होगी कि वोह एक चीज़ पर क़ादिर है और इस की ज़िद पर क़ादिर नहीं, ह़ालां कि येह बात मो'तज़िला के नज़्दीक मुह़ाल है, लिहाज़ा येह बात साबित हो गई कि जब बन्दे से ईमान साबित न हो तो ज़रूरी होगा कि कुफ़्र भी साबित न हो।

जब बन्दा ईमान को ईजाद नहीं कर सकता तो कुफ़्र को ईजाद करना ब द–र–जए औला इस के बस में नहीं होना चाहिये क्यूं कि किसी शै का मुस्तक़िल मूजिद वोही होता है जो अपनी मुराद के ह़ुसूल पर क़ादिर हो, दुन्या में कोई ऐसा अ़क़्ल मन्द नहीं जो चाहता हो कि उस के दिल में मौजूद ख़यालात जहालत और गुमराही पर मुश्तमिल हों, लिहाज़ा जब बन्दा अपने अफ़्आ़ल का मूजिद हो इस ह़ाल में कि वोह ह़क़ीक़ी इ़ल्म ह़ासिल करने का क़स्द करे तो उस के दिल में लाज़िमन ह़क़ ही आएगा, और जब उस का मक़्सूद व मत़्लूब और मुराद ईमान हो और वोह इस की ईजाद से वाक़ेअ़ न हो तो जिस जहालत का न उस ने इरादा किया और न ही उसे ह़ासिल करने का क़स्द किया और वोह उस से शदीद नफ़रत भी करता है तो वोह भी ब द–र–जए औला वाक़ेअ़ न होगी।

अ़ल्लामा जुबाई ने इस्तिफ़्हाम के साथ या'नी اَفَمِنْ نَفْسِكَ पढ़ने वालों के बारे में जो इल्ज़ाम तराशी की है वोह मह़ज़ अपने पैरौकारों की त़रह़ इस का भी एक इफ़्तिरा है, क्यूं कि अहले सुन्नत इस क़िराअत पर ए'तिमाद नहीं करते और न ही इसे मो'तज़िला के ख़िलाफ़ दलील के त़ौर पर पेश करते हैं, इस मुआ़–मले में ह़क़ येह है कि अगर सह़ाबए किराम या ताबिई़ने इ़ज़ाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से किसी से इस त़रीक़े से पढ़ना सह़ीह़ सनद से साबित हो जाए तो इसे क़बूल करना वाजिब है, और उस वक़्त येह क़िराअत उन मो'तज़िला के ख़िलाफ़ ह़ुज्जत होगी क्यूं कि अगर क़िराअते शाज़्ह की सह़ीह़ सनद मिल जाए तो वोह सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ ह़ुज्जियत में सह़ीह़ ह़दीस की त़रह़ होती है और अगर इस की सनद द–र–जए सिह़्ह़त तक न पहुंचे तो इस की जानिब इल्तिफ़ात दुरुस्त नहीं। इस आयते करीमा का मो'तज़िला के ख़िलाफ़ ह़ुज्जत होना इस क़िराअते शाज़्ह का मोह़ताज नहीं, क्यूं कि क़िराअते मश्हूरा को

www.dawateislami.net

भी इस्तिफ़्हामे इन्कारी पर मह़मूल करना दुरुस्त है जैसा कि अगर इस का हुज्जत होना साबित हो जाए तो मश्हूर क़िराअत में इस की नज़ीर अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का वोह क़ौल है जो उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अपने ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ह़िकायत कर्दा क़ौल में इर्शाद फ़रमाया :

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّیْ (پ۷،الانعام:۷۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो।

क्यूं कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह बात इस्तिफ़्हामे इन्कारी के त़ौर पर ही कही थी। इसी त़रह़ इस आयते मुबा-रका में भी येह कहना दुरुस्त है अगर्चे हुज्जियत इसी पर मौक़ूफ़ नहीं जैसा कि हमारे साबित कर्दा बयान से ज़ाहिर है। इस सूरत में इस का मा'ना येह होगा कि वोह ईमान जो इस बन्दे के क़स्द से वाक़ेअ़ हुवा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस क़ौल "فَمِنَ اللّٰهِ" से ज़ाहिर हुवा कि वोह इस बन्दे से वाक़ेअ़ नहीं हुवा बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हुवा है, लिहाज़ा वोह कुफ़्र जिस का न इस बन्दे ने क़स्द किया, न इरादा और न ही कभी इस पर राज़ी हुवा तो अ़क़्ल में येह बात कैसे आ सकती है कि येह कहा जाए कि येह कुफ़्र इस बन्दे से वाक़ेअ़ हुवा है, बल्कि येह तो ब द-र-जए औला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है क्यूं कि येह बात साबित हो चुकी है कि जब वोह चीज़ जिस में नफ़्स की रग़बत हो, क़स्द हो और इरादा व मह़ब्बत भी हो तो वोह नफ़्स से नहीं बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से होती है। तो जिस में न नफ़्स का ह़िस्सा हो, न मह़ब्बत और न ही क़स्द व इरादा तो वोह चीज़ तो ब द-र-जए औला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की जानिब से होगी, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आयते मुबा-रका के आख़िर में इर्शाद फ़रमाया :

وَ کَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیْدًا ﴿۱۶﴾ (پ۶،النسآء:۱۶۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की गवाही काफ़ी।

येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि इस से मुराद तमाम उमूर का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मन्सूब होना है क्यूं कि इस का मत़्लब येह है आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिर्फ़ रिसालत और तब्लीग़ ही की ज़िम्मादारी थी जो कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अच्छी त़रह़ निभाई और इस में कोई कोताही नहीं बरती और इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की गवाही ही काफ़ी है, नीज़ हिदायत का ह़ासिल होना आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴾1﴿

لَیْسَ لَکَ مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ (پ۴،اٰل عمران:۱۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह बात तुम्हारे हाथ नहीं।

﴾2﴿

اِنَّکَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحْبَبْتَ (پ۲۰،القصص:۵۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक येह नहीं कि तुम जिसे अपनी त़रफ़ से चाहो हिदायत कर दो।

www.dawateislami.net

《3》
كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝ (پ۱۳، الرعد:۴۳) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** गवाह काफ़ी है।

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की गवाही काफ़ी है आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्चाई और रिसालत पर या इस बात पर कि नेकी या बुराई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की जानिब से है।

अहले सुन्नत के दलाइल वोह मिसालें हैं जो मु-तअ़द्दद आयात में बयान हुई जैसे दिल और समाअ़त पर मोहर लगना, दिल पर ज़ंग चढ़ना, कान बन्द हो जाना, बसारत पर पर्दा पड़ जाना वग़ैरा इन मिसालों के बारे में लोगों का इख़्तिलाफ़ है, अहले सुन्नत इस बात के क़ाइल हैं कि बन्दों के अफ़आ़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ हैं और येह सब बातें इन के मज़्हब में बिल्कुल ज़ाहिर हैं। फिर इन के भी दो क़ौल हैं : (1) येह तमाम मिसालें काफ़िरों के दिल में कुफ़्र पैदा करने से किनाया हैं (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुछ ऐसे दवा-ई पैदा फ़रमाए हैं कि जब क़ुदरत उन के साथ मिलती है तो येह दवा-ई और क़ुदरत का मज्मूआ़ वुक़ूए कुफ़्र का सबब बन जाता है।

मो'तज़िला इन अल्फ़ाज़ में तावील कर के अपनी क़ासिर और फ़ासिद अ़क़्लों से नुसूसे शरइय्या में तह़रीफ़ करते हुए उन्हें उन के ज़ाहिर से निकाल कर **तहक्कुमन** जैसे चाहते हैं फैर देते हैं, कभी इसे रद कर देते हैं और कभी इस में तावील करते हैं। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें रुस्वा किया और हलाकत में मुब्तला कर दिया, येह कितने ग़बी व बे वुक़ूफ़ हैं ! कितने बहरे अन्धे हैं ! गुमराही से बचने के मुआ़-मले में राहे हिदायत से कितने दूर हैं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वाज़ेह़ निशानियों और इस के तमाम ह़वादिस के ख़ालिक़ होने से कितने ग़ाफ़िल हैं ! और येह बात एक आ़जिज़, ज़ईफ़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़-मतो रिफ़अ़त और उस के ख़ास उ़लूम से जाहिल बन्दे के लाइक़ कैसे हो सकती है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान भुला दे :

لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ ۝ (پ۱۷، الانبياء:۲۳) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।

फिर कहे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुफ़्फ़ार में जो सिफ़ात पैदा फ़रमाई उन की बिना पर वोह उन की मज़म्मत कैसे कर सकता है ? इस सूरत में उन का कौन सा गुनाह ऐसा है जिस पर वोह उन्हें अ़ज़ाब देगा ?" वग़ैरा ऐसे ख़ुराफ़ात जो उन के बन्दगी के दाएरे से फ़िरार होने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी और उस की तक़्सीम पर रिज़ा मन्दी से ख़ारिज होने की ख़बर देते हैं उन की बरबादी के लिये येही वाहियात उमूर ही काफ़ी हैं जिन में पड़ कर वोह ख़ुद गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह करने लगे, सरकशी इख़्तियार की और फिर इस पर डट भी गए, अगर वोह अपने न-ज़रिय्यात पर ग़ौर करते तो ख़ुद को कुफ़्फ़ार के इस क़ौल से मरबूत़ पाते जिसे क़ुरआने पाक में यूं बयान किया गया है :

www.dawateislami.net

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ (پ۲۳، یٰسٓ:۴۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन से फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उस की राह में ख़र्च करो तो काफ़िर मुसल्मानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता।

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के जवाब में इर्शाद फ़रमाया :

اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ (پ۲۳، یٰسٓ:۴۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम तो नहीं मगर खुली गुमराही में।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें गुमराह कुन न-ज़रिय्यात और फ़ितनों के ग़ौल से अपनी पनाह में रखे और हमारे ज़ाहिरी व बातिनी अह़वाल की इस्लाह़ फ़रमाए, बेशक वोह बड़ा जव्वादो करीम और रऊफ़ो रह़ीम है।

कबीरा नम्बर 53 :

वा'दा पूरा न करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴾1﴿

وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ۝ (پ۱۵، بنیٓ اسرآءیل:۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अ़ह्द पूरा करो बेशक अ़ह्द से मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल होना है।

﴾2﴿

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۭ (پ۶، المآئدۃ:۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपने क़ौल पूरे करो।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''بِالْعُقُوْدِ से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम, ह़लाल और फ़र्ज़ कर्दा अश्या और इन में की गई ह़द बन्दियां हैं।'' सय्यिदुना इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वग़ैरा भी इसी के क़ाइल हैं।

इसी वजह से इमाम ज़ह़ाक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह वोह चीज़ें हैं जिन्हें निभाने का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा लिया है कि वोह उस के ह़लाल, ह़राम और फ़र्ज़ उमूर जैसे नमाज़ वग़ैरा अदा करेंगे।''

येह तफ़्सीर सय्यिदुना इब्ने जरीज رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस क़ौल से बेहतर है : ''येह आयते मुबा-रका अहले किताब के बारे में नाज़िल हुई या'नी ऐ पिछली किताबों पर ईमान लाने वालो ! तुम से शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में जो अ़ह्द लिये गए हैं उन्हें पूरा करो उन में से एक अ़ह्द येह भी है :

www.dawateislami.net

وَاِذْاَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ (پ۴،اٰل عمران:۱۸۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़ह्द लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना।''

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद वोह क़समें हैं जो ज़मानए जाहिलिय्यत में मुआ़-मलात पर उठाई जाती थीं।'' जब कि सय्यिदुना ज़ुजाज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''उ़क़ूद से मुराद अ़ह्द हैं क्यूं कि अ़ह्द किसी चीज़ को साबित करते हैं और उ़क़ूद भी अह़काम और मुआ़-हदे के सुबूत पर दलालत करते हैं, येही वजह है कि ईमान भी चूंकि एक अ़क़्द और अ़ह्द है या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, सिफ़ात और अह़काम की मा'रिफ़त ह़ासिल करना तो इस ए'तिबार से मख़्लूक़ पर येह लाज़िम होता है कि वोह अपने वा'दे को निभाते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम अह़काम के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दें।''

लिहाज़ा गुज़श्ता आयते करीमा का मा'ना येह होगा : ''तुम ने अपने ईमान से जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अ़ह्दो पैमान और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम अवामिर व नवाही में उस की फ़रमां बरदारी को अपने ऊपर लाज़िम ठहरा लिया है तो अब इन सब अ़ह्दों को पूरा करो।''

﴾1﴿...... सय्यिदुना इब्ने शहाब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो मक्तूब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ज़्म को नजरान भेजते वक़्त अ़ता फ़रमाया था मैं ने उस की इब्तिदा में येह लिखा हुवा पढ़ा : ''येह वज़ाह़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْىَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपने क़ौल पूरे करो तुम्हारे लिये ह़लाल हुए बे ज़बान मवेशी मगर वोह जो आगे सुनाया जाएगा तुम को लेकिन शिकार ह़लाल न समझो जब तुम एह़राम में हो बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है जो चाहे, ऐ ईमान वालो ह़लाल न ठहरा लो **अल्लाह** के निशान और न अदब वाले महीने और न ह़रम को भेजी हुई कुरबानियां और न जिन के गले में अ़लामतें आवेज़ां और न उन का माल व आबरू जो इ़ज़्ज़त वाले घर का क़स्द कर के आएं अपने रब का फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी चाहते और जब एह़राम से निकलो तो शिकार कर सकते हो और तुम्हें किसी क़ौम की अ़दावत कि उन्हों ने तुम को मस्जिदे ह़राम से रोका था ज़ियादती करने पर न उभारे और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है तुम पर ह़राम है मुर्दार

www.dawateislami.net

وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ قف وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ط اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ط اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ط فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ لا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ط قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ لا وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ز فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ○
(پ٦، المآئدة:١تا٤)

और ख़ून और सुवर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे और बे धार की चीज़ से मारा हुवा और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें तुम ज़ब्ह़ कर लो और जो किसी थान पर ज़ब्ह़ किया गया और पांसे डाल कर बांटा करना येह गुनाह का काम है आज तुम्हारे दीन की त़रफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई तो इन से न डरो और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया तो जो भूक प्यास की शिद्दत में नाचार हो यूं कि गुनाह की त़रफ़ न झुके तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है, ऐ मह़बूब तुम से पूछते हैं कि इन के लिये क्या ह़लाल हुवा तुम फ़रमा दो कि ह़लाल की गईं तुम्हारे लिये पाक चीजें और जो शिकारी जानवर तुम ने सधा लिये उन्हें शिकार पर दौड़ाते जो इ़ल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उस से उन्हें सिखाते तो खाओ उस में से जो वोह मार कर तुम्हारे लिये रहने दें और उस पर **अल्लाह** का नाम लो और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** को ह़िसाब करते देर नहीं लगती।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के नज़्दीक इस आयत का हुक्म आ़म है इस से उन्हों ने ईद के दिन के रोज़े की नज़्र सह़ीह़ होने पर इस्तिद्लाल किया है और इसे **अल्लाह** तआ़ला के इन फ़रामीन : ''(پ٢٩، الدهر:٧) **يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ** तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी मन्नतें पूरी करते हैं।'' और ''(پ٢، البقرة:١٧٧) **وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا** तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़ह्द करें।'' के साथ मज़ीद पुख़्ता किया नीज़ ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपनी नज़्र को पूरा करो।''

(صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب اثم من لایفی بالنذر، الحدیث:٦٦٩٧، ص٥٥٩)

यूं ही आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ियारे मजलिस के इन्कार पर भी इस्तिद्लाल किया है क्यूं कि अ़क़्द मुन्अ़क़िद हो चुका (तो इख़्तियार बाक़ी न रहेगा) नीज़ इकठ्ठी दी जाने वाली तीन त़लाक़ों की हुरमत पर भी इस्तिद्लाल किया है क्यूं कि निकाह़ एक अ़क़्द है जिसे **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान : ''(پ٦، المآئدة:١تا٤) **اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ** तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपने क़ौल पूरे करो।''

www.dawateislami.net

की वजह से ख़त्म करना ह़राम है फिर येह कि एक त़लाक़ का ह़राम न होना तो इज्माअ़ की वजह से है लिहाज़ा जो एक के इलावा है (या'नी इकठ्ठी तीन त़लाक़ें) इस में हुक्म अपनी अस्ल (या'नी हुरमत) पर बाक़ी रहेगा।

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन तीनों मसाइल में इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی से इख़्तिलाफ़ किया है।

वोह फ़रमाते हैं : "इस आयते करीमा (يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ط (پ۶،المائدۃ:۱) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने क़ौल पूरे करो।) के आ़म हुक्म में इस सह़ीह़ ह़दीसे पाक से तख़्सीस साबित है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में कोई नज़्र नहीं होती।"

(فتح الباری، شرح صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب النذرفیمالایملک ......الخ، ج ۱۱، ص ۵۰۲ ملخصاً)

और इस सह़ीह़ ह़दीस से ख़ियारे मजलिस की तख़्सीस साबित है : "दो ख़रीदो फ़रोख़्त करने वालों को जुदा होने से पहले इख़्तियार ह़ासिल है।"

(السنن الکبری للامام بیھقی، کتاب البیوع، باب المتبایعان بالخیار......الخ، الحدیث: ۱۰۴۳۴، ج۵، ص۴۴۲)

(और इकठ्ठी त़लाक़ों के जाइज़ होने की क़ियासे जली से तख़्सीस साबित है कि) अगर एक त़लाक़ को दूसरी त़लाक़ के साथ जम्अ़ करना ह़राम होता तो वोह नाफ़िज़ न होती पस जब इस का नाफ़िज़ होना बिल इज्माअ़ साबित है तो येह इस के ह़लाल (या'नी जाइज़) होने पर दलील है और उ़क़ूद का नाफ़िज़ हो जाना इस के ह़लाल होने का तक़ाज़ा करता है और इस पर वोह सह़ीह़ ह़दीसे पाक भी दलालत करती है : "लिआ़न करने वाले ने नाफ़िज़ होने का गुमान करते हुए इकठ्ठी तीन त़लाक़ें दीं और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे ऐसा करने से मन्अ़ न फ़रमाया।" अगर तीन त़लाक़ों को इकठ्ठा करना ह़राम होता तो फिर तो वोह ह़राम काम करने वाला होता जिस से उसे मन्अ़ करना वाजिब होता पस जब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे ऐसा करने से मन्अ़ न फ़रमाया तो येह इस के जाइज़ होने पर दलील है।

यहां येह ए'तिराज़ न किया जाए कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे लग़्व काम से क्यूं न रोका इस लिये कि हम ने इस की त़रफ़ यूं इशारा कर दिया है कि वोह वाक़ेअ़ के ए'तिबार से लग़्व थी मगर उस के गुमान में लग़्व न थी क्यूं कि उस ने गुमान किया था कि इस त़रह़ इस पर बीवी हमेशा के लिये ह़राम हो जाएगी पस उस ने इकठ्ठी तीन त़लाक़ें दे दीं और येह इस बात की दलील है कि सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان के दरमियान येह बात मु-तआ़रिफ़ थी कि इकठ्ठी तीन त़लाक़ें देना ह़राम नहीं वगर्ना नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसे ऐसा करने से ज़रूर मन्अ़ फ़रमाते।

येह सब बयान करने का मक़्सद अस्ल में अह़काम पर अ़मल करने या न करने का मुकल्लफ़ बनाना है, इन सारी चीज़ों को उ़क़ूद इस वजह से कहा गया है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन के हुक्म को ह़त्मी और पुख़्ता क़रार दिया है लिहाज़ा इन से किसी भी सूरत में छुटकारा मुम्किन नहीं। एक क़ौल येह भी मरवी है कि येह ऐसे उ़क़ूद हैं जो आ़म तौर पर लोगों के दरमियान तै पाते रहते हैं।

www.dawateislami.net

वोह रिवायात जो इस बात पर दलालत करती हैं कि अ़ह्दों को पूरा करना चाहिये और इन्हें पूरा न करना कबीरा गुनाह है वोह जर्दे ज़ैल हैं :

《2》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस शख़्स में येह चार ख़स्लतें पाई जाएं वोह पक्का मुनाफ़िक़ है और जिस में इन में से कोई एक ख़स्लत पाई जाए तो उस में निफ़ाक़ की एक अ़लामत पाई जाएगी यहां तक कि वोह इस को छोड़ दे, और वोह ख़स्लतें येह हैं : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब अमीन बनाया जाए तो ख़ियानत करे (3) जब अ़ह्द करे तो धोका दे और (4) जब किसी से झगड़े तो गाली गलोच बके।"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب علامات المنافق،الحدیث: ٣٤،ص٥)

《3》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन हर ख़ाइन (की पहचान) के लिये एक झन्डा होगा, कहा जाएगा येह फुलां की खियानत है।"

(صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب تحریم الغدر، الحدیث:٤٥٣٣،ص٩٨٦)

《4》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं क़ियामत के दिन तीन अफ़्राद का मुक़ाबिल होउंगा : (1) वोह शख़्स जिस को मेरी ख़ातिर कुछ दिया गया हो लेकिन वोह उस में ख़ियानत करे (2) वोह शख़्स जो किसी आज़ाद इन्सान को बेच दे और फिर उस की क़ीमत खा ले (3) वोह शख़्स जिस ने कोई मज़दूर उजरत पर लिया और फिर उस से काम तो पूरा लिया लेकिन उस की उजरत उसे न दी।"

(صحیح البخاری، کتاب البیوع،باب اثم من باع حراً،الحدیث: ٢٢٢٧،ص١٧٣)

《5》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त छोड़ दी वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस के पास (अ़ज़ाब से बचने की) कोई हुज्जत न होगी, और जो इस ह़ाल में मरा कि उस की गरदन में बैअ़त का पट्टा न था तो वोह जाहिलिय्यत की मौत मरा।"

(صحیح مسلم، کتاب الامارة،باب وجوب ملازمة جماعة المسلمین......الخ،الحدیث: ٤٧٩٣،ص١٠١٠)

तम्बीह :

अ़ह्द शिकनी को कबीरा गुनाह शुमार करने की वजह येह है कि इस को कई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने कबीरा गुनाह शुमार किया है, अलबत्ता इन में से बा'ज़ ने इस को अ़ह्द शिकनी और बा'ज़ ने वा'दा ख़िलाफ़ी का नाम दिया।

सुवाल : दोनों अक़्वाल या तो आपस में एक जैसे होंगे या फिर एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ होंगे, इस बिना पर हर एक को कबीरा शुमार करना मुश्किल है क्यूं कि शाफ़ेई मज़्हब में वा'दा पूरा करना मुस्तहब है वाजिब नहीं, जब कि अ़ह्द पूरा करने को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वाजिब क़रार दिया और

www.dawateislami.net

वा'दा ख़िलाफ़ी को ह़राम क़रार दिया, लिहाज़ा जो चीज़ मुस्तह़ब हो उस की मुख़ा-लफ़त करना तो जाइज़ होता है लेकिन जो चीज़ वाजिब या ह़राम हो उस की मुख़ा-लफ़त कभी तो कबीरा होती है और कभी सग़ीरा, तो फिर मुत़्लक़न वा'दा पूरा न करने को कैसे कबीरा गुनाह कहा जा सकता है ?

जवाब : अगर तो वा'दा पूरा न करने से मुराद येह हो कि सिरे से पूरा ही न किया जाए तो येह कबीरा गुनाह है और इस लिह़ाज़ से इसे एक अलग मुस्तक़िल कबीरा गुनाह शुमार किया जा सकता है, क्यूं कि इसे दूसरे कबीरा गुनाहों में से किसी के ज़िम्न में बयान नहीं किया जा सकता।

वोह अफ़राद जिन्हों ने इसे **अ़हद शिकनी** का नाम दिया है उन के नज़्दीक नज़्र वग़ैरा को पूरा करना वाजिब होगा और इस का तर्क करना कबीरा गुनाह है क्यूं कि नज़्र को पूरा करना शर-अ़ ने वाजिब क़रार दिया है और इसी त़रह़ नमाज़, ज़कात, ह़ज या रोज़े को तर्क कर देना भी कबीरा गुनाह है इस का बयान (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) आयन्दा आएगा।

वोह अफ़राद जो कहते हैं कि येह **वा'दा ख़िलाफ़ी** है तो उन के इस क़ौल को किसी मख़्सूस चीज़ पर मह़मूल किया जाएगा कि जो वज़ाह़त के बिग़ैर मा'लूम न हो सकती हो, म-सलन कोई शख़्स एक इमाम की बैअ़त करे फिर बिग़ैर किसी वजह के उस के ख़िलाफ़ लड़ने की ख़ात़िर निकल खड़ा हो तो येह कबीरा गुनाह है।

﴾6﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन अफ़राद ऐसे हैं जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन न कलाम फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।" इस ह़दीसे पाक में आगे चल कर इर्शाद फ़रमाया : "वोह शख़्स जो किसी इमाम की बैअ़त दुन्या की ख़ात़िर करे या'नी अगर वोह उसे उस की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ दे तो उस से वफ़ा करे और अगर कुछ न दे तो बे वफ़ाई करे।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار......الخ،الحدیث: ۲۹۷،ص۶۹٦)

जब कि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "वोह शख़्स जिस को मेरी ख़ात़िर कुछ दिया गया हो लेकिन वोह उस में ख़ियानत करे।"

(صحیح البخاری، کتاب البیوع،باب اثم من باع حراً،الحدیث: ۲۲۲۷،ص۱۷۳)

और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त तर्क कर दी।" (صحیح مسلم، کتاب الامارۃ،باب وجوب ملازمۃ جماعۃ المسلمین......الخ،الحدیث: ۴۷۹۳،ص۱۰۱۰)

﴾7﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो येह पसन्द करता है कि वोह जहन्नम से दूर हो जाए और जन्नत में दाख़िल हो जाए तो उसे चाहिये कि जन्नत का मक़्सूद भी पूरा करे या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान लाए, और उस पर लाज़िम है कि जो मुआ़-मला अपने लिये पसन्द करता हो वोही दूसरों के साथ करे और जो शख़्स हाथ पर हाथ

www.dawateislami.net

रख कर दिल की गहराइयों से किसी इमाम की बैअ़त कर ले तो अब उसे चाहिये कि ब क़द्रे इस्तिताअ़त उस की पैरवी करे और अगर उस के पास उस का कोई मुख़ालिफ़ आए तो उस की गरदन तन से जुदा कर दे।"

(المرجع السابق،باب وجوب الوفاء ببيعة الخليفة......الخ، الحديث: ٤٧٧٦،ص١٠٠٩)

﴾8﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी ह़र्बी को अमान दी फिर उस के साथ धोका किया और उसे क़त्ल कर दिया तो येह कबीरा गुनाह है।"

कबीरा नम्बर 54, 55 : ज़ालिमों और फ़ासिक़ों से मह़ब्बत करना और नेक लोगों से बुग़्ज़ रखना

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन बातें बिल्कुल ह़क़ हैं : (1) जिस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उन लोगों की त़रह़ नहीं करेगा जिन का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे की ज़िम्मादारी ले लेता है उसे ग़ैर के सिपुर्द नहीं करता और (3) जो शख़्स किसी क़ौम से मह़ब्बत करता है उस का ह़श्र उसी के साथ होगा।"

(المعجم الاوسط، الحديث: ٦٤٥٠،ج٥،ص١٩)

﴾2﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन बातों पर मैं क़सम उठाता हूं (1) जिस का इस्लाम में ह़िस्सा होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उन लोगों की त़रह़ न करेगा जिन का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं और इस्लाम के तीन ह़िस्से हैं रोज़ा, नमाज़ और ज़कात (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या में जिस बन्दे की ज़िम्मादारी ले लेता है क़ियामत के दिन उसे ग़ैर के सिपुर्द नहीं करेगा और (3) जो शख़्स जिस क़ौम से मह़ब्बत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उसी में शामिल कर देगा।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشه،الحديث: ٢٥١٧٥،ج٩،ص٤٧٨)

﴾3﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "शिर्क अंधेरी रात में च्यूंटी के किसी चट्टान पर रेंगने से भी ज़ियादा मख़्फ़ी है और इस का अदना द-रजा येह है कि बन्दा किसी चीज़ पर ज़ुल्म को पसन्द करे और किसी चीज़ पर अ़द्ल से बुग़्ज़ रखे, और दीन क्या है ? येही कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करना और उस के लिये बुग़्ज़ रखना।"

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (پ۳،ال عمران:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा।

(المستدرک،کتاب التفسیر،باب اخبار القتل عوض الحصین......الخ، الحدیث: ۳۲۰۲،ج۳،ص۷)

《4》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन के इलावा किसी से दोस्ती न करो और तुम्हारा खाना मुत्तक़ी ही खाए।"

(جامع الترمذی، ابواب الزهد،باب ماجاء فی صحبة المومن، الحدیث: ۲۳۹۵،ص۱۸۹۲)

तम्बीह :

इन दोनों को गुज़श्ता और आयन्दा आने वाली सहीह अहादीस के तक़ाज़ा की बिना पर कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

《5》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आदमी उन्ही लोगों के साथ होगा जिन के साथ महब्बत करेगा अगर्चे उन जैसे अमल न भी करे।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن نضر، الحدیث:۱۳۸۲۹،ج٤،ص۵۳۳،ملخصاً)

इस की एक वजह येह है कि येह बात तो लाज़िम है कि उस ने फ़ासिक़ से उस के फ़िस्क़ की वजह से महब्बत की और सालिहीन से उन की नेकी की वजह से बुग़्ज़ रखा, लिहाज़ा येह बात बिल्कुल ज़ाहिर है कि जिस तरह फ़िस्क़ का इरतिकाब कबीरा गुनाह है इसी तरह उस से महब्बत करना भी कबीरा गुनाह है, सालिहीन से बुग़्ज़ रखने का मुआ-मला भी इसी तरह है, क्यूं कि इन बदकारों से महब्बत और नेकूकारों से बुग़्ज़ रखना अपनी गरदन से इस्लाम का पट्टा उतार देने पर दलालत करता है और इस्लाम से बुग़्ज़ रखना कुफ़्र है, लिहाज़ा मुनासिब भी येही है कि इस की तरफ़ रसाई के ज़राएअ भी कबीरा गुनाह हों।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये बाहम महब्बत करने वालों के मु-तअल्लिक़ अहादीसे करीमा :

《6》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तीन ख़स्लतें ऐसी हैं जिस में होंगी वोह इन के सबब ईमान की हलावत पा लेगा : (1) जिस के नज़्दीक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दूसरों से ज़ियादा महबूब हों (2) जो किसी बन्दे से महब्बत करे और उस की महब्बत सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हो और (3) वोह जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के उसे कुफ़्र से निकालने के बा'द कुफ़्र में लौटने को इसी तरह ना पसन्द करे जिस तरह आग में डाले जाने को ना पसन्द करता है।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال من اتصف......الخ، الحدیث: ١٦٥،ص٦٨٨)

www.dawateislami.net

《7》...... एक और रियावत में येह इज़ाफ़ा है : "बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी से महब्बत करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये बुग्ज़ रखे।"

(سنن النسائی، کتاب الایمان، وشرائعہ، باب طعم الایمان، الحدیث: ۴۹۹۰،ص۴۰۹ ۲بدون"المرء")

《8》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरे जलाल के लिये एक दूसरे से महब्बत रखने वाले कहां हैं? आज जब कि मेरे अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं मैं उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह दूंगा।"

(صحیح مسلم، کتاب البر ......الخ، باب فضل الحب فی اللہ تعالیٰ ، الحدیث: ۶۵۴۸،ص۱۱۲۷)

《9》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक आदमी के ईमान में से येह भी है कि वोह किसी आदमी से सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करे, उस की महब्बत किसी माल के अ़तिय्या करने की वजह से न हो तो येही ईमान है।" (المعجم الاوسط، الحدیث: ۷۲۱۴،ج۵،ص۲۴۵)

《10》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब दो दोस्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करते हैं तो उन में से जो अपने साथी से ज़ियादा महब्बत करता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा महबूब होता है।"

(المستدرک،کتاب البروالصلة،باب اذا احب احدکم......الخ،الحدیث:۷۴۰۳،ج۵،ص۲۳۹،احبھمابدلہ"افضلھما")

《11》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बेहतरीन रफ़ीक़ वोह है जो अपने दोस्तों के लिये ज़ियादा बेहतर हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बेहतरीन पड़ोसी वोह है जो अपने पड़ोसियों के लिये ज़ियादा बेहतर हो।" (جامع الترمذی، ابواب البر والصلة ، باب ماجاء فی حق الجوار،الحدیث: ۱۹۴۴،ص۱۸۴۷)

《12》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मेरे लिये आपस में महब्बत करने वालों और मेरे लिये मिल कर बैठने वालों, मेरे लिये एक दूसरे से मिलने वालों और मेरी राह में ख़र्च करने वालों की महब्बत मेरे ज़िम्मए करम पर हो गई।"(या'नी मैं उन से ज़रूर महब्बत करूंगा।)

(المستدرک،کتاب البر والصلة ، باب احب لاخیك المسلم......الخ، الحدیث:۷۳۹۴،ج۵،ص۲۳۵)

《13》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मेरी इज़्ज़तो जलाल के लिये आपस में महब्बत करने वालों के लिये नूर के मिम्बर होंगे और अम्बिया व शु-हदाए किराम भी उन पर रश्क करेंगे।"

(جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب ماجاء فی الحب فی اللہ ،الحدیث: ۲۳۹۰،ص۱۸۹۲)

《14》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का

www.dawateislami.net

फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया कि "मेरे लिये आपस में मह़ब्बत करने वालों, मेरे लिये आपस में तअ़ल्लुक़ रखने वालों, मेरे लिये एक दूसरे से मिलने वालों, मेरी राह में ख़र्च करने वालों और मेरे लिये आपस में दोस्ती करने वालों के लिये मेरी मह़ब्बत साबित हो गई।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، الحديث: ٢٢٠٦٣،ج٨،ص ٢٣٢)

《15》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले उस दिन अ़र्श के साए में होंगे जिस दिन अ़र्श के इलावा कोई साया न होगा, अम्बिया व शु-हदाए किराम उन के मर्तबे पर रश्क करेंगे।" (या'नी उन से ख़ुश होंगे।)

(المرجع السابق، الحديث: ٢٢٨٤٦،ج٨،ص ٤٢١)

《16》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन अ़र्श के दाईं जानिब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ मेहमान बैठे होंगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श की दोनों जानिबें दाहिनी ही हैं, वोह नूर के मिम्बरों पर होंगे, उन के चेहरे नूरबार होंगे, वोह न तो अम्बिया होंगे, न शु-हदा और न ही सिद्दीक़ीन।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़मत की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत करने वाले होंगे।"

(مجمع الزوائد، كتاب الزهد،باب المحابين فى الله ،الحديث: ١٧٩٩٩،ج١٠،ص ٤٩١)

《17》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से कुछ बन्दे ऐसे हैं जो न तो अम्बिया हैं और न ही शु-हदा, बल्कि अम्बिया व शु-हदा भी उन पर रश्क करेंगे।" अ़र्ज़ की गई कि हमें बताइये : "वोह कौन हैं ? ताकि हम उन से मह़ब्बत करने लगें ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जो रिश्तेदारी और किसी तअ़ल्लुक़ के बिग़ैर सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत करते होंगे, उन के चेहरे नूर के होंगे, वोह नूर के मिम्बरों पर होंगे, जब लोग ख़ौफ़ज़दा होंगे तो उन्हें कोई ख़ौफ़ न होगा और जब लोग ग़मज़दा होंगे तो उन्हें कुछ ग़म न होगा।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ (پ۱۱، یونس:۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(صحيح ابن حبان، كتاب الصحة والمجالسة ،باب ذكر وصف المتحابين فى الله ......الخ، الحديث: ٥٧٢،ج١،ص ٣٩٠)

《18》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन एक ऐसी क़ौम को ज़रूर उठाएगा जिन के चेहरे नूरानी होंगे, वोह मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करेंगे, वोह न तो अम्बिया होंगे, न ही शु-हदा।" तो एक आ'राबी ने घुटनों के बल खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें उन के

www.dawateislami.net

औसाफ़ बयान फ़रमाइये ताकि हम उन्हें पहचान सकें।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह मुख़्तलिफ़ क़बीलों और शहरों से तअ़ल्लुक़ रखते होंगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में महब्बत करते होंगे, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये एक जगह जम्अ़ होंगे और उस का ज़िक्र करेंगे।" (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار،باب ماجاء فی مجالس الذکر ،الحدیث:۱۶۷۷۰،ج۱۰،ص۷۷)

《19》...... एक और रिवायत में है : "वोह मुख़्तलिफ़ शहरों और क़बीलों से तअ़ल्लुक़ रखते होंगे, उन के दरमियान कोई रिश्तेदारी न होगी, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में महब्बत और दोस्ती रखते होंगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन नूर के मिम्बर बिछा कर उन्हें उन पर बिठाएगा, उन के चेहरे नूरबार और कपड़े नूर के होंगे, क़ियामत के दिन लोग घबराहट में मुब्तला होंगे मगर वोह न घबराएंगे, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया हैं जिन पर न तो कोई ख़ौफ़ होगा, न ही कुछ ग़म।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،الحدیث: ۲۲۹۶۹،ج۸،ص ۴۵۰)

《20》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "क़ियामत कब क़ाइम होगी ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम ने इस के लिये क्या तय्यारी की है ?" तो उस ने अ़र्ज़ की ! "तय्यारी तो कुछ नहीं की, मगर मैं अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم से महब्बत करता हूं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम जिस से महब्बत करते हो उसी के साथ होगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हमें किसी चीज़ से इतनी ख़ुशी ह़ासिल नहीं हुई जितनी ख़ुशी शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से हुई : "तुम जिस के साथ महब्बत करते हो उसी के साथ होगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं "मैं सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़-मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से महब्बत करता हूं और मुझे उम्मीद है कि इन से महब्बत करने की वजह से मैं इन्हीं के साथ होउंगा।" (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی،باب مناقب عمر بن خطاب......الخ، الحدیث: ۳۶۸۸،ص ۳۰۰)

《21》...... एक शख़्स ने रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का उस शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जो किसी क़ौम से महब्बत करता है मगर (तक़्वा व अ़मल में) उस के बराबर नहीं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी जिस से महब्बत करता है उसी के साथ होगा।" (المرجع السابق، کتاب الادب، باب علامة الحبّ فی اللہ ،الحدیث: ۶۱۶۹،ص ۵۲۰)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 56 : औलियाउल्लाह को ईज़ा देना और इन से अ़दावत रखना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

《1》

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا۠ (پ۲۲،الاحزاب:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

《2》

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ۠ (پ۱۴،الحجر:۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मुसलमानों को अपने रह़मत के परों में ले लो।

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है, ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ज़ीशान है : ''जिस ने मेरे किसी वली की तौहीन की बेशक उस ने मेरे साथ जंग का ए'लान किया मुझे किसी काम में इतना तरद्दुद नहीं होता जितना उस मोमिन बन्दे की रूह़ क़ब्ज़ करने में होता है जो मौत को ना पसन्द करता है तो मैं भी अपने बन्दे को तक्लीफ़ देने को ना पसन्द जानता हूं मगर उस के लिये इस के सिवा कोई चारा नहीं, मेरा मोमिन बन्दा दुन्या से बे रग़बती जैसे किसी और अ़मल से मेरा कुर्ब ह़ासिल नहीं कर सकता और मेरे फ़र्ज़ कर्दा अह़काम की बजा आ-वरी जैसी मेरी कोई दूसरी इ़बादत नहीं कर सकता।''

(كنزالعمال،كتاب الايمان والاسلام، قسم الاقوال،الحديث: ١٦٧٦،ج١،ص٢٠٠،بتقدم وتأخر)

《2》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''जिस ने मेरे किसी वली से अ़दावत रखी मैं उस के साथ ए'लाने जंग करूंगा, मेरे किसी बन्दे ने मेरे फ़र्ज़ कर्दा अह़काम की बजा आ-वरी से ज़ियादा मह़बूब शै से मेरा कुर्ब ह़ासिल नहीं किया और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए़ मेरा कुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से मह़ब्बत करने लगता हूं, जब मैं उस से मह़ब्बत करने लगता हूं तो मैं उस के कान बन जाता हूं जिन से वोह सुनता है, उस की आंखें बन जाता हूं जिन से वोह देखता है, उस के हाथ बन जाता हूं जिन से वोह पकड़ता है और उस के पाउं बन जाता हूं जिन से वोह चलता है, अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो मैं उसे ज़रूर अ़ता फ़रमाता हूं और अगर किसी चीज़ से मेरी पनाह चाहे तो मैं उसे ज़रूर पनाह अ़ता फ़रमाता हूं।''

(صحيح البخاری،كتاب الرقاق،باب التواضع،الحديث: ٦٥٠٢،ص٥٤٥)

《3》...... ह़ज़रते अबू सुफ़्यान ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान, ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم के गुरौह के पास आए तो इन ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم ने उन से कहा : ''अभी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तलवारों ने उस के दुश्मनों से अपना पूरा ह़क़ वुसूल नहीं किया।''

www.dawateislami.net

(क्यूं कि अबू सुफ़्यान उस वक़्त मुसलमान न हुए थे) तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या येह बात तुम कुरैश के बुज़ुर्ग और उन के सरदार से कह रहे हो ?" फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और इस वाक़िए की ख़बर दी तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! शायद तुम ने उन्हें नाराज़ कर दिया है अगर तुम ने उन्हें नाराज़ कर दिया है तो बेशक अपने रब عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ कर दिया ।" लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन तीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पास तशरीफ़ लाए और उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ मेरे भाइयो ! क्या तुम मुझ से नाराज़ हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ भाई ! नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए ।" (صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة،باب من فضائل سلیمان وبلال وصهیب ،الحدیث: ٦٤١٢،ص١١١٨)

फ़ु-क़रा ख़ुसूसन ईमान लाने में सब्क़त लाने वाले फ़ु-क़रा सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के एह़तिराम की अ़-ज़मत का अन्दाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से लगाया जा सकता है कि जब मुश्रिकीन ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इन फ़ु-क़रा सह़ाबा के पास बैठने से जुदा करना चाहा और कहा : "इन्हें छोड़ दीजिये क्यूं कि हम इस बात को पसन्द नहीं करते कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन के साथ बैठें और अगर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें छोड़ दिया तो कुरैश के मुअ़ज़्ज़ज़ सरदार आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आएंगे ।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ (پ٧،الانعام:٥٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते ।

जब कुफ़्फ़ार इस बात से मायूस हो गए कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन फ़ु-क़रा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को ख़ुद से दूर नहीं करेंगे तो उन्हों ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दर-ख़्वास्त की : "एक दिन हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमा दें और एक दिन उन के लिये ।" इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई :

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ (پ١٥،الکهف:٢٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ व शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते हैं और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम दुन्या की ज़िन्दगानी का सिंगार चाहोगे ।

या'नी उन से मुंह फैर कर और अपनी नज़रे करम न फ़रमा कर उन पर ज़ियादती न कीजिये और दुन्या परस्त लोगों की सोह़बत को त़लब न कीजिये ।

www.dawateislami.net

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ (پ۱۵،الكهف:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमा दो कि ह़क़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे।

《1》 फिर उन के लिये अपने इस फ़रमान से ग़नी और फ़क़ीर की मिसाल बयान फ़रमाई :

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْئًا وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝ (پ۱۵،الكهف:۳۲-۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन के सामने दो मर्दों का ह़ाल बयान करो कि उन में एक को हम ने अंगूरों के दो बाग़ दिये और उन को खजूरों से ढांप लिया और उन के बीच में खेती रखी। दोनों बाग़ अपने फल लाए और उस में कुछ कमी न दी और दोनों के बीच में हम ने नह्र बहाई।

《2》

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۝ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝ (پ۱۵،الكهف۳۴تا۳۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह फल रखता था तो अपने साथी से बोला और वोह उस से रद्दो बदल करता था मैं तुझ से माल में ज़ियादा हूं और आदमियों का ज़ियादा ज़ोर रखता हूं। अपने बाग़ में गया और अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुवा बोला मुझे गुमान नहीं कि येह कभी फ़ना हो। और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम हो और अगर मैं अपने रब की त़रफ़ फिर गया भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा।

《3》

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ۝ وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ فَعَسٰى رَبِّيْۤ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस के साथी ने उस से उलट फैर करते हुए जवाब दिया क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है जिस ने तुझे मिट्टी से बनाया फिर नुत़्फ़े से फिर तुझे ठीक मर्द किया। लेकिन मैं तो येही कहता हूं कि वोह **अल्लाह** ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं करता हूं। और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे **अल्लाह** हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर **अल्लाह** की मदद का अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था। तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से

www.dawateislami.net

اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝ (پ۱۵،الکھف:۳۷تا۴۰)

अच्छा दे और तेरे बाग़ पर आस्मान से बिज्लियां उतारे तो पट पर मैदान (सफ़ेद ज़मीन) हो कर रह जाए।

《4》

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝ (پ۱۵،الکھف:۴۱۔۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या उस का पानी ज़मीन में धंस जाए फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके। और इस के फल घेर लिये गए तो अपने हाथ मलता रह गया उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वोह अपनी टेटों (औंधे मुंह) पर गिरा हुवा था और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता।

《5》

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ط هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝ (پ۱۵،الکھف:۴۳تا۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि **अल्लाह** के सामने उस की मदद करती न वोह बदला लेने के क़ाबिल था। यहां खुलता है कि इख़्तियार सच्चे **अल्लाह** का है उस का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम सब से भला। और उन के सामने ज़िन्दगानिये दुन्या की कहावत बयान करो जैसे एक पानी हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना हो कर निकला कि सूखी घास हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ाबू वाला है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के अ़ज़ीमुल मर्तबत होने और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उन की रिआ़यत पर राग़िब करने के लिये येह फ़रमाया था, इसी लिये आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फु-क़रा को इ़ज़्ज़त से नवाज़ते और अहले सुफ़्फ़ा की ख़ास इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाते।

अहले सुफ़्फ़ा महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत करने वाले वोह मुहाजिर फु-क़रा थे जो मस्जिदे न-बवी शरीफ़ के चबूतरे में रिहाइश पज़ीर थे, हर मुहाजिर आ कर उन के साथ शामिल हो जाता यहां तक कि उन की ता'दाद बहुत ज़ियादा हो गई। येह सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم सख़्त तंगदस्ती के बा वुजूद बहुत साबिर थे, मगर उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अपने औलिया के लिये तय्यार कर्दा इन्आ़मात के मुशा-हदे ने इस बात पर आमादा किया था क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिलों से अग़यार के हर तअ़ल्लुक़ को मिटा दिया था और उन्हें नेकियों

www.dawateislami.net

में सब्क़त और फ़ज़ीलत वाले अह्वाल व मक़ामात की राह दिखा दी थी, इसी वजह से येह ह़ज़रात इस बात के ह़क़दार हो गए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने दर से दूर न करे और अपने मह़बूब बन्दों के सामने उन की मद्ह़ का ए'लान करे क्यूं कि मसाजिद उन का ठिकाना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन का मत़्लूब और मौला, भूक उन की ग़िज़ा, रात में जब लोग सो जाएं तो शब बेदारी करना उन की तरकारी (या'नी सालन) और फ़क़्रो फ़ाक़ा उन का शिआ़र और ग़ुरबत व ह़या उन की पूंजी थी, उन का फ़क़्र वोह आ़म फ़क़्र न था जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुत़्लक़ मोह़ताज होना है क्यूं कि येह तो हर मख़्लूक़ की सिफ़त है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में भी येही फ़क़्र मुराद है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ (پ۲۲، فاطر:۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोह़ताज ।

बल्कि उन का फ़क़्र वोह ख़ास फ़क़्र था जो औलियाउल्लाह और मुक़र्रबीने बारगाहे ईज़्दी का शिआ़र है और वोह येह है कि दिल का ग़ैर के तअ़ल्लुक़ से ख़ाली होना और तमाम ह़-रकातो स-कनात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुशा-हदे से नफ़्अ़ उठाना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें उन की मह़ब्बत के ह़क़ाइक़ से सरफ़राज़ फ़रमा कर उन के गुरौह में उठाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करने की वजह येह है कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने इस के कबीरा होने की तसरीह़ की है और येह इस सख़्त तर वईद से बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मुह़ा-रबत या'नी जंग को सिर्फ़ सूद खाने और औलियाए किराम से अ़दावत रखने के मुआ़-मले में ज़िक्र फ़रमाया है और जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुह़ा-रबत फ़रमाए वोह कभी फ़लाह़ नहीं पा सकता बल्कि ज़रूरी है कि उस की मौत कुफ़्र पर हो (اَلْعِيَاذُ بِالله) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने फ़ज़्लो करम से इस गुनाह से आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

मैं ने अ़ल्लामा ज़रकशी को देखा कि उन्हों ने **अल ख़ादिम** में मज़्कूरा ह़दीसे पाक ज़िक्र करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ''इस शदीद वईद में ग़ौर करने के बा'द इस से मिली हुई सूद खाने पर वारिद वईद पर भी ग़ौर कर लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ (پ۳، البقرۃ:۲۷۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो अल्लाह और अल्लाह के रसूल से लड़ाई का ।

अह्नाफ़ के ''**फ़तावा बदीई**'' में है : ''जिस ने किसी आ़लिम के हुक़ूक़ को हलका जाना (बत़ौरे इ़ल्म) उस की औ़रत उस के निकाह़ से निकल जाएगी और उस के इस अ़मल ने गोया उसे मुरतद कर दिया ।''

www.dawateislami.net

इमाम हाफ़िज़ इब्ने असाकिर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "ऐ मेरे भाई ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम दोनों को तौफ़ीक़ बख़्शे और भलाई के रास्ते पर चलाए, जान ले कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के गोश्त ज़हर आलूद हैं और इन की इ़ज़्ज़त दरी (या'नी तौहीन) के मुआ-मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आदत मा'लूम है कि जो उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى को मलामत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मौत से पहले ही मुर्दा दिली में मुब्तला कर देगा :

فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ0 (پ١٨،النور:٦٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े।

कबीरा नम्बर 57 : गर्दिशे अय्याम के सबब ज़माने को बुरा कहना

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "आदमी ज़माने को गालियां देता है ह़ालां कि ज़माना (बनाने वाला) तो मैं हूं और इस के दिन, रात मेरे ही क़ब्ज़ए क़ुदरत में हैं।" (صحیح البخاری، کتاب الادب،باب لاتسبوا الدهر،الحدیث:٦١٨١،ص٥٢١)

﴾2﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है कि मैं ही इस (या'नी ज़माना) के दिन, रात फैरता हूं और जब मैं चाहता हूं इन दोनों को रोक देता हूं।" (صحیح مسلم،کتاب الالفاظ من الادب، باب النهی عن سب الدهر، الحدیث: ٥٨٦٤،ص١٠٧٧)

﴾3﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में से कोई ज़माने को गाली न दे क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही ज़माना (बनाने वाला) है।"

(المرجع السابق، الحدیث: ٥٨٦٧،ص١٠٧٧)

﴾4﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अंगूर के बेल को **कर्म** न कहो[1] और न ही येह कहो कि ज़माने का बुरा हो क्यूं कि अल्लाह ही ज़माना (बनाने वाला) है।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لاتسبوا الدهر،الحدیث:٦١٨٢،ص٥٢١)

---

1 : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْعَلٰى इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "अहले अ़रब अंगूर को इस लिये **कर्म** कहते थे कि इस से शराब बनती थी, शराब पी कर इन्सान नशे में बहुत सख़ी बन जाता है कि अपना माल जाइज़ व ना जाइज़ कामों में ख़ूब उड़ाता है, वोह समझते थे अंगूर शराब की अस्ल है और शराब कर्म व सख़ावत की अस्ल, लिहाज़ा अंगूर गोया सरापा **कर्म** व सख़ावत है जब शराब ह़राम की गई तो अंगूर को कर्म कहने से मन्अ़ कर दिया गया और फ़रमाया गया : कर्म तो मोमिन का क़ल्ब या ख़ुद मोमिन है, तुम ऐसा अच्छा नाम ऐसी ख़बीस चीज़ को क्यूं कहते हो। अ़-रबी में अच्छी ज़मीन, अंगूर, ह़ज, जिहाद सब को कर्म कहते हैं।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 412, 413)

www.dawateislami.net

﴾5﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है कि "इन्सान येह कह कर मुझे ईज़ा देता है : "ऐ ज़माने ! तेरा बुरा हो।" लिहाज़ा तुम में से कोई शख़्स ज़माने को बुरा न कहा करे क्यूं कि मैं ही ज़माना (बनाने वाला) हूं इस के दिन रात मैं ही फैरता हूं। (صحیح مسلم، کتاب الالفاظ من الادب، با ب النهی عن سب الدهر، الحدیث: ۵۸۶٤،ص۱۰۷۷)

﴾6﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से कोई शख़्स ज़माने को बुरा न कहा करे क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही ज़माना (बनाने वाला) है।" (المرجع السابق، الحدیث: ۵۸٦۵)

﴾7﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं ने अपने बन्दे से क़र्ज़ मांगा तो उस ने मुझे क़र्ज़ न दिया और मेरा बन्दा बे ख़बरी में मुझे गाली देता है वोह कहता है : "हाए ज़माना ! हाए ज़माना !" हालां कि ज़माना (बनाने वाला) तो मैं हूं।" (المسندللامام احمد بن حنبل،مسند ابی هریره ،الحدیث: ۷۹۹٤،ج۳،ص ۱٦۱)

﴾8﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ज़माने को बुरा न कहा करो क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं ज़माना (बनाने वाला) हूं इस के दिन और रात को मैं ही ताज़ा करता हूं और मैं ही इन्हें बोसीदा करता हूं और मैं ही एक बादशाह के बा'द दूसरा बादशाह लाता हूं।" (شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی المزاح ، الحدیث: ۵۲۳۷،ج٤،ص۳۱٦)

तम्बीह :

इन अहादीसे मुबा-रका के ज़ाहिरी मफ़्हूम की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और खुसूसन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान की वजह से : "मेरा बन्दा मुझे गाली देता है।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़माने को गाली देने को अपनी बुराई क़रार दिया या'नी इर्शाद फ़रमाया : "ज़माने को बुरा कहना दर अस्ल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को बुरा कहना है और येह कुफ़्र है और जो चीज़ कुफ़्र की तरफ़ ले जाने वाली हो उस का अदना मर्तबा गुनाहे कबीरा होता है, मगर हमारे शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का कलाम इस बात की सराहत करता है कि येह सिर्फ़ मक्रूह है न कि हराम चे जाएकि कबीरा गुनाह हो, इस की तफ़्सील कुछ यूं हैं : "जो ज़माने को बुरा कहते वक़्त ज़माना मुराद लेता है तो उस के मक्रूह होने में कोई कलाम नहीं और जो इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बुराई का इरादा करता है उस के कुफ़्र में कोई कलाम नहीं और अगर वोह कोई इरादा किये बिग़ैर ज़माने को बुरा कहता है तो येही सूरत महल्ले शक है क्यूं कि इस में कुफ़्र और ग़ैरे कुफ़्र दोनों का एहतिमाल है, हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का ज़ाहिरी कलाम इस बारे में भी कराहिय्यत ही का है क्यूं कि ज़माने को बुरा कहने से जो बात फ़ौरन समझी जाती है वोह ज़माना ही है और इस लफ़्ज़

www.dawateislami.net

का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इत्लाक़ करना जवाज़ी है, इसी वजह से उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस ह़दीसे मुबा-रका का येह मा'ना बताया है कि अ-रबों पर जब कोई आफ़त नाज़िल होती या मुसीबत आती तो वोह येह ए'तिक़ाद करते हुए ज़माने को बुरा कहते : ''उन्हें येह मुसीबत ज़माने की वजह से पहुंची है।'' जैसा कि वोह सितारों से बारिश मांगते और कहते : ''हमें फ़ुलां सितारे की वजह से बारिश ह़ासिल हुई।'' और येही ए'तिक़ाद रखते : ''इस के फ़ाइल वोही सितारे हैं।'' और येह ए'तिक़ाद फ़ाइले ह़क़ीक़ी पर ला'नत करने की त़रह़ है, और चूंकि हर चीज़ का फ़ाइल और ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है इस लिये नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें ऐसा करने से मन्अ़ फ़रमाया।

फिर मैं ने बहुत से उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को येह कहते देखा : ''नाज़िल होने वाली आफ़त में ज़माने की तासीर का ए'तिक़ाद रख कर ज़माने को बुरा कहना कबीरा गुनाह है।'' और पीछे जो बात साबित हो चुकी है कि ऐसा ए'तिक़ाद कुफ़्र है ह़ालां कि इस में कोई कलाम नहीं इस बिना पर येह बात मह़ल्ले नज़र है।

अ़ल्लामा इब्ने दावूद ने मुह़द्दिसीन की इस रिवायत का इन्कार किया है कि जिस में اَنَا الدَّهْرُ के अल्फ़ाज़ (या'नी ''रा'' पर पेश के साथ) मरवी हैं, वोह कहते हैं : ''अगर ऐसा होता तो **दह्र, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामों में से एक नाम होता।'' लिहाज़ा वोह जो रिवायत बयान करते हैं उस में اَنَا الدَّهْرَ (या'नी ''रा'' पर ज़बर) है और इस का मा'ना येह है : ''मैं ही ज़माने के दिन रात को बदलता हूं।'' इस सूरत में अद्दह्र, अक़्लब की ज़र्फ़ है, बा'ज़ दीगर अफ़राद ने भी इन की पैरवी की और **रा** की ज़बर को राजेह़ क़रार दिया, मगर येह दुरुस्त नहीं क्यूं कि येह रिवायत कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही दह्र है।'' इन के गुमान को बात़िल कर रही है, इसी लिये जम्हूर का मौक़िफ़ येही है कि **रा** पर पेश है और इब्ने दावूद के गुमान से हमारे मौक़िफ़ पर येह ए'तिराज़ लाज़िम नहीं आता कि **दह्र अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामों में से एक नाम होना चाहिये क्यूं कि हम बयान कर चुके हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **दह्र** का लफ़्ज़ जवाज़न बोला जाता है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में **मुअस्सिर** को **असर** की ता'ज़ीम और इस की बुराई से रोकने में शिद्दत पैदा करते हुए **ऐ़न असर** बना दिया है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 58 : ला परवाही में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी की बात कहना

बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन के ख़याल के मुताबिक़ इसे गुनाहे कबीरा में शुमार किया गया है और इस में पाए जाने वाले मफ़ासिदे अज़ीमा और ज़ाहिरी नुक़्सान की बिना पर येह बईद भी नहीं, इस की दलील बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की येह रिवायत है :

《1》...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बन्दा कभी बे सोचे समझे ऐसी बात कह जाता है कि उस के सबब जहन्नम में मशरिक़ व मग़रिब के माबैन फ़ासिले से भी ज़ियादा दूर जा पड़ता है।" (صحيح مسلم، كتاب الزهد، باب حفظ اللسان، الحديث: ٨٢-٧٤٨١،ص١١٩٥)

《2》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आदमी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की कोई बात कहता है उसे गुमान भी नहीं होता कि वोह बात उसे कहां तक पहुंचा देगी, मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक उस के लिये अपनी रिज़ा लिख देता है और आदमी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी का ऐसा कलिमा बोलता है कि उसे गुमान भी नहीं होता कि येह कलिमा उसे कहां पहुंचा देगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये क़ियामत तक के लिये अपनी ना राज़गी लिख देता है।" (المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث: ١٥٨٥٢،ج٥،ص٣٧٥)

उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह बात बादशाहों और उ-मरा के सामने उस कलाम की त़रह़ है जिस से या तो आ़म भलाई या बुराई ह़ासिल होती है।"

इसी त़रह़ किसी सुन्नत की मज़म्मत या बिदअ़त को राइज करने, ह़क़ को बात़िल करने या बात़िल को ह़क़ साबित करने, (नाह़क़) ख़ून बहाने या शर्मगाह या माल को ह़लाल ठहराने, किसी की बे इ़ज़्ज़ती करने, क़त़ए रेह़्मी करने या मुसल्मानों से ग़द्दारी करने या मियां बीवी में जुदाई डालने के लिये बोले जाने वाले कलिमात भी इसी क़बील से हैं।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **59 :** **मोह्सिन का एह्सान झुटलाना**

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया है, मगर चूंकि येह बईद है लिहाज़ा इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का इन्कार मुराद लेना मु-तअय्यन हो गया क्यूं कि वोही ह़क़ीक़ी मोह्सिन है और उसे ऐसे मोह्सिन के एह्सान झुटलाने पर मह़मूल करना भी मुम्किन है जिस के हुक़ूक़ की रिआयत करना वाजिब है जैसे शोहर के हुक़ूक़ अदा न करना और नसाई शरीफ़ की ह़दीसे मुबा-रका से इस पर इस्तिद्लाल होता है।

﴾1﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औरत पर नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो अपने शोहर का शुक्र अदा नहीं करती ह़ालां कि वोह अपने शोहर से बे नियाज़ भी नहीं।"

(المستدرک،کتاب النکاح ، باب لاینظراللہ الی امراۃ ......الخ،الحدیث: ۲۸۲۵،ج۲،ص۵۴۸)

शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों के कसरत से जहन्नम में जाने का सबब इन के अपने शोहरों की ने'मतों से इन्कार को क़रार दिया।

﴾2﴿...... और इर्शाद फ़रमाया : "अगर शोहर अपनी किसी बीवी से सारी उ़म्र हुस्ने सुलूक से पेश आए फिर वोह शोहर में कोई ऐब देख ले तब भी येही कहती है मैं ने तुझ से कभी कोई भलाई नहीं पाई।"

बिलाशुबा इन दोनों अह़ादीस में जो वईद बयान हुई वोह बहुत ही सख़्त है, लिहाज़ा शोहर के एह्सान को झुटलाने का कबीरा गुनाह होना मुम्किन है और बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने एह्सान फ़रामोशी को मुत्लक़ रखने पर इस ह़दीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल किया है कि,

﴾3﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार नहीं हो सकता।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب،باب فی شکر المعروف، الحدیث: ۴۸۱۱،ص۱۵۷۷)

शुक्रिया अदा करने का त़रीक़ा :

शुक्रिया किसी चीज़ का बदला दे कर या ता'रीफ़ या दुआ़ कर के अदा किया जा सकता है जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ की इस रिवायत से मा'लूम होता है कि,

﴾4﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिसे कोई चीज़ अ़त़ा की गई अगर वोह इस्तित़ाअ़त रखे तो उस का बदला दे, अगर इस्तित़ाअ़त न हो तो उस की ता'रीफ़ कर दे क्यूं कि जिस ने ता'रीफ़ की उस ने शुक्र अदा किया और जिस ने उसे छुपाया उस ने ना शुक्री की।" (جامع الترمذی،ابواب البر والصلۃ،باب ماجاء فی المتشبع......الخ،الحدیث:۲۰۳۴،ص۱۸۵۵)

मगर इन का येह इस्तिद्लाल इन का मुअय्यद नहीं बल्कि इसे हमारी बयान कर्दा तफ़्सील ही पर मह़मूल किया जाएगा।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 60 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे मुबारक सुन कर दुरूदे पाक न पढ़ना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि एक मरतबा ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मिम्बरे अन्वर के क़रीब आ जाओ।" तो हम मिम्बर शरीफ़ के क़रीब ह़ाज़िर हो गए, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले ज़ीने पर क़दम मुबारक रखा तो इर्शाद फ़रमाया : "आमीन।" जब दूसरे ज़ीने पर क़दम मुबारक रखा तो इर्शाद फ़रमाया : "आमीन।" और जब तीसरे ज़ीने पर क़दम मुबारक रखा तो इर्शाद फ़रमाया : "आमीन।" फिर जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर शरीफ़ से नीचे तशरीफ़ लाए तो हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आज हम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से ऐसी बात सुनी है जो पहले कभी न सुनी थी।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "जिस ने र-मज़ान का महीना पाया और उस की मग़्फ़िरत न हुई वोह (**अल्लाह** की रह़मत से) दूर हो।" तो मैं ने कहा "आमीन।" जब मैं ने दूसरे ज़ीने पर क़दम मुबारक रखा तो जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "जिस के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हुवा और उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद न पढ़ा वोह भी (रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से) दूर हो।" तो मैं ने कहा "आमीन।" फिर जब मैं ने तीसरे ज़ीने पर क़दम मुबारक रखा तो जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "जिस ने अपने वालिदैन या इन में से किसी एक को बुढ़ापे में पाया फिर उन्हों ने उसे जन्नत में दाख़िल न किया तो वोह भी (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से) दूर हो।" तो मैं ने कहा "आमीन।"

(المستدرک، کتاب البر والصلة ، باب لعن الله العاق لوالدیه......الخ،الحدیث:۷۳۳۸،ج۵،ص۲۱۳)

﴾2﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अन्वर पर क़दम मुबारक रन्जा फ़रमाया तो पहले ज़ीने पर क़दम मुबारक रखते वक़्त इर्शाद फ़रमाया : "आमीन।" फिर जब दूसरे ज़ीने को अपने क़दमों से नवाज़ा तो फ़रमाया : "आमीन।" और जब तीसरे ज़ीने पर चढ़े तो इर्शाद फ़रमाया : "आमीन।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे पास आ कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! जिस ने (माहे) र-मज़ान को पाया और उस की मग़्फ़िरत न हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर और बरबाद फ़रमाए।" तो मैं ने आमीन कहा।" और "जो अपने वालिदैन या इन में से किसी एक को पाए फिर भी जहन्नम में दाख़िल हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर करे।" मैं ने आमीन कहा।" और "जिस के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद न पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए।" तो मैं ने कहा आमीन।"

(صحیح ابن حبان، باب حق الوالدین، الحدیث:۴۱۰،ج۱،ص۳۱۵)

www.dawateislami.net

﴾3﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बरे अक़्दस पर रोनक़ अफ़रोज़ हुए तो तीन मरतबा आमीन कहा, फिर इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मैं ने आमीन क्यूं कहा ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे पास आ कर दुआ़ मांगी : "जिस के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न भेजे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए और हलाकत में मुब्तला फ़रमाए ।" मैं ने आमीन कहा और "जिस ने अपने वालिदैन या इन में से किसी एक को पाया फिर उन की ख़िदमत न कर के जहन्नम में दाख़िल हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए और हलाकत में मुब्तला फ़रमाए ।" मैं ने कहा आमीन । और "जिस ने र-मज़ान को पाया फिर भी उस की बख़्शिश न हुई और वोह जहन्नम में दाख़िल हुवा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए और हलाकत में मुब्तला फ़रमाए ।" तो मैं ने कहा आमीन ।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۱۲۵۱،ج۱۲،ص۶۵)

﴾4﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में दाख़िल हो कर मिम्बरे अन्वर पर रोनक़ अफ़रोज़ हुए तो इर्शाद फ़रमाया : "आमीन ! आमीन ! आमीन !" फिर जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जाने लगे तो अ़र्ज़ की गई "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसा काम करते देखा जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले कभी नहीं किया ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे सामने ज़ाहिर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! जिस ने अपने वालिदैन को पाया, फिर उन्हों ने उसे जन्नत में दाख़िल न कराया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर और मज़ीद दूर फ़रमाए ।" मैं ने आमीन कहा, दूसरे ज़ीने पर क़दम मुबारक रखते वक़्त जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ मांगी : "जिस ने र-मज़ान का महीना पाया और उस की मग़्फ़िरत न की गई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, मज़ीद दूर (और मह़रूम) फ़रमाए ।" तो मैं ने आमीन कहा, तीसरे ज़ीने पर क़दम मुबारक रखते वक़्त जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام मेरे सामने ज़ाहिर हुए और दुआ़ मांगी : "जिस के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, मज़ीद दूर फ़रमाए ।" तो मैं ने कहा आमीन ।"

(مجمع الزوائد ، کتاب الادعیۃ،باب فیمن ذکر عندہ فلم یصل علیہ، الحدیث:۱۷۳۱٤،ج۱۰،ص۲۵۷)

﴾5﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बरे अन्वर पर रोनक़ अफ़रोज़ हुए तो फ़रमाया : "आमीन ! आमीन ! आमीन !" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अक़्दस पर चढ़ते वक़्त आमीन कहा ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे पास आ कर कहा : "जिस ने र-मज़ान का महीना

www.dawateislami.net

पाया फिर उस की मग़्फ़िरत न हुई और वोह जहन्नम में दाख़िल हुवा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आमीन कहिये।'' तो मैं ने कहा आमीन और ''जिस ने अपने वालिदैन या इन में से एक को पाया फिर उन की ख़िदमत न की और मर कर जहन्नम में दाख़िल हुवा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आमीन कहिये,'' तो मैं ने कहा आमीन और ''जिस के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़े और मर कर जहन्नम में दाख़िल हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आमीन कहिये।'' तो मैं ने कहा आमीन।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الادعیة،باب فیمن ذکر رجاء دخول الجنان......الخ، الحدیث:٩٠٤، ج٢،ص١٣١)

﴾6﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ''उस की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़े, उस की नाक मिट्टी में मिले जिस पर र-मज़ान का महीना आया फिर उस की बख़्शिश होने से पहले ही गुज़र गया और उस की नाक मिट्टी में मिले जिस ने अपने बूढ़े वालिदैन को पाया और उन्हों ने उसे जन्नत में दाख़िल न किया।''

(جامع الترمذی، ابواب الدعوات، باب رغم انف رجل......الخ،الحدیث:٣٥٤٥،ص٢٠١٦)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हु़सैन बिन अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा फिर उस ने मुझ पर दुरूद पढ़ने में कोताही की तो बेशक वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।''

(المعجم الکبیر،الحدیث:٢٨٨٧،ج٣،ص١٢٨)

﴾8﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा और वोह मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया तो वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।''

(المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفضائل،باب ما اعطی الله محمدًا،الحدیث:١٥٥،ج٧،ص٤٤٣)

﴾9﴿...... साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।''

(سنن ابن ماجه ، ابواب اقامة الصلوة ،باب ماجاء فی التشهد،الحدیث:٩٠٨،ص٢٥٣٠)

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हु़सैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बख़ील है वोह शख़्स जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा फिर उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा।''

(جامع الترمذی، ابواب الدعوات، باب رغم انف رجل......الخ،الحدیث:٣٥٤٦،ص٢٠١٦)

﴾11﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

"क्या मैं तुम्हें लोगों में सब से बड़े बख़ील के बारे में न बताऊं ?" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो फिर भी मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े तो वोह सब से बड़ा बख़ील है ।"

(الترغيب والترهيب، كتاب الذكر والدعا، باب الترغيب فى اكثار الصلاة على النبى صلى الله عليه وسلم، الحديث: ٢٦١٣، ج٢، ص٣٣٢)

तम्बीह : दुरूदे पाक न पढ़ना गुनाहे कबीरा है या नहीं ?

मज़्कूरा अहादीसे मुबा-रका की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन में सख़्त वईद का ज़िक्र फ़रमाया है जैसे जहन्नम में दाख़िला और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام का उस के लिये बार बार रह़मत से दूरी और बरबादी की दुआ़ करना और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ऐसे शख़्स के लिये ज़िल्लत, इहानत और बुख़्ल के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना बल्कि उसे सब से बड़ा बख़ील कहना वग़ैरा येह तमाम सख़्त वईदें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र के वक़्त दुरूदे पाक न पढ़ने के गुनाहे कबीरा होने का तक़ाज़ा करती हैं ।

मगर येह उसी सूरत पर सादिक़ आता है जिस का क़ाइल मज़ाहिबे अर-बआ़ में से एक गुरौह है कि जब भी नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर हो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना वाजिब है, इन अहादीसे मुबा-रका में भी सरा-ह़तन येही बयान किया गया है, और अगर येह कहा जाए कि येह इस से पहले मुन्अ़क़िद इज्माअ़ के ख़िलाफ़ है कि नमाज़ के इलावा मुत़्लक़न दुरूदे पाक पढ़ना वाजिब नहीं, लिहाज़ा वुजूब के क़ौल की सूरत में येह कहना मुम्किन है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे ख़ैर के वक़्त दुरूदे पाक तर्क करना कबीरा गुनाह है ।

जम्हूर उ़-लमा رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के नज़्दीक इस का वाजिब न होना इन सह़ीह़ अहादीस की मौजू-दगी में इश्काल पैदा करता है, मगर उसे ऐसी सूरत पर मह़मूल करने से येह इश्काल दूर हो जाता है जिस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बे ता'ज़ीमी ज़ाहिर होती हो म-सलन किसी ह़राम खेल में मश्ग़ूल होने की वजह से दुरूदे पाक न पढ़ना ही वोह इज्तिमाई सूरत है जिस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ की रिआ़यत न करना पाया जाता है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ को हलका जानने की वजह से इस सूरत को कबीरा गुनाह क़रार देना बईद नहीं और उस वक़्त येह बात वाज़ेह़ हो जाएगी कि इन अहादीसे मुबा-रका में और अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के कुल्ली त़ौर पर दुरूदे पाक वाजिब न होने के अक़्वाल में कोई तआ़रुज़ नहीं, येह बात ख़ूब ज़ेह्न नशीन कर लें क्यूं कि येह निहायत अहम है और मैं ने किसी को इस बात की तम्बीह या इस की जानिब हलका सा इशारा करते हुए भी नहीं पाया ।

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के फ़ज़ाइल

मैं ने दुरूदो सलाम के बारे में वारिद तमाम रिवायात और इन के मु-तअ़ल्लिक़ात को अपनी किताब ''اَلدُّرُّالْمَنْضُوْدُ فِیْ فَضَآئِلِ الصَّلٰوةِ وَالسَّلَامِ عَلٰی صَاحِبِ الْمَقَامِ الْمَحْمُوْدِ'' में जम्अ़ कर दिया है।

﴾12﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा।''

(صحيح مسلم، كتاب الصلاة ،باب الصلاة على النبى صلى الله عليه و سلّم ......الخ،الحديث:٩١٢،ص٧٤٣)

﴾13﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो उसे चाहिये कि ज़रूर मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े।'' मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा।'' (مسند ابى يعلى الموصلى، مسند انس بن مالك، الحديث:٣٩٨٩،ج٣،ص٣٧٢)

﴾14﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा, उस के 10 गुनाह मिटा देगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा।''

(السنن الكبرى للامام نسائى، كتاب صفة الصلوة ، باب ٨٩،الحديث:١٢٢٠،ج١،ص٣٨٥)

﴾15﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा और जो मुझ पर 10 मरतबा दुरूदे पाक भेजेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 100 रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा और जो मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक भेजेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देगा कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उसे शु-हदा के साथ ठहराएगा।''

(مجمع الزوائد،كتاب الادعية،فى الصلوة على النبى ﷺ......الخ،الحديث:١٧٢٩٨،ج١٠،ص٢٥٣)

﴾16﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझ से अ़र्ज़ की, क्या मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश ख़बरी न सुनाऊं ? बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''जो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती नाज़िल फ़रमाऊंगा।'' तो मैं येह सुन कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुए सज्दा रेज़ हो गया।''

(المسندللامام احمدبن حنبل،حديث عبدالرحمن بن عوف الزهرى،الحديث:١٦٦٢/٦٤،ج١،ص٤٠٦/٤٠٧)

www.dawateislami.net

《17》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उम्मत के बारे में मुझ पर जो इन्आ़म फ़रमाया मैं उस के शुक्राने में सज्दा रेज़ हो गया, वोह इन्आ़म येह है कि मेरा जो उम्मती मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा।" (مسند ابی یعلی الموصلی،مسند انس عبدالرحمن بن عوف،الحدیث:۸۵۵،ج۱،ص۳۵۴)

इब्ने अबी आ़सिम ने येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद किये हैं कि "उस के 10 गुनाह मिटा देगा, उस के 10 द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और येह दुरूदे पढ़ना उस के लिये 10 गुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा।"

《18》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरा जो उम्मती इख़्लास के साथ मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा, उस के 10 द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा, उस के लिये 10 नेकियां लिखेगा और उस के 10 गुनाह मिटा देगा।"

(السنن الکبری للنسائی،کتاب عمل الیوم والیلة،باب ثواب الصلاۃعلی النبی ،الحدیث:۵/۹۸۹۲،ج۶،ص۲۱)

《19》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम मुअज़्ज़िन को अज़ान कहते सुनो तो उसी त़रह़ कहो (या'नी अज़ान का जवाब दो) फिर मुझ पर दुरूदे पाक भेजो क्यूं कि जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक भेजेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये वसीला का सुवाल करो, वसीला जन्नत में एक जगह का नाम है और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से एक ही बन्दे के शायाने शान है और मुझे उम्मीद है कि वोह बन्दा मैं ही हूं, लिहाज़ा जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये वसीला का सुवाल करेगा उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त साबित हो जाएगी (या'नी उसे मेरी शफ़ाअ़त ज़रूर मिलेगी)।"

(سنن النسائی،کتاب الآذان،باب الصلاۃ علی النبی ﷺ......الخ،الحدیث:۶۷۹،ص۱۳۰)

《20》...... "जो शख़्स मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते उस शख़्स पर 70 रह़मतें नाज़िल फ़रमाते हैं।" येह अगर्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का अपना क़ौल है लेकिन ऐसी बातें अपनी राय से नहीं कही जातीं, लिहाज़ा येह मरफ़ूअ़ ह़दीस के हुक्म में है।

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص،الحدیث:۶۷۶۶،ج۲،ص۶۱۴)

《21》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام अभी अभी अपने रब عَزَّوَجَلَّ का येह पैग़ाम ले कर मेरे पास ह़ाज़िर हुए कि ज़मीन पर जो मुसल्मान आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है मैं और मेरे फ़िरिश्ते उस पर 10 रह़मतें नाज़िल करते हैं।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعا،باب الترغیب فی اکثار......الخ،الحدیث: ۲۵۸۰،ج۲،ص۳۲۳)

www.dawateislami.net

﴾22﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते ऐसे हैं जो घूम फिर कर मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुंचाते हैं, तुम जहां भी रहो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंच जाता है।" (المعجم الاوسط،الحديث:٣٦٥،ج١،ص١١٦)

(المصنف لابن ابی شیبة، کتاب صلاۃ التطوع،باب فی ثواب الصلوۃ......الخ،الحدیث:١١،ج٢،ص٣٩٩)

﴾23﴿...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है उस का दुरूदे पाक मुझ तक पहुंच जाता है और मैं उस के लिये दुआ़ए रह़मत करता हूं और इस के इ़लावा उस के लिये 10 नेकियां लिखी जाती हैं।"

(المعجم الاوسط،الحديث:١٦٤٢،ج١،ص٤٤٦)

﴾24﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो मुझ पर सलाम भेजता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरी क़ुव्वते गोयाई लौटा देता है ताकि मैं उस के सलाम का जवाब दे सकूं।" (المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرہ،الحدیث:١٠٨١٧،ج٣،ص٦٢٠)

﴾25﴿...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी क़ब्र पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे उस ने तमाम मख़्लूक़ जितनी क़ुव्वते समाअ़त अ़ता फ़रमाई है, लिहाज़ा क़ियामत तक जो भी मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह फ़िरिश्ता मुझे उस का और उस के बाप का नाम बताएगा कि येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है जिस ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा है।"

(الترغیب و الترھیب، کتاب الذکر والدعاء،باب فی اکثارالصلوۃ علی النبیﷺ صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلَّم الحدیث:٢٥٨٦،ج٢،ص٣٢٤)

﴾26﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन लोगों में मेरे क़रीब तरीन वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा होगा।" (شعب الایمان باب فی تعظیم النبی صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلَّم......الخ،الحدیث: ١٥٦٣،ج٢،ص٢١٢)

﴾27﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब कोई बन्दा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो जब तक वोह दुरूदे पाक पढ़ता रहता है मलाएका उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कि दुरूदे पाक कम पढ़े या ज़ियादा।"

(لمسندللامام احمد بن حنبل، حدیث عامر بن ربیعه،الحدیث:١٥٦٨٠،ج٥،ص٣٢٤)

﴾28﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक चौथाई रात गुज़रने के बा'द उठ कर इर्शाद फ़रमाते : "ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो, पहला सूर फूंका जाने जाला है, इस के बा'द दूसरा सूर फूंका जाएगा और मौत अपनी तमाम तर तकालीफ़ के साथ आने वाली है।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की "मैं कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता हूं, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के लिये वक़्त का कितना हिस्सा मुक़र्रर करूं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जितना चाहो मुक़र्रर कर लो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "चौथाई हिस्सा ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जितना चाहो मुक़र्रर कर लो लेकिन अगर इस में इज़ाफ़ा करो तो तुम्हारे लिये बेहतर होगा ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "निस्फ़ हिस्सा मुक़र्रर कर लूं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जितना चाहो मुक़र्रर कर लो लेकिन अगर इस में भी इज़ाफ़ा करोगे तो तुम्हारे लिये बेहतर होगा ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर मैं (फ़राइज़ के इलावा) अपना सारा वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के लिये ख़ास कर लूं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम ऐसा करोगे तो येह तुम्हारी परेशानियों को किफ़ायत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को मिटा देगा ।" (جامع الترمذی، ابواب الزھد، باب فی الترغیب فی ذکر اللہ ......الخ،الحدیث:۲۴۵۷،ص۱۸۹۸)

﴾29﴿....... एक शख़्स ने अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मैं (फ़राइज़ के इलावा) अपना सारा वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने में सर्फ़ करूं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ख़याल है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम ऐसा करोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी दुन्यवी व उख़्रवी परेशानियों में तुम्हारी किफ़ायत फ़रमाएगा ।" (المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث طفیل بن ابی بن کعب،الحدیث:۲۱۳۰۰،ج۸،ص۵۰)

﴾30﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस मुसल्मान के पास स-दक़ा करने के लिये कुछ न हो उसे चाहिये कि वोह अपनी दुआ में "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ" (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने बन्दे और रसूल हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर रहमत नाज़िल फ़रमा और तमाम मोमिन और मुसल्मान मर्दों, औरतों पर भी रहमत भेज) पढ़ लिया करे क्यूं कि येह भी स-दक़ा है ।" (المستدرک،کتاب الاطعمة، باب زکاۃ المسلم......الخ،الحدیث:۷۲۵۷،ج۵،ص۱۷۹)

﴾31﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन कभी ख़ैर से सैर नहीं होता यहां तक कि उस का आख़िरी मक़ाम जन्नत होती है ।"

(صحیح ابن حبان،باب الادعیة،الحدیث:۹۰۰،ج۲،ص۱۳۰)

﴾32﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जुमुआ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि येह यौमे मश्हूद है जिस में फ़िरिश्ते हाज़िर होते हैं और जो भी मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है उस के दुरूदे पाक से फ़ारिग़ होने से पहले उस का दुरूदे पाक मुझ तक पहुंच जाता है ।" हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की "या

www.dawateislami.net

रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल (ज़ाहिरी) के बा'द ?'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **के जिस्मों को खाना ह़राम फ़रमा दिया है।**''

(سنن ابن ماجۃ،ابواب الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ، الحدیث:١٦٣٧،ص٢٥٧٥)

《**33**》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि मेरी उम्मत का दुरूदे पाक हर जुमुआ़ को मेरी बारगाह में पेश किया जाता है, तो उन में से जो सब से ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ने वाला होगा वोह मेरे सब से ज़ियादा क़रीब होगा।''
(السنن الکبری للبیھقی،کتاب الجمعۃ، باب مایؤمرہ فی لیلۃ الجمعۃ ،الحدیث: ٥٩٩٥،ج٣،ص٣٥٣)

《**34**》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जुमुआ़ तुम्हारे दिनों में से सब से अफ़्ज़ल दिन है, इसी में ह़ज़रते आदम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पैदा हुए और इसी दिन उन की रूह़ क़ब्ज़ हुई, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन क़ियामत आएगी, लिहाज़ा इस दिन मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मेरी बारगाह में पेश किया जाता है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारा दुरूदे पाक आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक कैसे पहुंचेगा ह़ालां कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल को मुद्दत हो चुकी होगी।'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तह़क़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **के अज्साम खाना ह़राम फ़रमा दिया है।**''

(سنن ابن ماجۃ، ابواب اقامۃ الصلوۃ ، باب فی فضل الجمعۃ، الحدیث:١٠٨٥،ص٢٥٤٠)

《**35**》...... जिस ने येह दुरूदे पाक पढ़ा : ''**جَزَی اللّٰہُ عَنَّا سَیِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا**(صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ) **مَا ھُوَ اَھْلُہٗ**'' तो उस के लिये सत्तर (70) फ़िरिश्ते एक हज़ार (1000) दिन तक नेकियां लिखते रहते हैं।''

(المعجم الکبیر،الحدیث:١١٥٠٩،ج١١،ص١٦٥)

《**36**》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब आपस में मह़ब्बत रखने वाले दो बन्दे बाहम मुलाक़ात करते हैं और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले उन के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।''
(مسند ابی یعلی الموصلی،مسند انس بن مالک،الحدیث:٢٩٥١،ج٣،ص٩٥)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 61 : दिल का सख़्त हो जाना

या'नी दिल इतना सख़्त हो जाए कि वोह किसी मजबूर इन्सान को खाना तक खिलाने से रुक जाए।

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत के रह़म दिल लोगों से भलाई त़लब करो, उन के क़रीब रहा करो और संगदिल लोगों से भलाई न मांगो क्यूं कि उन पर ला'नत उतरती है। ऐ अ़ली ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भलाई को पैदा फ़रमाया तो इस के अह्ल (या'नी अफ़राद) को भी पैदा फ़रमाया, फिर भलाई को उन का मह़बूब कर दिया और इस पर अ़मल करना उन्हें मह़बूब बना दिया नीज़ उन्हें इस की त़लब में यूं लगा दिया जैसे वोह पानी को क़ह़त़ ज़दा ज़मीन की त़रफ़ फैर देता है कि उस पानी के ज़रीए वहां वालों को जिला बख़्शे और बेशक जो लोग दुन्या में भलाई वाले होंगे वोही आख़िरत में भी भलाई वाले होंगे।"

(المستدرک،کتاب الرقاق،باب اشقی الاشقیاء من اجتمع......الخ،الحدیث: ۷۹۷۸،ج۵،ص۴۵۸)

﴾2﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत के रह़म दिल लोगों से अपनी मुरादें मांगो, उन के क़रीब रहा करो क्यूं कि मेरी रह़मत उन्हीं में है और संगदिल लोगों से मुरादें न मांगो क्यूं कि वोह मेरी ना राज़गी के मुन्तज़िर हैं।"

(کنزالعمال،کتاب الزکاۃ،قسم الاقوال ،الحدیث: ۱۶۸۰۲،ج۶،ص ۲۲۰"الفضل "بدلہ" الحوائج")

तम्बीह :

इस का कबीरा गुनाहों में शुमार होना दोनों ह़दीसों में सरा-ह़तन बयान किया गया है क्यूं कि ला'नत और ना राज़गी सख़्त वईद होने की बिना पर कबीरा गुनाह की अ़लामतों में से हैं लेकिन इस संगदिली को इस कैफ़िय्यत पर मह़मूल करना चाहिये जिसे हम ने उ़न्वान में ज़िक्र किया है और येह बिल्कुल ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को इस की सराह़त या इस की त़रफ़ इशारा करते हुए नहीं पाया।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 62, 63 : कबीरा गुनाह पर राज़ी होना या उस में तआ़वुन करना

इन दोनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करने का तज़्किरा उस बह़्स में आएगा जहां उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने اَمر بِالْمَعْرُوْف और نَهِى عَنِ الْمُنْكَر तर्क करने को कबीरा कहा है।

कबीरा नम्बर 64 : बदकारी व फ़ोह़्श गोई का आ़दी हो जाना

या'नी किसी का इस त़रह़ इन का आ़दी हो जाना कि लोग उस के शर से बचने के लिये उस से डरने लगें।

《1》...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मर्तबे के लिह़ाज़ से सब से बुरा शख़्स वोह होगा जिस की फ़ोह़्श कलामी से बचने के लिये लोग उसे छोड़ दें।''

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة، باب مدارة من يتقى فحشه، الحديث: ٦٥٩٦، ص ١١٣)

《2》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़या ईमान का ह़िस्सा है और ईमान जन्नत में ले जाने वाला है जब कि बे ह़याई ज़ुल्म में से है और ज़ुल्म जहन्नम में ले जाने वाला है।'' (جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ماجاء فی الحياء، الحديث: ٢٠٠٩، ص ١٨٥٣)

《3》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बेशक फ़ोह़्श गोई और बद अख़्लाक़ी का इस्लाम से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और लोगों में सब से अच्छा इस्लाम उस शख़्स का है जो सब से अच्छे अख़्लाक़ वाला है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث: ٢٠٩٩٧، ج ٧، ص ٤٣١)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **65 :** **दिरहमो दीनार तोड़ना**

(चूंकि दीनार सोने और दिरहम चांदी के होते थे और लोग बिला ज़रूरत उन्हें तोड़ कर अपने इस्ति'माल में ले आते लिहाज़ा) बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र किया और इस के कबीरा गुनाह होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से इस्तिद्लाल किया :

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ۝ (پ۱۹، النمل:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और शहर में नव शख़्स थे कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते ।

《1》...... मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत किया है : "वोह लोग दिरहम तोड़ा करते थे ।"

《2》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसल्मानों में राइज सिक्के बिला ज़रूरत तोड़ने से मन्अ़ फ़रमाया है ।

(سنن ابی داؤد، کتاب البیوع، باب فی کسرالدراھم،الحدیث:۳۴۴۹،ص ۱۴۸۰)

तम्बीह :

मेरे नज़्दीक इस ह़दीसे पाक में गुनाह के कबीरा होने पर कोई दलील नहीं, बल्कि इस का कबीरा गुनाह होना तो दूर की बात है इस अ़मल की हु़रमत में भी कलाम है । इस की वजह येह है कि दिरहम वग़ैरा तोड़ना उसी सूरत में ह़राम होता है, जब इस से इन की क़ीमत में कमी वाक़ेअ़ होती हो और मुन्दरिजए बाला ह़दीसे मुबा-रका अगर द-र-जए सिह़्ह़त को पहुंच जाए तो इसे इसी सूरत पर मह़्मूल किया जाएगा ।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 66 : दिरहमो दीनार में मिलावट करना

या'नी दिरहमो दीनार को ऐसी मिलावट शुदा कैफ़िय्यत पर ढालना कि अगर लोग इस पर मुत्तृलअ् हो जाएं तो उसे हरगिज़ क़बूल न करें, इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करना बिल्कुल ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को इस की सराहृत करते हुए नहीं पाया, इस की वजह येह है कि आयन्दा "**किताबुल बैअ्**" में बयान होने वाली मिलावट के दलाइल इसे भी शामिल हैं और इस में बातिृल तृरीके़ से लोगों का माल खाना भी पाया जाता है, क्यूं कि कीमिया गरी में ज़ियादा इन्हिमाक रखने वाले लोग इसे अच्छा नहीं जानते और येह लोग सिर्फ़ दिरहम को रंगते हैं या मुश्तबा बना देते हैं या लोगों को धोके में डालने वाली कोई और मिलावट कर देते हैं और बातिृल तृरीके़ से उन का माल खाते हैं।

इसी लिये आप उन्हें पाएंगे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से ब-र-कत ख़त्म फ़रमा कर उन्हें हलाकत में मुब्तला फ़रमा दिया है, पस न उन के ड़्यूब को छुपाया जाता है, न उन की ता'रीफ़ की जाती है और न ही उन को किसी जगह क़रार आता है बल्कि उन पर ज़िल्लतो रुस्वाई तृारी रहती है। इस तृरह वोह इस बद तरीन वस्फ़ के मुर-तकिब हो कर जन्नत से मह्रूम हो जाते हैं क्यूं कि वोह दुन्या की महृब्बत और उसे बातिृल तृरीके़ से हृासिल करने में मुख़्लिस होते हैं और मुसल्मानों को धोका देने और इन के अम्वाल नाहक़ तृरीके़ से खाने और ज़ाएअ् करने पर राज़ी होते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें हक़ की पैरवी करने, अपने रास्ते पर चलने और बातिृल से बचने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए, ख़ुसूसन इस बद तरीन पेशे से वाबस्ता लोगों को जिन्हों ने इस के हुसूल के लिये हृीलों का सहारा लिया है हृालां कि इस के बा वुजूद इन के फ़क्र में कमी वाके़अ् नहीं होती और उन्हें इस से ज़िल्लत व क़ह्र ही चखने को मिलता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और उन्हें अपनी इतृाअ़त की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

बाब दुवुम : # ज़ाहिरी कबीरा गुनाह

यहां मैं ज़ाहिरी कबीरा गुनाहों को फ़िक़्ह के अब्वाब की तरतीब के मुताबिक़ बयान करूंगा ताकि येह आसानी से समझे जा सकें।

كتاب الطهارة

तहारत का बयान

बरतनों का बयान

कबीरा नम्बर 67 : सोने, चांदी के बरतनों में खाना पीना

《1》...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो शख़्स सोने और चांदी के बरतन में खाता पीता है वोह अपने पेट में ग़टाग़ट जहन्नम की आग भरता है।''

(صحیح مسلم،کتاب اللباس والزینة ، باب تحریم استعمال اوانی الذهب......الخ،الحدیث:٥٣٨٥/٨٧،ص١٠٤٧)

《2》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''सोने और चांदी के बरतनों में खाने पीने से मन्अ़ किया गया है।''

(السنن الکبری للنسائی،کتاب الاطعمة ، باب صحاف الفضة،الحدیث:٦٦٣٢،ج٤،ص١٤٩)

《3》...... हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो शख़्स सोने और चांदी के बरतनों में पीता है वोह अपने पेट में जहन्नम की आग भरता है।''

(صحیح البخاری، کتاب الاشربة، باب آنیة الفضة، الحدیث:٥٦٣٤،ص٤٨٣)

《4》...... हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जो सोने चांदी के बरतन में पानी पीता है वोह अपने पेट में जहन्नम की आग भरता है।''

(صحیح مسلم،کتاب اللباس والزینة ، باب تحریم استعمال اوانی الذهب......الخ،الحدیث:٥٣٨٥/٨٧،ص١٠٤٧)

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की इत्तिबाअ़ में इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया गया शायद उन्हों ने इस के कबीरा गुनाह होने पर इन्ही अहादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा वईदों से

www.dawateislami.net

इस्तिद्लाल किया है क्यूं कि पेट में जहन्नम की आग भरना सख़्त अ़ज़ाब की वईद है फिर मैं ने **शैख़ुल इस्लाम सलाहुद्दीन अ़लाई** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इस के कबीरा गुनाह होने की वोही तौजीह बयान करते हुए देखा जो मैं ने बयान की है अलबत्ता उन्हों ने वोह तौजीह अस्हाबे मज़्हब से नक़्ल की है, **शैख़ुल इस्लाम जलाल बुल्क़ीनी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन की इत्तिबाअ़ की और फ़रमाया कि **शैख़ सलाहुद्दीन अ़लाई** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "हमारे अस्हाब ने इस बात की सराहृत की है कि सोने और चांदी के बरतनों में पानी पीना गुनाहे कबीरा है और इस पर गुज़श्ता क़ाइदा सादिक़ आता है कि हर वोह गुनाह जिस पर जहन्नम की वईद आई हो गुनाहे कबीरा है।"

सय्यिदुना दमीरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इसे एक जमाअ़त से नक़्ल कर के अपने मन्ज़ूम कलाम में ज़िक्र करते हुए फ़रमाया :

وَعَدَّ مِنْهُنَّ ذُوُوْا الْاَعْمَالِ　　　اٰنِيَةَ النَّقْدَيْنِ فِى اسْتِعْمَالِ

तरजमा : और बा अ़मल लोगों ने सोने, चांदी के बरतनों का इस्ति'माल भी ह़राम उमूर में शुमार किया है।

मगर सय्यिदुना अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और दीगर ने जम्हूर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى से नक़्ल किया है कि येह गुनाहे सग़ीरा है।

तम्बीह 2 :

ह़दीसे पाक में सोने चांदी के बरतनों में खाने पीने की मुमा-न-अ़त बतौरे मिसाल पेश की गई है, इसी लिये उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इन के इस्ति'माल के दीगर त़रीक़ों को भी इस हुक्म के साथ मिला दिया है और सोने चांदी के बरतनों को जम्अ़ करना भी इस के साथ मुल्ह़िक़ कर दिया है। लिहाज़ा येह भी ह़राम है क्यूं कि इन्हें जम्अ़ करना इन के इस्ति'माल की त़रफ़ ले जाता है जैसे खेलकूद के आलात को जम्अ़ करना।

वोह बरतन जिन के इस्ति'माल की रुख़्सत है :

اِنَاءٌ (या'नी बरतन) से मुराद हर वोह चीज़ है जो उ़र्फ़ में उस काम में इस्ति'माल हो जिस के लिये उसे बनाया गया हो, लिहाज़ा इस में सुरमा डालने वाली सलाई, सुरमा दानी, ख़िलाल करने और कान से मैल निकालने वाली सलाई वग़ैरा भी शामिल हैं, अलबत्ता अगर किसी की आंख में तक्लीफ़ हो और उसे आ़दिल त़बीब कहे कि सोने या चांदी की सलाई से सुरमा डालना इस तक्लीफ़ के लिये मुफ़ीद है तो उस के लिये ज़रूरत की बिना पर इसे इस्ति'माल करना जाइज़ है।

इस्ति'माल की हुरमत के लिये बरतन का ख़ालिस सोने या चांदी का होना ज़रूरी नहीं बल्कि अगर तांबे के बरतन पर सोने या चांदी का पानी इस त़रह़ चढ़ाया जाए कि वोह उस को छुपा दे, लेकिन जब उसे आग पर रखा जाए तब उस का असर ज़ाहिर हो तो उस का इस्ति'माल भी ह़राम है।[1] क्यूं कि इस सूरत में वोह सोने चांदी के बरतनों के क़ाइम मक़ाम होगा।

---

1 : अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के नज़्दीक : "टूटे हुए बरतन को सोने या चांदी के तार से जोड़ना जाइज़ है जब कि उस जगह से इस्ति'माल न किया जाए।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 16, स. 35)

www.dawateislami.net

इस के ह़राम होने की इ़ल्लत सोना, चांदी और ग़ुरूरो तकब्बुर है, इसी लिये अगर सोने के बरतन पर तांबे का पानी चढ़ाया जाए यहां तक कि वोह तांबा उस पूरे बरतन को घेर ले तो उस का इस्ति'माल जाइज़ है, अगर्चे आग पर रखने से उस का असर ज़ाहिर न हो जैसा कि अगर सोने के बरतन को ज़ंग लग गया और ज़ंग ने पूरे बरतन को घेर लिया तो उस का इस्ति'माल जाइज़ है। क्यूं कि इस सूरत में एक इ़ल्लत न पाई गई और वोह ग़ुरूरो तकब्बुर है।

क़ीमती व नफ़ीस बरतनों का इस्ति'माल जाइज़ है म-सलन याक़ूत और मोतियों के बरतन क्यूं कि इन में सोना चांदी नहीं और इस में तकब्बुर के वुजूद पर नज़र नहीं की जाएगी क्यूं कि ह़ुरमत के लिये सिर्फ़ तकब्बुर काफ़ी नहीं, इस लिये कि याक़ूत और मोतियों की पहचान सिर्फ़ ख़्वास को होती है, लिहाज़ा इन के इस्ति'माल से फ़ु-क़रा की दिल शिकनी का भी अन्देशा नहीं क्यूं कि जब वोह ऐसे बरतनों को देखते हैं तो उन की ग़ालिब अक्सरिय्यत उन्हें पहचान नहीं पाती जब कि सोने और चांदी के बरतन किसी से मख़्फ़ी नहीं होते लिहाज़ा अगर इन का इस्ति'माल जाइज़ होता तो येह उन की दिल शिकनी का बाइ़स होता।

तम्बीह 3 :

गुज़श्ता अश्या की ह़ुरमत के मुआ़-मले में मर्द व औ़रत और दीगर मुकल्लिफ़ीन व ग़ैर मुकल्लिफ़ीन (या'नी मुसल्मान, कुफ़्फ़ार और ना बालिग़) में कोई फ़र्क़ नहीं यहां तक कि **औ़रत पर अपने बच्चे को चांदी की निस्वार की डिबिया में पानी पिलाना भी ह़राम है** और चांदी का छोटा शिगूफ़ा उ़र्फ़न ज़ीनत की वजह से बयान कर्दा अश्या के इस्ति'माल की ह़ुरमत से ख़ारिज है पस येह कराहत के साथ जाइज़ है, क्यूं कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बरतन पर शिगूफ़ा होता था।

शिगूफ़ा उस चीज़ को कहते हैं जिस के ज़रीए़ बरतन के सूराख़ बन्द किये जाते हैं जैसे वोह धागा जिस के ज़रीए़ उस का टूटा हुवा ह़िस्सा बांधा जाता है फिर उसे ज़ीनत के लिये इस्ति'माल किया जाने लगा इसी त़रह़ शिगूफ़े का इस्ति'माल ज़रूरतन जाइज़ है लेकिन अगर येह बड़ा हो तो मक्रूह है।

मीज़ाबे रह़मत से गिरने वाला पानी मुंह या हाथ पर मल कर इस्ति'माल करना ह़राम नहीं क्यूं कि उ़र्फ़ में उस पानी के ऐसे इस्ति'माल को ह़राम शुमार नहीं किया जाता, न ही सोने चांदी से मुज़य्यन ऐसी छत के नीचे बैठना ह़राम है जिस से सोना या चांदी ज़ाहिर न होता हो।[1]

---

1 : अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के नज़्दीक **:** "मकान को रेशम, चांदी और सोने से आरास्ता करना म-सलन दीवारों, दरवाज़ों पर रेशमी पर्दे लटकाना और जगह जगह क़रीने से सोने चांदी के ज़ुरूफ़ व आलात रखना जिस से मक़्सूद मह़ज़ नुमाइश व आराइश हो तो कराहत है और अगर तकब्बुर व तफ़ाख़ुर से ऐसा करता है तो ना जाइज़ है ग़ालिबन कराहत की वजह येह होगी कि ऐसी चीज़ें अगर्चे इब्तिदाअन तकब्बुर से न हों मगर बिल आख़िर इन से तकब्बुर पैदा हो जाया करता है।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा **:** 16, स. 43)

www.dawateislami.net

सोने और चांदी के बरतन को इस्ति'माल करने का ह़ीला :

इस का त़रीक़ा येह है कि सोने या चांदी के बरतन में जो चीज़ हो उस को बाएं हाथ पर उंडेल लें या पहले किसी दूसरे बरतन में निकाल लें इस के बा'द दाएं हाथ से उस चीज़ को इस्ति'माल में लाया जाए तो चूंकि इस त़रीक़े से बराहे रास्त उस सोने चांदी के बरतन का इस्ति'माल करना साबित नहीं होता लिहाज़ा उ़र्फ़ का ए'तिबार करते हुए ऐसा करना मम्नूअ़ भी न होगा। इस ह़ीले से येह बात ज़ाहिर हो रही है कि येह उस हु़रमत को रोक देती है जो बराहे रास्त उस बरतन को इस्ति'माल करने की वजह से लाज़िम आती है।

www.dawateislami.net

हदस का बयान

कबीरा नम्बर 68 : कुरआन की कोई सूरत, आयत या हर्फ़ भुला देना

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझ पर मेरी उम्मत के अज्र पेश किये गए यहां तक कि आदमी मस्जिद से जो पर या बाल निकालता है उस का अज्र भी पेश किया गया और मुझ पर मेरी उम्मत के गुनाह पेश किये गए तो मैं ने इस से बड़ा कोई गुनाह न पाया कि आदमी को कुरआने पाक की कोई सूरत या आयत दी गई फिर उस ने उसे भुला दिया ।''

(جامع الترمذی،ابواب فضائل القرآن ،باب لم أر ذنبا......الخ،الحدیث:٢٩١٦، ص١٩٤٤)

﴾2﴿...... हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो शख़्स कुरआन पढ़े और फिर इसे भुला दे वोह क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोढ़ी हो कर मिलेगा ।''

(سنن ابی داؤد،کتاب الوتر، باب التشدید فیمن حفظ القرآن ثم نسیه ، الحدیث: ١٤٧٤،ص١٣٣٢)

﴾3﴿...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''क़ियामत के दिन मेरी उम्मत को जिन गुनाहों की सज़ा मिलेगी उन में सब से बड़ा गुनाह येह है कि उन में से किसी को किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कोई सूरत याद थी फिर उस ने उसे भुला दिया ।''

﴾4﴿...... हज़रते सय्यिदुना वलीद बिन अब्दुल्लाह बिन अबू मुग़ीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''मुझ पर गुनाह पेश किये गए तो मैं ने कुरआन पढ़ कर भुला देने वाले के गुनाह से बड़ा कोई गुनाह नहीं देखा ।''

(مصنف ابن ابی شیبه،کتاب فضائل القرآن،باب فی نسیان القرآن،الحدیث:٤،ج٧،ص١٦٣)

﴾5﴿...... हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो कुरआन पढ़े फिर इसे भुला दे वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोढ़ी हो कर मिलेगा ।''

(المرجع السابق،الحدیث:١،ج٧،ص١٦٢ "سعد"بدله "سعید")

www.dawateislami.net

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ही से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने कु़रआन सीखा फिर उसे भुला दिया वोह **अल्लाह** से कोढ़ी हो कर मिलेगा।"

(مصنف عبدالرزاق،کتاب فضائل القرآن،باب تعاهد القرآن ونسيانه، الحديث:١٦٣٤،ج٣،ص٢٢٣)

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

कु़रआने पाक भुला देने को सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه वग़ैरा की इत्तिबाअ़ में कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है मगर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه **अरौज़ा** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना इमाम अबू दावूद और इमाम तिरमिज़ी رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی की बयान कर्दा इस ह़दीसे पाक की सनद ज़ईफ़ है कि "मुझ पर मेरी उम्मत के गुनाह पेश किये गए तो मैं ने इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं पाया कि आदमी को कु़रआने पाक की कोई सूरत या आयत दी गई फिर उस ने उसे भुला दिया।" और सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ख़ुद इस पर कलाम फ़रमाया है।"

सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के जिस क़ौल की त़रफ़ सय्यिदुना राफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इशारा किया है वोह येह है : "येह ह़दीसे पाक ग़रीब है हम इस सनद के इ़लावा इस की दूसरी सनद नहीं जानते और मैं ने सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से इस ह़दीसे पाक के बारे में पूछा तो वोह भी इसे नहीं जानते थे उन्हों इस ह़दीसे पाक को ग़रीब क़रार दिया और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : "हम मुत्त़लिब बिन ह़न्त़ब के किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ह़दीसे पाक सुनने के बारे में नहीं जानते।" सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना अ़ली बिन मदैनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुत्त़लिब के ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ह़दीसे पाक सुनने का इन्कार किया है।"

इस तफ़्सील से सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इस क़ौल कि "इस की अस्नाद में ज़ो'फ़ या'नी इन्क़ित़ाअ़ है।" का मत़्लब भी ज़ाहिर हो गया क्यूं कि इस के रावी मुत्त़लिब में कोई ज़ो'फ़ नहीं क्यूं कि एक जमाअ़ते मुह़द्दिसीन ने उन्हें सिक़ह क़रार दिया है। मगर सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सईद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "इस की ह़दीसे पाक से इस्तिदलाल नहीं किया जा सकता क्यूं कि वोह अक्सर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इरसाल (या'नी जिस ह़दीस की सनद के आख़िर से रावी साक़ित़ हों) करता है ह़ालां कि उसे मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल नहीं हुवा।" और सय्यिदुना इमाम दारे कु़त़्नी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बयान किया है : "इस रिवायत में एक और इन्क़ित़ाअ़ भी है वोह येह है कि इसी मुत्त़लिब से रिवायत करने वाले रावी सय्यिदुना इब्ने जरीज رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुत्त़लिब से कोई ह़दीसे पाक सुनी ही नहीं जैसा कि मुत्त़लिब ने ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कोई ह़दीसे पाक नहीं सुनी, लिहाज़ा येह ह़दीसे पाक इस सनद के मुत़ाबिक़ साबित नहीं और येह जो कहा गया है कि उन्हों ने किसी सह़ाबी से कोई ह़दीसे पाक नहीं सुनी तो इस का रद ह़ाफ़िज़ मुन्ज़िरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह क़ौल करता है कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है।"

और इस ह़दीसे पाक : "जो क़ुरआने करीम पढ़े फिर उसे भुला दे तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोढ़ी हो कर मिलेगा।" में इन्क़िताअ़ और इरसाल दोनों हैं, नीज़ सय्यिदुना इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सुकूत पर येह ए'तिराज़ होता है कि इस में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद है और बहुत से मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی के नज़्दीक इस की ह़दीसे पाक से हुज्जत पकड़ना दुरुस्त नहीं, मगर अबू उ़बैद आजरी सय्यिदुना इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से कहते हैं : "मैं किसी को नहीं जानता जिस ने इन की ह़दीसे पाक छोड़ी हो मगर इन के इ़लावा दीगर रावी मुझे उन से ज़ियादा पसन्द हैं।" इब्ने अ़दी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : "येह अहले कूफ़ा के शीओं में से था इस के ज़ो'फ़ के बा वुजूद इस की रिवायात लिखी जाती हैं।"

तम्बीह 2 :

अरौज़ा की इबारत से ज़ाहिर होता है कि येह सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के गुज़श्ता क़ौल या'नी इस के कबीरा होने के मुवाफ़िक़ है क्यूं कि उन्हों ने हुक्म में इस पर कोई ए'तिराज़ नहीं किया, सिर्फ़ ह़दीसे पाक के ज़ो'फ़ का इफ़ादा फ़रमा दिया, इसी लिये **अरौज़ा** को मुख़्तसर करने वाले और दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی इसी त़रीक़े पर चले और इसी से सय्यिदुना सलाह़ अ़लाई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का **अल क़वाइद** में बयान कर्दा क़ौल वाज़ेह़ हो जाता है कि सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मेरा क़ुरआने करीम भुलाने को कबीरा गुनाहों में शुमार करना इस में वारिद ह़दीसे पाक की वजह से है।" इन के इस क़ौल को इख़्तियार करने की वजह से सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसे बर क़रार रखा और येह उन के इख़्तियार और ए'तिमाद से ज़ाहिर है, अलबत्ता उन का येह क़ौल मह़ल्ले नज़र है : "इस में ह़दीसे पाक वारिद हुई है।" क्यूं कि उन्हों ने इस ह़दीसे पाक की वजह से इसे गुनाहे कबीरा नहीं कहा और वोह कह भी कैसे सकते हैं कि ख़ुद ही तो इस के ज़ो'फ़ और इस में किये गए त़ा'न की निशान देही की, सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिये इसे बर क़रार रखने का सबब मा'ना के ए'तिबार से है अगर्चे इस की दलील में इन्क़िताअ़ व इरसाल वग़ैरा है और बा'ज़ अवक़ात इस रिवायत के तअ़द्दुदे तुरुक़ से इस कमी को पूरा कर लिया जाता है।

मैं ने सय्यिदुना अ़लाई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के कलाम में साबिक़ा जिहत के मुत़ाबिक़ मह़ल्ले नज़र होने के बा वुजूद इस की जो तौजीह बयान की है वोह अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़ौल से मा'लूम हुई थी, उन्हों ने सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के कलाम में इस के कबीरा

www.dawateislami.net

होने के क़ौल को इख़्तियार करने का तज़्किरा नहीं किया जब कि सय्यिदुना अ़लाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस का तज़्किरा किया है और इस से सय्यिदुना ज़रकशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़ौल का भी रद होता है कि उन्हों ने **अरौज़ा** में कुरआने करीम भुला देने के कबीरा गुनाह होने के मुआ-मले में सय्यिदुना इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुख़ा-लफ़त की है।

तम्बीह 3 :

अ़ल्लामा ख़त्ताबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने लफ़्ज़ ''**اجذم**'' से कटे हुए हाथ वाला शख़्स मुराद लिया है जब कि सय्यिदुना इब्ने क़ुतीबा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि ''**اجذم**'' से मुराद कोढ़ी होना है और सय्यिदुना इब्ने आ'राबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इस का मत़्लब है कि न तो उस के पास कोई हुज्जत हो और न उस में कोई भलाई, सय्यिदुना सुवैद बिन ग़फ़्ला رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से भी येही मा'ना मन्क़ूल है।

तम्बीह 4 :

सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और सय्यिदुना ज़रकशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वग़ैरा फ़रमाते हैं कि जिन लोगों ने इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया है उन के नज़्दीक येह उस वक़्त कबीरा होगा जब कोई ला परवाही और सुस्ती करते हुए इसे भुलाएगा गोया उन्हों ने अपनी इस बात से बेहोशी और कुरआने करीम की तिलावत से रोकने वाले मरज़ को ख़ारिज कर दिया है, ऐसी सूरत में बन्दे का गुनाहगार न होना बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि वोह वोह इस सूरत में मजबूर है और कोई इख़्तियार नहीं रखता जब कि ऐसे मरज़ की सूरत में कुरआने पाक से ग़फ़्लत इख़्तियार करने से बन्दा गुनाहगार होगा जिस की मौजू-दगी तिलावते कुरआने करीम से रुकावट नहीं, अगर्चे उस की ग़फ़्लत ऐसी चीज़ के सबब हो जो तिलावते कुरआने करीम से अहम और मुअक्कद हो, जैसे फ़र्ज़ उ़लूम वग़ैरा क्यूं कि इ़ल्म सीखने की येह शान नहीं कि इस की वजह से बन्दा याद किये हुए कुरआने करीम से इतनी ग़फ़्लत बरते कि इसे भुला ही दे, उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के इस क़ौल : ''कुरआने करीम की एक आयत भी भुला देना कबीरा गुनाह है।'' से मा'लूम होता है कि जिस ने यक़ीन की दरमियानी सिफ़त के ज़रीए़ इसे याद कर लिया या'नी जो इस में तवक़्क़ुफ़ करता हो या अक्सर ग़-लती़ करता हो उस पर वाजिब है कि इसी सिफ़त पर क़ाइम रहे, लिहाज़ा उसे अपने ह़ाफ़िज़े में कमी करना ह़राम है जब कि इस में इज़ाफ़ा करना अगर्चे एक मुअक्कद अम्र है और मज़ीद सहूलत के हुसूल के लिये इस पर तवज्जोह देनी चाहिये मगर ऐसा न करना गुनाह साबित नहीं करता।

सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के उस्ताद और सय्यिदुना **इब्ने सलाह़** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शागिर्द सय्यिदुना **अबू शामा** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कुरआने करीम भुला देने के बारे में वारिद अह़ादीस को कुरआने करीम पर अ़मल तर्क कर देने पर मह़मूल किया है क्यूं कि भुला देने से

www.dawateislami.net

मुराद दर अस्ल इस पर अ़मल तर्क कर देना ही है जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِیَ (پ۱۶،طٰہٰ:۱۱۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और बेशक हम ने आदम को इस से पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था तो वोह भूल गया।

सय्यिदुना **अबू शामा** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "क़ियामत के दिन कुरआने पाक की दो ह़ालतें होंगी : (1) जिस ने कुरआन पढ़ा और इस पर अ़मल करना न भूला कुरआन उस की शफ़ाअ़त करेगा और (2) जो इसे भुला देगा या'नी सुस्ती के बाइस इस पर अ़मल करना छोड़ देगा कुरआने पाक उस की शिकायत करेगा और जिस ने सुस्ती करते हुए इस की तिलावत भुला दी उस का भी येह ह़ाल होना बईद नहीं।"

गुज़श्ता अह़ादीसे मुबा-रका में मज़्कूर निस्यान (या'नी भुला देने) से येही ज़ाहिर होता है और इस से उन के गुमान की बजाए येही मुराद है अन्क़रीब बुख़ारी शरीफ़ की **किताबुस्सलाह** की ह़दीसे पाक में कुरआने पाक याद कर के भुला देने और फ़र्ज़ नमाज़ से ग़फ़्लत बरत कर सोए रहने वाले के बारे में एक सख़्त अ़ज़ाब की वईद ज़िक्र होगी और येह निस्यान कुरआने करीम के मुआ-मले में बिल्कुल ज़ाहिर है।

तम्बीह 5 :

सय्यिदुना इमाम **कुरतुबी** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "येह नहीं कहा जाएगा कि जब पूरा कुरआन हि़फ़्ज़ करना फ़र्ज़े ऐ़न नहीं तो इसे भुला देने वाले की मज़म्मत क्यूं की जाती है?" क्यूं कि हम तो येह कहते हैं कि जो कुरआने पाक याद करता है उस का मर्तबा बुलन्द हो जाता है और वोह अपनी ज़ात और क़ौम में मुअ़ज़्ज़ज़ हो जाता है और ऐसा क्यूंकर न हो कि जिस ने कुरआने करीम याद कर लिया उस के पहलू में नुबुव्वत का फ़ैज़ान रख दिया गया और वोह उन लोगों में शामिल हो गया जिन्हें **अहलुल्लाह** और **मुक़र्रब** कहा जाता है, तो जिस का मर्तबा ऐसा हो और वोह अपने मर्तबे में कोताही करे तो उस की सज़ा का सख़्त होना ही मुनासिब है और उस से ऐसी बातों पर मुआ-ख़ज़ा होगा जिन पर दूसरों से मुआ-ख़ज़ा न होगा और कुरआने पाक की तिलावत तर्क करने की आ़दत जहालत का सबब है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 69 : कुरआने करीम या किसी दीनी मुआ-मले में झगड़ना और ग़-लबा या बुलन्दी चाहना

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने पाक में झगड़ा न किया करो क्यूं कि इस में झगड़ना कुफ़्र है।" (مسند ابی داؤدالطیالسی،الجزء التاسع،الحدیث:۲۲۸۶،ص۳۰۲)

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआन में झगड़ना कुफ़्र है।"

(المستدرک،کتاب التفسیر،باب الجدال فی القرآن کفر،الحدیث:۲۹۳۸،ج۲،ص۵۹۶)

《3》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने पाक में बे जा बह़स करना कुफ़्र है।"

(سنن ابی داؤد،کتاب السنۃ،باب النھی عن الجدال فی القرآن،الحدیث:۴۶۰۳،ص۱۵۶۱)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "क़ुरआन में झगड़ने से मन्अ़ किया गया है।"

《5》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने पाक में झगड़ना छोड़ दो क्यूं कि तुम से पहली उम्मतों पर उसी वक़्त ला'नत की गई जब उन्हों ने क़ुरआने पाक में इख़्तिलाफ़ किया, बेशक क़ुरआने पाक में झगड़ना कुफ़्र है।"

(مصنف لابن ابی شیبۃ،کتاب فضائل القرآن ، باب من نھی عن التماری ......الخ،الحدیث:۲،ج۷،ص۱۸۸،راویہ:"ابن عمرو")

《6》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआन में न झगड़ो क्यूं कि इस में झगड़ना कुफ़्र है।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۴۹۱۶،ج۵،ص۱۵۲)

《7》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने पाक के मुआ़-मले में आपस में न झगड़ो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब की बा'ज़ आयतों से दीगर आयतों को न झुटलाओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मोमिन क़ुरआने पाक के ज़रीए झगड़ेगा तो ग़ालिब आ जाएगा और मुनाफ़िक़ क़ुरआने पाक के ज़रीए झगड़ेगा तो मग़्लूब हो जाएगा।"

(کنز العمال،کتاب الاذکار،الحدیث:۲۸۵۶،ج۱،ص۳۰۷"تکذّبوا"بدلہ" تبدّلوا" "فیغالب"بدلہ" فیطلب")

《8》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसी क़ौम के पास तशरीफ़ लाए जो क़ुरआने करीम में झगड़ रही थी, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम से सदियों

www.dawateislami.net

पहले की उम्मतें इसी वजह से हलाक हुई थीं, बेशक कुरआने करीम की बा'ज़ आयतें दीगर बा'ज़ आयतों की तस्दीक़ करती हैं लिहाज़ा बा'ज़ आयतों की वजह से दीगर बा'ज़ को न झुटलाया करो।"

(المعجم الاوسط،الحديث:٥٣٧٨،ج٤،ص١٠٩)

《9》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे अक़्दस पर बैठे गुफ़्त-गू कर रहे थे कि एक शख़्स एक आयते करीमा के ज़रीए नज़ाअ़ करता तो दूसरा शख़्स दूसरी आयत के ज़रीए। इतने में दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए गोया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चेह्रए मुबारक अनार के दानों की त़रह़ सुर्ख़ था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो! क्या तुम्हें इसी लिये भेजा गया है? क्या तुम्हें इसी का हुक्म दिया गया है? मेरे बा'द काफ़िर हो कर एक दूसरे की गरदनें मारने न लग जाना।" (المعجم الاوسط،الحديث:٨٤٧٠،ج٦،ص١٩٢)

《10》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस क़ौम को हिदायत दी गई वोह उस वक़्त तक हिदायत के रास्ते से नहीं भटकी जब तक झगड़ने न लगी फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ط (پ٢٥،الزخرف:٥٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाह़क़ झगड़े को।

(صحيح البخاري، كتاب التفسير،باب سهو ألدالخصام،الحديث: ٤٥٢٣،ص٣٧١،بدون"الذى يحج فى صحة")

《11》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को लोगों में सब से ना पसन्द वोह लोग हैं जो शदीद झगड़ालू हैं।"

《12》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक उमूर तीन क़िस्म के हैं : (1) वोह जिस का सह़ीह़ होना तुझ पर ज़ाहिर हो गया पस उस की इत्तिबाअ़ कर (2) वोह जिस का ग़लत़ होना तुझ पर ज़ाहिर हो गया पस उस से बच और (3) वोह जिस में इख़्तिलाफ़ हो जाए पस उसे उस के आ़लिम की त़रफ़ लौटा दे।" (مجمع الزوائد،كتاب العلم، باب الامور ثلاثة ، الحديث: ٧١٢،ج١،ص٣٩٠)

《13》...... ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की एक जमाअ़त से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन हमारे पास तशरीफ़ लाए उस वक़्त हम दीन के किसी मुआ़-मले में झगड़ रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शदीद ग़ज़ब नाक हो गए उस की मिस्ल पहले कभी ग़ज़ब नाक न हुए थे, फिर हमें झिड़का और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ उम्मते मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)! सब्र से काम लो, बेशक तुम से पहले लोग

www.dawateislami.net

इसी वजह से हलाक हो गए, झगड़ना छोड़ दो क्यूं कि इस में ख़ैर की कमी है, झगड़ना छोड़ दो क्यूं कि मोमिन झगड़ता नहीं, झगड़ना छोड़ दो क्यूं कि झगड़ने वाले का ख़सारा मुकम्मल हो चुका है, झगड़ना छोड़ दो क्यूं कि गुनाह होने के लिये काफ़ी है कि तुम हमेशा झगड़ते रहे, झगड़ना छोड़ दो क्यूं कि मैं बरोज़े क़ियामत झगड़ने वाले की शफ़ाअ़त नहीं करूंगा, झगड़ना छोड़ दो तो मैं जन्नत में तीन घरों का ज़ामिन होउंगा : एक नीचे, दूसरा दरमियान में और तीसरा सब से ऊपर वाला, जिस ने झगड़ना छोड़ दिया वोह सच्चा है, झगड़ना छोड़ दो क्यूं कि बुतों की इ़बादत से बचते रहने के बा'द मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने जिस चीज़ से सब से पहले बचने का हुक्म फ़रमाया वोह झगड़ना है।"

(المعجم الكبير،الحديث:٧٦٥٩،ج٨،ص١٥٢)

ज़रूरी वज़ाहत :

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़्कूरा फ़रमाने आ़लीशान से येह बात लाज़िम नहीं आती कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुतों की इ़बादत की हो क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى का इस पर इज्माअ़ है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام कुफ़्र से **मा'सूम** हैं।

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाह शुमार किया गया है लेकिन मैं ने किसी को नहीं देखा कि जिस ने इसे कबीरा कहा हो और येह अह़ादीसे मुबा-रका इस में ज़ाहिर हैं और आख़िरी ह़दीसे पाक अगर्चे ज़ईफ़ है मगर बुख़ारी शरीफ़ की मज़्कूरा ह़दीसे पाक इसे क़ुव्वत देती है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ना पसन्दीदा तरीन शख़्स वोह है जो सख़्त झगड़ालू है।" और अपनी बीवी की दुबुर (या'नी पिछले मक़ाम) में वत़ी करने को भी कबीरा गुनाह शुमार किये जाने की मिसाल इसी त़रह़ है कि आने वाली बा'ज़ अह़ादीसे मुबा-रका में इस पर भी कुफ़्र होने का हुक्म है।

लिहाज़ा इसी त़रह़ यहां कहा जाएगा कि इस गुनाह को कुफ़्र कहना इस के कबीरा होने में ज़ाहिर है बल्कि येह उस वत़ी से ब द-र-जए औला ह़क़ीक़ी कुफ़्र के क़रीब है क्यूं कि क़ुरआन में झगड़ना अगर ह़क़ीक़ी तनाक़ुज़ के वुक़ूअ़ के ए'तिक़ाद की त़रफ़ ले जाए या उस की नज़्म में शुबे की त़रफ़ ले जाए तो कुफ़्र ह़क़ीक़ी हो जाएगा अगर्चे क़ाइल कुफ़्र के अल्फ़ाज़ अदा न करे, लेकिन इस से अगर लोगों को तनाक़ुज़ या ख़लल का वह्म हो या क़ुरआने पाक के बारे में कलाम करने से इन को मह़ज़ शुबा वग़ैरा हो तो येह अगर्चे ह़क़ीक़ी कुफ़्र नहीं मगर दीन में अ़ज़ीम नुक़्सान और मुल्ह़िदीन के रास्ते पर चलने की वजह से इस का गुनाहे कबीरा होना कुछ बईद नहीं।

और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस शख़्स को सज़ा दी थी जिस ने क़ुरआने करीम की बा'ज़ आयात के बारे में पूछ कर लोगों के दिलों में अदना सा शुबा दाख़िल करने का इरादा किया और आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस शख़्स को मदीना शरीफ़

www.dawateislami.net

(زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) से निकाल दिया क्यूं कि आप को इस बात का डर था कि हर ऐब से पाक कुरआने करीम के बारे में लोगों के ए'तिक़ाद में दराड़ न पड़े, वोह बा'ज़ आयाते करीमा येह हैं :

《1》

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَ لُوْنَ ۝ (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۵۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तो उन में एक ने दूसरे की त़रफ़ मुंह किया पूछते हुए।

《2》

فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَ لُوْنَ ۝ (پ۱۸،المؤمنون:۱۰۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तो न उन में रिश्ते रहेंगे और न एक दूसरे की बात पूछे।

《3》

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ (پ۲۳،یٰسٓ:۶۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : आज हम इन के मूंहों पर मोहर कर देंगे और इन के हाथ हम से बात करेंगे और इन के पाउं इन के किये की गवाही देंगे।

《4》

يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۱۸،النور:۲۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जिस दिन इन पर गवाही देंगी इन की ज़बानें और इन के हाथ और इन के पाउं जो कुछ करते थे।

《5》

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝ (پ۲۹،المرسلات:۳۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे।

ह़ासिले कलाम येह है कि इस में झगड़ना या तो कुफ़्र है या दीन में बहुत बड़ा नुक़्सान है लिहाज़ा इस बुरे अ़मल का इरतिकाब करना या तो कुफ़्र होगा और या फिर कबीरा गुनाह, इस लिये जो मैं ने बयान किया वोह सह़ीह़ और जो मैं ने लिखा वोह वाज़ेह़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ देने वाला है, फिर मैं ने बा'ज़ को देखा जिन्हों ने कुरआने पाक और दीन के किसी मुआ़-मले में झगड़ने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया और येह मेरे बयान कर्दा की ताईद है।

www.dawateislami.net

क़ुरआने मजीद से मु-तअ़ल्लिक़ अहम उमूर पर मु-तनब्बेह करने वाली बा'ज़ अहादीस

﴾14﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "क़ुरआन को याद रखो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! येह लोगों के सीनों से ऊंटों के रस्सियों से छुटकारा पाने से भी तेज़ निकल जाता है ।"

(صحيح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب استذکار القرآن،الحدیث: ۵۰۳۳،ج۳،ص۴۳۶)

﴾15﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने करीम को पढ़ते और सुनते रहो (या'नी तकरार करते रहो) क्यूं कि येह वह्शी (या'नी जंगली दरिन्दों की त़रह़) है और येह ऊंटों के रस्सियों से रिहाई पाने से भी तेज़ लोगों के सीनों से निकल जाता है ।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۴۱۵،ج۱۰،ص۱۸۹،بلفظ"ولھو اشد تفصیا...... الخ")

﴾16﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने करीम को पढ़ते और सुनते रहो उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, येह वत़न से दूर ऊंटों से भी तेज़ लोगों के सीनों से निकल जाता है ।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۳۴۷،ج۱۰،ص۱۶۸،بدون"فوالذی نفسی بیدہ")

﴾17﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तीन दिन से कम में मुकम्मल क़ुरआन पढ़ा उस ने समझा नहीं ।" या'नी क्यूं कि उस वक़्त वोह उस के मत़ालिब में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करेगा और उस से ह़ासिल शुदा अह़काम पर अ़मल न कर सकेगा । (جامع الترمذی، ابواب القراء ات،باب فی کم أقرأ القرآن؟،الحدیث:۲۹۴۹،ص۱۹۴۸)

﴾18﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने ह़कीम को पाक होने की ह़ालत में ही छूओ ।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۳۱۳۵،ج۳،ص۲۰۵)

﴾19﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुरआने पाक को सिवाए पाक शख़्स के कोई न छूए ।"

(کتاب المراسیل لأبی داؤد مع سنن ابی داؤد،باب ماجاء فی من نام عن الصلوٰۃ، ص۸)

﴾20﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से कोई येह न कहे कि मैं फ़ुलां फ़ुलां आयत भूल गया बल्कि उसे भुला दी गई ।"

(صحیح مسلم،کتاب فضائل القرآن ، باب الامر بتعھد القرآن ، الحدیث:۱۸۴۲،ص۸۰۲)

www.dawateislami.net

《21》...... नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में से किसी के लिये येह कहना बहुत बुरा है कि मैं फुलां फुलां आयत भूल गया बल्कि उसे भुला दी गई।" (صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب استذکارالقرآن وتعاهده،الحدیث: ٥٠٣٢،ص٤٣٦)

《22》...... मरवी है कि "सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुश्मन की सर ज़मीन में कुरआने पाक ले कर सफ़र करने से मन्अ किया है।"

(سنن ابن ماجة،ابواب الجهاد،باب النهی ان یسافربالقرآن......الخ،الحدیث:٢٨٧٩،ص٢٦٥١)

《23》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "वोह कुरआने पाक पर यक़ीन नहीं रखता जो इस की हराम कर्दा चीज़ों को हलाल जानता है।"

(جامع الترمذی،ابواب فضائل القرآن،باب من قرأ القرآن......الخ،الحدیث:٢٩١٨،ص١٩٤٤)

《24》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने कुरआने पाक पढ़ा ताकि इस के ज़रीए लोगों के माल खाए वोह क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उस का चेहरा ऐसी हड्डी होगा जिस पर गोश्त न होगा।"

(شعب الایمان،باب فی تعظیم القرآن،فضل فی ترک قرأة القرآن......الخ،الحدیث:٢٦٢٥،ج٢،ص٥٣٣)

《25》...... हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : "मैं ने एक आदमी को कुरआने पाक पढ़ाया उस ने मेरी तरफ़ एक कमान हदिय्यतन भेजी तो मैं ने आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तूने उसे ले लिया तो तूने आग की कमान ली।" (سنن ابن ماجة، ابواب التجارات، باب الاجر علی تعلیم القرآن،الحدیث:٢١٥٨،ص ٢٦٠٦)

《26》...... इसी की मिस्ल एक रिवायत हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से भी मरवी है और उस में मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू आग का तौक़ पहनना पसन्द करता है तो उस कमान को ले ले।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الاجارة ، باب فی کسب المعلم، الحدیث: ٣٤١٦،ص١٤٧٨)

《27》...... एक और रिवायत में है : "अगर तू चाहता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आग की कमान तेरे गले में लटकाए तो उसे ले ले।" (حلیة الاولیاء، الحدیث: ٧٩٠٩،ج٦،ص٨٩)

《28》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो कुरआने करीम की ता'लीम पर कमान लेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आग की कमान उस के गले में लटकाएगा।"

(سنن الکبرٰی للبیهقی،کتاب الاجارة، باب من کره اخذالاجرة،الحدیث: ١١٦٥٥،ج٦،ص٢٠٨)

《29》...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने कुरआन पढ़ाने पर बदला लिया पस उस ने दुन्या ही में अपनी नेकियों का बदला लेने में जल्दी की और कुरआने पाक क़ियामत के दिन उस से झगड़ेगा।" (حلیة الاولیاء، الحدیث: ٤٦٣٠،ج٤،ص٢٢،"یحاجه"بدله"یخاصمه")

www.dawateislami.net

उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की एक जमाअ़त ने इन अहा़दीसे मुबा-रका के ज़ाहिर को लिया और ता'लीमे कुरआन पर उजरत को ह़राम क़रार दिया जब कि अक्सर उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने मुबारक की वजह से उजरत लेने को जाइज़ क़रार दिया है कि,

《30》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जिन चीज़ों पर बदला लिया जाता है उन में सब से ज़ियादा ह़क़दार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब है।" [1]

(السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الاجارۃ، باب اخذالاجرۃ علی تعلیم القرآن، الحدیث: ۱۱۶۷۶، ج۶، ص۲۰۵)

《31》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन हानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : "सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कुरआने करीम सुन कर वोह असर पाते हैं जो ख़ल्वत में ख़ुद पढ़ने से नहीं पाते।" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बिल्कुल ठीक है, मैं बाति़नी तौ़र पर पढ़ता हूं जब कि तुम ज़ाहिरी तौ़र पर पढ़ते हो।" सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! बाति़न क्या है और ज़ाहिर क्या है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं पढ़ता हूं और ग़ौरो फ़िक्र करता हूं और जो कुछ इस में है उस पर अ़मल करता हूं जब कि तुम इस त़रह़ पढ़ते हो (येह फ़रमा कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने) अपने हाथ से इशारा किया जैसे हाथ से रस्सी को बल (या'नी मरोड़) दिया हो।"

(کنز العمال، کتاب الاذکار، فرع فی محظورات التلاوۃ......الخ، الحدیث:۲۸۷۶، ج۱، ص۳۰۹، بتقدمٍ وتاخرٍ)

---

1 : ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ता़अ़त व इ़बादत के कामों पर इजारा करना जाइज़ नहीं म-सलन अज़ान कहने के लिये, इमामत के लिये, कुरआन व फ़िक़्ह की ता'लीम के लिये, ह़ज के लिये या'नी इस लिये अजीर किया कि किसी की त़रफ़ से ह़ज करे, मु-तक़द्दिमीन फु-क़हा का येही मस्लक था मगर मु-तअख़्ख़िरीन ने देखा कि दीन के कामों में सुस्ती पैदा हो गई है अगर इस इजारे की सब सूरतों को ना जाइज़ कहा जाए तो दीन के बहुत से कामों में ख़लल वाक़ेअ़ होगा। उन्हों ने इस कुल्लिया से बा'ज़ उमूर का इस्तिस्ना फ़रमा दिया और येह फ़तवा दिया कि ता'लीमुल कुरआन व फ़िक़्ह और अज़ान व इमामत पर इजारा जाइज़ है क्यूं कि ऐसा न किया जाए तो कुरआन व फ़िक़्ह के पढ़ाने वाले त़-लबे मईशत में मश्ग़ूल हो कर इस काम को छोड़ देंगे और लोग दीन की बातों से ना वाक़िफ़ होते जाएंगे। इसी त़रह़ अगर मुअज़्ज़िन व इमाम को नोकर न रखा जाए तो बहुत सी मसाजिद में अज़ान व जमाअ़त का सिल्सिला बन्द हो जाएगा और इस शिआ़रे इस्लामी में ज़बर दस्त कमी वाक़ेअ़ हो जाएगी इसी त़रह़ बा'ज़ उ-लमा ने वा'ज़ पर इजारे को भी जाइज़ कहा है इस ज़माने में अक्सर मक़ामात ऐसे हैं जहां अहले इल्म नहीं हैं इधर उधर से कभी कोई आ़लिम पहुंच जाता है जो वा'ज़ व तक़रीर के ज़रीए उन्हें दीन की ता'लीम दे देता है अगर इस इजारे को ना जाइज़ कर दिया जाए तो अ़वाम को जो इस ज़रीए से कुछ इल्म की बातें मा'लूम हो जाती हैं इस का इन्सिदाद हो जाएगा यहां येह बता देना भी ज़रूरी मा'लूम होता है कि जब अस्ल मज़्हब येही है कि येह इजारा ना जाइज़ है एक दीनी ज़रूरत की बिना पर इस के जवाज़ का फ़तवा दिया जाता है तो जिस बन्दए ख़ुदा से हो सके कि इन उमूर को मह़ज़ ख़ालिसन लि वज्हिल्लाह अन्जाम दे और अज्रे उख़्रवी का मुस्तह़िक़ बने तो इस से बेहतर क्या बात है फिर अगर लोग उस की ख़िदमत करें बल्कि येह तसव्वुर करते हुए कि दीन की ख़िदमत येह करते हैं हम इन की ख़िदमत कर के सवाब ह़ासिल करें तो देने वाला मुस्तह़िक़े सवाब होगा और उस को लेना जाइज़ होगा कि येह उजरत नहीं है बल्कि इआ़नत व इमदाद है।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़स्सा : 14, स. 145, 146)

www.dawateislami.net

《32》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कु़रआन पढ़ने वाले तीन त़रह़ के लोग हैं : (1) वोह जिस ने इसे उजरत का ज़रीआ़ बनाया (2) वोह जो मिम्बर पर बैठ कर शैख़ी बघारता है यहां तक कि येह बात उसे मज़ामीर से ज़ियादा पसन्द होती है पस वोह कहता है : "ख़ुदा की क़सम ! न तो मैं कलाम में ग़-लती़ करता हूं और न ही मेरा कोई ह़र्फ़ ऐब वाला है पस येह मेरी उम्मत का शरीर तरीन गुरौह है और (3) वोह जिस के पेट (के तक़ाज़े) ने उसे लिबास पहनाया और दिल (की ह़िर्स) ने खाना खिलाया लिहाज़ा उस ने अपने दिल को एक ऐसा मेह़राब बना लिया कि जिस से लोग तो आ़फ़िय्यत में हैं लेकिन वोह ख़ुद मुसीबत में गिरिफ़्तार है, ऐसे लोग (मर्तबे के लिहाज़ से) मेरी उम्मत में सुर्ख़ गन्धक से भी कम हैं।" (المرجع السابق ،الحدیث:۲۸۷۷)

《33》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कु़रआन को पढ़ने वाले तीन क़िस्म के होते हैं : (1) वोह जिस ने कु़रआने पाक पढ़ा फिर इस को सामाने तिजारत बना लिया और इस के ज़रीए़ लोगों को अपनी त़रफ़ माइल किया (2) वोह जिस ने कु़रआन को पढ़ा और इस के ह़ुरूफ़ को सह़ीह़ अदा किया लेकिन इस के अह़काम पर अ़मल न किया, अक्सर कु़रआन पढ़ने वाले ऐसे ही हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन को ज़ियादा न करे (आमीन) और (3) वोह जिस ने कु़रआन पढ़ा पस कु़रआन की दवा को दिल की बीमारी पर लगा लिया, कु़रआन के ज़रीए़ अपनी रातों को बेदार किया और इस के ज़रीए़ अपने दिन को प्यासा किया, उन्हों ने अपनी सज्दा गाहों में क़ियाम किया और उस की इ़ज़्ज़त की, तो येही वोह लोग हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिन की ब-र-कत से बलाएं टालता है, दुश्मनों से बचाता है और आस्मान की बारिश नाज़िल फ़रमाता है, ख़ुदा की क़सम ! ऐसे **कु़र्रा** सुर्ख़ गन्धक से भी ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाले (या'नी क़ीमती) हैं।"

(شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن،فصل فی ترک المباھاۃ بقراءۃ ،الحدیث:۲۶۲۱،ج۲،ص۵۳۱)

www.dawateislami.net

क़ज़ाए ह़ाजत का बयान

कबीरा नम्बर 70 : गुज़र गाहों पर पाख़ाना करना

﴾1﴿...... एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से अ़र्ज़ की : "आप ने हमें हर चीज़ के बारे में शर-ई अह़काम बयान फ़रमा दिये हैं, अब हमें क़ज़ाए ह़ाजत के बारे में भी कुछ इर्शाद फ़रमाएं। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया कि "मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने मुसल्मानों के किसी रास्ते में पाख़ाना किया उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, मलाएका और तमाम लोगों की ला'नत हो।"

(المعجم الاوسط، الحديث:٥٤٢٦،ج٤،ص١٢٢)

﴾2﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो मुसल्मानों को उन के किसी रास्ते के मुआ़-मले में तक्लीफ़ देता है उस पर मुसल्मानों की ला'नत वाजिब हो जाती है।" (المعجم الكبير،الحديث:٣٠٥٠،ج٣،ص١٧٩)

﴾3﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो किसी ऐसी नहर के किनारे पाख़ाना करे जिस से वुज़ू किया जाता हो या पानी पिया जाता हो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, मलाएका और तमाम इन्सानों की ला'नत हो।"

(تاريخ بغداد،داود بن عبدالجبار......الخ،الرقم : ٤٤٥٦،ج٨،ص ٣٥١،"حافة"بدله"ضفة")

﴾4﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ला'नत के तीन कामों से बचते रहो।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ला'नत के वोह तीन काम कौन से हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह येह हैं कि तुम में से कोई किसी साएबान, रास्ते या जम्अ़ शुदा पानी में पाख़ाना करे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن عباس......الخ،الحديث: ٢٧١٥،ج١،ص ٦٤٠)

﴾5﴿...... एक और रिवायत में है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ला'नत वाले तीन कामों से बचते रहो या'नी बैठने की जगहों, रास्ते के कोनों और साए में पाख़ाना मत किया करो।" (سنن ابی داؤد،كتاب الطهارة،باب المواضع،التی نهی ......الخ،الحديث: ٢٦،ص١٢٢٤)

﴾6﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ला'नत वाले दो कामों से बचो।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ला'नत वाले दो काम कौन से हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह येह हैं कि आदमी लोगों की गुज़र गाहों और सायादार जगह में पाख़ाना करे।"

(صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب النهی عن التخلی فی الطرق......الخ،الحديث:٦١٨،ص٧٢٤)

www.dawateislami.net

वज़ाहत :

इमाम ख़त्ताबी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''साए से मुराद मुत्लक़ सायादार जगह नहीं बल्कि वोह साया है जिसे लोग आराम करने या पड़ाव करने के लिये इस्ति'माल करते हैं क्यूं कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर के दरख़्त के नीचे क़ज़ाए हाजत फ़रमाई और ला मुहाला वोह सायादार दरख़्त था।''

﴾7﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''रास्तों में लोगों के पड़ाव करने और नमाज़ पढ़ने की जगहों से बचते रहो क्यूं कि येह कीड़े मकोड़ों और दरिन्दों के ठिकाने हैं और इन पर क़ज़ाए हाजत करने वालों पर येह जानवर ला'नत भेजते हैं।''

(سنن ابن ماجه،ابواب الطهارة وسننها،باب النهى عن الخلاء...... الخ،الحديث: ٣٢٩،ص٢٤٩٧)

तम्बीह :

पहली और दूसरी ह़दीसे पाक के तक़ाज़ा की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है क्यूं कि ला'नत कबीरा गुनाहों की अलामतों में से है, हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के माबैन इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि येह अमल सग़ीरा गुनाह है या मक्रूह ? सहीह तरीन क़ौल येह है कि ऐसा करना मक्रूह है मगर येह अहादीसे मुबा–रका इस की हुरमत को राजेह क़रार देती हैं, बुख़ारी व मुस्लिम ने **बाबुश्शहादह** में इन से रिवायतें नक़्ल कीं और इन्हें बर क़रार रखा और बा'ज़ मु–तअख़्ख़िरीन ने इस पर ए'तिमाद किया है। **अल ख़ादिम** में है कि **साहिबुल उद्दह** के नज़्दीक इस ए'तिबार से हुरमत मुराद है कि नाहक़ रास्ते को इस्ति'माल करने की वजह से इस में मुसल्मानों की ईज़ा पाई जा रही है जब कि येह अमल क़ज़ाए हाजत के आदाब में से होने के ए'तिबार से हुरमत पर ख़त्म नहीं होता, लिहाज़ा इन के इस क़ौल में दो एहतिमाल हुए और येह उसी सूरत में है कि जब **साहिबुल उद्दह** के क़ौल से वोही मुराद हो जो इमाम राफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ समझे हैं हालां कि ज़ाहिर इस के ख़िलाफ़ है क्यूं कि उन की मुराद येह है कि येह उन कामों में से है जिन के सबब गवाही मरदूद हो जाती है इस वजह से कि येह अमल महज़ मुरुव्वत के ख़िलाफ़ है न कि इस के हराम होने की वजह से।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 71 : बदन या कपड़ों को पेशाब से न बचाना

﴾1﴿...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दो क़ब्रों के पास से गुज़रे, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन में अ़ज़ाब हो रहा है और येह अ़ज़ाब किसी बड़ी चीज़ के सबब नहीं हो रहा मगर येह बड़ा गुनाह ज़रूर है इन में से एक चुग़ल ख़ोरी करता था और दूसरा पेशाब के क़त़रों से नहीं बचता था।"

(صحیح مسلم،کتاب الطھارۃ ، باب الدلیل علی نجاسۃ البول......الخ،الحدیث:٦٧٧،ص٧٢٧)

﴾2﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक दीवार के क़रीब से गुज़रे तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो आदमियों की आवाज़ सुनी जिन्हें उन की क़ब्रों में अ़ज़ाब हो रहा था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन दोनों पर अ़ज़ाब हो रहा है और येह अ़ज़ाब किसी बड़े सबब से नहीं हो रहा।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन में से एक पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ल ख़ोरी करता था।"

(صحیح ابن حزیمه، کتاب الوضوء، باب التحفظ من البول کی لایصیب ......الخ،الحدیث: ٥٥،ج١،ص٣٢)

﴾3﴿...... एक और रिवायत में है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़ज़ाबे क़ब्र उ़मूमन पेशाब (के छींटों से न बचने) की वजह से होता है।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:١١١٢٠،ج١١،ص٧٠)

﴾4﴿...... एक रिवायत के अल्फ़ाज़ हैं : "क़ब्र का अ़ज़ाब पेशाब (के छींटों से न बचने) की वजह से होता है लिहाज़ा इस से बचो।"

﴾5﴿...... एक और रिवायत में है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अक्सर अ़ज़ाबे क़ब्र पेशाब (के छींटों से न बचने) की वजह से होता है।"

(سنن ابن ماجۃ،ابواب الطھارۃ،باب التشدیدفی البول،الحدیث:٣٤٨،ص٢٤٩٨)

﴾6﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पेशाब (के छींटों) से बचते रहो क्यूं कि क़ब्र में बन्दे से सब से पहले पेशाब के बारे में सुवाल किया जाएगा।" (المعجم الکبیر،الحدیث:٧٦٠٥،ج٨،ص١٣٣)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे और एक दूसरे शख़्स के दरमियान तशरीफ़ ले जा रहे थे, इसी अस्ना में दो क़ब्रों पर पहुंचे तो इर्शाद फ़रमाया : "इन दोनों पर अ़ज़ाब हो रहा है, लिहाज़ा तुम दोनों मुझे एक टहनी ला कर दो।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "मैं और मेरा रफ़ीक़ टहनी लेने चले गए, फिर मैं ने एक टहनी ला कर पेश की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे दो टुकड़े कर के एक एक टुकड़ा दोनों क़ब्रों पर रख दिया और इर्शाद फ़रमाया : "उम्मीद है कि जब तक येह तर रहेंगी इन के अ़ज़ाब में कमी की जाएगी।"

(المعجم الاوسط، الحديث: ٣٧٤٧،ج٣،ص ٢١)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा सख़्त गर्म दिन में बक़ीए़ ग़रक़द की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे चल दिये जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जूतों की आवाज़ सुनी तो ठहर कर बैठ गए यहां तक कि उन्हें आगे जाने दिया फिर जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बक़ीए़ ग़रक़द पहुंच कर दो नई क़ब्रों के पास से गुज़रे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "आज तुम ने यहां किस को दफ़्न किया है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "फ़ुलां, फ़ुलां को।" फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुआ़-मला क्या है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन में से एक पेशाब से न बचता था जब कि दूसरा चुग़ुल ख़ोरी करता था।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक तर टहनी पकड़ कर उस के दो टुकड़े किये और क़ब्र पर रख दिये, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा क्यूं किया ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ताकि इन के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो जाए।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "इन्हें कब तक अ़ज़ाब होता रहेगा ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह ग़ैब की बात है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है और अगर तुम्हारे दिल मुन्तशिर न होते और गुफ़्त-गू में ज़ियादती न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं।"

(المسندللامام احمد،حديث ابی امامة الباهلی الحديث:٢٢٣٥٥،ج٨،ص٣٠٤،"تمزع" بدله "تمترع")

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हम शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ चल रहे थे कि हमारा गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ठहर गए लिहाज़ा हम भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ठहर गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मु-तग़य्यर होने लगा यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़मीसे मुबारक की आस्तीन कप-कपाने लगी, तो हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या माजरा है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम भी वोह आवाज़ सुन रहे हो जो मैं सुन रहा हूं ?" तो हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या समाअ़त फ़रमा रहे हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन दोनों अफ़्राद पर इन की क़ब्रों में इन्तिहाई सख़्त अ़ज़ाब हो रहा है वोह भी ऐसे गुनाह की वजह से जो ह़क़ीर है।" (या'नी इन दोनों के ख़याल में ह़क़ीर था

www.dawateislami.net

या फिर येह कि इस से बचना इन के लिये आसान था) हम ने अ़र्ज़ की : "वोह कौन सा गुनाह है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इन में से एक पेशाब से न बचता था और दूसरा अपनी ज़बान से लोगों को अज़िय्यत देता था और चुग़ली करता था ।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर की दो टहनियां मंगवाईं और उन में से हर एक क़ब्र पर एक एक टहनी रख दी तो हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह चीज़ इन को कोई नफ़्अ़ देगी ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! जब तक येह दोनों टहनियां तर रहेंगी इन से अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होती रहेगी ।" (صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق، باب الأذكار، الحديث: ٨٢١، ج٢، ص٩٦، "لايستنزه" بدله "لايستتر")

《10》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "चार शख़्स जहन्नमियों को उन के अ़ज़ाब में मुब्तला होने के बा वुजूद मज़ीद ईज़ा देंगे, वोह **ह़मीम** और **जह़ीम** के दरमियान फैल जाएंगे और अपनी हलाकत और तबाही की दुआ़ करेंगे, जहन्नमी एक दूसरे से कहेंगे : "इन्हें क्या हुवा कि येह हमें मज़ीद ईज़ा दे रहे हैं ह़ालां कि हम पहले ही तक्लीफ़ में मुब्तला हैं ?" उन में से एक शख़्स आग के ताबूत में बन्द होगा, दूसरा अपनी अंतड़ियां खींच रहा होगा, तीसरे के मुंह से पीप और ख़ून बह रहा होगा और चौथा अपना ही गोश्त खा रहा होगा, ताबूत वाले से कहा जाएगा : "रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से दूर इस शख़्स का क्या मुआ़-मला है जो हमें अ़ज़ाब में मुब्तला होने के बा वुजूद मज़ीद तक्लीफ़ दे रहा है ?" तो वोह कहेगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दूर येह शख़्स जब मरा तो इस की गरदन पर लोगों के उन अम्वाल का बोझ था जिन्हें वोह अदा या पूरा न कर सका ।" फिर अपनी अंतड़ियां खींचने वाले से कहा जाएगा : "रह़मत से दूर इस बन्दे का क्या मुआ़-मला है जो हमें अ़ज़ाब में मुब्तला होने के बा वुजूद मज़ीद तक्लीफ़ पहुंचा रहा है ?" तो वोह कहेगा कि "रह़मत से दूर येह बन्दा इस बात की परवाह नहीं करता था कि इसे (कपड़ों या जिस्म पर) कहां पेशाब लगा और येह उसे नहीं धोता था ।" (बक़िय्या मुकम्मल ह़दीसे पाक ग़ीबत के बाब में बयान होगी) (المعجم الكبير، الحديث: ٧٢٢٦، ج٧، ص٣١١)

《11》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि बनी इस्राईल वालों को क्या मुसीबत पहुंची ? उन (के कपड़ों) को जब कहीं पेशाब लगता तो वोह उस जगह को क़ैंचियों से काट दिया करते थे, फिर उन के एक साथी ने उन्हें ऐसा करने से मन्अ़ किया तो वोह क़ब्र के अ़ज़ाब में मुब्तला हो गया ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث: ١٧٧٧٣، ج٦، ص٢٢٧)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

पस मा'लूम हुवा कि येह अह़ादीसे मुबा-रका पेशाब से न बचने के कबीरा गुनाह होने में सरीह़ हैं, सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने गुज़श्ता अह़ादीस का उ़न्वान इस त़रह़ क़ाइम किया : بَابُ مِنَ الْكَبَائِرِ اَنْ لَّا يَسْتَتِرَهُ مِنَ الْبَوْلِ येह बाब इस बयान में है कि पेशाब (के छींटों) से न बचना कबीरा गुनाहों में से है।

सय्यिदुना ख़त्ताबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि "ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान : "इन्हें किसी बड़ी चीज़ के सबब अ़ज़ाब नहीं हो रहा।" का मत़्लब येह है कि इन्हें किसी ऐसे अ़मल पर अ़ज़ाब नहीं हो रहा जो इन पर बड़ा था या अगर वोह इसे करते तो येह उन्हें मशक़्क़त में डाल देता और वोह काम पेशाब से बचना और चुग़ुल ख़ोरी तर्क करना है, येह मुराद नहीं कि इन दोनों का गुनाह दीन के मुआ़-मले में बड़ा नहीं और उन का गुनाह कम और आसान है।"

ह़ाफ़िज़ मुन्ज़िरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى इस की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : "इसी (मज़्कूरा) वहम को ज़ाइल करने के लिये ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक येह बड़ा गुनाह है।" इन अह़ादीसे मुबा-रका में हमारे अस्ह़ाब के इस क़ौल पर वाज़ेह़ दलील मौजूद है : "चलते चलते या उ़ज़्वे तनासुल को खींच कर या खन्कार कर इस्तिब्रा करना वाजिब है।" क्यूं कि हर इन्सान के लिये इस्तिब्रा के त़रीक़े में एक आ़दत होती है जिस के बिग़ैर पेशाब के बचे हुए क़त़रे ख़ारिज नहीं होते, लिहाज़ा हर इन्सान को अपनी आ़दत के मुत़ाबिक़ इस्तिब्रा करना चाहिये, मगर इस मुआ़-मले में जड़ से इब्तिदा नहीं करनी चाहिये क्यूं कि येह अ़मल वस्वसे पैदा करता है, और अगर उ़ज़्वे तनासुल को सख़्ती से दबाया जाए तो येह नुक़्सान देह है।

इसी त़रह़ हर इन्सान पर लाज़िम है कि वोह पाख़ाना करते वक़्त शर्मगाह को धोने में मुबा-लग़ा से काम ले और थोड़ा ढीला करे ताकि शर्मगाह के ह़ल्क़े के पर्दे में रह जाने वाली नजासत धुल जाए क्यूं कि आ'ज़ा को ढीला न छोड़ने और उस जगह को धोने में मुबा-लग़ा से काम न लेने वाले अक्सर लोग नजासत ही के साथ नमाज़ पढ़ लेते हैं और मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद इस सख़्त वई़द का शिकार हो जाते हैं क्यूं कि इस ह़दीसे पाक का ह़ुक्म पेशाब (की नजासत) से बढ़ कर पाख़ाना (की नजासत) के लिये है क्यूं कि इस में ज़ियादा गन्दगी है और येह ज़ियादा बुरा है।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते इब्ने अबी ज़ैद मालिकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ के इन्तिक़ाल के बा'द उन्हें किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : "مَافَعَلَ اللهُ بِكَ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" तो आप ने जवाब दिया : "मुझे बख़्श दिया गया।" पूछा गया कि "किस वजह से ?"

www.dawateislami.net

तो उन्हों ने जवाब दिया : ''मेरे इस क़ौल की वजह से जो मैं ने इस्तिन्जा से मु-तअ़ल्लिक़ अपने रिसाले में लिखा था कि क़ज़ाए ह़ाजत करने वाले को चाहिये की वोह अपनी शर्मगाह को ढीला छोड़ दे।''

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह बात फ़रमाने वाले पहले शख़्स थे क्यूं कि येह बात साबित हो चुकी है कि इन्सान जब अपनी मक़्अ़द को ढीला छोड़ता है तो शर्मगाह के अन्दर मौजूद झल्लियां और पर्दे ज़ाहिर हो जाते हैं, लिहाज़ा जब वहां पानी पहुंचता है तो उस के अन्दर मौजूद नजासत धुल जाती है जब कि ऐसा किये बिग़ैर धोने से येह फ़ाएदा ह़ासिल नहीं होता, लिहाज़ा उस पर ऐसा करना वाजिब है ताकि तमाम ज़ाहिरी जिल्द से नजासत और इस के असर के धुल जाने का गुमान ग़ालिब हो जाए और जब उसे ग़ालिब गुमान हो जाए और फिर भी हाथों से उस की बदबू आती हुई मह़सूस हो तो अगर मह़ल्ले नजासत से मिलने वाले हाथ पर उस का जिर्म मौजूद है तो उसे धोना फ़र्ज़ है क्यूं कि येह नजासत की दलील है और अगर उस हाथ से बदबू मह़सूस न हो म-सलन उंग्लियों के दरमियान से बदबू आए या बदबू मह़सूस होने में शक हो तो उस पर फ़क़त़ हाथ धोना लाज़िम है क्यूं कि इस में येह एह़तिमाल भी मौजूद है कि बदबू हाथ के उस ह़िस्से से आ रही हो जो मह़ल्ले नजासत से मस न हुवा था।

www.dawateislami.net

वुज़ू का बयान

कबीरा नम्बर 72 : वुज़ू का कोई फ़र्ज़ तर्क करना

《1》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो पानी के ज़रीए उंगलियों में ख़िलाल न करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे आग से चीर देगा।" (المعجم الكبير، الحديث: ١٥٦، ج٢٢، ص٦٤)

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : "तुम उंगलियां धोने में मुबा-लग़े से काम लोगे या फिर आग इसे जलाने में मुबा-लग़ा करेगी।" (المعجم الاوسط، الحديث: ٢٦٧٤، ج٢، ص١٠٦)

《3》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : "पांचो उंगलियों का ख़िलाल कर लिया करो ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें आग से न भर दे।" (المعجم الكبير، الحديث:٩٢١٣، ج٩، ص٢٤٧)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को देखा जिस ने अपनी एड़ियां न धोई थीं, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जहन्नमी एड़ियों के लिये हलाकत है।"

(صحيح مسلم، كتاب الطهارة ،باب وجوب غسل الرجلين بكمالهما،الحديث: ٥٧٣، ص ٧٢١)

《5》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कुछ लोगों को कूज़ों या'नी लोटों से वुज़ू करते हुए देखा तो इर्शाद फ़रमाया कि कामिल त़रीक़े से वुज़ू करो क्यूं कि मैं ने अबुल क़ासिम मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "जहन्नमी एड़ियों के लिये हलाकत है या जहन्नमी कूंचों के लिये हलाकत है।"

(صحيح مسلم، كتاب الطهارة ،باب وجوب غسل الرجلين بكمالهما،الحديث:٥٧٥، ص ٧٢١)

《6》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जहन्नमी एड़ियों और तल्वों के लिये हलाकत है।" (المسند للامام احمد بن حنبل،الحديث:١٧٧٢٣، ج٦، ص٢١٥)

《7》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल हैसम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे वुज़ू करते हुए देखा तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबुल हैसम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! पाउं का तल्वा (या'नी इसे धोव)।" (المعجم الكبير، الحديث: ٩١١، ج٢٢، ص٣٦٣)

《8》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ लोगों को मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि जिन की एड़ियां ख़ुश्क थीं तो इर्शाद फ़रमाया : "जहन्नमी एड़ियों के लिये हलाकत है पूरा वुज़ू करो।" (سنن ابى داؤد، كتاب الطهارة ، باب فى اسباغ الوضوء،الحديث:٩٧، ص١٢٢٩)

www.dawateislami.net

नाक़िस वुज़ू, नमाज़ में शुबा पैदा करता है :

《9》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ में सूरए रूम की तिलावत फ़रमाई और इस में शुबा पैदा हो गया तो (नमाज़ मुकम्मल होने के बा'द) आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शैत़ान ने उन लोगों की वजह से हम पर क़िराअत मुश्तबा कर दी जो बिग़ैर वुज़ू नमाज़ के लिये आ जाते हैं, लिहाज़ा जब तुम नमाज़ के लिये आया करो तो अच्छी त़रह़ वुज़ू कर लिया करो।" (المسندللامام احمدبن حنبل ،الحدیث:١٥٨٧٢،ج٥،ص٣٨٠)

《10》...... एक और रिवायत में है : "(आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को) एक आयत में तरद्दुद हुवा तो शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ मुकम्मल फ़रमाने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "हम पर क़िराअत इस लिये मुश्तबा हो गई कि तुम में से हमारे साथ नमाज़ पढ़ने वाले कुछ लोग अच्छी त़रह़ वुज़ू नहीं करते, लिहाज़ा जो हमारे साथ नमाज़ में ह़ाज़िर हो उसे चाहिये कि अच्छी त़रह़ वुज़ू कर लिया करे।"

(المسندللامام احمد بن حنبل ،الحدیث:١٥٨٧٤،ج٥،ص٣٨٠)

《11》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "किसी की नमाज़ उस वक़्त मुकम्मल नहीं होती जब तक कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के मुत़ाबिक़ अच्छी त़रह़ वुज़ू न कर ले या'नी जब तक चेहरा, कोहनियों समेत दोनों हाथ, सर का मस्ह़ और दोनों पाउं टख़्नों समेत न धो ले।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب الطهارة سننها،باب ماجاء فی الوضوء علی ماامر ......الخ،الحدیث: ٤٦٠،ص٢٦٩)

《12》...... रावी फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के ख़िलाल करने वाले लोग कितने अच्छे हैं।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ख़िलाल करने वाले लोग कौन हैं ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो वुज़ू के दौरान और खाने के बा'द ख़िलाल करते हैं।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ٤٠٦١،ج٤،ص١٧٧)

वुज़ू के ख़िलाल से मुराद कुल्ली करना, नाक में पानी चढ़ाना और उंगलियों का ख़िलाल करना है जब कि **खाने का ख़िलाल** खाने के बा'द होता है क्यूं कि किरामन कातिबीन पर इस से ज़ियादा गिरां कोई बात नहीं गुज़रती कि उन का रफ़ीक़ नमाज़ पढ़ रहा हो और उस के दांतों के दरमियान खाने के ज़र्रात फंसे हुए हों।

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इन अह़ादीसे मुबा–रका से हाथ और पाउं धोने के फ़राइज़ में से किसी चीज़ को तर्क करने पर सख़्त वई़द ज़ाहिर हुई, वुज़ू के बक़िय्या फ़राइज़ को भी इसी पर क़ियास किया जाए तो वोह भी इस वई़द की बिना पर इन की त़रह़ कबीरा गुनाहों में दाख़िल हो जाएंगे और येह नमाज़ के तर्क को लाज़िम है लिहाज़ा येह उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इस क़ौल के तह़्त दाख़िल होगा कि नमाज़ तर्क करना कबीरा गुनाह है।

www.dawateislami.net

ग़ुस्ल का बयान

कबीरा नम्बर 73 : ग़ुस्ल का कोई फ़र्ज़ छोड़ देना

﴾1﴿...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने जनाबत से ग़ुस्ल करते वक़्त अपने जिस्म से बाल बराबर जगह धोना छोड़ दी उस के साथ जहन्नम में ऐसा ऐसा किया जाएगा।" हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं : "इसी लिये मैं ने अपने बालों से दुश्मनी कर ली है।" आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हमेशा सर के बाल मुंडवाए रखते थे। (سنن ابی داؤد، کتاب الطهارة، باب فی الغسل من الجنابة، الحديث: ٢٤٩، ص ١٢٤٠)

﴾2﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर बाल के नीचे जनाबत होती है।"

(جامع الترمذی، ابواب الطهارة، ماجاء ان تحت کل شعرة جنابة، الحديث: ١٠٦، ص ١٦٤٣)

﴾3﴿...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर बाल के नीचे जनाबत होती है लिहाज़ा बालों को तर कर के जिल्द साफ़ कर लिया करो।"

(السنن الكبرى للبيهقی، كتاب الطهارة، باب فرض الغسل وفيه دلالة على ......الخ، الحديث: ٨٤٩، ج ١، ص ٢٧٦)

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ! हर बाल पर जनाबत होती है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث: ٢٤٨٥١، ج ٩، ص ٤١٦)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और अच्छी त़रह़ ग़ुस्ल किया करो क्यूं कि येह वोही अमानत है जिसे तुम ने उठाया है और उन्ही असरार में से है जो तुम्हारे सिपुर्द किये गए हैं।" (المعجم الكبير، الحديث: ٦٤، ج ٢٥، ص ٣٦)

तम्बीह :

इस बाब की इब्तिदाई अहादीसे मुबा-रका में मज़्कूर वई़द किस क़दर शदीद है इसी बिना पर इस गुनाह का कबीरा गुनाहों में से होना वाज़ेह़ हो गया ख़ुसूसन जब आप येह बात जान चुके हैं की ग़ुस्ल की तक्मील में कोताही से नमाज़ का तर्क करना लाज़िम आता है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 74 : बिला ज़रूरत सित्र खोलना

जैसे हम्माम में तहबन्द वग़ैरा से सित्र पोशी किये बिग़ैर दाख़िल होना ।

﴾1﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दो शख़्स पाख़ाना करते वक़्त बाहम सरगोशी न किया करें इस त़रह़ कि वोह एक दूसरे की शर्मगाह को देखते हों क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात को सख़्त ना पसन्द फ़रमाता है।"

(سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة و سننها، باب النهى عن الاجتماع على الخلاء، الحديث:٣٤٢، ص٢٤٩٨)

﴾2﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दो अफ़राद पाख़ाना के लिये इस त़रह़ न निकलें कि बे पर्दा हो कर बातें करें क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात को सख़्त ना पसन्द फ़रमाता है।" (سنن ابى داؤد، كتاب الطهارة، باب كراهية الكلام......الخ، الحديث:١٥، ص١٢٢٣)

﴾3﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दो अफ़राद पाख़ाना के लिये इस त़रह़ मत जाएं कि वोह दोनों अपने सित्र खोले हुए बैठ कर बातें करते हों क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात को सख़्त ना पसन्द फ़रमाता है।" (المعجم الاوسط، الحديث: ١٢٦٤، ج١، ص٣٤٨)

﴾4﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब दो मर्द क़ज़ाए ह़ाजत करने लगें तो एक दूसरे से छुप जाएं।"

(تاريخ بغداد، باب العين، حرف الياء من آباء العين، الرقم: ٦٥٧٤، ج١٢، ص١٢٢)

﴾5﴿...... रह़मते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपनी बीवी या कनीज़ के इलावा दूसरों से अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करो।" अ़र्ज़ की गई : "जब क़ौम आपस में मिल कर बैठी हो तो क्या करें।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम इस बात की ताक़त रखते हो कि तुम्हारी शर्मगाह कोई न देख सके तो कोई न देखे।" अ़र्ज़ की गई : "अगर हम में से कोई तन्हा हो तो क्या करे ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात का ज़ियादा ह़क़दार है कि लोगों से ज़ियादा उस से ह़या की जाए।"

(سنن ابى داؤد، كتاب الحمام، باب فى التعرى، الحديث:٤٠١٧، ص١٥١٧)

﴾6﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़या वाला और मख़्फ़ी है, ह़या और पर्दापोशी को पसन्द फ़रमाता है लिहाज़ा जब तुम में से कोई ग़ुस्ल करने लगे तो पर्दा कर लिया करे।"

(سنن ابى داؤد، كتاب الحمام، باب النهى عن التعرى، الحديث:٤٠١٢، ص١٥١٦)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जब्बार बिन सख़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : "हमें इस बात से मन्अ़ किया गया है कि हमारी शर्मगाहें नज़र आएं।"

(المستدرك، كتاب معرفة الصحابة رضوان الله، باب مناقب جبار بن صخر رضى الله عنه، الحديث: ٥٠٣٧، ج٤، ص٢٣٨)

www.dawateislami.net

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "मुझे इस बात से मन्अ़ किया गया कि मैं बरह्ना या'नी कपड़ों के बिग़ैर चलूं ।"

(البحرالزخار،بمسندالبزار،مسند العباس بن عبدالمطلب،الحدیث: ۱۲۹۵،ج٤،ص۱۲۵)

﴾9﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऊ़र्यानी से बचते रहो क्यूं कि तुम्हारे साथ वोह (या'नी फ़िरिश्ते) होते हैं जो सिर्फ़ पाख़ाना करते वक़्त और आदमी की अपनी अह्लिया के पास जाते वक़्त जुदा होते हैं, लिहाज़ा इन से ह़या करो और इन का इक्राम करो ।" (جامع الترمذی،کتاب الادب،باب ماجاء فی الاستتارعند الجماع،الحدیث:۲۸۰۰،ص۱۹۳۳)

﴾10﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़या वाला, इ़ल्म वाला और पोशीदा है, लिहाज़ा जब तुम में से कोई ग़ुस्ल करे तो पर्दा कर लिया करे अगर्चे दीवार की आड़ ही में हो ।" (کنزالعمال، کتاب الطھارۃ،قسم الاقوال،الحدیث: ۲٦٦۰۰،ج۹،ص۱٦۸)

﴾11﴿...... रसूले अन्वर, साह़िबे कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़या वाला है ह़या को पसन्द फ़रमाता है, मख़्फ़ी है पर्दे को पसन्द फ़रमाता है, लिहाज़ा जब तुम में से कोई ग़ुस्ल करने लगे तो पर्दे में हो जाया करे ।"

(مصنف عبدالرزاق،کتاب الطھارۃ، باب ستر الرجل اذا اغتسل،الحدیث: ۱۱۱۱،ج۱،ص۲۲۲)

﴾12﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ लोगो ! तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ ह़या वाला और करीम है लिहाज़ा जब तुम में से कोई ग़ुस्ल करे तो पर्दा कर लिया करे ।" (المعجم الکبیر،الحدیث: ٦۷۰،ج۲۲،ص۲٦۰)

﴾13﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "पर्दा किये बिग़ैर पानी में दाख़िल मत हुवा करो बेशक पानी की भी दो आंखें होती हैं ।"

(فردوس الاخبارللدیلمی،باب اللام،الحدیث:۷۵۳۵،ج۲،ص٤۱٤)

﴾14﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीज رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझ तक येह बात पहुंची है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि आप का मज़्दूर नंगा नहा रहा था, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करने वाला नहीं पाता, अपनी मज़्दूरी पकड़, हमें तुम्हारी कोई ह़ाजत नहीं ।"

(مصنف عبدالرزاق،کتاب الطھارۃ، باب ستر الرجل اذا اغتسل،الحدیث:۱۱۱۲،ج۱،ص۲۲۳)

औरतों का ह़म्माम में जाना मन्अ़ है :

﴾15﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि पर्दा किये बिग़ैर ह़म्माम में दाख़िल न हो और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है

www.dawateislami.net

वोह अपनी बीवी को हमाम में न ले जाए।"

(سنن النسائی،کتاب الغسل و التیمم،باب الرخصة فی دخول الحمام،الحدیث:۴۰۱ص۲۱۱۲)

(جامع الترمذی،کتاب الادب، باب ماجاء فی دخول الحمام،الحدیث:۲۸۰۱،ص۱۹۳۳)

《16》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अन्क़रीब तुम पर अ़जम की ज़मीन खोल दी जाएगी और तुम वहां ऐसे मकानात पाओगे जिन्हें हम्माम कहा जाता है, उस में मर्द बिग़ैर इज़ार के दाख़िल न हों और मरीज़ा और निफ़ास वाली औ़रतों के इलावा दीगर औ़रतों को उस में दाख़िल होने से मन्अ़ कर देना।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الحمام، باب الدخول فی الحمام، الحدیث: ۴۰۱۱،ص۱۵۱۶)

《17》...... मरवी है : "मर्दों और औ़रतों को हम्माम में दाख़िल होने से मन्अ़ कर दिया गया था फिर मर्दों को इज़ार बांध कर दाख़िल होने की इजाज़त दे दी गई और औ़रतों को न दी गई।"

(سنن ابن ماجة،ابواب الادب،باب دخول الحمام،الحدیث:۳۷۴۹،ص ۲۷۰۰)

《18》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत की औ़रतों पर हम्माम में दाख़िल होना ह़राम है।"

(المستدرک،کتاب الادب، باب الحمام حرام علی ......الخ،الحدیث: ۷۸۵۴،ج۵،ص۴۱۲)

《19》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी का इक्राम करे, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे और तुम्हारी जो औ़रतें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान रखती हैं वोह हम्माम में हरगिज़ दाख़िल न हों।"

और येह बात दुरुस्त है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इस रिवायत की बिना पर औ़रतों को हम्माम में दाख़िल होने से रोक दिया था।

(صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب الحث علی اکرام الجار......الخ،الحدیث:۱۷۳،ص۶۸۸)

(المستدرک،کتاب الادب،باب من کان یومن باللہ......الخ،الحدیث:۷۸۵۳،ج۵،ص۴۱۱)

《20》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उस घर से बचते रहो जिसे हम्माम कहा जाता है।" सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "हम्माम में नहाना तो मैल को दूर करता और मरीज़ को नफ़्अ़ देता है।" तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर जो उस में दाख़िल हो वोह पर्दा कर लिया करे।"

(السنن الکبری للبیھقی،کتاب القسم والنشور،باب ماجاء فی دخول الحمام،الحدیث: ۱۴۸۰۵،ج۷،ص۵۰۴،بدون "المریض")

《21》...... इमाम त़-बरानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस रिवायत की इब्तिदा में इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा

www.dawateislami.net

किया है : "सब से बद तरीन घर ह़म्माम हैं इन में आवाज़ें बुलन्द की जाती हैं और बे पर्दगी की जाती है।" (المعجم الكبير، الحديث: ١٠٩٢٦، ج١١، ص٢١)

《22》...... ह़म्स या शाम की कुछ औ़रतें उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुईं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन से पूछा : "क्या तुम वोही हो जिन की औ़रतें ह़म्माम में जाती हैं ? मैं ने ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : "जो औ़रत अपने शोहर के घर के इ़लावा अपने कपड़े उतारती है तो वोह अपने और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान का पर्दा फाड़ डालती है।"

(جامع الترمذی،ابواب الادب،باب ماجاء فی دخول الحمام، الحدیث:٢٨٠٣،ص١٩٣٣)

《23》...... एक और रिवायत में है कि ऐसा ही एक वाक़िआ़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से भी पेश आया जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन से मुख़ात़िब हुईं तो इर्शाद फ़रमाया : "(क्या तुम वोही औ़रतें हो जो ह़म्माम में जाती हो ?) ह़ालां कि ह़म्माम में ह़रज है ? मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : "जो औ़रत अपना लिबास अपने घर के इ़लावा कहीं उतारती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से अपनी रह़मत का पर्दा हटा देता है।" (المسندللامام احمد بن حنبل،حدیث اُم سلمه،الحدیث:٢٦٦٣١،ج١٠،ص١٩١)

《24》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि पर्दा किये बिग़ैर ह़म्माम में दाख़िल न हो और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है वोह अपनी बीवी या लौंडी को ह़म्माम में दाख़िल होने की इजाज़त न दे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،الحدیث: ١٤٦٥٧،ج٥،ص١٠١)

《25》...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि उन्हों ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़म्माम के बारे में दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़न्क़रीब मेरे (विसाले ज़ाहिरी के) बा'द ह़म्माम होंगे और औ़रतों के लिये ह़म्माम में कोई भलाई नहीं।" फिर उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! औ़रतें इज़ार पहन कर ह़म्माम में दाख़िल होती हैं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, अगर्चे इज़ार, क़मीस और ओढ़नी ओढ़ कर दाख़िल हों और जो औ़रत अपने शोहर के घर के इ़लावा अपनी ओढ़नी उतारती है वोह अपने और रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान का पर्दा खोल देती है।" (المعجم الاوسط،الحدیث:٣٢٨٦،ج٢،ص٢٧٩)

《26》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़न्क़रीब तुम ऐसे अ़लाक़े फ़त्ह़ करोगे कि जिन में ऐसे घर होंगे जिन को ह़म्माम कहा जाता होगा, मेरी उम्मत पर इन में दाख़िल होना ह़राम है।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह तो मरज़ को दूर करते हैं और मैल कुचैल को साफ़ करते हैं।" तो

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(तो फिर) चादर में जाना मेरी उम्मत के मर्दों पर ह़लाल और औरतों पर ह़राम है।" (المعجم الكبير، الحديث:٦٧١،ج٢٠،ص٢٨٤)

《27》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह ह़म्माम में दाख़िल न हो, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह अपनी बीवी को ह़म्माम में जाने की इजाज़त न दे, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह शराब न पिये, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह उस दस्तर ख़्वान पर भी न बैठे जिस पर शराब पी जाती हो और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह किसी अजनबी औरत से तन्हाई में न मिले जिस से उस का मह़रम होने का रिश्ता न हो।" (المعجم الكبير، الحديث: ١١٤٦٢،ج١١،ص١٥٣،بتغيرٍ قليلٍ)

《28》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ह़म्माम ऐसा घर है जहां पर्दा नहीं होता और न ही पानी पाक होता है, किसी शख़्स के लिये जाइज़ नहीं कि वोह कपड़ा बांधे बिग़ैर उस में दाख़िल हो, मुसल्मानों को हुक्म दो कि वोह अपनी औरतों को आज़माइश में न डालें :

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ (پ٥،النسآء:٣٤) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मर्द अफ़्सर हैं औरतों पर। औरतों को सिखाओ और तस्बीह़ करने का हुक्म दो।"

(شعب الايمان،باب الحياء،فصل فى الحمام ،الحديث:٧٧٧٣،ج٦،ص١٥٨)

《29》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ह़म्माम बहुत ही बुरे घर हैं इन में (बेहूदा) आवाज़ें बुलन्द होती हैं और शर्मगाहें ज़ाहिर होती हैं।"

(كنز العمال،كتاب الطهارة،قسم الاقوال،فصل فى دخول الحمام،الحديث:٢٦٦١٢،ج٩،ص١٦٩)

《30》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उम्मत के मर्दों को हुक्म दिया है कि वोह ह़म्माम में बिग़ैर चादर के दाख़िल न हों और औरतों को हुक्म दिया है कि वोह तो हरगिज़ इन में दाख़िल न हों।" (المرجع السابق،الحديث:٢٦٦١٤)

《31》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : "सब से बुरे घर ह़म्माम हैं कि इन में (बेहूदा) आवाज़ें बुलन्द होती और शर्मगाहें खुलती हैं, लिहाज़ा जो इन में दाख़िल हो तो वोह बिग़ैर पर्दे के दाख़िल न हो।" (المعجم الكبير، الحديث: ١٠٩٢٦،ج١١،ص٢١)

www.dawateislami.net

《32》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "जो बिगै़र पर्दे के ह़म्माम में दाखि़ल होगा उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और मलाएका की ला'नत होगी।" (جامع الصغیر،الحدیث:٨٦٦١،ص٥٢٥)

《33》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुसल्मान मर्द जिन घरों में दाखि़ल होता है उन में सब से अच्छा घर ह़म्माम है कि जब वोह उस में दाखि़ल होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का सुवाल करता है और जहन्नम से पनाह मांगता है और सब से बुरा घर जिस में मुसल्मान दाखि़ल होता है दुल्हन का कमरा है कि वोह उसे दुन्या की त़रफ़ रागि़ब करता है और आखि़रत भुला देता है।" (شعب الایمان،باب الحیاء،فصل فی الحمام ،الحدیث:٧٧٧٩،ج٦،ص١٦٠)

《34》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सब से पहले जो ह़म्माम में दाखि़ल हुए और उन के लिये बाल दूर करने वाला पावडर रखा गया वोह ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام थे, जब आप ह़म्माम में दाखि़ल हुए और उस में गरमी और ग़म को पाया तो फ़रमाया : "हाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब की तक्लीफ़! इस से पहले कोई तक्लीफ़ नहीं।" (شعب الایمان،باب الحیاء،فصل فی الحمام ،الحدیث:٧٧٧٨،ج٦،ص١٦٠)

《35》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब आखि़री ज़माना आएगा तो मेरी उम्मत के मर्दों को पर्दे के साथ भी ह़म्माम में जाना ह़राम होगा।" सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसा किस लिये होगा ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्यूं कि वोह एक नंगी क़ौम पर दाखि़ल होंगे, सुन लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (दूसरों का सित्र) देखने वाले और जिस की त़रफ़ देखा जा रहा हो (जब कि वोह खु़द दिखाता हो तो) दोनों पर ला'नत फ़रमाता है।" (جامع الاحادیث:الحدیث:٢٤٨٨،ج١،ص٣٦٣)

《36》...... शफ़ीए रोजे़ शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नाफ़ और घुटने के दरमियान की जगह सित्र (या'नी मर्द के लिये इसे छुपाना फ़र्ज़) है।" (المستدرك،کتاب معرفة الصحابة،باب النھی عن ثمن الکلب......الخ، الحدیث: ٦٤٧٧، ج٤، ص٧٤١)

《37》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान मर्द का सित्र इस की नाफ़ से ले कर घुटने तक है।"

(کنزالعمال،کتاب الصلوٰۃ ،قسم الاقوال، الفصل الاول،الحدیث:١٩٠٩٠٦،ج٧،ص١٣٤)

《38》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोजे़ शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "घुटनों से ऊपर का ह़िस्सा औ़रत है और नाफ़ से निचला भी औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है।"

(سنن الدارقطنی،کتاب الصلوٰۃ، باب الامربتعلیم الصلوات و الضرب......الخ،الحدیث:٨٧٩،ج١،ص٣١٨)

《39》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुसल्मान मर्द की रान उस के सित्र का ह़िस्सा है।" (المعجم الکبیر،الحدیث:٢١٤٩،ج٢،ص٢٧٣)

www.dawateislami.net

﴾40﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अपनी रान को छुपा कर रखो क्यूं कि येह भी औरत (या'नी छुपाने की चीज़) है।"

(جامع الترمذی،ابواب الأدب،باب ماجاء ان الفخذعورة،الحدیث:۲۷۹۸،ص۱۹۳۲)

﴾41﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि : "रान छुपाने की चीज़ है।" (المرجع السابق،الحدیث:۲۷۹۵،ص۱۹۳۲)

﴾42﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना जरहद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ जरहद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! अपनी रान छुपा लो क्यूं कि रान छुपाने की चीज़ है।"

(المرجع السابق،الحدیث:۲۷۹۸،ص۱۹۳۲) (المسند للامام حمدبن حنبل، الحدیث: ۱۵۹۳۲،ج۵،ص۳۹۵)

﴾43﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अपनी रान ज़ाहिर मत करो और न ही किसी ज़िन्दा या मुर्दा की रान पर नज़र डालो।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز،باب فی ستر المیت عند غسله ،الحدیث:۳۱۴۰،ص۱۴۵۹)

﴾44﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि : "एक मर्द का सित्र दूसरे मर्द के लिये इसी त़रह़ है जिस त़रह़ औरत का सित्र मर्द के लिये है और एक औरत का सित्र दूसरी औरत के लिये इसी त़रह़ है जिस त़रह़ औरत का सित्र मर्द के लिये है।" (المستدرک،کتاب اللباس،باب التشدیدفی کشف العورة،الحدیث:۷۴۳۸،ج۵،ص۲۵۳)

तम्बीह 1 :

गुज़श्ता अहादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा येह बात कि "किसी के सामने सित्र ज़ाहिर करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ना पसन्द है।" इस के कबीरा गुनाह होने का तक़ाज़ा करती है क्यूं कि (सित्र खोले बिग़ैर) बातचीत करना तो मुबाह़ है इस पर ना राज़गी मुरत्तब नहीं होती और ह़म्माम में जाने से मु-तअ़ल्लिक़ मैं ने जो अहादीसे मुबा-रका ज़िक्र की हैं वोह हमारी बयान कर्दा इस बात पर शाहिद हैं कि मर्द का अपनी बीवी या कनीज़ (जो इस के लिये ह़लाल हो) के इलावा किसी के सामने शर्मगाह खोलना ख़्वाह सुग़रा हो या कुब्रा कबीरा गुनाह है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन उ़त्बा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "लोगों के सामने सित्र ज़ाहिर करना फ़िस्क़े मुग़ल्लज़ या'नी दुगनी बुराई है और ह़म्माम में खोलना इस से क़दरे कम बुरा है।"

---

1 : अह़्नाफ़ के नज़्दीक : "मर्द अपनी ज़ौजा या बांदी की एड़ी से चोटी तक हर उ़ज़्व की त़रफ़ नज़र कर सकता है शह्वत और बिला शह्वत दोनों सूरतों में देख सकता है इसी त़रह़ येह भी उस मर्द के हर उ़ज़्व को देख सकती हैं, हां बेहतर है कि मक़ामे मख़्सूस की त़रफ़ नज़र न करे कि इस से निस्यान पैदा होता है और नज़र में भी ज़ो'फ़ पैदा होता है इस मस्अले में बांदी से मुराद वोह है जिस से वत़ी जाइज़ है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 16, स. 57)

www.dawateislami.net

तबक़ातुल इबादी में है कि सय्यिदुना मुज़्नी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत किया कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़म्माम में बरह़ना नज़र आने वाले शख़्स के बारे में फ़रमाया कि इस की गवाही मक़्बूल नहीं क्यूं कि सित्र पोशी फ़र्ज़ है।

सय्यिदुना तौह़ीदी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **किताबुल बसाइर** में सय्यिदुना मुज़्नी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस त़रह़ की रिवायत नक़्ल की है मगर उस में बरह़्ना नज़र आने के बजाए सित्र नज़र आने का ज़िक्र है और येह रिवायत इस बात का तक़ाज़ा करती है कि एक मरतबा ऐसा करने पर भी वोह शख़्स फ़ासिक़ कहलाएगा और येह मुआ-मला कबीरा गुनाह ही का है।

सय्यिदुना इब्ने शुरैह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हम अ़स्र सय्यिदुना ह़सन बिन अह़मद ह़द्दाद बसरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब **अ-दबुल क़ज़ा** की येह बात भी इस के मुवाफ़िक़ है कि सय्यिदुना ज़-करिय्या साजी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स ह़म्माम या नह्र में सित्र पोशी के बिग़ैर दाख़िल हो उस की गवाही क़बूल करना जाइज़ नहीं।"

सय्यिदुना अबू बक्र अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सख़्तियानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सय्यिदुना मुज़्नी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सनद से सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से रिवायत करते हुए इसे बत़ौरे सनद ज़िक्र किया है, फिर सय्यिदुना ह़द्दाद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि सय्यिदुना ज़-करिय्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : "येह बात ज़ियादा मुनासिब है अगर्चे इस का सित्र देखने वाला कोई न हो क्यूं कि इस का येह अ़मल मुरुव्वत में से नहीं।" सय्यिदुना ह़द्दाद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन की राय को दुरुस्त क़रार दिया और फ़रमाया : "येह अ़मल मुरुव्वत को साक़ित़ कर देता है अगर्चे तन्हाई में ऐसा करना गुनाह नहीं।"

सय्यिदुना इब्ने सुराक़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **अ-दबुश्शाहिद** में सराह़त की है : "लोगों के सामने सित्र ज़ाहिर करना गवाही को साक़ित़ कर देता है।" मगर उन्हों ने इस में इस क़ैद का इज़ाफ़ा किया है : "जब कि वोह बिला ज़रूरत ऐसा करे।"

फ़तावश्शाशी में है : "ह़म्माम में सित्र ज़ाहिर करना अ़दालत (या'नी गवाह बनने की सलाह़िय्यत) में नक़्स डालता है।" सय्यिदुना इब्ने बुरहान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "लोगों के सामने सित्र ज़ाहिर करना अ़दालत में नक़्स डालता है तन्हाई में नहीं।" मगर शैख़ैन ने **अरौज़ा** में और इस की अस्ल में **साह़िबुल उ़द्दह** ने इसे मुत़्लक़न सग़ीरा गुनाह क़रार दिया है, और सय्यिदुना ह़नात़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़तवा भी इस के मुवाफ़िक़ है कि "जो शख़्स ह़म्माम में बिग़ैर इज़ार के दाख़िल हो और वोह इस त़रह़ करने का आ़दी हो जाए तो फ़ासिक़ है।" फ़िस्क़ को तकरार के साथ मुक़य्यद करना इस के सग़ीरा होने की तस्रीह़ है, बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने ख़ल्वत में सित्र खोलने के सग़ीरा होने को ख़ल्वत में भी सित्र पोशी के वुजूब पर मह़मूल किया है अगर्चे वोह किसी देखने वाले की नज़र से मह़फ़ूज़ ही क्यूं न हो।

www.dawateislami.net

ह़ासिले कलाम येह है कि हमारे शाफ़ेई मज़्हब में मो'तमद बात येही है कि सित्र खोलना मुत़्लक़न सग़ीरा गुनाह है मगर लोगों की मौजूदगी में ऐसा करना मुरुव्वत को कम कर देता है और बाहमी फ़ख़्र की कमी को वाजिब करता है, जिस से शहादत बात़िल हो जाती है और सय्यिदुना ह़द्दाद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब **अ-दबुल क़ज़ा** के ह़वाले से और इस के बा'द जो बात गुज़री उस को इसी पर मह़्मूल किया जाएगा और कबीरा गुनाह की ता'रीफ़ में किया गया कलाम भी इस पर दलालत करता है, हमारे अस्ह़ाब ने इस बात की वज़ाह़त की है कि लोगों के सामने बिग़ैर ज़रूरत सित्र खोलना कबीरा गुनाह है।

तम्बीह 2 :

वोह आख़िरी ह़दीसे पाक जिस में देखने वाले और दिखाने वाले पर ला'नत आई है, इस बात का तक़ाज़ा करती है कि सित्र की त़रफ़ देखना कबीरा गुनाह है और इसे खोलना भी कबीरा गुनाह है क्यूं कि हम येह बात बयान कर चुके हैं कि ला'नत कबीरा गुनाहों की अ़लामात में से हैं और येह बात भी इस की ताईद करती है कि अज्नबिय्या या अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) को बिग़ैर ह़ाजत अ़-मदन देखना फ़िस्क़ है, इस के नुक़्सानात का ज़िक्र अ़न्क़रीब आएगा।

www.dawateislami.net

باب الحيض (हैज़ का बयान)

कबीरा नम्बर 75 : हाएज़ा से वती करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स हैज़ वाली औ़रत से मिलाप करे या औ़रत की पिछली शर्मगाह में वती करे या काहिन के पास आए बेशक वोह उस कुरआन का मुन्किर है जो (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर नाज़िल हुवा।"

तम्बीह :

ज़िया-दतुरौंज़ा में सय्यिदुना मुह़ामिली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से नक़्ल कर के इस के कबीरा गुनाह होने का ज़िक्र किया गया है, शैख़ुल इस्लाम जलालुद्दीन बुल्क़ीनी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ज़ाहिर येही है कि शैख़ मुह़युद्दीन ने इसे ग़ैर से नक़्ल नहीं किया लिहाज़ा इसे नक़्ल करना ग़रीब व शाज़ है ह़ालां कि इस के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक वारिद हुई है, फिर मज़्कूरा ह़दीसे पाक ज़िक्र कर के फ़रमाया कि येह ह़दीसे पाक ज़ईफ़ुल अस्नाद होने की वजह से क़ाबिले हुज्जत नहीं जैसा कि सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "तावील की गुन्जाइश की सूरत में इस से कबीरा गुनाह साबित नहीं होता और तावील येह है कि येह हुक्म इन उमूर को जाइज़ और ह़लाल समझने वाले का है क्यूं कि इन उमूर की ह़ुरमत ज़रूरिय्याते दीन से है, लिहाज़ा इन्हें ह़लाल जानने वाला काफ़िर होगा।"

सय्यिदुना शैख़ सलाहुद्दीन अ़लाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : "ह़ालते हैज़ में वती करने वाले पर बा'ज़ अह़ादीसे मुबा-रका में ला'नत वारिद हुई है जब कि मैं इस वक़्त तक इन पर मुत्तलअ़ न हो सका मगर एक जमाअ़त का येही मौक़िफ़ है कि येह कबीरा गुनाह है क्यूं कि सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसे **अरौंज़ा** और **अल मज्मूअ़** में सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से नक़्ल किया है।"

www.dawateislami.net

كتاب الصلاة

नमाज़ का बयान

कबीरा नम्बर 76 : जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नमियों के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝ (پ٢٩،المدثر:٤٢تا٤٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई वोह बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे ।

﴾1﴿...... सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने रिवायत किया है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आदमी और कुफ़्र के दरमियान नमाज़ को छोड़ने का फ़र्क़ है ।'' (مسند احمد بن حنبل،الحديث:١٥١٨٥،ج ٥،ص١٩٩)

﴾2﴿...... सय्यिदुना इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रिवायत यूं है कि दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आदमी और शिर्क या कुफ़्र के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ को छोड़ना है ।'' (صحيح مسلم،كتاب الايمان ،باب بيان اطلاق اسم الكفر......الخ، الحديث:٢٤٦،ص٦٩٢)

﴾3﴿...... सय्यिदुना इमाम अबू दावूद और सय्यिदुना इमाम नसाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا की रिवायत इस त़रह़ है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आदमी और कुफ़्र के दरमियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क़ है ।''

(سنن النسائى،كتاب الصلوٰة،باب الحكم فى تارك الصلاة،الحديث:٤٦٥،ص٢١١٧)

﴾4﴿...... सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने यूं रिवायत किया है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि ''कुफ़्र और ईमान के दरमियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क़ है ।'' (جامع الترمذى ،ابواب الايمان ، باب ماجاء فى ترك الصلاة،الحديث ٢٦١٨،ص١٩١٦)

﴾5﴿...... सय्यिदुना इमाम इब्ने माजह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रिवायत यूं है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बन्दे और कुफ़्र के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ को छोड़ना है ।''

(سنن ابن ماجه ،ابواب اقامة الصلوات والسنة فيها ، باب ماجاء فيمن ترك الصلوٰة الحديث ، ١٠٧٨ ، ص ٢٥٤٠)

www.dawateislami.net

《6》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हमारे और कुफ़्फ़ार के दरमियान पहचान नमाज़ है, लिहाज़ा जिस ने नमाज़ को तर्क किया उस ने कुफ़्र किया।" (سنن ابن ماجه ،ابواب اقامة الصلوات والسنة فيها،باب ماجاء فيمن ترك الصلوٰة الحديث،١٠٧٩،ص ٢٥٤٠)

《7》...... महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने जान बूझ कर नमाज़ तर्क की तो उस ने खुल्लम खुल्ला कुफ़्र किया।" (المعجم الاوسط ،الحديث ٣٣٤٨ ، ج ٢ ، ص ٢٩٩)

《8》...... रहमते कौनैन, हम गरीबों के दिल के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "बन्दे और कुफ़्र या शिर्क के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ को छोड़ना है लिहाज़ा जब इस ने नमाज़ छोड़ दी तो इस ने कुफ़्र किया।" (مسندابى يعلى الموصلى،الحديث ٤٠٨٦، ج٣،ص٣٩٧)

《9》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दे और शिर्क के दरमियान सिवाए नमाज़ तर्क करने के कुछ फ़र्क़ नहीं लिहाज़ा जब इस ने नमाज़ छोड़ दी तो इस ने शिर्क किया।" (سنن ابن ماجه ،ابواب اقامة الصلوات والسنة فيها،باب ماجاء فيمن ترك الصلاة الحديث، ١٠٨٠، ص ٢٥٤٠)

《10》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इस्लाम का ताज और दीन के क़वाइद (या'नी बुन्यादें) तीन हैं जिन पर इस्लाम की बुन्याद है, जिस ने इन में से किसी एक को छोड़ा वोह उस का मुन्किर है और उस का ख़ून ह़लाल (या'नी क़त्ल जाइज़) है : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़्दानिय्यत की गवाही देना (2) फ़र्ज़ नमाज़ और (3) र-मज़ान के रोज़े।" (مسند ابى يعلىٰ الموصلى ، الحديث ٢٣٤٥ ، ج ٢ ، ص ٣٧٨ بدون"ولا يقبل منه صرف ولا عدل ")

《11》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने इन तीनों (या'नी तौहीद, फ़र्ज़ नमाज़ और र-मज़ान के रोज़े) में से एक को छोड़ा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुन्किर हुवा और उस की फ़र्ज़ इबादत क़बूल होगी न नफ़्ल, बल्कि उस का ख़ून और माल ह़लाल हो गए।" (المرجع السابق،الحديث:٢٣٤٥،ج٢،ص٣٧٨،بدون"ولا يقبل منه صرف ولا عدل")

《12》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे सात कामों की वसिय्यत की और इर्शाद फ़रमाया : "किसी चीज़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक न ठहराओ अगर्चे तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए या महरूम कर दिया जाए या फांसी पर लटका दिया जाए, जान बूझ कर नमाज़ न छोड़ना क्यूं कि जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ेगा वोह मिल्लत से ख़ारिज हो जाएगा, ना फ़रमानियों पर कमर न बांधो क्यूं कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी वाले काम हैं और शराब न पियो क्यूं कि येह तमाम बुराइयों की जड़ है।"

www.dawateislami.net

《13》...... सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه रिवायत करते हैं : "सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबा عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان नमाज़ छोड़ने के इलावा किसी अ़मल के छोड़ने को कुफ़्र न समझा करते थे।" (جامع الترمذی ،ابواب الایمان ، باب ماجاء فی ترک الصلاۃ،الحدیث:۲۶۲۲، ص ۱۹۱۶)

《14》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दे और कुफ़्र व ईमान के दरमियान फ़र्क़ नमाज़ है, लिहाज़ा जिस ने इस को छोड़ा उस ने शिर्क किया।"

(جامع الترمذی ،ابواب الایمان ، باب ماجاء فی ترک الصلاۃ ،الحدیث: ۲۶۲۰ ،۲۶۱۸ ،ص۱۹۱۶،بدون"من ترکھافقد أشرک")

《15》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की नमाज़ नहीं उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं और जिस का वुज़ू नहीं उस की नमाज़ नहीं।" (کنزالعمال،کتاب الصلاۃ ، الترهیب عن ترک الصلاۃ،الحدیث:۱۹۰۹۴،ج۷ ، ص۱۳۳)

《16》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस की अमानत नहीं उस का कोई ईमान नहीं, जिस की त़हारत नहीं उस की कोई नमाज़ नहीं और जिस की नमाज़ नहीं उस का कोई दीन नहीं क्यूं कि नमाज़ का दीन में वोही मक़ाम है जो सर का जिस्म में है।"

(المعجم الاوسط ، الحدیث ۲۲۹۲، ج۱ ، ص ۶۲۶)

《17》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "मेरे ख़लील صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे वसिय्यत फ़रमाई कि "किसी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक न ठहराना अगर्चे तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए या जला दिया जाए, फ़र्ज़ नमाज़ जान बूझ कर न छोड़ना क्यूं कि जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देता है उस से अमान उठा ली जाती है और शराब हरगिज़ न पीना क्यूं कि येह हर बुराई की जड़ है।" (سنن ابن ماجه ،ابواب الاشربة ، با ب الخمر مفتا ح کل شر، الحدیث ٤٠٣٤، ص ٢٧٢٠)

《18》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब मेरी आंखों की सियाही बाक़ी रहने के बा वुजूद मेरी बीनाई जाती रही तो मुझ से कहा गया : "हम आप का इलाज करते हैं क्या आप कुछ दिन नमाज़ छोड़ सकते हैं ?" तो मैं ने कहा : "नहीं, क्यूं कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने नमाज़ छोड़ी तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा।"

(مجمع الزوائد،کتاب الصلاۃ،باب فی تارک الصلاۃ،الحدیث:۱۶۳۲،ج ۲،ص ۲۶)

《19》...... एक शख़्स ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जिसे मैं करूं तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक न ठहराओ अगर्चे तुम्हें अ़ज़ाब दिया जाए या जला दिया जाए, अपने वालिदैन की इत़ाअ़त करो अगर्चे वोह तुम्हें माल और तुम्हारी हर चीज़ से मह़रूम कर दें और

www.dawateislami.net

जान बूझ कर नमाज़ न छोड़ो क्यूं कि जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम से बरी हो जाता है।" (المعجم الاوسط، الحديث ۷۹۵٦، ج ٦، ص ٤٩)

﴾20﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराओ अगर्चे तुम्हें क़त्ल कर दिया और जला दिया जाए, अपने वालिदैन की ना फ़रमानी हरगिज़ न करो अगर्चे वोह तुम्हें तुम्हारे माल और घर वालों (या'नी अहलो इयाल) से दूर हो जाने का हुक्म दें, जान बूझ कर फ़र्ज़ नमाज़ हरगिज़ न छोड़ो क्यूं कि जो शख़्स जान बूझ कर फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मए करम उस से उठ जाता है, शराब हरगिज़ न पियो क्यूं कि शराब नोशी तमाम बदकारियों की जड़ है, गुनाह से बचते रहो क्यूं कि गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी को हलाल करता है (या'नी इस का सबब बनता है), मैदाने जिहाद से भागने से बचो अगर्चे लोग हलाक हो जाएं अगर्चे लोगों को मौत आ घेरे मगर तुम साबित क़दम रहो, अपनी ताक़त के मुताबिक़ अपने घर वालों पर ख़र्च करो, अदब सिखाने के लिये उन से अपनी लाठी दूर न करो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ-मले में उन्हें ख़ौफ़ दिलाते रहो।"

(مجمع الزوائد، كتاب الوصايا، باب وصية رسول الله صلى الله تعالى عليه وآله و سلّم، الحديث ۷۱۱۰، ج٤، ص ۳۹۱)

﴾21﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बादल वाले दिन नमाज़ जल्दी अदा कर लिया करो क्यूं कि जिस ने नमाज़ तर्क कर दी उस ने कुफ़्र किया।" (صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة، باب الوعيد على ترك الصلاة، الحديث ١٤٦١، ج٣، ص ١٣)

﴾22﴿...... हज़रते सय्यि-दतुना उमैमा رَضِیَ اللہ تعالٰی عَنْہَا से मरवी है कि मैं सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को वुज़ू कराने के लिये पानी डाल रही थी कि एक शख़्स आया और अर्ज़ की : "मुझे कुछ वसिय्यत करें।" तो आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक न ठहराओ अगर्चे तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए और जला दिया जाए, अपने वालिदैन की ना फ़रमानी न करो अगर वोह तुम्हें अपने अहल या'नी बीवी और दुन्यवी मालो मताअ़ से जुदा होने का हुक्म दें तो सब कुछ छोड़ दो, शराब हरगिज़ न पियो क्यूं कि येह हर बुराई की जड़ है और जान बूझ कर हरगिज़ कोई नमाज़ तर्क न करो कि जिस ने ऐसा किया तो उस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िम्मा ख़त्म हो जाएगा।" (المعجم الكبير، الحديث ٤٧٩، ج ٢٤، ص ١٩٠)

﴾23﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख देगा जिस से वोह दाख़िल होगा।" (كنز العمال، كتاب الصلاة، الترهيب عن ترك الصلاة، الحديث ١٩٠٨٦، ج٧، ص ١٣٢)

﴾24﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने नमाज़ छोड़ी उस ने अपने अहलो इयाल और माल को घटा दिया।"

(كنز العمال، كتاب الصلاة، الترهيب عن ترك الصلاة، الحديث ١٩٠٨٥، ج٧، ص ١٣٢)

www.dawateislami.net

﴾25﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''ऐ गुरौहे कुरैश ! ख़ुदा की क़सम ! तुम ज़रूर नमाज़ क़ाइम करोगे और ज़कात अदा करोगे या फिर मैं तुम पर ऐसे शख़्स को भेजूंगा जो दीन की ख़ातिर तुम्हारी गरदनें मारेगा।''

(المستدرک ،کتاب الایمان والنذور ، باب من قال انا بر ی من الاسلام فهو کما قال ، الحدیث ۷۸۸۹، ج۵ ، ص ۴۲۵)

﴾26﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''इस्लाम में उस का कोई हिस्सा नहीं जिस की नमाज़ नहीं और उस की कोई नमाज़ नहीं जिस का वुज़ू नहीं।''

(الترغیب والترهیب،کتاب الصلاۃ،الترهیب من ترك الصلاۃ،الحدیث ۸۱۶،ج۱،ص ۲۵۸)

﴾27﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम में चार चीज़ों को फ़र्ज़ फ़रमाया है, लिहाज़ा जो इन में से तीन पर अ़मल करेगा वोह उस के किसी काम न आएंगी जब तक कि इन सब पर अ़मल न करे और वोह नमाज़, ज़कात, र-मज़ान के रोज़े और बैतुल्लाह शरीफ़ का हज हैं।'' (المسند للامام احمد بن حنبل ، الحدیث ۱۷۸۰۴ ، ج۶، ص ۲۳۶)

﴾28﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के अ़मल बरबाद कर देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा उस से उठ जाएगा जब तक कि वोह तौबा के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ न करे।'' (المعجم الکبیر ،الحدیث ۲۳۳،ج ۲۰،ص ۱۱۷،مختصرًا)

﴾29﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने नमाज़ तर्क की उस ने ए'लानिया कुफ़्र किया।''

(المعجم الاوسط ، الحدیث:۳۳۴۸، ج۲،ص ۲۹۹)

﴾30﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जान बूझ कर नमाज़ न छोड़ो क्यूं कि जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िम्मा उस से उठ जाएगा।''

(المعجم الکبیر،الحدیث:۲۳ ۱۳۰،ج۱۲،ص ۱۹۶بدن"لاتترك الصلوۃ متعمدًا")

﴾31﴿..... हज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है : ''जिस ने नमाज़ न पढ़ी वोह काफ़िर है।'' (کنزالعمال،کتاب الصلوۃ ،الباب الاول فی فضلها ووجوبها ، الحدیث ۲۱۶۴۹ ،ج۸، ص ۸)

﴾32﴿...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है : ''जिस ने नमाज़ छोड़ दी उस ने कुफ़्र किया।'' (مجمع الزوائد،کتاب الصلاۃ،باب فی تارك الصلوۃ ، الحدیث ۱۶۳۸،ج۲ ،ص ۲۷)

www.dawateislami.net

《33》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : ''जिस ने नमाज़ छोड़ी उस का कोई दीन नहीं।'' (الترغيب والترهيب ،كتاب الصلاة ، الترهيب من ترك الصلاة تعمد ا......الخ ،الحديث٢ ٨٣ ، ج ١ ، ص ٢٦١)

《34》...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : ''जो नमाज़ न पढ़े वोह काफ़िर है।'' (كنزالعمال ،كتاب الصلوة ، الباب الاول فى فضلها ووجوبها ،الحديث ٢١٦٤٩ ، ج ٨ ، ص٨)

《35》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : ''जो नमाज़ न पढ़े उस का कोई ईमान नहीं और जो वुज़ू न करे उस की कोई नमाज़ नहीं।''

(كنزالعمال، كتاب الصلوة ،الباب الاول فى فضلها ووجوبها ،الحديث ٢١٦٤٢ ، ج٨ ، ص ٧)

《36》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने नमाज़ छोड़ी उस ने कुफ़्र किया।''

(صحيح ابن حبان ،كتاب الصلاة ، باب الوعيد على ترك الصلاة ، الحديث ١٤٦١ ، ج ٣ ، ص١٣)

《37》...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नस्र رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को फ़रमाते हुए सुना कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सह़ीह़ सनद के साथ येह बात मरवी है : ''तारिके नमाज़ काफ़िर है।''

(الترغيب والترهيب ،كتاب الصلاة ، الترهيب من ترك الصلاة تعمد ا ......الخ الحديث ٨٣٤ ، ج ١ ، ص ٢٦١)

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में अहले इ़ल्म की येही राय थी कि बिग़ैर उ़ज़्र के जान बूझ कर नमाज़ को इतना मुअख़्ख़र करने वाला कि नमाज़ का वक़्त ही चला जाए काफ़िर है। ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''नमाज़ तर्क करना ऐसा कुफ़्र है जिस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं।''[1]

ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ

---

1 : ''बहारे शरीअ़त'' में है : ''नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का मुन्किर काफ़िर और जो क़स्दन छोड़े अगर्चे एक ही वक़्त की वोह फ़ासिक़ है और जो नमाज़ न पढ़ता हो क़ैद किया जाए यहां तक कि नमाज़ पढ़ने लगे।''

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 3, स. 9)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 77 : नमाज़ बिला उ़ज़्र मुक़द्दम या मुअख़्ख़र करना

या'नी सफ़र, मरज़ या किसी और उ़ज़्र के बिग़ैर जान बूझ कर नमाज़ को उस के वक़्त से पहले या बा'द में अदा करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ۝ اِلَّا مَنۡ تَابَ (پ۱۶، مریم:۵۹تا۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो इन के बा'द इन की जगह वोह ना ख़लफ़ आए जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए तो अन्क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे मगर जो ताइब हुए।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं : "नमाज़ ज़ाएअ़ करने का मत़्लब येह नहीं कि वोह इन्हें बिल्कुल छोड़ देते थे बल्कि वोह वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ते थे।"

इमामुत्ताबिईन ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ने का मत़्लब येह है कि कोई शख़्स ज़ोहर की नमाज़ को इतना मुअख़्ख़र कर दे कि अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाए और मग़रिब का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले अ़स्र की नमाज़ न पढ़े, इसी त़रह़ मग़रिब को इशा तक और इशा को फ़ज्र तक और फ़ज्र को त़ुलूए़ आफ़्ताब तक मुअख़्ख़र कर दे, लिहाज़ा जो शख़्स ऐसी ह़ालत पर इस्रार करते हुए मर जाए और तौबा न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के साथ **ग़य्य** का वा'दा फ़रमाया है। **ग़य्य** जहन्नम की एक ऐसी वादी है जिस का पैंदा बहुत पस्त और अ़ज़ाब बहुत सख़्त है।" (کتاب الکبائر،الکبیرة الرابعةفی ترك الصلوٰة،ص۱۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُلۡهِكُمۡ اَمۡوَالُكُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُكُمۡ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ۝ (پ۲۸، المنافقون:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त का क़ौल है : "इस आयते मुबा-रका में ذِكۡرِ اللّٰهِ से मुराद पांच नमाज़ें हैं, लिहाज़ा जो अपने माल म-सलन ख़रीदो फ़रोख़्त या पेशे या अपनी औलाद की वजह से नमाज़ों को इन के अवक़ात में अदा करने से ग़फ़्लत इख़्तियार करेगा वोह ख़सारा पाने वालों में से होगा।" (کتاب الکبائر،الکبیرة الرابعةفی ترك الصلوٰة،ص۲۰)

《1》...... इसी लिये सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दे से क़ियामत के दिन सब से पहले जिस अ़मल के बारे में ह़िसाब लिया

www.dawateislami.net

जाएगा वोह उस की नमाज़ होगी अगर उस की नमाज़ दुरुस्त हुई तो वोह नजात व फ़लाह़ पा जाएगा और अगर इस में कमी हुई तो वोह शख़्स रुस्वा व बरबाद हो जाएगा।"

(جامع الترمذی،ابواب الصلوٰة ......الخ ،باب ما جاء ان اوّل ما یحاسب ......الخ،الحدیث :٤١٣،ص١٦٨٣،مختصرًا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ۝ (پ٣٠،الماعون:٥-٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाया : "येह वोह लोग होंगे जो नमाज़ों को उन का वक़्त गुज़ार कर पढ़ा करते होंगे।"

(کتاب الکبائر،الکبیرة الرابعةفی ترك الصلوٰة،ص١٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا۝ (پ٥،النساء:١٠٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बे शक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है।

﴾2﴿...... एक दिन मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ का तज़्किरा करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "जो नमाज़ की पाबन्दी करेगा येह उस के लिये नूर, बुरहान या'नी रहनुमा और नजात साबित होगी और जो इस की पाबन्दी नहीं करेगा उस के लिये न नूर होगा, न बुरहान और न ही नजात का कोई ज़रीआ़ और वोह शख़्स क़ियामत के दिर क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय्य बिन ख़लफ़ के साथ होगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عبدالله بن عمر بن العا ص ، الحديث ، ٦٥٨٧، ج٢ ، ص ٥٧٤)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम ने फ़रमाया है : "बे नमाज़ी का ह़श्र इन लोगों के साथ इस लिये होगा कि अगर इसे इस माल ने नमाज़ से ग़ाफ़िल रखा तो वोह क़ारून के मुशाबेह है लिहाज़ा उस के साथ उठाया जाएगा और अगर इस की हुकूमत ने इसे ग़फ़्लत में डाला तो वोह फ़िरऔ़न के मुशाबेह है लिहाज़ा इस का ह़श्र उस के साथ होगा या इस की ग़फ़्लत का सबब इस की वज़ारत होगी तो वोह हामान के मुशाबेह हुवा लिहाज़ा उस के साथ होगा या फिर इस की तिजारत इसे ग़फ़्लत में डालेगी लिहाज़ा वोह मक्का के काफ़िर उबय्य बिन ख़लफ़ के मुशाबेह होने की वजह से उस के साथ उठाया जाएगा।"

(کتاب الکبائر،الکبیرة الرابعةفی ترك الصلوٰة،ص٢١)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान :

www.dawateislami.net

"الَّذِيۡنَ هُمۡ عَنۡ صَلَاتِهِمۡ سَاهُوۡنَ ۝ (پ۳۰،الماعون:۵) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।" के बारे में दरयाफ़्त किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जो नमाज़ को उस का वक़्त गुज़ार कर पढ़ते हैं।" (مجمع الزوائد، كتاب الصلاة، باب فى من يوخر الصلاة عن وقتها، الحديث ۱۸۲۳، ج ۲، ص ۸۰)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिदे बुज़ुर्ग वार से पूछा : "आप का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान : "الَّذِيۡنَ هُمۡ عَنۡ صَلَاتِهِمۡ سَاهُوۡنَ ۝ (پ۳۰،الماعون:۵) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।" के बारे में क्या ख़याल है ? हम में से कौन है जो नमाज़ में न भूलता हो ? हम में से कौन है जो अपने आप से बातें न करता हो ?" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "इस से मुराद येह नहीं बल्कि इस से मुराद वक़्त ज़ाएअ़ कर देना है।" (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند سعد بن ابی وقاص، الحديث ۷۰۰، ج ۱، ص ۳۰۰)

वैल क्या है ? वैल से मुराद अ़ज़ाब की शिद्दत है और एक क़ौल येह भी है कि येह जहन्नम में एक वादी है, अगर इस में दुन्या के पहाड़ डाल दिये जाएं तो इस की गर्मी की शिद्दत से पिघल जाएं, येह उन लोगों का ठिकाना होगी जो नमाज़ को हलका जानते हैं या वक़्त गुज़ार कर पढ़ते हैं मगर येह कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लें और अपनी कोताहियों पर नादिम हों।

《5》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस की एक नमाज़ फ़ौत हो गई उस के अह्ल और माल में कमी हो गई।"

(صحیح ابن حبان، كتاب الصلاة، باب الوعيد على ترك الصلاة، الحديث ۱٤٦٦، ج۳، ص ۱٤)

《6》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी उ़ज़्र के बिग़ैर दो नमाज़ों को (एक वक़्त में) जम्अ़ किया बेशक वोह कबीरा गुनाहों के दरवाज़े पर आया।" (المستدرك، كتاب الامامة وصلاة ......الخ، باب الزجر عن الجمع ......الخ، الحديث ۱۰۵۸، ج ۱، ص ٥٦٤)

《7》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस की अ़स्र की नमाज़ फ़ौत हो गई गोया उस के अह्ल और माल में कमी कर दी गई।"

(صحیح البخاری، كتاب مواقيت الصلاة، باب اثم من فاتته العصر، الحديث ۵۵۲، ص٤٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़ुज़ैमा رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने अपनी सह़ीह़ में येह इज़ाफ़ा किया है : "सय्यिदुना इमाम मालिक رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने इर्शाद फ़रमाया कि "इस से मुराद वक़्त का गुज़र जाना है।"

《8》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नमाज़ों में से एक नमाज़ ऐसी भी है कि जिस से वोह फ़ौत हो जाए तो गोया उस के अह्ल और माल में कमी कर दी गई।" (سنن النسائی، كتاب الصلاة، باب صلاة العصر فى السفر، الحديث: ٤٨٠، ص۲۱۱۸)

www.dawateislami.net

﴾9﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक येह नमाज़ या'नी अ़स्र तुम से पहली उम्मतों पर पेश की गई तो उन्हों ने इसे ज़ाएअ़ कर दिया, लिहाज़ा आज तुम में से जो इस की हिफ़ाज़त करेगा उस के लिये दो अज्र हैं और इस नमाज़ के बा'द सितारे ज़ाहिर होने तक कोई नमाज़ नहीं।"

(صحیح مسلم ،کتاب صلاۃ المسافرین ، باب الاوقات التی نھی عن الصلاۃ ......الخ الحدیث ۱۹۲۷ ، ص ۸۰۷)

﴾10﴿...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने नमाज़े अ़स्र तर्क की तो उस का अ़मल बरबाद हो गया।"

(صحیح البخاری ،کتاب مواقیت الصلاہ ، باب من ترك العصر ، الحدیث ۵۵۳ ، ص ۴۵)

﴾11﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने नमाज़े अ़स्र जान बूझ कर छोड़ी यहां तक कि वोह फ़ौत हो गई तो उस का अ़मल ज़ाएअ़ हो गया।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث بریدۃ الاسلمی ، الحدیث۲۳۱۰۷ ، ج ۹ ، ص ۳۱ ،بتغیرقلیلٍ)

﴾12﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने नमाज़े अ़स्र में बिला उ़ज़्र ताख़ीर की यहां तक कि सूरज छुप गया तो उस का अ़मल बरबाद हो गया।" (مصنف ابن ابی شیبہ ، کتاب الصلاۃ ، باب فی التفریط فی الصلاۃ ، الحدیث ۲/۸،ج۱، ص۳۷۷)

﴾13﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से किसी के अह्ल और माल में कमी कर दी जाए तो येह उस के लिये बेहतर है कि उस की नमाज़े अ़स्र फ़ौत हो जाए।" (مجمع الزوائد ،کتاب الصلاۃ ، باب وقت صلاۃ العصر ، الحدیث ۱۷۱۵ ، ج ۲ ، ص ۵۰)

﴾14﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने जान बूझ कर नमाज़े अ़स्र में इतनी ताख़ीर की यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया तो गोया उस के अह्ल और माल में कमी कर दी गई।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،المسند عبداللہ بن عمر الخ ،الحدیث ۵۴۶۸ ، ج۲ ، ص ۳۶۸)

﴾15﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की नमाज़ फ़ौत हो गई तो गोया उस के अह्ल और माल में कमी कर दी गई।"

(السنن الکبری للبیھقی،کتاب الصلاہ ، باب کراھیۃ تا خیر العصر، الحدیث:۲۰۹۵،ج۱، ص۶۵۳)

﴾16﴿...... हज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर अपने सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया करते : "क्या तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है?" रावी कहते हैं कि "जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

चाहता वोह अपना ख़्वाब बयान कर देता।" चुनान्चे एक सुब्ह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : आज रात मेरे पास दो फ़िरिश्ते आए, उन्हों ने मुझे उठाया और कहा : "चलें।" मैं उन के साथ चल दिया, हम एक ऐसे शख़्स के पास पहुंचे जो लैटा हुवा था जब कि दूसरा शख़्स उस के क़रीब पथ्थर लिये खड़ा था, वोह उस के सर पर पथ्थर मारता जिस से वोह फट जाता फिर वोह पथ्थर लुढ़क कर दूर जा गिरता और वोह शख़्स पथ्थर उठाने के लिये चला जाता उस के लौटने से पहले ही उस का सर पहले की त़रह़ दुरुस्त हो जाता, फिर वोह वापस आ कर उस के सर पर उसी त़रह़ पथ्थर मारता जिस त़रह़ पहली दफ़्आ़ मारा था,

मैं ने उन दोनों फ़िरिश्तों से कहा "سُبْحٰنَ اللهِ ! येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने कहा : "आगे चलें।" लिहाज़ा हम चल दिये, फिर हम एक ऐसे शख़्स के पास पहुंचे जो चित लैटा हुवा था और दूसरा शख़्स उस के पास खड़ा था और आंकस (या'नी लोहे का ऐसा रॉड जिस का एक सिरा क़दरे मुड़ा होता है) के ज़रीए उस के जब्ड़े, नथने और आंख को गुद्दी तक चीर देता था।" अबू औ़फ़ कहते हैं कि कभी अबू रजा यूं बयान करते : "वोह चीर कर दूसरी जानिब चला जाता और वहां भी ऐसा ही करता जैसा पहली त़रफ़ किया था जब वोह एक जानिब चीर कर फ़ारिग़ होता तो दूसरी जानिब पहले की त़रह़ दुरुस्त हो चुकी होती, फिर वोह दोबारा वैसे ही करता जैसे पहली मरतबा किया था।"

मैं ने फिर कहा : "سُبْحٰنَ اللهِ ! येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने कहा : "और आगे चलें।" लिहाज़ा हम चल दिये यहां तक कि तन्नूर जैसी एक चीज़ के पास पहुंचे।" रावी कहते हैं, मेरा ख़याल है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया : "उस में से शोरो ग़ुल की आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने उस में झांक कर देखा तो उस में नंगे मर्द और औ़रतें नज़र आईं जब उन्हें नीचे से आग की लपट पहुंचती तो चीख़ने चिल्लाने लगते।"

मैं ने पूछा : "येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने कहा : "मज़ीद आगे चलें।" लिहाज़ा हम चल दिये यहां तक कि हम एक नहर पर पहुंचे।" रावी कहते हैं, मेरा ख़याल है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया था : "वोह नहर ख़ून की त़रह़ सुर्ख़ थी, नहर के अन्दर एक शख़्स तैर रहा था जब कि दूसरा शख़्स नहर के किनारे खड़ा था और उस के पास बहुत से पथ्थर जम्अ़ थे, जब वोह अन्दर वाला तैरता हुवा उस शख़्स के क़रीब आता जिस के पास बहुत से पथ्थर जम्अ़ थे तो आ कर अपना मुंह खोल देता और येह उस के मुंह में पथ्थर डाल देता और वोह तैरता हुवा वापस चला जाता और जब वापस लौट कर आता तो उसी त़रह़ येह उस के मुंह में पथ्थर डाल देता।"

मैं ने उन दोनों से पूछा : "येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने मुझ से कहा : "मज़ीद आगे चलें।" तो हम चल दिये यहां तक कि एक निहायत ही बद सूरत आदमी के पास पहुंचे इतना बद सूरत कि तुम ने कभी देखा न हो, उस के पास आग थी जिसे वोह भड़का रहा था और उस के गिर्द दौड़ रहा था।

www.dawateislami.net

मैं ने पूछा : "येह कौन है ?" तो उन्हों ने कहा : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आगे चलें।" हम चल दिये यहां तक कि एक बाग़ में पहुंचे उस में मौसिमे बहार के फूल खिले हुए थे, बाग़ के दरमियान एक दराज़ क़द शख़्स खड़ा था, आस्मान से बातें करती हुई उस की बुलन्दी के बाइस मैं उस का सर न देख सका, उस शख़्स के गिर्द इतने बच्चे थे जितने मैं ने किसी के नहीं देखे।

मैं ने पूछा : "येह शख़्स कौन है और येह बच्चे कौन हैं ?" तो उन्हों ने कहा : "आगे चलें।" लिहाज़ा हम चल दिये फिर हम एक इतने बड़े बाग़ में पहुंचे जितना बड़ा और ख़ूब सूरत कोई बाग़ मैं ने नहीं देखा, उन्हों ने मुझ से कहा : "इस पर चढ़ें।" चुनान्चे हम उस पर चढ़ गए तो हमें एक शह्र नज़र आया जिस की एक ईंट सोने की और एक चांदी की थी, जब हम शह्र के दरवाज़े पर पहुंचे और उसे खोलने के लिये कहा तो वोह हमारे लिये खोल दिया गया, हम उस के अन्दर दाख़िल हुए तो उस में ऐसे लोगों से मिले जिन का निस्फ़ बदन तो इतना ख़ूब सूरत था जितना तुम ने न देखा हो और निस्फ़ इतना बद सूरत कि जितना तुम ने न देखा हो, उन फ़िरिश्तों ने उन लोगों से कहा : "जाओ और उस नह्र में कूद पड़ो।" वोह नह्र चौड़ाई में बह रही थी और उस का पानी बिल्कुल सफ़ेद था वोह लोग जा कर उस नह्र में कूद पड़े, फिर जब वोह लौट कर हमारे पास आए तो उन की बद सूरती दूर हो चुकी थी और वोह ख़ूब सूरत हो गए थे।

उन फ़िरिश्तों ने मुझ से कहा : "येह बाग़े अ़दन है और येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मकान है।" मैं ने निगाह उठा कर देखा तो वोह सफ़ेद अब्र या'नी बादल की त़रह़ था, मैं ने उन से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ब-र-कत दे मुझे इस के अन्दर जाने दो।" उन्हों ने जवाब दिया : "अभी नहीं, लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस में ज़रूर दाख़िल होंगे।"

फिर मैं ने उन से कहा : "रात भर मैं ने जो अ़जीब चीज़ें देखीं वोह क्या हैं ?" तो उन्हों ने कहा : "हम अभी अ़र्ज़ किये देते हैं, जिस पहले शख़्स के पास आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पहुंचे थे और जिस का सर पथ्थर से कुचला जा रहा था वोह क़ुरआन पढ़ कर भुलाने वाला और नमाज़ के वक़्त सो जाने वाला था, वोह शख़्स जिस के पास आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पहुंचे तो उस के जब्ड़े, नथने और आंख को गुद्दी तक चीरा जा रहा था येह वोह शख़्स था जो सुब्ह़ घर से निकलता तो झूटी बातें घड़ता और उन्हें दुन्या भर में फैला देता, वोह नंगे मर्द और औ़रतें जो तन्नूर से मुशाबेह जगह में थे वोह ज़ानी मर्द और ज़ानी औ़रतें थीं, वोह शख़्स कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के पास पहुंचे तो वोह नह्र में तैर रहा था और उस के मुंह में पथ्थर डाले जा रहे थे वोह सूदख़ोर था, और वोह हैबत नाक सूरत वाला शख़्स जो आग के क़रीब था और उसे भड़का कर उस के इर्द गिर्द दौड़ रहा था वोह दारोग़ए जहन्नम (या'नी जहन्नम पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते) ह़ज़रते **मालिक** عَلَيْهِ السَّلَام थे और बुलन्द क़ामत आदमी जो बाग़ में थे वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام थे और उन के गिर्द जो बच्चे थे वोह फ़ित़रते इस्लामिया पर फ़ौत होने वाले थे।"

www.dawateislami.net

रावी का बयान है कि बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! और मुश्रिकीन के बच्चे ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुश्रिकीन के बच्चे भी।" और वोह लोग जिन का निस्फ़ बदन ख़ूब सूरत और निस्फ़ बद सूरत था येह वोह लोग थे जिन्हों ने मिले जुले अ़मल किये या'नी अच्छे अ़मल भी किये और बुरे भी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन से दर गुज़र फ़रमाया।" (صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب تعبیر الرؤیابعد صلاۃ الصبح، الحدیث ۷۰۴۷، ص ۵۸۸)

﴾17﴿...... एक और रिवायत में है : फिर शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक ऐसी क़ौम के पास पहुंचे जिन के सरों को पथ्थरों से कुचला जा रहा था जब भी उन्हें कुचला जाता वोह पहले की त़रह़ दुरुस्त हो जाते और इस मुआ-मले में कोई सुस्ती न बरती जाती तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन हैं ?" अ़र्ज़ की : "येह वोह लोग हैं जिन के सर नमाज़ से बोझल हो जाते हैं।" (مجمع الزوائد، کتاب الایمان، باب منه فی الاسری، الحدیث ۲۳۵، ج ۱، ص ۲۳۶)

﴾18﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इस्लाम ने नमाज़ की ता'लीम दी तो जिस का दिल नमाज़ के लिये फ़ारिग़ हुवा और उस ने इस के हुक़ूक़, वक़्त और सुन्नतों की रिआ़यत के साथ पाबन्दी की तो वोही (कामिल) मोमिन है।"

(کنز العمال، کتاب الصلاۃ، الفصل الاول، الحدیث ۱۸۸۶۶، ج۷، ص ۱۱۳)

﴾19﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है "मैं ने तुम्हारी उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ कीं और ख़ुद से अ़हद किया कि जिस ने इन्हें इन के अवक़ात में अदा किया मैं उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और जिस ने इन की ह़िफ़ाज़त न की उस का मेरे पास कोई अ़हद नहीं।"

(سنن ابن ماجه، ابو اب اقامة الصلوات، باب ماجاء فی فرض الصلوات الخمس......الخ الحدیث:۱۴۰۳، ص۲۵۶۱)

﴾20﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने जान लिया कि नमाज़ लाज़िमी ह़क़ है और फिर इसे अदा भी किया तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عثمان بن عفان، الحدیث ۴۲۳، ج۱، ص۱۳۲)

﴾21﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन बन्दे से सब से पहले उस की नमाज़ के बारे में ह़िसाब लिया जाएगा अगर वोह सह़ीह़ हुई तो वोह काम्याब हो गया और नजात पा गया और अगर वोह सह़ीह़ न हुई तो वोह ख़ाइबो ख़ासिर हो गया अगर उस के फ़राइज़ में कमी हुई तो रब عَزَّوَجَلَّ मलाएका से इर्शाद फ़रमाएगा : "देखो क्या मेरे बन्दे के पास कोई नफ़्ल पाते हो जिस के ज़रीए तुम इस के फ़र्ज़ की कमी को पूरा कर सको।" फिर तमाम आ'माल का इसी त़रह़ ह़िसाब होगा।"

(جامع الترمذی، ابواب الصلاۃ......الخ، باب ماجاء ان اول مایحاسب......الخ الحدیث:۴۱۳، ص۱۶۸۳)

﴾22﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन सब से पहले बन्दे से जिस का ह़िसाब होगा वोह नमाज़

www.dawateislami.net

है और सब से पहले लोगों के दरमियान जिस का फ़ैसला होगा वोह ख़ून (या'नी क़त्ल) है।"

(سنن النسائی ،کتاب المحاربة ، باب تعظیم الدم ، الحدیث٣٩٩٦ ، ص ٢٣٤٩)

बरोज़े क़ियामत फ़राइज़ की कमी नवाफ़िल से पूरी की जाएगी :

《23》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दे का क़ियामत के दिन सब से पहले जिस चीज़ का हि़साब होगा वोह नमाज़ है, अगर वोह मुकम्मल हुई तो उस के लिये कामिल होना लिख दिया जाएगा और अगर वोह मुकम्मल न हुई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा : "ज़रा देखो तो क्या तुम मेरे बन्दे के पास नवाफ़िल पाते हो ?" लिहाज़ा वोह उस बन्दे के फ़राइज़ को उस के नवाफ़िल से मुकम्मल फ़रमा देंगे, फिर ज़कात का इसी त़रह़ हि़साब होगा और इस के बा'द बक़िय्या आ'माल का हि़साब भी इसी त़रह़ होगा।"

(سنن النسائی،کتاب الصلاۃ ،باب المحاسبة علی الصلاۃ ،الحدیث ٦٦٧ ،ص٢١١٧ بتغیرقلیلٍ)

《24》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सब से पहले क़ियामत के दिन बन्दे से उस की नमाज़ का हि़साब लिया जाएगा, अगर वोह कामिल हुई तो कामिल लिख दी जाएगी और अगर मुकम्मल न हुई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा : क्या तुम मेरे बन्दे के पास कोई नफ़्ल पाते हो। तो वोह उस के फ़राइज़ को उस के नवाफ़िल के ज़रीए पूरा कर देंगे फिर इसी त़रह़ ज़कात और दीगर आ'माल का हि़साब लिया जाएगा।"

(سنن ابی داؤد ، کتاب الصلاہ ، باب قول النبی علیه السلام کل صلاۃ......الخ ،الحدیث ٨٦٤، ص ١٢٨٧ ،"مختصرًا")

《25》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन बन्दे से सब से पहले जिस चीज़ के बारे में पूछा जाएगा वोह येह कि उस की नमाज़ देखी जाएगी अगर वोह सही़ह़ होगी तो वोह नजात पा जाएगा और अगर वोह सही़ह़ न हुई तो ख़ाइबो ख़ासिर होगा।" (المعجم الاوسط ، الحدیث ، ٣٧٨٢ ،ج ٣ ، ص ٣٢)

《26》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दे से सब से पहले उस की नमाज़ का हि़साब लिया जाएगा अगर वोह सही़ह़ हुई तो बक़िय्या सारे आ'माल भी सही़ह़ हो जाएंगे और अगर सही़ह़ न हुई तो बक़िय्या सारे भी बरबाद हो जाएंगे फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "देखो क्या मेरे बन्दे के पास कोई नफ़्ली इबादत भी है ?" तो अगर उस के पास नफ़्ल हुए तो उन से फ़र्ज़ों को पूरा कर देगा और फिर इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दूसरे फ़राइज़ का हि़साब होता रहेगा।"

(کنزالعمال،کتاب الصلاۃ ، قسم الاقوال،باب فی فضل الصلوۃ وجوبها،الفصل الاول،الحدیث:١٨٨٨٤،ج٧،ص١١٥)

《27》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन बन्दों से उन के आ'माल में से सब से पहले नमाज़ का हि़साब होगा, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा ह़ालां कि वोह अच्छी त़रह़ जानता है : "मेरे

www.dawateislami.net

बन्दे की नमाज़ को देखो क्या येह मुकम्मल है या नाक़िस !" अगर वोह कामिल होगी तो कामिल लिख दी जाएगी और अगर उस ने इस में कुछ कोताही की होगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरे बन्दे के नवाफ़िल देखो अगर इस के पास कुछ नवाफ़िल हों तो उन से इस के फ़राइज़ को पूरा कर दो ।" फिर इसी त़रह़ बक़िय्या आ'माल का भी ह़िसाब होगा ।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الصلاۃ ، باب قول النبی کل صلاۃ ......الخ ، الحدیث ٨٦٤، ص ١٢٨٧)

﴾28﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ–लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरे पास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है कि "मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं जो इन्हें इन के वुज़ू, अवक़ात, रुकूअ़ और सुजूद की रिआ़यत करते हुए अदा करेगा तो उसे जन्नत में दाख़िल करना मेरे ज़िम्मए करम पर है और जो इन में से किसी चीज़ में कोताही कर के मुझ से मिलेगा उस के लिये मेरे ज़िम्मए करम पर कुछ नहीं, अगर मैं चाहूंगा तो उसे अ़ज़ाब दूंगा और अगर चाहूंगा तो उस पर रह़म फ़रमाऊंगा ।"

(کنز العمال ،کتاب الصلاۃ ، الحدیث ١٨٨٧٦ ، ج٧ ، ص ١١٤)

﴾29﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नमाज़ के लिये मीज़ान मुक़र्रर होगी जिस ने इसे पूरा किया वोह पूरा बदला लेगा ।"

(شعب الایمان ،باب فی الصلوات/ تحسین الصلاۃ والاکثارمنها،الحدیث:٣١٥١،ج٣،ص١٤٧)

﴾30﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नमाज़ शैत़ान का मुंह काला करती है, स–दक़ा उस की कमर तोड़ता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत और इ़ल्म के मुआ़–मले में मवद्दत उस की दुम काट देती है, लिहाज़ा जब तुम येह (आ'माल) करते हो तो वोह तुम से इस क़दर दूर हो जाता है जैसे सूरज के तुलूअ़ होने की जगह इस के ग़ुरूब होने की जगह से दूर है ।" (فردو س الاخبارللدیلمی،حرف باب الصاد،الحدیث:٣٦١٥، ج٢ ،ص٣٠)

﴾31﴿...... रह़मते कौनैन, हम गरीबों के दिल के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो, अपनी पांच नमाज़ें अदा करो, र–मज़ान के रोज़े रखो, अम्वाल की ज़कात अदा करो और जब मैं तुम्हें कोई हुक्म दूं तो उस की पैरवी करो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।" (جامع الترمذی ، ابواب السفر،باب منه،الحدیث ٦١٦، ص ١٧٠٦)

﴾32﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल वक़्त पर नमाज़ पढ़ना है फिर वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना और फिर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करना है ।"

(صحیح البخاری ،کتاب المواقیت الصلاۃ ، باب فضل الصلاۃ لوقتها ، الحدیث ٥٢٨، ص٤٤)

www.dawateislami.net

《33》...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि एक शख़्स ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस्लाम का कौन सा अ़मल अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को सब से ज़ियादा पसन्द है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वक़्त पर नमाज़ पढ़ना और जो शख़्स नमाज़ छोड़ दे उस का कोई दीन नहीं और नमाज़ दीन का सुतून है।"

(السنن الکبری للبیھقی،کتا ب الصلاۃ ، باب الترغیب فی حفظ وقت الصلاۃ ......الخ، الحدیث: ۳۱۶۵، ج ۲،ص ۳۰۴، مختصرا)

《34》...... जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ज़ख़्मी किया गया तो उन से कहा गया : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! नमाज़ (का वक़्त है) ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "येह एक ने'मत है और जिस ने नमाज़ को ज़ाएअ़ किया उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं ।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने नमाज़ अदा फ़रमाई ह़ालां कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ज़ख़्मों से ख़ून बह रहा था ।

(کتاب الکبائر،الکبیرۃ الرابعۃفی ترک الصلوٰۃ،ص۲۲،"نعمۃ"بدلہ"نعم")

《35》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब बन्दा अव्वल वक़्त में नमाज़ अदा करता है तो वोह आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हो जाती है और अ़र्श तक उस के साथ एक नूर होता है, फिर वोह क़ियामत तक उस नमाज़ी के लिये इस्तिग़फ़ार करती रहती है और उस से कहती है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तेरी इसी त़रह़ ह़िफ़ाज़त फ़रमाए जिस त़रह़ तूने मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाई ।" और जब बन्दा वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ता है तो वोह तारीकी में डूब कर आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होती है फिर जब वोह आस्मान पर पहुंच जाती है तो बोसीदा कपड़े में लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है ।" (کنز العمال،کتاب الصلوۃ ، الحدیث ۱۹۲۶۳،ج ۷،س ۱۴۷ ،بتغیرقلیل)

《36》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं कि जिन की नमाज़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़बूल नहीं फ़रमाता ।

और इन में उस शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ता है ।"

《37》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **"जो नमाज़ की पाबन्दी करेगा अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पांच बातों के साथ उस का इक्राम फ़रमाएगा :

(1) उस से तंगी और (2) क़ब्र का अ़ज़ाब दूर फ़रमाएगा (3) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ नामए आ'माल उस के दाएं हाथ में देगा (4) वोह पुल सिरात़ से बिजली की तेज़ी से गुज़र जाएगा और (5) जन्नत में बिग़ैर ह़िसाब दाख़िल होगा और **जो नमाज़ को सुस्ती की वजह से छोड़ेगा अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे **पन्दरह सज़ाएं** देगा : पांच दुन्या में, तीन मौत के वक़्त, तीन क़ब्र में और तीन क़ब्र से निकलते वक़्त ।

www.dawateislami.net

दुन्या में मिलने वाली सज़ाएं येह हैं : (1) उस की उ़म्र से ब-र-कत ख़त्म कर दी जाएगी (2) उस के चेहरे से सालिह़ीन की अ़लामत मिटा दी जाएगी (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे किसी अ़मल पर सवाब न देगा (4) उस की कोई दुआ़ आस्मान तक न पहुंचेगी और (5) सालिह़ीन की दुआ़ओं में उस का कोई ह़िस्सा न होगा।

मौत के वक़्त दी जाने वाली सज़ाएं येह हैं (1) वोह ज़लील हो कर मरेगा (2) भूका मरेगा और (3) प्यासा मरेगा अगर्चे उसे दुन्या भर के समुन्दर पिला दिये जाएं फिर भी उस की प्यास न बुझेगी।

बे नमाज़ी को क़ब्र में दी जाने वाली सज़ाएं येह हैं (1) उस की क़ब्र को इतना तंग कर दिया जाएगा कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी (2) उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी फिर वोह दिन रात अंगारों पर लोट पोट होता रहेगा और (3) क़ब्र में उस पर एक अज़्दहा मुसल्लत़ कर दिया जाएगा जिस का नाम **अश्शजाउ़ल अक़्रअ़** है, उस की आंखें आग की होंगी जब कि नाख़ुन लोहे के होंगे, हर नाख़ुन की लम्बाई एक दिन की मसाफ़त तक होगी, वोह मय्यित से कलाम करते हुए कहेगा : ''मैं **अश्शजाउ़ल अक़्रअ़** या'नी गन्जा सांप हूं।'' उस की आवाज़ कड़क दार बिजली की सी होगी, वोह कहेगा : ''मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि नमाज़े फ़ज्र ज़ाएअ़ करने पर तुलूए आफ़्ताब के बा'द तक मारता रहूं और नमाज़े ज़ोहर ज़ाएअ़ करने पर अ़स्र तक मारता रहूं और नमाज़े अ़स्र ज़ाएअ़ करने पर मग़रिब तक मारता रहूं और नमाज़े मग़रिब ज़ाएअ़ करने पर इशा तक मारता रहूं और नमाज़े इशा ज़ाएअ़ करने पर फ़ज्र तक मारता रहूं।'' जब भी वोह उसे मारेगा तो वोह 70 हाथ तक ज़मीन में धंस जाएगा और वोह क़ियामत तक इस अ़ज़ाब में मुब्तला रहेगा।

क़ब्र से निकलते वक़्त मैदाने मह़शर में मिलने वाली सज़ाएं : (1) वोह ह़िसाब की सख़्ती (2) रब्बे क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी और (3) जहन्नम में दाख़िला हैं।'' .

(كتاب الكبائر للامام الحافظ الذهبي،فصل فى المحافظة على الصلوات والتهاون بها،ص٢٤)

वज़ाह़त : इस ह़दीसे पाक में अ़दद की जो तफ़्सील बयान की गई है वोह 15 के अ़दद को पूरा नहीं करती क्यूं कि तफ़्सील 14 सज़ाओं की बयान हुई है शायद रावी पन्दरहवीं सज़ा भूल गए।

《**38**》...... एक और रिवायत में है : ''जब वोह क़ियामत के दिन आएगा तो उस के चेहरे पर तीन सत़रें लिखी होंगी : (1) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ ज़ाएअ़ करने वाले (2) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब के साथ मख़्सूस और (3) जिस त़रह़ तूने दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ ज़ाएअ़ किया तो आज तू भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस हो जा।'' (المرجع السابق،ص٢٥)

《**39**》..... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ला कर खड़ा किया जाएगा,

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में ले जाने का हुक्म फ़रमाएगा तो वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! किस जुर्म की सज़ा में ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "नमाज़ को उन के अवक़ात से मुअख़्ख़र करने और मेरे नाम की झूटी क़समें खाने की वजह से ।" (المرجع السابق،ص٢٥)

《40》...... बा'ज़ मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने येह भी रिवायत किया है कि साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दिन अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इर्शाद फ़रमाया : "दुआ़ करो, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम में से किसी को बद बख़्त और मह़रूम न रहने दे ।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो मह़रूम और बद बख़्त कौन है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नमाज़ छोड़ने वाला ।" (المرجع السابق،ص٢٥)

《41》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन सब से पहले नमाज़ छोड़ने वालों के चेहरे सियाह होंगे और बेशक जहन्नम में एक वादी है जिसे **लमलम** कहा जाता है, उस में सांप हैं और हर सांप ऊंट जितना है, उस की लम्बाई एक महीने की मसाफ़त जितनी है, जब वोह बे नमाज़ी को डसेगा तो उस का ज़हर **70 साल** तक उस के जिस्म में जोश मारता रहेगा फिर उस का गोश्त गल कर हड्डी से अलग हो जाएगा ।" (المرجع السابق،ص٢٦)

《42》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बनी इस्राईल की एक औ़रत ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मैं ने एक बहुत बड़ा गुनाह किया है और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा भी कर चुकी हूं, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ फ़रमाएं कि वोह मेरा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा कर मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले ।" ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तेरा गुनाह क्या है ?" तो वोह बोली : "मैं ने ज़िना किया फिर उस से जो बच्चा पैदा हुवा मैं ने उसे क़त्ल कर दिया ।" इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस से फ़रमाया : "ऐ बदकार औ़रत ! यहां से चली जा, कहीं आस्मान से आग नाज़िल न हो जाए, और तेरी बद अ़-मली के सबब हम भी उस की लपट में न आ जाएं ।" वोह औ़रत शिकस्ता दिल लिये वहां से जाने लगी तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ की : "ऐ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ! आप का रब عَزَّوَجَلَّ आप से इर्शाद फ़रमाता है कि "आप ने उस तौबा करने वाली औ़रत को वापस क्यूं लौटा दिया ? क्या आप ने इस से बदतर किसी को न पाया ?" तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल ! इस से बदतर कौन होगा ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : **"जो जान बूझ कर नमाज़ तर्क कर दे ।"** (كتاب الكبائر،ص٢٦)

सलफ़ सालिह़ीन में से किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है कि उन की बहन का इन्तिक़ाल हो गया जब वोह उसे दफ़्नाने लगे तो उन की पोटली जिस में कुछ पूंजी जम्अ़ थी क़ब्र में

www.dawateislami.net

गिर गई, दफ़्ना कर लौटते तक वोह उस से बे ख़बर रहे, जब वापस लौट आए तो उन्हें याद आया, वोह उस की क़ब्र पर आए और लोगों के चले जाने के बा'द उसे खोदने लगे, उन्हों ने क़ब्र में भड़क्ती हुई आग देखी तो मिट्टी डाल कर रोते हुए अपनी वालिदा के पास ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की ''ऐ अम्मीजान ! मुझे मेरी बहन के बारे में बताएं कि वोह क्या अ़मल करती थी ?'' वालिदा साहि़बा ने कहा : ''तुम उस के बारे में क्या जानना चाहते हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''अम्मीजान मैं ने उस की क़ब्र पर दहक्ती हुई आग देखी है।'' येह सुन कर वोह रोते हुए बोली : ''बेटा ! तुम्हारी बहन नमाज़ में सुस्ती करती थी और इसे वक़्त गुज़ार कर पढ़ा करती थी।''

जब वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ने का येह ह़ाल है तो उन लोगों का क्या ह़ाल होगा जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तमाम आदाब व कमालात और वक़्त की पाबन्दी के साथ नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ मांगते हैं बेशक वोह जव्वादो करीम और रऊफ़ो रह़ीम है।

(المرجع السابق،ص٢٦) (اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم)

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

नमाज़ न पढ़ने या बिला उ़ज़्र इसे वक़्त से पहले या वक़्त गुज़ार कर पढ़ने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है इस की वजह शैख़ैन का वोह क़ौल है जिसे उन्हों ने **साहि़बुल उ़द्दह** से नक़्ल कर के बर क़रार रखा और ''**अल अन्वार**'' में जो ''दोहराए बिग़ैर'' की क़ैद का इज़ाफ़ा किया गया है (या'नी उस वक़्त गुनाहे कबीरा है जब कि नमाज़ न दोहराए) वोह अपने मह़ल में नहीं क्यूं कि क़ब्ल अदा करने की सूरत में वोह जान बूझ कर दीन से मज़ाक़ करने वाला होगा अगर्चे वक़्त में इआ़दा भी कर ले, जब कि ''**अल इस्नवी**'' का येह क़ौल कि शैख़ैन का नमाज़ को वक़्त से मुक़द्दम करने का क़ौल तह़क़ीक़ शुदा नहीं क्यूं कि अगर वोह इस के जवाज़ का ए'तिक़ाद रखता हो तो इस में कोई कलाम नहीं और अगर वोह जानता हो कि ऐसा करना मन्अ़ है तो उस की नमाज़ फ़ासिद है और ऐसी सूरत में अगर उस ने वक़्त में नमाज़ पढ़ी तो उस का येह अ़मल ह़राम है क्यूं कि उस ने फ़ासिद त़ौर पर नमाज़ अदा की, लिहाज़ा इस का लिह़ाज़ रखना चाहिये और इस शाज़ो नादिर सूरत पर इक्तिसार नहीं करना चाहिये, अगर उस ने वक़्त पर नमाज़ अदा न की तो ताख़ीर और फ़ासिद नमाज़ के सबब गुनाहगार होगा और येह बात भी अपने मह़ल में नहीं।

इसी लिये सय्यिदुना अज़्रई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''उन्हों ने जो बात ज़िक्र की है वोह ऐसी बे तुकी बात है जिस पर इज़ाफ़े की गुन्जाइश नहीं **साहि़बुल उ़द्दह** वग़ैरा के नमाज़ को वक़्त से मुक़द्दम करने (के क़ौल) से मुराद येह है कि वोह वक़्त के दाख़िल न होने को जानने के बा वुजूद

www.dawateislami.net

नमाज़ को वक़्त से मुक़द्दम कर के अदा करे और ऐसा करना जाइज़ नहीं येह वोह बात थी जिस का तक़ाज़ा अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के एक गुरौह का कलाम करता है और इस में कोई नज़ाअ़ नहीं और बिला शुबा येह अ़मल कबीरा गुनाह और दीन से हंसी मज़ाक़ करना है ख़्वाह उस ने बा'द में नमाज़ की क़ज़ा की हो या न की हो।

और "**अत्तहज़ीब**" में जो एक वजह बयान की गई है वोह ज़ईफ़ है कि एक ज़ईफ़ हिकायत है : "एक मरतबा नमाज़ को इतनी देर तक अदा न करना कि उस का वक़्त गुज़र जाए कबीरा गुनाह नहीं और इस अ़मल से गवाही उसी वक़्त मरदूद होगी जब कि वोह इसे आ़दत बना ले।"

सय्यिदुना ह़लीमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "नमाज़ तर्क करना कबीरा गुनाह है और अगर कोई इस की आ़दत बना ले तो येह ज़ियादा बुरा है और अगर किसी ने नमाज़ पढ़ी मगर इस के ख़ुशूअ़ का ह़क़ अदा न किया म-सलन इधर उधर मु-तवज्जेह रहा या अपनी उंगलियां चटख़ाता रहा या लोगों की बातें तवज्जोह से सुनीं या पथ्थर हटाए या दाढ़ी को बार बार छूता रहा तो (नमाज़ में) येह आ'माल सग़ीरा गुनाह हैं।"

सय्यिदुना अज़्रई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "इमाम ह़लीमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इलावा दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का कलाम आ'माल के मक्रूह होने का तक़ाज़ा करता है।" इसे उन के क़ौल की त़रफ़ फैरना ज़ियादा मुनासिब है, येह बात ख़ुशूअ़ के अस्बाब के ज़ियादा मुवाफ़िक़ है लिहाज़ा ख़ुशूअ़ के मुनाफ़ी हर बात का येही हुक्म है ताकि नमाज़ का कोई ह़िस्सा ह़राम न हो जब कि सह़ीह़ तरीन क़ौल येह है कि ख़ुशूअ़ के साथ नमाज़ अदा करना सुन्नत है लिहाज़ा इन में से कोई अ़मल ह़राम नहीं।

तम्बीह 2 : नमाज़ तर्क करना कुफ़्र है या नहीं ?

ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और इन के बा'द के अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का बे नमाज़ी के काफ़िर होने के बारे में इख़्तिलाफ़ है और गुज़श्ता कई अह़ादीसे मुबा-रका में बे नमाज़ी के कुफ़्र, शिर्क और मिल्लते इस्लामिया से ख़ारिज होने की तस्रीह़ की गई है म-सलन "बे नमाज़ी से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िम्मए करम उठ गया, उस के आ'माल बरबाद हो गए, उस का कोई दीन नहीं और उस का कोई ईमान नहीं वग़ैरा वग़ैरा।" बहुत से सह़ाबए किराम, ताबिई़न और इन के बा'द के अइम्मए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى) ने इन अह़ादीसे मुबा-रका के ज़ाहिरी मा'ना को इख़्तियार किया और फ़रमाया : "जो शख़्स जान बूझ कर नमाज़ को इतनी देर तक मुअख़्ख़र करे कि नमाज़ का पूरा वक़्त गुज़र जाए वोह काफ़िर है, उसे क़त्ल कर दिया जाए।"

बे नमाज़ी के कुफ़्र के क़ाइल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बे नमाज़ी के कुफ़्र और उस के क़त्ल के जाइज़ होने के क़ाइल हैं : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ, ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ।

बे नमाज़ी के कुफ़्र के क़ाइल अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی :

ग़ैरे सह़ाबा में जो अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی बे नमाज़ी के कुफ़्र और इस के क़त्ल के जाइज़ होने के क़ाइल हैं उन में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन राहविया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, सय्यिदुना इमाम नख़्ई़, सय्यिदुना ह़कम बिन उ़यैना, सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी, सय्यिदुना अबू दावूद तियालसी, सय्यिदुना अबू बक्र बिन शैबा, और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुहैर बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين वग़ैरा शामिल हैं ।[1]

इब्ने ह़ज़्म[2] से मन्क़ूल है, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और बा'ज़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मरवी है : "जिस ने जान बूझ कर एक फ़र्ज़ नमाज़ तर्क की यहां तक कि उस का वक़्त गुज़र गया वोह काफ़िर व मुरतद है ।" और हम उन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से किसी को इस बात का मुख़ालिफ़ नहीं पाते ।"

---

1 : अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक : "नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का मुन्किर काफ़िर और जो क़स्दन छोड़े अगर्चे एक ही वक़्त की वोह फ़ासिक़ है और जो नमाज़ न पढ़ता हो क़ैद किया जाए यहां तक कि नमाज़ पढ़ने लगे ।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 9)

2 : इब्ने ह़ज़्म के मु-तअ़ल्लिक़ ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मन्ज़ूर अह़मद फ़ैज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी किताब "तआ़रुफ़" में ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर हैतमी मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की किताब (كف الرعاع هامش الزواجر، ج١،ص١٤٥) के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं की "अइम्मा ने "इब्ने ह़ज़्म" की तज़्लील करते हुए फ़रमाया कि इब्ने ह़ज़्म की बहुत सी बे तुकी बातें हैं और उमूर क़बीह़ा हैं। जो इन की सख़्ती (त़बीअ़त) और ज़वाहिर पर जुमूद की वजह से पैदा हुईं इसी लिये मुह़क़्क़िक़ीन ने फ़रमाया : इब्ने ह़ज़्म (की बात) का कोई वज़्न नहीं और न उस के कलाम की त़रफ़ नज़र की जाएगी और न उस के ख़िलाफ़ पर (जो अहले सुन्नत से किया) कोई ए'तिबार व ए'तिमाद किया जाएगा ।" (तआ़रुफ़ "चन्द मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन का" स. 9)

मुजद्दिदे आ'ज़म आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इब्ने ह़ज़्म और इस के अ़क़ाइद के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं कि "वहाबिया का एक पुराना इमाम "इब्ने ह़ज़्म" ग़ैर मुक़ल्लिद ज़ाहिरिय्युल मज़्हब मुद्दइये अ़मल बिल ह़दीस मुंह भर कर बक गया कि ख़ुदा के बेटा हो सकता, मलल व नह़ल में कहता है اِنَّهُ تَعَالٰی قَادِرٌ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا اِذْ لَوْ لَمْ يَقْدِرْ لَكَانَ عَاجِزًا (या'नी, बेशक अल्लाह तआ़ला इस बात पर क़ादिर है कि औलाद रखे क्यूं कि अगर इस पर क़ादिर न हुवा तो आ़जिज़ होगा) مَعَاذَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह)" (फ़तावा र-ज़विय्या, रिसाला दामान बाग़ सुब्ह़ानुस्सुब्बूह़, जि. 15, स. 460)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दूसरे मक़ाम पर फ़रमाते हैं : "ह़ज़राते मुब्तदिईन के मुअ़ल्लिमे शफ़ीक़ इब्लीसे ख़बीस عَلَيْهِ اللَّعْن ने येह इज़्ज़ व क़ुदरत का नया शिगूफ़ा इन दहलवी बहादुर (इस्माईल दहलवी) से पहले इन के मुक़्तदा "इब्ने ह़ज़्म" फ़ासिदुल अ़ज़्म फ़ाक़िदुल जज़्म ज़ाहिरिय्युल मज़्हब रद्दिल मशरब को भी सिखाया था कि अपने रब का अदब व इज्लाल यक्सर पसे पुश्त डाल किताब अल मलल वन्नह़ल में बक गया कि "اِنَّهُ تَعَالٰی قَادِرٌ الخ......" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने लिये बेटा बनाने पर क़ादिर है कि क़ुदरत न मानो तो आ़जिज़ होगा)" تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ الظّٰلِمُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا या'नी ज़ालिम जो कहते हैं अल्लाह तआ़ला उस से कहीं बुलन्द है। (फ़तावा र-ज़विय्या, रिसाला सुब्ह़ानुस्सुब्बूह़, जि. 15, स. 365)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना मुहम्मद बिन नस्र मरूज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि येह बात सहीह सनद के साथ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी है कि "नमाज़ का तारिक काफ़िर है।" और शफ़ीए रोजे़ शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस ज़माने से अहले इल्म की येही राय रही है कि जो नमाज़ को बिग़ैर किसी उ़ज़्र के इतनी देर तक मुअख़्ख़र कर के अदा करे कि वक़्त गुज़र जाए, काफ़िर है।"

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई का मौक़िफ़ :

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और बा'ज़ दूसरे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अगर्चे बे नमाज़ी के अ़-दमे कुफ़्र के क़ाइल हैं जब कि वोह नमाज़ छोड़ने को ह़लाल न समझता हो मगर आप इस बात के भी क़ाइल हैं कि "एक नमाज़ के तर्क की वजह से भी उसे क़त्ल किया जा सकता है बशर्ते कि उसे नमाज़ का हुक्म दिया गया लेकिन उस ने इस को इतना मुअख़्ख़र कर दिया कि वक़्त ही गुज़र गया और उस ने नमाज़ न अदा की, फिर उसे दोबारा नमाज़ के लिये कहा गया और उस ने इन्कार कर दिया तो तलवार के साथ उस की गरदन मार दी जाएगी।"

(अह़नाफ़ के नज़्दीक "क़ैद किया जाएगा")

तम्बीह 3 :

﴾44﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपनी औलाद को नमाज़ का हुक्म दो जब वोह सात बरस के (या'नी जब समझदार) हो जाएं और नमाज़ न पढ़ने पर मारो जब कि वोह **10** साल को हों और उन के बिछोने अ़लाहि़दा कर दो।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ ،متی یؤمر الغلام بالصلاۃ،الحدیث:٤٩٥،ص١٢٥٩)

अ़ल्लामा ख़त्ताबी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि येह ह़दीसे पाक बे नमाज़ी की सख़्त उ़क़ूबत पर दलालत करती है जब कि वोह इसे कसरत से छोड़ता हो, सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के बा'ज़ अस्हाब इस ह़दीसे पाक से बे नमाज़ी के क़त्ल पर इस्तिद्लाल करते हुए फ़रमाते हैं : "जब ना बालिग़ नमाज़ न पढ़ने पर पिटाई का मुस्तहि़क़ है तो साबित हुवा कि बालिग़ होने के बा'द वोह ऐसी उ़क़ूबत का मुस्तहि़क़ है जो पिटाई से सख़्त तर हो और पिटाई के बा'द क़त्ल से ज़ियादा सख़्त कोई सज़ा नहीं।"

इस में भी वोही ए'तिराज़ है जो पिछले कलाम में था और बे नमाज़ी के क़त्ल की एक वजह येह भी बयान की गई है कि वोह तमाम अम्बिया, मलाएका और मुअमिनीन का मुजरिम है क्यूं कि नमाज़ में इस पर येह कलिमात कहना लाज़िम हैं : "اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ" या'नी सलामती हो हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर।"

www.dawateislami.net

《45》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बन्दा जब येह कलिमात (या'नी ''اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ'') कहता है तो येह ज़मीन व आस्मान के हर नेक बन्दे तक पहुंच जाते हैं।'' (صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة ،باب صفة الصلاة، الحديث:١٩٥٢،ج ٣،ص ٢٠٥،"بلغت "بدله" اصابت")

नमाज़ न पढ़ना ऐसा जुर्म है जिस की सज़ा क़त्ल ही होनी चाहिये मगर औला येही है कि बे नमाज़ी के क़त्ल पर इन साबिक़ा अहादीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल किया जाए कि बे नमाज़ी से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िम्मा उठ जाता है और उस का कोई अ़हद नहीं क्यूं कि येह बातें इस का ख़ून मुबाह़ होने में ज़ाहिर या सरीह़ हैं और जब उस का ख़ून बहाना लाज़िम हो तो उसे क़त्ल करना लाज़िम होगा, अलबत्ता ज़कात तर्क करने पर क़त्ल न किया जाएगा क्यूं कि ज़कात ज़बर दस्ती भी ली जा सकती है न रोज़ा तर्क करने पर क़त्ल किया जा सकता है क्यूं कि उसे क़ैद कर के और मुफ़्तिर अश्या रोक कर रोज़ा रखने पर मजबूर किया जा सकता है म-सलन खाना और पानी रोक कर उसे कमरे में बन्द कर दिया जाए, लिहाज़ा जब उसे यक़ीन हो जाएगा कि दिन के वक़्त खाने पीने की अश्या मुयस्सर नहीं हो सकतीं तो वोह रात में निय्यत कर के रोज़ा रख लेगा और इसी त़रह़ ह़ज तर्क करने पर भी क़त्ल न किया जाएगा क्यूं कि येह बा'द में अदा करने से भी अदा ही होगा क़ज़ा न होगा और उस के इन्तिक़ाल की सूरत में इस के तर्के से ह़ज की क़ज़ा की जा सकती है जब कि नमाज़ का मुआ-मला इन सब से मुख़्तलिफ़ है, लिहाज़ा इस के लिये क़त्ल से मुनासिब कोई सज़ा नहीं और जब ज़कात की वुसूली के लिये जंग जाइज़ है तो लोगों को नमाज़ की अदाएगी पर आमादा करने के लिये बे नमाज़ी को क़त्ल करना ब द-र-जए औला जाइज़ है ताकि वोह क़त्ल के ख़ौफ़ से नमाज़ पढ़ने लगे।''[1]

---

1 : अइम्मए सलासा इमाम शाफ़ेई, इमाम मालिक, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ के नज़्दीक बादशाहे इस्लाम को बे नमाज़ी के क़त्ल करने का हुक्म है जब कि अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं : ''उसे क़ैद किया जाए यहां तक कि तौबा करे और नमाज़ पढ़ने लगे।'' (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 9)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 78 : बिग़ैर मुंडेर की छत पर सोना

﴾1﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने किसी ऐसे मकान की छत पर रात गुज़ारी जिस की मुंडेर (या'नी चार दीवारी) न थी तो उस से ज़िम्मादारी उठा ली गई ।'' (سنن ابی داؤد ، كتاب الادب ، باب فی النوم علی سطح ......الخ ، الحديث:٥٠٤١،ص١٥٩٢)

﴾2﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को बिग़ैर मुंडेर की छत पर सोने से मन्अ फ़रमाया है । (جامع الترمذی ،ابواب الادب،الحديث:٢٨٥٤،ص١٩٣٧)

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने हम पर शबख़ून मारा वोह हम में से नहीं और जो बिग़ैर मुंडेर की छत पर सोया और गिर कर मर गया उस का ख़ून राएगां गया ।'' (المعجم الكبير،الحديث:٢١٧،ج١٣،ص ٦١)

﴾4﴿...... हज़रते अबू इमरान जौनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम फ़ारस में थे, वहां एक शख़्स को हमारा अमीर मुक़र्रर किया गया था उस का नाम ज़ुहैर बिन अब्दुल्लाह था, एक मरतबा उस ने किसी मकान पर या बिग़ैर मुंडेर की छत पर किसी शख़्स को देखा तो मुझ से पूछा : ''क्या तुम ने इस बारे में कोई बात सुनी है ?'' मैं ने कहा ''नहीं ।'' तो उस ने कहा कि मुझे एक शख़्स ने ख़बर दी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : ''जिस ने किसी मकान या ऐसी छत पर रात गुज़ारी जिस की मुंडेर न हो जो उस के क़दमों को लौटा सके तो उस से ज़िम्मादारी उठा ली गई और जो समुन्दर में तुग़यानी और तूफ़ान आने के बा वुजूद सफ़र करे उस से भी ज़िम्मादारी उठा ली गई ।'' (المسند للامام احمد بن حنبل ، الحديث ٢٠٧٧٥ ، ج ٧ ، ص ٣٨٩)

﴾5﴿...... हज़रते अबू इमरान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि मैं हज़रते **ज़ुहैर शव्वा** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मइय्यत में एक ऐसे शख़्स के क़रीब से गुज़रा जो बिग़ैर मुंडेर वाली छत पर सो रहा था तो उन्हों ने उस के हाथ पर ठोकर मारी और कहा : ''उठो ।'' फिर हज़रते **ज़ुहैर** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो बिग़ैर मुंडेर वाली छत पर सोया और गिर कर मर गया उस से ज़िम्मादारी उठा ली गई ।''

(الترغيب والترهيب ،كتاب الادب ، باب الترهيب ان ينام ......الخ الحديث ٤٧١٧، ج٣ ، ص ٥٠٩)

तम्बीह :

बहुत से मु-तअख़्ख़िरीन उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इन अहादीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल कर के बिग़ैर मुंडेर वाली छत पर सोने को कबीरा गुनाहों में शुमार किया है मगर येह इस्तिद्लाल दुरुस्त नहीं क्यूं कि यहां ज़िम्मादारी उठा लेने से वोह मा'ना मुराद नहीं जिसे हम गुज़श्ता सफ़हात में बयान कर चुके हैं ।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 79 : वाजिबाते नमाज़ को तर्क करना

नमाज़ के वाजिबात में से किसी **मज्मअ़ अ़लैह** या'नी जिस के वाजिब होने पर इत्तिफ़ाक़ हो या **मुख़्तलिफ़ फ़ीह** या'नी जिस के वाजिब होने में इख़्तिलाफ़ हो, को छोड़ देना म-सलन रुकूअ़ वग़ैरा इत्मीनान से अदा न करना।

﴾1﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी की नमाज़ उस वक़्त तक कामिल नहीं होती जब तक वोह रुकूअ़ और सुजूद में अपनी पीठ सीधी न करे।" (جامع الترمذی ، ابواب الصلاۃ ، باب ماجاء فی من لا یقیم صلبہ ......الخ ، الحدیث ٢٦٥ ، ص ١٦٦٤)

﴾2﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कव्वे की त़रह़ ठोंगें मारने, दरिन्दों की त़रह़ बैठने, ऊंट के जगह मख़्सूस कर लेने की त़रह़ किसी के मस्जिद में अपने लिये कोई जगह ख़ास कर लेने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلاہ ، باب صلاۃ من الایقیم ......الخ ، الحدیث ٨٦٢ ، ص ١٢٨٧)

नमाज़ का चोर :

﴾3﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सब से बदतर चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करता है।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपनी नमाज़ में किस त़रह़ चोरी कर सकता है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह इस के रुकूअ़ व सुजूद पूरे नहीं करता।" या इर्शाद फ़रमाया : "वोह रुकूअ़ व सुजूद में अपनी पीठ सीधी नहीं करता।"[1]

(المسند للامام احمد بن حنبل،الحدیث:٢٢٧٠٥،ج٨،ص٣٨٦)

﴾4﴿...... दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपनी नमाज़ में चोरी करने वाला सब से बड़ा चोर है।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपनी नमाज़ में कैसे चोरी कर सकता है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह नमाज़ के रुकूअ़ व सुजूद पूरे नहीं करता और लोगों में सब से बड़ा बख़ील वोह है जो सलाम करने में बुख़्ल करे।" (المعجم الصغیر للطبرانی،الحدیث:٣٣٦،ج١،ص١٢١)

---

1. शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ किताब "**नमाज़ के अह़काम**" में स. 179 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस ह़दीस के तह़त फ़रमाते हैं : "मा'लूम हुवा कि माल के चोर से **नमाज़ का चोर** बदतर है क्यूं कि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर **नमाज़ का चोर** सज़ा पूरी पाएगा उस के लिये नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं। माल का चोर बन्दे का ह़क़ मारता है जब कि **नमाज़ का चोर** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़, येह ह़ालत उन की है जो नमाज़ को नाक़िस पढ़ते हैं इस से वोह लोग दर्से इब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं।" (ब ह़वाला मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2, स. 78)

www.dawateislami.net

《5》...... (नमाज़ अदा करते हुए) रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने पीछे एक शख़्स को गोशए चश्म से देखा जो रुकूअ़ और सज्दे में अपनी पुश्त को सीधा नहीं कर रहा था तो जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी नमाज़ मुकम्मल फ़रमा ली तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ गुरौहे मुस्लिमीन ! जो नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद के दौरान अपनी पुश्त को सीधा नहीं करता उस की कोई नमाज़ नहीं ।" (سنن ابن ماجه ،ابواب اقامة الصلوات ......الخ ،باب الرکوع فی الصلاة،الحديث:٨٧١،ص٢٥٢٨)

नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद कामिल तौर पर अदा न करने पर वईदें :

《6》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को देखा कि रुकूअ़ पूरा अदा नहीं करता और सज्दों में ठोंगें मार रहा है तो इर्शाद फ़रमाया : "अगर इस शख़्स का इसी ह़ालत में इन्तिक़ाल हो जाए तो येह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्लत के इ़लावा पर मरेगा ।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नमाज़ में रुकूअ़ पूरा न करने और सज्दों में ठोंगे मारने वाले की मिसाल उस भूके शख़्स की सी है जो एक या दो खजूरें खाने पर इक्तिफ़ा करता है ह़ालां कि वोह उस के किसी काम नहीं आतीं ।" (المعجم الكبير ، الحديث ٣٨٤٠ ، ج٤ ، ص ١١٥)

《7》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी साठ (60) साल तक नमाज़ पढ़ता रहता है मगर उस की कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती, शायद वोह रुकूअ़ तो पूरे करता हो मगर सज्दे पूरे न करता हो या फिर सज्दे पूरे करता हो मगर रुकूअ़ पूरे न करता हो ।" (الترغيب والترهيب ،كتاب الصلوة ، باب الترهيب من عدم اتمام ......الخ ،الحديث٧٥٧، ج١ ، ص ٢٤٠)

《8》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने (एक सुतून की त़रफ़ इशारा कर के) इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम में से किसी के पास येह सुतून होता तो वोह उसे तोड़ना हरगिज़ पसन्द न करता फिर वोह जान बूझ कर अपनी नमाज़ कैसे तोड़ देता है ? ह़ालां कि वोह तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये होती है, नमाज़ पूरी किया करो क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कामिल नमाज़ ही क़बूल फ़रमाता है ।" (المعجم الاوسط، الحديث:٦٢٩٦،ج٤ ، ص٣٧٦،'يعمد"بدله"يعهد")

《9》...... ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख़्स को देखा कि वोह रुकूअ़ व सुजूद पूरे अदा नहीं कर रहा तो इर्शाद फ़रमाया : "अगर येह मर गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्लत के इ़लावा मरेगा ।"

(مجمع الزوائد ،كتاب الصلاة ، باب فيمن لايتم صلاته ......الخ ،، الحديث ٢٧٢٩ ، ج ٢ ، ص ٣٠٣)

www.dawateislami.net

《10》...... हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को देखा कि रुकूअ़ व सुजुद पूरे नहीं कर रहा तो इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी और अगर तुम येह नमाज़ इसी त़रह़ पढ़ते हुए मर गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मिल्लत के इलावा मरोगे ।''

(صحیح البخاری ،کتاب الاذان ، باب اذا لم یتم الرکوع ، الحدیث ۷۹۱، ص ۶۲)

《11》...... अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : ''तुम कितने अ़र्से से इस त़रह़ नमाज़ पढ़ रहे हो ?'' उस ने कहा : ''**चालीस साल** से ।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने **चालीस साल** से कोई नमाज़ नहीं पढ़ी और अगर तुम इसी त़रह़ नमाज़ पढ़ते हुए मर गए तो मिल्लते मुह़म्मदी علٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़िलाफ़ मरोगे ।''

《12》...... मह़बूबे रब्बुल आ़–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता जो रुकूअ़ और सुजूद के दरमियान अपनी कमर को सीधा नहीं करता (फिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़सार फ़रमाया) और शराबी, ज़ानी और चोर के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?'' (येह उस वक़्त था कि अभी ह़ुदूद के अह़काम नाज़िल नहीं हुए थे) तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं ।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह बद कारियां हैं और इन पर सज़ा है और सब से बदतर चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करता है ।'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''आदमी नमाज़ में चोरी कैसे करता है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह इस के रुकूअ़ और सुजूद पूरे नहीं करता ।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث طلق بن علی،الحدیث:۱۶۲۸۳،ج۵،ص۴۹۲)

(مؤطاامام مالک،کتاب قصرالصلاۃ فی السفر،باب العمل فی جامع الصلاۃ،الحدیث:۴۱۰،ج۱،ص۱۶۴)

《13》...... रह़मते कौनैन, हम गरीबों के दिल के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो कामिल त़रीक़े से वुज़ू करता है फिर नमाज़ के लिये खड़ा होता है और उस के रुकूअ़ व सुजूद और क़िराअत अच्छी त़रह़ अदा करता है तो नमाज़ कहती है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए जैसा कि तूने मेरी ह़िफ़ाज़त की ।'' फिर वोह नमाज़ आस्मान की त़रफ़ उठा दी जाती है और वोह रोशन और मुनव्वर होती है और उस के लिये आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ताकि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उस बन्दे के लिये सिफ़ारिश करे और जब बन्दा नमाज़ के रुकूअ़ व सुजूद और क़िराअत पूरी नहीं करता तो नमाज़ कहती है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बरबाद करे जिस त़रह़ तूने मुझे ज़ाएअ़ किया ।'' फिर वोह आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हो जाती है और उस पर तारीकी छाई होती है, उस पर आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर उसे बोसीदा कपड़े की त़रह़ लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दिया जाता है ।''

(شعب الایمان ،باب فی الطھارت، باب فضل الوضو،الحدیث:۲۷۲۹،ج۳،ص ۱۰،مختصر)

www.dawateislami.net

《14》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने वक़्त के इलावा नमाज़ पढ़ी और इस के लिये कामिल वुज़ू न किया और इस को खुशूओ खुज़ूअ़ के साथ अदा न किया और इस के रुकूअ़ व सुजूद पूरे न किये तो वोह काली सियाह हो कर निकलती है और कहती है : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुझे ज़ाएअ़ करे जिस त़रह़ तूने मुझे ज़ाएअ़ किया।" यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जहां चाहता है वोह उस जगह पहुंच जाती है फिर उसे बोसीदा कपड़े की त़रह़ लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मार दिया जाता है।" (المعجم الاوسط،الحديث:٣٠٩٥،ج٢،ص٢٢٧)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू और नमाज़ का त़रीक़ा सिखाया :

《15》...... मरवी है कि एक शख़्स ने नमाज़ अदा की, फिर मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया और इर्शाद फ़रमाया : "वापस जाओ और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि तुम ने नमाज़ अदा नहीं की।" वोह शख़्स लौट आया और नमाज़ दोबारा पढ़ी और ह़ाज़िरे बारगाह हो कर सलाम अ़र्ज़ किया आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब अ़त़ा फ़रमाया और फिर दोबारा वोही हुक्म दिया वोह शख़्स लौट आया फिर नमाज़ पढ़ी और ह़ाज़िरे बारगाह हुवा तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर नमाज़ लौटाने का हुक्म दिया तो उस ने अ़र्ज़ की : "मुझे मा'लूम नहीं कि मुझ में क्या ख़ामी है।" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से किसी की नमाज़ उस वक़्त तक कामिल नहीं होती जब तक वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ वुज़ू न कर ले या'नी अपना चेहरा धोए, कोहनियों समेत दोनों हाथ धोए अपने सर का मस्ह़ करे और टख़्नों समेत दोनों पाउं धोए, फिर तक्बीर कहे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ह़म्द और बुज़ुर्गी बयान करे और जिस क़दर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे तौफ़ीक़ दे उतनी क़िराअत करे, फिर तक्बीर कहे और रुकूअ़ करे तो अपने हाथ घुटनों पर रखे यहां तक कि उस के तमाम जोड़ ढीले हो कर पुर सुकून हो जाएं, फिर سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ कह कर सीधा खड़ा हो जाए यहां तक कि हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाए और अपनी पीठ सीधी करे, फिर तक्बीर कह कर सज्दा करे और ज़मीन पर अपनी पेशानी को ख़ूब जमाए यहां तक कि उस के जोड़ आराम पा कर ढीले हो जाएं, फिर तक्बीर कह कर सज्दे से सर उठाए और सीधा हो कर बैठ जाए और अपनी पीठ सीधी करे।" फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ का पूरा त़रीक़ा बयान करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "जब तक तुम में से कोई इस त़रीक़े के मुत़ाबिक़ नमाज़ अदा न करेगा उस की नमाज़ कामिल न होगी।"

(جامع الترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ما جاء فی وصف الصلاۃ،الحدیث:٣٠٢،٣٠٣،ص١٦٦٨،مختصراً)

《16》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "नमाज़ **तीन** तिहाइयों का नाम है, एक तिहाई त़हारत, एक तिहाई रुकूअ़, और एक तिहाई सुजूद है, जिस ने इसे पूरे हुक़ूक़ के साथ अदा किया उस की नमाज़ और तमाम आ'माल मक़्बूल हो गए और जिस की नमाज़ मरदूद हो गई उस के तमाम आ'माल मरदूद हो गए।" (مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب علامۃ قبول الصلاۃ، الحدیث ٢٨٩٠، ج ٢، ص ٣٤٥)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना वाज़ेह है अगर्चे मैं ने किसी को इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करते हुए नहीं पाया मगर मैं ने इन अहादीसे मुबा–रका में वारिद सख़्त वईद की बिना पर इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया है क्यूं कि **नमाज़ में जिस चीज़ के वाजिब होने पर इज्माअ़ हो उस का तर्क करना तर्के नमाज़ को मुस्तल्ज़िम है और येह कबीरा गुनाह है, इसी त़रह़ जिस के वाजिब होने में इख़्तिलाफ़ हो उस का तर्क करना उन अफ़राद के नज़्दीक कबीरा गुनाह है जो इसे वाजिब समझते हैं क्यूं कि उन के नज़्दीक उस वाजिब का तर्क तर्के नमाज़ को लाज़िम है** नीज़ तर्के नमाज़ की गुज़श्ता वईदें भी इस गुनाह को शामिल हैं।

www.dawateislami.net

باب شروط الصلوٰة

नमाज़ की शराइत़ का बयान

कबीरा नम्बर **80 :** **बाल जोड़ना और इस की उजरत लेना**

कबीरा नम्बर **81 :** **गूदना[1] और इस की उजरत लेना**

कबीरा नम्बर **82 :** **दांत कुशादा करना और इस की उजरत लेना**

कबीरा नम्बर **83 :** **चेहरे के बाल नोचना और इस की उजरत लेना**

《**1**》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "बाल जोड़ने, जुड़वाने वाली, गूदने और गुदवाने वाली पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।"

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ الحشر، باب وماآتاکم الرسول فخذوہ، الحدیث:۴۸۸۶، ص۴۱۸)

《**2**》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "गूदने वालियों, गुदवाने वालियों, चेहरे के बाल नोचने वालियों, ख़ूब सूरती के लिये दांतों के दरमियान फ़ासिला करने वालियों और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तख़्लीक़ को बदलने वालियों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।" एक औरत ने उन से इस बारे में दरयाफ़्त किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं उस पर ला'नत क्यूं न करूं जिस पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला'नत फ़रमाई है और इस का हुक्म क़ुरआने पाक में यूं मज़्कूर है :

وَمَآ اٰتٰکُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْہُ ۗ وَمَا نَھٰکُمْ عَنْہُ فَانْتَھُوْا ۚ (پ۲۸، الحشر:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़ता फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो। (المرجع السابق، الحدیث ۴۸۸۶)

《**3**》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "बिग़ैर किसी मरज़ के बाल जोड़ने, जुड़वाने, चेहरे के बाल नोचने, नुचवाने, गूदने और गुदवाने वाली पर ला'नत की गई है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب فی صلۃ الشعر، الحدیث ۴۱۷۰، ص ۱۵۲۶)

---

1 : सूई वग़ैरा से जिस्म में छेद लगा कर उस में रंग या सुरमा भर देने को गूदना कहते हैं।

www.dawateislami.net

﴾4﴿...... अन्सार की एक औ़रत ने अपनी बेटी की शादी की, फिर उस लड़की के बाल झड़ गए तो उस अन्सारिया औ़रत ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हा़ज़िर हो कर इस बात का तज़्किरा किया और अ़र्ज़ की : "इस के शोहर ने मुझे कहा है कि मैं इस के बाल जोड़ दूं।" तो दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं ! क्यूं कि बाल जुड़वाने वालियों पर ला'नत की गई है।"

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب لاتطیع المراۃ......الخ، الحدیث ۵۲۰۵، ص ۴۵۰)

﴾5﴿...... ह़ज के साल ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मिम्बर पर खड़े हुए और बालों का एक गुच्छा पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मदीने वालो ! तुम्हारे उ़-लमाए किराम कहां हैं।" मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसा करने से मन्अ़ करते और इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "बनी इस्राईल उस वक़्त हलाकत में मुब्तला हुए जब उन की औ़रतों ने बाल गुदवाने शुरूअ़ किये।"

(صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ۵۴، الحدیث ۳۴۶۸، ص ۲۸۳)

﴾6﴿...... और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक रिवायत में यूं है कि "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बालों का एक गुच्छा निकाल कर फ़रमाया : "मैं तो समझता था कि ऐसा सिर्फ़ यहूद ही करते होंगे, बेशक शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक जब इस की ख़बर पहुंची थी तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे बुरा अ़मल क़रार दिया था।"

(سنن النسائی، کتاب الزینۃ، باب الوصل فی الشعر، الحدیث ۵۲۴۸، ص ۲۴۲۴)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने एक बुरा लबादा ओढ़ लिया है, ह़ालां कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बाति़ल काम से मन्अ़ फ़रमाया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मज़ीद फ़रमाते हैं कि एक शख़्स लाठी के सहारे चलता हुवा आया, उस के सर पर बालों का गुच्छा था तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "सुन लो ! येह बाति़ल है।" ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "बाति़ल काम से मुराद औ़रतों का बालों में कसरत से पैवन्द लगाना है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، حدیث معاویۃ بن ابی سفیان، الحدیث ۱۶۸۴۳، ج۶، ص ۱۶)

﴾8﴿...... त़-बरानी शरीफ़ की एक रिवायत इब्ने लुहैआ़ से मरवी है कि सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बालों का एक गुच्छा ले कर तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : "बनी इस्राईल की औ़रतें इसे अपने सरों में लगाती थीं इस लिये उन औ़रतों पर ला'नत की गई और मस्जिदें उन पर ह़राम कर दी गईं।"

(المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۷۱۸، ج۱۰، ص۲۹۷)

www.dawateislami.net

मज़्कूरा अहादीसे मुबा-रका के बा'ज़ अल्फ़ाज़ की वज़ाहत :

वासिला से मुराद वोह औरत है जो बालों को दूसरे बालों से जोड़ती हैं। **वाशिमा** से मुराद वोह औरत है जो गूदती है और येह एक मा'रूफ़ काम है। **नामिसा** से मुराद अब्रू के बाल नोच कर बारीक करने वाली औरत है। जब कि येह मश्हूर है कि **नामिसा** चेहरे के बाल नोचने वाली को कहते हैं और **मु-तफ़ल्लिजा** से मुराद ख़ूब सूरती के लिये रैती वग़ैरा से दांतों को कुशादा करने वाली है जब कि **मुस्तव-सिला**, **मु-तनम्मिसा** और **मुस्तव-शिमा** से मुराद वोह औरतें हैं जिन के साथ येह अफ़आल किये जाएं।

तम्बीह :

इन तमाम गुनाहों को कबीरा गुनाह इस लिये शुमार किया गया है कि शैख़ुल इस्लाम सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पहले दो को कबीरा गुनाह क़रार दिया है जब कि दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने सब को कबीरा गुनाह क़रार दिया है और येह बात बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि ला'नत कबीरा गुनाहों की अ़लामात में से है। मगर हमारे बहुत से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने इसे मुत़लक़ न रखा बल्कि फ़रमाया : "शोहर और आक़ा की इजाज़त के बिग़ैर गुदवाना और दांत कुशादा करने के इलावा दीगर अफ़आल ह़राम हैं।" मगर येह बात इश्काल पैदा करती है क्यूं कि आप अन्सारी ख़ातून का क़िस्सा जान चुके हैं कि शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बाल जोड़ने से मन्अ़ फ़रमा दिया था ह़ालां कि उस ने अ़र्ज़ की थी कि उस के शोहर ने बाल जोड़ने का हुक्म दिया है।

बयान शुदा **नम्स** की दोनों सूरतों को मक्रूह कहना भी अ़जीब है ह़ालां कि इस के बारे में ला'नत वारिद हुई है नीज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने मुत़्लक़न **नम्स** के इलावा बाक़ी सूरतों की हुरमत का क़ौल किया है या शोहर की इजाज़त के बिग़ैर ऐसा करना उन के नज़्दीक इख़्तिलाफ़ी मस्अला है, बहर ह़ाल जब इन सब पर एक ही ह़दीसे पाक में ला'नत वाक़ेअ़ हुई तो अब कौन सा फ़र्क़ बाक़ी रह जाता है? और ह़ज़राते उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने इस मस्अले के मक़ाम पर इस के जवाब की त़रफ़ इशारा किया है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 84: सुतरे के बिग़ैर नमाज़ी के आगे से गुज़रना

《1》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अपने गुनाह को जानता होता तो उस के लिये चालीस (साल या दिन) तक खड़ा रहना नमाज़ी के आगे से गुज़रने से बेहतर होता।"

(صحیح البخاری ،کتاب الصلاۃ ، باب اثم المار بین یدی المصلی ، الحدیث ۵۱۰ ، ص ۴۲)

《2》...... और एक रिवायत में है : "तो वोह 40 साल तक खड़ा रहता कि येह उस के लिये नमाज़ी के आगे से गुज़रने से बेहतर होता।" (مجمع الزوائد،کتاب الصلوۃ ، باب فیمن یمر بین یدی المصلی، الحدیث:۲۳۰۲،ج۲،ص۲۰۲)

《3》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से किसी का 100 साल तक खड़े रहना अपने नमाज़ पढ़ते हुए भाई के आगे से गुज़रने से बेहतर है।"

(جامع الترمذی ،ابواب الصلوۃ ، باب ماجاء فی کراھیۃ المرور...... الخ ، الحدیث ۳۳۶ ، ص ۱۶۷۳)

《4》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तुम में से कोई जान ले कि रब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने वाले अपने मुसल्मान भाई के सामने से गुज़रने में क्या (सज़ा) है तो उसे उस जगह 100 साल तक खड़े रहना उस के सामने दो क़दम चलने से ज़ियादा पसन्द होता।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث ۸۸۴۶ ، ج۳ ، ص ۳۰۴)

《5》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसी चीज़ की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ रहा हो जो उसे लोगों से छुपाती है फिर कोई उस के सामने से गुज़रना चाहे तो वोह उसे अपने सामने से हटा दे अगर गुज़रने वाला न माने तो उस से झगड़ा करे क्यूं कि वोह शैत़ान है।"

(صحیح البخاری ،کتاب الصلوۃ،باب یرد المصلی من مر بین یدیہ ، الحدیث ۵۰۹ ، ص ۴۲)

《6》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नमाज़ी को चाहिये कि किसी को अपने सामने से न गुज़रने दे अगर वोह न माने तो उस से झगड़ा करे क्यूं कि वोह अपने क़रीन या'नी शैत़ान की इत़ाअ़त कर रहा है।"

(صحیح مسلم ،کتاب الصلوۃ ، باب منع المار بین یدی المصلی ، الحدیث:۱۱۳۰، ص ۷۵۷)

《7》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी का राख में पनाह चाहना जान बूझ कर नमाज़ी के सामने से गुज़रने से बेहतर है।"

(التمھیدلابن عبدالبر،ابو النضر مولی عمر بن عبیداللہ ، تحت الحدیث۵۹۶ /۱،ج۸ ، ص ۴۷۸)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया है, शायद उन की नज़र हमारी बयान कर्दा अहादीसे मुबा-रका पर थी क्यूं कि इन में सख़्त वईदें ज़िक्र की गई हैं, इन अहादीसे मुबा-रका से येह बात ज़ाहिर होती है कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने की हुरमत उस वक़्त साबित होगी जब वोह सुतरे के सामने नमाज़ पढ़ रहा होगा (या'नी नमाज़ी और सुतरे के दरमियान से गुज़रे) और हमारे नज़्दीक सुतरा दीवार, सुतून, ज़मीन में गड़ा हुवा अ़सा या जम्अ़ शुदा सामान है, अगर नमाज़ी इस से आ़जिज़ हो तो उसे फैला दे और अगर इस से भी आ़जिज़ हो तो अपने दाएं बाएं लम्बाई में एक ख़त़ या'नी लकीर खींच दे इस सूरत में नमाज़ी का उस ख़त़ के क़रीब होना शर्त़ है, या'नी उस के एड़ियों और ख़त़ के दरमियान तीन हाथ से ज़ियादा फ़ासिला न हो और इन तीन में से पहले की लम्बाई दो तिहाई हाथ या इस से ज़ियादा हो, नीज़ वोह रास्ते में भी खड़ा न हो जैसे मत़ाफ़ वग़ैरा में किसी के त़वाफ़ करते वक़्त नमाज़ न पढ़े[1] और उस के सामने अगली सफ़ में कुशा-दगी न हो अगर्चे वोह इस से दूर ही क्यूं न हो, अगर हमारी बयान कर्दा शराइत़ में से एक भी शर्त़ न पाई गई तो नमाज़ी के आगे से गुज़रना ह़राम न होगा बल्कि मक्रूह होगा, और एक क़ौल येह भी है कि नमाज़ी के सज्दा करने की जगह से गुज़रना ह़राम है और हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त इसी की क़ाइल है।''[2]

---

1. लेकिन अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के नज़्दीक ''मस्जिदे ह़राम शरीफ़ में नमाज़ पढ़ता हो तो उस के आगे त़वाफ़ करते हुए लोग गुज़र सकते हैं।'' (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 81)

2. अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के नज़्दीक ''नमाज़ी के आगे सुतरा ब क़दर एक हाथ ऊंचा और उंगली बराबर मोटा हो और ज़ियादा से ज़ियादा तीन हाथ ऊंचा हो तो उस के बा'द से गुज़रने में कोई ह़रज नहीं।'' (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 81)

www.dawateislami.net

باب صلاة الجماعة

बा जमाअत नमाज़ पढ़ने का बयान

कबीरा नम्बर 85 : शराइत पाए जाने के बा वुजूद शह्र या गाउं के तमाम लोगों का फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअत तर्क करने पर मुत्तफ़िक़ हो जाना

《1》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक मैं ने इरादा किया कि नमाज़ क़ाइम करने का हुक्म दूं और फिर किसी को लोगों की इमामत कराने का हुक्म दूं और ख़ुद अपने हमराह कुछ लोगों को जिन के पास लकड़ियों के गठ्ठे हों उन की तरफ़ ले चलूं जो जमाअत में हाज़िर नहीं होते और उन पर उन के घर जला दूं।"

(صحيح مسلم، كتاب المساجد، باب فضل صلاة الجماعة و بيان التشديد...... الخ، الحديث:١٤٨٢، ص٧٧٩)

《2》...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस गाउं या शह्र में **तीन** शख़्स हों और उन में नमाज़ क़ाइम न की जाती हो तो उन पर शैतान ग़ालिब आ जाता है, लिहाज़ा जमाअत को लाज़िम पकड़ो क्यूं कि भेड़िया उसी बकरी का शिकार करता है जो रेवड़ में से पीछे रह जाती है।" (سنن النسائی، كتاب الامامة، باب التشديد فی ترك الجماعة، الحديث ٨٤٨، ص ٢١٤١)

《3》...... जब कि रज़ीन की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "शैतान इन्सान के लिये भेड़िया है, जब वोह उसे अकेला पाता है तो शिकार कर लेता है।"

(الترغيب و الترهيب، كتاب الصلاة، باب الترهيب من ترك......الخ، الحديث:٦٢٢، ج١، ص٢٠٣)

《4》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **तीन** शख़्सों पर ला'नत फ़रमाई है : (1) जो क़ौम का इमाम बने और लोग उसे ना पसन्द करते हों (2) वोह औरत जो इस हाल में रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस से नाराज़ हो और (3) वोह शख़्स जो حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ، حَيَّ عَلَى الْفَلَاح सुने मगर इस का जवाब न दे (या'नी नमाज़ पढ़ने न आए।)।" (جامع الترمذی، ابواب الصلوة، باب ماجاء فيمن ام قوما...... الخ، الحديث:٣٥٨، ص١٦٧٦)

《5》...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : "जो कल क़ियामत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुसल्मान हो कर मिलना चाहता है तो पांचों नमाज़ों की पाबन्दी करे जब इन की अज़ान कही जाए क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे नबी हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये सु-नने हुदा मशरूअ़ फ़रमाई (या'नी हिदायत के तरीक़े मशरूअ़ फ़रमाए हैं) और येह नमाज़ें

www.dawateislami.net

सु-नने हुदा से हैं और अगर तुम ने अपने घरों में नमाज़ पढ़ ली जैसे येह जमाअ़त से पीछे रह जाने वाला शख़्स पढ़ लेता है तो तुम ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को तर्क कर दिया और अगर तुम ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को छोड़ दिया तो तुम गुमराह हो जाओगे जो शख़्स अच्छी त़रह पाकीज़गी ह़ासिल करे फिर किसी मस्जिद का इरादा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे हर क़दम चलने पर एक नेकी अ़त़ा फ़रमाएगा, उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और उस का एक गुनाह मिटाएगा, (ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं) कि जमाअ़त से सिर्फ़ वोही मुनाफ़िक़ पीछे रहता जिस का निफ़ाक़ मा'लूम होता और एक शख़्स को दो अफ़राद सहारा दे कर लाते और सफ़ में ला कर खड़ा कर देते।" (صحیح مسلم ،کتاب المساجد ،باب صلوۃ الجماعۃ من سنن الھدی ، الحدیث:۱٤۸۸،ص۷۷۹)

﴾6﴿...... एक और रिवायत में है : "हम ने अपने को इस ह़ालत में देखा कि नमाज़ (बा जमाअ़त) से सिर्फ़ वोही मुनाफ़िक़ पीछे रहता जिस के निफ़ाक़ का इ़ल्म होता या मरीज़, अगर वोह मरीज़ होता तो दो शख़्सों के सहारे चल कर नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो जाता।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया कि रह़मते कौनैन, हम गरीबों के दिल के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें सु-नने हुदा ता'लीम दी और वोह मस्जिद जिस में अज़ान कही जाती है उस में नमाज़ पढ़ना भी सु-नने हुदा से है।" (المرجع السابق)

﴾7﴿...... एक रिवायत में है : "अगर तुम ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को छोड़ दिया तो गुमराह हो जाओगे।" (صحیح مسلم ،کتاب المساجد ،باب صلوۃ الجماعۃ من سنن الھدی ، الحدیث:۱٤۸۸،ص۷۷۹)

﴾8﴿...... एक और रिवायत में है : "अगर तुम ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को छोड़ दिया तो काफ़िर हो जाओगे।" (سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ ، باب تشدید فی ترک الجماعۃ الحدیث:۵۵۰،ص۱۲٦٤)

﴾9﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "पूरा जफ़ाकारी, कुफ़्र और निफ़ाक़ येह है कि कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुनादी को नमाज़ की निदा देते हुए सुने तो उसे जवाब न दे।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث معاذبن انس الجھنی، الحدیث ۱۵٦۲۷ ، ج۵،ص ۳۱۱)

﴾10﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन की बद बख़्ती और रुस्वाई के लिये इतना ही काफ़ी है कि वोह मुअज़्ज़िन को नमाज़ के लिये इक़ामत कहते हुए सुने फिर भी उसे जवाब न दे (या'नी नमाज़ में ह़ाज़िर न हो)।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۳۹٦ ، ج۲۰ ، ص ۱۸۲)

﴾11﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक मैं ने इरादा किया है कि अपने जवानों को लकड़ियां इकट्ठी करने का हुक्म दूं फिर बिग़ैर किसी उ़ज़्र के अपने घरों में नमाज़ पढ़ने वाली क़ौम के पास आऊं और उन के घरों को उन पर जला दूं।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ ،باب تشدید فی ترک الجماعۃ الحدیث:۵٤۸،ص۱۲٦٤)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना यज़ीद बिन असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया : "क्या इस से जुमुआ की नमाज़ मुराद है या कोई दूसरी ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हुए न सुना हो तो मेरे कान बहरे हो जाएं, उन्हों ने न तो जुमुआ का ज़िक्र फ़रमाया और न ही किसी दूसरी नमाज़ का ।" (سنن ابی داؤد،کتاب الصلاۃ ،باب تشدید فی ترک الجماعۃ الحدیث:۵۴۸،ص۱۲۶٤)

《12》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए और लोगों को कम ता'दाद में पाया तो इर्शाद फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि किसी को लोगों का इमाम बनाऊं फिर जाऊं और नमाज़ से पीछे रह जाने वाले जिस शख़्स पर भी कुदरत पाऊं उस पर उस का घर जला दूं ।" (नाबीना होने की वजह से) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "मेरे और मस्जिद के दरमियान दरख़्त और बाग़ात हैं और मैं हर वक़्त किसी रहनुमा पर कुदरत भी नहीं पाता क्या मुझे इजाज़त है कि मैं अपने घर पर नमाज़ पढ़ लिया करूं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम इक़ामत की आवाज़ सुनते हो ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर नमाज़ के लिये आया करो ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث عمرو بن اُم مکتوم، الحدیث:۱۵٤۹۱، ج۵،ص۲۷۷،۲۷۸)

《13》...... मुस्लिम शरीफ़ में है, एक नाबीना सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत मआब عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे पास कोई ऐसा शख़्स नहीं है जो मस्जिद तक मेरी रहनुमाई करे ।" फिर उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से (घर में नमाज़ पढ़ने की) रुख़्सत त़लब की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे रुख़्सत अ़ता फ़रमा दी, लेकिन जब वोह वापस जाने लगे तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम नमाज़ की निदा या'नी अज़ान सुनते हो ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर जवाब दिया करो (या'नी जमाअ़त में ह़ाज़िर हुवा करो) ।" (صحیح مسلم،کتاب المساجد،باب یجب اتیان المسجد علی من الخ،الحدیث:۱٤۸۶،ص۷۷۹)

《14》...... अबू दावूद शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारगाहे न-बवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मदीना शरीफ़ में मूज़ी जानवरों की कसरत है जब कि मैं नाबीना हूं और घर भी दूर है और कोई मुनासिब रहनुमा भी नहीं जो मुझे ले आया करे तो क्या मुझे घर पर नमाज़ पढ़ने की इजाज़त है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया "क्या तू इक़ामत की आवाज़ सुनता है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की "जी हां ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पस तुम ह़ाज़िर हुवा करो क्यूं कि मैं तुम्हें देने के लिये कोई रुख़्सत नहीं पाता ।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الصلاۃ ،باب التشدید فی ترک الجماعۃ ، الحدیث ۵۵۲، ص ۱۲۶٤)

www.dawateislami.net

《15》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''लोग तर्के जमाअ़त से ज़रूर बाज़ आ जाएं या फिर मैं उन के घरों को जला दूंगा।''

(سنن ابن ماجه ،ابواب المساجد ، باب التغليظ فى التخلف عن الجماعة، الحديث ۷۹۵، ص ٢٥٢٤)

《16》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो ह़ालते सिह्ह़त और फ़राग़त में अज़ान सुने, फिर भी मस्जिद में ह़ाज़िर न हो तो उस की कोई नमाज़ नहीं।''

(المستدرك،كتاب الامامة وصلوة الجماعة، باب لاصلاة لجار المسجدالافى المسجد،الحديث ٩٣٤، ص٥١٩)

《17》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो नमाज़ के लिये अज़ान देने वाले की आवाज़ सुने तो कोई उ़ज़्र उसे नमाज़ में ह़ाज़िरी से न रोके।'' अ़र्ज़ की गई : ''उ़ज़्र क्या है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ख़ौफ़ या मरज़ और उस ने जो नमाज़ (घर में) पढ़ी वोह क़बूल न होगी।''

(سنن ابى داؤد،كتاب الصلاة،باب التشديد فى ترك الجماعة ، الحديث ٥٥١ ، ص ١٢٦٤)

ह़ज़राते सह़ाबए किराम व औलिया इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़रामीने मुबा-रका :

ह़ज़रते इब्राहीम तीमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान :

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ0 خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ0 (پ٢٩،القلم:٤٢-٤٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिस के मा'ना अल्लाह ही जानता है) और सज्दे को बुलाए जाएंगे तो न कर सकेंगे नीची निगाहें किये हुए उन पर ख़्वारी चढ़ रही होगी और बेशक दुन्या में सज्दे के लिये बुलाए जाते थे जब तन्दुरुस्त थे।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''वोह क़ियामत का दिन होगा उस दिन उन्हें नदामत की ज़िल्लत ढांपे होगी क्यूं कि उन्हें दुन्या में जब सज्दों की त़रफ़ बुलाया जाता तो येह तन्दुरुस्त होने के बा वुजूद नमाज़ में ह़ाज़िर न होते।'' और मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''उन्हें अज़ान और इक़ामत के ज़रीए फ़र्ज़ नमाज़ों की त़रफ़ बुलाया जाता था।''

《18》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुसय्यब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद वोह लोग हैं जो حَيَّ عَلَى الْفَلَاح की आवाज़ सुनते और सिह्ह़त व तन्दुरुस्ती के बा वुजूद नमाज़ में ह़ाज़िर न होते थे।''

《19》...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

क़सम ! येह आयते मुबा-रका जमाअ़त से पीछे रह जाने वालों ही के बारे में नाज़िल हुई है और बिग़ैर उ़ज़्र के जमाअ़त तर्क कर देने वालों के लिये इस से ज़ियादा सख़्त कौन सी वईद होगी।"

(تفسیرقرطبی،سورۃ القلم،تحت لآیۃ۴۳،۴۲،ج۹،ص۱۸۷)

《20》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से एक ऐसे शख़्स के बारे में पूछा गया जो दिन को रोज़े रखता, रात में इ़बादत करता मगर जमाअ़त या जुमुआ़ में ह़ाज़िर न होता। तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर वोह मर जाए तो जहन्नम में जाएगा।"

《21》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर आदमी के कानों में पिघला हुवा सीसा डाल दिया जाए तो येह उस के लिये अज़ान सुन कर मस्जिद में ह़ाज़िर न होने से ज़ियादा बेहतर है।"

《22》...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं : "मस्जिद के पड़ोस में रहने वाले की नमाज़ मस्जिद ही में होती है।" पूछा गया : "मस्जिद का पड़ोसी कौन है ?" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "जो अज़ान सुनता है।"

वज़ाह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم और सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ के येह दोनों अक़्वाल ह़दीसे पाक में भी वारिद हुए हैं।

《23》...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मेरी नमाज़ फ़ौत हो गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ बुख़ारी رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَيْه के इ़लावा किसी ने मेरी ता'ज़िय्यत न की और अगर मेरा बच्चा फ़ौत हो जाता तो दस हज़ार **(10,000)** से ज़ियादा अफ़राद मुझ से ता'ज़िय्यत करते क्यूं कि लोगों के नज़्दीक दीन की मुसीबत दुन्या की मुसीबत से आसान हो गई है।"

《24》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ अपने एक बाग़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, जब वापस हुए तो लोग नमाज़े अ़स्र अदा कर चुके थे तो आप رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ पढ़ा और इर्शाद फ़रमाया : "मेरी अ़स्र की जमाअ़त फ़ौत हो गई है, लिहाज़ा मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मेरा बाग़ मसाकीन पर स-दक़ा है ताकि येह इस काम का कफ़्फ़ारा हो जाए।"

《25》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "हम लोग जब किसी शख़्स को फ़ज्र या इ़शा की नमाज़ में ग़ैर ह़ाज़िर पाते तो इस ह़दीसे पाक की वजह से उस के मुनाफ़िक़ होने का गुमान करने लगते। क्यूं कि येह दोनों नमाज़ें मुनाफ़िक़ीन पर सब से ज़ियादा भारी हैं, अगर वोह जान लेते कि इन दो नमाज़ों में क्या है तो ज़रूर ह़ाज़िर होते अगर्चे घिसट कर आते।"

(صحیح مسلم، کتاب المساجد، کتاب فضل صلاۃ الجماعۃ وبیان التشدید الخ الحدیث ۲۵۲، ص ۷۷۹)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

मज़्कूरा अहादीसे मुबा–रका में सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़्हब (या'नी बा जमाअ़त नमाज़ के बारे में इस क़ौल) की दलील है कि "जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़े ऐन है।" और इन अहादीसे मुबा–रका की दलालत से येह बात ज़ाहिर भी होती है कि मज़्कूरा क़ुयूदात के साथ जमाअ़त छोड़ना कबीरा गुनाह है, अगर्चे मैं ने किसी को इस बात की सराहत करते हुए नहीं देखा, हमारा या'नी शवाफ़ेअ़ का राजेह क़ौल येह है कि जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़े किफ़ाया है और बाक़ी रही इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की येह तरमीम कि "जमाअ़त सुन्नत है और तारिकीने जमाअ़त से तर्के जमाअ़त की वजह से क़िताल न किया जाएगा।" तो येह इस बात का तक़ाज़ा नहीं करती कि हम जान बूझ कर जमाअ़त छोड़ने को कबीरा गुनाह नहीं समझते क्यूं कि इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन अहादीसे मुबा–रका में येह तावील करते हुए इन को मुनाफ़िक़ीन पर मह़मूल करते हैं कि "येह कुफ़्फ़ार की मुनाफ़िक़ क़ौम के बारे में वारिद हुईं लिहाज़ा इन को दलील नहीं बनाया जा सकता में कोई हुज्जत नहीं।" इन की इस बात को अगर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तारिकीने जमाअ़त के घरों को जला देने के इरादे के बारे में तस्लीम कर भी लिया जाए तो मल्ऊ़न लोगों के बारे में उन का येह दा'वा तस्लीम नहीं किया जा सकता क्यूं कि हम येह बात बयान कर चुके हैं कि ला'नत कबीरा गुनाहों की अ़लामात में से है, लिहाज़ा येह बात ज़ाहिर हो गई कि जमाअ़त तर्क करना कबीरा गुनाह है और शह्र वाले अगर इस के आ़दी हो जाएं तो फ़ासिक़ हो जाएंगे अगर्चे पांचों नमाज़ों में से किसी एक नमाज़ ही की जमाअ़त तर्क करने के आ़दी हों जैसा कि पीछे गुज़रा क्यूं कि येह उन के दीनी हुक्म को हलका जानने की दलील है और येह ऐसा जुर्म है जो अपने मुर–तकिब के दीनी मुआ़–मले को कम अहम्मिय्यत देने और उस की दीनदारी की कमी पर दलालत करता है।

फिर मैं ने सय्यिदुना इमाम ज़हबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा कि उन्हों ने भी इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया है मगर उन्हों ने इस की वोह वजह बयान नहीं की जो मैं ने बयान की है, चुनान्चे फ़रमाते हैं : "छियासठवां (66) कबीरा गुनाह किसी उ़ज़्र के बिग़ैर बा जमाअ़त नमाज़ के तर्क पर इस्रार करना है।" फिर मज़्कूरा अहादीसे मुबा–रका में से बा'ज़ से इस्तिद्लाल फ़रमाया है और उन का येह क़ौल इमाम अह़मद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़्हब के मुताबिक़ ही दुरुस्त होगा कि बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना हर शख़्स पर फ़र्ज़े ऐन है, मगर हमारे (शाफ़ेई) मज़्हब के मुताबिक़ दुरुस्त नहीं क्यूं कि बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना या तो फ़र्ज़े किफ़ाया है या फिर सुन्नत और फ़र्ज़े किफ़ाया या सुन्नत की सूरत में अगर कोई और इसे अदा कर ले तो इस के तर्क की वजह से कबीरा गुनाह तो दूर की बात है गुनाहगार भी न होगा। (लेकिन अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के नज़्दीक : "आ़क़िल, बालिग़, आज़ाद, क़ादिर पर जमाअ़त वाजिब है बिला उ़ज़्र एक बार भी छोड़ने वाला गुनाहगार और मुस्तह़िक़े सज़ा है और कई बार तर्क करे तो फ़ासिक़, मरदूदुश्शहादह और उस को सख़्त सज़ा दी जाएगी अगर पड़ोसियों ने सुकूत किया तो वोह भी गुनाहगार हुए।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 67)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 86 : क़ौम के ना पसन्दीदा शख़्स का उन की इमामत करना

《1》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ला'नत फ़रमाता है (1) जो किसी क़ौम की इमामत करे और क़ौम उसे ना पसन्द करती हो, (2) जो औ़रत इस त़रह़ रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस पर नाराज़ हो और (3) वोह शख़्स जो حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ،حَیَّ عَلَی الْفَلَاح सुने फिर भी जमाअ़त में ह़ाज़िर न हो।"

(جامع الترمذی ، ابواب الصلوۃ ، باب ماجاء فیمن ام قوما الخ ، الحدیث ۳۵۸ ، ص ۱۶۷۶)

《2》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "तीन शख़्सों की नमाज़ उन के कानों से तजावुज़ नहीं करती : (1) भागा हुवा गुलाम जब तक वापस न आए (2) वोह औ़रत जो इस त़रह़ रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस पर नाराज़ हो और (3) क़ौम का वोह इमाम जिसे उस की क़ौम ना पसन्द करती हो।"

(جامع الترمذی ،ابواب الصلوۃ،باب ماجاء فیمن ام قوما،الحدیث:۳۶۰،ص۱۶۷۶)

《3》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तीन शख़्सों की कोई नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता (1) जो किसी क़ौम का इमाम बने और क़ौम उसे ना पसन्द करती हो (2) वोह शख़्स जो (बिला उ़ज़्र) जमाअ़त हो जाने के बा'द मस्जिद में आए और (3) वोह शख़्स जिस ने किसी आज़ाद को गुलाम बना लिया हो।"

(سنن ابی داؤد،ابواب الصلوۃ باب الرجل یوم القوم...... الخ ،الحدیث:۵۹۳،ص۱۲۶۷)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई जब सलाम फैरा तो फ़रमाया : "मैं इमामत कराने से पहले तुम से इजाज़त लेना भूल गया था क्या तुम मेरे नमाज़ पढ़ाने से राज़ी हो ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! राज़ी हैं ऐ सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! आप की इमामत को कौन ना पसन्द कर सकता है।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो शख़्स किसी क़ौम का इमाम बने ह़ालां कि वोह क़ौम उसे ना पसन्द करती हो तो उस की नमाज़ उस के कानों से तजावुज़ नहीं करती।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۲۱۰ ،ج۱،ص۱۱۵)

《5》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता, वोह नमाज़ न तो आस्मान की त़रफ़ उठती है न ही उन के सरों से तजावुज़ करती है (1) वोह शख़्स जो किसी क़ौम का इमाम बने और वोह क़ौम उसे ना पसन्द करती हो (2) वोह शख़्स जिस ने इजाज़त के बिग़ैर नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दी और (3) वोह औ़रत जिसे उस का शोहर रात में बुलाए तो वोह इन्कार कर दे।"

(صحیح ابن خزیمہ ،کتاب الامامۃ فی الصلوٰۃ،باب الزجرعن امامۃ......الخ،الحدیث ۱۵۱۸ ،ج۳،ص ۱۱)

《6》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

"तीन शख़्स ऐसे हैं कि जिन की नमाज़ उन के सरों से बालिश्त भर भी नहीं उठती (1) वोह शख़्स जो किसी क़ौम की इमामत करे और लोग उसे ना पसन्द करते हों (2) वोह औ़रत जो इस ह़ाल में रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस से नाराज़ हो और (3) बाहम क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी करने वाले दो मुसल्मान भाई।"

(سنن ابن ماجه ، اقامة الصلوات،باب من امّ قوما وهم له كارهون ، الحديث:٩٧١،ص٢٥٣٤)

《7》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तीन क़िस्म के लोगों की कोई नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता, (1) क़ौम का वोह इमाम जिसे क़ौम ना पसन्द करती हो (2) वोह औ़रत जो इस ह़ाल में रात गुज़ारे कि उस का शोहर उस से नाराज़ हो और (3) बाहम क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी करने वाले दो मुसल्मान भाई।"

(صحيح ابن حبان، كتاب الصلوٰة،باب صفة الصلوة، الحديث:١٧٥٤ ، ج٣ ،ص١٢٦)

तम्बीह :

हमारे बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के कलाम की बिना पर इसे यक़ीन के साथ कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, शायद उन की नज़र इन्ही अह़ादीसे मुबा-रका पर थी ह़ालां कि येह बात बड़ी अ़जीब है क्यूं कि हमारे नज़्दीक येह अ़मल मक्रूह है वोह भी उस सूरत में जब कि क़ौम के अक्सर लोग उस के किसी ऐसे शरअ़न मज़्मूम अ़मल की वजह से उसे ना पसन्द करते हों जो इस की अ़दालत (या'नी गवाह बनने की सलाहिय्यत) में नक़्स न डालता हो नीज़ वोह अ़मल भी ऐसा हो जो इमामत या इस की इक़्तिदा में कराहत पैदा करता हो, लिहाज़ा ऐसे शख़्स की इमामत मुत़्लक़न मक्रूह नहीं और न ही उस की इक़्तिदा मुत़्लक़न ह़राम है चे जाएकि इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया जाए क्यूं कि इमाम किसी को अपनी इक़्तिदा पर मजबूर नहीं करता, नीज़ लोगों को इख़्तियार है कि इस इमाम के पीछे नमाज़ न पढ़ें इस सूरत में तो ला परवाही मुक़्तदियों ही की त़रफ़ से है न कि इमाम की जानिब से। हां ! अगर इन अह़ादीसे मुबा-रका को तन-ख़्वाह दार इमाम और मुक़्तदियों पर ज़ियादती करते हुए ज़बर दस्ती नमाज़ पढ़ाने वाले पर मह़मूल किया जाए तो इस सूरत में इस अ़मल को कबीरा गुनाह कहना मुम्किन है क्यूं कि ओ़हदा ग़स्ब करने को अम्वाल ग़सब करने के मुक़ाबले में कबीरा गुनाह कहना ज़ियादा मुनासिब है।

सवाब पाने वाला ख़ुश नसीब इमाम :

《8》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों की इमामत कराई और वक़्त को पा कर नमाज़ मुकम्मल कर ली तो उसे अपना और मुक़्दियों का भी सवाब मिलेगा और जिस ने नमाज़ में कोई कमी की तो इस का गुनाह उसी पर होगा न कि मुक़्तदियों पर।"

(صحيح ابن حبان كتاب الصلوة ، باب فرض متابعة الامام ، الحديث ٢٢١٨،ج ٣، ص٣١٩)

《9》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो किसी क़ौम का इमाम बने उसे चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरे और येह याद रखे कि वोह ज़ामिन है और उस से उस की ज़मानत के बारे में पूछा जाएगा, लिहाज़ा जो अपनी ज़िम्मादारी अह़सन

www.dawateislami.net

तरीके से निभाएगा उसे अपने पीछे नमाज़ पढ़ने वालों जितना सवाब मिलेगा और उन मुक्तदियों के सवाब में भी कमी न होगी और नमाज़ में जो कोताही होगी इस का वबाल भी उसी पर होगा।"

(مجمع الزوائد ، كتاب الصلوة ، باب الامام ضامن ،الحديث:٢٣٣٥ ، ج ٢ ، ص ٢٠٩)

《10》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो लोग तुम्हें नमाज़ पढ़ाते हैं अगर वोह दुरुस्त नमाज़ पढ़ाएं तो तुम्हें भी सवाब मिलेगा और अगर वोह ग़-लती करें तो तुम्हारी नमाज़ हो जाएगी और इस का वबाल उन्ही पर होगा।"

(صحيح البخارى ،كتاب الاذان ، باب اذا لم يتم الا مام ......الخ،الحديث ٦٩٤،ص٥٦)

《11》...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तीन शख़्स मुश्क के टीलों पर होंगे (रावी फ़रमाते हैं कि) मेरा गुमान है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन (1) वोह गुलाम जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और अपने दुन्यवी आक़ाओं का हक़ अदा किया (2) वोह शख़्स जो किसी क़ौम का इमाम बना और उस की क़ौम उस से राज़ी हो और (3) वोह शख़्स जो हर दिन और रात में पांच नमाज़ों के लिये अज़ान कहे।" (سنن الترمذى ، ابواب صفة الجنة ، باب احاديث صفة الثلاثة الذين يحبهم الله ، الحديث ٢٥٦٦ ، ص ١٩١٠،"بتقدم وتأخر")

《12》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**तीन** शख़्स ऐसे होंगे जिन्हें बड़ी घबराहट (या'नी क़ियामत) ख़ौफ़ज़दा न करेगी और न ही उन से हिसाब लिया जाएगा, वोह लोग मख़्लूक़ के हिसाब से फ़ारिग़ होने तक मुश्क के टीले पर होंगे। वोह शख़्स जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये कुरआने पाक पढ़ा और इस के ज़रीए किसी क़ौम की इमामत कराई और वोह क़ौम भी उस से राज़ी हो और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये नमाज़ की तरफ़ बुलाने (या'नी अज़ान कहने) वाला और वोह गुलाम जो अपने रब عَزَّ وَجَلَّ और अपने (दुन्यावी) आक़ाओं के हुक़ूक़ अहसन तरीके से अदा करने वाला।"

(مجمع الزوائد ،كتاب الصلاة ،باب فضل الاذان ،الحد يث ١٨٤٦،ج٢،ص٨٥)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 87 : सफ़ को मुकम्मल न करना

कबीरा नम्बर 88 : सफ़ को सीधा न करना

﴾1﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो सफ़ को मिलाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मिला देगा और जो सफ़ को क़त्अ़ करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़त्अ़ कर देगा ।" (سنن ابی داؤد، کتاب الصلوة، باب تسوية الصفوف ، الحديث ٦٦٦، ص ١٢٧٢)

﴾2﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते सफ़ पूरी करने वालों पर रह़मत नाज़िल करते रहते हैं ।"

(سنن ابن ماجة ،ابو اب اقامة الصلاة......الخ،باب اقامة الصفوف،الحديث:٩٩٥،ص ٢٥٣٥)

﴾3﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को सफ़ों में अपने मुबारक हाथ से बराबर करते और इर्शाद फ़रमाते थे : "अलग अलग मत रहो कहीं तुम्हारे दिल भी अलग न हो जाएं ।" और इर्शाद फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते अगली सफ़ वालों पर रह़मत नाज़िल फ़रमाते हैं ।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلوة، باب تسوية الصفوف ، الحديث ٦٦٤،ص ١٢٧٢،بدون"انه كان يسويهم فی صفوفهم بيده يقول")

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो सफ़ की कुशा-दगी पुर करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और उस के लिये जन्नत में घर बनाएगा ।"

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوة، باب صلة الصفوف وسد الفرج ، الحديث:٢٥٠٢،ج٢،ص ٢٥٠)

﴾5﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो सफ़ के ख़ला को पुर करेगा उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी ।" (المرجع السابق ، الحديث ٢٥٠٣ ، ج٢ ، ص ٢٥١)

﴾6﴿...... साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते सफ़ें पूरी करने वालों पर रह़मत नाज़िल फ़रमाते हैं और जो बन्दा सफ़ पूरी करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का द-रजा बुलन्द फ़रमा देता है और मलाएका उस के पास ख़ैर ले आते हैं ।"

(مجمع الزوائد ،کتاب الصلوة، باب صلة الصفوف وسد الفرج ، الحديث:٢٥٠٨ ،ج٢،ص ٢٥١)

﴾7﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम सफ़ें ज़रूर बराबर किया करो वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे चेहरे बदल देगा ।"

(صحيح البخاری، کتاب الاذان،باب تسوية الصفوف عند الاقامة وبعد ها،الحديث: ٧١٧،ص ٥٧)

www.dawateislami.net

《8》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सफ़ें क़ाइम करो वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल बदल देगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ، باب تسویۃ الصفوف، الحدیث:٦٦٢، ص١٢٧٢)

《9》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम सफ़ें ज़रूर सीधी करोगे या तुम्हारे चेहरों का नूर छीन लिया जाएगा या फिर तुम्हारी बीनाई उचक ली जाएगी।" (المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث ٢٢٢٨٨، ج ٨، ص ٢٨٨)

तम्बीह :

इन दोनों को इस हदीसे पाक "जो सफ़ क़त्अ करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़त्अ कर देगा।" के तक़ाज़े की बिना पर कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया क्यूं कि इस का मत़्लब या तो येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाएगा या उस का क़रीब तरीन मा'ना मुराद है और हम बयान कर चुके हैं कि ला'नत कबीरा गुनाहों की अलामात में से है, नीज़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने इब्रत निशान : "वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल और चेहरे बदल देगा।" भी इस के कबीरा गुनाह होने पर दलालत करता है क्यूं कि इस में दिल और चेहरे बदल देने की वईद है जो कि एक सख़्त वईद है, मगर मैं ने किसी को इन के कबीरा गुनाह होने की तस्रीह करते हुए नहीं देखा क्यूं कि हमारे नज़्दीक सफ़ पूरी न करना या क़त्ए सफ़ सिर्फ़ मक्रूह है हराम नहीं, चे जाएकि इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया जाए (अहनाफ़ के नज़्दीक : "जब तक अगली सफ़ कोने तक पूरी न हो जाए जान बूझ कर पीछे नमाज़ शुरूअ कर देना तर्के वाजिब, हराम और गुनाह है।" तफ़्सील के लिये : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 219 ता 225), अलबत्ता हमारे नज़्दीक क़ौम की ना पसन्दीदगी के बा वुजूद इमामत करने, बिग़ैर मुंडेर की छत पर सोने और जमाअत तर्क करने को मक्रूह होने के बा वुजूद कबीरा गुनाह शुमार करने से येह लाज़िम आता है कि इन दोनों को भी कबीरा गुनाहों में शुमार करना ज़ियादा औला है क्यूं कि इन में ज़ियादा सख़्त वईद आई है।

《10》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "लोग पहली सफ़ से पीछे हटते रहेंगे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें जहन्नम में पहुंचा देगा।"

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب صف النساء......الخ، الحدیث:٦٧٩، ص١٢٧٣)

गोया हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इन अहादीसे मुबा-रका से येह समझा है कि इन के ज़ाहिरी मा'ना मुराद न होने पर इज्माअ है क्यूं कि इस बाब में सख़्त वईदों का ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं होता बल्कि सफ़ों में ख़लल डालने पर ज़ज्र करना और लोगों को हत्तल इम्कान सफ़ पूरी करने पर उभारना मक़्सूद है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 89 : नमाज़ में इमाम से सब्क़त करना

《1》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या तुम में से कोई इस बात से नहीं डरता कि जब वोह इमाम से पहले रुकूअ़ या सज्दों से सर उठाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के सर को गधे के सर या उस की सूरत को गधे की सूरत से बदल दे।"1

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب اثم من رفع راسه الخ، الحدیث ۶۹۱، ص ۵۵، بدون"من رکوع اوسجود")

《2》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से कोई इस बात से बे ख़ौफ़ न हो कि जब वोह इमाम से पहले सर उठा लेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के सर को कुत्ते के सर से बदल देगा।"

(المعجم الکبیر، الحدیث ۹۱۷۵، ج۹، ص ۲۴۰، یحول بدله"یعود")

《3》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या इमाम से पहले सर उठाने वाला इस बात से नहीं डरता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के सर को कुत्ते के सर से बदल दे।"

(صحیح ابن حبان، کتاب الصلوة، باب مایکره للمصلی ومالا یکره، الحدیث ۲۲۸۰، ج۴، ص ۲۳)

《4》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो (रुकूअ़ व सुजुद में) इमाम से पहले झुकता और उठ जाता है उस की पेशानी शैतान के हाथ में है।"

(فتح الباری، کتاب الاذان، باب، قوله اثم من رفع راسه ......الخ، ج۲، ص ۱۵۹)

तम्बीह :

इन सहीह अहादीसे मुबा-रका की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया और बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इस के कबीरा होने को यक़ीन के साथ बयान

---

1. शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "नमाज़ के अह़काम" में बहारे शरीअ़त के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ह़दीस लेने के लिये एक बड़े मश्हूर शख़्स के पास दिमिश्क़ गए। वोह पर्दा डाल कर पढ़ाते, मुद्दतों तक उन के पास बहुत कुछ पढ़ा मगर उन का मुंह न देखा, जब ज़मानए दराज़ गुज़रा और उन मुह़द्दिस साहिब ने देखा कि इन (या'नी इमाम न-ववी) को इल्मे ह़दीस की बहुत ख़्वाहिश है तो एक रोज़ पर्दा हटा दिया, देखते क्या हैं कि उन का गधे जैसा मुंह है!! उन्हों ने फ़रमाया, साहिब ज़ादे! दौराने जमाअ़त इमाम पर सब्क़त करने से डरो कि येह ह़दीस जब मुझ को पहुंची मैं ने इसे **मुस्तब्अ़द** (या'नी बा'ज़ रावियों की अ़दम सिह़्ह़त के बाइस दूर अज़ क़ियास) जाना और मैं ने इमाम पर क़स्दन सब्क़त की तो मेरा मुंह ऐसा हो गया जैसा तुम देख रहे हो।" (नमाज़ के अह़काम, बाब नमाज़ का त़रीक़ा, स. 257)

www.dawateislami.net

फ़रमाया है और येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की इस बात से वाज़ेह़ हो जाती है कि ''जिस ने ऐसा किया उस की नमाज़ न हुई।''

सय्यिदुना ख़त्ताबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अक्सर अहले इ़ल्म कहते हैं कि उस ने बुरा काम किया मगर उस की नमाज़ हो गई जब कि अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی इमाम के सज्दे से सर उठा लेने के बा'द उसे इतनी देर तक सज्दे में रहने का हुक्म देते हैं जितनी देर उस ने इमाम से पहले सर उठा लिया था।'' जब कि हमारे नज़्दीक येह है कि ''फ़क़त़ इमाम से पहले सर उठाना या क़ियाम करना या उस से पहले रुकूअ़ में झुक जाना मक्रूहे तन्ज़ीही है और इस के लिये सुन्नत येह है कि इमाम की त़रफ़ लौट जाए जब कि इमाम अभी उसी रुक्न में हो लेकिन अगर वोह एक रुक्न में सब्क़त ले गया म-सलन रुकूअ़ कर लिया जब कि इमाम क़ियाम में खड़ा था अभी इस ने रुकूअ़ ही नहीं किया तो उस के लिये ऐसा करना ह़राम है।''

और मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका को इस सूरत पर मह़मूल करना बईद भी नहीं और न ही इसे कबीरा गुनाह क़रार देना बईद है या मुक़्तदी दो अरकान में सब्क़त ले गया म-सलन इमाम ने अभी रुकूअ़ भी नहीं किया और मुक़्तदी सज्दे में चला गया या मुक़्तदी ने रुकूअ़ किया फिर सीधा खड़ा हो गया जब कि इमाम ने अभी रुकूअ़ किया ही नहीं या इमाम ने जब रुकूअ़ से सर उठाया तो मुक़्तदी सज्दे में झुक गया तो इन तमाम सूरतों में मुक़्तदी की नमाज़ बात़िल हो जाएगी और उस के इस अ़मल को कबीरा क़रार देना बिल्कुल ज़ाहिर है।[1]

---

1 : ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त में इर्शाद फ़रमाते हैं : ''मुक़्तदी ने सब रक्अ़तों में इमाम से पहले रुकूअ़ सुजूद कर लिया तो एक रक्अ़त बा'द को बिग़ैर क़िराअत पढ़े (या फिर) इमाम से पहले सज्दा किया मगर उस के सर उठाने से पहले इमाम भी सज्दे में पहुंच गया तो सज्दा हो गया मगर मुक़्तदी को ऐसा करना ह़राम है।''
(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सए सिवुम, स. 72)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 90 : नमाज़ में आस्मान की त़रफ़ देखना

कबीरा नम्बर 91 : नमाज़ में इधर उधर देखना

कबीरा नम्बर 92 : नमाज़ में कमर पर हाथ रखना

﴾1﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उन लोगों का क्या ह़ाल है जो अपनी नमाज़ों में आस्मान की त़रफ़ निगाहें उठाते हैं ।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस मुआ़-मले में शिद्दत फ़रमाई यहां तक कि इर्शाद फ़रमाया : "वोह लोग या तो ऐसा करने से बाज़ आ जाएं या फिर उन की बसारत छीन ली जाएगी ।"

(صحیح البخاری ، کتاب الاذان ، باب رفع البصرالی السماء فی الصلاۃ،الحدیث:۷۵۰، ص۵۹)

﴾2﴿...... रसूले अन्वर, साह़िबे कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नमाज़ में अपनी नज़रें आस्मान की त़रफ़ न उठाया करो कहीं तुम्हारी बीनाई न चली जाए ।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب اقامة الصلوات،باب الخشوع فی الصلاۃ،الحدیث:۱۰۴۳، ص۲۵۳۷)

﴾3﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "लोग नमाज़ में अपनी निगाहें आस्मान की त़रफ़ उठाने से बाज़ आ जाएंगे वरना उन की बसारत उचक ली जाएगी ।"

(صحیح مسلم ،کتاب الصلاۃ ، باب النهی عن رفع البصر الی السماء فی الصلاۃ ،الحدیث:۹۶۷ ، ص ۷۴۷)

﴾4﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नमाज़ में अपनी निगाहें आस्मान की त़रफ़ उठाने वाले लोग या तो इस से बाज़ आ जाएंगे वरना उन की नज़रें उन तक वापस न लौटेंगी ।" (المرجع السابق ،الحدیث ۹۶۶ ، ص ۷۴۷)

﴾5﴿...... हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो कुछ लोगों को आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नमाज़ में अपनी निगाहें उठाने वाले लोग बाज़ आ जाएं या फिर उन की निगाहें वापस न पलटेंगी ।" (سنن ابی داؤد ،کتاب الصلاۃ،باب النظر فی الصلاۃ ، الحدیث:۹۱۲ ، ص ۱۲۹۰)

﴾6﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नमाज़ में इधर उधर देखने के बारे में सुवाल किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह उचक लेना है कि शैत़ान बन्दे की नमाज़ उचक लेता है ।"

(صحیح البخاری ،کتاب الاذان ، باب التفات فی الصلاۃ ، الحدیث:۷۵۱، ص ۶۰)

www.dawateislami.net

《7》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तक बन्दा नमाज़ में किसी और जानिब मु-तवज्जेह न हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर नज़रे रहमत फ़रमाता रहता है, फिर जब बन्दा अपनी तवज्जोह हटा लेता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत भी उस से फिर जाती है।" (سنن النسائی ،کتاب السهو ، باب التشدید فی التفات فی الصلاة، الحدیث ١١٩٦ ، ص ٢١٦٥)

《8》...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : " मेरे ख़लील दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे **तीन** चीज़ों का हुक्म दिया और (नमाज़ में) **तीन** चीज़ों से मन्अ फ़रमाया है जिन तीन चीज़ों से मन्अ फ़रमाया वोह येह हैं : (1) मुर्ग़ों की तरह ठोंगें मारना (2) कुत्ते की तरह बैठना और (3) लोमड़ी की तरह इधर उधर तवज्जोह करना।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند ابی هريرة ، الحدیث:٨١١٢ ،ج ٣ ، ص ١٨٥ ،بدون"خلیلی واوصانی" بدله"امرنی")

कुत्ते की तरह बैठने से मुराद येह है कि घुटने खड़े कर के सुरीन पर बैठना। हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "हाथ ज़मीन पर रखे हों और दोनों पाउं की एड़ियों पर बैठना क्यूं कि दो सज्दों के दरमियान इस तरह बैठना सुन्नत है और पाउं बिछा कर बैठना अफ़्ज़ल है।"[1]

《9》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब आदमी नमाज़ के लिये आता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत उस की तरफ़ मु-तवज्जेह हो जाती है, फिर जब वोह किसी और जानिब मु-तवज्जेह होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! तू किस की तरफ़ मु-तवज्जेह हो गया ? क्या वोह तेरे लिये मुझ से ज़ियादा बेहतर है ? मेरी तरफ़ मु-तवज्जेह हो जा।" फिर जब वोह आदमी दूसरी मरतबा मु-तवज्जेह होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येही बात इर्शाद फ़रमाता है और फिर जब वोह बन्दा तीसरी मरतबा ग़ैर की जानिब मु-तवज्जेह होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से अपनी रहमत फैर लेता है।"

(کنزالعمال ،کتاب الصلوة ،فصل فی مفسدات الصلوٰة......الخ، الحدیث:٢٢٤٤٤ ، ج٨ ، ص ٨٤،ملخصا)

《10》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने (हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से) इर्शाद फ़रमाया : "बेटा ! नमाज़ में दाएं बाएं मु-तवज्जेह होने से बचते रहना क्यूं कि नमाज़ में ऐसा करना हलाकत है।"

(جامع الترمذی ،ابواب السفر ، باب ماذکر فی الالتفات ......الخ ، الحدیث ٥٨٩ ، ص ١٧٠٣)

---

1 : अहनाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के नज़्दीक "दो सज्दों के दरमियान अपने हाथ रानों के ऊपर रखना और बाएं पाउं पर बैठना सुन्नत है चुनान्चे बहारे शरीअत में है : "दोनों सज्दों के दरमियान मिस्ल **तशहहुद** के बैठना या'नी बायां क़दम बिछाना और दाहिना खड़ा रखना, हाथों को रानों पर रखना, सज्दों में उंगलियां क़िब्ला रू होना और हाथों की उंगलियां मिली हुई होना सुन्नत है।" (बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 45)

www.dawateislami.net

﴾11﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो नमाज़ के लिये खड़ा हो फिर दाएं बाएं देखने लगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की नमाज़ उसी को लौटा देगा।" (مجمع الزوائد ،کتاب الصلاۃ ،باب ماینھی عنه فی الصلاۃ ......الخ ، الحدیث ۲۴۳۲ ، ج۲ ،ص ۲۳۴)

﴾12﴿...... बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ में पहलू पर हाथ रखने से मन्अ़ फ़रमाया है।" (صحیح البخاری ،کتاب العمل فی الصلاۃ ، باب الخصر فی الصلاۃ ، الحدیث ۱۲۱۹ ، ص۹۵)

﴾13﴿...... और मुस्लिम शरीफ़ में है : "शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आदमी को कमर पर हाथ रख कर नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमाया।"

(صحیح مسلم ،کتاب المساجد ، باب کراھة الاختصار فی الصلاۃ ،الحدیث:۱۲۱۸، ص ۷۶۲)

﴾14﴿...... और अबू दावूद शरीफ़ में इस रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "या'नी नमाज़ी अपने हाथों को अपने पहलूओं पर रखे।" (سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ،باب الرجل یصلی مختصرا ، الحدیث۹۴۷ ، ص ۱۲۹۳)

﴾15﴿...... रह़मते कौनैन, ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नमाज़ में कमर पर हाथ रखना जहन्नमियों का त़रीक़ा है।"

(صحیح ابن حبان ،کتاب الصلاۃ ، باب مایکرہ للمصلی ما لایکرہ ، الحدیث ۲۲۸۳ ، ج ٤ ، ص ۲٤)

तम्बीह :

गुज़श्ता सफ़ह़ात में बयान कर्दा कबीरा गुनाहों म-सलन ना पसन्दीदा शख़्स की इमामत, इमाम से सब्क़त ले जाने और आयन्दा **किताबुल्लिबास** में रेशम पहनने के बारे में आने वाली वई़दों पर क़ियास करते हुए इन्हें कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया क्यूं कि पहले गुनाह में बसारत का उचक लिया जाना, दूसरे में रह़मत का फिर जाना और तीसरे में अहले जहन्नम का शिआ़र होना पाया जा रहा है, तो जब उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने आख़िरत में रेशमी लिबास से मह़रूमी की इ़ल्लत की बिना पर इसे कबीरा गुनाह क़रार दे दिया तो इन गुनाहों को ब द-र-जए औला कबीरा गुनाह क़रार दिया जाएगा, मगर सह़ीह़ और मो'तमद येही है कि गुनाह तो दूर की बात है येह तीनों (या'नी नमाज़ में आस्मान की त़रफ़ निगाह करना, इधर उधर देखना और कमर पर हाथ रखना) ह़राम भी नहीं बल्कि सिर्फ़ मक्रूहे तन्ज़ीही हैं।[1]

---

1. **अह़नाफ़ के नज़्दीक** "कमर पर हाथ रखना मक्रूहे तह़रीमी है, इधर उधर मुंह फैर कर देखना मक्रूहे तह़रीमी है, कुल चेहरा फिर गया हो या बा'ज़ और अगर मुंह न फैरे सिर्फ़ कन्खियों से इधर उधर बिला ह़ाजत देखे तो कराहते तन्ज़ीही है और नादिरन किसी ग़-रज़े सह़ीह़ से हो तो अस्लन ह़रज नहीं, निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाना भी मक्रूहे तह़रीमी है।"
(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 3, स. 84,85)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 93 : क़ब्रों को सज्दा गाह बनाना

कबीरा नम्बर 94 : क़ब्रों पर चराग़ जलाना[1]

कबीरा नम्बर 95 : क़ब्रों को बुत बना लेना

कबीरा नम्बर 96 : क़ब्रों का त़वाफ़ करना[2]

कबीरा नम्बर 97 : क़ब्रों को हाथ से छूना या चूमना

कबीरा नम्बर 98 : क़ब्रों की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ना

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल (ज़ाहिरी) से **पांच रातें** पहले मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुवा तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "ऐसा कोई नबी नहीं गुज़रा जिस की उम्मत में से उस का कोई ख़लील न हो और मेरा ख़लील अबू बक्र बिन अबी क़ुह़ाफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपना ख़लील बनाया है, सुन लो ! तुम से पिछली उम्मतों ने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया था मैं तुम्हें इस से मन्अ़ करता हूं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरा पैग़ाम पहुंचा दिया।" फिर तीन मरतबा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! गवाह हो जा।"

(المعجم الكبير،الحديث ٨٩ ،ج١٩ص ٤١)

《2》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "न तो किसी क़ब्र की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ो न ही किसी क़ब्र के ऊपर नमाज़ पढ़ो।"

(المعجم الكبير ، الحديث ١٢٠٥١ ،ج١١ ، ص ٢٩٧)

---

1. ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ "शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़" में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "اَنَّ النَّبِیَّ دَخَلَ قَبۡرًالَیۡلًافَاَسۡرَجَ لَہٗ بِسِرَاجٍ या'नी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रात के वक़्त क़ब्र में तशरीफ़ ले गए तो आप के लिये चराग़ जलाया गया" की शर्ह़ करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "या'नी रात में मय्यित को दफ़्न किया तो मय्यित के लिये या हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये चराग़ की रोशनी की गई, इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि क़ब्र पर आग ले जाना मन्अ़ है मगर चराग़ ले जाना जाइज़ क्यूं कि येह रोशनी के लिये है न कि मुश्रिकीन से मुशा-बहत के लिये, मुश्रिकीन मय्यित के साथ आग ले जाते हैं आग की पूजा करने या मय्यित को जलाने के लिये लिहाज़ा बुज़ुर्गों के मज़ार के पास लोबान या अगरबत्ती जलाना जाइज़ है ताकि मय्यित को फ़रह़त हो और ज़ाइरीन को राह़त, इसी लिये मय्यित के कफ़न को धूनी देना सुन्नत है जिसे फ़ु-क़हा **इस्तिज्मार** कहते हैं। **(बक़िय्या ह़ाशिया अगले सफ़ह़े पर है........)**

www.dawateislami.net

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास से मरवी है कि ''मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली औरतों, इन्हें सज्दागाह बनाने और इन पर चराग़ जलाने वालों पर ला'नत फ़रमाई है।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز، باب فی زیارۃ النساء القبور، الحدیث ۳۲۳۶، ص۱۴۶۶)

﴾4﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सुन लो ! तुम से पहले लोग अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेते थे मैं तुम्हें ऐसा करने से मन्अ़ करता हूं।'' (صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب النہی عن بناء المسجد علی القبور، الحدیث:۱۱۸۸، ص۷۶۰)

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''लोगों में सब से बदतर वोह हैं जिन पर उन की ज़िन्दगी में क़ियामत क़ाइम होगी और येह वोह लोग हैं जो क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेते हैं।'' (المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبداللہ بن مسعود، الحدیث:۴۳۴۲،ج۲،ص۱۷۴)

﴾6﴿...... साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़म्माम और क़ब्रिस्तान के इलावा सारी ज़मीन मस्जिद है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ،باب فی المواضع التی لا تجوز فیھا الصلاۃ ،الحدیث ۴۹۲،ص۱۲۵۹)

﴾7﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यहूद को हलाक फ़रमाए उन्हों ने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया।''

(صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب (۵۵)، الحدیث ۴۳۷، ص ۳۷)

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यहूदो नसारा पर ला'नत फ़रमाए उन्हों ने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया।''

(صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب النہی عن بناء المسجد علی القبور......الخ ،الحدیث ۱۱۸۶، ص۷۶۰)

(.....बक़िय्या ह़ाशिया) दूसरे येह कि ज़रूरत के वक़्त क़ब्र पर चराग़ जलाना जाइज़ है लिहाज़ा जिन बुज़ुर्गों के मज़ारों पर दिन रात ज़ाइरीन का हुजूम और तिलावते क़ुरआन का दौर रहता है वहां ज़रूर रात को रोशनी की जाए इस का माख़ज़ येह ह़दीस है, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर हमेशा से और अब ''नज्दियों'' के ज़माने में और ज़ियादा आ'ला द-रजे की रोशनी होती है ख़ास गुम्बद शरीफ़ पर बीसियों क़ुमक़ुमे नस्ब हैं जिन अह़ादीस में क़ब्र पर चराग़ जलाने से मुमा-न-अ़त है वहां बिला ज़रूरत चराग़ रख आना मुराद है कि इस में इस्राफ़ है। ख़याल रहे कि बुज़ुर्गों का एह़तिराम ज़ाहिर करने के लिये भी रोशनी कर सकते हैं जैसे का'बए मुअ़ज़्ज़मा के एह़तिराम के लिये उस पर ग़िलाफ़ रहता है और दरवाज़ए का'बा पर बड़ी क़ीमती शम्अ़ काफ़ूरी जलाई जाती है, र-मज़ान में मस्जिदों का चराग़ां भी यहीं से लिया गया।''

(मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2, स. 492, 493)

2. बिला शुबा ग़ैरे का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़े ता'ज़ीमी ना जाइज़ है और ग़ैरे ख़ुदा को सज्दा हमारी शरीअ़त में ह़राम है और बोसए क़ब्र (या'नी क़ब्र के चूमने) में उ़-लमा को इख़्तिलाफ़ है और अह़्वत़ (या'नी ज़ियादा मुनासिब) मन्अ़ है ख़ुसूसन मज़ाराते त़य्यिबा औलियाए किराम कि हमारे उ़-लमा ने तस्रीह़ फ़रमाई कि कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले से खड़ा हो येही अदब है फिर तक़्बील (या'नी चूमना) क्यूंकर मु-तसव्वर है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 382)

www.dawateislami.net

《9》...... (हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे हबीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हब्शा की हिजरत से वापसी के बा'द जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक्दस में ईसाइयों के इबादत ख़ानों में तसावीर की मौजू-दगी का तज़्किरा किया जो उन्हों ने वहां मुला-हज़ा फ़रमाई थीं तो) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "यक़ीनन येह वोह लोग हैं कि जब उन में से कोई नेक शख़्स मर जाता तो येह उस की क़ब्र को सज्दा गाह बना लेते और उस में उस की तस्वीरें बना देते, येही लोग क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बद तरीन मख़्लूक़ होंगे ।"

(صحیح البخاری،کتاب الصلاۃ،باب ھل تنبش قبور مشرکی الجاھلیۃ......الخ،الحدیث:۴۲۷،ص۳۶)

《10》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ब्रों की तरफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ने से मन्अ फ़रमाया है ।"

(صحیح ابن حبان ،کتاب الصلاۃ ،باب مایکرہ للمصلی ومالایکرہ ،الحدیث ۲۳۱۷ ، ج ۴ ، ص ۳۴)

《11》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से बदतर लोग वोह हैं जिन की ज़िन्दगी में ही उन पर क़ियामत क़ाइम होगी और इन से मुराद वोह लोग हैं जो क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेते हैं ।"

(المعجم الکبیر ، الحدیث ۱۰۴۱۳ ، ج ۱۰ ، ص۱۸۸)

《12》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सुन लो ! तुम से क़ब्ल लोग अपने अम्बिया (عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) और नेक लोगों की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेते थे, तुम क़ब्रों को हरगिज़ सज्दा गाह न बनाना, मैं तुम्हें ऐसा करने से मन्अ करता हूं ।"

(کنزالعمال،کتاب الفضائل،باب ذکر الصحابۃ وفضلھم رضی اللہ تعالی عنھم،الحدیث:۳۲۵۵۷،ج۱۱،ص۲۴۹)

《13》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक लोगों में सब से बदतर वोह लोग हैं जो क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेते हैं ।"

(المصنف عبدالرزاق ، کتاب الصلاۃ ، باب الصلاۃ علی القبور ،الحدیث ۱۵۸۸ ، ج ۱ ،ص ۳۰۷)

《14》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बनी इस्राईल अपने अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेते थे इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ला'नत फ़रमाई ।"

(المصنف عبدالرزاق ، کتاب الصلاۃ ، باب الصلاۃ علی القبور ،الحدیث ۱۵۹۳ ، ج ۱ ، ص ۳۰۸)

तम्बीह :

उ-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के कलाम की वजह से इन 6 को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, शायद उन्हों ने मेरी बयान कर्दा इन्ही अहादीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल किया है, इन

www.dawateislami.net

में से क़ब्र को सज्दा गाह बना लेने के कबीरा गुनाह होने पर इस्तिद्लाल करना तो बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अम्बियाए किराम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लेने वालों पर ला'नत फ़रमाई और नेक लोगों की क़ब्रों को सज्दा गाह बनाने वालों को क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक बद तरीन मख़्लूक़ क़रार दिया, और इस में हमारे लिये वईद है जैसा कि एक रिवायत में है कि "वोह उन को उस काम से डराएं जो वोह करते थे।"

या'नी अपनी उम्मत को येह कह कर डराएं कि अगर उन्हों ने ऐसा किया तो उन लोगों की त़रह़ मल्ऊ़न हो जाएंगे, क़ब्र को सज्दा गाह बनाने से मुराद क़ब्र की त़रफ़ रुख़ कर के या क़ब्र के ऊपर नमाज़ पढ़ना है, इस सूरत में "क़ब्र की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ने" के अल्फ़ाज़ मुकर्रर होंगे मगर जब कि क़ब्र को सज्दा गाह बनाने से फ़क़त़ क़ब्र के ऊपर नमाज़ पढ़ना मुराद लिया जाए तो तकरार न होगा, हां अलबत्ता येह इस्तिद्लाल उसी वक़्त दुरुस्त हो सकता है जब कि वोह क़ब्र किसी मुअ़ज़्ज़म हस्ती म-सलन नबी या वली की हो जैसा कि येह रिवायत इस की त़रफ़ इशारा करती है कि "जब उन में से कोई नेक शख़्स होता।"

इसी लिये हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इर्शाद फ़रमाया : "तबर्रुक और ता'ज़ीम की निय्यत से अम्बियाए किराम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की क़ब्रों की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ना ह़राम है।" उन्हों ने यहां **2** शर्तें आ़इद की हैं : (1) क़ब्र किसी मुअ़ज़्ज़म हस्ती की हो और (2) उस की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ने से ता'ज़ीम और तबर्रुक का क़स्द हो। इस फ़े'ल का कबीरा गुनाह होना मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका की रोशनी में बिल्कुल ज़ाहिर है। गोया उन्हों ने क़ब्र की हर क़िस्म की ता'ज़ीम को इसी पर क़ियास किया है जैसे क़ब्र की ता'ज़ीम और इस से तबर्रुक ह़ासिल करने के लिये चराग़ जलाना और क़ब्र के त़वाफ़ का भी येही हुक्म है इस लिये येह क़ियास बईद भी मा'लूम नहीं होता। ख़ुसूसन ऐसी सूरत में जब कि मज़्कूरा अह़ादीसे मुबार-का में क़ब्रों पर चराग़ जलाने वालों पर कई मरतबा ला'नत गुज़र चुकी। लिहाज़ा हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के क़ौल को कराहत पर उस वक़्त मह़मूल किया जाएगा जब कि क़ब्र की ता'ज़ीम और उस से तबर्रुक ह़ासिल करने का क़स्द न किया जाए।

《15》...... क़ब्रों को बुत बना लेने से रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन अल्फ़ाज़ में मुमा-न-अ़त फ़रमाई है : "मेरी क़ब्र को बुत न बना लेना कि मेरे बा'द इस की पूजा होने लगे।" (التمهيدلابن عبدالبر، الحديث ٢٩/٩٩، ج٢، ص ٤٧٠ تا ٤٧١ بدون"يعبدبعدى")

या'नी उस की ऐसी ता'ज़ीम न करना जैसे दूसरे लोग अपने बुतों वग़ैरा की ता'ज़ीम के लिये उन्हें सज्दा वग़ैरा करते हैं, अगर इमाम साह़िब के क़ौल "और उन्हें बुत बना लेना" से मुराद येही मा'ना हो तो उन का इस गुनाह को कबीरा कहना दुरुस्त हो सकता है बल्कि शर्त़ पाए जाने (या'नी इ़बादत की निय्यत होने) की सूरत में कुफ़्र भी हो सकता है। अगर मुराद येह है कि मुत़्लक़ ता'ज़ीम, जिस की इजाज़त नहीं दी

www.dawateislami.net

गई, तो वोह कबीरा गुनाह है[1] (इस की वज़ाहत के लिये अगले सफ़्हे पर हाशिया नम्बर 1, मुला-हज़ा फ़रमाएं) अलबत्ता इस में बो'द है। जब कि बा'ज़ हनाबिला कहते हैं : "आदमी का क़ब्र के तबर्रुक के इरादे से क़ब्र के सामने नमाज़ पढ़ना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से हक़ीक़ी दुश्मनी मोल लेना है और ऐसा दीन ईजाद करना है जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इजाज़त नहीं दी क्यूं कि उस ने तो इस से मन्अ़ फ़रमाया है फिर इस पर इज्माअ़ मुन्अ़किद हो गया कि सब से बड़ा हराम और शिर्क का सब से बड़ा सबब क़ब्र के सामने नमाज़ पढ़ना और इसे मस्जिद बना लेना या इस पर इमारत बना लेना है।"[2]

कराहत का क़ौल इस के इलावा दूसरी सूरत पर महमूल है क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی से इस बात का गुमान नहीं किया जा सकता कि वोह किसी ऐसे फे़'ल को जाइज़ क़रार दें जिस के फ़ाइल पर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ला'नत फ़रमाना तवातुर से साबित हो इस लिये क़ब्रों पर बनी इमारतों को ढा देना और क़ुब्बों को गिरा देना वाजिब है क्यूं कि येह मस्जिदे ज़रार से ज़ियादा नुक़्सान रसां हैं। इस की वजह येह है कि इस की बुन्याद नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी पर रखी गई है क्यूं कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तो इस अ़मल से मन्अ़ फ़रमाया है और बुलन्द क़ब्रों को ढाने का हुक्म फ़रमाया है (ख़याल रहे कि यहां क़ब्रों से यहूदो नसारा की क़ब्रें मुराद हैं न कि मुसल्मानों की, तफ़्सील के लिये देखें : मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2, स. 488), इसी त़रह़ क़ब्र पर रोशन हर क़िन्दील और चराग़ को हटा देना वाजिब है और इसे वक़्फ़ करना और इस की मन्नत मानना भी दुरुस्त नहीं।" (क़ब्रों पर चराग़ जलाने का तफ़्सीली हुक्म सफ़्हा नम्बर 488-489 पर हाशिये में देखें)

---

1. मुजद्दिदे आ'ज़म सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में सय्यिदी इमाम अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के ह़वाले से क़ुबूरे औलिया की ता'ज़ीम के मु-तअ़ल्लिक़ एक सुवाल का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "इन (औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی) की रूह़ की ता'ज़ीम की जाती है और लोगों को दिखाया जाता है कि येह मज़ार मह़बूब का है इस से तबर्रुक व तवस्सुल करो कि तुम्हारी दुआ़ मुस्तजाब हो।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 496)

फिर कुछ आगे इन्ही इमाम अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के ह़वाले से इर्शाद फ़रमाते हैं कि "ता'ज़ीमे ख़िश्त व गिल (या'नी ईंटों और मिट्टी की ता'ज़ीम) नहीं बल्कि रूहे मह़बूब की ता'ज़ीम मक़्सूद हो जो बिला शुबा महमूद (या'नी पसन्दीदा) है और आ'माल का मदार निय्यत पर है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 497)

2. ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक कि "हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमाया कि اَنْ یُّبْنٰی عَلَیْہِ या'नी क़ब्र पर कुछ बनाया जाए" की शर्ह़ करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस त़रह़ कि क़ब्र पर दीवार बनाई जाए, क़ब्र दीवार में आ जाए येह ह़राम है कि इस में क़ब्र की तौहीन है इसी लिये यहां "عَلَیْہِ" (या'नी क़ब्र के ऊपर) फ़रमाया गया "حَوْلَہٗ" (या'नी इर्द गिर्द) न फ़रमाया, या इस त़रह़ कि **क़ब्र** के आस पास इमारत या क़ुब्बा बनाया जाए येह अ़वाम की क़ब्रों पर ना जाइज़ है क्यूं कि बे फ़ाएदा है, उ़-लमा व मशाइख़ की क़ब्रों पर जहां ज़ाइरीन का हुजूम रहता है जाइज़ है ताकि लोग उस के साए में आसानी से फ़ातिह़ा पढ़ सकें चुनान्चे हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर इमारत अव्वल (या'नी शुरूअ़) ही से थी और जब वलीद बिन मलिक के ज़माने में इस की दीवार गिर गई तो सहाबा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) ने बनाई नीज़ ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने ज़ैनब बिन्ते ह़जश (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की क़ब्र पर, ह़ज़रते आ़इशा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने अपने भाई अ़ब्दुर्रहमान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की क़ब्र पर, मुह़म्मद इब्ने ह़-नफ़िय्या (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ) ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की क़ब्र पर क़ुब्बे बनाए, देखो "**ख़ुला-सतुल वफ़ा**" और "**मुन्तक़ा शर्हे मुअत्ता**" **मिरक़ात** ने इस मक़ाम पर और **शामी** ने दफ़्ने मय्यित की बह़स में फ़रमाया कि मश्हूर **उ़-लमा व मशाइख़ की क़ब्र पर क़ुब्बे बनाना जाइज़ है**।
(मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2, स. 489)

www.dawateislami.net

بَابُ السفر (सफ़र का बयान)

कबीरा नम्बर 99 : इन्सान का तन्हा सफ़र करना

《1》...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि "रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने औ़रतों से मुशा-बहत इख़्तियार करने वाले हीजड़े मर्दों पर और उन मर्दानी औ़रतों पर जो मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करती हैं और बियाबान में तन्हा सफ़र करने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।" (المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند ابو هريرة،الحديث:٧٨٦٠،ج٣،ص١٣٣)

《2》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर लोग जानते कि तन्हा सफ़र करने में क्या है जो मैं जानता हूं तो कोई शख़्स रात को अकेला सफ़र न करता।" (صحيح البخارى ،كتاب الجهاد ، باب السير وحده ، الحديث ٢٩٩٨، ص ٢٤١ ،بتغيرقليلٍ)

《3》...... एक शख़्स सफ़र से वापस आया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम सफ़र में किस के रफ़ीक़ थे?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं किसी का रफ़ीक़ न था।" तो शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक सुवार (या'नी मुसाफ़िर) शैत़ान है और दो सुवार दो शैत़ान हैं और अगर तीन हों तो सुवार हैं।" (سنن ابى داؤد ،كتاب الجهاد ، باب فى الرجل يسافر وحده ، الحديث٢٦٠٧،ص ١٤١٦)

तीन से कम मुसाफ़िरों के गुनाहगार होने की दलील येह है कि दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी है कि एक सुवार एक शैत़ान है जब कि दो सुवार दो शैत़ान हैं, शैत़ान का सब से मुनासिब तर मा'ना गुनाहगार होना है।

जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान में शैत़ान से मुराद गुनहगार है :

شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ (پ٨،الانعام:١١٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : आदमियों और जिन्नों में के शैत़ान।

《4》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अकेला मुसाफ़िर एक शैत़ान है, दो मुसाफ़िर दो शैत़ान हैं जब कि तीन शख़्स मुसाफ़िर हैं।"

(صحيح ابن خزيمه ،كتاب المناسك ، باب النهى عن سير الاثنين ، الحديث ٢٥٧٠، ج٤ ، ص ١٥٢)

तम्बीह :

मज़्कूरा बाला अह़ादीसे मुबा-रका की सराह़त की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया मगर येह हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के कलाम के मुत़ाबिक़ नहीं क्यूं कि वोह इस

www.dawateislami.net

काम (या'नी तन्हा सफ़र) के मक्रूह होने की तस्रीह़ करते हैं लिहाज़ा गुनाह होने के क़ौल को उस शख़्स पर महमूल करना चाहिये जो तन्हा सफ़र करने या किसी एक के साथ सफ़र करने की सूरत में होने वाले सख़्त नुक़्सान से आगाह हो जैसे रास्ते में नुक़्सान पहुंचाने वाले वहशी दरिन्दे वग़ैरा का सामना होने के बारे में इ़ल्म रखता हो।

कबीरा नम्बर 100 : औरत का तन्हा सफ़र करना

या'नी औरत का ऐसी जगह तन्हा सफ़र करना जहां उसे अपनी आबरू रेज़ी का ख़दशा हो

《1》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो औरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती है उस के लिये ह़लाल नहीं कि वोह अपने बाप, भाई, शोहर, बेटे या किसी महरम के बिग़ैर **तीन** दिन या इस से ज़ियादा का सफ़र करे।"

(صحیح مسلم کتاب الحج، باب سفر المراۃ مع محرم الی حج وغیرہ، الحدیث:۳۲۷۰، ص ۹۰۱)

《2》...... बुख़ारी व मुस्लिम ही की एक रिवायत में "दो दिन" का तज़्किरा है।

(صحیح البخاری ، کتاب جزاء الصید،باب حج النساء،الحدیث ١٨٦٤،ص١٤٦)

(صحیح مسلم ،تاب الحج ، باب سفر المرأۃ مع محرم ، الحدیث ٣٢٦١ ، ص ٩٠١)

《3》...... बुख़ारी व मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में "एक दिन और एक रात की मसाफ़त" का तज़्किरा है। (صحیح البخاری ،کتاب التقصیر، باب فی کم یقصر الصلاۃ ، الحدیث ١٠٨٨ ، ص ٨٥)

《4》...... जब कि बुख़ारी व मुस्लिम ही की एक रिवायत में "एक दिन की राह" के सफ़र का ज़िक्र है। (صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب سفر المراۃ مع محرم ، الحدیث ٣٢٦٧ ، ص ٩٠١)

《5》...... और बुख़ारी व मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में "एक रात की राह" का तज़्किरा है।

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب سفر المرأۃ مع محرم ، الحدیث ٣٢٦٦،ص٩٠١)

《6》...... और अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में है : "दो मन्ज़िल का सफ़र करे।"

(سنن ابی داؤ د،کتاب المناسک ،باب فی المراۃ تحج بغیر محرم، الحدیث ١٧٢٤،١٧٢٥ ، ص ١٣٥١)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

मज़्कूरा क़ैद (या'नी आबरू रेज़ी के ख़दशे) के साथ औरत के तन्हा सफ़र करने को कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि इस सूरत पर अक्सर सख़्त ख़राबियां पैदा होती हैं और वोह ख़राबियां बदकार और फ़ासिक़ लोगों का उस औरत पर क़ाबू पा लेना है जो कि ज़िना का वसीला है और **वसाइल पर मफ़ासिद ही का हुक्म जारी होता है**, जब कि औरत के तन्हा सफ़र करने की हुरमत में येह क़ैद ज़रूरी नहीं क्यूं कि औरत के लिये महरम के बिग़ैर सफ़र करना हराम है अगर्चे सफ़र कम ही हो और किसी क़िस्म का अन्देशा भी न हो ख़्वाह किसी नेकी के लिये ही हो जैसे नफ़्ली हज या उ़म्रे के लिये हो और अगर्चे मक़ामे तन्ईम से औरतों ही के साथ क्यूं न हो और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इसे सग़ीरा गुनाहों में शुमार करने को इसी सूरत पर मह़मूल किया जाएगा ।

कबीरा नम्बर **101 : बद फ़ाली की बिना पर सफ़र न करना और वापस लौट आना**

《1》...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बद फ़ाली लेना शिर्क है, बद फ़ाली लेना शिर्क है और हर शख़्स के दिल में इस का ख़याल भी आता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तवक्कुल के ज़रीए उसे दूर फ़रमा देता है।"

(سنن ابی داؤد ، کتاب الکھانۃ والطیر،باب فی الطیرۃ ، الحدیث ۳۹۱۰ ، ص ۱۵۱۰)

हाफ़िज़ अबुल क़ासिम इस्फ़हानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस हदीसे पाक का मत़लब येह है कि मेरी उम्मत के हर शख़्स के दिल में इन में से कुछ न कुछ ख़याल आता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर उस शख़्स के दिल से येह ख़याल निकाल देता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करता है और उस बद फ़ाली पर साबित क़ाइम नहीं रहता।"

《2》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "परिन्दे उड़ा कर या किसी और चीज़ से बद शुगूनी मुराद लेना बे ब-र-कत कामों में से है।" (سنن ابی داؤد ، کتاب الکھانۃ والتطیر،باب فی الخط وزجرالطیر ،الحدیث:۳۹۰۷، ص ۱۵۱۰)

www.dawateislami.net

《3》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने अटकल पच्चू से ग़ैब की बात बताई या जूए के तीरों के ज़रीए किसी से क़सम उठवाई या बद शुगूनी की वजह से सफ़र से लौट आया वोह बुलन्द द-रजों तक हरगिज़ नहीं पहुंच सकता।"

(شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، فصل فی ذمه بناء مالا یحتاج ......الخ، الحدیث: ۱۰۷۳۹ ج۷، ص ۳۹۸)

तम्बीह :

पहली और दूसरी ह़दीसे पाक के ज़ाहिरी मा'ना की वजह से बद फ़ाली को गुनाहे कबीरा शुमार किया जाता है और मुनासिब भी येही है कि येह हुक्म उस शख़्स के बारे में हो जो बद फ़ाली की तासीर का ए'तिक़ाद रखता हो जब कि ऐसे लोगों के इस्लाम (या'नी मुसल्मान होने न होने) में कलाम है।

www.dawateislami.net

باب صلاة الجمعة

नमाज़े जुमुआ़ का बयान

कबीरा नम्बर 102 : बिला उ़ज़्र नमाज़े जुमुआ़ जमाअ़त के साथ न पढ़ना अगर्चे येह कहे : "मैं ज़ोहर की नमाज़ तन्हा पढ़ लेता हूं।"

《1》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े जुमुआ़ से रह जाने वाले लोगों के बारे में इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने इरादा कर लिया है कि किसी शख़्स को हुक्म दूं कि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाए फिर (बिला उ़ज़्र) जुमुआ़ से रह जाने वालों पर उन के घरों को जला दूं।"

(صحيح مسلم ،كتاب المساجد،باب فضل صلاة الجماعة......الخ،الحديث:١٤٨٥،ص٧٧٩)

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने मिम्बर के ज़ीने पर बैठे येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "लोग जुमुआ़ न पढ़ने के अ़मल से बाज़ आ जाएं वरना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन के दिलों पर मोहर लगा देगा फिर वोह ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे।"

(صحيح مسلم ،كتاب الجمعة ، باب التغليظ فى ترك الجمعة ، الحديث ٢٠٠٢ ، ص ٨١٣)

《3》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने **तीन** जुमुए सुस्ती की वजह से जानते हुए छोड़ दिये उस के दिल पर मोहर लगा दी जाएगी।"

(سنن ابى داؤد ،كتاب الصلاة،باب التشديد فى ترك الجمعة ،الحديث:١٠٥٢،ص ١٣٠١)

《4》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी उ़ज़्र के बिग़ैर तीन जुमुए छोड़ दिये वोह मुनाफ़िक़ है।"

(ابن حزيمة،كتاب الجمعة،باب ذكر الدليل......الخ ،الحديث:١٨٥٧،ج٣ ،ص١٧٦)

《5》...... एक और रिवायत में है : "जिस ने तीन जुमुए किसी उ़ज़्र के बिग़ैर छोड़ दिये वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से बे अ़लाक़ा है।"

《6》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी ज़रूरत के बिग़ैर तीन मरतबा जुमुआ़ छोड़ दिया **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के दिल पर मोहर लगा देगा।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب اقامة الصلوات ، باب فيمن ترك الجمعة من غير عذر ، الحديث ١١٢٦ ، ص ٢٥٤٢)

《7》...... सय्यिदुना इमाम बैहक़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की एक रिवायत में इतना ज़ाइद है : "और उस के दिल को मुनाफ़िक़ का दिल बना देगा।" (شعب الايمان،باب الحادى والعشرين ، فضل الجمعة ،الحديث:٣٠٠٥ ، ج٣ ، ص ١٠٣)

《8》...... एक और रिवायत में कि जिस की शवाहिद भी हैं येह है : "उसे मुनाफ़िक़ीन में लिख दिया जाएगा।" (مجمع الزوائد ،كتاب الصلاة،باب فيمن ترك الجمعة، الحديث: ٣١٧٨ ، ج٢ ،ص ٤٢٢)

www.dawateislami.net

﴿9﴾...... और एक रिवायत में है : "उस ने इस्लाम को ज़रूर पसे पुश्त डाल दिया।"

(مجمع الزوائد ،کتاب الصلاۃ ، باب فیمن ترک الجمعۃ، الحدیث ۳۱۷۷ ، ج۲ ،ص ۴۲۲)

﴿10﴾...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जुमुआ के दिन अज़ान सुनने के बा वुजूद नमाज़ में हाज़िर न होने वाले लोग अपने फ़े'ल से ज़रूर बाज़ आ जाएं वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों पर मोहर लगा देगा तो वोह ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۱۹۷،ج۱۹،ص۹۹)

﴿11﴾...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें खुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मरने से पहले अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लो, मश्गूलिय्यत से पहले नेक आ'माल में जल्दी कर लो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कसरत से याद कर के और ज़ाहिर व पोशीदा कसरत से स-दक़ा कर के अपने रब से नाता जोड़ लो कि तुम्हें रिज़्क़ दिया जाएगा, तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी परेशानियां दूर कर दी जाएंगी और जान लो ! मेरी इस जगह, इस दिन, इस महीने और इस साल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ियामत तक के लिये तुम पर जुमुआ फ़र्ज़ फ़रमा दिया है लिहाज़ा जो मेरी हयाते ज़ाहिरी में या मेरे बा'द हाकिमे इस्लाम की मौजू-दगी में ख़्वाह वोह आदिल हो या ज़ालिम, इसे हलका जान कर या बतौरे इन्कार छोड़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बिखरे हुए काम जम्अ न फ़रमाएगा और न ही उस के काम में ब-र-कत देगा, सुन लो ! जब तक वोह तौबा न करेगा उस की कोई नमाज़ है न ज़कात, न हज, न रोज़ा और न ही कोई नेक अमल जब तक तौबा करे और जो तौबा कर ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।"

(سنن ابن ماجۃ ،ابواب اقامۃ الصلوات،با ب فی فرض الجمعۃ ،الحدیث:۱۰۸۱،ص۲۵۴۰)

तम्बीह :

बयान कर्दा इन अहादीसे मुबा-रका से इस गुनाह का कबीरा गुनाहों में से होना बिल्कुल वाज़ेह है और बहुत से उ-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی ने इस के कबीरा होने की सराहत भी की है, अब्वाबे फ़िक़्ह में मज़्कूर वोह अफ़राद जिन्हें कोई उज़्र न हो, उन पर जमाअत के साथ जुमुआ अदा करना बिल इज्माअ फ़र्ज़े ऐन है, बल्कि येह तो ज़रूरिय्याते दीन में से है लिहाज़ा जो मुसल्मान कहलाने वाला शख़्स नमाज़े जुमुआ छोड़ने को हलाल समझे ज़ाहिरन उस पर हुक्मे कुफ़्र होना चाहिये क्यूं कि नमाज़े जुमुआ फ़र्ज़ होने पर सब का इत्तिफ़ाक़ है और येह ज़रूरिय्याते दीन में से भी है इसी वजह से अगर कोई शख़्स कहे : "मैं नमाज़े ज़ोहर पढ़ूंगा, जुमुआ नहीं।" तो हमारे या'नी शाफ़िइय्यों के नज़्दीक उसे क़त्ल किया जाएगा क्यूं कि येह फ़र्ज़े ऐन को छोड़ने के मु-तरादिफ़ है।

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ह़लीमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "नमाज़े जुमुआ़ को किसी दूसरी नमाज़ की वजह से छोड़ देना सग़ीरा गुनाह है।" यहां इन के क़ौल में किसी दूसरी नमाज़ से मुराद जुमुआ़ के बदले ज़ोहर की नमाज़ पढ़ना है और उन की येह बात कि "येह सग़ीरा गुनाह है" मह़ल्ले नज़र है। जैसा कि सय्यिदुना अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बयान फ़रमाया।

शायद सय्यिदुना ह़लीमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का येह बयान इस ज़ईफ़ क़ौल पर मब्नी है जो येह है : "जो येह कहे कि मैं ज़ोहर पढ़ूंगा जुमुआ़ नहीं पढ़ूंगा तो उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा।" और इसी त़रह़ येह क़ौल कि "**जुमुआ़ नमाज़े ज़ोहर की क़स्र है**" भी ज़ईफ़ है जब कि सह़ीह़ तर क़ौल येह है कि ऐसे शख़्स को क़त्ल किया जाएगा (अह़्नाफ़ के नज़्दीक क़त्ल नहीं बल्कि क़ैद किया जाएगा) क्यूं कि नमाज़े जुमुआ़ एक मुस्तक़िल नमाज़ है नमाज़े ज़ोहर का बदल नहीं, लिहाज़ा इसे छोड़ देना कबीरा गुनाह है अगर्चे वोह येह कहता हो कि मैं ज़ोहर पढ़ूंगा।

नमाज़े जुमुआ़ न पढ़ने का कफ़्फ़ारा :

《12》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी उ़ज़्र के बिग़ैर नमाज़े जुमुआ़ छोड़ दी वोह एक दीनार स-दक़ा करे और जो न पाए वोह निस्फ़ दीनार स-दक़ा करे।"[1] (سنن النسائی،کتاب الجمعة ، باب کفارة من ترك الجمعة من......الخ ، الحدیث:١٣٧٣،ص٢١٧٧)

《13》...... एक और रिवायत में है : "एक दिरहम या निस्फ़ दिरहम स-दक़ा करे या एक साअ़ या एक मुद स-दक़ा कर दे।"

(السنن الکبری للبیھقی،کتاب الجمعة ،باب ماورد فی کفارة من ترك الجمعه ......الخ ، الحدیث:٥٩٩٠،ج٣،ص٣٥٢)

《14》...... जब कि एक और रिवायत में है : "एक या निस्फ़ साअ़ गन्दुम स-दक़ा करे।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الصلاة،باب کفارة من ترکھا،الحدیث:١٠٥٤،ص١٣٠١)

नोट : ह़दीसे पाक में मज़्कूर "**साअ़**" और "**मुद**" दो पैमानों के नाम हैं।

---

1 : "येह दीनार तसद्दुक़ करना शायद इस लिये हो कि क़बूले तौबा के लिये मुईन (या'नी मददगार) हो वरना ह़क़ीक़तन तो तौबा करना फ़र्ज़ है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 51)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 103 : जुमुआ़ के दिन लोगों की गरदनें फलांगना

《1》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने जुमुआ़ के दिन लोगों की गरदनें फलांगीं उस ने जहन्नम के लिये पुल बना लिया।"

(جامع الترمذی ، ابواب الجمعة ، باب فی کراهية التخطی يوم الجمعة ، الحديث ٥١٣،ص ١٦٩٥)

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि "सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों से ख़ित़ाब फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स लोगों की गरदनें फलांगता हुवा आया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब आ कर बैठा गया, फिर जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ा चुके तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां ! तुझे हमारी जमाअ़त में से होने से किस चीज़ ने मन्अ़ किया ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने चाहा कि मैं उस जगह बैठूं जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाह में हो।" तो सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें लोगों की गरदनें फलांगते और उन्हें ईज़ा पहुंचाते हुए देखा, जिस ने किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।" (المعجم الاوسط ، الحديث:٣٦٠٧ ،ج٢،ص٣٨٧)

《3》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स जुमुआ़ के दिन लोगों की गरदनें फलांगता है और इमाम के (ख़ुत़्बा देने के लिये) निकलने के बा'द दो अफ़राद को दरमियान से चीरता (या'नी अलग कर देता) है, वोह अपनी अंतड़ियां आग में डालने वाले की त़रह़ है।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،الحديث:١٥٤٤٧ ،ج ٥ ،ص٢٦٣)

मुह़द्दिसीने किराम عَلَيْهِم رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस हुक्म को जुमुआ़ के साथ ख़ास करना ग़-लबे के ए'तिबार से है क्यूं कि ज़ियादा तर येह काम जुमुआ़ के दिन होते हैं।"

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि रसूले अन्वर, साह़िबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के दिन ख़ुत़्बा दे रहे थे कि एक शख़्स लोगों की गरदनें फलांगता हुवा आया, तो हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तम्बीह फ़रमाते हुए उसे इर्शाद फ़रमाया : "बैठ जा, तूने बहुत ईज़ा दी।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الصلاة،باب تخطی رقاب النا س...... الخ ،الحديث:١١١٨،ص١٣٠٥)

《5》...... एक और रिवायत में है : "तूने ईज़ा दी और ईज़ा पाई।"

(صحيح ابن خزيمة ،کتاب الجمعة،باب النهی عن تخطی الناس،الحديث:١٨١١،ج٣،ص١٥٦)

www.dawateislami.net

《6》...... और एक रिवायत में है कि "बैठ जा ! तू देर से आया है।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب اقامة الصلوات،باب ماجاء فی النهی عن تخطی......الخ ،الحديث:١١١٥، ص٢٥٤٢)

तम्बीह :

इस गुनाह को कबीरा गुनाहों में बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की पैरवी करते हुए शुमार किया गया है, शायद उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने उस के कबीरा होने की दलील इन्हीं अह़ादीसे मुबा-रका से ह़ासिल की है, उन का इस्तिद्लाल अगर्चे ह़क़ीक़त से क़रीब है मगर हमारे नज़्दीक सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ येह अ़मल मक्रूहे तन्ज़ीही है[1] हमारे मौक़िफ़ और इन अह़ादीसे मुबा-रका में तत़्बीक़ की सूरत येह है कि इन अह़ादीसे मुबा-रका को उस शख़्स पर मह़मूल किया जाए जो उ़र्फ़ के ए'तिबार से लोगों को सख़्त ईज़ा देता हो और ईज़ा कम हो तो उसे कराहते तन्ज़ीहा पर मह़मूल किया जाए और अ़न्क़रीब एक ऐसी रिवायत बयान की जाएगी जिस में ह़ल्क़े के वस्त़ में बैठने का बयान है।

---

1 : अह़नाफ़ के नज़्दीक : "जुमुआ़ के दिन मुक़्तदी का इमाम से क़रीब होना अफ़्ज़ल है मगर येह जाइज़ नहीं कि इमाम से क़रीब होने के लिये लोगों की गरदनें फलांगे अलबत्ता अगर इमाम अभी ख़ुत़्बा को नहीं गया है और आगे जगह बाक़ी है तो आगे जा सकता है और ख़ुत़्बा शुरूअ़ होने के बा'द आया तो मस्जिद के किनारे ही बैठ जाए।"

(बहारे शरीअ़त, जि.1, ह़िस्सा : 4, स. 55)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 104 : हल्के के दरमियान आ कर बैठना

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हल्के (या'नी दाएरे) के दरमियान बैठने वाले पर ला'नत फ़रमाए।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب ، باب الجلوس وسط الحلقة ا،لحدیث ٤٨٢٦ ، ص ١٥٧٨ "لعن الله" بدله"لعن رسول الله")

﴾2﴿...... एक और रिवायत में है : "एक शख़्स हल्के के दरमियान में आ कर बैठ गया तो हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने हक़ परस्त से इस पर ला'नत की गई है।" या फिर येह इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस से उस शख़्स पर ला'नत फ़रमाई जो हल्के के दरमियान आ कर बैठता है।"

(جامع الترمذی ،ابواب الادب ، باب ماجاء فی کراهية العقود ......الخ ، الحديث ٢٧٥٣ ،ص ١٩٢٩)

﴾3﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी क़ौम का हल्क़ा उन की इजाज़त के बिग़ैर फलांगा वोह गुनाहगार है।" (المعجم الکبیر ، الحدیث ٧٩٦٣ ، ج ٨ ، ص ٢٤٦)

﴾4﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दो आदमियों के दरमियान उन की इजाज़त के बिग़ैर न बैठो।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب ، باب فی الرجل یجلس بین الرجلین ، الحدیث ٤٨٤٤ ، ص ١٥٧٩)

﴾5﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "किसी के लिये जाइज़ नहीं कि वोह दो आदमियों की इजाज़त के बिग़ैर उन में जुदाई डाले।"

(جامع الترمذی ،ابواب الادب ، باب ماجاء فی کراهية الجلوس بین...... الخ، الحديث ٢٧٥٢ ، ص ١٩٢٩)

﴾6﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में से कोई शख़्स जब किसी मजलिस में आए तो अगर उस की ख़ातिर कुशा-दगी पैदा की जाए तो वहां बैठ जाए वरना जहां कुशा-दगी पाए वहां जा कर बैठे।"

(شعب الایمان ، باب فی حسن الخلق ، فصل فی التو اضع ، الحدیث ٨٢٤٣، ج٦، ص ٣٠٠)

तम्बीह :

इस गुनाह को बा'ज़ शाफ़ेई उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने कबीरा गुनाहों में शुमार किया है, शायद उन्हों ने अहादीसे मुबा-रका में मज़्कूर ला'नत से इस के कबीरा गुनाह होने पर इस्तिदलाल

www.dawateislami.net

किया है, अगर उ़र्फ़न इस से किसी को ईज़ा पहुंचती हो तो ज़ाहिरी इस्तिदलाल येही है और इसी पर ह़दीसे पाक मह़मूल है, जब कि हमारे अस्ह़ाब के इस क़ौल कि "येह अ़मल मक्रूह है।" को ईज़ा की कमी पर मह़मूल किया जाएगा और इस तफ़्सील की ताईद हमारा वोह बयान भी करता है जिसे हम ने कुतुबे फ़िक़्ह के बाब "تَقْبِيْلُ الْحَجَرِ الْاَسْوَدِ عِنْدَ الزَّحْمَةِ" और "حَمْلُ السِّلَاحِ فِیْ صَلٰوةِ الْخَوْفِ" वग़ैरा में ज़िक्र किया है कि अगर ईज़ा कम हो तो मक्रूह है वरना ह़राम। और इसी से वाज़ेह़ हो गया कि अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वाल और ह़दीसे पाक में कोई तज़ाद नहीं, इस में ग़ौर करो मैं ने कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा जो इस वज़ाह़त से वाक़िफ़ हो।

﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽

www.dawateislami.net

باب اللباس

लिबास का बयान

कबीरा नम्बर 105 : बिला उ़ज़्रे शर-ई रेशम पहनना

या'नी जैसे जूओं, खुजली या ख़ारिश वग़ैरा किसी उ़ज़्र के बिग़ैर आ़क़िल बालिग़ मर्द या मुख़न्नस (हीजड़े) का ख़ालिस रेशम या ऐसा लिबास पहनना जिस का अक्सर ह़िस्सा वज़्न के ए'तिबार से रेशम हो, ज़ाहिरन रेशम नज़र आने का ए'तिबार नहीं।

《1》...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: "रेशम मत पहना करो क्यूं कि जो दुन्या में रेशम पहनेगा वोह आख़िरत में न पहन सकेगा।"

(صحیح مسلم ،کتاب اللباس ، والزینة ، باب تحریم لبس الحریر ، الحدیث ۵۴۱۰، ص ۱۰۴۹)

《2》...... नसाई शरीफ़ में येह इज़ाफ़ा है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं: "जो दुन्या में रेशम पहनेगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई।"

وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝ (پ۱۷،الحج:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान: और वहां इन की पोशाक रेशम है।

(السنن الکبری للنسائی،سورۃ الحج،باب قولہ تعالیٰ "ولباسھم فیھاحریر" الحدیث:۱۱۳۴۳،ج۶ص۴۱۱)

《3》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: "रेशम वोही पहनता है जिस का कोई ह़िस्सा नहीं।" बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है: "जिस का आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं।"

(صحیح البخاری ،کتاب اللباس،باب لبس الحریر للرجال......الخ،الحدیث:۵۸۳۵، ص ۴۹۷)

《4》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: "जो दुन्या में रेशम पहनेगा वोह आख़िरत में न पहन सकेगा अगर्चे वोह जन्नत में दाख़िल भी हो जाए तो अहले जन्नत तो रेशम पहनेंगे मगर वोह न पहन सकेगा।"

(صحیح ابن حبان،کتاب اللباس و آدابہ،الحدیث:۵۴۱۳،ج ۷ ،ص۳۹۷)

《5》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: "जिस ने दुन्या में रेशम पहना आख़िरत में न पहन सकेगा।"

(صحیح البخاری ،کتاب اللباس ، باب لبس الحریر للرجال ......الخ ، الحدیث ۵۸۳۴، ص ۴۹۷)

《6》...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم रिवायत

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रेशम को दाएं हाथ में और सोने को बाएं हाथ में पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : "येह दोनों चीज़ें मेरी उम्मत के मर्दों पर ह़राम हैं।"

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی الحریر للنساء، الحدیث ٤٠٥٧، ص ١٥١٩)

《7》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने दुन्या में रेशम पहना वोह आख़िरत में न पहन सकेगा, जिस ने दुन्या में शराब पी वोह आख़िरत में न पी सकेगा और जिस ने दुन्या में सोने चांदी के बरतनों में पानी पिया वोह आख़िरत में इन के ज़रीए न पी सकेगा।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "अहले जन्नत का लिबास रेशम अहले जन्नत का मश्‍रूब शराबे त़हूर और अहले जन्नत के बरतन सोने के हैं।"

(المستدرک، کتاب الاشربہ، باب من لبس الحریر فی الدنیا ......الخ، الحدیث: ٧٢٩٨، ج٥، ص١٩٥)

《8》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़ुत़्बे में येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना गया : "अपनी औ़रतों को रेशम का लिबास न पहनाओ क्यूं कि मैं ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रेशम मत पहना करो क्यूं कि जो दुन्या में रेशम पहनेगा वोह आख़िरत में न पहन सकेगा।"

(صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم لبس الحریر ......الخ، الحدیث ٥٤١٠، ص ١٠٤٩)

《9》...... नसाई शरीफ़ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "और जो आख़िरत में रेशम न पहन सके वोह जन्नत में दाख़िल न होगा क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝ (پ١٧، الحج:٢٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वहां इन की पोशाक रेशम है।

(السنن الکبرٰی للنسائی، کتاب الزینۃ، باب لبس الحریر، الحدیث:٩٥٨٤، ج٥، ص٤٦٥)

《10》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने घर वालों को ज़ेवर और रेशम से मन्अ़ करते और इर्शाद फ़रमाते : "अगर तुम जन्नत के ज़ेवर और रेशम को पसन्द करते हो तो दुन्या में येह दो चीज़ें न पहना करो।"

(المستدرک، کتاب اللباس، باب من کان یومن باللہ ......الخ، الحدیث ٧٤٨٠، ج٥، ص ٢٦٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ और इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इस वई़द कि "जो दुन्या में इसे पहनेगा आख़िरत में न पहन सकेगा।" से येह समझना कि येह औ़रतों और इन की मिस्ल उन अफ़राद के ह़क़ में भी जारी होती है जिन के लिये इस का पहनना जाइज़ है, फ़क़त़ एह़तियात़ की बिना पर था, वरना औ़रतों के लिये इस के इस्ति'माल के जवाज़ से येही ज़ाहिर होता है कि इन्हें आख़िरत में रेशम के इस्ति'माल से मन्अ़ न किया जाएगा।

www.dawateislami.net

﴾11﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रेशम की एक क़ुबा तोहूफ़तन पेश की गई, जिस का पिछला हिस्सा चाक था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे ज़ैबे तन फ़रमा कर नमाज़ अदा फ़रमाई, फिर जब नमाज़ पूरी हो गई तो उसे ज़ोर से खींच कर उतार दिया गोया की उसे ना पसन्द फ़रमाते हों, फिर इर्शाद फ़रमाया : "परहेज़ गारों को ऐसा लिबास नहीं पहनना चाहिये।" (صحیح مسلم ،کتاب اللباس ، باب تحریم لبس الحریر ......للرجال ، الحدیث ۵۴۲۷، ص۱۰۴۹)

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "मैं ने मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने जान बूझ कर मुझ पर झूट बांधा उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।" और मैं तुम्हें गवाह बना कर कहता हूं कि मैं ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने दुन्या में रेशम पहना वोह आख़िरत में इस से मह़रूम रहेगा।"

(صحیح ابن حبان ،کتاب اللباس وآدابه،الحدیث:۵۴۱۲،ج۷،ص۳۹۶)

﴾13﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें सोने चांदी के बरतनों में खाने पीने और रेशम व दीबाज (के कपड़े) पहनने या इन पर बैठने से मन्अ़ फ़रमाया है।"

(صحیح البخاری ،کتاب اللباس، باب افتراش الحریر ، الحدیث ۵۸۳۷، ص ۴۹۸)

﴾14﴿...... साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की मुलाक़ात और उस के ह़िसाब की उम्मीद रखता है वोह रेशम से (बतौ़रे पहनने या इस पर बैठने के) फ़ाएदा न उठाए।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، الحدیث ۲۲۳۶۵، ج۸ ، ص ۳۰۶)

﴾15﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दुन्या में रेशम वोही पहनता है जिसे आख़िरत में रेशम पहनने की उम्मीद नहीं होती।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث ۸۳۶۳ ، ج۳ ،ص۲۲۱)

﴾16﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "उन लोगों का क्या ह़ाल है कि अपने नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ से इतनी सख़्त वईदें पहुंचने के बा वुजूद भी वोह रेशम को अपने लिबास या घरों में इस्ति'माल करते हैं।" (المرجع السابق)

﴾17﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "इस उम्मत में एक क़ौम खाने पीने और लह्वो लइ़ब में मश्ग़ूल हो कर रात गुज़ारेगी, फिर सुब्ह़ इस ह़ाल में करेगी कि उन की शक्लें बिगड़ कर ख़िन्ज़ीर और बन्दर हो चुकी होंगी और उन के साथ धंसाने और पथ्थर बरसाने का मुआ-मला होगा यहां तक कि लोग सुब्ह़ करेंगे तो कहेंगे : "आज रात फ़ुलां क़ौम धंसा दी गई, आज रात फ़ुलां के घर को धंसा दिया गया।" और उन पर आस्मान से पथ्थर बरसाए जाएंगे जैसा कि क़ौमे लूत़ के क़बीलों और घरों पर बरसाए गए और उन की त़रफ़ सख़्त हवा भेजी जाएगी जैसा कि

www.dawateislami.net

क़ौमे आ़द के क़बीलों और घरों की त़रफ़ भेजी गई, येह उन के शराब पीने, रेशम पहनने, गाने वाली औ़रतें अपनाने, सूद खाने और क़त़्ए़ रेह़मी की वजह से होगा।"

(الترغيب والترهيب ،كتاب الحدود ، الترهيب من شرب الخمر ......الخ ،الحديث ٣٥٩٤ ،ج٣ ، ص ١٩٩)

《18》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत में ऐसी क़ौमें ज़रूर होंगी जो रेशम को ह़लाल जानेंगी उन में से कुछ लोग क़ियामत तक के लिये ख़िन्ज़ीर और बन्दर बना दिये जाएंगे।"

(سنن ابی داؤد،كتاب اللباس،باب ماجاء فی الخز،الحدیث٤٠٣٩،ص١٥١٨)

《19》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मेरी उम्मत पांच चीज़ों को ह़लाल समझने लगेगी तो हलाकत में मुब्तला हो जाएगी (1) एक दूसरे पर ला'नत करना (2) लोगों का शराब पीना (3) रेशम का लिबास पहनना (4) गाने वाली औ़रतें रखना और (5) मर्दों का मर्दों पर और औ़रतों का औ़रतों पर इक्तिफ़ा करना।"

(مجمع الزوائد ،كتاب الفتن ،باب ثان فی امارات الساعة، الحديث ١٢٤٧٩ ، ج٧ ، ص ٦٤٠)

《20》...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख़्स के पास ह़ाज़िर होने की इजाज़त चाही वोह रेशम के तस्वीर वाले गद्दे से टेक लगाए हुए था, पस उस ने तक्या फ़ौरन हटा दिया और आप से कहने लगा : "मैं ने येह आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़ात़िर हटाया है।" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "तू कितना अच्छा आदमी है अगर तू उन लोगों में से जिन के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह इर्शाद फ़रमाया है :

اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ فِىۡ حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا
(پ٢٦،الاحقاف:٢٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन से फ़रमाया जाएगा तुम अपने ह़िस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे इस के साथ टेक लगाने से दहक्ते हुए अंगारों पर बैठना ज़ियादा पसन्द है।"

(الترغيب والترهيب ،كتاب اللباس والزينة ، باب ترهيب الرجال من لبس ......الخ ، الحديث ٣١٦١ ، ج٣ ، ص ٦٧)

《21》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रेशम की जैब वाला एक जुब्बा देखा तो इर्शाद फ़रमाया : "येह क़ियामत के दिन आग का तौक़ है।"

(المعجم الاوسط ، الحديث ٨٠٠٠، ج٦، ص ٦٢)

येह हुक्म किनारों से रेशम वाले जुब्बे के इलावा का है और इस की दलील येह है कि सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक जुब्बा था जो किनारों से रेशम का था।

(تلخيص الحبير، كتاب صلاة العيدين،الحديث:٦٧٩،الجزء٢،ص ٨١)

《22》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

"जिस ने रेशमी लिबास पहना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत एक दिन आग या आग का लिबास पहनाएगा।" (المعجم الكبير،الحديث:١٧٠ /١٧١،ج ٢٤،ص ٦٥)

﴾23﴿...... एक और रिवायत में है कि रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने दुन्या में रेशम का लिबास पहना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में ज़िल्लत का लिबास या जहन्नम का लिबास पहनाएगा।"

(مجمع الزوائد،كتاب اللباس، باب ماجاء فى الحرير والذهب، الحديث:٨٦٤٤،ج ٥،ص ٢٤٩)

﴾24﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने रेशमी लिबास पहना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पूरे एक दिन आग का लिबास पहनाएगा जो तुम्हारे दिनों जैसा न होगा बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अय्याम बहुत त़वील हैं।"

(مجمع الزوائد،كتاب اللباس، باب ماجاء فى الحرير والذهب، الحديث ٨٦٤٦،ج ٥،ص ٢٥٠)

कबीरा नम्बर 106 :

मर्द का ज़ेवर पहनना

या'नी आ़क़िल व बालिग़ मर्द का सोने या चांदी का ज़ेवर पहनना जैसे सोने की अंगूठी या अंगूठी के इ़लावा चांदी का ज़ेवर पहनना

﴾1﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि रेशम और सोना हरगिज़ न पहने।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث:، ٢٢٣١١،ج٨،ص ٢٩٣)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है "मेरा जो उम्मती इस ह़ाल में मरा कि शराब पीता था अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस पर (जन्नती) शराब पीना ह़राम कर देगा और मेरा जो उम्मती इस ह़ाल में मरा कि दुन्या में सोने का ज़ेवर पहनता था अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस पर सोना पहनना ह़राम फ़रमा देगा।" (المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث:٦٩٦٦، ج٢،ص ٦٥٩)

﴾3﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो उसे उतार कर फेंक दिया और इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से कोई आग के अंगारे का इरादा करता है फिर उसे अपने हाथ में रख लेता है।" हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जाने के बा'द उस शख़्स से कहा गया : "अपनी अंगूठी उठा लो और इसे बेच कर नफ़्अ़ उठाओ।" तो उस ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस अंगूठी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फेंक दिया मैं उसे हरगिज़ नहीं उठाऊंगा।"

(صحيح مسلم،كتاب اللباس والزينة، تحريم خاتم الذهب على......الخ،الحديث: ٥٤٧٢، ص ١٠٥٢)

www.dawateislami.net

﴿4﴾...... नजरान से एक शख़्स शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हुवा, उस ने सोने की अंगूठी पहन रखी थी, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से अपना रुख़े अन्वर फैर लिया और इर्शाद फ़रमाया : ''तुम इस ह़ाल में मेरे पास आए हो कि तुम्हारे हाथ में आग का अंगारा है।''

(سنن النسائی ،کتاب الزینة ، باب حدیث ابی ھریرة والاختلاف علی ......الخ ، الحدیث: ۵۱۹۱، ص ۲۴۲۱)

﴿5﴾...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''ओ़रतों को दो सुर्ख़ चीज़ों या'नी सोने और ज़र्द रंग से रंगे हुए लिबास ने हलाकत में डाल दिया।''

(صحیح ابن حبان ،کتاب الرھن ،باب ماجاء فی الفتن ، الحدیث: ۵۹۳۷، ج۷ ، ص ۵۸۳)

﴿6﴾...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''मुझे ख़्वाब में दिखाया गया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने जन्नत की आ'ला मन्ज़िलों में मुहाजिरीन फ़ु-क़रा और मुअमिनीन की औलाद को पाया जब कि ओ़रतों और अग़्निया में से एक भी वहां न था, फिर मुझे बताया गया : ''अग़्निया तो जन्नत के दरवाज़े पर हैं उन से ह़िसाब लिया जा रहा है और उन के गुनाह ज़ाइल किये जा रहे हैं जब कि ओ़रतों को सोने और रेशम ने ग़फ़्लत में डाल दिया है।''

(الزھدالکبیرللبیھقی،فصل فی ترك الدنیا......الخ،الحدیث:۴۴۵،ص۱۸۵)

इस ह़दीसे पाक से पिछली ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ ''ओ़रतों के लिये हलाकत है।'' के मा'ना भी मा'लूम हो गए कि येह दोनों चीज़ें ओ़रतों के भलाई से ग़ाफ़िल होने और उस से रू गर्दानी करने का सबब हैं, ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं क्यूं कि येह दोनों चीज़ें बिल इज्माअ़ ओ़रतों के लिये ह़लाल हैं।

तम्बीह :

रेशम पहनने को गुनाहे कबीरा में शुमार करना गुज़श्ता सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में आने वाली सख़्त वईद से ज़ाहिर है मगर हमारे जम्हूर शाफ़ेई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के नज़्दीक रेशम पहनना सग़ीरा गुनाह है, शायद उन की नज़र कबीरा गुनाह की इस ता'रीफ़ पर है कि ''जिस गुनाह पर सज़ा लाज़िम आए वोह कबीरा है।'' ह़ालां कि हम बयान कर चुके हैं कि सह़ीह़ क़ौल इस के ख़िलाफ़ है, लिहाज़ा इन अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ौर करते वक़्त इस बात को नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता कि इन (अह़ादीसे मुबा-रका) में सख़्त और ह़त्मी वईद की बिना पर येह अ़मल कबीरा गुनाह है, सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वग़ैरा ने इसी को इख़्तियार किया और इमामुल ह़-रमैन भी इसी त़रफ़ माइल हुए और जिस सोने के पहनने को मैं ने कबीरा गुनाह शुमार किया है वोह मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका में मौजूद सख़्त वईद की बिना पर कबीरा कहलाने में रेशम से ज़ियादा औला है जब कि मेरे नज़्दीक चांदी के ज़ेवरात को इस हुक्म के साथ मुल्ह़िक़ करने का भी एह़तिमाल है अगर्चे इस में येह फ़र्क़ बयान करना मुम्किन है कि सोने के इस्ति'माल का गुनाह ज़ियादा सख़्त है, इसी लिये

www.dawateislami.net

हमारे बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया "मर्द के लिये चांदी की अंगूठी के इलावा के बा'ज़ ज़ेवरात पहनना भी जाइज़ है।" जब कि फ़ु–क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने चांदी की अंगूठी के जाइज़ बल्कि मुस्तहब होने और सोने की अंगूठी के ह़राम होने पर इत्तिफ़ाक़ किया है।[1]

फ़वाइदो मसाइल :

अगर रेशम पर कोई कपड़ा वग़ैरा डाला हुवा हो तो उस पर बैठना जाइज़ है अगर्चे वोह बारीक और बोसीदा ही क्यूं न हो लेकिन अगर वोह फटा हुवा हो तो जाइज़ व ह़लाल नहीं और उसे ओढ़ना या सित्र पोशी के लिये इस्ति'माल करना ह़राम है जब कि ब क़दरे आ़दत पर्दे के त़ौर पर लटकाना ह़लाल है, इसी त़रह़ आस्तीन पर चार उंगल के बराबर बेल बूटे (या'नी गोटा किनारी), तेज का धागा, नेज़े का झन्डा और मुस्ह़फ़ का जुज़्दान बनाना, मज्नून और क़रीबुल बुलूग़ बच्चे को सोने चांदी के ज़ेवरात पहनाने की त़रह़ है।[2]

सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम ने रेशम इस्ति'माल करने वाले के गुनाहगार होने का फ़तवा दिया है मगर येह गुनाह रेशम पहनने से कम है, जब कि सय्यिदुना इमाम न–ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रेशम पर महर की रक़म लिखने को ह़राम क़रार दिया है और इसी पर ए'तिमाद किया जाता है।

इसी त़रह़ घर और मस्जिद को रेशम या तस्वीरों से मुज़य्यन करना ह़राम है अगर्चे किसी औ़रत ही का घर हो जब कि इन दो के इ़लावा दीगर अश्या से घरों को मुज़य्यन करना मक्रूह है।[3] ज़ा'फ़रान, उ़स्फ़ुर और वर्स से रंगे हुए कपड़े का भी हमारे बयान कर्दा कलाम के मुत़ाबिक़ येही हुक्म है और येह फ़वाइद "**शर्हुल उ़बाब**" में बयान किये गए हैं।

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मर्द को ज़ेवर पहनना मुत़्लक़न ह़राम है सिर्फ़ चांदी की एक अंगूठी जाइज़ है जो वज़्न में (नगीने के इ़लावा) एक मिस्क़ाल या'नी साढ़े चार माशा से कम हो।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, हि़स्सा : 16, स. 49)

2 : अह़्नाफ़ के नज़्दीक : "चार उंगल के बराबर बेल बूटे और मुस्ह़फ़ का जुज़्दान रेशम का बनाना वग़ैरा जाइज़ है लेकिन मज्नून और क़रीबुल बुलूग़ बच्चे को सोने, चांदी के ज़ेवरात पहनाना ह़राम है और रेशम के बिछोने पर बैठना, लैटना और उस का तक्या लगाना जाइज़ है रेशम के पर्दे दरवाज़ों पर लटकाना मक्रूह है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, हि़स्सा : 16, स. 40,41)

3 : अह़्नाफ़ के नज़्दीक : "ग़ैर ज़ी रूह़ या'नी बे जान की तस्वीर से मकान आरास्ता करना जाइज़ है जैसा कि तु़ग़रे और कत्बों से मकान को सजाने का रवाज है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, हि़स्सा : 16, स. 129)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **107 : मर्दों और औरतों का एक दूसरे से मुशा-बहत इख़्तियार करना**

या'नी मर्दों का औरतों से उ़र्फ़ में उन के साथ मख़्सूस उमूर म-सलन लिबास, कलाम, ह़-र-कत वग़ैरा में मुशा-बहत इख़्तियार करना, इसी त़रह़ औरतों का मर्दों से मुशा-बहत इख़्तियार करना।

《**1**》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि "ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने औरतों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाले मर्दों और मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली औरतों पर ला'नत फ़रमाई है।"

(صحیح البخاری ،کتاب اللباس ، باب المتشبهين بالنساء والمتشبها ت ......الخ ،الحدیث: ۵۸۸۵،ص ۵۰۱)

《**2**》...... एक औरत गले में कमान लटकाए सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब से गुज़री तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्दों की मुशा-बहत करने वाली औरतों और औरतों की मुशा-बहत करने वाले मर्दों पर ला'नत फ़रमाता है।"

(المعجم الاوسط ، الحدیث: ۴۰۰۳ ، ج ۳ ، ص ۱۰۶)

《**3**》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़नाने मर्दों और मर्दानी औरतों पर ला'नत फ़रमाई है।

(صحیح البخاری ،کتاب اللباس ، باب اخراج المتشبهين بالنساء ......الخ ، الحدیث: ۵۸۸۶، ص ۵۰۱)

ज़नाने मर्दों से मुराद औरतों की सी ह़-रकात करने वाले लोग हैं अगर्चे वोह कोई फ़ोह़्श ह़-र-कत न भी करते हों जब कि मर्दानी औरतों से मुराद मर्दों से मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली औरतें हैं।

《**4**》...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने औरत का लिबास पहनने वाले मर्द और मर्द का लिबास पहनने वाली औरत पर ला'नत फ़रमाई है।

(سنن ابی داؤد،کتاب اللباس،باب فی لباس النساء،الحدیث:۴۰۹۸،ص۱۵۲۲)

《**5**》...... रह़मते कौनैन, ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने औरतों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाले ज़नाने मर्दों और मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली मर्दानी औरतों पर और बियाबान में तन्हा सफ़र करने वाले पर ला'नत फ़रमाई है।

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی هريرة، الحدیث: ۷۸۶۰، ج۳ ،ص ۱۳۳)

《**6**》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "चार त़रह़ के लोगों पर दुन्या व आख़िरत में ला'नत भेजी जाती है और मलाएका इस पर आमीन कहते हैं (1) वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मर्द बना कर पैदा किया फिर उस ने अपने आप को औरत बना लिया और औरतों की मुशा-बहत इख़्तियार कर ली (2) वोह औरत जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने औरत बनाया मगर उस ने अपने आप को मर्दाना अन्दाज़ में ढाल लिया और मर्दों की

www.dawateislami.net

मुशा–बहत इख़्तियार कर ली (3) वोह शख़्स जो नाबीने को रास्ते से भटका दे और (4) **ह़सूर** या'नी त़ाक़त के बा वुजूद औ़रतों में रग़बत न रखने वाला और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ज़–करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही को **ह़सूर** पैदा फ़रमाया।''

(المعجم الكبير، الحديث: ٧٨٢٧، ج٨، ص ٢٠٤)

《7》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़–मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक **मुख़न्नस** (या'नी हीजड़े) को लाया गया, उस ने अपने हाथ पाउं महंदी से रंगे हुए थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''इस का क्या मुआ़–मला है ?'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''येह औ़रतों की मुशा–बहत इख़्तियार करता है।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे नक़ीअ़ (मदीने से दूर एक मक़ाम) की त़रफ़ जिला वत़न करने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया।

(سنن ابی داؤد، كتاب الادب، باب فی حكم المخنثين، الحديث: ٤٩٢٨، ص ١٥٨٤)

《8》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**तीन शख़्स** जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) वालिदैन का ना फ़रमान (2) दय्यूस[1] और (3) मर्दानी औ़रतें।''

(مسند الفردوس للديلمی، باب الثاء، الحديث: ٢٣٢٩، ج ١، ص ٣١٩)

《9》...... एक और रिवायत में है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**तीन** शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे (1) दय्यूस (2) मर्दानी औ़रतें और (3) शराब का आ़दी।'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज की : ''शराब के आ़दी को तो हम ने जान लिया, दय्यूस कौन है ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह शख़्स जो इस बात की परवाह नहीं करता कि उस के घर वालों के पास कौन कौन आता है।'' हम ने अ़र्ज़ की : ''मर्दानी औ़रतें कौन हैं ?'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मर्दों की मुशा–बहत इख़्तियार करती हैं।''

(مجمع الزوائد، كتاب النكاح، باب فيمن يرضى لاهله بالخبث، الحديث: ٧٧٢٢، ج٤، ص ٥٩٩)

---

1 : अमीरे अहले सुन्नत, अमीरे दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास **अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब ''**पर्दे के के बारे में सुवाल जवाब**'' सफ़ह़ा नम्बर 23 ता 25 में है : ''जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह ''दय्यूस'' हैं, दय्यूस के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन **ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ''**दुर्रे मुख़्तार**'' में लिखते हैं : ''दय्यूस वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए।''(رد المحتار على الدر المختار، كتاب الحدود، ج٦، ص١١٣) मा'लूम हुवा कि बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, मां बहनों और अपनी जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना मह़रम रिश्तेदारों, ग़ैर मह़रम मुलाज़िमों, चोकीदारों और ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले दय्यूस, जन्नत से मह़रूम, और जहन्नम के ह़क़दार हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''दय्यूस सख़्त अख़्बसे फ़ासिक़ (है) और फ़ासिक़े मो'लिन के पीछे नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी। उसे इमाम बनाना ह़लाल नहीं और उस के पीछे नमाज़ पढ़नी गुनाह और पढ़ी तो फैरना वाजिब।''

(ब ह़वाल फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 6, स. 583)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल वाज़ेह़ है जैसा कि आप इन सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका और इन में वारिद सख़्त वईद से जान चुके हैं जब कि हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इस मुशा-बहत इख़्तियार करने के बारे में दो क़ौल हैं (1) येह ह़राम है और सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस की तस्ह़ीह़ की है बल्कि इसी को सह़ीह़ क़रार दिया है (2) येह मक्रूह है सय्यिदुना राफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी किताब "अल मौज़ूअ़" में इसे सह़ीह़ क़रार दिया है। मगर सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ह़ुरमत का क़ौल सह़ीह़ और मुनासिब है बल्कि मैं ने इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया है। और कबीरा गुनाहों के बारे में कलाम करने वाले बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने भी इसे कबीरा गुनाह शुमार किया है और येह बिल्कुल वाज़ेह़ है और उस ह़दीसे पाक जिस में ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हाथ पाउं पर महंदी लगा कर औ़रतों से मुशा-बहत इख़्तियार करने पर हीजड़े को जिला वत़न फ़रमा दिया था से मा'लूम हुवा कि मर्द को हाथ और पाउं महंदी से रंगना ह़राम है बल्कि औ़रतों से मज़्कूरा मुशा-बहत की बिना पर कबीरा गुनाह है और बयान कर्दा ह़दीसे पाक इस पर सरा-ह़तन दलालत करती है, माज़ी क़रीब में जब यमन में येही मस्अला पेश आया तो वहां के उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया और उन्हों ने इस की ह़िल्लत व ह़ुरमत पर किताबें लिख कर 952 सि. हिजरी में मक्कए मुकर्रमा भेजीं, उन में से तीन किताबें इस की मुत़्लक़ ह़िल्लत पर और एक किताब इस की ह़ुरमत पर थी, उन्हों ने मुझ से ह़क़ ज़ाहिर करने का मुत़ा-लबा किया तो मैं ने इस मस्अले पर एक जामेअ़ किताब लिखी, जिस का नाम "شَنُّ الْغَارَةِ عَلٰی مَنْ اَظْهَرَ مَعَرَّةَ تَقَوُّلِهٖ فِی الْحِنَّاءِ وَعَوَارِهٖ" रखा ताकि वोह इस्मे बा मुसम्मा हो जाए, क्यूं कि ह़िल्लत (या'नी जाइज़ होने) के बा'ज़ क़ाइलीन ने इस मस्अले में मुबा-लग़े से इतना काम लिया कि इज्तिहाद का दा'वा कर बैठे और येह गुमान करने लगे कि ह़ुरमत (या'नी ना जाइज़ होने) के क़ाइलीन हैं कौन ? ह़ालां कि वोह तमाम अस्ह़ाबे मज़्हब बल्कि इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं जैसा कि हम बयान कर चुके हैं। फिर जब कुछ ज़ियादा जोश में आए तो बिग़ैर सोचे समझे इस मुआ़-मले में शिद्दत इख़्तियार करते हुए इन ख़ुराफ़ात और पेचीदा बातों में बहुत ज़ियादा कलाम करने लगे और उन के नफ़्स ने उन्हें समझाया कि "इन उ़-लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) पर जो दलाइल मख़्फ़ी रह गए थे वोह तुम ने ही तो ज़ाहिर किये हैं और येह कि इन की या ह़लाल जानने में जिन की वोह पैरवी करते हैं उस शैख़ की तक़्लीद करना उन (ह़ुरमत के क़ाइल) उ़-लमाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) की तक़्लीद करने से बेहतर है।"

इस ह़ादिसे के अ़ज़ीम ज़रर, बुरे अ-सरात और इस शिकारी जाल के लिपटने की वजह से मैं ने ग़ौरो फ़िक्र, तह़क़ीक़ व तफ़्तीश और अ़ज़्म व हिम्मत की तेज़ धार तलवार निकाली और तारीकियों के चराग़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की ह़मिय्यत की ख़ात़िर खुले ह़क़ का इज़्हार करने और इस

www.dawateislami.net

वाज़ेह़ बात़िल को मिटाने के लिये किताब "**जन्दुल फ़िक्र**" लिखी। येही वजह है कि इस किताब का मौज़ूअ़ बहुत वसीअ़ है और इस से सह़ीह़ राय ज़ाहिर हुई अपने रब की ह़म्द के साथ कि जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं ने उसी पर तवक्कुल किया है और उसी की त़रफ़ लौटना है।

घर वालों की इस्लाह़

शोहर पर वाजिब है कि अपनी बीवी को चाल ढाल, लिबास और दीगर उमूर वग़ैरा में मर्दों की मुशा-बहत इख़्तियार करने से मन्अ़ करे ताकि उस की बीवी और वोह ख़ुद भी ला'नत से बच सके। क्यूं कि अगर वोह उसे इसी ह़ालत पर रहने दे तो जो ला'नत व फिटकार उस औ़रत पर आएगी वोही इस शख़्स पर भी आएगी। नीज़ इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस हुक्म की ता'मील भी लाज़िम है :

قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا (پ۲۸، التحریم:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी जानों और अपने घर वालों को आग से बचाओ।

या'नी इन्हें इ़ल्मो अदब सिखा कर, अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त का हुक्म और उस की मा'सियत से रोक कर आग से बचाओ।

《10》...... सरकारे मदीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान भी इस की ताईद करता है कि "तुम में से हर एक निगहबान है और हर एक से उस के मा तह़्तों के बारे में पूछा जाएगा, आदमी अपने अहले ख़ाना पर निगहबान है और उस से क़ियामत के दिन इन के बारे में पूछगछ होगी।" (صحیح البخاری ،کتاب الجمعة ، باب الجمعة فی القری والمدن ، الحدیث:۸۹۳، ص ۷۰،بدون"یوم القیامة")

《11》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक मर्दों की हलाकत औ़रतों की फ़रमां बरदारी में है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज जो मर्द औ़रत की ख़्वाहिशात की तक्मील में उस की इत़ाअ़त करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुंह के बल जहन्नम में गिरा देगा।"

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 108 : औरत का बारीक लिबास पहनना

या'नी औरत का ऐसा बारीक लिबास पहनना जिस से उस की जिल्द की रंगत या आ'ज़ा की बनावट झलक्ती हो

﴾1﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जहन्नमियों की दो क़िस्में ऐसी हैं जिन को मैं ने (इस ज़माने में) नहीं देखा : (1) ऐसे लोग जिन के पास गाय की दुमों जैसे कोड़े होंगे, उन से वोह लोगों को मारते होंगे और (2) वोह औ़रतें जो लिबास पहनने के बा वुजूद उ़रयां होंगी, वोह राहे ह़क़ से हटाने वाली और ख़ुद भी राहे ह़क़ से भटकी हुई होंगी, उन के सर बुख़्ती ऊंटों की कोहानों की त़रह़ एक जानिब झुके हुए होंगे, वोह न जन्नत में दाख़िल होंगी और न ही जन्नत की ख़ुश्बू सूंघ सकेंगी ह़ालां कि जन्नत की ख़ुश्बू इतनी इतनी मसाफ़त से आती है।"

(صحیح مسلم، کتاب الادب، باب النساء الکاسیات،الحدیث:۵۵۸۲، ص۱۰۵۸)

ह़दीस की वज़ाह़त :

इस ह़दीसे पाक में औ़रतों के लिबास में मल्बूस होने से मुराद येह है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगी, जब कि बे लिबास होने से मुराद येह है कि वोह ने'मतों का शुक्र अदा नहीं करेंगी, या इस से मुराद येह है कि ज़ाहिरी त़ौर पर तो लिबास ज़ैबे तन करेंगी मगर ह़क़ीक़तन बे लिबास होंगी, वोह इस त़रह़ कि वोह ऐसा बारीक लिबास पहनेंगी जिन से उन का बदन झलकेगा, राहे ह़क़ से भटक्ने से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त से रू गरदानी और फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी और इन की ह़िफ़ाज़त से मुंह फैरना है और राहे ह़क़ से हटाने से मुराद येह है कि वोह दूसरी औ़रतों को अपने मज़्मूम फ़े'ल की त़रफ़ बुलाएंगी। या राहे ह़क़ से हटने से मुराद मटक मटक कर चलना है और राहे ह़क़ से हटाने से मुराद कन्धों को झटक कर दूसरों को अपनी त़रफ़ माइल करना है या फिर राहे ह़क़ से हटने से मुराद बाज़ारी औ़रतों की त़रह़ अपने बाल कंघी से संवारना है और राहे ह़क़ से हटाने से मुराद बाज़ारी औ़रतों के मिस्ल दूसरों के बाल संवारना (या'नी हेयर स्टाईल बनाना) है और औ़रतों के सरों का बुख़्ती ऊंटों की कोहानों की त़रह़ होने से मुराद येह है कि वोह अपने सर पर कोई कपड़ा या पट्टी लपेट कर उसे बुलन्द कर के इतराएंगी।

﴾2﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के आख़िर में कुछ लोग ऐसे होंगे कि जो ज़ीनों पर सुवार होंगे उन की मिसाल उन लोगों की त़रह़ होगी जो ख़ुद तो मसाजिद के दरवाज़ों पर पड़ाव डाले होंगे लेकिन उन की औ़रतें (इतना बारीक) लिबास पहने होंगी (कि) बे लिबास (मा'लूम) होंगी, लाग़र व कमज़ोर बुख़्ती

www.dawateislami.net

ऊंटों की कोहानों की त़रह़ सरों को उठाए होंगी, उन औ़रतों पर तुम भी ला'नत भेजो क्यूं कि उन पर ला'नत की गई है, अगर तुम्हारे बा'द कोई उम्मत होती तो तुम्हारी औ़रतें उस उम्मत की इसी त़रह़ ख़िदमत करतीं जिस त़रह़ तुम से पहली उम्मतों की औ़रतों ने तुम्हारी ख़िदमत की है।"

(صحیح ابن حبان ، کتاب الحضر والا باحة ، باب اللعن ، الحدیث: ۵۷۲۳ ، ص ۵۰۲)

《3》...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मुर-सलन मरवी है : "मेरी बहन ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में बारीक लिबास पहन कर ह़ाज़िर हुईं तो शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से चेह़रए अन्वर फैर लिया और इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अस्मा ! औ़रत जब ह़ैज़ (या'नी माहवारी) की उ़म्र को पहुंच जाए तो उस की इन (दो) चीज़ों के इलावा कुछ न नज़र आना चाहिये।" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने चेहरे और हथेलियों की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।"

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس ، باب فیماتبدی المرأة من زینتھا ، الحدیث:۴۱۰۴ ، ص ۱۵۲۲)

तम्बीह :

इस सख़्त तर वई़द की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करना बिल्कुल वाज़ेह़ है अगर्चे मैं ने किसी को इस की सराह़त करते हुए नहीं पाया बल्कि येह पिछली औ़रतों के मर्दों से तशब्बोह की बिना पर ज़ाहिर है।

सय्यिदुना इमाम ज़हबी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "जिन कामों की वजह से औ़रतों पर ला'नत की गई है उन में अपनी ज़ीनत का इज़्हार म-सलन निक़ाब के नीचे से सोने या मोतियों के ज़ेवर ज़ाहिर करना और घर से निकलते वक़्त ख़ुश्बू म-सलन मुश्क वग़ैरा लगा कर निकलना है, इसी त़रह़ निकलते वक़्त हर ऐसी चीज़ पहनना जो आरास्ता होने की त़रफ़ ले जाए जैसे बुरक़ए़ को रंगना, रेशम का तहबन्द पहनना और आस्तीन को खुला रखना येह तमाम बातें आरास्तगी से तअ़ल्लुक़ रखती हैं कि जिन के करने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में सख़्त नाराज़ होता है और औ़रतों पर येही क़बीह़ आ़दतें ग़ालिब होती हैं।"

《4》...... इन्हीं के बारे में सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने जहन्नम में झांका तो देखा जहन्नम वालों में ज़ियादा जहन्नमी ता'दाद औ़रतों की है।"

(صحیح البخاری ، کتاب بدء الخلق،باب ماجاء فی صفة الجنة......الخ،الحدیث:۳۲۴۱،ص۲۶۳)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 109 : बतौरे तकब्बुर शलवार, कपड़ा, आस्तीन या दामन बड़ा रखना

कबीरा नम्बर 110 : इतरा कर चलना

﴾1﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "इज़ार (या'नी तहबन्द) का जो हिस्सा टख़्नों से नीचे हो वोह जहन्नम में है।"

(صحيح البخاری، كتاب اللباس،باب اسفل من الكعبين فهو فی النار،الحديث:٥٧٨٧،ص٤٩٤)

﴾2﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "मोमिन का इज़ार उस की पिंडली के पठ्ठों तक है, फिर निस्फ़ पिंडली तक, फिर टख़्नों तक और टख़्नों से नीचे जो होगा वोह जहन्नम में है।"

(الترغيب والترهيب،كتاب اللباس والزينة ،باب الترغيب فی القميص......الخ،الحديث:٢،ج٣،ص ٦٤)

﴾3﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस शख़्स की त़रफ़ नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा जो तकब्बुर की वजह से अपना कपड़ा घसीट कर चलेगा।" (صحيح مسلم،كتاب اللباس،باب تحريم جر الثوب......الخ، الحديث:٥٤،٥٤٥٣،ص١٠٥١)

और एक रिवायत में है कि "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा जो ग़ुरूर की वजह से अपना कपड़ा घसीट कर चलेगा।" (المرجع السابق، الحديث:٥٤٦٣،ص١٠٥١)

﴾4﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो तकब्बुर की वजह से अपना कपड़ा घसीट कर चलेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मैं अपने तहबन्द का ख़याल न रखूं तो वोह ढीला हो कर लटक जाता है।" तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम उन लोगों में से नहीं हो जो तकब्बुर की वजह से ऐसा करते हैं।" (سنن ابی داؤد،كتاب اللباس،باب فی قدرموضع الازار،الحديث:٤٠٩٥،ص١٥٢٢)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने इन दो कानों से रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जो मह़ज़ तकब्बुर और लोगों की तह़क़ीर के इरादे से अपना तहबन्द घसीट कर चलेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा।"

(صحيح مسلم،كتاب اللباس،باب تحريم جرالثوب......الخ،الحديث:٥٤٥٩،ص١٠٥١)

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : "हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो अह़काम इज़ार या'नी तहबन्द के बारे में इर्शाद फ़रमाए क़मीस के भी वोही हैं।" (سنن ابی داؤد،كتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، الحديث: ٤٠٩٥ ، ص ١٥٢٢)

www.dawateislami.net

《7》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिदे मोह़तरम से रिवायत करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से तहबन्द के बारे में सुवाल किया। तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने एक बा ख़बर आदमी से सुवाल किया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन का तहबन्द उस की निस्फ़ पिंडली तक हो तो ह़रज नहीं।" या इर्शाद फ़रमाया : "अगर निस्फ़ पिंडली और टख़्नों के दरमियान हो तो गुनाह नहीं और जो इस से नीचे हो वोह जहन्नम में है और जो शख़्स तकब्बुर की वजह से अपना तहबन्द लटका कर चलेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा।" (ابو داؤد،کتاب اللباس،باب فی قدرموضع الازار،الحدیث:٤٠٩٣،ص١٥٢٢"المؤمن"بدله"المسلم")

《8》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो लम्बाई की वजह से मेरा तहबन्द लटक रहा था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह कौन है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हो तो अपना तहबन्द ऊंचा कर लो।" लिहाज़ा मैं ने अपना तहबन्द आधी पिंडलियों तक कर लिया।" फिर मरते दम तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तहबन्द इतना ही रहा।" (المسندللامام احمد بن حنبل،مسند عبدالله بن عمربن الخطاب، الحدیث:٦٢٧١،ج٢،ص٥١٠)

《9》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं कि जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न तो कलाम फ़रमाएगा, न उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।" ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़िउ़ल मुज़्निबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात **तीन** मरतबा इर्शाद फ़रमाई, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ख़ाइबो ख़ासिर होने वाले येह लोग कौन हैं ?" तो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कपड़ा लटकाने वाला, एह़सान जताने वाला और झूटी क़सम खा कर अपना माल बेचने वाला।" (الترغیب والترھیب،کتاب اللباس والزینة،باب الترغیب فی القمیص،الحدیث:٣١٢٩،ج٣،ص٥٨)

《10》...... एक और रिवायत में "तहबन्द लटकाने वाला" के अल्फ़ाज़ आए हैं।

(صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار،الحدیث:٢٩٣،ص٦٩٦)

《11》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "कपड़ा लटकाने का अ़मल तहबन्द, क़मीस और इमामा में भी हो सकता है, जो तकब्बुर की वजह से इन में से कोई चीज़ घसीटेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب اللباس ، باب فی قدر موضع الازار ، الحدیث: ٤٠٩٤،ص١٥٢٢)

www.dawateislami.net

《12》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "तहबन्द लटकाने से बचते रहो क्यूं कि येह तकब्बुर में से है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे पसन्द नहीं फ़रमाता।" (سنن ابی داؤد ،کتاب اللباس ، باب ماجاء فی اسبال الازار ، الحدیث: ٤٠٨٤ ، ص ١٥٢١)

《13》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "ऐ मुसल्मानो के गुरौह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और आपस में सिलए रेह़मी करो क्यूं कि सिलए रेह़मी से ज़ियादा जल्द किसी चीज़ का सवाब नहीं मिलता, ज़ुल्म से बचते रहो क्यूं कि ज़ुल्म से ज़ियादा जल्द किसी गुनाह की सज़ा नहीं मिलती और वालिदैन की ना फ़रमानी से बचते रहो जन्नत की ख़ुश्बू 1,000 साल की मसाफ़त से सूंघी जा सकती है मगर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वालिदैन का ना फ़रमान, क़त़ए रेह़मी करने वाला, बूढ़ा ज़ानी और तकब्बुर की वजह से तहबन्द लटकाने वाला जन्नत की ख़ुश्बू न पा सकेगा, बेशक किब्रियाई तमाम जहानों के परवर्द गार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है।"

(المعجم الاوسط ، الحدیث: ٥٦٦٤ ، ج ٤ ،ص ١٨٧)

《14》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है कि "जिस ने तकब्बुर की वजह से अपने पहने हुए कपड़े लटकाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा अगर्चे वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुअ़ज़्ज़ज़ ही क्यूं न हो।" (مجمع الزوائد ،کتاب اللباس ، باب فی الازار وموضعه ، الحدیث: ٨٥٤٠، ج٥، ص ٢٢١)

《15》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "येह शा'बान की पन्दरहवीं रात है, इस रात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बनी कल्ब की बकरियों के बालों के बराबर लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है, लेकिन इस रात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुशरिक, जादूगर, क़त़ए रेह़मी करने वाले, चादर लटकाने वाले, वालिदैन के ना फ़रमान और शराब के आ़दी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता।"

(الترغيب والترهيب ،کتا ب الصوم ، باب الترغيب فی صوم شعبان، الحدیث: ١٥٥٣ ،ج٢، ص ٣٥)

《16》...... ह़ज़रते सय्यिदुना बरीदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि क़ुरैश का एक शख़्स अपने ह़ुल्ले (जुब्बे) में इतराता हुवा आया, जब वोह मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से जाने लगा, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बरीदा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इस के लिये मीज़ान क़ाइम नहीं फ़रमाएगा।"

(مجمع الزوائد،کتاب اللباس،باب فی الازار وموضعه ، الحدیث:٨٥٣٢،ج٥،ص ٢١٩)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इन अहादीसे मुबा-रका में सरा-हतन बयान की गई शदीद वईद की बिना पर इस गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और हज़राते शैख़ैन व **साहिबुल उद्दह** की इस बात को बर क़रार रखना कि "इतरा कर चलना सग़ीरा गुनाह है।" इस बात पर महमूल है जब कि उस की हालत से मख़्लूक़ की तहक़ीर का पहलू न निकलता हो वरना येह कबीरा गुनाह है क्यूं कि हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की तसरीह गुज़र चुकी है कि तकब्बुर कबीरा गुनाह है, इसी लिये अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की एक जमाअत ने शैख़ैन पर येह ए'तिराज़ किया है कि इतरा कर चलने को सग़ीरा गुनाह पर बर क़रार रखना महल्ले नज़र है बशर्ते कि वोह तकब्बुर व फ़ख़्र की निय्यत से इतरा कर चले क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَ لَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।

मु-तकब्बिरीन की मज़म्मत :

《17》...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस के दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ،باب تحریم الکبر وبیانہ ، الحدیث: ۲۶۵ ، ص ۶۹۳)

《18》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क्या मैं तुम्हें जहन्नमियों के बारे में ख़बर न दूं हर सरकश, अकड़ कर चलने वाला और बड़ाई चाहने वाला जहन्नमी है।" (صحیح البخاری ،کتاب الادب ، باب الکبر ،الحدیث: ۶۰۷۱، ص ۵۱۳)

《19》...... सरकारे मदीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तकब्बुर से अपना कपड़ा घसीटा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की तरफ़ नज़रे रहमत न फ़रमाएगा।" (صحیح مسلم ،کتاب اللباس ، باب تحریم جر الثوب خیلاء، الحدیث:۵۴۵٤،ص ۱۰۵۱ ثوبہ بدلہ"ازارہ")

《20》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "एक शख़्स अपने कपड़ों में इतराता हुवा सर अकड़ा कर चल रहा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़मीन में धंसा दिया अब वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता ही रहेगा।"

(صحیح البخاری ،کتاب اللباس،با ب من جر ثوبہ من الخیلا ء ، الحدیث: ۵۷۸۹، ص ٤٩٤)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **111 :**

सियाह ख़िज़ाब लगाना
या'नी दाढ़ी वग़ैरा को बिला किसी मक़्सद
(म-सलन जिहाद वग़ैरा) के सियाह ख़िज़ाब लगाना

﴿1﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''आख़िर ज़माने में ऐसे लोग होंगे जो कबूतरों[1] के सीनों जैसा सियाह ख़िज़ाब लगाएंगे वोह लोग जन्नत की ख़ुश्बू तक न सूंघ सकेंगे।''

(سنن ابی داؤد،کتاب الترجل،باب ماجاء فی خضاب السواد، الحدیث:۴۲۱۲،ص۱۵۲۹)

तम्बीह :

ह़दीसे मुबा-रका में वारिद इस सख़्त वई़द की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को इस की सराह़त करते हुए नहीं देखा, मेरे ख़याल में इसे **किताबुस्सलाह** में बयान कर्दा शराइत़ के साथ ज़िक्र करना ज़ियादा मुनासिब है, मगर चूंकि येह इस बाब से भी कुछ न कुछ मुना-सबत रखता है लिहाज़ा इसे यहां ज़िक्र कर दिया गया।

---

1 : यहां कबूतरों से मुराद जंगली कबूतर हैं क्यूं कि उन के सीने अक्सर सियाह होते हैं, चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ''जंगली कबूतरों के सीने अक्सर सियाह व नीलगूं होते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन (या'नी सियाह ख़िज़ाब लगाने वालों) के बालों और दाढ़ियों को उन (जंगली कबूतरों) से तश्बीह दी। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 496)

www.dawateislami.net

باب الاستسقاء

नमाज़े इस्तिस्क़ा का बयान

कबीरा नम्बर 112 : सितारों के मुअस्सिर होने का ए'तिक़ाद रखना

या'नी बारिश होने पर सितारों की तासीर का ए'तिक़ाद रखते हुए येह कहना कि फ़ुलां सितारे के फ़ुलां बुर्ज में पहुंचने पर बारिश हुई

《1》...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारिश होने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब عَزَّ وَجَلَّ ने क्या फ़रमाया है ?" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।" तो आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है कि) "मेरे कुछ बन्दे मोमिन और कुछ काफ़िर हो गए, जिस ने येह कहा : "हम पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस की रहमत से बारिश हुई।" वोह मुझ पर ईमान लाया और सितारों की तासीर का मुन्किर हुवा और जिस ने येह कहा कि "हम पर फ़ुलां फ़ुलां सितारे की वजह से बारिश हुई।" वोह मेरा मुन्किर हुवा और सितारों की तासीर पर ईमान लाया।"

(صحیح البخاری، کتاب الاستسقاء، باب قول الله تعالی "وتجعلون رزقکم انکم تکذبون"، الحدیث:۱۰۳۸، ص ۸۱)

तम्बीह :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के कलाम की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है मगर येह दुरुस्त नहीं क्यूं कि जो शख़्स मज़्कूरा ए'तिक़ाद रखे वोह ह़क़ीक़तन काफ़िर है, जब कि हमारी किताब उन कबीरा गुनाहों पर मुश्तमिल है जो इस्लाम को ज़ाइल नहीं करते, सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जो येह कहे कि फ़ुलां सितारे की वजह से बारिश हुई और ए'तिक़ाद येह रखे कि उस सितारे ने बारिश बरसाई तो वोह काफ़िर है और अगर तौबा न करे तो उस का ख़ून ह़लाल है।" और **अरौज़ा** में है "अगर कोई येह ए'तिक़ाद रखे कि बारिश ह़क़ीक़त में सितारे ने बरसाई तो येह कुफ़्र है और वोह शख़्स मुरतद हो गया।" अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "अगर कोई येह ए'तिक़ाद रखे कि सितारे को बारिश बरसाने का सबब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बनाया है, सितारा इ़ल्मे इलाही और तक़्दीर की बिना पर बारिश बरसाता है तो येह ए'तिक़ाद अगर्चे मुबाह़ है मगर ऐसा शख़्स अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ने'मत का मुन्किर और उस की ह़िक्मत के लत़ाइफ़ से जाहिल है।"[1]

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "**बहारे शरीअ़त**" में फ़रमाते हैं : "नुजूम की इस क़िस्म की बातें जिन में सितारों की तासीरात बताई जाती हैं कि फ़ुलां सितारा तुलूअ़ करेगा तो फ़ुलां बात होगी येह भी ख़िलाफ़े शर-अ़ है, इसी त़रह **नक्षत्रों** (या'नी सितारों) का ह़िसाब कि फ़ुलां नक्षत्र से बारिश होगी येह भी ग़लत़ है, ह़दीस में इस पर सख़्ती से इन्कार फ़रमाया।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 16, स. 159)

www.dawateislami.net

باب الجنائز

नमाज़े जनाज़ा का बयान

कबीरा नम्बर 113 : मुसीबत के वक़्त चेहरा नोचना

कबीरा नम्बर 114 : मुसीबत के वक़्त चेहरे पर थप्पड़ मारना

कबीरा नम्बर 115 : मुसीबत के वक़्त गिरीबान चाक करना

कबीरा नम्बर 116 : मुसीबत के वक़्त नौहा करना या सुनना

कबीरा नम्बर 117 : मुसीबत के वक़्त बाल मूंडना या नोचना

कबीरा नम्बर 118 : मुसीबत के वक़्त हलाकत व बरबादी की दुआ करना

《1》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो गाल पीटे, बाल नोचे और जाहिलिय्यत की दुआ मांगे वोह हम में से नहीं ।"

(صحیح البخاری، کتا ب الجنائز، باب لیس من ضرب الخدود، الحدیث:۱۲۹۷، ص۱۰۱)

《2》...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बेज़ार हैं, मैं भी उस से बेज़ार हूं, बेशक सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुसीबत के वक़्त नौहा करने वाली, बाल मुंडवाने वाली और गिरीबान चाक करने वाली औरत से बेज़ार हैं ।"

(صحیح البخاری ، کتاب الجنائز ، باب ما ینھی من الحلق عن المصیبة ، الحدیث:۱۲۹۶ ، ص۱۰۱)

《3》...... और नसाई शरीफ़ की रिवायत में है : "मैं तुम से इसी त़रह़ बेज़ार हूं जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम से बेज़ारी का इज़्हार करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने सर मुंडवाया, गिरीबान चाक किया और नौहा किया वोह हम में से नहीं ।"

(سنن النسائی، کتاب الجنائز، باب الرخصة فی النکاء علی المیت......الخ، الحدیث:۱۸۶۲، ص۲۲۱۰)

《4》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है "लोगों में दो बातें कुफ़्र के मु-तरादिफ़ हैं : (1) नसब में ता'न करना और (2) मय्यित पर नौहा करना ।"

(صحیح مسلم ، کتاب الایمان ، باب اطلاق اسم الکفر ......الخ ، الحدیث: ۲۲۷ ، ص ۶۹۱)

www.dawateislami.net

《5》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "तीन बातें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से कुफ़्र के मु-तरादिफ़ हैं : (1) गिरीबान चाक करना (2) नौह़ा करना और (3) नसब में त़ा'न करना।"

(صحيح ابن حبان ، كتاب الجنائز ، فصل في النياحة ونحوها ، الحديث: ٣١٥١ ، ج ٥، ص٦٤)

《6》...... इब्ने ह़ब्बान की एक रिवायत में है : "तीन बातें कुफ़्र हैं।"

(المرجع السابق، الحديث: ٣١٥١ ، ج٥،ص ٦٤)

《7》...... और दूसरी रिवायत में है "तीन बातें जाहिलिय्यत के कामों में से हैं।"

(المرجع السابق،الحديث:٣١٣١)

《8》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमाया तो इब्लीस इस क़दर दहाड़ें मार मार कर रोया कि उस का लश्कर उस के पास जम्अ़ हो गया तो वोह बोला : "आज के बा'द उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को शिर्क में मुब्तला करने से मायूस हो जाओ, हां अलबत्ता इन के दीन के मुआ़-मले में इन्हें फ़ितने में डालो और नौह़ा करना इन में आ़म कर दो।"

(المعجم الكبير،الحديث:١٢٣١٨،ج١٢،ص٩)

《9》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दो आवाज़ों पर दुन्या व आख़िरत में ला'नत है (1) ख़ुशी के वक़्त बाजों की आवाज़ और (2) मुसीबत के वक़्त चिल्लाने की आवाज़।" (مجمع الزوائد،كتاب الجنائز،باب في النوح،الحديث:٤٠١٧،ج٣،ص١٠٠)

《10》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "चिल्ला कर रोने वाली और नौह़ा करने वाली पर मलाएका नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ते।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند ابي هريرة ، الحديث: ٨٧٥٤، ج٣ ، ص ٢٨٧)

《11》...... हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरी उम्मत जाहिलिय्यत के चार काम नहीं छोड़ेगी : (1) ख़ानदानी शराफ़त या'नी अ़-ज़मत पर फ़ख़्र करना (2) नसब या'नी रिश्तेदारी में त़ा'न करना (3) सितारों से बारिश त़लब करना और (4) नौह़ा करना।" (صحيح مسلم،كتاب الجنائز،باب التشديد في النياحة،الحديث:٢١٦٠،ص٨٢٤)

《12》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नौह़ा करने वाली अगर मरने से पहले तौबा न करे तो क़ियामत के दिन उसे खड़ा कर के पिघले हुए तांबे या तारकोल का लिबास और खुजली का दुपट्टा पहनाया जाएगा।" (المرجع السابق)

《13》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नौह़ा करना जाहिलिय्यत का काम है और अगर नौह़ा करने वाली बिग़ैर तौबा किये मर जाए तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे पिघले हुए तांबे (तारकोल) के कपड़े पहनाएगा और आग के शो'ले का दुपट्टा उढ़ाएगा।" (سنن ابن ماجه ،ابواب الجنائز ، باب النهي عن النياحة ، الحديث: ١٥٨١، ص٢٥٧١)

www.dawateislami.net

﴾14﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इन नौहा करने वाली औरतों को क़ियामत के दिन जहन्नम में दो सफ़ों में खड़ा किया जाएगा, एक सफ़ जहन्नमियों की दाईं जानिब होगी और दूसरी सफ़ जहन्नमियों की बाईं जानिब होगी, येह वहां ऐसे भोंकेंगी जैसे कुत्ते भोंकते हैं।" (مجمع الزوائد،کتاب الجنائز،باب فی النوح ، الحدیث: ٤٠١٩ ، ج٣ ، ص ١٠٠)

﴾15﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि "रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चिल्ला कर रोने वाली और इसे सुनने वाली पर ला'नत फ़रमाई।" (سنن ابی داؤد،کتاب الجنائز،باب فی النوح،الحدیث:٣١٢٨،ص١٤٥٩)

﴾16﴿...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि जब ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा, हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी तालिब और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की शहादत की ख़बर मिली, तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बैठ गए, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर पर ग़म के आसार इयां थे, उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "मैं ने दरवाज़े की झरियों से देखा कि एक शख़्स आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आलीशान में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर की औरतें।" और फिर उन की चीख़ो पुकार का ज़िक्र किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे हुक्म दिया कि "उन्हें ऐसा करने से मन्अ़ करो।" फिर वोह शख़्स दोबारा हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मुझ पर ग़ालिब आ गईं।" हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मेरा ख़याल है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उन के मुंह मिट्टी से भर दो।" तो मैं ने उस शख़्स से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी नाक ख़ाक आलूद करे, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम न तो कुछ करते हो और न ही रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पीछा छोड़ते हो।"

(صحیح مسلم ،کتاب الجنائز،باب التشدید فی النیاحہ،الحدیث:٢١٦١،ص٨٢٤)

﴾17﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त करने वाली एक सहाबिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से जिन अच्छी बातों पर अ़ह्द लिया था, उन में येह अ़ह्द भी शामिल था कि हम न चेहरा पीटेंगी, न हलाकत की दुआ़ करेंगी, न गिरीबान चाक करेंगी और न ही बाल नोचेंगी।"

(سنن ابی داؤد،کتا ب الجنائز،با ب فی النوح ، الحدیث:٣١٣١،ص١٤٥٩"ننتف"بدلہ"ننشر")

﴾18﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि "रह़मते कौनैन, ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चेहरा पीटने वाली, गिरीबान फाड़ने वाली और हलाकत की दुआ़ मांगने वाली पर ला'नत फ़रमाई है।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب الجنائز ، باب ماجاء فی النهی عن ضرب......الخ ،الحدیث: ١٥٨٥،ص ٢٥٧١)

www.dawateislami.net

《19》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मय्यित पर नौहा करने की वजह से उसे क़ब्र में अ़ज़ाब होता है।"

(صحيح مسلم ،كتاب الجنائز ، باب الميت يعذب ببكاء اهله ، الحديث: ٢١٤٣، ص ٨٢٣)

《20》...... और एक रिवायत में है : "(मय्यित को क़ब्र में अ़ज़ाब होता है) जब तक उस पर नौहा किया जाता है।"

(المرجع السابق، الحديث: ٢١٥٧ ، ص ٨٢٤)

《21》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस मय्यित पर नौहा किया जाता है उसे उस नौहा करने की वजह से क़ियामत के दिन अ़ज़ाब होगा।"

(المرجع السابق، الحديث:٢١٥٧،ص ٨٢٤)

《22》...... हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ग़शी तारी हुई तो उन की बहन रो रो कर कहने लगी हाए पहाड़ जैसा भाई, हाए ऐसा भाई ! (या'नी उन के औसाफ़ बयान करने लगी) फिर जब आप को इफ़ाक़ा हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने मेरे बारे में जो भी बात कही मुझ से कहा गया : "क्या तुम ऐसे ही हो ?" फिर जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह नहीं रोई।"

(صحيح البخارى ،كتاب المغازى ،باب غزوة موتة......الخ الحديث:٤٢٦٧ /٤٢٦٨،ص٣٤٩)

《23》...... त़-बरानी शरीफ़ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब मुझ पर ग़शी तारी हुई और औरतें चिल्ला चिल्ला कर कहने लगीं : "हाए मेरे सरदार, हाए मेरे पहाड़ !" तो एक फ़िरिश्ता खड़ा हुवा उस के पास एक लोहे की सलाख़ थी उस ने उसे मेरे क़दमों में रख कर पूछा : "क्या तुम ऐसे ही हो जैसा येह कह रही हैं ?" मैं ने कहा : "नहीं !" अगर मैं हां कह देता तो वोह मुझे उस से मारता।"

(الترغيب والترهيب،كتاب الجنائز،باب الترهيب من النياحة على الميت......الحديث:٥٤١٥،ج٤،ص١٨٤)

《24》...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ भी इसी त़रह़ का वाक़िआ़ पेश आया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ (ने अपनी ज़ौजा से) इर्शाद फ़रमाया : "तुम जब भी हाए फ़ुलां कहती तो फ़िरिश्ता सख़्ती से झिड़क कर पूछता "क्या तुम ऐसे ही हो ?" तो मैं कहता : "नहीं।"

(المعجم الكبير،الحديث:٥٠،ج٢٠،ص٣٥)

《25》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब कोई शख़्स मरता है और उस की क़ौम का नौहा ख़्वां हाए हमारे पहाड़, हाए हमारे सरदार वग़ैरा कहता है, तो उस पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गिरीबान पकड़ कर पूछते हैं : "क्या तुम ऐसे ही थे ?"

(جامع الترمذى ،ابواب الجنائز ، باب ماجاء فى كراهية البكاء ......الخ ، الحديث: ١٠٠٣ ، ص١٧٤٧)

www.dawateislami.net

﴾26﴿...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मय्यित को ज़िन्दा लोगों के रोने की वजह से अ़ज़ाब होता है, वोह मय्यित कितनी बुरी है जब रोने वाली औ़रत कहती है : "हाए हमारे बाज़ू ! हाए हमारे तन ढांपने वाले ! हाए हमारे मददगार !" तो उस से पूछा जाता है : "क्या तू ही इस का मददगार था ? क्या तू ही इस का तन ढांपता था ?"

(المستدرك،كتاب التفسير ، باب الاسلام ثلاثون سهما...... الخ ، الحديث: ٣٨٠٧،ج٣،ص٢٧٨)

﴾27﴿...... सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक घर से रोने की आवाज़ सुनी तो उस में दाख़िल हो गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ कुछ और लोग भी थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों को हटाते हटाते उस नौह़ा करने वाली औ़रत के पास पहुंच गए और उसे इतना मारा कि उस का दुपट्टा गिर गया, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "इसे मारो क्यूं कि येह नाइह़ा (या'नी नौह़ा करने वाली) है और इस की कोई हुरमत या लिह़ाज़ नहीं, येह तुम्हारे ग़म की वजह से नहीं रोती बल्कि तुम से दिरहम बटोरने के लिये रोती है, येह तुम्हारे मुर्दों को क़ब्रों में और ज़िन्दों को घरों में ईज़ा पहुंचाती है, येह सब्र से रोकती है ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने सब्र का हुक्म दिया है और सोग की तरग़ीब देती है ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस से मन्अ़ फ़रमाया है।" (كتاب الكبائر،الكبيرة التاسعة و الأربعون،ص٢١٢)

तम्बीह :

हमारी बयान कर्दा इन अह़ादीसे मुबा-रका और इन के ला'नत पर मुश्तमिल होने और कुफ़्र का सबब होने या इसे ह़लाल जानने की सूरत में कुफ़्र होने या ने'मतों की ना शुक्री वग़ैरा वईदों से मु-तअ़द्दद उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के क़ौल की सिह़्ह़त साबित हो गई कि "येह सब कबीरा गुनाह हैं और इन से मिलते जुलते अफ़्आ़ल भी इन्ही से मुल्ह़िक़ हैं।" जब कि शैख़ैन का **साह़िबुल उ़द्दह** के इस क़ौल को बर क़रार रखना मरदूद है कि "मसाइब पर नौह़ा, चीख़ो पुकार और गिरीबान चाक करना सग़ीरा गुनाह हैं।"

सय्यिदुना अज़्रई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने किसी और को येह बात कहते हुए नहीं देखा जब कि सह़ीह़ अह़ादीस इस बात का तक़ाज़ा करती हैं कि येह अफ़्आ़ल कबीरा गुनाहों में से हैं क्यूं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसा करने वाले से बराअत का इज़्हार फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : "जो रुख़्सार पीटे और गिरीबान फाड़े वोह हम में से नहीं।"

(صحيح البخاری ،كتاب الجنائز ، باب ليس منامن شق الجيوب، الحديث:١٢٩٤،ص١٠١)

और मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "लोगों में दो काम कुफ़्र के मु-तरादिफ़ हैं : (1) नसब पर त़ा'न करना और (2) मय्यित पर नौह़ा करना।"

(صحيح مسلم ،كتاب الايمان ، اطلاق اسم الكفر على......الخ ، الحديث: ٢٢٧ ، ص ٦٩١)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुस्लिम शरीफ़ की शर्ह में इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह ह़दीसे पाक नसब पर त़ा'न करने और नौह़ा करने की ह़ुरमत के सख़्त होने पर दलालत करती है इस के बारे में चार अक़्वाल मन्क़ूल हैं : (1) सब से सह़ीह़ तर क़ौल येह है कि येह कुफ़्फ़ार के आ'माल और जाहिलिय्यत की आ़दात में से हैं (2) येह आ'माल कुफ़्र की त़रफ़ ले जाने वाले हैं (3) येह ने'मत व एह़सान की ना शुक्री है और (4) येह वईद इन्हें ह़लाल जानने वाले के लिये है।"

(شرح النووی علی صحیح مسلم،تحت الحدیث:۲۲۷)

और यक़ीनी त़ौर पर येह बात लाज़िम है कि जिस ने ह़ुरमत का इ़ल्म होने, नह्य याद होने और इस में वारिद सख़्त वईदों के बा वुजूद नौह़ा करने, गिरीबान चाक करने और चीख़ो पुकार के अफ़्आ़ल का जान बूझ कर इरतिकाब किया तो वोह इन क़बीह़ कामों को जम्अ़ करने और इन के ज़रीए मय्यित को ईज़ा पहुंचाने की वजह से अ़दालत (या'नी गवाही देने की सलाह़िय्यत) से निकल गया जैसा कि अह़ादीसे मुबा-रका इस पर गवाह हैं।

सय्यिदुना अज़्रई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक दूसरे मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : "नौह़ा गरी और दीगर अफ़्आ़ल अगर तक़्दीर पर ना राज़गी और अ़-दमे रिज़ा की वजह से हों तब तो ज़ाहिर है कि येह कबीरा गुनाह हैं और अगर ना राज़गी की निय्यत के बिग़ैर शिद्दते ग़म और मुसीबत का सदमा बरदाश्त न कर सकने की वजह से हो तो इस में एह़तिमाल है, और क्या इस मुआ़-मले में जाहिल का उ़ज़्र क़बूल हो सकता है? येह मह़ल्ले नज़र है, फिर ख़ुद ही **अल ख़ादिम** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "ह़दीसे पाक में मज़्कूर वईद के तक़ाज़ा की बिना पर नौह़ा गरी और दीगर अफ़्आ़ल कबीरा गुनाह हैं।"

नुदबा या'नी मय्यित के मह़ासिन शुमार करना और **नौह़ा** या'नी बुलन्द आवाज़ से रोना ह़राम है। इसी त़रह़ रोते हुए आवाज़ को बुलन्द करने में इफ़रात़ से काम लेना यूं कि मुर्दे की ख़ूबियां बयान करना, नौह़ा करना, रुख़्सार पीटना, गिरीबान चाक करना, बाल फैला देना, सर मुंडवा देना, बाल उखेड़ डालना, चेहरा काला कर लेना, सर पर मिट्टी डालना और अपनी हलाकत की दुआ़ करना नीज़ हर ऐसा काम करना जिस से ह़ुलिया बिगड़ जाए म-सलन ऐसा लिबास पहनना जो आ़दतन न पहना जाता हो या इस त़रीक़े से न पहना जाता हो या लिबास में से कोई चीज़ कम कर देना और उस के बिग़ैर निकलना ख़िलाफ़े आ़दत हो (सब ह़राम है), और बहुत से लोग (किसी के मरने पर) अपना ह़ुलिया बिगाड़ लेते हैं ह़ालां कि इन का ह़राम होना बल्कि बयान कर्दा उमूर पर क़ियास करते हुए कबीरा गुनाह और फ़िस्क़ होना साबित हो चुका क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस की जो वजह बयान फ़रमाई है वोह मज़्कूरा हर गुनाह को शामिल है, और वोह इस बात का वाज़ेह़ त़ौर पर शुऊ़र दिलाती है कि येह अफ़्आ़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी और क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से राज़ी न होने को ज़ाहिर करते हैं।

इन तमाम ख़ुराफ़ात से बचते हुए रोना मौत से पहले और बा'द दोनों सूरतों में जाइज़ है जैसा कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने शहज़ादे (ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) के इन्तिक़ाल पर आंसू बहाए हैं। मगर जहां तक मुम्किन हो मौत के बा'द इस का तर्क करना मुनासिब है, एक जमाअ़त कहती है : "मौत के बा'द रोना मक्रूह है।" चुनान्चे,

www.dawateislami.net

《28》...... सरकारे मदीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मौत वाजिब या'नी वाक़ेअ़ हो जाए तो कोई रोने वाली न रोए।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز، باب فی فضل من مات بالطاعون، الحدیث:۳۱۱۱، ص۱۴۵۷)

《29》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त के हमराह ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इयादत के लिये तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रोने लगे, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का गिर्या देख कर रोने लगे, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम नहीं सुनते कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आंख के आंसू और दिल के ग़म पर अ़ज़ाब नहीं देता बल्कि "इस" की वजह से अ़ज़ाब देता है या रह़्म फ़रमाता है।" और येह फ़रमा कर अपनी ज़बाने अक़्दस की जानिब इशारा फ़रमाया। (صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب البکاء علی المیت، الحدیث:۲۱۳۷، ص۸۲۲)

《30》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के एक नवासे को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर किया गया जिस पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखें नम हो गईं, तो ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह क्या ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह रह़मत है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों के दिलों में पैदा किया है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने रह़्म दिल बन्दों पर ही रह़्म फ़रमाता है।"

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب قول النبی علیہ السلام......الخ، الحدیث:۱۲۸۴، ص۱۰۰)

《31》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास तशरीफ़ लाए जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नज़्अ़ के आ़लम में थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने करम नम हो गईं, तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी रोते हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ औ़फ़ के बेटे ! येह रह़मत है।" उन्हों ने दोबारा अ़र्ज़ की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आंखें बह रही हैं और दिल ग़मगीन है ह़ालां कि हम वोही कह रहे हैं जो हमारे रब عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है और यक़ीनन ऐ इब्राहीम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! हम तुम्हारी जुदाई से ग़मज़दा हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب قول النبی علیہ السلام انا بك لمحزونون، الحدیث:۱۳۰۳، ص۱۰۲)

हमारे शाफ़ेई अस्ह़ाब رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इन अह़ादीसे मुबा-रका से येह इस्तिदलाल किया है कि "बे आवाज़ आंसू बहना मक्रूह नहीं बल्कि मुबाह़ है।" और गुज़श्ता सफ़ह़ात में जो येह बात बयान हुई कि "मय्यित पर उस के अहले ख़ाना के रोने की वजह से अ़ज़ाब होता है।" इस में इख़्तिलाफ़ है कि इसे किस सूरत पर मह़मूल किया जाए।"

www.dawateislami.net

हमारे नज़्दीक सहीह़ येह है कि "येह हुक्म नौह़ा की वसिय्यत कर के मरने की सूरत पर मह़मूल है और अगर उस ने इस के बारे में कोई बात न की, न ही हुक्म दिया और न ही मन्अ़ किया (और मरने के बा'द उस पर नौह़ा किया गया) तो इस सूरत में अ़ज़ाब न होगा, अलबत्ता उस ने नौह़ा का हुक्म दिया तो उसे हुक्म देने और लोगों को हुक्म की ता'मील करने की वजह से अ़ज़ाब होगा, क्यूं कि जो बुरा त़रीक़ा जारी करे इस पर उस का और इस पर अ़मल करने वालों का भी गुनाह होगा, लिहाज़ा इस के गुनाह में इज़ाफ़ा होता जाएगा जब तक इस पर अ़मल होगा और अगर अ़मल न हो तो गुनाह भी न होगा।"

एक क़ौल येह है कि "अगर वोह (ब वक़्ते मौत या म-रज़े मौत में) ख़ामोश रहा और उन्हें नौह़ा ख़्वानी से मन्अ़ न किया तब भी उसे इस सबब से अ़ज़ाब होगा क्यूं कि उस का उन्हें मन्अ़ करने से ख़ामोश रहना उन के इस फ़े'ल पर रिज़ा मन्दी है, लिहाज़ा उसे इस के सबब इसी त़रह़ अ़ज़ाब होगा जिस त़रह़ अगर वोह इस चीज़ का हुक्म देता, तो जो इस क़ौल की पकड़ से बचना चाहता है उसे चाहिये कि जब वोह बीमार हो तो अपने अहले ख़ाना को बिदआ़त और दीगर ह़राम और बुरे कामों से मन्अ़ कर दे।"

हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی और दीगर उ़-लमाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं : "जो मय्यित या अपनी ज़ात, अह्ल या माल की मुसीबत में गिरिफ़्तार हो अगर्चे वोह मुसीबत कम ही क्यूं न हो तो उसे चाहिये कि "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ،اَللّٰهُمَّ اجِرْنِىْ فِىْ مُصِيْبَتِىْ وَ اَخْلِفْ لِىْ خَيْرًا مِّنْهَا **तरजमा :** बेशक हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की त़रफ़ लौटने वाले हैं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इस मुसीबत में सब्र और इस से बेहतर बदल अ़त़ा फ़रमा।" की कसरत करे, क्यूं कि मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में ऐसा कहने वाले के बारे में फ़रमाया गया है कि "जो ऐसा करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मुसीबत से नजात अ़त़ा फ़रमाएगा और उस से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमाएगा।"

(صحيح مسلم،كتاب الجنائز،باب مايقال عندالمصيبة،الحديث:٢١٢٦،ص٨٢٢)

और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा कहने वालों के साथ वा'दा फ़रमाया है कि उन पर उन के रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रह़मत और मग़्फ़िरत हो और इन्ही को तरजीअ़ (या'नी "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ") कहने या सवाब और जन्नत की हिदायत मिलती है।

《32》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जबीर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस उम्मत को मुसीबत के वक़्त पढ़ने के लिये एक ऐसी दुआ़ मिली है जो दूसरी उम्मतों को अ़त़ा न हुई और वोह "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ" है। अगर येह पिछली उम्मतों को मिली होती तो ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ(پ١٣،يوسف:٨٤) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "हाए अफ़्सोस यूसुफ़ की जुदाई पर।" कहने के बजाए येही दुआ़ पढ़ते।" (فيض القدير،حرف الهمزة،تحت الحديث:١١٧٦،ج٢،ص٣)

《33》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दा जब किसी मुसीबत में मुब्तला होता है तो उस का सबब या तो कोई ऐसा गुनाह होता है जिस

www.dawateislami.net

की बख़्शिश इस मुसीबत में मुब्तला होने पर मौक़ूफ़ होती है या फिर उस की वजह वोह द-रजा होता है जो इस मुसीबत में मुब्तला हुए बिग़ैर नहीं मिल सकता।"

(كنزالعمال، كتاب الاخلاق ،قسم الاقوال ،باب الصبر على انواع......الخ ،الحديث:٦٨٣٠،ج٣،ص١٣٧ملخصاً)

《34》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुसल्मान को जो भी परेशानी या मुसीबत पहुंचती है अगर्चे कांटा ही चुभे, वोह दो में से किसी एक फ़ाएदे के लिये पहुंचती है : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का कोई ऐसा गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है जिस की मग़्फ़िरत इस जैसी मुसीबत पर मौक़ूफ़ होती है या (2) बन्दे को उस की वजह से ऐसी बुज़ुर्गी अ़ता होती है जो उस के बिग़ैर ह़ासिल नहीं हो सकती थी।"

(الترغيب والترهيب، كتاب الجنائز، باب الترغيب فى الصبر سيما......الخ ،الحديث:٥٢٣٠،ج٤،ص١٣٦)

《35》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की एक शहज़ादी ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पैग़ाम भेजा कि "मेरा बेटा नज़्अ़ के आलम में है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पैग़ाम लाने वाले से फ़रमाया : "उसे जा कर बता दो कि यक़ीनन वोह सब कुछ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही का है जो वोह वापस ले और वोह सब कुछ भी उसी का है जो वोह अ़ता फ़रमाए, उस के पास हर चीज़ की मौत का वक़्त मुक़र्रर है लिहाज़ा उस से कहो कि सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखे।"

(صحيح مسلم ، كتاب الجنائز، باب البكاء على الميت ، الحديث: ٢١٣٥ ، ص ٨٢٢)

सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह ह़दीसे पाक इस्लाम के उन अ़ज़ीम क़वाइद में से है जो दीन के तमाम मसाइब, ग़मो अलम, बीमारी व परेशानी पर सब्र जैसे बेशतर अहम उमूर के उसूल व फ़रोअ़ और आदाब पर मुश्तमिल हैं। (ह़दीसे पाक में वारिद इस फ़रमान) "اِنَّ لِلّٰهِ مَا اَخَذَ" के मा'ना येह हैं कि पूरी काएनात उस की मिल्क है वोह तुम से जो कुछ भी लेता है वोह तुम्हारे पास आ़रिय्यतन होता है और "وَلَهٗ مَآ اَعْطٰى" का मत़्लब येह है कि उस ने जो कुछ तुम्हें अ़ता फ़रमाया है वोह भी उसी का ही है क्यूं कि वोह उस की मिल्क से ख़ारिज नहीं होता, लिहाज़ा वोह जो चाहे करे और "وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى" का मत़्लब येह है कि वोह चीज़ उस के मुक़र्रर कर्दा वक़्त से मुक़द्दम या मुअख़्ख़र नहीं होती, तो जिस शख़्स ने इस बात पर यक़ीन कर लिया येह उसे सब्रो अज्र की त़रफ़ उम्मीद की त़रफ़ ले जाएगी।"

《36》...... एक शख़्स पर बेटे की मौत गिरां गुज़री तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे दिलासा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें इन दो बातों में से कौन सी बात पसन्द है कि (2) तुम अपनी ज़िन्दगी में इस से नफ़्अ़ उठाओ या (2) जन्नत के जिस दरवाज़े पर भी आओ वोह पहले ही से वहां मौजूद हो और तुम्हारे लिये जन्नत का दरवाज़ा खोले।" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم !

www.dawateislami.net

येह दूसरी बात मुझे ज़ियादा पसन्द है।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारे लिये ऐसा ही है।'' तो अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह खुश ख़बरी सिर्फ़ इन्ही के लिये ख़ास है या तमाम मुसल्मानों के लिये है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बल्कि तमाम मुसल्मानों के लिये है।''

(سنن النسائی، کتاب الجنائز، باب فی التعزیۃ، الحدیث: ۲۰۹۰، ص ۲۲۲٤)

(سنن الدارقطنی، کتاب البیوع، الحدیث: ۲۹٦٥، ج۳، ص٥٧)

《37》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''मोमिन को जो भी मुसीबत पहुंचती है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो उस के बदले उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب ثواب المومن فیما......الخ، الحدیث: ٦٥٦٥، ص ۱۱۲۸)

《38》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिसे कोई मुसीबत पहुंचे तो वोह मेरी मुसीबत को याद कर लिया करे क्यूं कि वोह सब से बड़ी मुसीबत है।''

(عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی، باب مایقول اذا اصیب بولدہ، الحدیث: ٥٨٢، ص ۱۷۸)

हमारे अकाबिर अइम्मा में से सय्यिदुना क़ाज़ी हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाया : ''हर मोमिन पर वाजिब है कि उसे हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या से जुदाई का ग़म अपने वालिदैन की दुन्या से रुख़्सती से भी ज़ियादा हो जैसा कि इस पर रसूले अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी जानो माल और अहलो इ़याल से ज़ियादा मह़बूब रखना वाजिब है।''

बैतुल ह़म्द का ह़क़्दार :

《39》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने अपने बेटे की मौत के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द की और ''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ'' (या'नी हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का माल हैं और हमें उसी की त़रफ़ फिरना है) पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाएका को उस के लिये जन्नत में एक घर बनाने और उस का नाम **बैतुल ह़म्द** रखने का हुक्म देता है।'' (جامع الترمذی، ابواب الجنائز، باب فضل المصیبۃ اذا احتسب، الحدیث: ۱۰۲۱، ص ۱۷٤۹، مفهومًا)

《40》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मैं अपने जिस मोमिन बन्दे के किसी दुन्यवी अ़ज़ीज़ की रूह़ क़ब्ज़ कर लूं फिर वोह इस पर सवाब की उम्मीद रखे तो उस की जज़ा जन्नत ही है।''

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب العمل الذی یبتغی وجه ......الخ، الحدیث: ٦٤٢٤، ص ٥٤٠)

《41》...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब्र अव्वल सदमे पर होता है।'' (صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب زیارۃ القبور، الحدیث: ۱۲۸۳، ص ۱۰۰)

www.dawateislami.net

या'नी सब्र वोही क़ाबिले ता'रीफ़ होता है जो अचानक मुसीबत पहुंचने पर किया जाए क्यूं कि बा'द में तो त़बई त़ौर पर सब्र आ ही जाता है। इसी लिये बा'ज़ हु-कमा ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़क्ल मन्द को चाहिये कि परेशानी के अय्याम की इब्तिदा ही में वोह काम कर लिया करे जिसे अह़मक़ पांच दिन बा'द करता है।"

﴾42﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने तीन ना बालिग़ बच्चे आगे भेजे (या'नी फ़ौत हो गए और उस ने सब्र किया तो) वोह उस के लिये जहन्नम से रुकावट बन जाएंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "मैं ने दो बच्चे आगे भेजे हैं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "और जो दो भेजे (या'नी उस के लिये भी येही फ़ज़ीलत है)।" एक और शख़्स ने अ़र्ज़ की : "मैं ने एक बच्चा आगे भेजा है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "और जो एक भेजे वोह भी मगर येह (फ़ज़ीलत) अव्वल सदमे में सब्र करने पर है।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب الجنائز ، باب ماجاء فی ثواب من اصیب بولده ، الحدیث:١٦٠٦ ، ص٢٥٧٢)

(جامع الترمذی ،ابواب الجنائز ، باب ماجاء فی ثواب من قدم ولدا،الحدیث:١٠٦١ ،ص١٧٥٣)

﴾43﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस की सिफ़ारिश के लिये दो बच्चे आगे जा चुके हों वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : "और जिस की सिफ़ारिश के लिये एक बच्चा आगे गया हो।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "और जिस की सिफ़ारिश के लिये एक हो वोह भी (जन्नती है)।" (جامع الترمذی ،ابواب الجنائز ، باب ماجاء فی ثواب من قدم ولدا،الحدیث:١٠٦٢ ،ص١٧٥٣)

﴾44﴿...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के बत़्न से पैदा होने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बेटे का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने अहले ख़ाना को मन्अ़ कर दिया कि मेरे इलावा ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को येह बात कोई न बताए, फिर आप उन के पास आईं और रात का खाना पेश किया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब खाने से फ़ारिग़ हो गए तो ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उन की ख़ात़िर पहले से ज़ियादा अच्छा बनाव सिंघार किया, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन से हम बिस्तरी की जब उन्हों ने देखा कि अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ तमाम उमूर से फ़ारिग़ हो चुके हैं, तो कहा : "ऐ अबू त़ल्ह़ा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ)! आप का उस क़ौम के बारे में क्या ख़याल है जिस ने एक ख़ानदान को कोई चीज़ आ़रिय्यतन दी फिर जब उन्हों ने अपनी आ़रिय्यतन दी हुई चीज़ वापस मांगी तो क्या उन्हें वोह चीज़ रोक लेने का इख़्तियार है?" उन्हों ने फ़रमाया : "नहीं।" तो ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की "फिर अपने बेटे पर सब्र करो।" तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ग़ज़ब नाक हो गए, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सारा क़िस्सा अ़र्ज़ किया, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी रात में तुम्हारे लिये ब-र-कत फ़रमाए।"

(صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابة،باب من فضائل ابی طلحة رضی الله تعالی عنه الانصاری،الحدیث:٦٣٢٢،ص١١٠٩)

www.dawateislami.net

《45》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सब्र से बेहतर और वुस्अ़त वाली कोई चीज़ किसी को अ़ता नहीं हुई ।"

(صحیح البخاری ،کتاب الزکاۃ ، باب استعناف عن المسالۃ ، الحدیث: ۱۴۶۹ ، ص ۱۱۶)

《46》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अश्अ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम सब्र करना चाहो तो ईमान और अज्र की उम्मीद पर सब्र कर लो वरना जानवरों की त़रह़ सब्र आ ही जाएगा ।" (کتاب الکبائرللامام الذھبی،فصل فی التعزیۃ، ص۲۱۹)

एक मकूला :

मुसीबत ज़दा से कहा जाता है कि दो अ़ज़ीम मुसीबतों या'नी बच्चे की मौत और अज्र के ज़ियाअ़ को जम्अ़ न करो ।

《47》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "छोटे बच्चे (गोया) जन्नत के पतंगे हैं (या'नी बिला रोक टोक जन्नत में आ जा सकते हैं) इन में से कोई एक अपने वालिद या वालिदैन से मिलेगा तो उन का दामन पकड़ कर खींचेगा यहां तक कि उसे जन्नत में ले जाएगा ।" (صحیح مسلم،کتاب البر و الصلة،باب فضل من یموت له...... الخ،الحدیث:۶۷۰۱،ص۱۱۳۷)

《48》...... जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के बेटे को दफ़्न किया गया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ मुस्कुराने लगे, जब इस का सबब पूछा गया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने सोचा कि शैत़ान को रुस्वा करूं ।" (کتاب الکبائر،فصل فی التعزیۃ،ص ۲۲۰)

《49》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने बेटे को नज़्अ़ के आ़लम में देखा तो इर्शाद फ़रमाया : "बेटा ! तुम मेरे मीज़ान में रखे जाओ येह मुझे इस बात से ज़ियादा पसन्द है कि मैं तुम्हारे मीज़ान में रखा जाऊं ।" (المرجع السابق، ص ۲۲۰)

《50》...... जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शहादत के वक़्त आप का ख़ून आप के चेहरे पर बहा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह दुआ़ मांगी :

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْتَعِیْنُ بِكَ عَلَیْهِمْ وَ اَسْتَعِیْنُكَ عَلٰی جَمِیْعِ اُمُوْرِیْ وَ اَسْئَلُكَ الصَّبْرَ عَلٰی مَآ اَبْلَیْتَنِیْ **तरजमा :** तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तू पाक है, बेशक मुझ से बे जा हुवा। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैं इन के मुक़ाबले में तुझ से मदद चाहता हूं और अपने तमाम उमूर में तुझ से मदद चाहता हूं और तूने मुझे जिस आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया है मैं उस पर सब्र का सुवाल करता हूं। (المرجع السابق، ص ۲۲۰)

《51》...... जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का पाउं नासूर की वजह से काटा गया तो आप ने आह तक न की बल्कि येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

لَقَدْ لَقِیْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝ (پ۱۵،الکہف:۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा ।

www.dawateislami.net

और उस रात भी अपने रात के वज़ाइफ़ तर्क न किये, और उसी रात ह़ज़रते सय्यिदुना वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास एक नाबीना शख़्स आया, ह़ज़रते सय्यिदुना वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उस से ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने बताया : "मेरे अहलो इयाल, औलाद और बहुत सा माल था, सैलाब आया और सब कुछ बहा कर ले गया, मेरे पास सिर्फ़ एक ऊंट और उस का बच्चा बाक़ी बचा, ऊंट बिदक कर भागा और उस का बच्चा भी पीछे हो लिया तो भेड़िया उस बच्चे को खा गया, फिर जब मैं ऊंट के पास पहुंचा तो उस ने मुझे लात मारी जिस से मेरी बीनाई जाती रही, फिर वोह ऊंट भी चला गया और मैं माल व औलाद से मह़रूम हो गया।" ह़ज़रते सय्यिदुना वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "इस को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास ले चलो ताकि येह जान ले कि इस से ज़ियादा मुसीबत ज़दा लोग भी दुन्या में हैं।" (المرجع السابق، ص ٢٢٠)

《52》...... ह़ज़रते मदाइनी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने बियाबान में एक निहायत ह़सीनो जमील औ़रत को देखा तो गुमान किया कि शायद येह बहुत ख़ुशह़ाल है, लेकिन उस ने बताया : "वोह ग़मों और परेशानियों की हम नशीन है, एक मरतबा उस के शोहर ने एक बकरी ज़ब्ह़ की तो उस के बेटों में से एक ने अपने भाई को इसी त़रह़ ज़ब्ह़ करने का इरादा किया और उसे ज़ब्ह़ कर दिया फिर वोह घबरा कर पहाड़ की त़रफ़ भाग गया और भेड़िया उसे खा गया, उस का बाप उस के पीछे गया तो बियाबान में भटक गया और प्यास की शिद्दत से वोह भी हलाक हो गया।" तो आप ने उस से पूछा : "तुम्हें सब्र कैसे आया?" उस ने जवाब दिया : "वोह तक्लीफ़ तो एक ज़ख़्म था जो भर गया।" (المرجع السابق،ص ٢٢٠)

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की तौबा :

《53》...... **मन्क़ूल** है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ (तौबा से पहले) नशे के आ़दी थे, आप की तौबा का सबब येह बना कि आप अपनी एक बेटी से बहुत मह़ब्बत किया करते थे, उस का इन्तिक़ाल हुवा तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने शा'बान की पन्दरहवीं रात ख़्वाब देखा कि आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की क़ब्र से एक बहुत बड़ा अज़्दहा निकल कर आप के पीछे रेंगने लगा, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जब तेज़ चलने लगते वोह भी तेज़ हो जाता, फिर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ एक कमज़ोर सिन रसीदा शख़्स के क़रीब से गुज़रे तो उस से कहा : "मुझे इस अज़्दहे से बचाएं।" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं कमज़ोर हूं, रफ़्तार तेज़ कर लो शायद इस त़रह़ इस से नजात पा सको।" तो आप मज़ीद तेज़ चलने लगे, अज़्दहा पीछे ही था यहां तक कि आप आग के उबलते हुए गढ़ों के पास से गुज़रे, क़रीब था कि आप उस में गिर जाते, इतने में एक आवाज़ आई : "तू मेरा अह्ल नहीं है।" आप चलते रहे ह़त्ता कि एक पहाड़ पर चढ़ गए, उस पर शामियाने और साएबान लगे हुए थे, अचानक एक आवाज़ आई : "इस ना उम्मीद को दुश्मन के नरग़े में जाने से पहले ही घेर लो।" तो बहुत से बच्चों ने उन्हें घेर लिया जिन में आप की वोह बेटी भी थी, वोह आप के पास आई और अपना दायां हाथ उस

www.dawateislami.net

अज़्दहे को मारा तो वोह भाग गया और फिर वोह आप की गोद में बैठ कर येह आयत पढ़ने लगी :

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ (پ۲۷،الحدید:۱۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद और उस ह़क़ के लिये जो उतरा ।

आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी उस बेटी से पूछा : "क्या तुम (फ़ौत होने वाले) कुरआन भी पढ़ते हो ?" तो उस ने जवाब दिया : "जी हां ! हम आप (या'नी ज़िन्दा लोगों) से ज़ियादा इस की मा'रिफ़त रखते हैं।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से इस जगह ठहरने का मक़्सद पूछा तो उस ने बताया : "येह बच्चे क़ियामत तक यहां ठहर कर अपने उन वालिदैन का इन्तिज़ार करेंगे जिन्हों ने उन्हें आगे भेजा है।" फिर उस अज़्दहे के बारे में पूछा तो उस ने बताया : "वोह आप का बुरा अ़मल है।" फिर उस ज़ईफ़ुल उ़म्र शख़्स के बारे में पूछा तो उस ने बताया : "वोह आप का नेक अ़मल है, आप ने उसे इतना कमज़ोर कर दिया है कि उस में आप के बुरे अ़मल का मुक़ाबला करने की सकत नहीं, लिहाज़ा आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करें और हलाक होने से बचें।" फिर वोह बुलन्दी पर चली गई जब आप बेदार हुए तो उसी वक़्त सच्ची तौबा कर ली। (روض الریاحین، ص۹۱)

पस औलाद के नफ़्अ़ में ग़ौर कर लो मगर येह सिर्फ़ उसे ह़ासिल होगा जो मुसीबत पर राज़ी रहे और सब्र करे और जो नाराज़ हो कर अपनी हलाकत व बरबादी की दुआ़ करने लगे या अपने रुख़्सार पीटे, गिरीबान चाक करे या सर मुंडाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर नाराज़ होगा और ला'नत फ़रमाएगा ख़्वाह वोह मर्द हो या औ़रत।

《54》...... मरवी है : "मुसीबत के वक़्त रानों पर हाथ मारना अज्र को बरबाद कर देता है।"

(فردوس الاخبار،باب الضاد،الحدیث:۳۷۱۷،ج۲،ص۴۲)

《55》...... मरवी है : "जिसे कोई मुसीबत पहुंचे फिर वोह उस की वजह से अपने कपड़े फाड़े या रुख़्सार पीटे या गिरीबान चाक करे या बाल नोचे तो गोया उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से जंग करने के लिये नेज़ा उठा लिया।" (کتاب الکبائر،فصل فی التعزیة، ص۲۲۰)

《56》...... ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "मैं एक मरतबा शबे जुमुआ़ एक क़ब्रिस्तान में सो गया, मैं ने (ख़्वाब में) मुर्दों को अपनी क़ब्रों से निकल कर ह़ल्क़ा बनाते हुए देखा, उन पर ग़िलाफ़ से ढांपे हुए त़बाक़ उतरे जब कि उन में से एक नौ जवान पर अ़ज़ाब हो रहा था, मैं ने उस के पास आ कर अ़ज़ाब का सबब पूछा तो उस ने कहा : "मेरी वालिदा ने मय्यित पर रोने और इस की ख़ूबियां बयान करने वालियों को जम्अ़ कर रखा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी त़रफ़ से उसे अच्छी जज़ा न दे।" फिर वोह रोने लगा और कहा कि मैं उस की वालिदा के पास जाऊं, उस ने मुझे उस का पता बताया और कहा कि मैं उस से येह अ़ज़ाब दूर करूं जिस के अस्बाब उस की मां ने पैदा किये हैं,

www.dawateislami.net

लिहाज़ा जब सुब्ह हुई तो मैं उस की मां के पास गया, मैं ने देखा कि रोने वाली औ़रतें उस के पास मौजूद हैं और कस्रते गिर्या और रुख़्सार पीटने की वजह से उस का चेहरा सियाह पड़ गया है, मैं ने अपना ख़्वाब उसे सुनाया तो उस ने तौबा की और रोने वाली औ़रतों को घर से निकाल दिया और उस की त़रफ़ से स-दक़ा करने के लिये मुझे कुछ दिरहम दिये, फिर मैं ह़स्बे मा'मूल शबे जुमुआ़ क़ब्रिस्तान पहुंचा तो वोह दिरहम स-दक़ा कर चुका था, जब मैं सोया तो मैं ने उस नौ जवान को फिर ख़्वाब में देखा उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से अ़ज़ाब दूर कर दिया है और स-दक़ा भी मुझ तक पहुंच गया है, आप मेरी मां को इस के बारे में बता दें।" फिर मैं बेदार हो कर उस की मां के पास पहुंचा तो उस को मुर्दा पाया फिर मैं उस की नमाज़े जनाज़ा में शरीक हुवा और उसे उस के बेटे के पहलू में दफ़्न कर दिया।"

क़ियामत में मुसीबत ज़दा लोगों का अज्रो सवाब :

《57》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आ़फ़िय्यत में रहने वाले लोग जब मुसीबत ज़दा लोगों का अज्र देखेंगे तो तमन्ना करेंगे कि काश ! (दुन्या में) उन की खाल को क़ैंचियों से काट दिया जाता।"

(جامع الترمذی ،ابواب الزھد ، باب ٥٨ یوم القیامة وندامة المحسن ......الخ ، الحدیث: ٢٤٠٢ ، ص ١٨٩٣)

《58》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन शहीद को ला कर ह़िसाब के लिये खड़ा किया जाएगा, फिर स-दक़ा करने वाले को लाया जाएगा और ह़िसाब के लिये रोक लिया जाएगा, फिर मुसीबत ज़दों को लाया जाएगा तो उन के लिये न मीज़ान नस्ब की जाएगी, और न ही आ'माल नामे खोले जाएंगे बल्कि उन पर बहुत ज़ियादा अज्र निछावर किया जाएगा यहां तक कि आ़फ़िय्यत में रहने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा सवाब देख कर मैदाने ह़श्र में इस बात की तमन्ना करेंगे कि काश ! (दुन्या में) उन के जिस्मों को क़ैंचियों से काट दिया जाता।" (المعجم الکبیر،الحدیث:١٢٨٢٩،ج١٢،ص١٤١)

《59》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत व बला में मुब्तला फ़रमा देता है।" (صحیح البخاری،کتاب المرضی،باب ماجاء فی کفارة المرض،الحدیث:٥٦٤٥،ص٤٨٣)

《60》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी क़ौम से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उसे आज़माइश में मुब्तला फ़रमा देता है, फिर जो सब्र करता है उस के लिये सब्र है और जो जज़्अ़ फ़ज़्अ़ करता है उस के लिये जज़्अ़ ही है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، الحدیث: ٢٣٦٩٥،ج ٩، ص ١٦١)

www.dawateislami.net

《61》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बन्दे का एक मर्तबा होता है जब वोह किसी अ़मल के ज़रीए उस तक न पहुंच सके तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसे ह़ालात से दो चार कर देता है जो उसे पसन्द नहीं होते यहां तक कि वोह उस द-रजे तक पहुंच जाता है।"

(صحیح ابن حبان ،کتاب الجنائز ، باب ماجاء فی الصبر وثواب الامراض ، الحدیث: ۲۸۹۷ ، ج٤ ، ص ۲٤۸)

《62》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब बन्दे का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां कोई मर्तबा मुक़र्रर हो और वोह उस मर्तबे तक किसी अ़मल से न पहुंच सके तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जिस्म, माल या औलाद की आज़माइश में मुब्तला फ़रमाता है फिर उसे उन तकालीफ़ पर सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है यहां तक कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां अपने मुक़र्रर द-रजे तक पहुंच जाता है।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الجنائز ، باب الامراض المکفرة ......الخ ، الحدیث: ۳۰۹۰، ص ۱٤٥٦)

《63》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आज़माइश के ज़रीए इस त़रह़ परखता है जिस त़रह़ तुम में से कोई अपने सोने को आग पर परखता है, लिहाज़ा उस से निकलने वाले कुछ लोग सफ़ेद चमकदार सोने की त़रह़ होते हैं, येह वोह लोग हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शुबुहात से बचाता है और उस से निकलने वाले कुछ लोग उन से कमतर होते हैं, येह वोह हैं जो कुछ शक व शुबा में मुब्तला होते हैं और उस से निकलने वाले कुछ लोग सियाह सोने की त़रह़ होते हैं, येह वोह लोग हैं जो आज़माइश में मुब्तला हैं।"

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۷٦۹۸، ج۸، ص ١٦٦)

मोमिन को मुसीबत पर भी अज्र मिलता है :

《64》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन को जो थकावट, बीमारी, परेशानी, ख़ौफ़, रन्ज और ग़म पहुंचता है ह़त्ता कि कांटा भी चुभता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के इ़वज़ उस के गुनाह मिटा देता है।"

(صحیح البخاری، کتاب المرضیٰ، باب ماجاء فی کفارة المرض،الحدیث: ٥٦٤١/٤٢،ص٤٨٣)

《65》...... सरकारे मदीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान को जो भी मुसीबत पहुंचे यहां तक कि कांटा भी चुभे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के इ़वज़ उस के गुनाह मिटा देता है।" (صحیح البخاری، کتاب المرضیٰ، باب ماجاء فی کفارة المرض،الحدیث:٥٦٤٠،ص٤٨٣)

《66》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस किसी मुसल्मान को कोई कांटा चुभे या इस से बड़ी किसी मुसीबत का शिकार हो तो उस के लिये एक द-रजा लिख दिया जाता है और उस का एक गुनाह मिटा दिया जाता है।"

(صحیح مسلم، کتاب البروالصلة ، باب ثواب المؤمن فیما......الخ،الحدیث:٦٥٦١،ص١١٢٨)

www.dawateislami.net

《67》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन मर्द व औरत पर उस की जान, माल और औलाद के मुआ-मले में मुसीबतें नाज़िल होती रहती हैं यहां तक कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मुलाक़ात करेंगे कि उन पर कोई गुनाह न होगा।"

(جامع الترمذی، ابواب الزھد،باب ماجاء فی الصبر علی البلاء،الحدیث: ۲۳۹۹،ص۱۸۹۳)

《68》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस पर उस के माल या उस की जान के मुआ-मले में कोई मुसीबत नाज़िल हो और वोह उसे छुपाए और लोगों के सामने उस का शिक्वा न करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।" (المعجم الاوسط،الحدیث: ۷۳۷،ج۱،ص۲۱٤)

《69》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन का मरज़ उस की ख़ताओं का कफ़्फ़ारा होता है।"

(المستدرک ،کتاب الجنائز،باب قصة اعرابی لم تاخذہ ......الخ،الحدیث: ۱۳۲۲،ج۱،ص٦٦۷)

《70》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब एक मोमिन बीमार होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे गुनाहों से इस तरह पाक फ़रमा देता है जिस तरह भट्टी लोहे का ज़ंग दूर कर देती है।" (المعجم الاوسط،الحدیث:٤۱۲۳،ج۳،ص۱٤۲)

《71》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में दीवाने पन में मुब्तला औरत ने अपनी शिफ़ायाबी के लिये दुआ की दर-ख़्वास्त की, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू येह चाहे कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ करूं तो वोह तुझे शिफ़ा अता फ़रमा दे लेकिन अगर तू सब्र करना चाहे तो (इस के बदले) तुझ पर कोई हिसाब न होगा (तू सब्र कर)।" तो उस औरत ने अर्ज़ की : "मैं सब्र करूंगी और मुझ पर कोई हिसाब न होगा।"

(صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر......الخ، الحدیث:۲۸۹۸،ج٤،ص۲٤۹)

《72》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब भी मोमिन की कोई रग चढ़ जाती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मिटाता, एक नेकी लिखता और एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है।"

(المستدرک،کتاب الجنائز،باب قصة اعرابی لم تأخذہ الحمی......الخ،الحدیث:۱۳۲٤،ج۱،ص٦٦۸)

《73》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब बन्दा बीमार होता है या सफ़र पर जाता है तो उस के वोह आ'माल भी लिखे जाते हैं जो वोह तन्दुरुस्ती की हालत में किया करता था।" (المسند للامام احمد بن حنبل،الحدیث:۱۹٦۹۹،ج۷،ص۱٦۱)

《74》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : "मरीज़ की

www.dawateislami.net

ख़ताएं इस त़रह़ झड़ती हैं जिस त़रह़ दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث اسدبن خالد......الخ،الحديث:١٦٦٥٤،ج٥،ص٥٩٤)

《75》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन का दर्दे सर और उसे जो भी कांटा चुभे या किसी और चीज़ से अज़िय्यत पहुंचे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के इवज़ क़ियामत के दिन उस का द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और उस के गुनाह मिटाएगा।''

(فردوس الاخبار،باب الصاد،الحديث:٣٥٨٨،ج٢،ص٢٧)

《76》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को तक्लीफ़ में मुब्तला रखता है यहां तक कि वोह तक्लीफ़ उस के तमाम गुनाह मिटा देती है।''

(المستدرك،كتاب الجنائز،باب المريض يكتب له من......الخ،الحديث: ١٣٢٦،ج١،ص٦٦٩)

《77》...... रसूल अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बुख़ार को गाली न दो क्यूं कि येह आदमी के गुनाहों को इसी त़रह़ ख़त्म कर देता है जिस त़रह़ भट्टी लोहे के ज़ंग को दूर कर देती है।'' (صحيح مسلم، كتاب البر والصلة ، باب ثواب المؤمن فيما يصيبه......الخ،الحديث:٦٥٧٠،ص١١٢٩)

《78》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक रात के बुख़ार के इवज़ मोमिन की तमाम ख़त़ाएं मिटा देता है।''

(كشف الخفاء،كتاب حرف الحاء المهملة،باب حمى يوم كفارة سنة ، الحديث:١١٧١،ج١،ص٣٢٦)

《79》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बुख़ार मोमिन का जहन्नम में से हि़स्सा है।'' (كشف الخفاء، الحديث:١١٧٣،ج١،ص٣٢٦)

《80》...... जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ (پ٥،النساء:١٢٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।

तो येह बात मुसल्मानों पर शदीद गिरां गुज़री, तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां दुन्या में जिस्म को तक्लीफ़ देने वाली मुसीबत के ज़रीए़ उस की जज़ा दी जाएगी।''

(المسندللامام احمد بن حنبل ، الحديث:٢٤٤٢٢،ج٩،ص٣٣٤)

《81》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस आयते मुबा-रका के बारे में सुवाल किया तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, क्या तुम बीमार नहीं होते ? क्या तुम ग़मगीन नहीं होते ? क्या तुम पर तंगी नहीं आती ?'' तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हें जो जज़ा मिलती है वोह येही है।'' (المسندللامام احمد بن حنبل ، الحديث: ٦٨،ج١،ص٣٥)

www.dawateislami.net

《82》...... ऐसी ही एक रिवायत उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी इस आयते मुबा-रका के बारे में रिवायत करती हैं :

وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ یُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ (پ۳،البقرہ:۲۸۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या छुपाओ अल्लाह तुम से उस का ह़िसाब लेगा।

कबीरा नम्बर 119 : मय्यित की हड्डी तोड़ना
कबीरा नम्बर 120 : क़ब्र के ऊपर बैठना

《1》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मय्यित की हड्डी तोड़ना ज़िन्दगी में उस की हड्डी तोड़ने की त़रह़ है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز ، باب فی الحفّاریجد العظم......الخ،الحدیث:٣٢٠٧،ص١٤٦٤)

《2》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से कोई शख़्स किसी अंगारे पर बैठे और उस के कपड़े जल जाएं और उस की जिल्द तक असर पहुंच जाए तो येह उस के लिये किसी क़ब्र के ऊपर बैठने से बेहतर है।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز ، باب النهی عن الجلوس علی القبر......الخ،الحدیث: ٢٢٤٨،ص ٨٣٠)

《3》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं किसी अंगारे या तलवार पर चलूं या मेरे जूते मेरे पाऊं में घुस जाएं येह मुझे किसी क़ब्र के ऊपर चलने से ज़ियादा पसन्द है।" (ابن ماجه، ابواب الجنائز ،باب ماجاء فی النهی عن المشی......الخ،الحدیث: ١٥٦٧،ص ٢٥٧٠)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "मैं अंगारे पर क़दम रखूं येह मुझे मुसल्मान की क़ब्र पर क़दम रखने से ज़ियादा मह़बूब है।" (المعجم الکبیر،الحدیث: ٩٦٠٥،ج٩،ص ٣٢١)

《5》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मारह बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे एक क़ब्र के ऊपर बैठे देखा तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ क़ब्र वाले ! क़ब्र के ऊपर बैठने वाले शख़्स नीचे उतर जा, न तू क़ब्र वाले को ईज़ा दे न वोह तुझे ईज़ा दे।" (مجمع الزوائد،کتاب الجنائز،باب النساء علی القبور والجلوس......الخ،الحدیث:٤٣٢١،ج٣،ص ١٩١)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

मैं ने इन गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार होते नहीं देखा मगर बयान की गई अहादीसे मुबा-रका से येह ब ख़ूबी मा'लूम होता है कि येह कबीरा गुनाह है क्यूं कि इन में बयान शुदा वईद बहुत सख़्त है और इस में कोई शक भी नहीं क्यूं कि मुर्दे की हड्डी तोड़ना ज़िन्दा आदमी की हड्डी तोड़ने की त़रह़ है, जब कि क़ब्र पर बैठना हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त के नज़्दीक ह़राम है, सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी अपनी बा'ज़ कुतुब में साबिक़ा अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर इन की मुता-ब-अ़त की है, जिस त़रह़ उन्हों ने इन अह़ादीसे मुबा-रका से इन दोनों अफ़्आ़ल की हुरमत पर इस्तिद्लाल किया है इसी त़रह़ हम इन के कबीरा गुनाह होने पर इन अह़ादीसे मुबा-रका ही से इस्तिद्लाल करते हैं क्यूं कि कबीरा की ता'रीफ़ात में से एक ता'रीफ़ तो इस पर सादिक़ आती है और वोह वईद का सख़्त होना है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 121 : क़ब्र के ऊपर मस्जिद बनाना या चराग़ जलाना[1]

कबीरा नम्बर 122 : औरतों का क़ब्र की ज़ियारत करना[2]

कबीरा नम्बर 123 : औरतों का जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान जाना

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि "सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ब्रिस्तान जाने वाली औ़रतों, क़ब्र के ऊपर मस्जिद बनाने वालों और चराग़ जलाने वालों पर ला'नत फ़रमाई है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز ، باب فی زیارۃ النساء القبور،الحدیث:۳۲۳۶،ص۱۴۶۶)

﴾2﴿...... शफ़ीउ़ल मुज्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कसरत से क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है।

(جامع الترمذی، ابواب الجنائز ، باب ماجاء فی کراھیۃ زیارۃ القبور لنساء،الحدیث: ۱۰۵۶،ص۱۷۵۳)

﴾3﴿...... हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि हम ने मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में एक मय्यित को दफ़्नाया, जब हम फ़ारिग़ हो गए तो रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले आए और हम भी लौट आए, जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने काशानए अक़्दस के दरवाज़े पर पहुंचे तो ठहर गए, अचानक हम ने एक औ़रत को आते हुए देखा, रावी फ़रमाते हैं मेरा ख़याल है कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे पहचान लिया था, जब वोह चली गई तो मा'लूम हुवा कि वोह ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا थीं, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा कि "ऐ फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) ! तुम्हें किस चीज़ ने घर से निकलने पर आमादा किया?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं उस मय्यित के लवाह़िक़ीन से हमदर्दी करने आई थी।" या फिर कहा, "ता'ज़िय्यत करने आई थी।" तो ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "शायद तुम उन के साथ क़ब्रिस्तान तक पहुंच गई थी।" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "مَعَاذَاللّٰہ ! मैं ऐसा कैसे कर सकती हूं, ह़ालां कि मैं ने औ़रतों के क़ब्रिस्तान जाने के बारे में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1. क़ब्रों पर चराग़ जलाने का तफ़्सीली हुक्म इसी किताब के सफ़्ह़ा नम्बर 488-489 पर ह़ाशिये में देखें।

2. ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی औ़रतों के क़ब्रिस्तान जाने के मु-तअ़ल्लिक़ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं : "और अस्लम येह है कि औ़रतें मुत्लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ है और सालिह़ीन की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अ-दबी करेंगी कि औ़रतों में येह दोनों बातें ब कसरत पाई जाती हैं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 89)

www.dawateislami.net

के इर्शादात सुन रखे हैं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम उन के साथ क़ब्रिस्तान चली जाती तो मैं तुम्हें इस बात पर झिड़क्ता।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز ،باب التعزیۃ ، الحدیث:۳۱۲۳،ص۱۴۵۸)

《4》...... जब कि नसाई शरीफ़ की रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं हैं : "अगर तुम उन के साथ क़ब्रिस्तान चली जाती तो उस वक़्त तक जन्नत न देख सकती जब तक अ़ब्दुल मुत्तलिब उसे न देख लें।"[1]

(سنن النسائی، کتاب الجنائز،باب النعی،الحدیث:۱۸۸۱،ص ۲۲۱۱)

《5》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में कुछ औ़रतों को बैठे हुए देखा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हें किस चीज़ ने बिठाया है?" उन्हों ने अ़र्ज़ की "हम जनाज़े का इन्तिज़ार कर रही हैं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया "क्या तुम उसे गुस्ल दोगी?" उन्हों ने अ़र्ज़ की "जी नहीं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या उसे कन्धा दोगी?" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "जी नहीं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या जो परेशान ह़ाल है उस के क़रीब जाओगी?" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "जी नहीं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर बिग़ैर अज्र पाए गुनहगार हो कर लौट जाओ।"

(سنن ابن ماجہ،ابواب الجنائز،باب ماجاء فی اتباع النساء الجنائز،الحدیث: ۱۵۷۸،ص ۲۵۷۱)

तम्बीह :

इन तीन गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना पहली ह़दीसे पाक की सराह़त की बिना पर है क्यूं कि इस में पहले दो गुनाहों के मुर-तकिब पर ला'नत वारिद हुई है, जब कि दूसरी ह़दीसे पाक दूसरे गुनाह के कबीरा होने पर सरीह़ दलील है और ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا वाली ह़दीसे पाक का ज़ाहिर बल्कि नसाई शरीफ़ की ह़दीसे पाक के येह अल्फ़ाज़ : "तुम जन्नत न देख पाती।" तीसरे गुनाह के कबीरा होने पर दलील हैं, ह़ालां कि मैं इन गुनाहों में से किसी एक को भी कबीरा गुनाहों में शुमार नहीं पाता बल्कि हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के कलाम में इन के

---

1 : मज़्कूरा ह़दीसे पाक की तशरीह़ व तह़क़ीक़ करते हुए **इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मुह़द्दिसे बरेल्वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "वाजिब हुवा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब मुसल्मान व अहले जन्नत हों अगर्चे मिस्ले सिद्दीक़ व फ़ारूक़ व उ़स्मान व अ़ली व ज़हरा व सिद्दीक़ा वग़ैरहुम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم साबिक़ीने अव्वलीन में न हों अब मा'ना ह़दीस बिला तकल्लुफ़ और बे ह़ाजते तावील व तसर्रुफ़ अ़क़ाइदे अहले सुन्नत से मुत़ाबिक़ हैं या'नी अगर येह अम्र तुम से वाक़ेअ़ होता तो साबिक़ीने अव्वलीन के साथ जन्नत में जाना न मिलता बल्कि उस वक़्त जब कि अ़ब्दुल मुत्तलिब दाख़िले बिहिश्त होंगे।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 30, स. 276)

www.dawateislami.net

मक्रूह होने की सराहत है न कि हराम होने की चे जाएकि वोह इसे कबीरा गुनाह क़रार देते, लिहाज़ा इन के कबीरा होने को इस सूरत पर महमूल करना चाहिये जब कि इस के मफ़ासिद बहुत ज़ियादा हों जैसा कि बहुत सी औरतें क़ब्रिस्तान जाती हैं या बहुत ही बुरी हालत बना कर जनाज़े के पीछे चलती हैं। मुमा-न-अत की वजह या तो नौहा वग़ैरा करना है या क़ब्रों की ज़ियारत के वक़्त अपनी ज़ीनत करना जिस पर फ़ितने का क़वी अन्देशा हो और इसी तरह क़ब्र के ऊपर मस्जिद बनाना क्यूं कि ऐसी सूरत में येह ग़स्ब के हुक्म में होगा कि येह इस्राफ़, फ़ुज़ूल ख़र्ची और हराम कामों में माल ख़र्च करना है, लिहाज़ा ऐसी सूरत में इन्हें कबीरा गुनाह शुमार करना वाज़ेह है, हां हमारे अस्हाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने क़ब्र के ऊपर चराग़ रखने की हुरमत की सराहत की है अगर्चे इतना कम ही क्यूं न हो जिस से न तो मुक़ीम नफ़्अ़ उठा सके और न ही ज़ाइर और उन्हों ने इस्राफ़, इज़ा-अ़तुल माल और मजूसियों की मुशा-बहत को इस की इल्लत क़रार दिया, लिहाज़ा ऐसी सूरत में इस का कबीरा गुनाह होना बईद भी नहीं।

कबीरा नम्बर 124 : चन्द मख़्सूस मन्तर पढ़ना
कबीरा नम्बर 125 : ता'वीज़ात पहनना या गन्डे लटकाना[1]

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने ता'वीज़ पहना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का काम पूरा न करे और जिस ने सीप (जो बतौरे ता'वीज़ इस्ति'माल की जाती है) लटकाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बे सुकून रखेगा।" (المستدرک، کتاب الطب، باب اذا رأی احدکم ......الخ،الحدیث: ۷۵۷۶،ج۵،ص۳۰۵)

---

1 : ऐसे ता'वीज़ात इस्ति'माल करना जाइज़ है जो आयाते क़ुरआनिया, अस्माए इलाहिय्यह या दुआ़ओं पर मुश्तमिल हों, चुनान्चे इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने बालिग़ बच्चों को सोते वक़्त येह कलिमात पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाते : "بِسْمِ اللّٰہِ اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّامَّۃِ مِنْ غَضَبِہٖ وَعِقَابِہٖ وَشَرِّ عِبَادِہٖ وَمِنْ ھَمَزَاتِ الشَّیَاطِیْنِ وَاَنْ یَّحْضُرُوْنَ" और इन में से जो ना बालिग़ होते और याद न कर सकते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मज़्कूरा कलिमात लिख कर उन का ता'वीज़ बच्चों के गले में डाल देते।"

(مسند امام احمد بن حنبل،مسندعبداللہ بن عمرو، الحدیث: ۶۷۰۸،ج۲،ص ۶۰۰)

हज़रते सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब "**बहारे शरीअ़त**" में **दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मुहतार** के हवाले से फ़रमाते हैं : "गले में ता'वीज़ लटकाना जाइज़ है जब कि वोह ता'वीज़ जाइज़ हो या'नी आयाते क़ुरआनिया या अस्माए इलाहिय्यह या अदइय्या से ता'वीज़ किया गया हो और बा'ज़ हदीसों में जो मुमा-न-अ़त आई है इस से मुराद वोह ता'वीज़ हैं जो ना जाइज़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हों जो ज़मानए जाहिलिय्यत में किये जाते थे, इसी तरह ता'वीज़ात और आयात व अहादीस व अदइय्या रिकाबी में लिख कर मरीज़ को ब निय्यते शिफ़ा पिलाना भी जाइज़ है। जुनुब व हाइज़ व नु-फ़सा भी ता'वीज़ात को गले में पहन सकते हैं, बाज़ू पर बांध सकते हैं जब कि ता'वीज़ात ग़िलाफ़ में हों।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 155,156)

www.dawateislami.net

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में 10 अफ़राद के क़ाफ़िले में ह़ाज़िर हुवा तो सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने 9 आदमिय्यों को बैअ़त फ़रमा लिया और एक को रोक दिया लोगों ने अ़र्ज़ की, ''इस का क्या मुआ़-मला है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस के बाज़ूओं पर ता'वीज़ है।'' लिहाज़ा उस शख़्स ने ता'वीज़ उतार दिया और फिर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे बैअ़त फ़रमा लिया और इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने ता'वीज़ लटकाया उस ने शिर्क किया।'' (المرجع السابق، الحدیث:۷۵۸۸، ج۵،ص ۳۰۹)

《3》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के बाज़ू पर पट्टी देखी, रावी कहते हैं : ''शायद वोह पट्टी ज़र्द रंग की थी।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम पर अफ़्सोस ! येह क्या है ?'' उस ने अ़र्ज़ की, ''बाज़ू के दर्द का ता'वीज़ है।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह तुम्हारी सुस्ती में इज़ाफ़ा करेगा इसे फेंक दो क्यूं कि तुम इसी ह़ालत में मर गए तो कभी फ़लाह़ न पा सकोगे।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۲۰۰۲۰،ج۷،ص۲۲۸)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी ज़ौजए मोह़-त-रमा के पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने कोई चीज़ ता'वीज़ के तौ़र पर गले में लटका रखी थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे खींच कर तोड़ दिया और इर्शाद फ़रमाया : ''जब तक कोई हुक्म नाज़िल न हो अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के घर वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराने से बे नियाज़ हो चुके हैं।'' फिर इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ''मन्तर, ता'वीज़ और जादू टोना शिर्क हैं।'' घर वालों ने पूछा : ''ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! मन्तर और ता'वीज़ात को तो हम पहचानते हैं, **''येह जादू टोना से क्या मुराद है ?''** तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : **''वोह टोटके जो औ़रतें शोहरों को गिरवीदा करने के लिये इस्ति'माल करती हैं।''** (المستدرک،کتاب الطب، باب نھی عن الرقی و التمائم......الخ،الحدیث:۷۵۷۹/۸۰،ج۵ص۳۰۶)

बा'ज़ ने कहा है : टोना जादू से मुशाबेह या इस की एक क़िस्म है और औ़रतें इसे अपने शोहर को गिरवीदा करने के लिये इस्ति'माल करती हैं।

《5》...... एक और रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़-त-रमा ने कहा : ''मैं एक दिन बाहर निकली तो फ़ुलां शख़्स की मुझ पर नज़र पड़ी और मेरी उस पर पड़ने वाली आंख से आंसू जारी हो गए जब मैं ने येह ता'वीज़ पहना तो आंख बहना रुक गई और जब ता'वीज़ उतारा तो आंख फिर बहने लगी।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया ''वोह शैत़ान है तुम उस की इत़ाअ़त करती हो तो वोह तुम्हें छोड़ देता है और जब उस की ना फ़रमानी करती हो तो तुम्हारी आंख में उंगली मारता है, लेकिन तुम शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीक़े पर अ़मल करो तो येह तुम्हारे लिये बेहतर और ह़ुसूले

www.dawateislami.net

शिफ़ा के लिये तेज़ तर साबित होगा, अपनी आंख में पानी डालो और कहो : اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَآءَ اِلَّا شِفَآؤُكَ شِفَآءً لَّا يُغَادِرُ سُقْمًا **तरजमा :** ऐ लोगों के रब ! तंगदस्ती दूर फ़रमा और शिफ़ा अ़ता फ़रमा कि तू ही शिफ़ा अ़ता फ़रमाने वाला है सिवाए तेरी शिफ़ा के कोई शिफ़ा नहीं, वोह ऐसी शिफ़ा है जो कोई बीमारी नहीं छोड़ती।" (سنن ابن ماجة، ابواب الطب،باب تعليق التمائم،الحديث: ٣٥٣٠،ص٢٦٨٩)

《6》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ता'वीज़ वोह नहीं जो मुसीबत के बा'द पहना जाए बल्कि ता'वीज़ तो वोह है जो मुसीबत से पहले लटकाया जाए।" (المستدرك،كتاب الطب، باب تميمة ماتعلق به......الخ،الحديث: ٧٥٨٢،ج٥ص٣٠٧)

तम्बीह :

इन अहादीसे मुबा–रका में बयान की गई सख़्त वईद ख़ुसूसन इसे शिर्क के नाम से पुकारे जाने की वजह से इन दोनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है अगर्चे मैं ने किसी को ख़ास तौर पर इस की सराहत करते हुए नहीं देखा मगर फ़ु–क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने कुछ ऐसी सराहतें ज़रूर की हैं कि जिन से इन के ब द–र–जए औला कबीरा गुनाह होने का तअस्सुर मिलता है, अलबत्ता ता'वीज़ नुमा धागा वग़ैरा लटकाने को इस सूरत पर महमूल करना मु–तअय्यन है जब येह ए'तिक़ाद हो कि येह ता'वीज़ ब ज़ाते ख़ुद आफ़ात से दूर करने का ज़रीआ़ है और बिला शुबा **येह ए'तिक़ाद जहालत व गुमराही** और कबीरा तरीन गुनाह है क्यूं कि अगर येह शिर्क न भी हो तब भी शिर्क की त़रफ़ ले जाने वाला ज़रूर है क्यूं कि ह़क़ीक़ी नाफ़ेअ़ व ज़ार और मानेअ़ व दाफ़ेअ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की ज़ाते पाक है।

वोह मन्तर जो इसी मा'ना पर महमूल हों या ग़ैर अ़–रबी और ऐसे अल्फ़ाज़ पर महमूल हों जिन का मा'ना मा'लूम न हो तो ऐसी सूरत में इन का इस्ति'माल ह़राम है जैसा कि सय्यिदुना ख़त्ताबी और सय्यिदुना बैहक़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا वग़ैरा ने सराहत की है।

अ़ल्लामा इब्ने सलाम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन के मौक़िफ़ की दलील के तौर पर येह ह़दीसे पाक पेश की :

《7》...... जब सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस के बारे में पूछा गया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने ता'वीज़ात मेरे पास लाओ।"

(صحيح مسلم، كتاب السلام،باب لا بأس بالرقى......الخ،الحديث:٥٧٣٢، ص١٠٦٨)

उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस का सबब येह बयान फ़रमाया है कि ना मा'लूम अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल जुम्ले कभी जादू के मन्तर होते हैं या कुफ़्रिय्यात पर मुश्तमिल होते हैं। सय्यिदुना ख़त्ताबी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह बात ज़िक्र कर के फ़रमाया : "जब इन का मा'ना मा'लूम हो और इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र हो तो उस का इस्ति'माल मुस्तह़ब है और उस से ब–र–कत ह़ासिल की जा सकती है।"

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 126 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द करना

《1》...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को पसन्द किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस से मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाता है और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस से मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाएगा।" मैं ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर इस से मुराद मौत को ना पसन्द करना है तो हम में से हर एक मौत को ना पसन्द करता है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह मुराद नहीं बल्कि मोमिन को जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत, रिज़ा और जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी जाए और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को पसन्द करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस से मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाता है और काफ़िर को जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और उस की ना राज़गी के बारे में बताया जाए तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द करता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ،باب من احب لقاء......الخ،الحدیث:٦٨٢٢،ص١١٤٥)

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात पसन्द करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मुलाक़ात पसन्द फ़रमाएगा और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाएगा।" हम ने अ़र्ज़ की, "या रसुलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक मौत को ना पसन्द करता है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस से मुराद मौत को ना पसन्द करना नहीं, बल्कि जब मोमिन नज़्अ़ के आ़लम में हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के पास कोई ख़ुश ख़बरी आए तो उस के नज़्दीक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात से मह़बूब चीज़ कोई न हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात पसन्द करता है और काफ़िर जब नज़्अ़ के आ़लम में हो फिर उसे कोई शर पहुंचे या अ़ज़ाब के बारे में बताया जाए वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मिलना ना पसन्द करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस से मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाता है।"

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق،باب من احب لقاء......الخ،الحدیث:٦٥٠٧،ص٥٤٦،بتغیرقلیل)

《3》...... जब कि एक और रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "उस के नज़्दीक कोई भी चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात से बढ़ कर मह़बूब नहीं, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाता है, जब कि काफ़िर के पास जब वोह ना पसन्दीदा चीज़ (या'नी मौत) आए तो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात से बढ़ कर कोई चीज़ ना पसन्द नहीं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को इसी त़रह़ ना पसन्द फ़रमाएगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ١٢٠٤٧،ج٤،ص٢١٥،بتغیرقلیل)

www.dawateislami.net

《4》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ फ़रमाई : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो मुझ पर ईमान लाए और मेरी तस्दीक़ करे और यक़ीन रखे कि मैं जो दीन उस के पास ले कर आया हूं वोह तेरी जानिब से हक़ है तो तू उस के माल और औलाद में कमी फ़रमा कर अपनी मुलाक़ात को उस के नज़्दीक महबूब बना दे और उसे जल्दी कुव्वत अता फ़रमा, लेकिन जो मुझ पर ईमान लाए न मेरी तस्दीक़ करे और न ही इस बात पर यक़ीन करे कि मैं जो दीन ले कर आया हूं वोह तेरी जानिब से है तू उस के माल व औलाद में इज़ाफ़ा फ़रमा और उस की उम्र को तवील फ़रमा।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الزهد، باب فی المکثرين،الحديث:٤١٣٣،ص٢٧٢٨)

《5》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ मांगी : "ऐ मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! जो मुझ पर ईमान लाए इस बात की गवाही दे कि मैं तेरा रसूल हूं तो तू उसे अपनी मुलाक़ात का मुश्ताक़ बना दे और उस की मौत उस पर आसान फ़रमा दे और उस के लिये सामाने दुन्या में कमी फ़रमा दे, लेकिन जो मुझ पर ईमान न लाया और न इस बात की गवाही दी कि मैं तेरा रसूल हूं तो तू न उसे अपनी मुलाक़ात की महब्बत अता फ़रमा और न उस पर नज़्अ की तक्लीफ़ को आसान फ़रमा और उस पर सामाने दुन्या की ज़ियादती फ़रमा।" (المعجم الكبير ،الحديث:٨٠٨،ج١٨،ص٣١٣)

तम्बीह :

अहादीसे मुबा-रका में बयान शुदा वईदों की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, अगर्चे मैं ने किसी को इस के कबीरा गुनाह होने की सराहत करते हुए नहीं देखा क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का किसी बन्दे से मुलाक़ात को ना पसन्द करना सख़्त वईद और धमकी का इशारा है और फ़क़त मौत को ना पसन्द करना ऐसा नहीं क्यूं कि येह तो नफ़्स के लिये तब्ई अम्र है लिहाज़ा इसे मक्रूह जानना गुनाह न होगा जब कि इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात की बिना पर ना पसन्द करना रहमत से मायूसी का पता देता है जैसा कि दूसरी हदीसे पाक में इस की तरफ़ इशारा किया गया है और हम येह बात बयान कर चुके हैं कि रहमत से मायूसी कबीरा गुनाह है, इसी तरह जो चीज़ इसे लाज़िम हो वोह भी कबीरा गुनाह है फिर मैं ने बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى को देखा कि उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बद गुमानी करने को भी कबीरा गुनाह क़रार दिया है और येह हमारे इस बयान पर दलील है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बद गुमानी दर अस्ल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को ना पसन्द करना ही है।

《6》...... हज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़ मुआ-मला करता हूं अगर वोह मुझ से अच्छा गुमान रखता है तो उसे अच्छाई मिलती है और अगर बुरा गुमान रखे तो बुराई पहुंचती है।"

(صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق،باب حسن الظن بالله، الحديث:٦٣٨،ج٢،ص١٦)

www.dawateislami.net

كتاب الزكاة

ज़कात का बयान

कबीरा नम्बर **127 :** **ज़कात अदा न करना**

कबीरा नम्बर **128 :** **वुजूबे ज़कात के बा'द अदाएगी में ताख़ीर करना**

या'नी ज़कात अदा ही न करना या वाजिब होने के बा'द बिला उ़ज़्रे शर-ई अदाएगी में ताख़ीर करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

《1》

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ٥ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ (پ۲۴، حٰمٓ سجدہ: ۶، ۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ख़राबी है शिर्क वालों को वोह जो ज़कात नहीं देते।

《2》

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ٥ (پ۴، اٰل عمران: ۱۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा और **अल्लाह** ही वारिस है आस्मानों और ज़मीन का और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

《3》

يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ٥ (پ۱۰، التوبہ: ۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दागेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का।

www.dawateislami.net

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि "सोने चांदी का जो मालिक उस का ह़क़ अदा नहीं करता क़ियामत के दिन उस के लिये आग की चट्टानें नस्ब की जाएंगी और उन्हें जहन्नम की आग में तपा कर उस के पहलू, पेशानी और पीठ पर दाग़ा जाएगा।" (मत़्लब येह कि उन के जिस्मों को चट्टानों के बराबर फैला दिया जाएगा) (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب اثم مانع الزکاۃ، الحدیث:۲۲۹۰،ص۸۳۳)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "जब भी वोह आग की चट्टानें ठन्डी होंगी तो उन्हें दोबारा इसी त़रह़ गर्म कर लिया जाएगा येह अ़मल उस दिन होगा जिस की मिक़्दार पचास हज़ार (50,000) साल है यहां तक कि बन्दों का फ़ैसला हो जाए और येह अपना ठिकाना जन्नत या जहन्नम में देख ले।" अ़र्ज़ की गई कि "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और अगर ऊंट हों तो (क्या हुक्म है) ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "इसी त़रह़ अगर ऊंटों का मालिक भी उन का ह़क़ (या'नी ज़कात) अदा न करे और ऊंटों का ह़क़ येह है कि जिस दिन उन्हें पानी पिलाने ले जाया जाए तो उन का दूध दोहा जाए (और मसाकीन को पिलाया जाए) तो (ज़कात अदा न करने वाले) ऐसे शख़्स को क़ियामत के दिन औंधे मुंह लिटाया जाएगा और वोह ऊंट ख़ूब फ़र्बा हो कर आएंगे उन का कोई बच्चा भी पीछे न रहेगा वोह उसे अपने क़दमों से रौंदेंगे और अपने मूंहों से काटेंगे जब उन का एक गुरौह गुज़र जाएगा तो दूसरा आ जाएगा और येह अ़मल उस पूरे दिन होता रहेगा जिस की मिक़्दार पचास हज़ार (50,000) साल है यहां तक कि बन्दों का फ़ैसला हो जाए और वोह जन्नत या जहन्नम की त़रफ़ अपना रास्ता देख ले।"

अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर गाय और बकरियां हों तो (क्या हुक्म है) ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गाय और बकरियों वाला अगर उन का ह़क़ अदा न करेगा तो क़ियामत के दिन उसे चटियल मैदान में लिटाया जाएगा और गाय, बकरी में कोई चीज़ कम न होगी (या'नी इन के सब आ'ज़ा सलामत होंगे) ख़्वाह उलटे सींगों वाली हो या बिग़ैर सींगों वाली या टूटे हुए सींगों वाली, सब उसे अपने खुरों से रौंदेंगी और सींगों से मारेंगी जब उन की एक जमाअ़त गुज़र जाएगी तो दूसरी आ जाएगी और येह अ़ज़ाब उस पूरे दिन में होता रहेगा जिस की मिक़्दार पचास हज़ार (50,000) साल होगी यहां तक कि बन्दों के दरमियान फ़ैसला हो जाए और वोह जन्नत या जहन्नम की त़रफ़ अपना रास्ता देख ले।"

फिर अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर घोड़े हों तो (क्या हुक्म है) ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "घोड़े तीन क़िस्म के हैं : (1) वोह जो अपने मालिक के लिये बोझ (या'नी गुनाह) हैं (2) वोह जो इस के छुटकारे का सबब हैं और (3) वोह जो अज्रो सवाब का बाइस हैं। जो घोड़े मालिक पर बोझ होते हैं वोह येह हैं : जिन्हें मालिक ने दिखावे, तकब्बुर और मुसल्मानों से दुश्मनी के लिये बांधा हो येह उस के लिये बोझ हैं, जो घोड़े मालिक के लिये

www.dawateislami.net

नजात का सबब हैं वोह येह हैं : जिन्हें मालिक ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में बांधा हो और वोह उन की गरदनों और पुश्तों के हुक़ूक़ अदा करता हो ऐसे घोड़े मालिक के लिये अ़ज़ाब से नजात का सबब हैं और जो घोड़े अज्रो सवाब का बाइ़स हैं वोह येह हैं : जिन्हें किसी ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में मुसल्मानों की ख़ातिर अपनी चरा गाह या बाग़ में बांधा हो, येह घोड़े उस चरा गाह या बाग़ में से जो कुछ खाएंगे उन के मालिक के लिये उन के खाने, उन की लीद और पेशाब की मिक़्दार (या'नी जो घास वोह वहां से खाएंगे और फिर लीद वग़ैरा करेंगे उस) के बराबर नेकियां लिख दी जाएंगी, येह घोड़े अगर कभी रस्सियां तोड़ कर एक या दो घाटियों का चक्कर लगाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के मालिक के लिये उन के क़दमों के निशानात की ता'दाद और लीद की मिक़्दार के बराबर नेकियां लिखेगा और अगर उन का मालिक उन्हें ले कर किसी नहर के क़रीब से गुज़रे और उन्हें पानी पिलाने का इरादा न भी रखता हो फिर भी अगर उन घोड़ों ने कुछ पानी पी लिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस मालिक के लिये उस के पिये हुए पानी के क़त़रों के बराबर नेकियां लिखेगा।"

अ़र्ज़ की गई, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! गधों के बारे में इर्शाद फ़रमाइये।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गधों के बारे में मुझ पर कोई हुक्म नाज़िल नहीं हुवा लेकिन येह आयत बहुत जामेअ़ है :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ (پ۳۰، الزلزال:۷،۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा बुराई करे उसे देखेगा।

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب اثم مانع الزکاۃ، الحدیث:۲۲۹۰،ص۸۳۳)

﴾3﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन मैं तुम में से किसी शख़्स को ऐसी ह़ालत में न पाऊं कि उस की गरदन पर बड़-बड़ाने वाला ऊंट हो और वोह मुझ से येह कह रहा हो, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी फ़रियाद रसी फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं ने तुम्हें पैग़ाम पहुंचा दिया था।"

क़ियामत के दिन मैं तुम में से किसी शख़्स को ऐसी ह़ालत में न पाऊं कि उस की गरदन पर मम्याने वाली भेड़ या बकरी हो और वोह मुझ से येह कह रहा हो, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी फ़रियाद रसी फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं ने तुम्हें पैग़ाम पहुंचा दिया था।"

क़ियामत के दिन मैं तुम में से किसी शख़्स को ऐसी ह़ालत में न पाऊं कि उस की गरदन पर डकराने वाली गाय हो और वोह मुझ से येह कह रहा हो, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी फ़रियाद रसी फ़रमाइये।" तो मैं कहूंगा, "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं ने तुम्हें पैग़ाम पहुंचा दिया था।"

www.dawateislami.net

(फिर इर्शाद फ़रमाया) क़ियामत के दिन मैं तुम में से किसी शख़्स को ऐसी ह़ालत में न पाऊं कि उस की गरदन पर कपड़े के चीथड़े हों और वोह मुझ से येह कह रहा हो, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी फ़रियाद रसी फ़रमाइये।'' तो मैं कहूंगा, ''मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये कुछ नहीं कर सकता, मैं ने तुम्हें पैग़ाम पहुंचा दिया था।''

(फिर इर्शाद फ़रमाया) तुम में से कोई शख़्स ऐसा न हो कि जो क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आए कि उस की गरदन पर कोई ख़ामोश शै (जैसे सोना चांदी) हो, पस वोह शख़्स कहे : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी मदद फ़रमाइये।'' तो मैं कहूंगा, ''मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तेरे लिये किसी चीज़ का मालिक नहीं।''

(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ،باب غلظ تحریم الغلول، الحدیث: ٤٧٣٤،ص١٠٠٦)

《4》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोही ख़सारा पाने वाले हैं रब्बे का'बा की क़सम ! क़ियामत के दिन वोही ख़सारे में होंगे रब्बे का'बा की क़सम ! वोह कसीर माल व दौलत वाले हैं मगर उन में से जो ऐसे ऐसे ख़र्च करे और ऐसे लोग बहुत क़लील हैं, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जो शख़्स बकरियां, ऊंट या गाय छोड़ कर मरे और उन की ज़कात अदा न की हो क़ियामत के दिन वोह जानवर पहले से बड़े और फ़र्बा हो कर आएंगे यहां तक कि लोगों का फ़ैसला होने तक उसे अपने खुरों से रौंदेंगे और अपने सींगों से मारेंगे जब उन में से आख़िरी जमाअ़त गुज़र जाएगी तो पहली जमाअ़त दोबारा लौट आएगी।''

(المسند للامام احمد بن حنبل ،الحدیث: ٢١٤٠٩،ج٨،ص٨١،راوی:ابو ذر غفاری)

《5》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता तो क़ियामत के दिन एक जहन्नमी अज़्दहा उस पर मुसल्लत़ कर दिया जाएगा और उस की पेशानी, पहलू और पीठ पर दाग़ा जाएगा येह अ़मल उस पूरे दिन में होता रहेगा जिस की मिक़्दार 50,000 साल होगी यहां तक कि बन्दों के दरमियान फ़ैसला हो जाए।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ،باب الوعید ......الخ،الحدیث: ٣٢٤٢،ج٤،ص١٠٤)

(سنن النسائی،کتاب الزکاۃ،باب التغلیظ فی حبس الزکاۃ،الحدیث:٢٤٤٣،ص٢٢٤٥)

《6》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो ऊंटों वाला अपने ऊंटों की ज़कात अदा नहीं करता वोह ऊंट क़ियामत के दिन पहले से ज़ियादा ता'दाद में आएंगे और उसे एक चटियल मैदान में बिठा दिया जाएगा वोह उसे अपने अगले और पिछले पाऊं से रौंदेंगे, जो गाय वाला अपनी गाइयों की ज़कात अदा नहीं करता वोह गाएं क़ियामत के दिन पहले से ज़ियादा ता'दाद में आएंगी और उसे अपने सींगों से मारेंगी और पिछली टांगों से रौंदेंगी

www.dawateislami.net

उन में से कोई भी बिग़ैर सींग वाली न होगी और न ही टूटे हुए सींग वाली होगी और जो ख़ज़ाने वाला अपने ख़ज़ाने की ज़कात अदा नहीं करता वोह ख़ज़ाना क़ियामत के दिन **अश्शुजाउ़ल अक़्रअ़** (या'नी गन्जे अज़्दहे) की सूरत में आएगा, मुंह खोले हुए उस का तआ़क़ुब करेगा जब वोह उस के क़रीब आएगा तो येह उस से भागेगा, वोह सांप पुकारेगा कि अपना ख़ज़ाना ले जिसे तूने छुपाया था कि मैं तो उस से ग़नी हूं, जब वोह देखेगा कि इस से बचने का कोई चारा नहीं तो दाख़िल हो जाएगा (या'नी उस के मुंह में अपना हाथ दाख़िल कर देगा पस वोह उसे सांड की त़रह़ काट डालेगा) ।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب اثم مانع الزکاۃ، الحدیث: ٢٢٩٦،ص ٨٣٤)

﴾7﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो भी अपने माल की ज़कात अदा नहीं करेगा तो उस का वोह माल क़ियामत के दिन एक गन्जे सांप की शक्ल में आएगा और उस शख़्स की गरदन में हार बन जाएगा ।" रावी फ़रमाते हैं : फिर ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ٥

(پ٤،آل عمران:١٨٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का त़ौक़ होगा और **अल्लाह** ही वारिस है आस्मानों और ज़मीन का और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है ।

(ابن ماجہ،ابواب الزکاۃ، باب ماجاء فی منع الزکاۃ،الحدیث: ١٧٨٤،ص ٢٥٨٣)

﴾8﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़नी मुसल्मानों पर उन के अम्वाल में क़ुदरत के मुत़ाबिक़ मुसल्मान फ़ु-क़रा का ह़िस्सा मुक़र्रर किया है और फ़ु-क़रा अगर भूके या नंगे हों तो ग़नी लोगों के बरबाद किये हुए माल को ही पाते हैं, ख़बरदार ! यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन लोगों का शदीद ह़िसाब लेगा और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा ।"

(المعجم الاوسط،الحدیث: ٣٥٨٩،ج٢،ص٣٧٤)

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत सूद लेने और देने वालों और इस के गवाहों जब कि सूद को जानते हों, गूदने और गुदवाने वाली औ़रतों, स-दक़ा रोक लेने वालों या इस में टाल मटोल करने वालों और हिजरत के बा'द आ'राबी बन जाने वाले लोगों पर शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस से ला'नत की जाएगी ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، الحدیث:٤٠٩٠،ج٢،ص١٢١)

www.dawateislami.net

《10》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूद लेने और देने वालों, इस के गवाहों, सूदी दस्तावेज़ लिखने वालों और गूदने व गुदवाने वाली औरतों, स-दक़ा रोकने वालों और ह़लाला करने वालों और ह़लाला करवाने वालों इन सब लोगों पर ला'नत फ़रमाई है।

(المرجع السابق،الحدیث:٦٦٠،ج١،ص١٨٩)

《11》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन फ़ु-क़रा से मुंह फैरने वाले अग़्निया के लिये हलाकत होगी, फ़ु-क़रा कहेंगे : "इन्हों ने हमारे उन हुक़ूक़ के मुआ-मले में हम पर ज़ुल्म किया जो इन पर फ़र्ज़ थे।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें ज़रूर (अपनी रह़मत के) क़रीब और इन्हें (इस से) दूर करूंगा।" फिर ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ۝لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ۝ (پ٢٩،المعارج:٢٤،٢٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जिन के माल में एक मा'लूम ह़क़ है उस के लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो महरूम रहे।

(المعجم الاوسط،الحدیث: ٤٨١٣،ج٣،ص٣٤٩)

《12》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से पहले जन्नत और जहन्नम में दाख़िल होने वाले तीन तीन अफ़राद को मेरे सामने पेश किया गया, जन्नत में पहले दाख़िल होने वाले तीन अफ़राद येह थे : (1) शहीद (2) वोह ग़ुलाम जिस ने अपने रब की अच्छी त़रह़ इबादत की और अपने दुन्यवी आक़ा की ख़ैर ख़्वाही चाही और (3) पाक दामन मु-तवक्किल।" (المسند للامام احمد بن حنبل ، الحدیث:٩٤٩٧،ج٣،ص٤١٢)

《13》...... जब कि एक रिवायत में आख़िरी दो के बारे में येह अल्फ़ाज़ हैं कि महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह ग़ुलाम जिसे दुन्या की ग़ुलामी ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त से न रोका और पाक दामन इयालदार फ़क़ीर। जब कि सब से पहले जहन्नम में दाख़िल होने वाले तीन अफ़राद येह थे : (1) ज़बर दस्ती मुसल्लत़ हो जाने वाला ह़ाकिम (2) वोह मालदार जो अपने माल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं करता और (3) मु-तकब्बिर फ़क़ीर।"

(المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الاوائل،باب اول مافعل ومن فعله،الحدیث: ٢٣٧،ج٨،ص٣٥١)

《14》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "हमें नमाज़ क़ाइम करने और ज़कात अदा करने का हुक्म दिया गया है और जिस ने ज़कात अदा न की उस की कोई नमाज़ नहीं।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:١٠٠٩٥،ج١٠،ص١٠٣)

《15》...... जब कि एक और रिवायत में है : "जिस ने नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा न की तो वोह ऐसा मुसलमान नहीं जिसे उस का अ़मल नफ़्अ़ दे।"

(شرح اصول اعتقاد اهل السنةوالجماعة ،الجزء الرابع،باب جماع الکلام فی الایمان، الحدیث:١٥٧٤،ج١،ص٧٤٣)

www.dawateislami.net

《16》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने अपने पीछे कन्ज़ छोड़ा (कन्ज़ ऐसे ख़ज़ाने को कहते हैं जिस की ज़कात अदा न की गई हो) उसे क़ियामत के दिन एक गन्जे सांप में बदल दिया जाएगा उस की आंखों पर दो सियाह धब्बे होंगे, वोह उस शख़्स के पीछे दौड़ेगा, वोह शख़्स पूछेगा, "तू कौन है ?" सांप कहेगा, "मैं तेरा वोह ख़ज़ाना हूं जिसे तू अपने पीछे छोड़ कर आया था।" फिर वोह उस का पीछा करता रहेगा यहां तक कि उस का हाथ चबा डालेगा, फिर उस को काटेगा और उस का सारा जिस्म चबा डालेगा।"

(المستدرك، كتاب الزكاة،باب التغليظ فى منع الزكاة،الحديث:١٤٧٤،ج٢،ص٦،بدون"من أنت"خلقت بدله"تركته بعدك")

《17》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता क़ियामत के दिन उस के माल को गन्जे सांप की सूरत में बदल दिया जाएगा, उस की आंखों पर दो सियाह नुक्ते होंगे, वोह उस से चिमट जाएगा या उस के गले का तौक़ बन जाएगा और कहेगा : "मैं तेरा ख़ज़ाना हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।"

(سنن النسائى، كتاب الزكاة،باب مانع زكاة ماله ،الحديث: ٢٤٨٣،ص٢٢٤٨)

《18》...... सरकारे मदीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जिस को किसी माल से नवाज़े लेकिन वोह उस की ज़कात न दे तो क़ियामत के दिन उस का वोह माल एक ऐसे गन्जे अज़्दहे की मिस्ल उस की गरदन में तौक़ बना कर डाल दिया जाएगा कि जिस की आंखें मह़ज़ दो नुक्ते होंगी, फिर वोह अज़्दहा उस शख़्स के जबड़े पकड़ कर उस से कहेगा : "मैं तेरा माल हूं मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।" रावी फ़रमाते हैं कि फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ 0

(پ٤،آل عمران:١٨٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा और **अल्लाह** ही वारिस है आस्मानों और ज़मीन का और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बर दार है।

(صحيح البخارى، كتاب الزكاة،باب اثم مانع الزكاة،الحديث: ١٤٠٣،ص١١٠)

《19》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**चार चीज़ें अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस्लाम में फ़र्ज़ फ़रमाई हैं जो इन में से **तीन** ले कर आएगा वोह उसे कुछ काम न आएंगी जब तक कि इन सब को ले कर न आए : (1) नमाज़ (2) ज़कात (3) माहे र-मज़ान के रोज़े और (4) **बैतुल्लाह** शरीफ़ का ह़ज।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، الحديث: ١٧٨٠٤،ج٦،ص٢٣٦)

www.dawateislami.net

﴾20﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के (सफ़र के) लिये एक ऐसा घोड़ा (या'नी बुराक़) लाया गया जो अपना क़दम ता ह़द्दे निगाह रखता, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हम सफ़र थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ ऐसे लोगों के पास तशरीफ़ लाए जो एक दिन खेती बोते और दूसरे दिन फ़स्ल काटते वोह जब भी फ़स्ल काट लेते तो वोह पहले की त़रह़ उग आती। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि "ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "येह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुजाहिदीन हैं, इन की नेकियों में **700** गुना इज़ाफ़ा कर दिया गया है, येह जो ख़र्च किया करते थे वोह इन्हें अब भी बेहतर अज्र की सूरत में बा'द में भी मिलता रहता है।" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़रे जिन के सर पथ्थरों से फोड़े जा रहे थे, जब वोह फट जाते तो पहले की त़रह़ दुरुस्त हो जाते और इस मुआ़-मले में उन से कोई कोताही न बरती जाती, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "येह वोह लोग हैं जिन के सर नमाज़ से बोझल हो जाते थे।"

फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़रे जिन के आगे और पीछे काग़ज़ के परचे थे (जिन पर वोह हुक़ूक़ लिखे थे जो उन के ज़िम्मे थे) वोह ज़रीअ़, ज़क़्क़ूम (या'नी जहन्नम के निहायत कड़वे दरख़्त) और जहन्नम के पथ्थर इस त़रह़ चरते थे जैसे चौपाए चरते हैं, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "येह वोह लोग हैं जो अपने माल की ज़कात अदा नहीं करते थे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया और न ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला है।"

(الترغیب والترھیب،کتاب الصدقات،باب الترھیب من منع الزکاۃ،الحدیث:١١٤٥،ج١،ص٣٦٦)

﴾21﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़ुश्की और तरी में जो माल भी ज़ाएअ़ होता है, वोह ज़कात रोक लेने की वजह से होता है, ज़कात रोक लेने वाला क़ियामत के दिन जहन्नम में होगा।"

(المرجع السابق،الحدیث:١١٤٦/٤٧،ج١،ص٣٦٧)

﴾22﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "स-दक़ा या ज़कात जिस माल में भी मिल जाए उसे बरबाद कर देता है।"

(شعب الایمان،باب فی الزکاۃ،الحدیث:٣٥٢٢،ج٣،ص٢٧٣)

मुराद येह है कि जिस माल का स-दक़ा अदा न किया जाए वोह स-दक़ा उस माल को बरबाद कर देता है इस की दलील गुज़श्ता ह़दीसे पाक है या येह मुराद है कि जो ग़नी होने के बा वुजूद

www.dawateislami.net

ज़कात ले कर उसे अपने माल के साथ मिला ले वोह स-दक़ा उस माल को तबाह कर देगा येह तशरीह़ इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बयान फ़रमाई है।

﴾23﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिन लोगों पर नमाज़ ज़ाहिर की गई तो उन्हों ने उसे क़बूल कर लिया और ज़कात पोशीदा रखी गई तो वोह उसे खा गए वोही लोग मुनाफ़िक़ हैं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات، باب الترھیب من منع الزکاۃ، الحدیث:١١٤٩، ج١، ص٣٦٨)

﴾24﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो लोग ज़कात रोक लेते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन से बारिश रोक लेता है।''

(المستدرک، کتاب الجھاد، باب مانقض قوم العھد......الخ، الحدیث: ٢٦٢٣، ج٢، ص٤٦١)

﴾25﴿...... एक सह़ीह़ रिवायत में है : ''जो लोग ज़कात अदा नहीं करते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें क़ह़त़ साली में मुब्तला फ़रमा देता है।'' (المعجم الاوسط، الحدیث:٦٧٨٨، ج٥، ص١٢٣)

﴾26﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ऐ गुरौहे मुहाजिरीन ! पांच ख़स्लतें ऐसी हैं कि अगर तुम इन में मुब्तला हो गए तो तुम पर मुसीबतें नाज़िल होंगी, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पनाह चाहता हूं कि तुम इन्हें पाओ : (1) जब भी किसी क़ौम में फ़ह़्ह़ाशी ज़ाहिर हुई और वोह इसे ए'लानिया करने लगे तो उन में ऐसे अमराज़ फूट पड़े जो उन से पहले लोगों में न थे (2) जो लोग नाप तोल में कमी करने लगे तो उन की पकड़ क़ह़त़ साली, सख़्त तक्लीफ़ और हुक्मरानों के ज़ुल्म से की गई (3) जिन लोगों ने अपने अम्वाल की ज़कात अदा करना छोड़ दी उन से आस्मान की बारिश रोक ली गई और अगर चौपाए न होते तो इन पर बारिश न होती (4) जिन लोगों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़ह्द तोड़ा उन पर ग़ैर क़ौम से दुश्मन को मुसल्लत़ कर दिया गया तो उस ने उन का माल छीन लिया और (5) जिस क़ौम के हुक्मरानों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब के ख़िलाफ़ फ़ैसले किये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के दरमियान आपस के झगड़े डाल दिये।''

(سنن ابن ماجه، ابواب الفتن، باب العقوبات، الحدیث: ٤٠١٩، ص٢٧١٨)

﴾27﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''पांच चीज़ें पांच चीज़ों का सबब हैं।'' अ़र्ज़ की गई या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! पांच चीज़ों के पांच चीज़ों का सबब होने से क्या मुराद है ? तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''(1) जिस क़ौम ने अ़ह्द तोड़ा तो उस पर उस के दुश्मन को मुसल्लत़ कर दिया गया (2) जिस क़ौम के हुक्मरानों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब के ख़िलाफ़ फ़ैसले किये तो उस में मौत फैल गई (3) जिस क़ौम ने ज़कात अदा न की तो उस से बारिश रोक ली गई और (4) जिस क़ौम ने नाप तोल में कमी की तो उस से सब्ज़ा को रोक लिया गया और उसे क़ह़त़ साली ने आ लिया।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات، باب الترھیب من منع الزکاۃ......الخ، الحدیث:١١٥١، ج١، ص٣٦٩)

(नोट : यहां पर इस ह़दीसे पाक में 5 की बजाए 4 क़ौमों का तज़्किरा है शायद किताबत की ग़-लत़ी है)

www.dawateislami.net

《28》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मानिईने ज़कात के बारे में नाज़िल होने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान :

يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝ (پ۱۰،التوبۃ:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दागेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का।

की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब माल जम्अ़ कर के रखने और ज़कात अदा न करने वाले को दाग़ा जाएगा तो कोई दिरहम दूसरे दिरहम से और कोई दीनार दूसरे दीनार से न छूएगा बल्कि उस के जिस्म को इतना वसीअ़ कर दिया जाएगा कि उस पर हर दिरहम व दीनार को रखा जा सके।"

(تفسیر الدرالمنثور،تحت الآیۃ:۳۵(یوم یحمی علیھا......الخ) ج۴،ص۱۷۹،مفھومًا)

वज़ाहत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स की पेशानी, पहलू और पीठ को दाग़ने के साथ इस लिये मख़्सूस फ़रमाया कि बख़ील मालदार जब किसी फ़क़ीर को देखता है तो तुर्श रूई दिखाता है और उस के माथे पर शिकनें पड़ जाती हैं और वोह उस से पहलू तही इख़्तियार करता है फिर जब फ़क़ीर उस के क़रीब आता है तो वोह उस से पीठ फैर लेता है लिहाज़ा इन आ'ज़ा को दाग़ कर सज़ा दी जाएगी ताकि अ़मल की सज़ा उसी की जिन्स से हो।"

《29》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जिस ने माले ह़लाल कमाया और ज़कात रोक ली तो येह (रोका हुवा) माल ह़लाल माल को भी गन्दा कर देगा और जिस ने माले ह़राम कमाया तो ज़कात की अदाएगी भी उसे पाक व ह़लाल न करेगी।" (المعجم الکبیر،الحدیث:۹۵۹۶،ج۹،ص۳۱۹)

《30》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "मैं क़ुरैश के कुछ लोगों के पास बैठा हुवा था कि सख़्त बालों, खुरदरे लिबास और बा रो'ब सूरत वाले एक शख़्स ने उन के क़रीब आ कर सलाम किया फिर कहा : "ख़ज़ाने जम्अ़ कर के रखने वालों को जहन्नम में दहकाए हुए पथ्थर की बिशारत दे दो, जिसे इन में से किसी की छाती की नोक पर रखा जाएगा तो वोह उस की पीठ से निकल जाएगा और उस की पीठ पर रखा जाएगा तो वोह उस की छाती की नोक से निकलेगा।" येह कह कर वोह शख़्स कांपने लगा फिर पलट कर एक सुतून के पास बैठ गया, मैं भी उस के पीछे चल दिया और उस के क़रीब जा कर बैठ गया ह़ालां कि मैं नहीं जानता था कि वोह कौन है, फिर मैं ने कहा : "मेरा ख़याल है कि लोगों ने आप की बात का बुरा मनाया है।" उस ने कहा : "मेरे ख़लील ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया था : "येह लोग कुछ अ़क़्ल नहीं रखते।" (रावी फ़रमाते हैं कि) मैं ने पूछा : "आप के ख़लील कौन हैं ?" तो उन्हों ने बताया : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।" (फिर मुझ से पूछा) "क्या तुम्हें उहुद पहाड़ नज़र आ रहा है ?" मैं ने सूरज की त़रफ़ देखा कि कितना

www.dawateislami.net

दिन बाक़ी रह गया है, मेरा ख़याल था कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अपने किसी काम भेजेंगे, (येह सोच कर) मैं ने जवाब दिया : ''जी हां।'' तो उस ने कहा : ''मैं येह बात पसन्द करता हूं कि मेरे पास उहुद पहाड़ जितना सोना हो तो मैं तीन दीनारों के इलावा सब कुछ ख़र्च कर दूं और बेशक येह लोग कुछ अ़क्ल नहीं रखते, येह दुन्या जम्अ़ करने में मसरूफ़ हैं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इन से दुन्या नहीं मांगूगा और न कोई दीनी मस्अला पूछूंगा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात कर लूं।'' (صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب ماادِّی زکاتہ فلیس ......الخ، الحدیث:۱۴۰۷/۱۴۰۸، ص ۱۱۰)

﴾31﴿...... जब कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है : ''ख़ज़ाने जम्अ़ कर के रखने वालों को बिशारत दे दो कि उन की पीठ पर दाग़े जाने से वोह ख़ज़ाना उन के पहलूओं से निकलेगा और कन्पटियों पर दाग़े जाने से उन की पेशानियों से निकलेगा।'' रावी फ़रमाते हैं : ''फिर वोह झुक कर बैठ गए तो मैं ने पूछा : ''येह कौन हैं ?'' लोगों ने मुझे बताया : ''येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं।'' मैं ने उन के पास जा कर पूछा : ''अभी मैं ने आप को जो बात कहते सुना वोह क्या है ?'' तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने तो वोही बात कही है जिसे मैं ने उन के रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना था।'' मैं ने पूछा : ''आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ अ़तिय्या (या'नी तोह़फ़ा) के बारे में क्या कहते हैं ?'' तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''ले लो क्यूं कि आज येह मऊ़नत (या'नी इमदाद) है, फिर जब येह तुम्हारे दीन की क़ीमत बनने लगे तो इसे छोड़ देना।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی الکنازین للاموال ......الخ، الحدیث: ۲۳۰۷، ص ۸۳۵)

ज़कात इस्लाम का पुल है :

﴾32﴿...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ज़कात इस्लाम का पुल है।''

(شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل التشدید علی من منع الزکاۃ، الحدیث: ۳۳۱۰، ج۳، ص ۱۹۵)

स-दक़ा मरीज़ों की दवा है :

﴾33﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ज़कात के ज़रीए अपने अम्वाल की ह़िफ़ाज़त करो, स-दक़े के ज़रीए अपने मरीज़ों की दवा करो और मुसीबत के लिये दुआ़ को तय्यार रखो।'' (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۱۹۶، ج۱۰، ص ۱۲۸)

﴾34﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी तो बेशक अपनी ज़िम्मादारी पूरी कर दी।''

(جامع الترمذی، ابواب الزکاۃ، باب ماجاء اذا ادیت الزکاۃ......الخ، الحدیث: ۶۱۸، ص ۱۷۰۶)

www.dawateislami.net

माल का शर दूर हो जाता है :

《35》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी तो बेशक उस के शर को खुद से दूर कर दिया।"

(المستدرک،کتاب الزکاۃ،باب التغلیظ فی......الخ،الحدیث:۱۴۷۹،ج۲،ص۸)

स-दक़ा माल में इज़ाफ़ा करता है :

《36》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "स-दक़ा माल में इज़ाफ़ा ही करता है।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال،الحسن بن عبدالرحمن......الخ،الحدیث:۴۷۰،ج۳،ص۱۹۰)

ज़कात और कन्ज़ :

《37》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हर वोह माल जिस की ज़कात अदा कर दी गई वोह कन्ज़ (या'नी ख़ज़ाना) नहीं अगर्चे ज़मीन के नीचे दफ़्न हो और हर वोह माल जिस की ज़कात अदा न की गई वोह कन्ज़ है अगर्चे दफ़्न न हो।"

(السنن الکبریٰ للبیھقی،کتاب الزکاۃ،باب تفسیر الکنزالذی ورد......الخ،الحدیث:۷۲۳۳،ج۴،ص۱۴۰)

स-दक़ा, माल में कमी नहीं करता :

《38》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "स-दक़ा माल में कमी नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दर गुज़र करने वाले बन्दे की इज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है।" (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ ،باب استحباب العفو......الخ،الحدیث:۶۵۹۲،ص۱۱۳۰)

आग के कंगन :

《39》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में दो औरतें ह़ाज़िर हुईं, उन्हों ने सोने के कंगन पहन रखे थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम इन की ज़कात अदा करती हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम इस बात को पसन्द करती हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आग के कंगन पहनाए ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हरगिज़ नहीं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर इन की ज़कात अदा किया करो।"

(جامع الترمذی، ابواب الزکاۃ،باب ماجاء فی زکاۃ الحلی،الحدیث:۶۳۷،ص۱۷۰۹)

《40》...... एक रिवायत में यूं है : "क्या तुम इस बात से नहीं डरतीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आग के कंगन पहना दे, इन की ज़कात अदा किया करो।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث اسماء ابنۃ یزید،الحدیث: ۲۷۶۸۵،ج۱۰،ص۴۴۶)

www.dawateislami.net

इमाम ख़त्ताबी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के क़ौल के मुताबिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की येही तावील है :

يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝ (پ۱۰،التوبۃ:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दागेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का।

एक कंगन भी जहन्नम में ले जा सकता है :

﴾41﴿...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا के हाथों में चांदी के कंगन देखे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : ''येह क्या है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ज़ीनत इख़्तियार करती हूं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम इस की ज़कात अदा करती हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''नहीं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह तुम्हें जहन्नम के लिये काफ़ी हैं।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب الکنزما ھو وزکاۃ الحلی، الحدیث:۱۵۶۵، ص۱۳۳۸)

आग का हार और आग की बालियां :

﴾42﴿...... रहमते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो औरत सोने का हार पहनती है क़ियामत के दिन उस के गले में वैसा ही आग का हार पहनाया जाएगा और जो औरत कानों में सोने की बालियां डालेगी (और उन की ज़कात अदा न करेगी) तो क़ियामत के दिन उस के कानों में वैसी ही आग की बालियां डाली जाएंगी।'' (المرجع السابق، الحدیث: ۴۲۳۸، ص۱۵۳۱)

﴾43﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो इस बात को पसन्द करता है कि उस के महबूब को आग का छल्ला पहनाया जाए तो वोह उसे सोने का छल्ला पहनाए और जो येह बात पसन्द करता है कि उस के महबूब को आग का हार पहनाया जाए तो वोह उसे सोने का हार पहनाए और जो येह बात पसन्द करता है कि उस के महबूब को आग के कंगन पहनाए जाएं तो वोह उसे सोने के कंगन पहनाए लेकिन तुम मर्दों के लिये चांदी जाइज़ है पस इसे इस्ति'माल करो।'' (المرجع السابق، الحدیث: ۴۲۳۶، ص۱۵۳۰)

www.dawateislami.net

हमारे (या'नी शवाफ़ेअ़) के नज़्दीक येह और इन की हम-मा'ना दूसरी अह़ादीसे मुबा-रका इस बात पर दलालत करती हैं कि औ़रतों के लिये ज़ेवरात इब्तिदाए इस्लाम में ह़राम थे, फिर उन ज़ेवरात पर ज़कात वाजिब हुई या इन से मुराद येह है कि औ़रतें बहुत ज़ियादा ज़ेवरात इस्ति'माल करती थीं और जब ज़ेवरात में (निसाब को पहुंचने वाली) ज़ियादती हो तो उस पर ज़कात वाजिब होती है।[1] इसी त़रह़ अगर उन ज़ेवरात का इस्ति'माल मक्रूह हो तो येही हुक्म है म-सलन आराइश के लिये छोटी चीज़ बनाना या किसी ज़रूरत के तह़्त बड़ी चीज़ बनाना।

《44》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सब से पहले जहन्नम में दाख़िल होने वाले तीन अफ़्राद येह हैं : (1) ज़बर दस्ती मुसल्लत़ हो जाने वाला हुक्मरान (2) वोह मालदार जो अपने माल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं करता और (3) मु-तकब्बिर फ़क़ीर।" (المصنف لابن ابی شیبة ،کتاب الاوائل،باب اول مافعل ومن فعله،الحدیث:۲۳۷،ج۸،ص۳۵۱)

《45》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "जिस के पास इतना माल हो कि वोह बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज कर सके और ह़ज न करे या उस पर ज़कात वाजिब हो जाए और वोह उस माल की ज़कात अदा न करे तो वोह मौत के वक़्त वापसी की तमन्ना करेगा।" एक शख़्स ने कहा : "ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरें, वापसी की तमन्ना तो कुफ़्फ़ार करेंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं अभी तुम्हें कु़रआने करीम सुनाता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ۰ (پ۲۸،المنافقون:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब ! तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक मोहलत क्यूं न दी कि मैं स-दक़ा देता और नेकों में होता।"

(جامع الترمذی، ابواب تفسیر القرآن ، باب سورۃ المنافقون،الحدیث:۳۳۱۶،ص۱۹۹۱)

मन्क़ूल है कि ताबिई़न की एक जमाअ़त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिनान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़ियारत के लिये गई, जब येह जमाअ़त उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर बैठ गई तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "हमारे साथ चलो हम अपने एक पड़ोसी से मिलने जा रहे हैं, उस के भाई का इन्तिक़ाल हो गया है उस से ता'ज़ियत भी कर लेंगे।" मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हम उन के साथ चल दिये जब उस शख़्स के पास पहुंचे तो उसे अपने भाई पर बहुत ज़ियादा गिर्या

1 : अह़नाफ़ के नज़्दीक : "सोना, चांदी जब कि ब क़द्रे निसाब (या'नी साढ़े सात तोले सोना या साढ़े बावन तोले चांदी) हों तो उन की ज़कात चालीसवां ह़िस्सा है ख़्वाह इन का इस्ति'माल जाइज़ हो जैसे औ़रत के लिये ज़ेवर या मर्द के लिये चांदी की एक नग की साढ़े चार माशे से कम की एक अंगूठी या इन का इस्ति'माल ना जाइज़ हो जैसे चांदी सोने के बरतन, घड़ी, सुरमा दानी, सलाई वग़ैरा कि इन का इस्ति'माल मर्द व औ़रत सब के लिये ह़राम है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 5, स. 20)

www.dawateislami.net

व ज़ारी करते और रोते हुए पाया, हम उस से ता'ज़ियत करने लगे और तसल्ली देने लगे मगर उस पर ता'ज़ियत और तसल्ली का कोई असर न हुवा हम ने उस से पूछा : "क्या तुम्हें मा'लूम नहीं है कि मौत से छुटकारे का कोई रास्ता नहीं ?" उस ने कहा : "क्यूं नहीं ! मगर मैं तो उस अ़ज़ाब पर रो रहा हूं जो मेरे भाई को सुब्ह़ व शाम होता है।" हम ने पूछा : "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें ग़ैब पर मुत्तलअ़ फ़रमाया है ?" उस ने कहा : "नहीं ! मगर जब मैं ने उसे दफ़्नाया और क़ब्र की मिट्टी बराबर कर दी और लोग वापस पलट आए तो मैं उस की क़ब्र के पास बैठ गया, अचानक उस की क़ब्र से येह आवाज़ आई वोह कह रहा था : "आह ! लोग अ़ज़ाब का सामना करने के लिये मुझे तन्हा छोड़ गए ह़ालां कि मैं रोज़े रखता और नमाज़ पढ़ा करता था।" फिर वोह शख़्स कहने लगा : "उस की बात ने मुझे रुला दिया, फिर मैं ने उस की ह़ालत देखने के लिये क़ब्र से मिट्टी हटाई तो क़ब्र में आग को दहक्ते हुए पाया और उस की गरदन में आग का त़ौक़ देखा तो भाई की मह़ब्बत मुझ पर ग़ालिब आ गई मैं ने वोह त़ौक़ उस के गले से निकालने के लिये अपना हाथ आगे बढ़ाया तो मेरी उंग्लियां और हाथ जल गया।" फिर उस शख़्स ने हमें अपना हाथ निकाल कर दिखाया वोह जल कर सियाह हो चुका था फिर उस ने बताया : "मैं ने उस पर मिट्टी डाली और लौट आया, अब मैं उस के ह़ाल पर क्यूं न रोऊं और ग़म क्यूं न करूं।" मैं ने उस से पूछा : "तुम्हारा भाई दुन्या में कौन सा अ़मल किया करता था ?" तो उस ने बताया : "**वोह अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता था।**" हम ने कहा : "येह वाक़िआ़ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तस्दीक़ है :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ (پ۴،آل عمران:۱۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का त़ौक़ होगा।"

जब कि तुम्हारे भाई को उस की क़ब्र ही में क़ियामत तक के लिये अ़ज़ाब शुरूअ़ हो गया।" फिर हम उस के पास से लौट कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास ह़ाज़िर हुए और उस शख़्स का क़िस्सा सुना कर अ़र्ज़ की : "यहूदी या नसरानी मरता है तो हमें उस पर कोई अ़ज़ाब नज़र क्यूं नहीं आता ?" उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "इन लोगों के जहन्नमी होने में तो कोई शक नहीं जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन का अ़ज़ाब तुम्हें इस लिये दिखाता है ताकि तुम इ़ब्रत ह़ासिल करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِیَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ (پ۷،انعام:۱۰۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जिस ने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुवा अपने बुरे को और मैं तुम पर निगहबान नहीं।"

(كتاب الكبائر للامام الذهبى،الكبيرة الخامسة،باب منع الزكاة،ص۳۹)

www.dawateislami.net

《46》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ज़िन्दगी में बुख़्ल और मौत के वक़्त सख़ावत करने वाले शख़्स को ना पसन्द करता है।" (الجامع الصغير للسيوطي،حرف الهمزة،الحديث:١٨٥٧،ص١١٥)

《47》...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लालच से बचते रहो क्यूं कि तुम से पहली क़ौमें लालच की वजह से हलाक हुईं, लालच ने उन्हें **बुख़्ल** पर आमादा किया तो वोह **बुख़्ल** करने लगे और जब क़त्ए रेहमी का ख़याल दिलाया तो उन्हों ने क़त्ए रेहमी की और जब गुनाह का हुक्म दिया तो वोह गुनाह में पड़ गए।"

(سنن ابی داؤد،كتاب الزكاة،باب فی الشح،الحديث:١٦٩٨،ص١٣٤٩)

《48》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दो ख़स्लतें मोमिन में इकठ्ठी नहीं हो सकतीं वोह बुख़्ल और बद अख़्लाक़ी हैं।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة ،باب ماجاء فی البخل من الاكمال،الحديث:١٩٦٢،ص١٨٤٩)

《49》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से बद तरीन हैं वोह लोग जिन से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर मांगा जाए और वोह न दें।"

(التاريخ الكبيرللبخاری،باب الالف،الحديث:١١٤٩،ج١،ص٣٤٠)

《50》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आदमी की सब से बदतर ख़ामी शदीद बुख़्ल और इन्तिहाई बुज़दिली है।"

(سنن ابی داؤد،كتاب اول،كتاب الجهاد،باب فی الجرأة والجبن،الحديث:٢٥١١،ص١٤٠٩)

《51》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लालची आदमी जन्नत में दाख़िल न होगा।" (معجم الاوسط،الحديث:٤٠٦٦،ج٣،ص١٢٥)

《52》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इस उम्मत के पहले लोग दुन्या से बे रग़बती और यक़ीन के सबब भलाई पर हैं जब कि इस उम्मत के आख़िरी लोग बुख़्ल और ख़्वाहिशात की वजह से हलाक होंगे।"

(المعجم الاوسط،الحديث:٧٦٥٠،ج٥،ص٣٧٢)

《53》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सख़ी का खाना दवा और लालची का खाना बीमारी है।"

(الجامع الصغير للسيوطی،حرف الطاء،الحديث:٥٢٥٨،ج٢،ص٣٢٥)

《54》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इस बात पर क़सम याद फ़रमाई है कि जन्नत में कोई बख़ील दाख़िल न होगा।" (كنزالعمال،كتاب الاخلاق،قسم الاقوال البخل من الاكمال،الحديث:٧٣٨٢،ج٣،ص١٨١)

www.dawateislami.net

﴾55﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इस्लाम ने किसी चीज़ को इतना नहीं मिटाया जितना **बुख़्ल** को मिटाया है।"

(مسند ابی یعلی الموصلی ، مسند انس بن مالک، الحدیث: ۳۴۷۵،ج۳،ص۲۳۷)

﴾56﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बख़ील और स-दक़ा करने वाले की मिसाल उन दो शख़्सों की तरह है जिन्हों ने सीने से ले कर पिंडलियों तक लोहे की ज़िरह पहन रखी हो, स-दक़ा करने वाला जब स-दक़ा करता है तो वोह ज़िरह उस के जिस्म पर फैल जाती है यहां तक कि उस के हाथों के पौरों को भी ढांप देती है और उस के ताबेअ़ रहती है, जब कि बख़ील जब ख़र्च करने का इरादा करता है तो उस ज़िरह का हर ह़ल्क़ा अपनी जगह चिमट जाता है और वोह शख़्स उसे कुशादा करना चाहता है मगर वोह कुशादा नहीं होता।"

(صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ،باب مثل البخیل و المتصدق،الحدیث:۱۴۴۳،ص۱۱۳)

ह़दीसे पाक की शर्ह़ :

या'नी वोह ज़िरह ख़र्च करने से बड़ी हो जाती है यहां तक कि उस की उंग्लियों के पौरों को छुपा लेती है ब सूरते दीगर हर ह़ल्क़ा अपनी जगह चिमट जाता है तो वोह उसे कुशादा करना चाहता है मगर नहीं कर पाता ज़िरह या फिर एक और रिवायत के मुत़ाबिक़ लिबास से रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें और रिज़्क़ है, लिहाज़ा ख़र्च करने वाला जब ख़र्च करता है तो उस की ने'मतों में वुस्अ़त आ जाती है और फ़राख़ी ह़ासिल होती है यहां तक कि वोह ने'मतों में पूरी तरह छुप जाता है और बख़ील जब भी ख़र्च करने का इरादा करता है उस का ह़िर्स, लालच और माल में कमी का ख़ौफ़ उसे रोक देता है लिहाज़ा इस रुकावट के बा वुजूद ने'मतों और माल में इज़ाफ़े की तमन्ना से सिर्फ़ उस की तंगी ही में इज़ाफ़ा होता है और उस की कोई ऐसी चीज़ नहीं छुपाई जाती जिसे छुपाने की वोह ख़्वाहिश करता है।

﴾57﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "इस उम्मत के पहले लोग यक़ीन और ज़ोहद के ज़रीए नजात पाएंगे जब कि आख़िरी लोग बुख़्ल और ख़्वाहिशात के सबब हलाकत में मुब्तला होंगे।" (فردوس الاخبارللدیلمی،باب النون،الحدیث:۷۱۰۶،ج۲،ص۳۷۴)

हलाकत में मुब्तला होने वाला शख़्स :

﴾58﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हलाकत व बरबादी है, मुकम्मल बरबादी है उस शख़्स के लिये जो अपने इयाल को भलाई में छोड़े और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास बुराई से ह़ाज़िर हो।" (فردوس الاخبارللدیلمی،باب الواؤ،الحدیث:۷۴۶۵،ج۲،ص۴۰۸)

www.dawateislami.net

﴾59﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन में दो ख़स्लतें जम्अ नहीं हो सकतीं : (1) बुख़्ल और (2) झूट।"

(كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال البخل من الاكمال، الحديث: ٧٣٨٨، ج٣، ص١٨١)

﴾60﴿...... हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सरदार बख़ील नहीं हो सकता।"

(المرجع السابق، الحديث: ٧٣٨٩، ج٣، ص ١٨١)

बुख़्ल से नजात का ज़रीआ :

﴾61﴿...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने ज़कात अदा की और मेहमान की ज़ियाफ़त की और ना गहानी आफ़त में अ़तिय्या दिया वोह **बुख़्ल** से आज़ाद है।" (المعجم الكبير، الحديث: ٤٠٩٦، ج٤، ص١٨٨)

﴾62﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी बूढ़ा हो जाता है लेकिन इस की दो ख़स्लतें जवान रहती हैं : (1) माल की हिर्स और (2) लम्बी उ़म्र की हिर्स।" (صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب كراهة الحرص على ......الخ، الحديث: ٢٤١٢، ص٨٤٢)

﴾63﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बूढ़े का दिल दो चीज़ों की महब्बत में जवान ही रहता है (1) ज़िन्दगी और (2) माल की महब्बत।"

(المرجع السابق، الحديث: ٢٤١٠، ص٨٤٢)

﴾64﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुझे अपनी उम्मत पर सब से ज़ियादा नफ़्सानी ख़्वाहिशात और लम्बी उम्मीदों का ख़ौफ़ है।"

(الكامل فى ضعفاء الرجال، احاديث على بن ابى على اللهبى٣٧٦، ج٦، ص ٣١٦)

﴾65﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सच्चे हाजत मन्द साइल की ख़ातिर इसी त़रह नाराज़ होता है जैसे अपनी ज़ात के लिये नाराज़ होता है।" (كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال البخل من الاكمال، الحديث: ٧٣٩٨، ج٣، ص١٨٢)

﴾66﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**बुख़्ल** से बचते रहो क्यूं कि **बुख़्ल** ने जब एक क़ौम को उक्साया तो उन्हों ने अपनी ज़कात रोक ली और जब मज़ीद उक्साया तो उन्हों ने रिश्तेदारियां तोड़ डालीं और जब मज़ीद उक्साया तो वोह ख़ूनरेज़ी करने लगे।" (المرجع السابق، الحديث: ٧٤٠١، ج٣، ص١٨٢)

﴾67﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "लालच से बचते रहो क्यूं कि तुम से पिछली क़ौमों को लालच ही ने हलाकत में डाला, लालच ने उन्हें झूट पर उभारा तो वोह झूट बोलने लगे और जब लालच ने ज़ुल्म पर उभारा तो ज़ुल्म करने लगे और जब क़त़्ए रेह़मी का ख़याल दिलाया तो क़त़्ए रेह़मी करने लगे।" (المرجع السابق، الحديث: ٧٤٠٢، ج٣، ص١٨٢)

www.dawateislami.net

﴾68﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**बुख़्ल** के **10** हि़स्से हैं, इन में से **9** हि़स्से फ़ारस (या'नी ईरान) में जब कि एक हि़स्सा दीगर लोगों में है।" (جامع الاحادیث للسیوطی،حرف الباء،الحدیث: ١٠١١٩،ج٤،ص٥٢)

﴾69﴿...... हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "लोग कहते हैं या तुम में से कोई कहने वाला कहता है : "लालची इन्सान ज़ालिम से ज़ियादा धोकेबाज़ होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक लालच से बड़ा ज़ुल्म कौन सा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल और अ़-ज़मत की क़सम इस बात पर फ़रमाता है कि जन्नत में कोई बख़ील या लालची दाख़िल नहीं होगा।"

(کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال البخل من الاکمال،الحدیث:٧٤٠٤،ج٣،ص١٨٢)

﴾70﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मलामत को पैदा फ़रमाया तो उसे बुख़्ल और माल से ढांप दिया।"

(المرجع السابق،الحدیث:٧٤٠٧،ج٣،ص١٨٣)

﴾71﴿..... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दे के दिल में लालच और ईमान कभी इकट्ठे नहीं हो सकते।"

(سنن النسائی،کتاب الجهاد،باب فضل من عمل فی......الخ،الحدیث:٣١١٢،ص٢٢٨٧)

﴾72﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "किसी मोमिन बन्दे के दिल में लालच और ईमान कभी जम्अ़ नहीं हो सकते।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال،عبدالغفور بن عبدالعزیزابو الصباح الواسطی،الحدیث: ١٤٨١،ج٧،ص٢١)

﴾73﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ इब्ने आदम ! तू जब तक ज़िन्दा रहा **बुख़्ल** करता रहा और जब तेरी मौत का वक़्त आया तो अपना माल लुटाने लगा, दो ख़स्लतों को जम्अ़ न कर : (1) ज़िन्दगी में बुराई और (2) मौत के वक़्त भी बुराई, बल्कि अपने उन रिश्तेदारों की त़रफ़ देख जो मह़रूम हैं और वारिस नहीं बनते, लिहाज़ा उन के लिये भलाई के साथ वसिय्यत कर।" (کنزالعمال،کتاب الاخلاق،قسم الاقوال البخل من الاکمال،الحدیث:٧٤١٣،ج٣،ص١٨٣)

तम्बीहात

तम्बीह 1 :

ज़कात अदा न करने को उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इज्माअ़ की वजह से कबीरा गुनाह शुमार किया गया है क्यूं कि गुज़श्ता बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका में इस पर शदीद वईद आई है, उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के कलाम का ज़ाहिरी मफ़्हूम या वज़ाह़त येह है कि मन्ए़ ज़कात में

www.dawateislami.net

क़लील व कसीर का कोई फ़र्क़ नहीं मगर आयन्दा ग़स्ब के बयान में आएगा कि येह चोरी के निसाब के साथ मुक़य्यद है, एक क़ौल येह है कि मन्ए ज़कात में भी इसी क़ैद का एह़तिमाल है मगर येह ऐसी क़ैद है जिस की कोई सनद नहीं।

मैं (मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) कहता हूं ! अगर ग़स्ब के बारे में आने वाले बयान को तस्लीम कर लिया जाए तब भी हम यहां पर इस के क़ाइल नहीं क्यूं कि ज़कात मालिक के सिपुर्द होती है लिहाज़ा अगर क़लील ज़कात रोकने को कबीरा न क़रार दे कर उसे रुख़्सत दे दी जाए तो येह (रुख़्सत) उसे पूरी ज़कात रोकने की त़रफ़ ले जाएगी जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि ख़म्र (या'नी अंगूरी शराब) का एक क़त़रा भी पीना कबीरा गुनाह है ह़ालां कि इस से नशा न होना मु-तहक़्क़क़ है और इस की इ़ल्लत येह बयान की, कि इस की क़िल्लत इस की कसरत की त़रफ़ ले जाती है, लिहाज़ा इस इम्कान को मुकम्मल तौ़र पर ख़त्म कर दिया गया, इसी त़रह़ माल की कसरत को नफ़्स का पसन्द करना भी इस बात का तक़ाज़ा करता है कि अगर क़लील में इसे सहूलत दी गई तो वोह उसे कसीर ज़कात रोक लेने का ज़रीआ़ बना लेगा, लिहाज़ा वाज़ेह़ हो गया कि यहां क़लील व कसीर ज़कात रोक लेने में कोई फ़र्क़ नहीं जब कि ज़कात फ़र्ज़ होने के बा'द इस में बिला उ़ज़्र ताख़ीर करने को कबीरा गुनाह में शुमार करना ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की इस रिवायत से वाज़ेह़ है कि "स-दक़े को मुअख़्ख़र करने वाले उन बद बख़्तों में से हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान से ला'नत की गई है।"

इसी लिये बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस के कबीरा गुनाह होने पर जज़्म फ़रमाया है।

तम्बीह 2 : औ़रतों के सोने के ज़ेवरात पहनने पर गुज़श्ता शदीद वई़दों के जवाबात

बहुत सी अह़ादीसे मुबा-रका में औ़रतों के सोने के ज़ेवरात पहनने पर शदीद वई़दें गुज़श्ता सफ़ह़ात में गुज़र चुकी हैं जिन के चन्द जवाबात दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...... औ़रतों के लिये सोने के ज़ेवरात का जवाज़ साबित होने से येह अह़ादीसे मुबा-रका मन्सूख़ हो गईं।

(2)...... येह हुक्म उन के लिये है जो इन ज़ेवरात की ज़कात अदा नहीं करतीं मगर जो इन की वाजिब ज़कात अदा करती हैं। उन के लिये येह हुक्म नहीं और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व ताबिई़ने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त का इसी पर अ़मल है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और इन के अस्ह़ाब رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस सिल्सिले में उन की पैरवी की और इब्ने मुन्ज़िर ने भी इसी मौक़िफ़ को इख़्तियार किया जब कि दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, ताबिई़ने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی और उन के बा'द के अइम्मा म-सलन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई़ عَلَيْهِمَا رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ज़ेवरात में ज़कात के वाजिब न होने के क़ाइल हैं।

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा ख़त्ताबी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "आयात का ज़ाहिरी मा'ना उस पहली जमाअ़त के मौक़िफ़ पर दलील है कि जिस ने ज़ेवरात में ज़कात को वाजिब क़रार दिया और अह़ादीसे मुबा-रका भी इसी मौक़िफ़ की ताईद कर रही हैं जब कि जिन ह़ज़रात ने ज़कात को साक़ित़ क़रार दिया है उन्हों ने क़ियास और ग़ौरो फ़िक्र को इख़्तियार किया और उन के पास एक ह़दीसे पाक भी है जब कि एह़तियात ज़कात की अदाएगी में है।"

(3)...... येह हुक्म उन औ़रतों के लिये है जो ज़ेवरात से ज़ीनत ह़ासिल करें और उसे ग़ैर मर्दों पर ज़ाहिर करें इस की दलील अबू दावूद व नसाई शरीफ़ की ह़दीसे पाक है :

﴾74﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से जो औ़रत सोने का ज़ेवर पहने और उसे ज़ाहिर करे उसे अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाएगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الخاتم ، باب ماجاء فی الذھب للنساء،الحدیث:۴۲۳۷،ص ۱۵۳۱)

अलबत्ता येह बात भी द-र-जए सिह़्ह़त तक पहुंच चुकी है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने इयाल को ज़ेवरात और रेशम पहनने से मन्अ़ फ़रमाते और इर्शाद फ़रमाते :

﴾75﴿...... "अगर तुम जन्नत के ज़ेवरात और रेशम पसन्द करती हो तो दुन्या में येह दोनों चीज़ें हरगिज़ न पहनो।"

(شرح معانی الآثار، کتاب الکراھۃ،باب لبس الحریر،الحدیث: ۶۵۷۲،ج۴،ص۵۶)

(4)...... मुमा-न-अ़त का सबब इस सिल्सिले में वारिद होने वाली शदीद वई़द है जैसा कि बयान हो चुका है कि इस्राफ़ में डाल देने वाली चीज़ सोने चांदी को ह़राम कर देती है।

तम्बीह 3 : बुख़्ल की ता'रीफ़ और इस की मिसालें

गुज़श्ता अह़ादीसे मुबा-रका में **बुख़्ल** की मज़म्मत और इस की आफ़ात व नुक़्सानात की त़रफ़ इशारा हो चुका है, इस की क़दरे तफ़्सील येह है कि शर-अ़ में **बुख़्ल** ज़कात अदा न करने को कहते हैं और फिर हर वाजिब को भी ज़कात के साथ मिला दिया गया या'नी वाजिब की अ़दम अदाएगी **बुख़्ल** है, लिहाज़ा जो ज़कात रोक ले वोह बख़ील है और उसे वोही सज़ा मिलेगी जो अह़ादीसे मुबा-रका में गुज़र चुकी है।

बख़ील की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ात :

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "एक क़ौम ने **बुख़्ल** की ता'रीफ़ वाजिब की अ़दम अदाएगी से की है। लिहाज़ा उन के नज़्दीक जो शख़्स ख़ुद पर वाजिब हुक़ूक़ अदा कर दे वोह बख़ील न कहलाएगा मगर येह ता'रीफ़ काफ़ी नहीं क्यूं कि जो शख़्स गोश्त या रोटी

www.dawateislami.net

क़स्साब या नानबाई को रत्ती भर कमी की बिना पर लौटा दे उसे बिल इत्तिफ़ाक़ बख़ील शुमार किया जाता है, इसी त़रह़ क़ाज़ी ने किसी शख़्स के माल में से उस के अहलो इयाल के लिये न-फ़क़ा मुक़र्रर किया फिर अगर अहले ख़ाना उस के माल में से एक लुक़्मा या खजूर खा लें और येह शख़्स उन पर इस सिल्सिले में तंगी करे तो येह भी बख़ील कहलाएगा और किसी शख़्स के पास रोटी रखी हो फिर कोई शख़्स उस से मिलने आए और उसे गुमान हो कि वोह भी खाने में शरीक हो जाएगा तो इस ख़ौफ़ से वोह उस से रोटी छुपा ले तो वोह भी बख़ील कहलाएगा।''

दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : ''बख़ील वोह शख़्स है जिस पर हर क़िस्म का अ़तिय्या देना गिरां गुज़रता है मगर येह बात क़ासिर है क्यूं कि अगर **बुख़्ल** से हर अ़तिय्या का गिरां गुज़रना मुराद ले लिया जाए तो उस पर येह ए'तिराज़ होगा कि बहुत से बख़ीलों पर रत्ती भर या इस से ज़ियादा अ़तिय्या देना गिरां नहीं गुज़रता तो येह बात **बुख़्ल** में रख़्ना नहीं डालती।''

जूद की ता'रीफ़ में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल :

इसी त़रह़ ह़ज़राते उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का जूदो सख़ावत की ता'रीफ़ में भी इख़्तिलाफ़ है, एक क़ौल येह है : ''**जूद** एह़सान कर के न जतलाने और देखे बिग़ैर मदद करने को कहते हैं।'' एक क़ौल येह है : ''सुवाल के बिग़ैर अ़त़ा करना **जूद** कहलाता है।'' एक क़ौल येह है : ''साइल से खुश होना और मुम्किना ह़द तक अ़त़ा करना **जूद** कहलाता है।'' जब कि एक क़ौल येह भी है : ''इस ख़याल से अ़त़ा करना कि मैं और मेरा माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का है **जूद** कहलाता है।'' येह तमाम ता'रीफ़ें **बुख़्ल** और **जूद** की ह़क़ीक़त का इह़ात़ा नहीं करतीं।

लिहाज़ा ह़क़ येह है कि जहां ख़र्च करना वाजिब हो वहां ख़र्च न करना **बुख़्ल** है और जहां ख़र्च न करना वाजिब हो वहां ख़र्च करना **फ़ुज़ूल ख़र्ची और इस्राफ़** है और इन दोनों की दरमियानी सूरत क़ाबिले ता'रीफ़ है और येही वोह सूरत है जिसे **जूद** से ता'बीर करना चाहिये, क्यूं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सख़ावत ही का हुक्म दिया गया है। चुनान्चे,

﴾1﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا۝ (پ۱۵، الاسراء:۲۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और अपना हाथ अपनी गरदन से बंधा हुवा न रख और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुवा थका हुवा।

﴾2﴿

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا (پ۱۹، الفرقان:۶۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें।

www.dawateislami.net

लिहाज़ा **जूद** ज़ियादती व कमी और ह़द से ज़ियादा तंगी व कुशा-दगी की दरमियानी कैफ़िय्यत का नाम है और इस का कमाल येह है कि आदमी अपने दिल में कोई ग़रज़ न पाए या'नी बे ग़रज़ हो कर अ़ता करे बल्कि उसे चाहिये कि वोह अपने दिल को ऐसी जगह ख़र्च करने पर माइल करे जहां ख़र्च करना क़ाबिले ता'रीफ़ हो ख़्वाह वहां ख़र्च करना शरअ़न वाजिब हो या क़ाबिले मुरुव्वत व आ़दत हो, लिहाज़ा सख़ी वोह है जो ऐसी जगह ख़र्च करने से न रुके वरना वोह बख़ील कहलाएगा मगर वाजिबे शर-ई को रोक लेने वाला म-सलन ज़कात या अहलो इ़याल के न-फ़क़े को रोक लेने वाला मुरुव्वतन वाजिब होने वाले ह़क़ म-सलन कम क़ीमत अश्या में तंगी करने वाले से ज़ियादा बुरा है और इस की बुराई अम्वाल व अश्ख़ास की तब्दीली से मुख़्तलिफ़ हो जाती है, लिहाज़ा मालदार, पड़ोसी, अहले ख़ाना और दोस्त के साथ ऐसा सुलूक करना उन की अज्दाद से ऐसा सुलूक करने से ज़ियादा बुरा है।

बुख़्ल का एक तीसरा द-रजा भी है वोह येह है कि कस्रते माल की सूरत में इन्सान मशरूअ़ और मुरुव्वत के वाजिबात अदा करता रहे, फिर उन भलाई की जगहों पर माल ख़र्च करना बन्द कर दे ताकि वोह किसी मुसीबत के लिये माल को बचा कर रख सके नीज़ अपने लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तय्यार कर्दा सवाबात, आ'ला द-रजात और पसन्दीदा मरातिब पर फ़ानी अग़राज़ को तरजीह़ दे तो येह शख़्स बुहत बड़ा बख़ील है, मगर येह मुआ-मला अ़क़्ल मन्दों के नज़्दीक है आ़म मख़्लूक़ के नज़्दीक नहीं क्यूं कि वोह परेशानी के वक़्त के लिये माल जम्अ़ कर के रखने को बहुत अहम ख़याल करते हैं, इस की वजह येह है कि बा'ज़ अवक़ात वोह अपने पड़ोसी फ़क़ीर को मह़रूम करने को उस शख़्स का बुरा अ़मल ख़याल करते हैं अगर्चे वोह ज़कात अदा करता हो और इस की क़बाह़त माल की मिक़्दार और फ़क़ीर की ह़ाजत व मदद की ज़ियादती के मुख़्तलिफ़ होने से बदलती रहती है, फिर वोह शख़्स इन दोनों वाजिबात की अदाएगी करने से **बुख़्ल** से बरी हो जाएगा लेकिन उस के लिये जूदो सख़ा की सिफ़त उस वक़्त तक साबित न होगी जब तक वोह फ़ज़ीलत के ह़ुसूल के लिये, न कि ता'रीफ़ या ख़िदमत या बदले के लिये, इन दोनों जगहों पर वाजिब ह़क़ से ज़ियादा ख़र्च न करे और उस के लिये इस सिफ़त का सुबूत उस की इस्तिताअ़त के मुताबिक़ कम या ज़ियादा ख़र्च करने पर होगा।

तम्बीह 4 : बुख़्ल का सबब

जो शख़्स अपने दीन और इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त का इरादा रखता हो इस पर **बुख़्ल** के मोहलिकात से डरते हुए इस से नजात ह़ासिल करना ज़रूरी है और येह उसी सूरत में मुम्किन है जब इस का सबब और इ़लाज मा'लूम हो, इस का सबब या तो माल की ऐसी मह़ब्बत है जो लम्बी

www.dawateislami.net

उम्मीद के साथ साथ इन ख़्वाहिशात की महब्बत की वजह से पैदा होती है जिन की तक्मील माल ही के ज़रीए हो सकती है क्यूं कि जिसे येह मा'लूम हो जाए कि एक दिन के बा'द उस का इन्तिक़ाल हो जाएगा इस में **बुख़्ल** का कोई असर बाक़ी न रहेगा, या फिर **बुख़्ल** माल की महब्बत की वजह से होता है, इसी लिये आप देखते हैं कि जिसे येह यक़ीन होता है कि उस के पास किफ़ायत से ज़ाइद माल है अगर वोह त़ब्ई उ़म्र तक ज़िन्दा रहे और शाह ख़र्चियां करता रहे और इस का वारिस भी कोई न हो और इस के बा वुजूद **बुख़्ल** करे और ज़कात रोके फिर उस ख़ज़ाने को, येह जानने के बा वुजूद कि मुझे मरना है, ज़मीन में दफ़्न कर दे बल्कि बा'ज़ अवक़ात मौत के वक़्त उसे निगल जाए तो इस आ़रिज़े का इ़लाज बहुत मुश्किल बल्कि मुह़ाल है।

बुख़्ल का इ़लाज :

(1)...... पहले आ़रिज़े या'नी ख़्वाहिशात की महब्बत का इ़लाज ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ पर क़नाअ़त और सब्र के ज़रीए हो सकता है।

(2)...... लम्बी उम्मीदों का इ़लाज मौत को कसरत से याद करने और अत़राफ़ में वाक़ेअ़ होने वाली अम्वात और उन के माल जम्अ़ करने की मशक़्क़त और फिर उन के बा'द उस माल के क़बीह़ गुनाहों में ज़ाएअ़ होने में ग़ौरो फ़िक्र करने से मुम्किन है।

(3)...... औलाद की त़रफ़ तवज्जोह का इ़लाज गुज़श्ता सफ़ह़ात में बयान कर्दा इस ह़दीसे पाक को पेशे नज़र रखने से मुम्किन है जिस में साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक बद तरीन आदमी वोह है जो अपने वु-रसा को ख़ुशह़ाली में छोड़ कर मरे और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास बुराई के साथ ह़ाज़िर हो।"

(فردوس الاخبار،باب الواؤ،الحديث:٧٤٦٥،ج٢،ص٤٠٨،بتغير)

नीज़ अगर वोह येह बात पेशे नज़र रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की औलाद के लिये रिज़्क़ मुक़र्रर फ़रमा दिया है उस में न कमी होगी न ज़ियादती। बहुत से लोग जिन के वालिदैन उन के लिये एक पाई भी छोड़ कर नहीं मरते फिर भी वोह ग़नी हो जाते हैं और बहुत से लोग जिन के वालिदैन ख़ज़ाने छोड़ कर मरते हैं जल्द ही फ़क़ीर बन जाते हैं।

(4)...... इसी त़रह़ बख़ीलों के अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र करे कि वोह किस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी में मुब्तला और हर भलाई से दूर हैं, इसी वजह से आप ने देखा होगा कि लोग इस क़िस्म के अफ़राद को बुरा समझते और इन से नफ़रत करते हैं यहां तक कि बा'ज़ बख़ील लोग दूसरों के कस्रते बुख़्ल को भी बुरा समझते हैं जब कि बख़ील अपने साथियों को बोझ समझता है और इस बात से ग़ाफ़िल रहता है कि वोह ख़ुद भी लोगों के दिलों पर इतना ही गिरां और उन के नज़्दीक इतना ही बुरा है जितना दूसरे बख़ील उस के नज़्दीक हैं।

www.dawateislami.net

(5)...... उन मनाफ़ेअ़ पर ग़ौर करे जिन की वजह से वोह माल जम्अ़ कर रहा है, लिहाज़ा ब क़दरे ह़ाजत माल जम्अ़ करे और ज़ाइद माल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा कामों में सर्फ़ कर के उस के पास अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा करे।

जो इन अदविया (दवा की जम्अ़) में ग़ौर करेगा उस की फ़िक्र चमक उठेगी, उसे शर्हे सद्र ह़ासिल होगा और वोह अपनी इस्ति'दाद के मुत़ाबिक़ **बुख़्ल** और इस की तमाम अन्वाअ़ या बा'ज़ अन्वाअ़ से पहलू तही इख़्तियार कर लेगा और ऐसी सूरत में उसे चाहिये कि जैसे ही इस के दिल में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने का ख़याल आए फ़ौरन उस पर अ़मल कर डाले क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात शैत़ान नफ़्स को इस ख़याल से रुक जाने को अच्छा बना कर पेश करता है।

इसी लिये बा'ज़ अकाबिर कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब अपने कपड़े स-दक़ा करने का ख़याल आया उस वक़्त आप ग़ुस्ल ख़ाने में थे, चुनान्चे फ़ौरन बाहर तशरीफ़ लाए और कपड़े स-दक़ा कर दिये फिर वापस लौट गए, फिर जब ग़ुस्ल ख़ाने से बाहर निकले तो इस के बारे में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा गया इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे ख़ौफ़ हुवा कि कहीं शैत़ान मेरे इरादे को मु-त-ज़ल्ज़िल न कर दे।"

बुख़्ल की सिफ़त ब तकल्लुफ़ ख़र्च करने से ही ज़ाइल होती है जैसा कि इश्क़, मा'शूक़ के मह़ल की जानिब सफ़र करने से ही ज़ाइल होता है।

तम्बीह 5 : माल के फ़वाइद

(1)...... माल के कुछ दीनी व दुन्यवी फ़वाइद भी हैं इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़रमाने आ़लीशान :

إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ (پ۲،البقرہ:۱۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर कुछ माल छोड़े तो वसिय्यत कर जाए।

में इसे ख़ैर के नाम से मौसूम किया है और इस के ज़रीए़ अपने बन्दों पर एह़सान फ़रमाया।

﴾76﴿...... एक और रिवायत में है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़रीब है कि फ़क़्र कुफ़्र हो जाए।"

(شعب الایمان، باب فی الحث علی ترك الغل......الخ،الحدیث: ۶۶۱۲،ج۵،ص۲۶۷)

दुन्यवी और दीनी फ़वाइद :

इस के दुन्यवी फ़वाइद तो ज़ाहिर हैं और दीनी फ़वाइद में से सब से अहम तरीन इबादत का ह़ुसूल माल के बिग़ैर मुम्किन नहीं जैसे ह़ज व उ़म्रह और माल ही के ज़रीए़ इबादात पर क़ुव्वत ह़ासिल होती है म-सलन खाने, लिबास, रिहाइश, निकाह़ और दीगर ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी का ह़ुसूल वग़ैरा क्यूं कि दीन की ख़िदमत के लिये वोही शख़्स फ़राग़त पा सकता है जो इन उमूर में बा किफ़ायत हो ह़ालां

www.dawateislami.net

कि (येह एक मुसल्लमा उसूल है कि) **इबादत का हुसूल जिन चीज़ों पर मौकूफ़ हो वोह भी इबादत ही होती हैं** जब कि जो माल ज़रूरत से ज़ाइद हो वोह दुन्या का हिस्सा है।

(2)...... दीनी फ़वाइद में से एक फ़ाएदा स-दक़ा करना भी है, इस के फ़ज़ाइल मश्हूर हैं और मैं ने इस के बारे में एक किताब भी तालीफ़ की है।

(3)...... इसी त़रह़ अग़्निया के लिये तहाइफ़ और मेहमान नवाज़ी बाइसे फ़ज़ीलत है। इन दोनों के भी बहुत से फ़ज़ाइल हैं, नीज़ इन से दोस्तियां बढ़ती हैं, सखावत की सिफ़त हासिल होती है या शाइर या बे दीन से इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त होती है।

《**77**》...... एक और रिवायत में दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस माल के ज़रीए इ़ज़्ज़त बचाई जाए वोह भी स-दक़ा है।"

(سنن دار قطنی، کتاب البیوع، الحدیث: ۲۸۷۲، ج۳، ص۳۳)

(4)...... जो शख़्स तुम्हारे काम वग़ैरा निपटाता हो उस की उजरत भी माल ही से अदा हो सकती है क्यूं कि अगर तुम खुद वोह काम सर अन्जाम देते तो तुम्हारे उख़्रवी मसालेह़ फ़ौत हो जाते इस वजह से कि तुम पर जो इ़ल्मो अ़मल और ज़िक्रो फ़िक्र लाज़िम है वोह दूसरे किसी शख़्स से पूरा होने का तसव्वुर नहीं किया जा सकता, लिहाज़ा तुम्हारा दूसरे कामों में वक़्त सर्फ़ करना फ़साद ही है।

(5)...... आ़म ख़ैर के काम म-सलन मस्जिद बनाना, क़ल्ए या पुल बनाना, रास्तों पर पानी की सबील बनाना, बीमारों के लिये अस्पताल क़ाइम करना वग़ैरा और दीगर ख़ैर के काम माल ही के ज़रीए पायए तक्मील तक पहुंच सकते हैं, येह नेकी के वोह काम हैं जो मौत के बा'द भी हमेशा रहने वाले और ज़रूरत के वक़्त सालिहीन की दुआ़ओं को समेटने वाले हैं और तुम्हारे लिये इस की इतनी ही भलाई काफ़ी है कि येह सब माल के दीनी फ़वाइद हैं जब कि इस से जल्द हासिल होने वाले फ़वाइद मज़ीद बर आं हैं म-सलन इ़ज़्ज़त, ख़िदमत गारों और दोस्तों की कसरत, लोगों का ता'ज़ीम करना और इस के इ़लावा वोह दुन्यवी फ़वाइद जिन का माल व दौलत तक़ाज़ा करता है।

माल की आफ़ात :

माल की दीनी व दुन्यवी आफ़तें भी बहुत सी हैं।

दीनी आफ़तें :

(1)...... दीनी आफ़तें म-सलन माल इन्सान को गुनाह पर उभारता है क्यूं कि किसी का गुनाह पर क़ुदरत न पाना इ़स्मत में से है, नफ़्स जब किसी गुनाह पर क़ुदरत का शुऊर पा लेता है तो इस के दवा-ई भी उस की जानिब माइल हो जाते हैं और इस के बा'द वोह उस वक़्त तक क़रार नहीं पाता जब तक उस गुनाह का इरतिकाब न कर ले।

www.dawateislami.net

(2)...... माल इन्सान को मुबाह़ लज़्ज़तों की त़रफ़ ले जाता है यहां तक कि वोह इन का इस क़दर आ़दी हो जाता है कि इन्हें छोड़ने पर क़ुदरत नहीं पाता यहां तक कि अगर वोह कोशिश या ह़लाल कमाई के ज़रीए इन्हें ह़ासिल न कर सके तो ह़राम काम भी करने लगता है क्यूं कि जिस के पास माल कसरत से हो वोह लोगों से मेलजोल और तअ़ल्लुक़ात बढ़ाने का ज़ियादा मोह़ताज हो जाता है और जो इस चीज़ में मुब्तला हो गया वोह यक़ीनन लोगों से मुना-फ़क़त से पेश आएगा और उन्हें राज़ी या नाराज़ करने की ख़ात़िर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का मुर-तकिब होगा तो इस के नतीजे में वोह अ़दावत, कीना, ह़सद, रियाकारी, तकब्बुर, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और इन के इलावा ला'नत व ना राज़गी के मूजिब कई बुरे अख़्लाक़ में मुब्तला होगा।

(3)...... माल उन उमूर में मुब्तला होने का सबब भी बन जाता है जिन से कोई मालदार नहीं बच सकता या'नी माल की इस्लाह़ और इस में इज़ाफ़े की फ़िक्र के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और उस की रिज़ा के काम से ग़ाफ़िल हो जाना और हर वोह शै जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दे वोह नुहूसत और खुला ख़सारा है और येह एक निहायत सख़्त बीमारी है क्यूं कि इबादत की अस्ल और इस का राज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र और उस की जलालत में तफ़क्कुर करना है और येह इस बात का तक़ाज़ा करता है कि दिल हर क़िस्म के तफ़क्कुरात से ख़ाली हो जब कि माल की इस्लाह़ और इस के ह़ुसूल में कोशिश करने और इस से नुक़्सानात दूर करने की फ़िक्र की मौजू-दगी में दिल का फ़ारिग़ होना मुह़ाल है क्यूं कि येह एक ऐसा समुन्दर है जिस का कोई साह़िल नहीं।

दुन्यवी आफ़्तें :

आख़िरत से पहले दुन्या में मालदारों को लाह़िक़ होने वाली दुन्यवी आफ़्तें म-सलन मुसल्सल ख़ौफ़ व ग़म, परेशानी, अन्देशा, नुक़्सान दूर करने की मशक़्क़त, मसाइब का सामना, माल कमाना और इस की ह़िफ़ाज़त करना वग़ैरा मज़ीद बर आं हैं।

इलाज :

माल का इक्सीर और इलाज येह है कि ब क़दरे ह़ाजत अपने पास रखा जाए बाक़ी भलाई के कामों में सर्फ़ कर दिया जाए क्यूं कि ज़रूरत से ज़ाइद माल ज़हरे क़ातिल और सबबे आफ़त है।

माल ख़ैर और शर दोनों का सबब है :

जब येह बातें साबित हो गईं तो मा'लूम हुवा कि माल न तो मह़ज़ ख़ैर है और न ही मह़ज़ शर, बल्कि वोह इन दोनों बातों का सबब है येह बा'ज़ अवक़ात क़ाबिले ता'रीफ़ होता है और बा'ज़ अवक़ात क़ाबिले मज़म्मत, लिहाज़ा जिस शख़्स ने दुन्या से किफ़ायत से ज़ाइद ह़िस्सा लिया गोया उस

www.dawateislami.net

ने बे ख़बरी में अपनी मौत का सामान कर लिया और चूंकि तबीअ़तें हिदायत से रोकने वाली हैं, शहवात व ख़्वाहिशात की तरफ़ माइल रहती हैं और माल इन में आले का काम देता है तो ऐसी सूरत में किफ़ायत से ज़ाइद माल में शदीद ख़तरात हैं, इसी सबब से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلام ने माल के शर से पनाह मांगी यहां तक कि,

《78》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : ''اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ قُوْتَ اٰلِ مُحَمَّدٍ كِفَافًا'' या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! आले मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रिज़्क़ को ब क़दरे किफ़ायत कर दे।''

(صحيح ابن حبان، كتاب التاريخ ، باب من صفته عليه السلام واخباره، الحديث: ٦٣٠٩، ج٨، ص٨٦، قوت بدله "رزق")

《79》...... आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या से इतना ही मांगा जितना ख़ैरे महज़ है और दुआ़ फ़रमाई : '' اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ مِسْكِيْنًا وَاَمِتْنِىْ مِسْكِيْنًا '' या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे मिस्कीनी की ज़िन्दगी और मिस्कीनी की मौत अ़ता फ़रमा।''

(جامع الترمذى ، ابواب الزهد، باب ماجاء ان فقراء المهاجرين......الخ، الحديث: ٢٣٥٢، ص١٨٨٨)

《80》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''दिरहमो दीनार का ग़ुलाम (या'नी इन से मह़ब्बत करने वाला) तबाहो बरबाद हो, हलाक हो और औंधे मुंह गिरे और अगर उसे कोई कांटा चुभे तो कभी न निकले।''

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب المكثرين، الحديث: ٤١٣٦، ص٢٧٢٩)

जूदो सख़ा के फ़ज़ाइल

《81》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हर वोह दिन जिस में बन्दे सुब्ह़ करते हैं उस में दो फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं, उन में से एक दुआ़ मांगता है कि ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! ख़र्च करने वाले को बदला अ़ता फ़रमा। और दूसरा दुआ़ करता है कि ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! माल को रोक कर रखने वाले का माल ज़ाएअ़ फ़रमा।''

(صحيح البخارى، كتاب الزكاة، باب قول الله تعالىٰ فامامن اعطى......الخ، الحديث: ١٤٤٢، ص١١٣)

जब कि इब्ने ह़ब्बान की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : ''जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर फ़िरिश्ता कहता है कि जो आज क़र्ज़ देगा वोह कल जज़ा पाएगा।'' और दूसरे दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता दुआ़ करता है : ''ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! (माल) ख़र्च करने वाले को बदला अ़ता फ़रमा और रोक कर रखने वाले का माल ज़ाएअ़ फ़रमा।'' (صحيح ابن حبان، كتاب الزكاة، باب صدقة التطوع ، الحديث: ٣٣٢٣، ج٥، ص١٤٠)

《82》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आस्मान

www.dawateislami.net

के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर फ़िरिश्ता कहता है कि जो आज क़र्ज़ देगा वोह कल जज़ा पाएगा। और दूसरे दरवाज़े पर फ़िरिश्ता दुआ़ करता है कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (माल) ख़र्च करने वाले को बदला अ़ता फ़रमा और रोक कर रखने वाले का माल ज़ाएअ़ फ़रमा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی هريره رضی الله عنه ،الحديث: ٨٠٦٠،ج٣،ص١٧٣)

《83》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "ख़र्च कर मैं तुझ पर ख़र्च करूंगा।" और फिर रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ाने भरे हुए हैं दिन रात जूदो करम के साथ ख़र्च करने से इन में कमी नहीं होती, क्या तुम नहीं देखते कि जब से उस ने ज़मीन व आस्मान पैदा फ़रमाए हैं बराबर ख़र्च कर रहा है मगर उस के ख़ज़ाने में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं हुई जब कि उस का अ़र्श पानी पर है और मीज़ाने अ़द्ल उस के दस्ते कुदरत में है, वोह उसे पस्त व बुलन्द करता है।"

(صحيح البخاری، كتاب التفسير، سورهٔ هود(عليه السلام)، باب قوله و كان عرشه على المآء،الحديث: ٤٦٨٤،ص٣٨٩)

《84》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "ऐ इब्ने आदम! अगर तू ह़ाजत से ज़ाइद माल ख़र्च करे तो येह बेहतर है और अगर इसे रोके रखे तो येह बुरा है ह़ालां कि तुझे ब क़दरे किफ़ायत माल पर मलामत नहीं की जाएगी और अपने ज़ेरे कफ़ालत लोगों से इब्तिदा करो और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।"

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة ، بيان ان اليد العلياء خير من ......الخ،الحديث: ٢٣٨٨،ص٨٤١)

《85》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : हमेशा तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त सूरज के पहलू में दो फ़िरिश्ते होते हैं जो निदा देते हैं : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! (माल) ख़र्च करने वाले को बदला अ़ता फ़रमा और रोक कर रखने वाले का माल ज़ाएअ़ फ़रमा।"

(صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق،باب الفقر والزهد......الخ، الحديث:٦٨٥،ج٢،ص٣٧،مفهوما)

《86》...... एक और रिवायत में है : "उन दोनों फ़िरिश्तों की आवाज़ जिन्नो इन्स के इ़लावा सारी मख़्लूक़ सुनती है, वोह कहते हैं : "लोगो! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ आ जाओ, बेशक जो चीज़ कम हो और किफ़ायत करे वोह उस चीज़ से बेहतर है जो ज़ियादा हो मगर ग़फ़्लत में डाल दे।"

(المرجع السابق، الحديث: ٣٣١٩،ج٥،ص١٣٨)

《1》 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَاللّٰهُ يَدْعُوْۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ (پ۱۱، یونس:۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह सलामती के घर की त़रफ़ पुकारता है और जिसे चाहे सीधी राह चलाता है।

www.dawateislami.net

《2》

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ٥ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ٥ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ٥ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ٥ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ٥ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ٥ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ٥ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ٥ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ٥ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ٥

(پ:٣٠،الليل:١تا١٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रात की क़सम जब छा जाए और दिन की जब चमके और उस की जिस ने नर व मादा बनाए बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है तो वोह जिस ने दिया और परहेज़ गारी की और सब से अच्छी को सच माना तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे और वोह जिस ने बुख़्ल किया और बे परवाह बना और सब से अच्छी को झुटलाया तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहय्या कर देंगे।

《87》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''दोस्त **3** हैं (1) वोह जो कहता है : ''मैं तेरी क़ब्र तक तेरे साथ जाऊंगा।'' (2) वोह दोस्त जो कहता है : ''मैं उस वक़्त तक तेरा रहूंगा जब तक तू ख़र्च करता रहेगा और जब तू रोक लेगा तो तेरा न रहूंगा।'' येह तेरा माल है और (3) वोह दोस्त है कि जो कहता है : ''तू जहां जाएगा या जहां से आएगा मैं तेरे साथ रहूंगा।'' येह तेरा अ़मल है, तो वोह बन्दा कहेगा : ख़ुदा की क़सम ! तू मुझ पर इन तीनों में सब से हलका था।''

(المستدرك ، كتاب الايمان،الاخلاء ثلاثة،الحديث: ٢٥٦،ج١،ص٢٥٤،"بتقدمٍ و تأخرٍ")

《88》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम में से कौन है जो अपने माल से ज़ियादा अपने वारिस के माल से महब्बत करता है ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक वारिस के माल के मुक़ाबले में अपने माल से ज़ियादा महब्बत रखता है।'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक उस का माल तो वोही है जो उस ने आगे भेज दिया और जो पीछे रह गया वोह तो उस के वारिस का माल है।''

(صحيح البخاری، كتاب الرقاق،باب من قدم من ماله فهو له ، الحديث: ٦٤٤٢،ص٥٤١)

《89》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास तशरीफ़ लाए और उन के पास खजूर का एक ढेर देख कर दरयाफ़्त फ़रमाया : ''ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! येह क्या है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मेहमानों के लिये तय्यार कर रहा हूं।'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम इस बात से नहीं डरते कि कहीं येह तुम्हारे लिये जहन्नम का धुवां न हो, ख़र्च कर दो बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! अ़र्श वाले से कमी का ख़ौफ़ न रखो।'' (البحر الزخار،بمسند البزار،مسند ابن مسعود،الحديث: ١٩٧٨،ج٥،ص٣٤٨)

www.dawateislami.net

《90》...... एक और रिवायत में है : "क्या तुम जहन्नम की आग में भाप बुलन्द होने से नहीं डरते।"

(شعب الایمان، باب التوکل و التسلیم،الحدیث: ۱۳۴۵،ج۲،ص۱۱۸)

《91》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बुख़्ल न किया करो ताकि तुम से भी बुख़्ल न किया जाए।" (या'नी अपना माल ज़ख़ीरा कर के न रखो इसे लोगों पर ख़र्च करने से न रोको कहीं तुम इस माल की ब-र-कत से मह़रूम न हो जाओ।)

(صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب التحریض علی الصدقۃ ......الخ، الحدیث: ۱۴۳۳،ص۱۱۳)

《92》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ बिलाल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से फ़क़ीर हो कर मिलना ग़नी हो कर मत मिलना।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुझे जो रिज़्क़ मिले उसे मत छुपाना और तुझ से कुछ मांगा जाए तो मन्अ़ न करना।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं येह कैसे कर सकता हूं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐसा ही करो वरना जहन्नम (ठिकाना होगा)।"

(المستدرک،کتاب الرقاق،باب القی اللہ فقیراً ولا......الخ،الحدیث:۷۹۵۷،ج۵،ص۴۵۰)

《93》...... ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ज़ौजए मोह़-त-रमा ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ पर कुछ सिक़्ल मह़सूस किया तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "आप को क्या हुवा है ? शायद हम से कोई तक्लीफ़ पहुंची है इस लिये आप हम से नाराज़ हैं।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं, तुम मुसल्मान मर्द की अच्छी बीवी हो मगर बात येह है कि मेरे पास बहुत सा माल जम्अ़ हो गया है और मैं फ़ैसला नहीं कर पा रहा कि इस का क्या करूं।" बीवी ने कहा : "इस में ग़मगीन होने की क्या बात है, अपनी क़ौम के लोगों को बुला कर वोह माल उन में तक़्सीम कर दें।" तो आप ने अपने ग़ुलाम से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ ग़ुलाम ! मेरी क़ौम के लोगों को बुला लाओ।" उस दिन जो माल तक़्सीम हुवा वोह चार लाख (4,00,000) दिरहम थे।"

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۹۵،ج۱،ص۱۱۲،بتغیرٍ قلیلٍ)

《94》...... दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने दो बन्दों पर वुस्अ़त फ़रमाते हुए उन्हें कस्रते माल व औलाद से नवाज़ा, फिर उन में से एक से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां !" उस ने अ़र्ज़ की : "لَبَّيْكَ رَبِّ وَسَعْدَيْكَ!" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं ने तुझे कस्रते माल व औलाद से नहीं नवाज़ा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं, ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ !" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर तूने मेरी अ़ता कर्दा ने'मतों के इवज़ क्या किया ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं मोह़ताजी के ख़ौफ़ से उसे अपनी औलाद के लिये छोड़ आया हूं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू ह़क़ीक़त जान लेता तो हंसता कम और रोता ज़ियादा, तू उन के बारे में जिन बातों से डरता था मैं ने वोही आफ़त उन पर डाल दी है।"

www.dawateislami.net

फिर दूसरे शख़्स से इर्शाद फ़रमाएगा : "ऐ फुलां बिन फुलां !" वोह अ़र्ज़ करेगा : "لَبَّیْکَ اَیْ رَبِّ وَ سَعْدَیْکَ!" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या मैं ने तुझे कसरते माल व औलाद से नहीं नवाज़ा था ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "क्यूं नहीं, ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ !" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "फिर तूने मेरे अ़ता कर्दा माल का क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं ने उसे तेरी फ़रमां बरदारी में ख़र्च किया और अपने बा'द अपनी औलाद के लिये तेरी वसीअ़ अ़ता, फ़ज़्ल, कुदरत और बे नियाज़ी पर भरोसा किया।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू ह़क़ीक़त जान लेता तो हंसता ज़ियादा और रोता कम तूने उन के लिये मुझ पर जो भरोसा किया था मैं ने उन्हें वोह अ़ता फ़रमा दिया।" (المعجم الاوسط، الحديث: ٤٣٨٣، ج٣، ص٢١٧/٢١٨)

《95》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने एक ग़ुलाम को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये 400 दीनार दे कर भेजा और उसे उन के हां ठहरने का हुक्म दिया ताकि वोह देख सके कि इन दीनारों का क्या होता है, वोह ग़ुलाम दीनार ले कर गया और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में पेश कर दिये, आप ने कुछ ग़ौर किया फिर उन सब को तक़्सीम कर दिया, तो वोह ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास लौट आया और सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया और देखा कि उन्हों ने ऐसी ही अ़ता ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये भी तय्यार कर रखी है, फिर आप ने वोह अ़ता उस ग़ुलाम को दे कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ भी भेजी और उसे उन के हां भी ठहरने का हुक्म दिया ताकि वोह देख सके कि इन दीनारों का क्या होता है, उस ने ऐसा ही किया ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वोह दीनार तक़्सीम कर दिये, जब आप की ज़ौजए मोह़-त-रमा को इस की ख़बर हुई तो वोह बोलीं : "ख़ुदा की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं, हमें भी अ़ता फ़रमाइये।" आप के ख़िर्क़े में दो दीनार बचे थे आप ने वोह उन्हें दे दिये, फिर वोह ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास लौट आया और क़िस्सा अ़र्ज़ किया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "येह लोग आपस में भाई भाई हैं।" (المعجم الكبير، الحديث: ٤٦، ج٢٠، ص٣٣، بتغير)

《96》...... जब रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मरज़ लाह़िक़ हुवा, उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास **सात** दीनार मौजूद थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हुक्म दिया कि वोह ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को स-दक़ा करने के लिये दे दें, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़शी त़ारी हो जाने की वजह से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उस हुक्म पर अ़मल करना याद न रहा, फिर जब भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ इफ़ाक़ा मह़सूस फ़रमाते उन्हें येही हुक्म देते रहे यहां तक कि उन्हों ने वोह दिरहम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को दे दिये, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जिस रात

www.dawateislami.net

इस दुन्या से आख़िरत की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए उस वक़्त उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास कुछ न था, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को चराग़ की ज़रूरत मह़सूस हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने किसी को चराग़ लेने के लिये किसी उम्मुल मुअमिनीन की त़रफ़ भेजा।" (المعجم الكبير، الحديث: ٥٩٩٠، ج٦، ص١٩٨، بتغيرٍ قليلٍ)

﴾97﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने वज़ीफ़े का माल निकाल कर अपनी ज़रूरिय्यात में ख़र्च कर लिया और जब आप के पास सात दीनार बच गए तो आप ने उन्हें भी निकालने (या'नी ख़र्च करने) का हुक्म दिया, जब इस के बारे में पूछा गया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे ख़लील ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे वसिय्यत फ़रमाई है : "जिस सोने या चांदी पर बुख़्ल किया जाता है वोह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च किये जाने तक अपने मालिक पर अंगारा है।" (المسندللامام احمد بن حنبل، حديث ابی ذر غفاری، الحديث: ٢١٥٨٤، ج٨، ص١٢٥)

﴾98﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से येह भी मरवी है कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने सोने या चांदी पर बुख़्ल किया और उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च न किया तो वोह क़ियामत के दिन एक ऐसा अंगारा होगा जिस के साथ उसे दाग़ा जाएगा।" (المعجم الكبير، الحديث: ١٦٤١، ج٢، ص١٥٣)

﴾99﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि उहुद पहाड़ मेरे लिये सोना बन जाए और उसे मैं तीसरे दिन की सुब्ह़ तक बाक़ी रखूं और मेरे पास उस में से कुछ रहे मगर वोह चीज़ जिसे मैं क़र्ज़ के लिये तय्यार रखूं।" (الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، باب الترهيب فی الانفاق......الخ، الحديث: ١٣٨١، ج١، ص٤٣٨)

﴾100﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर उहुद पहाड़ आले मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये सोना बन जाए जिसे मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करूं तो मुझे येह पसन्द नहीं कि जिस दिन मैं मरूं उस में से कुछ छोड़ूं सिवाए उन दो दीनारों के, जो मैं क़र्ज़ (अदा करने) के लिये तय्यार रखूं अगर मुझ पर क़र्ज़ हो।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عباس، الحديث: ٢٧٢٤، ج١، ص٦٤٢)

﴾101﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को मक्तूब भेजा : "ऐ मेरे भाई ! दुन्या का ऐसा माल जम्अ़ करने से बचते रहना जिस का तुम शुक्र अदा न कर सको क्यूं कि मैं ने रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में एक ऐसे मालदार को लाया जाएगा जिस ने दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की थी, उस का माल उस के सामने रखा होगा जब भी वोह पुल

www.dawateislami.net

सिरात् को पार करने लगेगा तो उस का माल उस से कहेगा : "(पुल सिरात् से) गुज़र जा, तूने मेरे मुआ़-मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा कर दिया था।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में एक ऐसे मालदार को लाया जाएगा जिस ने दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त नहीं की थी, उस का माल उस के सामने रखा होगा जब भी वोह पुल सिरात् को पार करने लगेगा उस का माल उस से कहेगा : "तू हलाक व बरबाद हो ! तूने मेरे मुआ़-मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ क्यूं अदा न किया।" वोह इसी त़रह़ रहेगा यहां तक कि अपनी हलाकत व बरबादी की दुआ़एं करने लगेगा।"

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الجامع، باب اصحاب الاموال،الحدیث: ۲۰۹۸، ج۱۰،ص۱۳۵)

《102》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास अ़तिय्या भेजा तो उन्हों ने उसी वक़्त वोह सारा माल रिश्तेदारों और यतीमों में तक़्सीम कर दिया और दुआ़ मांगी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! आयन्दा साल उ़मर का अ़तिय्या मुझ तक न पहुंचे, आप ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में से सब से पहले विसाल फ़रमाया।" (الطبقات الکبری لابن سعد،ذکرازواج رسول اللہ ﷺ زینب بنت جحش،ج۸،ص۸۶/۸۷)

《103》...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ख़ुदा की क़सम ! जिस किसी ने दिरहमों की इ़ज़्ज़त की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़लील कर दिया।"

(حلیۃ الاولیاء،الحسن البصری،الحدیث:۱۸۲۴،ج۲،ص۱۷۳)

《104》...... **मन्क़ूल** है कि जब सब से पहले दिरहमो दीनार बने तो इब्लीस ने उन्हें उठा कर पेशानी तक बुलन्द किया और चूम कर कहा : "जो तुम से मह़ब्बत करेगा वोह मेरा ह़क़ीक़ी ग़ुलाम होगा।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل......الخ،بیان ذم المال......الخ، ج۳،ص۲۸۸)

《105》...... इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "येह दोनों (या'नी दिरहम व दीनार) मुनाफ़िक़ीन की लगामें हैं जिन के ज़रीए इन्हें जहन्नम की त़रफ़ हांका जाएगा।" (المرجع السابق)

《106》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुआ़ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "दिरहम एक बिच्छू है, अगर तुम इसे ता'वीज़ के बिग़ैर पकड़ोगे तो वोह तुम्हें अपने ज़ह्र से क़त्ल कर देगा।" पूछा गया : "इस का ता'वीज़ क्या है ?" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह येह है कि तुम इसे ह़लाल त़रीक़े से लो और ह़क़ की जगह इस्ति'माल करो।" (المرجع السابق)

《107》...... जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के म-रज़ुल मौत में उन से कहा गया : "आप ने अपने तेरह बच्चों को ह़ालते फ़क़्र में छोड़ दिया कि इन के पास न तो दीनार हैं न ही दिरहम।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने न इन का ह़क़ इन से रोका और न ही ग़ैर का ह़क़ इन्हें दिया, मेरी औलाद इन दो क़िस्मों में से एक होगी या तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदार

www.dawateislami.net

होगी तब तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें किफ़ायत करेगा क्यूं कि वोह सालिहीन का वाली है या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमान होगी इस सूरत में मुझे इस की कोई परवाह नहीं कि वोह किस हाल में रहती है।'' पूछा गया : ''उन्हों ने अपना इतना माल किस के लिये ख़र्च किया, अगर वोह अपने बेटे के लिये जम्अ़ कर लेते।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''मैं इसे अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास अपने लिये ज़ख़ीरा करना चाहता हूं और अपनी औलाद के लिये अपने रब عَزَّوَجَلَّ को काफ़ी समझता हूं।''

(المرجع السابق،ص۲۸۸/۲۸۹)

《108》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुआ़ज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''दो मुसीबतें ऐसी हैं जिन की मिस्ल अगलों पिछलों ने न सुनी होंगी जो बन्दे की मौत के वक़्त उसे पहुंचती हैं एक तो येह कि मय्यित का सारा माल उस से छीन लिया जाता है दूसरी येह कि उस से सारे माल का ह़िसाब लिया जाता है।''

(المرجع السابق،ص۲۸۹)

कबीरा नम्बर 129 : क़र्ज़ ख़्वाह का मक़रूज़ को बिला वजह तंग करना

या'नी क़र्ज़ ख़्वाह का तंगदस्त मक़रूज़ की तंगदस्ती को जानने के बा वुजूद ह़िर्स के सबब उस के पीछे पड़े रहना या उसे क़ैद करा देना

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद तशरीफ़ लाए तो इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया, फिर अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ज़मीन की त़रफ़ इशारा किया : ''जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कमी कर दी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की तपिश से बचाएगा।''

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عباس، الحديث: ۳۰۱۷،ج۱،ص۷۰۰،"بتقدم وتأخر)

《2》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह इर्शाद फ़रमाते हुए मस्जिद में दाख़िल हुए : ''तुम में से किसे येह बात पसन्द है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की गर्मी से बचाए?'' हम ने अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक येह पसन्द करता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की गर्मी से बचाए।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो तंगदस्त को मोहलत दे या उस का क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की गर्मी से मह़फ़ूज़ फ़रमाएगा।''

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عباس، الحديث: ۳۰۱۷،ج۱،ص۷۰۰)

《3》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो अपने मक़रूज़ की परेशानी दूर करे या उस का क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे वोह क़ियामत के दिन अ़र्श के साए में होगा।''

(المرجع السابق،الحديث:۲۲۶۲۲،ج۸،ص۳۶۷)

www.dawateislami.net

तंगदस्त को क़र्ज़ की अदाएगी में मोहलत देने की फ़ज़ीलत

क़र्ज़ ख़्वाह अगर तंगदस्त को मोहलत दे तो उस के लिये अ़र्श के साए में जगह पाने के मु-तअ़ल्लिक़ बहुत सी अहादीस आई हैं, इन में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं :-

《4》...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो तंगदस्त को मोहलत दे या उस का क़र्ज़ मुआफ़ कर दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के उस दिन अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा जिस दिन अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा।"

(جامع الترمذی ،ابواب البیوع، باب ماجاء فی انظار المعسر،الحدیث: ١٣٠٦،ص١٧٨٣)

《5》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस का क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा।" (مجمع الزوائد،کتاب البیوع ، باب فیمن فرج عن ......الخ، الحدیث:٦٦٦٩،ج٤،ص٢٤١)

《6》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में जगह पाने वाला सब से पहला शख़्स वोह होगा जो तंगदस्त को इतनी मोहलत दे कि वोह क़र्ज़ उतारने के क़ाबिल हो जाए या अपना मत़्लूबा क़र्ज़ उस पर स-दक़ा कर के कह दे : "मेरा तुझ पर जितना क़र्ज़ है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये स-दक़ा है और क़र्ज़ की रसीद फाड़ डाले।" (المرجع السابق، الحدیث: ٦٦٧٠،ج٤،ص٢٤١)

《7》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी मुसल्मान की एक परेशानी दूर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के लिये पुल सिरात़ पर नूर की ऐसी दो शाख़ें बना देगा जिन से इतने आ़लम रोशन होंगे जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई शुमार नहीं कर सकता।" (المعجم الاوسط،الحدیث: ٤٥٠٤،ج٣،ص٢٥٤)

《8》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स येह चाहता है कि उस की दुआ़ क़बूल हो और परेशानी दूर हो उसे चाहिये कि तंगदस्त की परेशानी दूर करे।" (المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله ابن عمر، الحدیث: ٤٧٤٩،ج٢،ص٢٤٨)

《9》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी मुसल्मान की दुन्यवी परेशानियों में से एक परेशानी दूर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़ियामत के दिन की परेशानियों में से एक परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो शख़्स तंगदस्त को दुन्या में सहूलत फ़राहम करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या और आख़िरत में आसानी अ़ता फ़रमाएगा, जो

www.dawateislami.net

किसी मुसल्मान की दुन्या में पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या और आख़िरत में उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक बन्दे की मदद में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع علی ......الخ،الحدیث: ٦٨٥٣،ص١١٤٧)

《10》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी उस के लिये मोहलत ख़त्म होने तक रोज़ाना उतनी ही रक़म स-दक़ा करने का सवाब है और क़र्ज़ की वुसूली के दिन भी अगर मज़ीद मोहलत दे दी तो उसे रोज़ाना उतनी ही रक़म दो मरतबा स-दक़ा करने का सवाब है।"

(المستدرک،کتاب البیوع، باب من انظر معسراً......الخ،الحدیث: ٢٢٧٢،ج٢،ص٣٢٧)

《11》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे येह बात पसन्द हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत की परेशानियों से नजात अता फ़रमाए उसे चाहिये कि तंगदस्त की परेशानी दूर करे या उस के क़र्ज़ में कमी कर दे।"

(صحیح مسلم، کتاب المساقاة ، باب فضل انظار المعسر والتجاوز......الخ،الحدیث: ٤٠٠٠،ص٩٥٠)

《12》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम से पिछली क़ौमों में से एक शख़्स के पास फ़िरिश्ता उस की रूह क़ब्ज़ करने आया तो उस से कहा : "क्या तुम ने कोई नेक अमल किया है ?" उस ने कहा "मैं नहीं जानता।" उस से कहा गया : "सोच लो (शायद याद आ जाए)।" तो उस ने कहा : "मैं और तो कुछ नहीं जानता मगर मैं दुन्या में लोगों से ख़रीदो फ़रोख़्त किया करता तो ख़ुशहाल को मोहलत देता और तंगदस्त से चश्म पोशी किया करता था।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث حذیفہ بن الیمان، الحدیث: ٢٣٤١٣،ج٩،ص٩٨)

《13》...... एक और रिवायत में है : "मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और अपने ख़ुद्दाम को हुक्म दे रखा था कि ख़ुशहाल अफ़राद को मोहलत दिया करो और तंगदस्तों से दर गुज़र किया करो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भी अपने मलाएका से इर्शाद फ़रमाया कि तुम भी इस से चश्म पोशी करो।"

(صحیح مسلم، کتاب المساقاة ، باب فضل انظار المعسر......الخ،الحدیث: ٣٩٩٣،ص٩٤٩)

《14》...... शाहे अबरार, ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में एक ऐसे बन्दे को लाया जाएगा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माल अता फ़रमाया था, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "तूने दुन्या में क्या अमल किये ?" फिर रावी ने येह आयत पढ़ी :

وَلَا یَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِیْثًا (پ٥،النساء،٤٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे।

www.dawateislami.net

बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे माल अ़त़ा फ़रमाया था मैं लोगों से ख़रीदो फ़रोख़्त किया करता था और दर गुज़र करना मेरी आ़दत थी, लिहाज़ा मैं फ़राख़ दस्त को आसानी फ़राहम करता और तंगदस्त को मोहलत दिया करता था।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मैं तुझ से ज़ियादा अपने बन्दे से चश्म पोशी करने का ह़क़ रखता हूं।"

(صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ ، باب فضل انظارالمعسر......الخ،الحدیث:۳۹۹۶،ص۹۴۹)

《15》...... एक दूसरी रिवायत में है : "वोह अपने ख़ादिम से कहा करता था : "जब तेरे पास कोई तंगदस्त आए तो उस से चश्म पोशी किया कर शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से भी चश्म पोशी फ़रमाए।" फिर जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिला तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से चश्म पोशी फ़रमाई।"

(صحیح البخاری، کتب احادیث الانبیاء،باب حدیث الغار،الحدیث: ۳۴۸۰،ص۲۸۴)

《16》...... नसाई शरीफ़ की रिवायत में है : "जब मैं अपने ख़ादिम को क़र्ज़ वुसूल करने के लिये भेजता तो उसे कहता : "जो ख़ुशह़ाल हो उस से ले लो और जो तंगदस्त हो उसे छोड़ दो और चश्म पोशी करो शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से भी चश्म पोशी फ़रमाए।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से इर्शाद फ़रमाएगा : "मैं ने भी तुझ से चश्म पोशी की।"

(سنن النسائی ،کتاب البیوع،باب حسن المعاملة والرفق......الخ،الحدیث: ۴۶۹۸،ص۲۳۹۱)

तम्बीह :

मैं ने जो बात ज़िक्र की, कि क़र्ज़ ख़्वाह का अपने मक़रूज़ से मज़्कूर सुलूक करना कबीरा गुनाह है तो येह बात बिल्कुल ज़ाहिर है अगर्चे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने इस की तसरीह़ नहीं की मगर येह अ़मल मुसल्मान को ऐसी सख़्त ईज़ा पहुंचाने में दाख़िल है जिस की उ़मूमन वोह त़ाक़त नहीं रखता और पहली दो ह़दीसों के मफ़्हूम या'नी "जो अपने तंगदस्त मक़रूज़ को मोहलत न दे वोह जहन्नम की गर्मी से न बचाया जाएगा।" में सख़्त वई़द है और इस से इस अ़मल को कबीरा गुनाह शुमार करना मुअक्कद हो जाता है।

कबीरा नम्बर 130 : स-दक़े में ख़ियानत करना

《1》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हम तुम में से जिसे किसी काम पर आ़मिल बनाएं फिर वोह हम से एक सूई या इस से ज़ियादा कोई शै छुपाए तो येह वोह ख़ियानत होगी जिसे क़ियामत के दिन ले कर आएगा।" एक अन्सारी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी ज़िम्मादारी मुझ से ले लीजिये।" सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हें क्या हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की, "मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसा ऐसा फ़रमाते सुना है।" शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो

www.dawateislami.net

सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं अब भी येही कहता हूं कि हम तुम में से जिसे किसी काम पर आ़मिल बनाएं और वोह क़लील व कसीर ले आए फिर उसे जो कुछ दिया जाए ले ले और जिस से मन्अ़ किया जाए उस से बाज़ आ जाए।"

(صحيح مسلم، كتاب الامارة ، باب تحريم هدايا العمال،الحديث:٤٧٤٣،ص١٠٠٧)

《2》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू वलीद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो, क़ियामत के दिन इस त़रह़ मत आना कि तुम ने एक बिलबिलाता हुवा ऊंट, डकराती हुई गाय या मिनमिनाती हुई बकरी उठा रखी हो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या ऐसा भी होगा ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है !" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "(मुझे भी) उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ भेजा ! मैं कभी भी किसी चीज़ पर आ़मिल नहीं बनूंगा।" (السنن الكبرى للبيهقى،كتاب الزكاة،باب غلول الصدقة،الحديث:٧٦٦٣،ج٤،ص٢٦٧)

《3》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "अ़न्क़रीब तुम पर मशरिक़ व मग़रिब की ज़मीनों के दरवाज़े खुल जाएंगे लेकिन उन के उ़म्माल (या'नी हुक्मरान) जहन्नमी होंगे सिवाए उस के जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरे और अमानत अदा करे।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، أحاديث رجال من اصحاب النبى، الحديث: ٢٣١٧٠،ج٩ص٤٤)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बक़ीए़ ग़रक़द में पैदल चल रहा था कि मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को "तुझ पर अफ़्सोस, तुझ पर अफ़्सोस।" कहते हुए सुना, मैं पीछे हट गया और समझा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह मुझ से फ़रमाया है, लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या हुवा, चलो !" मैं ने अ़र्ज़ की, "क्या मैं ने कोई नया काम किया है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नहीं।" मैं ने अ़र्ज़ की "फिर आप ने मुझ पर अफ़्सोस क्यूं किया ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम पर से नहीं किया, बल्कि येह फ़ुलां शख़्स है जिसे मैं ने बनी फ़ुलां पर स-दक़ा लेने के लिये आ़मिल बना कर भेजा फिर इस ने एक धारीदार ऊनी चादर में ख़ियानत की तो इसे इतनी ही मिक़्दार में जहन्नम की ज़िरह पहना दी गई।"

(سنن النسائى، كتاب الامامة،باب الاسرع الى......الخ،الحديث:٨٦٣،ص٢١٤٢)

《5》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "स-दक़े के माल में ज़ुल्म करने वाला स-दक़ा रोक लेने वाले की त़रह़ है।"

(جامع الترمذى، ابواب الزكاة ، باب ماجاء فى المتعدى فى الصدقة ،الحديث: ٦٤٦،ص١٧١٠)

सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस त़रह़ स-दक़ा रोकने वाला गुनहगार है इसी त़रह़ येह भी गुनहगार है।"

《6》...... रसूले अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं तुम्हें

www.dawateislami.net

पुश्तों से पकड़ कर जहन्नम से रोकता हूं कि जहन्नम से दूर हटो, जहन्नम से बचो, जहन्नम से दूर हो जाओ और तुम हो कि मुझ पर ग़ालिब आ जाते हो और पतंगों या टिड्डियों की त़रह़ (उस में) गिरने लगते हो, क़रीब है कि मैं तुम्हारी पुश्तों को छोड़ दूं, और मैं ह़ौज़े (कौसर) पर तुम्हारे लिये **फ़रत़** हूं (फ़रत़ उस शख़्स को कहते हैं जो लोगों से पहले मन्ज़िल पर पहुंच कर उन के लिये आराम वग़ैरा का एहतिमाम करे[1]) तुम मेरे पास इकट्ठे और एक एक कर के आओगे और मैं तुम्हें तुम्हारे चेहरों और नामों से पहचान लूंगा जैसा कि आदमी अपने ऊंटों में अजनबी ऊंट पहचान लेता है, तुम्हें बाएं हाथ वालों में भेजा जाएगा और मैं तुम्हारे लिये रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़सम खाऊंगा और कहूंगा : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी क़ौम ! ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत !'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ''ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! तुम नहीं जानते कि इन्हों ने तुम्हारे बा'द क्या किया ? येह तुम्हारे बा'द पिछले पाउं लौट गए थे।'' लिहाज़ा तुम में से कोई ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन उस ने एक बकरी उठाई हुई हो और वोह मिनमिना रही हो और पुकारे : ''ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) !'' तो मैं कहूं : ''मैं तुम्हारे लिये किसी चीज़ का मालिक नहीं, यक़ीनन मैं ने तुम्हें पैग़ामे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पहुंचा दिया था।''

और तुम में से कोई ऐसा भी न हो कि वोह क़ियामत के दिन एक घोड़ा उठाए हुए आए जो आवाज़ निकाल रहा हो पस वोह पुकारे : ''ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) !'' तो मैं कहूं : ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारे लिये किसी चीज़ का मालिक नहीं, बेशक मैं ने तुम्हें पैग़ामे ख़ुदा पहुंचा दिया था।'' और तुम में से कोई ऐसा भी न हो कि वोह क़ियामत के दिन चमड़े का मश्क उठाए हुए हो वोह पुकारे : ''ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ! ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) !'' तो मैं कहूं : ''मैं तुम्हारे लिये किसी चीज़ का मालिक नहीं, बेशक मैं ने तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम पहुंचा दिया था।''

(الترغيب والترهيب ، الترغيب فی العمل علی الصدقة ،الحديث:١١٧٥ ،ج ١٢، ص٣٧٨)

---

1 : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लफ़्ज़ फ़रत़ की तशरीह़ व तह़क़ीक़ करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : फ़रत़ ब मा'ना फ़ारित़ है जैसे तब्अ़ ब मा'ना ताबेअ़, फ़रत़ वोह शख़्स है जो किसी जमाअ़त से आगे मन्ज़िल पर पहुंच कर उन के त़आ़म क़ियाम वग़ैरा तमाम ज़रूरिय्यात का इन्तिज़ाम करे जिस से वोह जमाअ़त आ कर हर त़रह़ आराम पाए, मत़्लब येह है कि मैं तुम से पहले जा रहा हूं ताकि तुम्हारी शफ़ाअ़त, तुम्हारी नजात, तुम्हारी हर त़रह़ कारसाज़ी (या'नी मदद) करूं तुम में से जो भी ईमान पर फ़ौत होगा वोह मेरे पास मेरी ह़िफ़ाज़त, मेरे इन्तिज़ाम में इस त़रह़ आवेगा जैसे मुसाफ़िर अपने घर आता है, भरे घर में। (اشعة اللمعات) मोमिन मरते ही हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचता है बल्कि बा'ज़ मोमिनों की जां कनी के वक़्त ख़ुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें लेने तशरीफ़ लाते हैं जैसा कि इमाम बुख़ारी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی) का वाक़िआ़ हुवा, और बहुत मरने वालों से (नज़्अ़ के वक़्त) सुना गया हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) आ गए, ख़याल रहे कि छोटे फ़ौत शुदा बच्चों को भी ''फ़रत़'' फ़रमाया गया है मगर वोह ''फ़रते नाक़िस'' हैं। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ''फ़रते कामिल'' या'नी हर त़रह़ के मुन्तज़िम नीज़ ''اَيۡدِيۡكُمۡ'' में ख़िताब सारी उम्मत में है न कि सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) अपनी उम्मत के दाइमी मुन्तज़िम हैं। (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 8, स. 286)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाहों को कबाइर में शुमार करना ज़ाहिर है, अगर्चे उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इन की तस्रीह़ नहीं की क्यूं कि इन की कई मक़ामात में वज़ाह़त है और तह़क़ीक़ उन्हों ने मुत़्लक़ ख़ियानत को कबीरा गुनाहों में शुमार किया है और वोह इन को और इन के इलावा गुनाहों को भी शामिल है।

कबीरा नम्बर **131 :** **भत्ता वुसूल करना**

या'नी ऐसा टेक्स जम्अ़ करना और इस के मु-तअ़ल्लिक़ात में से कोई चीज़ म-सलन इस की दस्तावेज़ वग़ैरा लिखना जब कि लोगों के हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त मक़्सूद न हो कि आसानी की सूरत में वोह टेक्स वापस लौटा दिया जाए।

येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में दाख़िल है :

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ (پ۲۵،الشوریٰ:۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुआ-ख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाह़क़ सरकशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

भत्ता लेना अपनी दीगर तमाम अन्वाअ़ म-सलन टेक्स जम्अ़ करने वाले, दस्तावेज़ तय्यार करने वाले, गवाह, (दराहिम व दनानीर का) वज़्न करने वाले और (अज्नास) नापने वाले के साथ ज़ुल्म के बुरे ज़राएअ़ में से है, बल्कि येह लोग ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं क्यूं कि येह ऐसी चीज़ लेते हैं जिस के मुस्तह़िक़ नहीं और ऐसे लोगों तक पहुंचाते हैं जो इस के ह़क़दार नहीं इसी लिये ऐसा टेक्स लेने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा क्यूं कि इस का गोश्त ह़राम से नश्वो नुमा पाता है, और दूसरा येह कि लोगों के ज़ुल्म का त़ौक़ अपने गले में पहनते हैं, क़ियामत के दिन येह उन लोगों के हुक़ूक़ की अदाएगी कहां से करेंगे, लिहाज़ा अगर उन के पास कुछ नेकियां होंगी तो मज़्लूम लोग उन की नेकियां ले लेंगे।

मुफ़्लिस कौन ?

《**1**》...... इस बात का सुबूत ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस ह़दीसे पाक से होता है कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में मुफ़्लिस वोह कहलाता है

www.dawateislami.net

जिस के पास न दिरहम हों न कोई माल हो।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, ज़कात और रोज़े ले कर ह़ाज़िर होगा और उस ने इस को गाली दी होगी और इस का माल छीना होगा तो येह उस की नेकियों में से कुछ नेकियां ले लेगा इसी त़रह़ वोह भी इस की नेकियां ले लेगा, अगर पूरा ह़क़ अदा करने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो येह शख़्स उन लोगों के गुनाह अपने सर ले लेगा, फिर उसे औंधे मुंह जहन्नम में गिरा दिया जाएगा।" (صحیح مسلم، کتاب البر وصلة ، باب تحریم الظلم،الحدیث: ۶۵۷۹،ص۱۱۲۹)

《2》..... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام ने एक साअ़त मुक़र्रर कर रखी थी जिस में वोह अपने अहले ख़ाना को बेदार कर के इर्शाद फ़रमाते थे : "ऐ आले दावूद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! उठ कर नमाज़ पढ़ो क्यूं कि येह वोह साअ़त है जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जादूगर और (नाह़क़) उ़श्र वुसूल करने वाले के इ़लावा सब की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۱۶۲۸۱،ج۵،ص۴۹۲)

《3》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "टेक्स लेने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(سنن ابی داؤد ، کتاب الخراج والفئی ......الخ، باب فی السعایة علی الصدقة ، الحدیث: ۲۹۳۷،ص۱۴۴۲)

ह़दीसे पाक का मफ़्हूम :

☆...... ह़ज़रते यज़ीद बिन हारून رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस से मुराद (ना जाइज़ त़ौर पर) उ़श्र वुसूल करने वाला है।"

☆...... ह़ज़रते इमाम बग़वी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "टेक्स लेने वाले से मुराद येह है कि जब ताजिर उस के पास से गुज़रें तो वोह उ़श्र के नाम पर उन से टेक्स वुसूल करे।"

☆...... ह़ाफ़िज़ मुन्ज़िरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "आज कल येह लोग उ़श्र के नाम पर टेक्स लेने के साथ साथ एक दूसरा टेक्स भी वुसूल करते हैं जिसे किसी नाम से वुसूल नहीं किया जाता बल्कि वोह ह़राम त़रीक़े से इसे ह़ासिल कर के अपने पेट में आग भरते हैं, उन की दलील उन के रब عَزَّوَجَلَّ के हां मक़्बूल न होगी और उन पर ग़ज़ब और दर्दनाक अ़ज़ाब है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات،الترغیب فی العمل علی الصدقة بالتقوی،تحت الحدیث:۱۱۷۸،ج۱،ص۳۸۰)

सय्यिदुना सिराज बुल्क़ीनी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान कि "उस ने ऐसी तौबा की है कि अगर टेक्स लेने वाला भी करता।" (صحیح مسلم، کتاب الحدود،باب من اعترف علی نفسہ بالزنیٰ، الحدیث: ۴۴۳۲،ص۹۷۸)

www.dawateislami.net

(या'नी सय्यिदुना सिराज बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मज़्कूरा ह़दीसे पाक) के बारे में सुवाल हुवा कि "इस से मुराद वोह टेक्स है जो अश्या पर मुरत्तब होता है या कोई और टेक्स मुराद है ?" तो आप ने जवाब दिया : "टेक्स लेने वाले का इत़्लाक़ उस शख़्स पर होता है जो इस टेक्स वुसूल करने के काम का आग़ाज़ करे और इस का इत़्लाक़ उन लोगों पर भी होता है जो उस के घटिया त़रीक़े पर चलें और ज़ाहिर येही है कि रसूले अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुराद वोह टेक्स लेने वाला है जिस का गुनाह अ़ज़ीम हो और उसे **साहि़बे मक्स** भी कहते हैं, नीज़ इस से मुराद उस के त़रीक़े पर चलने वाले लोग भी हो सकते हैं, इस ह़दीसे पाक से येह भी ज़ाहिर हुवा कि सब से पहले टेक्स लेने वाले की तौबा मक़्बूल है और जो शख़्स बुरा त़रीक़ा राइज करे उसे इस का गुनाह इस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों का गुनाह उसी सूरत में होगा जब कि वोह तौबा न करे और जब वोह तौबा करेगा तो उस की तौबा मक़्बूल होगी और इस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों का गुनाह उस पर न होगा।"

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ किलाब बिन उमय्या के पास से गुज़रे, वोह बसरा में एक टेक्स वुसूल करने वाले के पास बैठे हुए थे, आप ने उन से पूछा : "आप को यहां किस ने बिठाया है ?" उन्हों ने बताया : "ज़ियाद ने मुझे इस जगह का आ़मिल मुक़र्रर किया है।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी हुई ह़दीसे पाक न सुनाऊं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "क्यूं नहीं ! ज़रूर सुनाइये।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : "ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मा'मूल था कि वोह एक मख़्सूस साअ़त में अपने घर वालों को बेदार कर के इर्शाद फ़रमाते : "ऐ आले दावूद ! उठ कर नमाज़ पढ़ो क्यूं कि येह वोह साअ़त है जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ साहिर और उ़श्र वुसूल करने वाले के इलावा सब की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है।" येह सुन कर किलाब बिन उमय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ सुवारी पर सुवार हो कर ज़ियाद के पास आए और इस्ति'फ़ा पेश किया जो उस ने क़बूल कर लिया।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،الحدیث: ۱۶۲۸۱،ج۵،ص۴۹۲)

﴾5﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आधी रात को आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, फिर एक मुनादी निदा देता है : "है कोई दुआ़ करने वाला जिस की दुआ़ क़बूल की जाए ? है कोई मांगने वाला जिसे अ़त़ा किया जाए ? है कोई मुसीबत ज़दा जिस से तंगी दूर की जाए ?" तो जो मुसल्मान भी दुआ़ मांगता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ़ क़बूल फ़रमा लेता है मगर अपनी शर्मगाह के ज़रीए कमाने वाली ज़ानिया औ़रत और टेक्स वुसूल करने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती।" (المعجم الکبیر،الحدیث: ۸۳۹۱،ج۹،ص۵۹)

www.dawateislami.net

﴾6﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत और फ़ज़्लो जूद के ज़रीए मख़्लूक़ को अपना क़ुर्ब बख़्शता है, फिर अपनी शर्मगाह के ज़रीए कमाने वाली और टेक्स वुसूल करने वाले के इलावा हर बख़्शिश चाहने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।" (المعجم الكبير،الحديث: ٨٣٧١،ج٩،ص٥٤)

﴾7﴿...... सय्यिदुना अबुल ख़ैर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अमीरे मिस्र मुस्लमा बिन मख़्लद ने ह़ज़रते सय्यिदुना रुवैफ़अ़ बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को टेक्स वुसूल करने का वाली बनने की पेशकश की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने मह़बूबे रब्बुल आ़–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है : "टेक्स लेने वाला जहन्नम में होगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث رويفع بن ثابت، الحديث: ١٦٩٩٨،ج٦،ص٤٩)

﴾8﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना उम्मे स–लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सह़रा में थे कि किसी ने पुकारा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم !" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मु–तवज्जेह हुए लेकिन कोई नज़र न आया, फिर तवज्जोह फ़रमाई तो एक हिरनी को जाल में बंधा हुवा पाया उस ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे क़रीब तशरीफ़ लाइये।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के क़रीब हो गए और दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुझे क्या ह़ाजत है ?" उस ने अ़र्ज़ की "इस पहाड़ पर मेरे दो बच्चे हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे आज़ाद फ़रमा दें ताकि मैं उन्हें दूध पिला कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लौट आऊं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम ऐसा ही करोगी ?" उस ने अ़र्ज़ की "अगर मैं ऐसा न करूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे वोही अ़ज़ाब दे जो उ़श्र (या'नी 10% टेक्स) लेने वालों को देगा।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे आज़ाद कर दिया, वोह चली गई और अपने बच्चों को दूध पिला कर लौट आई, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे दोबारा बांध दिया, आ'राबी येह देख कर बड़ा मु–तअस्सिर हुवा और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई ह़ाजत है ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! इसे आज़ाद कर दो।" तो उस ने हिरनी को आज़ाद कर दिया और वोह दौड़ कर जाते हुए पढ़ रही थी : "اَشْهَدُاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّکَ رَسُوْلُ اللّٰهِ"

(المعجم الكبير،الحديث:٧٦٣،ج٢٣،ص٣٣١)

बद तरीन शख़्स कौन ?

﴾9﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें सब से बुरे शख़्स के बारे में न बताऊं ? जो अकेला खाए और अपने मेहमानों को खाने से रोक दे और तन्हा सफ़र करे और अपने ग़ुलाम को मारे। क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न

www.dawateislami.net

बताऊं ? जो लोगों से बुग़्ज़ रखे और लोग उस से बुग़्ज़ रखें। क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? जिस के शर से डरा जाए और उस से भलाई की उम्मीद न हो। क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? जो ग़ैर की दुन्या के लिये अपनी आख़िरत बेच दे। क्या मैं तुम्हें इस से भी बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? जो दीन के ज़रीए दुन्या खाए।''

(كنزالعمال، كتاب المواعظ......الخ، قسم الاقوال،الحديث: ٤٤٠٣٨، ج١٦، ص ٤٠)

﴾10﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि मैं ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : **''मन्सब चाहने वालों के लिये हलाकत है, ज़िम्मादारों के लिये हलाकत है,** क़ियामत के दिन कुछ क़ौमें ज़रूर तमन्ना करेंगी कि उन की पेशानियों के बाल सुरय्या सितारों से लटके होते और वोह ज़मीन व आस्मान के दरमियान लटके होते और **किसी चीज़ के ज़िम्मादार न बनते।''**

(المسندللامام احمد بن حنبل،مسند ابوهريره ، الحديث: ٨٦٣٥،ج٣،ص٢٦٧)

﴾11﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''उ-मरा के लिये हलाकत है, मन्सब चाहने वालों के लिये हलाकत है, क़ियामत के दिन कुछ क़ौमें ज़रूर येह तमन्ना करेंगी कि उन की पेशानियां सुरय्या सितारे से मुअ़ल्लक़ होतीं और वोह ज़मीन व आस्मान के दरमियान लटक रहे होते और उन्हें किसी काम का वाली न बनाया जाता।''

(المستدرك،كتاب الاحكام،باب قاضيان فى النار وقاض......الخ،الحديث: ٧٠٩٩،ج٥،ص١٢٣)

﴾12﴿...... साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जहन्नम में एक पथ्थर है जिसे **वैल** कहा जाता है, मन्सब के त़लब गार लोग उस पर चढ़ेंगे और नीचे उतरेंगे।''

(الترغيب والترهيب ، كتاب الصدقات،باب الترغيب فى العمل على الصدقة ......الخ،الحديث:١١٨٥،ج١،ص٣٨٢)

﴾13﴿...... ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर येह रईस नहीं था तो सआ़दत मन्द है।'' (مسند ابى يعلى الموصلى، الحديث: ٣٩٢٦،ج٣،ص٣٥٨)

﴾14﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धों पर दस्ते मुबारक मार कर इर्शाद फ़रमाया : ''**ऐ क़ुदैम** ! अगर तुम अमीर, कातिब और निगरान न बनो तो फ़लाह़ पा जाओगे।''

(سنن ابى داؤد، كتاب الخراج، باب فى العرافة ،الحديث: ٢٩٣٣،ص١٤٤٢)

﴾15﴿...... सय्यिदुना इमाम त़-बरानी رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने रावी का नाम ज़िक्र किये बिग़ैर रिवायत

www.dawateislami.net

किया है कि मेरे दादाजान ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! बनी तमीम का एक शख़्स मेरा सारा माल ले गया ।" तो शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं ।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम चाहते हो कि तुम्हें अपनी क़ौम का अमीर बना दिया जाए ?" या येह इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें तुम्हारी क़ौम का सरदार न बना दूं ?" मैं ने अर्ज़ की, "नहीं ।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सरदार को तो सख़्ती से जहन्नम में फेंका जाएगा ।" (المعجم الكبير،الحديث: ٦٤٦، ج٢٢،ص٢٤٨)

﴾16﴿...... अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में है कि "एक क़ौम किसी घाट पर रहती थी, जब उन्हें इस्लाम की दा'वत पहुंची तो पानी के मालिक ने अपनी क़ौम को इस शर्त पर **100** ऊंट दिये कि वोह इस्लाम ले आएं, पस वोह क़ौम मुसल्मान हो गई और उन्हों ने वोह ऊंट आपस में तक़्सीम भी कर लिये, फिर उसे वोह ऊंट वापस लेने का ख़याल आया तो उस ने अपने बेटे को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, और फिर येही हदीस ज़िक्र की जिस के आख़िर में यूं है कि उस के बेटे ने अर्ज़ की, "मेरे वालिद उम्र रसीदा और ज़ईफ़ हो चुके हैं और वोह पानी के निगहबान हैं और वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मुता-लबा करते हैं कि उन के बा'द येह सरदारी मुझे हासिल हो जाए ।" तो सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मन्सब दारी हक़ है और लोगों के लिये इस के बिग़ैर चारा भी नहीं, लेकिन (बहुत से) मन्सब दार जहन्नम में होंगे ।" (سنن ابی داؤد، كتاب الخراج، باب فی العرافة ،الحديث: ٢٩٣٤،ص١٤٤٢)

﴾17﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम पर ऐसे बद बख़्त उ-मरा ज़रूर मुसल्लत होंगे जो बद तरीन लोगों को अपनी क़ुरबत देंगे और नमाज़ इन के अवक़ात से मुअख़्ख़र करेंगे, लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स ऐसे ज़माने को पाए वोह हरगिज़ न निगरान बने, न सिपाही, न टेक्स वुसूल करे और न ही ख़ज़ानची बने ।"

(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، باب الترغيب فی العمل......الخ،الحديث: ١٩٠، ج١،ص٣٨٣)

﴾18﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो गोश्त हराम से पला बढ़ा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा । जहन्नम उस का ज़ियादा हक़दार है और टेक्स वुसूल करना हराम कमाई का बद तरीन ज़रीआ है ।"

(مجمع الزوائد، كتاب الخلافة ،باب فيمن يصدق الامراء بكذبهم ، الحديث: ٩٢٦٣، ج٥،ص٤٤٥)

﴾19﴿...... सय्यिदुना वाहिदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी तफ़्सीर में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान : لَا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ (پ٧، المائدة:١٠٠) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कि गन्दा और सुथरा बराबर नहीं ।

www.dawateislami.net

के तहत लिखते हैं कि हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी तिजारत का ज़रीआ़ शराब की ख़रीदो फ़रोख़्त था और मैं ने उस से बहुत सा माल जम्अ़ कर रखा है अब अगर मैं उस माल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त में ख़र्च करूं तो क्या मुझे इस से नफ़्अ़ होगा ?" नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "अगर तुम येह माल ह़ज, जिहाद या स-दक़े में ख़र्च करो तब भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक इस की हैसिय्यत मच्छर के पर जितनी भी न होगी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ पाकीज़ा स-दक़ात ही क़बूल फ़रमाता है।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान की तस्दीक़ के लिये येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई :

قُلْ لَّا یَسْتَوِی الْخَبِیْثُ وَالطَّیِّبُ (پ۷،المآئدہ:۱۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो कि गन्दा और सुथरा बराबर नहीं।

(تفسیر زادالمسیر،سورۃ المائدۃ،تحت الآیۃ(قل لایستوی الخبیث)الجزء۲،ص۲۷۰)

सय्यिदुना ह़सन और सय्यिदुना अ़ता رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : "इस से मुराद ह़लाल और ह़राम हैं।"

《20》...... जिस औ़रत ने रज्म के ज़रीए़ पाकीज़गी चाही थी उस के बारे में मरवी ह़दीसे पाक में येह अल्फ़ाज़ हैं : "इस ने ऐसी तौबा की है कि अगर टेक्स लेने वाला भी करता तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती।" या येह : "उस की तौबा क़बूल हो जाती।"

(سنن ابی داؤد،کتاب الحدود،باب المرأۃ التی امر النبی ﷺ......الخ،الحدیث:۴۴۴۲،ص۱۵۴۸،بدون"لقلبت منہ")

《21》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "6 चीज़ें अ़मल को बरबाद कर देती हैं : (1) लोगों के ड़यूब में मशग़ूल होना (2) दिल की सख़्ती (3) दुन्या की मह़ब्बत (4) ह़या की कमी (5) लम्बी उम्मीद और (6) बहुत ज़ियादा ज़ुल्म।"

(کنزالعمال،کتاب المواعظ والرقائق،قسم الاقوال،فصل سادس فی الترھیب السداسی ، الحدیث:۴۴۰۱۶، ج۱۶، ص۳۶)

《22》...... रसूले अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "नेकी पुरानी नहीं होती और गुनाह भुलाया नहीं जा सकता, दीनदार कभी न मरेगा, जो चाहो करो तुम जैसा करोगे वैसा ही बदला पाओगे।" (فردوس الاخبار،باب الیاء،الحدیث:۲۰۲۴، ج۱، ص۲۸۲)

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना ज़ाहिर है एक जमाअ़त ने इस की तस्रीह़ की है, टेक्स लेने वाले और इन के तमाम मुआ़विनीन इस वई़द में दाख़िल हैं और मैं ने उ़न्वान में टेक्स लिखने वाले का जो तज़्किरा किया येह वोही क़ौल है जिस पर सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़तवा दिया है और येह बात बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि ज़ाहिरी तौ़र पर बिलफ़र्ज़ अगर वोह टेक्स लेने के

www.dawateislami.net

लिये ह़ाज़िर न हो बल्कि जो चीज़ ली और दी जाती है सिर्फ़ उस पर क़ब्ज़ा करने की ख़ात़िर आए तो (वईद के लिये येही) काफ़ी है और अगर बादशाह ने उस के लिये बैतुल माल में से कुछ ह़िस्सा ह़ाज़िरी की शर्त़ पर मुक़र्रर किया पस वोह लेने के इरादे से ह़ाज़िर हो गया तो जाइज़ है, फिर मैं ने सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के कलाम को देखा और उस में येह तस्रीह़ पाई कि लौटाने के इरादे से उजरत का लेना जाइज़ है, इस लिये जब आप से टेक्स लेने के लिये आने वाले के बारे में और ज़ालिमों के माल लेने के बारे में पूछा गया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर टेक्स लेने ह़ाज़िर होने वाले का इरादा मालिकों के माल की ह़िफ़ाज़त होता कि किसी आ़दिल के वाली बनने या बादशाह के अ़द्ल की त़रफ़ लौटने की सूरत में वोह अपने माल की त़रफ़ रुजूअ़ कर सकें तो जाइज़ है और अगर उन्हों ने ज़ुल्म का क़स्द किया तो जाइज़ नहीं, और मालिकों को लौटाने के इरादे से उजरत लेना जाइज़ है मगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के लिये जाइज़ नहीं क्यूं कि वोह इन निय्यतों पर मुत्तलअ़ नहीं।

याद रहे कि बा'ज़ फ़ासिक़ ताजिर येह गुमान करते हैं : **"इन से जो टेक्स वुसूल किया जाता है अगर वोह ज़कात की निय्यत कर लेंगे तो उन की ज़कात अदा हो जाएगी।"** उन का येह गुमान सरासर ग़लत़ है और शाफ़ेई मज़्हब में इस की कोई सनद नहीं, क्यूं कि टेक्स लेने वालों को ह़ाकिम ने उन लोगों से ज़कात वुसूल करने पर मुक़र्रर नहीं किया जिन पर ज़कात वाजिब है बल्कि उस ने तो उन पर उन के माल में से दसवां ह़िस्सा वुसूल करने पर मुक़र्रर किया है ख़्वाह वोह कैसा ही क्यूं न हो कम हो या ज़ियादा, उस पर ज़कात वाजिब हो या न हो और उस का गुमान येह हो कि उस ने येह हुक्म इस लिये दिया है कि वोह येह माल ले कर मुसल्मानों की मस्लह़त के लिये अपने लश्कर पर ख़र्च करेगा तो फिर भी येह मुफ़ीद नहीं क्यूं कि अगर हम येह तस्लीम भी कर लें तो येह इस शर्त़ के साथ जाइज़ है कि बैतुल माल में कुछ न हो।

अगर ह़ाकिम अग़्निया के माल से टेक्स वुसूल करने पर मजबूर करे तब भी ज़कात साक़ित़ न होगी क्यूं कि उस ने येह माल ज़कात के नाम पर वुसूल नहीं किया, मुझे बा'ज़ ताजिरों ने बताया कि जब वोह टेक्स वुसूल करने वाले को टेक्स देते हैं तो ज़कात की निय्यत कर लेते हैं इस त़रह़ टेक्स लेने वाला ज़कात का मालिक हो जाता है और दूसरों को येह माल दे कर अपना माल ज़ाएअ़ कर लेता है, मगर उन का येह फ़े'ल कुछ नफ़्अ़ मन्द नहीं इस लिये कि टेक्स वुसूल करने वाला और इस के मुआ़विनीन ज़कात के मुस्तह़िक़ नहीं होते क्यूं कि इन में से हर शख़्स कमाने पर क़ुदरत रखता है, वोह हट्टे कट्टे होते हैं, अगर वोह अपनी इस क़ुव्वत को कस्बे ह़लाल में सर्फ़ करें तो इस बुरे और क़बीह़ काम से बे परवाह हो जाएं, पस जिस का ह़ाल ऐसा हो वोह ज़कात का मुस्तह़िक़ कैसे हो सकता है? लेकिन ताजिरों को माल की मह़ब्बत ने ह़क़ की पहचान से अन्धा कर दिया और इन्हें शैत़ान और उस के सब्ज़ बाग़ात ने मुफ़ीद दीनी बातें सुनने से बहरा कर दिया है कि इन से येह माल ज़ुल्म के त़ौर पर लिया जा रहा है, फिर ऐसी सूरत में वोह ज़कात कैसे निकाल सकते हैं? वोह येह नहीं जानते कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन पर ज़कात

www.dawateislami.net

वाजिब की है और वोह इस से इसी सूरत में बरिय्युज़्ज़िम्मा हो सकते हैं जब इसे जाइज़ और मुरव्वजा त़रीक़े से अदा करें और इन पर जो ज़ुल्म हुवा तो इन के लिये कैसे इस के इ़वज़ नेकियां लिखी जाएं और इन के द-रजात बुलन्द हों (जब कि इन्हों ने ज़कात इन के ह़क़दारों को अदा ही नहीं की)।

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने टेक्स लेने वालों को चोर और डाकू बल्कि इन से भी बदतर क़रार दिया है, लिहाज़ा अगर तुम से कोई डाकू माल छीन ले और तुम ज़कात की निय्यत कर लो तो क्या तुम्हें कोई नफ़्अ़ होगा ? तो जिस त़रह़ वोह निय्यत तुम्हें नफ़्अ़ न देगी इसी त़रह़ येह निय्यत भी मुफ़ीद नहीं और तुम्हें इस से कुछ ह़ासिल न होगा, लिहाज़ा इस से बचते रहो।

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने उन जाहिलों का ख़ूब तआ़क़ुब फ़रमाया है जो येह गुमान करते हैं : "टेक्स लेने वालों को ज़कात की निय्यत से माल देने से फ़ाएदा होता है।" और उन्हों ने कहा है : "इस बात का क़ाइल जाहिल है इस की त़रफ़ रुजूअ़ न किया जाए और न ही इस पर ए'तिमाद किया जाए।" लिहाज़ा इस पर ग़ौर करो और अ़मल करो अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो ग़नीमत पाओगे।

कबीरा नम्बर 132 :

ग़नी का सुवाल करना
या'नी ग़नी का लालच या माल में इज़ाफ़े की ख़ात़िर माल या स-दक़े का सुवाल करना

﴾1﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो फ़क़्र के बिग़ैर सुवाल करे गोया वोह अंगारा खा रहा है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث:۱۷۵۱٦، ج٦، ص۱٦۲)

﴾2﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स ह़ाजत के बिग़ैर लोगों से सुवाल करता है वोह मुंह में अंगारे डालने वाले की त़रह़ है।" (شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی الاستعفاف عن المسئلۃ، الحدیث:۳۵۱۷، ج۳، ص۲۷۱)

﴾3﴿...... ह़ज़रते ह़बश बिन जुनादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात के दौरान सुना कि एक आ'राबी ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की चादरे मुबारक का दामन थाम कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अ़त़ा फ़रमाया और वोह चला गया, पस उस वक़्त से सुवाल करना ह़राम हुवा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी ग़नी और तन्दुरुस्त व तुवाना के लिये सुवाल करना जाइज़ नहीं अलबत्ता ज़िल्लत आमेज़ फ़क़्र और मत मार देने वाले क़र्ज़े में मुब्तला शख़्स के लिये जाइज़ है और जो शख़्स अपने

www.dawateislami.net

माल में इज़ाफ़ा करने के लिये लोगों से सुवाल करेगा तो क़ियामत के दिन उस के चेहरे पर ख़राश होगी और दहक्ते हुए पथ्थर होंगे जिन्हें वोह जहन्नम में खाएगा अब जो चाहे इस में कमी करे और जो चाहे इज़ाफ़ा करे।''

(جامع الترمذی، ابواب الزکاۃ ، باب ماجاء من لا تحل له الصدقة ،الحدیث: ٦٥٣،ص ١٧١٠)

《4》...... हज़रते रज़ीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं किसी शख़्स को अ़तिय्या देता हूं तो वोह उसे अपनी बग़ल में दबा कर ले जाता है ह़ालां कि वोह आग होती है।'' हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब वोह आग होती है तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किसी को क्यूं अ़ता फ़रमाते हैं ?'' आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये बुख़्ल को ना पसन्द फ़रमाता है और लोग मेरे सिवा किसी से सुवाल करना ना पसन्द करते हैं।'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, ''वोह ग़ना कौन सी है जिस की मौजू-दगी में सुवाल नहीं करना चाहिये ?'' तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सुब्ह़ व शाम के खाने जितनी मिक़्दार।'' (الترغیب والترھیب،کتاب الصدقات،الترھیب من المسألة وتحریمھا......الخ،الحدیث:١٢٠٢،ج١،ص٣٨٦)

《5》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स ग़ना के बा वुजूद लोगों से सुवाल करेगा क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस का सुवाल उस के चेहरे पर ख़राश होगा।'' अ़र्ज़ की गई : ''ग़ना क्या है ?'' तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''पचास **(50)** दिरहम या इस की क़ीमत का सोना।''

(جامع الترمذی، ابواب الزکاۃ ، باب ماجاء من لا تحل له الصدقة ،الحدیث: ٦٥٠،ص ١٧١٠)

《6》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुझे इस बात की ज़मानत दे दे कि किसी से कुछ न मांगेगा, मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب کراھیة المسئلة ، الحدیث:١٦٤٣،ص١٣٤٦)

《7》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मेरी एक बात मान लेगा मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं, वोह बात येह है कि लोगों से कुछ न मांगेगा।'' (سنن ابی داؤد،کتاب الزکاۃ،باب کراھیة المسألة،الحدیث ١٦٤٣،ص١٣٤٦)

《8》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने एक ऊक़िया चांदी की क़ीमत मौजूद होने के बा वुजूद सुवाल किया उस ने सुवाल में बहुत इसरार किया।'' (کنزالعمال، کتاب الزکاۃ ، قسم الاقوال، الفصل الثانی فی ذم السوال ١٦٧١٢،ج٦،ص٢١٣)

www.dawateislami.net

《9》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने 40 दिरहम जितनी मालियत रखने के बा वुजूद सुवाल किया वोह सुवाल में इसरार करने वाला है।" (سنن النسائی، کتاب الزکاۃ، باب من الملحف ، الحدیث: ۲۵۹۵،ص۲۲۵٦)

《10》...... रहमते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो पाक दामनी चाहे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे पाक दामन रखेगा और जो ग़ना चाहे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे ग़नी कर देगा और जो 5 ऊक़िया चांदी की क़ीमत मौजूद होने के बा वुजूद सुवाल करे बेशक उस ने सुवाल में इसरार किया।" (المسندللامام احمد بن حنبل،الحدیث: ۱۷۲۳۷،ج٦،ص١٠٦)

《11》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो माल में इज़ाफ़े के लिये लोगों से सुवाल करता है वोह आग के अंगारे मांगता है, अब उस की मरज़ी है कि अंगारे कम जम्अ करे या ज़ियादा।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ ، باب کراھۃ المسئلۃ للناس، الحدیث: ۲۳۹۹،ص۸٤١)

《12》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो ग़ना के बा वुजूद लोगों से सुवाल करे वोह जहन्नम के दहक्ते पथ्थरों में इज़ाफ़ा करता है।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की "ग़ना से क्या मुराद है ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "रात का खाना।"

(کنزالعمال، کتاب الزکاۃ ، قسم الاقوال، الفصل الثانی فی ذم السوال ١٦٧٤٥،ج٦،ص٢١٦)

《13》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तुम में से कोई एक सुवाल करता रहेगा यहां तक कि जब वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से मुलाक़ात करेगा तो उस के चेहरे पर गोश्त का कोई टुकड़ा न होगा।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ ، باب کراھۃ المسالۃ للناس، الحدیث: ۲۳۹٦،ص۸٤١)

《14》...... अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सुवाल करना वोह ख़राश है जिसे आदमी खुजलाएगा।"

(جامع الترمذی، ابواب الزکاۃ ، باب ماجاء فی النھی عن المسألۃ ،الحدیث: ٦٨١،ص١٧١٣)

《15》...... एक और रिवायत में है : "आदमी इस की वजह से अपना मुंह खुजलाएगा अब जो चाहे इन ख़राशों को बाक़ी रखे और जो चाहे तर्क कर दे अलबत्ता वोह सुल्तान से सुवाल कर सकता है या ऐसी चीज़ का सुवाल कर सकता है जिस के बिग़ैर कोई चारा न हो।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب ماتجوزفیہ المسألۃ ، الحدیث:١٦٣٩،ص١٣٤٥)

《16》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है :

www.dawateislami.net

''बन्दा ग़नी होने के बा वुजूद सुवाल करता रहता है यहां तक कि अपना चेहरा बोसीदा कर लेता है फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास उस का कोई मर्तबा नहीं रहता।''

(كنزالعمال، كتاب الزكاة ، قسم الاقوال، الفصل الثانى فى ذم السؤال،الحديث ١٦٧٣٧ ،ج٦،ص٢١٥)

﴾**17**﴿...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स ख़ुद पर सुवाल का दरवाज़ा खोल दे जब कि वोह अभी फ़ाक़ों का शिकार न हुवा हो या उस के अहले ख़ाना ऐसे न हों जो इन फ़ाक़ों को बरदाश्त करने की ताक़त न रखते हों तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ऐसी जगह से फ़ाक़े का दरवाज़ा खोल देगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।''

(شعب الايمان، باب فى الزكاة ، فصل فى الاستعفاف عن المسألة ،الحديث: ٣٥٢٦،ج٣،ص٢٧٤)

﴾**18**﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''फ़राख़ दस्त का सुवाल क़ियामत के दिन तक उस के चेहरे पर ऐ़ब होगा।''

(المسندللامام احمد بن حنبل،الحديث:١٩٨٤٢ ،ج٧،ص١٩٣)

﴾**19**﴿...... बज़्ज़ार ने इस में येह इज़ाफ़ा किया है : ''ग़नी का सुवाल आग है अगर उसे कम माल दिया गया तो आग भी कम होगी और अगर ज़ियादा माल दिया गया तो आग भी ज़ियादा होगी।''

(البحرالزخاربمسندالبزار ،حديث عمران بن حصين،الحديث:٣٥٧٢،ج٩،ص٤٩)

﴾**20**﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने सुवाल किया ह़ालां कि वोह सुवाल करने से ग़नी था तो उस का सुवाल क़ियामत के दिन उस के चेहरे पर एक ऐ़ब होगा।'' (المسندللامام احمد بن حنبل،الحديث:٢٢٤٨٣،ج٨،ص٣٣١)

﴾**21**﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक शख़्स का जनाज़ा पढ़ाने तशरीफ़ लाए तो इर्शाद फ़रमाया : ''इस ने कितना तर्का छोड़ा है?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, ''**2** या **3** दीनार।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस ने **2** या **3** दाग़ छोड़े हैं।''

रावी कहते हैं, फिर मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ासिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से हुई और मैं ने उन्हें येह बात बताई तो उन्हों ने कहा : ''येह शख़्स माल में इज़ाफ़े की ख़ातिर लोगों से सुवाल किया करता था।'' (شعب الايمان، باب فى الزكاة ، فصل فى الاستعفاف عن المسألة ،الحديث: ٣٥١٥،ج٣،ص٢٧١)

तम्बीह :

मज़्कूरा अ़मल को कबीरा गुनाह शुमार करना बिल्कुल ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने सख़्त वईद पर मुश्तमिल इन अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर किसी को सराह़त करते नहीं देखा और ह़ुरमत को ग़ना के साथ मुक़य्यद करना हम बयान कर चुके हैं।

www.dawateislami.net

﴾22﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो सुवाल से ग़नी करने वाली शै की मौजू-दगी में सुवाल करता है वोह आग में इज़ाफ़ा करता है।'' एक रावी कहते हैं कि सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की, ''ग़ना से क्या मुराद है जिस की मौजू-दगी में सुवाल नहीं करना चाहिये ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इतनी मिक़्दार जिस से वोह सुब्ह और शाम का खाना खा सके।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب مایعطی من الصدقة ......الخ ، الحديث:١٦٢٩،ج٣،ص١٣٤٤)

﴾23﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो सुवाल से ग़नी करने वाली शै की मौजू-दगी में सुवाल करता है वोह जहन्नम के अंगारों में इज़ाफ़ा करता है।'' सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की, ''कौन सी शै सुवाल से ग़नी करती है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस से वोह सुब्ह का खाना खा सके या शाम का खाना खा सके या उस के पास रात बसर करने के लिये एक हज़ार (दिरहम) मौजूद हों।''

(صحيح ابن حبان ، کتاب الزکاۃ،باب المسألة والأخذوما يتعلق به ......الخ،الحديث: ٣٣٨٥،ج٥،ص١٦٧)

﴾24﴿...... एक और रिवायत में है, अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह ग़ना क्या है जिस की मौजू-दगी में सुवाल नहीं करना चाहिये ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस के पास एक दिन और एक रात या एक रात और एक दिन के शिकम सैर करने वाले खाने का सामान मौजूद हो।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب مایعطی من الصدقة......الخ ، الحديث:١٦٢٩،ج٣،ص١٣٤٤)

अ़ल्लामा ख़त्ताबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं : ''लोगों का इस ह़दीसे पाक की तावील में सख़्त इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ कहते हैं : ''जो एक दिन सुब्ह शाम का गुज़ारा करने की वुस्अ़त पाए ह़दीसे पाक के ज़ाहिरी मा'ना के ए'तिबार से उस के लिये सुवाल करना जाइज़ नहीं।'' और बा'ज़ कहते हैं : ''येह हुक्म उस शख़्स के लिये है जो रोज़ाना सुब्ह शाम के खाने की वुस्अ़त रखे लिहाज़ा जब उस के पास इतना माल मौजूद हो जो त़वील मुद्दत तक उस के गुज़ारे के लिये काफ़ी हो तो उसे सुवाल करना ह़राम है।'' जब कि दीगर ह़ज़रात का कहना है : ''येह हुक्म उन अह़ादीसे मुबा-रका के ज़रीए मन्सूख़ है जिन में ग़ना की मिक़्दार **50** दिरहम की मिल्किय्यत या इस की क़ीमत या एक ऊक़िया या इस की क़ीमत बयान की गई है।''

जब कि हमारे नज़्दीक नफ़्ली स-दक़े का सुवाल करने की सूरत में पहला क़ौल राजेह़ है और अगर वोह ज़कात का सुवाल करता है तो उस पर सुवाल उसी सूरत में ह़राम होगा जब कि उस के पास बक़िय्या उम्र के अक्सर हिस्से के गुज़ारे जितना माल मौजूद हो और नस्ख़ का दा'वा मम्नूअ़ है क्यूं कि इस के लिये तारीख़ का इल्म और नासिख़ का मन्सूख़ से मु-तअख़्ख़िर होने का इल्म होना ज़रूरी है और येह बात मा'लूम नहीं।

www.dawateislami.net

ग़ना की मिक्दार में बुज़ुर्गों के अक्वाल :

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कभी आदमी सिह्हत मन्द होने की सूरत में एक दिरहम से ग़नी हो जाता है और कभी कमज़ोरी और कस्रते इयाल की वजह से **1000** दिरहम भी उसे ग़नी नहीं कर सकते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़, सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और सय्यिदुना इस्ह़ाक़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की राय येह है : "जिस के पास **50** दिरहम या इन की मालियत का सोना हो उसे ज़कात में से कुछ न दिया जाएगा।"

ह़ज़रते ह़सन बसरी और सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाया करते थे : "जिस के पास **40** दिरहम हों वोह ग़नी है।" जब कि अह़्नाफ़ का कहना है : "जो निसाब से कम मालियत रखता हो अगर्चे तन्दुरुस्त हो और कमाने की सलाह़िय्यत रखता हो उसे ज़कात देना जाइज़ है।" और इस के साथ उन का येह क़ौल भी है : "जिस के पास एक दिन की ग़िज़ा मौजूद हो उस के लिये सुवाल करना जाइज़ नहीं।"

﴾**25**﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक अन्सारी ने सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हारे घर में कोई चीज़ नहीं ?" उस ने अ़र्ज़ की, "क्यूं नहीं ! एक कम्बल और एक बड़ा पियाला है जिस में पानी पिया जाता है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह दोनों चीज़ें मेरे पास ले आओ।" वोह अन्सारी दोनों चीज़ें ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक में पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : "येह दोनों चीज़ें कौन ख़रीदेगा ?" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की, "मैं एक दिरहम में ख़रीदता हूं।" शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **2** या **3** मरतबा इर्शाद फ़रमाया : "कौन एक दिरहम से ज़ियादा करता है।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की, "मैं **2** दिरहम में ख़रीदता हूं।" तो रसूले अन्वर, साह़िबे कौसर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह दोनों चीज़ें उसे अ़ता फ़रमा कर **2** दिरहम ले लिये और उस अन्सारी को अ़ता फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "एक दिरहम से अपने घर वालों को खाना खिलाओ और दूसरे दिरहम से एक कुल्हाड़ी ख़रीद कर मेरे पास ले आओ।"

वोह अन्सारी कुल्हाड़ी ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक हाथों से उस में लकड़ी का दस्ता लगाया और इर्शाद फ़रमाया : "जाओ, लकड़ियां काट कर बेचो और मैं **15** दिन तक तुम्हें न देखूं।" उस ने ऐसा ही किया फिर ह़ाज़िर हुवा तो **10** दिरहम कमा चुका था, उस ने कुछ रक़म से कपड़े और कुछ से खाना ख़रीदा तो नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह तुम्हारे लिये इस बात से बेहतर है कि क़ियामत के दिन तुम्हारे चेहरे पर सुवाल करने का दाग़ हो, क्यूं कि सुवाल करना **3** शख़्सों के इलावा किसी के लिये दुरुस्त नहीं :

www.dawateislami.net

(1) ज़िल्लत आमेज़ फ़क्र वाला (2) क़बाहत में ह़द से बढ़े हुए क़र्ज़ में घिरा हुवा शख़्स और (3) मजबूर कर देने वाले ख़ून में फंसा हुवा शख़्स।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب ماتجوزفیه المسئلة، الحدیث:١٦٤١، ص١٣٤٥)

(26)...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ख़ुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जिसे इस्लाम की हिदायत दी गई और उस का रिज़्क़ ह़ाजत के मुत़ाबिक़ हो और वोह उस पर क़नाअ़त करे।''

(المسند للاما م احمد بن حنبل، مسند فضالة بن عبيد الانصارى، الحديث: ٢٣٩٩٩، ج٩، ص٢٤٦)

﴾27﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू ज़र ! क्या तुम माल की कसरत ही को ग़ना समझते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की, ''जी हां, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम माल की क़िल्लत ही को फ़क्र समझते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की, ''जी हां, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''ग़ना तो दिल की ग़ना है और फ़क्र तो दिल का फ़क्र है।''**

(المستدرک، کتاب الزکاۃ، باب انما الغنی غنی القلب ......الخ، الحدیث: ٧٩٩٩، ج٥، ص٤٦٦)

﴾28﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मिस्कीन वोह नहीं जिसे एक या दो लुक़्मे और एक या दो खजूरें दर बदर कर दें बल्कि मिस्कीन तो वोह है जो न तो ऐसी ग़ना पाए जो उसे बे नियाज़ कर दे और न किसी को अपनी मजबूरी समझा सके कि वोह इस पर स-दक़ा करे और न ही खड़ा हो कर लोगों से सुवाल कर सके, ग़ना माल की कसरत से नहीं होती बल्कि ग़ना तो नफ़्स की ग़ना का नाम है।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب المسکین الذی ......الخ، الحدیث: ٢٣٩٣/٢٣٩٤، ص٨٤١، بدون "لیس الغنی عن کثرۃ العرض")

﴾29﴿...... एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई मुख़्तसर नसीह़त फ़रमाएं।'' तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया ''लोगों के माल से ख़ुद पर मायूसी लाज़िम कर लो और लालच से बचते रहो क्यूं कि येह फ़ौरन लाह़िक़ होने वाला फ़क्र है और ऐसे काम से बचते रहो जिस का उ़ज़्र पेश करना पड़े।'' (المستدرک، کتاب الرقاق، باب ایاك والطمع فانه......الخ، الحدیث: ٧٩٩٨، ج٥، ص٤٦٥)

﴾30﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क़नाअ़त ला ज़वाल ख़ज़ाना है।''

(الترغیب والترهیب، کتاب الصدقات، باب الترهیب من المسألة ......الخ، الحدیث: ١٢٣٩، ج١، ص٣٩٨)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 133 : सुवाल में इसरार करना

या'नी सुवाल में इतना इसरार करना जो मस्ऊल या'नी जिस से सुवाल किया जा रहा है उस को सख़्त तक्लीफ़ पहुंचाए

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सुवाल में इसरार करने वाले शख़्स को ना पसन्द करता है।" (كشف الخفاء ومزيل اللباس،حرف الهمزة مع النون،الحديث: ٧٤٣،ج١،ص٢١٨)

﴾2﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वोह अपने पड़ोसी को अपनी शरारतों से मह़फ़ूज़ न रखे। जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे और जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बुर्द-बार, पाक दामन और ग़नी से मह़ब्बत फ़रमाता है और बद अख़्लाक़, फ़ाजिर और इसरार करने वाले साइल को पसन्द नहीं करता।"

(مجمع الزوائد،كتاب الادب، باب فی الشيخ المجهول......الخ،الحديث: ١٣٠٢٧،ج٨،ص١٤٥)

﴾3﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कोई शख़्स मेरे पास ह़ाज़िर हो कर सुवाल करता है तो मैं उसे कुछ अ़त़ा फ़रमाता हूं वोह उसे ले कर चला जाता है ह़ालां कि वोह अपनी झोली में आग ही ले कर जाता है।"

(الترغيب والترهيب ، كتاب الصدقات، باب الترهيب من اخذمادفع......الخ،الحديث: ١٢٥١،ج١،ص٤٠١)

﴾4﴿...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सोना तक़्सीम फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे भी अ़त़ा फ़रमाएं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे भी अ़त़ा फ़रमा दिया, उस ने फिर अ़र्ज़ की, "अ़त़ा में इज़ाफ़ा फ़रमाएं।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे 3 मरतबा मज़ीद अ़त़ा फ़रमाया, फिर वोह शख़्स वापस चला गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई शख़्स मेरे पास ह़ाज़िर हो कर सुवाल करता है तो मैं उसे अ़त़ा फ़रमाता हूं, वोह फिर मुझ से सुवाल करता है तो मैं उसे 3 मरतबा मज़ीद अ़त़ा फ़रमाता हूं फिर वोह पलट कर चला जाता है तो जब वोह अपने अहले ख़ाना की त़रफ़ लौटता है तो अपनी झोली में आग भर कर लौटता है।" (صحيح ابن حبان،كتاب الزكاة،باب الوعيدلمانع الزكاة،الحديث:٣٢٥٤،ج٥،ص١١٠)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़लीशान में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने फ़ुलां को शुक्र अदा करते देखा वोह कह रहा था कि

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे **2** दीनार अ़ता फ़रमाए हैं।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मगर मैं ने फ़ुलां को **10** से **100** के दरमियान अ़ता फ़रमाए उस ने न शुक्र अदा किया न ही येह बात किसी से कही, तुम में से कोई शख़्स मेरे पास अपनी ह़ाजत बग़ल में दबा कर निकलता है ह़ालां कि वोह आग होती है।'' मैं ने अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें क्यूं अ़ता फ़रमाते हैं ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह मुझ ही से मांगते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ में बुख़्ल को ना पसन्द फ़रमाता है।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، باب المسألۃ والاخذ وما یتعلق بہ......الخ،الحدیث: ۳۴۰۵،ج۵،ص۱۷۴،بتغیرٍ قلیلٍ)

《**6**》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''गिड़गिड़ा कर सुवाल न किया करो क्यूं कि जो शख़्स इस त़रह़ हम से कोई चीज़ लेने में काम्याब हो जाता है उस के लिये उस चीज़ में कोई ब-र-कत नहीं होती।''

(مسند ابی یعلیٰ الموصلی، مسند عبداللہ بن عمر، الحدیث: ۵۶۰۲،ج۵،ص۱۱۲)

《**7**》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''गिड़गिड़ा कर सुवाल न किया करो, ख़ुदा की क़सम ! तुम में से कोई शख़्स मुझ से कुछ मांगता है और लेने में काम्याब हो जाता है ह़ालां कि मैं उसे ना पसन्द कर रहा होता हूं तो उस में कैसे ब-र-कत होगी।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ ،باب النھی عن المسألۃ ، الحدیث: ۲۳۹۰،ص۸۴۱)

तम्बीह :

मैं ने मज़्कूरा क़ैद के साथ सुवाल में इसरार को कबीरा गुनाह ज़िक्र किया है येह बात बिल्कुल ज़ाहिर है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का कलाम इस का इन्कार नहीं करता अगर्चे उन्हों ने इस के कबीरा गुनाह होने की तसरीह़ भी नहीं की और पहली दो अह़ादीसे मुबा-रका का मज़्मून भी हमारे मौक़िफ़ की ताईद करता है क्यूं कि इस पर मुरत्तब होने वाली ना पसन्दीदगी अगर्चे वोह ग़ैर के साथ ही हो कबीरा गुनाह की अ़लामत या'नी ला'नत के क़रीब है, नीज़ तीसरी और चौथी ह़दीसे पाक में ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वुसूल शुदा चीज़ को आग क़रार देना भी एक सख़्त वईद है।

अलबत्ता अगर साइल मजबूर हो और मस्ऊल (या'नी जिस से सुवाल किया जाए वोह) ज़ुल्म की बिना पर वोह चीज़ रोक रहा हो तो ऐसी सूरत में ज़ाहिर है कि उस का इसरार ह़राम नहीं, नीज़ येह बात भी ज़ाहिर है कि इसरार का कबीरा गुनाह होना **3** मरतबा तक्रार से मुक़य्यद नहीं बल्कि इसे उ़र्फ़न ईज़ा से मुक़य्यद करना चाहिये क्यूं कि ऐसी ह़ालत मस्ऊल को ग़ज़ब की इन्तिहा पर उभारती है और ए'तिदाल की राह से निकाल कर बद तरीन गाली गलोच में डाल देती है और येह एक सख़्त अज़िय्यत और बुरी आ़दत है इस क़िस्म का इसरार मु-तअ़द्दद गुनाहों का सबब बनता है लिहाज़ा वाज़ेह़ हुवा कि हमारे ज़िक्र कर्दा बयान के मुत़ाबिक़ इस सूरत में कबीरा गुनाह है।

www.dawateislami.net

बिगैर तलब व ख़्वाहिश के मिलने वाला माल लेने में ह़रज नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अ़ता फ़रमाया करते, तो मैं अ़र्ज़ करता : "येह चीज़ उस शख़्स को अ़ता फ़रमाइये जो मुझ से ज़ियादा इस का मोह़ताज हो।" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ले लो ! जब इस माल में से कोई चीज़ तुम्हारे पास आए और तुम्हें न इस की ख़्वाहिश हो न ही तुम इस का सुवाल करो तो उसे ले लो और जम्अ़ कर लो फिर अगर चाहो तो उसे खा लो और चाहो तो स-दक़ा कर दो और जो माल इस त़रह़ ह़ासिल न हो उस के पीछे न पड़ो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "इसी वजह से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا न किसी से कोई चीज़ मांगते और न ही जो चीज़ उन्हें दी जाती उसे वापस लौटाते।"

(صحیح البخاری،کتاب الزکاۃ ، باب من اعطاہ اللہ شیئا......الخ،الحدیث:۱۴۷۳،۷۱۶۳،۷۱۶۴،ص۱۱۶،ص۵۹۷)

《8》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को कोई चीज़ भेजी तो उन्हों ने उसे लौटा दिया। तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने वोह चीज़ क्यूं लौटा दी ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "क्या आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें नहीं बताया कि आदमी की भलाई इसी में है कि वोह किसी से कोई चीज़ न ले ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह हुक्म तो सुवाल करने की सूरत में है और जो चीज़ सुवाल के बिगैर ह़ासिल हो वोह तो रिज़्क़ है जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उसे अ़ता फ़रमाया है।" तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं किसी से कोई शै न मांगूंगा और जो चीज़ सुवाल किये बिगैर मेरे पास आएगी उसे ले लिया करूंगा।"

(کنزالعمال، کتاب الزکاۃ،قسم الافعال،باب ادب الاخذ،الحدیث: ۱۷۱۴۷،ج۶،ص۲۶۹)

《9》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिसे सुवाल और ख़्वाहिश के बिगैर अपने भाई से कोई भलाई पहुंचे उसे चाहिये कि वोह शै क़बूल कर ले और न लौटाए क्यूं कि येह उस का रिज़्क़ है जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उस की त़रफ़ भेजा है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،الحدیث:۱۷۹۵۸،ج۶،ص۲۷۶)

《10》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ कोई माल बिन मांगे अ़ता फ़रमाए तो उसे चाहिये कि वोह उसे क़बूल कर ले क्यूं कि येह उसी का रिज़्क़ है जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उस के पास भेजा है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ ،الحدیث: ۷۹۲۶،ج۳،ص۱۴۵)

www.dawateislami.net

《11》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिसे इस रिज़्क़ से कोई शै सुवाल और ख़्वाहिश किये बिग़ैर हासिल हो उसे चाहिये कि उस के ज़रीए अपने रिज़्क़ को वसीअ़ करे फिर अगर वोह ग़नी हो तो वोह चीज़ ऐसे शख़्स को दे दे जो उस से ज़ियादा इस चीज़ का हाजत मन्द हो।" (المعجم الكبير، الحديث: ٣٠، ج١٨، ص١٩)

《12》...... हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने वालिदे गिरामी सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से ख़्वाहिश और आरज़ू के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया "इस से मुराद येह है कि तुम अपने दिल में कहो कि अ़न्क़रीब फ़ुलां शख़्स मुझे येह चीज़ भेजेगा या फ़ुलां चीज़ मुझे मिलेगी।"

(المسند للامام احمدبن حنبل،حديث رافع بن عمرو المزني،تحت الحديث:٢٠٦٧٤،ج٧،ص٣٦٢)

《13》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "वुस्अ़त में अ़ता करने वाला मोहताजी में क़बूल करने वाले से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।" (المعجم الاوسط، الحديث:٨٢٣٥، ج٦، ص١٢٧)

اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ

कबीरा नम्बर 134 : बिला उ़ज़्र किसी की हाजत बर आरी न करना

या'नी इन्सान का अपने क़रीबी अ़ज़ीज़ या ग़ुलाम से किसी उ़ज़्र के बिग़ैर क़ुदरत के बा वुजूद ऐसी चीज़ रोक लेना जिसे वोह सख़्त मजबूरी की बिना पर मांग रहा हो

《1》...... हज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स अपने किसी क़रीबी रिश्तेदार के पास आ कर उस की हाजत से ज़ाइद वोह शै मांगे जो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़ता फ़रमाई है लेकिन वोह उस पर बुख़्ल करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जहन्नम से एक अज़्दहा निकालेगा जिस का नाम **शुजाअ़** होगा वोह मुंह से ज़बान निकाले होगा फिर वोह उस शख़्स के गले का तौक़ बन जाएगा।"

(المعجم الاوسط، الحديث: ٥٥٩٣، ج٤، ص١٦٧)

《2》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस शख़्स को अ़ज़ाब न देगा जिस ने यतीम पर रह़्म किया, उस से गुफ़्त-गू में नर्मी की और उस की यतीमी और कमज़ोरी पर तर्स खाया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ता कर्दा माल से अपने पड़ोसी पर फ़ख़्र न किया, ऐ उम्मते मुहम्मद ! उस ज़ाते पाक की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स का स-दक़ा क़बूल नहीं फ़रमाता जिस के रिश्तेदार

www.dawateislami.net

उस के हुस्ने सुलूक के मोहताज हों और वोह स-दक़े को दूसरे लोगों की तरफ़ फैर दे। उस ज़ाते पाक की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मब्ऊस फ़रमाया है! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रहमत न फ़रमाएगा।''

(المعجم الاوسط، الحديث: ٨٨٢٨، ج٦،ص٢٩٦)

《3》...... हज़रते सय्यिदुना बहज़ बिन हकीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيْم अपने दादा से रिवायत करते हैं : मैं ने अर्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं किस के साथ भलाई करूं ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपनी मां के साथ, फिर अपनी मां, फिर अपने बाप, फिर अपने क़रीबी रिश्तेदारों और फिर दीगर रिश्तेदारों के साथ।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی برّالوالدين، الحديث: ٥١٣٩،ص١٥٩٩)

《4》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कोई आदमी अपने आक़ा से उस के पास मौजूद ज़रूरत से ज़ाइद चीज़ मांगे और वोह उस से वोह चीज़ रोक ले तो ज़रूरत से ज़ाइद वोह चीज़ क़ियामत के दिन **''अश्शुजाउ़ल अक़्रअ़''** नामी अज़्दहे की सूरत में उसे बुलाएगी।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی برّالوالدين، الحديث: ٥١٣٩،ص١٥٩٩)

इमाम अबू दावूद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : **''अक़्रअ़** वोह सांप है जिस के सर के बाल ज़ह्र की वजह से झड़ जाएं।''

《5》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स के पास उस का चचाज़ाद भाई आ कर उस के ज़ाइद माल में से सुवाल करे तो वोह इन्कार कर दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस से अपना फ़ज़्ल रोक लेगा।''

(المعجم الاوسط، الحديث: ١١٩٥، ج١،ص٣٣٠)

तम्बीह :

उ़न्वान में मज़्कूर गुनाह को चन्द शराइत़ के साथ कबीरा गुनाह क़रार देना बिल्कुल वाज़ेह़ है और इस सख़्त वई़द को येह अहादीसे मुबा-रका भी शामिल हैं लेकिन किसी को इन के ज़ाहिरी मा'ना के इत्लाक़ का क़ौल करते हुए नहीं देखा गया क्यूं कि इस में इतना हरज और मशक़्क़त है जिस की ताक़त नहीं रखी जा सकती, बल्कि बसा अवक़ात **अज्नबी की नेकूकारी की वजह से उस पर स-दक़ा करना क़रीबी रिश्तेदार पर उस के फ़िस्क़ की वजह से स-दक़ा करने से अफ़्ज़ल होता है,** इस में इस बात का सुबूत होता है कि वोह उसे इताअ़त में ख़र्च करेगा जब कि फ़ासिक़ रिश्तेदार उसे ना फ़रमानी में ख़र्च करेगा।

सुवाल : अगर सिर्फ़ मजबूर से रोकना फ़र्ज़ कर लिया जाए तो इस सूरत में गुलाम, क़रीबी रिश्तेदारों और दीगर लोगों से रोकने के कबीरा गुनाह होने में कोई फ़र्क़ न होगा जैसा कि ज़ाहिर है ?

www.dawateislami.net

जवाब : बात अगर्चे येही है मगर इस में फ़र्क़ की वजह गुज़श्ता सफ़हात में बयान शुदा इस बात से मा'लूम हो चुकी है कि बा'ज़ कबीरा गुनाह दीगर बा'ज़ से ज़ियादा क़बीह होते हैं, लिहाज़ा सिर्फ़ मजबूर से रोकने में अगर्चे इस का कबीरा गुनाह होना ज़ाहिर है मगर गुलाम और ऐसे क़रीबी रिश्तेदारों, जिन का न-फ़क़ा उस पर लाज़िम है, से रोकना मुत्लक़ रिश्तेदारों से रोकने से ज़ियादा सख़्त और क़बीह है और इस की चन्द वुजूहात हैं :

(1)...... उस पर न-फ़क़ा वाजिब होना (2)...... तअ़ल्लुक़ की ज़ियादती (3)...... आपस की मुवालात और क़राबत तोड़ना (4)...... उन्हें हलाकत में डालने की कोशिश वग़ैरा जब कि अज्नबी में सिर्फ़ येही एक आख़िरी वजह पाई जाती है पस उन को इस के साथ मुख़्तस करना जाइज़ है येह ख़ास तौर पर ज़िक्र करने की हिक्मत है जो कि बड़ी वाज़ेह और ज़ाहिर है और (5)...... इसी त़रह़ एक वजह येह भी है कि इस में वालिदैन के हुक़ूक़ की रिआ़यत की ताकीद और फिर बक़िय्या रिश्तेदारों के हुक़ूक़ की रिआ़यत और इस बात पर तम्बीह है कि वालिदैन से रिश्ता तोड़ना दीगर अक़्रिबा से तअ़ल्लुक़ तोड़ने की त़रह़ नहीं।

《6》...... इसी वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रिश्तेदारी को अ़र्श के पाए से मुअ़ल्लक़ कर दिया है वोह कहती है : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो मुझे जोड़े तू उसे जोड़ और जो मुझे तोड़े तू उसे तोड़ दे।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम ! जो तुझे जोड़ेगा मैं उसे ज़रूर जोडूंगा और जो तुझे तोड़ेगा मैं उसे ज़रूर तोड़ दूंगा।"

कबीरा नम्बर 135 : स-दक़ा दे कर एह़सान जताना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًىۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ مَغْفِرَةٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ یَّتْبَعُهَاۤ اَذًىؕ وَ اللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (इन्आ़म) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म अच्छी बात कहना और दर गुज़र करना उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द सताना हो और अल्लाह बे परवाह ह़िल्म वाला है ऐ ईमान वालो

www.dawateislami.net

صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ (پ٣،البقرة:٢٦٢تا٢٦٤)

अपने स-दक़े बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईज़ा दे कर उस की तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है ।

《1》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अच्छाई जतलाने से बचते रहो क्यूं कि येह शुक्र को बातिल कर देता है और अज्र को मिटा देता है ।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरए ब-क़रह की येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

"يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ" (تفسيرقرطبی،سورة البقرة، تحت الآية:٢٦٤،ج٢،ص٢٣٦)

पहली आयते मुबा-रका में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने येह बात बयान फ़रमाई : "जो शख़्स किसी नेक काम में कुछ ख़र्च करता है वोह अपनी जान और अहलो इयाल पर ख़र्च करने वाले की तरह है।" और दूसरी आयते करीमा में येह बयान फ़रमाया : "जो शख़्स किसी क़िस्म का कोई स-दक़ा करे तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने स-दक़ा करने वालों के लिये जो अज़ीम सवाब तय्यार कर रखा है उस को पाने के लिये येह शर्त है कि वोह अपने स-दक़े को मज़्कूरा आयाते करीमा के मुताबिक़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और मुअमिनीन पर एहसान जतलाने से सलामत रखे ।"

सय्यिदुना क़िफ़ाल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इसी बात की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : "एहसान न जताना कभी शर्त होता है और येह बात ख़ुद पर ख़र्च करने वाले में भी मो'तबर है जैसे कोई शख़्स अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में जिहाद के दौरान ख़ुद पर ख़र्च करे और इस की वजह से नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और मुअमिनीन पर एहसान न जताए और न ही इस क़िस्म की बातों से किसी मोमिन को ईज़ा दे कि अगर मैं हाज़िर न होता तो येह काम पूरा न होता या किसी से येह न कहे कि तुम तो कमज़ोर हो जिहाद में तुम्हारी वजह से कोई फ़ाएदा न हुवा ।"

एहसान जताने से मुराद येह है : "लेने वाले को अपने एहसान गिनवाना या ऐसे शख़्स के सामने उस एहसान का तज़्किरा करना जिस का आगाह होना स-दक़ा लेने वाले को ना पसन्द हो ।" एक क़ौल येह है : "इन्सान एहसान की वजह से ख़ुद को उस शख़्स से अफ़्ज़ल समझे जिस पर स-दक़ा किया जा रहा है।" इस लिये उसे चाहिये कि न तो उसे दुआ के लिये कहे और न ही इस की तमअ रखे, क्यूं कि येह बा'ज़ अवक़ात उस के एहसान का इवज़ हो जाती है इस तरह उस का अज्र साक़ित हो जाता है ।

مَنّ या'नी एहसान जताने की अस्ल क़त्अ करना (या'नी जड़ काटना) है, इसी लिये इस का इत्लाक़ ने'मत पर होता है क्यूं कि देने वाला अपने माल में उस के लिये हिस्सा काटता है जिस को माल दिया जा रहा है और "المنّة" ने'मत या बड़ी ने'मत को कहते हैं, इसी लिये अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने

www.dawateislami.net

इसे "**मन्नान**" या'नी "**मुन्इम**" के लफ़्ज़ से मुत्तसिफ़ फ़रमाया है और मुन्दरिजए ज़ैल आयते मुबा-रका,

وَاِنَّ لَکَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ0 (پ۲۹،القلم:۳) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है।

भी इसी से है। "مَمْنُوْن" का मा'ना है न ख़त्म होने वाला और मौत को "**मनून**" इस लिये कहते हैं कि येह ज़िन्दगी को काट देती है जब कि اَذٰی से मुराद किसी को झिड़कना, आ़र दिलाना या गाली देना है, येह भी एह़सान जताने की त़रह़ अज्रो सवाब को साक़ित़ कर देता है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन आयात में बयान फ़रमाया है।

एह़सान जताना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आ'ला सिफ़ात जब कि हमारी मज़्मूम सिफ़ात में से है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान जताना मेहरबानी है और मख़्लूक़ को उस का वाजिब कर्दा शुक्र अदा करने की याद दिहानी है जब कि हमारा एह़सान जताना आ़र दिलाना होता है क्यूं कि स-दक़ा लेने वाला मिसाल के त़ौर पर ग़ैर का मोह़ताज होने की वजह से शिकस्ता दिल होता है और उस के हाथ के ऊपर होने का ए'तिराफ़ करता है, लिहाज़ा जब देने वाला अपनी ने'मत का इज़्हार करे या बर-तरी जताए या उस एह़सान के इवज़ कोई ख़िदमत या शुक्र का मुत़ा-लबा करे तो येह चीज़ लेने वाले के नुक़्सान, शिकस्ता दिली, आ़र मह़सूस करने और दिल के टूटने में इज़ाफ़ा करती है जो कि अ़ज़ीम क़बाह़तें हैं क्यूं कि इस में एह़सान जताने वाले के लिये मिल्किय्यत, फ़ज़्ल और उस मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ से ग़फ़्लत पाई जाती है जो कि अ़त़ा फ़रमा कर ख़ुश होता है और इस अ़त़ा व बख़्शिश पर सब से बढ़ कर क़ादिर है।

लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह को पेशे नज़र रखना और उस का शुक्र अदा करते रहना वाजिब है नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो जूद में उस से झगड़ने की त़रफ़ ले जाने वाली चीज़ों से बचना भी वाजिब है क्यूं कि एह़सान वोही जताता है जो इस बात से ग़ाफ़िल होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही अ़त़ा करने वाला और फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है।

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे गिरामी फ़रमाया करते थे : "जब तुम किसी शख़्स को कोई चीज़ दो और देखो कि तुम्हारा सलाम करना उस पर गिरां गुज़रता है म-सलन वोह तुम्हारे एह़सान की वजह से तुम्हारे लिये खड़ा होने का तकल्लुफ़ करता है तो उसे सलाम करने से रुक जाओ।"

सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن ने एक शख़्स को सुना कि वोह दूसरे से कह रहा था : "मैं ने तेरे साथ भलाई की और येह किया, वोह किया।" तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस शख़्स से फ़रमाया : "ख़ामोश हो जाओ, जब नेकी को शुमार किया जाए तो उस में कोई भलाई नहीं रहती।" (تفسیرقرطبی،سورۃ البقرۃ تحت الآیۃ:۲۶۴،ج۲،ص۲۳۶)

www.dawateislami.net

﴾2﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन तीन शख़्सों से न कलाम फ़रमाएगा, न उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।" रावी कहते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात **3** मरतबा इर्शाद फ़रमाई तो मैं ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़लीलो रुस्वा होने वाले वोह लोग कौन हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) कपड़ा लटकाने वाला (2) एह़सान जताने वाला और (3) झूटी क़सम उठा कर माल बेचने वाला।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار......الخ،الحدیث:۲۹۳،ص۶۹۶)

﴾3﴿...... एक और रिवायत में है : "वोह एह़सान जताने वाला जो एह़सान जताए बिग़ैर कुछ नहीं देता।" (المرجع السابق،الحدیث:۲۹۴،ص۶۹۶)

﴾4﴿...... जब कि दूसरी रिवायत में है "अपना तहबन्द लटकाने वाला।" (المرجع السابق،الحدیث:۲۹۴،ص۶۹۶)

﴾5﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन **4** अफ़राद पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा : (1) अपने वालिदैन का ना फ़रमान (2) मर्दों से मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली मर्दानी औ़रत (3) शराब का आ़दी और (4) तक़्दीर का मुन्किर।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۹۳۸،ج۸،ص۲۴۰)

﴾6﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "एह़सान जताने वाला, वालिदैन का ना फ़रमान और शराब का आ़दी जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।" (سنن النسائی ، کتاب الاشربۃ، باب الروایۃ فی المدمنین فی الخمر،الحدیث: ۵۶۷۵،ص۲۴۴۹)

﴾7﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन **3** अफ़राद पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा : (1) एह़सान जतलाने वाला (2) अपना तहबन्द लटकाने वाला और (3) शराब का आ़दी।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۴۴۲،ج۱۲،ص۲۹۸)

﴾8﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन **3** अफ़राद पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा : (1) अपने वालिदैन का ना फ़रमान (2) मर्दों से मुशा-बहत इख़्तियार करने वाली मर्दानी औ़रत और (3) दय्यूस। और तीन अफ़राद जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) वालिदैन का ना फ़रमान (2) शराब का आ़दी और (3) दे कर एह़सान जताने वाला।" (سنن النسائی،کتاب الزکاۃ،باب المنان بمااعطیٰ،الحدیث:۲۵۶۳،ص۲۲۵۳)

﴾9﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन **3** अफ़राद से न कलाम फ़रमाएगा, न उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा : (1) तहबन्द लटकाने वाला (2) एह़सान जताने वाला वोह शख़्स जो एह़सान जताए बिग़ैर कुछ नहीं देता और (3) झूटी क़सम उठा कर अपना सौदा बेचने वाला।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال الازار......الخ،الحدیث:۲۹۴_۲۹۳،ص۶۹۶)

www.dawateislami.net

《10》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन 3 अफ़राद की न फ़र्ज़ इबादत क़बूल फ़रमाएगा और न ही नफ़्ल : (1) वालिदैन का ना फ़रमान, (2) एहसान जताने वाला और (3) तक़्दीर का मुन्किर।"

(المعجم الكبير، الحديث: ٧٥٤٧، ج٨، ص١١٩)

《11》...... एक और रिवायत में है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "3 अफ़राद को जहन्नम से न बचाया जाएगा : (1) एहसान जताने वाला (2) वालिदैन का ना फ़रमान और (3) शराब का आदी।"

(كنزالعمال، كتاب المواعظ والرقائق، الحديث: ٤٣٧٩٨، ج١٦، ص١٤)

《12》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मक्कार, फ़रेबी, बख़ील और एहसान जताने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی بكر الصديق، الحديث: ٣٢، ج١، ص٢٧)

《13》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "5 अफ़राद जन्नत में दाख़िल न होंगे : (1) शराब का आदी (2) जादू करने वाला (3) क़त्ए रेहमी करने वाला (4) काहिन और (5) एहसान जतलाने वाला।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعيد الخدری، الحديث: ١١١٠٧، ج٤، ص٣٠)

तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाह को कबाइर में शुमार करने की एक जमाअत ने तसरीह की है और येह इन अहादीसे पाक में वारिद सख़्त वईद की बिना पर बिल्कुल ज़ाहिर है।

अश्आर

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के चन्द अश्आर :

لَاتَحْمِلَنَّ مِنَ الْاَنَامِ ... عَلَيْكَ اِحْسَانًا وَّ مَنًّا
وَاخْتَرْ لِنَفْسِكَ حَظَّهَا ... وَاصْبِرْ فَاِنَّ الصَّبْرَ جُنَّة
مِنَنُ الرِّجَالِ عَلَى الْقُلُوْبِ ... اَشَدُّ مِنْ وَّقْعِ الْاَسِنَّة

तरजमा : (1) लोगों में से किसी का अपने ऊपर एहसान मत उठा।
(2) और अपने नफ़्स का हिस्सा इख़्तियार कर और सब्र कर क्यूं कि सब्र ढाल है।
(3) लोगों के एहसानात दिलों पर नेज़े लगने से ज़ियादा सख़्त हैं।

www.dawateislami.net

एक दूसरा शाइर कहता है :

وَصَاحِبٌ سَلَفَتْ مِنْهُ اِلَیَّ یَدٌ ... اَبْطَا عَلَیْهِ مُکَافَاتِی فَعَادَانِی

لَمَّا تَیَقَّنَ اَنَّ الدَّهْرَ حَاوَلَنِی ... اَبْدَی النَّدَامَةَ مِمَّا کَانَ اَوْلَانِی

اَفْسَدْتَ بِالْمَنِّ مَا قَدَّمْتَ مِنْ حُسْنٍ ... لَیْسَ الْکَرِیْمُ اِذَآ اَعْطٰی بِمَنَّانِ

तरजमा : (1) वोह ऐसा शख़्स है कि जिस का एह़सान मुझ तक पहुंचने में सब्क़त ले गया लेकिन मेरी त़रफ़ से बदला उसे देर से पहुंचा तो उस ने वोह मुझे वापस कर दिया।
(2) लेकिन जब उसे येह यक़ीन हो गया कि ज़माने ने मेरा इरादा कर लिया है तो उसे उस एह़सान से शरमिन्दगी होने लगी जो उस ने मुझ पर किया था।
(3) जताने से तुम ने पिछली नेकी बरबाद कर दी, क्यूं कि सख़ी जब कुछ देता है तो जताता नहीं।

कबीरा नम्बर 136 : ह़ाजत मन्द को ज़ाइद अज़ ज़रूरत पानी से रोकना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन न कलाम फ़रमाएगा न उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है (इन में एक वोह शख़्स है जो) बियाबान में ज़रूरत से ज़ाइद पानी पर क़ाबिज़ हो और मुसाफ़िर को उस से रोक दे।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم ......الخ،الحدیث:۲۹۷،ص۶۹۶)

﴾2﴿...... एक और रिवायत में है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इर्शाद फ़रमाएगा : आज मैं तुझ से अपना फ़ज़्ल इस त़रह़ रोक लूंगा जिस त़रह़ तूने उस चीज़ को रोका जो तेरे हाथ की कमाई नहीं।"

(صحیح البخاری، کتاب المساقاة ، باب من رای ان صاحب الحوض ......الخ، الحدیث: ۲۳۶۹،ص۱۸۵)

﴾3﴿...... एक सह़ाबी ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! कौन सी चीज़ जिस से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पानी।" उस ने फिर अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस चीज़ से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नमक।" उस ने फिर अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस चीज़ से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारा भलाई के काम करना तुम्हारे लिये बेहतर है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الاجارة ، باب فی منع الماء ، الحدیث: ۳۴۷۶،ص۱۴۸۲)

www.dawateislami.net

﴾4﴿...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''लोग तीन चीज़ों घास, पानी और आग में एक दूसरे के शरीक (या'नी हि़स्सादार) हैं।''

(المرجع السابق، الحدیث:٣٤٧٧،ص١٤٨٢،"الناس" بدله" مسلمون")

﴾5﴿...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी चीज़ है जिस से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं?'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''पानी, नमक और आग।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि फिर मैं ने अ़र्ज़ की ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस पानी से न रोकने की हि़क्मत तो हम समझ गए नमक और आग में क्या हि़क्मत है?'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ हु़मैरा (बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़ता फ़रमाया गया लक़ब) ! जिस ने किसी को आग दी गोया उस ने उस आग में पकने वाला तमाम खाना स-दक़ा किया और जिस ने किसी को नमक दिया गोया उस ने उस नमक से (ज़ाएक़ा दार) बनने वाला तमाम खाना स-दक़ा किया और जिस ने किसी मुसल्मान को ऐसी जगह पानी का घूंट पिलाया जहां पानी मौजूद था तो गोया उस ने एक ग़ुलाम आज़ाद किया और जिस ने किसी मुसल्मान को ऐसी जगह पानी पिलाया जहां पानी मौजूद न था तो गोया उस ने उसे ज़िन्दा कर दिया।''

(سنن ابن ماجه، ابواب الرهون، باب المسلمون شركاء فى ثلاث، الحديث:٢٤٧٤،ص٢٦٢٥)

﴾6﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मुसल्मान तीन चीज़ों पानी, घास और आग में शरीक हैं और इन की क़ीमत (या'नी इन्हें बेच कर ली गई रक़म) ह़राम है।'' (سنن ابن ماجه، ابواب الرهون، باب المسلمون شركاء فى ثلاث، الحديث:٢٤٧٢،ص٢٦٢٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद जारी पानी है।''

तम्बीह :

शैख़ैन की तस्रीह़ की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल सरीह़ है, पहली ह़दीसे पाक में तो सख़्त वईद आई है और एक जमाअ़त ने इस की तस्रीह़ की है, जिन में सय्यिदुना जलालुद्दीन बुल्क़ीनी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी शामिल हैं, उन्हों ने भी इस शर्त़ को मो'तबर क़रार दिया है जो हम ने उ़न्वान के तह़त ज़िक्र की है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 137 : मख़्लूक़ की ना शुक्री करना

या'नी मख़्लूक़ की ऐसी ना शुक्री करना जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना शुक्री लाज़िम आए

《1》...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर पनाह मांगे उसे पनाह दो, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर तुम से सुवाल करे उसे दिया करो, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर तुम से फ़रियाद रसी चाहे उस की मदद करो, जो तुम से भलाई के साथ पेश आए तो उसे अच्छा बदला दो और अगर तुम इस की इस्तिताअ़त न रखो तो उस के लिये इतनी दुआ़ करो कि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि उस का बदला चुका दिया है।''

(سنن النسائی، کتاب الزکاۃ ، باب من سال باللہ عزوجل ، الحدیث: ۲۵۶۸،ص ۲۲۵۴)

《2》...... एक और रिवायत में है : ''फिर अगर तुम उस का बदला देने से आ़जिज़ रहो तो उस के लिये इतनी दुआ़एं मांगो कि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि उस का शुक्रिया अदा कर चुके हो क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शाकिर (या'नी शुक्र क़बूल करने वाला) है और शुक्र करने वालों को पसन्द फ़रमाता है।''

(المعجم الاوسط،الحدیث: ۲۹،ج۱،ص۱۸)

《3》...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिसे कुछ अ़त़ा किया गया अगर वोह वुस्अ़त पाए तो उस का बदला ज़रूर दे और अगर वुस्अ़त न पाए तो उस की ता'रीफ़ ही कर दे क्यूं कि जिस ने ता'रीफ़ की उस ने शुक्र अदा किया और जिस ने छुपाया उस ने ना शुक्री की।'' (جامع الترمذی، ابواب البروالصلۃ ، باب ماجاء فی المتشبع......الخ، الحدیث: ۲۰۳۴،ص۱۸۵۵)

《4》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस के साथ भलाई की गई और उस ने ता'रीफ़ के इ़लावा कोई जज़ा न पाई तब भी गोया उस ने शुक्र अदा किया और जिस ने उसे छुपाया उस ने ना शुक्री की और जो किसी बात़िल शै से मुज़य्यन हो वोह झूट का लबादा पहनने वाले की त़रह़ है।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ،باب المسالۃ والاخذوما یتعلق بہ ......الخ، الحدیث: ۳۴۰۶،ج۵،ص۱۷۵)

《5》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस पर एह़सान किया जाए और वोह उसे याद रखे तो गोया उस ने उस का शुक्र अदा किया और अगर वोह उसे छुपाए तो उस ने ना शुक्री की।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی شکر المعروف، الحدیث: ۴۸۱۴،ص۱۵۷۷)

www.dawateislami.net

《6》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''बेशक लोगों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सब से ज़ियादा शुक्र गुज़ार बन्दा वोही है जो इन में से लोगों का ज़ियादा शुक्र गुज़ार है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث الاشعث بن قیس الکندی،الحدیث: ۲۱۹۰۵،ج۸،ص۱۹۷)

《7》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार नहीं हो सकता।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی شکر المعروف، الحدیث: ۴۸۱۱،ص۱۵۷۷)

《8》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस के साथ अच्छा सुलूक किया जाए उसे चाहिये कि उसे याद रखे क्यूं कि जिस ने एहसान को याद रखा गोया उस ने उस का शुक्रिया अदा किया और जिस ने उसे छुपाया बेशक उस ने ना शुक्री की।''

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۱۱،ج۱،ص۱۱۵)

《9》...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अहमद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो थोड़ी चीज़ का शुक्र अदा न करे वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं कर सकता और जो लोगों का शुक्र अदा न करे वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं कर सकता, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का तज़्किरा करना भी उस का शुक्र अदा करना ही है जब कि उस की ने'मतों का इज़्हार न करना कुफ़राने ने'मत (या'नी ने'मतों की ना शुक्री) है।

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث النعمان بن بشیر،الحدیث: ۱۸۴۷۷، ج۶، ص۳۹۴)

《10》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस के साथ भलाई की गई और उस ने भलाई करने वाले को جَزَاکَ اللهُ خَیۡرًا (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे बेहतरीन जज़ा दे) कहा तो वोह सना को पहुंच गया।''

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة ، باب ماجاء فی الثناء بالمعروف، الحدیث: ۲۰۳۵،ص۱۸۵۵)

तम्बीह :

दूसरी हदीसे पाक के ज़ाहिरी मफ़्हूम की वजह से इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया गया क्यूं कि लोगों की ना शुक्री बन्दे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की ना शुक्री की तरफ़ ले जाती है, मगर मैं ने किसी को इस बात पर तम्बीह करते हुए नहीं पाया शायद उन का उज़्र येह था कि उन्हों ने समझा कि ''इस से मुराद मोहसिन की ने'मत की ना शुक्री है।'' हालां कि सिर्फ़ येही बात इस के कबीरा गुनाह होने का तक़ाज़ा नहीं करती।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 138 : अल्लाह तआला के नाम पर जन्नत के सिवा कुछ और मांगना

कबीरा नम्बर 139 : अल्लाह तआला के नाम पर मांगने वाले को कुछ न देना

《1》...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना ''जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर सुवाल करे वोह मल्ऊन है और जिस से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर सुवाल किया जाए और वोह सुवाल करने वाले को न दे जब कि वोह किसी बुरी चीज़ का सुवाल न करे तो वोह भी मल्ऊन है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیة، باب السوال بوجه الله الکریم، الحدیث: ١٧٢٤١، ج١٠، ص٢٣٤)

《2》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर जन्नत के इलावा कुछ न मांगा जाए।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکوٰۃ، باب کراھیة المسألة بوجه الله ،الحدیث: ١٦٧١، ص١٣٤٧)

《3》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर मांगे वोह मल्ऊन है और जिस से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर सुवाल हो और वोह सुवाल करने वाले को कुछ न दे तो वोह भी मल्ऊन है।''

(المعجم الکبیر، الحدیث: ٩٤٣، ج٢٢، ص٣٧٧)

《4》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''क्या मैं तुम्हें बद तरीन मुसीबत व आज़माइश वाले शख़्स के बारे में न बताऊं ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, ''क्यूं नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! (ज़रूर बताइये)'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर सुवाल किया जाए और वोह अ़ता न करे।''

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرہ،الحدیث:٩١٥٣، ج٣، ص٣٥٤،''بشرالبلیة''بدله''بشرالبریة'')

《5》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर सुवाल करे उसे अ़ता करो, जो तुम्हारी दा'वत करे उस की दा'वत क़बूल करो और जो तुम्हारे साथ भलाई करे उस का बदला दो, अगर तुम उस का बदला देने की इस्तिताअ़त न रखो तो उस के लिये दुआ़ करो यहां तक कि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि तुम ने उस का बदला दे दिया।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکوٰۃ، باب عطیة من سأل بالله،الحدیث:١٦٧٢، ص١٣٤٨)

《6》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें हज़रते ख़िज़्र (عَلَیْہِ السَّلَام) के बारे में न बताऊं ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, ''क्यूं नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! (ज़रूर बताइये)'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक दिन वोह बनी इस्राईल के बाज़ार से गुज़र रहे थे

www.dawateislami.net

कि उन पर एक मुकातब गुलाम[1] की नज़र पड़ी तो उस गुलाम ने उन से अ़र्ज़ की, "मुझ पर स-दक़ा कीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को ब-र-कत अ़ता फ़रमाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया: "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान रखता हूं कि जो मुआ़-मला वोह चाहे वोही होता है लिहाज़ा इस वक़्त मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं।" मिस्कीन बोला, "मैं ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर सुवाल किया था कि मुझ पर स-दक़ा कीजिये क्यूं कि मैं ने आप عَلَيْهِ السَّلَام के चेहरे पर सख़ावत के आसार देखे थे और मैं आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास ब-र-कत की उम्मीद भी रखता हूं।" ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से इर्शाद फ़रमाया: "मेरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान है (इस वक़्त) मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं, हां येह हो सकता है कि तुम मुझे ले जा कर बेच दो।" मिस्कीन ने पूछा: "क्या ऐसा करना दुरुस्त होगा?" ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया: "हां! मैं तुम से कह रहा हूं क्यूं कि तुम ने एक अ़ज़ीम वसीले से सुवाल किया है लिहाज़ा मैं तुम्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ के नाम पर रुस्वा नहीं करूंगा, मुझे बेच दो।"

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि "फिर वोह मिस्कीन उन्हें बाज़ार ले गया और **400** दिरहम में बेच दिया, वोह एक मुद्दत तक उस ख़रीदार के हां यूं ही ठहरे रहे कि वोह उन से कोई काम न लेता था एक दिन आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने उसे से फ़रमाया: "तुम ने मुझे काम कराने के लिये ख़रीदा है लिहाज़ा मुझे किसी काम का हुक्म दो।" तो उस ने कहा: "मैं आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को मशक़्क़त में डालना पसन्द नहीं करता, आप (عَلَيْهِ السَّلَام) बहुत उ़म्र रसीदा और ज़ईफ़ हैं।" आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया: "मुझे मशक़्क़त नहीं होगी।" वोह बोला "उठें और येह पथ्थर यहां से मुन्तक़िल कर दें।" वोह पथ्थर छ आदमी पूरे एक दिन में ही मुन्तक़िल कर सकते थे, फिर वोह शख़्स किसी काम से चला गया जब वापस आया तो उस वक़्त तक पथ्थर वहां से मुन्तक़िल हो चुके थे, उस ने कहा: "आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने बहुत अच्छा किया, ख़ूब किया और मैं जिस काम की आप (عَلَيْهِ السَّلَام) में सलाहिय्यत नहीं समझता था आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने उसे कर दिखाया।" फिर उस शख़्स को एक सफ़र दरपेश आया तो उस ने आप (عَلَيْهِ السَّلَام) से कहा: "मैं आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को अमानत दार समझता हूं उम्मीद है कि मेरे बा'द मेरे अहले ख़ाना के लिये अच्छे निगहबान साबित होंगे।" आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया: "मुझे किसी काम का हुक्म दे जाओ।" उस ने कहा: "मैं आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को मशक़्क़त में डालना पसन्द नहीं करता।" आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया: "मुझे मशक़्क़त नहीं होगी।" उस ने कहा: "फिर मेरी वापसी तक मेरे घर के लिये ईंटें बनाते रहें।"

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मुकातब गुलाम के बारे में फ़रमाते हैं: "आक़ा अपने गुलाम से माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि इतना अदा कर दे तो आज़ाद है और गुलाम उसे क़बूल भी कर ले अब येह मुकातब हो गया जब **कुल** अदा कर देगा आज़ाद हो जाएगा और जब तक उस में से कुछ भी बाक़ी है गुलाम ही है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 9, स. 9)

www.dawateislami.net

रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "फिर वोह शख़्स सफ़र पर चला गया, जब वोह वापस आया तो आप (عَلَيْهِ السَّلَام) उस के लिये ईंटें बना चुके थे वोह बोला : "मैं आप (عَلَيْهِ السَّلَام) से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का वासित़ा दे कर पूछता हूं कि आप (عَلَيْهِ السَّلَام) का माजरा और मुआ़-मला क्या है ?" आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का वासित़ा दे कर पूछा है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के वासित़े ही ने मुझे इस ग़ुलामी में डाला है।" फिर फ़रमाया : "मैं तुम्हें अपने बारे में बताता हूं कि मैं कौन हूं, मैं वोही **ख़िज़्र** (عَلَيْهِ السَّلَام) हूं जिस का तज़्किरा तुम सुन चुके हो, मुझ से एक मिस्कीन ने स-दक़े का सुवाल किया उस वक़्त मेरे पास कोई ऐसी चीज़ न थी, फिर जब उस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का वासित़ा दे कर मुझ से मांगा तो मैं ने उसे ख़ुद पर इख़्तियार दे दिया लिहाज़ा उस ने मुझे बेच दिया और मैं तुम्हें येह बता रहा हूं कि जिस से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का वासित़ा दे कर मांगा जाए फिर वोह साइल को क़ुदरत के बा वुजूद ख़ाली लौटा दे, उसे क़ियामत के दिन इस ह़ालत में खड़ा किया जाएगा कि उस की जिल्द पर गोश्त न होगा और वोह ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें निकाल रहा होगा।"

उस शख़्स ने कहा : "मैं अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की पनाह चाहता हूं, ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नबी عَلَيْهِ السَّلَام ! मैं ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को मशक़्क़त में डाला।" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई ह़रज नहीं तुम ने बहुत अच्छा किया, ख़ूब किया।" तो उस आदमी ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप عَلَيْهِ السَّلَام पर क़ुरबान ! मेरे अहलो माल के लिये जो चाहें हुक्म फ़रमाएं या आज़ादी इख़्तियार फ़रमाएं मेरी त़रफ़ से आप عَلَيْهِ السَّلَام का रास्ता खुला है।" ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया "मैं येह चाहता हूं कि तुम मुझे जाने दो ताकि मैं अपने रब عَزَّ وَجَلَّ की इबादत कर सकूं।" तो उस ने आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को रुख़्सत कर दिया, आप ने दुआ़ फ़रमाई : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَوْثَقَنِیْ فِی الْعُبُوْدِيَّةِ ثُمَّ نَجَانِیْ مِنْهَا" या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ही के लिये हैं जिस ने मुझे ग़ुलामी में डाला फिर उस से नजात अ़त़ा फ़रमाई।"

(المعجم الكبير، الحديث: ٧٥٣٠،ج٨،ص١١٣)

तम्बीह :

इन दोनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करने की वजह सह़ीह़ ह़दीसे पाक में इन पर वारिद ला'नत है और दूसरा येह कि जिस से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर सुवाल किया जाए और वोह अ़त़ा न करे तो वोह लोगों में बद तरीन शख़्स है जैसा कि बा'द वाली ह़दीसे पाक में है, मगर हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस से इस्तिद्लाल नहीं किया बल्कि इन दोनों कामों को मक्रूह क़रार दिया है और कबीरा तो दर किनार इन्हें ह़राम भी नहीं क़रार दिया और ह़दीसे पाक में "साइल को न देने" पर वारिद वईद को इस पर मह़मूल करना भी मुम्किन है कि यहां मुराद वोह साइल है जो इन्तिहाई मजबूर हो।

इस पर नस वारिद करने की ह़िक्मत येह है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम पर सुवाल करना और

www.dawateislami.net

मजबूर होने के बा वुजूद साइल को न देना क़बीह़ तरीन अम्र है और हुक्मे मन्अ़ को सुवाल पर मह़मूल करना भी मुम्किन है जब कि वोह मांगने में इस्रार करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर कसरत से सुवाल करे यहां तक कि जिस से सुवाल किया जाए वोह मजबूर हो जाए और उसे तक्लीफ़ दे तो इस सूरत में दोनों पर ला'नत होगी और दोनों का कबीरा होना ज़ाहिर है और हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने भी इस का इन्कार नहीं किया बल्कि उन का कलाम मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर सुवाल करने और इस त़रह़ सुवाल करने वाले को कुछ न देने के बारे में है, ह़ालते इज़्त़िरार की क़ैद नहीं और इस से हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के कलाम और गुज़श्ता अह़ादीसे पाक में तत़्बीक़ वाज़ेह़ हो जाती है।

सय्यिदुना ह़लीमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी किताब "**मिन्हाज**" में लिखते हैं : "कोई गुनाह ऐसा नहीं जिस में सग़ीरा और कबीरा न हो और कभी किसी क़रीने के मिलने से सग़ीरा कबीरा बन जाता है और कभी कबीरए फ़ाह़िशा किसी क़रीने के मिलने की वजह से सग़ीरा बन जाता है, मगर येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के साथ कुफ़्र न हो क्यूं कि येह कबीरा तरीन है और इस नौअ़ का कोई गुनाह सग़ीरा नहीं।" फिर फ़रमाते हैं : "ज़कात अदा न करना कबीरा गुनाह है और साइल को अ़त़ा न करना सग़ीरा है और अगर साइल को न देने और ज़कात अदा न करने को जम्अ़ कर दिया जाए या फिर देना एक की त़रफ़ से हो लेकिन वोह रोकने में सख़्ती और झिड़की से काम ले तो येह भी कबीरा होगा, इसी त़रह़ अगर मोह़ताज ने किसी आदमी को देखा जो खाने पर वुस्अ़त रखता हो पस उस ने उस की त़रफ़ अपने आप को माइल किया और उस से मांगा लेकिन उस ने न दिया तो येह भी कबीरा गुनाह है।"

ए'तिराज़ : अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस कलाम कि "साइल को लौटाना सग़ीरा गुनाह है और मोह़ताज के मांगने पर ख़ुशह़ाल का न देना कबीरा गुनाह है।" पर ए'तिराज़ करते हुए फ़रमाया : "इन दोनों में इश्काल है मगर येह कि इन की तावील की जाए और सय्यिदुना ह़लीमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कलाम में तावील की गुन्जाइश नहीं।"

जवाब : सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस का जवाब येह दिया कि मैं कहता हूं : "दूसरा कलाम मजबूर के बारे में है और पहला कलाम ऐसे शख़्स से मांगने वाले के बारे में है जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है, और वोह ऐसे शह्र में हो जिस के फ़ु-क़रा क़ैद में हों।" पस सय्यिदुना ह़लीमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कलाम की तावील करते हुए सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जो ज़िक्र किया वोह मेरे मौक़िफ़ की ताईद में वाज़ेह़ है।

हां ! सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इत़्लाक़ येह है कि जो बा'द में मज़्कूर हुवा वोह सग़ीरा है येह तो देखने में भी ज़ाहिर है, बेशक जब उन्हों ने इन को तीन क़िस्मों में शुमार किया तो सब से कम द-रजा उन लोगों का है जो मुकम्मल त़ौर पर ज़कात के मालिक हो गए लिहाज़ा इस सूरत में उन में से किसी का न देना बिला शुबा कबीरा है और अगर इस में ह़स्र करें तो येह मालिक पर तमाम को घेरने के वुजूब का तक़ाज़ा करता है कि वोह माल पूरा अदा करे ग़ौर करो कि उस

www.dawateislami.net

वक़्त रोकना सग़ीरा होगा क्यूं कि उ़मूमी तौ़र पर उस पर वाजिब है लेकिन वोह मुकम्मल तौ़र पर मालिक नहीं होते लिहाज़ा न देना सग़ीरा होगा कबीरा नहीं और अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कलाम इसी ह़ालत के बारे में है।

स-दके़ के फ़ज़ाइल, अह़काम और अक़्साम

मैं ने इस सिल्सिले में एक किताब तालीफ़ की है उस में दर्ज फ़ज़ाइल, अह़काम, फ़वाइद और फ़रोअ़ से बे नियाज़ी नहीं बरती जा सकती, लिहाज़ा आप पर उस को इख़्तियार करना लाज़िम है। जान लीजिये कि मैं ने इस ख़ातिमे में जो अह़ादीसे मुबा-रका दर्ज की हैं वोह तमाम सह़ीह़ हैं मगर कुछ अह़ादीस ह़सन हैं लिहाज़ा मैं ने मुख़्रिजीन का ज़िक्र भी नहीं किया।

《7》...... हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने ह़लाल कमाई से खजूर के बराबर स-दक़ा किया और चूंकि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ह़लाल ही क़बूल फ़रमाता है लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे भी ब-र-कत के साथ क़बूल फ़रमाता है और स-दक़ा करने वाले के लिये उस की इसी त़रह़ नश्वो नुमा फ़रमाता है जिस त़रह़ तुम में से कोई अपने बछेरे (या'नी घोड़ी के बच्चे) की परवरिश करता है यहां तक कि वोह पहाड़ की मिस्ल हो जाता है।"

(صحیح البخاری، کتاب الزکوٰۃ ، باب الصدقۃ من کسب طیب ، الحدیث: ۱۴۱۰،ص ۱۱۱)

《8》...... एक और रिवायत में है : "जैसा कि तुम में से कोई अपने बछेरे की परवरिश करता है यहां तक कि एक लुक़्मा उहुद पहाड़ की मिस्ल हो जाता है, और इस की तस्दीक़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की किताब में इस त़रह़ है :

《1》

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ (پ۱۱،التوبۃ:۱۰۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या उन्हें ख़बर नहीं कि **अल्लाह** ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और स-दके़ खु़द अपने दस्ते कु़दरत में लेता है।

《2》

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ (پ۳،البقرۃ:۲۷۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को।

(الترغیب والترھیب ، کتاب الصدقات ، باب ترغیب فی الصدقۃ......الخ، الحدیث: ۱۲۷۱،ج۱،ص۴۰۷)

《9》...... रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "स-दक़ा माल में कोई कमी नहीं करता, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अ़फ़्व के बदले बन्दे की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है और जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।" (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ ، باب استحباب العفو والتواضع ، الحدیث: ۶۵۹۲،ص ۱۱۳۰)

《10》...... शहन्शाहे खु़श ख़िसाल, पैकरे हु़स्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

''स-दक़ा माल में कमी नहीं करता और बन्दा जब स-दक़ा करने के लिये हाथ बढ़ाता है तो साइल के हाथ में जाने से पहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो कर उसे क़बूल फ़रमा लेता है।''

(المعجم الكبير، الحديث: ١٢١٥٠، ج١١، ص٣٢٠)

﴾11﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जो बन्दा ग़नी होने के बा वुजूद अपने लिये सुवाल का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देता है।'' (المعجم الكبير، الحديث: ١٢١٥٠، ج١١، ص٣٢١)

﴾12﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''बन्दा कहता है मेरा माल, मेरा माल हालां कि उस का माल तो सिर्फ़ तीन तरह का है : (1) जो उस ने खा कर फ़ना कर दिया (2) जो पहन कर बोसीदा कर दिया और (3) जो स-दक़ा कर के महफ़ूज़ कर लिया। इस के इलावा जो कुछ है वोह लोगों के लिये छोड़ कर चला जाएगा।''

(صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق، باب الدنيا سجن للمؤمن وجنة......الخ، الحديث: ٧٤٢٢، ص١١٩١)

﴾13﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तुम में से हर एक के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यूं कलाम फ़रमाएगा कि उस के और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई तरजुमान न होगा, जब वोह बन्दा अपनी दाईं जानिब नज़र डालेगा तो उसे वोही कुछ नज़र आएगा जिसे उस ने आख़िरत के लिये आगे भेजा था और जब वोह अपनी बाईं जानिब नज़र डालेगा तो उसे वोही नज़र आएगा जिसे उस ने आगे भेजा था, फिर जब वोह अपने सामने देखेगा तो उसे आग के सिवा कुछ नज़र न आएगा, लिहाज़ा आग से डरो अगर्चे एक ही खजूर के ज़रीए हो।''

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب الحث على الصدقة ولو بشق ......الخ، الحديث: ٢٣٤٨، ص٨٣٨)

﴾14﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तुम में से हर एक अपने चेहरे को आग से बचाए अगर्चे एक ही खजूर के ज़रीए हो।''

(جامع الترمذي، ابواب تفسير القرآن، باب ومن سورة الفاتحة الكتاب، الحديث: ٢٩٥٣، ص١٩٤٩)

﴾15﴿...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''स-दक़ा गुनाहों को इस तरह मिटा देता है जिस तरह पानी आग को बुझा देता है।''

(المرجع السابق، الحديث: ٢٦١٦، ص١٩١٥)

﴾16﴿...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : ''(1) ऐ का'ब बिन उ़जरह (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ)! जिस ख़ून और गोश्त ने हराम से परवरिश पाई वोह जन्नत में दाख़िल न होगा जहन्नम उस का ज़ियादा हक़दार है। (2) ऐ का'ब बिन उ़जरह (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ)! लोग दो तरह सुब्ह करते हैं एक शख़्स अपनी जान को आज़ाद कराने में सुब्ह करता है और उसे आज़ाद करा लेता है जब कि एक उसे हलाकत में डाल कर सुब्ह करता है। (3) ऐ का'ब बिन उ़जरह (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ)! नमाज़ क़ुरबत या'नी नेकी है,

www.dawateislami.net

रोज़ा ढाल है, स-दक़ा ख़ता को इस तरह मिटा देता है जिस तरह पथ्थर पर बर्फ़ पिघलती है।" एक और रिवायत में है कि जैसे पानी आग को बुझा देता है।"

(جامع الترمذی، ابواب السفر، باب ماذکر فی فضل الصلوٰۃ، الحدیث:٦١٤،ص١٧٠٦)

﴾17﴿...... रहमते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक स-दक़ा रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को ठन्डा करता और बुरी मौत से बचाता है।"

(المرجع السابق، الحدیث:٦٦٤،ص١٧١٢)

﴾18﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ स-दक़े के ज़रीए बुरी मौत को **70** दरवाज़े दूर फ़रमा देता है।"

(کنزالعمال، کتاب الزکاۃ، قسم الاقوال، الباب الثانی فی السخاء والصدقۃ، الفصل الاول، الحدیث: ١٦١٠٦،ج٦، ص١٥٨)

﴾19﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाने तक हर शख़्स अपने स-दक़े के साए में होगा।"

(المسندللامام احمد بن حنبل، الحدیث: ١٧٣٣٥،ج٦،ص١٢٦)

﴾20﴿...... महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इन्सान **70** शैतानों के जबड़ों से छुड़ा कर कोई चीज़ स-दक़ा करता है।"

(کنزالعمال، کتاب الزکاۃ، قسم الاقوال، الباب الثانی فی السخاء والصدقۃ، الفصل الاول، الحدیث: ١٦١٧٣، ج٦،ص١٦٥)

﴾21﴿...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : "कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है?" तो आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तंगदस्त का हस्बे इस्तिताअ़त स-दक़ा करना और अपने ज़ेरे कफ़ालत लोगों से इब्तिदा करना।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکوٰۃ، باب الرخصۃ فی ذالك، الحدیث: ١٦٧٧،ص١٣٤٨)

﴾22﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक दिरहम एक लाख दिरहम पर सब्क़त ले जाता है।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे?" तो आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक शख़्स के पास बहुत सा माल हो वोह उस में से एक लाख (1,00,000) दिरहम स-दक़ा करे और एक शख़्स के पास सिर्फ़ **2** दिरहम हों और वोह उन में से एक दिरहम स-दक़ा करे।"

(سنن النسائی، کتاب الزکاۃ، باب جھد المقل، الحدیث: ٢٥٢٩،ص ٢٢٥١،"بتقدم وتأخر")

﴾23﴿...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने किसी साइल को ख़ाली न लौटाओ अगर्चे बकरी या गाय का एक खुर ही हो।"

(صحیح ابن خزیمہ، کتاب الزکاۃ، باب الامر باعطاء السائل، الحدیث: ٢٤٧٢،ج٤،ص١١١)

www.dawateislami.net

《24》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन सात अफ़राद ऐसे होंगे जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा (फिर ह़दीसे पाक बयान की यहां तक कि फ़रमाया) और वोह शख़्स जो स-दक़ा करे तो इस त़रह़ छुपाए कि बाएं हाथ को मा'लूम न हो कि दाएं हाथ ने क्या स-दक़ा किया है।"

(صحيح البخارى، كتاب الزكاة ، باب الصدقة باليمين، الحديث: ١٤٢٣،ص١١٢)

《25》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "भलाई के काम करना ना गहानी आफ़ात से बचाता है, पोशीदा स-दक़ा रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को ठन्डा करता है और सिलए रेह़मी उ़म्र में इज़ाफ़ा करती है।" (المعجم الكبير،الحديث: ٨٠١٤،ج٨،ص٢٦١)

《26》...... नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "भलाई के काम ना गहानी आफ़ात से बचाते हैं, पोशीदा स-दक़ा रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को ठन्डा करता है, सिलए रेह़मी उ़म्र में इज़ाफ़ा करती है, हर भलाई स-दक़ा है, दुन्या में भलाई पाने वाले लोग आख़िरत में भी भलाई पाने वाले होंगे और दुन्या में बदकारी के शिकार लोग आख़िरत में बुराई में गिरिफ़्तार होंगे और भलाई करने वाले ही सब से पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।" (المعجم الاوسط،الحديث: ٦٠٨٦،ج٤،ص٣١١)

《27》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! स-दक़ा क्या है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दो गुना, चार गुना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां इस से भी ज़ियादा है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةً ؕ (پ٢،البقرة:٢٤٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े ह़सन दे तो अल्लाह उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे।

दोबारा अ़र्ज़ की गई, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो फ़क़ीर को पोशीदा त़ौर पर दिया जाए या तंगदस्त अपनी मुम्किना कोशिश से दे।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ (پ٣،البقرة:٢٧١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है।

(المعجم الكبير الحديث:٧٨٩١،ج٨،ص٢٢٦)

www.dawateislami.net

﴾28﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी मुसल्मान को लिबास पहनाया जब तक उस में से कोई धागा या लड़ी उस के बदन पर रहे लिबास पहनाने वाला अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की हिफ़ाज़त में रहेगा।"

(المستدرک ، کتاب اللباس، باب من کسامسلماً ثوباً......الخ،الحدیث: ٧٤٩٩،ج٥،ص٢٧٥)

﴾29﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो मुसल्मान किसी बरह्ना मुसल्मान को लिबास पहनाए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनाएगा, जो मुसल्मान किसी भूके मुसल्मान को खाना खिलाए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जो मुसल्मान किसी प्यासे मुसल्मान को पिलाए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे मोहर लगी हुई उम्दा लज़ीज़ शराब पिलाएगा।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ ، باب فی فضل سقی الماء، الحدیث: ١٦٨٢،ص١٣٤٨)

﴾30﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मिस्कीन पर स-दक़ा करने में एक ही स-दक़ा है जब कि रिश्तेदारों पर स-दक़ा करने में दो स-दक़े हैं, स-दक़ा और सिलए रेहमी।"

(جامع الترمذی، ابواب الزکاۃ ، باب ماجاء فی صدقة علی ذی القرابة،الحدیث: ٦٥٨،ص١٧١١)

﴾31﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया : "कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो कीना परवर रिश्तेदार पर किया जाए।"

(المسندللامام احمدبن حنبل ، الحدیث: ١٥٣٢٠،ج٥،ص٢٢٨)

﴾32﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने दूध देने वाला जानवर या दिरहम उधार दिये या किसी को रास्ता बताया तो उस का येह अमल एक जान आज़ाद करने की तरह है।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة ، باب ماجاء فی المنحة ، الحدیث: ١٩٥٧،ص١٨٤٨)

﴾33﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हर क़र्ज़ स-दक़ा है।"

(المعجم الاوسط،الحدیث:٣٤٩٨،ج٢،ص٣٤٥)

﴾34﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअज़्ज़म صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने मे'राज की रात जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा : बेशक स-दक़ा (का अज्र) **10** गुना है जब कि क़र्ज़ (का अज्र) **18** गुना है।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزکاۃ،فصل فی القرض،الحدیث:٣٥٦٦،ج٣،ص٢٨٥)

﴾35﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो मुसल्मान किसी मुसल्मान को दो मरतबा क़र्ज़ दे तो वोह दोनों क़र्ज़ उस के लिये एक मर्तबा स-दक़ा करने की मिस्ल शुमार होते हैं।"

(سنن ابن ماجه، ابواب الصدقات، باب القرض ،ا لحدیث: ٢٤٣٠،ص٢٦٢٢)

www.dawateislami.net

﴾36﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तंगदस्त पर नर्मी की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस पर नर्मी फ़रमाएगा ।" (صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعا،باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن......الخ ، الحدیث: ۶۸۵۳،ص۱۱۴۷)

खाना खिलाने, पानी पिलाने और सलाम को आ़म करने की फ़ज़ीलत :

﴾37﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया : "कौन सा सलाम अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह कि तुम भूके को खाना खिलाओ और जिसे जानते हो या न जानते हो सब को सलाम करो ।"

(صحیح البخاری ، کتاب الایمان، باب اطعام الطعام من الاسلام ، الحدیث: ۱۲،ص۳)

﴾38﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि मैं ने दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे हर शै की ह़क़ीक़त के बारे में बताइये ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर चीज़ को पानी से पैदा किया गया है ।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की, "मुझे ऐसा काम बताइये जिसे करने से मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "खाना खिलाओ, सलाम आ़म करो, सिलए रेहमी करो और रात में जब कि लोग सो रहे हों नमाज़ अदा किया करो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।"

(المستدرک ، کتاب البر والصلۃ ، باب ارحموا اھل الارض یرحمکم......الخ، الحدیث: ۷۳۶۰، ج۵، ص۲۲۲)

﴾39﴿...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रह़मान عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो, भूकों को खाना खिलाओ और सलाम आ़म करो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।"

(جامع الترمذی، ابواب الاطعمۃ ، باب فی فضل اطعام الطعام، الحدیث: ۱۸۵۵،ص۱۸۴۰)

﴾40﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मिस्कीन मोमिन को खाना खिलाना रह़मत साबित करने वाला अ़मल है ।"

(الترغیب والترھیب،کتاب الصدقات،باب ترغیب المرأۃفی الصدقۃ.....الخ،الحدیث:۱۴۰۴،ج۱،ص۴۴۴)

﴾41﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अपने भाई को खाना खिलाया यहां तक कि वोह शिकम सैर हो गया और पानी पिलाया यहां तक कि वोह सैर हो गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से 7 ख़न्दक़ों की मिक़्दार दूर फ़रमा देगा जिन में से हर दो ख़न्दक़ों के दरमियान 500 बरस की राह होगी ।"

(المستدرک، کتاب الاطعمۃ ، باب فضیلۃ اطعام الطعام،الحدیث:۷۲۵۴،ج۵،ص۱۷۸)

www.dawateislami.net

《42》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! मैं बीमार हुवा मगर तूने मेरी इयादत नहीं की।" बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "मैं तेरी इयादत कैसे करता तू तो तमाम जहानों का परवर्द गार है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तुझे मा'लूम न था कि मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार है, फिर भी तूने उस की इयादत न की ? क्या तू नहीं जानता कि अगर तू उस की इयादत करता तो मुझे उस के पास पाता ? ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से खाना मांगा मगर तूने मुझे नहीं खिलाया।" बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे खाना कैसे खिलाता तू तो रब्बुल आ़-लमीन है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तू नहीं जानता कि मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से खाना मांगा था मगर तू ने उसे खाना नहीं खिलाया ? क्या तू नहीं जानता कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो उस का अज्र मेरे पास पाता ? ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से पानी मांगा मगर तूने मुझे नहीं पिलाया।" बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे पानी कैसे पिलाता तू तो रब्बुल आ़-लमीन है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तू नहीं जानता कि मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से पानी मांगा था मगर तूने उसे नहीं पिलाया ? क्या तू नहीं जानता कि अगर तू उसे पानी पिलाता तो उस का सवाब मेरे पास पाता ?"

(صحیح مسلم، کتاب البر،باب فضل عیادۃ المریض، الحدیث: ٦٥٥٦،ص١١٢٨)

《43》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदए मोह़-त-रमा जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गईं तो उन्हों ने मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी वालिदए मोह़-त-रमा वसिय्यत किये बिग़ैर वफ़ात पा गई हैं, अगर मैं उन की त़रफ़ से ईसाले सवाब करूं तो क्या वोह स-दक़ा उन्हें नफ़्अ़ देगा ?" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "हां और तुम्हें चाहिये कि पानी स-दक़ा करो।"

(المعجم الاوسط،الحدیث: ٨٠٦١،ج٦،ص٧٧)

《44》...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "पानी पिलाना।" (صحیح ابن حبان،کتاب الزکاۃ،باب صدقۃ التطوع ،الحدیث:٣٣٣٧،ج٥،ص١٤٥)

《45》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

"जिस ने कूंआं खुदवाया उस में से जो प्यासे जिगर वाला जिन्न, इन्सान या परिन्दा पियेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे अज्र अ़ता फ़रमाएगा।"

(صحیح ابن خزیمه، کتاب الصلاة،باب فی فضل المسجد......الخ،الحدیث:۱۲۹۲،ج۲،ص۲۶۹)

《46》...... एक शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अपने घुटने पर मौजूद 7 सालह नासूर के बारे में पूछा कि मैं बहुत से त़बीबों से इ़लाज करा चुका हूं तो आप ने उसे ऐसी जगह कूंआं खुदवाने का हुक्म दिया जहां लोग पानी के मोह़ताज हों और उस से इर्शाद फ़रमाया : "मुझे उम्मीद है कि जैसे ही उस से चश्मा फूटेगा तुम्हारा ख़ून बन्द हो जाएगा।"

(شعب الایمان،کتاب الصلاة،باب فی الزکاة،فصل فی اطعام الطعام......الخ،الحدیث:۳۳۸۱،ج۳،ص۲۲۱)

《47》...... सय्यिदुना इमाम बैहक़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत करते हैं कि मेरे उस्ताज़ ह़ाकिम अबू अ़ब्दुल्लाह **"साह़िबुल मुस्तदरक"** के चेहरे पर एक फोड़ा निकल आया, साल भर इ़लाज मुआ़-लजा जारी रहा मगर कोई फ़ाएदा न हुवा तो आ़जिज़ आ कर उस्ताज़ अबू उ़स्मान साबूनी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से दर-ख़्वास्त की, कि वोह जुमुआ़ के दिन अपनी मजलिस में मेरे लिये दुआ़ फ़रमाएं, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दुआ़ फ़रमाई तो काफ़ी लोगों ने उस पर आमीन कही, अगले जुमुआ़ को एक औ़रत ने मजलिस में एक ख़त़ बढ़ाया उस में लिखा था कि मैं ने घर लौटने के बा'द उस रात ह़ाकिम के लिये ख़ूब दुआ़ की तो ख़्वाब में मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को गोया इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "अबू अ़ब्दुल्लाह से कहो कि वोह मुसल्मानों पर पानी की वुस्अ़त करे।" फिर वोह रुक़्आ़ ह़ाकिम के पास लाया गया तो उन्हों ने अपने घर के दरवाज़े पर ह़ौज़ बनाने का हुक्म दिया जब मज़दूर उस की ता'मीर से फ़ारिग़ हुए तो उन्हों ने उस में पानी भर कर बर्फ़ डाल दी और लोग उस में से पीने लगे अभी एक हफ़्ता भी न गुज़रा था कि शिफ़ा के आसार ज़ाहिर होने लगे और वोह नासूर ख़त्म हो गया और उन का चेहरा पहले से ज़ियादा ख़ूब सूरत हो गया इस के बा'द आप कई साल तक ज़िन्दा रहे। (المرجع السابق،ج۳،ص۲۲۲)

《48》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "7 अ़मल ऐसे हैं जो बन्दे की मौत के बा'द भी जारी रहते हैं जब कि वोह अपनी क़ब्र में होता है : (1) जिस ने इ़ल्म सिखाया (2) नह्‌र जारी की (3) कूंआं खुदवाया (4) दरख़्त लगाया (5) मस्जिद बनाई (6) तर्के में कुरआन या (7) नेक बच्चा छोड़ा जो उस की मौत के बा'द उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करता रहे।"

(مجمع الزوائدو منبع الفوائد، کتاب العلم، باب فیمن سن خیراًاو غیره ......الخ، الحدیث: ۷۶۹،ج۱،ص۴۰۸)

《49》...... ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी वालिदए मोह़-त-रमा फ़ौत हो गई हैं लिहाज़ा कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया : ''पानी ।'' तो उन्हों ने एक कूंआं खुदवाया और कहा : '' هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ '' या'नी येह कूंआं सा'द की वालिदए माजिदा (के ईसाले सवाब) के लिये है ।''[1]

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ ، باب فی فضل سقی الماء ، الحدیث: ۱۶۸۱،ص۱۳۴۸)

﴾50﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''कोई स-दक़ा पानी से ज़ियादा अज्र वाला नहीं ।''

(شعب الایمان، باب فی الزکاۃ ، فصل فی اطعام الطعام وسقی الماء، الحدیث: ۳۳۷۸،ج۳،ص۲۲۱)

या'नी जिस जगह पानी की एह़तियाज ज़ियादा हो वहां पानी से ज़ियादा अज्र वाला कोई स-दक़ा नहीं । येह मज़्मून दीगर अह़ादीसे मुबा-रका से लिया गया है और अगर वहां पानी से ज़ियादा किसी और चीज़ की ह़ाजत हो तो उसे स-दक़ा करना अफ़्ज़ल है ।

---

1 : अमीरे अहले सुन्नत, अमीरे दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास **अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ किताब ''**नमाज़ के अह़काम**'' में येह ह़दीस ज़िक्र करने के बा'द तह़रीर फ़रमाते हैं : ''**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! सय्यिदुना सा'द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का कहना कि येह कूंआं उम्मे सा'द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के लिये है, इस के मा'ना येह हैं कि येह कूंआं सा'द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मां رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के ईसाले सवाब के लिये है । इस से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों का गाय या बकरे वग़ैरा को बुज़ुर्गों की त़रफ़ मन्सूब करना म-सलन येह कहना कि ''येह सय्यिदुना ग़ौसे पाक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बकरा है ।'' इस में कोई ह़रज नहीं कि इस से मुराद भी येही है कि येह बकरा ग़ौसे पाक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ईसाले सवाब के लिये है ।''
(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये देखिये : ''नमाज़ के अह़काम, फ़ातिह़ा का त़रीक़ा, स. 472 ता 492'')

www.dawateislami.net

كتاب الصيام

रोज़ों का बयान

कबीरा नम्बर 140 : माहे र-मज़ान का कोई रोज़ा छोड़ देना

कबीरा नम्बर 141 : माहे र-मज़ान का कोई रोज़ा तोड़ देना

या'नी किसी उ़ज़्र म-सलन सफ़र और मरज़ के बिग़ैर र-मज़ानुल मुबारक का कोई रोज़ा छोड़ देना या किसी मुफ़्सिदे सौम चीज़ के ज़रीए रोज़ा तोड़ देना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस्लाम के कड़े और दीन के 3 सुतून हैं जिन पर इस्लाम की बुन्याद क़ाइम है, जिस ने इन में किसी एक को तर्क किया वोह काफ़िर है उस का ख़ून ह़लाल है : (1) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, (2) फ़र्ज़ नमाज़ और (3) र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े।''

(مسند ابی یعلیٰ الموصلی ، الحدیث: ۲۳۴۵،ج۲،ص۳۷۸)

﴾2﴿...... जब कि एक और रिवायत में है : ''जिस ने इन में से किसी एक को छोड़ा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुन्किर है और उस की कोई फ़र्ज़ या नफ़्ल इबादत मक़्बूल नहीं और उस का ख़ून और माल ह़लाल है।''

(الترغیب والترھیب ، کتاب الصلوۃ ، باب الترھیب من ترک الصلوٰۃ......الخ ، الحدیث:۸۲۱،ج۱،ص۲۵۹)

﴾3﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने किसी रुख़्सत और मरज़ के बिग़ैर र-मज़ानुल मुबारक का एक रोज़ा छोड़ा वोह सारी ज़िन्दगी के रोज़े रखे तब भी उस की कमी पूरी नहीं कर सकता।''

(جامع الترمذی،ابواب الصوم ، باب ماجاء فی الافطارمتعمداً ،الحدیث: ۷۲۳،ص۱۷۱۸)

﴾4﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है : ''जिस ने र-मज़ानुल मुबारक के एक दिन का रोज़ा किसी उ़ज़्र या मरज़ के बिग़ैर तोड़ दिया अगर्चे वोह सारी ज़िन्दगी के रोज़े रखे उस की कमी पूरी नहीं कर सकता।''

(صحیح البخاری، کتاب الصوم ، باب(۲۹) اذا جامع فی رمضان،ص ۱۵۱)

﴾5﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा और इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जिस ने माहे र-मज़ानुल मुबारक के एक दिन का रोज़ा तोड़ दिया सारी ज़िन्दगी के रोज़े उस की कमी पूरी नहीं कर सकते।''

(المرجع السابق)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना इमाम नख़्ई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस में मुबा-लग़ा करते हुए र-मज़ानुल मुबारक का एक रोज़ा छोड़ने वाले पर **3000** दिनों के रोज़े वाजिब होने का क़ौल फ़रमाया, जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुसय्यब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि उस पर र-मज़ानुल मुबारक के हर दिन के इवज़ **30** दिन के रोज़े वाजिब हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के उस्ताज़ सय्यिदुना रबीअ़ा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हर दिन के इवज़ **12** दिन के रोज़े रखना वाजिब है।" जब कि अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی का येह कहना है : "हर दिन के बदले एक ही रोज़ा काफ़ी है अगर्चे वोह साल के सब से छोटे दिन का रोज़ा ही क्यूं न हो जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान से ज़ाहिर है :

فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ (پ۲،البقرۃ:۱۸۴) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो इतने रोज़े और दिनों में।

《6》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं सो रहा था अचानक मेरे पास दो शख़्स आए, उन्हों ने मुझे मेरे बाज़ू से थामा और एक बुलन्द पहाड़ के पास ले आए और बोले "ऊपर तशरीफ़ ले चलें।" मैं ने कहा : "मैं इस की त़ाक़त नहीं रखता।" वोह बोले : "हम इसे आप के लिये आसान कर देंगे।" लिहाज़ा मैं ऊपर चढ़ने लगा यहां तक कि जब मैं पहाड़ के दरमियान पहुंचा तो ख़ौफ़नाक आवाज़ें आने लगीं, मैं ने पूछा : "येह आवाज़ें कैसी हैं?" उन्हों ने जवाब दिया : "येह जहन्नमियों के चीख़ने की आवाज़ें हैं।" फिर वोह मुझे ले कर ऐसे लोगों के पास आए जो घुटनों के बल लटके हुए थे, उन के जबड़ों से ख़ून बह रहा था, मैं ने पूछा "येह लोग कौन हैं।" जवाब मिला : "येह वोह लोग हैं जो रोज़ा इफ़्त़ार करने का जाइज़ वक़्त होने से पहले ही रोज़ा इफ़्त़ार कर लेते थे।"

(صحیح ابن خزیمہ ، کتاب الصیام، باب ذکر تعلیق المفطرین قبل وقت......الخ، الحدیث: ۱۹۸۶،ج۳،ص۲۳۷)

《7》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम में **4** चीज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, जिस ने इन में से **3** पर अ़मल किया तो वोह उसे किसी काम न आएंगी जब तक कि वोह इन तमाम को अदा न करे : (1) नमाज़ (2) ज़कात (3) र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े और (4) बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۱۷۸۰۴،ج۶،ص۲۳۶)

《8》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने ह़ज़र (या'नी क़ियाम की ह़ालत) में र-मज़ानुल मुबारक का एक रोज़ा इफ़्त़ार किया उसे चाहिये कि एक गाय क़ुरबान करे।"

(سنن الدارقطنی ، کتاب الصیام ، باب القبلة للصائم، الحدیث :۲۲۸۵،ج۲،ص۲۴۲)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की तस्रीह की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और इस की दलील ऊपर मज़्कूर हो चुकी है और इस से येह भी ज़ाहिर होता है कि वोह वाजिब जिस के वक़्त में तंगी हो या'नी जिस का कोई मख़्सूस वक़्त मुक़र्रर हो म-सलन मन्नत का रोज़ा तो उसे भी बिग़ैर उ़ज़्र तोड़ देना कबीरा गुनाह है।

याद रखें ! इस से येह भी ज़ाहिर होता है कि नमाज़ और ज़कात की वई़दों के रोज़े की वई़दों से ज़ियादा आने की हि़क्मत येह है कि कोई शख़्स क़ुदरत के बा वुजूद सुस्ती करते हुए इसे तर्क नहीं करता जब कि अक्सर लोग नमाज़ और ज़कात में सुस्ती करते हैं ह़ालां कि वोही लोग रोज़ों की पाबन्दी करते हैं इस लिये आप ने बहुत से लोगों को देखा होगा कि वोह रोज़ा रखते हैं मगर नमाज़ नहीं पढ़ते और बहुत से ऐसे होते हैं जो र-मज़ानुल मुबारक के इ़लावा नमाज़ पढ़ते ही नहीं।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **142 :** **माहे र-मज़ान के क़ज़ा रोज़ों में जान बूझ कर ताख़ीर करना**

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना भी बिल्कुल ज़ाहिर है अगर्चे मैं ने किसी को इस की सराहत करते हुए नहीं पाया क्यूं कि येह बात तो साबित हो चुकी है कि जो र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा जान बूझ कर छोड़े वोह फ़ासिक़ है और उस पर फ़िस्क़ से निकलने के लिये फ़ौरन तौबा करना वाजिब है और चूंकि क़ज़ा के बिग़ैर तौबा दुरुस्त नहीं होती लिहाज़ा जब वोह किसी उ़ज़्र के बिग़ैर इस में ताख़ीर करेगा तो फ़िस्क़ में ह़द से बढ़ने वाला होगा और फ़िस्क़ में ह़द से बढ़ना भी फ़िस्क़ है पस वाज़ेह़ हुवा कि यहां ताख़ीर करना फ़िस्क़ है लिहाज़ा इस में ग़ौर कर लो।

येही क़ाइदा हर उस वाजिब में भी जारी होगा जिसे उस ने जान बूझ कर तर्क कर दिया हो और उस की क़ज़ा में ताख़ीर कर दी हो जैसे फ़र्ज़ नमाज़[1] और वोह ह़ज जिसे उस ने फ़ासिद कर दिया हो और उसे इस सूरत पर जारी करना भी बईद नहीं जब कि वोह एक माहे र-मज़ानुल मुबारक के रोज़ों की क़ज़ा दूसरे माहे र-मज़ानुल मुबारक तक मुअख़्ख़र कर दे, अगर्चे उस ने वोह रोज़ा किसी उ़ज़्र की वजह से तर्क किया हो क्यूं कि माहे र-मज़ानुल मुबारक की कुरबत की वजह से उस का वक़्त तंग हो जाता है फिर मैं ने अ़ल्लामा हरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा कि उन्हों ने अपनी किताब **अ-दबुल क़ज़ा** में मेरे बयान कर्दा मौक़िफ़ की तस्रीह़ की है कि जिन फ़राइज़ का हुक्म दिया गया है उन को तर्क कर देना जब कि वोह अ़लल फ़ौर वाजिब हों, कबीरा गुनाह है।

---

1 : अह़नाफ़ के नज़्दीक अगर्चे नमाज़ की क़ज़ा में जल्दी करना वाजिब है, लेकिन बच्चों के लिये खाने पीने का इन्तिज़ाम करने की ज़िम्मादारी की वजह से इस में ताख़ीर करना जाइज़ है। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَوِى **''बहारे शरीअ़त''** में नक़्ल फ़रमाते हैं : ''जिस के ज़िम्मे कज़ा नमाज़ें हों अगर्चे उन का पढ़ना जल्द से जल्द वाजिब है मगर बाल बच्चों की ख़ुर्दो नोश और अपनी ज़रूरिय्यात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर भी जाइज़ है तो कारोबार भी करे और जो वक़्त फ़ुरसत का मिले उस में क़ज़ा भी पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं, क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं उ़म्र में जब पढ़ेगा बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएगा।'' (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 26,27)

क़ज़ा नमाज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 4 और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ **नमाज़ के अह़काम** के बाब **''क़ज़ा नमाज़ का बयान''** का मुता-लआ करें।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 143 : औरत का शोहर की मौजू-दगी में उस की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली रोज़ा रखना

《1》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी औरत के लिये जाइज़ नहीं कि अपने शोहर की मौजू-दगी में उस की इजाज़त के बिग़ैर रोज़ा रखे और न ही शोहर की मरज़ी के बिग़ैर किसी को घर में दाख़िल होने की इजाज़त दे।"

(صحیح البخاری، کتاب النکاح ، باب لاتأذن المرأۃ فی بیت ......الخ، الحدیث: ۵۱۹۵، ص ۴۴۹)

《2》...... सय्यिदुना इमाम अहमद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "सिवाए (माहे) र-मज़ानुल मुबारक के (या'नी इस माह में औरत शोहर की इजाज़त के बिग़ैर भी रोज़ा रख सकती है)।"

(المسند للاما م احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرہ ، الحدیث: ۹۷۴۰،ج۳،ص ۴۵۱)

《3》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "औरत र-मज़ानुल मुबारक के इलावा शोहर की मौजू-दगी में उस की इजाज़त के बिग़ैर किसी दिन का रोज़ा न रखे।" (جامع الترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ماجاء فی کراھیۃ......الخ،الحدیث:۷۸۲،ص۱۷۲۴)

《4》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो औरत शोहर की इजाज़त के बिग़ैर रोज़ा रखे फिर उस का शोहर उस के साथ किसी काम (या'नी हम बिस्तरी वग़ैरा) का इरादा करे लेकिन वोह मन्अ़ कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औरत पर तीन कबीरा गुनाह लिखता है।" (المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۳،ج۱،ص۱۶)

《5》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "औरत पर शोहर के हुक़ूक़ में से एक हक़ येह भी है कि वोह उस की इजाज़त के बिग़ैर रोज़ा न रखे फिर अगर उस ने ऐसा किया तो भूकी प्यासी रहेगी और उस का रोज़ा क़बूल न होगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب النکاح، باب حق الزوج علی المرأۃ ، الحدیث: ۷۶۳۸،ج۴،ص۵۶۳)

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है हालां कि मैं ने किसी को इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करते हुए नहीं देखा मगर येह तीसरी ह़दीसे पाक का बिल्कुल सरीह़ बयान है और अगर येह तस्लीम भी कर लिया जाए कि ग़रीब होने की वजह से इस से इस्तिद्लाल करना सहीह़ नहीं तब भी इस के कबीरा गुनाह होने पर एक दूसरे हुक्म की वजह से इस्तिद्लाल किया जा सकता है जिस की त़रफ़ पहली ह़दीसे पाक में इन अल्फ़ाज़ के साथ इशारा किया गया है : "और शोहर की मरज़ी के बिग़ैर उस के घर में किसी को दाख़िल होने की इजाज़त न दे।" और इस ह़दीसे पाक में जिस अम्र की

www.dawateislami.net

तरफ़ इशारा किया गया है वोह औरत का रोज़ा वगैरा पर मुक़द्दम हक़ या'नी वती से रोकने के सबब शोहर को ईज़ा देना है, क़त्ए नज़र इस बात के कि शरअन उस के लिये वती करना लाज़िम हो तो गुनाह औरत पर होगा क्यूं कि आम तौर पर इन्सान इबादत को बातिल करने से डरता है जैसा कि इस की तसरीह गुज़र चुकी है और जब वोह डरेगा तो औरत से वती करने से रुक जाएगा अगर्चे उसे वती करने की ज़रूरत हो पस यक़ीनन उसे शदीद तक्लीफ़ पहुंचेगी और इस में कोई शक नहीं कि दूसरे के हक़ को रोकने या इस का सबब बनने के साथ साथ उस को शदीद तक्लीफ़ पहुंचाना कबीरा गुनाह है पस जो मैं ने ज़िक्र किया इस में ग़ौरो फ़िक्र करें और हदीसे पाक भी यहां इस मौक़िफ़ को तक़्विय्यत दे रही है।

﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽

कबीरा नम्बर 144 : ईदैन और अय्यामे तशरीक़[1] के रोज़े रखना

《1》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : "यौमे फ़ित्र, यौमे नहर और अय्यामे तशरीक़ हम मुसल्मानों की ईदें हैं और येह खाने पीने के दिन हैं।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الصیام، باب صیام ایام التشریق، الحدیث:٢٤١٩،ص١٤٠٢)

《2》...... हज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने यौमे फ़ित्र और क़ुरबानी के दिन के इलावा सारा साल रोज़े रखे। (سنن ابن ماجة، ابواب الصیام، باب ماجاء فی صیام نوح علیه السلام، الحدیث: ١٧١٤،ص٢٥٧٩)

《3》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "2 दिन रोज़ा रखना दुरुस्त नहीं : (1) क़ुरबानी के दिन और (2) र-मज़ानुल मुबारक के बा'द फ़ित्र के दिन।" (صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب تحریم صوم یومی العیدین، الحدیث: ٢٦٧٣،ص٨٦٠)

《4》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इन अय्यामे तशरीक़ में रोज़े मत रखा करो क्यूं कि येह खाने, पीने के दिन हैं।"

(المسندللامام احمد بن حنبل،الحدیث: ١٦٠٣٨،ج٥،ص٤٢٨،بدون "یوم التشریق")

---

1 : अहनाफ़ के नज़्दीक : "ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्हा और अय्यामे तशरीक़ (या'नी ग्यारह, बारह और तेरह ज़ुल हिज्जतिल हराम) के रोज़े मक्रूहे तहरीमी हैं।" (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 5, स. 50)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इन अय्याम में रोज़ा रखने की मुमा-न-अ़त पर बहुत सी अह़ादीसे मुबा-रका आई हैं जो इस बात का एह़तिमाल रखती हैं कि इन अय्याम में रोज़ा रखना कबीरा गुनाह है क्यूं कि इन में रोज़ा रखने में बन्दों का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ियाफ़त से ए'राज़ पाया जा रहा है।

रोज़ों के फ़ज़ाइल पर अह़ादीसे मुबा-रका

मैं ने इस के बारे में एक किताब लिखी है जिस का नाम ''اِتِّحَافُ اَهْلِ الْاِسْلَامِ بِخُصُوْصِيَاتِ الصِّيَامِ'' रखा है और येह अह़ादीसे मुबा-रका उस किताब का ख़ुलासा हैं।

《5》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''आदमी का हर अ़मल उस के अपने लिये है सिवाए रोज़े के क्यूं कि वोह मेरे लिये है और उस की जज़ा मैं दूंगा।'' और रोज़ा ढाल है (या'नी जहन्नम से बचाता है) लिहाज़ा जब तुम में से कोई रोज़े से हो तो न बेहूदा बात करे न ही चीख़ो पुकार करे, फिर अगर कोई उसे गाली दे या झगड़ा करे तो उसे चाहिये कि वोह कह दे : ''मैं रोज़े से हूं।'' उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में (ह़ज़रते सय्यिदुना) मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है ! रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की बू से ज़ियादा पाकीज़ा है।''

(صحیح البخاری، کتاب الصوم ، باب ھل یقول انی صائم اذا شتم ، الحدیث: ۱۹۰۴،ص۱٤۹)

《6》...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''रोज़ादार के लिये दो ख़ुशियां हैं : (1) जब वोह इफ़्त़ार करता है तो (त़ब्ई त़ौर एक अ़ज़ीम इ़बादत की तक्मील पर) ख़ुश होता है और (2) जब वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करेगा तो अपने रोज़े पर ख़ुश होगा'' (या'नी अ़ज़ीम सवाब मिलने पर ख़ुश होगा, इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह बताने के लिये रोज़े की निस्बत अपनी त़रफ़ फ़रमाई कि ग़ैर इस का सवाब शुमार नहीं कर सकता)।

(المرجع السابق، الحدیث:۱۹۰٤،ص۱٤۹)

《7》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आदमी के हर अ़मल में इज़ाफ़ा होता है एक नेकी **10** से **100** गुना तक बढ़ा दी

www.dawateislami.net

जाती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मगर रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा दूंगा, वोह मेरे लिये अपनी ख़्वाहिश और खाने को छोड़ देता है।''

(صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب فضل الصيام، الحديث: ٢٧٠٧، ص٨٦٢)

《8》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! रोज़ादार के मुंह की बू क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की बू से ज़ियादा पाकीज़ा होगी।''

(صحيح البخاري، كتاب الصوم ، باب هل يقول انى صائم اذا شتم ، الحديث: ١٩٠٤، ص١٤٩، بدون "يوم القيامة")

《9》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसे रय्यान कहा जाता है, क़ियामत के दिन उस में से सिर्फ़ रोज़ादार ही दाख़िल होंगे इन के इलावा कोई दाख़िल न होगा, फिर जब रोज़ादार दाख़िले जन्नत हो जाएंगे तो वोह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा, फिर कभी भी कोई उस में से दाख़िल न हो सकेगा और जो उस में से दाख़िल होगा वोह वहां के शरबत पियेगा और जो वोह शरबत पी लेगा वोह कभी प्यासा न होगा।''

(صحيح البخاري، كتاب الصوم ، باب الريّان للصائمين ، الحديث: ١٨٩٦، ص١٤٨، بدون "من دخل الى ابدا")

《10》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिहाद करो ग़नीमत पाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे और (तिजारत के लिये) सफ़र करो ग़नी हो जाओगे।'' (المعجم الاوسط، الحديث: ٨٣١٢، ج٦، ص١٤٦)

《11》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''रोज़ा ढाल है और जहन्नम से बचाव के लिये बेहतरीन क़ल्आ है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابى هريرة، الحديث: ٩٢٣٦، ج٣، ص٣٦٧)

《12》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''रोज़ा और क़ुरआने करीम क़ियामत के दिन बन्दे के लिये शफ़ाअ़त करेंगे, रोज़ा अ़र्ज़ करेगा : ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने इसे खाने पीने और ख़्वाहिश से रोके रखा, लिहाज़ा इस के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।'' और क़ुरआने करीम अ़र्ज़ करेगा : ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने इसे रात के वक़्त सोने से रोके रखा, लिहाज़ा इस के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।'' शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''उन दोनों की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٦٦٣٧، ج٢، ص٥٨٦)

www.dawateislami.net

《13》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "रोज़े को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि इस जैसा अमल कोई नहीं।"

(سنن النسائی، کتاب الصیام، باب ذکر الاختلاف علی محمد بن ابی یعقوب......الخ،الحدیث: ۲۲۲٤،ص۲۲۳۲)

《14》...... रहमते कौनैन, ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो बन्दा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक रोज़ा रखता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस एक दिन की वजह से उस के चेहरे को जहन्नम से **70** साल (की मसाफ़त) दूर फ़रमा देता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام فی سبیل الله لمن یطیقه ......الخ، الحدیث: ۲۷۱۱،ص۸٦۲)

《15》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने एक दिन राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोज़ा रखा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान ज़मीन व आस्मान के दरमियानी फ़ासिले की मिक़्दार ख़न्दक़ खोद देगा।"

(جامع الترمذی، ابواب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل الصوم فی سبیل الله ،الحدیث: ۱٦۲٤،ص۱۸۱۹)

《16》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने एक दिन राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोज़ा रखा जहन्नम उस से **100** साल की मसाफ़त तक दूर हो जाता है।"

(المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۲٤۹،ج۲،ص۲٦۸)

यहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह के लश्कर जिहाद के साथ मख़्सूस हैं जब कि बा'ज़ का कहना है कि इस से मुराद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास है।

《17》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**3** शख़्सों की दुआ नहीं लौटाई जाती (इन में से एक) इफ़्तार करते वक़्त रोज़ादार भी है।"

《18》...... एक और रिवायत में है : (1) रोज़ादार यहां तक कि वोह इफ़्तार कर ले (2) इन्साफ़ पसन्द बादशाह और (3) मज़्लूम की दुआ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बादल से ऊपर उठा लेता है और उस के लिये आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और रब عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद करूंगा अगर्चे कुछ देर बा'द।"

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب سبق المفردون......الخ،الحدیث:۳۵۹۸،ص۲۰۲۲)

《19》...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो ईमान और एहतिसाब के साथ र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे (या'नी वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वहदानियत की तस्दीक़ करता और उस के सवाब की उम्मीद रखता हो नीज़ उस की रिज़ा और उस के

www.dawateislami.net

अ़ज़ीम इन्आमात का तृलब गार हो) उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जो शख़्स शबे क़द्र में ईमान व एह़तिसाब के साथ क़ियाम करे उस के भी पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।"

(صحیح البخاری، کتاب الصوم ، باب من صام رمضان ایمانا ......الخ،الحدیث:۱۹۰۱،ص۱۴۸،بتقدمٍ و تأخرٍ)

जब कि एक रिवायत में अगले पिछले गुनाहों की मग़्फ़िरत का तज़्किरा है।

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ،الحدیث: ۹۰۱۱،ج۳،ص۳۳۳)

﴾20﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे और इस की हुदूद की हि़फ़ाज़त की (या'नी इस की हुरमत का ख़याल रखा) और जिन कामों से बचना चाहिये उन से बचता रहा तो उस के पिछले गुनाह मिटा दिये जाएंगे।"

(تاریخ بغداد، باب الدال، دجی بن عبدالله ، الحدیث: ۴۴۹۶،ج۸،ص۳۸۷)

﴾21﴿...... साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "5 नमाज़ें, जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक और र-मज़ानुल मुबारक अगले र-मज़ानुल मुबारक तक दरमियान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कबीरा गुनाहों के इरतिकाब से बचा जाए।"

(صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ ، باب الصلوات الخمس والجمعۃ ......الخ،الحدیث: ۵۵۲،ص ۷۲۰)

﴾22﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मिम्बर के क़रीब आ जाओ।" तो हम मिम्बर के क़रीब ह़ाज़िर हो गए, फिर जब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले ज़ीने पर क़दम रखा तो फ़रमाया : "आमीन।" जब दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो फ़रमाया : "आमीन।" जब तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो फ़रमाया : "आमीन।" जब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए तो हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज हम ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ऐसी बात सुनी है जो पहले कभी न सुनी थी।" आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ने मेरे पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "जो र-मज़ानुल मुबारक को पाए फिर भी उस की मग़्फ़िरत न हो तो वोह हलाक हो।" लिहाज़ा मैं ने आमीन कही, जब मैं ने दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो उस ने अ़र्ज़ की : "जिस के सामने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़े वोह हलाकत में मुब्तला हो।" तो मैं ने कहा : आमीन, जब मैं ने तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो उस ने अ़र्ज़ की : "जिस ने अपने वालिदैन या इन में से एक को बुढ़ापे में पाया फिर भी उन्हों ने उसे जन्नत में दाख़िल न कराया तो वोह हलाकत में मुब्तला हो।" तो मैं ने आमीन कही।"

(المستدرک،کتاب البر والصلۃ،باب لعن الله العاق لوالدیه......الخ،الحدیث:۷۳۳۸،ج۵،ص۲۱۲)

www.dawateislami.net

हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल रात

﴾23﴿...... हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के आख़िरी दिन हमें ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ लोगो** ! ब-र-कतों और अ़-ज़-मतों वाला महीना आ गया है, वोह महीना कि जिस में एक रात ऐसी है जो हज़ार **1000** महीनों से बेहतर है, वोह महीना कि जिस के रोज़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने फ़र्ज़ फ़रमाए हैं और इस की रात में क़ियाम को नफ़्ल (या'नी सुन्नत) फ़रमाया है, जिस ने इस महीने में कोई नेक काम किया गोया उस ने दीगर महीनों में फ़र्ज़ अदा किया और जिस ने इस महीने में एक फ़र्ज़ अदा किया गोया उस ने दीगर महीनों में **70** फ़राइज़ अदा किये, येह सब्र का महीना है और सब्र का सवाब जन्नत है, येह ग़म गुसारी का महीना है, इस महीने में मोमिन के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है, इस महीने में जो किसी मुसल्मान को रोज़ा इफ़्त़ार कराएगा तो वोह उस के गुनाहों की मग़्फ़िरत का बाइस होगा और उस की गरदन (जहन्नम की) आग से आज़ाद कर दी जाएगी, नीज़ उसे उस रोज़ादार के बराबर सवाब मिलेगा और रोज़ादार के सवाब में भी कोई कमी न होगी।"

रावी फ़रमाते हैं, हम ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक रोज़ादार को इफ़्त़ार कराने की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ येह सवाब उसे अ़ता फ़रमाएगा जो रोज़ादार को एक खजूर, एक घूंट पानी या दूध के एक घूंट से इफ़्त़ार कराएगा, इस महीने का पहला अ़-शरा रह़मत, दूसरा मग़्फ़िरत और तीसरा जहन्नम से नजात का है, जो इस महीने में अपने ग़ुलाम पर तख़्फ़ीफ़ करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा कर उसे जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा, इस महीने में **4** कामों की कसरत करो : **2** ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिन के ज़रीए तुम अपने रब عَزَّ وَجَلَّ को राज़ी कर सकते हो और **2** ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिन से तुम बे नियाज़ नहीं हो सकते, वोह **2** ख़स्लतें जिन के ज़रीए तुम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को राज़ी कर सकते हो : वोह (1) لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ की गवाही और (2) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार है, जब कि वोह **2** ख़स्लतें जिन से तुम बे नियाज़ नहीं हो सकते : वोह (1) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से जन्नत का सुवाल करना और (2) जहन्नम से उस की पनाह चाहना है और जो शख़्स इस महीने में किसी रोज़ादार को सैराब करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे मेरे ह़ौज़ से ऐसा शरबत पिलाएगा जिस के बा'द वोह कभी प्यासा न होगा।"

(صحیح ابن خزیمۃ، کتاب الصیام، باب فضائل شھر رمضان......الخ، الحدیث:۱۸۸۷، ج۳، ص۱۹۱)

﴾24﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने माहे र-मज़ानुल मुबारक में किसी रोज़ादार को ह़लाल कमाई से इफ़्त़ारी कराई मलाएका र-मज़ानुल मुबारक की तमाम रातों में उस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़एं करते हैं और

www.dawateislami.net

हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام शबे क़द्र में उस से मुसा-फ़हा फ़रमाते हैं और जिस से हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मुसा-फ़हा फ़रमाएं उस का दिल नर्म हो जाता है और उस के आंसूओं में इज़ाफ़ा हो जाता है।"

(شعب الایمان،باب فی الصیام،فصل فی من فطرصائما،الحدیث:۳۹۵۵،ج۳،ص۴۱۹)

﴿25﴾...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब र-मज़ानुल मुबारक का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को बेड़ियों से बांध दिया जाता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الصیام،باب فضل شھررمضان،الحدیث:۲۴۹۵،ص۸۵۰)

﴿26﴾...... एक और रिवायत में है : "शयातीन और सरकश जिन्नों को क़ैद कर दिया जाता है।"

(جامع الترمذی،ابواب الصوم،باب ماجاء فی فضل شھررمضان، الحدیث:۶۸۲، ص۱۷۱٤)

﴿27﴾...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब माहे र-मज़ानुल मुबारक की पहली रात आती है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं पूरा महीना उस का एक दरवाज़ा भी बन्द नहीं होता और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं पूरा महीना उस का एक दरवाज़ा भी नहीं खोला जाता और सरकश जिन्नात को बेड़ियों में जकड़ दिया जाता है। हर रात फ़ज्र तुलूअ होने तक एक मुनादी येह निदा देता रहता है : "ऐ ख़ैर के तलब गार ! नेकी को पूरा कर (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअत में आगे बढ़) और खुश हो जा और ऐ बदी के तलब गार ! बुराई में कमी कर और इब्रत हासिल कर, है कोई मग़्फ़िरत चाहने वाला कि जिस की मग़्फ़िरत की जाए ? है कोई तौबा करने वाला कि जिस की तौबा क़बूल की जाए ? है कोई दुआ मांगने वाला कि जिस की दुआ क़बूल की जाए ? है कोई मुराद मांगने वाला कि जिस की मुराद पूरी की जाए ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से र-मज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्तार के वक़्त साठ हज़ार गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनहगारों को बख़्शिश अता फ़रमाता है या'नी तीस मरतबा साठ हज़ार की बख़्शिश होती है।"

(شعب الایمان،باب فی الصیام،فضائل شھررمضان،الحدیث:۳۶۰۶،ج۳،ص۳۰٤)

www.dawateislami.net

كتاب الاعتكاف

ए'तिकाफ़ का बयान

कबीरा नम्बर **145 :** **ए'तिकाफ़ तर्क करना**

कबीरा नम्बर **146 :** **ए'तिकाफ़ तोड़ना**

कबीरा नम्बर **147 :** **मस्जिद में जिमाअ़ करना**

या'नी

(1) उस नज़्र माने हुए ए'तिकाफ़ को छोड़ देना कि जिस को फ़ौरन पूरा किया जाना लाज़िमी हो

(2) किसी मुफ़्सिदे ए'तिकाफ़ काम का मुर-तकिब हो कर इस को तोड़ देना और

(3) मस्जिद की हुरमत को पामाल करना ख़्वाह कोई ग़ैरे मो'तकिफ़ ही क्यूं न हो

इन गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना मुम्किन है, इन में से दो गुनाहों को तो र-मज़ानुल मुबारक वग़ैरा में गुज़श्ता "वुजूब और वक़्त की तंगी" के क़ाइदे पर क़ियास कर के कबीरा गुनाह क़रार दिया गया है, जब कि तीसरे को कबीरा गुनाह क़रार देने की वजह येह है कि इस सूरत में इस के मुर-तकिब से दीन और दीनदारी को हलका जानने की शदीद तरीन बुराई साबित हो जाती है क्यूं कि मस्जिदें ऐसे कामों से पाक हैं और येह बात पीछे बयान हो चुकी है कि मसाजिद को गन्दगी से आलूदा करना कुफ़्र है, लिहाज़ा इस में जिमाअ़ करना कबीरा गुनाह होना चाहिये क्यूं कि इस में नजासत आलूदा अश्या को मसाजिद के क़रीब कर के इस की हुरमत को पामाल करना पाया जाता है।

www.dawateislami.net

كتاب الحج

हज का बयान

कबीरा नम्बर 148 : कुदरत के बा वुजूद हज न करना

《1》...... हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो ज़ादे राह और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के घर तक पहुंचाने वाली सुवारी का मालिक हो फिर भी हज न करे तो ख़्वाह वोह यहूदी हो कर मरे या नसरानी।" इस की वजह येह है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًاؕ (پ۴،اٰل عمران:۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का हज करना है जो इस तक चल सके।

(جامع الترمذی، ابواب الحج، باب ماجاء من التغليظ فی ترک الحج، الحديث: ۸۱۲،ص۱۷۲۸)

मज़्कूरा हदीसे पाक अगर्चे ज़ईफ़ है जैसा कि अ़ल्लामा न-ववी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **शर्हुल मुहज़्ज़ब** में कहा है, अलबत्ता ! हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से येह हदीसे पाक सहीह सनद से मरवी है,

《2》...... इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने इरादा कर लिया है कि उन शहरों में उन लोगों को (अमीर बना कर) भेजूं जो जा कर इस्तिताअ़त के बा वुजूद हज न करने वालों को तलाश कर के उन पर जिज़्या लाज़िम करें क्यूं कि वोह मुसल्मान नहीं।"

(تفسير ابن کثير،سورةاٰلِ عمران،تحت الآية :۹۷،ج۲،ص۷۳)

ऐसी बातें चूंकि अपनी राय से नहीं कही जा सकतीं, लिहाज़ा येह मरफ़ूअ़ हदीस के हुक्म में है, इसी वजह से मैं ने इसे सहीह हदीस क़रार दिया है, इस हदीसे पाक को सय्यिदुना इमाम बैहक़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी रिवायत किया है, चुनान्चे फ़रमाते हैं :

《3》...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे कोई ज़ाहिरी हाजत, सख़्त मरज़ या ज़ालिम बादशाह न रोके फिर भी वोह हज न करे तो चाहे यहूदी हो कर मरे या नसरानी।"

(شعب الايمان، باب فی المناسک ، الحديث: ۳۹۷۹،ج۳،ص۴۳۰)

www.dawateislami.net

इस्लाम के 8 हिस्से हैं :

《4》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''इस्लाम के 8 हिस्से हैं : (1) कलिमा एक हिस्सा है (2) नमाज़ एक हिस्सा है (3) ज़कात एक हिस्सा है (4) रोज़ा एक हिस्सा है (5) हज एक हिस्सा है (6) नेकी का हुक्म देना एक हिस्सा है (7) बुराई से मन्अ़ करना एक हिस्सा है और (8) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करना भी एक हिस्सा है और जिस का कोई हिस्सा नहीं वोह रुस्वा होगा।''

(البحرالزخاربمسندالبزار،مسند حذیفة بن الیمان، الحدیث:۲۹۲۷،ج۷،ص۳۳۰)

《5》...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मैं किसी बन्दे के जिस्म को सिह़ह़त मन्द बनाऊं और उस की रोज़ी में वुस्अ़त अ़ता करूं फिर उस पर पांच साल गुज़र जाएं और वोह मेरी बारगाह में ह़ाज़िर न हो तो बेशक वोह मह़रूम है।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الحج،باب فی فضل الحج والعمرة، الحدیث: ۳۶۹۵،ج۶،ص۶)

हज़रते अ़ली बिन मुन्ज़िर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे चन्द दोस्तों ने बताया कि हज़रते ह़सन बिन ह़य्य رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह ह़दीसे पाक बहुत पसन्द थी और वोह इसी ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल करते हुए ख़ुशह़ाल शख़्स के लिये येह पसन्द करते थे कि वोह मुसल्सल पांच साल ह़ज तर्क न करे।

《6》...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स ह़ज न करे न ही अपने माल की ज़कात अदा करे वोह मौत के वक़्त मोहलत मांगेगा।'' उन से कहा गया : ''मोहलत तो कुफ़्फ़ार मांगेंगे।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब में है। चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰکُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ اَحَدَکُمُ الْمَوْتُ فَیَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِیْۤ اِلٰۤی اَجَلٍ قَرِیْبٍۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ0

(پ۲۸،المنٰفقون:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब ! तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं स-दक़ा देता और नेकों में होता।

(المعجم الکبیر،الحدیث:۱۲۶۳۵/۳۶،ص۹۰)

ह़ज अदा न करने वाले की मह़रूमी :

《7》...... हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है : ''मेरा एक मालदार पड़ोसी मर गया उस ने ह़ज अदा नहीं किया था तो मैं ने उस पर नमाज़ (जनाज़ा) न पढ़ी।''

(مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الحج،باب فی الرجل یموت ولم یحج وھوموسر،الحدیث:۴،ج۴،ص۳۹۲)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इस गुनाह को उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی सराहत की वजह से कबीरा गुनाह शुमार किया गया है और इस की दलील सख़्त वईद है।

सुवाल : क़ुदरत के बा वुजूद ह़ज न करने वाले पर उस की मौत के बा'द फ़िस्क़ का हुक्म लगाने का फ़ाएदा क्या है ?

जवाब : आख़िरत के ए'तिबार से तो बिल्कुल वाज़ेह़ है जब कि दुन्यवी अह़काम के ए'तिबार से इस के चन्द फ़वाइद हैं कि क़ुदरत के सालों के आख़िर में उस का फ़ासिक़ हो कर मरना ज़ाहिर हो जाएगा, इस सूरत में उस ने जो गवाही दी या जो फ़ैसला किया उस का बात़िल होना ज़ाहिर होगा, नीज़ ना बालिग़ बच्चों के निकाह़ कराने और हर उस चीज़ का मुआ़-मला है जिस में अ़दालत शर्त़ है क्यूं कि क़ुदरत के सालों में से आख़िरी साल में उस के अ़मल का बात़िल होना उस की मौत के सबब ज़ाहिर हो जाता है और येह वोह अ़ज़ीम फ़वाइद हैं जो वज़ाह़त के मोह़ताज हैं।

اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه اللّٰه

कबीरा नम्बर : 149 : एह़राम खोलने से पहले अपने इख़्तियार से जिमाअ़ करना

या'नी ह़ज या उ़म्रे के दौरान एह़राम खोलने से पहले जान बूझ कर अपने इख़्तियार से जिमाअ़ करना या'नी उ़ज़्वे तनासुल की सुपारी या इस की मिक़्दार, अगर्चे कटे हुए उ़ज़्व से हो, किसी (इन्सान या चौपाए) की फ़रज में दाख़िल करना[1]

अगर्चे मैं ने इस के बारे में न तो कोई वईद देखी है न ही किसी को इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करते हुए पाया है, मगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक जिमाअ़ के ज़रीए रोज़ा

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **''बहारे शरीअ़त''** में इस मस्अले की चन्द जुज़्इय्यात नक़्ल फ़रमाते हैं, जो येह हैं : ''जानवर या मुर्दा या बहुत छोटी लड़की से जिमाअ़ किया तो ह़ज फ़ासिद न होगा इन्ज़ाल हो या नहीं मगर इन्ज़ाल हुवा तो दम लाज़िम......औ़रत ने जानवर से वत़ी कराई या किसी आदमी या जानवर का कटा हुवा आला अन्दर रख लिया ह़ज फ़ासिद हो गया...... वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा से पहले जिमाअ़ किया तो ह़ज फ़ासिद हो गया उसे ह़ज की त़रह़ पूरा कर के दम दे और साले आयन्दा ही में उस की क़ज़ा कर ले, औ़रत भी एह़रामे ह़ज में थी तो उस पर भी येही लाज़िम है...... वुक़ूफ़ के बा'द जिमाअ़ से ह़ज तो न जाएगा मगर ह़ल्क़ व त़वाफ़ से पहले किया तो ब-दना दे और ह़ल्क़ के बा'द (किया) तो दम और बेहतर अब भी ब-दना है और दोनों के बा'द किया तो कुछ नहीं, त़वाफ़ से मुराद अक्सर है या'नी **चार** फेरे हैं।'' (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 6, स. 74,75)

www.dawateislami.net

तोड़ने को कबीरा गुनाह क़रार देने पर क़ियास की वजह से, जिमाअ़ के ज़रीए ह़ज के अरकान फ़ासिद करने का हुक्म भी येही होना चाहिये बल्कि इस का कबीरा होना औला है कि रोज़ादार जब जिमाअ़ के इलावा किसी और ज़रीए से रोज़ा फ़ासिद करे तो उस पर गुनाह और रोज़ा क़ज़ा करने के इलावा कोई और चीज़ लाज़िम नहीं होती जब कि यहां उस पर गुनाह और फ़ासिद कर्दा अ़मल की क़ज़ा के साथ साथ कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होता है और वोह कफ़्फ़ारा एक ऊंट ज़ब्ह़ करना है जो कि पूरे पांच साल का होता है अगर वोह इस से आ़जिज़ हो तो सनिय्या गाय ज़ब्ह़ करे जो कि पूरे दो साल की होती है अगर इस से भी आ़जिज़ हो तो सात जज़्आ़ बकरियां ज़ब्ह़ करे जज़्आ़ एक सालह बकरी को कहते हैं, जब कि सनिय्या दो सालह बकरी को कहते हैं, अगर इस से भी आ़जिज़ हो तो एक ब-दना (या'नी कुरबानी के जानवर) की क़ीमत से इतनी गन्दुम ख़रीदे जितनी फ़ित्रे में किफ़ायत करती है और उसे स-दक़ा कर दे और अगर इस से भी आ़जिज़ हो तो हर मुद या'नी तक़रीबन **2** किलो **25** ग्राम के इवज़ में एक रोज़ा रखे और फ़साद पूरा करे और ह़रम में रोज़ा रखना ज़ियादा बेहतर है।

कबीरा नम्बर **150 :**

मोह़रिम का शिकार करना

या'नी मोह़रिम का ह़ज या उ़म्रे के दौरान खाए जाने वाले जंगली शिकार को क़त्ल करना, अगर्चे वोह मख़्लूक़ से मानूस हो या इन सिफ़ात में से किसी एक सिफ़त के ह़ामिल जानवर को जान बूझ कर इख़्तियार से क़त्ल करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ (پ۷، المآئدة:۹۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शिकार न मारो जब तुम एह़राम में हो और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे तो इस का बदला येह है कि वैसा ही जानवर मवेशी से दे तुम में कि दो सिक़ा आदमी इस का हुक्म करें येह कुरबानी हो का'बा को पहुंचती या कफ़्फ़ारा दे चन्द मिस्कीनों का खाना या इस के बराबर रोज़े कि अपने काम का वबाल चखे **अल्लाह** ने मुआफ़ किया जो हो गुज़रा और जो अब करेगा **अल्लाह** उस से बदला लेगा और **अल्लाह** ग़ालिब है बदला लेने वाला।

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इस आयते मुबा-रका की सराहत की बिना पर इसे कबीरा गुनाह शुमार किया गया है और उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअत ने भी इस के कबीरा होने की तस्रीह की है, उन्हों ने यहां येह बात भी ज़िक्र की है कि जिस ने शिकार को क़त्ल किया वोह फ़ासिक़ हो जाएगा क्यूं कि उस ने एक क़ाबिले एहतिराम जानवर को बिला ज़रूरत क़त्ल किया, मगर इस में कलाम है और मैं ने इस की तफ़्सील किताब "**अल ईज़ाह**" के हाशिये में ज़िक्र कर दी है।

ज़ाहिर येही है कि एहराम में दीगर मम्नूअ़ अफ़्आल कबीरा गुनाह नहीं क्यूं कि जिस ने येह कहा कि येह अ़मल कबीरा गुनाह है उस ने उस के एहराम के मुहर्रमात में से होने का लिहाज़ नहीं किया बल्कि इस बात का लिहाज़ किया कि उस शख़्स ने एक क़ाबिले एहतिराम जानवर को बिला ज़रूरत क़त्ल किया है, अलबत्ता इस से येह ज़रूर साबित होता है कि मोहरिम का ऐसे जानवर को किसी क़िस्म की ऐसी ईज़ा देना जिस को वोह आ़दतन बरदाश्त नहीं कर सकता, कबीरा गुनाह है।

﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽

कबीरा नम्बर **151 :** **शोहर की इजाज़त के बिग़ैर एहराम बांधना**

या'नी बीवी का शोहर की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ली हज या उ़म्रे का एहराम बांधना अगर्चे वोह शोहर के घर से बाहर न भी निकले।

इसे गुज़श्ता तफ़्सीली बहस या'नी औ़रत के शोहर की मौजू-दगी में उस की इजाज़त के बिग़ैर रोज़ा रखने, पर क़ियास करते हुए कबीरा गुनाह शुमार किया गया है बल्कि मुद्दत की त़वालत, सफ़र पर मर्द से दूर जाने और उस की बे इ़ज़्ज़ती होने की वजह से इस का कबीरा होना रोज़े से ज़ियादा औला है।

﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 152 : बैतुल ह़राम को ह़लाल ठहराना

《1》...... एक शख़्स ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! कबीरा गुनाह कितने हैं ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''9 हैं : (1) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) किसी मोमिन को नाह़क़ क़त्ल करना (3) जिहाद के दिन मैदान से फ़िरार होना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद खाना (6) पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना (7) मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी करना (8) जादू करना और (9) तुम्हारे क़िब्ले या'नी बैतुल ह़राम के ज़िन्दों और मुर्दों को ह़लाल ठहराना।''

(المستدرك،كتاب الايمان ،باب الكبائر تسع ، الحديث: ٢٠٤ ، ج ١ ، ص ٢٣٣،بدون "عمل السحر '')

(المعجم الكبير،الحديث:١٠١،ج١٧،ص٤٨)

《2》...... एक और रिवायत में है कि रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कबीरा गुनाह 9 हैं : (1) इन में सब से बड़ा गुनाह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शरीक ठहराना है और (2) किसी मोमिन को (नाह़क़) क़त्ल करना (3) सूद खाना (4) यतीम का माल खाना (5) पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना (6) जिहाद के दिन मैदान से फ़िरार होना (7) मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (8) बैतुल ह़राम को ह़लाल ठहराना भी कबीरा गुनाह हैं।'' (शायद यहां किताबत की ग़-लती की वजह से एक गुनाह रह गया)

(السنن الكبرى للبيهقى،كتا ب الشهادات ، باب من تجوز شهادته ......الخ ،الحديث: ٢٠٧٥٢ ، ج ١٠ ، ص ٣١٤)

कबीरा नम्बर 153 : ह़-रमे मक्का में बे दीनी फैलाना

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ 0

(پ١٧،الحج:٢٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस में किसी ज़ियादती का नाह़क़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे।

《1》...... इब्ने अबी ह़ातिम से मरवी है : ''येह आयते मुबा-रका अ़ब्दुल्लाह बिन **उनैस** के बारे में नाज़िल हुई। ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के साथ एक मुहाजिर और एक अन्सारी को भेजा तो वोह अपने नसब पर फ़ख़्र करने लगे इब्ने उनैस को गुस्सा आया और उस ने अन्सारी को क़त्ल कर दिया, फिर मुरतद हो कर मक्का भाग गया।''

(الدرالمنثور،سورة الحج،تحت الآية:٢٥،ج٦،ص٢٧)

www.dawateislami.net

इल्हाद और ज़ुल्म की वज़ाहत :

☆...... **इल्हाद** का मा'ना बिल क़स्द फिरना है।

☆...... मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है, एक क़ौल येह है : "इस से मुराद शिर्क है।" और येह हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की दो रिवायतों में से एक है और येही हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद, सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और बहुत से अकाबिर का क़ौल है।

☆...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दूसरी रिवायत में है : "इस से मुराद येह है कि तुम ह़रम में ऐसे शख़्स को क़त्ल करो जो तुम्हें क़त्ल नहीं करता या उस पर ज़ुल्म करो जो तुम पर ज़ुल्म नहीं करता।" (تفسیر الطبری ، سورہ حج ،آیت ۲۵ ،الحدیث: ۲۵۰۱۹ ، ج۹، ص ۱۳۱،بدون "ھو ان تقتل فیہ")

☆...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से येह भी मन्क़ूल है : "**इल्हाद** येह है कि जिस गुफ़्त-गू या क़त्ल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम किया है उसे ह़लाल जानना पस तू उस पर ज़ुल्म करे जो तुझ पर ज़ुल्म नहीं करता और उस को क़त्ल करे जो तुझे क़त्ल नहीं करता, लिहाज़ा जब तूने ऐसा किया तो दर्दनाक अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो गया।"

(تفسیر الطبری ، سورہ حج ،آیت ۲۵ ،الحدیث: ۲۵۰۱۹ ، ج۹، ص ۱۳۱)

☆...... हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है : "ज़ुल्म से मुराद ह़रम में बुरा अ़मल है।" (تفسیر الطبری ، سورہ حج ،آیت ۲۵ ،الحدیث: ۲۵۰۲۰ ، ج۹، ص ۱۳۱)

☆...... हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर, जुन्दुब बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا वग़ैरा ने इर्शाद फ़रमाया : "**इल्हाद** से मुराद मक्का में खाना ज़ख़ीरा करना है।" गोया उन्हों ने इस को हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के इस क़ौल से लिया कि "खाने को ज़ख़ीरा करने के बा'द मक्का में फ़रोख़्त करना।" जैसा कि **इल्हाद** का ज़ाहिरी मा'ना है।

(تفسیر الطبری ، سورہ حج ،آیت ۲۵ ،الحدیث: ۲۵۰۲۶ ، ج۹، ص ۱۳۱)

☆...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का क़ौल है : "ख़ादिम को गाली देना ज़ुल्म है।"

☆...... हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है : "इस आयत में ज़ुल्म से मुराद अमीर का मक्का में तिजारत करना है।"

☆...... हज़रते अ़ता رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "**इल्हाद** से मुराद बाहमी ख़रीदो फ़रोख़्त में आदमी का येह कहना : "नहीं, ख़ुदा की क़सम ! हां, क्यूं नहीं, ख़ुदा की क़सम !"

(تفسیر الطبری ، سورہ حج ،آیت ۲۵ ،الحدیث: ۲۵۰۲۷ ، ج۹، ص ۱۳۲)

☆...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बारे में मरवी है कि आप के दो ख़ैमे थे, एक ह़िल में और दूसरा ह़रम में, जब आप अपने घर वालों से ना राज़गी का इज़्हार करना चाहते तो ह़िल में नाराज़ होते, आप से इस का सबब पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इर्शाद फ़रमाया : "हम येह बयान करते हैं कि मक्कए पाक में **इल्हाद** से मुराद येह है कि आदमी अपने घर वालों से कहे :

www.dawateislami.net

"खुदा की क़सम ! हरगिज़ नहीं, खुदा की क़सम ! हां, क्यूं नहीं।"

(تفسیر الطبری، سورہ حج ،آیت ۲۵ ،الحدیث: ۲۵۰۲۸، ج۹، ص ۱۳۱)

☆...... ह़ज़रते अ़त़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है : "**इल्ह़ाद** से मुराद येह है कि ह़रम में बिग़ैर एह़राम वाले का दाख़िल होना और एह़राम की मम्नूआ़त : दरख़्त काटने या शिकार करने में से किसी का इरतिकाब करना।"

☆...... यहां **ज़ुल्म** के लफ़्ज़ का फ़ाएदा येह है कि यहां पर **इल्ह़ाद** अपने अस्ली मा'ना में नहीं और इस का अस्ली मा'ना मुत़्लक़न मैलान है। बेशक येह कभी ह़क़ की त़रफ़ और कभी बात़िल की त़रफ़ होता है, यहां इस से मुराद ऐसा मैलान है जो ज़ुल्म के साथ मिला हो और येह बात मा'लूम है कि अस्ल में ज़ुल्म तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों को शामिल है, हर क़िस्म की ना फ़रमानी, अगर्चे गुनाहे सग़ीरा ही हो, ज़ुल्म कहलाएगी क्यूं कि ज़ुल्म येह है कि किसी चीज़ को ग़ैर मह़ल में रखना। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ज़ीशान रहनुमाई फ़रमाता है :

اِنَّ الشِّرْکَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ0 (پ۲۱، لقمٰن:۱۳) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।

पस **عَظِیْم** की क़ैद लगाने से शिर्क के इलावा बक़िय्या सब कबीरा गुनाह इस से ख़ारिज हो गए और वोह भी ज़ुल्म हैं लेकिन शिर्क की त़रह़ अ़ज़ीम नहीं अगर्चे फ़ी नफ़्सिही अ़ज़ीम हैं, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ मज़्कूरा **इल्ह़ाद** पर मुरत्तब होने वाली वई़द का बयान है।

इस सिल्सिले में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौल लिया गया है : "बेशक बुराइयां मक्के में दुगनी होती हैं जैसा कि यहां नेकियां दुगनी होती हैं।" और उन्हों ने इसे इस बात पर मह़मूल किया है : "दुगना होने से मुराद बुराई की क़बाह़त और अ़ज़ाब की ज़ियादती है न कि वोह ज़ियादती जो नेकियों में होती है।" क्यूं कि नुसूस सराह़त करती हैं कि बुराई पर इस की मिस्ल ही जज़ा मु-तअ़य्यन होती है, लेकिन सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वग़ैरा के कलाम का ज़ाहिर ह़क़ीक़ी त़ौर पर दुगना होने का क़ौल है और वोह इस के इस्तिस्ना पर क़ाइम दलील की वजह से इसे नुसूस से **मुस्तस्ना** क़रार देते हैं, अगर वोह दुगना होने के ह़क़ीक़ी मा'ना के क़ाइल न होते तो जम्हूर رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के मुख़ालिफ़ होते क्यूं कि इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि मक्का में ना फ़रमानी इस के इलावा जगहों से ज़ियादा क़बीह़ है।

इस की दलील कि ह़रम की ख़ुसूसिय्यत की वजह से इस में इरादा ही काफ़ी है, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मौक़ूफ़ व मरफ़ूअ़ रिवायत है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के मुशाबेह है :

وَمَنْ یُّرِدْ فِیْهِ بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ 0 (پ۱۷،الحج:۲۵) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस में किसी ज़ियादती का नाह़क़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे।

www.dawateislami.net

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है : "अगर किसी आदमी ने ह-रमे पाक में किसी ज़ियादती का नाह़क़ इरादा किया और वोह अ़दन से भी दूर हो फिर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएगा।"

(تفسیر الطبری ، سورہ حج،تحت الآیۃ:۲۳،الحدیث:۲۵۰۲۲/۲۳ ، ج۹، ص ۱۳۱، ملخصاً)

《3》...... सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्ही से रिवायत किया : "जो शख़्स किसी बुराई का इरादा करता है वोह लिख दी जाती है अगर्चे कोई आदमी अ़दन से भी दूर हो और इरादा करे कि बैतुल्लाह शरीफ़ में फ़ुलां आदमी को क़त्ल करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा।"

(تفسیر الطبری ، سورۂ حج ،تحت الآیۃ:۲۵،الحدیث:۲۵۰۲۲ ، ج۹، ص ۱۳۱)

तम्बीह :

ह़रम को ह़लाल समझना और **इल्ह़ाद** दो अलग अलग कबीरा गुनाह हैं जो कि दो अह़ादीसे मुबा-रका में मज़्कूर हैं, सय्यिदुना अबुल क़ासिम बग़वी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस को नक़्ल किया है कि,

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कबीरा गुनाहों के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "कबीरा गुनाह **9** हैं : (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना (3) मोमिन को क़त्ल करना (4) जंग से भाग जाना (5) जादू (6) सूद खाना (7) यतीम का माल खाना (8) मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (9) बैतुल ह़राम में इल्ह़ाद करना जो कि तुम्हारा ज़िन्दगी में भी और मौत के बा'द भी क़िब्ला है।"

(المعجم الکبیر،الحدیث:۱۰۱،ج۱۷،ص۴۸)

गुज़श्ता ह़दीसे पाक में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का "इस्तिह़्लाल" लफ़्ज़ ज़िक्र करने और यहां पर "इल्ह़ाद" से ता'बीर फ़रमाने से दोनों का एक मा'ना होने का एह़्तिमाल है जो कि आयते मुबा-रका में है और येह भी एह़्तिमाल है कि पहले से मुराद ह़रम को ह़लाल समझना है अगर्चे वोह ह़रम में न हो और दूसरे से मुराद ह़रम में गुनाह (या'नी ना फ़रमानी) करना है और येह दोनों कबीरा गुनाह हैं इस की त़रफ़ सय्यिदुना जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इशारा किया है फिर चन्द लाइनों के बा'द फ़रमाया : और ह़रम में **इल्ह़ाद** (या'नी झगड़ा) करना और आयत से इस्तिद्लाल करते हुए फ़रमाया : "चौदहवां गुनाह बैतुल ह़राम में झगड़ा करना अगर्चे जान बूझ कर करे।" क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَمَنۡ یُّرِدۡ فِیۡہِ بِاِلۡحَادٍۭ بِظُلۡمٍ نُّذِقۡہُ مِنۡ عَذَابٍ اَلِیۡمٍ ۰ (پ۱۷،سورۃ الحج:۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस में किसी ज़ियादती का नाह़क़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे।

www.dawateislami.net

आयते करीमा को मुत़्लक़ लेने से इस चीज़ की ताईद होती है कि ह़-रमे मक्का में हर गुनाह कबीरा है चुनान्चे,

☆...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : "बेशक ज़ुल्म हर ना फ़रमानी को शामिल है।" (تفسیر الطبری ، سورۂ حج ،تحت الآیۃ:۲۵ ،الحدیث:۲۵۰۲۹ ، ج۹، ص ۱۳۲)

☆...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जबीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़वाले से गुज़रा है कि "ख़ादिम को गाली देना या उस से ज़ियादा कुछ कहना ज़ुल्म है।"

☆...... सय्यिदुना अ़ता, इब्ने उ़मर और मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का क़ौल : "नहीं ! ख़ुदा की क़सम, हां ! ख़ुदा की क़सम।" या'नी झगड़ते हुए झूटी क़सम खाना। और सय्यिदुना अ़ता رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से येह भी मन्क़ूल है : "बिग़ैर एह़राम के ह़रम में दाख़िल होना।"

(تفسیر الطبری ، سورۂ حج ،تحت الآیۃ:۲۵ ،الحدیث:۲۵۰۲۷ ، ج۹، ص ۱۳۲)

☆...... **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के फ़रमान "بِظُلْم" के बारे में मुफ़स्सिरीन की एक जमाअ़त का क़ौल जैसा कि गुज़रा है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जबीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक इस से मुराद ख़ादिम को गाली देने की त़रह़ है।

☆...... इस से भी क़वी रिवायत या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़रम में खाना रोक लेना ज़ुल्म है।" (سنن ابی داؤد،کتاب المناسک ،باب تحریم مکۃ ،الحدیث:۲۰۲۰، ص۱۳۷۲)

☆...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत बयान की, कि "मक्का में खाना रोक लेना ज़ुल्म है।"

(شعب الایمان،باب فی ان یحب المسلم ......الخ،فصل ترک الاحتکار،الحدیث:۱۱۲۲۱، ج۷،ص۵۲۷)

इस सारी बह़स का ज़ाहिरी मफ़्हूम येह है कि येह तमाम सूरतें **इल्ह़ाद** की जुज़्इय्यात में से हैं, पस **इल्ह़ाद** मक्के में खाना रोकने के साथ ख़ास नहीं बल्कि येह हर एक ना फ़रमानी को शामिल है जब कि इरादे के साथ करे।

फिर मैं ने मुह़द्दिसीन में से बा'ज़ को देखा जब उन्हों ने अक्सर साबिक़ा अह़ादीसे मुबा-रका ज़िक्र कीं तो फ़रमाया कि येह अह़ादीसे मुबा-रका अगर्चे इस बात पर दलालत करती हैं कि येह अश्या **इल्ह़ाद** में से हैं लेकिन वोह इन से आ़म है और बेशक येह तम्बीह है कि वोह इस से भी ग़लीज़ गुनाह है।

इसी लिये जब हाथी वाले लश्कर ने बैतुल्लाह शरीफ़ को बरबाद करने का अ़ज़्म किया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उन पर परिन्दों की फ़ौजें भेजीं :

تَرْمِیْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّیْلٍ٥ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ٥ (پ۳۰،سورۃ الفیل:۴،۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कि उन्हें कंकर के पथ्थरों से मारते तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)।

www.dawateislami.net

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें तबाह कर दिया और उन्हें इब्रत बना दिया और जो बुराई का इरादा करे उस के लिये इब्रत नाक सज़ा बना दिया और अन्क़रीब वोह उस लश्कर के साथ आएगा जो ह़रम पर ह़म्ला करने के लिये निकले थे कि उन को ज़मीन में धंसा दिया गया।

﴾5﴿...... सय्यिदुना इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने रिवायत की है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से फ़रमाया : ''ऐ इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) ! बैतुल्लाह शरीफ़ में फ़साद करने से बचो, बेशक मैं ने रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ''क़ुरैश का एक आदमी बैतुल्लाह शरीफ़ में फ़साद करेगा अगर उस के गुनाह जिन्नो इन्स के गुनाहों के साथ तोले जाएं तो भी उस के गुनाह ज़ियादा होंगे, लिहाज़ा ग़ौर कर ऐसा न कर।''

(المسندللامام احمد بن حنبل ، مسند عبداللہ بن عمربن الخطاب ، الحدیث: ٦٢٠٨، ج٢ ، ص ٤٩٩)

﴾6﴿...... एक दूसरी रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के बारे में भी है कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के पास आए जब कि वोह ह़-जरे अस्वद के पास थे और इर्शाद फ़रमाया : ''''ऐ इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ! ह़रम में **इल्ह़ाद** से बचो, पस मैं गवाही देता हूं कि मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना, और इस के बा'द गुज़श्ता रिवायत ज़िक्र की।

(المسندللامام احمد بن حنبل ، مسند عبداللہ بن عمروبن العاص،الحدیث:٧٠٦٤،ج٢،ص ٦٨٢)

मक्का शरीफ़ में सग़ीरा गुनाह भी कबीरा होते हैं :

जो गुनाह ग़ैरे मक्का में सग़ीरा होते हैं वोह मक्का शरीफ़ में उन पर मुरत्तब होने वाली शदीद सज़ा की वजह से कबीरा कहलाएंगे क्यूं कि यहां मह़ल का ए'तिबार है न कि ज़ात का, उस वक़्त कबीरा गुनाह फ़िस्क़ और अ़दालत में नक़्स का मूजिब भी न होंगे क्यूं कि इस से उ़मूमियत का क़ौल मुम्किन नहीं वरना अहले ह़रम में से कोई भी आ़दिल न रहेगा, क्यूं कि सग़ीरा और ना पसन्दीदा ह़क़ीर गुनाहों से बचना बुहत मुश्किल है और इस बात पर जदीद व क़दीम उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का इज्माअ़ है कि अहले ह़रम आ़दिल हैं बा वुजूद इस के कि उन के सग़ीरा गुनाहों के इरतिकाब का सब को इ़ल्म है क्यूं कि मुकम्मल त़ौर पर बचना और मह़फ़ूज़ रहना मुश्किल है पस इस को कबीरा गुनाह शुमार करने की तावील मु-तअ़य्यन हो गई, क्यूं कि जिस ने इसे कबीरा शुमार किया मुम्किन नहीं कि उस की मुराद येह हो कि ह़रम में करना भी कबीरा गुनाह है क्यूं कि येह फ़िस्क़ है और ग़ैरे ह़रम में भी कबीरा गुनाह है, तो इस सूरत में ह़रम की क्या फ़ज़ीलत रही पस इस से मुराद येह है कि ग़ैरे मक्का में सग़ीरा गुनाह मक्का में कबीरा है और येह ज़ाहिरन मुह़ाल है जैसा कि आप जान चुके हैं पस तावील मु-तअ़य्यन हो गई।

www.dawateislami.net

सुवाल : अगर आप येह कहें कि येह कैसे हो सकता है ह़ालां कि कबीरा की ता'रीफ़ येह है कि वोह जिस में शदीद वईद आई हो और येह तो ह़रम में किये जाने वाले सग़ीरा को भी शामिल है ?

जवाब : तो मैं कहूंगा कि सज़ा को उस गुनाह पर मह़्मूल करना बईद नहीं जिस के ज़ाती तौ़र पर क़बीह़ होने की वजह से उस पर वईद मुरत्तब की गई न कि उस के मह़ल के शरफ़ की वजह से और जो हम ने मजबूरन येह तावील की पस तावील की त़रफ़ लौटना ज़रूरी है।

अम्रद को देखने से आंखें उबल पड़ीं :

आप ना फ़रमानी के क़बीह़ होने और सज़ा के जल्दी होने के बारे में अगर्चे गुनाहे सग़ीरा हो, जानते हैं कि बा'ज़ लोगों ने किसी अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) या औ़रत को देखा तो उन की आंखें रुख़्सारों पर बह पड़ीं।

अज्नबी औ़रत से हाथ चिमट गया :

बा'ज़ों ने अपने हाथ को किसी औ़रत के हाथ पर रखा तो उन दोनों के हाथ चिमट गए और लोग उन्हें जुदा करने में नाकाम हो गए, यहां तक कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने उन की रहनुमाई फ़रमाई कि वोह अ़ह्द करें कि ऐसी ना फ़रमानी का इरतिकाब कभी नहीं करेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़गिड़ा कर सिद्क़े दिल से तौबा करें, पस उन्हों ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें छुटकारा अ़ता फ़रमाया। और असाफ़ और नाइला का क़िस्सा मश्हूर है कि उन्हों ने ज़िना किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों का चेहरा मस्ख़ कर के पथ्थर बना दिया।

तुम येह देख कर धोका न खाओ कि कोई शख़्स ना फ़रमानी का मुर-तकिब होने के बा वुजूद अभी तक सह़ीह़ो सालिम है और उसे जल्दी सज़ा नहीं मिलती, अ़क़्ल मन्द के लिये मुनासिब नहीं कि वोह अपने नफ़्स पर ग़ुरूर करे, अपने नफ़्स पर ग़ुरूर करने वाला अच्छा नहीं अगर्चे वोह सलामत रहे और अक्सर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये सज़ा को जल्दी मुक़द्दर कर देता है जब कि दूसरों के लिये नहीं क्यूं कि उसे इस से रोकने वाला कोई नहीं कि कभी बहुत शनीअ़ व क़बीह़ चीज़ के साथ जल्दी सज़ा हो जाती है या'नी दिल का मस्ख़ होना, बारगाहे ह़क़ में ह़ाज़िरी से दूरी, हिदायत के बा'द गुमराही और बारगाहे ख़ुदा वन्दी की त़रफ़ मु-तवज्जेह होने के बा'द ए'राज़ करना।

अज्नबी औ़रत का बोसा लेने से चेहरा मस्ख़ हो गया :

तह़क़ीक़ इसी त़रह़ मेरे जाने पहचाने एक शख़्स से हुवा, वोह अच्छी शक्लो सूरत वाला और मुकम्मल तौ़र पर तन्दुरुस्त व तुवाना था, लेकिन वोह फिसल गया और उस ने ह़-जरे अस्वद के पास एक औ़रत को बोसा दिया, फिर इस ह़िकायत की सच्चाई के आसार ज़ाहिर हुए और उस का चेहरा मुकम्मल तौ़र पर मस्ख़ हो गया, वोह जिस्म, बदन, अ़क़्ल और कलाम के ए'तिबार से बोसीदा और

www.dawateislami.net

क़बीह़ शक्लो सूरत वाला हो गया। हम भटक्ने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इल्तिजा करते हैं कि हमें मरते दम तक आज़्माइशों से बचाए, बेशक वोह सब से ज़ियादा करीम व रह़ीम है। (اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

मुझे एक जानने वाले के बारे में येह बात मा'लूम हुई कि उस से मस्जिदे ह़राम में बुरा फ़े'ल सरज़द हो गया तो उसे जल्द ही जिस्मानी और दीनी त़ौर पर शदीद सज़ा दी गई। इसी त़रह़ एक और जमाअ़त के बारे में भी येह बात मा'लूम हुई कि उन के साथ भी येही हुवा। अगर मक़ाम की तंगी, रुस्वाई का ख़ौफ़ और सित्र पोशी मक़्सूद न होती तो मैं उन के अह़्वाल तफ़्सील से लिखता लेकिन इशारा इ़बारत से बे परवाह कर देता है।

और बेशक इस से हमारा मक़्सूद येह है कि अक्सर अवक़ात इन्सान धोका खा जाता है और वोह ज़ाहिरी त़ौर पर सज़ा के जल्दी न होने की वजह से गुमान करता है कि सज़ा जल्दी नहीं होती, लेकिन ऐसा नहीं है जैसे उस का गुमान है बल्कि सरकशी करने वाले या बे ख़ौफ़ हो कर गुनाहों का इरतिकाब करने वाले को लाज़िमन ज़ाहिरी या बात़िनी त़ौर पर जल्दी सज़ा मिल जाती है, येह आख़िरत के अ़ज़ाब से पहले है जिस के अ़ज़ीम होने की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इशारा फ़रमाया है बल्कि दुन्या के अ़ज़ाब की शिद्दत की त़रफ़ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान के साथ इशारा फ़रमाया : وَمَنۡ يُّرِدۡ فِيۡهِ بِاِلۡحَادٍۢ بِظُلۡمٍ نُّذِقۡهُ مِنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ (پ:١٧،الحج:٢٥)

ह़रम और अहले ह़रम के फ़ज़ाइल

ह़-रमे पाक पर रोज़ाना 120 रह़मतों का नुज़ूल :

《**7**》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़-रमे पाक की मस्जिद पर रोज़ाना दिन और रात में **120** रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है इन में से **60** त़वाफ़ करने वालों के लिये, **40** नमाज़ियों के लिये और **20** मस्जिदे ह़राम की ज़ियारत करने वालों के लिये होती हैं।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ١١٤٧٥، ج١١، ص ١٥٦)

ह़-रमे पाक में एक नमाज़ का सवाब :

《**8**》...... बहुत सी सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद है नीज़ हम ने "**अल ईज़ाह़**" के ह़ाशिये में भी सरीह़ त़ौर पर नक़्ल किया है कि "मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना मस्जिदे न-बवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और मस्जिदे अक़्सा के इलावा दीगर मसाजिद में एक खरब नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है क्यूं कि

www.dawateislami.net

मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में एक नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ पढ़ने से 1000 गुना ज़ियादा है और मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में 500 नमाज़ों के बराबर है।"

(فتح الباری لابن حجرعسقلانی،تحت الحدیث:۱۱۹۰ ج۳،ص۵۹،مفهوماً)

बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ पढ़ने का सवाब 1000 गुना :

﴾9﴿...... एक और रिवायत में है : "बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में 1000 नमाज़ें पढ़ने के बराबर है।"

(كشف الخفاء،حرف الباء الموحدة،تحت الحديث:۹۲۷،ج۱،ص۲٦۰)

﴾10﴿...... जब कि एक सहीह़ रिवायत में है : "मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में एक लाख (1,00,000) नमाज़ें पढ़ने के बराबर है।"

इन सब को ज़र्ब देने से ह़ासिले ज़र्ब एक खरब हुवा, इस फ़ज़्ल की वुस्अ़त में ग़ौर करें और मैं ने किसी को इस बात पर आगाह नहीं पाया।

बैतुल्लाह शरीफ़ का शिक्वा :

﴾11﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक का'बे की एक ज़बान और दो होंट हैं और उस ने शिक्वा करते हुए अ़र्ज़ की, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी त़रफ़ बार बार आने वाले और मेरी ज़ियारत करने वाले कम हो गए हैं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य फ़रमाई : "मैं ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ और सज्दे करने वाला इन्सान पैदा फ़रमाने वाला हूं जो तुम्हारा इस त़रह़ मुश्ताक़ होगा जिस त़रह़ कबूतरी अपने अन्डों की मुश्ताक़ होती है।"

(المعجم الاوسط ، الحديث: ٦٠٦٦، ج٤ ، ص ٣٠٥)

मक्का में र-मज़ानुल मुबारक गुज़ारने की फ़ज़ीलत :

﴾12﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मक्का में र-मज़ानुल मुबारक गुज़ारना ग़ैरे मक्का में 1000 र-मज़ानुल मुबारक गुज़ारने से अफ़्ज़ल है।"

(كنزالعمال،كتاب الفضائل،فى فضائل الامكنة والا زمنة،الحديث:٣٤٦٣٨،ج١٢،ص٩٠)

﴾13﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मक्का में र-मज़ानुल मुबारक को पाया फिर उस के रोज़े रखे और जितना हो सका उस की रातों में क़ियाम किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दीगर मक़ामात पर 1000

www.dawateislami.net

र-मज़ानुल मुबारक गुज़ारने का सवाब लिखेगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये रोज़ाना दिन और रात में एक एक गुलाम आज़ाद करने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में दो सुवारों को सुवारी देने और दिन और रात में एक एक नेकी का सवाब लिखेगा।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب المناسك، باب صوم شهر رمضان بمكة،الحديث: ٣١١٧ ، ص٢٦٦٦)

का'बे को बैतुल अ़तीक़ कहने की वजह :

《14》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "का'बा को **बैतुल अ़तीक़** इस लिये कहा जाता है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे ज़ालिमो जाबिर लोगों से आज़ाद फ़रमा दिया है, इसी लिये इस पर कभी कोई ज़ालिम क़ाबिज़ नहीं हुवा।"

(شعب الايمان ، باب فى المناسك ، حديث الكعبة والمسجد الحرام ، الحديث: ٤٠١٠ ، ج٣ ، ص ٤٤٣)

ज़मीन का सब से पहला टुकड़ा और पहाड़ :

《15》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ज़मीन में सब से पहले बैतुल्लाह शरीफ़ का टुकड़ा रखा गया, फिर इस से दूसरी ज़मीन फैलाई गई और सत़्हे ज़मीन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहले जो पहाड़ रखा वोह **ज-बले अबी क़ुबैस** है फिर इस से पहाड़ों का सिल्सिला फैला।" (المرجع السابق، الحديث: ٣٩٨٤ ، ج٣ ، ص ٤٣٢)

शहरों की अस्ल :

《16》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मक्कए मुकर्रमा **उम्मुल क़ुरा** या'नी तमाम शहरों की अस्ल है।"

(الكامل فى ضعفاء الرجال ،رقم:٥٤٦،حسام بن مصك بن ظالم ......الخ،ج٣،ص٣٦٣)

क़िब्ले की ता'ज़ीम पर इन्आ़म :

《17》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो क़िब्ले की तक्रीम करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इ़ज़्ज़त देगा।"

(كنزالعمال ،كتاب الفضائل ، فى فضائل الامكنه والازمنة ، الحديث: ٣٤٦٤١، ج١٢، ص٩٠)

क़िब्ले की बे हुरमती का वबाल :

《18》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "येह उम्मत जब तक इस की अ़-ज़मत का ह़क़ अदा करते हुए इस की हुरमत की पासदारी करती रहेगी ख़ैर से रहेगी और जब इसे पामाल कर देगी तो हलाकत में मुब्तला हो जाएगी।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب المناسك ، باب فضل مكة الحديث: ٣١١٠ ، ص ٢٦٦٦)

www.dawateislami.net

का'बे को देखना भी इबादत :

《19》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "का'बा शरीफ़ की तरफ़ देखना भी इबादत है।"

(فر دو س الاخبار للدیلمی ، باب النون ، الحدیث: ۷۱۱۶، ج۲ ، ص۳۷۵)

ज़मीन पर सब से पहली दो मसाजिद :

《20》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ज़मीन पर सब से पहली मस्जिदे ह़राम बनाई गई, फिर मस्जिदे अक़्सा और इन दोनों के दरमियान 40 साल का अ़र्सा था।" (صحیح البخاری ،کتاب احادیث الانبیاء،باب ۱۰،الحدیث:۳۳۶۶،ص۲۷۳،مفہوماً)

मदीनए मुनव्वरह काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से पाक :

《21》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह के इ़लावा कोई शह्‌र ऐसा नहीं जिसे अ़न्क़रीब दज्जाल रौंदता हुवा न जाए, जब कि इन शहरों के हर रास्ते पर मलाएका सफ़ें बांधे पहरा दे रहे होंगे, लिहाज़ा वोह एक दलदली ज़मीन पर पड़ाव डालेगा फिर शहरे मदीना तीन मरतबा लरज़ेगा तो इस में मौजूद हर काफ़िर और मुनाफ़िक़ बाहर निकल जाएगा।"

(صحيح البخارى ،كتاب فضائل المدينه ، باب لايد خل الدجال المدينة ،الحديث:۱۸۸۱ ، ص ۱۴۷)

मह़बूब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मह़बूब शह्‌र :

《22》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तू कितना अच्छा शह्‌र है और मुझे कितना मह़बूब है अगर मेरी क़ौम मुझे तुझ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी और शह्‌र में सुकूनत इख़्तियार न करता।"

(جامع الترمذی ،ابواب المناقب ، باب فی فضل مکة ،الحدیث: ۳۹۲۶ ، ص۲۰۵۳)

《23》......शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ख़ुदा की क़सम ! तू अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की सब से बेहतरीन ज़मीन है और मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ज़मीन में सब से ज़ियादा मह़बूब है, अगर मुझे तुझ से न निकाला जाता तो में हरगिज़ न निकलता।"

(جامع الترمذی ،ابواب المناقب ، باب فی فضل مکة ،الحدیث: ۳۹۲۵،۲۰۵۲)

www.dawateislami.net

मक्कए मुकर्रमा में जंग नहीं होगी :

《24》...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''आज (या'नी फ़त्हे मक्का) के बा'द क़ियामत तक मक्कए मुकर्रमा में जंग नहीं होगी।''

(المسندللاما م احمد ابن حنبل،الحدیث:۱۹۰٤۲،ج۷، ص۲٦)

मक्कए मुकर्रमा में अस्लिहा की नुमाइश मम्नूअ़ :

《25》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम में से किसी के लिये जाइज़ नहीं कि वोह मक्कए मुकर्रमा में अस्लिहा उठा कर लाए।''

(صحیح مسلم،کتاب الحج،باب نهی عن حمل السلاح بمكة،الحدیث:۳۳۰۷،ص۹۰٤)

बुन्यादे इब्राहीमी पर ता'मीरे नौ की ख़्वाहिश :

《26》...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ आ़इशा ! अगर तुम्हारी क़ौम ने जाहिलिय्यत का दौर नया नया न छोड़ा होता तो मैं का'बा को गिराने का हुक्म देता और इस के जो हिस्से इस से निकाल दिये गए थे उन्हें उस में दाख़िल कर देता (या'नी ह़-जरे अस्वद से **6** या **7** हाथ तक का छोड़ा हुवा हिस्सा) और इस का दरवाज़ा ज़मीन से मिला देता और इस के दो दरवाज़े बना देता, मशरिक़ी दरवाज़ा और मग़रिबी दरवाज़ा, पस येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की बुन्याद को पहुंच जाता।''

(صحیح البخاری ،کتاب الحج ، باب فضل مكة وبنيانها ......الخ ، الحدیث: ۱۵۸٦ ، ص ۱۲۵)

《27》...... मुस्लिम शरीफ़ में येह इज़ाफ़ा है : ''का'बे का ख़ज़ाना अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में ख़र्च कर देता।'' (صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب نقض الكعبة وبنائها، الحدیث: ۳۲٤۳،ص۸۹۹)

《28》...... एक और रिवायत में है : ''क़ुरैश ने जब बैतुल्लाह शरीफ़ को बनाया तो उन का न-फ़क़ा कम पड़ गया।'' (سنن النسائی ،کتاب المناسك ، باب بناء الكعبة ، الحدیث: ۲۹۰٤ ، ص۲۲۷٤)

क्यूं कि उन्हों ने उसे सिर्फ़ उसी माल से बनाया था जिस की हि़ल्लत का उन्हें यक़ीन था, लिहाज़ा वोह मोह़ताज हो गए और शाज़रवान (या'नी दीवार के पाए के साथ अ़र्ज़ में छोड़ा हुवा हिस्सा) और ह़-जरे अस्वद से मज़्कूरा हिस्से छोड़ दिये और उस की बुलन्दी को कम कर दिया और ग़र्बी दरवाज़ा बन्द कर के मशरिक़ी दरवाज़ा ऊंचा कर दिया ताकि जिसे चाहें इस में दाख़िल होने दें और जिसे चाहें रोक दें।

ख़्वाहिशे न-बवी की तक्मील :

《29》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब अपनी ख़ाला उम्मुल

www.dawateislami.net

मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से येह अहादीसे मुबा-रका सुनीं तो (अपने दौरे ख़िलाफ़त में) का'बए मुशर्रफ़ा को गिरा कर उसे उसी हैअत पर लौटा दिया, लेकिन जब ह़ज्जाज का दौर आया तो उस ने फ़क़त़ ह़-जरे अस्वद की त़रफ़ वाली ता'मीर ख़त्म कर के उसे उस की क़ुरैशी ता'मीर वाली हैअत पर लौटा दिया या'नी मग़रिबी दरवाज़ा बन्द कर दिया और मशरिक़ी दरवाज़े को बुलन्द कर दिया। (تفسیر ابن کثیر،سورۃ البقرۃ،تحت الآیۃ:۱۲۷،ج۱،ص۳۱۳)

बैतुल्लाह शरीफ़ पर चढ़ाई करने वालों का इब्रत नाक अन्जाम :

﴾30﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक लश्कर बैतुल्लाह शरीफ़ पर चढ़ाई (का इरादा) करेगा, जब वोह एक चटियल मैदान में पहुंचेंगे तो उन के अगलों पिछलों को ज़मीन में धंसा दिया जाएगा फिर उन्हें उन की निय्यतों के मुत़ाबिक़ उठाया जाएगा।" (صحیح البخاری ، کتاب البیوع ، باب ماذکر فی الاسواق ، الحدیث: ۲۱۱۸، ص۱۶۵)

﴾31﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कोई पनाह चाहने वाला का'बे में पनाह चाहेगा तो उस की त़रफ़ एक लश्कर भेजा जाएगा लेकिन जब वोह लश्कर एक चटियल ज़मीन में पहुंचेगा तो उसे ज़मीन में धंसा दिया जाएगा।" अ़र्ज़ की गई, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो इसे ना पसन्द करता हो उस का क्या ह़ाल होगा ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उसे भी उन के साथ धंसा दिया जाएगा मगर क़ियामत के दिन उसे उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ उठाया जाएगा।"

(صحیح مسلم ،کتاب الفتن ،باب الخسف بالجیش الذی یؤم البیت ،الحدیث: ۷۲۴۰، ص۱۱۷۷)

﴾32﴿...... जब कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में येह भी है : "उन में से सिर्फ़ एक धुत्कारा हुवा इन्सान ही (धंसने से) बाक़ी बचेगा जो उस लश्कर के (ज़मीन में धंस जाने के) बारे में लोगों को बताएगा।"

(المرجع السابق،الحدیث:۷۲۴۲)

नीज़ उस लश्कर को शाम से (इमाम) महदी की जानिब भेजा जाएगा ताकि वोह उस को क़त्ल कर दे तो वोह मदीनए मुनव्वरह से मक्कए मुकर्रमा में पनाह लेने की ख़ात़िर भाग जाएंगे।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "गोया मैं पतली टांगों वाले सियाह आदमी को देख रहा हूं जो एक एक पथ्थर उखाड़ कर का'बे को गिरा देगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، الحدیث: ۲۰۱۰ ،ج۱ ، ص ۴۹۰)

﴾33﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

''बेशक ह़-जरे अस्वद जन्नती (पथ्थर) है, लोग त़वाफ़ कर रहे होंगे कि इसे उन के दरमियान से उठा लिया जाएगा, और सुब्ह़ वोह इसे खो चुके होंगे, इसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा तो उस की दो आंखें होंगी जिन के ज़रीए येह देखेगा, एक ज़बान होगी जिस से येह कलाम करेगा और ह़क़ के साथ इस का **इस्तिलाम** (या'नी ह़-जरे अस्वद को हाथ लगा कर सलाम) करने वाले की गवाही देगा।''

(جامع الترمذی،ابواب الحج،باب ماجاء فی حجر الاسود،الحدیث:٩٦١،ص١٧٤٣،مختصراً)

बरोज़े क़ियामत सिफ़ारिश करने वाला पथ्थर :

《**34**》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''दुन्या वालों में से जो ह़-जरे अस्वद का इस्तिलाम करेगा या इसे बोसा देगा येह उस के लिये गवाही देगा और बेशक येह सिफ़ारिश करेगा और इस की सिफ़ारिश क़बूल होगी।''

(المعجم الاوسط، الحدیث: ٢٩٧١، ج ٢، ص ١٨٨،بدون" یقبله من اهل الدنیا")

《**35**》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''क़ियामत के दिन रुक्ने यमानी **ज-बले अबी क़ुबैस** से भी बड़ा हो कर आएगा, इस की दो ज़बानें और दो होंट होंगे, येह बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद था यहां तक कि मुश्रिकों के गुनाहों ने इसे सियाह कर दिया अगर ऐसा न होता तो जो आफ़त ज़दा इन्सान इसे छूता उसे शिफ़ा हो जाती।''

(المسندللامام احمدبن حنبل، مسندعبدالله بن عمرو بن عاص،الحدیث:٦٩٩٧،ج٢،ص٦٦٥،بدون"انه کان اشد......الخ")

《**36**》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''येह आस्मान से उतरा तो इसे ''**ज-बले अबी क़ुबैस**'' की पुश्त पर रख दिया गया गोया येह एक साफ़ शफ़्फ़ाफ़ जौहर था, येह **40** साल तक इस पर रहा, फिर इसे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की बुन्यादों पर रख दिया गया।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الحج،باب الترغیب فی الطواف واستلام......الخ، الحدیث:١٧٨٢، ج٢، ص٩٤)

येह ह़दीसे पाक अगर्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا पर मौक़ूफ़ है मगर ऐसी बातें अपनी राय से नहीं कही जातीं।

《**37**》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़-जरे अस्वद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत का दायां हाथ है जिस से वोह अपने बन्दों से मुसा-फ़ह़ा फ़रमाता है।'' (या'नी ह़-जरे अस्वद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और ब-र-कत का मम्बअ़ है कि जब लोग इस का इस्तिलाम करते हैं या इसे बोसा देते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर इस की वजह से रह़मत व ब-र-कत नाज़िल फ़रमाता है।) (المصنف لعبدالرزاق،باب الرکن من الجنة،الحدیث:٨٩٥٠/٥١،ج٥،ص٢٨)

《**38**》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़-जरे अस्वद और रुक्ने यमानी दोनों ख़त़ाओं को मिटाते हैं।'' (المرجع السابق،الحدیث:٢٣٧٥)

www.dawateislami.net

ज़बान और होंटों वाला पथ्थर :

《39》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ह-जरे अस्वद और रुक्ने यमानी दोनों क़ियामत के दिन उठाए जाएंगे तो इन की दो आंखें, एक ज़बान और दो होंट होंगे, जिस ने इन का सहीह़ त़रीक़े से इस्तिलाम किया होगा येह उस के ह़क़ में गवाही देंगे, और इसी के पास आंसू बहाए जाते हैं।"

(المعجم الكبير،الحديث:١١٤٣٢،ج١١،ص١٤٦،بدون"ان عنده تسكب العبرات")

जन्नत के दो याकूत :

《40》...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : "रुक्ने यमानी और मक़ामे इब्राहीम जन्नत के याकूतों में से दो याकूत हैं, और येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन का नूर बुझा दिया अगर ऐसा न होता तो मशरिक़ व मग़रिब हर शै रोशन हो जाती।"

(صحيح ابن حبان،كتاب الحج،باب فضل مكة،الحديث:٣٧٠٢،ج٦،ص١٠)

70 हज़ार फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं :

《41》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "रुक्ने यमानी पर 70,000 फ़िरिश्ते मुअक्कल हैं, जो भी येह दुआ़ मांगता है : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ الۡعَفۡوَ وَ الۡعَافِیَۃَ فِی الدِّیۡنِ وَ الدُّنۡیَا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दीन व दुन्या में बख़्शिश और आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं, ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें दुन्या व आख़िरत में भलाई अ़ता फ़रमा और हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा) तो वोह फ़िरिश्ते उस की दुआ़ पर आमीन कहते हैं।"

(سنن ابن ماجة،ابواب المناسك،باب فضل الطواف،الحديث:٢٩٥٧،ص٢٦٥٥)

बीमारों की शिफ़ा :

《42》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रुक्न और मक़ाम के दरमियान मक़ामे मुल्तज़म है, कि मुसीबत ज़दा शख़्स वहां दुआ़ मांगे तो उसे मुसीबत से छुटकारा मिल जाए।"

(المعجم الكبير،الحديث: ١١٨٧٣، ج١١،ص٢٥٤)

www.dawateislami.net

आबे ज़मज़म के फ़ज़ाइल

﴾43﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस वक़्त जिब्राईले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) ने अपनी एड़ी मार कर ज़मीन से चाहे ज़मज़म जारी किया तो ह़ज़रते इस्माईल (عَلَیْہِ السَّلَام) की वालिदए माजिदा उसे वादी में जम्अ़ करने लगीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर रह़म फ़रमाए अगर वोह उसे इसी त़रह़ छोड़ देतीं तो सारी वादी भर जाती।"

(السنن الکبری للنسائی، کتاب المناقب، باب ھاجرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا، الحدیث:۸۳۷۶، ج۵، ص۹۹)

﴾44﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आबे ज़मज़म जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) का "**हज़्मह**" (या'नी हाथ या पाउं से ज़मीन में बनने वाला गढ़ा) है, और फिर उन दोनों (या'नी ह़ज़रते हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا और जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام) ने ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام को पानी पिलाया।"

(سنن الدار قطنی، کتاب الحج، باب المواقیت، الحدیث:۲۷۱۳، ج۲، ص۳۶۵)

﴾45﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आबे ज़मज़म दुन्या व आख़िरत के जिस मक़्सद के लिये भी पिया जाए काफ़ी है।"

(سنن ابن ماجۃ، ابواب المناسك، باب الشرف من زمزم، الحدیث:۳۰۶۲، ص۲۶۶۲، بدون "من امرالدنیاوالآخرۃ")

﴾46﴿...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आबे ज़मज़म पेट भर कर पीना निफ़ाक़ से छुटकारा देता है।"

(فردوس الأخبار، باب التاء، الحدیث:۲۲۵۵، ج۱، ص۳۰۹)

﴾47﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आबे ज़मज़म सत़्ह़े ज़मीन पर मौजूद हर पानी से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر، الحدیث:۱۱۱۶۷، ج۱۱، ص۸۰)

ह़ज्जे मबरूर की फ़ज़ीलत

﴾48﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया : "कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना।" अ़र्ज़ की गई : "फिर कौन सा ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना।" अ़र्ज़ की गई : "फिर कौन सा ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**ह़ज्जे मबरूर।**" (या'नी वोह ह़ज जिस में एह़राम बांधने से खोलने तक कोई सग़ीरा गुनाह भी सरज़द न हो।)

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب من قال ان الایمان ھو العمل، الحدیث: ۲۶، ص ٤)

www.dawateislami.net

﴾49﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने ह़ज किया फिर उस में कोई फ़ोह़्श काम किया न कोई गुनाह किया तो वोह अपने गुनाहों से इस त़रह़ पाक हो गया जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।''

(صحیح البخاری،ابواب المحصر،باب قول الله عزوجل(فلا رفث) الحدیث: ۱۸۱۹/۱۸۲۰، ص ۱۴۲،'خرج' بدله "رجع" وبدون" ذنوبه")

गुनाहों का कफ़्फ़ारा और ह़ज्जे मबरूर का इन्आ़म :

﴾50﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''उ़म्रह अगले उ़म्रे तक के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होता है और ह़ज्जे मबरूर की जज़ा जन्नत के सिवा कुछ नहीं।''

(صحیح مسلم،کتاب الحج،باب فضل الحج والعمرة، الحدیث:۳۲۸۹،ص۹۰۳)

﴾51﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अ़म्र (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि इस्लाम लाना पिछले गुनाहों को मिटा देता है, हिजरत भी मा क़ब्ल गुनाहों को मिटा देती है और ह़ज भी पिछले गुनाहों को मिटा देता है।''

(صحیح مسلم ،کتا ب الایمان، باب کون الاسلام......الخ، الحدیث: ۳۲۱، ص۶۹۸)

﴾52﴿...... एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''मैं कमज़ोर और बुज़दिल हूं (या'नी मैं जिहाद के क़ाबिल नहीं, मुझे क्या करना चाहिये ?)।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फिर ऐसे जिहाद की त़रफ़ आ जाओ जिस में कांटा चुभने का भी अन्देशा नहीं, ह़ज जिहाद से भी अफ़्ज़ल है, और ह़ज्जे मबरूर सिन रसीदा लोगों, कमज़ोरों और औ़रतों का जिहाद है।''

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۹۱۰،ج۳،ص۱۳۵)

(سنن النسائی،کتاب مناسك الحج،باب فضل الحج،الحدیث:۲۶۲۷/۲۶۲۹،ص۲۲۵۸)

﴾53﴿...... साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ह़ज और उ़म्रह दोनों आ'माल में से अफ़्ज़ल तरीन अ़मल हैं मगर जो इन की मिस्ल ह़ज्जे मबरूर या उ़म्रह करे।''

(المسندللامام احمدبن حنبل،الحدیث:۱۷۰۲۴،ج۶، ص۵۸)

﴾54﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़ज्जे मबरूर की जज़ा सिर्फ़ जन्नत ही है।'' अ़र्ज़ की गई : ''उस की नेकी क्या है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''खाना खिलाना और अच्छा कलाम करना।''

(صحیح مسلم ،کتا ب الحج ، باب فضل الحج والعمرة ، الحدیث: ۳۲۸۹ ، ص۹۰۳)

(المستدرك ،کتاب المناسك ، باب بر الحج اطعام وطیب الکلام ، الحدیث: ۱۸۲۱ ، ج۲ ، ص ۱۴۸)

ग़ौर किया जाए तो इस ह़दीसे पाक में बयान कर्दा ह़ज्जे मबरूर की तफ़्सीर गुज़श्ता तफ़्सीर के मुनाफ़ी नहीं।

www.dawateislami.net

《55》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**हज** और उम्रह पै दर पै किया करो क्यूं कि येह फ़क़्र और गुनाहों को इस तरह दूर कर देते हैं जिस तरह भट्टी सोने, चांदी और लोहे के मैल कुचैल या ज़ंग को निकाल देती है।"

(جامع الترمذی ،ابواب الحج ، باب ماجاء فی ثواب الحج والعمرہ ،الحدیث: ۸۱۰، ص ۱۷۲۷)

《56》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हज्जे मबरूर का सवाब जन्नत के सिवा कुछ नहीं।"

(جامع الترمذی ،ابواب الحج ، باب ماجاء فی ثواب الحج والعمرہ ،الحدیث: ۸۱۰، ص ۱۷۲۷)

《57》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मक्कए मुकर्रमा से हज के लिये पैदल चला यहां तक कि वापस मक्कए मुकर्रमा लौट आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर क़दम पर उस के लिये **700** नेकियां लिखेगा, उन में से हर नेकी हरम की नेकियों की तरह होगी।" अर्ज़ की गई : "हरम की नेकियां क्या हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर नेकी एक लाख (1,00,000) नेकियों के बराबर है।"

(المستدرک،کتاب المناسک ،باب فضیلۃ الحج ماشیا، الحدیث:۱۷۳۵،ج۲،ص۱۱٤)

एक हज़ार मरतबा बैतुल्लाह शरीफ़ में हाज़िरी :

《58》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام बैतुल्लाह शरीफ़ **1000** मरतबा तशरीफ़ लाए, आप عَلَیْہِ السَّلَام हिन्द से हमेशा पैदल ही आए।"

(صحیح ابن خزیمہ ،کتاب المناسک ، باب عد دحج آدم صلوات اللہ علیہ ......الخ ، الحدیث: ۲۷۹۲ ،ج٤، ص ۲٤٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेहमान :

《59》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "हाजी और उम्रह करने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेहमान हैं, वोह इन्हें बुलाता है तो येह उस के बुलावे पर लब्बैक कहते हैं और येह उस से सुवाल करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें अता फ़रमाता है।"

(کنز العمال ،کتاب الحج والعمرۃ قسم الاقوال ، باب فضائل الحج ووجوبہ وآدابہ، الحدیث:۱۱۸۱۱، ج٥ ، ص ٥)

《60》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ मांगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हाजी और जिस के लिये हाजी इस्तिग़फ़ार करे उन दोनों की मग़फ़िरत फ़रमा।"

(صحیح ابن خزیمۃ،کتاب المناسک،باب استحباب دعاء......الخ، الحدیث: ۲۵۱٦ ، ج٤ ،ص۱۳۲)

《61》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "इस घर से नफ़्अ उठा लो क्यूं कि इसे दो मरतबा शहीद किया गया और (अब इस के बा'द) तीसरी मरतबा उठा लिया जाएगा।"

(المستدرک، کتاب المناسک ، باب استمتعوا من ھذا البیت،الحدیث:۱٦۵۲،ج۲،ص۸۳)

www.dawateislami.net

ख़ानए का'बा की दूसरी मरतबा ता'मीर :

《62》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلام को जन्नत से उतारा तो इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम्हारे साथ एक घर उतार रहा हूं, उस के गिर्द इसी त़रह़ त़वाफ़ किया जाएगा जिस त़रह़ मेरे अ़र्श के गिर्द त़वाफ़ किया जाता है और उस के पास इसी त़रह़ नमाज़ पढ़ी जाएगी जिस त़रह़ मेरे अ़र्श के गिर्द नमाज़ पढ़ी जाती है।" फिर जब तूफ़ाने नूह़ का ज़माना आया तो इसे उठा लिया गया, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस का ह़ज तो किया करते थे मगर इस की जगह नहीं जानते थे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلام) पर इसे ज़ाहिर फ़रमाया तो उन्हों ने इसे पांच पहाड़ों के पथ्थरों से ता'मीर किया : वोह पहाड़ **(1) ज-बले ह़िरा (2) ज-बले सबीर (3) ज-बले लुबनान (4) ज-बलुत्त़ीर और (5) ज-बलुल ख़ैर** हैं, लिहाज़ा तुम से जितना हो सके इस से नफ़्अ़ उठा लो।"

(الترغيب وا لترهيب ،كتاب الحج ، باب الترغيب فى الحج والعمرة...... الخ ، الحديث: ١٧٠٩ ، ص ٢ ، ص ٧٥)

येह रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से सह़ीह़ सनद से मरवी है और इस क़िस्म की बातें अपनी राय से नहीं कही जातीं लिहाज़ा येह मरफ़ूअ़ के हुक्म में है।

《63》...... रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने बैतुल्लाह शरीफ़ का इरादा किया तो उस की ऊंटनी जो क़दम रखे या उठाएगी इस के बदले उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और एक गुनाह मिटाया जाएगा, बिला शुबा त़वाफ़ की दो रक्अ़तें औलादे इस्माईल में से एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर हैं, **सअ़्य** करना सत्तर गुलाम आज़ाद करने के बराबर है, **वुक़ूफ़** करने से गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं अगर्चे रैत के ज़र्रों या बारिश के क़त़रों या समुन्दर की झाग के बराबर हों, **जिमार** के हर कंकर के इवज़ हलाकत ख़ैज़ गुनाहों में से एक को मिटा दिया जाता है, कुरबानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास ज़ख़ीरा है, हर बाल मुंडवाने पर एक नेकी है और एक गुनाह मिटा दिया जाता है और इस के बा'द त़वाफ़ करने पर एक फ़िरिश्ता ह़ाजी के कन्धों पर हाथ रख कर कहता है : "आयन्दा के लिये अ़मल करो क्यूं कि तुम्हारे पिछले गुनाह बख़्श दिये गए।" (المرجع السابق،بتغيرٍقليلٍ)

सफ़रे ह़ज में मरने वाले की फ़ज़ीलत :

《64》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो ह़ज के इरादे से निकला फिर मर गया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक उस के लिये ह़ज का सवाब लिखेगा और

www.dawateislami.net

जो उ़म्रे के इरादे से निकला फिर मर गया उस के लिये क़ियामत तक उ़म्रह करने वाले का सवाब लिखा जाता रहेगा और जो जिहाद के इरादे से निकला और इन्तिक़ाल कर गया उस के लिये क़ियामत तक जिहाद करने वाले का सवाब लिखा जाता रहेगा।''

(مسند ابی یعلیٰ الموصلی ، مسند ابی ہریرۃ ، الحدیث: ٦٣٢٧، ج٥، ص ٤٤١)

ह़ज पर ख़र्च करना राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने से अफ़्ज़ल :

﴾65﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से उ़म्रह के मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : ''तुम्हारे लिये तुम्हारी तक्लीफ़, मशक़्क़त और अख़राजात के मुत़ाबिक़ सवाब है, ह़ज पर ख़र्च करना राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने से सात सो **(700)** गुना ज़ियादा (अफ़्ज़ल) है।''

(المستدرک،کتاب المناسک، الاجر علی قدر النفقۃ والتعب ، الحدیث: ١٧٧٦،ج٢ ، ص ١٣٠،بدون"النفقۃ......الی...... ضعف")

﴾66﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ह़ाजी कभी फ़क़ीर नहीं होता।''

(جامع الترمذی ،ابواب الحج ، باب ماجاء فی عمرۃ رمضان ،الحدیث: ٩٣٩ ، ص ١٧٤٠،ملخصاً)

माहे र-मज़ान में उ़म्रह की फ़ज़ीलत :

﴾67﴿......ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''र-मज़ानुल मुबारक में उ़म्रह करना मेरे साथ ह़ज करने के बराबर है।''

(صحیح مسلم ،کتا ب الحج، باب باب فضل العمرۃ فی رمضان......الخ، الحدیث:٢٢١/٢٢٢،ص٨٨٧)

﴾68﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया कि कौन सा अ़मल आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज करने के बराबर है ? तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''र-मज़ानुल मुबारक में उ़म्रह करना।''

(سنن ابی داؤد،کتا ب المناسک ،باب العمرۃ، الحدیث: ١٩٩٠،ص١٣٦٩)

एह़राम में दिन गुज़ारने वाले की फ़ज़ीलत :

﴾69﴿...... दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो बन्दा एह़राम की ह़ालत में दिन गुज़ारता है सूरज डूबते वक़्त उस के गुनाह अपने साथ ही ले जाता है।''

(الترغیب والترھیب ،کتاب الحج ، باب الترغیب فی الاحرام والتلبیۃ......الخ، الحدیث: ١٧٥٢ ، ج ٢ ، ص ٨٧)

www.dawateislami.net

《70》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब भी कोई बन्दा لَبَّیْکَ اللّٰهُمَّ لَبَّیْکَ कहता है तो उस के दाएं बाएं मौजूद ज़मीन की इन्तिहा तक का हर दरख़्त और पथ्थर तल्बिया पढ़ता है।"

(سنن ابن ماجة ،ابواب المناسك ، باب التلبية ، الحديث: ٢٩٢١ ، ص ٢٦٥٣،بدون "عن يمينه وشماله")

《71》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "रुक्ने यमानी और शिमाली को छूना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।"

(جامع الترمذی،ابوا ب الحج ،باب ماجاء فی استلام الرکنین، الحدیث:٩٥٩،ص١٧٤٢)

《72》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "तवाफ़ करने वाला जब भी कोई क़दम रखता या उठाता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के इवज़ उस का एक गुनाह मिटा देता है और उस के लिये एक नेकी लिखता है।"

(صحيح ابن حبان ،كتاب الحج ، باب فضل الحج والعمرة ،الحديث: ٣٦٨٩، ج ٦، ص٤)

《73》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने एक हफ़्ता बैतुल्लाह शरीफ़ का इस त़रह़ त़वाफ़ किया कि उस में कोई बेहूदा काम न किया तो उस का येह अ़मल उस के एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है।"

(المعجم الكبير ، الحديث: ٨٤٥ ، ج ٢٠ ، ص ٣٦٠)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 154 : मदीना शरीफ़ वालों को डराना
कबीरा नम्बर 155 : मदीने वालों के साथ बुराई का इरादा करना
कबीरा नम्बर 156 : मदीने में कोई बिद्अ़ते सय्यिआ ईजाद करना
कबीरा नम्बर 157 : मदीने में बिदअ़ती को पनाह देना
कबीरा नम्बर 158 : मदीनए त़य्यिबा के दरख़्त काटना
कबीरा नम्बर 159 : मदीनए मुनव्वरह की घास काटना

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "मदीना वालों के साथ जो भी चालबाज़ी करेगा वोह ऐसे पिघल जाएगा जैसे नमक पानी में घुल जाता है।"

(صحیح البخاری ،کتاب فضائل المدینه ،باب اثم من کاد اھل المدینة ، الحدیث: ۱۸۷۷ ، ص ۱٤۷)

《2》...... जब कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "और जो शख़्स मदीना वालों के साथ बुराई का इरादा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे आग में इस त़रह़ पिघला देगा जैसे सीसा पिघलता या नमक पानी में घुल जाता है।"

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب فضل المدینة ودُعاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم فیھا بالبرکة ، الحدیث: ۳۳۱۹ ، ص ۹۰۵)

《3》...... रह़मते दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मदीना वालों को ख़ौफ़ज़दा किया बिला शुबा उस ने उसे ख़ौफ़ज़दा किया जो मेरे पहलूओं के दरमियान है।" (المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند جابربن عبدالله ،الحدیث: ۱٤۸۲٤ ، ج ٥ ، ص ۱۳۱)

《4》...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अहले मदीना को ख़ौफ़ज़दा किया उस ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ौफ़ज़दा किया।" (المرجع السابق،الحدیث:۱٥۲۲۷)

ज़ाहिर है कि येह मुक़ाबले के मजाज़ में से है और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ौफ़ज़दा करने से मुराद ख़ौफ़ज़दा करने वाले और उस के साथ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तअ़ल्लुक़ के टूट जाने से किनाया (या'नी इशारा) है क्यूं कि ख़ौफ़ज़दा करने से मुराद क़त्ए रेह़मी,

www.dawateislami.net

दुश्मनी, दर्दनाक और रुस्वा कुन अ़ज़ाब, और ख़ौफ़ में से जो चीजें इस पर मु-तरत्तब होती हैं, का मु-तह़क़्क़क़ होना है।

《5》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो अहले मदीना पर ज़ुल्म करे या इन्हें ख़ौफ़ में मुब्तला करे तू उसे ख़ौफ़ में मुब्तला फ़रमा और उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के मलाएका और तमाम लोगों की ला'नत है, उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल (या'नी तौबा, क़ौल और अ़मल मक़्बूल होगा न फ़िदया वग़ैरा)।"

(المعجم الاوسط، الحديث: ٣٥٨٩ ، ج ٢ ، ص ٣٧٩)

《6》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मदीनए मुनव्वरह में कोई बिदअ़त ईजाद की या किसी बिदअ़ती को पनाह दी उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, मलाएका और तमाम लोगों की ला'नत है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल।" (صحيح مسلم ،كتاب الحج ،با ب فضل المدينه ودُعاء النبى ......الخ ، الحديث: ٣٣٢٣،ص ٩٠٥)

इब्ने क़य्यिम[1] ने तस्रीह़ की है कि "ह़-रमे मदीना को ह़लाल जानना कबीरा गुनाह है।" जब कि दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इर्शाद फ़रमाया कि "मदीनए मुनव्वरह के ह़रम को ह़लाल ठहराना अइम्मए सलासा के नज़्दीक कबीरा गुनाह है जब कि सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के नज़्दीक मदीने को ह़लाल ठहराना कबीरा गुनाह नहीं।"

《7》...... अइम्मए सलासा की दलील मुस्लिम शरीफ़ की येह ह़दीसे पाक है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से सुवाल किया गया : "क्या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरह को ह़रम बनाया है?" तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं, वोह ह़रम है इस लिये उस की सब्ज़ घास न काटी जाए जो ऐसा करेगा उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, मलाएका और तमाम लोगों की ला'नत हो।" (صحيح مسلم، كتاب الحج، باب فضل المدينه......الخ، الحديث: ٣٣٢٤، ص ٩٠٥، "ان انساً قيل له "بدله" سالت انسا")

---

1 : "इब्ने क़य्यिम इब्ने तीमिया का शागिर्दे ख़ास था इन दोनों के बारे में इमाम ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर हैतमी मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी किताब फ़तावा ह़दीसिया में फ़रमाते हैं : "इब्ने तीमिया और इस के शागिर्द इब्ने क़य्यिम जूज़िया वग़ैरा की किताबों में जो कुछ ख़ुराफ़ात हैं उन से ख़ुद को बचा कर रखना क्यूं कि येह वोह लोग हैं जिन्हों ने अपनी ख़्वाहिशात को अपना मा'बूद बना लिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जान कर इन को गुमराहियत में छोड़ दिया और इन के कानों और दिल पर मोहर कर दी और इन की आंखों पर पर्दा डाल दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कौन है जो ईन को हिदायत दे और (अफ़्सोस) कैसे इन बे दीनों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुदूद से तजावुज़ किया और बिदअ़तों में इज़ाफ़ा किया और शरीअ़त व ह़क़ीक़त की दीवार में सूराख़ कर दिया। और येह समझ बैठे कि हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हिदायत पर हैं जब कि वोह ऐसे नहीं हैं बल्कि वोह तो शदीद गुमराही व घटिया आ़दात से मुत्तसिफ़ हैं और इन्तिहाई सख़्त सज़ा व ख़सारे के मुस्तह़िक़ हैं और उन्हों ने झूट व बोहतान की इन्तिहा कर दी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के पैरौकारों को ज़लीलो रुस्वा करे और इन जैसों के वुजूद से ज़मीन को पाक करे।"

(فتاوىٰ حديثيه، ص ٢٧١) (اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

बयान कर्दा **छ** गुनाहों को इन अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद तस्रीह़ की बिना पर कबीरा गुनाह क़रार दिया गया है मगर मैं ने किसी को इन में से पहले दो गुनाहों को बिल्कुल ज़ाहिर होने के बा वुजूद कबीरा गुनाह क़रार देते हुए नहीं देखा, फिर मैं ने मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی में से एक को इस की तस्रीह़ करते हुए देखा मगर उन्हों ने इस की ता'बीर यूं की : "ह़-रमे मदीना को ह़लाल ठहराना और इस में बिदअ़त ईजाद करना।" ह़ालां कि इस का ज़ाहिरी मफ़्हूम वोही है जो हम ऊपर बयान कर चुके और जिसे आप उन सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका के ज़िम्न में जान चुके हैं।

सुवाल : पहले दो गुनाह अहले मदीना के साथ ख़ास नहीं बल्कि दीगर लोगों के ह़क़ में भी कबीरा होने चाहियें जैसा कि ईज़ा और ज़ुल्म के बयान में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का कलाम इस पर दलालत करता है ?

जवाब : मदीना वालों के साथ किसी क़िस्म की बुराई के इरादे या इन्हें किसी त़रीक़े से भी ख़ौफ़ में मुब्तला करने का ह़दीसे पाक में ख़ास त़ौर पर ज़िक्र होने की वजह से इसे कबीरा गुनाह क़रार देना मु-तअ़य्यन है जब कि दीगर लोगों के ह़क़ में ऐसा नहीं।

मदीनए मुनव्वरह के फ़ज़ाइल :

《8》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मेरा जो उम्मती मदीनए मुनव्वरह की सख़्ती और तंगदस्ती पर सब्र करेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या वोह मुसल्मान होगा तो उस के ह़क़ में गवाही दूंगा।"

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ،باب الترغیب فی سکنی المدینہ...... الخ الحدیث: ۳۳۴۷ ، ص۹۰۷،بدون"اذاکان مسلما")

《9》...... साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं मदीनए मुनव्वरह के इन दो पहाड़ों के दरमियान के दरख़्त काटने को या इस के शिकार को ह़राम क़रार देता हूं, मदीनए मुनव्वरह उन लोगों के लिये बेहतर था अगर वोह जानते जो इस से रू गर्दानी करते हुए इसे छोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की जगह उस से बेहतर को बदल देगा।"

(المرجع السابق، الحدیث:۳۳۱۸،ص۹۰۵)

《10》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अहले मदीना पर एक ज़माना ऐसा ज़रूर आएगा कि लोग ख़ुशह़ाली की तलाश में यहां से चरा गाहों की त़रफ़ निकल जाएंगे, फिर जब वोह ख़ुशह़ाली पा लेंगे तो लौट कर आएंगे और अहले मदीना को उस कुशा-दगी की त़रफ़ जाने पर आमादा करेंगे ह़ालां कि अगर वोह जान लें तो मदीनए मुनव्वरह उन के लिये बेहतर है।"

(المسندلامام احمدبن حنبل،مسندجابربن عبدالله والحدیث:۱٤٦٨٦،ج٥،ص١٠٦،"الاریاف"بدله"الافاق")

www.dawateislami.net

मदीनए मुनव्वरह में मरने की फ़ज़ीलत :

《11》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''तुम में से जो मदीनए मुनव्वरह में मरने की इस्तित़ाअ़त रखे वोह मदीने ही में मरे क्यूं कि जो मदीनए मुनव्वरह में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा और उस के ह़क़ में गवाही दूंगा।''

(شعب الایمان،باب فی المناسک، فضل الحج والعمرة ، الحدیث:١٤٨٢ ، ج٣،ص ٤٩٧)

《12》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''बीमारी और दज्जाल मदीनए मुनव्वरह में दाख़िल नहीं हो सकते।''

(الترغیب والترهیب،کتاب الحج،باب الترغیب فی سکنی......الخ،تحت الحدیث:١٨٧٤،ج٢، ص ١١٩)

《13》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ख़लील, तेरे बन्दे और तेरे नबी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने तुझ से मक्कए मुकर्रमा वालों के लिये दुआ़ मांगी थी और मैं तेरा बन्दा और तेरा रसूल मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) तुझ से उसी त़रह़ मदीनए मुनव्वरह वालों के लिये दुआ़ मांगता हूं जिस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने मक्कए मुकर्रमा वालों के लिये दुआ़ मांगी थी, हम तुझ से दुआ़ मांगते हैं कि तू इन के लिये इन के साअ़, इन के मुद और इन के फलों में ब-र-कत अ़त़ा फ़रमा।''

(المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث ابی قتادة،الحدیث:٢٢٦٩٣، ج٨،ص ٣٨٤)

《14》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! जिस त़रह़ तूने मक्कए मुकर्रमा को हमारा मह़बूब बनाया इसी त़रह़ मदीनए मुनव्वरह को भी हमारा मह़बूब बना दे और इस की बीमारी को **''मक़ामे जुह़फ़ा''** की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमा दे।'' (वहां से कोई परिन्दा भी उड़ता हुवा गुज़रता तो बीमार हो जाता)

(المرجع السابق،الحدیث:٢٢٦٩٣ ،ج٨ ،ص ٣٨٤)

《15》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने मदीनए मुनव्वरह की दो पहाड़ियों के दरमियान को ह़रम बनाया (या'नी मैं ने इस की हुरमत ज़ाहिर फ़रमाई) है जिस त़रह़ तूने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बान से मक्कए मुकर्रमा को ह़रम फ़रमाया है।''

(المرجع السابق،الحدیث: ٢٢٦٩٣ ، ج٨ ،ص ٣٨٤)

मुराद येह है कि मक्कए मुकर्रमा ज़मीन व आस्मान की तख़्लीक़ के वक़्त से ही था मगर इस की हुरमत मख़्फ़ी हो जाने के बाइस कम हो गई थी फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बान से इस की हुरमत को ज़ाहिर फ़रमाया।

《16》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये हमारे फलों में ब-र-कत अ़त़ा फ़रमा और

www.dawateislami.net

हमारे लिये हमारे मदीने में ब-र-कत अ़ता फ़रमा और हमारे लिये हमारे साअ़ और मुद में ब-र-कत अ़ता फ़रमा।''

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب فضل المدینة ودعاء ......الخ ،الحدیث: ٣٣٣٤ ، ص ٩٠٦)

《17》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَیْہِ السَّلَام) तेरे बन्दे, ख़लील और नबी हैं जब कि मैं भी तेरा बन्दा और नबी हूं, उन्हों ने तुझ से मक्कए मुकर्रमा के लिये दुआ़ की और मैं मदीनए मुनव्वरह के लिये वोही दुआ़ करता हूं जो उन्हों ने मक्कए मुकर्रमा के लिये मांगी थी और इतनी ही इस के साथ मज़ीद की दुआ़ मांगता हूं तो इस ब-र-कत को दो ब-र-कतों के साथ मिला दे और इस की बीमारी जुह़फ़ा की त़रफ़ मुन्तक़िल कर दे।'' (क्यूं कि वोह यहूदियों का मस्कन था)

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب فضل المدینة ودعاء النبی ......الخ ،الحدیث: ٣٣٣٤ ، ص٩٠٦)

(صحیح البخاری ،کتاب مناقب الانصار ،باب مقدم النبی واصحاب المدینه ، الحدیث: ٣٩٢٦،ص ٣٢٠)

मदीनए मुनव्वरह हर आफ़त से मह़फ़ूज़ :

《18》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! मदीनए मुनव्वरह में कोई शै नहीं, न फूट है न कोई सूराख़ और दो फ़िरिश्ते इस की ह़िफ़ाज़त के लिये मुअक्कल हैं।''

(صحیح مسلم ،کتاب الحج ، باب الترغیب فی سکنی المدینة......الخ،الحدیث:١٣٧٤،ص٩٠٦)

मदीना, शाम और यमन के लिये ब-र-कत की दुआ़ :

《19》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये हमारे साअ़ और मुद में ब-र-कत अ़ता फ़रमा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये हमारे शाम और यमन में ब-र-कत अ़ता फ़रमा।'' अ़र्ज़ की गई : ''और हमारे इराक़ में भी।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वहां शैत़ान का सींग (या'नी इस की हुक्मरानी की क़ुव्वत) और फ़ितनों की तु़ग़यानी होगी और बेशक जफ़ा मशरिक़ में है।''

(المعجم الکبیر، الحدیث: ١٢٥٥٣،ج١٢ ، ص ٦٦)

इस्लाम की निशानी और ईमान का घर :

《20》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मदीनए मुनव्वरह इस्लाम की निशानी, ईमान का घर, हिजरत की ज़मीन और ह़लाल व ह़राम का ठिकाना है।''

(المعجم الاوسط،الحدیث:٥٦١٨، ج٤ ، ص ١٧٤،مثوی بدله"مبوأ")

www.dawateislami.net

كتاب الاضحية
कुरबानी का बयान

कबीरा नम्बर 160 : कुरबानी के वुजूब का ए'तिक़ाद रखने वाले का इस्तिताअ़त के बा वुजूद कुरबानी न करना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो कुरबानी करने की वुस्अ़त पाए फिर भी कुरबानी न करे तो वोह हमारी ईदगाह की त़रफ़ न आए।''

(المستدرك،كتاب التفسير(سورة الحج)،باب التشديد فی امر الاضحية ، الحديث: ٣٥١٩ ، ص ٣ ، ص ١٤٨)

तम्बीह :

इस ह़दीसे पाक के ज़ाहिरी मफ़्हूम के ए'तिबार से इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है अगर्चे मैं ने किसी को इस के कबीरा गुनाह होने की तस्रीह़ करते हुए नहीं देखा क्यूं कि ईदगाह में ह़ाज़िर होने से मन्अ़ करने में सख़्त वईद पाई जाती है जब कि कुरबानी के मुस्तह़ब होने के क़ाइलीन म-सलन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی वग़ैरा इस का जवाब देते हैं कि इस ह़दीसे पाक को इमाम ह़ाकिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अगर्चे मरफ़ूअ़न रिवायत किया और इसे सह़ीह़ क़रार दिया है मगर उन्हों ने इसे मौक़ूफ़न भी रिवायत किया है।

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : ''शायद इस में शुबा है, लिहाज़ा ह़दीसे पाक में इस बात पर हुज्जत पूरी नहीं होती कि हम येह कहने लगें कि ह़ाज़िरी से मन्अ़ करने में सख़्त वईद है।

﴾2﴿...... क्या आप नहीं जानते कि सह़ीह़ ह़दीसे पाक में आया है : ''जिस ने लह्सन, पियाज़ या गेंदना (जो पियाज़ की त़रह़ बदबूदार होता है) खाया।'' जब कि एक और रिवायत में है, ''या मूली खाई।'' वोह हमारी मस्जिद के क़रीब न आए।''

(صحيح مسلم ،كتاب المساجد ، باب نهى من اكل ......الخ ،الحديث:١٢٥٤،ص٧٦٤،بدون"فجلا")

ह़ालां कि इस के बा वुजूद मज़्कूरा अश्या खाने में कोई ह़ुरमत नहीं मगर इस का जवाब येह है कि यहां इस मुमा-न-अ़त की ह़िक्मत येह है कि इस से इन्सानों या फ़िरिश्तों को बू के ज़रीए ईज़ा पहुंचती है, लिहाज़ा हम ने उस मुमा-न-अ़त को इसी पर मह़मूल कर लिया है जब कि कुरबानी से

www.dawateislami.net

मु-तअ़ल्लिक़ रिवायात में मुमा-न-अ़त की वजह इस के तर्क पर शिद्दत फ़रमाना है, कुरबानी के बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं जिन से शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नज़्दीक इस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा होता है।

कुरबानी के फ़ज़ाइल :

﴾3﴿...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! उठो अपनी कुरबानी के जानवर के पास जाओ और उसे ले कर आओ क्यूं कि उस के ख़ून का पहला क़त्रा गिरने पर तुम्हारे पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह इन्आ़म हम अहले बैत के साथ ख़ास है या हमारे और तमाम मुसल्मानों के लिये आ़म है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बल्कि हमारे और तमाम मुसल्मानों के लिये आ़म है।"

(المستدرك، كتاب الاضاحى، باب يغفر لمن يضحى......الخ، الحديث: ٧٦٠٠، ج٥، ص ٣١٤)

﴾4﴿...... **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! उठो अपनी कुरबानी का जानवर ले कर आओ क्यूं कि उस के ख़ून का पहला क़त्रा गिरते ही तुम्हारे तमाम गुनाहों को बख़्श दिया जाएगा जब कि वोह जानवर अपने ख़ून और गोश्त के साथ लाया जाएगा और 70 गुना इज़ाफ़े के साथ तुम्हारे मीज़ान में रखा जाएगा।"

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह इन्आ़म अहले बैत (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के साथ ख़ास है ? क्यूं कि वोही अपने साथ ख़ास शुदा भलाइयों के अहल हैं या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आल और तमाम मुसल्मानों के लिये आ़म है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अहले बैत (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के लिये ख़ास जब कि दीगर मुसल्मानों के लिये आ़म है।" (السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الضحايا، باب مايستحب للمرء......الخ، الحديث: ١٩١٦١، ج٩، ص٤٧٦)

﴾5﴿...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "येह कुरबानियां क्या हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारे बाप इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत हैं।" उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : "हमारे लिये इस में क्या अज्र है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर बाल के बदले एक नेकी।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "और ऊन में (क्या अज्र है) ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऊन के हर बाल के बदले भी एक नेकी।" (سنن ابن ماجة، ابواب الاضاحى، باب ثواب الاضحية، الحديث: ٣١٢٧، ص٢٦٦٧)

www.dawateislami.net

﴾6﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कुरबानी के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आदमी का कोई अमल ख़ून बहाने से ज़ियादा पसन्दीदा नहीं और वोह जानवर क़ियामत के दिन अपने सींगों, बालों और खुरों के साथ आएगा और ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां (क़बूलिय्यत के) मक़ाम पर पहुंच जाता है लिहाज़ा ख़ुशदिली से कुरबानी किया करो।"

(جامع الترمذی ،ابواب الاضاحی ، باب ماجاء فی فضل الاضحیۃ ،الحدیث: ۱۴۹۳ ، ص ۱۸۰۴)

﴾7﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कुरबानी के दिन आदमी का कोई अमल ख़ून बहाने से ज़ियादा अफ़्ज़ल नहीं मगर जब कि वोह अमल सिलए रेहमी करना हो।" (المعجم الکبیر ، الحدیث: ۱۰۹۴۸ ، ج ۱۱ ، ص ۲۷)

﴾8﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ऐ लोगो ! ख़ुशदिली से कुरबानी किया करो और उन के ख़ून पर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ और अज्र की उम्मीद रखो अगर्चे वोह ज़मीन पर गिर चुका हो क्यूं कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हिफ़ाज़त में गिरता है।"

(المعجم الاوسط ، الحدیث: ۸۳۱۹ ، ج ۶ ، ص ۱۴۸)

﴾9﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने अपनी कुरबानी पर सवाब की उम्मीद रखते हुए ख़ुशदिली के साथ कुरबानी की, वोह जानवर उस के लिये जहन्नम से हिजाब होगा।" (المعجم الکبیر ،الحدیث: ۲۷۳۶ ، ج ۳ ، ص ۸۴)

कबीरा नम्बर 161 : कुरबानी के जानवर की खाल बेचना

﴾1﴿...... रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने कुरबानी की खाल बेच दी उस की कोई कुरबानी नहीं।"

(المستدرک، کتاب التفسیر سورۃ الحج، باب التشدید فی امر الاضحیۃ ،الحدیث: ۳۵۲۰ ، ج ۳ ، ص ۱۴۹)

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया अगर्चे मैं ने किसी को इस की तस्रीह करते हुए नहीं देखा मगर हदीसे पाक का ज़ाहिरी मा'ना इस के कबीरा होने पर दलालत करता है क्यूं कि खाल बेचने की वजह से कुरबानी की नफ़ी करना इस बात पर दलालत करता है कि इस अज़ीम इबादत का सवाब बिल्कुल बातिल करने की वजह से इस में शदीद वईद पाई जा रही है।

www.dawateislami.net

जैसा कि मौज़ूअ़ नफ़ी का ज़ाहिर इस बात का तक़ाज़ा करता है कि क़ुरबानी की भी सिरे से नफ़ी है और येह इस बात की ताईद है कि वोह खाल क़ुरबानी के साथ ही उस की मिल्क से निकल जाती है और फ़ु-क़रा की मिल्किय्यत बन जाती है, पस जब वोह उस का वाली बना और उसे बेचा तो वोह ग़ैर के ह़क़ को ग़स्ब करने वाला हुवा और अ़न्क़रीब आएगा कि ग़स्ब कबीरा गुनाह है और येह भी ग़स्ब ही की एक सूरत है, पस इसे कबीरा शुमार करना वाज़ेह़ हो गया और क़स्साब को बत़ौरे उजरत क़ुरबानी की खाल देने को भी इसी से मिलाना चाहिये क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने तस्रीह़ फ़रमाई है कि येह भी इसे बेचने की त़रह़ ह़राम ही है और जिस त़रह़ बेचने में इस का ग़स्ब होना पाया जा रहा है, जैसा कि साबित हो चुका, इसी त़रह़ क़स्साब को बत़ौरे उजरत देने में इस का इसी त़रह़ कबीरा गुनाह होना बईद नहीं।[1]

☆....**1 :** अह़नाफ़ के नज़्दीक **:** ''क़ुरबानी का चमड़ा और उस की झोल और रस्सी और उस के गले में हार डाला है वोह हार और उन सब चीज़ों को स-दक़ा कर दे। क़ुरबानी के चमड़े को ख़ुद भी अपने काम में ला सकता है या'नी उस को बाक़ी रखते हुए अपने किसी काम में ला सकता है म-सलन उस की जा नमाज़ बनाए, चलनी, थैली, मश्कीज़ा, दस्तर ख़्वान, डोल वग़ैरा बनाए या किताबों की जिल्दों में लगाए येह सब कर सकता है।'' (درمختار، کتاب الاضحیۃ، ج۹،ص۵۴۳)

☆...... चमड़े का डोल बनाया तो उसे अपने काम में लाए उजरत पर न दे और अगर उजरत पर दे दिया तो उस उजरत को स-दक़ा करे। (رد المحتار، کتاب الاضحیۃ، ج۹،ص۵۴۳)

☆...... क़ुरबानी के चमड़े को ऐसी चीज़ों से बदल सकता है जिस को बाक़ी रखते हुए उस से नफ़्अ़ उठाया जाए जैसे किताब। ऐसी चीज़ से बदल नहीं सकता जिस को हलाक कर के नफ़्अ़ ह़ासिल किया जाता हो जैसे रोटी, गोश्त, सिर्का, रुपिया, पैसा और अगर उस ने इन चीज़ों को चमड़े के इ़वज़ में ह़ासिल किया तो उन चीज़ों को स-दक़ा कर दे। (درمختار، کتاب الاضحیۃ، ج۹،ص۵۴۳)

☆...... अगर क़ुरबानी की खाल को रुपै के इ़वज़ में बेचा मगर इस लिये नहीं कि इस को अपनी ज़ात पर या बाल बच्चों पर सर्फ़ करेगा बल्कि इस लिये कि उसे स-दक़ा कर देगा तो जाइज़ है। (فتاوی عالمگیری، کتاب الاضحیۃ، الباب السادس فی بیان مایستحب ......الخ، ج۵،ص۳۰۱)

☆...... जैसा कि आज कल अक्सर लोग खाल मदारिसे दीनिया में दिया करते हैं और बा'ज़ मरतबा वहां खाल भेजने में दिक़्क़त होती है उसे बेच कर रुपिया भेज देते हैं या कई शख़्सों को देना होता है उसे बेच कर दाम उन फ़ु-क़रा पर तक़्सीम कर देते हैं येह बैअ़ जाइज़ है इस में ह़रज नहीं और ह़दीस में जो इस के बेचने की मुमा-न-अ़त आई है इस से मुराद अपने लिये बेचना है। क़ुरबानी का चमड़ा या गोश्त या इस में की कोई चीज़ क़स्साब या ज़ब्ह़ करने वाले को उजरत में नहीं दे सकता कि उस को उजरत में देना भी बेचने ही के मा'ना में है। (الهداية، کتاب الاضحیۃ، باب علی من تجب الاضحیۃ، ج۴،ص۳۶۱)

क़ुरबानी के जानवर के मु-तअ़ल्लिक़ मज़ीद तफ़्सीलात के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 15 ''**क़ुरबानी के जानवर का बयान**'' और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला ''**अब्लक़ घोड़े सुवार**'' का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

كتاب الصيد و الذبائح
शिकार और ज़ब्ह़ करने का बयान

कबीरा नम्बर **162 :** **जि़न्दा जानवर के जिस्म का कोई हि़स्सा काटना**

कबीरा नम्बर **163 :** **अ़लामत के लिये जानवर का चेहरा दाग़ना**

कबीरा नम्बर **164 :** **जानवर को टार्गेट बना कर निशाना बाज़ी करना**

कबीरा नम्बर **165 :** **खाने के इ़लावा किसी और ग़रज़ से जानवर का शिकार करना**

कबीरा नम्बर **166 :** **जानवर को अच्छी त़रह़ ज़ब्ह़ न करना**

﴾**1**﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी "ज़ी रूह़" का मुस्ला किया फिर तौबा न की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस का मुस्ला फ़रमाएगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب ، الحديث: ٥٦٦٥ ، ج٢ ، ص ٤٠٣)

﴾**2**﴿...... ह़ज़रते मालिक बिन **नज़्लह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं रह़मते कौनैन, ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हारी क़ौम के ऊंट सह़ीह़ बच्चे नहीं जनते कि तुम उन्हें छुरी की त़रफ़ ले आते हो, उन के कान काट देते हो और जिल्द चीर देते हो और कहते हो कि येह "**सरम**" है, (या'नी जिस के कान काट दिये जाएं) लिहाज़ा उसे अपने आप पर और घर वालों पर ह़राम कर देते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर वोह चीज़ जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तुम्हारे पास आई है ह़लाल है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत का बाज़ू तुम्हारे बाज़ू से बहुत क़वी है और उस की छुरी तुम्हारी छुरी से बहुत तेज़ है।" (या'नी अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जानवर का कान चीरना पसन्द होता तो उसे कान चीरा हुवा ही पैदा करता उसे क्या मुश्किल है) (المرجع السابق ،الحديث: ١٥٨٨٨ ج٥ ، ص ٣٨٣)

﴾**3**﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक ऐसे गधे के पास से गुज़रे जिस के मुंह को निशानी के लिये दाग़ा गया था तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे दाग़ने वाले पर ला'नत फ़रमाए।"

(صحيح مسلم ،كتاب اللباس ، باب النهى عن الضرب الحيوان ......الخ ، الحديث:٥٥٥٠/٥٥٥٢، ص ١٠٥٦)

चेहरा दाग़ने और इस पर मारने की मुमा-न-अ़त सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ीह़ ह़दीस से साबित है।

www.dawateislami.net

चेहरे पर मारने और दाग़ने की मुमा-न-अ़त और वईदें :

《4》...... ह़दीसे पाक में है कि ''मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चेहरा दाग़ने वाले पर ला'नत फ़रमाई ।'' (کنزالعمال،کتاب الصحبة قسم الاقوال، الحدیث: ۲۵۰۳۶،ج۹،ص۳۳)

《5》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक गधे के पास से गुज़रे, उस के चेहरे को दाग़ा गया था और नथनों से ख़ून बह रहा था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने ऐसा किया है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाए ।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चेहरा दाग़ने और चेहरे पर मारने से मन्अ़ फ़रमाया ।

(صحیح ابن حبان ،کتاب الحظر والاباحة ،باب المثلة ، الحدیث: ۵۵۹۱، ج۷، ص ۴۵۴،مختصرًا)

《6》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا क़ुरैश के कुछ जवानों के क़रीब से गुज़रे, उन्हों ने निशाना बाज़ी के लिये एक परन्दा या मुर्ग़ी को बांध रखा था, और परन्दे के मालिक के लिये (निशाने पर) न लगने वाले तीर मुक़र्रर कर रखे थे, जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को देखा तो मुन्तशिर हो गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ''येह किस ने किया है ? **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ऐसा करने वाले पर ला'नत फ़रमाए क्यूं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर ज़ी रूह़ शै को निशाना बनाने वाले पर ला'नत फ़रमाई है ।''

(صحیح مسلم ،کتاب الصید،باب النهی عن صبر البهائم،الحدیث:۵۰۶۲،ص۱۰۲۷،بدون"اودجاجة")

बिला ज़रूरत परन्दों को क़त्ल करने की मुमा-न-अ़त :

《7》...... साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो आदमी किसी चिड़िया को बिला ज़रूरत क़त्ल करेगा तो वोह चिड़िया क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में फ़रियाद करेगी : ''या रब عَزَّ وَجَلَّ ! फ़ुलां ने मुझे बिला ज़रूरत क़त्ल किया था किसी नफ़्अ़ के लिये क़त्ल नहीं किया ।''

(سنن النسائی،کتاب الضحایا ، باب من قتل عصفور ابغیر حقها،الحدیث:۴۴۵۱،ص۲۳۷۷)

《8》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो इन्सान किसी चिड़िया या इस से बड़े किसी ज़ी रूह़ को नाह़क़ क़त्ल करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस से इस के बारे में पूछगछ फ़रमाएगा ।'' अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन का ह़क़ क्या है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''खाने के लिये ज़ब्ह़ करे और निशाना बाज़ी के लिये उस का सर न काटे ।'' (المرجع السابق، الحدیث: ۴۳۵۴، ص ۲۳۷۱،بدون"یوم القیامة")

《9》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हर शै पर एह़सान फ़र्ज़ किया है, लिहाज़ा जब तुम किसी को क़त्ल करो तो

www.dawateislami.net

अह्सन त़रीके़ से क़त्ल करो और जब जानवर ज़ब्ह़ करो तो अच्छी त़रह़ ज़ब्ह़ करो और तुम में से हर एक को चाहिये कि वोह अपनी छुरी तेज़ कर ले और अपने ज़बीहे़ को आराम पहुंचाए।''

(صحیح مسلم ،کتاب الصید ، باب الامر باحسان الذبح والقتل ......الخ الحدیث: ۵۰۵۵، ص ۱۰۲۷)

﴾10﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक आदमी के क़रीब से गुज़रे, वोह बकरी की गरदन पर पाउं रख कर छुरी तेज़ कर रहा था और बकरी उस की त़रफ़ देख रही थी, आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : ''क्या तुम पहले ऐसा नहीं कर सकते थे ? क्या तुम इसे कई मौतें मारना चाहते हो ? इसे लिटाने से पहले अपनी छुरी क्यूं न तेज़ कर ली ?''

(المستدرک،کتاب الاضاحی،باب لتحد الشفرة قبل اضجاع الاضحیة،الحدیث:۷۶۳۷،ج۵ ، ص۳۲۷،بدون" فلا قبل ھذا")

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने एक शख़्स़ को देखा जो बकरी को ज़ब्ह़ करने के लिये उस की टांग को घसीट रहा था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''तेरे लिये ख़राबी है, इसे मौत की त़रफ़ अच्छे अन्दाज़ में ले कर जा।''

(المصنف لعبد الرزاق ،کتاب المناسک ، باب سنة الذبح ، الحدیث: ۸۶۳۶، ج٤ ،ص ۳۷٦)

जो रह़्म नहीं करता उस पर रह़्म नहीं किया जाता :

﴾12﴿...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो लोगों पर रह़्म नहीं करता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस पर रह़्म नहीं फ़रमाता।''

(صحیح مسلم ،کتاب الفضائل ، باب رحمته صلی اللہ علیہ وسلم الصبیان والعیال، الحدیث: ۶۰۳۰ ، ص ۱۰۸۷)

﴾13﴿...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम उस वक़्त तक हरगिज़ मोमिन नहीं हो सकते जब तक आपस में रह़्म न करने लगो।'' स़ह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक रह़्म दिल है।'' तो आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अपने दोस्त पर रह़्म करना मुराद नहीं बल्कि आ़म रह़्म दिली मुराद है।''

(مجمع الزوائد،کتاب البر والصلة ، باب رحمة الناس ، الحدیث: ۱۳۶۷۱ ،ج۸،ص ۳٤۰)

﴾14﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''रह़्म किया करो तुम पर भी रह़्म किया जाएगा और मुआ़फ़ कर दिया करो तुम्हें भी मुआ़फ़ कर दिया जाएगा।'' आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : ''बात को बे तवज्जोही से सुनने वाले के लिये हलाकत है और जान बूझ कर अपने (बुरे आ'माल) पर इस्रार करने (या'नी डट जाने) वालों के लिये हलाकत है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص،الحدیث:۶۵۵۲،ج۲ص۵۶۵)

www.dawateislami.net

और ह़दीसे पाक में वारिद लफ़्ज़ "اَقْمَاعُ الْقَوْل" से मुराद वोह शख़्स है : "जो सुनता तो है लेकिन न याद रखता है और न ही उस पर अ़मल करता है।" और इस को "قمع" और "جامع" से तश्बीह दी गई। قمع से मुराद वोह चीज़ (या'नी क़ीफ़ या कुप्पी) है जो तंग बरतन के सर पर रखी जाती है यहां तक कि बरतन भर जाए। और "جامع" से मुराद येह कि पानी उस के पास से गुज़र जाता है लेकिन उस में नहीं ठहरता, इसी त़रह़ नसीह़त उन के कानों पर से गुज़र जाती है लेकिन वोह उस पर अ़मल नहीं करते।

तम्बीह :

मैं ने इन पांच गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया अगर्चे मैं ने किसी को इन्हें कबीरा गुनाहों में शुमार करते नहीं देखा इस की वजह येह है कि पहले पांच गुनाहों के कबीरा गुनाह होने पर पहली ह़दीसे पाक में वारिद शदीद वई़द सराह़त करती है, जब कि दूसरी ह़दीसे पाक मुस्ला के कबीरा होने पर दलील है, तीसरी और चौथी ह़दीसे पाक दाग़ने पर जब कि पांचवीं ह़दीसे पाक निशाना बाज़ी के लिये ह़ैवान को बांध कर निशाना बनाने पर और छटी ह़दीसे पाक खाने की ज़रूरत के बिग़ैर शिकार करने के कबीरा गुनाह होने पर दलील है,[1] जब कि छटे गुनाह पर छटी ह़दीसे पाक भी दलालत कर रही है और इसे मुस्ला और दाग़ने पर भी क़ियास किया जा सकता है, क्यूं कि येह ह़ैवान को ईज़ा पहुंचाने या मुर्दार हो जाने के बा'द उसे खाने का सबब है और सख़्त ईज़ा के कबीरा होने में कोई शक नहीं, जैसे आयन्दा आने वाले मुर्दार खाने के बयान से ज़ाहिर है।

फिर मैं ने एक जमाअ़त को मुत़्लक़न येह बयान करते देखा कि "ह़ैवान को अ़ज़ाब देना कबीरा गुनाह है।" बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने ह़ैवान को भूका प्यासा क़ैद रखने यहां तक कि वोह मर जाए और उस के चेहरे को आग से दाग़ने या चेहरे पर मारने को कबीरा गुनाह शुमार किया है और बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की उस रिवायत से इस्तिद्लाल किया है जिस में एक औ़रत के

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त में फ़रमाते हैं : "शिकार करना एक मुबाह़ फ़े'ल है मगर ह़रम या एह़राम में ख़ुश्की का जानवर शिकार करना ह़राम है इसी त़रह़ अगर शिकार मह़ज़ लह्‌व के त़ौर पर हो तो वोह मुबाह़ नहीं। अक्सर इस फ़े'ल से मक़्सूद ही खेल और तफ़्रीह़ होती है इसी लिये उ़र्फ़े आ़म में शिकार खेलना बोला जाता है। जितना वक़्त और पैसा शिकार में ख़र्च किया जाता है, अगर इस से बहुत कम दामों में घर बैठे उन लोगों को वोह जानवर मिल जाया करे तो हरगिज़ राज़ी न होंगे येही वोह चाहेंगे जो कुछ हो हम तो ख़ुद अपने हाथ से शिकार करेंगे इस से मा'लूम हुवा कि उन का मक़्सद खेल और लह्‌व ही है। शिकार करना जाइज़ व मुबाह़ उस वक़्त है कि उस का सह़ीह़ मक़्सद हो म-सलन खाना या बेचना या दोस्त व अह़बाब को हदिय्या करना उस के चमड़े को काम में लाना या उस जानवर से अज़िय्यत का अन्देशा है इस लिये क़त्ल करना वग़ैरा।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 17, स. 11)

www.dawateislami.net

बिल्ली को क़ैद करने का तज़्किरा है कि बिल्ली ने उसे जहन्नम में दाख़िल कर दिया, नीज़ उन्हों ने शर्हे मुस्लिम के येह अल्फ़ाज़ भी दलील के तौर पर पेश किये हैं कि ''वोह औरत मुसल्मान थी और उस की ना फ़रमानी कबीरा गुनाह थी।''

सुवाल : हमारे शाफ़ेई अइम्मा عَلَيْهِمُ الرَّحْمَة ने कुन्द छुरी से जानवर ज़ब्ह करने को मक्रूह क़रार दिया, इस सूरत में बयान कर्दा बुरा सुलूक कबीरा गुनाह कैसे हो सकता है ?

जवाब : उन के कलाम को इस सूरत पर मह़मूल करना मु-तअ़य्यन है जब कि छुरी कुन्द हो लेकिन वोह ज़बीहा़ की ह़-र-कत से क़ब्ल ही खाने और सांस वाली रग को काट दे तो इस सूरत में थोड़ी सी तक्लीफ़ के बा वुजूद येह जाइज़ है, शाफ़ेई अइम्मा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की भी येही मुराद है कि येह उस दलील की वजह से मक्रूह है कि अगर कुन्द छुरी के साथ ज़ब्ह़ करने से सिर्फ़ ज़ब्ह़ करने वाले की ताक़त से ज़ब्ह़ हो तो जाइज़ नहीं, और अगर वोह खाने और सांस वाली बा'ज़ रग कटने से पहले ही मर जाए तो येह उसे ह़राम और मुर्दार कर देगा, जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने तस्रीह़ की है लिहाज़ा इस गुनाह के कबीरा होने के क़ौल को इस सूरत पर मह़मूल करना मु-तअ़य्यन हो जाता है क्यूं कि हैवान को मुर्दार कर देना बिला शुबा कबीरा गुनाह है।

ज़ब्ह़ के सह़ीह़ और ग़लत़ त़रीक़े

जान लीजिये ! ख़ुश्की का ह़लाल जानवर जिस पर क़ुदरत ह़ासिल हो अगर्चे जंगली ही क्यूं न हो किसी मुसल्मान या ज़िम्मी के ज़ब्ह़ करने से ही ह़लाल हो सकता है तो जिस ज़िन्दा ह़ालत में हड्डी के इ़लावा किसी भी तेज़ धार आले के साथ शर-ई त़रीक़े से ज़ब्ह़ किया गया, अगर्चे दांत और नाख़ुन ही से हो तो वोह ह़लाल है। लेकिन अगर उस ने जानवर को गुद्दी से ज़ब्ह़ किया या गरदन की सत़ह़ से या उस के कान में छुरी दाख़िल की तो ज़ब्ह़ हो जाएगा।[1] बशर्ते कि गुद्दी से काटने की वजह से ज़बीहा़ की ह़-र-कत से मरी (या'नी खाने वाली रग) और बा'ज़ रगें भी कट जाएं लेकिन वोह गुनहगार और ना फ़रमान होगा और अगर उसे (ज़ब्ह़ के शर-ई त़रीक़े का) इ़ल्म हो और इस के बा वुजूद जान बूझ कर मह़ज़ जानवर को शदीद ईज़ा देने के लिये ऐसा करे तो फ़ासिक़ हो जाएगा। ज़िन्दगी के पाए जाने के लिये ग़ालिब गुमान ही काफ़ी है जैसा कि ज़ब्ह़ के बा'द जानवर शदीद

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त** में फ़रमाते हैं : ''ज़ब्ह़ हर उस चीज़ से कर सकते हैं जो रगें काट दे और ख़ून बहा दे येह ज़रूर नहीं कि छुरी ही से ज़ब्ह़ करें बल्कि खपची (या'नी बांस के चिरे हुए टुकड़े) और धारदार पथ्थर से भी ज़ब्ह़ हो सकता है सिर्फ़ नाख़ुन और दांत से ज़ब्ह़ नहीं कर सकते जब कि येह अपनी जगह पर क़ाइम हों और अगर नाख़ुन काट कर जुदा कर लिया हो या दांत अ़लाहि़दा हो गया हो तो उस से अगर्चे ज़ब्ह़ हो जाएगा मगर फिर भी इस की मुमा-न-अ़त है कि जानवर को इस से अज़िय्यत होगी। इसी त़रह़ कुन्द छुरी से भी ज़ब्ह़ करना मक्रूह है।''
(बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 15, स. 74,75)

www.dawateislami.net

ह्-र-कत करे और उस का ख़ून बहने लगे और वोह उछलने लगे, अगर खाने और सांस वाली रगों में से कोई रग कटने से रह गई[1] और अब उस जानवर के सर को छुरी या किसी दूसरी चीज़ म-सलन बन्दूक़ की गोली वग़ैरा के ज़रीए़ जुदा कर दिया अगर्चे बा'द में दोनों रगें काट दी जाएं, या जिस जानवर में ज़ब्ह़ की शराइत़ को पूरा न किया गया यहां तक कि जानवर की ज़िन्दगी ख़त्म हो गई या ज़िन्दा होने में शक वाक़ेअ़ हो गया, या ज़ब्ह़ करने के साथ साथ उस की अंतड़ियां भी निकाल दी गईं और वोह किसी तेज़ धार भारी शै के लगने से मर गया जैसे तीर का चौड़ाई में लगना अगर्चे वोह ख़ून भी बहा दे, या किसी ह़राम त़रीक़े से मर गया जैसे तीर से ज़ख़्म लगा और वोह गुज़रते हुए चौड़ाई में उस से टकराया, या किसी ह़लाल त़रीक़े से मर गया जैसे तीर से शदीद ज़ख़्म लगा और वोह किसी तेज़ धार चीज़ पर या पानी में गिर कर मर गया, तो इन सब सूरतों में ह़राम होगा।

और अगर किसी दरिन्दे ने शिकार को ज़ख़्म लगाया या किसी बकरी पर दीवार गिर गई या उस ने नुक़्सान देह घास खा ली पस उस को ज़ब्ह़ किया गया तो वोह ह़लाल नहीं, हां ! अगर इब्तिदाए ज़ब्ह़ में उस में ज़िन्दगी हो तो ह़लाल है, अलबत्ता ! अगर वोह जानवर बीमार या भूका था तो उसे ज़ब्ह़ करना जाइज़ है अगर्चे उस में ज़िन्दगी की चन्द सांसें ही बाक़ी हों क्यूं कि यहां ऐसा कोई सबब नहीं जिस पर हलाकत का हुक्म लगाया जाए।[2]

☆...... **1 :** अह़नाफ़ के नज़्दीक : "ज़ब्ह़ की चार रगों में से तीन का कट जाना काफ़ी है या'नी इस सूरत में भी जानवर ह़लाल हो जाएगा कि अक्सर के लिये वोही हुक्म है जो कुल के लिये है और अगर चारों में से हर एक का अक्सर ह़िस्सा कट जाएगा जब भी ह़लाल हो जाएगा और अगर आधी आधी हर रग कट गई और आधी बाक़ी है तो ह़लाल नहीं।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 15, स. 74)

☆...... **2 :** अह़नाफ़ के नज़्दीक : "जिस जानवर को ज़ब्ह़ किया जाए वोह वक़्ते ज़ब्ह़ ज़िन्दा हो अगर्चे उस की ह़यात का थोड़ा ही ह़िस्सा बाक़ी रह गया हो। ज़ब्ह़ के बा'द ख़ून निकलना या जानवर में ह़-र-कत पैदा होना यूं ज़रूरी है कि उस से उस का ज़िन्दा होना मा'लूम है।...... बकरी ज़ब्ह़ की और ख़ून निकला मगर उस में ह़-र-कत पैदा न हुई अगर वोह ऐसा ख़ून है जैसे ज़िन्दा जानवर में होता है ह़लाल है।...... बीमार बकरी ज़ब्ह़ की, सिर्फ़ उस के मुंह को ह़-र-कत हुई और अगर वोह ह़-र-कत येह है कि मुंह खोल दिया तो ह़राम है और बन्द कर लिया तो ह़लाल है, और आंखें खोल दीं तो ह़राम और बन्द कर लीं तो ह़लाल, और पाउं फैला दिये तो ह़राम और समेट लिये तो ह़लाल, और बाल खड़े न हुए तो ह़राम और खड़े हो गए तो ह़लाल या'नी अगर सह़ीह़ त़ौर पर उस के ज़िन्दा होने का इ़ल्म न हो तो इन अ़लामतों से काम लिया जाए, और अगर ज़िन्दा होना यक़ीनन मा'लूम है तो इन चीज़ों का ख़याल नहीं किया जाएगा, बहर ह़ाल जानवर ह़लाल समझा जाएगा।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 15, स. 74)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 167 : ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करना

या'नी ग़ैरुल्लाह के नाम पर इस त़रह़ जानवर ज़ब्ह़ करना कि कुफ़्र लाज़िम न आए यूं कि जिस के लिये जानवर ज़ब्ह़ किया जा रहा है उस की ता'ज़ीम मक़्सूद न हो जैसे इबादत और सज्दे से ता'ज़ीम की जाती है

जैसा कि अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया है और इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान से इस्तिद्लाल किया है :

وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ۠ (پ۸،انعام:۱۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उसे न खाओ जिस पर **अल्लाह** का नाम न लिया गया और वोह बेशक हुक्म उ़दूली है और बेशक शैत़ान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उन का कहना मानो तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो।

अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं मज़्कूरा आयत में बयान कर्दा हुक्म उस वक़्त है जब जानवर को ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़ब्ह़ किया जाए क्यूं कि येह अ़मल ही फ़िस्क़ (या'नी हुक्म उ़दूली) है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ (پ۸،الانعام:۱۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या वोह बे हुक्मी का जानवर जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया।

और इस आयते मुबा-रका से येह भी ज़ाहिर हुवा कि जिस जानवर पर **बिस्मिल्लाह** न पढ़ी जाए वोह ह़लाल है। और इस की ताईद इस क़ौल से भी होती है कि :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने सूरए माइदह की तीसरी आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाया : "इस से मुराद मुर्दार और गला घोंट कर मारा जाने वाला जानवर है।" और वोह आयते मुबा-रका येह है :

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَاۤ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۟ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ (پ۶،المائدہ:۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर ह़राम है मुर्दार और ख़ून और सुवर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे और बे धार की चीज़ से मारा हुवा और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें तुम ज़ब्ह़ कर लो और जो किसी थान पर ज़ब्ह़ किया गया।

www.dawateislami.net

तफ़्सीरी अक़्वाल :

सय्यिदुना कल्बी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "इस से मुराद वोह जानवर है जो ज़ब्ह़ न किया गया हो या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी और के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो।"

सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "क़ुरैश और अ़रब जो जानवर बुतों पर चढ़ावे के लिये ज़ब्ह़ किया करते थे इन से मन्अ़ किया गया है।"

एक क़ौल येह है : ''وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ'' से मुराद हर वोह मुर्दार है जिस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम न लिया गया हो और फ़िस्क़ से मुराद दीन से ख़ारिज हो जाना है।"

इस आयते मुबा-रका (پ:۸،الانعام:۱۲۱) وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ का मत़्लब येह है कि शैत़ान अपने दोस्तों के दिल में वस्वसे डालता है कि वोह मुर्दार के बारे में बात़िल त़रीक़े से ईमान वालों से झगड़ें।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं : "शैत़ान ने अपने इन्सानी दोस्तों के दिल में येह बात डाली कि तुम उस ज़ात की इ़बादत कैसे करते हो ? जिस के मारे हुए को नहीं खाते जब कि अपना मारा हुवा खा लेते हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई :

وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ (پ:۸،الانعام:۱۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम उन का कहना मानो तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुजाज رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : "आयते करीमा इस बात पर दलील है कि जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा शै को ह़लाल जाना या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़लाल कर्दा शै को ह़राम जाना वोह मुश्रिक है बशर्ते़ कि इस ह़िल्लत या ह़ुरमत पर इज्माअ़ हो और उस का ज़रूरिय्याते दीन में से होना मा'लूम हो।"

सुवाल : आप ने मुसल्मान के ज़बीह़ा को (बिस्मिल्लाह तर्क होने के बा वुजूद) मुबाह़ कैसे क़रार दिया ह़ालां कि आयते मुबा-रका ह़ुरमत में नस की त़रह़ है ?

जवाब : मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इस आयते करीमा की तफ़्सीर सिर्फ़ मुर्दार से की है किसी ने भी इसे बिस्मिल्लाह न पढ़ने की सूरत में मुसल्मान के ज़बीह़े पर मह़मूल नहीं किया।

www.dawateislami.net

और इस आयते मुबा-रका से मुर्दार मुराद होने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान "وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ" भी दलालत करता है क्यूं कि तस्मिया तर्क करने वाले मोमिन को हुरमत के ए'तिक़ाद की सूरत में फ़ासिक़ नहीं कहा जा सकता क्यूं कि इस की ह़िल्लत में क़वी इख़्तिलाफ़ की वजह से मुनासिब है कि येह हुरमत के क़ाइल के नज़्दीक भी सग़ीरा हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है : وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ क्यूं कि मुफ़स्सिरीन के इज्माअ़ की वजह से इख़्तिलाफ़ तो मुर्दार में है न कि तस्मिया तर्क करने वाले मुसल्मान के ज़बीहा में और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ इस बात पर दलालत करता है कि शिर्क मुर्दार को ह़लाल जानने में है न कि उस ज़बीहा को ह़लाल जानने में जिस पर तस्मिया न पढ़ी गई हो येह बात अ़ल्लामा वाहि़दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और बा'ज़ दूसरे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की है।

अ़ल्लामा वाहि़दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी सनद से कुछ अह़ादीसे मुबा-रका रिवायत की हैं जिन में से बा'ज़ में भूल कर तस्मिया तर्क किये गए ज़बीहा की ह़िल्लत और बा'ज़ में मुत़्लक़न ह़िल्लत का ज़िक्र है।[1]

हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने ज़ब्ह़ के वक़्त, "بِسْمِ اللهِ وَاسْمِ مُحَمَّدٍ" या "بِاسْمِ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللهِ" कहने को हुरमत का सबब क़रार दिया है।[2]

इसी त़रह़ किताबी अपने **कनीसा,** सलीब, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा या ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये ज़ब्ह़ करे और मुसल्मान का'बा, रसूले अकरम (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم), बादशाह या जिन्न वग़ैरा के नाम पर तक़र्रुब की निय्यत से ज़ब्ह़ करे तो इन तमाम सूरतों में ज़बीह़ा ह़राम और कबीरा गुनाह है, अलबत्ता ! अगर किसी के आने पर ख़ुशी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र

---

1 : फ़ु-क़हाए अह़नाफ़ के नज़्दीक : "ज़ब्ह़ करने में क़स्दन **बिस्मिल्लाह** न कही जानवर ह़राम है और अगर भूल कर ऐसा हुवा जैसा कि बा'ज़ मरतबा शिकार के ज़ब्ह़ में जल्दी होती है और जल्दी में **बिस्मिल्लाह** कहना भूल जाता है इस सूरत में जानवर ह़लाल है।"

2 : अह़नाफ़ के नज़्दीक : "ज़ब्ह़ करते वक़्त "**बिस्मिल्लाह**" के साथ ग़ैरे ख़ुदा का नाम भी लिया इस की **दो सूरतें** हैं अगर बिग़ैर अ़त़्फ़ ज़िक्र किया है म-सलन यूं कहा "بِسْمِ اللهِ تَقَبَّلْ مِنْ فُلَانٍ" या "بِسْمِ اللهِ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللهِ" ऐसा करना मक्रूह है मगर जानवर ह़राम नहीं होगा। और अगर अ़त़्फ़ के साथ दूसरे का नाम ज़िक्र किया म-सलन यूं कहा "بِسْمِ اللهِ وَاسْمِ فُلَانٍ" इस सूरत में जानवर ह़राम है कि येह जानवर ग़ैरे ख़ुदा के नाम पर ज़ब्ह़ हुवा। **तीसरी** सूरत येह है कि ज़ब्ह़ से पहले म-सलन जानवर को लिटाने से पहले इस ने किसी का नाम लिया या ज़ब्ह़ करने के बा'द नाम लिया तो इस में ह़रज नहीं जिस त़रह़ क़ुरबानी और अ़क़ीक़ा में दुआएं पढ़ी जाती हैं और क़ुरबानी में उन लोगों के नाम लिये जाते हैं जिन की त़रफ़ से क़ुरबानी है और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के नाम भी लिये जाते हैं।

सदरुश्शरीअ़ह عَلَيْهِ الرَّحْمَة मजीद फ़रमाते हैं : "यहां से मा'लूम हुवा "وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللهِ بِهٖ" जो ह़राम है उस का मत़्लब येह है

(बक़िय्या अगले सफ़ह़ा पर....)

www.dawateislami.net

अदा करने के इरादे से ज़ब्ह़ किया या रूठे हुए को राज़ी करने या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुरबत की निय्यत से ज़ब्ह़ किया ताकि वोह इस से जिन्न का शर दूर करे तो जाइज़ व ह़लाल है।

﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿ ﴾ﷲ﴿

(......बक़िय्या ह़ाशिया) कि ज़ब्ह़ के वक़्त जब ग़ैरे ख़ुदा का नाम इस त़रह़ लिया जाएगा उस वक़्त ह़राम होगा और **वहाबिया** येह कहते हैं कि आगे पीछे जब कभी ग़ैरे ख़ुदा का नाम ले दिया जाए ह़राम हो जाता है बल्कि येह लोग तो मुत़लक़न हर चीज़ को ह़राम कहते हैं जिस पर ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया जाए उन का येह क़ौल ग़लत़ और बात़िल मह्ज़ है अगर ऐसा हो तो सब ही चीज़ें ह़राम हो जाएंगी। खाने पीने और इस्ति'माल की सब चीज़ों पर लोगों के नाम ले दिये जाते हैं और इन सब को ह़राम क़रार देना शरीअ़त पर इफ़्तिरा और मुस्लिम को ज़बर दस्ती ह़राम का मुर-तकिब बनाना है मा'लूम हुवा कि बा'ज़ मुसल्मान गाय, बकरा, मुर्ग़ जो इस लिये पालते हैं कि इन को ज़ब्ह़ कर के खाना पकवा कर किसी वलिय्युल्लाह की रूह़ को ईसाले सवाब किया जाएगा येह जाइज़ है और जानवर भी ह़लाल है इस को "مَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ" में दाख़िल करना जहालत है क्यूं कि मुसल्मान के मु-तअ़ल्लिक़ येह ख़याल करना कि इस ने "تقرُّب الی غیر اللہ" की निय्यत की हटधर्मी और सख़्त बद गुमानी है, मुस्लिम हरगिज़ ऐसा ख़याल नहीं रखता। अ़क़ीक़ा और वलीमा और ख़तना वग़ैरा की तक़रीबों में जिस त़रह़ जानवर ज़ब्ह़ करते हैं और बा'ज़ मरतबा पहले ही से मु-तअ़य्यन कर लेते हैं कि फ़ुलां मौक़अ़ और फ़ुलां काम के लिये ज़ब्ह़ किया जाएगा जिस त़रह़ येह ह़राम नहीं है वोह भी ह़राम नहीं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 15, स. 75,76)

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर : 168 : जानवर को बतौरे नज़्र छोड़ देना और नफ़्अ न उठाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِیْرَةٍ وَّ لَا سَآىٕبَةٍ وَّ لَا وَصِیْلَةٍ وَّ لَا حَامٍ (پ۷،المآئدۃ:۱۰۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अल्लाह ने मुक़र्रर नहीं किया है कान चिरा हुवा और न बिजार और न वसीला और न हामी ।

﴾1﴿...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने नज़्र के तौर पर जानवरों को आज़ाद छोड़ा वोह हम में से नहीं ।"

(لم نجده بهذااللفظ وانماوجدناه بلفظ"أول من سيب"من حديث سعيدبن مسيب)

(فتح الباری،کتاب التفسیر،باب ماجعل الله ......الخ،الحدیث:۴۶۲۳،ج۷،ص۲۴۱)

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल वाज़ेह है अगर्चे मैं ने किसी को इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करते नहीं देखा क्यूं कि इस में जाहिलिय्यत से मुशा-बहत पाई जाती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आलीशान कि "जिस ने नज़्र के तौर पर जानवर को आज़ाद छोड़ा वोह हम में से नहीं ।" इस पर शदीद वईद का तक़ाज़ा करता है ।

हमारे अस्हाबे शवाफ़ेअ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "जो किसी शिकार का मालिक बना फिर उसे नज़्र के तौर पर आज़ाद छोड़ दिया तो वोह गुनहगार है और वोह जानवर उस की मिल्किय्यत से न निकलेगा अगर्चे वोह उसे छोड़ते वक़्त येह कह दे कि "मैं ने इसे मुबाह कर दिया जो चाहे पकड़ ले ।" और अगर उस ने येह कहा कि "मैं ने इसे मुबाह किया जो चाहे पकड़ कर खा ले ।" तो जो उसे उठा लेगा वोह उस का मालिक बन जाएगा ऐसा नहीं कि उसे ख़रीद कर तसर्रुफ़ करना पड़े और मालिक जो रोटी के टुकड़े और कटी हुई गन्दुम के खोशे फेंकता है उस का हुक्म येह नहीं तो जो उठा लेगा वोह मालिक बन जाएगा ।"

चन्द मसाइल

☆...... अगर किसी का कबूतर दूसरे के कबूतरों में मिल जाए तो उस पर वोह कबूतर वापस करना लाज़िम है इस का तरीक़ा येह होगा कि वोह मालिक को अपना कबूतर पकड़ने की इजाज़त दे दे ।

☆...... उन के जो बच्चे पैदा होंगे वोह मादा के मालिक की मिल्क होंगे और अगर उन में तमीज़ न हो सके तो वोह अपनी ग़ालिब राय के मुताबिक़ उस से लेने का इख़्तियार रखता है और शुबा का ख़ौफ़ न करे ।

www.dawateislami.net

☆...... ह़राम दिरहम या तेल किसी के दिरहम या तेल से मिल गया तो इस के लिये वोह दिरहम और तेल जाइज़ है जैसा कि सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने फ़रमाया है कि "ह़राम की मिक़्दार को अ़लाह़िदा करे और येह अ़लाह़िदा करना उस के ह़क़ के ए'तिबार से होगा।"

ए'तिराज़ : मगर येह बात मह़ल्ले नज़र है क्यूं कि शरीक तक़्सीम में मुस्तक़िल नहीं होता, लिहाज़ा उसे चाहिये कि उसे क़ाज़ी के पास ले जाए ताकि वोह दुश्वारी की सूरत में मालिक की जानिब से उसे तक़्सीम कर दे।

जवाब : इस का जवाब येह है कि येह हुक्म ज़रूरत की वजह से है क्यूं कि यहां मालिक की त़रफ़ से कोताही नहीं जब कि शिर्कत इख़्तियार के ज़रीए साबित होती है और जो चीज़ इख़्तियार के बिग़ैर साबित हो म-सलन विरासत वग़ैरा वोह इख़्तियार के ज़रीए साबित होने वाली अश्या से मिली होती है, इस सूरत में इस का मुआ़-मला क़ाज़ी के पास ले जाने में ज़ाहिरी मशक़्क़त है क्यूं कि क़ाज़ी उसी वक़्त तक़्सीम कर सकता है जब उन के दलाइल सुन कर ह़क़ीक़ते ह़ाल पर गवाही क़ाइम हो जाए और अगर किसी शै पर क़ाबिज़ अफ़राद क़ाज़ी के पास वोह शै तक़्सीम कराने ले जाएं तो वोह ऐसे गवाह के बिग़ैर उन की बात नहीं मानेगा जो उस की मिल्किय्यत की गवाही दे सिर्फ़ क़ब्ज़े पर इक्तिफ़ा न करेगा क्यूं कि उस का तक़्सीम करना उन के ह़क़ में फ़ैसला करने को शामिल होगा और येह फ़क़त़ क़ब्ज़े से नहीं बल्कि मिल्किय्यत के सुबूत के वक़्त ही जाइज़ है लिहाज़ा त़ाक़त से ज़ाइद येह मशक़्क़त ज़रूरतन इस बात का तक़ाज़ा करती है कि इस के लिये ह़राम की मिक़्दार हो अ़लाह़िदा कर के बाक़ी में तसर्रुफ़ करना जाइज़ है।

और येह इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इस बह़स के मुनाफ़ी भी नहीं कि "इसे कबूतरों के इख़्तिलात़ के हुक्म से मिलाया जाएगा।" क्यूं कि उन की इस से मुराद येह है कि "वोह तसर्रुफ़ में उस की मिस्ल है।"

अगर फ़रीक़ैन का मिक़्दार में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो तस्दीक़ उसी की की जाएगी जो साह़िबे क़ब्ज़ा हो क्यूं की क़ब्ज़ा उसी का है।

अगर मम्लूक कबूतर (या'नी जो किसी की मिल्किय्यत हो) सह़रा में मुबाह़ कबूतरों (या'नी जो किसी की मिल्किय्यत न हों) में मिल जाएं फिर अगर वोह मुबाह़ कबूतर किसी जाल में क़ैद हों, इस त़रह़ कि उन्हें सिर्फ़ देख कर ही शुमार किया जा सकता हो तो उन का शिकार करना ह़राम है और अगर क़ैद में न हों तो ह़राम नहीं।

सय्यिदुना इब्ने मुन्ज़िर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर एक जमाअ़त ने अपने कुत्ते शिकार पर छोड़े और उन्हों ने शिकार को मुर्दा ह़ालत में पाया और हर शख़्स कहे कि "मेरे कुत्ते ने इस

www.dawateislami.net

को क़त्ल किया।'' तो वोह शिकार ह़लाल है फिर अगर कई कुत्तों ने शिकार को पकड़ रखा हो तो वोह उन के मालिकों के दरमियान मुश्तरिक होगा या उन में से एक ही कुत्ते ने शिकार को पकड़ रखा हो तो वोह शिकार उस कुत्ते के मालिक का होगा और अगर कुत्तों ने शिकार को पकड़ा हुवा न हो तो इमाम अबू सौर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नज़्दीक : ''कुरआ़ डाला जाएगा।'' और दीगर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक : ''सब की फ़लाह़ो बह्बूद के लिये इस्ति'माल किया जाए और अगर इस के फ़साद का ख़ौफ़ हो तो उसे फ़रोख़्त कर के उस की क़ीमत उन सब की फ़लाह़ पर इस्ति'माल की जाए।''

﷾ ﷾ ﷾ ﷾ ﷾ ﷾ ﷾ ﷾ ﷾ ﷾

www.dawateislami.net

كتاب العقيقة

अक़ीक़े का बयान

कबीरा नम्बर 169 : मलिकुल अम्लाक नाम रखना[1]

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से मबग़ूज़ और ख़बीस तरीन वोह शख़्स होगा जो ''**मलिकुल अम्लाक**'' (या'नी बादशाहों का बादशाह) कहलाता होगा, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मालिक नहीं।''

(صحیح مسلم ،کتاب الآداب ، باب تحریم تسمی بملك الاملاك ......الخ ، الحدیث: ٥٦١١ ، ص ١٠٦٠)

﴾2﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक **अख़्नअ़** (या'नी सब से ज़लील) नाम उस शख़्स का है जिसे बादशाहों का बादशाह कहा जाता है।'' एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मालिक नहीं।'' (صحیح مسلم،کتاب الآداب،باب تحریم تسمی بملك......الخ،الحدیث:٥٦١٠،ص١٠٦٠)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''म-सलन किसी का ''शाहीन शाह'' कहलवाना।''

सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से **अख़्नअ़** के बारे में पूछा तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस का मा'ना है सब से ज़ियादा ज़लील।''

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''इस से मुराद बुरा या ना पसन्दीदा है।'' (المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی ہریرۃ،الحدیث:٧٣٣٣،ج٣ص٤٠)

तम्बीह :

इन दो अह़ादीसे मुबा-रका की सराह़त की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, अगर्चे मैं ने किसी को इसे सरा-ह़तन बयान करते हुए नहीं पाया, फिर बा'द में मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی को इस की सराह़त करते हुए पाया। हमारे अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते

---

1 : येह नाम रखने के मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सील व मौजूदए उ़र्फ़ के ए'तिबार से शर-ई हुक्म जानने के लिये फ़तावा र-ज़विय्या (जदीद), जि. 21, स. 339 ता 379 पर मुजद्दिदे आ'ज़म सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن का मुबारक रिसाला ''فقه شهنشاه و ان القلوب بيدالمحبوب بعطاء الله'' का मुता-लआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

हैं : ''बादशाहों का बादशाह या शहन्शाह कहलाना ह़राम है और शाहीन शाह भी इसी मा'ना में है क्यूं कि येह दोनों हम मा'ना हैं और हुरमत की वजह येह है कि इन नामों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को मुत्तसिफ़ नहीं किया जा सकता।'' हमारे बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने **ह़ाकिमुल हुक्काम** और **क़ाज़िय्युल क़ुज़ाह** को भी इस के साथ मुल्ह़क़ किया है, इस मौज़ूअ़ में और भी बहुत सा कलाम है जिसे मैं ने ''**मनासिकुन्न-ववी अल कुब्रा**'' के ह़ाशिये पर त़वाफ़ और सअ़्य के बयान में ज़िक्र कर दिया है।

www.dawateislami.net

كتاب الاطعمة

खाने पीने का बयान

कबीरा नम्बर **170 :** **नशा आवर पाक अश्या खाना**

या'नी नशा आवर पाक अश्या जैसे ह़शीश, अफ़्यून, भंग[1], अम्बर, ज़ा'फ़रान और जौज़ुत्तीब (जाएफ़ल) वग़ैरा खाना[2]

येह तमाम अश्या नशा आवर हैं जैसा कि इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इन में से बा'ज़ के नशा आवर होने की तस्रीह़ फ़रमाई है जब कि दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने बक़िय्या के नशा आवर होने की तस्रीह़ फ़रमाई है और यहां नशा देने से मुराद अ़क़्ल पर ग़ालिब आ जाना है, सिर्फ़ बे ख़ुदी की शिद्दत मुराद नहीं क्यूं कि बे ख़ुदी नशा आवर माएअ़ शै की ख़ुसूसिय्यात में से है, अ़न्क़रीब इस की तफ़्सील **"अशिरबा"** के बयान में आएगी, हम ने यहां इन अश्या के नशा आवर होने का जो मा'ना बयान किया है इस से मा'लूम हुवा कि इन्हें सुन करने वाली अश्या कहना भी दुरुस्त है।

जब येह बात साबित हो गई कि येह नशा आवर या सुन करने वाली अश्या हैं तो इन का इस्ति'माल शराब की त़रह़ कबीरा गुनाह और फ़िस्क़ है और जो वई़दें शराबी के बारे में आई हैं वोह इन अश्या में से किसी एक को भी इस्ति'माल करने पर जारी होंगी क्यूं कि येह दोनों अ़क़्ल को ज़ाइल करने में मुश्तरक हैं, और अ़क़्ल को बाक़ी रखना शरीअ़त का मक़्सूद है इस लिये कि अ़क़्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़काम को समझने का आला है, इसी के ज़रीए़ इन्सान हैवान से मुम्ताज़ होता है, अ़क़्ल ही इन्सान को नक़ाइस से बचा कर कमालात के ह़ुसूल पर आमादा करती है, लिहाज़ा अ़क़्ल को ज़ाइल करने वाली अश्या इस्ति'माल करने वाले पर भी शराब की वोही वई़द जारी होगी जिस का बयान आगे आएगा।

---

1 : फ़ु-क़हाए अह़नाफ़ के नज़्दीक **:** "भंग और अफ़्यून इतनी इस्ति'माल करना कि अ़क़्ल फ़ासिद हो जाए ना जाइज़ है जैसा कि अफ़्यूनी और भंगेड़े (भंग पीने वाले) इस्ति'माल करते हैं और अगर कमी के साथ इतनी इस्ति'माल की गई कि अ़क़्ल में फ़ुतूर नहीं आया जैसा कि बा'ज़ नुस्ख़ों में अफ़्यून क़लील जुज़ होता है कि फ़ी ख़ूराक इस का इतना ख़फ़ीफ़ जुज़ होता है कि इस्ति'माल करने वाले को पता भी नहीं चलता कि अफ़्यून खाई है इस में ह़रज नहीं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 17, स. 8)

2 : फ़ु-क़हाए अह़नाफ़ के नज़्दीक **:** "**जौज़ुत्तीब** में नशा होता है इस का इस्ति'माल भी इतनी मिक़्दार में ना जाइज़ है कि नशा हो जाए अगर्चे इस का हुक्म भंग से कम द-रजे का है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 17, स. 8)

www.dawateislami.net

मैं ने एक किताब तालीफ़ की है, जिस का नाम "تَحْذِيْرُ الثِّقَاتِ عَنْ اِسْتِعْمَالِ الْكَفْتَةِ وَالْقَاتِ" रखा है। जब अहले यमन का इन दोनों अश्या में इख़्तिलाफ़ हुवा तो उन्हों ने मेरी त़रफ़ तीन किताबें भेजीं, जिन में से दो इन की ह़िल्लत पर और एक हु़रमत पर थी और इन दोनों क़िस्मों के बारे में ह़क़ को आशकार करने का मुत़ा-लबा किया, पस मैं ने इन दो क़िस्म की अश्या से डराने के लिये येह किताब तालीफ़ की, अगर्चे मैं ने इन दोनों की क़त़ई हु़रमत बयान नहीं की, बहर ह़ाल मैं ने इस किताब में दीगर नशा आवर अश्या का भी ज़िक्र कर दिया है और बा'ज़ मक़ामात पर कुछ तफ़्सीली कलाम भी किया है, यहां पर उस का ख़ुलासा बयान करना ज़रूरी समझता हूं चुनान्चे मैं कहता हूं कि इन तमाम अश्या की हु़रमत में अस्ल येह ह़दीसे पाक है कि,

﴿1﴾...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इर्शाद फ़रमाती हैं : "ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर **मुस्किर** (या'नी नशा आवर) और **मुफ़्तिर** (या'नी सुकून आवर) चीज़ के इस्ति'माल से मन्अ़ फ़रमाया है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی سکر، الحدیث: ۳۶۸۶، ص ۱۴۹۶)

उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि "**मुफ़्तिर** हर उस चीज़ को कहते हैं जो अ़क़्ल में फ़ुतूर पैदा करे और आ'ज़ा को सुन कर दे।" और ऊपर मज़्कूर तमाम अश्या नशा आवर, सुन करने वाली और (अ़क़्ल में) फ़ुतूर डालने वाली हैं।

अ़ल्लामा क़राफ़ी और इब्ने तीमिया[1] ने भंग की हु़रमत पर इज्माअ़ नक़्ल किया और कहा है कि "जिस ने इसे ह़लाल समझा उस ने कुफ़्र किया।" जब कि अइम्मए अर-बआ़ رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इस के बारे में कलाम इस लिये नहीं किया कि येह उन के ज़माने में न थी बल्कि छटी सदी हिजरी के अवाख़िर और सातवीं सदी के अवाइल में तातारियों की हु़कूमत क़ाइम होने के बा'द ज़ाहिर हुई।

अ़ल्लामा मावरदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक क़ौल ज़िक्र किया है : "ऐसी बूटी जिस से बहुत ज़ियादा नशा त़ारी हो जाए उस के इस्ति'माल पर सज़ा वाजिब होगी।"

मैं ने जौज़ुत्तीब (या'नी जाएफ़ल) में जो हु़क्म बयान किया है येह वोही फ़तवा है जो मैं ने बहुत अ़र्सा पहले ह़-रमैने शरीफ़ैन और अहले मिस्र के नज़ाअ़ के वक़्त दिया था और काफ़ी तलाश के बा'द मैं इस का वोह जुज़्इय्या तलाश करने में काम्याब हो गया जिसे येह लोग न पा सके, इसी लिये जब मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त से जौज़ुत्तीब (या'नी जाएफ़ल) के बारे में सुवाल किया गया तो उन्हों ने कोई शर-ई दलील पेश किये बिग़ैर अपनी मुख़्तलिफ़ आरा का

---

1 : इब्ने तीमिया का अस्ल नाम अह़मद, इस की कुन्यत अबुल अ़ब्बास और मश्हूर इब्ने तीमिया है, 661 हि. में पैदा हुवा और क़ल्अ़ए दिमिश्क़ में ब ह़ालते क़ैद 20 ज़ी क़ा'दह 728 हि. में इन्तिक़ाल हुवा।

इब्ने तीमिया ने मुसल्मानों के इज्माई अ़क़ाइदो आ'माल से हट कर एक नई राह डाली जिस के बाइ़स इस के हम अ़स्र और बा'द में आने वाले बड़े बड़े उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی में से बा'ज़ ने (बक़िय्या ह़ाशिया अगले सफ़ह़ा पर....)

www.dawateislami.net

इज़्हार किया और फिर जब वोही सुवाल मेरे पास भेजा गया तो मैं ने सरीह़ जुज़्इय्या और सह़ीह़ दलील के साथ अपने मौक़िफ़ के मुख़ालिफ़ीन का रद करते हुए जवाब दिया अगर्चे वोह उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی बुलन्द मर्तबे वाले थे।

सुवाल : इस का खुलासा येह है कि क्या अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی या इन के मुक़ल्लिदीन में से किसी ने जौजुत्तीब खाने की हुरमत का क़ौल किया है ? क्या आज कल के उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में से किसी ने इस की हुरमत का फ़तवा दिया है ? अगर्चे उस ने इन के जुज़्इय्ये पर इत्तिलाअ़ न पाई हो, अगर आप का जवाब इस्बात में है तो क्या उन के फ़तवा पर अ़मल करना वाजिब है ?

(बक़िय्या ह़ाशिया....) इस की तक्फ़ीर की, बा'ज़ ने गुमराह कहा और बा'ज़ ने बिदअ़ती नाम से मौसूम किया। चुनान्चे, **इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ **फ़रमाते हैं :** "मैं ने इब्ने तीमिया का अन्जाम येह देखा कि उस को ज़लील किया गया और उस की बुराई बयान की गई और ह़क़्क़ो बातिल से उस की तज़्लील और तक्फ़ीर हुई और वोह इन ख़ुराफ़ात में पड़ने से पहले अपनी ज़िन्दगी ही में सलफ़ (बड़े बड़े उ़-लमा) के नज़्दीक (अपने इ़ल्म के बाइस) मुनव्वर व रोशन था। फिर वोह (इब्ने तीमिया) ग़लत़ और बिदअ़ती मसाइल की वजह से लोगों के नज़्दीक अंधेरे वाला और ग्रहन वाला गुबार आलूदा हो गया। और अपने आ'दा और मुख़ालिफ़ीन के नज़्दीक दज्जाल, अफ़्फ़ाक (बड़ा बोहतान तराश) काफ़िर हो गया और आ़क़िलों, फ़ाज़िलों के गुरौहों की नज़र में फ़ाज़िल मुह़क़्क़िक़ बारेअ़ (माहिर) बिदअ़ती हो गया।"

ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी ह़-नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ **फ़रमाते हैं :** (नाम के) ह़म्बलियों में से इब्ने तीमिया ने तफ़रीत़ (कोताही और कमी) की है (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) इस त़रह़ कि "रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत को ह़राम कहा।" जैसा कि उस के ग़ैर ने (या'नी उस के मुख़ालिफ़ और रद करने वाले ने) ज़ियादती की ह़द से बढ़ा कर इस त़रह़ कहा कि ज़ियारत शरीफ़ का क़ुरबत होना येह ज़रूरिय्याते दीन से मा'लूम है। और इस के मुन्किर पर हुक्मे कुफ़्र है।

फिर मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़ैसला करते हुए फ़रमाते हैं : "उम्मीद है कि येह दूसरा (या'नी मुन्किरे ज़ियारत पर कुफ़्र का फ़तवा देने वाला) सवाब (सह़ीह़ होने) के ज़ियादा क़रीब है क्यूं कि उस चीज़ को ह़राम कहना जो ब इज्माअ़ व इत्तिफ़ाक़े उ़-लमा मुस्तह़ब हो (जैसे मस्अलए ज़ियारत) वोह कुफ़्र है, क्यूं कि इस मुआ़-मले में येह तह़रीमे मुबाह़ (या'नी मुबाह़ को ह़राम कहने) से बढ़ कर है। जब मुबाह़ को ह़राम कहना कुफ़्र है तो मुस्तह़ब को ह़राम कहना ब त़रीक़े औला कुफ़्र होगा।" (شرح الشفالعلامه القاری ، ج٣،ص٥١٤،علی هامش نسیم الریاض-شواهد الحق ص١٤٧)

इब्ने तीमिया के बा'ज़ मन घड़त अ़क़ाइद व मसाइल :

☆...... **अल्लाह** तआ़ला का जिस्म है ☆...... **अल्लाह** तआ़ला नक़्ले मकानी करता है ☆...... **अल्लाह** तआ़ला अ़र्श के बराबर है न इस से बड़ा न छोटा, ह़ालां कि **अल्लाह** तआ़ला इस बोहताने शनीअ़ और कुफ़्रे क़बीह़ से पाक है। इस के मुत्तबेअ़ ज़लील हुए और इस के मो'तक़िद ख़ाइबो ख़ासिर हुए ☆...... दोज़ख़ फ़ना हो जाएगी ☆...... अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام ग़ैर मा'सूम हैं ☆...... ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्दल्लाह कोई मक़ाम नहीं इन का वसीला जाइज़ नहीं ☆...... रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ सफ़रे ज़ियारत करना गुनाह है और इस सफ़र में नमाज़ क़स्र न पढ़ी जाएगी ☆...... कोई ह़ाएज़ा को त़लाक़ दे तो वाक़ेअ़ न होगी ☆...... अगर कोई शख़्स अ़-मदन नमाज़ तर्क कर दे तो उस पर क़ज़ा ज़रूरी नहीं ☆...... ह़ाएज़ा को त़वाफ़े का'बा जाइज़ है और उस पर कोई कफ़्फ़ारा भी नहीं ☆...... तीन त़लाक़ें एक ही होगी ह़ालां कि अपने दा'वे से पहले इस ने इस के ख़िलाफ़ (उम्मते मुह़म्मदिय्यह का) इज्माअ़ नक़्ल किया, इन के इलावा भी इब्ने तीमिया की ख़ुराफ़ात हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों को उन के शर से बचाए। (आमीन)

(فتاوی حدیثیه ،ص ٩٩ تا ١٠١،مطبوعه حلبی مصر) (मुलख़्ख़सन अज़ तआ़रुफ़ चन्द मुफ़स्सिरीन मुह़द्दिसीन मुअर्रिख़ीन का, स. 58,59, और 88 ता 90)

www.dawateislami.net

जवाब : इमामे मुज्तहिद, शैख़ुल इस्लाम इब्ने दक़ीक़ अल ईद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस बात की तस्रीह़ फ़रमाई है कि "जौज़ुत्तीब नशा आवर है।" मु-तअख़्ख़िरीन शवाफ़ेअ़ और मालिकी उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने उन का येह क़ौल नक़्ल कर के इस पर ए'तिमाद किया है और आप के लिये मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का ए'तिमाद ही काफ़ी है, बल्कि इब्ने इमाद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस में मुबा-लग़ा किया और भंग को जौज़ुत्तीब का "मक़ीस अ़लैह"(या'नी जिस पर क़ियास किया जाए) क़रार दिया और इस की तफ़्सील येह है कि ह़शीश के ख़ुश्क और तर पत्तों के नशा आवर होने के बारे में अ़ल्लामा क़राफ़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने हम अ़स्र किसी फ़क़ीह से नक़्ल किया कि "तर पत्तों में नशा नहीं होता जब की ख़ुश्क पत्ते नशा आवर होते हैं।" इब्ने इमाद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह क़ौल बयान करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "सह़ीह़ येह है कि इन के ख़ुश्क या तर होने में कोई फ़र्क़ नहीं क्यूं कि येह जौज़ुत्तीब (जाएफ़ल), ज़ा'फ़रान, अ़म्बर, अफ़्यून और भंग से मिली हुई है और येह अश्या नशा आवर आ'ज़ा को सुन करने वाली हैं, इसे अ़ल्लामा इब्ने क़स्त़लानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "**तक्रीमुल मईशह**" में ज़िक्र किया है।

इन के सह़ीह़ क़ौल की ता'बीर करने से और भंग को जिस की ह़ुरमत पर उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का इज्माअ़ है, जाएफ़ल का "मक़ीस अ़लैह" ठहराने पर ग़ौर करने से आप को मा'लूम होगा कि भंग के नशा आवर और सुकून आवर होने की वजह से जौज़ुत्तीब की ह़ुरमत में कोई फ़र्क़ नहीं और उ़-लमाए ह़नाबिला رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इस के नशा आवर होने पर उ़-लमाए मालिकिय्या व शाफ़ेइय्या رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی से इत्तिफ़ाक़ किया है और इन के मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमा में से (ब ज़ाहिर ह़म्बली कहलाने वाले) इब्ने तीमिया ने इस की ह़ुरमत का फ़तवा दिया और दीगर ने इसे ह़राम क़रार देने में उस की पैरवी की और बा'ज़ उ़-लमाए अह़नाफ़ رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का भी येही मौक़िफ़ है जैसा कि फ़तावा मरग़ीनानी में है कि "नशा आवर अश्या में से भंग और घोड़ियों का दूध ह़राम है, मगर इसे पीने वाले पर सज़ा जारी न होगी।" येह फ़क़ीह अबू ह़फ़्स رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है और शम्सुल अइम्मा इमाम सरख़सी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी इसी पर नस फ़रमाई है।

इमाम इब्ने दक़ीक़ अल ईद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और दीगर के कलाम से आप को मा'लूम हो चुका है कि जौज़ुत्तीब (या'नी जाएफ़ल) भंग की त़रह़ होता है, लिहाज़ा जब ह़-नफ़ी उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی भंग के नशा आवर होने के क़ाइल हैं तो लाज़िमी त़ौर पर जौज़ुत्तीब के नशा आवर होने के भी क़ाइल हुए, लिहाज़ा इस वज़ाह़त से साबित हुवा कि जाएफ़ल शाफ़ेई, मालिकी और ह़म्बली उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के नज़्दीक नस की वजह से ह़राम है जब कि ह़-नफ़ी उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के नज़्दीक इक़्तिज़ाउन्नस की बिना पर ह़राम है **(मुफ़्ता बिह क़ौल सफ़ह़ा 685 पर ह़ाशिया 2 में देखें)**, क्यूं कि येह या तो नशा आवर है या आ'ज़ा सुन करने वाला है और भंग में अस्ल जौज़ुत्तीब पर क़ियास करना है जैसा कि हम बयान कर चुके हैं।

www.dawateislami.net

शैख़ अबू इस्हाक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी किताब **अत्तज़्किरा** में, सय्यिदुना इमाम न-ववी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **शर्हुल मुहज़्ज़ब** में और इमाम इब्ने दक़ीक़ अल ईद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जो येह फ़रमाया कि "येह नशा आवर है।" इस के बारे में अ़ल्लामा ज़रकशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस में हमारे नज़्दीक किसी का इख़्तिलाफ़ मा'रूफ़ नहीं, बा'ज़ अवक़ात उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की बयान कर्दा ता'रीफ़ में मदहोश इन्सान भी दाख़िल हो जाता है और इस से मुराद वोह इन्सान है कि जिस के मन्ज़ूम कलाम में ख़लल आ जाए, पोशीदा राज़ ज़ाहिर हो जाए, जो ज़मीन व आस्मान में इम्तियाज़ न कर सके और न ही तूल व अ़र्ज़ में फ़र्क़ कर सके।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़ल्लामा क़राफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़वाले से येह बात नक़्ल की, कि उन्हों ने इस मुआ़-मले में इख़्तिलाफ़ किया है और इस के नशा आवर होने का इन्कार किया और इस का मुफ़्सिद होना साबित किया है। फिर उन्हों ने इन का रद किया और उन के मौक़िफ़ को ख़त़ा पर मब्नी साबित करने में त़वील कलाम किया है।

इस के नशा आवर होने की तस्रीह़ नबातात के माहिर अति़ब्बा ने भी की है, लिहाज़ा इस मुआ़-मले में उन्हीं की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाना मुनासिब भी है, इसी त़रह़ इब्ने तीमिया और इस के हम मज़्हब मु-तअख़्ख़िरीन ने इसी क़ौल की पैरवी की है जब कि इस मुआ़-मले में ह़क़ येह है कि दोनों बातें या'नी इस का नशा आवर होना और मुफ़्सिदे अ़क़्ल होना दुरुस्त नहीं, क्यूं कि जब किसी चीज़ के नशा आवर होने का कहा जाता है तो इस से मुत़्लक़ अ़क़्ल को ढांपना मुराद होता है जो कि एक आ़म लफ़्ज़ है, नीज़ जब येह लफ़्ज़ बोला जाए और इस से नशा व बे ख़ुदी के साथ अ़क़्ल को ढांपना मुराद हो तो इस सूरत में येह ख़ास होता है, और यहां पर नशा आवर होने से येही मुराद है, पहली सूरत में नशा और सुन करने वाली चीज़ में उ़मूम व ख़ुसूसे मुत़्लक़ की निस्बत है क्यूं कि हर सुन करने वाली शै नशा आवर होती है जब कि हर नशा आवर शै सुन करने वाली नहीं होती, लिहाज़ा भंग, जौज़ुत्तीब और इन जैसी दीगर अश्या पर नशे के इत़्लाक़ से मुराद मह़्ज़ सुकून ह़ासिल करना है और जो उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى इस की नफ़ी करते हैं उन की मुराद ख़ास मा'ना होती है।

इस की तह़क़ीक़ येह है कि शराब वग़ैरा के नशे की अ़लामत येह है कि इस से सुरूर व निशात़, बद ख़ुल्क़ी और नख़्वत पैदा हो जाए, जब कि भंग और जौज़ुत्तीब के नशे की अ़लामात इस के ख़िलाफ़ होती हैं म-सलन जिस्म सुन हो जाता है और इस में फ़ुतूर पैदा हो जाता है, ख़ामोशी त़वील हो जाती है या गहरी नींद आती है और नख़्वत बाक़ी नहीं रहती, मेरे येह अ़लामात ज़िक्र करने से अ़ल्लामा ज़रकशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रफ़ से अ़ल्लामा क़राफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर किये गए ए'तिराज़ात का जवाब भी हो गया कि बा'ज़ शराबियों में भंग पीने वालों की अ़लामात पाई जाती हैं, इसी त़रह़ बा'ज़ भंग पीने वालों में शराबियों की अ़लामात मौजूद होती हैं, जवाब की वजह येह है कि जिस चीज़ का मदार ज़न पर होता है उस में बा'ज़ अफ़राद का निकल जाना असर नहीं करता जैसा कि

www.dawateislami.net

दौराने सफ़र नमाज़ में क़स्र करने का मदार मशक़्क़त के गुमान को क़रार देना जाइज़ है ह़ालां कि सफ़र की बहुत सी सूरतों में बिल्कुल मशक़्क़त नहीं होती।

पस इस से वाज़ेह़ हो गया कि जिस ने भंग को नशा आवर क़रार दिया और जिस ने इसे बे ख़ुदी करने वाली और फ़साद में मुब्तला करने वाली कहा, दोनों में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं बल्कि इस से मुराद ख़ास फ़साद है, पस इस से अ़ल्लामा ज़रकशी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ए'तिराज़ भी दूर हो गया कि इस से मुराद पागल पन और बेहोशी है क्यूं कि येह दोनों अ़क़्ल को फ़ासिद करने वाले हैं, पस सुवाल में मज़्कूर फ़क़ीह के क़ौल की सिह़ह़त को जिस चीज़ ने साबित किया इस से ज़ाहिर हो गया कि येह बे ख़ुद करने वाली है और उस शख़्स के क़ौल का बात़िल होना भी ज़ाहिर हो गया जिस ने इस सिल्सिले में झगड़ा किया लेकिन अगर अ़-दमे इ़ल्म की वजह से किया तो मा'ज़ूर है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के दलाइल की रोशनी में जो हम ने ज़िक्र किया इस पर मुत़्त़लअ़ होने के बा'द जब इस को ह़लाल या ग़ैर नशा आवर और सुन न करने वाली गुमान किया तो उस जैसों के लिये सख़्त सज़ा ज़रूरी है बल्कि इब्ने तीमिया और इस के अहले मज़्हब ने इस बात को साबित रखा कि "जिस ने भंग को ह़लाल समझा उस ने कुफ़्र किया।"

पस इस अ़ज़ीम (ह़म्बली) मज़्हब के अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के नज़्दीक इस मुश्किल में पड़ने से इन्सान को बचना चाहिये और अ़जीब बात येह है कि जिस ने फ़ासिद अग़राज़ के लिये जाएफ़ल के इस्ति'माल का ख़त़रा मोल लिया बा वुजूद इस के कि हम ने इस के मफ़ासिद और गुनाह ज़िक्र कर दिये ह़ालां कि वोह अग़राज़ इस के बिग़ैर भी ह़ासिल हो सकती हैं।

रईसुल अत़िब्बा **इब्ने सीना** ने अपनी किताब **क़ानून** में इस बात की तस्रीह़ की है : "इस की एक और सुम्बुल की निस्फ़ मिक़्दार इस के बराबर है, पस जिस ने इस की थोड़ी मिक़्दार इस्ति'माल की फिर इस की एक और सुम्बुल की निस्फ़ मिक़्दार इस्ति'माल की तो उसे वोही तमाम मक़ासिद ह़ासिल होंगे और वोह गुनाहों और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब में पड़ने से भी सलामत रहेगा।"

इस में फेफड़ों के भी कुछ नुक़्सानात हैं, जिन्हें बा'ज़ अत़िब्बा ने ज़िक्र किया है और सुम्बुल इन नुक़्सानात से ख़ाली है और इस से मक़्सूद भी ह़ासिल हो जाता है और दुन्यवी व उख़रवी नुक़्सानात से सलामती मज़ीद बर आं। जाएफ़ल के बारे में मेरा जवाब ख़त्म हो गया जो कि नफ़ीस बह़सों पर मुश्तमिल है।

"**ह़ावी सग़ीर**" की शर्ह़ में है कि अगर भंग का नशा आवर होना साबित हो जाए तो नापाक है और इब्ने तीमिया की किताब "**अस्सियासह**" में है कि भंग में शराब की त़रह़ ह़द वाजिब है, लेकिन जब वोह ठोस हो और पी जाने वाली न हो तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد वग़ैरा के मज़्हब में तीन अक़्वाल पर इस के नजिस होने में फ़ु-क़हा का इख़्तिलाफ़ है, एक क़ौल येह है कि येह नजिस है और येही सह़ीह़ है और ह़ैवान को भंग खिलाना ह़राम क़रार दिया गया है क्यूं कि

www.dawateislami.net

इस का नशा देना भी ह़राम है, अ़ल्लामा इब्ने दक़ीक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''शराब की त़रह़ इस को ज़ाएअ़ करने वाले पर भी कोई ज़मान नहीं।''

इमाम अबू बक्र बिन क़ुत़्ब अल अस्क़लानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नक़्ल किया है : ''येह दूसरे द–रजे में गर्म होती है और पहले द–रजे में ख़ुश्क होती है, सर को चकरा देती है, नज़र को कमज़ोर कर देती है, पेट को गिरह लगा देती है और मनी को ख़ुश्क कर देती है, पस हर साह़िबे अ़क़्ल, सलीमुल फ़ित़रत इन्सान पर इस से इज्तिनाब ज़रूरी है, जिस त़रह़ कि इस के इलावा दीगर उन तमाम चीज़ों से इज्तिनाब ज़रूरी है जिन का ज़िक्र गुज़र चुका है इस लिये कि येह नुक़्सान देह चीज़ों पर मुश्तमिल है जो हलाकत का मुब्दा हैं और अक्सर अवक़ात मनी के ख़ुश्क होने और सर चकराने से भी बड़े नुक़्सान देह मफ़ासिद पैदा होते हैं।''

इसी वजह से अ़ल्लामा इब्ने बैत़ार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जो नबातात वग़ैरा के बारे में मा'रिफ़ते ताम्मा रखते हैं, ने अपनी किताब ''**اَلْجَامِعُ لِقُوىِّ الْاَدْوِيَةِوَالْاَغْذِيَةِ**'' में फ़रमाया है : ''**क़िन्नबुल हिन्दी**'' (पटसन की एक क़िस्म जिस से भंग बनाई जाती है) इस की तीसरी क़िस्म है जिसे ''**क़िन्नब**'' (या'नी पटसन) कहा जाता है और मैं ने मिस्र के इलावा कहीं नहीं देखी, येह बाग़ात में काश्त की जाती है और इसे भी भंग कहा जाता है, येह बहुत नशा आवर होती है, जब इस से इन्सान एक या दो दिरहम की मिक्दार खा लेता है यहां तक कि अक्सर को तो ना समझी की ह़द तक पहुंचा देती है, इसे एक क़ौम ने इस्ति'माल किया तो उन की अ़क़्लें ज़ाइल हो गईं और उन्हें जुनून की ह़द तक पहुंचा दिया और कभी तो हलाक भी कर देती है।

अ़ल्लामा क़ुत़्ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''हमें बताया गया कि जानवर इसे नहीं खाते तो उस खाने की क्या क़द्र है जिसे खाने से जानवर भी भागते हैं, येह भी उन दूसरी चीज़ों की त़रह़ है जो बदन को तब्दील और मस्ख़ करती हैं, क़ुव्वतों को मुन्जमिद करती हैं, ख़ून को जलाती हैं, रुत़ूबत को ख़ुश्क करती हैं और रंग को ज़र्द कर देती हैं।''

इमाम मुह़म्मद बिन ज़–करिय्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जो त़िब में वक़्त के इमाम थे, ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह बहुत ज़ियादा घटिया फ़िक्रें पैदा करती है और आ'ज़ाए रईसा में रुत़ूबत की कमी की वजह से मनी को ख़ुश्क कर देती है या'नी जब इन आ'ज़ा को रुत़ूबत कम होती है तो येह ख़त़रनाक और क़बीह़ तरीन बीमारियों के पैदा होने का सबब बन जाती है और इस की मज़म्मत में येह अश्आ़र कहे गए हैं :

قُلْ لِمَنْ يَّاكُلُ الْحَشِيْشَةَ جَهْلًا يَاخَسِيْسًا قَدْ عِشْتَ شَرَّ مَعِيْشَه

तरजमा : जो जहालत की वजह से भंग खाता है तो उस से कह ! ऐ कमीने तूने बुरी ज़िन्दगी गुज़ारी।

دِيَةُ الْعَقْلِ بِدُرَّةٍ فَلِمَا ذَا يَا سَفِيْهًا قَدْ بِعْتَهٗ بِحَشِيْشَه

तरजमा : अ़क़्ल की क़ीमत तो मोती है पस ऐ बे वुक़ूफ़ ! तूने इसे भंग के बदले क्यूं बेच दिया ?

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं : ''हमें बे शुमार लोगों से येह बात पहुंची है कि इस से दो चार होने वाले अचानक मर गए और दूसरों की अ़क़्लें ज़ाइल हो गईं और मु-तअ़द्दद अमराज़ में मुब्तला हो गए म-सलन तपे दिक़, सिल और इस्तिस्क़ा वग़ैरा और येह अ़क़्ल को ढांप लेती है और इस के बारे में येह अश्आ़र भी कहे गए हैं :

يَا مَن غَدَا اَكْلُ الْحَشِيْشِ شِعَارَهٗ وَغَدَا فَلَاحَ عَوَارُهٗ وَ خِمَارُهٗ

तरजमा : ऐ वोह कि भंग खाना जिस का शिआ़र बन गया और हमेशा के लिये उस का ऐ़ब और नशा बन गया।

اَعْرَضْتَ عَنْ سُنَنِ الْهُدٰى بِزَخَارِفَ لَمَّا اِعْتَرَضْتَ لِمَا اُشِيْعَ ضِرَارُهٗ

तरजमा : तूने दुन्या की पुर फ़रेब चीज़ों की वजह से हिदायत वाले त़रीक़ों से ए'राज़ किया जब तूने ऐसी चीज़ को इख़्तियार किया जिस का नुक़्सान फैला हुवा है।

اَلْعَقْلُ يَنْهٰى اَنْ تَمِيْلَ اِلَى الْهَوٰى وَالشَّرْعُ يَاْمُرُ اَنْ تَبْعُدَ دَارَهٗ

तरजमा : अ़क़्ल तुझे ख़्वाहिशात की त़रफ़ माइल होने से मन्अ़ करती है और शरीअ़त तुझे इस से दूर रहने का हुक्म देती है।

فَمَنْ اِرْتَدٰى بِرِدَآءِ زَهْرَةٍ شَهْوَةً فِيْهَا بَدَا لِلنَّاظِرِ مِنْ خِسَارِهٖ

तरजमा : पस जिस ने शह्वत की वजह से चमक दमक की चादर ओढ़ी देखने वाले पर उस का ख़सारा ज़ाहिर हो गया।

اَقْصِرْ وَتُبْ عَنْ شُرْبِهَا مُتَعَوِّذًا مِنْ شَرِّهَا فَهُوَ الطَّوِيْلُ عِثَارُهٗ

तरजमा : इसे छोड़ और इस की बुराई से पनाह त़लब करते हुए इस से तौबा कर ले पस इस का फ़ितना त़वील है।

भंग के नुक़्सानात :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने इर्शाद फ़रमाया है कि इस को खाने में एक सो बीस **(120)** दीनी व दुन्यवी नुक़्सानात हैं, जिन में से चन्द येह हैं :

(1)...... घटिया सोच का मालिक बनाना (2)...... फ़ित़रती रुत़ूबत को ख़ुश्क करना (3)...... बदन में अमराज़ पैदा करना (4)...... भूलने की बीमारी लगना (5)...... सर का चकराना (6)...... नस्ल ख़त्म करना (7)...... मनी का ख़ुश्क होना (8)...... अचानक मौत लाना (9)...... अ़क़्ल को फ़ासिद और ज़ाइल करना (10)...... तपे दिक़ (11)...... इस्तिस्क़ा और (12)...... सिल की बीमारी पैदा करना (13)...... फ़िक्र फ़ासिद करना (14)...... ज़िक्रे ख़ुदा भुलाना (15)...... राज़ फ़ाश करवाना

www.dawateislami.net

(16)...... बुराई शुरूअ् करना (17)...... ह्या ख़त्म करना (18)...... बहुत ज़ियादा दिखलावा करना (19)...... मुरव्वत का न होना (20)...... महब्बत का न होना (21)...... सित्र का खुल जाना (22)...... ग़ैरत का न होना (23)...... अ़क़्ल मन्दी का ज़ाएअ् होना (24)...... इब्लीस का हम नशीन होना (25)...... नमाज़ों का छोड़ना (26)...... ह़राम कामों का इरतिकाब करना (27)...... बरस और (28)...... कोढ़ पन का शिकार हो जाना (29)...... लगातार बीमार रहना (30)...... दाइमी ज़ुकाम लगना (31)...... जिगर का छल्नी हो जाना (32)...... ख़ून और मुंह की बू का जलना (33)...... मुंह का बदबूदार होना (34)...... दांतों का ख़राब हो जाना (35)...... पल्कों के बाल गिर जाना (36)...... दांतों का पीला हो जाना (37)...... नज़र का कमज़ोर हो जाना (38)...... सुस्त होना (39)...... नींद का ज़ियादा आना (40)...... और सुस्ती आना (41)...... येह शेर को बछड़ा बना देती है (42)...... इ़ज़्ज़त वाला ज़लील हो जाता है (43)...... सह़ीह़ बीमार हो जाता है (44)...... बहादुर बुज़दिल हो जाता है (45)...... करीम ह़क़ीर व कमज़ोर हो जाता है (46)...... अगर उसे खिलाया जाए तो सैर नहीं होता (47)...... अ़ता किया जाए तो शुक्र गुज़ार नहीं होता (48)...... अगर बात की जाए तो सुनता नहीं (49)...... येह माहिरे ज़बान को गूंगा और (50)...... ज़हीन को कुन्द ज़ेह्न बना देती है (51)......ज़िहानत को ख़त्म कर देती है (52)...... पेट का मरज़ पैदा करती है (53)...... ना मर्दी और (54)...... ला'नत का वारिस बनाती है (55)...... जन्नत से दूरी पैदा करती है (56)...... मरते वक़्त कलिमए शहादत भुला देती है। बल्कि कहा गया है कि येह इस की अदना क़बाह़तों में से है।

अफ्यून के नुक़्सानात :

येह तमाम क़बाह़तें अफ्यून वग़ैरा में भी पाई जाती हैं बल्कि अफ्यून वग़ैरा में इस से ज़ियादा हैं कि इस में सूरत बिगड़ जाती है जैसा कि इस को खाने वाले की ह़ालत से मुशा–हदा किया जा सकता है और इसे खाने वाले की ह़ालत से जिस अ़जीब चीज़ का मुशा–हदा किया जा सकता है उस में : (1)...... बदन और (2)...... अ़क़्ल का बिगड़ जाना और (3)...... उन का घटिया तरीन, बोसीदा और गन्दी सूरत की त़रफ़ फिर जाना है (4)...... वोह कभी भी सीधे रास्ते की त़रफ़ माइल नहीं होते (5)...... मुरव्वत को ख़राब करने वाली चीज़ों की त़रफ़ ही जाते हैं ह़ालां कि येह मज़्मूम और बुरी गुमराही है। फिर इन बड़े बड़े नुक़्सानात के बा वुजूद जिन का हम मुशा–हदा करते हैं कि उन के चेहरों पर मौजूद ग़ुबार और छाए हुए धूएं से तजाहुले आ़रिफ़ाना बरतते हुए कोई जाहिल ही येह पसन्द कर सकता है कि इन के नुक़्सान देह और भटके हुए गुरौह में शामिल हो, ह़ालां कि इस बात का ख़दशा मौजूद है कि वोह फ़ासिक़ो फ़ाजिर या काफ़िरों में से न हो जाए।

www.dawateislami.net

वोह शख़्स जिस पर अफ़्यून की बुराइयां वाज़ेह़ हो गईं और जिन कसीर उ़यूब पर येह मुश्तमिल है वोह भी उस पर ज़ाहिर हो गए फिर भी वोह इन की त़रफ़ माइल हो जाए और उन की पैरवी करने लगे तो वोह धोके में मुब्तला हो गया, ह़वादिसाते ज़माना उस की ताक में हैं शैत़ान उस से अपनी मुराद पाने में काम्याब हो गया है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे शख़्स पर ला'नत फ़रमाई है, लिहाज़ा जब उस ने बन्दे को इस ला'नत के गढ़े में फेंका तो शैत़ान उस से इस त़रह़ खेलने लगा जिस त़रह़ बच्चा गेंद से खेलता है क्यूं कि उस वक़्त उस से मक़्सूद सिर्फ़ येही होता है कि उसे बुरे फ़े'ल की त़रफ़ मु-तवज्जेह करे, इस लिये कि अ़क़्ल जो कि कमाल का आला है वोह अपना मक़ाम खो चुकी है और अब वोह बन्दा ह़ैवानात की त़रह़ हो चुका है बल्कि गुम गुश्ता राह (या'नी सीधे रास्ते से भटका हुवा) और अहले दोज़ख़ में से हो गया है। पस कितना बुरा है जो उस ने अपने नफ़्स के लिये पसन्द किया और अफ़्सोस है उस पर जिस ने दुन्या व आख़िरत की ने'मतों को बेचा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमें अपनी ना फ़रमानी से बचाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

तम्बीह :

मज़्कूरा गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना ज़ाहिर है और इमाम अबू ज़रआ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वग़ैरा ने येही तस्रीह़ की है जिस त़रह़ कि शराब बल्कि इमाम ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुबा-लग़ा किया और इसे सज़ा और नजासत में भी शराब की त़रह़ क़रार दिया और वोह इस सिल्सिले में इस त़रफ़ माइल हुए जो मैं ने ह़नाबिला के ह़वाले से पहले ज़िक्र किया और फ़रमाया : "भंग इस ए'तिबार से ख़बीस तरीन है कि येह अ़क़्ल और मिज़ाज को ख़राब कर देती है यहां तक कि इस का आ़दी हीजड़ा बन जाता है और बे ग़ैरत और बे ग़ैरती पर उक्साने वाला हो जाता है और शराब इस ए'तिबार से ख़बीस तरीन है कि येह लड़ाई झगड़ा और क़िताल की त़रफ़ ले जाती है येह दोनों अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नमाज़ से रोकती हैं।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इस में ह़द लगाने पर तवक़्क़ुफ़ किया है और राय दी है कि इस में ता'ज़ीर (या'नी सज़ा) है क्यूं कि येह बिग़ैर मस्ती के अ़क़्ल को तब्दील करती है जैसे भंग, और मु-तक़द्दिमीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى का इस में कोई कलाम नहीं पाया जाता ह़ालां कि ऐसा नहीं है बल्कि इस के खाने वाले को नशा और शह्वत आ जाती है जिस त़रह़ कि शराब पीने वाला। और अक्सर अवक़ात वोह इस से नहीं रुकते और येह उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नमाज़ से रोकती है।"

इस के ठोस खाई जाने वाली होने की वजह से सय्यिदुना इमाम अह़मद رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ वग़ैरा के मज़्हब में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के इस के नजिस होने के बारे में तीन अक़्वाल हैं : (1) येह पी जाने वाली शराब की त़रह़ नजिस है और येही सह़ीह़ ता'बीर है (2) येह ठोस होने की वजह से नजिस नहीं और (3) ठोस और माएअ़ भंग में फ़र्क़ किया जाएगा। येह लफ़्ज़न और मा'नन

www.dawateislami.net

हर हाल में उस नशा देने वाली शराब में दाख़िल है जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़राम क़रार दिया है।

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें दो शराबों के बारे में हुक्म फ़रमाएं, जो हम य–मनी शराब बनाते हैं वोह शह्द से बनती है, उसे जोश दिया जाता है यहां तक कि शदीद जोश में आ जाती है और दूसरी (का नाम) शराबे मरज़ है जो मकई और जव को खौलने तक जोश देने से बनती है।" रावी फ़रमाते हैं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जवामिउ़ल कलम मुकम्मल त़ौर पर अ़त़ा फ़रमाए गए थे (या'नी मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में जामेअ़ कलाम करने की मुकम्मल क़ुदरत थी) पस सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर नशा आवर चीज़ ह़राम है।"

(صحیح مسلم ،کتاب الاشربة ، باب بیان ان کل مسکر خمر ......الخ ، الحدیث:٥٢١٤، ص١٠٣٦)

《3》...... एक रिवायत में रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की कसीर मिक़्दार नशा दे उस की क़लील मिक़्दार भी ह़राम है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الاشربة،باب ماجاء فی السکر،الحدیث:٣٦٨١،ص١٤٩٦)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाने पीने वाली चीज़ों के दरमियान इस लिये फ़र्क़ नहीं फ़रमाया, क्यूं कि शराब कभी रोटी के साथ भी खाई जाती थी, भंग भी कभी पिघलाई जाती और कभी पी जाती है।

सलफ़ सालिह़ीन ने इस का ज़िक्र नहीं किया क्यूं कि येह उन के ज़माने में नहीं थी और इस के बारे में कहा गया है :

فَاٰكِلُهَا وَزَاعِمُهَا حَلَالًا فَتِلْكَ عَلَى الشَّقِيِّ مُصِيْبَتَانِ

तरजमा : इसे खाने वाले और इसे ह़लाल गुमान करने वाले बद बख़्त पर दो मुसीबतें हैं।

शैत़ान को ख़ुश करने वाले लोग :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जितना शैत़ान भंग पीने से ख़ुश हुवा उतना किसी चीज़ से नहीं हुवा क्यूं कि उस ने इसे कमीने लोगों के लिये मुज़य्यन किया पस उन्हों ने इसे ह़लाल करना चाहा और इस की रुख़्सत चाही और इस के बारे में लोगों ने कहा :

قُلْ لِمَنْ يَّاْكُلُ الْحَشِيْشَةَ جَهْلًا يَاخَسِيْسًا قَدْ عِشْتَ شَرَّ مَعِيْشَه

तरजमा : जो जहालत की वजह से भंग खाता है तू उस से कह ! ऐ कमीने तूने बुरी ज़िन्दगी गुज़ारी।

دِيَةُ الْعَقْلِ بِدُرَّةٍ فَلِمَا ذَا يَا سَفِيْهًا قَدْ بِعْتَهٗ بِحَشِيْشَه

तरजमा : अ़क़्ल की क़ीमत तो मोती है पस ऐ बे वुक़ूफ़ ! तूने इसे भंग के बदले क्यूं बेच दिया ?

येह इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی का कलाम है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 171 : हालते इज़्तिरार के इलावा रगों का बहता ख़ून पीना

कबीरा नम्बर 172 : और ख़िन्ज़ीर या मुर्दार का गोश्त खाना

कबीरा नम्बर 173 : और जो मुर्दार के हुक्म में हो उस का गोश्त खाना

《1》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ قف وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ط ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ط (پ٦،المآئدة:٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर ह़राम है मुर्दार और ख़ून और सुवर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे और बे धार की चीज़ से मारा हुवा और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें तुम ज़ब्ह़ कर लो और जो किसी थान पर ज़ब्ह़ किया गया और पांसे डाल कर बांटा करना येह गुनाह का काम है।

《2》

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِیْ مَآ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰی طَاعِمٍ یَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّكُوْنَ مَیْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِیْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ (پ٨،الانعام:١٤٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं नहीं पाता उस में जो मेरी त़रफ़ वह्य हुई किसी खाने वाले पर कोई खाना ह़राम मगर येह कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून या बद जानवर का गोश्त वोह नजासत है।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहली आयत में **11** क़िस्म की चीज़ों को मुबाह़ होने से मुस्तस्ना क़रार दिया है।

(1)...... اَلْمَيْتَةُ : (मुर्दार)

इस की हुरमत अ़क़्ल के मुत़ाबिक़ है, चूंकि ख़ून बहुत लत़ीफ़ जौहर होता है लिहाज़ा जब ह़ैवान अपनी त़बई मौत मरे तो उस का ख़ून रगों में रुक कर ख़राब और बदबूदार हो जाता है और उस जानवर को खाने से कोई ना मुनासिब सूरत पैदा हो सकती है, मछली और टिड्डी इस से ख़ारिज हैं क्यूं कि इन के बारे में दो सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका हैं।

www.dawateislami.net

﴿1﴾...... इसी त़रह़ एक और रिवायत में है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जनीन को ज़ब्ह़ करना उस की मां को ज़ब्ह़ करने की मिस्ल है।" (سنن ابی داؤد ،کتاب الضحایا ، باب ماجاء فی زکاۃ الجنین ، الحدیث: ۲۸۲۸ ، ص ۱۴۳۴)

जब शर-ई त़रीक़े पर ज़ब्ह़ किये हुए जानवर के पेट से मुर्दा जनीन निकला या इस ह़ाल में था कि उस के ज़िन्दा होने का यक़ीन न था तो वोह उस ज़बीह़ा के ताबेअ़ होने की वजह से ह़लाल है अगर्चे बड़ा हो और उस के बाल भी हों और इस से मुराद वोह जानवर है जिस की ज़िन्दगी ख़त्म हो जाए, येह मुराद नहीं कि ग़ैर शर-ई त़ौर पर उसे ज़ब्ह़ किया गया हो,[1] पस आने वाली अन्वाअ़ इस में दाख़िल होंगी अलबत्ता जनीन और शिकार अगर दब कर या बोझ के सबब मर जाए जैसे कुत्ते का शिकार को मार देना और हर वोह जनीन जिस को शर-ई त़रीक़े पर ज़ब्ह़ कर लिया गया अगर्चे उस में ख़ून बहाना न पाया जाए येह सब मज़्कूरा हुक्म से ख़ारिज हैं।

(2)...... **اَلدَّمُ** : (ख़ून)

इस के ह़राम होने का सबब भी नजासत है, लोग इस से आंतों या पेट को भरते और भून कर मेहमानों को खिलाते थे पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर येह ह़राम कर दिया, उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस की हुरमत और नजासत पर इत्तिफ़ाक़ किया है, हां रगों और गोश्त में जो ख़ून बच जाए वोह मुआ़फ़ है, इसी वजह से दूसरी आयत में مسفوحاً (बहने वाला होने) की क़ैद लगा कर इसे ख़ारिज कर दिया, जो इस पहली आयत में मुत़्लक़ होने का फ़ाएदा दे रहा है और सह़ीह़ ह़दीसे पाक की वजह से जिगर और तिल्ली को (हुक्मे हुरमत से) ख़ारिज क़रार दिया गया और येह दोनों भी मस्फ़ूह़ की क़ैद लगाने से ख़ारिज हुए, पस कोई इस्तिस्ना न हुवा और बा'ज़ ने जम्हूर से नक़्ल किया है : "ख़ून ह़राम है अगर्चे बहने वाला न हो।" और न बहने वाले ख़ून को ह़लाल क़रार देने पर सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़ौल का रद किया और उन बा'ज़ का येह गुमान दुरुस्त नहीं।

(3)...... **ख़िन्ज़ीर :**

इस के ह़राम होने का सबब भी इस का नजिस होना है उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया : "ग़िज़ा चूंकि अपने खाने वाले के बदन का जुज़्व बन जाती है, और लाज़िमी बात है

---

1 : अह़नाफ़ के नज़्दीक : "जनीन तब ह़लाल है जब कि वोह ज़िन्दा हो, चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त** में नक़्ल फ़रमाते हैं : "गाय या बकरी ज़ब्ह़ की और उस के पेट में से बच्चा निकला अगर वोह ज़िन्दा है ज़ब्ह़ कर दिया जाए ह़लाल हो जाएगा और मरा हुवा है तो ह़राम है उस की मां का ज़ब्ह़ करना उस के ह़लाल होने के लिये काफ़ी नहीं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 15, स. 77)

www.dawateislami.net

कि गि़ज़ा खाने वाला उस जिन्स की सिफ़ात व अख़्लाक़ से मुत्तसिफ़ हो जाता है जिस जिन्स से वोह गि़ज़ा हा़सिल हो रही है और ख़िन्ज़ीर चूंकि इन्तिहाई मज़्मूम सिफ़ात पर पैदा किया गया है जिन में से चन्द येह हैं : हि़र्से फ़ाहि़श, मम्नूअ़ कामों में शदीद रग़्बत और ग़ैरत का न होना। पस इन्सान पर इस का खाना ह़राम कर दिया गया ताकि वोह ऐसी बुरी कैफ़िय्यत से मुत्तसिफ़ न हो जाए और येही वजह है कि जब ईसाइयों और बिल खु़सूस फ़िरंगियों ने इस को खाने पर हमेशगी इख़्तियार की तो वोह बड़े हि़र्स, मम्नूआत में शदीद रग़्बत और बे ग़ैरती व बे ह़याई का शिकार हो गए।

ख़िन्ज़ीर अपने किसी नर हम जिन्स को अपनी मादा से वत़ी करते हुए देखता है तो ग़ैरत न होने की वजह से उसे कुछ नहीं कहता ब ख़िलाफ़ बकरी वग़ैरा के क्यूं कि येह जानवर तमाम सिफ़ाते ज़मीमा से ख़ाली होते हैं, पस इन के खाने से इन्सान को अपने अह़वाल से हट कर कोई कैफ़िय्यत हा़सिल नहीं होती और आयते मुबा-रका में इस लिये इस के गोश्त का ज़िक्र ख़ास त़ौर पर किया गया हा़लां कि ख़िन्ज़ीर तो सर ता पा ह़राम है, इस की वजह येह है कि खाने में अस्ल मक़्सूद गोश्त होता है।

इमाम कु़रतु़बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि बालों के इलावा सारा ख़िन्ज़ीर ह़राम है, पस इस के बालों से सताली (जूता सीने का आला) बनाना जाइज़ है।[1]" और हमारा मज़्हब भी येही है कि जाइज़ है ब ख़िलाफ़ उस शख़्स के जिस ने सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस की हु़रमत का क़ौल नक़्ल किया और पानी का ख़िन्ज़ीर हमारे नज़्दीक खाया जा सकता है।[2]

(4)...... **وَمَا اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ بِهٖ :** (या'नी वोह जानवर जो बुत के नाम पर ज़ब्ह़ किया जाए)

اهلال का लु-ग़वी मा'ना आवाज़ बुलन्द करना है म-सलन जब कोई तल्बिया कहे तो कहते हैं कि **فُلَانٌ اَهَلَّ بِالْحَجِّ** और जब विलादत के वक़्त बच्चा चीख़े तो कहते हैं **اِسْتَهَلَّ الصَّبِیُّ** और चांद को

---

1 : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **ख़ुला-सतुल फ़तवा** के ह़वाले से "**फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़**" में फ़रमाते हैं : "इस (या'नी ख़िन्ज़ीर के बालों) के साथ सिलाई करना ज़रूरत के तह़्त जाइज़ है।"

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कुछ आगे इर्शाद फ़रमाते हैं : "ज़रूरत के ज़ाइल होने की सूरत में इस (या'नी ख़िन्ज़ीर के बालों) की हु़रमत और नजासत पर सब का इत्तिफ़ाक़ है जैसा कि अ़ल्लामा मक़्दसी (के कलाम) से इस बात का फ़ाएदा हा़सिल हुवा।" (फ़तावा र-ज़विय्या, नजासतों का बयान, जि. 4, स. 426,430)

2 : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان **तफ़्सीरे ख़ाज़िन** के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं : "दरियाई कुत्ता, दरयाई सुवर, दरियाई इन्सान ह़राम है।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 7, स. 78)

www.dawateislami.net

हिलाल इस लिये कहते हैं क्यूं कि इसे देख कर भी चिल्लाया जाता है और कुफ़्फ़ार ज़ब्ह़ के वक़्त कहते थे : ''بِاسْمِ اللَّاتِ وَ الْعُزّٰی'' पस उन पर ऐसे जानवर ह़राम कर दिये गए।

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के एक गुरौह ने कहा कि وَمَا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ का मा'ना है ''वोह जानवर जो मा'बूदाने बात़िला और बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किया जाए।'' और दूसरे गुरौह ने येह मा'ना किया कि ''ज़ब्ह़ के वक़्त जिस जानवर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम के इ़लावा किसी का नाम ज़िक्र किया जाए।'' सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''येह दूसरा क़ौल औला (या'नी ज़ियादा बेहतर) है क्यूं कि येह आयते मुबा-रका के लफ़्ज़ से ज़ियादा मुत़ा-बक़त रखता है।''

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर मुसल्मान ने एक जानवर ज़ब्ह़ किया और उस से ग़ैरुल्लाह का क़ुर्ब ह़ासिल करने का क़स्द किया तो वोह मुरतद हो गया और उस का ज़बीह़ा भी मुरतद का ज़बीह़ा कहलाएगा।''

अलबत्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान की वजह से अहले किताब के ज़बीहे ह़लाल हैं :[1]

وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ (پ٦،المائدة:٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और किताबियों का खाना तुम्हारे लिये ह़लाल है।

अगर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नाम पर कोई जानवर ज़ब्ह़ किया तो अइम्मए अर-बआ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی वग़ैरा के नज़्दीक ह़लाल नहीं और एक गुरौह ने कहा : ''मुत़्लक़ ह़लाल है।'' तो उन को जवाब दिया गया : ''وَمَا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ'' ख़ास है, पस इसे ''وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ'' के उ़मूम पर मुक़द्दम किया जाएगा और अ़ल्लामा इब्ने अ़तिय्या ने किसी से

---

1 : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ''**फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़**'' में किताबियों से निकाह़ और उन के ज़बीह़ा के जवाज़ और अ़-दमे जवाज़ के क़ाइल उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वाल ज़िक्र करने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं : ''**फ़त्ह़ुल क़दीर** में है किताबियात से निकाह़ जाइज़ है, और औला येह है कि न किया जाए और न ही उन का ज़बीह़ा बिग़ैर ज़रूरत खाया जाए......اِلخ

और अगर उन्हीं उ़-लमा का मज़्हब ह़क़ हो और येह लोग ब वज्ह अपने ए'तिक़ादों के इन्दल्लाह मुश्रिक ठहरे तो फिर ज़िनाए मह़ज़ होगा और ज़बीह़ा ह़रामे मुत़्लक़ وَالْعِيَاذُبِاللّٰهِ تَعَالٰی, तो आ़क़िल का काम नहीं कि ऐसा फ़े'ल इख़्तियार करे जिस की एक जानिब ना महमूद हो और दूसरी जानिब ह़रामे क़त़्ई, फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ لَهٗ ऐसा ही गुमान करता था यहां तक कि ब तौफ़ीक़े इलाही **मज्मउ़ल अन्हर** में इसी मज़्मून की तस्रीह़ देखी, जहां उन्हों ने फ़रमाया कि ''इस बिना पर हमारे मुल्क के हुक्काम पर लाज़िम है कि वोह लोगों को नसारा के ज़बीह़ा से मन्अ़ करें क्यूं कि हमारे ज़माने के नसारा ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के इब्नुल्लाह होने की तस्रीह़ करते हैं, जब कि ज़रूरत भी मु-तह़क़्क़क़ नहीं है तो एह़तियात़ वाजिब है क्यूं कि उन के ज़बीह़ा में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है जैसा कि हम ने बयान किया है तो हुरमत वाली जानिब अपनाना बेहतर है जब कि ज़रूरत नहीं है।''

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 122)

www.dawateislami.net

नक़्ल किया है कि उस से एक औ़रत के बारे में फ़तवा पूछा गया जिस ने अपने खिलोनों के लिये ऊंट ज़ब्ह़ कर दिया था तो उस ने फ़तवा दिया कि उस का खाना ह़लाल नहीं क्यूं कि उस ने बुत के लिये ज़ब्ह़ किया।

(5)...... اَلْمُنْخَنِقَةُ : (इस से मुराद वोह जानवर है जो गला घोंटने से मर जाए)

इस की सूरत येह होती है कि इन्सान या ग़ैरे इन्सान के फ़े'ल से जानवर के सांस को रोक दिया जाए यहां तक कि वोह मर जाए और ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग ह़ैवान का गला घोंट देते थे, जब वोह मर जाता तो उसे खा लेते।

(6)...... اَلْمَوْقُوْذَةُ : (या'नी जिसे डन्डा मार कर हलाक किया जाए)

येह وَقَذَهُ النُّعَاس से है या'नी जिस पर ऊंघ ग़ालिब आ जाए और गोया कि उस का मादा सुकून और लटक्ने पर दलालत करता है, पस **मौक़ूज़ा** वोह जानवर होता है जिस को इतना मारा जाए कि वोह ढीला पड़ जाए लटक जाए और मर जाए, नीज़ बन्दूक़ की गोली से मारा हुवा भी इस में शामिल है और येह मुर्दार के मा'ना में है और **मुन्ख़निक़ह** में भी शामिल है क्यूं कि येह मर जाता है लेकिन इस का ख़ून नहीं बहता।

(7)...... اَلْمُتَرَدِّيَةُ : (जो बुलन्दी से गिरे)

मिसाल के त़ौर पर पहाड़ या दरख़्त से ज़मीन पर या कूंएं में गिरा और मर गया तो ह़राम है, अगर्चे उसे कोई तीर लगा क्यूं कि पहली (या'नी ज़मीन पर गिरने की) सूरत में उस की ज़िन्दगी किसी ऐसे तेज़ धार आले के साथ ज़ाइल न हुई जो उसे ज़ख़्मी कर दे जिस के सबब ख़ून बह पड़े, जब कि दूसरी (या'नी कूंएं में गिरने की) सूरत में तेज़ धार आले के साथ एक और चीज़ (या'नी पानी में डूबना) शरीक हो गया, पस ग़ैर इस की ह़ुरमत में मुअस्सिर हो गया (इस लिये ह़राम है) क्यूं कि ह़लाल होने की शर्त़ येह है कि ज़िन्दगी मह़ज़ तेज़ धार आले के साथ ज़ख़्मी करने से ख़त्म हो।

(8)...... اَلنَّطِيْحَةُ : (वोह जानवर जिसे दूसरा टक्कर या सींग मार कर हलाक कर दे)

येह (शर-ई त़रीक़े पर) ख़ून न बहने की वजह से मुर्दार है।

(9)...... وَمَا اَكَلَ السَّبُعُ : (इस से मुराद वोह जानवर है जिस का बा'ज़ गोश्त दरिन्दे खा लें)

जब दरिन्दे किसी जानवर को ज़ख़्मी कर के हलाक कर देते और उस का कुछ गोश्त खा लेते

www.dawateislami.net

तो ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बाक़ी बचा हुवा खा लेते थे, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे भी ह़राम फ़रमा दिया। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान ''اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ'' (या'नी जो मरने से पहले शर-ई त़ौर पर ज़ब्ह़ कर दिये जाएं) से मा'लूम हुवा कि **मुन्ख़निक़ह** और इस के बा'द जिन जानवरों का तज़्किरा हुवा अगर उन में से कोई जानवर इस ह़ालत में पाया गया कि उस में ज़िन्दगी की रमक़ हो और वोह ज़ब्ह़ कर लिया गया तो ह़लाल है वरना ह़राम।

(10)......وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ : (जो बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किये जाएं)

मन्क़ूल है कि इस से मुराद वोह पथ्थर हैं जिन पर कुफ़्फ़ार ज़ब्ह़ किया करते थे, तो इस सूरत में عَلٰی का ह़र्फ़ वाज़ेह़ है, और एक क़ौल येह है : ''نُصُبُ से मुराद बुत हैं जो इ़बादत के लिये नस्ब किये जाते थे।'' तो इस सूरत में عَلٰی،لام के मा'ना में होगा या'नी बुतों के लिये और तक़्दीरे कलाम यूं होगा وَمَا ذُبِحَ عَلٰى اِعْتِقَادِ تَعْظِيْمِهَا या'नी जो बुतों की ता'ज़ीम के अ़क़ीदे पर ज़ब्ह़ किया गया।

सय्यिदुना मुजाहिद, सय्यिदुना क़तादा और सय्यिदुना इब्ने जरीज رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : ''का'बे के इर्द गिर्द **360** पथ्थर नस्ब थे, जिन की येह लोग इ़बादत करते, ता'ज़ीम करते और उन के लिये ज़ब्ह़ करते थे, और येह (ह़क़ीक़ी) बुत नहीं थे क्यूं कि बुत से मुराद एक मुनक़्क़श सूरत होती है बल्कि वोह उन्ही पथ्थरों को (जानवरों के) चमड़ों से आलूदा करते और उन पर गोश्त रखते थे।''

﴾2﴿...... सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग ख़ून बहा कर बैतुल्लाह शरीफ़ की ता'ज़ीम करते थे जब कि हम इस की ता'ज़ीम के ज़ियादा ह़क़दार हैं।'' तो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान नाज़िल हुवा :

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ (پ۱۷،الحج:۳۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के ख़ून हां तुम्हारी परहेज़ गारी उस तक बारयाब होती है।

(تفسیرالطبری، سورۃ المائدۃ،تحت الآیۃ:۳،الحدیث:۱۱۰۵۲/۱۱۰۵۶،ج٤،ص٤١٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान ''وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ'' का मा'ना येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग जो करते थे उस से मन्अ़ करना कि उन में से किसी को कोई भी ज़रूरत पेश आती तो वोह का'बे के ख़ादिम के पास आता और उस के पास सात बराबर जूए के तीर होते जो पहाड़ी लकड़ी के बने होते और उन्हें **अज़्लाम** कहा जाता क्यूं कि वोह सीधे होते और पहले पर लिखा होता نَعَمْ, दूसरे पर لَا, तीसरे पर مِنْكُمْ, चौथे पर مِنْ غَيْرِكُمْ, पांचवें पर مُلْصَقٌ या'नी किस नसब से मिला हुवा है, छटे पर عَقْلٌ या'नी दैत और सातवें पर لَاشَيْئَ عَلَيْهِ या'नी इस पर कोई चीज़ नहीं, जब

www.dawateislami.net

वोह किसी काम का इरादा करते या नसब में इख़्तिलाफ़ होता या किसी पर दैत होती तो वोह तीरों वाले के लिये सो दिरहम और ऊंट ले कर सब से बड़े बुत **हबल** के पास आते तो वोह उन तीरों को उन के लिये घुमाता और वोह कहते : "ऐ हमारे मा'बूदो ! हम ने फुलां फुलां काम का इरादा किया है।" पस जो तीर निकलता वोह उस के मुताबिक़ फ़ैसला करते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस से मन्अ़ फ़रमा दिया और इसे ह़राम क़रार दिया और फ़रमाया : "ذٰلِكُمْ فِسْقٌ" या'नी येह गुनाह है।" बुतों पर ज़ब्ह़ किये जाने वाले जानवरों और जूए के तीरों को इकठ्ठा ज़िक्र करने की वजह येह है कि येह (तीर) उन के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ के पास बुलन्द किये जाते हैं।

अ़ल्लामा कुरतुबी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "इस अ़मल को "इस्तिक़्साम" का नाम इस लिये दिया गया क्यूं कि वोह इस के ज़रीए रिज़्क़ और अपने इरादों को तक़्सीम किया करते थे। और इस की नज़ीर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नजूमी के इस क़ौल को ह़राम क़रार देना है कि "फुलां सितारे की वजह से न निकल और फुलां सितारे की वजह से निकल।"

एक जमाअ़त ने कहा : "इस आयत से मुराद क़िमार (या'नी जूआ) है।" और सय्यिदुना इब्ने जबीर رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "**अज़्लाम** से मुराद सफ़ेद कंकरियां हैं जो वोह मारते थे।" और सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने कहा : "येह ईरान के तीर हैं और रूमी उन के साथ जूआ खेलते थे।" इमाम शअ़बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی ने फ़रमाया : "**अज़्लाम**" अहले अ़रब के लिये हैं और "**कअ़ाब**" (चौसर की गोट या शत़रन्ज का मोहरा) अ़-जमिय्यों के लिये हैं।"

तम्बीह :

इन तीनों को कबीरा गुनाह शुमार करना मज़्कूरा आयात से ज़ाहिर है, इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे फ़िस्क़ का नाम दिया चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान :"ذٰلِكُمْ فِسْقٌ" मज़्कूरा तमाम गुनाहों की त़रफ़ लौटता है जैसा कि हमारे कई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने तसरीह़ की है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि येह सिर्फ़ उस की त़रफ़ लौटता है जिस से मिला हुवा है (या'नी येह हुक्मे फ़िस्क़ सिर्फ़ "وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ" का है) लेकिन येह अपने मह़ल में नहीं क्यूं कि उसूल में मुक़र्रर क़ाइदा तमाम की त़रफ़ लौटने का तक़ाज़ा करता है। पस किसी एक के साथ ख़ास करने की कोई वजह नहीं, लेकिन मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने ख़ून की सराह़त नहीं फ़रमाई जब कि मैं ने इस की दलील को जान लिया है और होना येह चाहिये कि वोह नजासत जो शरीअ़त ने मुआ़फ़ नहीं की, क़ियास करते हुए इसे भी उस हुक्म से मिला दिया जाए।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 174 : किसी जानदार को आग से जलाना

《1》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "पहले मैं ने तुम्हें हुक्म दिया था कि फुलां फुलां को आग से जला दो लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई किसी को आग का अ़ज़ाब दे येह जाइज़ नहीं, पस अगर तुम उन दोनों को पाओ तो उन्हें क़त्ल कर दो।" (جامع الترمذی ،ابواب السیر ، باب النھی عن الاحراق بالنار ، الحدیث: ۱۵۷۱ ، ص ۱۸۱٤)

《2》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि रहमते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने च्यूंटियों का एक घर देखा जिसे हम ने जला दिया था, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "इसे किस ने जलाया है ?" हम ने अ़र्ज़ की : "हम ने।" तो हुज़ूर रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आग के मालिक (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई आग का अ़ज़ाब न दे।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الآداب ، باب فی قتل الذر ، الحدیث: ۵۲٦۸، ص ۱٦۰۷)

तम्बीह :

इस गुनाह को मुत्लक़न कबीरा गुनाह शुमार किया गया है, ख़्वाह उस जानवर का गोश्त खाया जाता हो या न खाया जाता हो, छोटा हो या बड़ा। हां उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वाल का खुलासा येह है कि "अगर जलाए बिग़ैर क़त्ल करना मुम्किन न हो तो जलाना जाइज़ है और ज़ाहिर येह होता है कि जब फ़वासिक़े ख़म्स (या'नी चूहा, चील, कव्वा, काटने वाला कुत्ता (या बिच्छू) और सांप) के ज़रर को ज़ाइल करने के लिये आग से जलाने का त़रीक़ा मु-तअ़य्यन हो गया तो आग से जलाना मन्अ़ नहीं।

और रहा इन के इ़लावा आदमी और है़वान को आग से जलाना अगर्चे वोह है़वान खाया न जाता हो तो येह कबीरा गुनाह है क्यूं कि,

《3》...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا कुछ लोगों के पास से गुज़रे जिन्हों ने एक मुर्ग़ी को बांध कर तीरों का निशाना बनाया हुवा था, जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को देखा तो बिखर गए, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह किस ने किया है ? बेशक मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ करने वाले पर ला'नत फ़रमाई और आग से जलाना निशाना बना कर तीर मारने की त़रह़ या इस से भी सख़्त है।"

(صحیح مسلم ،کتاب الصید ، باب النھی عن صبر البھائم ،الحدیث:۵۰٦۲، ص ۱۰۲۷)

《4》...... मुस्लिम शरीफ़ ही की एक रिवायत में है कि महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़ज़ाब देगा जो दुन्या में अ़ज़ाब देते हैं।" (المرجع السابق، الحدیث: ٦٦۵۷، ص ۱۱۳٤)

www.dawateislami.net

﴾5﴿...... मुस्लिम शरीफ़ की दूसरी रिवायत इन अल्फ़ाज़ के साथ है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़ज़ाब देगा जो दुन्या में लोगों को अ़ज़ाब देते हैं।" (المرجع السابق،الحديث:٦٦٥٨)

रावी ने मज़्कूरा ह़दीसे पाक उस वक़्त सुनाई जब उन्हों ने चन्द लोगों को देखा कि उन्हें धूप में अ़ज़ाब दिया जा रहा है तो फिर आग के साथ जलाने वाले के बारे में तेरा क्या गुमान है।

कबीरा नम्बर **175 :** **नजिस या'नी नापाक चीज़ खाना**

कबीरा नम्बर **176 :** **गन्दगी खाना**

कबीरा नम्बर **177 :** **नुक़्सान देह चीजें खाना**

इन तीनों को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, पहली चीज़ के कबीरा होने के बारे में दलील येह है कि उसे मुर्दार पर क़ियास किया गया है क्यूं कि वोह नुक़्सान देह होने की वजह से ह़राम नहीं बल्कि नजासत की वजह से है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे फ़िस्क़ का नाम दिया है, लिहाज़ा हर ग़ैर मुआ़फ़ नजासत इस सिल्सिले में उस के साथ मुल्ह़िक़ होगी, पस इसे कबीरा शुमार करने की वजह ज़ाहिर हो गई।

दूसरी चीज़ के कबीरा होने की दलील येह है कि येह गन्दगी है जैसा कि नाक की रींठ। और तीसरी चीज़ के कबीरा होने की दलील येह है कि इस में हुक्म ज़ाहिर है क्यूं कि नुक़्सान देह चीज़ का खाना बदन और अ़क़्ल को ख़राब करता है जो अ़ज़ीम गुनाह है और जैसा कि ग़ैर को नुक़्सान देना जो बरदाश्त की त़ाक़त न रखता हो कबीरा गुनाह है इसी त़रह़ अपने आप को नुक़्सान देना भी कबीरा गुनाह है बल्कि येह सब से बड़ा है क्यूं कि अपनी ह़िफ़ाज़त ग़ैर की ह़िफ़ाज़त से ज़ियादा अहम होती है।

चन्द मसाइले फ़िक़्हिय्या :

हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने ज़िक्र किया है कि "बदन को नुक़्सान देने वाली पाक चीज़ों का खाना भी ह़राम है जैसे मिट्टी (अह़नाफ़ के नज़्दीक : "मिट्टी ह़द्दे ज़रर तक खाना ह़राम है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 63)), ज़हर और अफ़्यून, मगर सलामती के ग़ालिब गुमान के

www.dawateislami.net

साथ दवा की ह़ाजत के लिये इस की क़लील मिक़्दार जाइज़ है या अ़क़्ल को नुक़्सान देने वाली पाक चीज़ों का खाना भी ह़राम है जैसे नशे वाली बूटियां जो सुस्ती पैदा न करती हों और उन से इ़लाज करवा सकता है अगर्चे नशे वाली हों बशर्ते कि शिफ़ा मु-तअ़य्यन हो, इस की सूरत येह है कि दो आ़दिल त़बीब कहें : "इस के सिवा कोई चीज़ तेरी बीमारी को नफ़्अ़ न देगी।" और अगर बूटी के बारे में शक हो कि आया येह ज़हरीली है या नहीं ? या दूध के बारे में शक हो कि आया उन जानवरों का है कि जिन का गोश्त खाया जाता है या जिन का गोश्त नहीं खाया जाता ? तो उस का खाना या पीना ह़राम है।

अगर मक्खी वग़ैरा पके हुए खाने में गिर गई और उस में गल गई तो उस का खाना जाइज़ है और परन्दे या आदमी का कोई उ़ज़्व पके हुए खाने में गिर गया तो उस का खाना जाइज़ नहीं अगर्चे वोह उस में ह़ल हो गया हो।

अगर नजासत खाने में पाई गई और वोह जमी हुई है और शक है कि क्या इस में माएअ़ ह़ालत में गिरी या ठोस ह़ालत में तो उस खाने को खाना जाइज़ है क्यूं कि अस्ल उस की त़हारत है, जब कि उस के जमी हुई ह़ालत में गिरने का एह़तिमाल हो, पस उसे और उस के इर्द गिर्द को निकाल दिया जाएगा अगर्चे ज़न ग़ालिब हो कि वोह माएअ़ ह़ालत में गिरी।

सांपों के गोश्त के साथ मिली हुई दवा (या'नी दवाओं से ज़ह्र का असर दूर करने के लिये इस्ति'माल होने वाली दवा) ह़राम है, सिवाए उस ज़रूरत के जिस में मुर्दार खाना जाइज़ होता है और अगर किसी ज़मीन में ह़राम आ़म हो जाए और कोई ह़लाल चीज़ बाक़ी न रहे और जानने वाले लोग भी इस में मुब्तला हो जाएं तो क़दरे ह़ाजत खाना जाइज़ है न कि ऐ़श कोशी के लिये और येह (ऐ़श परस्ती के लिये खाना) ज़रूरत पर मौक़ूफ़ नहीं।

नफ़्अ़ व नुक़्सान देने वाले ह़ैवानात और इन के अह़काम

☆...... जो ह़ैवान नुक़्सान देते हैं और नफ़्अ़ नहीं देते जैसे सांप, बिच्छू, चूहा, चील, काटने वाला कुत्ता[1], कव्वा, भेड़िया, शेर, चीता और तमाम (चीरने फाड़ने वाले) दरिन्दे, रीछ, गिध, उ़क़ाब, पिस्सू, छोटी च्यूंटी, छिप-कली, धब्बों वाली छिप-कली, खटमल और भिड़ वग़ैरा। येह और इस त़रह़ के जानवरों को क़त्ल करना सुन्नत है अगर्चे ह़रम में एह़राम बांधा हुवा हो।

---

1 : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शर्हे मिश्कात में नक़्ल फ़रमाते हैं : "अब हुक्म येह है कि बे ज़रर कुत्तों के क़त्ल का हुक्म मन्सूख़ है ख़्वाह काले हों या कुछ और, और ज़रर वाले ख़ुसूसन दीवाने कुत्ते का क़त्ल ज़रूरी है और बिला ज़रूरत कुत्ता पालना मन्अ़ है।" (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 5, स. 706)

www.dawateislami.net

☆...... जो नफ़्अ़ भी देते हैं और नुक़्सान भी जैसे तेंदवा (चीते की त़रह़ का जानवर), शिक्रा और बाज़, पस इन के नफ़्अ़ की वजह से इन्हें क़त्ल करना सुन्नत नहीं और इन के नुक़्सान की वजह से इन्हें क़त्ल करना मक्रूह नहीं।

☆...... और वोह जो न तो नफ़्अ़ देते हैं न नुक़्सान जैसे बड़ा भंवरा (पतंगा), काले कीड़े, दस पैरों वाला बह़री जानवर (केकड़ा), सफ़ेद सर और बक़िय्या काले जिस्म वाला घोड़ा। हां वोह कुत्ता जो न नफ़्अ़ देता है न नुक़्सान, उस के क़त्ल के जाइज़ होने में इख़्तिलाफ़ है और ज़ियादा क़ाबिले ए'तिमाद बात येह है कि येह ह़राम नहीं और इस के और मज़्कूरा ह़ैवानात के दरमियान फ़र्क़ किया जाएगा क्यूं कि वोह हशरात के ज़िम्न में आते हैं, पस इन में इस क़दर मुआ़फ़ है जो दूसरों में नहीं और बड़ी च्यूंटी को क़त्ल करना ह़राम है ह़ालां कि इस में न नफ़्अ़ है न नुक़्सान। इसी त़रह़ शह्द की मक्खी, अबाबील की त़रह़ का एक परन्दा, लटोरा (कीड़ों को खाने वाला और चिड़िया का शिकार करने वाला परन्दा), मेंडक और वोह कुत्ता जो शिकार या ह़िफ़ाज़त के लिये हो अगर्चे काला ही हो वग़ैरा। इन सब को क़त्ल करना ह़राम है।

ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ ﷲ

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَاذَنْبَ لَهٗ'' या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।''

(سنن ابن ماجة،حديث ٤٢٥٠،ص ٢٧٣٥)

www.dawateislami.net

كتاب البيوع

ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान

कबीरा नम्बर 178 : आज़ाद इन्सान को बेचना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "मैं क़ियामत के दिन तीन शख़्सों से झगड़ा करूंगा और जिस से झगड़ा करूंगा उस पर ग़ालिब आ जाऊंगा : (1) वोह शख़्स जिस ने मेरे नाम पर अ़ह्द किया फिर अ़ह्द शिकनी की (या'नी उसे तोड़ दिया) (2) जिस ने किसी आज़ाद शख़्स को (गुलाम बना कर) बेचा और उस की क़ीमत खा ली और (3) जिस ने किसी को उजरत पर रखा फिर उस से पूरा काम ले लिया मगर उस की उजरत न दी।"

(سنن ابن ماجة،ابواب الرهون،باب اجر الاجراء،الحديث:٢٤٤٢،ص٢٦٢٣،"يعطه" بدله"يوفه")

तम्बीह :

इस ह़दीसे पाक में वारिद शदीद वईद की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, बा'ज़ मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस के कबीरा गुनाह होने की सराह़त भी की है और येह एक वाज़ेह़ बात है, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़ह़ावी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَاوِی फ़रमाते हैं : "इब्तिदाए इस्लाम में आज़ाद अगर मक़रूज़ होता और उस के पास क़र्ज़ की अदाएगी के लिये कोई ज़रीआ़ न होता तो उसे बेच दिया जाता था यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान से इस अ़मल को मन्सूख़ फ़रमा दिया :

وَاِنْ كَانَ ذُوْعُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ
(پ٣،البقرة:٢٨٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक।

जब कि एक क़ौम ने इस के मन्सूख़ होने का क़ौल नहीं किया बल्कि कहा है कि "येह हुक्म अभी तक बर क़रार है।" जैसा कि,

﴾2﴿...... एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "मुझ पर किसी शख़्स का माल या क़र्ज़ था वोह मुझे शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले कर ह़ाज़िर हुवा लेकिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे पास कोई माल न पाया तो मुझे उस क़र्ज़ के इ़वज़ बेच दिया या उस क़र्ज़ की अदाएगी के लिये बेच दिया।" (سنن الدار قطنى،كتاب البيوع،الحديث:٣٠٠٦ ج٣،ص٧٤)

मगर येह रिवायत ज़ईफ़ होने की वजह से क़ाबिले हुज्जत नहीं।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 179 : सूद लेना

कबीरा नम्बर 180 : सूद देना

कबीरा नम्बर 181 : सूदी दस्तावेज़ात लिखना

कबीरा नम्बर 182 : सूदी लैन दैन पर गवाह बनना

कबीरा नम्बर 183 : सूद में कोशिश करना

कबीरा नम्बर 184 : सूद में तआवुन करना

﴾1﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیۡنَ یَاۡکُلُوۡنَ الرِّبٰوا لَا یَقُوۡمُوۡنَ اِلَّا کَمَا یَقُوۡمُ
الَّذِیۡ یَتَخَبَّطُہُ الشَّیۡطٰنُ مِنَ الۡمَسِّ ؕ ذٰلِکَ بِاَنَّہُمۡ
قَالُوۡۤا اِنَّمَا الۡبَیۡعُ مِثۡلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰہُ الۡبَیۡعَ
وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنۡ جَآءَہٗ مَوۡعِظَۃٌ مِّنۡ رَّبِّہٖ
فَانۡتَہٰی فَلَہٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمۡرُہٗۤ اِلَی اللّٰہِ ؕ وَمَنۡ عَادَ
فَاُولٰٓئِکَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ ہُمۡ فِیۡہَا خٰلِدُوۡنَ 0
یَمۡحَقُ اللّٰہُ الرِّبٰوا وَیُرۡبِی الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰہُ لَا
یُحِبُّ کُلَّ کَفَّارٍ اَثِیۡمٍ 0 (پ۳، البقرۃ: ۲۷۵ تا ۲۷۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है और **अल्लाह** ने ह़लाल किया बैअ़ को और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है और जो अब ऐसी ह़-र-कत करेगा तो वोह दोज़ख़ी है वोह इस में मुद्दतों रहेंगे **अल्लाह** हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को और **अल्लाह** को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्रा बड़ा गुनहगार।

﴾2﴿

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰہَ وَذَرُوۡا مَا بَقِیَ مِنَ
الرِّبٰۤوا اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ 0 فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا فَاۡذَنُوۡا
بِحَرۡبٍ مِّنَ اللّٰہِ وَرَسُوۡلِہٖ ۚ وَاِنۡ تُبۡتُمۡ فَلَکُمۡ

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल ले लो न

www.dawateislami.net

رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۫ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ (پ٣، البقرة، ٢٧٨تا٢٨١)

तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ न तुम्हें नुक़्सान हो और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर जानो और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

﴾3﴿

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝ (پ٤، آل عمران: ١٣٠۔١٣١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! सूद दूना दून (दुगना) न खाओ और **अल्लाह** से डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह़ मिले और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तय्यार रखी है।

मज़्कूरा आयाते मुबा-रका और इन में बयान किये गए सूदख़ोर के अन्जाम पर ग़ौर कीजिये, आयाते मुबा-रका के बा'ज़ ह़िस्सों की मुख़्तसर तशरीह़ से इस की मज़ीद वज़ाह़त हो जाएगी।

सूद की ता'रीफ़ :[1]

रिबा (सूद) **लुग़त** में ज़ियादती या इज़ाफ़े को कहते हैं, और **शर-अ़** में रिबा से मुराद येह है कि ऐसे मख़्सूस इवज़ पर अ़क़्द करना कि ब वक़्ते अ़क़्द जिस का शरीअ़त के तक़ाज़ों के मुताबिक़ बराबर होना मा'लूम न हो या जो अ़क़्द बदलैन या इन में से किसी एक की ताख़ीर के साथ हो। इस की तीन अक़्साम हैं :

(1)..... **रिबा अल फ़ज़्ल :**[2] दो हम जिन्स अश्या में से एक को दूसरी के बदले इज़ाफ़े के साथ बेचना।

---

1 : अह़नाफ़ के नज़्दीक सूद की ता'रीफ़ येह है : "अ़क़्दे मुआ़-वज़ा में जब दोनों त़रफ़ माल हो और एक त़रफ़ ज़ियादती हो कि इस के मुक़ाबिल में दूसरी त़रफ़ कुछ न हो येह सूद है।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 11, स. 96)

2 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "हिदाया" के ह़वाले से **रिबा अल फ़ज़्ल** और **रिबा अन्नसीअह** की वज़ाह़त यूं फ़रमाते हैं : "क़द्र व जिन्स दोनों मौजूद हों तो कमी बेशी भी ह़राम है (इस को रिबा अल फ़ज़्ल कहते हैं) और एक त़रफ़ नक़्द हो दूसरी त़रफ़ उधार येह भी ह़राम है **(बक़िय्या अगले सफ़ह़ा पर.....)**

www.dawateislami.net

(2)..... **रिबा बालीद :** बदलैन या इन में से किसी एक पर क़ब्ज़ा मजलिस से जुदा होने के बा'द करना, या इस ताख़ीर में दोनों बदलों का मुत्तहिद होना शर्त़ हो इस इ़ल्लत की बिना पर कि वोह दोनों अश्या ख़ुर्दनी हों या दोनों नक़्दी की क़िस्म से हों अगर्चे उन की जिन्स मुख़्तलिफ़ हो।

(3)...... **रिबा अन्निसाअ :** ख़ुर्दनी अश्या या हम जिन्स या मुख़्तलिफ़ुल जिन्स नक़्दी को किसी मुअ़य्यना मुद्दत तक के लिये बेचना ख़्वाह वोह एक लम्ह़ा ही क्यूं न हो, अगर्चे वोह बराबर ही हों और उन पर मजलिस ही में क़ब्ज़ा कर लिया जाए।

मिसालें :

पहली क़िस्म की मिसाल : गन्दुम के एक साअ़ को गन्दुम के ही एक साअ़ से कम या ज़ियादा के इ़वज़ बेचना या चांदी के एक दिरहम को चांदी के ही एक दिरहम से कम या ज़ियादा के इ़वज़ बेचना ख़्वाह दोनों पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए या न किया जाए, ख़्वाह मुद्दत मुक़र्रर हो या न हो।

दूसरी क़िस्म की मिसाल : एक साअ़ गन्दुम को एक साअ़ गन्दुम या एक दिरहम सोने को एक दिरहम सोने या एक साअ़ गन्दुम को एक साअ़ जव या इस से ज़ियादा के इ़वज़ बेचना या सोने के एक दिरहम को एक दिरहम चांदी या इस से ज़ियादा के इ़वज़ बेचना इस शर्त़ के साथ कि दोनों में से एक पर क़ब्ज़ा करना मजलिस से मुअख़्ख़र हो जाए।

तीसरी क़िस्म की मिसाल : येह है कि एक साअ़ गन्दुम को एक साअ़ गन्दुम या एक दिरहम चांदी को एक दिरहम चांदी के इ़वज़ बेचा जाए मगर उन में से एक के लिये कोई मुद्दत मुक़र्रर कर ली जाए अगर्चे वोह मुद्दत एक लम्ह़ा ही क्यूं न हो और अगर्चे बराबर हों और मजलिस में उन पर क़ब्ज़ा भी कर लिया गया हो।

(**......बक़िय्या ह़ाशिया**) (इस को रिबा अन्नसीअह कहते हैं) म-सलन गेहूं को गेहूं, जव को जव के बदले में बैअ़ करें तो कमो बेश ह़राम, और एक अब देता है दूसरा कुछ देर के बा'द देगा येह भी ह़राम, और दोनों में से एक हो एक न हो तो कमी बेशी जाइज़ है और उधार ह़राम म-सलन गेहूं को जव के बदले में, या एक त़रफ़ सीसा हो एक त़रफ़ लोहा कि पहली मिसाल में माप और दूसरी में वज़्न मुश्तरिक है, मगर जिन्स का दोनों में इख़्तिलाफ़ है। कपड़े को कपड़े के बदले में, गुलाम को गुलाम के बदले में बैअ़ किया इस में जिन्स एक है मगर क़द्र मौजूद नहीं। लिहाज़ा येह तो हो सकता है कि एक थान दे कर दो थान या एक गुलाम के बदले में दो गुलाम ख़रीद ले मगर उधार बेचना ह़राम और सूद है अगर्चे कमी बेशी न हो और दोनों न हों तो कमी बेशी भी जाइज़ और उधार भी जाइज़। म-सलन गेहूं और जव को रुपिया से ख़रीदें यहां कमो बेश होना तो ज़ाहिर है कि एक रुपिये के इ़वज़ में जितने मन चाहो ख़रीदो कोई ह़रज नहीं, और उधार भी जाइज़ है कि आज ख़रीदो रुपिया महीने में साल में दूसरे की मरज़ी से जब चाहो दो, जाइज़ है कोई ख़राबी नहीं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 2, हि़स्सा : 11, स. 96)

www.dawateislami.net

ख़ुलासए कलाम येह है कि जब दोनों इवज़ जिन्स और इल्लत में बराबर हों म-सलन गन्दुम के इवज़ गन्दुम, सोने के बदले सोना तो इस में तीन बातें शर्त़ होंगी : (1) बराबरी (2) अ़क़्द के वक़्त इस बराबरी का यक़ीनी इल्म होना और (3) जुदाई से पहले दोनों इवज़ों पर क़ब्ज़ा कर लेना।

जब इल्लत मुत्तहि़द हो और जिन्स मुख़्तलिफ़ हो जैसे जव के इवज़ गन्दुम और चांदी के इवज़ सोना, तो इस में दो चीज़ें शर्त़ हैं : पहली मा'लूमुल अ़क़्द होना और दूसरी येह कि जुदाई से पहले बाहम क़ब्ज़े का होना और इन में तफ़ाज़ुल या'नी इज़ाफ़ा जाइज़ है। लेकिन जब जिन्स और इल्लत दोनों मुख़्तलिफ़ हों म-सलन गन्दुम सोने या कपड़े के इवज़ हो तो फिर मज़्कूरा तीनों शराइत़ में से कोई चीज़ शर्त़ नहीं, **इल्लत** से मुराद अश्या का ख़ुर्दनी होना है या'नी वोह अश्या जो खाने पीने के त़ौर पर इस्ति'माल होती हैं म-सलन तरकारियां, फल या अदवियात वग़ैरा।

नक़्दी सोने चांदी में शुमार की जाती है ख़्वाह वोह ढले हुए सिक्कों की सूरत में हो या ज़ेवरात वग़ैरा की सूरत में, सिक्कों में सूद नहीं होता अगर्चे वोह राइज ही क्यूं न हों।

सय्यिदुना मु-तवल्ली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक चौथी नौअ़ का इज़ाफ़ा किया और वोह "**रिबा अल क़र्ज़**" या'नी क़र्ज़ का सूद है मगर ह़क़ीक़त में येह **रिबा अल फ़ज़्ल** ही की त़रफ़ राजेअ़ है क्यूं कि इस में एक ऐसी शर्त़ है जो क़र्ज़ देने वाले को एक ख़ास नफ़्अ़ पहुंचाती है गोया उस ने येह चीज़ एक ऐसे नफ़्अ़ के इज़ाफ़े के साथ दी जो उस की त़रफ़ लौटा।

सूद की येह चारों अक़्साम मज़्कूरा आयाते मुबा-रका और आयन्दा आने वाली अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर बिल इज्माअ़ ह़राम हैं और रिबा की मज़म्मत में जो वई़द भी आई है वोह इन चारों को शामिल है अलबत्ता इन में से बा'ज़ की ह़ुरमत क़ियास से साबित है और बा'ज़ की ह़ुरमत में क़ियास को दख़्ल नहीं।

रिबा अन्नसीअह से मुराद वोह त़रीक़ा है जो ज़मानए जाहिलिय्यत में मश्हूर था या'नी वोह किसी को मुअ़य्यना मुद्दत तक के लिये कोई शै क़र्ज़ देते और उस पर हर माह एक मुअ़य्यन मिक़्दार में नफ़्अ़ वुसूल करते जब कि अस्ल माल जूं का तूं बाक़ी रहता और जब वोह मुद्दत पूरी हो जाती तो वोह अपने माल का मुत़ा-लबा करता अगर मक़्रूज़ अदाएगी से मा'ज़िरत करता तो उस मुद्दत और नफ़्अ़ में इज़ाफ़ा कर देता अगर्चे इस पर **रिबा अल फ़ज़्ल** का नाम भी सादिक़ आता है लेकिन इसे **नसीअह** कहने की वजह येह है कि इस में ज़ाती त़ौर पर उधार ही मक़्सूद होता है और येह सूरत लोगों में अब तक राइज और मश्हूर है।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا सिर्फ़ **"रिबा अन्नसीअह"** ही को ह़राम क़रार देते थे और दलील येह पेश फ़रमाते थे कि हमारे दरमियान येही सूरत मु-तआ़रिफ़ है लिहाज़ा वोह नस को इस की त़रफ़ फैर देते मगर सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका मज़्कूरा चारों सूरतों की ह़ुरमत पर दलालत करती हैं और इस पर किसी ने ए'तिराज़ किया न ही इस में किसी का इख़्तिलाफ़ है, इसी लिये फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के क़ौल के ख़िलाफ़ इज्माअ़ कर लिया क्यूं कि उन्हों ने अपने क़ौल से रुजूअ़ कर लिया था, चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब उन से कहा : "क्या आप उस वक़्त ह़ाज़िर थे जब हम ह़ाज़िर न थे ? क्या आप ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से वोह बातें सुनीं जो हम ने न सुनीं ?" फिर उन के सामने रिबा की तमाम सूरतों की ह़ुरमत से मु-तअ़ल्लिक़ सरीह़ ह़दीस बयान कर के कहा : "आप जब तक इस मौक़िफ़ पर क़ाइम रहेंगे हम एक दूसरे को घर के साए में पनाह नहीं देंगे।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (अपने मौक़िफ़ से) रुजूअ़ फ़रमा लिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हम ह़ज़रते सय्यिदुना इक्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर पर थे कि उन में से एक शख़्स ने पूछा : "क्या आप को याद है कि हम फ़ुलां शख़्स के घर पर थे और हमारे साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا भी थे और उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया था : "मैं बैए़ सर्फ़[1] को अपनी राय से ह़लाल समझता था फिर मुझे ख़बर मिली कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे ह़राम फ़रमाया है, पस गवाह हो जाओ कि मैं इसे ह़राम कहता हूं और इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।"

---

1 : (बैए़ सर्फ़ येह है कि) समन को समन के बदले बेचना। (बैए़) सर्फ़ में कभी **जिन्स का जिन्स से तबादुला** होता है जैसे रुपिये से चांदी ख़रीदना या चांदी की रेज़गारियां (सिक्के के हिस्से या'नी **अठन्नी, चवन्नी** वग़ैरा) ख़रीदना, सोने को अशरफ़ी से ख़रीदना। और कभी **ग़ैर जिन्स से तबादुला** होता है जैसे रुपै से सोना या अशरफ़ी ख़रीदना। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 11, स. 121)

बैए़ सर्फ़ के जाइज़ होने की सूरतें :

अह़नाफ़ के नज़्दीक : बैए़ सर्फ़ चन्द शराइत़ के साथ जाइज़ है, चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के कलाम का ख़ुलासा येह है :

(1)...... **दोनों त़रफ़ एक ही जिन्स** (म-सलन चांदी के बदले चांदी या सोने के बदले सोना) है तो शर्त़ येह है कि दोनों वज़्न में बराबर हों और इसी मजलिस में दस्त ब दस्त क़ब्ज़ा हो या'नी हर एक दूसरे की चीज़ अपने फ़े'ल से क़ब्ज़े में लाए, अगर आ़क़िदीन ने हाथ से क़ब्ज़ा नहीं किया बल्कि फ़र्ज़ करो अ़क़्द के बा'द वहां अपनी चीज़ रख दी और उस की चीज़ ले कर चला आया येह काफ़ी नहीं है और इस त़रह़ करने से बैअ़ ना जाइज़ हो गई बल्कि सूद हुवा। (**बक़िय्या अगले सफ़ह़ा पर.....**)

www.dawateislami.net

सूद की हुरमत ज़ाहिर करने वाले उमूर :

फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने सूद की हुरमत को इस की हर नौअ़ में ज़ाहिर करने वाले बहुत से वोह उमूर बयान किये हैं जिन्हें क़बूल किये बिग़ैर कोई चारा नहीं इस लिये मैं ने अपने मा क़ब्ल कलाम में बयान किया था कि इस में से बा'ज़ की हुरमत में क़ियास को दख़्ल नहीं, इन में से चन्द उमूर येह हैं :

(1)...... जब एक दिरहम को दो दिरहमों से नक़्द या उधार बेचे तो पहले दिरहम में वोह बिग़ैर किसी इवज़ के ज़ियादती को लेगा जब कि मुसल्मान के माल की हुरमत भी इस के ख़ून की हुरमत की त़रह़ है, इसी त़रह़ येही मुआ़-मला दूसरे दिरहम में है, क्यूं कि ज़ाइद दिरहम को ले कर नफ़्अ़ ह़ासिल करना एक वह्म में डालने वाला अम्र है।

(2)...... अगर रिबा अल फ़ज़्ल जाइज़ होता तो तमाम कारोबारे तिजारत बात़िल हो कर रह जाते क्यूं कि जब दो दिरहम एक दिरहम के बदले में ह़ासिल हो रहे हों तो क्यूंकर कोई मेह़नतो मशक़्क़त करेगा, पस जब कारोबारे तिजारत ही न होगा तो मख़्लूक़ के मफ़ादात ही ख़त्म हो जाएंगे इस लिये कि सारी दुन्या का इन्तिज़ाम व इन्सिराम इसी तिजारत और सन्अ़त व ह़िरफ़त पर ही तो है।

(3)...... सूद, क़र्ज़ देने की नेकी और एह़सान जैसे दरवाज़े को बन्द कर देगा क्यूं कि जब एक दिरहम के बदले दो दिरहम मिल रहे हों तो फिर कोई भी एक दिरहम के बदले में एक ही दिरहम लेना क़त़्अ़न गवारा न करेगा।

(4)...... आ़म त़ौर पर क़र्ज़ ख़्वाह अमीर व ग़नी और मक़रूज़ तंगदस्त व फ़क़ीर होता है, अब अगर ग़नी को क़र्ज़ से ज़ियादा लेने की इजाज़त दी जाए तो येह फ़क़ीर के लिये ज़ियादा तक्लीफ़ देह है। और वोह (सूद लेने वाला) **अल्लाह** रह़मान व रह़ीम की रह़मत व बख़्शिश को भी न पा सकेगा।

(...... बक़िय्या ह़ाशिया)

(2)...... इत्तिह़ादे जिन्स की सूरत में खरे खोटे होने का कुछ लिह़ाज़ न होगा या'नी येह नहीं हो सकता कि जिधर खरा माल है उधर कम हो और जिधर खोटा हो ज़ियादा हो कि इस सूरत में कमी बेशी सूद है।

(3)...... इस का भी लिह़ाज़ नहीं होगा कि एक में सन्अ़त है और दूसरा चांदी का ढेला है या एक सिक्का है दूसरा वैसा ही है अगर इन इख़्तिलाफ़ की वजह से कमो बेश किया तो **ह़राम व सूद** है।

(4)...... **अगर दोनों जानिब एक जिन्स न हो** बल्कि मुख़्तलिफ़ जिन्सें हो (म-सलन रुपै के बदले सोना या अशरफ़ी हो) तो कमी बेशी में कोई ह़रज नहीं मगर तक़ाबुज़े बदलैन ज़रूरी है अगर तक़ाबुज़े बदलैन से क़ब्ल मजलिस बदल गई तो **बैअ़ बात़िल** हो गई।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 2, हिस्सा : 11, स. 121, 122)

www.dawateislami.net

सूद की मज़म्मत पर नाज़िल शुदा आयत की वज़ाहत

《1》 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا یَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا یَقُوْمُ الَّذِیْ یَتَخَبَّطُهُ الشَّیْطٰنُ مِنَ الْمَسِّؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَیْعُ مِثْلُ الرِّبٰواۘ وَ اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَیْعَ وَ حَرَّمَ الرِّبٰواؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَؕ وَ اَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِؕ وَ مَنْ عَادَ فَاُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ یَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَ یُرْبِی الصَّدَقٰتِؕ وَ اللّٰهُ لَا یُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِیْمٍ ۝ (پ۳،البقرۃ:۲۷۵تا۲۷۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है और अल्लाह ने ह़लाल किया बैअ़ को और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है और जो अब ऐसी ह़-र-कत करेगा तो वोह दोज़ख़ी है वोह इस में मुद्दतों रहेंगे अल्लाह हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को और अल्लाह को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्रा बड़ा गुनहगार ।

वज़ाह़त :

اَلَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا یَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا یَقُوْمُ الَّذِیْ یَتَخَبَّطُهُ الشَّیْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ

या'नी सूदख़ोर उस शख़्स की त़रह़ खड़े होंगे जिस को शैत़ान ने छू कर मज्नून बना दिया हो, पस जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन लोगों को दोबारा ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाएगा तो तमाम लोग अपनी क़ब्रों से जल्दी जल्दी निकलेंगे सिवाए सूदख़ोरों के, वोह जब भी खड़े होंगे तो अपने मूंहों, पीठों और पहलूओं के बल गिर पड़ेंगे जैसे कोई पागल व दीवाना शख़्स होता है, इस की वजह येह है कि जब दुन्या में मक्रो फ़रेब और ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم से मुख़ा-लफ़त मोल ले कर ह़राम व सूद से पेट भरते रहे तो वोह उन के पेटों में बढ़ता रहा और उस वक़्त इस क़दर ज़ियादा हो चुका होगा कि उस के बोझ से लोगों के साथ खड़े होने के भी क़ाबिल न रहेंगे, पस जब भी लोगों के साथ मिल कर तेज़ी से चलना चाहेंगे तो औंधे मुंह गिर पड़ेंगे और दोबारा पीछे रह जाएंगे ।

येह भी एक मुसल्लमा बात है कि जब भी वोह गिरेंगे तो एक आग उन्हें मैदाने मह़शर की

www.dawateislami.net

जानिब हांकेगी और इस त़रह़ भी उन के अ़ज़ाब में मज़ीद इज़ाफ़ा होगा, इस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर दो बहुत बड़े अ़ज़ाब मुसल्लत़ फ़रमा देगा या'नी एक अ़ज़ाब तो उन का चलने में बार बार गिरना और दूसरा आग की तपिश और लपटों का उन को हंकाना यहां तक कि वोह मैदाने मह़शर में पहुंचेंगे तो अपनी लड़-खड़ाहट और जुनूनी कैफ़िय्यत की बिना पर वहां मौजूद तमाम अफ़राद के दरमियान (सूदख़ोर होने की ह़ैसिय्यत से) पहचाने जाएंगे, जैसा कि,

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "सूदख़ोर को क़ियामत के दिन जुनून की ह़ालत में उठाया जाएगा कि उस के सूद खाने के बारे में सब अहले मह़शर जान लेंगे।"

(كتاب الكبائر للذهبی،الكبيرة الثانية عشرة،باب الرياء،ص٦٨)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मुझे आस्मान की त़रफ़ ले जाया गया तो मैं ने आस्माने दुन्या की त़रफ़ देखा, अचानक मुझे ऐसे लोग दिखाई दिये जिन के पेट बड़े बड़े घरों की त़रह़ थे और उन की तोंदें लटकी हुई थीं, वोह उन फ़िरऔ़नियों की गुज़र गाह पर पड़े हुए थे जो सुब्ह़ व शाम आग पर पेश किये जाते हैं।" मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "वोह मुत़ीअ़ ऊंटों की त़रह़ बिग़ैर सुने समझे आगे बढ़े तो येह (बड़े) पेटों वाले उन को मह़सूस कर के खड़े हुए लेकिन अपने पेटों की वजह से दोबारा गिर गए और वहां से न उठ पाए यहां तक कि आले फ़िरऔ़न उन पर छा गए और औंधे, सीधे पड़े हुए उन लोगों को अज़िय्यत देते हुए (जहन्नम में) चले गए, येह तो सूदख़ोरों का बरज़ख़ में अ़ज़ाब है जो दुन्या व आख़िरत के दरमियान है।" शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं, मैं ने जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) से दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने बताया : "येह वोह लोग हैं जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ (या'नी पागल) बना दिया हो।"

(الترغيب والترهيب،كتاب البيوع،باب ، الترهيب من الربا،الحديث:٢٨٩١،ج٢،ص٤٠٧،بدون"فيقبلون"الٰی"مدبرين")

﴾3﴿...... एक और रिवायत में है कि दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मुझे मे'राज कराई गई तो मैं ने सातवें आस्मान पर अपने सर के ऊपर बादलों की सी गरज और बिजली की सी कड़क सुनी और ऐसे लोग देखे जिन के पेट घरों की त़रह़ (बड़े बड़े) थे उन में सांप और बिच्छू बाहर से नज़र आ रहे थे, मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने बताया : "येह सूदख़ोर हैं।" (مجمع الزوائد،كتاب البيوع ، باب ماجاء فی الربا ، الحديث: ٦٥٧٧ ، ج٤ ، ص ٢١١،بتغیر)

इन दोनों अह़ादीसे मुबा-रका का इस ह़दीसे पाक के साथ ही तज़्किरा आगे भी होगा।

www.dawateislami.net

﴾4﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "उन गुनाहों से बचो जिन की मग़्फ़िरत नहीं होगी : (1) धोका देही, पस जिस ने किसी शै से धोका दिया तो क़ियामत के दिन वोह चीज़ लाई जाएगी और (2) सूदख़ोरी, पस जिस ने भी सूद खाया उसे क़ियामत के दिन जुनून की ह़ालत में उठाया जाएगा।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़्कूरा आयते करीमा तिलावत फ़रमाई। (المعجم الكبير، الحديث: ١١٠، ج١٨، ص ٦٠)

﴾5﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सूदख़ोर क़ियामत के दिन जुनून की ह़ालत में अपनी दोनों सुरीनों को घसीटते हुए आएगा।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़्कूरा आयते करीमा तिलावत फ़रमाई।

(الترغيب والترهيب، كتاب البيوع، باب الترهيب من الربا، الحديث: ٢٨٩٤، ج٢، ص ٤٠٨)

किताबुस्सलाह की इब्तिदा में एक ह़दीसे पाक गुज़री थी कि "सूदख़ोर को मरने से ले कर क़ियामत तक इस अ़ज़ाब में मुब्तला रखा जाएगा कि वोह ख़ून की त़रह़ सुर्ख़ नह्र में तैरता रहेगा और पथ्थर खाता रहेगा, जब भी उस के मुंह में पथ्थर डाल दिया जाएगा तो वोह फिर नह्र में तैरने लगेगा फिर वापस आएगा और पथ्थर खा कर लौट जाएगा यहां तक कि दोबारा ज़िन्दगी मिलने तक इसी त़रह़ रहेगा। वोह पथ्थर उस ह़राम माल की मिसाल है जो उस ने दुन्या में जम्अ़ किया, पस वोह उस आग के पथ्थर को निगलता रहेगा और अ़ज़ाब में मुब्तला रहेगा।" इस के इ़लावा भी अ़ज़ाब की कई अन्वाअ़ उस के लिये तय्यार की गई हैं जिन का तज़्किरा अ़न्क़रीब होगा।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا

उन के इस शदीद अ़ज़ाब की वजह येह है कि उन्हों ने सूद को बैअ़ की त़रह़ ह़लाल जाना और इस ग़लत़ ए'तिक़ाद की वजह येह थी कि उन्हों ने ख़याल किया कि जिस त़रह़ वोह कोई चीज़ 10 दिरहम में ख़रीद कर 11 दिरहम में फ़रोख़्त करते हैं ख़्वाह उधार दें या नक़्द, इस त़रह़ 10 दिरहम की 11 दिरहम के इ़वज़ उधार या नक़्द बैअ़ भी जाइज़ ही होगी क्यूं कि अ़क़्लन जब जानिबैन राज़ी हों तो इन दोनों सूरतों में कोई फ़र्क़ नहीं, लेकिन वोह इस बात से ग़ाफ़िल हो गए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये कुछ हुदूद मुक़र्रर फ़रमा रखी हैं और हमें इन से तजावुज़ करने से मन्अ़ फ़रमाया है, पस हम पर लाज़िम है कि हम इन हुदूद की पासदारी करें और इन्हें अपनी राय और अ़क़्ल के तराज़ू में न परखें (या'नी न तोलें), बल्कि इन को हर सूरत में क़बूल कर लें ख़्वाह हमारी अ़क़्ल में आएं या न आएं, और हमारे लिये मुनासिब हों या न हों, क्यूं कि येही उ़बूदिय्यत व बन्दगी का मर्तबा और शान है।

कमज़ोर व ना तुवां, और फ़हमो फ़िरासत से क़ासिर बन्दे पर लाज़िम है कि अपने क़ादिर व

www.dawateislami.net

क़वी, अ़लीम व ह़कीम, रह़मान व रह़ीम और जब्बार व अ़ज़ीज़ मौला के अह़काम के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दे, क्यूं कि जब भी इस ने अपनी अ़क़्ल के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया और अपने मालिक के हुक्म से रू गरदानी की तो उस (मालिकुल मुल्क) ने अपने शदीद अ़ज़ाब से इस को हलाकतो बरबादी के अ़मीक़ गढ़े में फेंक दिया। चुनान्चे,

﴾1﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ بَطْشَ رَبِّکَ لَشَدِیْدٌO (پ۳۰،البروج:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तेरे रब की गिरिफ़्त बहुत सख़्त है।

﴾2﴿

اِنَّ رَبَّکَ لَبِالْمِرْصَادِO (پ۳۰،الفجر:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ाइब नहीं।

فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ

या'नी जिस के पास उस के रब عَزَّوَجَلَّ की कोई नसीह़त आए और इस के बा'द फ़ौरन सूद लेने से बाज़ आ जाए तो हुरमत का हुक्म नाज़िल होने से क़ब्ल जो उस ने सूद लिया था वोह उस के लिये जाइज़ होगा क्यूं कि उस वक़्त वोह इस हुक्म का मुकल्लफ़ नहीं था जब कि आयते हुरमत के नुज़ूल के बा'द इस को लेना जाइज़ नहीं, पस जिस ने तौबा कर ली उस पर लाज़िम है कि वोह लिया हुवा तमाम सूद वापस कर दे, अगर्चे येह भी फ़र्ज़ कर लिया जाए कि उसे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से दूरी की वजह से सूद के ह़राम होने का इ़ल्म न हो सका था तब भी उस पर लाज़िम है कि लिया हुवा तमाम सूद वापस कर दे क्यूं कि उस ने येह सूद उस वक़्त लिया था जब वोह इस हुक्म का मुकल्लफ़ था और ना वाक़िफ़िय्यत का उ़ज़्र उस के गुनाहगार होने में अगर्चे मुअस्सिर न भी हो लेकिन माली हुक़ूक़ में वोह ज़रूर मुअस्सिर होता है। और बाक़ी रहा उस के गुज़श्ता सूद का मुआ-मला तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है, या फिर सूद से बाज़ आ जाने का या सूद के क़ाबिले मुआफ़ी या ना क़ाबिले मुआफ़ी होने का मुआ-मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है, इस की तौजीहात के बारे में मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की कई एक आरा हैं,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस सूरत को मैं ने इख़्तियार किया है वोह येह है कि येह हुक्म (وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ) उस शख़्स के साथ ख़ास है जो सूद के खाने या न खाने की वज़ाह़त किये बिग़ैर इसे ह़लाल न समझे।"

मगर आयत के आख़िरी अल्फ़ाज़ (وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَO) से येह साबित होता है कि मज़्कूरा हुक्म उस के साथ ख़ास है जो सूद तो ले मगर इसे ह़लाल न जाने। और पहली सूरत पर आयते मुबा-रका का लफ़्ज़ "فانتهى" दलालत करता है या'नी वोह येह कहने से बाज़ आ जाए कि "बैअ़ भी तो सूद ही की त़रह़ है।"

www.dawateislami.net

وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِکَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

या'नी अगर वोह अपने उसी साबिक़ा क़ौल "या'नी बैअ़ भी तो सूद की त़रह़ है।" की जानिब लौटा, लेकिन सूद को ह़लाल न ख़याल किया बल्कि ह़राम ही जाना तो अब इस की दो सूरतें होंगी : (1) वोह सूद खाने से भी रुक जाएगा ह़ालां कि यहां येह मुराद नहीं क्यूं कि "وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ" का फ़रमान इस के लाइक़ नहीं, बल्कि इस के लाइक़ मह़्ज़ मद्ह़ व ता'रीफ़ है और (2) अगर सूद खाने से तो बाज़ न आए लेकिन इसे ह़राम ज़रूर जाने तो यहां इस आयए मुबा-रका से येही मुराद है क्यूं कि अब इस का मुआ़-मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है अगर वोह चाहे तो उसे सज़ा दे और अगर चाहे तो मुआ़फ़ फ़रमा दे, जैसा कि उस का फ़रमाने आ़लीशान भी है :

وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِکَ لِمَنْ يَّشَآءُ ج (پ۴،النساء:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूदख़ोरों के मुआ़-मले को उन के मक़्सूद के बर अ़क्स मलिया मैट कर देगा, चूंकि उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी और ग़ज़ब की परवाह न करते हुए माल की ज़ियादती को तरजीह़ दी पस वोह न सिर्फ़ इस ज़ियादती बल्कि अस्ल माल को भी ख़त्म कर देगा यहां तक कि उन का अन्जाम इन्तिहाई फ़क्र हो जाएगा, जैसा कि अक्सर सूदख़ोरों का मुशा-हदा भी किया गया है, अगर फ़र्ज़ कर लें कि वोह इसी धोका में मुब्तला हो कर इस दारे फ़ानी से चल बसा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के वारिसों के हाथों उस का माल तबाहो बरबाद कर देगा पस थोड़ी ही मुद्दत के बा'द इन्तिहाई फ़क्र और ज़िल्लतो रुस्वाई उस का मुक़द्दर बन जाएगी।

सूद का अन्जाम कमी पर होता है :

﴿6﴾...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "(ब ज़ाहिर) सूद अगर्चे ज़ियादा ही हो आख़िरे कार इस का अन्जाम कमी पर होता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن مسعود، الحديث: ۴۰۲۶، ج۲،ص ۱۰۹)

इसी हलाकतो बरबादी में से येह भी है कि,

(1)...... इस पर मज़म्मत, बुग़्ज़ और अ़दालत व अमानत के ज़वाल के अह़काम मुरत्तब होते हैं,

(2)...... इस का नाम फ़ासिक़, तंग दिल और दुरुश्त रख दिया जाता है,

(3)...... जिस का माल इस ने ज़ुल्मन लिया हो उस की बद दुआ़ओं से ला'नत का ह़क़दार ठहरता है,

www.dawateislami.net

येही वोह सबब है जो इस की जान और माल से ख़ैरो ब-र-कत के ख़ातिमे का बाइस बनता है क्यूं कि मज़्लूम की दुआ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई हिजाब नहीं होता। चुनान्चे,

﴾7﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि जब मज़्लूम ज़ालिम के लिये बद दुआ करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस मज़्लूम से इर्शाद फ़रमाता है: "मैं तेरी ज़रूर मदद फ़रमाऊंगा अगर्चे कुछ मुद्दत बा'द ही हो।"

(4)...... जो सूद का माल जम्अ़ करने में मशहूर हो तो कई एक मसाइब उस का रुख़ कर लेते हैं म-सलन चोर, डाकू वग़ैरा गुमान करते हैं कि ह़क़ीक़तन माल इस का नहीं (लिहाज़ा चोरी कर लेते हैं)।

आख़िरत में तबाही व बरबादी, सूदख़ोर का मुक़द्दर :

बयान कर्दा सब हलाकतें वोह हैं जिन का दुन्या ही में सूदख़ोर को सामना करना होगा जब कि आख़िरत की तबाही व बरबादी येह है :

﴾8﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है : "उस का न स-दक़ा क़बूल किया जाएगा, न जिहाद, न ह़ज और न ही सिलए रेह़मी।"

(تفسير قرطبى،سورة البقرة،تحت الآية:٢٧٦،ج٢،ص٢٧٤)

इस के इलावा वोह मरेगा तो अपना सब माल व अस्बाब पीछे छोड़ जाएगा लिहाज़ा इस के सबब उस पर अपना और अपने पैरौकारों का भी वबाल और अ़ज़ाबे अलीम होगा, इसी लिये मन्क़ूल है कि,

﴾9﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दो मुसीबतें ऐसी हैं कि कोई भी इन की मिस्ल से दो चार न होगा : तमाम का तमाम माल छोड़ना और फिर इस पर सज़ा भी पाना।"

नीज़ सह़ीह़ ह़दीस में है कि "अग़्निया जन्नत में फ़ु-क़रा से 500 साल बा'द दाख़िल होंगे।"

(فيض القدير،حرف الهمزة ،تحت الحديث:٢، ج١، ص ٥٢)

तो जब माले ह़लाल की वजह से अग़्निया की येह ह़ालत होगी तो जिन का कारोबार ही ह़राम हो उन का क्या ह़ाल होगा ?

अल मुख़्तसर येह कि येह सब वोह हलाकतें, बरबादियां, नुक़्सान, घाटे और ज़िल्लतें हैं जिन का इसे सामना करना होगा।

وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ

या'नी फ़िरिश्ता दुन्या में उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से स-दक़ात की ज़ियादती का सुवाल करता है कि वोह इस ख़र्च करने वाले को अच्छा ने'मल बदल अ़ता फ़रमाए जैसा कि अह़ादीसे मुबा-रका में आया है कि,

www.dawateislami.net

《10》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कोई दिन ऐसा नहीं जिस में एक फ़िरिश्ता येह न पुकारता हो : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस ख़र्च करने वाले को अच्छा ने'मल बदल अ़ता फ़रमा।" (كشف الخفاء، حرف الهمزة مع اللام، الحديث: ٥٤٩، ج١، ص ١٦٧)

इसी त़रह़ हर रोज़ उस का मर्तबा और ज़िक्रे जमील ज़ियादा होता जाता है, दिल उस की जानिब माइल होते हैं, फु-क़रा के दिलों से उस के लिये ख़ालिस दुआ़ निकलती है, इस से लोगों की ह़िर्स और त़मअ़ ख़त्म हो जाती है, जब वोह फु-क़रा व मसाकीन के मुआ़-मलात की देखभाल में मश्हूर हो जाए तो हर एक उसे तक्लीफ़ पहुंचाने से गुरेज़ करता है, नीज़ हर लालची और ज़ालिम इन्सान भी उस का सामना करते हुए डरता है, और आख़िरत में येह सब कुछ बढ़ कर इस क़दर हो चुका होगा कि एक लुक़्मा भी पहाड़ों की मिस्ल होगा जैसा कि साबिक़ा ज़कात के बाब में बयान होने वाली अह़ादीसे मुबा-रका में गुज़रा है।

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ

इस आयते मुबा-रका में कुफ़्फ़ार और असीम दोनों मुबा-लग़ा के सीग़े हैं जिन में सूद को ह़लाल जानने वाले और सूद खाने वाले का इन दोनों पर इस्तिम्रार पाया जा रहा है, इन दोनों अफ़राद का अपने अफ़्आ़ल से रुजूअ़ करना मुम्किन है जैसा कि मरवी है कि

《11》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने नमाज़ या ह़ज तर्क किया उस ने कुफ़्र किया, जिस ने अपनी बीवी से हैज़ की ह़ालत में वत़ी की उस ने कुफ़्र किया और जिस ने उस की दुबुर (या'नी पिछले मक़ाम) में वत़ी की उस ने भी कुफ़्र किया।"

ह़दीसे पाक का मफ़्हूम :

इस (ह़दीस) से मुराद येह है कि वोह कुफ़्र के क़रीब करने वाले आ'माल हैं कि अगर इन आ'माले ख़बीसा को बजा लाता रहा तो एक दिन येही उस के कुफ़्र और बुरे ख़ातिमे का बाइ़स बनेंगे, यहां इस मुबा-लग़ा में बहुत ज़ियादा डराना मक़्सूद है।

《2》 फ़रमाने बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो अल्लाह और अल्लाह के रसूल से लड़ाई का और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ न तुम्हें नुक़्सान हो और

www.dawateislami.net

لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ قف ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ○ (پ٣،البقرة،٢٧٨تا٢٨١)

अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर जानो और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

आयते मुबा-रका की वज़ाह़त :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوا

क़ुरआने करीम का उस्लूब है कि तरहीब (या'नी डराने) के बा'द तरग़ीब होती है या फिर कभी इस के बर अ़क्स होता है लिहाज़ा यहां भी इस के अन्जाम से नसीह़त दिलाते हुए, मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार के मक़ाम व मर्तबा को एक आ़सी व गुनाहगार से मुम्ताज़ करते हुए, नीज़ इस पर उन की ता'रीफ़ व मज़म्मत में मुबा-लग़ा करते हुए तरहीब के बा'द तरग़ीब का ज़िक्र हो रहा है कि ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और सूद की बक़िय्या रक़म को मक़रूज़ों से वुसूल न करो, और इस से क़ब्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान فَلَهٗ مَا سَلَفَ से वाज़ेह़ कर दिया है कि ह़ुरमते सूद का ह़ुक्म नाज़िल होने से पहले जो सूद वुसूल किया गया वोह ह़राम नहीं सिवाए इस के कि जो सूद ह़ुरमत का ह़ुक्म नाज़िल होने के बा'द वुसूल किया गया क्यूं कि वोह ह़राम है अब उस शख़्स के लिये अपने अस्ल माल से ज़ाइद माल लेना जाइज़ नहीं इस वजह से अब नुज़ूले ह़ुक्म के बा'द मुकल्लफ़ होने की बिना पर उस पर ऐसा करना ह़राम होगा।

इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल येह है कि अहले मक्का तमाम या चन्द एक और अहले त़ाइफ़ के चन्द अफ़राद सूदी लैन दैन किया करते थे लिहाज़ा जब वोह फ़त्ह़े मक्का के वक़्त मुसल्मान हुए तो इस सूद में उन का आपस में झगड़ा हो गया जिस पर उन्हों ने अभी तक क़ब्ज़ा नहीं किया था तो येह आयते मुबा-रका इस बात का ह़ुक्म ले कर उतरी कि वोह सिर्फ़ अपने अस्ल अम्वाल ही वापस लेंगे इस से ज़ाइद कुछ वुसूल नहीं करेंगे।

﴾12﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ह़िज्जतुल वदाअ़ के ख़ुत़्बे में इर्शाद फ़रमाया : **"ख़बरदार, जान लो !** ज़मानए जाहिलिय्यत का हर मुआ़-मला मेरे क़दमों तले ख़त्म कर दिया गया है।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "जाहिलिय्यत का सूद भी ख़त्म कर दिया गया है और सब से पहला सूद जिस को मैं ख़त्म कर रहा हूं वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का सूद है।"

(صحيح المسلم، كتاب الحج، باب حجة النبى ﷺ، الحديث: ٢٩٥٠، ص ٨٨١)

www.dawateislami.net

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ 0 فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

या'नी अगर तुम ईमान वाले हो तो सूदी कारोबार से बाज़ आ जाओ और अगर इस से न रुके तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ए'लाने जंग कर दो, और जिस ने भी ऐसा किया तो वोह कभी भी काम्याब नहीं हो सकेगा।

इस ह़र्ब से मुराद या तो दुन्यवी जंग है या फिर उख़्रवी जंग।

दुन्यवी जंग से मुराद येह है कि शरीअ़त नाफ़िज़ करने वाले हुक्काम पर लाज़िम है कि जब उन्हें किसी के बारे में सूद लेने का पता चले तो उसे क़ैद कर दें यहां तक कि वोह तौबा कर ले, लेकिन अगर सूदख़ोर साहिबे हैसिय्यत और ज़ी ह़शम हो कि तुम उस पर जंग किये बिग़ैर क़ुदरत ह़ासिल नहीं कर सकते तो उसी त़रह़ जंग करो जैसे (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मानिईने ज़कात के साथ की थी।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का फ़रमान है : "जो सूदी कारोबार में मुलव्वस हो उस पर तौबा पेश की जाए अगर तौबा कर ले तो अच्छी बात है वरना उस का सर तन से जुदा कर दिया जाए।"

आयते मुबा-रका में जंग करने का येह हुक्म दो चीज़ों का एह़तिमाल रखता है कि या तो मुत़्लक़न जो भी सूद ले उस के साथ जंग की जाए या फिर सिर्फ़ उस के साथ जो इसे ह़लाल और जाइज़ समझ कर ले, एक क़ौल येह मरवी है कि "ए'लाने जंग सूद को जाइज़ समझने वाले से है।" जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस से भी और दूसरों से भी है, लेकिन आयते करीमा की तरतीब के लिह़ाज़ से मुनासिब पहला क़ौल है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान का मफ़्हूम है कि "अगर तुम सूद की हुरमत पर ईमान रखते हो तो उसे छोड़ दो जो बाक़ी है, और अगर ईमान नहीं रखते तो ए'लाने जंग कर दो।"

उख़्रवी जंग से मुराद येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ख़ातिमा बुराई पर फ़रमाएगा, क्यूं कि जिस ने भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जंग की तो उस का ख़ातिमा बिलख़ैर किस त़रह़ हो सकता है? नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करना दर ह़क़ीक़त उस की रह़मत के मक़ामात से दूरी और बद बख़्ती की अथाह गहराइयों में गिरना है।

وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ

या'नी अगर तुम सूद की ह़िल्लत के पहले क़ौल से तौबा कर लो या दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़ अ़मल से तौबा कर लो तो तुम्हारे लिये सिर्फ़ अस्ल माल लेना जाइज़ है ताकि इस अस्ल माल पर मक़रूज़ से ज़ियादा माल ले कर न तो उस पर तुम ज़ुल्म करो और न ही तुम्हारे अस्ल माल में कमी कर के तुम पर कोई ज़ुल्म किया जाएगा।

www.dawateislami.net

जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो सूद का तक़ाज़ा करने वालों ने येह कहते हुए तौबा कर ली कि "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करते हैं क्यूं कि हम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने की कोई ताक़त नहीं।" लिहाज़ा वोह अपने अस्ल माल लेने पर ही राज़ी हो गए और जब उन के मुता-लबे की वजह से मक़रूज़ों ने तंगदस्ती का शिक्वा किया तो उन्हों ने सब्र करने से इन्कार कर दिया। इस के बा'द येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ

या'नी अगर तुम्हारा मक़रूज़ तंगदस्त हो तो तुम पर लाज़िम है कि उसे कुशा-दगी तक मोहलत दो, इसी त़रह़ तंगदस्त को हर क़िस्म के क़र्ज़ में मोहलत देना वाजिब है।[1] लेकिन येह ख़ास सबब से नहीं बल्कि मज़्कूरा (आयए मुबा-रका के) अल्फ़ाज़ के उ़मूम से इस्तिद्लाल है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ 0 وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ 0 (پ۴، آل عمران:۱۳۰۔۱۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! सूद दूना दून (दुगना) न खाओ और **अल्लाह** से डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह़ मिले और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तय्यार रखी है।

आयते मुबा-रका की वज़ाह़त :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوا

इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में अगर किसी का किसी पर मख़्सूस मुद्दत तक के लिये 100 दिरहम क़र्ज़ होता और मक़रूज़ तंगदस्ती की बिना पर अदा न कर सकता तो क़र्ज़ ख़्वाह उस मक़रूज़ से कहता : "मैं तुम्हारी अदाएगी की मुक़र्ररा मुद्दत में इज़ाफ़ा कर देता हूं तुम माल में इज़ाफ़ा कर दो।" इस त़रह़ बसा अवक़ात उस का माल 200 दिरहम हो जाता, और जब दूसरी मुक़र्ररा मुद्दत आती और मक़रूज़ दोबारा रक़म अदा न कर पाता तो वोह मज़ीद इन्ही शराइत़ पर मुद्दत बढ़ा देता यहां तक कि इस त़रीक़े से वोह कई मुद्दतों तक इज़ाफ़ा करता जाता और इस त़रह़ सेंकड़ों दिरहम उस मक़रूज़ से वुसूल कर लेता, पस इसी वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

---

1 : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नफ़्सीरे नईमी में "**अह़कामुल क़ुरआन**" के ह़वाले से फ़रमाते हैं : "मोहलत देना हर उस क़र्ज़ में वाजिब है जो माली कारोबार का हो जैसे तिजारती क़र्ज़, मगर दैन, महर, किफ़ाला, ह़वाला, सुल्ह़ के रुपिया पर मोहलत वाजिब नहीं।"

(तफ़्सीरे नईमी, सू-रतुल ब-क़रह, तह़तल आयह : 280, जि. 3, स. 167)

www.dawateislami.net

اَضْعَافاً مُّضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

या'नी सूद को छोड़ दो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो ताकि तुम फ़लाह़ व काम्याबी पा सको। इस आयते मुबा–रका में इस बात की जानिब इशारा पाया जा रहा है कि अगर इस सूदी रविश (या'नी ख़स्लत) को तर्क न किया तो कभी भी फ़लाह़ व काम्याबी ह़ासिल नहीं कर सकेंगे, इस का सबब वोही है जो गुज़श्ता आयते मुबा–रका में गुज़र चुका है या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बर सरे पैकार हो उस की फ़लाह़ व काम्याबी का तसव्वुर क्यूंकर किया जा सकता है? नीज़ इस आयते मुबा–रका में बुरे ख़ातिमे की जानिब भी इशारा मिलता है येही वजह है कि इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ0

या'नी उस आग से डरो जिस को काफ़िरों के लिये उन की ज़ात की वजह से और दूसरों के लिये काफ़िरों की पैरवी की वजह से तय्यार किया गया है, मुराद येह है कि जहन्नम की अक्सर घाटियां काफ़िरों के लिये तय्यार की गई हैं और येह इस बात के मुनाफ़ी नहीं कि गुनाहगार मोमिन इन में दाख़िल नहीं होंगे, बल्कि इसी आयते मुबा–रका में ही इस बात की जानिब इशारा है कि वोह मुसल्मान जो सूदी कारोबार से मुन्सलिक रहा तो वोह उस आग में कुफ़्फ़ार के साथ ही होगा जो कि मह़्ज़ उन्ही के लिये तय्यार की गई है, लिहाज़ा जब येह बात वाज़ेह़ और साबित हो गई कि येह सूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से खुली जंग है और बुरे ख़ातिमे का बाइस है :

فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ0 (پ١٨،النور:٦٣)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े।

पस ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस आग की सिफ़त बयान की है कि वोह काफ़िरों के लिये तय्यार की गई है, क्यूं कि इस में ह़द द–रजा वईद है इस लिये कि वोह मुअमिनीन जो गुनाहों से परहेज़ करने के मुख़ात़ब हैं जब उन्हें येह इ़ल्म होगा कि अगर उन्हों ने गुनाहों से बचने से रू गरदानी की तो उन्हें उस आग में डाल दिया जाएगा जो कि काफ़िरों के लिये तय्यार की गई है और इस त़रह़ उन के अज़्हान में कुफ़्फ़ार की सज़ा की ज़ियादती पुख़्ता होगी तो वोह गुनाहों से मुकम्मल त़ौर पर रुक जाएंगे।

नीज़ इस में भी ग़ौर करना चाहिये कि इन आयाते मुक़द्दसा में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सूदख़ोर की मज़म्मत में जो वईद ज़िक्र की है इस से राई के बराबर भी अ़क़्लो दानिश रखने वाला इन्सान इस गुनाह का क़बीह़ होना आसानी से जान लेगा। खुसूसन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और

www.dawateislami.net

उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से महाज़ आराई औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की दुश्मनी जैसे क़बीह़ गुनाह का बाइ़स बनती है, जब आप पर दुन्या व आख़िरत की हलाकतों का सबब बनने वाले इस गुनाह की ह़क़ीक़त आशकार हो चुकी है तो चाहिये कि आप इस से रुजूअ़ कर लें और अपने परवर्द गार عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में तौबा करें।

सूदख़ोरों के लिये इन आयाते मुक़द्दसा में जो उ़क़ूबतें और सज़ाएं बयान हुईं इन के इ़लावा कई अह़ादीसे मुबा-रका में इन्ही जैसा मज़्मून मिलता है, इस मज़्मून की तक्मील की ख़ात़िर उन्हें भी यहां ज़िक्र करना पसन्द करूंगा।

सूद की मज़म्मत पर अह़ादीसे मुबा-रका :

﴾13﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हलाकत में डालने वाले सात गुनाहों से बचते रहो।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन से गुनाह हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ह़राम कर्दा जान को नाह़क़ क़त्ल करना (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) जंग के दिन मैदाने जंग से भाग जाना और (7) पाक दामन, सीधी सादी, शादी शुदा, मोमिन औ़रतों पर तोहमत लगाना।"

(صحیح البخاری ،کتاب الوصایا ، باب قول الله تعالی(ان الذین یاکلون اموال الیتمی......الآیہ) الحدیث: ٢٧٦٦ ، ص ٢٢٣)

﴾14﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं ने शबे मे'राज देखा कि दो शख़्स मुझे अर्ज़े मुक़द्दस (या'नी बैतुल मुक़द्दस) ले गए, फिर हम आगे चल दिये यहां तक कि हम ख़ून की एक नह्र पर पहुंचे जिस में एक शख़्स खड़ा हुवा था, और नह्र के किनारे पर दूसरा शख़्स खड़ा था जिस के सामने पथ्थर रखे हुए थे, नह्र में मौजूद शख़्स जब भी बाहर निकलने का इरादा करता तो किनारे पर खड़ा शख़्स एक पथ्थर उस के मुंह पर मार कर उसे उस की जगह लौटा देता, इसी त़रह़ होता रहा कि जब भी वोह (नह्र वाला) शख़्स किनारे पर आने का इरादा करता तो दूसरा शख़्स उस के मुंह पर पथ्थर मार कर उसे वापस लौटा देता, मैं ने पूछा : "येह नह्र में कौन है ?" जवाब मिला : "येह सूद खाने वाला है।"

(صحیح البخاری ،کتاب البیوع ، باب آکل الربا وشاھدہ وکاتبہ ، الحدیث: ٢٠٨٥، ص ١٦٣)

﴾15﴿...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूद खाने वाले और खिलाने वाले पर ला'नत फ़रमाई।

(صحیح المسلم ،کتاب المساقاۃ ، باب لعن آکل الربا ومؤکلہ ، الحدیث: ٤٠٩٢، ص٩٥٥)

﴾16﴿...... दूसरी रिवायत में येह भी है : "और सूद के गवाहों और सूद लिखने वालों पर भी ला'नत फ़रमाई।"

(المرجع السابق، الحدیث: ٤٠٩٣، ص٩٥٥)

www.dawateislami.net

﴾17﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूद खाने वाले, खिलाने वाले, इसे लिखने वाले और गवाहों पर ला'नत फ़रमाई और फ़रमाया : "येह सब इस गुनाह में बराबर हैं।" (صحیح المسلم ،کتاب المساقاۃ ، باب لعن آکل الربا ومؤکلہ ، الحدیث: ۴۰۹۳، ص۹۵۵)

﴾18﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कबीरा गुनाह 7 हैं : (1) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शरीक ठहराना और येह इन सब से बड़ा गुनाह है (2) किसी जान को नाहक़ क़त्ल करना (3) सूद खाना (4) यतीम का माल खाना (5) जंग के दिन मैदान से भागना (6) पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना और (7) हिजरत के बा'द आ'राबी बन जाना (या'नी बद्दूओं जैसी ज़िन्दगी अपना लेना)।" (مجمع الزوائد،کتاب الایمان ،الباب فی الکبائر ، الحدیث: ۳۸۲ / ۳۹۰،ج۱،ص۲۹۱/۲۹۴)

﴾19﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने गूदने वाली, गूदवाने वाली, सूद लेने और देने वाले पर ला'नत फ़रमाई, कुत्ते की क़ीमत और ज़िना की कमाई खाने से मन्अ़ फ़रमाया और तस्वीरें बनाने वाले पर भी ला'नत फ़रमाई।

(المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث ابی جحیفۃ،الحدیث: ۱۸۷۸۱، ج۶، ص۴۵۶،"تقدمًاو تأخرًا")

﴾20﴿...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं : "सूद लेने वाले, सूद देने वाले, सूद के गवाह, सूद का काग़ज़ लिखने वाले जब कि सूद जान कर येह काम करते हों, इसी त़रह़ ख़ूब सूरती के लिये गूदने वाली, गूदवाने वाली, स-दक़ा न देने वाले और हिजरत के बा'द मुरतद हो कर आ'राबी बन जाने वाले लोगों पर (हज़रते सय्यिदुना) मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से ला'नत की गई है।"

(المسندللامام احمد بن حنبل ، مسند عبداللہ بن مسعود ، الحدیث: ۳۸۸۱، ج ۲،ص۷۸)

﴾21﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "4 अफ़राद ऐसे हैं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ न तो उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और न ही उस की ने'मतें चखाएगा : (1) शराब का आ़दी (2) सूदख़ोर (3) यतीम का माले नाहक़ खाने वाला और (4) वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाला।" (المستدرک،کتاب البیوع،باب ان اربی الرباعرض......الخ،الحدیث:۲۳۰۷،ج۲، ص۳۳۸-۳۳۹)

﴾22﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सूद का गुनाह 73 द-रजे है, इन में सब से छोटा येह है कि आदमी अपनी मां से ज़िना करे।"

(المستدرک،کتاب البیوع ، باب ان اربی الربا عرض الرجل المسلم ، الحدیث: ۲۳۰۶ ، ج۲ ، ص ۳۳۸)

﴾23﴿...... हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सूद का गुनाह 70 से ज़ाइद द-रजे है और शिर्क भी इसी त़रह़ है।"

(البحر الزخاربمسند البزار، مسند عبداللہ بن مسعود ،الحدیث: ۱۹۳۵،ج۵ ،ص ۳۱۸)

www.dawateislami.net

《24》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सूद का गुनाह **70** द-रजे है, इन में सब से कम येह है कि आदमी अपनी मां के साथ ज़िना करे।"

(شعب الایمان،باب فی قبض الید عن الاموال المحرمة،الحدیث: ٥٥٢٠،ج٤،ص٣٩٤)

《25》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी का सूद का एक दिरहम लेना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उस बन्दे के हा़लते इस्लाम में **33** मरतबा ज़िना करने से ज़ियादा बड़ा गुनाह है।" (مجمع الزوائد،کتاب البیو ع ، باب ماجاء فی الربا ،الحدیث: ٦٥٧٤،ج٤ ،ص ٢١١)

《26》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "सूद के **70** गुनाह हैं, सब से हलका इस्लाम की हा़लत में अपनी मां से ज़िना करना है और सूद का एक दिरहम **30** से ज़ियादा बार ज़िना करने से बुरा है।" मज़ीद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन सिवाए सूद खाने वाले के हर नेक और फ़ाजिर को खड़ा होने की इजाज़त देगा, वोह अगर खड़ा भी होगा तो उस शख़्स की त़रह़ खड़ा होगा जिसे आसेब ने छू कर पागल बना दिया हो।"

(المصنف عبدالرزاق،کتاب الجامع،باب الکبائر،الحدیث:١٩٨٧٦،ج١٠،ص٦٦)

《27》...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "**33** बार ज़िना करना मेरे नज़्दीक सूद का एक दिरहम खाने से बेहतर है जब मैं सूद खाऊं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है।" (المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث عبدالله بن حنظلة،الحدیث: ٢٢٠١٧ ،ج٨، ص ٢٢٣)

《28》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَل के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सूद का एक दिरहम जिसे आदमी जानते हुए खाता है **36** बार ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है।" (المرجع السابق،الحدیث: ٢٢٠١٦ ،ج٨، ص ٢٢٣)

《29》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया और सूद का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "सूद का एक दिरहम जो आदमी को मिलता है **36** बार उस के ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है और सब से बढ़ कर ज़ियादती किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना है।" (شعب الایمان،باب فی قبض الید عن الا موال المحرمة،الحدیث:٥٥٢٣،ج٤،ص٣٩٥)

《30》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने ज़ालिम शख़्स की बाति़ल काम में इआनत की ताकि ह़क़ को मिटाए तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे से बरी हो गया और जिस ने सूद का एक दिरहम खाया तो येह **33** बार ज़िना करने की त़रह़ है और जिस का गोश्त ह़राम से पला बढ़ा आग उस की ज़ियादा ह़क़दार है।"

(المعجم الاوسط ، الحدیث:٢٩٤٤ ، ج٢ ، ص ١٨٠)

《31》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

"बेशक सूद के **70** से ज़ाइद दरवाज़े हैं इन में सब से हलका इस त़रह़ है जैसे आदमी ह़ालते इस्लाम में अपनी मां से ज़िना करे और सूद का एक दिरहम **35** बार ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है।"

(الترغیب والترھیب ،کتاب البیوع وغیرھا ، باب الترھیب من الربا ،الحدیث: ٢٨٨٤ ، ج٢ ، ص٤٠٦)

《**32**》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक सूद का गुनाह **72** द-रजे है, इन में सब से हलका इस त़रह़ है जैसे आदमी अपनी मां से ज़िना करे और सब से बढ़ कर ज़ियादती किसी मुसल्मान की बे इ़ज़्ज़ती करना है।"

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع ، باب ماجاء فی الربا ، الحدیث: ٦٥٧٥،ج٤ ، ص ٢١١)

《**33**》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक सूद **70** गुनाहों का मज्मूआ़ है, इन में सब से हलका येह है कि आदमी अपनी मां से निकाह़ करे।"

(سنن ابن ماجۃ ،ابواب التجارات ، باب التغلیظ فی الربا ،الحدیث: ٢٢٧٤ ، ص٢٦١٣)

《**34**》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पकने से पहले खजूरें ख़रीदने से मन्अ़ फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : "जब किसी गाउं में ज़िना और सूद आ़म हो गए तो उन लोगों ने अपनी जानों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ कर दिया।"

(المستدرک،کتاب البیوع ، باب اذا ظھر الزنا والربافی قریۃ ......الخ ، الحدیث: ٢٣٠٨ ، ج٢ ، ص ٣٣٩)

《**35**》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब भी किसी क़ौम में ज़िना और सूद ज़ाहिर हुए तो उन लोगों ने अपनी जानों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब का ह़क़दार ठहरा लिया।" (مسندابی یعلیٰ الموصلی ، مسد عبداللہ بن مسعود ،الحدیث: ٤٩٦٠ ، ج٤ ، ص ٣١٤)

《**36**》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस क़ौम में भी सूद ज़ाहिर हुवा उन को क़ह़त़ साली ने आ लिया और जिस क़ौम में भी रिश्वत ज़ाहिर हुई वोह दुश्मन से मरऊ़ब हो गए।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث عمروبن العاص، الحدیث: ١٧٨٣٩، ج٦، ص ٢٤٥)

《**37**》...... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मैं ने मे'राज की रात देखा कि जब हम सातवें आस्मान पर पहुंचे तो मैं ने अपने ऊपर कड़क, चमक और गरज देखी, फिर मैं एक ऐसी क़ौम के पास आया जिन के पेट घरों की त़रह़ थे जिन में सांप थे जो पेटों के बाहर से नज़र आ रहे थे, मैं ने जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) से दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह कौन हैं ?" तो उन्हों ने बताया : "येह सूद खाने वाले हैं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند ابی ھریرۃ، الحدیث: ٨٦٤٨، ج٣ ، ص ٢٦٩،"قواصف" بدلہ"صواعق")

www.dawateislami.net

﴾38﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खु़दरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब मुझे आस्मान की त़रफ़ ले जाया गया तो मैं ने आस्माने दुन्या की त़रफ़ देखा, अचानक मुझे ऐसे लोग दिखाई दिये जिन के पेट बड़े बड़े घरों की त़रह़ थे और उन की तोंदें लटकी हुई थीं, वोह उन फ़िरऔनियों की गुज़र गाह पर पड़े हुए थे जो सुब्ह़ व शाम आग पर पेश किये जाते हैं, वोह कहते हैं : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! क़ियामत कभी क़ाइम न करना ।'' मैं ने जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) से पूछा : ''येह कौन हैं ?'' तो उन्हों ने बताया : ''येह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में से सूद खाने वाले हैं, येह खड़े नहीं हो सकते मगर जैसे वोह खड़ा होता है जिसे आसेब ने छू कर पागल बना दिया हो ।''

(الترغیب والترھیب، کتاب البیوع ، باب الترھیب من الربا......الخ ،الحدیث: ۲۸۹۱ ، ج۲ ،ص ۴۰۷)

﴾39﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के क़रीब ज़िना, सूद और शराब आ़म हो जाएंगे ।''

(المعجم الاوسط ، الحدیث: ۷۶۹۵، ج۵ ، ص ۳۸۶)

﴾40﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सिक्के बनाने वालों के बाज़ार में देखा, आप फ़रमा रहे थे : ''ऐ सिक्के बनाने वालो ! तुम्हें खु़श ख़बरी हो ।'' उन्हों ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जन्नत की खु़श ख़बरी दे, ऐ अबू मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! आप ने हमें किस बात की खु़श ख़बरी दी है।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सिक्के बनाने वालों को जहन्नम की बिशारत दे दो ।''

(مجمع الزوائد،کتاب البیوع ، باب ماجاء فی الربا،الحدیث: ۶۵۸۷، ج۴ ، ص ۲۱۴)

﴾41﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ऐसे गुनाहों से बचो जिन की बख़्शिश नहीं : (1) लूटमार या'नी जिस ने कोई चीज़ चोरी की क़ियामत के दिन उसे लानी पड़ेगी और (2) सूद खाना या'नी जिस ने सूद खाया वोह क़ियामत के दिन मख़्बूतुल ह़वास मज्नून बन कर उठेगा, फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

اَلَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا یَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا یَقُوْمُ الَّذِیْ یَتَخَبَّطُهُ الشَّیْطٰنُ مِنَ الْمَسِّؕ (پ۳،البقرۃ:۲۷۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो ।

(مجمع الزوائد،کتاب البیوع ، باب ماجاء فی الربا،الحدیث:۶۵۸۸، ج۴ ، ص ۲۱۴)

﴾42﴿...... साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सूद खाने वाला बरोज़े क़ियामत (दीवानों की त़रह़) अपने पहलूओं को घसीटता हुवा आएगा ।''

(درالمنثور،سورۃ البقرۃ،تحت الآیۃ:۲۷۵ ج۲،ص۱۰۲)

www.dawateislami.net

﴾43﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस के माल में भी सूद से इज़ाफ़ा होगा उस का अन्जाम कमी पर ही होगा।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب التجارات ، باب التغليظ فى الربا ،الحديث: ۲۲۷۹ ، ص ۲۶۱۳)

﴾44﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "(ब ज़ाहिर) सूद अगर्चे कितना ही ज़ियादा हो जाए उस का अन्जाम कमी पर ही होता है।"

(المستدرك،كتاب البيوع ، باب الربا وان كثر......الخ ،الحديث: ۲۳۰۹ ، ج۲ ، ص ۳۳۹)

﴾45﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "लोगों पर एक ऐसा ज़माना ज़रूर आएगा कि हर एक सूद खाएगा और जो नहीं खाएगा उस तक इस का ग़ुबार पहुंच जाएगा।" (سنن ابن ماجة ،ابواب التجارات ، باب التغليظ فى الربا ،الحديث: ۲۲۷۸ ، ص ۲۶۱۳)

﴾46﴿...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मेरी उम्मत के कुछ लोग बुराई और लह्वो लइ़ब में रात बसर करेंगे और सुब्ह़ ह़राम को ह़लाल समझने, गाने गाने वालियां रखने, शराब पीने, सूद खाने और रेशम पहनने की वजह से बन्दर और ख़िन्ज़ीर बन चुके होंगे।"

(مجمع الزوائد،كتاب الاشربة ، باب فيمن يستحل الخمر، الحديث: ۸۲۱۵،ج ۵ ص۱۱۹)

﴾47﴿...... ह़ुज़ूरे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस उम्मत की एक क़ौम खाने पीने और लह्वो लइ़ब में रात गुज़ारेगी, फिर जब वोह सुब्ह़ करेंगे तो उन के चेहरे मस्ख़ हो कर बन्दर और ख़िन्ज़ीर बन चुके होंगे और उन में धंसाने और फेंके जाने के वाक़िआ़त रूनुमा होंगे यहां तक कि लोग सुब्ह़ उठेंगे तो कहेंगे : "आज रात फ़ुलां का घर धंसा दिया गया और आज रात फ़ुलां का घर धंसा दिया गया।" और उन पर आस्मान से पथ्थर फेंके जाएंगे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के क़बीलों और घरों पर बरसाए गए इस लिये कि वोह शराब पियेंगे, रेशम पहनेंगे, गाने गाने वालियां रखेंगे, सूद खाएंगे और रिश्तेदारों से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करेंगे।"

(كنز العمال ،كتاب المواعظ والرقائق ، قسم الاقوال،الحديث: ۴۴۰۱۱ ، ج۱۶ ، ص ۳۶)

तम्बीह :

सूद को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है क्यूं कि अह़ादीसे मुबा–रका में इसे कबीरा बल्कि अक्बरुल कबाइर कहा गया है।

www.dawateislami.net

《48》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "7 हलाक करने वाली चीज़ों से बचो।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी हैं ?" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) किसी को नाहक़ क़त्ल करना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद (6) जंग के दिन भाग जाना और (7) पाक दामन, सीधी सादी मोमिन औ़रतों पर तोहमत लगाना।"

(صحیح البخاری، کتاب المحاربین من اهل الکفر والردة، باب رمی المحصنات ......الخ، الحدیث: ۶۸۵۷، ص ۵۷۲)

《49》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कबीरा गुनाह 9 हैं इन में सब से बड़ा गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी मोमिन को (नाहक़) क़त्ल करना और सूद खाना है।"

(السنن الکبری للبیهقی، کتاب الشهادات، باب من تجوز شهادته......الخ، الحدیث: ۲۰۷۵۲، ج۱۰، ص ۳۱۴)

《50》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "कबीरा गुनाहों में सब से बड़े गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना, सूद और यतीम का माल खाना है।" (مجمع الزوائد، کتاب الایمان، باب فی الکبائر، الحدیث: ۳۸۲، ج۱، ص ۲۹۱)

《51》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "7 कबीरा गुनाहों से बचो : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी को क़त्ल करना, मैदाने जंग से भागना, यतीम का माल खाना और सूद खाना।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ۵۶۳۶، ج۶، ص ۱۰۳)

《52》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले यमन की त़रफ़ ख़त़ लिखा जिस में फ़राइज़, सुनन और दियतों का तज़्किरा था और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दे कर भेजा, ख़त़ में लिखा था : "कबीरा गुनाहों में सब से बड़े गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना, जंग के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जिहाद से भागना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना, जादू सीखना, सूद और यतीम का माल खाना हैं।" (سنن الکبری للبیهقی، کتاب الزکاة، باب کیف فرض الصدقة، الحدیث: ۷۲۵۵، ج۴، ص ۱۴۹)

साबिक़ा अहादीसे मुबा-रका से फ़ाएदा ह़ासिल होता है कि सूद खाने वाला, खिलाने वाला (या'नी देने वाला), लिखने वाला, गवाह, इस में कोशिश करने वाला, इस पर मददगार तमाम के तमाम फ़ासिक़ हैं और इस में किसी क़िस्म का भी दख़्ल कबीरा गुनाह है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 185 : क़ाइलीने हुरमत के नज़्दीक सूद में ह़ीला करना

《1》...... बा'ज़ उ़-लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, मरवी है : "सूदख़ोर, सूद खाने के लिये ह़ीले बहाने करने की वजह से क़ियामत के दिन कुत्तों और ख़िन्ज़ीरों की शक्ल में उठाए जाएंगे, जैसा कि अस्ह़ाबे सब्त के चेहरे मस्ख़ कर दिये गए, जब उन्हों ने हफ़्ते के दिन मछलियों के शिकार का ह़ीला किया जिन का शिकार करने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें रोक दिया था, पस उन्हों ने हौज़ खोद दिये जिन में हफ़्ते के दिन मछलियां गिर जातीं यहां तक कि वोह इतवार के दिन उन्हें पकड़ लेते, जब उन्हों ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की शक्लों में बदल दिया और येही ह़ाल उन लोगों का है जो सूद पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ह़ीले बहाने करते हैं ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़ीले करने वालों के ह़ीले पोशीदा नहीं।" (كتاب الكبائر للذهبی،الكبيرة الثانية عشرة،باب الربا،ص ۷۰)

सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़रमान है : "वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को धोका देते हैं जैसा कि लोगों को धोका देते हैं, अगर वोह बात वाज़ेह़ कर देते तो उन पर आसान होता।"

तम्बीह : सूद में ह़ीला करना

सूद वग़ैरा में ह़ीला करने को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने ह़राम क़रार दिया है और इस्तिद्लाल का क़ियास येह है कि क़ाइलीने हुरमत के नज़्दीक ह़ीले के साथ सूद लेना कबीरा गुनाह है, अगर्चे इस के जवाज़ में इख़्तिलाफ़ है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई और इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने सूद वग़ैरा में ह़ीला को जाइज़ क़रार दिया है और हमारे अस्ह़ाबे शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने मुन्दरिजए ज़ैल ह़दीसे पाक से इस की हि़ल्लत पर इस्तिद्लाल किया है :

《2》...... ख़ैबर का आ़मिल हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में बहुत सी उ़म्दा खजूरें ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा : "क्या ख़ैबर की तमाम खजूरें ऐसी हैं ?" उस ने जवाब दिया : "नहीं, बल्कि हम घटिया खजूरें लौटा देते हैं और घटिया के दो साअ़ के बदले में उ़म्दा खजूरों का एक साअ़ ले लेते हैं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे इस त़रह़ करने से मन्अ़ फ़रमा दिया और उसे बताया कि येह सूद है फिर उस में ह़ीला बताया और वोह येह है कि दराहिम के बदले में घटिया खजूरें बेच दे और उन दराहिम की उ़म्दा खजूरें ख़रीद ले।"

www.dawateislami.net

येह उन ह़ीलों में से है जिन में इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हुवा है पस जिस के पास दो साअ़ घटिया खजूरें हों और वोह उन के बदले एक साअ़ उ़म्दा खजूरें लेना चाहता हो तो उस के लिये किसी दूसरे अ़क़्द के वासित़े के बिग़ैर ऐसा करना मुम्किन नहीं क्यूं कि इस (या'नी दो साअ़ घटिया के बदले एक साअ़ उ़म्दा खजूरें लेने) के सूद होने में इज्माअ़ है। जब उस ने एक दिरहम की दो साअ़ घटिया खजूरें बेचीं और उस एक दिरहम की एक साअ़ उ़म्दा खजूरें ख़रीद लीं जो इस के ज़िम्मे था तो वोह सूद से बच गया क्यूं कि अ़क़्द खाने वाली चीज़ और रुपै में वाक़ेअ़ हुवा न कि दो खाने वाली चीज़ों के दरमियान, लिहाज़ा रिबा की सूरत नेस्तो नाबूद हो गई तो उस वक़्त ह़ुरमत की क्या वजह हो सकती है ? पस मा'लूम हुवा कि ख़ैबर के आ़मिल को रसूले अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो ह़ीला सिखाया वोह सूद वग़ैरा में ह़ीला के मुत़्लक़ जाइज़ होने में नस है क्यूं कि इस में किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं।

उन लोगों ने मज़्कूरा यहूदियों के क़िस्से से जो इस्तिद्लाल किया वोह इस बात पर मब्नी है कि "जो चीज़ हम से पहली उम्मतों के लिये मश्रूअ़ थी वोह हमारे लिये भी मश्रूअ़ है।" ह़ालां कि सह़ीह़ बात इस के बर अ़क्स है क्यूं कि इस से तो येह साबित होता है कि हमारी शरीअ़त में उन के मुख़ालिफ़ कुछ भी नहीं ह़ालां कि आप जान चुके हैं कि शारेअ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने जो चीज़ हमारे लिये मश्रूअ़ क़रार दी है वोह उन के मुख़ालिफ़ है।

बैअ़ की मम्नूअ़ सूरतें

कबीरा नम्बर **186 :** **منع الفحل**

(या'नी नर जानवर को जुफ़्ती के लिये देने से रोकना)

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना बरीदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कबीरा गुनाहों में सब से बड़े गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, फ़ालतू पानी और नर को रोकना है।"

(مجمع الزوائد، کتاب الایمان، باب فی الکبائر، الحدیث: ۳۹۷، ج ۱، ص ۲۹۶)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के कलाम में इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है लेकिन इस के बा'द उन्हों ने कहा कि इस ह़दीस की सनद ज़ईफ़ है और इस का नुक़्सान दूसरे कबीरा गुनाहों के नुक़्सान को नहीं पहुंचता और ह़दीस में इस का ज़िक्र मुक़द्दम होने की वजह से हम ने इसे ज़िक्र किया।

येह इस बात की ताईद है कि जुफ़्ती के लिये नर को आ़रिय्यतन देने की ग़ायत येह है कि येह मक्रूह है और अगर इसे सह़ीह़ कहा जाए तो उसे ऐसी सूरत पर मह़मूल करना मुम्किन है कि अगर किसी गाउं वाले अपने पास नर न होने की वजह से नर के मोह़ताज हो गए तो उस वक़्त नर को लेना ज़रूरी है क्यूं कि मादा के पैदाइश में ही रूह़ों की और दूध से बदन की ज़िन्दगी है, लेकिन येह ज़रूरी नहीं कि येह सब मुफ़्त में हो।

ए'तिराज़ : अगर आप कहें कि यहां पर कैसे इजारे का तसव्वुर किया जा सकता है ह़ालां कि नर की नस्ल को रोकने के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सह़ीह़ ह़दीसे पाक मौजूद है और इस नर की नस्ल को रोकने से मुराद उस की जुफ़्ती करने की ता'दाद या मादए मन्विया की मिक़्दार की बैअ़ है या जुफ़्ती करने की उजरत लेना है ?

जवाब : मैं (मुसन्निफ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) **कहता हूं :** इस की सूरत मुम्किन है वोह येह कि मादा जानवर का मालिक मुअ़य्यन मुद्दत के लिये मुअ़य्यन माल के बदले नर उजरत पर ले अगर्चे एक घड़ी के लिये ही हो, उस से जो चाहे नफ़्अ़ उठा ले पस येह इजारा सह़ीह़ है जैसा कि इजारे के बाब में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تَعَالٰی के कलाम का क़ियास है और वोह उस के पूरे मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करेगा अगर्चे वोह उसे अपने मादा जानवर से जुफ़्ती कराए क्यूं कि जिस चीज़ का उसे क़स्दन उजरत पर लेना जाइज़ नहीं तब्अ़न जाइज़ हो जाएगा (या'नी जुफ़्ती के लिये उजरत पर नहीं ले सकता लेकिन कुल्ली इख़्तियारात के साथ उजरत पर लेने के बा'द जुफ़्ती भी करा सकता है)।

कबीरा नम्बर 187 : बुयूए फ़ासिदा और दीगर ह़राम ज़राएअ़ से रोज़ी कमाना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ (پ۵،النسآء:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे के माल नाह़क़ न खाओ।

इस से मुराद क्या है इस में इख़्तिलाफ़ है, एक क़ौल के मुत़ाबिक़ : "इस से मुराद सूद, जूआ, ग़स्ब, चोरी, ख़ियानत, झूटी गवाही और झूटी क़सम के ज़रीए माल बेचना है।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "बातिल से मुराद वोह माल है जो इन्सान से किसी इ़वज़ के बिग़ैर लिया जाता है।" एक क़ौल येह है कि "जब येह आयत नाज़िल हुई तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان किसी के हां खाना खाने से एह़तिराज़ करने लगे यहां तक कि सूरए नूर की येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

وَلَا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآىٕكُمْ (پ۱۸،النور:۶۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और न तुम में किसी पर कि खाओ अपनी औलाद के घर या अपने बाप के घर।

एक क़ौल येह है : "इन से मुराद उ़क़ूदे फ़ासिदा हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़ौल की तौजीह येह है कि येह आयते मुबा-रका **मोह़कम** है (या'नी इस का हुक्म पुख़्ता है), मन्सूख़ (या'नी जिस का हुक्म ख़त्म हो जाए) नहीं हुई और न क़ियामत तक होगी क्यूं कि बातिल त़रीक़े से माल खाना हर उस सूरत को शामिल है जिस में नाह़क़ माल लिया जाए ख़्वाह वोह ज़ुल्म के त़रीक़े से हो जैसे ग़स्ब, ख़ियानत और चोरी वग़ैरा या मिज़ाह़, मस्ख़री या खेलकूद म-सलन जूआ और आलाते लह्व वग़ैरा (अ़न्क़रीब इन तमाम चीज़ों का बयान आएगा) या मक्रो फ़रेब के त़रीक़े से लिया जाए जैसे अ़क़्दे फ़ासिद के ज़रीए ह़ासिल किया जाने वाला माल।

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का येह क़ौल भी हमारे मौक़िफ़ की ताईद करता है कि येह आयते मुबा-रका इन्सान के अपने ही माल को बातिल त़रीक़े से खाने को भी शामिल है म-सलन आदमी अपना और दूसरे का माल ह़राम काम में ख़र्च करे जैसे मज़्कूरा मिसालें।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान : "اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً" में इस्तिस्ना मुन्क़तेअ़ है क्यूं कि बातिल का ख़्वाह कोई भी मा'ना मुराद लिया जाए, तिजारत बातिल की जिन्स से नहीं और इसे मुत्तसिल बनाने के लिये सबब की तावील करना अपने मह़ल में नहीं और तिजारत का लफ़्ज़ अगर्चे इ़वज़ वाले उ़क़ूद के साथ ख़ास है मगर क़र्ज़ और हिबा वग़ैरा भी दीगर दलाइल की बिना पर इस के साथ मुल्ह़िक़ हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान : "عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ" से मुराद येह है कि जाइज़ त़रीक़े के मुत़ाबिक़ ख़ुशदिली हो और इस में खाने का ख़ास त़ौर पर ज़िक्र करना खाने के साथ मुक़य्यद करने के लिये नहीं बल्कि इस के माल से नफ़्अ़ ह़ासिल करने के ग़ालिब ज़रीआ़ होने की वजह से किया गया है, जैसा कि इस आयते मुबा-रका में है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًاؕ (پ۴،النسآء:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माले नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं।

इस बह़स के दलाइल वाफ़िर हैं और इस में सख़्ती पर वारिद अह़ादीसे मुबा-रका भी बेशतर हैं मगर हम इन में से बा'ज़ पर इक्तिफ़ा करेंगे।

www.dawateislami.net

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है और पाक ही को दोस्त रखता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुअमिनीन को वोही हुक्म दिया है जो मुर-सलीन को दिया था पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًاؕ (پ۱۸،المؤمنون:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ पैग़म्बरो पाकीज़ा चीजें खाओ और अच्छे काम करो।

और फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ (پ۲،البقرة:۱۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीजें।

फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स का ज़िक्र किया जो त़वील सफ़र करता है, जिस के बाल परेशान और बदन ग़ुबार आलूद है (या'नी उस की ह़ालत ऐसी है कि जो दुआ़ करे वोह क़बूल हो) और अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ उठा कर या रब ! या रब ! कहता है ह़ालां कि उस का खाना ह़राम हो, पीना ह़राम, लिबास ह़राम और ग़िज़ा ह़राम फिर उस की दुआ़ कैसे क़बूल होगी।" (या'नी अगर क़बूल की ख़्वाहिश हो तो कस्बे ह़लाल इख़्तियार करो कि बिग़ैर इस के क़बूले दुआ़ के अस्बाब बेकार हैं)

(المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرہ،الحدیث: ۸۳۵۶، ج۳، ص ۲۲۰)

﴾2﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रिज़्क़े ह़लाल की तलाश हर मुसल्मान पर वाजिब है।" (المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۶۱۰، ج۶، ص۲۳۱)

﴾3﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रिज़्क़े ह़लाल की तलाश फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द एक फ़र्ज़ है।"

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۹۹۹۳، ج۱۰، ص ۷۴)

﴾4﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने पाकीज़ा खाना खाया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल किया और लोग उस के शर से मह़फ़ूज़ रहे वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में ऐसे लोग बहुत हैं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अन्क़रीब मेरे चन्द सदियां बा'द भी होंगे।"

(جامع الترمذی،ابواب صفة القیامة، باب حدیث اعقلھا وتو کل ......الخ، الحدیث: ۲۵۲۰، ص۱۹۰۵)

﴾5﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

www.dawateislami.net

"अगर तुम में चार ख़ूबिया हों तो तुम्हें दुन्या की किसी महरूमी से नुक़्सान न होगा : (1) अमानत की हिफ़ाज़त (2) सच्ची बात कहना (3) हुस्ने अख़्लाक़ और (4) पाक खाना।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص ، الحديث: ٦٦٦٤ ، ج٢ ، ص ٥٩٢)

《6》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की रोज़ी पाकीज़ा हो, बातिन अच्छा हो, ज़ाहिर इ़ज़्ज़त वाला हो और जो लोगों को अपने शर से महफ़ूज़ रखे उस के लिये ख़ुश ख़बरी है, नीज़ जिस ने अपने इल्म पर अ़मल किया और अपना ज़रूरत से ज़ाइद माल ख़र्च किया और फ़ुज़ूल गोई से रुका रहा उस के लिये सआदत है।"

(المعجم الكبير ، الحديث: ٤٦١٦ ، ج٥ ، ص ٧٢)

《7》...... महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! अपनी ग़िज़ा पाक कर लो ! मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है ! बन्दा हराम का लुक़्मा अपने पेट में डालता है तो उस के **40** दिन के अ़मल क़बूल नहीं होते और जिस बन्दे का गोश्त हराम से पला बढ़ा हो उस के लिये आग ज़ियादा बेहतर है।" (المعجم الاوسط ، الحديث: ٦٤٩٥ ، ج٥ ، ص ٣٤)

《8》...... रहमते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस में अमानत नहीं न उस का दीन है न नमाज़ और न ही ज़कात। जिस ने हराम माल से क़मीस बना कर पहनी जब तक वोह क़मीस उतार न दे उस की नमाज़ क़बूल न होगी, बेशक येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शायाने शान नहीं कि वोह ऐसे शख़्स का अ़मल या नमाज़ क़बूल फ़रमाए जिस ने हराम की क़मीस पहन रखी हो।" (البحر الزخار ، بمسند البزار ، مسند علی بن ابی طالب ، الحديث:٨١٩ ، ج٣ ، ص ٦١)

《9》...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जिस ने **10** दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और उस में एक दिरहम हराम का था तो जब तक वोह लिबास उस के बदन पर रहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की कोई नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाएगा।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने कानों में उंगलियां डाल कर इर्शाद फ़रमाया : "अगर मैं ने येह बात ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से न सुनी हो तो मेरे कान बहरे हो जाएं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسندعبدالله بن عمر بن خطاب،الحديث:٥٧٣٦، ج٢، ص٤١٦تا٤١٧)

चोरी का माल ख़रीदने का गुनाह :

《10》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने चोरी के माल को जानने के बा वुजूद (वोह माल) ख़रीदा वोह उस के ऐब और गुनाह में शरीक हो गया।" (شعب الايمان ،باب فی قبص اليد عن الاموال المحرمة، الحديث: ٥٥٠٠ ، ج٤ ، ص ٣٨٩)

www.dawateislami.net

《11》...... महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम में से कोई शख़्स अपनी रस्सी ले कर पहाड़ की तरफ़ जाए और लकड़ियां जम्अ करे, फिर उन्हें अपनी पीठ पर उठा कर लाए और उस के ज़रीए रोज़ी कमाए तो येह उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हराम कर्दा शै को अपने मुंह में डालने से बेहतर है।" (المسند لا مام احمد بن حنبل ، مسند ابی هريرة ، الحديث: ٧٤٩٣، ج٣ ، ص ٦٨)

《12》...... सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने हराम माल जम्अ किया फिर उसे स-दक़ा किया उस के लिये उस में कोई अज्र नहीं और इस का बोझ (या'नी गुनाह) उसी पर होगा।"

(المستدرك،كتاب الزكاة ، باب من تصدق من مال حرام...... الخ،الحديث: ١٤٨٠،ج٢،ص٨)

《13》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने हराम माल कमाया फिर उस से गुलाम आज़ाद किया और सिलए रेहमी की तो येह उस पर गुनाह होगा।" (الترغيب والترهيب،كتاب البيوع،باب الترغيب فی طلب الحلال......الخ،الحديث:٢٦٨٣،ج٢،ص ٣٥٠)

《14》...... साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे दरमियान अख़्लाक़ को इसी तरह तक़्सीम कर दिया है जिस तरह तुम्हारा रिज़्क़ तक़्सीम फ़रमाया है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस से महब्बत फ़रमाता है उसे भी दुन्या देता है और जिस से महब्बत नहीं करता उसे भी देता है, मगर दीन सिर्फ़ उसी को अता फ़रमाता है जिस से वोह महब्बत फ़रमाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिसे दीन अता फ़रमाया गोया उस ने इस (बन्दे) से महब्बत फ़रमाई। उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है ! बन्दा उस वक़्त तक मुसल्मान नहीं हो सकता जब तक उस के ज़बान व दिल मुसल्मान (या'नी महफ़ूज़ व सलामत) न हो जाएं और वोह उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस का पड़ोसी उस के शर से महफ़ूज़ न हो जाए।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस के शर से क्या मुराद है ?" तो आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की बद दियानती और जुल्म, और जो बन्दा माले हराम कमा कर स-दक़ा करे उस का स-दक़ा क़बूल नहीं होता न ही उस के किसी ख़र्च में ब-र-कत होती है और वोह जो कुछ तर्के में छोड़ कर मरेगा वोह जहन्नम की तरफ़ उस का ज़ादे राह होगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बुराई को बुराई से नहीं मिटाता मगर बुराई को अच्छाई से मिटा देता है, बेशक गन्दगी गन्दगी को नहीं मिटाती।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن مسعود ، الحديث: ٣٦٧٢ ، ج٢ ، ص ٣٣)

www.dawateislami.net

《15》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कसरत से जहन्नम में दाख़िल करने वाली शै के बारे में सुवाल हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुंह और शर्मगाह।" और लोगों को कसरत से जन्नत में दाख़िल करने वाली शै के बारे में पूछा गया, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का डर और अच्छा अख़्लाक़।"

(جامع الترمذی ،ابواب البر والصلة ، باب ماجاء فی حسن الخلق ، الحدیث: ٢٠٠٤ ، ص ١٨٥٢)

《16》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बरोज़े क़ियामत बन्दे के क़दम उस वक़्त तक न हिल सकेंगे जब तक उस से इन **4** चीज़ों के बारे में सुवाल न कर लिया जाए : (1) उ़म्र के बारे में कि किन कामों में गुज़ारी (2) जवानी के बारे में कि किस त़रह़ गुज़ारी (3) माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया और (4) अपने इ़ल्म पर कहां तक अ़मल किया।"

(جامع الترمذی ،ابواب صفة القیامة والرقائق والورع، باب فی القیامة ، الحدیث: ٢٤١٦ ، ص ١٨٩٤)

《17》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "दुन्या सर सब्ज़ और लज़ीज़ है, जो इस में ह़लाल ज़रीए से कमाएगा और उसे ह़क़ की जगह ख़र्च करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सवाब अ़ता फ़रमा कर अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इस में ह़राम त़रीक़े से कमाएगा और उसे नाह़क़ जगह ख़र्च करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इहानत के घर (या'नी जहन्नम) में दाख़िल फ़रमाएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के माल में बद दियानती करने वाले बहुत से लोगों के लिये बरोज़े क़ियामत (जहन्नम की) आग होगी।" चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِیْرًا (پ١٥، بنی اسرآئیل:٩٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।

(شعب الایمان ، باب فی قبض الید عن الاموال المحرمة ، الحدیث: ٥٥٢٧، ج٤ ، ص ٣٩٦)

《18》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस गोश्त और ख़ून ने ह़राम से परवरिश पाई जहन्नम उस की ज़ियादा ह़क़दार है।"

(صحیح ابن حبان ،کتاب الحظر والاباحة ، الحدیث: ٥٥٤١، ج٧،ص ٤٣٦)

《19》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो गोश्त और ख़ून ह़राम से पले बढ़े आग उस के लिये ज़ियादा बेहतर है।"

(جامع الترمذی ،ابواب السفر ، باب ما ذکر فی فضل الصلاة ،الحدیث: ٦١٤، ص١٧٠٦)

《20》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस जिस्म ने ह़राम से परवरिश पाई वोह जन्नत में दाख़िल न होगा (या'नी इब्तिदाअन दाख़िल न होगा)।"

(مسندابی یعلی الموصلی،مسندابی بکرالصدیق،الحدیث:٧٩،ج١،ص٥٧)

www.dawateislami.net

तम्बीह : ह़राम खाने की वजह से होने वाले गुनाह

इस गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार करना इन अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर बिल्कुल सरीह़ है क्यूं कि येह लोगों के माल को बाति़ल त़रीके़ से खाना है, उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "इस बाब में टेक्स वुसूल करने वाला, ख़ाइन, चोर, (मिक्दार में कमी करने के लिये) तेल की कुप्पियां बनाने वाला, सूद खाने और खिलाने वाला, यतीम का माल खाने वाला, झूटा गवाह, उधार चीज़ ले कर इन्कार कर देने वाला, रिश्वत ख़ोर, नाप तोल में कमी करने वाला, ऐ़ब ज़दा शै को ऐ़ब छुपा कर बेचने वाला, जूआ खेलने वाला, जादूगर, नुजूमी, तस्वीरें बनाने वाला, ज़िना करने वाली, मुर्दों पर नौह़ा करने वाली, ऐसा दलाल (कमीशन एजन्ट) जो बेचने वाले की इजाज़त के बिगै़र उजरत (या'नी कमीशन) ले, ख़रीदने वाले को ज़ियादा क़ीमत बताने वाला और जिस ने कोई आज़ाद शख़्स बेच कर उस की क़ीमत खाई वगै़रा दाख़िल हैं।"

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का येह क़ौल इस बात की ताईद करता है जो मैं ने आयते करीमा की तफ़्सीर में ज़िक्र की है कि बाति़ल इन में से हर चीज़ को शामिल है और हर उस को भी शामिल है जो किसी शर-ई दलील के बिगै़र ह़ासिल की जाए।

﴾21﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को लाया जाएगा, जिन के पास तहामा पहाड़ों की मिस्ल नेकियां होंगी यहां तक कि जब उन को लाया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की नेकियों को उड़ती हुई ख़ाक की त़रह़ कर देगा, फिर उन्हें जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कैसे होगा ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह नमाज़ पढ़ते, ज़कात देते, रोज़े रखते और ह़ज करते होंगे लेकिन जब उन्हें कोई ह़राम चीज़ पेश की जाती तो ले लेते थे पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के आ'माल को मिटा देगा।" (كتاب الكبائرللذهبى،الكبيرة الثامنةو العشرون،فصل فى من ......الخ ،ص١٣٦)

सालिह़ीन में से किसी को मरने के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा गया : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला किया ?) उस ने जवाब दिया : "अच्छा सुलूक किया मगर मुझे एक सूई की वजह से जन्नत से रोक दिया गया जो मैं ने उधार ली थी और वापस न की।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने नेकी के काम में ह़राम माल ख़र्च किया वोह उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने पेशाब से कपड़ा पाक किया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़रमान है : "हम ह़राम में पड़ने के ख़ौफ़ से ह़लाल चीज़ के 9 ह़िस्से छोड़ देते थे।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते वहीब बिन वरद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अगर तू सारिया सितारे के क़ियाम जितना क़ियाम कर ले फिर भी तुझे नफ़्अ़ ह़ासिल न होगा जब तक कि तू अपने पेट में दाख़िल होने वाले खाने में ग़ौर न कर ले।"

《22》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ लोगों के घरों पर हर दिन और हर रात एक फ़िरिश्ता निदा देता है : "जिस ने ह़राम खाया उस का न कोई नफ़्ल क़बूल है न फ़र्ज़।" (کتاب الکبائرللذھبی،الکبیرۃ الثامنۃو العشرون،فصل فی من ......الخ ،ص۱۳۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझे शुबा का एक दिरहम लौटाना एक लाख, एक लाख और एक लाख दिरहम स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है।"

《23》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जिस ने ह़राम माल से ह़ज किया और **लब्बैक** कहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "तेरी कोई **लब्बैक** नहीं, न ही **सा'दैक** और तेरा ह़ज तुझ पर लौटा दिया गया।"

(کنزالعمال ،کتاب الحج والعمرۃ ، قسم الاقوال ،الحدیث:۱۱۸۹۶ ، ج۵ ، ص ۱۲)

इब्ने सबात़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِبَاد इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब नौ जवान इ़बादत करता है तो शैत़ान अपने साथियों से कहता है : "देखो इस का खाना कैसा है।" अगर उस का खाना ह़राम का होता है तो कहता है : "इसे छोड़ दो कोशिश करता रहे इस का नफ़्स ही तुम्हें काफ़ी है।" क्यूं कि ह़राम खाने की वजह से इस की कोशिश इसे कोई नफ़्अ़ न देगी।"

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "सिर्फ़ अपना खाना अच्छा कर ले, तुझ पर रात को क़ियाम करना और दिन को रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं।"

《24》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बन्दा उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं हो सकता जब तक ना जाइज़ होने के ख़ौफ़ से जाइज़ चीज़ों को भी छोड़ न दे।" (جامع الترمذی ،ابواب صفۃ القیامۃ ، باب علامۃ التقوی......الخ ،الحدیث: ۲۴۵۱ ، ص ۱۸۹۸"بتقدمٍ وتأخرٍ")

《25》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "इ़ल्म की फ़ज़ीलत इ़बादत की फ़ज़ीलत से बढ़ कर है और तुम्हारा बेहतरीन दीन तक़्वा है।"

(المستدرک،کتاب العلم ، باب فضل العلم احب من فضل العبادۃ وخیر الدین الورع، الحدیث:۳۲۰، ج۱ ، ص ۲۸۳)

《26》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : "जो चीज़

www.dawateislami.net

तुझे शक में डाले उसे छोड़ दे और उसे इख़्तियार कर जिस में शुबा न हो। नेकी वोह है जिस पर नफ़्स और दिल मुत़्मइन हो और गुनाह वोह है जो दिल में खटके और दिल इस में मु-तरद्दद हो, अगर लोग तुझे फ़तवा दें तो तू उन्हें फ़तवा दे।" (جامع الترمذی،ابواب صفة القيامة،باب حديث اعقلها وتوكل،الحديث:٢٥١٨،ص١٩٠٥)

(سنن الدارمی،کتاب البيوع،باب دع ما يريبك......الخ،الحديث:٢٥٣٣،ج٢،ص٣٢٠)

《27》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ह़लाल और ह़राम वाज़ेह़ है और इन दोनों के दरमियान मुश्तबा उमूर हैं, मैं इस के बारे में तुम्हें मिसाल ज़िक्र करता हूं : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की एक चरागाह है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की चरागाह उस की ह़राम कर्दा अश्या हैं, लिहाज़ा जो उस चरागाह के इर्द गिर्द मवेशी चराता है हो सकता है कि वोह उस में भी चला जाए, पस जो शक वाली चीज़ इख़्तियार करता है उस के आगे बढ़ने का ख़त़रा होता है।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب البيوع ، باب فی اجتناب الشبهات ،الحديث: ٣٣٢٩، ص ١٤٧٣)

《28》...... अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़लाल वाज़ेह़ है और ह़राम भी वाज़ेह़ है और इन दोनों के दरमियान शुबा वाली चीजें हैं, पस जिस ने ऐसे काम को छोड़ा जिस के गुनाह होने का शुबा था वोह वाज़ेह़ गुनाह (या'नी मुहर्रमात) से भी बच जाएगा और जो शक वाले गुनाह में पड़ा हो सकता है कि वोह वाज़ेह़ गुनाह में भी पड़ जाए, ना फ़रमानियां अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की चरागाहें हैं और जो चरागाह के इर्द गिर्द मवेशी चराता है मुम्किन है कि वोह चरागाह में भी चला जाए।"

(صحيح البخاری ،کتاب البيوع ،باب الحلال بين والحرام بين ......الخ ،الحديث: ٢٠٥١ ، ص ١٦٠،"بعضُ الاختصار")

कबीरा नम्बर 188 : ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करना

《1》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने खाना ज़ख़ीरा किया वोह ना फ़रमान है।"

(صحيح مسلم ،کتاب المساقاة ، باب تحريم الاحتكار فی الاقوات ، الحديث: ٤١٢٢،ص٩٥٧،بدون" طعام")

《2》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "सिवाए ख़त़ाकार के कोई भी ज़ख़ीरा नहीं करता।"

(جامع الترمذی ،ابواب البيوع ، باب ماجاء فی الاحتكار ، الحديث: ١٢٦٧ ، ص ١٧٧٩)

www.dawateislami.net

《3》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने 40 रातों तक खाना ज़ख़ीरा किया वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से बरी है और जिस घर के अफ़राद में से एक आदमी भी भूक की ह़ालत में सुब्ह़ करे तो उन सब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा ख़त्म हो गया।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، الحديث: ٤٨٨٠، ج٢، ص ٢٧٠)

《4》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "माल को एक शह्‌र से दूसरे शह्‌र ले जाने वाला मरज़ूक़ (या'नी जिस को रिज़्क़ दिया गया हो) और ज़ख़ीरा करने वाला मल्ऊ़न है।" (سنن ابن ماجه، ابواب التجارات، باب الحكرة والجلب، الحديث: ٢١٥٣، ص ٢٦٠٦)

《5》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जिस ने मुसल्मानों पर इन का खाना रोक लिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे कोढ़ और इफ़्लास में मुब्तला कर देगा।" (المرجع السابق، الحديث: ٢١٥٥، ص ٢٦٠٦)

《6》...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बारे में मन्क़ूल है : "एक दफ़्आ़ कुछ खाना मस्जिद के दरवाज़े के पास रखा हुवा था, जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बाहर निकले तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह खाना कैसा है ?" सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "येह खाना शह्‌र के बाहर से हमारे पास लाया गया है।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस खाने में और इस को हमारे शह्‌र में लाने वाले में ब-र-कत अ़ता फ़रमाए।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ मौजूद किसी ने कहा : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! येह ज़ख़ीरा किया गया है।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "किस ने ज़ख़ीरा किया है ?" सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**फ़र्रूख़** (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के आज़ाद कर्दा गुलाम) और फुलां ने, जो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का गुलाम है।"

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दोनों को बुला भेजा, वोह दोनों ह़ाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें मुसल्मानों के खाने को रोकने का इख़्तियार किस ने दिया है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! हम अपने अम्वाल से ख़रीदते और बेचते हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने मुसल्मानों पर उन का खाना रोक लिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे कोढ़ और इफ़्लास में मुब्तला कर देगा।" पस उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़र्रूख़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से और आप से अ़ह्द करता हूं कि आयन्दा कभी भी खाने को ज़ख़ीरा न करूंगा।"

www.dawateislami.net

लिहाज़ा उन्हों ने उसे मिस्र की त़रफ़ भेज दिया जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के आज़ाद कर्दा गुलाम ने कहा : "हम अपने अम्वाल से ख़रीदते और बेचते हैं।" बहर ह़ाल ह़ज़रते अबू यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (इस रिवायत के रावी) फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के उस गुलाम को कोढ़ की ह़ालत में देखा है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،مسند عمر بن الخطاب،الحدیث: ۱۳۵ ، ج۱ ،ص ۵۵)

सब से बुरा ज़ख़ीरा अन्दोज़ कौन ?

《7》...... इमाम त़-बरानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है कि मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सब से बुरा ज़ख़ीरा अन्दोज़ वोह है कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ीमतें कम कर दे तो गमगीन होता है और अगर क़ीमतें ज़ियादा कर दे तो ख़ुश होता है।"

(المعجم الکبیر ، الحدیث: ۱۸۶ ، ج ۲۰ ،ص ۹۵)

《8》......एक रिवायत में यूं है : "अगर क़ीमत की कमी का सुनता है तो उसे बुरा लगता है और क़ीमत की ज़ियादती का सुनता है तो उसे ख़ुशी होती है।" (المعجم الکبیر ، الحدیث: ۱۸۶ ، ج ۲۰ ،ص ۹۵)

《9》...... रह़मते कौनैन, हम गरीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अहले मदाइन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ज़ख़ीरा करते, लिहाज़ा वोह न तो गिज़ा ज़ख़ीरा करते और न ही क़ीमतें बढ़ाते, पस जिस ने इन पर **40** दिन तक खाना रोके रखा फिर स-दक़ा भी कर दिया तो येह उस का कफ़्फ़ारा नहीं हो सकता।"

(الترغیب والترهیب ،کتاب البیوع ، باب الترهیب من الاحتکار ، الحدیث: ۲۷۶۲، ج ۲ ،ص ۳۷۱)

《10》...... सय्यिदुना रज़ीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है : "ज़ख़ीरा करने वाले और जानों को क़त्ल करने वाले क़ियामत के दिन एक ही द-रजे में इकठ्ठे किये जाएंगे और जिस ने मुसल्मानों की माली चीज़ों में से किसी को महंगा किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन ज़रूर बड़ी आग में अ़ज़ाब देगा।" (کنز العمال ،کتاب البیوع ،قسم الاقوال ، باب الثالث فی الاحتکاروا لتعسیر ، الحدیث: ۹۷۳۵/ ۹۷۳۳،ج ٤، ص ٤٢)

《11》...... सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है : "ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बीमार हो गए तो उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद उन की इ़यादत के लिये आया और उन से पूछा : "ऐ मा'क़िल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! क्या आप जानते हैं कि मैं ने कोई ह़राम ख़ून बहाया है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "मैं नहीं जानता।" तो उस ने दोबारा पूछा : "क्या आप जानते हैं कि मैं ने मुसल्मानों की माली चीज़ों में से कोई चीज़ महंगी की है ?" तो उन्हों ने कहा : "मैं नहीं जानता।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों से इर्शाद फ़रमाया : "इसे मेरे पास बिठाओ।" और उस से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ उ़बैदुल्लाह ! सुनो, मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बयान करता हूं जो मैं ने ताजदारे

www.dawateislami.net

रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सिर्फ़ एक या दो बार नहीं सुनी, मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने मुसल्मानों की माली चीज़ों में कोई दख़्ल अन्दाज़ी की ताकि वोह महंगी हो जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन ज़रूर बड़ी आग का मज़ा चखाएगा।" उस ने पूछा : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने येह बात खुद सरकार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "हां ! एक, दो से भी ज़ियादा मरतबा।"

(المسندللامام احمدبن حنبل،معقل بن یسار،الحدیث:۲۰۳۳۵،ج۷،ص۲۸۹)

﴾12﴿...... इमाम त़-बरानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने मो'जमे कबीर और मो'जमे औसत़ में येह अल्फ़ाज़ नक़्ल किये : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन ज़रूर बड़ी आग में धकेलेगा।"

(مجمع الزوائد کتاب البیوع ، باب الاحتکار ، الحدیث: ٦٤٧٨،ج٤ ، ص ١٨١)

﴾13﴿...... इमाम ह़ाकिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने इन अल्फ़ाज़ से मुख़्तसरन रिवायत किया : "जिस ने मुसल्मानों की माली चीज़ों में से किसी चीज़ को उन पर महंगा किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर जहन्नम में सर के बल नीचे गिराएगा।"

(المستدرک،کتاب البیوع ، باب الجالب الی سوقنا کالمجاهد فی سبیل الله ،الحدیث: ٢٢١٤ ، ج٢ ، ص٣٠٥)

﴾14﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मक्कए मुकर्रमा में खाना रोकना इल्ह़ाद है।"

(مجمع الزوائد،کتاب البیوع ، باب الاحتکار ، الحدیث: ٦٤٧٩،ج ٤ ، ص ١٨١)

﴾15﴿...... इमाम ह़ाकिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में है : "जिस ने इस इरादे से ग़ल्ले की बन्दिश की, कि मुसल्मानों को महंगा देगा पस वोह ना फ़रमानी करने वाला है और तह़क़ीक़ उस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा उठ गया।"

(المستدرک،کتاب البیوع ، با ب لایحتکر الاخاطئ ، الحدیث: ٢٢١١ ، ج٢ ، ص ٣٠٤)

तम्बीह :

इन सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका के ज़ाहिर की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, इन में से बा'ज़ में शदीद वईद है जैसे ला'नत, इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िम्मा उठा लेना और जुज़ाम और इफ़्लास में मुब्तला होना वग़ैरा, इन में से बा'ज़ इस के कबीरा होने पर दलालत करते हैं लेकिन अ़न्क़रीब "**अ़रौज़ा**" के ह़वाले से आएगा कि येह सग़ीरा है।

ज़ख़ीरा अन्दोज़ी की ता'रीफ़ और इस का हुक्म :

हमारे नज़्दीक जो ज़ख़ीरा अन्दोज़ी ह़राम है वोह येह है : "ख़ूराक महंगाई के दिनों में बेचने के लिये रोक लेना जैसा कि खजूर और किशमिश जब कि ख़रीदी हुई चीज़ को शदीद ह़ाजत के वक़्त महंगे दामों बेचने का इरादा हो।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने ख़ूराक के साथ हर उस चीज़ को शामिल किया है जो इस पर मुआविन हो जैसे गोश्त और फल वग़ैरा, जब मज़्कूरा शर्त़ न पाई जाए तो कोई हुरमत नहीं या'नी वोह महंगाई के ज़माने में बेचने के लिये न ख़रीदे बल्कि अपने और अपने अहलो इयाल के लिये ख़रीदे या जिस क़ीमत पर ख़रीदा है उसी की मिस्ल या कम पर बेचने के लिये ख़रीदे या न ख़रीदे बल्कि अपने ज़मीन का ग़ल्ला रोक ले अगर्चे ज़ियादा क़ीमत पर बेचने का इरादा ही हो, हां इस सूरत में जब लोगों को शदीद ज़रूरत हो तो उस पर बेचना लाज़िम है अगर इन्कार करे तो क़ाज़ी उस पर सख़्ती करे।

अगर शदीद ज़रूरत न हो तो औला येह है कि जो ग़ल्ला अपने और अपने घर वालों के साल भर के इस्ति'माल से ज़ाइद हो उसे बेच दे जब कि आयन्दा साल क़ह्त़ साली का ख़ौफ़ न हो, वरना उस के लिये अपनी ज़रूरत का ग़ल्ला रोकना जाइज़ है इस में कोई कराहत नहीं और ख़ूराक के इलावा चीज़ों में कोई ज़ख़ीरा अन्दोज़ी नहीं, अलबत्ता ! क़ाज़ी ने तसरीह़ की है कि "कपड़ों की ज़ख़ीरा अन्दोज़ी भी मक्रूह है।"

ए'तिराज़ : हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की जो रिवायत आप ने बयान की है कि "सिवाए ना फ़रमान के कोई भी ज़ख़ीरा नहीं करता।"

(صحيح المسلم ،كتاب المساقاة،با ب تحريم الاحتكار فى الاقوات، الحديث: ٤١٢٣ ، ص ٩٥٧)

मज़्कूरा बयान की नफ़ी करती है क्यूं कि जब उन से अ़र्ज़ की गई कि "आप भी तो ज़ख़ीरा करते हैं।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक मुअ़म्मर जो येह ह़दीस बयान करते थे वोह भी ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करते थे।"

जवाब : येह बात साबित हो चुकी है कि ऐसे अम्वाल भी हैं जिन को ज़ख़ीरा करना ह़राम नहीं जैसे कपड़े, लिहाज़ा हज़रते सय्यिदुना सईद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की रिवायत को इस पर मह़मूल किया जाएगा, जब कि हुरमत की शर्त़ खाने की ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करने में है, लिहाज़ा इन शुरूत़ के पाए जाने की बिना पर अब हम कैसे कह सकते हैं कि वोह ह़ज़रात ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करते थे, नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना सईद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ और सय्यिदुना मुअ़म्मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ दोनों मुज्तहिद हैं तो एह़तिमाल की वजह से न उन पर और न ही किसी दूसरे पर ए'तिराज़ किया जा सकता है, फिर सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुल बर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और दूसरी जमाअ़त को मैं ने देखा कि उन्हों ने कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना सईद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ और सय्यिदुना मुअ़म्मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ दोनों तेल ख़ज़ीरा करते थे और तेल ग़िज़ा नहीं, इसी पर सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ और सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ वग़ैरा ने मह़मूल किया है और सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : "येही सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का मश्हूर मज़्हब है।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जवाब : "मुअम्मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी ज़ख़ीरा करते थे।" इस पर महमूल है कि वोह ऐसी चीजें ज़ख़ीरा करते थे जो लोगों को नुक़्सान नहीं देतीं जैसे तेल, सिर्का और कपड़े वग़ैरा।

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ख़ीरा अन्दोज़ी की हुरमत में हिक्मत आम लोगों से ज़रर को दूर करना है जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का इस बात पर इज्माअ़ है कि अगर एक आदमी के पास खाना हो और लोगों को इस की सख़्त ह़ाजत हो तो उन से ज़रर दूर करने के लिये उसे बेचने पर मजबूर किया जाएगा।"

कबीरा नम्बर 189 : मां और ना समझ बच्चे के दरमियान जुदाई डालना

या'नी बच्चे को बेच कर उस की मां और उस बच्चे के दरमियान जुदाई डालना कबीरा गुनाह है लेकिन अगर येह जुदाई आज़ादी या वक़्फ़ से हो तो कबीरा नहीं

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने मां और उस के बच्चे के दरमियान जुदाई डाली अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के और उस के प्यारों (जिन से वोह महब्बत करता है) के दरमियान जुदाई डालेगा।"

(جامع الترمذی ،ابواب السیر ،باب فی کراھیة التفریق بین السبی، الحدیث: ۱۵۶۶ ، ص ۱۸۱۳)

﴾2﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "जिस ने मां और उस के बेटे या दो भाइयों के दरमियान जुदाई डाली अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर ला'नत फ़रमाई।" (سنن ابن ماجه ،ابواب التجارات ،باب النهی عن التفریق بین السبی ،الحدیث: ۲۲۵۰ ، ص ۲۶۱۱)

﴾3﴿...... दारे क़ुत़्नी की एक रिवायत में है : "जिस ने तफ़रीक़ की वोह मल्ऊन है।"

(سنن الدار قطنی ، کتاب البیوع ، الحدیث: ۳۰۲۵ ، ج ۳ ، ص ۸۱)

सय्यिदुना अबू बक्र इयाश رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने इर्शाद फ़रमाया : "येह रिवायत मुब्हम है और येह हुक्म हमारे नज़्दीक क़ैदी और वालिद के दरमियान है।"

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इन अहादीसे मुबा-रका की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है, अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि इस में पहली रिवायत ही सहीह है तो इस में भी शदीद वईद पाई जाती है क्यूं कि उस दिन इन्सान और उस के प्यारों के दरमियान जुदाई डालना नफ़्स पर बहुत गिरां गुज़रेगा।

मैं (मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) **कहता हूं :** जिस तरह कि वोह इस से मज़्कूरा तफ़्रीक़ की हुरमत मुराद लेते हैं, क्यूं कि उन्हों ने इस से वईद समझी, इसी तरह हम भी इस से इस का कबीरा होना मुराद लेते हैं क्यूं कि जब वईद का मफ़्हूम मुसल्लम हो तो वोही वईद, जिस पर उस का ज़ाहिर दलालत करता है, शदीद वईद हो जाएगी।

ए'तिराज़ : इस में वईद की क्या वजह है ? हालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝ (پ۳۰،عبس:۳۴تا۳۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई और मां और बाप और जोरू और बेटों से इन में से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वोही उसे बस है कितने मुंह उस दिन रोशन होंगे।

इस आयत का ज़ाहिर तक़ाज़ा करता है कि येह मुआ-मला हर एक के लिये होगा तो इस से वईद कैसे समझी जा सकती है ?

जवाब : हदीसे पाक इस के वईद होने के बारे में नस है और जिस तरह येह हदीसे पाक है कि,

《4》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने दुन्या में रेशम पहना वोह आख़िरत में न पहन सकेगा और जिस ने दुन्या में शराब पी वोह पूरी सज़ा पाते हुए आख़िरत में न पी सकेगा।"

(المستدرك ،كتاب الاشربه ، باب من لبس الحرير ......الخ ، الحديث: ٧٢٩٨، ج٥ ، ص ١٩٥ ،بدون " جزاء وفاقا ")

क़ियामत के दिन से मुराद जन्नत है और आयते मुबा-रका में मैदाने महशर में लोगों की हालत की नक़्शा कशी की गई है जब कि हदीसे पाक में जन्नत के बारे में बताया गया है जिस तरह रेशम के बारे में वारिद हदीसे पाक की वजह से उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने रेशम पहनने को हराम क़रार दिया इसी तरह हम जुदाई के बारे में वारिद हदीसे पाक से येह मुराद लेते हैं कि येह कबीरा गुनाह है क्यूं कि इन दोनों में से हर एक अमल पर उस के मुताबिक़ जज़ा है।

नीज़ जिस तरह रेशम की हदीसे पाक इस फ़रमाने आलीशान से **मुख़स्सस** (या'नी जिसे किसी दलील से ख़ास किया गया हो) है :

وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝ (پ۱۷،الحج:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वहां उन की पोशाक रेशम है।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ जुदाई वाली ह़दीसे पाक इस आयते मुबा-रका से मुख़स्सस है :

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَاتَّبَعَتۡهُمۡ ذُرِّيَّتُهُمۡ بِاِيۡمَانٍ اَلۡحَقۡنَا بِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ (پ۲۷،الطّور:۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की हम ने उन की औलाद उन से मिला दी।

जुदाई की ह़ुरमत के लिये शर्त़ येह है कि वोह लौंडी और उस बच्चे के दरमियान हो जो छोटा या मज्नून होने की वजह से ना समझ हो म-सलन (बच्चा) ऐसे शख़्स को बेचना जो उसे आज़ाद न करे या तक़्सीम कर दे या फ़स्ख़ कर दे, अगर्चे उस की मां राज़ी ही हो क्यूं कि बच्चे का भी कुछ ह़क़ है और येह तसर्रुफ़ बात़िल हो जाएगा और बाप, दादा, दादी, और नाना, नानी मां की अ़दम मौजू-दगी में मां की त़रह़ ही होते हैं अगर्चे दूर का रिश्ता ही हो।

बाप या दादा के साथ बच्चे को बेचना जाइज़ है और इसी त़रह़ जब वोह तमीज़ और समझ वाला हो या'नी अकेला खा पी लेता हो और इस्तिन्जा कर लेता हो और इस में उ़म्र की कोई क़ैद नहीं कभी तो **5** साल में येह चीज़ ह़ासिल हो जाती है और कभी **7** साल से भी मुअख़्ख़र हो जाती है और (तमीज़ न होने की सूरत में) जुदाई डालना मक्रूह है अगर्चे बुलूग़त के बा'द ही हो और इसी त़रह़ अगर इन दोनों (या'नी मां, बाप) में से कोई आज़ाद भी हो तो जुदाई डालना मक्रूह है।

लौंडी और उस के ना समझ बच्चे के दरमियान और बीवी और उस के बच्चे के दरमियान सफ़र के ज़रीए़ जुदाई डालना भी ह़राम है अलबत्ता ! त़लाक़ याफ़्ता औ़रत और उस के बच्चे के दरमियान जुदाई डाल सकते हैं। इसी त़रह़ जानवर के बच्चे को बेचना अगर वोह (मां के) दूध का मोह़ताज न हो या मोह़ताज तो हो लेकिन ज़ब्ह़ करने के लिये ख़रीदा तो ऐसी बैअ़ जाइज़ है और अगर वोह दूध का मोह़ताज हो और ख़रीदने वाले का ज़ब्ह़ करने का इरादा भी न हो तो उसे ख़रीदना ह़राम है और ऐसी बैअ़ बात़िल है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **190 :** **शराब बनाने वाले को अंगूर और किशमिश बेचना**[1]

कबीरा नम्बर **191 :** **अम्रद से बदकारी करने वाले को अम्रद बेचना**

कबीरा नम्बर **192 :** **बदकारी पर उक्साने वाले को लौंडी बेचना**

कबीरा नम्बर **193 :** **लह्वो लइब के आलात बनाने वाले को लकड़ी बेचना**

कबीरा नम्बर **194 :** **दुश्मनाने इस्लाम को बतौरे इमदाद अस्लिहा बेचना**

कबीरा नम्बर **195 :** **शराब पीने वाले को शराब बेचना**

कबीरा नम्बर **196 :** **भंग पीने वाले को भंग बेचना**

इन सात को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है क्यूं कि इन का ज़रर बहुत अ़ज़ीम है और **क़ाइदा** है कि **वसाइल के लिये भी मक़ासिद का ही हुक्म होता है** और चूंकि इन तमाम के मक़ासिद कबीरा गुनाह हैं, लिहाज़ा वसाइल का हुक्म भी येही होना चाहिये।

किताबुत्तहारह के शुरूअ़ में मज़्कूर ह़दीसे पाक इस की शहादत देती है **:** "जिस ने बुरा त़रीक़ा ईजाद किया उस पर उस का गुनाह होगा और क़ियामत के दिन तक उस पर अ़मल करने वालों का गुनाह होगा।"

यहां ज़न भी हुरमत की जानिब निस्बत के ए'तिबार से इल्मे यक़ीनी की त़रह़ ही है, और इन गुनाहों के कबीरा होने का जहां तक तअ़ल्लुक़ है तो इस में ज़ेह्न तरद्दुद का शिकार है और इसी त़रह़ ज़ेह्न इस में भी मु-तरद्दिद है कि अगर एक शख़्स ने अपनी लौंडी ऐसे शख़्स को बेची जो उसे

---

1 : फ़तावा आ़लमगीरी में फ़तावा क़ाज़ी ख़ान से है **:** "सिराजुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़्दीक उस शख़्स को अंगूर का शीरा फ़रोख़्त करने में कोई ह़रज नहीं जो इस से शराब बनाएगा जब कि साहि़बैन (या'नी इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मुह़म्मद) رَحِمَهُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं **:** "ऐसा करना मक्रूह है।" और सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़ौल के मुत़ाबिक़ भी उस वक़्त मक्रूह है जब वोह किसी ज़िम्मी (काफ़िर) को इतने दाम में बेचे कि उतने दाम में मुसल्मान न ख़रीदे और अगर मुसल्मान भी इतने दाम में ख़रीदने पर राज़ी हो तो उस वक़्त शराब बनाने वाले को अंगूर का शीरा बेचना मक्रूह है और **येह ऐसा ही है जैसे कोई अंगूर का बाग़ बेचे और उसे मा'लूम भी है कि ख़रीदार अंगूरों से शराब बनाएगा, इस सूरत में अगर बेचने से उस की निय्यत मह़्ज़ समन (या'नी क़ीमत) ह़ासिल करना है तो बेचने में कोई ह़रज नहीं और अगर उस का मक़्सूद येह है कि इस से शराब ह़ासिल की जाए तो मक्रूह है** और येही तफ़्सील अंगूर का बाग़ लगाने में है कि अगर वोह शराब ह़ासिल करने की निय्यत से उगाता है तो मक्रूह है और अगर मक़्सूद अंगूर ह़ासिल करना हो तो मक्रूह नहीं, और अफ़्ज़ल येह है कि शराब बनाने वाले को अंगूर का शीरा न बेचा जाए। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم
(الفتاوی الهندیة، کتاب الاشربه، الباب الثانی فی المتفرقات، ج٥، ص٤١٦-٤١٧)

www.dawateislami.net

बदकारी पर उक्साता है और अस्लिहा बाग़ियों को बेचा ताकि वोह मुसल्मानों से जंग करने पर मदद हासिल करें और मुर्ग़ और बैल उस शख़्स को बेचे जो इन की लड़ाई कराता है तो इन तमाम सूरतों में ज़ेहन इन के कबीरा होने के बारे में मु-तरद्दिद हो जाता है, हां अलबत्ता इन में से बा'ज़ बा'ज़ से ज़ियादा कबीरा होने के क़रीब हैं, फिर मैं ने शैख़ुल इस्लाम अ़लाई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देखा कि उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "हमारे अस्ह़ाब ने नस क़ाइम की है कि शराब का बेचना कबीरा गुनाह है और येह अपने आ़दी को फ़ासिक़ कर देती है और इसी त़रह़ उस के ख़रीदने, क़ीमत खाने, लदवाने और उस में किसी क़िस्म की कोशिश करने का भी येही हुक्म है।"

कबीरा नम्बर **197 :** **नजश[1] या'नी धोके से क़ीमत में ज़ियादती करना**

कबीरा नम्बर **198 :** **दूसरे की बैअ़ पर बैअ़ करना**

कबीरा नम्बर **199 :** **दूसरे की ख़रीद पर ख़रीद करना**

इन तीनों को भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है क्यूं कि इन में ग़ैर को अ़ज़ीम नुक़्सान देना पाया जाता है और इस में कोई शक नहीं कि ग़ैर का नुक़्सान करना जिस का आ़दतन एह़तिमाल नहीं होता कबीरा गुनाह है, नीज़ येह मक्र और धोके में से है और अ़न्क़रीब आएगा कि येह कबीरा है लेकिन **अरौज़ा** में है : "ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करना, अपने भाई की बैअ़ पर बैअ़ करना, सिवुम या'नी सौदे पर सौदा करना, अपने भाई के पैग़ामे निकाह़ पर पैग़ामे निकाह़ देना, शहरी का देहाती के लिये बैअ़ करना, बाहर से जो ग़ल्ला वग़ैरा के आने वाले क़ाफ़िलों को बस्ती से बाहर जा कर मिलना, कसरत का वह्म दिलाने के लिये दूध न दोहना, ऐ़ब वाली शै ऐ़ब बयान किये बिग़ैर बेचना, उस कुत्ते को रखना जिस की कमाई जाइज़ न हो, ग़ैरे ह़राम शराब को रोकना, मुसल्मान ग़ुलाम काफ़िर को बेचना, इसी त़रह़ क़ुरआने पाक और तमाम इ़ल्मे शर-ई की किताबें वग़ैरा काफ़िर को बेचना सग़ीरा

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "नजश मक्रूह है ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमाया। नजश येह है कि मुबैअ़ की क़ीमत बढ़ाए और ख़ुद ख़रीदने का इरादा न रखता हो इस से मक़्सूद येह होता है कि दूसरे गाहक को रग़बत पैदा हो और क़ीमत से ज़ियादा दे कर ख़रीद ले और येह ह़क़ीक़तन ख़रीदार को धोका देना है जैसा कि बा'ज़ दुकानदारों के यहां इस क़िस्म के आदमी लगे रहते हैं गाहक को देख कर चीज़ के ख़रीदार बन कर दाम बढ़ा दिया करते हैं और उन की इस ह़-र-कत से गाहक धोका खा जाते हैं। गाहक के सामने मुबैअ़ की ता'रीफ़ करना और उस के ऐसे औसाफ़ बयान करना जो न हों ताकि ख़रीदार धोका खा जाए येह भी नजश है।"
(बहारे शरीअ़त, जि. 2, हिस्सा : 11, स. 73,74)

www.dawateislami.net

गुनाह हैं।'' अगर्चे इन में से अक्सर महल्ले नज़र हैं बहर हाल येह सब उसी वक़्त कबीरा हो सकते हैं जब कि कबीरा की ता'रीफ़ यूं की जाए कि ''जिस में सज़ा हो वोह कबीरा है।''

और इस ता'रीफ़ की बिना पर जिस में शदीद वईद हो वोह कबीरा नहीं लेकिन चूंकि धोका, ईज़ाए मुस्लिम और ज़ख़ीरा अन्दोज़ी वग़ैरा में शदीद वईद है, लिहाज़ा मुनासिब येही ता'रीफ़ है कि ''कबीरा गुनाह वोह है जिस में शदीद वईद हो।''

फिर मैं ने अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कलाम को देखा कि उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अरौज़ा** में बा'ज़ को मुत्लक़न सग़ीरा क़रार देना महल्ले नज़र है।'' गोया मैं ने जिस बात का तज़्किरा किया है और अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी जिस की जानिब इशारा किया है येही वोह सबब है जिस की बिना पर मैं ने इख़्तिसार से काम लेते हुए **अरौज़ा** की मज़्कूरा मिसालों में से बा'ज़ को ह़ज़्फ़ कर दिया।

नजश से मुराद येह है कि किसी का ख़ुद ख़रीदने का इरादा न हो लेकिन दूसरे गाहक को धोका देने के लिये क़ीमत में इज़ाफ़ा करे।

बैअ़ अ़लल बैअ़ येह है कि कोई शख़्स ख़यार के ज़माने में ख़रीदने वाले से कहे : ''येह वापस कर दे और मैं तुझे इस से अच्छी चीज़ इसी क़ीमत में या इस जैसी इस से कम क़ीमत में फ़रोख़्त करता हूं।''

शिरा अ़लश्शिरा येह है कि ख़यार के ज़माने में बेचने वाले से कहे : ''बैअ़ फ़स्ख़ कर दे ताकि मैं येह चीज़ ज़ियादा क़ीमत मैं तुझ से ख़रीद लूं।''[1]

हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इर्शाद फ़रमाया है : ''दूसरे के सौदे पर उस की इजाज़त के बिग़ैर सौदा करना ह़राम है या'नी क़ीमत तै़ हो जाने के बा'द क़ीमत में इज़ाफ़ा करना या ख़रीदने वाले को अच्छी चीज़ दिखाना। बैअ़ तै़ होने के बा'द ऐसा करना ह़राम है और बैअ़ लाज़िम होने से क़ब्ल ऐसा करना इस से भी ज़ियादा ह़राम है, और येही दूसरे की बैअ़ पर बैअ़ और उस की

---

1 : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **बैअ़ अ़लल बैअ़** और **शिरा अ़लश्शिरा** का हुक्म बयान करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : ''एक शख़्स के दाम चुका लेने के बा'द दूसरे को दाम चुकाना मम्नूअ़ है, इस की सूरत येह है कि बाएअ़ व मुश्तरी एक समन पर राज़ी हो गए सिर्फ़ ईजाब व क़बूल ही या मुबैअ़ को उठा कर दाम दे देना ही बाक़ी रह गया है दूसरा शख़्स दाम बढ़ा कर लेना चाहता है या दाम उतना ही रहेगा मगर दुकानदार से इस का मैल है या येह ज़ी वजाहत शख़्स है दुकानदार उसे छोड़ कर पहले शख़्स को नहीं देगा।''

मज़ीद फ़रमाते हैं : ''जिस त़रह़ ख़रीदार के लिये येह सूरत मम्नूअ़ है बाएअ़ के लिये भी मुमा–न–अ़त है। म–सलन एक दुकानदार से दाम तै़ हो गए दूसरा कहता है मैं इस से कम में दूंगा या वोह इस का मुलाक़ाती है कहता है मेरे यहां से लो तो मैं भी इतने ही में दूंगा या इजारे में एक मज़दूर से उजरत तै़ होने के बा'द दूसरा कहता है मैं कम मज़दूरी लूंगा या मैं भी इतनी ही लूंगा येह सब मम्नूअ़ हैं।'' (बहारे शरीअ़त, जि. 2, हिस्सा : 11, स. 74)

www.dawateislami.net

शिरा पर शिरा करना है। हां अगर धोके वाला माल हो तो सय्यिदुना इब्ने कज رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नज़्दीक येह बैअ़ जाइज़ है।

मुनासिब येही है कि इन के इत़्लाक़ के मुत़ाबिक़ ही हो नीज़ ह़दीसे पाक में भी कोई फ़र्क़ नहीं, नीज़ एक शख़्स का बैअ़ के लुज़ूम से क़ब्ल मुश्तरी को कोई चीज़ बेचना इसी त़रह़ है कि इस ने उस से वोह चीज़ कम क़ीमत में ख़रीदी हो जैसा कि बैअ़ अ़लल बैअ़ की ता'रीफ़ है और मुश्तरी से बैअ़ के लुज़ूम से क़ब्ल ज़ियादती का मुत़ा-लबा करना भी शिरा अ़लश्शिरा की त़रह़ है क्यूं कि येह दोनों सूरतें फ़स्ख़ की त़रफ़ ले जाती हैं और नुक़्सान ह़ासिल होता है।"

﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽

कबीरा नम्बर 200 : बैअ़ वग़ैरा में धोका देना जैसे तस्रिया या'नी ख़रीदार को कसरत का वह्म दिलाने के लिये दूध वाले जानवर का दूध न दोहना

﴾1﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने हम पर अस्लिह़ा उठाया वोह हम में से नहीं और जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं।"

(صحيح مسلم ، كتاب الايمان ، باب قول النبي ﷺ من غشنا فليس منا ، الحديث: ٢٨٣ ، ص ٦٩٥)

﴾2﴿...... शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक अनाज के ढेर के पास से गुज़रे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस में अपना हाथ दाख़िल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उंगलियां तर (या'नी गीली) हो गईं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अनाज वाले ! येह क्या है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस पर बारिश हुई थी।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने भीगे हुए अनाज को ऊपर क्यूं न रखा कि लोग देख लेते, जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं।"

(المرجع السابق، الحديث: ٢٨٤ ، ص ٦٩٥)

﴾3﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मिलावट की वोह हम में से नहीं।"

(جامع الترمذی، ابواب البیوع، باب ماجاء فی کراھیة......الخ، الحدیث: ١٣١٥، ص ١٧٨٤)

﴾4﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अनाज बेचने वाले एक शख़्स के पास से गुज़रे तो उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "कैसे बेच रहे हो ?" उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बताया पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि अपना दस्ते

www.dawateislami.net

मुबारक इस में दाख़िल कीजिये, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा किया तो उसे तर पाया चुनान्चे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मिलावट की वोह हम में से नहीं।"

(سنن ابی داؤد ،كتاب البيوع ،باب فی النهی عن الغش، الحديث:٣٤٥٢ ، ص ١٤٨١)

《5》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक अनाज के पास से गुज़रे जिस के मालिक ने उसे अच्छा ज़ाहिर किया हुवा था, पस आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ उस में दाख़िल किया तो वोह घटिया साबित हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह अ़लाहिदा बेच ! और येह अ़लाहिदा बेच ! जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب ، الحديث:٥١١٣ ، ج٢ ،ص ٣٠٩)

《6》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बाज़ार तशरीफ़ ले गए वहां ग़ल्ले का एक ढेर देखा तो उस में अपना दस्ते अक़्दस दाख़िल किया और बारिश से भीगे हुए अनाज को बाहर निकाल कर इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें किस ने इस (मिलावट) पर उक्साया ?" उस ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है ! येह एक ही खाना है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तूने तर और ख़ुश्क अनाज को अ़लाहिदा अ़लाहिदा क्यूं न रखा ताकि ख़रीदने वाले जिस को जानते ख़रीद लेते, जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं।" (المعجم الاوسط ، الحديث:٣٧٧٣ ،ج٣، ص ٢٩)

《7》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक शख़्स के पास से गुज़रे जो अनाज बेच रहा था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ ग़ल्ले के मालिक ! क्या नीचे वाला अनाज ऊपर वाले अनाज जैसा ही है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हां ऐसा ही है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुसल्मानों को धोका दिया वोह हम में से नहीं।" (المعجم الكبير ، الحديث:٩٢١، ج١٨ ،ص ٣٥٩)

《8》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक मरतबा एक कच्ची खाई के किनारे से गुज़रे तो देखा कि एक इन्सान दूध बेच रहा है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उसे देखा तो क्या देखते हैं कि उस में पानी मिला हुवा है, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस से फ़रमाया : "उस वक़्त तेरा क्या ह़ाल होगा जब क़ियामत के दिन तुझे कहा जाएगा कि दूध से पानी अ़लाहिदा कर।" (شعب الايمان للبيهقى ، باب فى الامانات ووجوب ادائهاالى اهلها،الحديث:٥٣١٠ ،ج ٤ ،ص ٣٣٣)

《9》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "बेचने के लिये जो दूध हो उस में पानी न मिलाओ।" (المرجع السابق، الحديث: ٥٣٠٨،ج٤،ص٣٣٣)

www.dawateislami.net

《10》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम से पहले (या'नी साबिक़ा उम्मतों में जब कि शराब ह़राम न थी) एक शख़्स था वोह एक गाउं में शराब बेचने की ख़ातिर ले गया, उस ने उस में पानी मिला कर उसे दुगना कर दिया फिर उस ने एक बन्दर ख़रीद लिया और समुन्दर में एक कश्ती पर सुवार हो गया, जब समुन्दर में पहुंचा तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बन्दर को दीनारों की थैली के बारे में इल्हाम फ़रमाया, लिहाज़ा उस ने वोह थैली ली और बादबान के डन्डे पर चढ़ गया, उस ने थैली खोली जब कि उस का मालिक भी उसे देख रहा था, वोह एक दीनार समुन्दर में और एक कश्ती में फेंकने लगा यहां तक कि तमाम दीनारों को दो ह़िस्सों में तक़्सीम कर दिया।" (المرجع السابق)

《11》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम से पहले एक शख़्स था उस ने शराब ले कर उस में आधा पानी मिलाया और फिर उसे बेच दिया, जब रक़म इकठ्ठी हो गई तो एक लोमड़ी आई और उस ने नक़्दी की वोह थैली ले ली और बादबान के डन्डे पर चढ़ गई और वोह एक दीनार कश्ती में फेंकती और एक समुन्दर में यहां तक कि बटवा ख़ाली हो गया।" (المرجع السابق، الحديث:٥٣٠٩، ج٤، ص٣٣٣)

कई वाक़िआत के एह़तिमाल की वजह से इस में और इस से पहले वाली रिवायत में कोई मुनाफ़ात नहीं।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने धोका दिया वोह हम में से नहीं।"

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم من غشنا فليس منا، الحديث:٢٨٣، ص ٦٩٥)

《12》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सबाअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर से एक ऊंटनी ख़रीदी, जब मैं उसे ले कर निकला तो ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला मुझे मिले जब कि वोह अपना तहबन्द घसीट रहे थे और दरयाफ़्त फ़रमाया : "आप इसे ख़रीदना चाहते हैं ?" मैं ने कहा : "जी हां।" तो उन्हों ने कहा : "क्या आप को इस के (ऐ़ब के) बारे में वज़ाह़त कर दी गई है ?" मैं ने कहा : "इस में क्या ऐ़ब हो सकता है, बेशक येह ज़ाहिरन मोटी ताज़ी सिह़्ह़त मन्द है।" आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "आप का इस से सफ़र का इरादा है या गोश्त खाने का ?" मैं ने कहा : "मेरा तो ह़ज का इरादा है।" आप ने कहा : "आओ वापस लौटाने चलें।" तो ऊंटनी (बेचने) वाले ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप की इस्लाह़ फ़रमाए, आप क्या चाहते हैं ? क्या आप बैअ़ तोड़ना चाहते हैं ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक मैं ने हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "किसी के लिये जाइज़ नहीं कि किसी चीज़ को ऐ़ब बयान किये बिग़ैर बेचे और जिस को ऐ़ब मा'लूम हो उस के लिये ऐ़ब बयान न करना भी जाइज़ नहीं।"

(شعب الايمان، باب فی الامانات ووجوب ادائها الی اهلها، الحديث:٥٢٩٥، ج٤، ص٣٣٠)

www.dawateislami.net

《13》...... इब्ने माजह शरीफ़ में येही वाक़िआ क़दरे इख़्तिसार के साथ इस फ़र्क़ के साथ है कि हज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "जिस ने ऐब वाली चीज़ ऐब बयान किये बिग़ैर बेची वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी में रहता है या हमेशा फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं।" (سنن ابن ماجۃ، ابواب التجارات، باب من باع عیبا فلیبینہ ، الحدیث:۲۲۴۷ ، ص ۲۶۱۱)

《14》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मुसल्मान मुसल्मान का भाई है और किसी मुसल्मान के लिये अपने भाई को ऐब वाली चीज़ ऐब बयान किये बिग़ैर बेचना जाइज़ नहीं।" (المرجع السابق،الحدیث:۲۲۴۶ ، ص ۲۶۱۱)

《15》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन एक दूसरे के लिये ख़ैर ख़्वाह हैं और एक दूसरे से महब्बत करते हैं अगर्चे उन के घर और बदन दूर हों और फ़ासिक़ लोग एक दूसरे को धोका देने वाले और ख़ियानत करने वाले हैं अगर्चे उन के घर और बदन क़रीब ही हों।" (الترغیب والترھیب ،کتاب البیوع ، الترھیب من الغش ......الخ ،الحدیث:۲۷۵۰ ، ج۲ ، ص ۳۶۸)

《16》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है।" हम ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस के लिये ? तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस की किताब, उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, मुसल्मानों के अइम्मए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی और आम लोगों के लिये।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ، باب بیان ان الدین النصیحۃ ،الحدیث:۱۹۶ ، ص ۶۸۹)

《17》...... नसाई शरीफ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं : "यक़ीनन दीन तो ख़ैर ख़्वाही का नाम है।"

(سنن النسائی ،کتاب البیعۃ ،باب النصیحۃ للامام، الحدیث:۴۲۰۲ ، ص ۲۳۶۲)

《18》...... अबू दावूद शरीफ़ में अल्फ़ाज़ येह हैं कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बेशक दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है, यक़ीनन दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है, बेशक दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الادب ، باب فی النصیحۃ ، الحدیث:۴۹۴۴، ص ۱۵۸۵)

《19》...... त-बरानी शरीफ़ में इस तरह है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "दीन की अस्ल ख़ैर ख़्वाही है।" सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस के लिये ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के दीन, मुसल्मानों के अइम्मए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی और आम लोगों के लिये।" (المعجم الاوسط ، الحدیث:۱۱۸۴،ج۱،ص۳۲۷)

www.dawateislami.net

﴾20﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''मैं इस्लाम पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त करता हूं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ पर हर मुसलमान के लिये ख़ैर ख़्वाही करने की शर्त़ आ़इद की, पस मैं ने इस बात पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की और इस मस्जिद के रब की क़सम ! बेशक मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं।''

(صحیح البخاری ،کتاب الایمان ، باب قول النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ و سلّم الدین النصیحۃ ، الحدیث:٥٨، ص٧)

﴾21﴿...... एक और रिवायत में इस त़रह़ है : ''मैं ने हुक्म सुनने और इत़ाअ़त करने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की और येह कि हर मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही करूं और जब आप कोई चीज़ बेचते या ख़रीदते तो फ़रमाते : ''जो चीज़ मैं ने तुझ से ली वोह मुझे उस चीज़ से ज़ियादा पसन्द है जो मैं ने तुझे दी पस तुझे इख़्तियार है।''

(سنن ابی داؤد ،کتاب الادب ، باب فی النصیحۃ ، الحدیث:٤٩٤٥، ص ١٥٨٥)

﴾22﴿...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे अपने बन्दे की इ़बादत में सब से ज़ियादा पसन्द मेरे लिये ख़ैर ख़्वाही करना है।'' (المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث ابی امامۃ الباھلی، الحدیث:٢٢٢٥٣ ، ج٨ ،ص ٢٨٠)

﴾23﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो मुसलमानों के मुआ़-मले को अहम्मिय्यत नहीं देता वोह उन में से नहीं, और जो सुब्ह़ शाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, उस की किताब, उस के इमाम और आ़म मुसलमानों के लिये ख़ैर ख़्वाही नहीं करता वोह भी उन में से नहीं।'' (المعجم الصغیر للطبرانی،الحدیث:٩٠٨ ، ج٢،ص ٥٠)

﴾24﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वोह अपने भाई के लिये भी वोही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।''

(صحیح البخاری کتاب الایمان ، باب من الایمان ان یحب لاخیہ ......الخ ، الحدیث: ١٣ ، ص ٣)

﴾25﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बन्दा ईमान की ह़क़ीक़त को उस वक़्त तक नहीं पा सकता जब तक कि लोगों के लिये भी वोही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।''

(صحیح ابن حبان،کتاب الایمان،باب ماجاء فی صفات المؤمن،، الحدیث:٢٣٥،ج١،ص٢٢٩)

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इन अहादीसे मुबा-रका में इस गुनाह के मुर-तकिब से इस्लाम की नफ़ी किये जाने की वजह से इसे कबीरा गुनाह कहा गया है और इस वजह से भी कि वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी में रहता है या मलाएका उस पर ला'नत करते रहते हैं, फिर मैं ने बा'ज़ को इस के कबीरा होने की तस्रीह़ करते हुए भी देखा, लेकिन **अरौज़ा** में इसे सग़ीरा शुमार किया गया ह़ालां कि येह बात मह़ल्ले नज़र है क्यूं कि इस में शदीद वई़द पाई जाती है।

ह़राम धोका येह है : "सामान वाला जानता हो, ख़्वाह वोह बेचने वाला हो या ख़रीदने वाला, कि इस में ऐसा ऐ़ब है कि अगर लेने वाला उस पर मुत्तलअ़ हो गया तो इसे न लेगा।" लिहाज़ा इस पर लाज़िम है कि उसे बता दे ताकि वोह उस को लेने में बसीरत से काम ले और ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वग़ैरा की ह़दीस की बिना पर कहा गया है कि ज़रूरी है कि जो ऐ़ब नहीं जानता उस को वोह ऐ़ब बता दिया जाए अगर्चे वोह उस से न भी पूछे जैसा कि जब किसी इन्सान को देखे कि वोह किसी औ़रत को निकाह़ का पैग़ाम दे रहा है और वोह मर्द या औ़रत के किसी ऐ़ब को जानता है तो उस पर वाजिब है कि उन्हें ख़बर दे या किसी इन्सान को किसी मुआ़-मले में दूसरे के साथ देखे तो वोह दोनों में से किसी एक में कोई ऐ़ब जानता हो तो दूसरे को बता दे अगर्चे वोह उस से न भी पूछे और आ़म और ख़ास मुसल्मानों के लिये जिस ख़ैर ख़्वाही की ताकीद की गई है येह सब उसी की अदाएगी है।

हम से एक त़वील सुवाल पूछा गया जिस में बहुत से अह़काम का तज़्किरा है लिहाज़ा मैं यहां उस का ज़िक्र करना पसन्द करूंगा क्यूं कि इस में जिस नुक़्सान की निशान देही की गई है वोह वोही है जिस के बारे में मैं येह किताब तालीफ़ कर रहा हूं और इस का मुर-तकिब वोही हो सकता है जिस का कोई दीन न हो **नीज़** जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल हो।

सुवाल : आज कल येह आ़दत है कि बा'ज़ ताजिर ह़ज़रात बहुत छोटे बरतन में काली मिर्च ख़रीदते हैं जैसा कि बोरिया होता है, फिर उसे एक ऐसे बड़े और भारी बरतन में डाल लेते हैं जो बोरिये का **5** गुना होता है क्यूं कि वोह तक़रीबन **3** मन होता है और फिर उस भारी और बड़े बरतन में थैले जम्अ़ होते रहते हैं यहां तक कि वोह **20** मन हो जाता है फिर उस बरतन और उस में मौजूद चीज़ को बेचा जाता है और वज़्न कुल का होता है लिहाज़ा क़ीमत बरतन और उस में मौजूद चीज़ के मुत़ाबिक़ वुसूल की जाती है,

www.dawateislami.net

(1)...... क्या येह फ़े'ल जाइज़ है या ह़राम और धोका है, जिस के करने वाले को इमाम चाहे तो ता'ज़ीरन कोड़े मारे, बाज़ारों में चक्कर लगवाए, क़ैद करे और अगर ह़ाकिम का येह मज़्हब हो कि उस माल का लेना जाइज़ है तो ले ले ?

(2)...... तो क्या ऐसी बैअ़ सह़ीह़ होगी या बात़िल और अगर बात़िल है तो क्या येह बात़िल त़रीक़े से लोगों का माल खाना हुवा या नहीं।

(3)...... क्या अमीरे शह्र पर लाज़िम है कि वोह ताजिरों को डांटे और इस से मन्अ़ करे और उन में से जो ऐसा करे उस को सज़ा दे ?

(4)...... क्या मुत्तक़ी ताजिरों पर लाज़िम है कि जब उन्हें किसी के बारे में इ़ल्म हो कि वोह ऐसा करता है कि वोह शर-ई या सियासी ह़ाकिमों को ख़बर दें यहां तक कि वोह उसे सख़्ती से ऐसा करने से मन्अ़ करें और अगर इन्कार करे तो सख़्त सज़ा दें ?

(5)...... क्या येह इस सूरत के इ़लावा सूरतों में भी मुम्किन है ? म-सलन

☆...... बा'ज़ इ़त्र बेचने वाले और ताजिर बा'ज़ चीज़ों को पानी की त़रफ़ ले जाते हैं पस उस से पानी ले लेते हैं जो उस के वज़्न में एक तिहाई तक का इज़ाफ़ा कर देता है म-सलन ज़ा'फ़रान। (या'नी पानी मिला कर वज़्न में इज़ाफ़ा कर देते हैं)

☆...... उन में से बा'ज़ चीज़ों को इस त़रह़ तय्यार करते हैं कि वोह मक्खन की त़रह़ हो जाती हैं पस वोह उसे मक्खन ज़ाहिर कर के बेचते हैं।

☆...... बा'ज़ कपड़ा बेचने वाले कपड़ों को थोड़ा सा पैवन्द लगा देते हैं फिर उसे बयान किये बिग़ैर बेच देते हैं, और येही त़रीक़ा चटाइयों वग़ैरा में भी अपनाया जाता है। (मगर आज कल गांठों वाले कपड़े ऐब बयान किये बिग़ैर बेचे जाते हैं)

☆...... इसी त़रह़ बा'ज़ ख़ाम कपड़े को इस त़रह़ लपेटते हैं कि उस की तमाम क़ुव्वत चली जाती है फिर उसे निचोड़ते हैं और उस में एक ख़ास क़िस्म की ख़ुश्बू रख देते हैं जिस से वह्म होता है कि येह नया है और उसे नया ज़ाहिर कर के बेच देते हैं।

☆...... बा'ज़ अपनी दुकान में बहुत ज़ियादा अंधेरा रखने की कोशिश करते हैं ताकि गहरा रंग हलका और भद्दा रंग ह़सीन नज़र आए। (मगर आज कल बा'ज़ दुकानदार बहुत तेज़ रोशनी वाले बल्ब लगा कर ऐसा करते हैं)

☆...... बा'ज़ अपने हथियार मोम के साथ सैक़ल कर लेते हैं यहां तक कि मोम की कसरत और उस की उ़म्दा चमक की वजह से वोह मुकम्मल त़ौर पर नज़र नहीं आते।

☆...... बा'ज़ सुनार सोना चांदी के साथ खोट मिला देते हैं फिर तमाम को सोना या चांदी ज़ाहिर कर के बेचते हैं। (मिलावट की येह सूरत फ़ी ज़माना मा'रूफ़ है)

☆...... बा'ज़ सिक्के या ज़ेवरात की तय्यारी के लिये सोना और चांदी का मा'लूम वज़्न लेते हैं लेकिन उस वज़्न में से सोना चांदी कम कर के उस की जगह खोट मिला देते हैं। (जैसा कि आज कल काग़ज़ी जा'ली नोट बनाए जाते हैं)

☆...... गर्म मसा-लहों और दानों वाले अक्सर ताजिर अपने माल में से आ'ला को ऊपर और अदना

www.dawateislami.net

को नीचे रख देते हैं, घटिया को आ'ला से मिला देते हैं यहां तक कि ख़रीदने वाले को मा'लूम नहीं हो सकता और घटिया ले लेता है अगर वोह जान ले तो न ख़रीदे।

और इस के इ़लावा भी मिलावट की बहुत सी सूरतें हैं यहां हम ने जो चन्द सूरतें ज़िक्र की हैं तो मह़ज़ इस लिये कि इन का आप हुक्म जान लें और बक़िय्या उन तमाम सूरतों को इन्ही पर क़ियास कर लें जिन का हम ने तज़्किरा नहीं किया।

अगर आप कारख़ानों, पेशों, तिजारतों, ख़रीदो फ़रोख़्त, इ़त्र, सोना और दिरहमो दीनार बनाने वालों में ग़ौर करेंगे तो उन के हां धोका, मिलावट, ख़ियानत, मक्र और झूटे ह़ीलों से ह़ीला बाज़ी करने वालों को पाएंगे जिस से त़बीअ़त नफ़रत करती है। क्यूं कि हम उन्हें अपने मुआ़-मलात में ऐसा पाते हैं जैसा कि दो आदमी हैं जिन के पास एक दूसरे का मुक़ाबला करने के लिये दो तलवारें हैं जब भी कोई एक दूसरे पर क़ादिर होगा तो दूसरे को क़त्ल कर देगा, इसी त़रह़ ताजिर और ख़रीदो फ़रोख़्त करने वालों में से हर एक की निय्यत होती है कि अगर वोह अपने साथी पर काम्याब हो जाए तो जाइज़ व ना जाइज़ हर त़रीक़े से उस का तमाम माल ले ले और उसे हलाक कर दे और फ़क़ीर बना दे, लिहाज़ा जब उन में से किसी को येह बात ह़ासिल हो जाती है तो बहुत ज़ियादा ख़ुश होता है और अपने ख़बीस नफ़्स को तसल्ली देता है कि वोह ग़ालिब आ गया और धोका देने में काम्याब हो गया है यहां तक कि उस का तमाम माल भी ले लिया है और उस कुत्ते की त़रह़ काम्याब हो गया है जो मुर्दार पर झपटता है और उस को खा जाता है यहां तक कि उस की कोई चीज़ नहीं छोड़ता।

लिहाज़ा मुसल्मानों पर मेहरबानी करते हुए इन के अह़काम बयान कर दें यहां तक कि लोग जान लें ताकि मुख़ा-लफ़त करने वाले पर अ़ज़ाब साबित हो जाए और वोह हुज्जत से हलाक हो जाए और जिस को आगाह होने के बा'द अ़मल की तौफ़ीक़ मिले वोह हुज्जत से ज़िन्दा हो जाए और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस पर तफ़्सीली कलाम किया है लेकिन लोग इन तमाम के अह़काम की वज़ाह़त के मोह़ताज हैं और इन में से बा'ज़ इस की हु़रमत को न जानते हुए ऐसा करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को अपने एह़सान और करम से जन्नत अ़त़ा फ़रमाए (आमीन)।

जवाब : बरतन को उस में मौजूद चीज़ के साथ बेचने के मस्अले में शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का इत्तिफ़ाक़ है कि जब अकेले बरतन का वज़्न मा'लूम न हो तो उस में डाली हुई चीज़ के साथ उसे बेचा गया तो वोह बैअ़ बात़िल है क्यूं कि इस सूरत में धोका है और सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने धोके की बैअ़ से मन्अ़ फ़रमाया है, इसी त़रह़ अगर जो चीज़ बरतन में डाली जा रही है उस का वज़्न मा'लूम न हो या बरतन की क़ीमत तै न हो या'नी अ़क़्द में ऐसी चीज़ के मुक़ाबले में माल ख़र्च करना शर्त़ हो जो माल नहीं है (तो येह बैअ़ भी बात़िल होगी)। जब येह साबित हो गया तो इस से मा'लूम हुवा कि उ़-लमाए शवाफ़ेअ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی इस बैअ़ के बात़िल होने पर

www.dawateislami.net

मुत्तफ़िक़ हैं। क्यूं कि **मस्अले की सूरत जिस त़रह़ कि साइल ने ज़िक्र की, येह है** कि फ़ासिक़ ताजिर बहुत से पैवन्द लगे हुए थैले में मिर्च डालते हैं जिस से उस का वज़्न बढ़ जाता है, फिर उस मिर्च वग़ैरा को बरतन समेत बेचते हैं मिसाल के त़ौर पर हर मन **10** दिरहम का, फिर मिर्च का बरतन समेत वज़्न करते हैं जब येह तमाम **100** मन हो जाता है तो **1000** दिरहम का बेच देते हैं और इस में **बात़िल होने की वजह** येह है कि उन्हों ने बरतन को भी बेचने वाली चीज़ में शुमार किया ह़ालां कि इस का वज़्न मज्हूल है बल्कि उस में मिलावट और उन की त़रफ़ से धोका है क्यूं कि वोह उस बरतन के अन्दर मिर्च के लिये ख़ाने बनाते हैं जो उस के वज़्न में इज़ाफ़ा करते हैं और ज़ाहिरन उस को ऐसा रखते हैं कि ख़रीदने वाले को कम वज़्नी होने का वह्म होता है इस ह़ैसिय्यत से कि अगर आप उसे ज़ाहिरी त़ौर पर देखेंगे तो येह **4** मन से ज़ियादा नहीं होगा और जब मा'लूम होने के बा'द उसे अन्दर से देखेंगे तो **20** मन होगा, पस इस अ़ज़ीम धोके की वजह से इन तमाम में बैअ़ बात़िल है येह धोका **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से उस काम में ख़ियानत पर मुश्तमिल है जिस का इन्हों ने हुक्म दिया और जिस से मन्अ़ फ़रमाया।

और ऐसा काम वोह शख़्स कैसे कर सकता है जो येह जानता है कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होना है और फ़ानी ज़िन्दगी में जो जम्अ़ किया उसे वारिसों के लिये छोड़ कर जाना है और इस का भी इ़ल्म नहीं कि वोह इस से नफ़्अ़ भी उठाएंगे या नहीं बल्कि अक्सर ताजिरों की औलाद उसे ना फ़रमानियों और बुरी आ़दतों में ज़ाएअ़ कर देती है जो किसी पर मख़्फ़ी नहीं तो कैसे कोई इस बात़िल झूटे ह़ीले से अपने भाई को धोका दे कर उस से उस के माल का **80** गुना वुसूल कर लेता है।

येह सुवाल में मज़्कूर इस बात की ताईद करता है कि इस ज़माने में ख़रीदो फ़रोख़्त करने वाले एक दूसरे के साथ दो मद्दे मुक़ाबिल लड़ने वालों की त़रह़ हैं जिन के हाथ में तलवारें हों कि उन दोनों में से जो भी अपने साथी पर क़ादिर होता है उसे क़त्ल कर देता है ह़ालां कि येह मुसल्मानों की शान नहीं और न ही मुअमिनीन का क़ानून है क्यूं कि,

《**26**》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन मोमिन के लिये दीवार की त़रह़ है जिस का बा'ज़ बा'ज़ को पुख़्ता करता है।"

(صحیح البخاری، کتاب الصلوٰۃ، باب تشبیك الاصابع فی المسجدوغیرہ، الحدیث:۴۸۱،ص۴۰)

《**27**》...... साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन मोमिन का भाई है उस पर ज़ुल्म नहीं करता, न उसे गाली देता है और न ही उस से बग़ावत करता है।" (صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، الحدیث:۶۵۷۸، ص۱۱۲۹، بتغیر قلیل)

www.dawateislami.net

हम तिजारत या ख़रीदो फ़रोख़्त को ह़राम क़रार नहीं देते तह़क़ीक़ हमारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان बाहम ख़रीद व फ़रोख़्त करते और कपड़े वग़ैरा की तिजारत भी करते थे, और इसी त़रह़ उन के बा'द उ़-लमा और सु-लह़ाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی भी तिजारत करते रहे लेकिन शर-ई क़ानून और उस ह़ाल के मुत़ाबिक़ जिस की त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान से इशारा किया है :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا۝ (پ۵، النساء:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे के माल नाह़क़ न खाओ मगर येह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रिज़ा मन्दी का हो और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है।

पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वाज़ेह़ फ़रमा दिया कि तिजारत उसी सूरत में जाइज़ हो सकती है जब कि फ़रीक़ैन की रिज़ा मन्दी से हो और रिज़ा मन्दी तब ही ह़ासिल हो सकती है जब कि वहां न तो मिलावट हो और न ही धोका।

और यहां पर मिलावट और धोका इस ह़ैसिय्यत से है कि उस शख़्स का अक्सर माल ले लिया गया और वोह अपने साथ होने वाले उस बात़िल ह़ीले से बे ख़बर है जो मिलावट और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ धोका देही पर दलालत करता है, पस येह शदीद ह़राम और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना राज़गी का सबब है, और ऐसा करने वाला साबिक़ा व आयन्दा अह़ादीसे मुबा-रका की वई़दों के तह़त दाख़िल है।

पस जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा, अपने दीन और दुन्या की सलामती, मुरव्वत, इ़ज़्ज़त और अपनी आख़िरत चाहता है उसे चाहिये कि अपने दीन के लिये कोशिश करे और इस धोके और मिलावट पर मब्नी कारोबार में से कोई चीज़ इख़्तियार न करे और तह़रीरी त़ौर पर और सच्चाई के साथ बरतन का वज़्न ख़रीदने वाले को बयान कर दे फिर जब उस ने उस का वज़्न बयान कर दिया तो उस के लिये जाइज़ है कि बरतन और उस में मौजूद शै को एक क़ीमत में बेच दे, यहां तक कि फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर ख़रीदने वाले को कस्तूरी के बरतन और उस के वज़्न के बारे में बता दिया या'नी कहा कि येह बरतन दस (10) मन वज़्नी है और येह कस्तूरी बीस (20) मन है और मैं तुम्हें येह तीस (30) मन एक हज़ार दिरहम का बेचूंगा और ख़रीदने वाले ने देखने और इत़्मीनाने क़ल्ब के बा'द ख़रीद लिया तो येह बैअ़ जाइज़ है और येह मिलावट, धोका और ख़ियानत की तमाम वुजूह से ख़ाली होने की वजह से मक़्बूल होगी क्यूं कि बरतन और कस्तूरी का वज़्न बयान करने के बा'द एक मन को एक हज़ार या सो दिरहम का बेचने में कोई ह़रज नहीं।

www.dawateislami.net

बेशक दुन्या व आख़िरत में हलाक करने वाला बड़ा अ़ज़ाब उस के लिये होगा जो बरतन में धोका देता है, पस ज़ाहिरन उसे हलका ज़ाहिर करता है जब कि ह़क़ीक़त में वोह भारी होता है, फिर तमाम को एक ही क़ीमत में बेचता है और ख़रीदने वाला इस से बे ख़बर होता है जब कि बेचने वाला उस से मक्कारी करता है ह़ालां कि वोह जानता है कि उस का वज़्न कम है और इस वक़्त ज़ियादा मा'लूम हो रहा है। येह पहले सुवाल का जवाब है या'नी एक ही क़ीमत में बरतन और उस में मौजूद शै को बेचना।

इस के इ़लावा मिलावट और धोकेबाज़ी की दूसरी बहुत सी सूरतें, जो साइल ने बयान की हैं उन अ़जीब उमूर में से हैं जिन की मिसाल कुफ़्फ़ार से भी पेश नहीं की जा सकती चे जाएकि कोई मुसल्मान इस त़रह़ करे बल्कि कुफ़्फ़ार जो तिजारत करते हैं उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है ह़ालां कि इतनी ज़ियादा मिलावट वोह भी नहीं करते। इस से मेरी मुराद मिलावट की वोह सूरतें जो ताजिर, इ़त्र बेचने वाले, कपड़ा बेचने वाले, सोने का काम करने वाले, सिक्के बनाने वाले, बुनाई का काम करने वाले और तमाम कारख़ानों और सन्अ़त व ह़िर्फ़त वाले करते हैं, येह तमाम की तमाम शदीद ह़राम हैं और ऐसा करने वाला फ़ासिक़, मिलावट और ख़ियानत करने वाला है जो बात़िल त़रीक़े से लोगों का माल खाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी और अपने आप को भी धोका देता है क्यूं कि इस का अ़ज़ाब उसी को होगा और इस की कसरत ज़माने के फ़साद, क़ियामत के क़ुर्ब, मालों और मुआ़-मलात के फ़साद, कारख़ानों और खेतियों से बल्कि काश्त कारी की ज़मीनों से भी ब-रकात के उठ जाने की मूजिब है और इस फ़रमाने इ़ब्रत निशान में ग़ौरो फ़िक्र करो कि,

﴾28﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद है : "बारिश का न होना क़ह़त़ नहीं बल्कि क़ह़त़ तो येह है कि बारिश तो हो लेकिन उस में तुम्हारे लिये ब-र-कत न हो।" (مسند ابی داؤد الطیالسی،الجزء العاشر،ابو صالح عن ابی ھریرۃ، الحدیث:۲۴۲۸،ص۳۱۸بتغیرِقلیلٍ)

तिजारत और मुआ़-मलात में ताजिर और सन्अ़त व ह़िर्फ़त वाले जिन बुराइयों का शिकार हैं उन की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर तारीकी मुसल्लत़ कर दी पस उन के माल ले लिये गए, घर तबाह कर दिये गए बल्कि उन पर कुफ़्फ़ार को मुसल्लत़ कर दिया गया पस उन्हों ने उन्हें क़ैद कर के ग़ुलाम बना लिया और उन्हें अ़ज़ाब का मज़ा चखाया, इस आख़िरी ज़माने में अक्सर जगहों पर मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार ने क़ैद कर के और माल व अस्बाब छीन कर उन पर ग़-लबा पा लिया है क्यूं कि ताजिरों ने त़रह़ त़रह़ की मिलावटों को राइज किया और ज़ुल्म, धोका और ना जाइज़ त़रीक़ों में से जिस त़रीक़े से भी लोगों का माल लेने पर क़ादिर हुए लेने लगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, जो उन के आ'माल से आगाह है, की भी परवाह न की और न ही उस के बड़े अ़ज़ाब और उस की ना राज़गी से डरे ह़ालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें देख रहा है :

www.dawateislami.net

《1》

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ۝ (پ۲۴،المؤمن:۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।

《2》

فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ۝ (پ۱۶،طٰہٰ:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो भेद को जानता है और उसे जो इस से भी ज़ियादा छुपा है।

《3》

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ط (پ۲۹،الملک:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या वोह न जाने जिस ने पैदा किया।

अगर मिलावट करने वाला, बातिल तरीक़ों से लोगों का माल खाने वाला ख़ाइन इस सज़ा में ग़ौरो फ़िक्र कर ले जो क़ुरआनो ह़दीस में इस गुनाह की आई है तो ग़ालिबन इस से या इस में से बा'ज़ से ज़रूर रुक जाए।

《29》...... इस की सज़ा के तौर पर येही फ़रमान काफ़ी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक बन्दा अपने पेट में ह़राम का एक लुक़्मा डालता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का **40** दिन का अ़मल क़बूल नहीं करता और जिस बन्दे का गोश्त ह़राम से पले बढ़े आग उस के लिये ज़ियादा बेहतर है।"

(مجمع البحرين،كتاب الزهد، باب فى من اطاب مطعمه، الحديث: ٥٠١٨،ج٤،ص٣٦٨)

《30》...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जो अमानत दार नहीं उस का कोई दीन नहीं।"

(البحرالزخاربمسند البزار، مسند على بن ابى طالب ، الحديث: ٨١٩،ج٣،ص٦١)

《31》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात से बुलन्दो बरतर है कि वोह बन्दे का कोई अ़मल या नमाज़ क़बूल करे जब कि उस पर ह़राम का लिबास हो।" (المرجع السابق)

《32》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने **10** दिरहम का एक कपड़ा ख़रीदा जिन में एक दिरहम ह़राम का है तो जब तक वोह कपड़ा उस पर रहेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की नमाज़ क़बूल नहीं करेगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب،الحديث:٥٧٣٦،ج٢،ص٤١٦تا٤١٧)

www.dawateislami.net

《33》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जिस से महब्बत करता है उसे भी दुन्या अता करता है और जिस से महब्बत नहीं करता उसे भी देता है लेकिन दीन सिर्फ़ उसे देता है जिस से महब्बत करता है और जिसे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने दीन अता किया पस उस से महब्बत की और उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस का पड़ोसी उस के **बवाइक़** से महफ़ूज़ न हो जाए ।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह **बवाइक़** क्या हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस का धोका और ज़ुल्म ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن مسعود،الحديث: ٣٦٧٢،ج٢،ص٣٣تا٣٤)

《34》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "क़ियामत के दिन कोई बन्दा उस वक़्त तक क़दम नहीं हटा सकेगा जब तक कि उस से **4** सुवाल न कर लिये जाएं : (1) उम्र के बारे में : किस काम में फ़ना की (2) जवानी के बारे में : किस काम में सर्फ़ की (3) माल के बारे में : कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया और (4) इल्म के बारे में : उस पर कितना अमल किया ।" (جامع الترمذی،ابواب صفة القيامة (والرقائق والورع ، باب فی القيامة ،الحديث: ٢٤١٦،ص١٨٩٤)

《35》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने दुन्या में हराम माल कमाया और ग़ैरे हक़ में ख़र्च किया उसे ज़िल्लत के घर में फेंका जाएगा, फिर कितने ही अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के माल में ख़ियानत करने वाले हैं जिन के लिये क़ियामत के दिन अज़ाब होगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا۝ (پ١٥،الاسراء:٩٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे ।

(شعب الايمان، باب فی قبض اليد عن الاموال المحرمة ، الحديث: ٥٥٢٧،ج٤،ص٣٩٦)

《36》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को लाया जाएगा जिन के पास तहामा पहाड़ों की मिस्ल नेकियां होंगी यहां तक कि जब उन को लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन नेकियों को उड़ती हुई ख़ाक की तरह कर देगा फिर उन्हें जहन्नम में फेंक दिया जाएगा ।" अर्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कैसे होगा ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह नमाज़ पढ़ते, ज़कात देते, रोज़े रखते और हज करते होंगे लेकिन जब उन्हें कोई हराम चीज़ पेश की जाती तो ले लेते थे पस अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन के आ'माल को मिटा देगा ।" (حلية الاولياء،سالم مولی ابی حذيفة،الحديث:٥٧٥،ج١،ص٢٣٣،بتغيرٍ قليلٍ)

पस ऐ मक्कार, धोकेबाज़, मिलावट करने वाले और इन बातिल बुयूआत और फ़ासिद तिजारात के ज़रीए लोगों का माल खाने वाले जान ले ! तेरी कोई नमाज़ नहीं, न ज़कात, न रोज़ा और न ही हज जैसा कि उस सादिक़ो मस्दूक़ नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है जो अपनी मरज़ी

www.dawateislami.net

से नहीं बोलते और धोकेबाज़ ख़ास तौर पर इस फ़रमाने इब्रत निशान में गौरो फ़िक्र करे। चुनान्चे,

《37》...... आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللہ علیہ و سلّم (من غشنا فلیس منا)الحدیث: ۲۸۳،ص۶۹۵)

इस से मा'लूम होता है कि धोके का मुआ-मला अज़ीम और इस का अन्जाम बहुत ख़तरनाक है क्यूं कि अक्सर अवक़ात येह चीज़ उसे इस्लाम से निकलने की तरफ़ ले जाती है क्यूं कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसी चीज़ के बारे में لَیۡسَ مِنَّا फ़रमाते हैं जो बहुत ज़ियादा क़बीह़ हो और अपने करने वाले को ख़तरनाक मुआ-मले की तरफ़ ले जाए और उस से कुफ़्र का ख़ौफ़ हो क्यूं कि जो अपने दीन को ज़वाल की तरफ़ ले जाता है और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुनता है : "जिस ने मिलावट की वोह हम में से नहीं।" फिर भी दुन्या की मह़ब्बत को दीन पर तरजीह़ देते हुए और गुमराहों के रास्ते पर रिज़ा मन्द रहते हुए मिलावट से बाज़ नहीं आता।

मिलावट करने वाले ताजिरों और इत्र बेचने वालों को भी ग़ौर करना चाहिये जो कि अपनी चीज़ों में ऐसी मिलावट करते हैं जो ख़रीदने वाले पर पोशीदा होती है यहां तक कि ग़ैर शुऊ़री तौर पर वोह इस में मुब्तला हो जाता है और अगर उसे इस मिलावट का इल्म हो तो उस क़ीमत से वोह चीज़ कभी न ख़रीदे जैसा कि,

《38》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सह़ीह़ ह़दीसे पाक मरवी है : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक आदमी के पास से गुज़रे जिस के सामने अनाज का ढेर रखा हुवा था, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ वह़्य की, कि इस में अपना दस्ते अक़्दस दाख़िल करें, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसा किया तो उस ढेर के अन्दर की तरी से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ भीग गया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस्ते रह़मत बाहर निकाल कर फ़रमाया : "ऐ साह़िबे त़आ़म ! (या'नी अनाज वाले) येह क्या है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर बारिश हो गई थी।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने भीगे हुए अनाज को ऊपर क्यूं न रखा कि लोग देख लेते, जिस ने मिलावट की वोह हम में से नहीं।" (المرجع السابق،الحدیث: ۲۸۳،ص۶۹۵)

《39》...... एक और रिवायत में है : "हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अनाज (के ढेर) के पास से गुज़रे जिस को उस के मालिक ने ख़ूब सूरत ज़ाहिर कर रखा था, लेकिन जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस उस में डाला तो नीचे वाले को रद्दी पाया तो उस से इर्शाद फ़रमाया : "इस को अलग और उस को अलग बेचो ! जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं।"

(جامع الترمذی،ابواب البیوع، باب ماجاء فی کراھیة الغش فی البیوع ، الحدیث: ۱۳۱۵،ص۱۷۸٤)

(سنن ابی داؤد،کتاب الاجارہ، باب فی النھی عن الغش ، الحدیث: ۳٤۵۲،ص۱٤۸۱)

www.dawateislami.net

《40》...... एक और रिवायत में है : ''जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक उस ग़ल्ले में डाला और भीगा हुवा बाहर निकला, उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम्हें ऐसा करने पर किस चीज़ ने उभारा ?'' उस ने जवाब दिया : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है ! येह एक ही क़िस्म का ग़ल्ला है ।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने ऐसा क्यूं न किया कि तर और ख़ुश्क ग़ल्ले को अ़लाहिदा अ़लाहिदा रखते ताकि लोग इस को जान कर ख़रीदारी करते, जिस ने हमें धोका दिया वोह हम में से नहीं ।''

(المعجم الاوسط ، الحديث: ٣٧٧٣،ج٣،ص٢٩)

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، الحديث: ٥١١٣،ج٢،ص٣٠٩)

《41》...... मरवी है : ''जिस ने मुसल्मानों को धोका दिया वोह उन में से नहीं ।''

(المعجم الكبير ، الحديث: ٩٢١،ج١٨،ص٣٥٩)

पीछे रिवायत गुज़र चुकी है कि जिस ने दूध में पानी मिलाया फिर उसे बेचा उसे क़ियामत के दिन कहा जाएगा : दूध से पानी निकालो ह़ालां कि वोह इस पर क़ादिर न होगा, लिहाज़ा उस के साथ ऐसे ही होगा जैसा कि तस्वीरें बनाने वालों को क़ियामत के दिन कहा जाएगा : तुम ने जो तस्वीरें बनाई हैं उन्हें ज़िन्दा करो या'नी इन सूरतों में रूह़ फूंको जिन्हें तुम दुन्या में बनाते थे उन्हें ह़क़ीर और ज़लील करने के लिये और उन के इ़ज्ज़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर उन की जुरअत को बयान करने के लिये येह कहा जाएगा, इसी त़रह़ दूध में पानी मिलाने वाले को भी बरोज़े क़ियामत तमाम लोगों के सामने ह़क़ारत और शरमिन्दगी दिलाने के लिये दुन्या में की हुई मिलावट की सज़ा देते हुए दूध से पानी निकालने को कहा जाएगा । इसी त़रह़ तमाम मिलावट करने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों से धोका करने की वजह से तमाम लोगों के सामने शर्मसार करेगा नीज़ मिलावट करने वाले इस फ़रमान में भी ग़ौर कर लें कि,

《42》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''किसी के लिये ऐ़ब बयान किये बिग़ैर कोई चीज़ बेचना जाइज़ नहीं और जो ऐ़ब जानता हो उस के लिये ऐ़ब बयान न करना जाइज़ नहीं ।''

(المسند لامام احمد بن حنبل، حديث واثلة بن الاسقع، الحديث: ١٦٠١٣،ج٥،ص٤٢١)

《43》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने ऐ़ब वाली चीज़ बेची और ऐ़ब बयान न किया वोह हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी में रहता है या फ़िरिश्ते हमेशा उस पर ला'नत भेजते रहते हैं ।''

(سنن ابن ماجة،ابواب التجارات ، باب من باع عيباً فليبينه،الحديث: ٢٢٤٧،ص٢٦١١)

《44》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन एक दूसरे के लिये ख़ैर ख़्वाह हैं एक दूसरे से मह़ब्बत करते हैं अगर्चे उन के घर और

www.dawateislami.net

अज्साम दूर दराज़ हों और फ़ाजिर लोग एक दूसरे से धोका और खि़यानत करते हैं अगर्चे उन के घर और अज्साम क़रीब क़रीब हों।"

(الترغيب والترهيب، كتاب البيوع وغيرها ، الترهيب من الغش ......الخ، الحديث: ٢٧٥٠، ج٢،ص٣٦٨)

धोकेबाज़ी और मिलावट के बारे में इस के इ़लावा भी कई अह़ादीस हैं जिन में से चन्द एक पहले गुज़र चुकी हैं, लिहाज़ा जिस ने भी इन पर ग़ौरो फ़िक्र किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे समझने और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दी तो वोह मिलावट से बच जाएगा और इस की अ़ज़ीम बुराई और ख़त़रे को जान लेगा और येह कि मिलावट करने वाले मिलावट के ज़रीए़ जो कुछ लेते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मिटा देगा जैसा कि बन्दर और लोमड़ी के क़िस्से में गुज़र चुका है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन को मिलावट करने वालों पर मुसल्लत़ कर दिया और उन्हों ने समुन्दर में फेंक कर मिलावट के ज़रीए़ ह़ासिल किया हुवा माल ज़ाएअ़ कर दिया।

जो इन अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ौरो फ़िक्र करेगा वोह जान लेगा कि गुज़श्ता सुवाल में मज़्कूर अक्सर सूरतें धोकेबाज़ी और मिलावट में से हैं जिस का ह़राम होना इस ह़दीस से साबित हो चुका है कि दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब ग़ल्ले में अपना दस्ते मुबारक दाखि़ल किया और उस ढेर के अन्दर की तरी देखी तो ऐसा करने वाले पर नाराज़ हुए और उसे इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने तर हि़स्सा अ़लाहि़दा और खुश्क अ़लाहि़दा क्यूं न किया और अ़लाहि़दा क्यूं न बेचा या तर हि़स्से को ढेर के ऊपर क्यूं न रखा यहां तक कि लोग इसे जान लेते और देख कर ख़रीदते।"

इस से येह भी मा'लूम हुवा कि हर वोह आदमी जिसे अपनी चीज़ के बारे में ऐ़ब मा'लूम हो उस पर ख़रीदार को बयान करना लाज़िम है और इसी त़रह़ अगर बेचने वाले के इ़लावा किसी को ऐ़ब मा'लूम हो जैसे उस का पड़ोसी या दोस्त और वोह किसी आदमी को ख़रीदते देखे जो उस ऐ़ब को न जानता हो तो उस पर भी लाज़िम है कि उसे बयान कर दे।

जैसा कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "किसी के लिये ऐ़ब बयान किये बिग़ैर कोई चीज़ बेचना जाइज़ नहीं और जो ऐ़ब जानता हो उस के लिये ऐ़ब बयान न करना जाइज़ नहीं।"

(المسند لامام احمد بن حنبل، حديث واثلة بن الاسقع، الحديث: ١٦٠١٣، ج٥،ص٤٢١)

अक्सर लोग ख़रीदार की रहनुमाई नहीं करते या फिर वोह खुद भी किसी ऐ़ब को नहीं जानते।

एक गुज़रने वाला शख़्स किसी को ऐ़ब वाली चीज़ ख़रीदते देखता जो ऐ़ब को नहीं जानता और वोह जानने वाला खै़र ख़्वाही करने से ख़ामोश रहता है यहां तक कि बेचने वाला उस को धोका दे कर बाति़ल त़रीक़े से उस का माल ले लेता है, ह़ालां कि ख़ामोश रहने वाला शख़्स येह शुऊ़र नहीं

www.dawateislami.net

रखता कि वोह भी ह़राम, कबीरा गुनाह, फ़िस्क़ और इस पर मु-तरत्तब होने वाली शदीद वई़द में इस बेचने वाले का बराबर का शरीक है, और वोह वई़द येह है : "मिलावट करने वाला जो ख़रीदने वाले को शै का ऐ़ब नहीं बताता हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़ग़ी में रहता है या हमेशा मलाएका उस पर ला'नत भेजते रहते हैं।"

《45》...... और येह ह़दीसे पाक भी इस की ताईद करती है : "जिस ने इस्लाम में बुरा त़रीक़ा ईजाद किया उस पर उस का गुनाह है और क़ियामत तक उस पर अ़मल करने वालों का गुनाह है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث جرير بن عبد الله،الحديث: ١٩٢٢١،ج٧،ص٦٤،بدون"الى يوم القيامة")

इस में कोई शक नहीं कि मिलावट करने वाले ने बुरा त़रीक़ा ईजाद किया और वोह मुबैअ़ (या'नी बेची जाने वाली चीज़) के ऐ़ब को छुपाना है, पस इस मुबैअ़ में जो भी ऐसा अ़मल करेगा उस का गुनाह ईजाद करने वालों को होगा और अ़न्क़रीब **मक्र** और **ख़दीआ़** के बाब में मिलावट करने वालों के बारे में वई़द आएगी क्यूं कि मिलावट, मक्र और धोका की जगह पर ही है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ (پ٢٢،فاطر:٤٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बुरा दाउं (फ़रेब) अपने चलने वाले पर ही पड़ता है।

《46》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मिलावट की वोह हम में से नहीं और मक्र और धोका देने वाला जहन्नम में है।"

(المعجم الكبير، الحديث: ١٠٢٣٤،ج١٠،ص١٣٨)

《47》...... एक और रिवायत में है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मक्रो फ़रेब और ख़ियानत करने वाला जहन्नम में है।"

(المستدرك،كتاب الاهوال،باب تحشر هذه الامة على ثلاثة اصناف،الحديث:٨٨٣١، ج٥، ص٨٣٣)

《48》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "धोका देने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।" (या'नी इब्तिदाअन)

(المسند لامام احمد بن حنبل، مسند ابى بكر الصديق، الحديث:٣ ٢،ج١،ص٢٧)

《49》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक जहन्नमियों में वोह आदमी भी शामिल है जो सुब्ह़ शाम तेरे अह्ल या माल में तुझ से धोका करता है।" (صحيح مسلم،كتاب الجنة،باب الصفات التى يعرف بهافى الدنيا......الخ،الحديث:٧٢٠٧،ص١١٧٤)

www.dawateislami.net

येह बह्स जवाब के मु-तअ़ल्लिक़ थी और बेशक हम ने इस पर तफ़्सीली कलाम किया इस उम्मीद पर कि जिस के दिल में ईमान हो वोह इसे तवज्जोह से सुने, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और उस की बुज़ुर्गी से डरे, जिस का दीन और वक़ार हो और जो अपनी मौत के बा'द अपनी औलाद के बारे में भी डरता हो पस वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरेगा और इस सुवाल में मज़्कूर मिलावट की तमाम सूरतों को छोड़ देगा और जान लेगा कि येह दुन्या फ़ानी है और बेशक हिसाब ह़क़ीर और मा'मूली चीज़ों पर भी वाक़ेअ़ होगा और अ़-मले सालेह़ ही औलाद को नफ़्अ़ देगा, तह़क़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान मौजूद है :

وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ج (پ۱۶،الکھف:۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और इन का बाप नेक आदमी था।

ह़ालां कि वोह शख़्स मां की त़रफ़ से सातवां दादा था, पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के सदक़े उस के यतीम बच्चों को नफ़्अ़ दिया और बुरा अ़मल भी औलाद के ह़क़ में मुअस्सिर होता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ (پ۴،النساء:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और डरें वोह लोग अगर अपने बा'द ना तुवां औलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें ख़त़रा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें।

पस जो इस आयते मुबा-रका में ग़ौर करेगा तो अपने बुरे आ'माल की वजह से औलाद के बारे में डरेगा और उन से रुक जाएगा यहां तक कि इस की मज़ीद नज़ीर न मिल सके और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही सीधी राह की रहनुमाई फ़रमाने वाला है और उसी की त़रफ़ से त़ाक़त व क़ुव्वत है और उसी की त़रफ़ लौटना है।

कबीरा नम्बर 201 : झूटी क़सम खा कर सामान बेचना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन शख़्स ऐसे हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ न तो नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन बार येह बात कही तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ख़ाइबो ख़ासिर होने वाले वोह लोग कौन हैं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) तहबन्द लटकाने वाला (2) एह़सान जतलाने वाला और (3) झूटी क़सम खा कर सामान बेचने वाला।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم اسبال......الخ، الحدیث:۲۹۳،ص۶۹۶)

www.dawateislami.net

﴾2﴿...... जब कि एक और रिवायत में इस त़रह़ है : "अपने तहबन्द को घसीटने वाला और अपनी बख़्शिश को जतलाने वाला।" (سنن النسائی، کتاب الزکاۃ، باب المنان بمااعطی، الحدیث:٢٥٦٤،ص٢٢٥٣)

﴾3﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) तकब्बुर करने वाला फ़क़ीर और (3) ऐसा आदमी जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माल दिया और वोह झूटी क़समें खा कर ख़रीदता और बेचता है।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ٦١١١،ج٦،ص٢٤٦)

﴾4﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न तो उन से कलाम फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।" (المعجم الاوسط، الحدیث: ٥٥٧٧،ج٤،ص١٦٣)

﴾5﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कल (बरोज़े क़ियामत) उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा : (1) बूढ़ा ज़ानी (2) वोह शख़्स जो अपना सामान हर जाइज़ और ना जाइज़ (झूटी) क़समें खा कर बेचता है और (3) तकब्बुर करने वाला फ़क़ीर।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ٤٩٢،ج١٧،ص١٨٤)

﴾6﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन शख़्स ऐसे हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ क़ियामत के दिन न तो नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा : (1) जो बियाबान में अपने फ़ालतू पानी से मुसाफ़िरों को रोकता है। एक और रिवायत में है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इर्शाद फ़रमाएगा : "आज मैं तुम से इसी त़रह़ अपना फ़ज़्ल रोक लूंगा जिस त़रह़ तुम ने उस चीज़ का फ़ज़्ल रोका था जिस में तुम्हारे हाथों ने कुछ नहीं किया था, (2) वोह आदमी जो अ़स्र के बा'द अपना माल बेचे और क़सम उठाए कि मैं ने इतने इतने में लिया है और ख़रीदार उसे सच्चा समझे ह़ालां कि उस ने उतने का न ख़रीदा हो और (3) ऐसा शख़्स जो किसी इमाम (हुक्मरान) की दुन्या की ख़ात़िर बैअ़त करे अगर वोह उसे उस की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कुछ दे तो उस से वफ़ा करे और अगर कुछ न दे तो वफ़ा न करे।"

(صحیح البخاری، کتاب المساقاۃ،باب اثم من منع ابن السبیل من الماء، الحدیث: ٢٣٥٨،ص١٨٤)

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم ......الخ، الحدیث: ٢٩٧،ص٦٩٦)

और एक रिवायत में वोह तीन शख़्स येह हैं : "(1) ऐसा शख़्स जो माल के बारे में क़सम उठाता है कि मुझे इस की क़ीमत इस से ज़ियादा मिल रही थी ह़ालां कि वोह झूटा है (2) ऐसा शख़्स जो अ़स्र के बा'द झूटी क़सम खाता है ताकि इस से मुसल्मान बन्दे का माल ख़त्म करे और (3) ऐसा शख़्स जो फ़ालतू पानी रोके अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा : "आज मैं तुम से इसी त़रह़ अपना

www.dawateislami.net

फ़ज़्ल रोक लूंगा जिस त़रह़ तुम ने वोह ज़ाइद चीज़ रोक ली थी जिसे तुम ने पैदा नहीं किया था।''

(صحیح البخاری، کتاب المساقاۃ،باب من رای ان صاحب الحوض......الخ،الحدیث:۲۳۶۹،ص۱۸۵)

﴾7﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''चार आदमी ऐसे हैं जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाएगा : (1) झूटी क़समें खा कर बेचने वाला (2) मु-तकब्बिर फ़क़ीर (3) बूढ़ा ज़ानी और (4) ज़ालिम हुक्मरान।''

(سنن النسائی، کتاب الزکاۃ ، باب الفقیر المحتال، الحدیث: ۲۵۷۷،ص ۲۲۵۴)

﴾8﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तीन अफ़राद से महब्बत फ़रमाता है और तीन को ना पसन्द करता है।'' (ह़दीस बयान करते हुए रावी कहते हैं कि) मैं ने अ़र्ज़ की : ''वोह तीन कौन हैं जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है ?'' आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तकब्बुर और फ़ख़्र करने वाला, और क़ुरआने ह़कीम में तुम पाते हो :

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝ (پ۲۱،لقمان:۱۸) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता।

(2) एह़सान जतलाने वाला बख़ील (3) क़समें खाने वाला ताजिर या झूटी कसमें खा कर बेचने वाला।'' (المستدرک ، کتاب الجھاد، ذکر رجال یبغضھم اللہ تعالی،الحدیث:۲۴۹۱،ج۲،ص ۴۱۱)

﴾9﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : ''एक आ'राबी बकरी ले कर गुज़रा मैं ने उस से पूछा इसे तीन दिरहम में बेचते हो ?'' उस ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नहीं बेचता।'' फिर तीन दिरहम की बेच दी, मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''उस ने दुन्या के बदले अपनी आख़िरत बेच दी।'' (صحیح ابن حبان،کتاب البیوع، الحدیث:۴۸۸۹،ج۷،ص ۲۰۵)

﴾10﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी त़रफ़ आते जब कि हम तिजारत कर रहे होते तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते : ''ऐ ताजिरों के गुरौह ! झूट से बचो।'' (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۲،ج۲۲،ص۵۶)

﴾11﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''(झूटी) क़सम, सामान को फ़रोख़्त करवाने वाली लेकिन कमाई को मिटाने वाली है।''

(سنن النسائی ، کتاب البیوع، باب المنفق سلعتہ......الخ، الحدیث: ۴۴۶۶،ص۲۳۷۸)

और अबू दावूद शरीफ़ में है : ''लेकिन ब-र-कत को मिटाने वाली है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب البیوع، باب فی کراھیۃ الیمین فی البیع ،الحدیث: ۳۳۳۵،ص۱۴۷۳)

﴾12﴿...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने इर्शाद फ़रमाया : ''ख़रीदो फ़रोख़्त में ज़ियादा क़समें खाने से बचो ! क्यूं कि क़सम माल तो बिक्वाती है लेकिन उस की ब-र-कत मिटा देती है।''

(صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، باب النھی عن الحلف فی البیع، الحدیث: ٤١٢٦،ص٩٥٧)

《13》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सच्चा अमानत दार ताजिर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सिद्दीक़ीन और शु-हदा के साथ उठाया जाएगा।'' (جامع الترمذی ،ابواب البیوع، باب ماجاء فی التجار......الخ، الحدیث: ١٢٠٩،ص١٧٧٢)

《14》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''सच्चा, अमानत दार मुसल्मान ताजिर क़ियामत के दिन शु-हदा के साथ उठाया जाएगा।''

(سنن ابن ماجه، ابواب التجارات ، باب الحث علی المکاسب، الحدیث: ٢١٣٩،ص٢٦٠٥)

《15》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''सच्चा ताजिर क़ियामत के दिन अ़र्श के साए के तले होगा।''

(کنزالعمال، کتاب البیوع، قسم الاقوال، باب الاول فی الکسب،الحدیث: ٩٢١٤، ج٤،ص٥)

《16》...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : ''बेशक सब से अच्छी कमाई उन ताजिरों की है जो बात करें तो झूट न बोलें, जब अमीन बनाए जाएं तो ख़ियानत न करें जब वा'दा करें तो वा'दा ख़िलाफ़ी न करें कोई चीज़ ख़रीदें तो उस की मज़म्मत न करें, जब बेचें तो उस की बे जा ता'रीफ़ न करें और जब उन पर क़र्ज़ हो तो (अदाएगी में) टाल मटोल न करें और उन का किसी पर क़र्ज़ हो तो उस पर (वुसूली में) तंगी न करें।'' (شعب الایمان،باب فی حفظ اللسان،الحدیث: ٤٨٥٤،ج٤،ص٢٢١)

《17》...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''ख़रीदने और बेचने वाले को जुदा होने से पहले पहले इख़्तियार है, अगर दोनों ने सच बोला और गवाह बनाए तो उन के सौदे में ब-र-कत दी जाएगी और अगर दोनों ने छुपाया और झूट बोला तो हो सकता है उन को नफ़्अ़ तो हो लेकिन उन के सौदे से ब-र-कत उठा ली जाए, क्यूं कि झूटी क़सम माल को बिक्वाने वाली लेकिन कमाई की ब-र-कत मिटाने वाली है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب البیوع، باب فی خیار المتبایعین ،الحدیث: ٣٤٥٩،ص١٤٨١ ،بدون"فعسی ان یربحا")

《18》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाए और लोगों को देखा कि वोह ख़रीदो फ़रोख़्त कर रहे हैं, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ ताजिरों के गुरौह !'' उन्हों ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जवाब दिया और अपनी गरदनें और आंखें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ उठा लीं (या'नी पूरी त़रह मु-तवज्जेह हो गए) तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ताजिर क़ियामत के दिन फ़ाजिर (या'नी बदकार) उठाए जाएंगे मगर जो (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से) डरे, लोगों से भलाई करे और सच बोले।'' (جامع الترمذی ،ابواب البیوع، باب ماجاء فی التجار......الخ، الحدیث: ١٢١٠،ص١٧٧٢)

www.dawateislami.net

﴾19﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक ताजिर ही फ़ाजिर हैं।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ख़रीदो फ़रोख़्त ह़लाल नहीं फ़रमाई ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं, लेकिन वोह क़समें खाते हैं, तो झूटे होते हैं और बात करते हैं तो झूट बोलते हैं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث عبد الرحمٰن بن شبل، الحدیث: ۱۵۵۳۰،ج۵،ص۲۸۸)

तम्बीह :

इस को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है अगर्चे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इसे सरा-ह़तन ज़िक्र नहीं किया, शदीद वई़द वाली कसीर अह़ादीसे मुबा-रका की बिना पर इसे कबीरा क़रार देना ज़ाहिर और वाज़ेह़ है।

﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽ ﷽

कबीरा नम्बर 202 : मक्रो फ़रेब और धोका देना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ (پ۲۲،فاطر:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बुरा दाउं (फ़रेब) अपने चलने वाले पर ही पड़ता है।

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने हम से धोका किया वोह हम में से नहीं और मक्र और धोका जहन्नम में है।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۲۳۴،ج۱۰،ص۱۳۸)

﴾2﴿...... ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मुर-सलन मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मक्र, धोका और ख़ियानत जहन्नम में है।" (المستدرک ، کتاب الاھوال، باب تحشر ھذہ الامۃ علی......الخ، الحدیث: ۸۸۳۱،ج۵،ص۸۳۳)

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "धोकेबाज़ जन्नत में दाख़िल न होगा और न ही बख़ील और एह़सान जतलाने वाला।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث:۲ ۳،ج۱،ص۲۷)

www.dawateislami.net

﴾4﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन सीधा सादा, करम करने वाला जब कि फ़ासिक़ मक्कार, कमीना है।"

(جامع الترمذی،ابواب البر والصلة ، باب ماجاء فی البخل،الحدیث: ۱۹۶۳،ص۱۸۴۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुनाफ़िक़ीन के बारे में फ़रमाता है :

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ج (پ۵،النساء:۱۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में **अल्लाह** को फ़रेब दिया चाहते हैं और वोही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा।

या'नी जिस त़रह़ वोह अपने गुमान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को धोका दे रहे होते हैं तो इसी की मिस्ल क़ियामत के दिन उन्हें भी इस की सज़ा दी जाएगी और वोह इस त़रह़ कि पहले उन्हें एक नूर दिया जाएगा जिस त़रह़ कि बक़िय्या तमाम मुअमिनीन को दिया जाएगा, जब वोह उसे ले कर पुल सिरात़ से गुज़रने लगेंगे तो वोह नूर बुझा दिया जाएगा और वोह तारीकी में ही भटक्ते रहेंगे।

﴾5﴿...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "पांच क़िस्म के लोग जहन्नमी हैं।" इन में उस आदमी का भी ज़िक्र किया जो सुब्ह़ व शाम तेरे अह्ल या माल में तुझ से धोका करता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الجنة والنعیم،باب الصفات التی یعرف بها......الخ، الحدیث: ۷۲۰۷،ص۱۱۷۴)

तम्बीह :

इस को कबीरा गुनाह क़रार दिया गया है जिस की बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने वज़ाहत की है और जो साबिक़ा मिलावट की अहादीसे मुबा-रका और इन मौजूदा अहादीसे मुबा-रका से भी ज़ाहिर है, क्यूं कि मक्र और धोके के जहन्नम में होने से मुराद येह है कि मक्र करने वाला और धोका देने वाला जहन्नम में जाएगा और येह एक सख़्त वईद है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 203 : नाप, तोल या पैमाइश में कमी करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ0الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ0وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْوَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ0اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ0 لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ0يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ0 (پ۳۰،المطففین:۱تا۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कम तोलने वालों की ख़राबी है वोह कि जब औरों से माप लें पूरा लें और जब उन्हें माप तोल कर दें कम कर दें क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें उठना है एक अ़-ज़मत वाले दिन के लिये जिस दिन सब लोग रब्बुल आ़-लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

या'नी लोग क़ियामत के दिन अपनी क़ब्रों से नंगे पाउं, नंगे जिस्म और बिग़ैर ख़तना के उठेंगे, फिर उन्हें मैदाने ह़श्र में लाया जाएगा, उन में से बा'ज़ बिजली से भी तेज़ सुवार हो कर जा रहे होंगे, बा'ज़ अपने क़दमों पर चल रहे होंगे, बा'ज़ घुटनों के बल चल रहे होंगे और चेहरे के बल गिर रहे होंगे, कभी चलेंगे कभी ठोकरें खाएंगे और कभी सरगर्दां ऊंट की त़रह़ भटक रहे होंगे और उन में कुछ ऐसे भी होंगे जो चेहरे के बल चल रहे होंगे और येह सब लोग अपने अपने आ'माल के मुत़ाबिक़ होंगे यहां तक कि वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े होंगे ताकि अपने आ'माल का ह़िसाब दें अगर आ'माल अच्छे हुए तो अच्छी जज़ा होगी और अगर आ'माल बुरे हुए तो जज़ा भी बुरी होगी।

सय्यिदुना सदी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल येह है कि "जब हमारे रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मदीना शरीफ़ में तशरीफ़ लाए तो वहां पर एक शख़्स था जिस का नाम अबू जुहैना था उस के दो पैमाने थे एक के साथ देता और दूसरे के साथ लेता था, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई।"

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : "जब ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मदीना शरीफ़ तशरीफ़ लाए तो वोह लोग माप तोल के ए'तिबार से सब लोगों से बुरे थे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह सूरत नाज़िल फ़रमाई, पस इस के बा'द उन्हों ने पैमाने अच्छे कर लिये।"

(سنن ابن ماجه،ابواب التجارات ، باب التوقی فی الکیل والوزن، الحدیث : ۲۲۲۳،ص ۲۶۱۰)

《2》...... नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पैमाइश और वज़्न करने वालों से इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तुम्हें ऐसा काम सोंपा गया है जिस में तुम से पहली उम्मतें हलाक हो गईं।"

(جامع الترمذی، ابواب البیوع،باب ماجاء فی المکیال والمیزان،الحدیث: ۱۲۱۷،ص۱۷۷۳)

www.dawateislami.net

《3》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ गुरौहे मुहाजिरीन ! जब तुम पांच ख़स्लतों में मुब्तला कर दिये जाओ और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तुम्हारे इन में मुब्तला होने से पनाह मांगता हूं : (1) जब किसी क़ौम में फ़ह़्ह़ाशी ज़ाहिर हुई और उन्हों ने ए'लानिया इस का इरतिकाब किया तो उन में त़ाऊ़न और ऐसे बीमारी फैल गई जो उन के पहले लोगों में न थी । (2) उन्हों ने माप तोल में कमी की तो क़ह़त़ साली में मुब्तला हो गए और सख़्त बोझ और बादशाह के ज़ुल्म का शिकार हो गए (3) उन्हों ने अपने माल की ज़कात न दी तो आस्मान से बारिश रोक दी गई और अगर चौपाए न होते तो उन पर बारिश न होती (4) उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़ह्द तोड़ा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर दुश्मन मुसल्लत़ कर दिये जिन्हों ने उन से वोह सब ले लिया जो कुछ उन के क़ब्ज़े में था और (5) उन के हुक्मरानों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ानून के मुत़ाबिक़ फ़ैसला न किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ानून में से कुछ लिया और कुछ छोड़ दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा कर दिया ।''

(سنن ابن ماجة، ابواب الفتن، باب العقوبات ، الحديث: ٤٠١٩،ص٢٧١٨)

《4》...... महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस क़ौम में भी लूटमार या'नी चोरी की कसरत हुई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिलों पर दुश्मन का रो'ब डाल दिया, जिस क़ौम में भी ज़िना आ़म हुवा उन में अम्वात की कसरत हो गई, जिस क़ौम ने भी नाप तोल में कमी की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के रिज़्क़ को कम कर दिया, जिस क़ौम ने भी नाह़क़ फ़ैसला किया उन में लड़ाई झगड़ा आ़म हो गया और जिस क़ौम ने भी अ़ह्द को तोड़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर दुश्मन को मुसल्लत़ कर दिया ।''

(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، باب تغير الناس،الفصل الثالث، الحديث: ٥٣٧٠،ج٣،ص٢٧٦)

《5》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में मरना अमानत के इ़लावा तमाम गुनाहों को मिटा देता है, (फिर इर्शाद फ़रमाया) बन्दे को क़ियामत के दिन लाया जाएगा अगर्चे वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया गया हो और उस से कहा जाएगा : ''अपनी अमानत अदा कर ।'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! कैसे अदा करूं ह़ालां कि दुन्या तो ख़त्म हो गई ।'' पस (फ़िरिश्तों से) कहा जाएगा : ''इसे **हावियह** की त़रफ़ ले जाओ ।'' वोह उसे ले कर **हावियह** की जानिब चल देंगे और उस की अमानत उसी हैअत में लाई जाएगी जिस में उस दिन थी जब उसे दी गई थी, तो वोह उसे देखते ही पहचान लेगा और उस के पीछे जाएगा यहां तक कि उसे ह़ासिल कर लेगा और अपने कन्धे पर उठा लेगा ह़त्ता कि जब उसे यक़ीन हो जाएगा कि वोह बाहर आ गया है तो वोह उस के कन्धे से गिर जाएगी और वोह हमेशा उस के पीछे जाता ही रहेगा ।

www.dawateislami.net

फिर फ़रमाया : "नमाज़ एक अमानत है, वुज़ू भी अमानत है, वज़्न और माप भी अमानत हैं और दीगर अश्या शुमार कीं और इन में सख़्त तरीन वदीअ़त है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास आया और उन से अ़र्ज़ की : "क्या आप नहीं जानते कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ऐसा ऐसा कहा है ?" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया : "उन्हों ने सच कहा है, आप ने **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमाने आ़लीशान नहीं सुना :

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَاۙ (پ۵،النساء:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो ।

(شعب الایمان، باب فی الامانات ووجوب ادائها الی اهلها، الحدیث: ٥٢٦٦، ج٤، ص ٣٢٣)

तम्बीह :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की तस्रीह़ के मुत़ाबिक़ इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और येह ज़ाहिर भी है क्यूं कि येह लोगों के माल बात़िल तरीक़े से खाने में शुमार होता है, इस वजह से इस पर शदीद वई़द है, जैसा कि मज़्कूरा आयते मुबा-रका और अह़ादीसे मुबा-रका से आप ने जान लिया ।

आयते करीमा (وَیْلٌ لِّلْمُطَفِّفِیْنَ) की वज़ाह़त :

आयते करीमा में कम तोलने वाले को इस लिये **मुत़फ़्फ़िफ़** कहा गया है क्यूं कि वोह हमेशा कम तोली हुई चीज़ ही देता है जो कि चोरी और ख़ियानत की एक क़िस्म है बा वुजूद इस के कि इस में बिल्कुल अ़-दमे मुरव्वत का इज़्हार है और इसी वजह से **वैल** के साथ अन्जाम बताया गया जो कि शदीद अ़ज़ाब है या जहन्नम में एक वादी है अगर उस में दुन्या के पहाड़ रखे जाएं तो उस की गर्मी की शिद्दत से पिघल जाएं, हम उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं और इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माप तोल में कमी की वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम को शदीद सज़ा दी ।

सुवाल : ग़स्ब के बाब में आएगा कि चार दीनार से कम ग़स्ब करना कबीरा गुनाह नहीं तो इस का तक़ाज़ा है कि यहां भी इसी त़रह़ हो ?

जवाब : इस में इश्काल है पस इस पर क़ियास नहीं किया जाएगा बल्कि इस के ख़िलाफ़ पर इज्माअ़ है और अ़ल्लामा अज़्रई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "येह ह़द बन्दी क़ाबिले ए'तिबार नहीं ।"

www.dawateislami.net

इन में इस तौर पर फ़र्क़ किया जाएगा कि ग़स्ब उन चीज़ों में से नहीं जिन का क़लील कसीर की त़रफ़ ले जाता है क्यूं कि येह जब्र और ग़–लबे के तौर पर लिया जाता है, लिहाज़ा उस का क़लील कसीर की त़रफ़ नहीं ले जाता अलबत्ता ! कम माप तोल का मुआ–मला इस के बर ख़िलाफ़ है, क्यूं कि येह मक्र, ख़ियानत और ह़ीला के तौर पर लिया जाता है, लिहाज़ा इस का क़लील कसीर की त़रफ़ ले जाता है पस इस से नफ़रत दिलाना मु–तअय्यन हो गया।

इस की सूरत येह है कि हर वोह चीज़ जिस की क़लील और कसीर मिक़्दार कबीरा गुनाह है तो उस का वोही हुक्म होगा जो शराब का एक क़त़रा पीने का है क्यूं कि येह कबीरा गुनाह है अगर्चे उस में शराब का फ़साद न भी पाया जाए, इस लिये कि येह बात साबित हो चुकी है कि इस की क़लील मिक़्दार कसीर की त़रफ़ ले जाती है, लिहाज़ा इस फ़र्क़ की बिना पर चोरी को ग़स्ब के साथ मिलाना मुश्किल नहीं है क्यूं कि चोर को अक्सर ख़ौफ़ होता है और उस के लिये ग़ैर का माल लेना मुम्किन नहीं होता यहां तक कि कहा जाए कि उस की क़लील मिक़्दार (या'नी छोटी चोरी) कसीर मिक़्दार (या'नी बड़ी चोरी) की त़रफ़ ले जाती है अलबत्ता ! "**मुत़फ़्फ़िफ़**" (या'नी माप तोल में कमी करने वाले) का मुआ–मला और है, क्यूं कि उस के लिये ग़ैर का माल लेना मुम्किन होता है, पस इस में क़लील मिक़्दार का कसीर मिक़्दार की त़रफ़ ले जाना ज़ियादा आसान और ज़ाहिर है। इस में ग़ौरो फ़िक्र करो क्यूं कि मैं ने किसी को इस पर आगाह होते या इशारा करते नहीं पाया।

नीज़ येह बात इस फ़र्क़ की ताईद भी करती है कि एक जमाअ़त ने ग़स्ब में मज़्कूरा शर्त़ लगाई है और कहा है कि "चोरी में ऐसी कोई शर्त़ नहीं।" गोया उन्हों ने मेरे ज़िक्र कर्दा कलाम में ग़ौर किया और उस के और ग़स्ब के दरमियान मेरे साबित कर्दा ज़ाहिर फ़र्क़ की वजह से बा'ज़ मु–तअख़्ख़िरीन उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का येह मौक़िफ़ भी रद हो गया : "मा'मूली तौर पर तोल में कमी करना सग़ीरा है।" मगर ग़सब में इख़्तिलाफ़ इस सूरत में मन्क़ूल है कि वोह इख़्तिलाफ़ एक दीनार उठा लेने पर ह़द लगाने के बारे में है।

अलबत्ता इतनी मा'मूली सी चीज़ ग़स्ब करना या कम तोलना भी सग़ीरा गुनाह होना चाहिये जिस को अक्सर लोग मुआ़फ़ कर देते हैं ग़स्ब करना भी सग़ीरा होना चाहिये, और येह बई़द भी नहीं, लेकिन अक्सर उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि "इन में कोई फ़र्क़ नहीं।" इसी वजह से सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बयान किया है कि "अनाज ग़स्ब करना या चोरी करना बिल इज्माअ़ कबीरा गुनाह है।" गोया उन्हों ने अक्सर उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के मुत़्लक़ क़ौल से येह अख़्ज़ किया है जिस की जानिब मैं ने इशारा भी किया है, इस की मज़ीद वज़ाहत ग़स्ब के बाब में आएगी।

www.dawateislami.net

आग के दो पहाड़ :

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''मैं एक मरतबा अपने पड़ोसी के पास गया इस हाल में कि उस पर मौत के आसार नुमायां थे और वोह कह रहा था : ''आग के दो पहाड़, आग के दो पहाड़ ।'' आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मैं ने उस से पूछा : ''क्या कह रहे हो ?'' तो उस ने बताया : ''ऐ अबू यह्या ! मेरे पास दो पैमाने थे, एक से देता और दूसरे से लेता था ।'' हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मैं उठा और एक पैमाने को दूसरे पर (तोड़ने की ख़ातिर) मारने लग गया ।'' तो उस ने कहा : ''ऐ अबू यह्या ! जब भी आप एक को दूसरे पर मारते हैं मुआ-मला ज़ियादा शदीद और सख़्त हो जाता है ।'' पस वोह उसी मरज़ में मर गया ।''

किसी नेक बुज़ुर्ग का क़ौल है : ''हर तोलने और मापने वाले पर आग पेश की जाएगी क्यूं कि कोई नहीं बच सकता सिवाए उस के जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बचाए ।''

कम तोलने के बारे में हिकायत :

एक शख़्स का बयान है : ''मैं एक मरीज़ के पास गया जिस पर मौत के आसार नुमायां थे, मैं ने उसे कलिमए शहादत की तल्क़ीन शुरूअ़ कर दी लेकिन उस की ज़बान पर कलिमा जारी नहीं हो रहा था, जब उसे इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने कहा : ''ऐ भाई ! क्या वजह है कि मैं तुझे कलिमए शहादत की तल्क़ीन कर रहा था लेकिन तुम्हारी ज़बान पर कलिमा जारी नहीं हो रहा था ?'' उस ने बताया : ''ऐ मेरे भाई ! तराज़ू के दस्ते की सूई मेरी ज़बान पर थी जो मुझे बोलने से मानेअ़ थी ।'' मैं ने उसे कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह ! क्या तुम कम तोलते थे ?'' उस ने कहा : ''नहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मगर मैं ने कुछ मुद्दत तक अपने तराज़ू का बट (या'नी पथ्थर) सहीह़ नहीं किया ।'' पस येह उस का ह़ाल है जो अपने तराज़ू का पथ्थर सहीह़ न करे तो उस का क्या ह़ाल होगा जो तोलता ही कम है ।

कम तोलने वालों की मज़म्मत :

﴾6﴿...... हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : ''हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا एक बेचने वाले के पास से गुज़रते हुए येह फ़रमा रहे थे : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर ! और माप तोल पूरा पूरा कर ! क्यूं कि कमी करने वालों को मैदाने महशर में खड़ा किया जाएगा यहां तक कि उन का पसीना उन के कानों के निस्फ़ तक पहुंच जाएगा ।''

(تفسیرالبغوی،سورۃ المطففین،تحت الآیۃ:۳،ج٤،ص٤٢٨)

www.dawateislami.net

जैसा कि मापने और तोलने वाले के बारे में गुज़र चुका है कि जब ताजिर बेचते वक़्त पैमाने को खींच कर रखे और ख़रीदते वक़्त ढीला छोड़ दे तो येही कपड़ा बेचने वाले फ़ासिक़ों और ताजिरों की आ़दत है।

किसी ने कितनी अच्छी बात कही है : ''हलाकत हो फिर हलाकत हो उस के लिये जो एक दाना बेचता है जो उस की जन्नत को कम कर देता है, जिस की चौड़ाई ज़मीन व आस्मान जितनी है और एक दाना ख़रीदता है जो जहन्नम की वादी में इज़ाफ़ा कर देता है जो दुन्या के पहाड़ों और जो कुछ उन में है उसे पिघला कर रख दे।''

باب القرض

क़र्ज़ का बयान

कबीरा नम्बर **204 :** हुसूले नफ़्अ़ के लिये क़र्ज़ देना

इसे कबीरा गुनाहों में ज़िक्र करना ज़ाहिर है क्यूं कि येह ह़क़ीक़त में सूद है पस सूद के बाब में जितनी वईदें ज़िक्र की गई हैं वोह सब इस को शामिल हैं।

باب التفليس

कंगाल या दीवालिया होने का बयान

कबीरा नम्बर **205 :** अदा न करने की निय्यत से क़र्ज़ लेना

कबीरा नम्बर **206 :** अदाएगी की उम्मीद न होना

या'नी वोह मजबूर न हो और न ही उस से पूरा होने की ज़ाहिरी सूरत हो

नीज़ क़र्ज़ देने वाला उस के ह़ाल से बे ख़बर हो

www.dawateislami.net

﴾1﴿...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने तलफ़ करने के इरादे से लोगों का माल लिया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर तलफ़ कर देगा।" (या'नी न अदा करने की तौफ़ीक़ होगी न बरोज़े क़ियामत क़र्ज़ ख़्वाह राज़ी होगा)

(صحیح البخاری، کتاب الاستقراض والدیون، باب من اخذاموال الناس ......الخ، الحدیث: ٢٣٨٧، ص١٨٧)

﴾2﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने अदाएगी की निय्यत से क़र्ज़ लिया क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की त़रफ़ से अदा कर देगा (या'नी क़र्ज़ ख़्वाह को राज़ी कर देगा) और जिस ने अदा न करने के इरादे से क़र्ज़ लिया और मर गया तो क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस से इर्शाद फ़रमाएगा : "तूने येह गुमान किया कि मैं अपने बन्दे को किसी दूसरे के ह़क़ (को दबाने) की वजह से नहीं पकड़ूंगा।" पस उस की नेकियां ले ली जाएंगी और दूसरे की नेकियों में डाल दी जाएंगी और अगर उस के पास नेकियां न होंगी तो दूसरे के गुनाह ले कर उस पर डाले जाएंगे।"

(کنزالعمال، کتاب الدَّین والسلم،قسم الاقوال، فصل الثالث فی نیة المستدین ......الخ، الحدیث: ١٥٤٣٨، ج٦، ص٩٢)

﴾3﴿...... ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो भी आदमी इस अ़ज़्म से क़र्ज़ लेता है कि अदा न करेगा तो वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से चोर बन कर मिलेगा।"

(سنن ابن ماجه،ابواب الصدقات ، باب من ادان دینالم ینوقضاءه ،الحدیث: ٢٤١٠، ص٢٦٢١)

﴾4﴿...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो भी आदमी किसी औ़रत से शादी करे और उस का महर अदा न करने की निय्यत हो तो वोह ज़ानी मरेगा, जो भी आदमी किसी आदमी से कोई चीज़ ख़रीदे और उस की क़ीमत अदा न करने की निय्यत हो तो वोह ख़ाइन मरेगा और ख़ियानत करने वाला जहन्नमी है।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ٧٣٠٢، ج٨، ص٣٥)

﴾5﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो इस ह़ाल में मरा कि उस पर दिरहम या दीनार क़र्ज़ थे तो (इस क़र्ज़ को) उस की नेकियों से पूरा किया जाएगा क्यूं कि उस दिन दिरहम या दीनार न होगा।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الصدقات ، باب التشدیدفی الدین ،الحدیث: ٢٤١٤، ص٢٦٢١)

﴾6﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़र्ज़ दो क़िस्म के हैं : (1) जो इस ह़ाल में मरा कि उस की क़र्ज़ अदा करने की निय्यत थी तो मैं उस का वली हूं और (2) जो इस ह़ाल में मरा कि उस की अदाएगी की निय्यत न थी तो येह उस की नेकियों से पूरा किया जाएगा उस दिन दिरहम या दीनार न होगा।"

(الترغیب والترهیب، کتاب البیوع، باب الترهیب من الدین وترغیب المستدین......الخ،الحدیث: ٢٨٠٣، ج٢، ص٣٨١)

www.dawateislami.net

《7》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस शख़्स ने कम या ज़ियादा महर पर किसी औरत से निकाह किया लेकिन उस का अदा करने का इरादा न था तो उस ने धोका किया, और अदाएगी के बिग़ैर मर गया तो क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ानी हो कर मिलेगा, और जिस आदमी ने वापस न करने के इरादे से क़र्ज़ लिया तो उस ने धोका किया यहां तक कि उस का माल ले कर मर गया और उस का क़र्ज़ अदा न किया तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से चोर बन कर मिलेगा।" (المعجم الاوسط، الحديث: ١٨٥١، ج١، ص٥٠١)

《8》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन क़र्ज़ लेने वाले को बुलाएगा यहां तक कि बन्दा उस के सामने खड़ा होगा तो उस से कहा जाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! तूने येह क़र्ज़ क्यूं लिया ? और लोगों के हुक़ूक़ क्यूं ज़ाएअ़ किये ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने क़र्ज़ लिया मगर न उसे खाया, न पिया, न पहना, और न ही ज़ाएअ़ किया, अलबत्ता वोह या तो जल गया या चोरी हो गया या जितने में ख़रीदा था उस से कम में बेच दिया।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "मेरे बन्दे ने सच कहा, मैं इस बात का ज़ियादा हक़ रखता हूं कि तेरी त़रफ़ से क़र्ज़ अदा करूं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी चीज़ को बुलाएगा और उसे उस के तराज़ू में रखेगा लिहाज़ा उस की नेकियां बुराइयों से ज़ियादा हो जाएंगी और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रह़मत से जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عبدالرحمن بن ابی بكر، الحديث: ١٧٠٨، ج١، ص٤٢٠)

《9》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "मैं कुफ़्र और क़र्ज़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं।" एक आदमी ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कुफ़्र को क़र्ज़ के हम पल्ला जानते हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हां।" (سنن النسائی، کتاب الاستعاذة، باب الاستعاذة من الدين، الحديث: ٥٤٧٥، ص٢٤٣٨)

《10》...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "साहिबे क़र्ज़ अपने क़र्ज़ के साथ बंधा हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तन्हाई की फ़रियाद करेगा।" (المعجم الاوسط، الحديث: ٨٩٣، ج١، ص٢٥٩)

《11》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उन कबीरा गुनाहों के बा'द जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा गुनाह येह है कि बन्दा मरने के बा'द इस हालत में उस की बारगाह में हाज़िर हो कि उस पर ऐसा क़र्ज़ हो जिसे उस ने पूरा न किया हो।" (سنن ابی داؤد، کتاب البيوع، باب فی التشديد فی الدين، الحديث: ٣٣٤٢، ص١٤٧٤)

www.dawateislami.net

﴾12﴿...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "4 शख़्स ऐसे हैं जो जहन्नमियों को उन की अज़िय्यत पर मज़ीद तक्लीफ़ देंगे, वोह **हमीम** और **जहीम** के दरमियान दौड़ेंगे, हलाकत और तबाही को पुकारेंगे, जहन्नमी एक दूसरे से कहेंगे : "येह कौन लोग हैं जिन्हों ने हमारी तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर दिया ?" (1) पहले शख़्स पर अंगारों का ताबूत मुअ़ल्लक़ होगा (2) दूसरा अपनी अंतड़ियों को घसीट रहा होगा (3) तीसरे के मुंह से पीप और ख़ून बह रहा होगा और (4) चौथा आदमी अपना गोश्त खा रहा होगा, पस ताबूत वाले से कहा जाएगा : "रह़मते इलाही عَزَّ وَجَلَّ से दूर ! इस शख़्स को क्या है कि इस ने हमारी तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर दिया।" वोह बताएगा कि वोह बद नसीब इस ह़ाल में मरा था कि उस की गरदन पर लोगों का बोझ था जिसे पूरा करने के लिये उस ने कुछ नहीं छोड़ा।" (المعجم الكبير، الحديث: ٧٢٢٦، ج٧، ص٣١١)

﴾13﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : एक आदमी फ़ौत हो गया, हम ने उसे ग़ुस्ल और कफ़न दिया और ख़ुश्बू लगाई, फिर हम उसे सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ले कर ह़ाज़िर हुए कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस का जनाज़ा पढ़ाएं, हम ने अ़र्ज़ की : "इस का जनाज़ा पढ़ाइये।" पस आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़दम चले फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या इस पर क़र्ज़ है ?" हम ने अ़र्ज़ की : "इस के ज़िम्मे 2 दीनार हैं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वापस चले गए, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस की ज़िम्मादारी ले ली तो हम दोबारा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "2 दीनार मेरे ज़िम्मे हैं।" तो शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तह़क़ीक़ क़र्ज़ ख़्वाह का ह़क़ पूरा कर दिया गया है और अब मय्यित इस से बरी है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, फिर इस के बा'द एक दिन इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "उन 2 दीनारों का क्या हुवा।" मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह शख़्स तो कल फ़ौत हो गया।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आने वाले कल उसे (या'नी क़र्ज़ ख़्वाह को) लौटा देना।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "मैं ने वोह अदा कर दिये हैं।" तो रसूले अन्वर, साह़िबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अब उस का जिस्म अ़ज़ाब से बरी हो गया है।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابربن عبدالله، الحديث: ١٤٥٤٣، ج٥، ص٨٣)

अगर्चे येह बात सह़ीह़ है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक़रूज़ की नमाज़े जनाज़ा अदा नहीं फ़रमाई लेकिन बा'द में येह हुक्म मन्सूख़ (या'नी ख़त्म) हो गया (और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसे लोगों की नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई) जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है :

www.dawateislami.net

《14》...... रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जब कोई ऐसी मय्यित लाई जाती जिस पर क़र्ज़ होता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दरयाफ़्त फ़रमाते : "क्या इस ने अपने क़र्ज़ को पूरा करने के लिये कुछ छोड़ा है ?" अगर कहा जाता कि इस ने पूरा करने के लिये कुछ छोड़ा है तो उस का जनाज़ा पढ़ाते वरना फ़रमाते : "अपने रफ़ीक़ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो।" लेकिन जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़ुतूहात के दरवाज़े खोल दिये तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं मुअमिनीन के उन की जानों से ज़ियादा क़रीब हूं, लिहाज़ा जो क़र्ज़ की हालत में मर गया उस की अदाएगी मेरे ज़िम्मे है और जिस ने माल छोड़ा वोह वु-रसा के लिये है।"

(صحیح مسلم، کتاب الفرائض ، باب ترك مالًا لو رثته، الحدیث: ٤١٥٧،ص٩٥٩)

《15》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : "मक़रूज़ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाइये।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हें क्या नफ़्अ़ देता है कि मैं ऐसे आदमी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाऊं जिस की रूह़ अपनी क़ब्र में रहन रखी हुई है और जो आस्मान की त़रफ़ बुलन्द नहीं होती, अगर कोई आदमी इस के क़र्ज़ का ज़ामिन बने तो मैं इस की नमाज़ पढ़ाता हूं बेशक मेरी नमाज़ इस को नफ़्अ़ देगी।"

(الترغیب والترھیب، کتاب البیوع، باب الترھیب من الدین ......الخ،الحدیث: ٢٨١٩،ج٢،ص٣٨٧)

《16》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मोमिन की रूह़ उस के क़र्ज़ की वजह से मुअ़ल्लक़ रहती है (या'नी अपने अच्छे मक़ाम से रोक दी जाती है) यहां तक कि उस का क़र्ज़ पूरा कर दिया जाए।"

(جامع الترمذی، ابواب الجنائز، باب ماجاء ان نفس المؤمن ......الخ، الحدیث: ١٠٧٩،ص١٧٥٥)

《17》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक तुम्हारा रफ़ीक़ जन्नत के दरवाज़े पर अपने क़र्ज़ की वजह से रोक दिया गया है अगर तुम चाहो तो उस का क़र्ज़ पूरा अदा करो और अगर चाहो तो उसे (या'नी मक़रूज़ को) अ़ज़ाब के ह़वाले कर दो।"

(المستدرك ، کتاب البیوع،باب لوقتل رجل......الخ، الحدیث:٢٢٦٠/٦١،ج٢،ص٣٢٢)

मक़रूज़ के साथ अल्लाह तआ़ला होता है :

《18》...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मक़रूज़ के साथ होता है यहां तक कि वोह क़र्ज़ अदा कर दे जब तक वोह ऐसे काम में न पड़े जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ना पसन्द फ़रमाता हो।"

(المستدرك ، کتاب البیوع،باب ان الله مع الدان......الخ، الحدیث:٢٢٥٢،ج٢،ص٣١٩)

《19》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने ख़ज़ान्ची से फ़रमाया करते : "जाओ और मेरे लिये क़र्ज़ ले आओ क्यूं कि मैं ना पसन्द करता हूं कि एक रात भी ऐसी

www.dawateislami.net

गुज़ारूं जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ न हो क्यूं कि मैं ने शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुन्दरिजए बाला फ़रमाने आलीशान सुना है।"

(سنن ابن ماجة،ابواب الصدقات،باب من ادان دينا......الخ، الحديث:٢٤٠٩،ص ٢٦٢١)

﴾20﴿...... जब उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की तवज्जोह उन के कसरत से क़र्ज़ लेने की जानिब कराई गई तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मेरी उम्मत में से जिस किसी ने क़र्ज़ लिया फिर उस की अदाएगी की कोशिश की लेकिन अदा करने से पहले मर गया तो मैं उस का ज़ामिन हूं, जब कोई आदमी क़र्ज़ लेता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है कि उस का अदा करने का इरादा भी है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या ही में उस की त़रफ़ से अदा कर देता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها ، الحديث: ٢٥٢٦٦،ج٩،ص٤٩٦)

(الترغيب والترهيب، كتاب البيوع، باب الترهيب من الدين ......الخ،الحديث: ٢٧٩٩،ج٢،ص ٣٨٠)

﴾21﴿...... जब उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की तवज्जोह उन के कसरत से क़र्ज़ लेने की जानिब कराई गई तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कुशा-दगी आने के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस बन्दे की भी क़र्ज़ अदा करने की निय्यत होती है उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मदद हासिल होती है।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : "लिहाज़ा मैं उसी मदद और नुस्रत की त़लब में रहती हूं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيده عائشة رضى الله عنها ، الحديث: ٢٤٤٩٣،ج٩،ص٣٤٦)

﴾22﴿...... हज़रते सय्यिदुना इमाम त़-बरानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : "उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मदद और रिज़्क़ का वसीला अ़ता होता है।"

(المعجم الاوسط، الحديث:٧٦٠٨،ج٥،ص ٣٦٠)

﴾23﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में से किसी हद में कमी करने की सिफ़ारिश की तो उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की मुख़ा-लफ़त की, जो क़र्ज़ की हालत में मर गया फिर न दीनार छोड़े और न ही दिरहम, अलबत्ता ! आख़िरत में उस के दिरहमो दीनार उस की नेकियां और बुराइयां हैं, जिस ने जानने के बा वुजूद बात़िल काम में झगड़ा किया वोह हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी में रहेगा यहां तक कि उसे ख़त्म करे और जिस ने किसी मोमिन के बारे में ऐसी बात कही जो उस में न थी तो उसे जहन्नमियों की बदबू और पीप में बन्द कर दिया जाएगा यहां तक कि अपने क़ौल से बराअत का इज़्हार करे।"

(المستدرك، كتاب البيوع، باب من حالت شفاعته دون حد......الخ، الحديث: ٢٢٦٩، ج٢،ص٣٢٦)

www.dawateislami.net

《24》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन जिन का क़र्ज़ पूरा करेगा वोह येह हैं : (1) जिस की कुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में कमज़ोर थी लिहाज़ा उस ने क़र्ज़ लिया ताकि उस के ज़रीए अपने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन पर कुव्वत ह़ासिल करे (2) जिस के हां कोई मुसल्मान फ़ौत हो जाए और क़र्ज़ लिये बिग़ैर उस का कफ़न दफ़्न न कर सके और (3) वोह शख़्स जिसे ग़ैर शादी शुदा रहने का ख़ौफ़ हुवा लिहाज़ा उस ने अपने दीन पर ख़ौफ़ करते हुए निकाह़ कर लिया।"

(شعب الایمان ، باب فی قبض الید ......الخ،الحدیث: ٥٥٥٩،ج٤،ص٤٠٤،بتغیرٍقلیلٍ)

《25》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर कोई आदमी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो फिर क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो फिर क़त्ल किया जाए और उस के ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो वोह जन्नत में दाख़िल न होगा यहां तक कि उस का क़र्ज़ अदा कर दिया जाए।" (المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبداللہ بن جحش،الحدیث:٢٢٥٥٦،ج٨،ص٣٤٨)

《26》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अम्न के बा'द अपनी जानों को ख़ौफ़ में न डालो।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह क्या है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़र्ज़।" (السنن الکبری للبیهقی، کتاب البیوع، باب ماجاء من التشدید فی الدین، الحدیث: ١٠٩٦٦،ج٥،ص٥٨٢)

《27》...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "कम गुनाह तुझ पर मौत आसान करेंगे और कम क़र्ज़ तुझे आज़ाद रखेगा।"

(شعب الایمان ، باب فی قبض الید ......الخ،الحدیث: ٥٥٥٧،ج٤،ص٤٠٤)

《28》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़र्ज़ ज़मीन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का झन्डा है जब वोह किसी को ज़लील करने का इरादा फ़रमाता है तो उस की गरदन में रख देता है।" (المستدرک،کتاب البیوع، باب الدین رایة الله......الخ، الحدیث: ٢٢٥٧، ج٢،ص٣٢١)

तम्बीह :

मज़्कूरा दोनों गुनाहों को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है अगर्चे मैं ने किसी को इस की तसरीह़ करते हुए नहीं देखा जो इन सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका में ज़ाहिर है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से चोर बन कर मिलेगा और दोनों ह़दीसें इन दोनों गुनाहों को शामिल हैं।

www.dawateislami.net

पहली तो वाज़ेह है और दूसरी में जैसा कि महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशारा फ़रमाया कि वोह धोका दे कर अपने साथी का सारा माल ले लेता है, इस में कोई शक नहीं कि जिस ने क़र्ज़ लिया ज़ाहिरी तौर पर उस की अदाएगी की उम्मीद न हो और क़र्ज़ देने वाला उस से ला इल्म हो तो लेने वाले ने उसे धोका दिया जब तक कि उसे क़र्ज़ अदा न कर दे, क्यूं कि अगर वोह धोके में मुब्तला न होता तो कभी उसे क़र्ज़ न देता।

کبیرہ نمبر 207 :

कबीरा नम्बर 207 : मुता-लबे के बा वुजूद ग़नी का बिला उ़ज़्र क़र्ज़ अदा करने में टाल मटोल करना

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़र्ज़ की अदाएगी में मालदार का टाल मटोल करना ज़ुल्म है और जब तुम में से किसी को मालदार शख़्स का ह़वाला दिया जाए तो वोह उसी से मांगे।"

(صحیح مسلم ،کتاب المساقاۃ ، باب تحریم مطل الغنی ......الخ ، الحدیث ۴۴۰۲ ، ص ۹۵۰)

﴾2﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ुदरत रखने वाले का टाल मटोल करना उस के माल और सज़ा को जाइज़ कर देता है।"

(صحیح ابن حبان ،کتاب الدعوی،باب عقوبۃ الماکل،الحدیث: ۵۰۶۶،ج۷،ص۲۷۳)

या'नी लोगों से उस की टाल मटोल और बुरे मुआ़-मले का ज़िक्र करना जाइज़ है क्यूं कि मज़्लूम के लिये सिर्फ़ ज़ालिम के उस ज़ुल्म का ज़िक्र करना जाइज़ है जो ज़ालिम ने उस के साथ किया है और उसे क़ैद करना या मारना भी जाइज़ है।

﴾3﴿...... साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ज़ुल्म करने वाले अमीर, बूढ़े जाहिल और तकब्बुर करने वाले फ़क़ीर को ना पसन्द फ़रमाता है।" (المعجم الاوسط ، الحدیث: ۵۴۵۸ ، ج۴ ،ص ۱۳۰)

﴾4﴿...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस क़ौम को पाक नहीं करता जिस का कमज़ोर ताक़त वर से परेशान हुए बिग़ैर अपना ह़क़ वुसूल नहीं कर सकता।" मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "जो क़र्ज़ देने वाले से इस ह़ाल में जुदा हुवा कि वोह उस से राज़ी था तो उस के लिये ज़मीन के चौपाए और पानी की मछलियां दुआ़ करती हैं।"

(المعجم الکبیر ، الحدیث: ۵۹۱ ، ج۲۴ ، ص ۲۳۳)

www.dawateislami.net

《5》...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो बन्दा कुदरत के बा वुजूद अपने क़र्ज़ देने वाले से टाल मटोल करता है तो हर दिन, रात, जुमुआ और महीने में उस का ज़ुल्म लिखा जाता है।" (المعجم الكبير، الحديث: ٥٩٢ ، ج٢٤ ، ص ٢٣٤،بتغير قليل)

《6》...... हज़रते सय्यि-दतुना ख़ौला ज़ौजए हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है : "एक आदमी की सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक वस्क़ (60 साअ) खजूरें क़र्ज़ थीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक अन्सारी को हुक्म दिया कि उसे अदा करे, उस ने कम खजूरें अदा कीं तो उस शख़्स ने लेने से इन्कार कर दिया, अन्सारी ने कहा : "क्या तू अब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास जाएगा ?" उस ने कहा : "क्यूं नहीं, और कौन शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा आदिल हो सकता है।" येह सुन कर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखें अश्कबार हो गईं फिर इर्शाद फ़रमाया : "इस ने सच कहा, मुझ से ज़ियादा कौन अद्ल करने का हक़दार है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस क़ौम को पाक नहीं करता जिस का कमज़ोर ताक़त वर से अपना हक़ परेशान हुए बिग़ैर वुसूल नहीं कर सकता।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ ख़ौला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ! शुमार करो और इसे पूरा अदा करो, जो क़र्ज़ देने वाले से इस हाल में जुदा हुवा कि वोह उस से राज़ी था तो उस के लिये ज़मीन के चौपाए और समुन्दर की मछलियां दुआ करती हैं, नीज़ जो बन्दा कुदरत के बा वुजूद अपने क़र्ज़ देने वाले से टाल मटोल करता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हर दिन और रात उस का गुनाह लिखता है।"

(المعجم الاوسط ، الحديث: ٥٠٢٩ ، ج ٤ ،ص ١٠)

《7》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "वोह क़ौम पाक नहीं हो सकती जिस के कमज़ोर को उस का हक़ परेशान किये बिग़ैर न दिया जाए।"

(المرجع السابق، الحديث: ٥٨٥٠ ، ج ٤ ،ص ٢٤٠)

《8》...... एक आ'राबी का सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़र्ज़ था, उस ने शदीद तक़ाज़ा किया यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा मैं आप से झगड़ा करूंगा मगर येह कि आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) अदा कर दें।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने उसे झिड़का और कहा तेरा बुरा हो जानता नहीं किस से बात कर रहा है ?" तो रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "साहिबे हक़ के साथ तुम्हें क्या है ?" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यि-दतुना ख़ौला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को बुला भेजा और उन से फ़रमाया : "अगर तुम्हारे पास खजूरें हैं तो हमें क़र्ज़ दे दे जब हमारे पास आएंगी तो तुम्हें अदा कर देंगे।" उन्हों ने अर्ज़ की : "जी हां, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर

www.dawateislami.net

कुरबान हों।'' पस उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को खजूरें क़र्ज़ दीं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आ'राबी का क़र्ज़ भी अदा किया और उसे खिलाया भी तो उस ने कहा : ''आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे पूरा बदला अ़ता फ़रमाया, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पूरा बदला दे।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येही नेक लोग हैं क्यूं कि वोह क़ौम पाक नहीं हो सकती जिस में कमज़ोर अपना ह़क़ परेशान हुए बिग़ैर नहीं ले सकता।''

(سنن ابن ماجة،ابواب الصدقات ، باب لصاحب الحق سلطان ،الحديث: ٢٤٢٦، ص ٢٦٢٢)

तम्बीह :

इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है क्यूं कि ज़ुल्म, इ़ज़्ज़त का ह़लाल होना और सज़ा बड़ी वईदों में से है बल्कि हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की एक जमाअ़त ने तस्रीह़ की है और कहा है कि ''इस में इत्तिफ़ाक़ है कि जिस ने ह़ाकिम के हुक्म के बा'द कुदरत के बा वुजूद क़र्ज़ अदा न किया तो ह़ाकिम को इख़्तियार है कि उसे सख़्त सज़ा दे और लोहे के साथ सज़ा दे यहां तक कि वोह अदा करे या मर जाए। जैसा कि नमाज़ छोड़ने वाले के बारे में कहा गया है।''

www.dawateislami.net

باب الحجر

हजर का बयान

कबीरा नम्बर **208 :** **यतीम का माल खाना**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَاۡکُلُوۡنَ اَمۡوَالَ الۡیَتٰمٰی ظُلۡمًا اِنَّمَا یَاۡکُلُوۡنَ فِیۡ بُطُوۡنِہِمۡ نَارًا ؕ وَسَیَصۡلَوۡنَ سَعِیۡرًا۠ (پ۴،النسآء:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़क्ते धड़े (आतश कदे) में जाएंगे।

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''येह आयते मुबा-रका क़बीलए ग़तफ़ान के एक आदमी के बारे में नाज़िल हुई जो अपने ना बालिग़ यतीम भतीजे के माल का वाली बना और उसे खा गया।''

आयते करीमा के चन्द अल्फ़ाज़ की वज़ाहत :

ज़ुल्म से मुराद येह है कि इस की वजह से या इस हाल में कि वोह ज़ालिम हैं और हक़ के साथ खाना इस वईद से ख़ारिज हो गया जैसे कुतुबे फ़िक़्ह में मुक़र्रर की गई शुरूत़ के मुताबिक़ वाली का खाना।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

وَمَنۡ کَانَ غَنِیًّا فَلۡیَسۡتَعۡفِفۡ وَمَنۡ کَانَ فَقِیۡرًا فَلۡیَاۡکُلۡ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ؕ (پ۴،النساء:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे हाजत न हो वोह बचता रहे और जो हाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खाए।

या'नी ज़रूरत के मुताबिक़ ले या क़र्ज़ ले या अपने काम की उजरत के मुताबिक़ या अगर मजबूर हो तो और उस पर आसान हो तो अदा करे, हमारे नज़्दीक सहीह येह है कि वली अगर ग़नी हो तो उस के माल से कुछ न ले और अगर फ़क़ीर हो और वसिय्यत करने वाला हो और बच्चे को तसर्रुफ़ से रोके हुए माल की देखभाल से उस के काम में ख़लल पड़े तो उस के माल से ले सकता है अगर्चे क़ाज़ी ने फ़ैसला न किया हो और उस की उजरत उस के काम और उ़र्फ़ के मुताबिक़ होगी जब कि क़ाज़ी कुछ भी नहीं ले सकता।

www.dawateislami.net

बाप, दादा और मां जो कि वसी हों उन के लिये भी ब क़दरे ज़रूरत है क्यूं की बच्चे के माल में उन का न–फ़क़ा वाजिब है, अगर बाप या दादा बच्चे के माल की देखभाल न कर सकें तो क़ाज़ी उस के लिये क़ीमत मुक़र्रर करे या उसे मुक़र्रर कर के उस के लिये बच्चे के माल में से उजरत मुक़र्रर कर दे ताकि कोई एह़सान न हो लेकिन इस के लिये क़ाज़ी से मुत़ा–लबा जाइज़ नहीं अगर्चे फ़क़ीर हो।

वली के लिये यतीम के माल को अपने माल से मिलाना जाइज़ नहीं और मख़्लूत़ माल से मेहमान नवाज़ी करना भी जाईज़ नहीं बशर्ते कि इस में कोई मस्लह़त हो वोह येह कि उस में इज़ाफ़ा हो जाए बजाए इस के कि वोह तन्हा खाता और ज़ियाफ़त यतीम के ख़ास ह़िस्से से ज़ियादा न हो।

पेट में आग भरने से मुराद येह है कि उन के पेट एक बरतन की मानिन्द हैं जो कि आग से भरे जाते हैं, येह या तो ह़क़ीक़तन इसी त़रह़ होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये एक ऐसी आग तख़्लीक़ फ़रमाएगा जिस को वोह खाएंगे, या फिर मजाज़ी त़ौर पर मुसब्बिब बोल कर सबब मुराद लिया है, क्यूं कि सबब मुसब्बिब की जानिब ले जाने वाला होता है, बहर ह़ाल इस से मुराद किसी भी सूरत में माल का ज़ाएअ़ करना, क्यूं कि यतीम का नुक़्सान ख़्वाह उस के माल को खा कर या किसी और ज़रीए से ज़ाएअ़ कर के किया जाए, कोई फ़र्क़ नहीं रखता।

यहां इस आयते मुबा–रका में ख़ास त़ौर पर सिर्फ़ खाने का ही तज़्किरा इस वजह से किया गया है क्यूं कि उस ज़माने में अ़ाम त़ौर पर लोगों के अम्वाल जानवर होते थे जिन का गोश्त खाया जाता और दूध पिया जाता था या इस लिये इस से मक़्सूद दर अस्ल तसर्रुफ़ात हैं। अ़ल्लामा इब्ने दक़ीक़ अल ईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَحِيد का क़ौल है : "यतीम का माल खाना बुरे ख़ातिमे की त़रफ़ ले जाता है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस से अपनी पनाह में रखे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

लिहाज़ा जब येह आयते मुबा–रका नाज़िल हुई तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان यतीमों के माल को अपने माल के साथ मिलाने से रुक गए यहां तक कि येह आयते मुबा–रका नाज़िल हुई :

وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ط (پ٢، البقرة:٢٢٠)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर अपना उन का ख़र्च मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं।

इस से गुमान होता है कि शायद येह आयते मुबा–रका उस गुज़श्ता आयते मुबा–रका की नासिख़ है ह़ालां कि येह सह़ीह़ नहीं क्यूं कि उस में तो ज़ुल्म के त़रीक़े से माल खाने को मम्नूअ़ क़रार दिया गया है लिहाज़ा येह उस की नासिख़ कैसे हो सकती है, बल्कि यहां मुराद येह है कि उन का इख़्तिलाफ़ मम्नूअ़, शदीद वईद और अ़ज़ाब वाला था और बुरे अन्जाम की अ़लामत था और ज़ुल्म के त़ौर पर जो माल लिया जाए वोह अ़ज़ाब का सबब है वरना येह अ़ज़ीम नेकी है, लिहाज़ा पहली आयते करीमा पहली शिक़ के बारे में जब कि दूसरी आयते करीमा दूसरी शिक़ के बारे में है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन दोनों को इस आयत में जम्अ़ कर दिया है :

www.dawateislami.net

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ (پ۸،الانعام:۱۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे त़रीके़ से जब तक वोह अपनी जवानी को पहुंचे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने यतीमों के ह़क़ की ताईद फ़रमाते हुए अपने इस फ़रमाने आ़लीशान से मु-तनब्बेह फ़रमाया :

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا۝ (پ۴،النساء:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और डरें वोह लोग अगर अपने बा'द ना तुवां औलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें ख़त़रा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें।

आयते करीमा में हुक्म दिया जा रहा है कि जिस की गोद में यतीम बच्चा हो वोह उस से बातचीत भी नर्म लहजे में करे लिहाज़ा उसे ऐ बेटे कह कर पुकारे जिस त़रह़ अपनी औलाद को पुकारता है और उस के साथ नेकी और एह़सान करे और उस के माल का ख़याल रखे जिस त़रह़ उस पर वाजिब है कि इस के बा'द उस के माल और उस की औलाद का ख़याल रखे क्यूं कि बदला अ़मल की जिन्स से होता है :

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۝ (پ۱،الفاتحۃ:۴) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : रोजे़ जज़ा का मालिक।

जैसा करोगे तुम्हारे साथ वैसा ही किया जाएगा और इन्सान अमीन है और ग़ैर के माल व औलाद में तसर्रुफ़ करने वाला है और जब इसे मौत आएगी तो माल, औलाद, अहलो इ़याल और तमाम तअ़ल्लुक़ात के बारे में जैसा इस ने किया होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसा ही बदला देगा अगर अच्छा किया तो अच्छी जज़ा और अगर बुरा किया तो बुरी जज़ा मिलेगी, पस अ़क्ल मन्द को अपनी औलाद और माल के बारे में डरना चाहिये बशर्ते कि उसे अपने दीन पर ख़ौफ़ न हो, अपनी परवरिश में पलने वाले यतीम बच्चों पर इसी त़रह़ अपना माल ख़र्च करे जिस त़रह़ कि अगर उस की औलाद यतीम होती तो उन के वाली पर माल ख़र्च करना ज़रूरी होता।

﴾1﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य भेजी : "ऐ दावूद (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ! यतीम के लिये रह़ीम बाप की त़रह़ हो जा और बेवा के लिये शफ़ीक़ ख़ावन्द की त़रह़ हो जा।"

जान लो ! जैसी फ़स्ल काश्त करोगे ऐसी ही काटोगे, क्यूं कि हो सकता है तू मर जाए और यतीम बच्चा और बेवा औ़रत छोड़ जाए। यतीमों के मालों को खाने और इस में ज़ुल्म करने के बारे में कई अह़ादीसे मुबा-रका हैं, जिन में लोगों को इस हलाक करने वाली फ़ोह़्श ह़-र-कत से डराने के लिये शदीद वई़द ज़िक्र की गई है, उन में से चन्द येह हैं :

www.dawateislami.net

यतीम का माल खाने पर वईदें :

《2》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "ऐ अबू ज़र ! मैं तुझे कमज़ोर देखता हूं और मैं तेरे लिये वोही चीज़ पसन्द करता हूं जो अपने लिये पसन्द करता हूं, 2 आदमियों का कभी हाकिम न बनना और यतीम के माल की जानिब माइल न होना।"

(صحيح مسلم ،كتاب الامارة ، باب كراهة الامارة بغير ضرورة ، الحديث: ٤٧٢٠ ، ص ١٠٠٥)

《3》...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "7 हलाक करने वाली चीज़ों से बचो।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी हैं ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, जादू करना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हराम कर्दा जान को नाहक़ क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जिहाद से पीठ फैर कर भागना और पाक दामन सीधी सादी मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना।"

(صحيح البخاری،كتاب الوصايا،باب قول الله تعالى،ان الذين ياكلون......الخ،الحديث:٢٧٦٦،ص٢٢٣)

《4》...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "कबीरा गुनाह 7 हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक ठहराना, किसी मोमिन को नाहक़ क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, पाक दामन औरत पर तोहमत लगाना, मैदाने जिहाद से भाग जाना और हिजरत के बा'द आ'राबी बन जाना।"

(مجمع الزوائد ،كتاب الايمان ، باب في الكبائر ، الحديث: ٣٩٠ ، ج ١ ، ص ٢٩٤)

《5》...... हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "4 शख़्स ऐसे हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें जन्नत में दाख़िल न करेगा और न ही उस की ने'मतें चखाएगा : (1) शराब का आदी (2) सूद खाने वाला (3) नाहक़ यतीम का माल खाने वाला और (4) वालिदैन का ना फ़रमान।"

(المستدرك ،كتاب البيوع ، باب ان اربى الربا عرض الرجل المسلم ، الحديث: ٢٣٠٧ ، ج ٢ ، ص ٣٣٨)

《6》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो खुतूत हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन हज़्म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को दे कर अहले यमन की तरफ़ भेजे उन में येह लिखा था : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक क़ियामत के दिन सब से बड़े गुनाह येह हैं : (1) शिर्क करना (2) नाहक़ मोमिन को क़त्ल करना (3) जंग के दिन मैदाने जिहाद से भागना (4) वालिदैन की ना फ़रमानी करना (5) पाक दामन औरत पर तोहमत लगाना (6) जादू सीखना (7) सूद खाना और (8) यतीम का माल खाना।"

(صحيح ابن حبان،كتاب التاريخ،باب كتب النبي عليه السلام،الحديث:٦٥٢٥،ج٨،ص١٨١)

www.dawateislami.net

《7》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "बरोज़े क़ियामत कुछ लोग अपनी क़ब्रों से उठाए जाएंगे जिन के मूंहों से आग भड़क रही होगी।" अर्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान नहीं पढ़ा :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا۠ (پ۴، النساء:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़क्ते धड़े (आतश कदे) में जाएंगे।

(مسند ابی یعلی الموصلی، حدیث:ابی برزة الاسلمی، الحدیث:۷۴۰۳، ج۶، ص۲۷۲)

《8》...... ह़दीसे मे'राज में शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर मैं ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिन पर कुछ लोग मुक़र्रर थे जो उन के जबड़ों को चीरते और दूसरे आग के पथ्थर ले कर आते और उन के मूंहों में डाल देते जो उन की पीठों से जा निकलते।" मैं ने दरयाफ़्त किया : "ऐ जिब्रईल ! येह कौन लोग हैं ?" तो उन्हों ने कहा : "येह वोह लोग हैं जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं।"

(تفسیر ابن کثیر، سورة النساء، تحت الآیة:۱۰، ج۲، ص۱۹۵، مفهومًا)

《9》...... ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "मैं ने मे'राज की रात ऐसी क़ौम देखी जिन के होंट ऊंटों के होंटों की त़रह़ थे और उन पर ऐसे लोग मुक़र्रर थे जो उन को होंटों को पकड़ते फिर उन के मूंहों में आग के पथ्थर डालते जो उन के पीछे से निकल जाते।" मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلام) ! येह कौन लोग हैं ?" तो उन्हों ने बताया : "येह वोह लोग हैं जो यतीमों का माल ज़ुल्म से खाते थे।"

(تفسیرقرطبی، الجزء الخامس، سورة النساء، تحت الآیة:۱۰، ج۳، ص۳۹)

तम्बीह :

येह भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के कलाम का ज़ाहिर इस बात पर दलालत करता है कि कम या ज़ियादा माल खाने में कोई फ़र्क़ नहीं अगर्चे एक दाना ही हो जैसा कि कम तोलने और कम नापने के बयान में गुज़र चुका है, इस के और ग़स्ब और चोरी के दरमियान इसी त़रह़ फ़र्क़ है जिस त़रह़ मैं ने इन दोनों (या'नी चोरी और ग़स्ब) के दरमियान फ़र्क़ किया और नाप तोल में कमी करना भी इसी में दाख़िल है क्यूं कि येह भी यतीम के माल में तसर्रुफ़ करने पर क़ुदरत देता है।

www.dawateislami.net

अगर यतीम का कम माल खाने को कबीरा न क़रार दिया जाए तो येह ज़ियादा खाने की त़रफ़ ले जाता है क्यूं कि इसे कोई मन्अ़ करने वाला नहीं क्यूं कि वोह यतीम के तमाम माल का वाली है, लिहाज़ा कम लेने पर भी कबीरा गुनाह होने का हुक्म मु-तअ़य्यन होगा ब ख़िलाफ़ चोरी और ग़स्ब के और इसी से उन के क़ौल का भी रद हो जाता है जिन्हों ने येह गुमान किया कि "यतीम के माल से थोड़ा सा लेना सग़ीरा है।"

यतीम की कफ़ालत और उस पर शफ़क़त करना और बेवाओं की परवरिश करना

﴾10﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस त़रह़ होंगे।" और अपनी शहादत वाली और दरमियान वाली उंगली से इशारा फ़रमाया और उन्हें कुशादा किया।

(صحيح البخاری ، كتاب الطلاق ، باب اللعان وقول الله تعالى(والذين يرمون ازواجهم......الخ ، الحديث: ٥٣٠٤ ، ص ٤٥٨)

﴾11﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने या दूसरे के यतीम बच्चे की परवरिश करने वाला और मैं जन्नत में इस त़रह़ होंगे।" और रावी ने अपनी शहादत वाली और दरमियानी उंगली मिला कर इशारा फ़रमाया। (صحيح مسلم ،كتاب الزهد ، باب فضل الاحسان الى الارملة ......الخ ، ، الحديث: ٧٤٦٩، ص ١١٩٤)

﴾12﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी रिश्तेदार या ग़ैर रिश्तेदार यतीम की कफ़ालत की वोह और मैं जन्नत में इस त़रह़ होंगे जिस त़रह़ येह हैं।" और अपनी दोनों उंगलियों को मिलाया "और जिस ने तीन बेटियों को पालने की कोशिश की वोह जन्नती है और उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले रोज़ेदार और नमाज़ी का अज्र है।"

(مجمع الزوائد،كتاب البروالصلة،باب فی الاولادوالاقارب......الخ،الحديث:١٣٤٩٣،ج٨،ص٢٨٨)

﴾13﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने तीन यतीमों की परवरिश की वोह रात को क़ियाम करने वाले, दिन को रोज़ा रखने वाले और सुब्ह़ शाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में अपनी तलवार सौंतने वाले की त़रह़ है और मैं और वोह जन्नत में दो भाइयों की त़रह़ होंगे जैसा कि येह दो बहनें हैं।" और अपनी अंगुश्ते शहादत और दरमियानी उंगली को मिलाया।

(سنن ابن ماجة ، ابواب الادب ، باب حق اليتيم ، الحديث: ٣٦٨٠ ، ص ٢٦٩٧)

﴾14﴿...... हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मुसल्मानों के किसी यतीम बच्चे के खाने पीने की ज़िम्मादारी ली अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा मगर येह कि वोह ऐसा गुनाह करे जिस की मुआ़फ़ी न हो।"

(جامع الترمذی ،ابواب البر و الصلة ، باب ماجاء فی رحمة اليتيم و كفالته ، الحديث: ١٩١٧ ، ص ١٨٤٥)

www.dawateislami.net

﴾15﴿...... दूसरी रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : "यहां तक कि वोह उस से मुस्तग़नी हो जाए तो उस के लिये जन्नत वाजिब है।" (المسند للامام احمد بن حنبل،حديث مالك بن الحارث،الحديث:١٩٠٤٧،ج٧،ص٢٧)

﴾16﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मानों के घरों में सब से अच्छा घर वोह है जिस में यतीम से अच्छा सुलूक किया जाए और मुसल्मानों के घरों में से बुरा घर वोह है जिस में यतीम से बुरा सुलूक किया जाए।"

(سنن ابن ماجة، ابواب الادب ، باب حق اليتيم ، الحديث: ٣٦٧٩، ج٥ ، ص ٢٦٩٧)

﴾17﴿...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मैं सब से पहले जन्नत का दरवाज़ा खोलूंगा मगर मैं एक औ़रत देखूंगा जो मुझ से भी सब्क़त ले जाएगी तो मैं उस से पूछूंगा : "तुम्हारा क्या मुआ़-मला है और तुम कौन हो ?" तो वोह कहेगी : "मैं वोह औ़रत हूं जो अपने यतीम बच्चों को लिये बैठी रही।" (और उन की वजह से दूसरा निकाह़ न किया।)

(مسند ابى يعلى الموصلى ، مسند ابى هريرة ، الحديث: ٦٦٢١، ج ٥ ، ص ٥١٠)

﴾18﴿...... दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! जिस ने यतीम पर रह़्म किया और उस के साथ नर्म गुफ़्त-गू की नीज़ उस की यतीमी और मिस्कीनी पर रह़्म किया और अपने पड़ोसी पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ता किये हुए (माल व दौलत) की फ़ज़ीलत की बिना पर तकब्बुर न किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे अ़ज़ाब न देगा।" (المعجم الاوسط ، الحديث: ٨٨٢٨، ج٦، ص ٢٩٦)

यतीम के सर पर हाथ फैरने की फ़ज़ीलत :

﴾19﴿...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने यतीम के सर पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हाथ रखा तो उस के लिये हर बाल के बदले जिन पर उस का हाथ गुज़रा नेकियां हैं और जिस ने यतीम बच्चे या बच्ची के साथ एह़सान किया मैं और वोह जन्नत में इन दो (उंग्लियों) की त़रह़ होंगे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، حديث ابى امامة الباهلى، الحديث: ٢٢٢١٥ ، ج٨ ، ص ٢٧٢)

﴾20﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से इर्शाद फ़रमाया कि उन की बीनाई चले जाने, पीठ झुक जाने और ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाइयों ने जो कुछ उन के साथ किया इस का सबब येह है कि एक मरतबा एक भूका रोज़ादार, मिस्कीन यतीम उन के पास आया इस ह़ाल में कि उन्हों ने और उन के घर वालों ने एक बकरी ज़ब्ह़ की और उसे खा लिया लेकिन उस को कुछ न खिलाया, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बताया कि उसे अपनी मख़्लूक़ से यतीमों और मिस्कीनों से महब्बत करने से ज़ियादा कोई चीज़ पसन्द नहीं और आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म

www.dawateislami.net

दिया कि खाना तय्यार करें और मसाकीन को दा'वत दें पस आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ऐसा ही किया।"

(المستدرك ، كتاب التفسير ، سورة يوسف، باب علة ذهاب بصر ......الخ ، الحديث: ٣٣٨١، ج٣، ص ٨٨ تا ٨٩، بتغيرٍ)

﴾21﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेवाओं और मसाकीन की परवरिश करने वाला राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में जिहाद करने वाले की त़रह़ है।" हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मेरा गुमान है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "और उस क़ियाम करने वाले की त़रह़ है जो सुस्ती नहीं करता और उस रोज़ादार की त़रह़ है जो इफ़्त़ार नहीं करता।"

(صحيح مسلم ، كتاب الزهد ، باب فضل الاحسان الى الارملة ......الخ ، الحديث: ٧٤٦٨، ص ١١٩٤)

﴾22﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेवाओं और मिस्कीनों की परवरिश करने वाला राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में जिहाद करने वाले और रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب التجارات ، باب الحث على المكاسب ، الحديث: ٢١٤٠ ، ص ٢٦٠٥)

किसी नेक बुज़ुर्ग का कहना है : "मैं इब्तिदाअन बहुत नशा करता और गुनाहों में मुब्तला रहता था, एक दिन मैं ने एक यतीम देखा तो मैं उस से शफ़्क़त से पेश आया जैसा कि बच्चे पर शफ़्क़त की जाती है बल्कि इस से भी ज़ियादा। फिर मैं सो गया तो मैं ने जहन्नम के फ़िरिश्तों को देखा जो मुझे सख़्ती से पकड़ कर जहन्नम की त़रफ़ ले जा रहे हैं, अचानक वोही यतीम मेरे सामने आ खड़ा हुवा और उन फ़िरिश्तों से कहने लगा : "इसे छोड़ दो ! यहां तक कि मैं इस के बारे में अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से रुजूअ़ कर लूं।" मगर उन्हों ने इन्कार कर दिया, फिर अचानक एक आवाज़ आई : "हम ने इसे यतीम पर एह़सान करने की वजह से इस का ह़िस्सा अ़त़ा कर दिया है।" लिहाज़ा मैं बेदार हुवा और उस दिन से यतीमों के साथ और ज़ियादा एह़सान करने लगा।"

मन्क़ूल है कि "किसी ख़ुशह़ाल अ़लवी के हां लड़कियां थीं, वोह मर गया तो शदीद फ़क़्र ने उन के हां डेरे डाल दिये यहां तक कि उन्हों ने जग हंसाई के ख़ौफ़ से अपने वत़न से हिजरत की और एक शहर की मतरूका मस्जिद (या'नी जिस में लोगों ने नमाज़ पढ़ना छोड़ दी थी) में दाख़िल हो गईं, उन की मां ने उन्हें वहां छोड़ा और ख़ुद उन के लिये रिज़्क़ तलाश करने के लिये निकल खड़ी हुई, वोह शहर के एक मुसल्मान रईस के पास से गुज़री और उसे अपना ह़ाल बयान किया लेकिन उस ने तस्दीक़ न की और कहा : "मुझे इस की दलील पेश करो।" उस ने कहा : "मैं मुसाफ़िर हूं।" लेकिन उस

www.dawateislami.net

मुसल्मान रईस ने उस ख़ातून से मुंह फैर लिया, फिर वोह एक मजूसी के पास से गुज़री और उस से अपनी ला चारगी बयान की तो उस ने तस्दीक़ करते हुए अपनी एक ख़ातून को उस के साथ भेजा, लिहाज़ा वोह ख़ातून उस को और उस की लड़कियों को अपने घर ले आई और उन की बहुत ज़ियादा इज़्ज़त की, जब निस्फ़ रात गुज़र गई तो उस मुसल्मान ने ख़्वाब देखा : "क़ियामत क़ाइम हो चुकी है और नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सर पर "**लिवाउल ह़म्द**" (या'नी ह़म्द का झन्डा) है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ही एक अ़ज़ीमुश्शान मह़ल है, उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मह़ल किस के लिये है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी भी मुसल्मान शख़्स के लिये।" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं भी तो मुसल्मान मुवह़्ह़िद हूं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरे पास इस की दलील पेश करो।"

वोह हैरानो शश्दर हो गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अ़लवी ख़ातून का क़िस्सा बयान किया, चूंकि वोह आदमी उस अ़लवी ख़ातून को धुत्कार चुका था लिहाज़ा शिद्दते ग़मो अलम में बेदार हुवा और उन्हें तलाश करना शुरूअ़ कर दिया यहां तक कि उसे एक मजूसी के घर में उस के मौजूद होने का पता चला, पस उस ने मजूसी से मुता-लबा किया लेकिन उस ने इन्कार कर दिया और कहा : "मुझे इस की ब-रकात ह़ासिल हो चुकी हैं।" मुसल्मान ने कहा : "येह एक हज़ार **(1000)** दीनार ले लो और वोह अ़लवी ख़ातून मेरे ह़वाले कर दो।" लेकिन उस मजूसी ने फिर भी इन्कार कर दिया, तो मुसल्मान ने उस मजूसी को ऐसा करने से मु-तनफ़्फ़िर करने की कोशिश की लेकिन उस मजूसी ने उस से कहा : "जो तुम चाहते हो मैं उस का ज़ियादा ह़क़दार हूं और वोह मह़ल जो तुम ने ख़्वाब में देखा है मेरे लिये बनाया गया है, क्या तुम मुझ पर अपने इस्लाम की वजह से फ़ख़्र करते हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं और मेरे घर वाले उस वक़्त तक नहीं सोए जब तक कि उस अ़लवी ख़ातून के हाथ पर इस्लाम क़बूल न कर लिया और मैं ने भी तुम्हारे ख़्वाब की मिस्ल ख़्वाब देखा है और मुझ से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "अ़लवी ख़ातून और उस की बेटियां तेरे पास हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم !" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह मह़ल तेरे और तेरे घर वालों के लिये है।" आख़िरे कार वोह मुसल्मान चला गया और उस के हुज़्नो मलाल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 209 : गुनाह के काम में माल ख़र्च करना

अगर्चे एक फ़ल्स (या'नी दिरहम का छटा ह़िस्सा) ही क्यूं न हो

ख़्वाह वोह गुनाह कबीरा हो या सग़ीरा

इसे भी कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है जिस पर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का कलाम दलालत करता है क्यूं कि उन्हों ने इसे उस नादानी और फ़ुज़ूल ख़र्ची में शुमार किया है जो माल में तसर्रुफ़ करने से रोकने का सबब है, और इस बात की भी तस्रीह़ की है : ''जिस को तसर्रुफ़ से रोक दिया जाए उस की न तो गवाही सह़ीह़ होती है और न ही विलायत जैसे अपनी बेटी का निकाह़ करना।''

शहादत और विलायत से उसे रोक देना उस के फ़ासिक़ होने की ख़बर देता है और जिस ने इसे फ़िस्क़ क़रार दिया उस के नज़्दीक येह भी कबीरा गुनाह है, मा'नवी त़ौर पर इस की तौजीह येह है कि नफ़्स के नज़्दीक माल से जियादा अ़ज़ीज़ कोई चीज़ नहीं और जब इसे गुनाहों में ख़र्च करना आसान हो जाए तो येह गुनाहों की मह़ब्बत में मुकम्मल त़ौर पर इन्हिमाक पर दलालत करता है और इस में कोई शक नहीं कि इस इन्हिमाक से अ़ज़ीम मफ़ासिद पैदा होते हैं लिहाज़ा येह मा'नवी त़ौर पर भी कबीरा गुनाह है।

www.dawateislami.net

باب الصلح
सुल्ह का बयान

कबीरा नम्बर 210 : पड़ोसी को रिहाइश के मुआ-मले में तक्लीफ़ पहुंचाना

पड़ोसी के घर से ऊं चा घर बनाना या ऐसी इमारत बनाना या ऐसी त़र्ज़ पर इमारत बनाना जिस से उसे तक्लीफ़ पहुंचती हो अगर्चे पड़ोसी ज़िम्मी और काफ़िर ही क्यूं न हो

《1》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है वोह अपने पड़ोसी को हरगिज़ तक्लीफ़ न दे, जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे और जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ، باب الحث علی اکرام الجار والضیف......الخ ،الحدیث: ١٧٤ ، ص ٦٨٨)

《2》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी से अच्छा सुलूक करे।" (المرجع السابق،الحدیث:١٧٦ ، ص ٦٨٨)

《3》...... जब कि एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी की इ़ज़्ज़त करे।"

(صحیح البخاری ، باب الادب ، باب من کان یومن باللہ والیوم......الخ، الحدیث: ٦٠١٩، ص ٥٠٩)

《4》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان से इर्शाद फ़रमाया : "तुम ज़िना के बारे में क्या कहते हो ?" सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : "ह़राम है, इसे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियामत तक के लिये ह़राम फ़रमा दिया है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी का 10 औ़रतों से ज़िना करना अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने से कम गुनाह है।" फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम चोरी के बारे में क्या कहते हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे ह़राम क़रार दिया है लिहाज़ा येह क़ियामत तक के लिये ह़राम है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी का 10 घरों से चोरी करना अपने पड़ोसी के घर से चोरी करने से कम गुनाह है।" (المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث المقداد بن الأسود ، الحدیث: ٢٣٩١٥ ، ج٩ ، ص ٢٢٦)

www.dawateislami.net

《5》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मोमिन नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह ईमान वाला नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मोमिन नहीं हो सकता।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह (बद नसीब) कौन है ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस की बुराइयों से उस का पड़ोसी मह़फ़ूज़ न रहे।"

(صحیح البخاری ،کتاب الادب ، باب اثم من لایامن جارہ بوائقہ ، الحدیث: ٦٠١٦ ، ص٥٠٩)

(المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث ابی شریح الخزاعی،الحدیث: ١٦٣٧٢ ، ج٥ ،ص ٥١٤)

《6》...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस के शर से उस का पड़ोसी मह़फ़ूज़ न रहे वोह मोमिन नहीं।"

(مسند ابی یعلی الموصلی ، مسندانس بن مالك، الحدیث: ٤٢٣٦ ، ج ٣ ، ص ٤٤٢)

《7》......सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस का पड़ोसी उस के शर से मह़फ़ूज़ न हो जाए, जब वोह (पड़ोसी) शब बाशी करे तो उस के शर से मह़फ़ूज़ हो, बेशक मोमिन तो वोह है जो ख़ुद परेशानी में हो और दूसरे लोग उस की त़रफ़ से राह़त में हों।"

(الترغیب والترھیب،کتاب البروالصلة،باب الترھیب من اذی......الخ،الحدیث:٣٩٠١،ج٣،ص٢٣٩،٤٠)

《8》...... नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अपने पड़ोसी या भाई के लिये वोही पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ، باب الدلیل علی ان من خصال الایمان ......الخ ، الحدیث: ١٧١ ، ص٦٨٨)

《9》...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने फ़ुलां क़बीले के मह़ल्ले में रिहाइश इख़्तियार की है लेकिन उन में से जो मुझे सब से ज़ियादा तक्लीफ़ देता है वोह मेरा सब से ज़ियादा क़रीबी पड़ोसी है।" तो सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم को भेजा वोह मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो कर ज़ोर ज़ोर से येह ए'लान करने लगे कि बेशक **चालीस** घर पड़ोस में दाख़िल हैं और जिस के शर से उस का पड़ोसी ख़ौफ़ज़दा हो वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।" (المعجم الکبیر ، الحدیث: ١٤٣ ، ج١٩ ، ص ٧٣)

《10》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तक बन्दे का दिल सीधा न हो जाए उस का ईमान दुरुस्त नहीं हो सकता और जब तक उस की ज़बान सीधी न हो जाए उस का दिल सीधा नहीं हो सकता और वोह उस वक़्त

www.dawateislami.net

तक जन्नत में दाखिल नहीं हो सकता जब तक उस का पड़ोसी उस के शर से बे ख़ौफ़ न हो जाए।"

(المسندللامام احمدبن حنبل،مسندانس بن مالك بن النضر،الحديث:١٣٠٤٧،ج٤،ص٣٩٥)

मोमिन और मुस्लिम में फ़र्क़ :

《11》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन वोह है जिस से लोग बे ख़ौफ़ रहें और मुसल्मान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से लोग महफ़ूज़ रहें और मुहाजिर वोह है जो बुराई को छोड़ दे, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! जिस के शर से उस का पड़ोसी बे ख़ौफ़ न हो वोह बन्दा जन्नत में दाख़िल न होगा।"

(المرجع السابق، الحديث: ١٢٥٦٢ ، ج٤ ، ص ٣٠٨)

《12》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे दरमियान तुम्हारे अख़्लाक़ इस तरह तक़्सीम किये हैं जिस तरह तुम्हारे दरमियान तुम्हारा रिज़्क़ तक़्सीम फ़रमाया है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या तो उसे भी अता फ़रमाता है जिस से महब्बत फ़रमाता है और जिस से महब्बत नहीं फ़रमाता उसे भी अता फ़रमाता है मगर दीन सिर्फ़ उसी को अता फ़रमाता है जिस से महब्बत फ़रमाता है, लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिसे दीन अता फ़रमाया बेशक उसे अपना महबूब बना लिया, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! बन्दा उस वक़्त तक मुसल्मान नहीं हो सकता जब तक कि उस का दिल और ज़बान मुसल्मान न हो जाए और वोह उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस का पड़ोसी उस के शर से महफ़ूज़ न हो जाए।"

रावी कहते हैं, मैं ने अर्ज़ की : "उस के शर से क्या मुराद है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बद दियानती और ज़ुल्म, नीज़ जो बन्दा हराम माल कमाए फिर उस में से ख़र्च करे तो उस में ब-र-कत न होगी और अगर स-दक़ा करेगा तो वोह क़बूल न होगा और अगर उसे छोड़ कर मर जाएगा तो वोह उस के लिये जहन्नम का ज़ादे राह होगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बुराई को बुराई के ज़रीए नहीं मिटाता अलबत्ता अच्छाई के ज़रीए बुराई को ज़रूर मिटा देता है, बेशक बुराई बुराई को नहीं मिटाती।"

(المرجع السابق، مسند عبدالله بن مسعود ، الحديث:٣٦٧٢،ج٢ ،ص٣٣)

《13》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने अपने पड़ोसी को ईज़ा दी बेशक उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी, नीज़ जिस ने अपने पड़ोसी से झगड़ा किया उस ने मुझ से झगड़ा किया और जिस ने मुझ से लड़ाई की बेशक उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से लड़ाई की।"

(كنز العمال ،كتاب الصحبة،الحديث: ٢٤٩٢٢ ، ج٩ ، ص ٢٥)

www.dawateislami.net

﴾14﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक ग़ज़्वे पर तशरीफ़ ले गए और इर्शाद फ़रमाया : "आज वोह शख़्स हमारे साथ न बैठे जिस ने अपने पड़ोसी को ईज़ा दी हो।" तो एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "मैं ने अपने पड़ोसी की दीवार के नीचे पेशाब किया था।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आज तुम हमारे साथ न बैठो।"

(المعجم الاوسط ، الحديث: ٩٤٧٩ ، ج٦، ص ٤٨١)

﴾15﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगा करते थे : "اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ جَارِ السُّوْءِ فِىْ دَارِ الْمُقَامَةِ" (या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस पड़ाव में बुरे पड़ोसी से पनाह चाहता हूं) क्यूं कि सह्रा का पड़ोसी एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होता रहता है।"

(المستدرك ،كتاب الدعاء التكبير......الخ ، باب التعوذ من جار......الخ ، الحديث: ١٩٩٤ ، ج٢ ، ص ٢٢١)

﴾16﴿...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन सब से पहले (आपस में झगड़ने वाले) दो पड़ोसियों का झगड़ा पेश किया जाएगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، حديث عقبة بن عامر الجهني، الحديث: ١٧٣٧٧ ، ج٦، ص ١٣٤)

पड़ोसी की अज़िय्यत से बचने का अनोखा त़रीक़ा :

﴾17﴿...... एक शख़्स ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने पड़ोसी की शिकायत की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपना साज़ो सामान रास्ते पर रख दो।" तो उस ने अपना सामान रास्ते पर रख दिया, जो शख़्स भी वहां से गुज़रता मुआ-मले से वाक़िफ़िय्यत पर उस शरीर पड़ोसी पर ला'नत भेजता, पस वोह रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोग मुझे बहुत तक्लीफ़ दे रहे हैं।" हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुझे उन से क्या तक्लीफ़ पहुंची है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "वोह मुझ पर ला'नत भेज रहे हैं।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "लोगों से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझ पर ला'नत भेजी है।" अ़र्ज़ करने लगा : "मैं आयन्दा ऐसा कभी नहीं करूंगा।" जब वोह शिकायत करने वाला बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे हुक्म दिया : "अब अपना सामान उठा लो बेशक तुम्हारी किफ़ायत कर दी गई।"

(المعجم الكبير ، الحديث: ٣٥٦ ، ج٢٢ ، ص ١٣٤)

﴾18﴿...... दूसरी रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "अपना साज़ो सामान उठा कर रास्ते पर डाल दो।" तो उस ने ऐसा ही किया जो भी वहां से गुज़रता तो उस से पूछता : "तेरा क्या

www.dawateislami.net

मुआ-मला है ?" वोह कहता : "मेरा पड़ोसी मुझे अज़िय्यत देता है ।" तो वोह उस पड़ोसी को बद दुआ देता हुवा चला जाता, पस वोह पड़ोसी उस के पास आया और बोला : "अपना सामान वापस उठा लो मैं आयन्दा तुम्हें कभी तक्लीफ़ न दूंगा ।"

(مجمع الزوائد ،کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی اذی الجار ، الحدیث:١٣٥٦٨،ج٨، ص ٣١٠)

﴿19﴾...... एक शख़्स ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अपने पड़ोसी की शिकायत की तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इर्शाद फ़रमाया : "जाओ सब्र करो ।" फिर वोह **2** या **3** मरतबा ह़ाज़िर हुवा तो दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जाओ अपने घर का सामान रास्ते पर डाल दो ।" तो उस ने ऐसा ही किया, लोग वहां से गुज़रते हुए उस से मुआ-मला पूछते तो वोह उन्हें अपने पड़ोसी की ह-र-कतों के बारे में बता देता, लिहाज़ा वोह उस पर ला'नत भेजने लगते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सज़ा दे और बा'ज़ लोग उसे बद दुआएं देते तो उस का पड़ोसी उस के पास आया और कहने लगा : "वापस लौट आओ आयन्दा तुम मुझ से कोई ऐसी चीज़ न देखोगे जो तुम्हें ना गवार गुज़रे ।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الادب ، باب فی حق الجوار ، الحدیث: ٥١٥٣ ، ص ١٦٠٠)

﴿20﴾...... एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़ुलां औ़रत का तज़्किरा उस की नमाज़, स-दक़ा और रोज़ों की कसरत की वजह से किया जाता है मगर वोह अपनी ज़बान से पड़ोसियों को तक्लीफ़ देती है ।" तो रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह जहन्नमी है ।" उस ने फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़ुलां औ़रत नमाज़ व रोज़े की कमी और पनीर के टुकड़े स-दक़ा करने के बाइ़स पहचानी जाती है और अपने पड़ोसियों को ईज़ा भी नहीं देती ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह जन्नती है ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند ابی هریرة، الحدیث: ٩٦٨١، ج٣ ، ص ٤٤٢)

﴿21﴾...... एक और रिवायत में है : "फ़ुलां औ़रत दिन भर रोज़ा रखती है और सारी रात क़ियाम करती है लेकिन अपने पड़ोसियों को तक्लीफ़ पहुंचाती है ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह जहन्नमी है ।" सहाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़ुलां औ़रत सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ ही अदा करती है और पनीर के टुकड़े भी स-दक़ा करती रहती है लेकिन अपने किसी पड़ोसी को तक्लीफ़ नहीं पहुंचाती ।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह जन्नती है ।"

(المرجع السابق)

पड़ोसियों के हुक़ूक़ :

﴿22﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन हैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ इर्शाद फ़रमाते हैं : "मैं ने बारगाहे

www.dawateislami.net

रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आदमी पर पड़ोसी के क्या हुक़ूक़ हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर वोह बीमार हो तो उस की इयादत करो, अगर मर जाए तो उस के जनाज़े में शिर्कत करो, अगर क़र्ज़ मांगे तो उसे क़र्ज़ दे दो और अगर वोह ऐ़बदार हो जाए तो उस की पर्दा पोशी करो ।"

(المعجم الكبير، الحديث: ١٠١٤، ج١٩، ص ٤١٩)

《23》...... ह़ज़रते अबू शैख़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रिवायत में है : "अगर वोह तुम से मदद त़लब करे तो उस की मदद करो और अगर वोह मोह़ताज हो तो उसे अ़त़ा करो, क्या तुम समझ रहे हो जो मैं तुम्हें कह रहा हूं ? पड़ोसी का ह़क़ कम लोग ही अदा करते हैं जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रह़मो करम होता है ।"

(الترغيب والترهيب، كتاب البر والصلة، باب الترهيب من اذى......الخ، الحديث: ٣٩١٥ (٢١)، ج٣، ص ٢٤٣)

《24》...... एक और रिवायत में है : "अगर वोह तंगदस्त हो जाए तो उसे तसल्ली दो, अगर उसे ख़ुशी ह़ासिल हो तो मुबारक बाद दो, अगर उसे मुसीबत पहुंचे तो उस से ता'ज़ियत करो, अगर वोह मर जाए तो उस के जनाज़े में शिर्कत करो, उस की इजाज़त के बिग़ैर उस के घर से ऊंची इमारत बना कर उस से हवा न रोको, भुने हुए गोश्त से उसे तक्लीफ़ न पहुंचाओ हां येह कि उसे भी मुठ्ठी भर दे दो तो सह़ीह़ है, अगर फल ख़रीद कर लाओ तो उसे भी उस में से कुछ तोह़फ़ा भेजो और ऐसा न कर सको तो उसे छुपा कर अपने घर लाओ और अपने बच्चों को फल दे कर बाहर न जाने दो कि कहीं इस से पड़ोसी के बच्चे एह़सासे कमतरी का शिकार न हों ।" (شعب الايمان، باب فی اكرام الجار، الحديث: ٩٥٦٠، ج٧، ص ٨٣)

《25》...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो जानता हो कि उस का पड़ोसी उस के पहलू में भूका है फिर भी शिकम सैर हो कर रात गुज़ारे तो उस का मुझ पर ईमान नहीं ।" (المعجم الكبير، الحديث: ٧٥١، ج١، ص ٢٥٩)

《26》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो ख़ुद शिकम सैर हो और उस का पड़ोसी भूका हो वोह ईमानदार नहीं ।"

(المرجع السابق، الحديث: ١٢٧٤١، ج١٢، ص ١١٩)

《27》...... एक शख़्स ने सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! लिबास अ़त़ा फ़रमाइये ।" तो मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से अपना रुख़े अन्वर फैर लिया, उस ने फिर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे लिबास अ़त़ा फ़रमाइये ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हारा कोई पड़ोसी नहीं जिस के पास दो कपड़े ह़ाजत से ज़ाइद हों ?" उस ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं, ऐसे बहुत से पड़ोसी हैं ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तुम्हारे साथ जन्नत में इकठ्ठा फ़रमाएगा ।" (المعجم الاوسط، الحديث: ٧١٨٥، ج٥، ص ٢٣٦)

www.dawateislami.net

《28》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बहुत से पड़ोसी क़ियामत के दिन अपने पड़ोसियों का दामन पकड़ लेंगे, मज़्लूम पड़ोसी अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! इस से पूछ कि इस ने मुझ पर अपना दरवाज़ा बन्द कर रखा था और अपनी ज़रूरत से ज़ाइद चीज़ें मुझ से रोकी थीं।"

(كنز العمال ،كتاب الصحبة ، قسم الاقوال ، باب الرابع فی حقوق ......الخ ،الحديث: ٢٤٨٩٤، ج٩ ، ص ٢٣ ،لفظ آخر"فاخرق")

《29》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कौन है जो मुझ से येह कलिमात सीखे फिर इन पर अ़मल करे या इन पर अ़मल करने वाले को येह कलिमात सिखाए।" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं हूं।" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ कर पांच चीज़ें इर्शाद फ़रमाईं : "(1) ह़राम कामों से बचते रहना, लोगों में सब से बड़े इ़बादत गुज़ार बन जाओगे (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रिज़्क़ का जो ह़िस्सा तुम्हारे लिये तक़्सीम फ़रमाया है उस पर राज़ी रहना सब से ज़ियादा ग़नी हो जाओगे (3) अपने पड़ोसी से अच्छा सुलूक करना मोमिन हो जाओगे (4) लोगों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो मुसल्मान हो जाओगे और (5) ज़ियादा मत हंसना कि ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है।" (جامع الترمذی ،ابواب الزهد ، باب من اتقی المحارم......الخ، الحديث: ٢٣٠٥ ، ص١٨٨٤)

《30》...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बेहतरीन रफ़ीक़ वोह है जो अपने दोस्त के लिये ज़ियादा अच्छा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बेहतरीन पड़ोसी वोह है जो अपने पड़ोसी के ह़क़ में दूसरों से ज़ियादा अच्छा है।" (جامع الترمذی ،ابواب البر و الصلة ، ماجاء فی حق الجوار ، الحديث: ١٩٤٤ ، ص ١٨٤٧)

《31》...... मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिन लोगों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मह़ब्बत फ़रमाता है उन में वोह शख़्स भी शामिल है जिस का बुरा पड़ोसी उसे ईज़ा दे तो वोह उस की ईज़ा रसानी पर सब्र करे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ज़िन्दगी या मौत के ज़रीए किफ़ायत फ़रमाए।" (المعجم الكبير، الحديث:١٦٣٧، ج٢، ص١٥٢)

《32》...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मुझे पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मुझे गुमान हुवा कि वोह इसे विरासत में ह़िस्सादार बना देंगे। (صحيح البخاری ، كتاب الادب ، باب الوصاءة بالجار ، الحديث: ٦٠١٥، ص٥٠٩)

www.dawateislami.net

﴾33﴿...... एक अन्सारी फ़रमाते हैं कि मैं अपने अहले ख़ाना के साथ शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के इरादे से निकला तो मैं ने देखा कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक जगह क़ियाम फ़रमा हैं और एक शख़्स आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मु-तवज्जेह है मैं समझा की शायद कोई ह़ाजत मन्द है, पस मैं बैठ गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी देर तक खड़े रहे कि मैं ने ज़ियादा लम्बे क़ियाम की वजह से अपनी विरासत आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मुख़्तस कर दी (या'नी मुझे अपनी मौत का ख़त़रा लग गया) फिर जब वोह शख़्स चला गया तो मैं ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह शख़्स आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इतनी देर खड़ा रहा कि मैं ने अपनी विरासत आप के लिये मुक़र्रर कर दी थी।" आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि वोह कौन था ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं ।" तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वोह जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) थे, मुझे पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मुझे गुमान हुवा कि वोह उसे विरासत में हिस्सादार बना देंगे और तुम अगर उन्हें सलाम करते तो वोह तुम्हें सलाम का जवाब ज़रूर देते ।"

(المسند للامام احمدبن حنبل،احادیث رجال من اصحاب النبی صلی اللہ تعالی علیہ و سلّم ، الحدیث:۲۳۱۵٤،ج۹،ص ٤٠)

﴾34﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर अपनी ऊंटनी **जदआ** पर सुवार हो कर येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "मैं तुम्हें पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करने की वसिय्यत करता हूं।" फिर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पड़ोसियों के इस क़दर हुक़ूक़ बयान फ़रमाए कि मैं ने सोचा : "आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसे विरासत में हिस्सादार बना देंगे ।"

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۵۲۳، ج۸، ص ۱۱۱)

﴾35﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के अहले ख़ाना में एक बकरी ज़ब्ह़ की गई, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घर तशरीफ़ लाए तो पूछा : "क्या तुम ने अपने यहूदी पड़ोसी को हदिय्या भेजा ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है : "जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) मुझे पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मुझे गुमान हुवा कि वोह उसे विरासत में हिस्सादार बना देंगे।" (جامع الترمذی ،ابواب البر و الصلة ، باب ماجاء فی حق الجوار ، الحدیث: ۱۹٤۳ ، ص ۱۸٤۷)

﴾36﴿...... सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आदमी की ख़ुश बख़्ती में से है कि उस का पड़ोसी नेक, सुवारी अच्छी और घर वसीअ़ हो ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث نافع بن عبد الحارث، الحدیث: ۱۵۳۷۲ ، ج ۵ ، ص ۲٤٠)

www.dawateislami.net

《37》...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "चार चीज़ें ख़ुश बख़्ती की अलामत हैं : (1) नेक बीवी (2) वसीअ घर (3) नेक पड़ोसी और (4) अच्छी सुवारी और **4** चीज़ें बद बख़्ती की दलील हैं : (1) बुरा पड़ोसी (2) बुरी बीवी (3) बुरी सुवारी और (4) तंग मकान।" (صحيح ابن حبان، كتاب النكاح، الحديث:٤٠٢١، ج٦، ص١٣٥)

《38》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक मुसलमान की वजह से उस के पड़ोस के 100 घरों से बला दूर फ़रमा देता है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ (پ٣، البقرة:٢٥١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर **अल्लाह** लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए।

(المعجم الاوسط، الحديث: ٤٠٨٠، ج٣، ص ١٢٩، بدون الاية)

नेक व बद होने की निशानी :

《39》...... एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये कि मैं उसे करूं तो उस की वजह से जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" तो सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नेक बन जाओ।" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे अपने नेक बन जाने का इल्म कैसे होगा ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने पड़ोसियों से पूछो अगर वोह तुम्हें नेक कहें तो तुम नेक हो और अगर वोह बुरा कहें तो तुम बुरे ही हो।" (شعب الايمان، باب فى اكرام الجار، الحديث: ٩٥٦٧، ج٧، ص ٨٥)

तम्बीह :

कसीर ता'दाद में सहीह अहादीसे मुबा-रका की सराहत की बिना पर इस गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है और बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने इस के कबीरा होने की सराहत भी की है।

सुवाल : जब मुत्लक़ मुसल्मान को ईज़ा देना कबीरा गुनाह है तो पड़ोसी को ख़ास क्यूं किया गया ?

जवाब : शायद इस को ख़ास करने की वजह येह है कि पड़ोसी के इलावा को ईज़ा देने में ज़रूरी है कि उसे ऐसी ईज़ा दी जाए जिस को बरदाश्त नहीं किया जा सकता जब कि पड़ोसी को ईज़ा देने का मुआ-मला ऐसा नहीं, क्यूं कि इस के कबीरा होने में येह शर्त नहीं कि उसे उ़र्फ़न ईज़ा कहा जाए, दोनों के दरमियान फ़र्क़ की वजह येह है कि पड़ोसी की इ़ज़्ज़त की ताकीद और उस के हुक़ूक़ की रिआयत पर मज़्कूरा सहीह अहादीसे मुबा-रका दलालत करती हैं।

www.dawateislami.net

पड़ोसियों की अक़्साम :

याद रखो ! पड़ोसी तीन त़रह़ के हैं :

(1)...... मुसल्मान रिश्तेदार, इस के तीन हुक़ूक़ हैं : पड़ोस का ह़क़, इस्लाम का ह़क़ और रिश्तेदारी का ह़क़ (2)...... फ़क़त़ मुसल्मान इस के पहले दो हुक़ूक़ हैं और (3)...... ज़िम्मी काफ़िर इस का सिर्फ़ पहला ह़क़ है। (شعب الایمان،باب فی اکرام الجار،الحدیث:٩٥٦٠،ج٧،ص٨٤)

लिहाज़ा उसे भी ईज़ा से बचाना लाज़िम है और उस से भी अच्छा सुलूक करना चाहिये क्यूं कि येह बड़ा अच्छा स–मरा देता है जैसा कि ह़ज़रते सह्ल तुस्तरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने मजूसी पड़ोसी के साथ किया था कि उस के बैतुल ख़ला में ह़ज़रते सह्ल तुस्तरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर की त़रफ़ एक सूराख़ था जिस से नजासत गिरा करती थी, ह़ज़रते सह्ल तुस्तरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रात को दिन भर में गिरने वाली गन्दगी एक कोने में जम्अ़ कर दिया करते थे, जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बीमार हुए तो आप ने उस मजूसी को बुला कर उसे वाक़िआ़ बताया और मा'ज़िरत ख़्वाहाना अन्दाज़ में कहा : "मुझे डर है कि मेरे वु–रसा इस बात को बरदाश्त न कर सकेंगे और तुम से झगड़ पड़ेंगे।" तो उस मजूसी को आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इतनी बड़ी ईज़ा पर सब्र करने पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, उस ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की : "आप इतने त़वील अ़र्से से मेरे साथ ऐसा मुआ–मला करते रहे और मैं हूं कि अब तक कुफ़्र पर क़ाइम हूं अपना हाथ बढ़ाइये ताकि मैं मुसल्मान हो जाऊं।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हाथ बढ़ाया और वोह मुसल्मान हो गया, इस के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भी विसाल हो गया।

पस सब्र के नतीजे और अन्जाम पर ख़ूब ग़ौर कर लो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सब्रो शुक्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 211 : बिला ज़रूरत महूज़ तकब्बुर की बिना पर ऊंची इमारत बनाना

﴾1﴿...... ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "जब आदमी इमारत को 7 गज़ से ज़ियादा बुलन्द करता है तो उसे निदा दी जाती है : "ऐ सब से बड़े फ़ासिक़ ! कहां तक बुलन्द करेगा।"

(الترغيب والترهيب، كتاب البيوع، باب الترهيب من البناء......الخ، الحديث: ٢٩٢٢، ج٢، ص ٤١٦)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में निकले, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ऊंचा कुब्बा देख कर पूछा : "येह क्या है ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "येह फुलां अन्सारी का मकान है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए और इस बात को अपने दिल में रखा ह़त्ता कि उस का मालिक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से अपना रुखे़ अन्वर फैर लिया, उस ने कई मरतबा सलाम अ़र्ज़ किया जब उस पर रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना राज़गी और बे रुख़ी वाज़ेह हो गई तो उस ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस बात का तज़्किरा किया और कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को नाराज़ कर दिया (वजह मा'लूम नहीं) ?" तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने बताया : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए थे और तुम्हारा गुम्बद देखा था (बस येही वजहे ना राज़गी है)।" तो वोह शख़्स अपने कुब्बे की त़रफ़ गया और उसे मिस्मार कर के ज़मीन के बराबर कर दिया, फिर एक दिन रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए तो वोह कुब्बा मौजूद न पा कर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "कुब्बे का क्या हुवा ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "उस के मालिक ने हमारे सामने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना राज़गी का ज़िक्र किया तो हम ने उसे वाक़िआ़ बता दिया पस उन्हों ने उसे मुन्हदिम कर दिया।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़रूरत से ज़ियादा हर इमारत अपने मालिक पर वबाल होगी।"

(سنن ابی داؤد، كتاب الادب، باب فی البناء، الحديث: ٥٢٣٧، ص ١٦٠٥)

﴾3﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم किसी अन्सारी के दरवाज़े पर बने हुए कुब्बे के क़रीब से गुज़रे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह क्या है ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "येह कुब्बा है, फुलां ने बनाया।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस त़रह़ की हर चीज़ क़ियामत के दिन अपने मालिक पर वबाल होगी।" जब उस अन्सारी तक येह बात पहुंची तो उस ने उसे ढा दिया, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दोबारा वहां से गुज़र हुवा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह कुब्बा मौजूद न पा कर उस के बारे में पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

की बारगाह में अ़र्ज़ की गई कि "उस के मालिक तक आप की बात पहुंची तो उस ने उसे ढा दिया।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़म फ़रमाए।"

(سنن ابن ماجه ،ابواب الزهد ، باب فی البناء والنحراب، الحدیث:٤١٦١ ، ص ٢٧٣٠)

《4》...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र एक अन्सारी की कुब्बा नुमा इमारत के क़रीब से हुवा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह क्या है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "येह कुब्बा है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सरे अक़्दस की त़रफ़ इशारा कर के इर्शाद फ़रमाया : "हर वोह इमारत जो इस से ऊंची हो वोह क़ियामत के दिन अपने मालिक पर वबाल होगी।" (المعجم الاوسط ، الحدیث: ٣٠٨١ ، ج٢ ، ص ٢٢٣)

《5》...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर इमारत अपने मालिक पर वबाल होगी मगर जो इतनी हो और अपने दस्ते अक़्दस से इशारा फ़रमाया और हर इ़ल्म अपने साहि़ब पर वबाल होगा मगर जिस पर अ़मल किया जाए।"

(المعجم الکبیر ، الحدیث: ١٣١ ، ج ٢٢ ، ص ٥٥ تا ٥٦)

《6》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से बुराई का इरादा फ़रमाता है तो उसे इमारत बनाने के लिये ईंटें और मिट्टी मुहय्या फ़रमा देता है।" (المعجم الکبیر ، الحدیث:١٧٥٥ ، ج٢ ، ص ١٨٥)

《7》...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को रुस्वा करने का इरादा फ़रमाता है तो वोह अपना माल इमारतें बनाने में ख़र्च कर डालता है।" (المعجم الاوسط ، الحدیث: ٨٩٣٩، ج٦، ص ٣٢٨)

《8》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपनी ज़रूरत से ज़ियादा ऊंची इमारत बनाएगा क़ियामत के दिन उसे वोह इमारत उठाने का पाबन्द बनाया जाएगा।" (المعجم الکبیر ، الحدیث:١٠٢٨٧،ج١٠،ص١٥٢تا١٥١)

《9》...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक कुब्बा बनवाया, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इर्शाद फ़रमाया : "इसे गिरा दें या फिर इस की क़ीमत स-दक़ा करें।" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं इसे ही गिरा देता हूं।"

(مجمع الزوائد ،کتاب البیوع ، باب ماجاء فی البنان ، الحدیث: ٦٢٨٢، ج٤ ، ص ١٢١)

《10》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर अच्छी चीज़ स-दक़ा है और आदमी अपने अहले ख़ाना पर जो कुछ ख़र्च करता है वोह भी उस के लिये स-दक़ा ही लिखा जाता है और बन्दा इमारत या गुनाह के इ़लावा जिस काम में भी अपना माल ख़र्च करता है उस का बदला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है।"

(المستدرک،کتاب البیوع ، باب کل معروف صدقة ، الحدیث: ٢٣٥٨ ، ج ٢ ، ص ٣٥٨)

www.dawateislami.net

﴾11﴿...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मिट्टी या इमारत बनाने के इलावा आदमी को उस के हर क़िस्म के न-फ़क़े में अज्र मिलता है।"

(جامع الترمذی ،ابواب صفة القیامة ، باب النفقة کلها......الخ ، الحدیث: ۲٤۸۳،ص۱۹۰۱)

﴾12﴿...... ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हर क़िस्म का ख़र्च राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में है मगर इमारत बनाने का ख़र्च इस में शामिल नहीं क्यूं कि इस में कोई भलाई नहीं।" (المرجع السابق، الحدیث: ۲٤۸۲ ، ص ۱۹۰۱)

﴾13﴿...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान आदमी का माल जिन कामों में ज़ाएअ़ होता है उन में बद तरीन काम इमारत बनाना है।" (مراسیل ابی داؤد،باب ماجاء فی البناء،حدیث عطیة بن قیس ،ص۱۹)

﴾14﴿...... ह़दीसे जिब्राईल में है : "क़ियामत की निशानियों में से एक येह भी है कि बकरियां चराने वाले लोग इमारतों पर फ़ख़्र करेंगे।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ، باب بیان الایمان والاسلام ......الخ ، الحدیث: ۹۳ ، ص ٦۸۱)

﴾15﴿...... एक रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं : "(क़ुर्बे क़ियामत) बकरियां चराने वाले और नंगे बदन वाले फ़ु-क़रा इमारतें बनाने पर फ़ख़्र करेंगे।" (سنن ابی داؤد،کتاب السنة،باب فی القدر،الحدیث:٤٦۹٥،ص۱٥٦۸)

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाहों में शुमार करने की वजह येह है कि अगर्चे मैं ने किसी को इस की सराह़त करते हुए नहीं पाया मगर अह़ादीसे मुबा-रका और आसारे सह़ाबा इस के कबीरा होने की सराह़त करते हैं क्यूं कि ऐसी बातें अपनी राय से नहीं कही जातीं।

इस त़रह़ के मुआ़-मलात में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अक़्वाल मरफ़ूअ़ ह़दीस के हुक्म में होते हैं क्यूं कि इन में इज्तिहाद की कोई गुन्जाइश नहीं आख़िरी चन्द अह़ादीसे मुबा-रका तो इस के कबीरा होने पर सरीह़ दलील हैं क्यूं कि इन में इस अ़मल पर सरीह़ वईद बयान की गई है और कुछ बातें इस वईद की त़रफ़ इशारा करती हैं म-सलन मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़ज़ब फ़रमाना, सलाम का जवाब न देना और उसे गिराए बिग़ैर राज़ी न होना इस के कबीरा गुनाह होने पर सरीह़ दलील है मगर इसे इस सूरत पर मह़मूल करना मुनासिब है जिसे मैं ने उ़न्वान में ज़िक्र कर दिया है कि अगर इस से मक़्सूद तकब्बुर और फ़ख़्र हो तो येह कबीरा गुनाह है इसी त़रह़ इसे वबाल, रुस्वाई और मुकम्मल शर से ता'बीर करना या तो सख़्त वईद पर सरीह़ दलील है या सरीह़ दलील की त़रह़ है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 212 : ज़मीन के निशानात मिटा देना

《1》...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم इर्शाद फ़रमाते हैं : "रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे चार बातें इर्शाद फ़रमाईं।" रावी फ़रमाते हैं कि मैं ने पूछा : "या अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! वोह बातें क्या हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) जो ग़ैरुल्लाह के लिये ज़ब्ह़ करता है उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ला'नत फ़रमाता है (2) जो अपने वालिदैन पर ला'नत भेजता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत भेजता है (3) जो किसी बिदअ़ती को पनाह देता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाता है और (4) जो ज़मीन के निशानात मिटा देता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ला'नत फ़रमाता है।"

(صحیح مسلم ،کتاب الاضاحیی ، باب تحریم الذبح ......الخ، الحدیث: ۵۱۲۴، ص۱۰۳۱)

ह़दीसे मुबा-रका में ज़मीन के निशानात से मुराद इस की ह़ुदूद के निशानात हैं जैसा कि लिवातत के बयान में आने वाली ह़दीसे पाक में इस की सराह़त है, उस के अल्फ़ाज़ कुछ यूं हैं : "जो ज़मीन की ह़ुदूद तब्दील करे वोह मल्ऊन है।" (المعجم الاوسط ، الحدیث: ۸۴۹۷، ج۶، ص ۱۹۹)

तम्बीह :

इस ह़दीसे पाक की सराह़त की बिना पर इसे कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया और अइम्मा की एक जमाअ़त ने भी इस के कबीरा होने की सराह़त की है इस की वजह येह है कि इस में लोगों का माल बाति़ल त़रीक़े से खाना या मुसल्मानों की शदीद ईज़ा रसानी पाई जाती है या इन दोनों में से एक का सबब पाया जाता है और वसाइल का ह़ुक्म भी वोही होता है जो मक़ासिद का होता है लिहाज़ा येह ह़ुक्म इस के इलावा दीगर सूरतों जैसे शरीक ज़मीन या अत़राफ़ की ज़मीन वालों को भी शामिल होगा और जो इस का सबब बने जैसे कोई ग़ैर की ज़मीन पर आ-मदो रफ़्त रखे जिस से उसे रास्ता बना लिया जाए और अगर ज़रर न हो तो ग़ैर की ज़मीन से गुज़रना जाइज़ है। जैसा कि हमारे अइम्मा में से ह़ज़रते क़िफ़ाल के साथ एक वाक़िआ़ पेश आया कि वोह बादशाह की एक जानिब सुवार हो कर गुज़र रहे थे जब कि दूसरी जानिब ह़-नफ़ी इमाम थे जब रास्ता तंग हो गया तो ह़ज़रते क़िफ़ाल दूसरे रास्ते पर से गुज़र कर आए तो ह़-नफ़ी आ़लिम ने बादशाह से कहा कि शैख़ से पूछिये कि क्या ग़ैर की ज़मीन से गुज़रना जाइज़ है बादशाह ने शैख़ से येह सुवाल किया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर इसे रास्ता न बना लिया जाए तो जाइज़ है, जब कि इस में खेती वग़ैरा न हो जिसे चलने से नुक़्सान पहुंचता हो जैसा कि येह बिल्कुल ज़ाहिर है।"

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर **213 :** **नाबीना को रास्ता भुला देना**

﴾**1**﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नाबीना को रास्ता भुला देने वाले पर ला'नत फ़रमाई । (الادب المفرد للبخاری،باب:۳۹۸ من کمه اعمی ، الحدیث: ۹۱۶، ص ۲٤۱)

तम्बीह :

इसे बा'ज़ अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वाल की बिना पर कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है गोया उन्हों ने मेरी ज़िक्र कर्दा गुज़श्ता अहादीसे मुबा-रका से इस्तिद्लाल किया है क्यूं कि हम बयान कर चुके हैं कि ला'नत का वारिद होना कबीरा गुनाह की अ़लामात में से एक अ़लामत है और इस की वजह बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि जो ईज़ा आ़दतन बरदाश्त न की जाती हो वोह लोगों की ईज़ा रसानी में दाख़िल है क्यूं कि अन्धे को रास्ते से भटका देना उसे नुक़्सान और बे शुमार ख़दशात में मुब्तला करने का सबब है और येह बात बिल्कुल ज़ाहिर है लिहाज़ा इस के सबब का कबीरा होना बईद नहीं ।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 214 : किसी रास्ते में बिला इजाज़ते मालिक तसर्रुफ़ करना

या'नी ऐसा रास्ता जिसे मालिक ने अपनी मिल्किय्यत से अलग न किया हो ।

कबीरा नम्बर 215 : शारेए आम में ग़ैर शर-ई तसर्रुफ़ करना

या'नी ऐसा तसर्रुफ़ करना जिस से गुज़रने वालों को सख़्त नुक़्सान पहुंचे ।

कबीरा नम्बर 216 : क़ाइलीने हुरमत के नज़्दीक मुश्तरिका दीवार में बिला इजाज़ते शरीक तसर्रुफ़ करना

या'नी ऐसा तसर्रुफ़ करना जिसे आ़दतन बरदाश्त न किया जाता हो ।

इन तीनों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के कलाम से ज़ाहिर है मगर उन्हों ने इन के कबीरा गुनाह होने की सराहत नहीं की क्यूं कि इन में से हर एक में लोगों की ईज़ा रसानी और उन के हुक़ूक़ को ज़ुल्म व तअ़द्दी की बिना पर दबाना पाया जाता है, और बिला शुबा येह दोनों बातें या'नी ईज़ा रसानी और ह़क़ त-लफ़ी इन तीनों को शामिल है, लिहाज़ा इसे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के कलाम से समझी जाने वाली तसरीह़ की बिना पर कबीरा गुनाह कहा गया है और ज़ुल्म व ग़स्ब की आयन्दा आने वाली अब्ह़ास और दीगर अब्ह़ास में आने वाले दलाइल इन तीनों सूरतों को शामिल हैं, लिहाज़ा उन्हें इस जगह याद रखना भी ज़रूरी है और अ़न्क़रीब ग़स्ब के बयान में एक ह़दीसे मुबा-रका आएगी कि,

﴾1﴿...... मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने लोगों के रास्ते में से एक बालिश्त पर क़ब्ज़ा कर लिया वोह क़ियामत के दिन इतनी मिक़्दार की 7 ज़मीनें उठा कर लाएगा ।" (المعجم الكبير، الحديث: ٣١٧٢، ج ٣، ص ٢١٥)

www.dawateislami.net

باب الضمان

ज़मान का बयान

कबीरा नम्बर **217 :** ज़ामिन का सहीह़ ज़मानत से रुक जाना

या'नी जो ज़मानत अपने ख़याल में सहीह़ हो ज़ामिन का बा वुजूदे क़ुदरत उस दी हुई ज़मानत की अदाएगी से रुक जाना ख़्वाह इजाज़त से ज़मानत दी हो या बिला इजाज़त

इसे कबीरा गुनाह शुमार करना बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि ज़ामिन ह़क़ीक़त में भी अपने ज़िम्मे क़र्ज़ को साबित कर लेता है लिहाज़ा वोह मक़रूज़ ही है और गुज़श्ता सफ़ह़ात में बयान कर्दा ग़नी के टाल मटोल करने की बह़स में वारिद तमाम दलाइल इस पर दलील हैं मगर इसे अ़लाह़िदा ज़िक्र करने की वजह येह है कि लोग येह गुमान करते हैं कि इन का ज़ामिन बनना उन्हें इस अ़ज़ीम परेशानी में नहीं डालता इस लिये येह बात उन पर पोशीदा रहती है ह़ालां कि उन का येह गुमान बिल्कुल दुरुस्त नहीं क्यूं कि उन का ज़ामिन बनना उन्हें ह़क़ीक़तन मक़रूज़ बना देता है यहां तक कि उन से आख़िरत में क़र्ज़ का मुत़ा-लबा किया जाएगा जैसा कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का कलाम इसी बात का तक़ाज़ा करता है।

www.dawateislami.net

باب الشركة

शिर्कत का बयान

कबीरा नम्बर 218 : मुश्तरिका कारोबार में एक शरीक का दूसरे से ख़ियानत करना

कबीरा नम्बर 219 : वकील का अपने मुवक्किल से ख़ियानत करना

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने अपने शरीक के साथ ऐसी चीज़ में ख़ियानत की जिस पर उस ने उसे अमीन बनाया था और इस की हिफ़ाज़त कराई थी तो मैं उस से बेज़ार हूं।''

﴾2﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''जिस ने ऐसे शख़्स से ख़ियानत की जिस ने उसे अमीन बनाया था तो मैं उस से झगड़ा करूंगा।''

﴾3﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : ''4 बातें जिस में होंगी वोह पक्का मुनाफ़िक़ होगा और जिस में इन में से एक बात होगी उस में निफ़ाक़ की एक ख़स्लत होगी यहां तक कि वोह इसे छोड़ दे : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे (3) जब वा'दा करे तो धोका दे और (4) जब झगड़ा करे तो बद कलामी करे।''

(صحيح البخاری ، كتاب الايمان ، باب علامات المنافق ، الحديث: ٣٤ ، ص ٥)

﴾4﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूल अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मैं दो शरीकों का तीसरा होता हूं जब तक कि उन में से एक दूसरे से ख़ियानत न करे, जब कोई ख़ियानत करता है तो मैं उन के दरमियान से निकल जाता हूं।''

(المستدرك، كتاب البيوع، باب لا يغلق الرهن ......الخ، الحديث: ٢٣٦٩، ج٢، ص ٣٦١)

﴾5﴿...... जब कि रज़ीन की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : ''जब मैं निकल जाता हूं शैतान आ जाता है।''

(الترغيب والترهيب، كتاب البيوع، الترهيب من خيانة احد......الخ، الحديث: ٢٧٨٦، ج٢ ص ٣٧٧)

www.dawateislami.net

《6》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तक दो हिस्सादारों में से कोई अपने साथी से ख़ियानत न करे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत होती है, पस जब उन में से कोई एक ख़ियानत करता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन से अपनी रहमत उठा लेता है।"

(سنن الدارقطنی ،کتاب البیوع، الحدیث: ۲۹۱۱ ، ج۳ ، ص ۴۳)

आख़िरुज़्ज़िक्र दोनों अहादीसे मुबा-रका जब तक वोह हिस्सादार सच्चाई और अमानत दारी पर क़ाइम रहें उन के लिये नुज़ूले रहमत, हिफ़ाज़त और माल में इज़ाफ़े की तरफ़ इशारा करती हैं और जब उन दोनों में से किसी से बद दियानती वाक़ेअ़ हो जाए तो येह (अहादीसे मुबा-रका) ब-र-कत ख़त्म होने और माल पर आफ़तें आने की तरफ़ इशारा करती हैं।

《7》...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "मोमिन जब बोलता है तो सच बोलता है और जब वा'दा करता है तो धोका नहीं देता और जब उस के सिपुर्द अमानत की जाती है तो उस में ख़ियानत नहीं करता।"

(تفسیرالقرطبی،سورۃ المنافقون،تحت الآیۃ:۱،ج۹،ص۹۳،بتغیرٍ)

तम्बीह :

इन दोनों को कबीरा गुनाहों में शुमार करना इन अहादीसे मुबा-रका से ज़ाहिर है अगर्चे उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने ख़ुसूसिय्यत के साथ इन्हें कबीरा गुनाहों में ज़िक्र नहीं किया क्यूं कि उन्हों ने ऐसे कबाइर ज़िक्र कर दिये हैं जो इन दोनों को भी शामिल हैं जैसा कि आयन्दा आने वाले बहुत से मक़ामात से मा'लूम होगा और अन्क़रीब अमानत के बाब में इस से मु-तअ़ल्लिक़ा दीगर अहादीसे मुबा-रका भी ज़िक्र की जाएंगी।

www.dawateislami.net

باب الاقرار

इक़्रार का बयान

कबीरा नम्बर **220 :** **झूटा इक़्रार करना**

या'नी वारिस या किसी अज्नबी के लिये क़र्ज़ या किसी माल का झूटा इक़्रार करना

﴾1﴿...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "वसिय्यत में नुक़्सान देना कबीरा गुनाहों में से है।"

(سنن الدار قطنی، کتاب الوصایا، الحدیث: ۴۲۴۹، ج۴، ص ۱۷۸)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "एक आदमी 70 साल तक नेक अ़मल करता है फिर जब वसिय्यत करता है तो अपनी वसिय्यत में ज़ुल्म कर बैठता है इस त़रह़ उस का ख़ातिमा बुरे अ़मल पर होता है और वोह जहन्नम में दाख़िल हो जाता है और एक आदमी 70 साल तक बुरे लोगों जैसे अ़मल करता है मगर अपनी वसिय्यत में अ़द्ल से काम लेता है, पस उस का ख़ातिमा अच्छे अ़मल पर होता है तो वोह जन्नत में दाख़िल हो जाता है।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाने लगे अगर चाहो तो येह आयते मुबा-रका पढ़ लो :

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ یُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ○ وَمَنْ یَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَیَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ یُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِیْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ ○ (پ۴، النساء: ۱۳-۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** की ह़दें हैं और जो हुक्म माने **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल का **अल्लाह** उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी काम्याबी और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे और उस की कुल ह़दों से बढ़ जाए **अल्लाह** उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है।

(سنن ابن ماجة، ابواب الوصایا، باب الحیف فی الوصیة، الحدیث: ۲۷۰۴، ص ۲۶۳۹)

﴾3﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "मर्द या औ़रत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी के काम करते हैं फिर जब उन पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी होता है तो वोह दोनों वसिय्यत में वु-रसा को नुक़्सान पहुंचा कर अपने लिये जहन्नम वाजिब कर लेते हैं।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने

www.dawateislami.net

येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

مِنۡ بَعۡدِ وَصِیَّۃٍ یُّوۡصٰی بِھَاۤ اَوۡ دَیۡنٍ غَیۡرَ مُضَآرٍّ وَصِیَّۃً مِّنَ اللّٰہِ ؕ وَاللّٰہُ عَلِیۡمٌ حَلِیۡمٌ ۰ تِلۡکَ حُدُوۡدُ اللّٰہِ ؕ وَمَنۡ یُّطِعِ اللّٰہَ وَرَسُوۡلَہٗ یُدۡخِلۡہُ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِھَا الۡاَنۡھٰرُ خٰلِدِیۡنَ فِیۡھَا ؕ وَذٰلِکَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ ۰ (پ۴،النساء:۱۲۔۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मय्यित की वसिय्यत और दैन निकाल कर जिस में उस ने नुक़्सान न पहुंचाया हो येह **अल्लाह** का इर्शाद है और **अल्लाह** इल्म वाला हिल्म वाला है। येह **अल्लाह** की ह़दें हैं और जो हुक्म माने **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल का **अल्लाह** उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी काम्याबी।

(جامع الترمذی، ابواب الوصایا، باب ماجاء فی الضرار فی الوصیۃ، الحدیث: ۲۱۱۷، ص۱۸۶۳)

तम्बीह :

वसिय्यत में वु-रसा को नुक़्सान पहुंचाने को कबीरा गुनाहों में शुमार करने की वजह कसीर उ़-लमाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की तस्रीह़ है, इस में से कुछ तो मैं ने ज़िक्र कर दिया और अ़न्क़रीब वसिय्यत के बाब में इस आयते करीमा पर मुकम्मल कलाम होगा जिस की त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इशारा फ़रमाया है।

﷽ ﷽ ﷽

कबीरा नम्बर 221 : म-रज़े मौत में मक़्रूज़ का इक़्रार न करना

या'नी ह़ालते मरज़ में मरीज़ का अपने मक़्रूज़ होने या अपने पास माल होने का इक़्रार न करना बशर्ते कि वु-रसा के इलावा उस शख़्स को इस का इ़ल्म न हो सके जो इस मरीज़ के क़ौल ही से अपना ह़क़ साबित कर सकता हो।

मेरा इस गुनाह को कबीरा गुनाहों में शुमार करना बिल्कुल वाज़ेह़ है अगर्चे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस की सराह़त नहीं की क्यूं कि इस ह़ालत में इक़्रार तर्क करने में ग़ैर के ह़क़ के ज़ियाअ़ का सबब ज़ाहिर है और ग़ैर का ह़क़ ज़ाएअ़ करना कबीरा गुनाह है, इसी त़रह़ इस का सबब पैदा करना भी कबीरा गुनाह है क्यूं कि हम बयान कर चुके हैं कि **वसाइल का भी वोही हुक्म होता है जो मक़ासिद का होता है** और अ़न्क़रीब शराब बनाने वाले के बयान में इस की वज़ाह़त होगी।

﷽ ﷽ ﷽

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर 222 : नसब का इन्कार करना

कबीरा नम्बर 223 : झूटे नसब का इक़रार करना

﴾1﴿...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने अपने नसब से बराअत इख़्तियार की या जिस ने ग़ैर मा'रूफ़ नसब का दा'वा किया उस ने कुफ़्र किया अगर्चे थोड़ा ही अलग हुवा हो।" (المسند للامام احمد ابن حنبل،مسند عبدالله بن عمرو بن العاص،الحدیث:۷۰۳۹،ج۲،ص۶۷۳)

﴾2﴿...... हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने ग़ैर मा'रूफ़ नसब का दा'वा किया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र किया और जो अपने नसब से अलग हुवा ख़्वाह थोड़ा ही अलग हुवा हो उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र किया।" (المعجم الاوسط، الحدیث:۸۵۷۵،ج۶، ص۲۲۱)

﴾3﴿...... रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जिन से वोह क़ियामत के दिन न तो कलाम फ़रमाएगा, न उन्हें पाक करेगा और न ही उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाएगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ?" तो आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अपने वालिदैन से मुंह मोड़ते हुए बेज़ारी ज़ाहिर करने वाला, अपने बेटे से बराअत इख़्तियार करने वाला और वोह शख़्स जिस पर किसी क़ौम ने एह़सान किया तो वोह उस के एह़सान से इन्कार कर के उस से बराअत इख़्तियार कर बैठा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث معاذبن أنس الجهنی، الحدیث:۱۵۶۳۶،ج۵،ص۳۱۲)

﴾4﴿...... मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत के मुत़ाबिक़ यहां पर इन्आ़म (या'नी एह़सान करने) से मुराद आज़ाद करना है और वोह रिवायत येह है : "जो किसी क़ौम के मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की इजाज़त के बिग़ैर सरदार बना उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है और क़ियामत के दिन न उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।"

(صحیح مسلم،کتاب العتق، باب تحریم تولی العتیق غیر موالیه، الحدیث: ۳۷۹۲، ص ۹۳۸)

तम्बीह :

इन दोनों सह़ीह़ अह़ादीसे मुबा-रका और इस सख़्त वईद पर मुश्तमिल दीगर अह़ादीसे मुबा-रका से मेरे बयान की ताईद होती है अगर्चे मैं ने किसी को इस बात की सराहत करते हुए नहीं पाया कि येह दोनों कबीरा गुनाह हैं।

www.dawateislami.net

इन दोनों के अ़ज़ीम ज़रर, इन पर मुरत्तब होने वाली बुराइयों, मफ़ासिद और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इर्शाद फ़रमाए हुए अह़काम में तब्दीली के पेशे नज़र इन के कबीरा होने में तो कोई शक नहीं क्यूं कि बेटा अगर झूट बोलते हुए अपने नसब का इन्कार कर दे तो वोह ज़ाहिरी अह़काम के ए'तिबार से अज्नबी की मिस्ल हो जाएगा और अज्नबी अगर किसी को अपना बेटा कहे तो ज़ाहिरन उस के लिये बेटे के अह़काम साबित हो जाएंगे और इन सूरतों के मफ़ासिद और नुक़्सानात बिल्कुल इ़यां हैं, फिर मैं ने अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा कि उन्हों ने इस को कबीरा गुनाहों में शुमार किया है कि जान बूझ कर ग़ैर को अपना बाप बताए और बुख़ारी व मुस्लिम की इस रिवायत से इस्तिद्लाल किया कि,

﴾5﴿...... हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने ह़ालते इस्लाम में ऐसे शख़्स के लिये बाप होने का दा'वा किया जिस के बारे में वोह जानता है कि वोह उस का बाप नहीं उस पर जन्नत ह़राम है।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان......الخ، الحدیث:۲۱۹، ص۶۹۱)

باب العارية

आ़रिय्यत[1] का बयान

कबीरा नम्बर 224 : मुस्तआ़र चीज़ का मक़्सद से हट कर इस्ति'माल करना

कबीरा नम्बर 225 : मालिक की इजाज़त के बिग़ैर उसे आ़रिय्यतन दे देना

कबीरा नम्बर 226 : मुद्दते मुक़र्ररा के बा'द पास रखना या वापस न करना

इन तीनों के कबीरा गुनाह होने की तस्रीह़ बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि येह ग़स्ब और ज़ुल्म पर मुश्तमिल हैं और येह दोनों (या'नी ज़ुल्म व ग़स्ब) बिल इज्माअ़ कबीरा गुनाह हैं क्यूं कि इन में मालिक पर ज़ुल्म और उस के ह़क़ और माल को नाह़क़ दबाना पाया जाता है। आयन्दा ग़स्ब व ज़ुल्म की मज़म्मत में आने वाली तमाम सख़्त वई़दें इन तीनों को भी शामिल हैं।

---

1 : **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **"आ़रिय्यत"** की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाते हैं : "दूसरे शख़्स को चीज़ की मन्फ़अ़त का बिग़ैर इवज़ मालिक कर देना आ़रिय्यत है, जिस की चीज़ है उसे मुई़र कहते हैं, और जिस को दी गई मुस्तई़र है, और चीज़ को मुस्तआ़र कहते हैं" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 14, स. 40)

www.dawateislami.net

باب الغصب

ग़स्ब का बयान

कबीरा नम्बर **227 :** **ग़स्ब या'नी ग़ैर के माल पर ज़ुल्मन क़ाबिज़ होना**

《**1**》...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने बालिश्त भर ज़मीन के मुआ-मले में ज़ुल्म किया उसे **7** ज़मीनों का तौक़ डाला जाएगा।"

(صحیح البخاری ، کتاب المظالم ، باب اثم من ظلم شیأمن الارض ، الحدیث: ۲۴۵۳ ، ص ۱۹۳)

एक क़ौल के मुताबिक़ इस से मुराद येह है : "उसे तक्लीफ़ का तौक़ पहनाया जाएगा न कि **7** ज़मीनों का तौक़ बना कर उस के गले में डाला जाएगा बल्कि क़ियामत के दिन उस की गरदन पर इन का बोझ डाला जाएगा।" जब कि असह्ह क़ौल वोही है जो सय्यिदुना इमाम बग़वी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बयान किया है कि "उसे ज़मीन में धंसा दिया जाएगा तो ज़मीन का वोह हिस्सा उस की गरदन में तौक़ की तरह फंस जाएगा।"

आयन्दा आने वाली रिवायात भी इसी क़ौल की ताईद करती हैं :

ग़स्ब की मज़म्मत पर अहादीसे मुबा-रका :

《**2**》...... **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने ज़मीन का बालिश्त भर टुकड़ा नाहक़ ले लिया क़ियामत के दिन उसे **7** ज़मीनों तक धंसा दिया जाएगा।" (صحیح البخاری ، کتاب المظالم ، باب اثم من ظلم شیأ من الارض ، الحدیث: ۲۴۵۴ ، ص ۱۹۳)

《**3**》...... शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस शख़्स ने ज़मीन का बालिश्त भर टुकड़ा नाहक़ ले लिया **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे (या'नी उस की गरदन में) **7** ज़मीनों का तौक़ डालेगा।"

(صحیح مسلم ، کتاب المساقات ، باب تحریم الظلم والغصب ......الخ ، الحدیث:۴۱۳۶ ، ص ۹۵۸)

《**4**》...... दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने बालिश्त भर ज़मीन नाहक़ छीन ली उसे **7** ज़मीनों का तौक़ डाला जाएगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند سعید بن زیدبن عمرو بن نفیل ، الحدیث:۱۶۴۰ ، ج۱ ، ص ۳۹۹)

www.dawateislami.net

《5》...... रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस शख़्स ने एक बालिश्त ज़मीन के मुआ-मले में किसी पर ज़ुल्म किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (बरोज़े क़ियामत) उसे सात ज़मीनों तक गढ़ा खोदने का पाबन्द बनाएगा, फिर लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाने तक उसे तौक़ डाला जाएगा।" (المسند للامام احمد بن حنبل،حدیث یعلی بن مرۃ الثقفی،الحدیث: ١٧٥٨٢ ، ج٦،ص١٨٠)

《6》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी की ज़मीन नाहक़ ली उसे उस ज़मीन की मिट्टी उठा कर मैदाने महशर में लाने का पाबन्द बनाया जाएगा।"

(المرجع السابق،الحدیث: ١٧٥٨٠ ، ج٦،ص١٧٩)

《7》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने ज़ुल्मन किसी की एक बालिश्त ज़मीन दबा ली उसे पानी तक पहुंच जाने तक खुदाई करने फिर उस मिट्टी को उठा कर मैदाने महशर में लाने का पाबन्द बनाया जाएगा।"

(المعجم الکبیر ، الحدیث:٦٩٥، ج٢٢ ، ص ٢٧١)

《8》...... शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो ज़मीन के किसी टुकड़े पर नाहक़ क़ाबिज़ हुवा उसे 7 ज़मीनों का तौक़ डाला जाएगा और उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।"

(مسند ابی یعلیٰ الموصلی،مسند سعد بن ابی وقاص،الحدیث:٧٤٠،ج١،ص٣١٥)

《9》...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से बड़ा ज़ुल्म कौन सा है ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़मीन का वोह एक गज़ जिसे कोई मुसल्मान अपने मुसल्मान भाई के हक़ में से कम कर दे, पस उस ज़मीन की एक कंकरी जो उस ने छीनी होगी उसे ज़मीन की तह तक उस के गले में तौक़ बना कर डाला जाएगा और उस की तह को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही जानता है जिस ने इसे पैदा किया है।"

(المسند للامام احمد حنبل ، مسند عبداللہ بن مسعود ،الحدیث: ٣٧٧٣ ، ج٢ ، ص ٥٣)

《10》...... महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बड़ा धोका ज़मीन का वोह टुकड़ा है जो तुम ज़मीन या घर के 2 पड़ोसियों के दरमियान पाते हो, फिर उन में से कोई एक दूसरे के हिस्से में से एक गज़ ज़मीन कम कर देता है तो अगर वोह उसे कम करेगा तो उसे 7 ज़मीनों का तौक़ डाला जाएगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ،حدیث ابی مالک الاشجعی،الحدیث ١٧٢٥٥ ، ج٦،ص ١١٠)

《11》...... रहमते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो किसी शख़्स की ज़मीन पर ज़ुल्मन क़ाबिज़ हुवा जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा तो वोह उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा।" (المعجم الکبیر،الحدیث:٢٥،ج٢٢،ص١٨)

www.dawateislami.net

﴾12﴿...... ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो शख़्स मुसल्मानों के रास्ते में से एक बालिश्त ज़मीन पर क़ब्ज़ा करे वोह क़ियामत के दिन **7** ज़मीनों के बराबर बोझ उठा कर लाएगा।" (المعجم الكبير، الحديث: ۳۱۷۲، ج ۳، ص ۲۱۵)

﴾13﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़मीद अस्साइदी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि अपने भाई का अ़सा उस की रिज़ा मन्दी के बिग़ैर ले ले।"

(الترغيب والترهيب، كتاب البيوع، الترهيب من غصب الارض ......الخ،الحديث: ۲۹۰۷، ج۲، ص ٤۱۱)

महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात मुसल्मान पर मुसल्मान के माल की ह़ुरमत की शिद्दत बयान करने के लिये इर्शाद फ़रमाई।

तम्बीह :

इमाम बग़वी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ग़स्ब के कबीरा गुनाह होने के लिये "ग़स्ब शुदा माल की क़ीमत कम अज़ कम चौथाई दीनार" होने का ए'तिबार किया है, जब कि क़ाज़ी अबू बक्र बाक़लानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बा'ज़ मो'तज़िला का क़ौल नक़्ल किया है कि "उन्हों ने ग़स्ब शुदा माल की क़ीमत **200** दिरहम होने को शर्त़ क़रार दिया है।" जब कि जुबाई के नज़्दीक इस की मालिय्यत **10** दिरहम होना ज़रूरी है, जुबाई से **5** दिरहम का क़ौल भी मन्क़ूल है, जब कि बसरा के मशाइख़ ने इस की मालिय्यत एक दिरहम बयान की है।

अ़ल्लामा ह़लीमी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर ग़स्ब की हुई शै कम माय्यित की हो तो ग़स्ब करना सग़ीरा गुनाह है मगर इस सूरत में येह ज़रूरी है कि शै का मालिक उस शै का मोह़ताज न हो वरना येह कबीरा गुनाह है।"

अ़ल्लामा अज़रई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "चौथाई दीनार का ज़िक्र अ़ल्लामा हरवी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब **अल अशराफ़** और इमाम राफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सह़ीह़ नुस्ख़े में है, और "**अरौज़ा**" में एक दिरहम का ज़िक्र है और येह नक़्ल करने की त़रफ़ से तह़रीफ़ है।

शैख़ इ़ज़्ज़ुद्दीन इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर झूटी गवाही ज़ियादा माल के मुआ़-मले में हो तो येह कबीरा गुनाह है और अगर कम माल में हो म-सलन मुनक़्क़ा या खजूर तो भी इन मफ़ासिद से बाज़ रखने के लिये इसे कबीरा गुनाह क़रार दिया जाएगा जिस त़रह़ कि शराब का एक क़त़रा पीने को कबीरा गुनाह क़रार दिया गया है अगर्चे फ़साद साबित न भी हो और ग़स्ब के माल का चोरी के निसाब के मुत़ाबिक़ ज़ाबित़ा होना चाहिये।" और शैख़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने यतीम का माल खाने में भी येही फ़रमाया है।

www.dawateislami.net

तवस्सुत में है : अ़ल्लामा शरीह़ अरूयानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने यतीमों के अम्वाल बातिल त़रीक़े से खाने को कबीरा गुनाह शुमार किया है, जैसा कि रिश्वत लेना, यहां उन्हों ने इस बात में फ़र्क़ बयान नहीं किया कि आया इस की मिक्दार चौथाई दीनार हो या न हो, इसी त़रह़ **साह़िबुल उ़द्दह** ने भी रिश्वत लेने और यतीमों का माल खाने को मुत्लक़न कबीरा कहा है और इस के इत्लाक़ को इन सूरतों के इलावा नाप तोल में ख़ियानत के बाब में भी जारी किया है, नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने जो नस बयान की है वोह मग़सूबा शै के चौथाई दीनार तक होने की क़ैद का कमज़ोर होना साबित करती है।

मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : **साह़िबुल उ़द्दह** का येह क़ौल कि "ज़कात अदा न करना कबीरा गुनाह है।" साबित करता है कि इस में कोई फ़र्क़ नहीं ख़्वाह थोड़ी ज़कात अदा न की जाए या ज़ियादा, येही ज़ाहिर मज़्हब है।

अ़ल्लामा हरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वग़ैरा के इस क़ियास कि "**मग़सूबा चीज़ के चौथाई दीनार की मिक्दार होने**" से मुराद येह है कि इस से कम क़ीमत चीज़ ग़स्ब करना कबीरा नहीं, लेकिन येह ता'रीफ़ मुस्तनद नहीं। बल्कि अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्कूल है : "उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى का इस बात पर इज्माअ़ है कि एक दाना भी ग़स्ब या चोरी करना कबीरा गुनाह है।" इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का क़ौल भी इस की ताईद करता है : "अहले सुन्नत का इस पर इज्माअ़ है कि जिस ने माले ह़राम खाया अगर्चे उस पर खाने की ता'रीफ़ सादिक़ न आती हो फिर भी येह फ़िस्क़ है।" अ़ल्लामा बिश्र बिन **अल मो'तमिर** और मो'तज़िला के एक गुरौह का कहना है कि "200 दिरहम ग़स्ब करने से फ़िस्क़ का हुक्म लागू होगा।" जब कि इब्ने जुबाई के नज़्दीक एक या इस से ज़ाइद दिरहम के ग़स्ब पर भी फ़ासिक़ हो जाएगा।

गोया अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़ल्लामा हरवी और इमाम बग़वी رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰى के गुज़श्ता कमज़ोर इस्तिद्लाल को कोई वुक़्अ़त ही न दी जैसा कि साबित हो चुका है कि इस की कोई ह़ैसिय्यत नहीं, क्यूं कि ग़ासिब, झूटी गवाही देने वाले, यतीम का माल खाने वाले, रिश्वत लेने वाले, कम तोलने वाले, चोर और ज़कात अदा न करने वाले के बारे में जितनी अह़ादीसे मुबा-रका आई हैं वोह सब मुत्लक़ हैं पस क़लील व कसीर हर मिक्दार को शामिल हैं, इस लिये मह़ज़ किसी मा'रूफ़ दलील से ही इन को ख़ास करना जाइज़ होगा क्यूं कि शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से येह साबित है कि हर वोह गुनाह जिस पर शदीद वई़द आई हो कबीरा है लिहाज़ा यहां भी येही सूरत होगी, नीज़ जब कोई शदीद वई़द क़लील व कसीर की क़ैद से मुक़य्यद किये बिग़ैर सह़ीह़ हो तो उस को उस के इत्लाक़ पर जारी करना वाजिब होता है, नीज़ उसे किसी मा'रूफ़ सह़ीह़ दलील के बिग़ैर मुक़य्यद न करना भी वाजिब है, येही वजह है कि जिस की कोई शर-ई दलील न हो उस की कोई ह़ैसिय्यत भी नहीं होती जैसा कि अ़ल्लामा अज़्रई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَلِى ने भी फ़रमाया है, लिहाज़ा इस सारी बह़स से येह वाज़ेह़ हो जाता है कि जिन्हों ने मग़सूबा चीज़ की मिक्दार को मुक़य्यद किया है उन का येह क़ौल कमज़ोर

www.dawateislami.net

है और क़ाबिले ए'तिमाद बात येही है कि मग़्सूबा चीज़ की क़लील व कसीर मिक़्दार में कोई फ़र्क़ नहीं, हां येह हो सकता है कि कोई चीज़ इतनी ह़क़ीर हो जो इस बात का तक़ाज़ा करती हो कि उ़र्फ़ के ए'तिबार से ग़ासिब को मुआ़फ़ कर दिया जाए "म-सलन मुनक़्क़ा व अंगूर का एक दाना" तो उस के ग़ासिब को गुनाहे सग़ीरा का मुर-तकिब कहना मुम्किन है, लेकिन मज़्कूरा उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का इज्माअ़, जिसे अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुस्सलाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام ने बयान फ़रमाया है, अगर हम इस को ह़क़ीक़ी मा'नों में मुराद लें तो भी अक्सर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इज्माअ़ के मुत़ाबिक़ उन का मज़्कूरा क़ौल रद हो जाता है और इस बात की तस्रीह़ हो जाती है कि येह मुत़्लक़न कबीरा गुनाह है क्यूं कि लोगों के अम्वाल और ह़ुक़ूक़, अगर्चे क़लील ही हों, किसी भी सूरत में मुआ़फ़ नहीं हो सकते, हां, अलबत्ता ! किसी के कुत्ते वग़ैरा को ग़स्ब कर लेना कबीरा नहीं जैसा कि चन्द उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का क़ौल है ह़ालां कि येह भी मोह़तमल है।

अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जब येही बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका ज़मीन के ग़स्ब के बारे में बयान कीं तो इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "क्या ज़मीन के ग़स्ब के ह़ुक्म के साथ दूसरी अश्या के ग़स्ब को भी मिलाया जाएगा ? क्यूं कि ह़ुरमत में फ़र्क़ करने वाली कोई चीज़ नहीं, जब ह़ुरमत में दोनों बराबर हैं तो शदीद वईद में भी बराबर होंगी या ज़मीन के ग़स्ब में दूसरी अश्या के बर अ़क्स ज़रर के ज़ियादा होने की वजह से फ़र्क़ किया जाएगा, जो सूरत, कि मह़ल्ले नज़र है, इस की दलील येह ह़दीसे पाक है कि "मैं बरोज़े क़ियामत तीन अफ़राद का ख़स्म (या'नी उन से मुत़ा-लबा करने वाला) होउंगा।" इस में उस शख़्स का भी तज़्किरा है : "जिस ने कोई मज़्दूर उजरत पर लिया और काम मुकम्मल कराने के बा'द उजरत पूरी न दी।"

(صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب اثم من باع حراء، الحدیث:۲۲۲۷، ص۱۷۳)

तो इस के लिये इस ह़दीसे पाक में उजरत का ह़क़ ग़स्ब करने की वजह से शदीद वईद आई है।

अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस बात का ज़िक्र मह़ज़ इस दलील में ग़ौरो फ़िक्र करने की ग़रज़ से किया है वरना तो सब की तस्रीह़ के मुत़ाबिक़ इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि "ग़स्ब ख़्वाह ज़मीन हो या कोई दूसरी माली चीज़ बहर ह़ाल येह कबीरा गुनाह है।" और इस से येह भी मा'लूम होता है कि शायद अ़ल्लामा जलाल बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की नज़र से वोह ह़दीसे पाक नहीं गुज़री जो मैं ने सब से आख़िर में बयान की है क्यूं कि इस में तो सरा-ह़तन एक डन्डा ग़स्ब करने पर भी वईद है, लिहाज़ा अगर इस ह़दीसे पाक को उस उजरत वाली ह़दीसे पाक के साथ मिला दिया जाए तो साबित हो जाएगा कि वईद न सिर्फ़ ज़मीन में है बल्कि ज़मीन के इ़लावा दूसरी माली अश्या में भी है।

www.dawateislami.net

باب الاجارة

इजारे का बयान

कबीरा नम्बर 228 : उजरत देने में ताख़ीर करना

या'नी मज्दूर की मज़्दूरी देने में ताख़ीर करना और उस के काम से फ़ारिग़ होने के बा'द भी उस से रोके रखना ।

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "क़ियामत के दिन मैं 3 अफ़्राद का ख़स्म होउंगा (या'नी मैं उन से मुत़ा-लबा करूंगा) और जिन का मैं ख़स्म होउंगा उन पर ग़ालिब आ जाऊंगा : (1) वोह शख़्स जिसे मेरे लिये दिया गया फिर उस ने उस माल में बद दियानती की (2) वोह शख़्स जिस ने किसी आज़ाद आदमी को बेचा और उस की क़ीमत खा गया और (3) वोह शख़्स जिस ने किसी को उजरत पर रखा फिर उस से पूरा पूरा काम लिया मगर उस की उजरत न दी ।"

(سنن ابن ماجة،ابواب الرهون ، باب اجر الاجراء ، الحديث: ٢٤٤٢ ، ص ٢٦٢٣)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मज़्दूर का पसीना ख़ुश्क होने से पहले उस की मज़्दूरी अदा करो ।" (سنن ابن ماجة،ابواب الرهون ، باب اجر الاجراء ، الحديث: ٢٤٤٣ ، ص ٢٦٢٣)

तम्बीह :

इसे कबीरा गुनाह शुमार करना ग़स्ब और ग़नी के टाल मटोल करने के बयान में ज़िक्र की गई रिवायात से बिल्कुल वाज़ेह़ है चूंकि इस में ख़ास त़ौर पर एक सख़्त वईद वारिद हुई है इस लिये मैं ने इसे अ़लाह़िदा ज़िक्र कर दिया, फिर मैं ने बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی को देखा कि उन्हों ने मेरी त़रह़ इसे अ़लाह़िदा कबीरा गुनाह क़रार दिया है ।

www.dawateislami.net

باب احياء الموات

बे जान अश्या का बयान

ज़रूरत से ज़ाइद पानी रोक लेना कबीरा गुनाह है जैसा कि ह़दीसे पाक ने इस की तस्रीह़ फ़रमाई, इस का बयान गुज़र चुका है।

कबीरा नम्बर : 229 : हुरमत के क़ाइल के नज़्दीक अ-रफ़ा, मुज़्दलिफ़ा या मिना में इमारत बनाना

जिस ने अ-रफ़ा, मुज़्दलिफ़ा या मिना में इमारत बनाना ह़राम क़रार दिया है उस के नज़्दीक येह कबीरा गुनाह है, इस की हुरमत की बिना पर इसे कबीरा गुनाह क़रार देना बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि इस क़ौल के मुत़ाबिक़ येह ज़मीन ग़स्ब करने के ज़ुम्रे में आता है और हम बयान कर चुके हैं कि ज़मीन ग़स्ब करना कबीरा गुनाह है और इस की वईद भी बयान हो चुकी है और जो शख़्स इस अ़मल की हुरमत का ए'तिक़ाद रखते हुए ऐसा करेगा येह वईदें उसे शामिल होंगी।

कबीरा नम्बर : 230 : मुबाह़ अश्या के इस्ति'माल से लोगों को रोकना

ख़्वाह वोह अश्या आ़म हों या ख़ास़। लोगों को उन के इस्ति'माल से रोकना म-सलन ऐसी बन्जर ज़मीन जिसे आबाद करना हर एक के लिये जाइज़ हो इसी त़रह़ शाहराहों, मस्जिदों, घोड़े बांधने की जगहों और ज़ाहिरी व बात़िनी मा'दनिय्यात से रोकना

इन में से हर एक के जाइज़ इस्ति'माल से रोकना कबीरा गुनाह होना मुनासिब है क्यूं कि येह ग़स्ब के मुशाबेह है और आदमी को उस की मिल्किय्यत में तसर्रुफ़ से रोकने के मु-तरादिफ़ है क्यूं कि इस के लिये इस त़रह़ की चीज़ों से नफ़्अ़ उठाना अपनी मिल्किय्यत से नफ़्अ़ उठाने की त़रह़ है पस जिस त़रह़ जैसे मिल्किय्यत से रोकना कबीरा गुनाह है इसी त़रह़ इस से रोकना भी कबीरा गुनाह है।

www.dawateislami.net

कबीरा नम्बर : 231 : सड़क किराए पर देना

या'नी सड़क किराए पर दे कर उस की उजरत लेना ख़्वाह वोह अपने घर या दुकान की हुदूद में ही क्यूं न हों

इस मौज़ूअ़ पर हमारे कई अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के क़ौल की बिना पर इसे कबीरा गुनाह क़रार देना बिल्कुल वाज़ेह़ है, वोह फ़रमाते हैं : "येह अ़मल फ़िस्क़ और गुमराही है।" इसी लिये अ़ल्लामा अज़्रई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सड़कों पर बैठने वालों से उजरत वुसूल करने वाले बैतुल माल के आ़मिलीन के बारे में इर्शाद फ़रमाया : "जो लोग येह काम करते हैं मैं नहीं जानता कि वोह कौन सा मुंह ले कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होंगे।"

कबीरा नम्बर : 232 : मुबाह़ पानी पर क़ाबिज़ हो कर मुसाफ़िर को उस से रोकना

﴾1﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन **3** अफ़राद से न कलाम फ़रमाएगा और न उन्हें पाक फ़रमाएगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा, इन में एक वोह शख़्स है जो किसी बियाबान में मौजूद पानी पर क़ाबिज़ हो और मुसाफ़िर को उस के इस्ति'माल से रोक दे।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ، باب بیان غلظ تحریم اسبال......الخ، الحدیث: ۲۹۷ ، ص ٦٩٦)

तम्बीह :

येह कबीरा गुनाह इस ह़दीसे पाक से वाज़ेह़ है इसी लिये बहुत से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस के कबीरा गुनाह होने का मौक़िफ़ इख़्तियार किया है मगर यहां येह क़ैद लगाना ज़रूरी है कि मन्अ़ करने की सूरत में उस (मुसाफ़िर) को शदीद नुक़्सान पहुंचे, वरना सिर्फ़ मन्अ़ करना या थोड़ा सा नुक़्सान पहुंचना इस के कबीरा गुनाह होने को साबित नहीं करता।

www.dawateislami.net

باب الوقف

वक़्फ़ का बयान

कबीरा नम्बर **: 233 :** **वाक़िफ़ की शर्त़ की मुख़ा-लफ़त करना**

मेरा इसे कबीरा गुनाह शुमार करना बिल्कुल ज़ाहिर है अगर्चे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस के कबीरा होने की वज़ाहत नहीं फ़रमाई क्यूं कि इस की मुख़ा-लफ़त लोगों का माल बात़िल त़रीक़े से खाने का सबब बनती है और येह कबीरा गुनाह है।

باب اللقطہ

लुक़्त़े का बयान

कबीरा नम्बर **: 234 :** **लुक़्त़े में ना जाइज़ तसर्रुफ़ करना**

या'नी लुक़्त़े के ए'लान और अपने इस्ति'माल में लाने की शराइत़ पूरी होने से क़ब्ल उस में तसर्रुफ़ करना

कबीरा नम्बर **: 235 : उस के मालिक को जानने के बा वुजूद उस से छुपाना**

इन दोनों का कबीरा गुनाह होना बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूं कि इन में लोगों का माल बात़िल त़रीक़े से खाना पाया जा रहा है।

www.dawateislami.net

باب اللقيط

लक़ीत़ का बयान

कबीरा नम्बर : 236 : गिरे पड़े बच्चे को उठाते वक़्त गवाह न बनाना

अ़ल्लामा ज़रकशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस के कबीरा गुनाह होने की सराह़त फ़रमाई है, इस से पता चलता है कि मैं ने गुज़श्ता अब्वाब में जो कबाइर बयान किये हैं उन का कबीरा गुनाह होना इस से ज़ियादा ज़ाहिर है, क्यूं कि इस के मुक़ाबले में उन का कबीरा होना उन की बड़ी ख़राबियों की वजह से ज़ियादा मुनासिब है अगर्चे इस में भी ख़राबी पाई जाती है क्यूं कि गवाह न बनाना कभी उस बच्चे के ग़ुलाम होने का दा'वा करने पर उक्साता है। पस जब फ़साद की त़रफ़ ले जाने वाली चीज़ कबीरा गुनाह है तो येह अ़मल भी कबीरा गुनाह होगा क्यूं कि येह कबीरा गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और वोह आज़ाद के ग़ुलाम होने का दा'वा करना है। ख़्वाह वोह कहे कि ''येह नस्ल दर नस्ल मेरा ग़ुलाम है।'' या कहे कि ''मैं ने उसे ख़रीदा है।'' जैसा कि लक़ीत़ में होता है। और उस बच्चे की आज़ादी का हुक्म भी इसी त़रह़ है और हम ने येह इस लिये कहा क्यूं कि **वसाइल का भी वोही हुक्म होता है जो मक़ासिद का होता है** पस औला वोही है जो मैं ने ज़िक्र कर दिया है। क्यूं कि येह अ़मल बज़ाते ख़ुद फ़साद है या इस से बड़े फ़साद की त़रफ़ ले जाने वाला है या वाक़ेअ़ होने के ए'तिबार से फ़साद के ज़ियादा क़रीब है।

www.dawateislami.net

باب الوصية
वसिय्यत का बयान

कबीरा नम्बर : 237 : वसिय्यत में वु-रसा को नुक्सान पहुंचाना

﴾1﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ (پ۴، النساء: ۱۲ تا ۱۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मय्यित की वसिय्यत और दैन निकाल कर जिस में उस ने नुक्सान न पहुंचाया हो येह अल्लाह का इर्शाद है और अल्लाह इल्म वाला हिल्म वाला है । येह अल्लाह की हदें हैं और जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी काम्याबी और जो अल्लाह और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे और उस की कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अज़ाब है ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास और मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के क़ौल के मुताबिक़ इस से मुराद विरासत है और خُلُوْد فِی النَّار से मुराद येह है कि ''अगर वोह उसे हलाल समझ कर करें तो हमेशा जहन्नम में रहेंगे वरना तवील मुद्दत तक जहन्नम का ईंधन बनेंगे ।''

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا ने इस आयते मुबा-रका से येह इस्तिद्लाल किया है : ''वसिय्यत में नुक्सान पहुंचाना कबीरा गुनाह है क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस शदीद वईद को विरासत के बा'द ज़िक्र किया है ।'' जैसा कि,

﴾1﴿...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वसिय्यत में वु-रसा को नुक्सान पहुंचाना कबीरा गुनाहों में से है ।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई : ''تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ'' या'नी येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हदें हैं ।''

(سنن دارقطني، كتاب الوصايا، الحديث: ٤٢٤٩، ج٤، ص ١٧٨)

पस दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सराहत फ़रमा दी कि वसिय्यत में नुक्सान पहुंचाना कबीरा गुनाह है और मज़्कूरा आयते मुबा-रका का लाना इस पर गवाह

www.dawateislami.net

है, इसी लिये हमारे अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की एक जमाअ़त और दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस के कबीरा गुनाह होने की सराहत फ़रमाई है।

वसिय्यत में नुक़्सान पहुंचाने वाली चन्द सूरतें :

अ़ल्लामा इब्ने आ़दिल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी तफ़्सीर में फ़रमाया : याद रखो ! वसिय्यत में नुक़्सान पहुंचाने की चन्द सूरतें है : (1) सुलुस माल से ज़ाइद की वसिय्यत करना (2) अज्नबी के लिये तमाम या बा'ज़ माल का इक़्रार करना (3) वु-रसा को विरासत से मह़रूम करने के लिये ऐसे क़र्ज़ का इक़्रार करना जिस की कोई ह़क़ीक़त न हो (4) येह इक़्रार करना कि फ़ुलां पर मेरा जो क़र्ज़ था वोह मैं ने वुसूल कर लिया है (5) वु-रसा को माल से मह़रूम करने के लिये कोई चीज़ निहायत कम क़ीमत में बेच देना या भारी क़ीमत अदा कर के कोई चीज़ ख़रीदना और (6) सुलुस माल की वसिय्यत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नहीं बल्कि वु-रसा को विरासत से मह़रूम करने के लिये करना।" येह तमाम सूरतें वसिय्यत में नुक़्सान पहुंचाने में दाख़िल हैं।

﴿2﴾...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर कोई शख़्स **70** बरस तक जन्नतियों जैसे आ'माल करता रहे, फिर अपनी वसिय्यत में जानिब दारी से काम ले तो उस का ख़ातिमा बुरे अ़मल पर होगा और वोह जहन्नम में दाख़िल होगा और कोई शख़्स **70** साल तक जहन्नमियों जैसे आ'माल करता रहे फिर अपनी वसिय्यत में अ़द्ल से काम ले तो उस का ख़ातिमा अच्छे अ़मल पर होगा और वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (المسند للاما م احمد بن حنبل ، مسند ابی هريرة ،الحديث: ٧٧٤٦، ج٣، ص ١١٥)

﴿3﴾...... शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़र्ज़ कर्दा मीरास काटी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत से उस की मीरास काट देगा।"

(كنزالعمال،كتاب الفرائض،قسم الاقوال،الفصل الاول فی فضله......الخ، الحديث: ٣٠٣٩٧، ج ١١،ص٥)

इस आयते मुबा-रका के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान : "تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ" इस पर दलालत करता है, और फ़रमाने बारी तआ़ला "وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के मुत़ाबिक़ विरासत के बारे में है, नीज़ मौत के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की मुख़ा-लफ़त सख़्त ख़सारे पर दलालत करती है जो कि कबीरा गुनाहों में से है।

अ़ल्लामा ज़रकशी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येही मस्लक अपनाया क्यूं कि मु-तअख़्ख़िरीन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में से किसी का फ़रमान है कि "मैं ने अ़ल्लामा ज़रकशी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का लिखा हुवा मज्मूआ़ देखा, उन्हों ने तक़रीबन अ़ल्लामा इब्ने आ़दिल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ही मज़्कूरा

www.dawateislami.net

कलाम ज़िक्र किया और अ़ल्लामा ज़रकशी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इसे ज़िक्र करना भी अ़जीब है क्यूं कि अ़ल्लामा इब्ने आ़दिल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वसिय्यत की एक तिहाई से ज़ाइद जो सूरतें मुत़्लक़ बयान की हैं वोह हमारे मुसल्लम क़वाइद के मुत़ाबिक़ नहीं क्यूं कि वोह हमारे नज़्दीक फ़क़त़ मक्रूह हैं ह़राम नहीं चेजाए कि वोह कबीरा हों, अलबत्ता अगर वु-रसा को मह़रूम करने की निय्यत हो तो इस का ह़राम होना बिल्कुल ज़ाहिर है और इस से येह भी मा'लूम हुवा कि अगर कोई ज़ुल्म और अ़दावत की बिना पर तिहाई माल से ज़ियादा में वसिय्यत करे तो ऐसी सूरत में उस वसिय्यत को कबीरा क़रार देना बईद नहीं क्यूं कि इस में वु-रसा को नुक़्सान पहुंचाना पाया जा रहा है ख़ुसूसन ऐसे वक़्त में जब झूटा शख़्स भी सच बोलता है और बदकार तौबा कर लेता है, लिहाज़ा उस का येह अ़मल उस की क़सावते क़ल्बी, फ़सादे अ़क़्ल और इन्तिहाई जुरअत पर वाज़ेह़ दलील है, इसी लिये उस का ख़ातिमा बुरे अ़मल पर होता है और वोह जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।"

वसिय्यत के ज़रीए नुक़्सान पहुंचाने की एक सूरत :

वसिय्यत के ज़रीए नुक़्सान पहुंचाने की एक सूरत येह भी है कि अपने बच्चों वग़ैरा पर ऐसे शख़्स को परवरिश के लिये मुक़र्रर करने की वसिय्यत करे जिस के बारे में वोह जानता हो कि येह शख़्स उन का माल खा लेगा या सह़ीह़ त़रीक़े से तसर्रुफ़ न करने की वजह से उन के माल को ज़ाएअ़ कर बैठेगा। मेरी बयान कर्दा येह बातें इन दो अह़ादीसे मुबा-रका से ली गई हैं :

《4》...... पहली ह़दीसे मुबा-रका को इमाम इब्ने माजह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस त़रह़ रिवायत किया है : "आदमी **70** बरस तक जन्नतियों जैसे अ़मल करता रहता है फिर अपनी वसिय्यत में ख़ियानत कर बैठता है तो उस का ख़ातिमा बुरे अ़मल पर होता है और वोह जहन्नम में दाख़िल हो जाता है और कोई आदमी **70** बरस तक जहन्नमियों जैसे अ़मल करता रहता है फिर अपनी वसिय्यत में इन्साफ़ से काम लेता है तो उस का ख़ातिमा अच्छे अ़मल पर होता है और वोह जन्नत में दाख़िल हो जाता है।"

(سنن ابن ماجة،ابواب الوصايا، باب الحيف فی الوصية، الحديث: ٢٧٠٤، ص٢٦٣٩)

《5》...... दूसरी ह़दीसे पाक को इमाम इब्ने माजह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन अल्फ़ाज़ में रिवायत किया है : "जो अपने वारिस की मीरास से भागेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत जन्नत से उस की मीरास काट देगा।" (سنن ابن ماجة،ابواب الوصايا، باب الحيف فی الوصية، الحديث: ٢٧٠٣، ص٢٦٣٩)

पहली ह़दीसे पाक की ताईद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी येह ह़दीसे पाक भी करती है जिसे इमाम अबू दावूद और इमाम तिरमिज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने रिवायत किया है कि,

《6》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मर्द या औ़रत **70** बरस तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी करते हैं, फिर जब उन की मौत का वक़्त आता है तो वसिय्यत में नुक़्सान पहुंचाते हैं तो उन के लिये जहन्नम वाजिब हो

www.dawateislami.net

जाती है।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

مِنۡۢ بَعۡدِ وَصِیَّۃٍ یُّوۡصٰی بِہَاۤ اَوۡ دَیۡنٍ ۙ غَیۡرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِیَّۃً مِّنَ اللّٰہِ ؕ وَاللّٰہُ عَلِیۡمٌ حَلِیۡمٌ ؕ﴿۱۲﴾ تِلۡکَ حُدُوۡدُ اللّٰہِ ؕ وَمَنۡ یُّطِعِ اللّٰہَ وَرَسُوۡلَہٗ یُدۡخِلۡہُ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِہَا الۡاَنۡہٰرُ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَا ؕ وَذٰلِکَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ ﴿۱۳﴾ (پ۴،النساء:۱۲۔۱۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मय्यित की वसिय्यत और दैन निकाल कर जिस में उस ने नुक़्सान न पहुंचाया हो येह **अल्लाह** का इर्शाद है और **अल्लाह** इल्म वाला ह़िल्म वाला है। येह **अल्लाह** की ह़दें हैं और जो हुक्म माने **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल का **अल्लाह** उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी काम्याबी।

(جامع الترمذی،ابواب الوصایا،باب ماجاء فی الضرار فی الوصیۃ، الحدیث:۲۱۱۷، ص۱۸۶۳"سبعین" بدلہ"ستین")

वसिय्यत में अ़द्ल को पेशे नज़र रखना

वसिय्यत में अ़द्ल को पेशे नज़र रखना चाहिये। दूसरी शिक़ की तफ़्सील तो बयान हो चुकी है जब कि पहली शिक़ इस ह़दीसे पाक से साबित है कि,

﴾7﴿...... सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''किसी मुसल्मान के पास कोई ऐसी चीज़ हो जिस में वसिय्यत की जाती है तो उसे कोई ह़क़ नहीं कि वोह **2** या **3** रातें इस त़रह़ गुज़ारे कि उस के पास वसिय्यत लिखी हुई न हो।''

(صحیح مسلم ، کتاب الوصیۃ ، باب وصیۃ الرجل مکتوبۃ عندہ ، الحدیث: ۴۲۰۷ ، ص ۹۶۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''जब से मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह ह़दीसे पाक सुनी मेरी कोई रात ऐसी नहीं गुज़री जिस में मेरे पास वसिय्यत लिखी हुई न रखी हो।'' (المرجع السابق،تحت الحدیث:۴۲۰۷)

वसिय्यत करने की फ़ज़ीलत :

﴾8﴿...... सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो वसिय्यत कर के मरा वोह सुन्नत पर मरा और तक़्वा व शहादत पर मरा और मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर मरा।''

(سنن ابن ماجۃ،ابواب الوصایا،باب الحث علی الوصیۃ ،الحدیث:۲۷۰۱،ص۲۶۳۹)

﴾9﴿...... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''मह़रूम है वोह शख़्स जो वसिय्यत से मह़रूम हो।'' (المرجع السابق، الحدیث: ۲۷۰۰، ص ۲۶۳۹)

www.dawateislami.net

《10》...... रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "वसिय्यत तर्क कर देना दुन्या में रुस्वाई और आख़िरत में अ़ज़ाब और तबाही का बाइस है।"

(المعجم الاوسط، الحديث: ٥٤٢٣، ج٤، ص ١٢٢)

अगर येह ह़दीसे मुबारक द-र-जए सिह़्ह़त तक पहुंच जाए तो इस से येह फ़ाएदा ह़ासिल होगा कि वसिय्यत तर्क करना कबीरा गुनाह है और येह ह़दीसे पाक उस शख़्स पर मह़मूल होगी जो जानता है कि वसिय्यत न करना उस के माल पर ज़ालिमों के क़ाबिज़ होने और वु-रसा से छिन जाने का सबब बनेगा।

《11》...... नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "आदमी का अपनी सिह़्ह़त और ज़िन्दगी में एक दिरहम स-दक़ा करना मौत के वक़्त **100** दिरहम ख़र्च करने से बेहतर है।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الوصایا، باب ماجاء فی کراهیة الاضرار فی الوصیة، الحدیث: ٢٨٦٦، ص١٤٣٧)

www.dawateislami.net

باب الوديعة

वदीअ़त का बयान

कबीरा नम्बर 238 : वदीअ़त (अमानत) में ख़ियानत करना

कबीरा नम्बर 239 : रहन रखी हुई चीज़ में ख़ियानत करना

कबीरा नम्बर 240 : किराए पर ली हुई चीज़ में ख़ियानत करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا (پ۵،النساء:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो।

《1》...... येह आयते मुबा-रका ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन त़ल्हा़ **हजबी** दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह फ़त्हे मक्का के दिन ख़ानए का'बा के ख़ादिम थे, जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ानए का'बा शरीफ़ में दाख़िल होने लगे तो उन्हों ने का'बे का दरवाज़ा बन्द कर दिया और येह गुमान करते हुए चाबी देने से इन्कार कर दिया अगर वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल मानते तो हरगिज़ इन्कार न करते ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم ने उन के हाथ को मरोड़ा (या'नी बल दिया) और उन से चाबी ले ली और का'बे का दरवाज़ा खोल दिया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का'बा शरीफ़ में दाख़िल हुए और उस में नमाज़ पढ़ी, फिर जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : "चाबी मुझे इनायत फ़रमाइये ताकि मैं का'बा शरीफ़ की ख़िदमत और इस में ह़ाजियों को पानी पिलाने की ज़िम्मादारी ले लूं। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई।

पस रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन त़ल्हा़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को चाबी वापस देने और उन से मा'ज़िरत करने का हुक्म दिया, इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा : "पहले तुम ने नफ़रत दिलाई, ईज़ा पहुंचाई और अब नर्मी करने लगे हो।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे बारे में क़ुरआने

www.dawateislami.net

करीम की आयते मुबा–रका नाज़िल फ़रमाई है।'' फिर उन्हें येह आयते मुबा–रका सुनाई तो वोह मुसल्मान हो गए, और चाबी उन्हीं के पास रही जब उन के इन्तिक़ाल का वक़्त हुवा तो उन्हों ने वोह चाबी अपने भाई शैबा के ह़वाले कर दी और अब क़ियामत तक का'बे की ख़िदमत उन्हीं की औलाद में रहेगी, क्यूं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें चाबी अ़ता फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया था : ''इसे हमेशा के लिये ले लो तुम से येह चाबी ज़ालिम के इलावा कोई नहीं छीन सकता।'' (المعجم الاوسط، الحديث: ٤٨٨، ج١، ص ١٥١)

और एक क़ौल येह है : ''इस आयते करीमा में तमाम अमानतें मुराद हैं।'' ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम ''**ह़िल्यतुल औलिया**'' में फ़रमाते हैं : ''जिन उ़–लमा ने इर्शाद फ़रमाया है कि येह आयते मुबा–रका हर क़िस्म की अमानतों को आ़म है उन में ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब, अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद और उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم भी शामिल हैं, येह सब फ़रमाते हैं : ''वुज़ू, जनाबत, नमाज़, ज़कात, रोज़ा, नाप तोल और वदीअ़त हर चीज़ में अमानत है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तंगदस्त या फ़राख़ दस्त किसी को भी अमानत रोक लेने की रुख़्सत नहीं दी।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान की शर्मगाह को पैदा किया तो फ़रमाया : ''येह एक अमानत है जो मैं ने तेरे सिपुर्द की है, इसे ह़क़ के इलावा क़ाबू में रख।''

☆...... किसी का क़ौल है : ''इन्सान का मुआ़–मला या तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के साथ येह है कि वोह मामूरात पर अ़मल करे और मन्हिय्यात से इज्तिनाब करे, क्यूं कि इन्सान का हर उ़ज़्व **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमानत है, ज़बान में अमानत येह है कि इन्सान इसे झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बिदअ़त और बद कलामी में इस्ति'माल न करे, आंख में अमानत येह है कि इसे ह़राम अश्या देखने में इस्ति'माल न करे, कानों में अमानत येह है कि इन्हें ह़राम सुनने के लिये इस्ति'माल न करे, इसी त़रह़ दीगर आ'ज़ा हैं।''

☆...... या फिर इन्सान का मुआ़–मला लोगों के साथ येह है कि वोह उन की अमानतें लौटाए और नाप तोल वग़ैरा में कमी न करे,

☆...... और उ–मरा रिआ़या के साथ अ़द्ल करें,

☆...... उ़–लमाए किराम का अ़वाम के साथ मुआ़–मला यूं है कि वोह उन्हें इत़ाअ़त, अख़्लाक़े ह़–सना और ए'तिक़ादाते सह़ीह़ा की तरग़ीब दें और ना फ़रमानी और दीगर बुराइयों जैसे तअ़स्सुबाते बात़िला से रोकें,

www.dawateislami.net

☆...... औरत अपने शोहर के माल और उस की आबरू में ख़ियानत न करे,
☆...... गुलाम अपने आक़ा की ख़िदमत में कोताही न करे और न उस के माल में ख़ियानत करे,

《2》...... बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमाने आ़लीशान में इस बात की त़रफ़ इशारा फ़रमाया कि "तुम में से हर एक निगहबान है और उस से उस की रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा।"

(صحيح البخاری، كتاب الجمعة، باب الجمعة في القرى المدن، الحديث:٨٩٣، ص ٧٠)

☆...... नफ़्स की अमानत येह है कि इस के लिये उसी चीज़ को इख़्तियार करे जो दीन व दुन्या में इस के लिये नफ़्अ़ बख़्श और बेहतर हो और येह कि इस की ख़्वाहिशात और इरादों की मुख़ा-लफ़त में कोशिश करे क्यूं कि येह अपने पैरौकार के लिये दुन्या व आख़िरत में ज़हरे क़ातिल है।

《3》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसे ख़ुत़्बे बहुत कम दिये जिन में येह बात इर्शाद न फ़रमाई हो : "जो अमानत दार नहीं उस का कोई ईमान नहीं और जिस का अ़ह्द नहीं उस का कोई दीन नहीं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر، الحديث:١٢٣٨٦ ج ٤، ص ٢٧١)

《4》...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है कि,

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ (پ٩، الانفال:٢٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह और रसूल से दग़ा न करो और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत।

येह आयते मुबा-रका हज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में नाज़िल हुई, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू क़ुरीज़ा के मुहा-सरे के वक़्त उन्हें बनू क़ुरीज़ा की त़रफ़ भेजा क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अहलो इयाल यहूदियों के क़बीले में रहते थे इस लिये वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ मैलान रखते थे, यहूदियों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा : "अगर हम मुहम्मद (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के हुक्म के मुत़ाबिक़ नीचे उतर आएं तो तुम्हारे ख़याल में हमारे साथ क्या मुआ़-मला होगा?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने हाथ से गरदन की त़रफ़ इशारा किया कि तुम्हें क़त्ल कर दिया जाएगा लिहाज़ा ऐसा मत करना, येह बात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ियानत थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मेरे क़दम अपने मक़ाम से हटे भी न थे कि मैं समझ गया कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ियानत का मुर-तकिब हो चुका हूं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिद में ह़ाज़िर हुए और अपने आप को बांध दिया और क़सम उठाई कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इलावा मुझे कोई न खोलेगा, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इसी त़रह़ बंधे रहे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की तौबा की क़बूलिय्यत का फ़रमान नाज़िल फ़रमाया तो

www.dawateislami.net

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उन्हें रस्सियों से खोल कर आज़ाद फ़रमाया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "अमानात से मुराद वोह आ'माल हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों को अमीन मुक़र्रर किया है।" और दीगर का क़ौल है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ियानत करने से मुराद इन दोनों की ना फ़रमानी है।"

जहां तक अमानतों में ख़ियानत करने का मुआ-मला है तो हर एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात पर अमीन है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी बारगाह में इस त़रह़ खड़ा करेगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और बन्दे के दरमियान कोई तरजुमान न होगा, फिर उस बन्दे से उस के बारे में पूछेगा कि उस ने इन अह़काम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमानत की ह़िफ़ाज़त की या उन्हें ज़ाएअ़ कर दिया? लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सुवालात के जवाबात तय्यार करे क्यूं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन अह़काम के बारे में पूछेगा तो उस दिन उस के पास इन्कार की कोई गुन्जाइश न होगी, पस इसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान में ग़ौर करे कि,

وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ۝ (پ۱۲، یوسف:۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता।

या'नी अमानत में ख़ियानत करने वाले का कोई ह़ीला उसे हिदायत के मक़ाम पर फ़ाइज़ नहीं कर सकता बल्कि उसे दुन्या में भी राहे हिदायत से मह़रूम कर देता है और आख़िरत में भी सारी इन्सानियत के सामने रुस्वा करेगा, ख़ियानत अगर्चे हर चीज़ में क़बीह़ है लेकिन बा'ज़ चीज़ों में दूसरी चीज़ों के मुक़ाबले में ज़ियादा क़बीह़ है, क्यूं कि जो शख़्स रुपै पैसे के मुआ-मले में तुझ से ख़ियानत करे वोह उस शख़्स की मिस्ल नहीं हो सकता जो तेरे अहलो इ़याल के मुआ-मले में ख़ियानत का मुर-तकिब हो, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमानत के मुआ-मले को इन्तिहाई अ़-ज़मत दी और इस की ताकीद बयान की, पस इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝ (پ۲۲، الاحزاب:۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्हों ने इस के उठाने से इन्कार किया और इस से डर गए और आदमी ने उठा ली, बेशक वोह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है।

﴾5﴿...... **मन्क़ूल** है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दुन्या को एक बाग़ की त़रह़ पैदा किया फिर इसे 5 चीज़ों : उ़-लमा के इ़ल्म, हुक्मरानों के अ़द्ल, सालिह़ीन की इ़बादत, मश्वरा देने वाले की ख़ैर ख़्वाही, और अमानत की अदाएगी से मुज़य्यन फ़रमाया, तो इब्लीस मल्ऊ़न ने इ़ल्म के साथ छुपाने, अ़द्ल के

www.dawateislami.net

साथ ज़ुल्म, इबादत के साथ रियाकारी, ख़ैर ख़्वाही के साथ बद दियानती और अमानत के साथ ख़ियानत को मिला दिया।''

《6》...... सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन हर आ़दत अपना सकता है मगर झूटा और ख़ाइन (या'नी ख़ियानत करने वाला) नहीं हो सकता।'' (جامع الاحاديث ، قسم الاقوال ، باب الاكمال من الجامع الكبير، الحديث: ٢٨٥٨٥،ج٩ ، ص ٣٠١)

《7》...... शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सब से पहले लोगों से अमानत उठाई जाएगी, आख़िर में नमाज़ बाक़ी रह जाएगी और बहुत से नमाज़ी ऐसे होंगे जिन में कोई भलाई न होगी।''

(مجمع الزوائد ،كتاب الفتن ، باب رفع الامانة والحياء ، الحديث: ١٢٤٢٧ ، ج ٧ ، ص ٦٢٢)

《8》...... मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नमियों में ऐसे शख़्स को भी शुमार फ़रमाया जिस की ख़्वाहिश और त़मअ़ अगर्चे कम ही हो मगर वोह उसे ख़ियानत का मुर-तकिब कर दे।

(صحيح مسلم ،كتاب الجنة ، باب الصفات التي يعرف بها في الدنيا ......الخ ، الحديث: ٧٢٠٧، ج١١٧٤)

《9》...... रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिलों के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम मेरी **6** बातें क़बूल कर लो मैं तुम्हारे लिये जन्नत क़बूल कर लूंगा : (1) जब तुम कोई बात करो तो झूट न बोलो (2) जब वा'दा करो तो उस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करो (3) जब अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत न करो (4) अपनी आंखों को झुकाए रखो (5) अपने हाथों को (ह़राम) से रोके रखो और (6) अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करो।'' (شعب الايمان ، باب في الايفاء بالعقود ،الحديث: ٤٣٥٥ ،ج٤، ص ٧٨)

《10》...... एक और रिवायत में है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम मुझे **6** चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं : (1) जब बात करो तो सच बोलो (2) जब वा'दा करो तो पूरा करो (3) जब अमीन बनाए जाओ तो अमानत अदा करो (4) अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करो (5) अपनी आंखों को झुकाए रखो और (6) अपने हाथों को रोके रखो।'' (المسند للامام احمد بن حنبل ،حديث عباده بن الصامت، الحديث: ٢٢٨٢١، ج٨، ص ٤١٢)

《11》...... एक रिवायत में है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''तुम मुझे **6** चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं : (1) नमाज़ (2) ज़कात (3) अमानत (4) शर्मगाह (5) पेट और (6) ज़बान।''

(المعجم الاوسط ، الحديث: ٤٩٢٥ ، ج ٣ ، ص٣٩٦)

www.dawateislami.net

﴾12﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अमानत दारी लोगों के दिलों की जड़ों में उतरी, फिर क़ुरआने ह़कीम नाज़िल हुवा तो उन्हों ने क़ुरआने पाक सीखा और सुन्नत सीखी ।" फिर सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें अमानत उठने के बारे में बताया और इर्शाद फ़रमाया : "आदमी सोएगा तो अमानत उस के दिल से खींच ली जाएगी और उस का निशान ऐसा रह जाएगा जैसे फुन्सी के धब्बे जब वोह अच्छी हो जाती है और फिर आदमी सोएगा तो अमानत उस के दिल से खींच ली जाएगी और उस का निशान आबले के निशान की त़रह़ रह जाएगा जैसे तू कोई अंगारा अपने पाउं पर रखे तो जिल्द फूल जाए और तू उसे आबले की सूरत में पाए ह़ालां कि उस के अन्दर कुछ नहीं होता ।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ، باب رفع الامانۃ والایمان......الخ ، الحدیث: ۳۶۷ ، ص ۷۰۲)

﴾13﴿...... शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें बताया : "जो अमानत दार नहीं उस का कोई ईमान नहीं और जिस का वुज़ू नहीं उस की कोई नमाज़ नहीं ।"

(المعجم الاوسط ، الحدیث: ۲۲۹۲ ، ج۱ ، ص ۶۲۶)

﴾14﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : " हम सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे कि मदीने के बालाई ह़िस्से की बस्ती के एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे इस दीन की सब से मुश्किल और सब से आसान चीज़ के बारे में बताइये ।" तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस की आसान तरीन चीज़ येह है कि, इस बात की गवाही देना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं, और ऐ बालाई बस्ती वाले ! इस की मुश्किल तरीन चीज़ अमानत है, बेशक जो अमानत अदा नहीं करता उस का न कोई दीन है, न नमाज़ और न ही ज़कात ।"

(البحر الزخار بمسند البزار ،مسندعلی بن ابی طالب،الحدیث: ۸۱۹،ج۳ ، ص ۶۱)

﴾15﴿...... दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में सब से बेहतर मेरा ज़माना है, फिर वोह लोग जो उन से मिले होंगे, फिर वोह जो उन से मिले होंगे, फिर उन के बा'द ऐसे लोग आएंगे जो गवाही देंगे तो उन की गवाही क़बूल न की जाएगी, ख़ियानत करेंगे और अमानत दार नहीं होंगे, नज़्रें मानेंगे और पूरी नहीं करेंगे और उन में मोटापा ज़ाहिर होगा ।"

(صحیح مسلم ،کتاب فضائل الصحابۃ ، باب فضل الصحابہ......الخ، الحدیث: ۶۴۷۵، ص ۱۱۲۲)

﴾16﴿...... सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुनाफ़िक़ की **3** अ़लामतें हैं : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे और (3) जब अमानत उस के सिपुर्द की जाए तो उस में ख़ियानत करे ।"

(صحیح البخاری ،کتاب الایمان ، باب علامات المنا فق ، الحدیث: ۳۳، ص ۵)

www.dawateislami.net

《17》...... मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं : "अगर्चे रोज़े रखता हो, नमाज़ पढ़ता हो और अपने आप को मुसल्मान समझता हो।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان ، باب خصال المنافق ، الحدیث: ٢١٤ ، ص ٦٩٠)

《18》...... हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "4 ख़स्लतें ऐसी हैं जिस में होंगी वोह पक्का मुनाफ़िक़ होगा और जिस में इन में से कोई एक ख़स्लत होगी तो उस में मुना-फ़क़त की भी एक ख़स्लत होगी यहां तक कि इसे छोड़ दे : (1) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे (2) जब बात करे तो झूट बोले (3) जब अ़हद करे तो बद दियानती करे और (4) जब झगड़ा करे तो गालियां दे।" (صحیح البخاری ،کتاب الایمان ، باب علامات المنافق ، الحدیث: ٣٤، ص ٥)

《19》...... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दुआ़ मांगा करते थे : "اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِیْعِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخِیَانَةِ فَاِنَّهَابِئْسَتِ الْبِطَانَة" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं भूक से तेरी पनाह चाहता हूं क्यूं कि येह बहुत बुरा दोस्त है और ख़ियानत से पनाह चाहता हूं क्यूं कि येह बहुत बुरी छुपी हुई ख़स्लत है।"

(سنن ابی داؤد ،کتاب الوتر، باب الاستعاذة ،الحدیث: ١٥٤٧، ص١٣٣٧)

《20》...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब भी हमें ख़ुत़्बा दिया येह बात ज़रूर इर्शाद फ़रमाई : "जो अमानत दार नहीं उस का कोई ईमान नहीं और जो वा'दा पूरा नहीं करता उस का कोई दीन नहीं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند انس بن مالك بن النضر ، الحدیث: ١٢٣٨٦،ج٤،ص ٢٧١)

《21》...... शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "मेरी उम्मत जब 15 ख़स्लतें अपना लेगी तो उस पर आफ़तें और मुसीबतें नाज़िल होंगी।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह 15 बुराइयां कौन सी हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(1) जब ग़नीमत का माल दौलत समझा जाए (2) अमानत को ग़नीमत और (3) ज़कात को क़र्ज़ समझा जाने लगे (4) शोहर अपनी बीवी की इत़ाअ़त करे और (5) अपनी मां की ना फ़रमानी करे (6) अपने दोस्त से अच्छा सुलूक करे और (7) अपने बाप पर ज़ुल्म करे (8) मस्जिदों में आवाज़ें बुलन्द होने लगें (9) क़ौम का ज़लील तरीन शख़्स उस का सरदार बन जाए (10) आदमी की इ़ज़्ज़त उस के शर से बचने के लिये की जाए (11) शराब नोशी की जाए (12) झूटी गवाही दी जाए (13) रेशम पहना जाए (14) गाने वाली औ़रतें और आलाते मूसीक़ी रखे जाएं और (15) इस उम्मत के पिछले (बद बख़्त) लोग अगले (नेक) लोगों पर ला'नत भेजें तो उस वक़्त सुर्ख़ आंधी, ज़मीन में धंसने या चेहरे बदलने का इन्तिज़ार करें।"

(جامع الترمذی ،ابواب الفتن ، باب ماجاء فی علامة حلول ......الخ ، الحدیث: ٢٢١٠،ص ١٨٧٤،بدون" وشهد بالزور")

www.dawateislami.net

﴾22﴿...... एक और रिवायत में है : "तो उस वक़्त मेरी उम्मत आंधी, शक्लें बिगड़ जाने, ज़मीन में धंस जाने, क़ज़्फ़ (या'नी पथ्थरों की बारिश) और ऐसी निशानियों का इन्तिज़ार करे, गोया एक हार है जिस का धागा काट दिया गया है और उस के मोती एक एक कर के मुसल्सल गिर रहे हैं।"

(المرجع السابق، الحديث:۱۲۲۱۱، ص ۱۸۷٤)

﴾23﴿...... रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "3 चीजें अर्श से मुअ़ल्लक़ हैं : (1) रिश्तेदारी कहती है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी वजह ही से हूं लिहाज़ा मुझे न तोड़ा जाए।" (2) अमानत कहती है : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी वजह से ही हूं लिहाज़ा मुझ में ख़ियानत न की जाए।" और (3) ने'मत कहती है : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी त़रफ़ से हूं लिहाज़ा मेरी ना शुक्री न की जाए।" (البحرالزخاربمسند البزار،مسند ثوبان،الحديث:٤١٨١،ج١٠،ص١١٧)

﴾24﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में शहीद होना अमानत (में ख़ियानत) के इ़लावा तमाम गुनाहों को मिटा देता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : "क़ियामत के दिन एक बन्दे को लाया जाएगा अगर्चे उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में शहीद कर दिया गया हो, फिर उस से कहा जाएगा : "अमानत अदा करो।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! कैसे अदा करूं दुन्या तो ख़त्म हो गई।" तो कहा जाएगा : "इसे **हावियह** की त़रफ़ ले जाओ।" तो अमानत उस के सामने उस हैअत में आ जाएगी जिस में उस के सिपुर्द की गई थी, वोह उसे देख कर पहचान लेगा तो उसे पाने के लिये उस के पीछे जाएगा, और फिर उसे अपने कन्धे पर उठा लेगा, जब उसे येह गुमान होगा कि वोह जहन्नम से निकल आया है तो वोह अमानत उस के कन्धे से फिसल कर फिर जहन्नम में जा गिरेगी, और वोह हमेशा उस के पीछे जाता रहेगा।" फिर फ़रमाया : "नमाज़ अमानत है, वुज़ू अमानत है, और नाप तोल अमानत है।" और बहुत सी चीज़ों को शुमार कर के फ़रमाया : "इन सब में सख़्त तर वोह अश्या हैं जो तुम्हारे पास ह़िफ़ाज़त के लिये रखी जाती हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास आ कर उन से कहा : "क्या आप नहीं देखते कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ क्या फ़रमा रहे हैं ? उन्हों ने ऐसा ऐसा कहा है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "उन्हों ने सच कहा है, क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना ?

اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَاۙ

(پ۵،النسآء:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो।

(شعب الايمان،باب فى الامانات ووجوب...الخ،الحديث:٥٢٦٦،ج٤،ص٣٢٣"زيدبن عامر"بدله"براء بن عازب")

www.dawateislami.net

तम्बीह :

इस गुनाह हो बहुत से उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने कबीरा गुनाहों में शुमार किया है और येह मज़्कूरा आयाते मुबा-रका और अह़ादीसे मुबा-रका से बिल्कुल ज़ाहिर है।

تمت بالخير

"**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" की दूसरी जिल्द

किताबुन्निकाह़ से शुरूअ़ होगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा

क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(1) करन्सी नोट के मसाइल (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अह़कामि क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ू-ततुल वासित़ा) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मुआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे इस्लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़रफ़ा-इ बि एअ़ज़ाज़ि शर-इ वल उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु़रुक़ु इस्बाते हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारुल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाह़ुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़-न-क़तिल ई़द) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दुल क़ह़्ति वल वबा-इ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़्सनुल विआ़-इ लि आदाबिद्दुआ़ मअ़ह़ू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनुल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 140)

(शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब)

अज़ : इमामे सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74) (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62) (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60) (16) अल फ़द्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46) (17) अज्लल इ'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70) (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93) (19,20) जद्दुल मुम्तारि अ़ला रद्दिल मुह़्तार

www.dawateislami.net

(अल मुजल्लद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़्हात : 570, 672)

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

(21) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़्हात : 160) (22) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्हात : 200) (23) तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्हात : 33) (24) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्हात : 164) (25) इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें (कुल सफ़्हात : 32) (26) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़्हात : 43) (27) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्हात : 152) (28) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्हात : 43) (29) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 196) (30) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़्हात: तक़रीबन 63) (31) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़्हात : 325) (32) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96) (33) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50) (34) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 42) (35) अर-बईने ह़-नफ़िय्या (कुल सफ़्हात : 112) (36) अ़त्तारी जिन का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24) (37) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30) (38) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्हात : 124) (39) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48) (40) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से (कुल सफ़्हात : 275) (41) टीवी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32) (42 ता 48) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से) (49) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़्हात : 24) (50) ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ह़ालात (कुल सफ़्हात : 106) (51) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 100) (52) रहनुमाए जद्वल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 255) (53) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24) (54) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़्हात : 68) (55) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)(56) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़्हात : 187) (57) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात : 62) (58) अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़्हात : 66) (59) फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस (कुल सफ़्हात : 120) (60) बद गुमानी (कुल सफ़्हात : 57)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

(61)जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़्हात : 743)
(62) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़्हात : 36)
(63) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़्हात : 74)
(64) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्हात : 102)
(65) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद) (कुल सफ़्हात : 64)
(66) अद्दा'वत इलल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 148)
(67) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून व मुफ़र्रिहुल क़ल्बिल मह़्ज़ून)

www.dawateislami.net

(शो'बए दर्सी कुतुब)

(68) ता'रीफ़ाते नहविय्या (कुल सफ़हात : 45) (69) किताबुल अक़ाइद (कुल सफ़हात : 64) (70) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नुख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175) (71) अर-बईने न-वविय्या (कुल सफ़हात : 121) (72) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़हात : 79) (73) गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180) (74) वक़ायतुन्नहव फ़ी शर्हे हिदायतुन्नहव

(शो'बए तख़रीज)

(75) अजाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422) (76) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679) (77 ता 81) बहारे शरीअ़त (पांच हिस्से) (82) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170) (83) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108) (84) सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 274) (85) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, शाहे बनी आदम, रसूल मुहतशम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" हज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अर्ज़ गुज़ार हुए कि "मैं इस बात की ज़मानत देता हूं।" चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।

(سنن ابی داؤد،حدیث١٦٤٣،ج٢،ص١٧٠)

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نمبرشمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلیشرز لاہور
2	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰحضرت امام احمد رضاخان علیہ رحمۃ الرحمٰن متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلیشرز
3	تفسیر ابن ابی حاتم	امام عبد الرحمٰن بن ابی حاتم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	المکتبۃ الشاملۃ
4	الد ر المنثور فی التفسیر بالماثور	امام جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
5	تفسیرحقی	امام حقی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	المکتبۃ الشاملۃ
6	تفسیروروح المعانی	شہاب الدین السید محمود الآلوسی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۱۲۷۰ھ	دار التراث العربی
7	تفسیر قرطبی	امام محمد بن احمد القرطبی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت
8	تفسیر الطبری	اما م محمد بن جریرالطبری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
9	تفسیر الخازن	علامہ علی بن محمد بن ابراھیم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۷۴۱ھ	صدیقیہ کتب خانہ خٹک
10	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ اسلامیہ لاہور
11	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل البخاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۵۶ھ	دار السلام ریاض
12	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۶۱ھ	دار السلام ریاض
13	جامع الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۷۹ھ	دارالسلام ریاض
14	سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۷۵ھ	دارالسلام ریاض
15	سنن نسائی	امام احمد بن شعیب النسائی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۳۰۳ھ	دارالسلام ریاض
16	سنن ابن ماجۃ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۷۳ھ	دارالسلام ریاض
17	صحیح ابن خزیمہ	الامام ابوبکرمحمد بن اسحاق بن خزیمہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی بیروت
18	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	الحافظ محمد بن حبان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
19	مسند ابی داؤد الطیالسی	امام ابو داؤد الطیالسی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۲۰۴ھ	مکتبہ حسینیہ گوجرانوالہ
20	کتاب المراسیل لابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان ابن اشعث رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہمتوفّٰی۲۷۵ھ	ملتان پاکستان
21	مسند ابی یعلیٰ	ابو یعلی احمد الموصلی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
22	مسند احمد بن حنبل	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت
23	فردوس الاخبارللدیلمی	الحافظ شھرویہ بن شھر دار بن شھرویہ الد یلمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ متوفّٰی۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

24	البحرالزخار المعروف بمسند البزار	امام ابو بكر احمد بن عمرو البزاررحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۲۹۲ھ	مكتبة العلوم والحكم مدينه منوره
25	المعجم الكبير	الحافظ سليمان بن احمد الطبرانی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحياء التراث بيروت
26	سنن الدار قطنی	الامام الكبير علی بن عمرالدار قطنی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۳۵۸ھ	مكتبه نشر السنة پاكستان
27	المعجم الاوسط	الحافظ سليمان بن احمد الطبرانی رحمة الله تعالیٰ علیهمتوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الكتب العلمية بيروت
28	السنةلابن ابی عاصم	امام ابو بكر احمد بن عمرورحمة الله تعالیٰ علیهمتوفّٰی۲۸۷ھ	دار ابن حزم بيروت
29	مجمع الزوائد	الحافظ نور الدين علی بن ابو بكر الهيثمی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۸۰۷ھ	دار الفكر بيروت
30	المستد رك علی الصحيحين	امام محمد بن عبد الله الحاكم رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفة بيروت
31	التمهيد لابن عبد البر	الامام يوسف بن عبد الله محمد بن عبد البر رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت
32	كنز العمال	علاء الدين علی المتقی الهندی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۹۷۵ھ	دارالكتب العلمية بيروت
33	الترغيب والترهيب	امام زكی الدين عبد العظيم المنذری رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۶۵۶ھ	دار الفكربيروت
34	عمل اليوم والليلة لابن السُّنّی	ابو بكر احمد بن محمد الدِّينَوَری المعروف بابن السُّنّی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۳۶۴ھ	دار الكتب العربی بيروت
35	مكارم الاخلاق للطبرانی	الحافظ سليمان بن احمدالطبرانی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الكتب العلمية بيروت
36	مشكوٰة المصابيح	الشيخ محمد بن عبد الله الخطيب التبريزی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۷۴۱ھ	دارالكتب العلمية بيروت
37	مرأة المناجيح شرح مشكوٰة المصابيح	حكيم الامت مفتی احمد يارخان نعيمی رحمة الله تعالیٰ علیه	ضياء القرآن پبليشرز لاهور
38	الجامع الصغير	امام جلا ل الدين السيوطی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۹۱۱ھ	دارالكتب العلمية بيروت
39	فيض القدير شرح الجامع الصغير	علامه محمد عبد الرءُوف المناوی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دار الكتب العلمية بيروت
40	السنن الكبریٰ للنسائی	امام احمد بن شعيب النسائی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۳۰۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت
41	السنن الكبریٰ للبيهقی	الامام احمد بن الحسين البيهقی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۴۵۸ھ	دارالكتب العلمية بيروت
42	شعب الايمان	الامام احمد بن الحسين البيهقی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۴۵۸ھ	دار الكتب العلمية بيروت
43	مؤطا امام مالك	امام مالك بن انس رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۱۷۹ھ	دار المعرفة بيروت
44	المصنف لابن ابی شيبة	امام عبدالله بن محمد بن ابی شيبة رحمة الله تعالیٰ علیه ۲۳۵ھ	دار الفكر بيروت
45	مصنف عبدالرزاق	امام عبد الرزاق الصنعانی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الكتب العلمية بيروت
46	فتح البارى شرح صحيح البخارى	الحافظ ابن حجر العسقلانی الشافعی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الكتب العلمية بيروت
47	شرح النووی علی المسلم	امام يحيیٰ بن شرف النووی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی ۶۷۶ھ	افغانستان
48	التاريخ البغداد	الامام ابو بكر احمد بن علی الخطيب البغدادی رحمة الله تعالیٰ علیه متوفّٰی۴۶۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت

www.dawateislami.net

49	الضعفاء للعقيلی	ابو جعفرمحمدبن عمروبن موسیٰ بن حمادالعقيلی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٣٢٢ھ	دارالصَّمِيعی السعودية
50	الكامل فی ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد الله بن عدی الجرجانی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٣٦٥ھ	دار الكتب العلمية بيروت
51	حلية الاولياء	الامام الحافظ ابو نعيم الاصفهانی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٤٣٠ھ	دار الكتب العلمية بيروت
52	احياء علوم الدين	امام محمد بن احمد الغزالی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٥٠٥ھ	دارصادربيروت
53	اتحاف السادة المتقين	علامه مرتضیٰ الزبيدی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ١٢٠٥ھ	دار الكتب العلمية بيروت
54	تخريج احاديث الاحياء	....	المكتبة الشاملة
55	المطالب العالية لابن حجر	امام الحافظ احمد بن علی بن الحجرالعسقلانی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٨٥٢ھ	دارالكتب العلمية بيروت
56	كتاب الزهدلابن مبارك	امام عبد الله بن مبارك المروزی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ١٨١ھ	دار الكتب العلمية بيروت
57	كشف الخفاء ومزيل الالباس	امام اسمٰعيل بن محمد بن الهادی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ١١٦٢ھ	دار الكتب العلمية بيروت
58	التاريخ الكبير للبخاری	امام ابو عبد الله محمد بن اسماعيل البخاری رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٢٥٦ھ	دار الكتب العلمية بيروت
59	تعارف چند محدثين مفسرين مؤرخين كا	شيخ الحديث مفتی محمد منظور احمد فيضی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ١٤٢٧ھ	ضياء القرآن پبليشرز
60	البحرالرائق	علّامه زين الدين بن ابراهيم المعروف بابن نجيم المصری الحنفی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٩٧٠ھ	كوئٹه پاكستان
61	الفقيه والمتفقِّه	امام ابو بكر احمد بن علی الخطيب البغدادی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٤٦٣ھ	المكتبة الشاملة
62	الفتاوٰی الحديثية	امام احمد بن محمد بن حجرالهيتمی الشافعی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٩٧٤ھ	داراحياء التراث العربی بيروت
63	الفتاوٰی الرضوية	اعلیٰحضرت امام احمد رضاخان عليه رحمة الرحمٰن متوفّٰی ١٣٤٠ھ	رضا فاونڈيشن لاهور
64	الدرالمختار	علامه علاؤالدين الحصكفی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ١٠٨٨ھ	دارالمعرفة بيروت
65	الفتاوٰی الهنديه	ملانظام الدين رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ١١٦١ھ وعلمائے هند	كوئٹه پاكستان
66	بهارِشريعت	صدرالشريعة مفتی محمدامجدعلی الاعظمی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ١٣٦٧ھ	ضياء القرآن پبليشرز
67	شرح اصول عقائد اهلِ سنة والجماعة	علّامه ابو القاسم هبة الله ابن الحسن بن منصور رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٤١٨ھ	مكتبُ دارِ البصيرة مصر
68	مجمع البحرين	نور الدين ابو الحسن علی بن ابی بكر الهيثمی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٨٠٧ھ	دار الكتب العلمية بيروت
69	كتاب الكبائر	امام محمد بن احمد بن عثمان الذهبی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٧٤٨ھ	اشاعتِ اسلام كتب خانه پشاور
70	الآلئ المصنوعة	الامام جلال الدين عبد الرحمٰن السيوطی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٩١١ھ	دار الكتب العلمية بيروت
71	روض الرياحين فی حكايات الصالحين	امام عبد الله بن اسعد اليافعی رحمة الله تعالیٰ عليه متوفّٰی ٧٦٨ھ	المطبعة الميمنية مصر
72	نماز كے احكام	امير اهلِسنت حضرت علّامه مولانا محمد الياس عطّاؔر قادری دامت بركاتهم العالية	مكتبة المدينة باب المدينه كراچی
73	پردے كے بارے ميں سوال جواب	امير اهلِسنت حضرت علّامه مولانا محمد الياس عطّاؔر قادری دامت بركاتهم العالية	مكتبة المدينة باب المدينه كراچی

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
(दा'वते इस्लामी)

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net